وَمَلَيْظِيُّ فَنَ الْمَنْ يَ الْمَا هُولِالْأَرْمَ فَي إِنْ مِي



اعادىية مُباركه كأظيم ترين تُجوعث

ساز المحادث

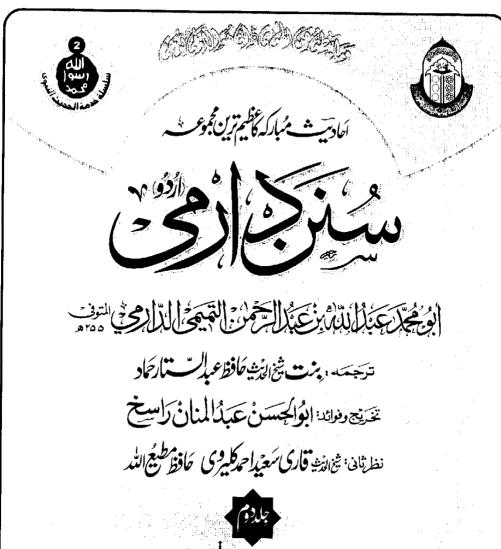
الوُعُجِلَ عَبْلُ لِللَّهِ بِزَعَبْلِ السِّمْنِ الْهَيْمِ فَالدِّلْرِحِيْ وَهُ وَاللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ الللَّا اللَّاللَّاللَّا اللَّالْمُ اللَّهُ الللَّا

ترجمه ابنت في ارثي عافظ عبالت ارجاد

تخديج ونوائد ابوالجسك عبد المنان راسيخ

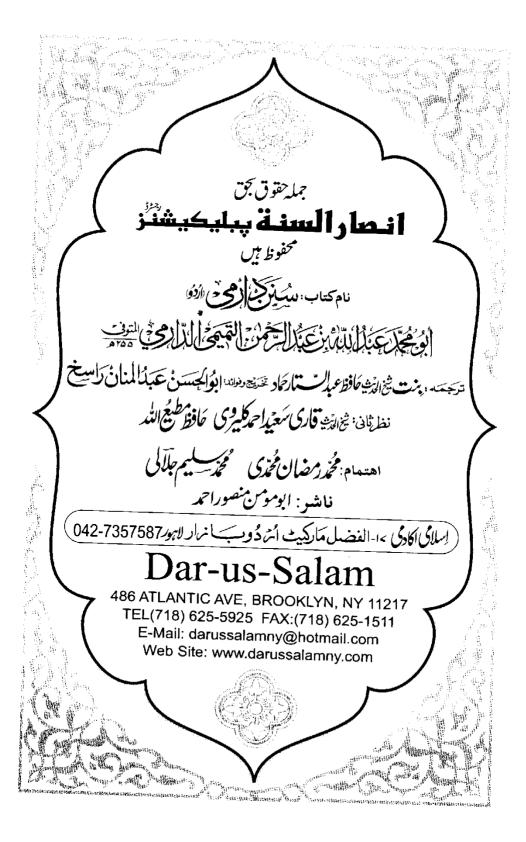


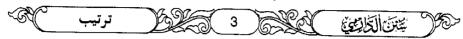
انصار السُنّه بِبَليكيشَنز لاهور





اِسلاگی اکادگی >۱-الفضل مَارکیٹ اُئْرُ دُوسِکَا نرار لاہور 042-37357587





| | شکار کے بیان میں | ٧كتاب الصيد |
|----|--|---|
| 47 | باب: کتے چھوڑتے وقت بھم اللہ کہنا اور کتے ہے | [1] بَـاب التَّسْمِيَةِ عِـنْـدَ إِرْسَـالِ الْكَلْبِ |
| | شكاركرنا | وَصَيْدِ الْكِلَابِ |
| 48 | باب: شکار یا جانور کی حفاظت کے لئے کتا پالنا | [2] بَابِ فِي اقْتِنَاءِ كَلْبِ الصَّيْدِ أَوِ الْمَاشِيَةِ |
| 50 | باب: كتون كونش كرنا | [3] بَابِ فِي قَتْلِ الْكِكَلابِ |
| 50 | باب: معراض کا شکار | [4] بَابِ فِي صَيْدِ الْمِعْرَاضِ |
| 51 | ا باب: ٹڈی کھانا | [5] بَابِ فِي أَكْلِ الْجَرَادِ |
| 51 | ا باب: دریا کا شکار | [6] بَابِ فِي صَيْدِ الْبَحْرِ |
| 52 | باب: خرگوش کھانا | [7] بَاب فِي أَكْلِ الْأَرْنَبِ |
| 53 | باب: گوه کھانا | [8] بَابِ فِي أَكْلِ الضَّبِّ |
| 55 | باب: وہعضوجوشکارےالگ ہوجائے | [9] بَابِ فِي الصَّيْدِ يَبِينُ مِنْهُ الْعُضُو |
| | کھانے کے بیان میں | ٨كتاب الاطعمة |
| 56 | باب: کھاناشروع کرتے وقت بھم اللہ کہنا | [1] بَابِ فِي التَّسْمِيَةِ عَلَى الطَّعَامِ |
| | باب: جب كوئى كھانا كھلائے تو اس كے لئے دعا | [2] بَابِ الدُّعَاءِ لِصَاحِبِ الطُّعَامِ إِذَا |
| 57 | ڪرني ھاہئے | أَطْعَمَ |
| 58 | باب: کھانے سے فراغت کی دعا | [3] بَابِ الدُّعَاءِ بَعْدَ انْفَرَاغِ مِنَ الطَّعَامِ |
| 59 | باب: کھانا کھا کرشکر کرنا | [4] بَابِ فِي الشُّكْرِ عَلَى الطَّعَامِ |
| 59 | باب: انگلیوں کو حیاشا | [5] بَابِ فِي لَعْقِ الْأَصَابِعِ |
| | | |

| ~@C | 4 کی ترتیب | الكالكانية الكالكانية الكالمانية |
|------------|---|---|
| 60 | باب: کھانے کے بعدرومال استعمال کرنا | [6] بَابِ فِي الْمِنْدِيلِ عِنْدَ الطَّعَامِ |
| 60 | ا باب: برتن کوصاف کرنا | [7] بَابِ فِي لَعْقِ الصَّحْفَةِ |
| 61 | باب: "گرے ہوئے لقمہ کے متعلق | [8] بَابِ فِي اللُّقْمَةِ إِذَا سَقَطَتْ |
| 62 | باب: دائیں ہاتھ سے کھانا | [9] بَابِ الْأَكُلِ بِالْيَمِينِ |
| 63 | باب: تین انگلیوں ہے کھانے کا بیان | [10] بَابِ اْلْأَكْلِ بِثَلَاثِ أَصَابِعَ |
| 64 | باب: مہمان نوازی کے متعلق | [11] بَابِ فِي الْفِتْيَافَةِ |
| 65 | باب: کھانے میں کھی کا گرجانا | [12] بَابِ الدُّبَابِ يَقَعُ فِي الطَّعَامِ |
| 67 | باب: مومن ایک آنت میں کھاتا ہے | [13] بَابِ الْمُؤْمِنُ يَأْكُلُ فِي مِعْي وَاحِدٍ |
| 68 | باب: ایک آ دمی کا کھانا دو کے لئے کافی ہوتا ہے | [14] بَابِ طَعَامُ الْوَاحِدِ يَكْفِي الِاثْنَيْنِ |
| 68 | باب: ال مخص كم تعلق جوايية سامنے سے كھائے | [15] بَابِ فِي الَّذِي يَأْكُلُ مِمَّا يَلِيْهِ |
| | باب: شیدکو کنارول سے کھانے سے پہلے درمیان | [16] بَابِ النَّهْ ي عَنْ أَكُلِ وَسَطِ الثَّرِيدِ |
| 68 | ہے کھانے کی ممانعت | حَتّٰى يَأْكُلَ جَوَانِبَهُ |
| 69 | باب: گرم کھانا کھانے کی ممانعت | [17] بَابِ النَّهْيِ عَنْ أَكْلِ الطَّعَامِ الْحَارِّ |
| 6 9 | باب: كون ساسالن نبي طِنْشَا عَلِيْهُ كُو مُحبوب تفا | [18] بَابِ أَيُّ الْإِدَامِ كَانَ أَحَبَّ إِلَى رَسُولِ |
| | | الله |
| 70 | باب: كدو كے متعلق | [19] بَابِ فِي الْقَرْعِ |
| 71 | باب: زینون کے تیل کی فضیلت کا بیان | [20] باب فِي فَضْلِ الزَّيْتِ |
| 72 | باب: کههن کھانا | [21] بَابِ فِي أَكْلِ الثُّومِ |
| 73 | باب: مرغی کھانے کے متعلق | [22] بَابِ فِي أَكْلِ الدَّجَاجِ |
| | باب: اس کے متعلق جو اپنا کھانا پر ہیز گاروں کے | [23] بَـاب مَـنْ كَـرِهَ أَنْ يُـطْعِمَ طَعَامَهُ إِلَّا |
| 73 | علاوہ کسی اور کو کھلانا نا نا پیند کرتا ہے | الْاَّ تْقِيَاءَ |
| | باب: جو مخص دو چیزیں اکٹھی کھانے میں حرج نہیں | [24] بَابِ مَنْ لَـمْ يَرَ بَأْسًا أَنْ يُجْمَعَ بَيْنَ |
| 74 | لتعجمت | الشَّيْتُينِ |
| 74 | إب: (دوچھوارے) ملا كر كھانے كى ممانعت كابيان | [25] بَابِ النَّهْيِ عَنِ الْقِرَانِ |
| 75 | اب: خشك كھجور كے متعلق | [26] بَابِ فِي التَّمْرِ |

| < ₹ | ترتيب ٢ | 5 | | الكانتين |
|------------|--------------------|------------------------------|-------------------------|--------------------------------------|
| 76 | هو نا | باب: کھانے کے بعد ہاتھ دع | 1 | [27] بَابِ فِي الْوُضُوءِ بَعْدَ |
| 77 | | باب: وليمد تح متعلق | | [28] بَابِ فِي الْوَلِيمَةِ |
| 80 | | باب: ژبدگی فضیلت | | [29] بَابِ فِي فَضْلِ الثَّرِيدِ |
| | کی بجائے دانتوں سے | باب: "گوشت حچری کانٹے | أَنْ يَنْهَسَ اللَّحْمَ | [30] بَابِ فِيمَنْ اسْتَحَبَّ أَ |
| 80 | | کھانامشحب ہے | | وَلا يَقْطَعَهُ |
| 81 | | باب: تكيه لكاكر كھانا | | [31] بَابِ فِي الْأَكْلِ مُتَّكِئًا |
| 82 | | باب: نئے پھل کے متعلق | | [32] بَابِ فِي الْبَاكُورَةِ |
| 82 | | باب: کھانے کے وقت خاد | مِ عِنْدَ الطَّعَامِ | [33] بَابِ فِي إِكْرَامِ الْخَادِ |
| 83 | Ċ | باب: مٹھائی اور شہد کے متعلق | | [34] بَابِ فِي الْحَلْوَاءِ وَالْ |
| 84 | | باب: بغیر وضو کے کھانا پینا | شُّرْبِ عَلَى غَيْرِ | [35] بَسابِ فِي الْأَكْلِ وَال |
| | | | | ۇ <i>ضُ</i> وءِ |
| 84 | | باب: جنابت کی حالت میں | ر لُ | [36] بَابِ فِي الْجُنُبِ يَأْكُ |
| 85 | | باب: ہنڈیا میں (شور ہے۔ | | [37] بَابِ فِي إِكْثَارِ الْمَاءِ |
| 85 | تی ا تار نا | باب: کھانے کے دنت جو | ، عِنْدَ الْأَكْلِ | [38] بَابِ فِي خَلْعِ النِّعَالِ |
| 86 | | باب: كھانا كھلانا | ا م | [39] بَابِ فِي إِطْعَامِ الطَّعَ |
| 86 | | باب: دعوت قبول کرنا | | [40] بَابِ فِي الدَّعْوَةِ |
| 87 | میں گر کرمر جائے | باب: چوہیائے متعلق جو کھی | تَقَعُ فِي السَّمْنِ | [41] بَـاب فِـى الْـفَـأْرَةِ |
| | | | | فَمَاتَتْ |
| 88 | | باب: خلال كرنا | | [42] بَابِ فِي التَّخْلِيلِ |
| | al Ki | (1 % | | M 12.5 |
| | نے کا بیان متاہ | | | ٥ كتاب الا |
| 89 | | ا باب: شراب کی ندمت ک | | [1] بَابِ مَا جَاءَ فِي الْخُهُ |
| 90 | | باب: شراب کی حرمت کیسے | | [2] بَابِ فِي تُحْرِيمِ الْخَ |
| 91 | ţ | ا باب: شراب چینے پرسی کرا | ى شارِبِ الخمرِ | [3] بَابِ فِي التَّشْلِيدِ عَلَم |
| | | | | |

| ~GV(| ترتيب ترتيب | 6 | | ٢ | J. |
|------|---|-----------|-------------------------|---|-------------|
| 92 | : شراب دالے دستر خوان پر بیٹ <u>ھنے کی</u> ممانعت | ا باب | عُودِ عَلَى مَائِدَةٍ | َ فِي النَّهْيِ عَنِ الْقُ | [4] بَاب |
| | · | | | رُ عَلَيْهَا الْخُمْرُ | يُدَارُ |
| 93 | ہمیشہ شراب پینے والے کے متعلق | باب: | · | ، فِي مُدْمِنِ الْخَمْرِ | [5] بَاب |
| 94 | شراب میں شفانہیں ہے | ! باب: | ِّهَاءٌ - اَهُ | لَيْسَ فِي الْخَمْرِ شِ | [6] بَابِ |
| 94 | شراب کے مخرج کابیان | باب: | | ، مِمَّا يَكُونُ الْخَمْرُ | [7] بَاب |
| 95 | نشهآ ورچیزول کابیان | باب: | رِ | ، مَا قِيلَ فِي الْمُسْكِ | [8] بَاب |
| 97 | شراب کی خرید وفروخت کی ممانعت | باب: | مُو وَشِرَائِهَا | ، النَّهْيِ عَنْ بَيْعِ الْخَ | [9] بَاب |
| 99 | شراب پینے کی سزا | باب: | الْخَمْرِ | ب الْعُقُوبَةِ فِي شُرْدٍ | [10] بَار |
| 100 | شراب پینے والے کے لئے بخق | باب: | شَرِبَ الْخَمْرَ | ب فِي التَّغْلِيظِ لِمَنْ | [11] بَاب |
| | اس برتن کے متعلق جس میں نبی ﷺ آیا کے | باب: | <u> </u> | ب فِيمَا يُنْبَذُ لِلنَّبِيِّ عِ | [12] بَار |
| 100 | لئے نبیذ تیار کی جاتی تھی | | | | |
| 101 | نقيع كابيان | باب: | L | ب فِي النَّقِيعِ | |
| | مظ اورشراب کے برتنوں میں نبیذ بنانے کی | باب: | الْجَرِّ وَمَا يُنْبَذُ | ب النَّهْ ي عَنْ نَبِيذِ | [14] بَــا |
| 102 | ممانعت | | | | |
| 104 | دو چیزوں کی نبیذ بنانے کی ممانعت ۔ | | ىلىطىن | ب فِي النَّهْيِ عَنِ الْحَ | [15] بَاب |
| 104 | انگورکو کرم کہنے کی مما نعت | باب: | بُسَمَّى الْعِنَبُ | ب فِي النَّهْيِ أَنْ إُ | [16] بَــار |
| | | | | ŕ | الْكُو |
| 105 | شراب کا سر کہ بنانے کی ممانعت | باب: | لَ الْخَمْرُ خَلَّا | ، فِي النَّهْيِ أَنْ يُجْعَ | [17] بَاب |
| 105 | پینے کے شرعی طریقہ کے متعلق | | كَيْفَ هِيَ | ، فِى سُنَّةِ الشَّرَابِ زَ | [18] بَاب |
| 106 | مشک کومنہ لگا کر پانی پینے کی ممانعت | باب: | شُرْبِ مِنْ فِي | ب فِي النَّهْيِ عَنْ ال | [19] بَــار |
| | | | | <u>۽</u> | السِّفَا |
| 107 | نتین سانسوں میں بینا | باب: ' | ِ أَنْفَاسِ | في الشُّرْبِ بِثَلاثَةِ | [20] بَاب |
| 107 | س کے متعلق جوا یک سانس میں چیئے | باب: ا | [اجِدِ | ، مَنْ شَرِبَ بِنَفَسِ وَ | [21] بَاب |
| 108 | نہر سے پانی پینے والے کے متعلق | | 1 ′ | ، فِی الَّذِی یَکْرَعُ فِی | |
| 109 | کھڑے ہوکر پانی بینا | باب: ۗ | | ، فِي الشُّرْبِ قَائِمًا | [23] بَاب |
| | | | | | |

| ₹Ğ | ترتيب | | 7 | | يُنْ الطَّالِيْفِيُّ | |
|-----|------------------------|------------------------------------|---------|----------------------------|--------------------------------|--------------|
| | والے کو نا پیند کرنے | ، کوئے ہو کر پینے ا | باب | ı | ب مَنْ كَرِهَ الشُّرْبَ | |
| 109 | | والے کے متعلق | | | , | |
| 110 | إنى پينا | .: جاندی کے برتن میں ب | ا باب | ِ ضَّضِ | ب الشُّرْبِ فِي الْمُهَ | [25] بَا |
| 112 | بيان |): برتنوں کے ڈھاپنے کا | ا باب | | ب فِيْ تَخْمِيْرِ الْإِنَاءِ | |
| 112 | | ب: پینے کی چیز میں پھو <u>نک</u> ن | | | اب النَّهْي عَنْ النَّفْخِ | |
| 113 | لاخودآ خرمیں پییئے | ب: لوگوں کو پانی پلانے وا | ا باب | | اب فِي سَاقِي الْقَوْمِ | |
| | کے بیان میں | خوابول_ | | رؤيا | ١٠ | |
| | | ب: آيت ﴿لَهُمُ الْبُنَّا | | ﴿ لَهُمُ الْبُشْرَى | ب فِي قَوْلِهِ تَعَالَى | [1]بكار |
| 114 | | الدُّنْيَا﴾ كَيْقْسِر | | | الْحَيْوةِ الدُّنْيَا﴾ | |
| | | ب: مسلمان کا خواب نبور | | جِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ | اب قِي رُؤْياً الْمُسْلِ | [2] بَــا |
| 115 | | میں سے ایک حصہ نے | | | بَعِينَ جُزْنًا مِنْ النَّبُو | |
| 115 | ر بشارتیں ہاتی ہیں | ب: نبوت ختم ہو گئ ہےاو | ا بار | يَتِ الْمُبَشِّرَاتُ | ب ذَهَبَتِ النُّبُوَّةُ وَبَقِ | [3] بَار |
| 116 | _ | ب: خواب میں نبی ملطی علیہ | | لِيَّ فِي الْمَنَامِ | ب فِي رُؤْيَةِ النَّبِيِّ ﴿ | [4] بَار |
| 117 | | ب: بُراخواب د یکھنے وا۔ | - 1 | ؠؘػ۫ۯؘۿؙۿؙ | ب فِيمَنْ يَرْى رُؤْيَا } | [5] |
| 118 | | ب: خواب تین طرح کے | | | ب الرُّؤْيَا ثَـكَلاثٌ | [6] بَا |
| | | ب: لوگوں میں سے زیا | | أصدَفُهُمْ حَدِيثًا | أَصْدَقُ النَّاسِ رُؤْيَا أ | [7] بَابِ أَ |
| 119 | | انسان کا ہوتا ہے | | | | |
| 119 | ی کرنے کی ممانعت | ب: ان ديکھا خواب بياز | ا بار | نتَلِمَ الرَّجُلُ رُوْيَا | ب النَّهٰي عَنْ أَنْ يَحْ | [8] بَا |
| | | | | | يَرَهَا | لَمْ |
| 120 | | ب: سحری کے وقت خوار | • 1 | لأَسْحَارِ | ب أَصْدَقُ الرُّوْيَا بِإ | [9]بَا |
| | ونسى اور سے خواب بیان | ب: عالم یا ناصح کے علاو | ا با | رَ الرُّؤْيَا إِلَّا عَلَى | بَابِ كَرَاهِيَةِ أَنْ يَعْبُ | [10] |
| 120 | | کرنے کی کراہت | | | الِم أَوْ نَاصِح | عَ |
| | لرنے سے پہلے اس کا اثر | ب: خواب کی تعبیر بیان | ا با | ا لَمْ تُعَبَّرُ | نَابُ الرُّؤْيَا لَا تَقَعُ مَ | [11] |
| 121 | | واقع نہیں ہوتا | | | | |

| ~@C | 8 گرگر ترتیب | المرابعين الكاليعي المرابعي |
|-----|--|---|
| 121 | باب: خواب میں رب تعالی کود یکھنا | [12] بَابِ فِي رُؤْيَةِ الرَّبِّ تَعَالَى فِي النَّوْمِ |
| ţ | باب: تمیض کنوال ٔ دوده ٔ شهد گی اور تھجور وغیرہ کا | [13] بَاب فِي الْقُمُصِ وَالْبِثْرِ وَاللَّبَنِ وَالْعَسَلِ |
| 123 | خواب میں دیکھنا | وَالسَّمْنِ وَالتَّمْرِ وَغَيْرِ ذٰلِكَ فِي النَّوْمِ |
| | | |
| : | نکاح کے بیان میں | ١١كتاب النكاح |
| 134 | باب: نکاح کی ترغیب دینا | [1] بَابِ الْحَتِّ عَلَى التَّزْوِيجِ |
| | ا باب: جس کے پاس نکاح کی طاقت ہو کہ وہ نکاح | [2] بَابِ مَنْ كَانَ عِنْدَهُ طَوْلٌ فَلْيَتَزَوَّجْ |
| 135 | کے | |
| 136 | باب: عورتوں ہے علیحدہ ہونے کی ممانعت | [3] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنِ التَّبَتُّلِ |
| 138 | باب: عورت ہے چار چیزوں کی بناپرنکاح کیاجاتا ہے | [4] بَابِ تُنْكَحُ الْمَرْأَةُ عَلَى أَرْبَعِ |
| 139 | باب: منگنی کے وقت عورت کو دیکھنے کی اجازت | [5] بَابِ الرُّخْصَةِ فِي النَّظَرِ إِلَى الْمَرْأَةِ |
| | | عِنْدُ الْخِطْبَةِ |
| 139 | باب: جب آ دمی نکاح کرے تواہے کیا کہا جائے | [6] بَابِ إِذَا تَزَوَّجَ الرَّجُلُ مَا يُقَالُ لَهُ |
| 140 | باب: اپنے بھائی کی مثنی پرمنٹنی کرنے کی ممانعت | [7] بَابِ النَّهْ ي عَنْ خِطْبَةِ الرَّجُلِ عَلَى |
| | | خِطْبَةِ أُخِيْهِ |
| 143 | باب: کس حال میں آ دمی کومنگنی کرنا جائز ہے | [8] بَابِ الْحَالِ الَّتِي يَجُوزُ لِلرَّجُلِ أَنْ |
| | | يَخْطُبَ فِيهَا |
| 144 | باب: شغار کی ممانعت | [9] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنِ الشِّغَارِ |
| 144 | باب: نیک مردوں اور عورتوں کے نکاح کے متعلق | [10] بَسَابِ فِسَى نِسْكَاحِ الصَّالِحِيْنَ |
| | | وَالصَّالِحَاتِ |
| 145 | باب: بغیرولی کے نکاح کی ممانعت | [11] بَابِ النَّهْيِ عَنِ النِّكَاحِ بِغَيْرِ وَلِيِّ |
| 147 | ہاب: میتیم لڑکی جوخود نکاح کرے | [12] بَابِ فِي الْيَتِيمَةِ تَزَوَّجُ |
| 147 | باب: کنواری اور بیوہ سے اجازت لینا | [13] بَابِ اسْتِتْمَارِ الْبِكْرِ وَالثَيّبِ |
| | باب: وہ بوہ جس کا نکاح اس کے باپ نے کردیا | [14] بَابِ الثَّيِّبِ يُزَوِّجُهَا أَبُوْهَا وَهِيَ |
| 149 | ہوا دراہے ناپہند ہو | كَارِهَةٌ |

| 461 | 9 کو ترتیب | المراقع المراق |
|--------------|---|--|
| 150 | باب: وه عورت جس کا دوولی نکاح کریں | [15] بَابِ الْمَرْأَةِ يُزَوِّجُهَا الْوَلِيَّانِ |
| 151 | باب: عورتوں سے متعد کی ممانعت | [16] بَابِ النَّهْيِ عَنْ مُتْعَةِ النِّسَاءِ |
| 153 | | [17] بَابِ فِي نِكَاحِ الْمُحْرِمِ |
| | باب: نبی ﷺ کی بیویوں اور بیٹیوں کاحق مہر کتنا | [18] بَابِ كَمْ كَانَتْ مُهُورُ أَزْوَاجِ |
| 153 | 50? | النَّبِي ﴿ وَبَنَاتِهِ |
| 155 | باب: وہ چیزیں جن کا مہر دینا جائز ہے | [19] بَابِ مَا يَجُوزُ أَنْ يَكُونَ مَهْرًا |
| 156 | باب: نکاح کے خطبہ کے متعلق | [20] بَابِ فِي خُطْبَةِ النِّكَاحِ |
| 157 | باب: نکاح میں شرط لگانا | [21] بَابِ الشَّرُ طِ فِي النِّكَاحِ |
| 157 | باب: وليمه كے متعلق | [22] بَابِ فِي الْوَلِيمَةِ |
| 158 | باب: وليمه كي دعوت قبول كرنا | [23] بَابِ مَاجَاءَ فِي إِجَابَةِ الْوَلِيمَةِ |
| 158 | ہاب: عورتوں کے درمیان عدل کرنا | [24] بَابِ فِي الْعَدْلِ بَيْنَ النِّسَاءِ |
| 159 | باب: عورتوں میں باریوں کی تقسیم | [25] بَابِ فِي الْقِسْمَةِ بَيْنَ النِّسَاءِ |
| | باب: اس آ دمی کے متعلق جس کی ایک سے زیادہ | [26] بَابِ الرَّجُلِ يَكُونُ عِنْدَهُ النِّسْوَةُ |
| 160 | بيوياں ہوں | |
| | باب: ابتدائی ملاقات میں بیوه اور کنواری عورت | [27] بَابِ الْإِقَامَةِ عِنْدَ الثَّيِّبِ وَالْبِكْرِ إِذَا |
| 160 | کے پاس قیام | بَنٰی بِهَا |
| | باب: شوال کے مہینہ میں بیوی سے کہلی ملاقات | [28] بَابِ بِنَاءِ الرَّجُلِ بِأَهْلِهِ فِي شَوَّالٍ |
| 161 | كرنا | |
| 162 | باب: صحبت کے وقت دعا | [29] بَابِ الْقَوْلِ عِنْدَ الْجِمَاعِ |
| 163 | باب: عورتوں کے دہر میں صحبت کرنے کی ممانعت | [30] بَـابِ النَّهُـي عَـنْ إِثْيَـانِ النِّسَاءِ فِي |
| | | أَعْجَازِهِنَ |
| 164 | باب: اس آ دمی کے متعلق جوعورت کود کیھے اور اپنے | [31] بَساب الرَّجُسلِ يَسرَى الْسَمَرْأَةَ فَيَخَافُ |
| | نفس کے متعلق خوف محسوں کرے | عَلَى نَفْيِهِ |
| 1 6 5 | باب: کنواری عورتوں سے نکاح کرنا | [32] بَابِ فِي تَزْوِيجِ الْأَبْكَارِ |
| 166 | ا باب: غیله کے متعلق | [33] بَابِ فِي الْغِيلَةِ |

| ~GY | ترتیب ترتیب | 10 | | يتن الكالتي | JA - |
|--------|--|-----|-------------------------|---|----------|
| 166 | : عورتوں کو مارنے کی ممانعت | باب | مرْبِ النِّسَاءِ | ب فِي النَّهْيِ عَنْ ضَ | [34] بَا |
| 168 | : ہیوی کی خدمت کرنے کا بیان | باب | مْلَهُ الله | ب مُدَارَاةِ الرَّجُلِ أَه | [35] بَا |
| 169 | : عزل کرنے کا بیان | باب | | ب فِي الْعَزْلِ | [36] بَا |
| 170 | : غیرت کے متعلق | باب | : | ب فِي الْغَيْرَةِ | [37] بَا |
| 171 | : بیوی پرخاوند کے حقوق کا بیان | باب | عَلَى الْمَرْأَةِ | ب فِي حَقِّ الزَّوْجِ ﴿ | [38] بَا |
| 172 | : لعان كابيان | | | ب فِى اللِّعَانِ | [39] بَا |
| | : اس غلام کے متعلق جو مالک کی اجازت کے | | | اب فِي الْعَبْدِ يَتَزَوَّ | |
| | بغیرنکاح کرے | | | ٠٩ ب الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ | سَيِّدِ |
| 177 | : اس بات کابیان کہ بچہ بستر والے کے لئے ہے شدہ | • • | | | |
| | : اس شخص کا بیان جوا پی اولاد کو پہچاننے کے ۔ | | وَهُوَ يَعْرِفُهُ | بِ مَنْ جَحَدَ وَلَدَهُ | [42] بَا |
| 178 | باد جودا نکار کرتا ہے شن | | | | |
| | : اس مخض کا بیان جو آ دمی این باپ کی بیوی - | | مْرَأَةَ أَبِيهِ | ب الرَّجُلِ يَتَزَوَّجُ ا | [43] بَا |
| 179 | ے نکاح کرے | | | | |
| | : الله كفرمان ﴿ لَا يَحِلُ لَكَ النِّسَاءُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللّ المعدد من تنا | | | باب قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَمِ | |
| 179 | مِنْ بَعْدُ ﴾ يَ تَغْيِر | | 1 | مَاءُ مِنْ بَعْدُ﴾ مَاءُ مِنْ بَعْدُ | |
| | : اس لونڈی کے متعلق جس کی آ زادمی کواس کا | | عِتْقُهَا صَدَاقَهَا | ب فِي الْأَمَةِ يُجْعَلُ | [45] بَا |
| | حق مہرمقرر کیا جائے فینر سے نہ رہی ہیں۔ | | 2 - 2 - 2 - 2 - 2 | | _ |
| | ہ: اس مخص کی نصیلت کا بیان جو کسی لونڈی کو میں کے میں میں ہے۔ | باب | أَمَةً ثُمَّ تُزُوجُهَا | ب فَضْلِ مَنْ أَعْتَقَ | [46] بَا |
| | آ زاد کرے گھراس ہے نکاح کرے شخفہ سے متعال | | 3 300 6000 | 15 15 | _ |
| | ہ: اس مخص کے متعلق جوعورت سے نکاح کر سیست سیست سے متعلق جوعورت سے نکاح کر | باب | م المراة فيموت | اب الـرَّجُلِ يَتَزَوَّجُ | |
| 182 | کے مہرمقرر کرنے سے پہلے مرجا تا ہے | | _ | ِ أَنْ يَفْرِضَ لَهَا | _ |
| - w.e. | ،: کن کن رضاعی رشتول سے حرمت ثابت ت | باب | ِضَاعِ | ب مَا يَحْرُمُ مِنَ الرَّ | [48] بَا |
| 183 | ہوتی ہے | | و | י, פי הי הי הי אליי בי | , |
| | ، کتنی دفعہ دووھ پینے سے حرمت ٹابت ہوتی ۔ | باب | مُ | َّابِ كَمْ رَضْعَةٌ تُحَرِّ | [49] بأ |
| 185 | <u>.</u> - | | | | |

| < 63 | 11 گرا ترتیب | المرابعة الم |
|---|---|--|
| 187 | باب: حس چیز سے رضاعت کاحق ادا ہوتا ہے؟ | [50] بَابِ مَا يُذْهِبُ مَذَمَّةَ الرِّضَاعِ |
| 188 | باب: رضاعت برایک عورت کی گواہی | [51] بَابِ شَهَادَةِ الْمَرْأَةِ الْوَاحِدَةِ عَلَى |
| | | الرَّضَاعِ |
| 189 | باب: بڑے آ دمی کی رضاعت کے لئے | [52] بَابِ فِيْ رَضَاعَةِ الْكَبِيْرِ |
| 190 | باب: حلالہ کرنے کی ممانعت | [53] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنِ النَّحْلِيلِ |
| 191 | باب: آ دمی پراپنے اہل کا نفقہ فرض ہے | [54] بَابِ فِي وُجُوبٍ نَفَقَةِ الرَّجُلِ عَلَى |
| | | أَهْلِهٖ |
| 192 | باب: عورتوں سے اچھا سلوک کرنا | [55] بَابِ فِي حُسْنِ مُعَاشَرَةِ النِّسَاءِ |
| 192 | باب: صغرتی میں والدین کالڑ کیوں کا نکاح کر دینا | [56] بَابِ فِي تَزْوِيجِ الصِّغَارِ إِذَا زَوَّجَهُنَّ |
| | | آبَاؤُ هُنَ |
| | طلاق کے بیان میں | ١٢٢٢ |
| | | |
| 194 | باب: طلاق کا شرعی طریقه | [1] بَابِ السُّنَّةِ فِي الطَّلاقِ |
| 194 195 | باب: طلاق کا شرعی طریقه باب: رجوع کرنا | [1] بَابِ السُّنَّةِ فِي الطَّلَاقِ [2] بَابِ فِي الرَّجْعَةِ |
| | | [2] بَابِ فِي الرَّجْعَةِ |
| 195 | باب: رجو <i>ع کر</i> نا | |
| 195 | باب: رجوع کرنا باب: نکاح سے پہلے طلاق نہ ہونے کا بیان | [2] بَابِ فِي الرَّجْعَةِ [3] بَابِ لَا طَلَاقَ قَبْلَ نِكَاحٍ |
| 195 196 | باب: رجوع کرنا باب: نکاح سے پہلے طلاق نہ ہونے کا بیان باب: تین طلاقیں دینے والے شوہر کے لئے ہوی | [2] بَابِ فِي الرَّجْعَةِ [3] بَابِ لَا طَلَاقَ قَبْلَ نِكَاحٍ [4] بَابِ مَا يُحِلُّ الْمَرْأَةَ لِزَوْجِهَا الَّذِي |
| 195 196 1 97 | باب: رجوع كرنا باب: نكاح سے پہلے طلاق نه ہونے كابيان باب: تين طلاقيں دينے والے شوہر كے لئے بيوى كيسے حلال ہوتى ہے؟ | [2] بَابِ فِي الرَّجْعَةِ [3] بَابِ لَا طَلَاقَ قَبْلَ نِكَاحٍ [4] بَـابِ مَـا يُـحِلُّ الْمَرْأَةَ لِزَوْجِهَا الَّذِي طَلَّقَهَا فَبَتَّ طَلَاقَهَا |
| 195 196 1 97 | باب: رجوع کرنا باب: نکاح سے پہلے طلاق نہ ہونے کا بیان باب: تین طلاقیں دینے والے شوہر کے لئے بیوی کیسے حلال ہوتی ہے؟ باب: عورت کوافتیاردینے کا بیان | [2] بَابِ فِي الرَّجْعَةِ [3] بَابِ لَا طَلَاقَ قَبْلَ نِكَاحٍ [4] بَابِ مَا يُحِلُّ الْمَرْأَةَ لِزَوْجِهَا الَّذِي طَلَّقَهَا فَبَتَّ طَلَاقَهَا [5] بَابِ فِي الْخِيَارِ |
| 195 196 197 198 | باب: رجوع کرنا باب: نکاح سے پہلے طلاق نہ ہونے کابیان باب: تین طلاقیں دینے والے شو ہر کے لئے بیوی کیسے ملال ہوتی ہے؟ باب: عورت کو اختیار دینے کا بیان باب: عورت کا اپنے شوہر سے طلاق ما تکنے کی | [2] بَابِ فِي الرَّجْعَةِ [3] بَابِ لَا طَلَاقَ قَبْلَ نِكَاحٍ [4] بَابِ مَا يُحِلُّ الْمَرْأَةَ لِزَوْجِهَا الَّذِي طَلَّقَهَا طَلَقَهَا فَبَتَّ طَلاقَهَا [5] بَابِ فِي الْخِيَارِ [6] بَابِ النَّهْيِ عَنْ أَنْ تَسْأَلَ الْمَرْأَةُ |
| 195 196 1 97 1 98 | باب: رجوع کرنا باب: نکاح سے پہلے طلاق نہ ہونے کا بیان باب: تین طلاقیں دینے والے شو ہر کے لئے ہوی باب: عورت کو اختیار دینے کا بیان باب: عورت کا اپنے شو ہر سے طلاق مائکنے کی باب: خلع کا بیان باب: خلع کا بیان | [2] بَابِ فِي الرَّجْعَةِ [3] بَابِ لَا طَلَاقَ قَبْلَ نِكَاحٍ [4] بَابِ مَا يُحِلُّ الْمَرْأَةَ لِزَوْجِهَا الَّذِي طَلَقَهَا فَبَتَّ طَلَاقَهَا وَبَتَ طَلَاقَهَا [5] بَابٍ فِي الْخِيَارِ [5] بَابٍ فِي الْخِيَارِ [6] بَابِ النَّهْيِ عَنْ أَنْ تَسْأَلَ الْمَرْأَةُ وَوْجَهَا طَلَاقَهَا |
| 195 196 197 198 199 | باب: رجوع کرنا باب: نکاح سے پہلے طلاق نہ ہونے کا بیان باب: تین طلاقیں دینے والے شو ہرکے لئے ہوی باب: عورت کو اختیار دینے کا بیان باب: عورت کا اپنے شو ہرسے طلاق ما تھنے کی باب: خلع کا بیان باب: خلع کا بیان باب: ظہار کے متعلق | [2] بَابِ فِي الرَّجْعَةِ [3] بَابِ لَا طَلَاقَ قَبْلَ نِكَاحٍ [4] بَابِ مَا يُحِعلُ الْمَوْأَةَ لِزَوْجِهَا الَّذِي طَلَقَهَا فَبَتَّ طَلَاقَهَا اللَّذِي طَلَقَهَا فَبَتَّ طَلَاقَهَا [5] بَابِ فِي الْخِيَادِ [6] بَابِ فِي الْخِيَادِ [6] بَابِ فِي الْخُلْعِ زَوْجَهَا طَلَاقَهَا [7] بَابِ فِي الْخُلْعِ [7] بَابِ فِي الْخُلْعِ [8] بَابِ فِي الْظُهَادِ [9] بَابِ فِي الْظُهَادِ [9] بَابِ فِي الْظُهَادِ [9] بَابِ فِي الْظُهَادِ [9] بَابِ فِي الظِّهَادِ [9] بَابِ فِي الْظِهَادِ [9] بَابِ فِي الْظِهَادِ [9] بَابِ فِي الْظِهَادِ [9] بَابِ فِي الْظِهَادِ [9] بَابِ فِي الْطَهَادِ [9] الْطَهَادِ إِلْ الْمُعَادِ الْطَهَادِ الْمَادِي الْطَهَادِ الْمَادِي الْطَهَادِ الْمَادِ الْمَادِي الْطَهَادِ الْمَادِ الْمَادِي الْطَهَادِ الْمَادِ الْمَادِي الْمُعْلِمُ الْمُلْعِلَاقِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمِلْعِلَاقِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمِلْعِلَاقِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمِلْعِلَاقِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمِلْعِلَاقِ الْمَادِ الْمَادِلُولُولِ الْمَادِ الْمَادِ الْمِلْعِلَاقِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ الْمَادِ |
| 195 196 197 198 199 199 200 | باب: رجوع کرنا باب: نکاح سے پہلے طلاق نہ ہونے کا بیان باب: تین طلاقیں دینے والے شو ہر کے لئے ہوی باب: عورت کو اختیار دینے کا بیان باب: عورت کا اپنے شو ہر سے طلاق مائکنے کی باب: خلع کا بیان باب: خلع کا بیان | [2] بَابِ فِي الرَّجْعَةِ [3] بَابِ لَا طَلَاقَ قَبْلَ نِكَاحٍ [4] بَابِ مَا يُحِلُّ الْمَوْأَةَ لِزَوْجِهَا الَّذِي طَلَقَهَا فَبَتَّ طَلَاقَهَا الَّذِي طَلَقَهَا فَبَتَّ طَلَاقَهَا [5] بَابِ فِي الْخِيَادِ [6] بَابِ فِي الْخِيَادِ رَوْجَهَا طَلَاقَهَا لَا الْمَوْأَةُ وَالْحَيْدِ وَالْحَيْدِ وَالْحَيْدِ وَالْخَيْدِ وَالْحَيْدِ وَالْمَالِقَالَ الْمَرْأَةُ وَلَا لَا لَمْرَالَةً وَاللَّهِ وَالْمُعْتَقَلَقُولُ وَالْمَلِيْدِ وَالْمَالِقَ وَالْمَلَاقِ وَالْمَالِقَالِقَ الْمُعْتَى وَلَا لَهُ وَالْمَلِيْدِ وَلَى الْحَيْدِ وَالْمَالِقَ وَالْمَاقِ وَالْمَاتِ وَالْمَلَاقِ وَالْمَاقِ وَالْمُولِ وَالْمَاقِ وَالْمُعْلَى وَالْمُعْلِمُ وَالْمَاقِ وَالْمَاقِ وَالْمُعْلَى وَالْمَاقِ وَالْمُعْلَى وَالْمَاقِ وَالْمَاقِ وَالْمُعْلَى وَالْمَاقِ وَالْمُعْلَاقِ وَالْمَاقِ وَالْ |

| < GE | 12 کو ترتیب | حر يُتَنَالَوْنِينَ كَالْحُولُ |
|---|--|--|
| | باب: حامله عورت کی عدت جس کا شو ہر فوت ہو گیا | [11] بَابِ فِي عِذَّةِ الْحَامِلِ الْمُتَوَفِّي عَنْهَا |
| 205 | ہواور مطلقہ کی عدت | زَوْجُهَا وَالْمُطَلَّقَةِ |
| 207 | باب: عورت کا شوہر کے لئے سوگ منا نا | [12] بَابِ فِي إِحْدَادِ الْمَرْأَةِ عَلَى الزَّوْجِ |
| | باب: عورت کا ایام عدت میں آراستہ ہونے کی | [13] بَابِ النَّهْ يِ لِلْمَرْأَةِ عَنِ الزِّينَةِ فِي |
| 209 | ممانعت | الْعِدَّةِ |
| 209 | باب: بیره عورت کا با هر نکلنا | [14] بَابِ خُرُوجِ الْمُتَوَفِّي عَنْهَا زَوْجُهَا |
| | باب: اس لونڈی کے اختیاردینے کا بیان جو غلام | [15] بَابِ فِي تَخْيِيرِ الْأَمَةِ تَكُونُ تَخْتَ |
| 211 | کے نکاح میں ہو پھر آ زاد کر دی جائے | الْعَبْدِ فَتُعْتَقُ |
| 213 | باب: بچے کو والدین کے درمیان اختیار دینا کابیان | [16] بَابِ فِي تَخْيِيرِ الصَّبِيِّ بَيْنَ أَبُوَيْهِ |
| 214 | باب: کونڈی کی طلاق کے متعلق | [17] بَابِ فِيْ طَلَاقِ الْأَمَة |
| 215 | باب: لونڈی کی استبراء کے متعلق | [18] بَابِ فِي اسْتِبْرَاءِ الْأَمَةِ |
| | حدوداللہ کے بیان میں | ١٣كتاب الحدود |
| | | |
| 216 | | |
| 216 217 | باب: تین چیزوں ہے قلم اٹھا دی گئی ہے | [1] بَابِ رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلاثَةٍ |
| | باب: تنین چیزوں ہے قلم اٹھا دی گئی ہے باب: سس جرم کی بنا پرمسلمان کاقتل جائز ہے | [1] بَابِ رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلاثَةٍ [2] بَابِ مَا يَحِلُّ بِهِ دَمُ مُسْلِمٍ |
| | باب: تین چیزوں ہے قلم اٹھا دی گئی ہے | [1] بَابِ رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلاثَةٍ |
| 217 | باب: تین چیزوں نے قلم اٹھادی گئی ہے باب: کس جرم کی بنا پر مسلمان کاقتل جائز ہے: باب: اس چور کے متعلق چوری کے بعد جسے مال | [1] بَاب رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلاثَةٍ [2] بَاب مَا يَحِلُّ بِهِ دَمُ مُسْلِمٍ [3] بَـاب السَّارِقِ يُوْهَبُ مِنْهُ السَّرِقَةُ بَعْدَ |
| 217 218 | باب: تین چیزوں نے قلم اٹھا دی گئی ہے باب: کس جرم کی بنا پر مسلمان کاقتل جائز ہے: باب: اس چور کے متعلق چوری کے بعد جسے مال بخش دیا جائے | [1] بَاب رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلاثَةِ [2] بَاب مَا يَحِلُّ بِهِ دَمُ مُسْلِم [3] بَـاب السَّارِقِ يُوْهَبُ مِنْهُ السَّرِقَةُ بَعْدَ مَا سَرَقَ |
| 217 218 218 | باب: تین چیزوں نے قلم اٹھا دی گئی ہے باب: سس جرم کی بنا پر مسلمان کا قتل جائز ہے: باب: اس چور کے متعلق چوری کے بعد جسے مال بخش دیا جائے باب: سمتنی مقدار میں ہاتھ کا ٹا جائے | [1] بَاب رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلاثَةِ [2] بَاب مَا يَحِلُّ بِهِ دَمُ مُسْلِم [3] بَـاب السَّارِقِ يُوْهَبُ مِنْهُ السَّرِقَةُ بَعْدَ مَا سَرَقَ [4] بَاب مَا تُقْطَعُ فِيهِ الْيَدُ |
| 217 218 218 219 | باب: تین چیزوں نے قلم اٹھا دی گئی ہے باب: سس جرم کی بنا پر مسلمان کا قتل جائز ہے: باب: اس چور کے متعلق چوری کے بعد جسے مال بخش دیا جائے باب: کتنی مقدار میں ہاتھ کا ٹا جائے باب: حد کے متعلق بادشاہ کے ساسنے سفارش کرنا | [1] بَاب رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلاثَةِ [2] بَاب مَا يَحِلُّ بِهِ دَمُ مُسْلِم [3] بَاب السَّارِقِ يُوْهَبُ مِنْهُ السَّرِقَةُ بَعْدَ [4] بَاب مَا تُقْطَعُ فِيهِ الْيَدُ [5] بَاب الشَّفَاعَةِ فِي الْحَدِّ دُونَ السُّلْطَانِ |
| 217 218 218 219 220 | باب: تین چیزوں نے قلم اٹھا دی گئی ہے باب: کس جرم کی بنا پر مسلمان کاقل جائز ہے: باب: اس چور کے متعلق چوری کے بعد جسے مال بخش دیا جائے باب: کتنی مقدار میں ہاتھ کا ٹا جائے باب: حد کے متعلق بادشاہ کے سامنے سفارش کرنا باب: چوری کا افر ارکرنے والے کے متعلق | [1] بَاب رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلاتَةِ [2] بَاب مَا يَحِلُّ بِهِ دَمُ مُسْلِم [3] بَاب السَّارِقِ يُوْهَبُ مِنْهُ السَّرِقَةُ بَعْدَ [4] بَاب مَا تُقْطَعُ فِيهِ الْيَدُ [5] بَاب الشَّفَاعَةِ فِي الْحَدِّ دُونَ السُّلْطَانِ [6] بَاب المُعْتَرِفِ بِالسَّرِقَةِ |
| 217 218 218 219 220 221 | باب: تین چیزوں نے قلم اٹھا دی گئی ہے باب: کس جرم کی بنا پر مسلمان کاقل جائز ہے باب: اس چور کے متعلق چوری کے بعد جے مال بخش دیا جائے باب: کتنی مقدار میں ہاتھ کا ٹا جائے باب: حد کے متعلق بادشاہ کے سامنے سفارش کرنا باب: چوری کا اقرار کرنے والے کے متعلق باب: تھاوں کی چوری ہے ہاتھ نے کا ٹا جائے | [1] بَاب رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلاتَةِ [2] بَاب مَا يَحِلُ بِهِ دَمُ مُسْلِم [3] بَاب السَّارِقِ يُوْهَبُ مِنْهُ السَّرِقَةُ بَعْدَ [4] بَاب الشَّفَاعَةِ فِي الْبَدُ [5] بَاب الشَّفَاعَةِ فِي الْحَدِّ دُونَ السُّلْطَانِ [6] بَاب الشُّفَاعَةِ فِي السَّرِقَةِ [7] بَاب مَا لَا يُقْطَعُ فِيهِ مِنَ الثِّمَارِ |
| 217 218 218 219 220 221 223 | باب: تین چیزوں نے قلم اٹھا دی گئی ہے باب: کس جرم کی بنا پر مسلمان کاقل جائز ہے باب: اس چور کے متعلق چوری کے بعد جے مال باب: کتنی مقدار میں ہاتھ کا ٹا جائے باب: حد کے متعلق بادشاہ کے سامنے سفارش کرنا باب: چوری کا افر ارکرنے والے کے متعلق باب: میچلوں کی چوری ہے ہاتھ نہ کا ٹا جائے باب: وہ چور جن کا ہاتھ نہ کا ٹا جائے | [1] بَاب رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلاتَةِ [2] بَاب مَا يَحِلُ بِهِ دَمُ مُسْلِم [3] بَاب السَّارِقِ يُوْهَبُ مِنْهُ السَّرِقَةُ بَعْدَ [4] بَاب الشَّفَاعَةِ فِي الْبَدُ [5] بَاب الشَّفَاعَةِ فِي الْحَدِّ دُونَ السُّلْطَانِ [6] بَاب الشُّفَاعَةِ فِي السَّرِقَةِ [7] بَاب مَا لَا يُقْطَعُ فِيهِ مِنَ الثِّمَارِ [8] بَاب مَا لَا يُقْطَعُ مِنَ السُّرَّاقِ |
| 217 218 218 219 220 221 223 223 | باب: تین چیزوں نے قلم اٹھا دی گئی ہے باب: کس جرم کی بنا پر مسلمان کاقل جائز ہے باب: اس چور کے متعلق چوری کے بعد جے مال باب: کتنی مقدار میں ہاتھ کا ٹا جائے باب: حد کے متعلق بادشاہ کے سامنے سفارش کرنا باب: چوری کا اقرار کرنے والے کے متعلق باب: کھلوں کی چوری ہے ہاتھ نہ کا ٹا جائے باب: وہ چورجن کا ہاتھ نہ کا ٹا جائے باب: شراب کی حد کے متعلق | [1] بَاب رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلاتَةِ [2] بَاب مَا يَحِلُ بِهِ دَمُ مُسْلِم [3] بَاب السَّارِقِ يُوهَبُ مِنْهُ السَّرِقَةُ بَعْدَ مَا سَرَقَ [4] بَاب مَا تُقْطَعُ فِيهِ الْيَدُ [5] بَاب الشَّفَاعَةِ فِي الْحَدِّ دُونَ السُّلْطَانِ [6] بَاب الشُّفَاعَةِ فِي الْحَدِّ دُونَ السُّلْطَانِ [6] بَاب الْمُعْتَرِفِ بِالسَّرِقَةِ [7] بَاب مَا لا يُقْطَعُ فِيهِ مِنَ الشِّمَادِ [8] بَاب مَا لا يُقْطَعُ مِنَ السُّرَّاقِ |

| < @? | المراز ترتيب | الكالم المالك ال |
|----------|--|--|
| 225 | ب: عام گناہوں کی سزا کا بیان | ł |
| 225 | ب: زنا کا اقرار کرنے کابیان | [12] بَابِ الاعْتِرَافِ بِالزِّنَا |
| 229 | ب: وہ مخص جوا قرار کرے پھر جائے | [13] بَابِ الْمُعْتَرِفِ يَرْجِعُ عَنِ اعْتِرَافِهِ |
| | ب: رجم ہونے والے کے لئے گڑھا کھودنے کا | [14] بَابِ الْحَفْرِ لِمَنْ يُرَادُ رَجْمُهُ |
| 229 | بيان | |
| | ب: اہل کتاب کے درمیان فیصلہ کرنا جب وہ | [15] بَابِ فِي الْحُكْمِ بَيْنَ أَهْلِ الْكِتَابِ إِذَا الْمِ |
| 231 | مسلمان حاکموں کے پاس فیصلہ لائیں | تَحَاكُمُوا إِلَى خُكَّامِ الْمُسْلِمِينَ |
| 232 | ب: شادی شده زانی کی حد | |
| | ب: حاملة عورت جب زنا كااعتراف كرے اس كا | [17] بَابِ الْحَامِلِ إِذَا اعْتَرَفَتْ بِالزِّنَا إِم |
| 234 | بيان | |
| | ب: زانی غلاموں پر بادشاہوں کے علاوہ ان کے | [18] بَابِ فِي الْمَهَالِيكِ إِذَا زَنَوْا يُقِيمُ إِم |
| 235 | مالکوں کے حد جاری کرنے کا بیان | سَادَاتُهُمْ عَلَيْهِمْ الْحَدَّ دُوْنَ السُّلْطَانِ |
| | ب: آيت ﴿أَوْيَجُعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِينًالا﴾ | [19] بَابِ فِيْ تَفْسِيْرِ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى : ﴿ أَوْ |
| 236 | ی تفییر | يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا﴾ |
| | ب: وہ مخض جواپی بیوی کی لونڈی سے زنا کرنے | |
| 237 | واليكا بيان | |
| 238 | ب: حدجس پر نافد کی جائے وہ اس کے لئے کفارہ ہے | [21] بَابِ الْحَدُّ كَفَّارَةٌ لِمَنْ أُقِيْمَ عَلَيْهِ |
| | نذرول كابيان | ١٤ كتاب النذور والايمان |
| 222 | | |
| 239 | ب: نذریوری کرنے کابیان دو برسور | |
| 240 | ب: نذر کا کفارہ دینے کا بیان کی مند ناز مدینہ میں نہیں ہو | |
| 241 | ب: اللَّه كَى نافر مانى ميں نذر نه ہونے كابيان حيد شخص : له وسر مدرز روسہ | |
| | ب: جس تخض نے بیت المقدیں میں نماز پڑھنے کی دروز میں میں میں زور میں ایروز | |
| a | کی نذر مانی ہوتو اسے مکہ میں نماز پڑھنا کافی وریت | الْمَقْدِسِ أَيُّجْزِئُهُ أَنْ يُصَيِّىَ بِمَكَّةَ |
| 242 | ہونے کابیان؟ | |

| < GY | 14 گراگر ترتیب | المراكبين الكالمان المراكب |
|---|--|--|
| 242 | باب: نذرکی ممانعت | [5] بَابِ النَّهْيِ عَنِ النَّذْرِ |
| 242 | باب: اللہ کے علاوہ کسی اور کی قشم کھانے کی ممانعت | [6] بَابِ النَّهْيِ أَنْ يَحْلَفَ بِغَيْرِ اللَّهِ |
| 243 | باب: قتم مین ان شاءاللهٔ کهنه کابیان | [7] بَابِ فِي الاسْتِثْنَاءِ فِي الْيَمِينِ |
| 243 | باب: لفظ مشم مجی قتم ہی ہے | [8] بَابِ الْقَسَمُ يَمِينٌ |
| | باب: جو مخص قتم کھائے پھر کسی اور کام میں اس سے | [9] بَابِ مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِيْنِ فَرَأَى |
| 244 | زیادہ بھلائی د کیھیے · | غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا |
| | باب: ال محخص کے متعلق جس کے ذمہ غلام یا | [10] بَابِ إِذَا كَانَ عَلَى الرَّجُلِ رَقَبَةٌ مُؤْمِنَةٌ |
| 245 | لون ڈی آ ز اد کرنا ہو | |
| | باب: ظاہری ہات کے خلاف قشم کھانے والے | [11] بَـاب الـرَّجُـل يَـحْلِفُ عَلَى الشَّيْءِ |
| 245 | آ دمی کا بیان | وَهُوَ يُورِّكُ عَلَى يَمِينِهِ |
| | باب: الله کے جس نام کی قتم کھائے اسے لازمی بورا | [12] بَابِ بِأَيِّ أَسْمَاءِ اللَّهِ حَلَفْتَ لَزِمَكَ |
| 246 | کرنے کا بیان | |
| | | |
| | | |
| | ویت کے بیان می <i>ں</i> | ١٥ كتاب الديات |
| 247 | ویت کے بیان میں ہاب: عمد آقمل کرنے کی دیت کا بیان | 10 بَابِ الدِّيَةِ فِي قَتْلِ الْعَمْدِ |
| 247 248 | ہاب: عمدائل کرنے کی دیت کا بیان ہاب: قسامت کا بیان | [1] بَابِ الدِّيَةِ فِي قَتْلِ الْعَمْدِ |
| | باب: عداقل کرنے کی دیت کابیان | [1] بَابِ الدِّيَةِ فِي قَتْلِ الْعَمْدِ |
| | ہاب: عمدائل کرنے کی دیت کا بیان ہاب: قسامت کا بیان | [1] بَابِ اللِّيَةِ فِي قَتْلِ الْعَمْدِ [2] بَابِ فِي الْقَسَامَةِ |
| 248 | ہاب: عمدائل کرنے کی دیت کا بیان ہاب: قسامت کا بیان | [1] بَابِ اللِّيَةِ فِي قَتْلِ الْعَمْدِ [2] بَابِ فِي الْقَسَامَةِ |
| 248 250 | باب: عمد آقل کرنے کی دیت کا بیان باب: قسامت کا بیان باب: مردوں اور عورتوں کے درمیان قصاص کا بیان | [1] بَابِ الدِّيَةِ فِي قَتْلِ الْعَمْدِ [2] بَابِ فِي الْقَسَامَةِ [3] بَابِ الْقَوَدِ بَيْنَ الرِّ جَالِ وَالنِّسَاءِ |
| 248250251 | باب: عمد اقتل کرنے کی دیت کا بیان باب: قسامت کا بیان باب: مردوں اور عورتوں کے درمیان قصاص کا بیان باب: قصاص کے طریقہ کا بیان | [1] بَابِ اللِّيَةِ فِي قَتْلِ الْعَمْدِ [2] بَابِ فِي الْقَسَامَةِ [3] بَابِ الْقَوَدِ بَيْنَ الرِّ جَالِ وَالنِّسَاءِ [4] بَابِ كَيْفَ الْعَمَلُ فِي الْقَوَدِ |
| 248250251251 | باب: عمد اقتل کرنے کی دیت کا بیان باب: قسامت کا بیان باب: مردوں اور عورتوں کے درمیان قصاص کا بیان باب: قصاص کے طریقہ کا بیان باب: کافر کے بدلہ میں سلمان کوتل نہ کرنے کا بیان باب: بیٹے اور باپ کے درمیان قصاص کا بیان باب: مالک اور غلام کے درمیان قصاص کا بیان | [1] بَاب الدِّيَةِ فِي قَتْلِ الْعَمْدِ [2] بَاب فِي الْقَسَامَةِ [3] بَاب الْقَوَدِ بَيْنَ الرِّ جَالِ وَالنِّسَاءِ [4] بَاب كَيْفَ الْعَمَلُ فِي الْقَوَدِ [5] بَاب كَيْفَ الْعَمَلُ فِي الْقَوَدِ |
| 248250251251252 | باب: عمر آقل کرنے کی دیت کا بیان باب: قسامت کا بیان باب: مردوں اور عور توں کے درمیان قصاص کا بیان باب: قصاص کے طریقہ کا بیان باب: کافر کے بدلہ میں سلمان کو آل نہ کرنے کا بیان باب: بیٹے اور باپ کے درمیان قصاص کا بیان باب: مالک اور غلام کے درمیان قصاص کا بیان باب: اپنے (عزیز کے) قمل کو معاف کرنے والے | [1] بَاب الدِّيَةِ فِي قَتْلِ الْعَمْدِ [2] بَاب فِي الْقَسَامَةِ [3] بَاب الْقَوَدِ بَيْنَ الرِّ جَالِ وَالنِّسَاءِ [4] بَاب كَيْفَ الْعَمَلُ فِي الْقَوَدِ [5] بَاب لَا يُقْتَلُ مُسْلِمٌ بِكَافِرِ [6] بَاب فِي الْقَوَدِ بَيْنَ الْوَالِدِ وَالْوَلَدِ |
| 248250251251252 | باب: عمد اقتل کرنے کی دیت کا بیان باب: قسامت کا بیان باب: مردوں اور عورتوں کے درمیان قصاص کا بیان باب: قصاص کے طریقہ کا بیان باب: کافر کے بدلہ میں سلمان کوتل نہ کرنے کا بیان باب: بیٹے اور باپ کے درمیان قصاص کا بیان باب: مالک اور غلام کے درمیان قصاص کا بیان | [1] بَاب الدِّيَةِ فِي قَتْلِ الْعَمْدِ [2] بَاب فِي الْقَسَامَةِ [3] بَاب الْقَوَدِ بَيْنَ الرِّ جَالِ وَالنِّسَاءِ [4] بَاب كَيْفَ الْعَمَلُ فِي الْقَوَدِ [5] بَاب لِا يُقْتَلُ مُسْلِمٌ بِكَافِرِ [6] بَاب فِي الْقَودِ بَيْنَ الْوَالِدِ وَالْوَلَدِ [7] بَاب فِي الْقَودِ بَيْنَ الْوَالِدِ وَسَيِّدِم |

الكالعابي الكالعابي الكالم المالي الكالم المالي الكالم المالي الكالم الك

| | | المُسْلِمَةِ |
|--------------|---|---|
| 254 | باب: خورکش کی وعید کابیان | [10] بَابِ التَّشْدِيدِ عَلَى مَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ |
| 255 | ہاب: چاندی سے دیت دینے کی مقدار کا بیان | [11] بَابِ كَمِ الْذِّيَةُ مِنَ الْوَرِقِ وَاللَّهَبِ |
| 256 | باب: اُونٹوں سے دیت کی گنتی کا بیان | [12] بَابِ كَمِ الدِّيَةُ مِنَ الْإِبِلِ |
| 258 | باب: فلطی سے مارے گئے شخص کی دیت کا بیان | [13] بَابِ كَيْفَ الْعَمَلُ فِي أَخْذِ دِيَةِ الْخَطَلِ |
| 258 | باب: غلاموں کے درمیان قصاص کا بیان | [14] بَابِ الْقِصَاصِ بَيْنَ الْعَبِيدِ |
| 259 | باب: انگلیوں کی دیت کا بیان | [15] بَابِ فِي دِيَةِ الْأَصَابِعِ |
| | باب: موضحہ (ہڈی کو ننگا کرنے والے زخم) کی | [16] بَابِ فِي الْمُوضِعَةِ |
| 260 | ديت كابيان | |
| 260 | باب: دانتوں کی دیت کا بیان | [17] بَابِ فِي دِيَةِ الْأَسْنَانِ |
| | باب: اس مخض کے متعلق جس نے کسی کا ہاتھ کا ٹا ۔ | [18] بَابِ فِيمَ نْ عَضَّ يَدَ رَجُلٍ فَانْتَزَعَ |
| 261 | اوراس نے اپناہاتھ تھینچ لیا | الْمَعْضُوضُ يَدَهُ |
| 261 | باب: جانور کے زخم کا تاوان نہ ہونے کا بیان | [19] بَابِ الْعَجْمَاءِ جُرْحُهَا جُبَارٌ |
| 262 | باب: پیٹ کے بچے کی دیت کابیان | [20] بَابِ فِي دِيَةِ الْجَنِينِ |
| | باب: خطا سے مارے گئے شخص کی ویت کے ذمتہ | [21] بَابِ دِيَةِ الْخَطْإِ عَلَى مَنْ هِيَ |
| 263 | وار کابیان | |
| | باب: جس کے عداً مارے جانے کا شبہ ہواس کی | [22] بَابِ الدِّيَةِ فِي شِبْهِ الْعَمْدِ |
| 265 | ديت كابيان | |
| | باب: کسی کے گھر میں بغیراجازت جھا نکنے والے | [23] بَـاب مَـنْ اطَّـلَـعَ فِـى دَارِ قَوْمٍ بِغَيْرِ |
| 265 | فمخض كابيان | ٳۮ۫ڹؚۿؚؠؙ |
| 2 6 6 | باب: قریش کو باندھ کر مارنے کی ممانعت کابیان | [24] بَابَ لَا يُقْتَلُ قُرَشِيٌّ صَبْرًا |
| | باب: کمی شخف کوئسی غیر کے جرم میں نہ پکڑنے کا | [25] بَابَ لَا يُؤْخَذُ أَحَدٌ بِجِنَايَةِ غَيْرِ هِ |
| 267 | بيان | |

| | • | • |
|-----|---|--|
| ₹ | 16 کر ترنیب | الكالغين الكالقان |
| | جہاد کے بیان میں | ١٦٢٦ |
| 269 | باب: الله کی راه میں جہاد کرنا افضل عمل ہے | [1] بَابِ الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَفْضَلُ |
| | | ٱلْأَعْمَالِ |
| 270 | باب: جهاد کی فضیلت باب: افضل جهاد کابیان | [2] بَابِ فَضْلِ الْجِهَادِ |
| 271 | باب: افضل جهاد كابيان | [3] بَابِ أَيُّ الْجِهَادِ أَفْضَلُ |
| 271 | باب: اعمال میں افضل عمل کابیان | [4] بَابِ أَيُّ الْأَعْمَالِ أَفْضَلُ |
| 272 | ہاب: اونٹنی کا دودھ اترنے تک جہاد کرنے کا بیان | [5] بَابِ مَنْ قَاتَلَ فِي سَبِيلِ اللهِ فُوَاقَ نَاقَةٍ |
| | باب: جو مخص الله کے راہتے میں اپنا گھوڑا لے کر | [6] بَساب أَفْضَلُ النَّاسِ رَجُلٌ مُمْسِكٌ |
| | موجودرہے اس کا باتی لوگوں میں سے افضل | بِرَأْسِ فَرَسِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ |
| 272 | ہونے کا بیان | |
| | باب: الله کی راہ میں آدی کے کھڑے ہونے کی | [7] بَـاب فِي فَضْلِ مَقَامِ الرَّجُلِ فِي سَبِيلِ |
| 274 | نضيلت كابيان | الله |
| | باب: الله کے راستہ میں گردآ لود ہونے کی فضیلت | [8] بَابِ فِي فَضْلِ الْغُبَادِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ |
| 274 | كابيان | ' |
| | باب: الله کے راستہ میں ایک مرتبہ سے یا شام نکلنے کی | [9] بَابِ الْـُغَدُورَةِ وَالرَّوْحَةِ فِي سَبِيلِ اللهِ |
| 275 | نضيلت كابيان | عَزَّ وَجَلَّ |
| | باب: الله کے راستہ میں ایک ون روزہ رکھنے کا | [10] بَـاب مَـنْ صَـامَ يَـوْمًا فِي سَبِيلِ اللهِ |
| 275 | بيان | عَزَّوَجَلَ |
| | باب: الله كي راه مين پهره دينے كے ليے جاگئے | [11] بَـاب فِي الَّذِي يَسْهَرُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ |

دالے شخص کا بیان

عَزَّ وَجَلَّ كَايِان [13] بَابِ مَنْ أَنَّفَقَ زَوْجَيْنِ مِنْ مَالٍ فِي إب: الله كراسة مين اپنے مال سے جوڑا خرج

سَبِيلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ

باب: الله عزوجل كى راه مين خرج كرنے كى فضيلت

كرنے والے مخص كابيان

276

277

278

| ₹@* | 17 گرا ترتیب | May continue Va |
|--------------|--|--|
| 279 | باب: تیراندازی کی فضیلت اوراس کا حکم کابیان | |
| 210 | | [14] بَابِ فِي فَضْلِ الرَّمْيِ وَالْأَمْرِ بِهِ |
| | باب: الله کے راستہ میں زخمی ہونے والے مخص کی | [15] بَـاب فِـى فَضْلِ مَنْ جُرِحَ فِى سَبِيلِ |
| 280 | فضيلت كابيان | اللهِ جُرْحًا |
| | باب: الله سے شہادت طلب کرنے والے شخص کی | [16] بَابِ فِيمَنْ سَأَلَ اللَّهَ الشَّهَادَةَ |
| 280 | فضيلت كابيان | |
| 281 | باب: شهید کی فضیلت کابیان | [17] بَابِ فِي فَضْلِ الشَّهِيدِ |
| 281 | باب: شہید کا دنیامیں دوبارہ جانے کی خواہش کرنا | [18] بَابِ مَا يَتَمَنَّى الشَّهِيدُ مِنَ الرَّجْعَةِ |
| | | إِلَى الدُّنْيَا |
| 282 | باب: شهداء کی روحول کا بیان | [19] بَابِ أَرْوَاحِ الشُّهَدَاءِ |
| 283 | باب: الله کے راستہ میں قتل ہونے کی فضیلت | [20] بَابِ فِي صِفَةِ الْقَتْلَى فِي سَبِيلِ اللَّهِ |
| | باب: اس شخص کے متعلق جواللہ کے راستہ میں صبر | [21] بَابِ مَنْ قَاتَلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ صَابِرًا |
| 284 | اور نیک نیتی سے مارا جائے | مُحْتَسِبًا |
| 285 | باب: شہداء میں شار کئے جانے والے لوگوں کا بیان | [22] بَابِ مَا يُعَدُّ مِنَ الشُّهَدَاءِ |
| | باب: نبی طفی آیا کے اصحاب کو غزوات میں پہنچنے | [23] بَـاب مَـا أَصَابَ أَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ |
| 286 | والےمصائب کا بیان | فِي مَغَاذِيهِمْ مِنَ الشِّلَّةِ |
| | باب: جہاد کرتے ہوئے آ دمی نے جس کی نیت کی | [24] بَابِ مَنْ غَزَا يَنْوِي شَيْئًا فَلَهُ مَا نَوَى |
| 286 | وہی اسے ملے گا | |
| 287 | ا باب: جہاد دوقتم کے ہیں | [25] بَابِ الْغَزْوِ غَزْوَانِ |
| 287 | باب: الشخص کا بیان جومر گیااور جهاد نه کیا | [26] بَابِ فِيمَنْ مَاتَ وَلَمْ يَغْزُ |
| | باب: غازی کے لیے سامان تیار کرنے والے مخص | [27] بَابِ فِي فَضْلٍ مَنْ جَهَّزَ غَازِيًّا |
| 288 | كى فضيلت كابيان | |
| 289 | باب: جہاد سے بیجھے رہنے کے عذر کا بیان | [28] بَابِ الْعُذْرِ فِي التَّخَلُّفِ عَنِ الْجِهَادِ |
| 2 8 9 | باب: بحری جهاد کی فضیلت کا بیان | [29] بَابِ فِي فَضْلِ غُزَاةِ الْبَحْرِ |
| | باب: جہاد میں مردوں کے ساتھ عورتوں کے شریک | [30] بَابِ فِي النِّسَاءِ يَغْزُونَ مَعَ الرِّجَالِ |
| 290 | ہونے کا بیان | |

| < @* | ترتيب | 18 | | ই তি তি কি | |
|------|-----------------------|---|-------------------------|-------------------------------|-----------------|
| | ض بيويوں كو جہاد ميں | ۔۔۔۔۔۔۔ باب: نبی مُسِطِّعَاتِیا کے اپنی بع | | اب فِي خُورُوجِ النَّبِيّ | |
| 291 | | لے جانے کا بیان | 1 | ع يُهِ فِي الْغَزْوِ | |
| | سرحد کی حفاظت کرنے | باب: ایک دن اور رات [.] | | ب فَضْلٍ مَنْ رَابَطَ يَوْ | |
| 291 | , کابیان | واليفخص كى فضيلت | | , | |
| | نے ہوئے مرجانے والے | باب: سرحد کی حفاظت کریے | فَ مُرَابِطًا | ب فِيْ فَضْلِ مَنْ مَاتَ | [33] بَا |
| 292 | ين | شخص کی فضیلت کا بیا | : | | |
| 293 | خيلت كابيان | باب: جهاد مین گھوڑوں کی ف | سَبِيلِ اللَّهِ | اب فَضْلِ الْخَيْلِ فِي | [34] بَا |
| 293 | ے کا بیان | باب: التجھے اور برے گھوڑ۔ | | باب مَا يُسْتَحَبُّ مِ | |
| | | | | | يُكْر |
| 294 | نت لے جانے کا بیان | باب: (گھوڑ دوڑ میں) سبة | | اب فِي السَّبْقِ | [36] بَـ |
| 295 | بيان | ہاب: گھوڑے دوڑانے کا | | اب فِي رِهَانِ الْخَيْلِ | |
| 296 | ہاتھ سے جہاد کرنا | باب: مشركين سے زبان و | | باب فِي جِهَادِ الْمُشْ | |
| | | | | يَدِ | وَا لْمُ |
| | لوگ ہمیشہ حق کے لئے | باب: اس امت کے پھھا | أمِنْ هَذِهِ الْأُمَّةِ | اب لا تَـزَالُ طَـائِفَةُ | [39] بَـ |
| 296 | | لڑتے رہیں گے | İ | تِلُونَ عَلَى الْحَقِّ | يُقَا |
| 297 | • | باب: خارجیوں کوتل کرنا | <u>چ</u> | اب فِي قِتَالِ الْخَوَارِ | [40] |
| | ِکا بی ا ن | <u>_</u> | ـير | ١٧١٧ | |
| | کہ میری امت کوضح کے | باب: نبی طنفی میزان کی دعا | فورهَا | ب بَارِكْ لِأُمَّتِي فِي بُكُ | [1] کاد |
| 299 | | کام میں برکت د_ | | | , |
| 300 | | ۔ باب: جمعرات کے دن سفر | لْخَمِيسِ | ب فِي الْخُرُوجِ يَوْمَ ا | [2]با |
| 300 | باسلوک کرنے کا بیان | باب: لوگوں کے ساتھ اچھ | | ب ب فِي حُسْنِ الصَّحَا | |
| 301 | ب اورلشکروں کا بیان | باب: بهتر ساتھیوں دستور | 1 . | اب فِي خَيْرِ الْأَصْ | |
| | | | | لُجُيُوشِ | |
| 302 |) کووصیت کرنے کا بیان | باب: امام کاجهادی دستور | السَّرَايَا | ب وَصِيَّةِ الْإَمَامِ فِي ا | |
| | | | 1 | | |

المُتَانَ الدَّاتِينَ الْكَالِينِينَ الْكَالِينِينَ یاں: وشمن سے ملنے کی تمنیا نہ کرنے کا بیان 302 رة القَاءَ الْعَدُونِ الْعَدُونِ الْعَاءَ الْعَدُونِ ····رِيانِ لا تَتَمَنَّوْ الْقَاءَ الْعَدُونِ یاب: لڑائی کے وقت دعا کرنے کا بیان 303 [7] بَابِ فِي الدُّعَاءِ عِنْدَ الْقِتَال باب: لڑائی ہے بہلے اسلام کی دعوت دینے کا بیان 303 [8] بَابِ فِي الدَّعْوَةِ إِلَى الْإِسْكَامِ قَبْلَ الْقِتَال باب: وثمن برحمله كرنے كابيان 306 روم.... يَابِ الْإِغَارَةِ عَلَى الْعَدُقِ ماب: نی میشیکی کے اس تول کے موافق لڑائی کرنا [10] بَابِ فِي الْقِتَالِ عَلَى قَوْلِ لَا إِلَّهَ إِلَّا کہ مجھے حکم ہوا ہے کہ لوگوں سے لڑوں حتی کہ 42 111 وه "لا اله الا الله" كدوس" 306 باب: "لا اله الا الله" كاقراركرنے والے مخص [11] بَاب لا يَحِلُّ دَمُ رَجُل يَشْهَدُ أَنَّ لا إِلَهَ كاخون حلال نه ہونے كابيان 307 إِلَّا اللَّهُ باب: نبي منظر المنظمة على المسلوة جامعة "كابيان 308 [12] بَابِ فِي بَيَانَ قَوْلِ النَّبِيِّ عَلَيَّ الصَّلاةُ حَامِعَةٌ باب: مشورہ دینے والا امین ہے 308 [13]..... يَابِ الْمُستَشَارُ مُؤْتَمَنّ باب: لڑائی کے دھوکہ ہونے کا بیان 309 [14] بَابِ فِي الْحَرْبِ خُدْعَةٌ باب: شعار كے متعلق 309 15٦..... بَابِ الشِّعَارِ باب: نبی مصلی کا فرمان: چرے مجر حاکم کا [16] بَسَابِ فِي قَوْلِ النَّبِي اللَّهِ شَسَاهَتِ 310 ه و و و اله حده بهاك ماب: نی مطاعظ کی بیعت کرنے کا بیان 310 [17] بَابِ فِي بَيْعَةِ النَّبِيِّ اللَّهِيَّ باب: جنگ سے نہ بھا گئے پرلوگوں سے بیعت لینے [18] بَابِ فِي بَيْعَةِ أَنْ لَا يَفِرُ وا 311 ماب: خنرق کھودنے کے متعلق 312 191 يَابِ فِي حَفْرِ الْخَنْدَقِ باب: نبي مطفي و المحمد من داخل مون كى كيفيت [20] بَابِ كَيْفَ دَخَلَ النَّبِيُّ عِلَيْهُ مَكَّةً 313 ا باب; رسول الله طفيعة لم كى تلوار كے دسته كا بيان 313 [21] --- بَابِ فِي قَبِيعَةِ سَيْفِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ [22] بَابِ أَنَّ السَّبِيِّ إِذَا ظَهَرَ عَلَىٰ إِبِ: نِي الْطَهَرَ عَلَىٰ إِبِ: نِي الْطَهَرَةِ حَكَى قُوم ير غالب آنے ك

| < BY | ترتيب | DIST | 20 | | ٢ | J#D> |
|------|---------------------------|-------------------------------|------|-----------------------|---------------------------------|-------------|
| | مين رسول الله عليه عليه | | | 1 | رُهُ أَقَامَ بِالْعَرْصَةِ ثَلَ | |
| 314 | كابيان | کے تین دن گفہرنے | | | | |
| | بنونضير كے تھجوروں كے | نبی کیلئے آنے کے قبیلہ | باب: | لِّ ﷺ نَخْلَ بَنِي | اب فِي تَحْرِيقِ النَّبِي | ر23 اِ بَــ |
| 314 | I | باغ جلادینے کا بیان | | | سيرِ | النَّخِ |
| | ، والی چیزوں سے سزا | الله تعالیٰ کی عذاب | باب: | | ب فِي النَّهْيِ عَنِ النَّ | |
| 315 | ان | دینے کی ممانعت کا بر | | | | |
| 315 | نق کی ممانعت کا بیان ' | عورتوں اور بچوں کے | باب: | نْ قَتْلِ النِّسَاءِ | اب فِي النَّهْيِ عَ | [25] بَــ |
| | | _ | | 1 | يِّسبِّيانِ | |
| 316 | ل <i>کیاجائ</i> ے | ار کے کی صد جب وہ | باب: | | ب حَدِّ الصَّبِيِّ مَتَى | |
| 317 | بيان | قیدیوں کوچھڑانے کا | باب: | - | ب فِي فِكَاكِ الْأَسِيرِ | [27] بَار |
| 318 | | قیدیوں کے فدیدوب | | | ب فِي فِدَاءِ الْأَسَارَة | |
| | کا مال کسی کے لئے حلال | | | لأَحَدِ قَبْلَنَا | ب الْغَنِيمَةِ لَا تَحِلُ | [29] بَار |
| 318 | | نه ہونے کا بیان | | | | |
| | ال غنیمت تقسیم کرنے کا | | باب: | , بِلَادِ الْعَدُوِّ | ب قِسُمَةِ الْغَنَاثِمِ فِي | [30] بَار |
| 319 | | بيان | | | | |
| 319 | | مال غنيمت كي تقتيم _ | | | ب فِى قِسْمَةِ الْغَنَائِمِ | |
| 320 | | رشتہ داروں کے حصہ سے | | | ب سَهْمِ ذِی الْقُرْبَی | |
| 321 | | گھوڑے کے حصوں <i>ک</i> نند | | | ب فِي سُهْمَانِ الْخَيْرِ | |
| | اسے حصہ دیا جائے کہ | جو فتح کے بعد آئے | باب: | بَعْدَ الْفَتْحِ هَلْ | َّب فِی الَّذِی یَقْدَمُ | [34] بَــا |
| 321 | | عبيں؟ | | | 1 | يُسهَ |
| 322 | | غلام اور بیچے کے حصہ ت: | | _ | ب فِي سِهَامِ الْعَبِيدِ ا | |
| | لیمت بیچنے کی ممانہ ته کا | تقسیم سے پہلے مال | باب: | المُغَانِمِ حَتَّى | ب فِي النَّهْيِ عَنْ بَيْ | [36] بَاد |
| 322 | | بيان | | | 1 | تُقَسَ |
| 323 | | لونڈی کے استبراء کا ہر | - | 1 | ب فِي اسْتِبْرَاءِ الْأَمَةِ | |
| 324 | ت کی ممانعت کا بیان | حامله لونڈیوں سے صحبہ | باب: | لَّهِ الْحُبَالَى | ب فِي النَّهْيِ عَنْ وَطُ | [38] بَار |

| ~@ [*] | ترتيب 🇨 | 21 | | الكالكانية |
|-----------------|-----------------------|-----------------------------|-----------------------------|--|
| 324 | نے کی ممانعت کا بیان | باب: مال کو بچے سے جدا کر۔ | 1 | [39] بَـاب فِـى الـنَّهُـي عَ |
| | | | | الْوَالِدَةِ وَوَلَدِهَا |
| 325 | | باب: حربی جب مسلمان موکر | قَدِمَ مُسْلِمًا | [40] بَابِ فِي الْحَرْبِيِّ إِذَا |
| 326 | کے اختیار میں ہے | باب: حصه سے زیادہ دیناامام | , الإمَامِ | [41] بَابِ فِي أَنَّ النَّفْلَ إِلَى |
| | ور لو منتے ہوئے تہائی | باب: جاتے ہوئے چوتھائی ا | | [42] بَـاب فِـى أَنْ يُـنَـفَّلَ |
| 326 | بانے کا بیان | مال صّه سے زیادہ دیا ح | | وَفِي الرَّجْعَةِ الثُّلُثُ |
| 327 | تقتیم کرنے کا بیان | باب: خمس کے بعد مال غنیمت | | _ [43] بَابِ فِي النَّفْلِ بَعْدَ الْ |
| | | باب: جو محض کسی کونل کرنے | | [44] بَابِ مَنْ قَتَلَ قَتِيلًا فَ |
| 327 | | لئے ہے | | |
| | | باب: حصہ ہے زائد مال مکرو | أَنْفَالِ وَقَالَ لِيَرُدُّ | [45] بَـاب فِـى كَرَاهِيَةِ الْأ |
| 328 | ے دے | کو جاہیے کہ کمزور کو د_ | I . | قَوِيُّ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى فَ |
| | ں کے متعلق: سوئی اور | باب: نبی منطقاتیا کے اس قول | 1 | و46] بَابِ مَا جَاءَ أَنَّهُ |
| 329 | يًا رو | دھا گەبھى (امام كو)لو: | | وَالْمَخِيطَ |
| | | باب: مال غنیمت کے جانور ہ | | [47] بَـابِ الـنَّهْـيِ عَنْ رُ |
| 329 | ممانعت كابيان | میں ہے کیڑے پہننے ک | | الْمَغْنَمِ وَلُبْسِ الثَّوْبِ |
| 330 | کرنے کی وعید کا بیان | ا باب: مال غنيمت مين خيانت | | [48] بَابِ مَا جَاءَ فِي الْغُأْ |
| | , کرنے والے کی سزا کا | باب: مال غنيمت ميں خيانت | | [49] بَابِ فِي عُقُوبَةِ الْغَا |
| 331 | | بيان | | |
| | ے متعلق جب وہ مال | ا باب: خیانت کرنے والے | جَاءَ بِمَا غَلَّ بِهِ | [50] بَابِ فِي الْغَالِّ إِذَا -َ |
| 331 | | خیانت لائے گا | | |
| 332 | كا ثا جائے اس كا بيان | باب: جهاديس چور كا باته نه | ةً طَعَ الْأَيْدِي فِي | [51] بَــاب فِـى أَنْ لَا تُــَا |
| | | | | الْغَزْوِ |
| | ایخ کام کے بدلہ میں | باب: خادم کے متعلق جسے ا | ذًا أَصَابَ فِيْعَمَلِهِ | [52] بَــاب فِـى الْعَامِلِ إِ |
| 332 | | کچھ ہدیہ ملے | | شيئاً |
| 334 | ئے کا بیان | باب: مشر کین کامدیہ قبول کر | اِيَا الْمُشْرِكِيْنَ | [53] بَابٌ: فِي قَبُولِ هَدَ |

| < @ ? | ب | ترتي | BYS | 22 | DEE C | يُنِينَ الكَالِيْنِيَ | JA. |
|----------|--------------|---------------|--|------|---------------------|--|----------|
| | كه جم مشركين |) کے متعلق: س | نبی مطیکیّن کے قول | باب: | 1 | باب فِسى قَـوْلِ النَّبِ | |
| 334 | | | ہے مدنہیں لیتے | | | مِينُ بِالْمُشْرِكِينَ | |
| 335 | نا | مشركين كونكال | جزیرۃ العرب سے | باب: | ينَ مِنْ جَزِيرَةِ | اب إِخْـرَاجِ الْمُشْرِكِ | [55] |
| | | | _ | | | <u>ب</u> ر د | |
| | نے پینے کے | ں میں کھا۔ | مشر کین کے برتنو سا | باب | يَةِ الْمُشْرِكِينَ | ب فِي الشُّرْبِ فِي آنِهُ | [56] بَا |
| 336 | , | ~, | متعلق برند تة به | | | | |
| | کھانے کی چیز | | مال غنيمت تقشيم كر. س | | | باب أَكْبِلِ الطَّعَامِ | |
| 336 | | | كھالينا | | l . | يَمُهُ | |
| 337 | , | | مجوی ہے جزیہ <u>لین</u> ن | | 1 | ب فِي أَخْذِ الْجِزْيَةِ مِ | |
| |) طرف ہے | | ادنیٰ مسلمان تمام به | | مِينَ أَدْنَاهُمْ | ب يُجِيرُ عَلَى الْمُسْلِ | [59] بَا |
| 338 | | | ذ مه دار ہو کرپناہ د. سرقة سر | | | | |
| 338 | | | قاصد کونٹ کرنے کا یہ ہوتہ سر | | ľ | ب فِى النَّهْيِ عَنْ قَتْل | |
| 339 | 1. | | معاہد کے تل کی مما یہ | | | ب فِي النَّهْيِ عَنْ قَتْلٍ | |
| 340 | نبه کر میں | کے مال پر قبط | جب وشمن مسلمان | باب: | | ـاب إِذَا أَحْـرَزَ الْعَ | |
| | | | , (4 | | | سْلِمِينَ | |
| 342 | | | مشرکین سے کیا ہو یہ | | | ب فِي الْوَفَاءِ لِلْمُشْرِ | |
| 343 | ح کے معلق | الطفيقية كار | حدیبیے کے روز نبی | باب: | i e | باب فِسی صُلْحِ ا | |
| | <i>(4</i> | | | | | لَــُيْبِيَةِ | |
| | | | مشرکین کے غلام | | ينْ يَفِرُونَ إِلَى | ب فِي عَبِيدِ الْمُشْرِكِ | |
| 344 | | - | مسلمانوں کے پاس | | | سْلِمِينَ مُعْدِّم عُمْدِينَ | |
| . | مم پرارنے کا | ن معاذ کے | الل قريظه كا سعد ? | | ظةً عَلَى حَكَمِ | لَابِ نُـزُوْلِ أَهْلِ قُرَيْهُ | |
| 344 | | | بیان سند | | | لدِبْنِ مُعَا ذِ مَا مَا مَا مَا | |
| 345 | | | مکہ سے نبی طفط میں ر سے | | | اب فِي إِخْرَاجِ النَّبِيِّ " | |
| 346 | | | مردوں کو برا کہنے کہ فتریس سے کہ یہ | • • | Ţ. | ب فِي النَّهْيِ عَنْ سَ | |
| 347 | . کا بیان | رت نہ ہونے | فنتح کے بعد کوئی ہجم | باب: | نْحِ | ابَ لَا هِجْرَةَ بَعْدَ الْفَ | [69] بَ |

| ₹@ ? | 23 کو ترتیب | حال يتقالكانية كالأحال |
|-------------|--|--|
| 347 | باب: هجرت منقطع نهیں ہوگی | [70] بَابِ إِنَّ الْهِجْرَةَ لَا تَنْقَطِعُ |
| | باب: نی طفی کی کے قول:''اگر ہجرت نہ ہوتی تو | [71] بَابَ قَوْلِ النَّبِيِّ اللَّهِ خَرَةُ |
| 348 | میں بھی انصار کا ایک آ دمی ہوتا'' کا بیان | لَكُنْتُ امْرَأُ مِنَ الْأَنْصَادِ |
| 348 | باب: حکومت کے متعلق وعید کابیان | [72] بَابِ فِي التَّشْدِيدِ فِي الْإَمَارَةِ |
| 349 | باب: ظلم کی ممانعت کا بیان | [73] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنِ الظُّلْمِ |
| | باب: بے شک اللہ تعالیٰ فاسق آ دمی سے دین کی | [74] بَابِ إِنَّ اللَّهَ يُوَيِّدُ هَذَا الدِّينَ |
| 349 | مدد کرنے کا بیان | بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ |
| 350 | باب: اس امت کے فرقوں میں بٹنے کا بیان | [75] بَابِ فِي افْتِرَاقِ هَذِهِ الْأُمَّةِ |
| | باب: امیر کی اطاعت کرنے اور جماعت کے ہمراہ | [76] بَابِ فِي لُزُومِ الطَّاعَةِ وَالْجَمَاعَةِ |
| 351 | رہنے کا بیان | |
| 351 | باب: جس نے ہم پر ہتھیارا ٹھایاوہ ہم سے نہیں | [77] بَابِ مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّكَلاحَ فَلَيْسَ |
| | | مِنَّا |
| 352 | باب: حکومت قریش میں ہوگ | [78] بَابِ الْإِمَارَةُ فِي قُرَيْشٍ |
| 352 | باب: قریش کی فضیلت کابیان | [79] بَابِ فِي فَضْلِ قُرَيْشٍ |
| 353 | باب: اللم ادر غفار قبیله کی فضیلت کابیان | [80] بَابِ فَضْلِ أَسْلَمَ وَغِفَارٍ |
| | باب: اسلام میں بری بات پر اتفاق کرنے کے عدم | [81] بَاب لا حِلْفَ فِي الْإسْلامِ |
| 354 | جواز کا بیان بر | |
| | باب: کسی قوم کا آ زاد کرده غلام اور بھانجا ای میں | [82] بَـاب فِـى مَـوْلَى الْقَوْمِ وَابْنُ أُخْتِهِمُ |
| 355 | داخل ہے | ٠٠. مِ نْهُ م |
| | باب: الشخص كم متعلق جوآ قاؤل كے علاوہ كسى | [83] بَابِ فِي الَّذِي يَنْتَمِي إِلَى غَيْرٍ مَوَالِيهِ |
| 355 | اور کی طرف نسبت کرے | |
| | خرید وفروخت کے بیان میں | ١٨كتاب البيوع |
| 357 | باب: حلال اورحرام واضح ہے | |
| 358 | ہاب: مشتبہ چیزوں کو چھوڑ کرواضح کو اختیار کرنے کا بیان | [1] بَابِ فِي الْحَلَالُ بِيِّنٌ وَالْحَرَامُ بَيِّنٌ |
| | باب. مسبه پیرون و پور رون و سیار رسه میون | [2] بَابِ دَعْ مَا يَرِيبُكَ إِلَى مَا لَا يَرِيبُكَ |

| ~GY | 24 گر ترتیب | الكلائين الكلائين الكالمائين |
|-----|---|---|
| 359 | باب: جاہلیت کے سود کے متعلق کا بیان | [3] بَابِ فِي الرِّبَا الَّذِي كَانَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ |
| | باب: سود کھانے اور کھلانے والے شخص کے ملعون | [4] بَابِ فِي آكِلِ الرِّبَا وَمُؤْكِلِهِ |
| 360 | ہونے کا بیان | |
| 360 | باب: سود کھانے والے کے متعلق وعید کابیان | [5] بَابِ فِي التَّشْدِيدِ فِي آكُلِ الرِّبَا |
| | باب: کمانے اورای ہاتھ سے کام کرنے کی | [6] بَابِ فِي الْكَسْبِ وَعَمَلِ الرَّجُلِ بِيَدِهِ |
| 361 | فضيلت كابيان | |
| 361 | باب: تاجرون كابيان | [7] بَابِ فِي التُّجَّارِ |
| 362 | باب: سچيتا جركابيان | [8] بَابِ فِي النَّاجِرِ الصَّدُوْقِ |
| 362 | باب: خیرخوای کابیان | [9] بَابِ فِي النَّصِيحَةِ |
| 363 | باب: دھوکہ دینے کی ممانعت کا بیان | ُ [10] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنِ الْغِشِ |
| 363 | ہاب: عبد شکنی کے متعلق | [11] بَابِ فِي الْغَدْرِ |
| 364 | باب: وخیره اندوزی کی ممانعت کابیان | [12] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنِ الِاحْتِكَارِ |
| | باب: مسلمانوں میں قیمت مقرر کرنے کی ممانعت | [13] بَـابِ فِـى النَّهْـيِ عَـنْ أَنْ يُسَعَّرَ فِي |
| 365 | كابيان | الْمُسْلِمِينَ |
| 365 | باب: رعایت کرنے کا بیان | [14] بَابِ فِي السَّمَاحَةِ |
| | باب: بیچنے والے اور خریدنے والے کوجدانہ ہونے | [15] بَابِ فِي الْبَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّفَا |
| 366 | تک اختیار ہے | |
| | باب: خرید و فروخت کرنے والوں کے اختلاف کا | [16] بَابِ إِذَا اخْتَلَفَ الْمُتَبَايِعَانِ |
| 367 | بيان | |
| | باب: اپنے بھائی کی تھے پر تھے کرنے کی ممانعت کا | [17] بَابِ لا يَبِيعُ عَلَى بَيْعِ أَخِيهِ |
| 367 | بيان | |
| 368 | باب: غلام کی نیع میں اختیار کا بیان | [18] بَابِ فِي الْخِيَارِ وَالْعُهْدَةِ |
| 369 | باب: مصراة كابيان | [19] بَابِ فِي الْمُحَفَّلاتِ |
| 370 | باب: دھوکہ کی بیع کی ممانعت کا بیان | [20] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنْ بَيْعِ الْغَرَرِ |
| | باب: کھلوں کی پھٹگی ظاہر ہونے سے پہلے انہیں | [21] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنْ بَيْعِ الثِّمَارِ حَتَّى |

| LOS (| ترتیب ک | by a | 25 | | الكالكانية الكالكية |
|-------|---|---------------------------------|------|------------------------|-------------------------------------|
| 370 | . کا بیان | بيحيخ كىممانعت | | | يَبْدُوَ صَلاحُهَا |
| 371 | ببت چهنچنے کا بیان | : تحچلوں میں مصد | باب: | | [22] بَابِ فِي الْجَائِحَةِ |
| 371 | أمزابنه كابيان | : نيع محا قلهاورنيج | باب | لْمُزَابَنَةِ | [23] بَابِ فِي الْمُحَاقَلَةِ وَا |
| 372 | | : نیع عریا کابیان | | | [24] بَابِ فِي الْعَرَايَا |
| 372 | مله بیجنے کی ممانعت کا بیان | : قبضه سے پہلے ا | باب | بْعِ الطَّعَامِ قَبْلَ | [25] بَـاب الـنَّهْـي عَـنْ بَ |
| | | | | | الْقَبْضِ |
| 373 | بشرطوں کی ممانعت کا بیان | | | سُّ طَيْنِ فِي بَيْعٍ | [26] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنْ شَ |
| 374 | غلام بيجينے والے كابيان | | | وَلَهُ مَالٌ | [27] بَابِ فِيمَنْ بَاعَ عَبْدًا |
| 374 | یع ملامسه کی ممانعت کابیان | : تعظيمنابذه اورزَ | باب | عَنِ الْمُنَابَدَةِ | [28] بَــاب فِــى النَّهُـــ |
| | | | | | وَالْمُلامَسَةِ |
| 375 | | : ﷺ حصاة كابيا | | | [29] بَابِ فِي بَيْعِ الْحَصَاةِ |
| 375 | ہے بیع کی ممانعت کا بیان | : جانورکی جانور | باب | | [30] بَـاب فِـى الـنَّهُـي عَ |
| | | | | | بِالْحَيَوَانِ |
| 376 | نے کی اجازت کا بیان | : جانور قرض کیا | باب | فِي اسْتِقْرَاضِ | [31] بَـاب فِـى الرُّخْـصَةِ |
| | | • , | | | الْحَيَوَانِ |
| 377 | ، کی ممانعت کابیان سر | | | لَقِّى الْبُيُوعِ | [32] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنْ تَـُ |
| 377 | ئع پرئی نہ کرنے کا بیان کیسی نہ کرنے کا بیان | | | Ī | [33] بَابِ لَا يَبِيعُ عَلَى بَيْعِ |
| 378 | کھانے کی ممانعت کا بیان | | | | [34] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنْ ذَ |
| 378 | | : شراب بیجنے کی ر | | | [35] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنْ بَا |
| 380 | مما نعت كابيان | • | | بْعِ الْوَكاءِ | [36] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنْ بَـ |
| 381 | | ا: تق د بر کابیان | | 5 | [37] بَابِ فِي بَيْعِ الْمُدَبِّرِ |
| 381 | ں کے بیچنے کا بیان | , | | | [38] بَابِ فِي بَيْعِ أُمَّهَاتِ |
| 382 | | ،: مدینہ کےصار' سرینہ کے صار | - ' | _ | [39] بَابِ فِي صَاعِ الْمَدِياَ |
| 382 | لے ساتھ بیچنے کی ممانعت کابیان | ،: غله کمی جیسی ک | باب | مَنْ بَيْعِ الطَّعَامِ | [40] بَـاب فِـى الـنَّهْـي خَ |
| | | | | | إِلَّامِثْلَا بِمِثْلِ |

| ₹GQ | 26 کی کرتیب | المرابعة الم |
|-----|---|--|
| | ۔۔۔ اِب: نقد کے بدلے نقد کی بیثی کے ساتھ بیچے کی | |
| 384 | ممانعت كابيان | |
| 385 | ا ب: سود <i>صرف</i> ادھار میں ہوتا ہے | [42] بَابَ لَا رِبَا إِلَّا فِي النَّسِيَّةِ |
| | إب: سونے كے بدلے جائدى لينے كى رخصت كا | [43] بَابِ الرُّخْصَةِ فِي اقْتِضَاءِ الْوَرِقِ مِنَ |
| 385 | بيان | الدَّمَبِ |
| 386 | باب: رئن كابيان | [44] بَابِ فِي الرَّهْنِ |
| 387 | باب: سيع سلف كابيان | [45] بَابِ فِي السَّلَفِ |
| 387 | باب: قرض کواحیمی طرح ادا کرنے کا بیان | [46] بَابِ فِي حُسْنِ الْقَضَاءِ |
| 388 | اب: زیادہ تو لنے کا بیان | |
| 388 | ب: غنی کا تاخیر کرناظلم ہے | |
| 389 | ب: مُنگدست کومهلت دینے کا بیان | |
| | اب: منگدست کومهلت دینے والے کی فضیلت کا | [50] بَابِ فِيمَنْ أَنْظَرَ مُعْسِرًا |
| 390 | بيان | |
| | إب: مفلس كے پاس بعينہ سامان بائے جانے كا | [51] فِي الْمُفْلِسِ إِذَا وُجِدَ الْمَتَاعُ عِنْدَهُ |
| 391 | بيان | |
| 391 | باب: قرض کے متعلق وعید کا بیان | |
| 392 | باب: مقروض کی نماز جنازه کابیان | [53] بَابِ فِي الصَّلَافِ عَلَى مَنْ مَاتَ |
| | | وَعَلَيْهِ دَيْنٌ |
| 393 | باب: قرض دار کی نماز جنازه کی رخصت کابیان | [54] بَابِ فِي الرُّخْصَةِ فِي الصَّكَاةِ عَلَيْهِ |
| 394 | ہاب: قرض داری مددی جاتی ہے | |
| 394 | باب: اُدھار کی ہوئی چیز واپس کردینے کابیان سب | [56] بَابِ فِي الْعَارِيَّةُ مُؤَدَّاةٌ |
| 395 | باب: امانت اوا کرنا اور خیانت سے نکینے کا بیان | [57] بَابِ فِي أَدَاءِ الْأَمَانَةِ وَاجْتِنَابِ |
| | | الْخِيَانَةِ |
| 395 | باب: چیزلوٹ جائے تو وہ چیزاس کے ذمہ ہے | [58] بَابِ مَنْ كَسَرَ شَيْئًا فَعَلَيْهِ مِثْلُهُ |
| 396 | باب: گری ہوئی چیز کا بیان | [59] بَابِ فِي اللَّقَطَةِ |

| < B. | 27 کی ترتیب | |
|------|--|--|
| 397 | باب: حاجی کی گری ہوئی چیز اٹھانے کی ممانعت | [60] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنْ لُقَطَةِ الْحَاجِ |
| 397 | باب: گمشده چیز کابیان | [61] بَابِ فِي الضَّالَّةِ |
| | باب: قتم کھا کرمسلمان آ دمی کا مال لینے والے مخص | [62] بَابِ فِيمَنْ اقْتَطَعَ مَالَ امْرِهِ مُسْلِم |
| 398 | كابيان | بيمينه |
| 399 | باب: حبمونی قشم کا بیان | [63] بَابِ فِي الْيَمِينِ الْكَاذِبَةِ |
| | باب: ناحق ایک بالشت زمین پر قبضه کرنے والے | [64] بَاب مَنْ أَخَذَ شِبْرًا مِنَ الْأَرْضِ |
| 400 | فتخص كابيان | |
| | باب: جو هخض بنجر زمین آباد کرے وہ اسی کے لئے | [65] بَابِ مَنْ أَحْيَا أَرْضًا مَيْثَةً فَهِيَ لَهُ |
| 401 | 4 | |
| 402 | باب: زمین دینے کابیان | [66] بَابِ فِي الْقَطَائِعِ |
| 403 | باب: درخت لگانے کی نضیلت کا بیان | [67] بَابِ فِي فَضْلِ الْغَرْسِ |
| 404 | باب: زمین گھیرنے کا بیان | [68] بَابِ فِي الْحِمَى |
| 404 | باب: يانی بیچنے کی ممانعت کابیان | [69] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنْ بَيْعِ الْمَاءِ |
| 405 | باب: وہ چیز جس ہے منع کرنا ناجائز ہے | [70] بَابِ فِي الَّذِي لَا يَجِلُّ مَنْعُهُ |
| | باب: نبی سے کیا نے اہل خیبر سے معاملہ کے | [71] بَابِ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ عَامَلَ خَيْبَرَ |
| 406 | کرنے کا بیان | |
| 406 | باب: ہیچ مخابرہ کیممانعت کابیان | [72] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنِ الْمُحَابَرَةِ |
| | باب: وو برس کے لئے زمین بٹائی پر دینے ک | [73] بَــاب فِـى الـنَّهْـي عَنْ بَيْعِ الْأَرْضِ |
| 407 | ممانعت كابيان | سَنَتَيْنِ |
| | باب: سونے اور جاندی کے بدلہ میں زمین کرائے | [74] بَابِ فِي الرُّخْصَةِ فِي كِرَاءِ الْأَرْضِ |
| 407 | پروینے کی اجازت | بِالدَّهَبِ وَالْفِضَّةِ |
| 408 | باب: اندازے کے متعلق | [75] بَابِ فِي الْخَرْصِ |
| 409 | باب: لونڈی کی کمائی کھانے کی ممانعت | [76] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنْ كَسْبِ الْأَمَةِ |
| 409 | باب: سینگی لگانے والے کی کمائی کی ممانعت کابیان | [77] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنْ كَسْبِ الْحَجَّامِ |
| 409 | باب: سینگی لگانے والے کی کمائی کی رفصت کابیان | [78] بَــاب فِــى الرُّخْصَةِ فِـى كَسْبِ |

| ۲ <i>%</i> | Y V V V OO | |
|------------|---|---|
| ٥ | 28 کرا ترتیب | 1 |
| | | الْحَجَّامِ |
| 410 | باب: جانورکوحاملہ کردانے کی اجرت منع ہے | [79] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنْ عَسْبِ الْفَحْلِ |
| | باب: مکان چی کراس کی قبت مکان ہی میں نہ | [80] بَابِ فِيمَنْ بَاعَ دَارًا فَلَمْ يَجْعَلْ ثَمَنَهَا |
| 410 | صرف کرنے والے مخص کے متعلق | فِي مِثْلِهَا |
| 411 | باب: کنویں کے احاطہ کا بیان | [81] بَابِ فِي حَرِيمِ الْبِئْرِ |
| 411 | باب: شفعه كابيان | [82] بَابِ فِي الشُّفْعَةِ |
| | اجازت کے بیان میں | ١٩كتاب الاستئذان |
| 413 | باب: اجازت تین دفعه لی جائے | [1] بَابِ الِاسْتِئْذَانِ ثَكَاثٌ |
| 414 | باب: اجازت کیسے لی جائے | [2] بَابِ كَيْفَ الِلاسْتِئْذَانُ |
| | باب: رات کو (سفرے) آتے ہی بیوی کے پاس | [3] بَابِ فِي النَّهْيِ أَنْ يَطُرُقَ الرَّجُلُ أَهْلَهُ |
| 415 | آنے کی ممانعت کابیان | لَيْلا |
| 415 | باب: سلام کوعام کرنے کا بیان | [4] بَابِ فِي إِفْشَاءِ السَّلامِ |
| | باب: ایک مسلمان کے دوسرے مسلمان پر حقوق کا | [5] بَابِ فِي حَقِّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ |
| 416 | بيان | |
| 417 | باب: سوار کا پیدل کوسلام کرنے کا بیان | [6] بَابِ فِي تَسْلِيمِ الرَّاكِبِ عَلَى الْمَاشِي |
| 417 | باب: اہل کتاب کوسلام کا جواب دینے کا بیان | [7] بَابِ فِي رَدِّ السَّلَامِ عَلَى أَهْلِ الْكِتَابِ |
| 418 | باب: بچوں کوسلام کہنے کا بیان | [8] بَابِ فِي التَّسْلِيمِ عَلَى الصِّبْيَانِ |
| 418 | باب: عورتوں کوسلام کرنے کا بیان | [9] بَابِ فِي التَّسْلِيمِ عَلَى النِّسَاءِ |
| | باب: جب آ دمی کو (کسی کا) سلام کہاجائے تو اس کا | [10] بَـاب إِذَا قُرِءَ عَـلَـى الرَّجُلِ السَّلامُ |
| 419 | جواب کیسے دے؟ | كَيْفَ يَرْدُّ |
| 419 | باب: سلام کا جواب دینے کا بیان | [11] بَابِ فِي رَدِّ السَّكَامِ |
| 420 | باب: سلام کا جواب دینے کی فضیلت کا بیان | [12] بَابِ فِي فَضْلِ التَّسْلِيمِ وَرَدِّهِ |
| 421 | باب: ببیتاب کرنے والے آدمی کوسلام کہنے کابیان | [13] بَابِ إِذَا سُلِّمَ عَلَى الرَّجُلِ وَهُوَ يَبُولُ |
| 422 | باب: عورتوں کے پاس جانے کی ممانعت کا بیان | [14] بَابَ فِي النَّهْيِ عَنِ الدُّخُولِ عَلَى |
| | | |

| ~@ % | 29 کی اور ترتیب | The continue of the |
|-------------|--|--|
| | | 1 |
| 422 | uvi sticu | النِّسَاءِ ﴿ وَمِنْ مِنْ الْأَسْاءِ ﴿ وَمِنْ مِنْ مُنْ الْمِنْ الْمُعَالِّ |
| | باب: اچانک نظر پڑنے کا بیان | [15] بَابِ فِي نَظْرَةِ الْفَجْأَةِ |
| 423 | باب: عورت کی چادر کابیان | [16] بَابِ فِي ذُيُولِ النِّسَاءِ |
| 424 | باب: زینت ظاہر کرنے کی ممانعت کابیان | [17] بَابِ فِي كَرَاهِيَةِ إِظْهَارِ الزِّينَةِ |
| 424 | باب: باہر نگلتے وقت خوشبولگانے کی ممانعت کا بیان | [18] بَــاب فِــى الـنَّهْـي عَنِ الطِّيبِ إِذَا |
| • | | خَرَجَتْ |
| 424 | باب: نفتی بال لگانے اورلگوانے والی کا بیان | [19] بَابِ فِي الْوَاصِلَةِ وَالْمُسْتَوْصِلَةِ |
| | باب: مردکومردادرعورت کوعورت کے ساتھ لیٹنے کی | [20] بَـابِ فِي النَّهِي عَنْ مُكَامَعَةِ الرَّجُلِ |
| 426 | ممانعت كابيان | الرَّ جُلَ وَالْمَرْأَةِ الْمَرْأَةَ |
| | باب: مخنثوں اور مردوں جیسی وضع بنانے والی پر | [21] بَابِ فِي أَنَّ الْفَخِذَ عَوْرَةٌ |
| 427 | لعنت ہے | |
| | باب: عورت ذات كا حمام مين داخل هونا (جانا) | [22] بَـابِ فِـى الـنَّهْيِ عَنْ دُخُولِ الْمَوْأَةِ |
| 428 | ممنوع ہے۔ | الْحَمَّامَ |
| 428 | باب: کوئی اپنے بھائی کواس کی جگہ سے نداٹھائے | [23] بَـاب لا يُـقِيـمَـنَّ أَحَـدُكُمْ أَحَاهُ مِن |
| | | مُجْلِسِهِ |
| | باب: جب کوئی آ دی اپن جگه سے اٹھ جائے پھر | [24] بَسَابِ إِذَا قَسَامَ مِسنْ مَجْلِسِو ثُمَّ رَجَعَ |
| 429 | واپس آئے تو وہی اس کامتحق ہے | َ وَرَ أَحَقَ بِهِ فَهُو أَحَقَ بِهِ |
| 430 | باب: راستوں میں بیٹھنے کی ممانعت | [25] بَـاب فِـى الـنَّهُـي عَنِ الْجُلُوسِ فِى |
| | | الطُّرُّ قَاتِ |
| 430 | باب: ایک پاؤں دوسرے پاؤں پرر کھنے کے متعلق | [26] بَساب فِي وَضْع إِحْدَى الرِّجُلَيْنِ |
| | Ì | عَلَى الْأُخْرَى |
| 430 | باب: دوآ دمی تیسرے کوچھوڑ کرسر گوشی نہ کریں | [27] بَـــابَ لَا يَقَنَّاجَى اثْنَـانِ دُونَ |
| | | صَاحِبِهِمَا |
| 430 | باب: مجلس کا کفارہ | [28] بَابِ فِي كَفَّارَةِ الْمَجْلِسِ |
| 431 | باب: جب کوئی خیسنگے تو کیا کیے | [29] بَابِ إِذَا عَطَسَ الرَّجُلُ مَا يَقُولُ |
| | ' | ŕ |

| ~GX | ترتيب | | 30 | DES. | يتن الكايني | J#D- |
|-----|------------------------|--------------------------------|------|----------------------------|-------------------------------|------------|
| | نہ کھے تو اسے جواب | : جب حصينكنه والا الحمد الله | باب | هَ لا يُشَمِّتُهُ | ب إِذَا لَمْ يَحْمَدِ اللَّهِ | [30] بَار |
| 432 | | نه د و | | | | |
| 432 | واب دیا جائے | : حصِينكنے والے كو كتنی دفعه ج | باب: | بلسُ | ب كَمْ يُشَمَّتُ الْعَامِ | [31] بَار |
| 433 | | : تصویر رکھنے کی ممانعت | باب | تَّصَاوِيرِ تَصَاوِيرِ | ب فِي النَّهْيِ عَنِ الْ | [32] بَا |
| 433 | فرشة نہيں جاتے | : تصویروں والے گھر میں | باب | مَلائِكَةُ بَيْتًا فِيهِ | اب کا تَدْخُدلُ الْسَا | [33] بَــ |
| | | | | | اوِيرُ | تَصَ |
| 434 | | : اہل وعیال پرخرچ کرنا | باب | الْعِيَالِ | ب فِي النَّفَقَةِ عَلَى | [34] بَا |
| 434 | سواربونا | : سواری پرتین آ دمیول کا | باب | ، عَلَيْهَا ثَلاثَةٌ | ب فِي الدَّابَّةِ يَرْكَبُ | [35] بَا |
| 435 | ھنے کا مستحق ہے | : سواری کا ما لک آ گے بیٹے | باب | بُ الدَّابَّةِ أَحَقُّ | باب نِسی صّباحِ | [36] بُـــ |
| | | | | | لْرِهَا | بِصَ |
| 436 | ہونے کا بیان | : هراونث پرایک شیطان | باب | ، ذِرْوَةِ كُلِّ بَوِيرٍ | اب مَا جَاءَ أَنَّ عَلَى | [37] |
| | | | | | ប៍៤ | |
| 436 | ممانعت كابيان | : سواری کو کرسی بنانے کی | بإب | نُ تُتَّخَذُ الدَّوَابُ | ب فِي النَّهْيِ عَنْ أَدْ | [38] بَا |
| | | | | | ء سِسى | كَرَا |
| 437 | | : سفرعذاب كانكراب | | الْعَدَابِ | ب السَّفَرُ قِطْعَةٌ مِنَ | [39]بَا |
| 437 | وئے کیا کہا جائے | : محسی کوالوداع کرتے ہو | باب | غَ رَ جُ لًا | ب مَا يَقُولُ إِذَا وَدَّعَ | [40] بَا |
| 438 | | : سفر کی دعا اور جب سفر۔ | | بافَرَ وَإِذَا قَدِمَ | ب فِي الدُّعَاءِ إِذَا سَ | [41] بَا |
| 439 | ئے کیا کہا جائے | : کِٹھتے اور اتر تے ہو۔ | | صُعُودِ وَالْهُبُوطِ | ب مَا يَقُولُ عِنْدَ ال | [42] بَا |
| 439 | | : تھنٹی کی ممانعت | باب | | ب فِي النَّهْيِ عَنِ الْ | |
| 440 | نعت - | : جانوروں پر لعنت کی مما | باب | مْنِ الدَّوَاتِ | ب فِي النَّهْيِ عَنْ لَ | [44] بَا |
| 440 | فرنا جائز ہے | : عورت کامحرم کے بغیرسا | باب | مَـرْأَةُ إِلَّا وَمَعَهَا | اب لا تُسَافِرُ الْ | [45] |
| | | | | | رَمٌ | مُحْ |
| 441 | | : اکیلاسفرکرنے والا شیطا - | | لسَّفَرِ شَيْطَانٌ | ب إِنَّ الْوَاحِدَ فِي ا | [46] بَا |
| 441 | • • | : تحسی جگہارتے ہوئے | • • | , مَثْرِلا | ب مَا يَقُولُ إِذَا نَزَلَ | [47] بَا |
| 442 | ، <i>پڑھنے</i> کا بیان | : تخشی جگهاز کردور کعت | باب | ا نَوَلَ مَنْزِلًا | ب فِي الرَّكْعَتَيْنِ إِذَ | [48] بَا |

| < B. | 3 کی کارنیب | المراجع المراج |
|------|--|--|
| 442 | ب: سفرے واپسی پر کیا کہاجائے | [49] بَابِ مَا يَقُولُ إِذَا قَفَلَ مِنَ السَّفَرِ |
| 443 | ب: سونے کی دعا | [50] بَابِ الدُّعَاءِ عِنْدَ النَّوْمِ |
| 444 | ب: سونے وقت شہیج کرنا | [51] بَابِ فِي التَّسْبِيحِ عِنْدَ النَّوْمِ |
| 445 | ب: نیندے جاگے تو کیا کھ | [52] بَابِ مَا يَقُولُ إِذَا انْتَبَهَ مِنْ نَوْمِهِ إِما |
| 446 | ب: صبح کے وقت کیا کہنا جا ہے | [53] بَابِ مَا يَقُولُ إِذَا أَصْبَحَ |
| 446 | ب: نیا کپڑا پہنتے وقت کیا کہنا جاہئے | [54] بَابِ مَا يَقُولُ إِذَا لَبِسَ ثَوْبًا جَدِيْداً إِ |
| 447 | ب: مسجد میں داخل ہونے اور نکلنے کی وعا | [55] بَابِ مَا يَقُولُ إِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ وَإِذَا الْمِ |
| | | خَرَجَ |
| 448 | ب; بازار میں داخل ہونے کی وعا | · 1 |
| 449 | ب: نبی ﷺ کے نام پر نام رکھنا مگر کنیت ندر کھنا | [57] بَاب نَسَمَّ وَابِاسُمِى وَلَا نَكَنُّوا اللهِ |
| | | بِكُنْيَنِي |
| 449 | اب: الجمعے ناموں کے متعلق | · - · |
| 450 | اب: کون سے نام مستحب ہیں؟ | 1 |
| 450 | اب: کون ہے نام مکروہ ہیں؟ | ľ |
| 450 | اب: نام تبدیل کرنا | · 1 |
| 451 | اب: الله نے اور فلاں نے چاہا' کہنے کی ممانعت | [62] بَابِ فِي النَّهْيِ عَنْ أَنْ يَقُولَ مَا شَاءَ بِا |
| | | اللهُ وَشَاءَ فُلانٌ |
| 452 | إب: انگورکو' ' کرم' ' کہنے کی ممانعت | · / |
| 452 | إب: نماق كرنا | 7 |
| | إب: وہ محض جو لوگوں کو ہنسانے کے لئے جھوٹ | [65] بَابِ فِي الَّذِي يَكُذِبُ لِيُضْحِكَ بِهِ اللَّهِ |
| 453 | بولتا ہے | الْقَوْمَ |
| 453 | إب: شعر كهنا | • |
| 454 | باب: کبعض شعرفا کدہ مند ہوتے ہیں پریشہ: | |
| 455 | باب: کسی شخص کے پیٹ کا بھر جانا | [68] بَابِ لَأَنْ يَمْتَلِءَ جَوْفُ أَحَدِكُمْ |

على المنافظة المنافظة على المنافظة على المنافظة
| | ری (رم دلی، ترک) کے صف | ٢٠كتاب الرقاق |
|-----|--|--|
| | باب: جس شخص کے ساتھ اللہ بھلائی کا ارادہ کرے | [1] بَـاب مَـنْ يُـرِدْ اللَّهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهُهُ فِي |
| 456 | اسے دین کی سمجھ دیے دیتا ہے | الدِّينِ |
| 457 | ا باب: صحت وفراغت کے متعلق | [2] بَابِ فِي الصِّحَّةِ وَالْفَرَاغِ |
| 457 | باب: كان كى حفاظت كرنا | [3] بَابِ فِي حِفْظِ السَّمْعِ |
| 458 | باب: زبان کی حفاظت کرنا | [4] بَابِ فِي حِفْظِ اللِّسَانِ |
| 460 | باب: خاموش رہنے کے متعلق | [5] بَابِ فِي الصَّمْتِ |
| 461 | باب: غیبت کے متعلق | [6] بَابِ فِي الْغِيبَةِ |
| 462 | باب: حبوث کے متعلق | [7] بَابِ فِي الْكَذِبِ |
| 463 | باب: ہاتھ کی حفاظت کرنا | [8] بَابِ فِي حِفْظِ الْيَدِ |
| 464 | باب: پاکیزه چیز کھانا | 93 بَابِ فِي أَكْلِ الطَّيِّبِ |
| 464 | باب: دنیا کی کتنی چیزین کافی میں | [10] بَابِ مَا يَكْفِي مِنَ الدُّنْيَا |
| 465 | باب: نیک لوگوں کا اٹھ جانا | [11] بَابِ فِي ذَهَابِ الصَّالِحِينَ |
| 465 | باب: روز ہے کی حفاظت کرنا | [12] بَابِ فِي الْمُحَافَظَةِ عَلَى الصَّوْمِ |
| 466 | باب: نماز کی حفاظت کرنا | [13] بَابِ فِي الْمُحَافَظَةِ عَلَى الصَّلَاةِ |
| 466 | باب: تنجد پڑھنا | [14] بَابِ فِي قِيَامِ اللَّيْلِ |
| 467 | باب: سبخشش طلب كرنا | [15] بَابِ فِي الْاسْتِغْفَارِ |
| 468 | باب: الله تعالى سے ڈرنا | [16] بَابِ فِي تَقُورَى اللَّهِ |
| 469 | باب: حصولے گناہوں کے متعلق | [17] بَابِ فِي الْمُحَقَّرَاتِ |
| 469 | باب: توبه کے متعلق | [18] - بَابِ فِي التَّوْبَةِ |
| | باب: الله اپنے ہندوں کی توبہ سے بہت خوش ہوتا | [19] ﴿ بَابِ لَلَّهُ أَفْرَحُ بِتَوْبَةِ الْعَبْدِ |
| 470 | <i>-</i> | |
| 470 | باب: امیداورموت کے درمیان | [20] بَابِ فِي الْأَمَلِ وَالْأَجَلِ |
| 471 | باب: دو بھو کے بھیڑ یوں کی حیثیت | [21] بَابِ مَا ذِئْبَانِ جَائِعَانِ |
| | | |

| ۯ. | 33 كرا ترتيب | حر ين الاين كالم |
|-----|--|---|
| 472 | باب: الله سے حسن ظن رکھنا | ر [22] بَابِ فِي حُسْنِ الظَّنِّ بِاللَّهِ |
| 473 | باب: ﴿واَنُذِهُ عَشِيْرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ﴾ كَاتْفير | [23] تفسير ﴿وَٱنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنِ﴾ |
| 473 | باب: کس کواس کاعمل نجات نه دے گا | [24] بَابِ لَا يُنْجِي أَحَدَكُمْ عَمَلُهُ |
| | باب: ہرایک کے ساتھ اس کا ایک ساتھی جن ہوتا | [25] بَـاب مَـا مِـنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا وَمَعَهُ قَرِيُنُهُ |
| 474 | _ - | مِنَ الْجِنِّ |
| 475 | باب: اگرتم وه جانبته هوجویین جانبا هون | [26] بَابِ لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ |
| 475 | باب: الله کے نزد یک دنیا کا ذلیل ہونا | [27] بَابِ فِي هَوَانِ الدُّنْيَا عَلَى اللَّهِ |
| 476 | باب: كون سے اعمال افضل ہيں؟ | [28] بَابِ أَيُّ الْأَعْمَالِ أَفْضَلُ |
| | باب: مومن وہ ہے جواپنے بھائی کے لئے وہی پسند | [29] بَـاب لَا يُـوْمِـنُ أَحَدُكُمْ حَتْى يُحِبّ |
| 477 | کرے جواپنے لئے پیند کرتا ہے | لِلَّاخِيهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ |
| 478 | ہاب: کون سامومن بہتر ہے؟ | [30] بَابِ أَيُّ الْمُؤْمِنِينَ خَيْرٌ |
| 478 | ہاب: اس امت کے آخری لوگوں کی فضیلت | [31] بَاب فِي فَضْلِ آخِرِ هَذِهِ ٱلْأُمَّةِ |
| 480 | باب: قرآن کی حفاظت کرنا | [32] بَابِ فِي تَعَاهُدِ الْقُرْآنِ |
| | باب: کسی کے لائق نہیں ہے کہ وہ ایوں کہے:''میں | [33] بَابِ لا يَنْبَغِي لِأَحَدِ أَنْ يَقُولَ أَنَا خَيْرٌ |
| 480 | بوٹس بن متی ہے بہتر ہوں۔'' | مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى |
| 481 | باب: ہرمسلمان پرصدقہ واجب ہے | [34] بَابِ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ صَدَقَةٌ |
| | باب: جوریا کاری کرتا ہے اللہ اسے اس کے ساتھ | [35] بَابِ مَنْ رَائِي رَائِي اللهُ بِهِ |
| 481 | رسوا کرےگا | |
| 482 | باب: مسلمان کی مثال کیتی کی طرح ہے | [36] بَابِ مَثَلُ الْمُؤْمِنِ كَمَثَلِ الزَّرْعِ |
| 482 | باب: دنیاسر سبر کھیتی ہے | [37] بَابِ الدُّنْيَا خَضِرَةٌ حُلُوَةٌ |
| 483 | باب: زیادہ باتیں کرنا اللہ کونا پیند ہے | [38] بَابِ إِنَّ اللَّهَ كَرِهَ لَكُمْ قِيلَ وَقَالَ |
| 484 | باب: گمراه پیشواؤل کے متعلق | [39] بَابِ فِي الْأَرْمَةِ الْمُضِلِّينَ |
| 484 | باب: اینے بھائی کی مدر کروخواہ ظام ہو یا مظلوم | [40] بَابِ انْصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ مَظْلُومًا |
| 485 | باب: دین خیرخوابی ہے | [41] بَابِ اللِّينُ النَّصِيحَةُ |
| 485 | باب: اسلام کی اہتداء غرباء سے ہوئی | [42] بَابِ الْإِسْكَلامُ بَدَأَ غَرِيبًا |

| < B | ترتيب آ | 32 3 | 4 | | ٢ | ~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~ |
|-----|----------------------------|--|-------|-------------------------|--|--|
| 486 | | ب: الله سے ملاقات کو پ | | | | |
| 487 | | ب: اللہ کے لئے محبت کر: ب: اللہ کے لئے محبت کر: | | | ب فِي خُبِّ لِقَاءِ اللَّهِ وَ وَمَا اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ | |
| 487 | | | | | ب فِي الْمُتَحَابِّينَ فِي | |
| 407 | | ب: تم میں سے کوئی موت | | | ب لا يَتَمَنَّى أَحَدُكُمْ | |
| | | اب: نبی مطفقہ کی اس فا " | ابا | | اب فِي قَوْلِ النَّبِيّ | |
| | ں کی طرح قریب قریب | | | | سَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ | وَ ال |
| 488 | | " <i>U</i> : | | | | |
| 488 | تم آخری امت ہو۔'' | إب: نبى ﷺ كا قول'' | ا با | ، ﷺ أَنْتُمْ آخِرُ | اب فِي قَـوْلِ النَّبِيِّ | [47] بُـ |
| | | | i | | نع | ٱلْأِدَ |
| 489 | | باب: اہل بدر کی فضیلت | | لْرِ | ُب فِي فَضْلٍ أَهْلٍ بَا | [48] بَا |
| | | باب: ''فلان فلان ستار ـ | , 1 | | اب النَّهْي أَنْ يَقُولَ | |
| 489 | • | کہناممنوع ہے | | | ذَا | |
| 490 | 4 | باب: نیکی کا دس گناه ثواب | , | | اب الْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَ | |
| 490 | ، کے متعلق وعید | باب: خوشامد کرنے والے | , | | اب مَا قِيلَ فِي ذِي الْ | |
| | وُل کے متعلق:"الہی جسے | باب: نبی طفیقی کے اس | | | حاب فِي قَوْلِ النَّبِيِّ | |
| 491 | برا کہا ہواہے رحمت کر'' | |] | | . و کا کار کار نته أو سببته | |
| | | باب: نبی ﷺ کے ا | | | اب فِي قَوْلِ النَّبِيِّ فِي | |
| | ہاڑ جتنا سونا ہوتو میں کچھ | ب میرے لئے احدیہ | | | ٠٠ ب عِي ربِ په ِذَهَبًا | |
| 491 | ب <i>ن کر</i> تا" | | | | | - 1 |
| 492 | افعال | باب: ہلاک کرنے والے | | | إب فِي الْمُوبِقَاتِ | [54] |
| 492 | | باب: بخار دوزخ کے جوثر | | ءِ مِهَا م جَهَنَّمَ | َ إَابِ الْحُمَّى مِنْ فَيْحِ | |
| 493 | فارہ ہے | باب: بیاری (گناه کا) ک | | | بَابِ الْمَرَضُ كَفَّارَةٌ | |
| 494 | | باب: مریض کااجر | | | بَابِ الْحُمَّى مِنْ فَيْجِ | |
| 495 | یڑھنے کی فضیلت | باب: نبی طفقاً قیم پر در دو | | | ب ب ب سامی مِن بَاب فِی فَضْلِ الصَّلا | |
| 496 | | بب: نبی طفی ماین کے نام | " | | ب بي مصل مد. باب فِي أَسْمَاءِ النَّبِعُ | |
| 496 | | بب بن محانے کے متا باب: حرام کھانے کے متا | | • | باب فِي اسماءِ السِّهِ بَاب فِي أَكْلِ السُّحْ | |
| | J | باب داره | 1 | Ç | باب فِی آئلِ انسام | [00] |

| ₹@ | ترتیب ک | B2503 | 35 | DEEC . | يَّانَ الْكَالِيُّيِّ | J. 100 |
|-----|-----------------------------------|----------------------------|-------|----------------------------|----------------------------------|--------------------|
| 497 | ہر کام میں اجر ہے | ب: مومن کے لئے | بار | | ب الْمُؤْمِنِ يُؤْجَرُ فِ | |
| | ے پاس مال سے <i>بھرے ہو</i> ئے | ب: اگراہن آ دم ک | بار | | باب لَـوْ كَـانَ لِلابْزِ | |
| 497 | · | دومیدان ہول | | , | | مَال |
| 498 | هت ا | ب: وعظ كہنے كى مما | ا بار | ڵڡٞۘڝۘڝؚ | اب فِي النَّهْيِ عَنِ ا | ر [63] بَا |
| 499 | | ب: وعظ کرنے کی ا | | | اب فِي الرَّخْصَةِ | |
| 500 | میں خون کی <i>طرح چلتا ہے</i> ۔ (| ب: شیطان انسان | ا بار | | شَّيْـ طَــانَ يَجْرِ | |
| | | | | | جْرَى الدَّمِ | |
| | سے زیادہ آزمائش میں مبتلا | | ايا | , بَلاءً | اب فِي أَشَدِّ النَّاسِ | [66] بَ |
| 500 | 05.40 | | | | | |
| 501 | ر ہان: <u>مجھے</u> حد سے نہ بڑھاؤ | | | 📆 لا تُطْرُوْنِيْ | اب فِي قَوْلِ النَّبِيّ | [67] |
| 502 | | ب: یقیناالله کی رحمه | - 1 | | لَابِ إِنَّ لِلَّهِ مِائَةَ رَـُ | |
| 502 | نے والے شخص کا بیان | • | ٠, | | اب مَنْ هَمَّ بِحَسَنَا | |
| | ساتھ ہوگا جس کے ساتھ محبت | | ١١ | اُ اُحَب | بَابِ الْمَرْءُ مَعَ مَنْ | [70] |
| 503 | | کرتا ہے | | | | |
| | ن کہ آ دی جب اللہ تعالیٰ کے | اب: اس چیز کا بیا <i>ر</i> | ا با | دُ إِلَى اللَّهِ تَعَالَىٰ | لَابِ إِذَا تَقَرَّبَ الْعَبْ | · [71] |
| 503 | | قریب ہوجا۔ | | | | |
| 504 | يرمتعلق | إب: نیکی اور گناه _ | ا با | C | بَابِ فِي الْبِرِّ وَالْإِثْ | [72] |
| 505 | بیان | إب: الجھےاخلاق کا | | ىلُقِ | بَابِ فِي حُسْنِ الْـُ | [73] |
| 506 | آنے کا بیان | باب: نری ہے پیش | , | | بَابِ فِي الرِّفْقِ | |
| 506 | پرصبر کرنے کا بیان | باب: نظرختم ہونے | | صَرَّهُ فَصَبَرَ | بَابِ فِيمَنْ ذَهَبَ بَ | ·····[7 5] |
| 507 | | باب: رعیت میں انف | - 1 | نَ الرَّعِيَّةِ | بَابِ فِي الْعَدْلِ بَيْر | [76] |
| | ت اور جماعت کے ساتھ رہنے | باب: امیر کی اطاعه | | لُزُومِ الْجَمَاعَةِ | بَابِ فِي الطَّاعَةِ وَ | [77] |
| 507 | | كابيان | | | | |
| 508 | جانے کا بیان | باب: صور پھو نکے | | ورِ | بَابِ فِي نَفْخِ الصُّ | [78] |
| | الت اور ربّ تعالیٰ کے نزول کا | باب: قیامت کی ه | | | بَاب فِي شَأْنِ الدِّ | |

| JON | المحاور ترتيب | 36 | | يَتُنْ الْكَالِمُونِيَّ | شري الر |
|-----|---|------|-------------------------|-------------------------------------|-----------|
| 509 | بيان | | | لَى | تَعَالَ |
| 510 | : الله تعالیٰ کود کیھنے کا بیان | باب | لیٰ | ب النَّظرِ إِلَى اللَّهِ تَعَا | [80]بَا |
| 510 | : میدان حشر کا بیان | باب | | ب فِي صِفَةِ الْحَشْرِ | [81] بَا |
| | : قیامت کے دن مومنین کے سجدہ کرنے کا | باب | لْـمُوْمِنِينَ يَوْمَ | اب فِي سُجُودِا | [82] |
| 511 | بيان | | | ِّامَةِ ا | الْقِيَ |
| 512 | : شفاعت کا بیان | باب | | ب فِي الشَّفَاعَةِ | [83] بَا |
| 513 | : یقیناً ہرنی کے لئے ایک (مقبول) دعا ہے | باب: | á | ب إِنَّ لِكُلِّ نَبِيّ دَعْوَا | [84] بَا |
| | میری امت کے ستر ہزار آ دی (بغیر حساب) | - | بْعُونَ أَلْفًا مِنْ | اب يَـدْخُلُ الْجَنَّةَ سَ | [85] بَــ |
| 514 | جنت میں داخل ہو جا کمیں گے کا بیان | | | ربِغَيْرِ حِسَابٍ | أميّع |
| | : نبی طفیعیا کے اس قول کے متعلق: ''میری | باب: | الْجَنَّةَ الْجَنَّةَ | ب فِي قَوْلِ النَّبِيِّ ﴿ | [86] بَا |
| | امت کے ایک آ دی کی شفاعت سے ستر | | سَبْعُونَ أَنْفًا | لَمَاعَةِ رَجُلٍ مِنْ أُمَّتِى لَمَ | بِشَهَ |
| 514 | ہزار آ دمی جنت میں جا کیں گے | | | | |
| | ا يَــوْمَ تُبَــدَّلُ الْأَرْضُ غَيْــرَ الْأَرْضِ | باب: | لَالَى يَوْمَ تُبَدَّلُ | اب قَـوْلِ الـلّٰـهِ تَـعَ | [87] بُــ |
| 515 | وَالسَّمَوَاتُ كَيْنَسِر | | لسَّمَوَاتُ | ِ صُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَال | ٱلْأَرْ |
| 516 | ا آگ پروارد ہونے کا بیان | باب: | | ب فِي وُرُودِ النَّارِ | [88] بَا |
| 516 | ا موت کو ذبح کرنے کا بیان | | | ب فِي ذَبْحِ الْمَوْتِ | |
| 517 | : دوزخ ہےڈرانے کا بیان شد | | | ب فِي تَحْذِيرِ النَّارِ | |
| | اس مخض کے متعلق جس نے کہا: جب میں مر | | تُّ فَأَحْرِقُونِي | اب فِي مَنْ قَالَ إِذَا مُ | [91] بَــ |
| 517 | جا وَل تو مجھے جلا ڈالنا | | | ارِ | |
| | ا بلی کی وجہ ہے دوزخ میں جانے والی عورت کا | باب: | رَ فِي هِرَّةٍ | ب دَخَلَتِ امْرَأَةُ النَّارَ | [92] بَا |
| 518 | بيان | | | | |
| 519 | اہل دوزخ کوشد بدعذاب ہونے کا بیان | • • | هْلِ النَّادِ | ب فِي شِدَّةِ عَذَابِ أَه | [93] بَا |
| 519 | دوزخ کی واد یوں کا بیان | - | | بِ فِي أُوْدِيَةِ جَهَنَّمَ | |
| | وہ لوگ جنہیں اللہ آپی رحمت سے دوزخ | باب: | النَّارِ بِرَحْمَتِهِ | ب مَا يُخْرِجُ اللَّهُ مِنَ | [95] بَا |
| 519 | ہے آ زاد کردے گا | | | | |

| <i>T</i> | www.sirat-e-iiius | • |
|----------|---|---|
| < G* | 37 کی ترتیب | حمر المنتقالكانية المكافئة |
| 520 | باب: جنت کے درواز وں کا بیان | [96] بَابِ فِي أَبْوَابِ الْجَنَّةِ |
| 520 | باب: جنتی محض ہمیشہ خوش رہے گا اور محتاج نہ ہو گا | [97] بَابِ مَنْ يَدْخُلْ الْجَنَّةَ كَا يَبُوسُ |
| | باب: جنت میں کوڑا بھر جگہ تمام دنیا سے بہتر ہونے | [98] بَابِ لَـمَوْضِعُ سَوْطٍ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ |
| 521 | كابيان | مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا |
| 522 | باب: جنت کی عمارت کا بیان | [99] بَابِ فِي بِنَاءِ الْجَنَّةِ |
| 523 | باب: جنت الفردوس كابيان | [100] بَابِ فِي جَنَّاتِ الْفِرْدَوْسِ |
| | ا باب: جنت میں پہلے داخل ہونے والے گروہ کا | [101] بَابِ فِي أَوَّلِ زُمْرَةٍ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ |
| 523 | بيان | |
| 524 | باب: جنت میں داخلہ کے وقت جنتیوں سے کھے | [102] بَاب مَا يُقَالُ لِأَهْلِ الْجَنَّةِ إِذَا |
| | جانے والے کلمات کا بیان | دَخَلُوهَا |
| 524 | باب: اہل جنت اور اس کی نعمتوں کا بیان | [103] بَابِ فِيْ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَنَعِيمِهَا |
| | باب: الله کی اپنے نیک بندوں کے لیے تیار کی ہوئی | [104] بَابِ مَا أَعَدَّ اللَّهُ لِعِبَادِهِ الصَّالِحِينَ |
| 525 | اشياء كابيان | |
| 525 | باب: اونیٰ مرتبہ کے جنتی کا بیان | [105] بَابِ فِي أَدْنَى أَهْلِ الْجَنَّةِ مَنْزِلًا |
| 526 | باب: جنت کے بالا خانے کا بیان | [106] بَابِ فِي غُرَفِ الْجَنَّةِ |
| 527 | باب: بردی آنکھوں والی حوروں کا بیان | [107] بَابِ فِي صِفَةِ الْحُورِ الْعِينِ |
| 527 | ا باب: جنت کے قیموں کا بیان | [108] بَابِ فِي خِيَامِ الْجَنَّةِ |
| 528 | باب: جنتیون کی اولا د کابیان | [109] بَابِ فِي وَلَدِ أَهْلِ الْجَنَّةِ |
| 528 | باب: جنتیول کی صفول کا بیان | [110] بَابِ فِي صُفُوفِ أَهْلِ الْجَنَّةِ |
| 528 | باب: جنت کی نهرون کابیان | [111] بَابِ فِي أَنْهَارِ الْجَنَّةِ |
| 529 | باب: حوض كوثر كابيان | [112] بَابِ فِي الْكُوْتَرِ |
| 529 | باب: جنت کے در ختوں کا بیان | [113] بَابِ فِي أَشْجَارِ الْجَنَّةِ |
| 530 | باب: عجوة كابيان | [114] بَابِ فِي الْعَجْوَةِ |
| 530 | باب: جنت کے بازار کا بیان | [115] بَابِ فِي سُوقِ الْجَنَّةِ |
| 531 | ہاب: جنت مشقتوں سے گھری ہوئی ہے | [116] بَابِ حُفَّتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ |
| | • | |

| < GE | ترتيب ترتيب | BYS | 38 | DESC | الكاليعيّ | TO TO |
|-------------|-----------------------|-----------------------------------|-------|----------------------------|----------------------------|-----------|
| | پہلے جنت میں داخل | : غرباء كا اميروں سے | باب | 1 | اب فِي دُخُولِ الْفُ | |
| 531 | | ہونے کا بیان | | | ف <u>ن</u> يَاءِ | ٱلأَ |
| 532 | | : دوزخ كاسانس لينےكا | | , | اب فِي نَفَسِ جَهَنَّهُ | [118] |
| | | : نبی ملطحقیقا کے قول : | باب | ﷺ نَارُكُمْ هَذِهِ | اب فِي قُوْلِ النَّبِيّ | [119] بُ |
| 533 | | حصول کاایک حصہ ہے | | | ءٌ مِنْ كَذَا جُزْئًا | جُزْ |
| 533 | | : ملکے عذاب والے دوزخ | | النَّارِ عَذَابًا | بَابِ فِي أَهْوَنِ أَهْلِ | [120] |
| | کیا پھھ اور زیادہ بھی | : الله تعالیٰ کے فرمان' | باب | هَلْ مِنْ مَزِيدِ﴾ | اب قَوْلِهِ تَعَالَى:﴿ | [121] |
| 533 | | '' کابیان | | | | |
| | کے بیان میں | علم میراث _ | | رائض | ۲۱۲۱ | |
| 535 | يان | : مسائل وراثت سيحفے كا: | باب | ى پى | وفي تَعْلِيمِ الْفَرَائِضِ | [1] بَاب |
| | ی اور کی طرف نبت | ہ: اپنے باپ کے علاوہ ^ک | باب | _ | ب مَنْ ادَّعَى إِلَى غَيْ | |
| 538 | إن | کرنے والے مخص کا بر | | | | |
| 540 | ی اور والدین کابیان | : شو ہراور والدین اور ہیو | ا باب | وَامْرَأَةٍ وَأَبُوَيْنِ | ب فِی زَوْجِ وَأَبُوَیْنِ | [3] بَادِ |
| 545 | | : بینی اور بهن کا بیان | | | ب فِي بِنْةٍ وَأَخْتِ | |
| | | ا: سب رشته داروں کو | | | في الْمُشْرَكَةِ | [5]بكاب |
| 547 | | تشہرانے کا بیان | | | | |
| | ر متعلق جن میں ہے | ،: دو چپا زاد بھائيوں _ | ا باب | أُحَدُّهُمَا زَوْجٌ | باب فِي ابْسَنَى عَدِّ | [6] بُـــ |
| 548 | | ایک شوہرہے اور دوسرا | | | ؟خَوُ أَخْرِلاً مِ | |
| 550 | أبيان . | ،: بيئي' پوتی اور حقیقی بہن کا | باب | بْنِ وَأَخْتِ لِلَّابِ | ب فِي بِنْتٍ وَابْنَةِ الْ | [7]بَــا |
| | | | | | į | وَأَ |
| 551 | ور پوتوں کا ہیان | ،: بھائيول' بہنول' بيٹوںا | ا باب | ر كَخُوَاتِ وَالْوَلَدِ | ب فِي الْإِخْوَةِ وَالْ | ر8] بَــا |
| | | | | | لَدِ الْوَلَدِ | وَ وَ |
| 554 | | ،: غلامون اوراہل کتاب ب | ` | رَأَهْلِ الْكِتَابِ | ب فِي الْمَمْلُوكِينَ وَ | [9] بَاد |
| 5 55 | | ،: دادا کی <i>وراثت کا بی</i> ان | ا باب | | اب الْجَدِّ | [10] بَـا |
| | | | 1 | | | |

| ₹ <u>G</u> | C | ترتيب | BIS | 39 | DESC. | يَّيْنَ الْكَالِيَّةِ | J80> |
|-------------|---------|--------------------------------------|---|-------|-----------------------------|------------------------------|-----------|
| 556 | 3 | ر کے قول کا بیان | : دادا کے متعلق سیّدنا ابو بکم | باب | F | ب قَوْلِ أَبِي بَكْرٍ فِي | |
| 559 |) (| النیز کے قول کا بیان | : دادا کے متعلق سیّدنا عمرۂ | باب | | ب ب فِي قَوْلِ عُمَرَ فِي | |
| 560 | ن (| الٹیز ک ے قول کا بیا ز | : وادا کے متعلق سیّدناعلی ۂ | باب | | ب قَوْلِ عَلِيِّ فِي الْ | |
| | 2 | س خالفیر، سے قول من رض عقہ کے قول | : دادا کے متعلق ابن عبا | بإب | | ب ب قَوْلِ ابْنِ عَبَّاسٍ | |
| 563 | 3 | | بيان | | | • | |
| 563 | ; | و کے قول کا بیان | : دادا کے متعلق ابن مسعو | بإب | دٍ فِي الْجَدِّ | ب قَوْلِ ابْنِ مَسْعُو | [15] بَا |
| 565 | ש | ہنائیۂ ک ے قول کا بیا | : دادا کے متعلق سیّدنا زید | باب | P | اب قَوْلِ زَيْدٍ فِي الْـَ | |
| 566 | | ور ماں کے متعلق | ،: شوهر ^{ٔ حقی} قی بهن ٔ دادی ٔ ا | باب | 4 | _اب الْأَكْدَرِيَّةِ زَوْ | |
| | | | | | | مِ مِ وَجَدُّ وَأُمُّ | |
| 567 | | | ہ: داد یوں کے متعلق | ا باب | | اب فِي الْجَدَّاتِ | |
| | | | ،: دادیوں کے متعلق سیّد | ا باب | ى الْجَدَّاتِ | اب قَوْلِ أَبِي بَكْرٍ فِ | [19] بَ |
| 569 | | | بيان | | | | |
| | | |): داد یو <i>ل کے متع</i> لق سیّد | | لدٍ فِي الْجَدَّاتِ | بَابِ قَوْلِ عَلِيِّ وَزَيْ | [20] |
| 570 | | | خِلْنَیْزُ کے قول کا بیان | | | | |
| | | | ب: واو یوں کے متعلق سیّا | | رد فِي الْجَدَّاتِ | بَابِ قَوْلِ ابْنِ مَسْعُو | [21] |
| 57 1 | | | قول کابیان - ، | | | | |
| | | | ب: دادی کے متعلق سیّدنا | بار | فِي الْجَدَّاتِ | بَابِ قَوْلِ مَسْرُوقٍ | [22] |
| 572 | | | بيان | | | | |
| | رستيدنا | | ب: وراشت لوٹانے میں۔ | بار | مُبْدِ اللَّهِ وَزَيْدٍ فِى | بَساب قَوْلِ عَلِيٍّ وَ | [23] |
| 572 | | ** | زید دی گفتہ کے قول کا | | | ڔۘٞڐؚ | i |
| 574 | بيان | | ب: لعان <i>کرنے والے</i> کی | · 1 | نِ الْمُلَاعَنَةِ | بَابِ فِيْ مِيرَاثِ ابْر | ·····[24] |
| 581 | | | ب: ہیجوے کی میراث کا؛ فه: | | ^و ۽ خنثي | بَابِ فِيْ مِيرَاثِ الْ | [25] |
| 582 | | | ب: ایس ش خص کابیان که ^ج | | | بَابِ الْكَلَالَةِ | |
| | جن کا | | ب: ان رشته دارول کی | ابار | وِی اْلاَّرْحَامِ | بَابِ فِيْ مِيرَاثِ ذَا | [27] |
| 583 | | (| حصه مقررتہیں کیا گیا | | | | |

| < BY | 40 کا | حر بتنالايي الاي |
|------|--|---|
| 585 | باب: عصبه کے متعلق | [28] بَابِ الْعَصَبَةِ |
| 587 | باب: مشرک اورمسلمان کی میراث کابیان | [29] بَـاب فِـيْ مِيرَاثِ أَهْلِ الشِّرْكِ وَأَهْلِ |
| | | الإشكام |
| | باب: مال معین کے ادا کرنے کی شرط پر آزاد ہونے | [30] بَابِ الْمُكَاتَبِ |
| 591 | كامعامده كرنے والےغلام كابيان | |
| 593 | باب: ولاء كابيان | [31] بَابِ الْوَلاءِ |
| | باب: آ زاد کرنے والوں کے علاوہ ذوی الارحام کو ث | [32] بَابِ فِيهَ نُ أَعْطَى ذَوِى الْأَرْحَامِ |
| 598 | میراث دینے والے قتص کابیان | دُونَ الْمَوَالِي |
| 598 | باب: ولاء بوت فحض كو ملے گی | [33] بَابِ الْوَلاءُ لِلْكُبْرِ |
| | باب: کسی دوسرے سے دوستی کرنے والے شخص کا | [34] بَابِ فِيْ الرَّجُلِ يُوَالِي الرَّجُلَ |
| 601 | ب <u>ا</u> ن ت ت ت | |
| | باب: مخلَّ عمد اورقتل خطا میںعورت اپنے شوہر کی | [35] بَاب مَنْ قَالَ إِنَّ الْمَرْأَةَ تَرِثُ مِنْ دِيَةِ |
| 602 | دیت سے دارث ہو گی کہنے دالے مخص کابیان شد: | زَوْجِهَا |
| | باب: اس شخص کا بیان جو کہتا ہے کہ کسی کو وارث | [36] بَابِ مَنْ قَالَ لا يُوَرَّثُ |
| 603 | نہیں بنایا جائے گا | |
| 604 | باب: ڈوب کرمرنے والے کی میراث کا بیان | [37] بَابِ مِيرَاثِ الْغَرْقَى |
| 606 | باب: ذوی الارحام کی میراث کابیان | [38] بَابِ مِيرَاثِ ذَوِى الْأَرْحَامِ |
| 609 | باب: اقراراورا فکار کرنے کابیان | [39] بَابِ فِيْ اللاَّدِعَاءِ وَالْإِنْكَارِ |
| 613 | باب: مرتد کی میراث کابیان | [40] بَابِ فِيْ مِيرَاثِ الْمُرْتَدِّ |
| 614 | باب: قاتل کی میراث کابیان میسیر نویز | [41] بَابِ مِيرَاثِ الْقَاتِلِ |
| 616 | باب: مجوس کے فرائض کا بیان | [42] بَابِ فَرَائِضِ الْمَجُوسِ |
| 617 | باب: قیدی کی میراث کامیان سیس | [43] بَابِ مِيرَاثِ الْأَسِيرِ |
| 618 | باب: پھینکے ہوئے بیچے کی میراث کابیان | [44] بَابِ فِيْ مِيرَاثِ الْحَمِيْلِ |
| 620 | باب: زناہے پیداشدہ اولاد کی میراث کابیان | [45] بَابِ فِيْ مِيرَاثِ وَلَدِ الزِّنَا |
| 625 | باب: مائبه کی میراث کا بیان | [46] بَابِ مِيرَاثِ السَّافِبَةِ |

| < B. | 41 کر ترتیب | |
|--------------------------|--|---|
| 627 | | [47] بَابِ مِيرَاثِ الصَّبِيِّ |
| | باب: مال معین کے ادا کرنے کی شرط پر آزاد ہونے | [48] بَابِ فِيْ وَلاءِ الْمُكَاتَبِ |
| 630 | کامعاہدہ کرنے والے غلام کی ولاء کا بیان | ŕ |
| | باب: جولونڈی سے نکاح کرے اس آ زاد شخص کا | [49] بَابِ فِيْ الْحُرِّ يَتَزَوَّ جُ الْأَمَةَ |
| 630 | بيان | |
| 630 | باب: ولاء کی میراث کابیان | [50] بَابِ مِيرَاثِ الْوَلاءِ |
| | باب: دو آ دمیون کا مشترک غلام ہو اور ایک اپنا | [51] بَابِ فِي الْعَبْدِ يَكُونُ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ |
| 631 | ھتے آ زاد کردےاں کا بیان | فَيُعْتِقُ أَحَدُهُمَا نَصِيبُهُ |
| 632 | باب: عورتوں کے لیے ولاء کے حصہ کے بیان | [52] بَابِ مَا لِلنِّسَاءِ مِنَ الْوَلَاءِ |
| 637 | باب: ولاء بيحينه كابيان | [53] بَاب بَيْعِ الْوَكَاءِ |
| 638 | باب: وراثت کے مسئلہ''عول'' کا بیان | [54] بَابِ فِيْ عَوْلِ الْفَرَائِضِ |
| 640 | باب: ولاءحاصل کرنے کے حق کا بیان | [55] بَاب جَرِّ الْوَكاء |
| | | |
| | باب: جو شخص عصبه چھوڑے بغیر فوت ہو جائے اس | [56] بَابِ الرَّجُلِ يَمُوتُ وَلَا يَدَعُ عَصَبَةً |
| 643 | باب: جو شخص عصبہ چھوڑے بغیر فوت ہو جائے اس کا بیان | [56] بَابِ الرَّجُلِ يَمُوتُ وَلَا يَدَعُ عَصَبَةً |
| 643 | • • | [56] بَابِ الرَّجُلِ يَمُوتُ وَلَا يَدَعُ عَصَبَةً ٢٢ كتاب الوصايا |
| 643 | كابياك | |
| | کابیان و <mark>صیتوں کابیان</mark> باب: وصیت کومتحب سیجھنے والے شخص کابیان باب: وصیت کی نضیلت کا بیان | ۲۲۲۲ |
| 644 | کابیان و صیتوں کابیان باب: وصیت کومتحب سیجھنے والے شخص کابیان | ٢٢٢٢ الوصايا [1] بَابِ مَنْ اسْتَحَبَّ الْوَصِيَّةَ |
| 644 645 | کابیان و <mark>صیتوں کابیان</mark> باب: وصیت کومتحب سیجھنے والے شخص کابیان باب: وصیت کی نضیلت کا بیان | ٢٢ ٢٢ الوصايا آا بَاب مَنْ اسْتَحَبَّ الْوَصِيَّة آي بَاب فَضْلِ الْوَصِيَّة |
| 644 645 | کابیان وسیتوں کابیان باب: وسیت کومتحب سیحفے والے شخص کابیان باب: وسیت کی نضیلت کابیان باب: وسیت نه کرنے والے شخص کابیان باب: بھلی باتوں اور شہادتین کی دستیت کے استجاب کابیان | ٢٢ ٢٢ الوصايا [1] بَاب مَنْ اسْتَحَبَّ الْوَصِيَّةِ [2] بَاب فَضْلِ الْوَصِيَّةِ [3] بَاب مَنْ لَمْ يُوصِ |
| 644 645 646 | کابیان وسیتوں کابیان باب: وسیت کو متحب سیحضے والے شخص کابیان باب: وسیت کی فضیلت کابیان باب: وسیت نه کرنے والے شخص کابیان باب: مجلی باتوں اور شہادتین کی وسیت کے | 17 بَاب مَنْ اسْتَحَبَّ الْوَصِيَّة [1] بَاب فَضْلِ الْوَصِيَّة [2] بَاب فَضْلِ الْوَصِيَّة [2] بَاب مَنْ لَمْ يُوصِ [3] بَاب مَنْ لَمْ يُوصِ [4] بَاب مَا يُسْتَحَبُّ بِالْوَصِيَّة مِنَ النَّشَهُّدِ |
| 644 645 646 | کابیان وسیتوں کابیان باب: وسیت کومتحب سیحفے والے شخص کابیان باب: وسیت کی نضیلت کابیان باب: وسیت نه کرنے والے شخص کابیان باب: بھلی باتوں اور شہادتین کی دستیت کے استجاب کابیان | 1]باب مَنْ اسْتَحَبَّ الْوَصِيَّة [2]باب فَضْلِ الْوَصِيَّة [2]باب فَضْلِ الْوَصِيَّة [2]باب مَنْ لَمْ يُوصِ [3]باب مَنْ لَمْ يُوصِ [4]باب مَا يُسْتَحَبُّ بِالْوَصِيَّة مِنَ النَّشَهُّدِ وَالْكَلامِ |
| 644 645 646 | کابیان باب: وصیت کومتحب سیحضے والے شخص کابیان باب: وصیت کی فضیلت کابیان باب: وصیت نه کرنے والے شخص کابیان باب: بھلی باتوں اور شہادتین کی وصیت کے اب: کھی باتوں اور شہادتین کی وصیت کے باب: کم مال میں وصیت نه کرنے والے شخص کا بیان باب: تہائی سے زیادہ وصیت کرنے کابیان | [1] بَاب مَنْ اسْتَحَبَّ الْوَصِيَّةِ [2] بَاب فَضْلِ الْوَصِيَّةِ [3] بَاب مَنْ لَمْ يُوصِ [4] بَاب مَا يُسْتَحَبُّ بِالْوَصِيَّةِ مِنَ التَّشَهُّدِ [4] بَاب مَا يُسْتَحَبُّ بِالْوَصِيَّةِ مِنَ التَّشَهُدِ [5] بَـاب مَـنْ لَـمْ يَـرَ الْـوَصِيَّةَ فِيْ الْمَالِ |
| 644 645 646 647 | کابیان باب: وصیت کومتحب سیحضے والے شخص کابیان باب: وصیت کی نصلیت کابیان باب: وصیت نه کرنے والے شخص کابیان باب: بھلی باتوں اور شہادتین کی وصیت کے اب: کھلی باتوں وصیت نه کرنے والے شخص کا | [1] بَاب مَنْ اسْتَحَبَّ الْوَصِيَّةِ [2] بَاب فَضْلِ الْوَصِيَّةِ [3] بَاب مَنْ لَمْ يُوصِ [4] بَاب مَا يُسْتَحَبُّ بِالْوَصِيَّةِ مِنَ النَّشَهُدِ [4] وَالْكَلامِ [5] بَـاب مَـنْ لَـمْ يَـرَ الْـوَصِيَّةَ فِيْ الْمَالِ |

| ترتيب ترتيب | 199 42 | الكالكاني الكالكانية الكانية الك |
|---|-------------------------------------|--|
| | باب: تہائی سے کم کی وصیت | [8] بَابِ الْوَصِيَّةِ بِأَقَلَ مِنَ الثُّلُثِ |
| | ، بنب باب: وصیّت کرنے والے کے | [8] بَابِ مَا يَجُوزُ لِلْوَصِيِّ وَمَا لَا يَجُوزُ [9] بَابِ مَا يَجُوزُ لِلْوَصِيِّ وَمَا لَا يَجُوزُ |
| | باب: ایک کو نصف اور دوس | [10] بَابِ إِذَا أَوْصَى لِرَجُلٍ بِالنِّصْفِ [10] |
| | كرنے والے خص كا، | وَلاَخَرَ بِالثُّلُثِ |
| نے کا بیان 658 | باب: وصنيت سيرجوع كر | رياب الرُّجُوعِ عَنِ الْوَصِيَّةِ [11] بَابِ الرُّجُوعِ عَنِ الْوَصِيَّةِ |
| 660 | باب: مشکوک وصی کابیان | [12] بَابِ فِيْ الْوَصِيِّ الْمُتَّهَمِ |
| | باب: مریض کی وصیت کا بر | [13] بَابِ وَصِيَّةِ الْمَرِيضِ |
| | باب: تہائی میں سے وار ثور | [14] بَابِ فِيمَنْ رَدَّ عَلَى الْوَرَثَةِ مِنَ النُّلُثِ |
| | باب: دووارتوں کے گواہی | [15] بَابِ إِذَا شَهِدَ اثْنَانِ فِيْ الْوَرَثَةِ |
| | باب: اس وصیت کے متعلق | [16] بَابُ مَا يَكُونُ مِنَّ الْوَصِيَّةِ فِيْ الْعَيْنِ |
| | ہوتی ہے | <u>وَ</u> الدَّيْنِ |
| | باب: وصيت كو پينداورنا | [17] بَابُ مَنْ أَحَبُّ الْوَصِيَّةَ وَمَنْ كَرِهَ |
| | بيان | |
| ے پوری کی جائے | باب: کون می وصیت پہل | [18] بَابِ مَا يُبْدَأُ بِهِ مِنَ الْوَصَايَا |
| ہ ہتے گی بنوفلا <i>ں کے لیے</i> ہے. | باب: اپنے مال سے ایک | [19] بَــاب فِــىُ الَّــلِـِى يُــوصِىْ لِبَنِى فُلان |
| ر محص کا بیان 666 مصل می شوند | وصیّت کرنے والے | وَيُسْهِمُ مِنْ مَالِهِ |
| كوصدقه دينے والے خص | 1 | [20] بَسَابِ إِذَا تَصَدَّقَ الرَّجُلُ عَلَى بَعْضِ |
| | کابیان | وَدَلَيْتِهِ |
| فن دینے کا بیان 667 | باب: تمام مال میں ہے ک | [21] بَابِ مَنْ قَالَ الْكَفَنُ مِنْ جَعِيعِ الْمَالِ |
| ئے وصیت کرنے کا بیان 669 | باب: غائب مخف کے ل | [22] بَسابِ إِذَا أَوْصَى الرَّجُلُ إِلَى الرَّجُلِ |
| 070 | | وَهُوَ غَائِبٌ |
| | باب: میت کو وصیت کر۔ | [23] بَابِ الْوَصِيَّةِ لِلْمَيِّتِ |
| نے کا بیان 670 ما تقسم : سروان | باب: غلام کووصیت کر۔ | [24] بَابِ الْوَصِيَّةِ لِلْعَبْدِ |
| ، مال تقتیم کرنے کا ناپیند کاران 671 | ہاب: موت کے فریب سمجھنے والے شخص | [25] بَـاب مَـنْ كَـرِهَ أَنْ يُـفَرِّقَ مَالَهُ عِنْدَ |
| كابيان كابيان | جھنے والے سس | الْمَوْتِ |

| ~@\$ | ر ترتیب | 43 | DES. | ٢ | JAD. |
|------|--|-------|------------------------|------------------------------------|---------------|
| | ر: (کسی کے لئے) کسی وارث کے جھے کے | باب | ربِمِثْلِ نَصِيبِ | باب السَّرِّجُ لِي يُوصِي | _ [26] بَـ |
| 671 | برابروصیت کرنے والے مخص کابیان | | | سِ الْوَرَثَةِ | بَعْف |
| | .: غلام کی آمدن کی وصیت کرنے والے محض کا | بإب | ى بِغَلَّةِ عَبْدِهِ | اب فِي الرَّجُلِ يُوصِ | [27] |
| 673 | بيان | | | | |
| 673 | بیان »: وارث کو وصیت کرنے کا بیان | | | اب الْوَصِيَّةِ لِلْوَادِثِ | [28] بَا |
| 676 | ،: بالداركووصيت كرنے كابيان | • • | | اب الْوَصِيَّةِ لِلْغَنِيِّ | [29] بَـ |
| | ،: اس آ دمی کا بیان جو یوں وصیّت کرے سے م | باب | مُلانِ فَإِنْ مَاتَ | اب الرَّجُلِ يُوصِيْ لِهُ | [30] بَ |
| | فلاں شخص کے لیے ہے اور اگر وہ مرجائے تو | | | لَلانِ | فَلِفُ |
| 676 | | | i | | |
| | ر: غیر رشته دار ول کے لئے وصیت کرنے | | لِغَيْرِ قَرَابَتِهِ | ب فِي الرَّجُلِ يُوصِ | [31] بَا |
| 677 | دا لے شخص کا بیان | | | | |
| | ،: جب کوئی کے:''میرے دوغلاموں سے ایک | باب | غُلامَيَّ خُرُّ وَلَمْ | باب إِذَا قَبَالَ أَحَدُ كُمْ | [32] بُـ |
| 678 | آ زاد ہے'' پھر مرجائے اور بیان نہ کرے | | | ن | يبير |
| | ،: بیاری میں آ زادی کی وصیت کر کے تندرست | | ي فِي مَرَضِهِ ثُمَّ | نْ اب إِذَا أَوْصَى بِالْعِتْةِ | [33] بَـ |
| 678 | ہو جانے والے شخص کا بیان م | | | | • |
| | .: جس کے پاس اور مال نہ ہوا یسے مخف کے | باب | | اب إِذَا أَعْتَىقَ غُكَامَ | |
| | موت کے وقت غلام آ زاد کرنے کا بیان | | | بُسَ لَهُ مَالٌ غَيْرُهُ | |
| 679 | ب: بدبر کے تہائی مال سے شار ہونے کا بیان | • | | اب مَنْ قَالَ الْمُدَبُّرُ و | |
| | ب: ال مخص کا بیان جو کہتا ہے'' کسی کو وصیت میں | باب | هَدْ عَلَى وَصِيَّةٍ | اب مَنْ قَالَ لَا تَشْهَا | [36] بُ |
| 681 | گواہی نہ دویہاں تک کہ جھھ پراس کو پڑھا جائے'' | | | ى تُقْرَأُ عَلَيْكَ | ر ا ح |
| 681 | ب: ام ولد کے لئے وصیت کرنے والے خص کابیان | باب | اتِ أَوْلَادِهٖ | اب مَنْ أَوْصٰى ِلْأُمَّهَ | [3 7] |
| 681 | ب: لڑکے کے وصیت کرنے کا بیان | باب | | اب وَصِيَّةِ الْغُلامِ | [38] بَ |
| | ب: لڑکے کی وصیت جائز نہیں قرار نہ ویے | بار | - | ابِ مَنْ قَالَ لَا يَجُوْزُ | [39] بَ |
| 684 | والشحض كابيان | | | | |
| | ب: بھا گے ہوئے غلام کی آزادی کی وصیت کابیان | ا بار | عَبْدِ لَهُ آبِقٍ | اَب إِذَا أَوْصٰى بِعِتْقِ | į·····[40] |

| ₹G! | المركز ترتيب | 44 | حال يَتَنَالَكُلِيعَةِ كَالْكُولِيمَةِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ |
|-----|---|-------|--|
| 686 | ،: عورتوں کو وصیت کرنے کا بیان | | [41] بَابِ الْوَصِيَّةِ إِلَى النِّسَاءِ |
| 686 | ،: ذمی کو وصیت کرنے کا بیان | باب | [42] بَابِ الْوَصِيَّةِ لِلْأَهْلِ الدِّمَّةِ |
| 686 | ہ: وق <i>ف کرنے کا بی</i> ان | | [43] بَابِ فِي الْوَقْفِ |
| | ،: اگر وصیت کرنے والے سے پہلے وہ مخض | | [44] بَابِ إِذَا مَاتَ الْمُوصَى لَهُ قَبْلَ |
| 687 | مرجائے جس کے لیے وصیت کی گئی ہو | | الْمُوْصِيْ |
| 688 | ،: الله کے راستہ میں وصیت کرنے کا بیان | باب | [45] بَابِ إِذَا أَوْصَى بِشَيْءٍ فِيْ سَبِيلِ اللَّهِ |
| | 6.: < ~ 7 | | |
| | قرآن کے فضائل | | ٢٣ كتاب فضائل القرآن |
| 690 | .: قرآن پڑھنے کی فضیلت کا بیان | | [1] بَابِ فَضْلِ مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ |
| 703 | ،: قرآن سیھنے اور سکھانے والی کی خوبی | | [2] بَابِ خِيَارُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ |
| 704 |): قرآن پڑھنے کے بعد بھول جانا | | [3] بَابِ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ ثُمَّ نَسِيَهُ |
| 705 | .: قرآن کی نگهداشت | باب | [4] بَابِ فِيْ تَعَاهُدِ الْقُرْآنِ |
| 709 | ر: قرآن الله کا کلام ہے | باب | [5] بَابِ الْقُرْآنُ كَلامُ اللَّهِ |
| 710 | .: الله کی کلام کوتمام کلاموں پر فضیلت ہے | باب | [6] بَابِ فَضِلِ كَلامِ اللَّهِ عَلَى سَائِرِ |
| | | | الْكَلامِ |
| | ے: جب قرآن پڑھنے سے دل اچات ہوجائے | باب | [7] بَابِ إِذَا اخْتَلَفْتُمْ بِالْقُرْآنِ فَقُومُوْا |
| 711 | تو پر <i>ٔ ه</i> نا چ <i>ھوڑ</i> دو | | |
| 712 | .: قرآن پڑھنے والےمومن کی مثال | باب | [8] بَابِ مَثَلِ الْمُؤْمِنِ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ |
| | : قرآن کے ذریعہ سے اللہ تعالی قوموں کی | باب | [9] بَابِ إِنَّ اللَّهَ يَرْفَعُ بِهِذَا الْقُرْآنِ أَقُوامًا |
| 714 | پشت اور بلند کرتا ہے | | وَيَضَعُ آخَرِينَ |
| 715 | ب: قرآن سننے والے شخص کی فضیلت کا ہیان | باب | [10] بَابِ فَضْلِ مَنْ اسْتَمَعَ إِلَى الْقُرْآنِ |
| 715 | ب: قرآن دشواری سے پڑھنے والے کی فضیلت | ا باب | [11] بَـابِ فَـضْـلِ مَنْ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَيَشْتَدُّ |
| | | | عَلَيْهِ |
| 717 | ب: سورة فاتحد کی فضیات | بار | [12] ····· بَابِ فَضْلٍ فَاتِحَةِ الْكِتَابِ |

| . L. C. C. C. | 45 کے اور ترتیب | المراجعة الم |
|---------------|---|--|
| 719 | باب: سورة بقرة كى فضيلت | [13] بَابِ فِيْ فَضْلِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ |
| 1 | باب: سورہ بقرہ کے پہلے جھے اور آیت الکری کی | [14] بَابِ فَضْلِ أُوَّلِ سُورَةِ الْبُقَرَةِ وَآيَةِ |
| 720 | فضيلت | الْكُرْسِي |
| 725 | باب: سورة بقرة اورآل عمران كى فضيلت | [15] بَـاب فِـى فَـضْـلِ سُـورَةِ الْبَقَرَةِ وَآلِ |
| | | عِمْرَانَ |
| 728 | باب: سورة آل عمران كي فضيلت | [16] بَابِ فِيْ فَضْلِ آلِ عِمْرَانَ |
| 729 | باب: سوره انعام کی فضیلت | [17] بَابِ فَضَائِلِ الْأَنْعَامِ وَالسُّورِ |
| 731 | باب: سورة الكهف كي نضيلت | [18] بَابِ فِي فَضْلِ سُورَةِ الْكَهْفِ |
| 732 | باب: سورة سجده اور سورة ملك كي فضيلت | [19] بَابِ فِي فَضْلِ سُورَةِ تَنْزِيلُ السَّجْدَةِ |
| | | وَتَبَارَكَ |
| 734 | باب: سورة طه اور کیلین کی نضیلت | [20] بَابِ فِيْ فَضْلِ سُورَةِ طه وَ يٰس |
| 734 | باب: سورة يليمن كى نضيلت | [21] بَابِ فِيْ فَضْلِ يْس |
| 736 | باب: سورة دخان، حاميم اور مسجات كي نضيلت | [22] بَابِ فِي فَضْلِ حِم الدُّخَانِ |
| | | وَالْحَوَامِيمِ وَالْمُسَبِّحَاتِ |
| 738 | باب: سورة كافرون كى فضيلت | [23] بَابِ فِيْ فَضْلِ قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ |
| 740 | باب: سورة اخلاص كى فضيلت | [24] بَابِ فِيْ فَضْلٍ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ |
| 743 | باب: سورة الناس والفلق كي فضيلت | [25] بَابِ فِيْ فَضْلِ الْمُعَوِّ ذَتَيْنِ |
| 745 | باب: وس آیات پڑھنے کی فضیلت | [26] بَابِ فَضْلِ مَنْ قَرَأَ عَشْرَ آيَاتٍ |
| 746 | باب: بچاس آیات پڑھنے کی فضیلت | [27] بَابِ مَنْ قَرَأَ خَمْسِيْنَ آيَةً |
| 747 | باب: سوآ یات پڑھنے کی فضیلت | [28] بَابِ مَنْ قَرَأَ بِمِائَةِ آيَةٍ |
| 748 | ہاب: دوسوآ یات پڑھنے کی فضیلت | 29] بَابِ مَنْ قَرَأَ بِمِائَتَيْ آيَةٍ |
| 749 | باب: ہزارآیات پڑھنے کی فضیلت | [30] بَابِ مَنْ قَرَأَ مِنْ مِاثَةِ آيَةٍ إِلَى الْأَلْفِ |
| 750 | باب: ہزارآیات پڑھنے کی فضیلت | [31] بَابِ مَنْ قَرَأَ أَنْفَ آيَةٍ |
| 751 | باب: قنطار کی مقدار | [32] بَابِ كَمْ يَكُونُ الْقِنْطَارُ |
| | | |

| ~BC | 46 کی ترتیب | |
|-----|----------------------------------|---|
| 752 | باب: ختم قرآن کے متعلق | [33] بَابِ فِيْ خَتْمِ الْقُرْآنِ |
| 758 | باب: خوش آ وازی ہے قر آن پڑھنا | [34] بَابِ التَّغَيِّى بِالْقُرْآنِ |
| 762 | باب: قرآن کوگا کر پڑھنے کی کراہت | [35] بَابِ كَرَاهِيَةِ الْأَلْحَانِ فِيْ الْقُرْآنِ |
| | | |
| | | 2. 192. 192. |



٧.... ومن كتاب الصيد

شکار کے بیان میں

"صیر" یہ صَادَ یَصِیدُ (ضَرَبَ) ہے مصدر ہے اس کا معنی شکار کرنا ہے۔ اصطلاح میں یہ ایسے جنگی جائز جائز کو کہتے ہیں جوکسی کی ملکیت وقبضے میں نہ ہو (الفقہ الاسلامی وادلتہ) شریعت میں یہ جائز ودرست ہے اس کے کرنے میں کوئی حرج نہیں قرآن میں ہے: ﴿وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا ﴾ (المائدہ: 2) ودرست ہے اس کے کرنے میں کوئی حرج نہیں قرآن میں ہے: ﴿وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا ﴾ (المائدہ: 2) [1] بَابِ التَّسُمِيةِ عِنْدَ إِرْسَالِ الْكُلْبِ وَصَيْدِ الْكِلَابِ کَتَ جَهورٌ نے وقت ہم اللہ کہنا اور کتے سے شکار کرنا

2045 - أَخْبَرَنَا يَعْلَى بْنُ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا عَنْ عَامِرٍ

عدی ہن حاتم کہتے ہیں۔ میں نے رسول اللہ مطافی آیا ہے کتے کے شکار کے متعلق پوچھا آپ نے فرمایا: ' جس جانور کوتمہارا کتا تمہارے لئے کچڑے اسے کھالو۔ کیونکہ کتے کا اسے کپڑنا ہی اس کا ذبح کرنا ہے۔ اور اگرتم اس کے ساتھ اور کتا دیکھو اور تمہیں خوف ہو کہ اس کے ساتھ اس کتے این نے بھی اسے مارا ہے تو اسے نہ کھاؤ۔ کیونکہ تم نے اپنے کے پر بہم اللہ پڑھی تھی اور دوسرے پرنہیں پڑھی تھی۔''

فوائد: (۱) کتے کے ذریعے شکار کرنا جائز ہے بشرطیکہ وہ کتا سدھایا ہوا ہواورا گرسدھایا ہوا نہ

 [◘] متفق عليه: البخاري، كتاب الذبائح والصيد، باب التسمية على الصيد (5475) ومسلم، كتاب الصيد والذبائح،
 باب الصيد بالكلاب المعلمة (4954)

48 AS EXISTING كتاب الصيد

ہوتوا لیے کتے کے شکارکوز نے کرنا ضروری ہے۔ صدیث میں ہے: "وما صدت بکلبك المعلم فذكرت اسم الله فكل وما صدت بكلبك غيرمعلم فادركت ذكاته فكل. " (بخاري) اور جھے تم نے اپنے سدھائے ہوئے کتے کے ذریعے شکار کیا ہو اوراس پر (چھوڑتے ہوئے) اللہ کا نام لیا ہو تواہے کھالو اور جو شکار تونے بغیرسدھائے ہوئے کتے کے ذریعے تواسے ذبح کرلوتو کھالو (۲) سدھائے ہوئے کتے کا تہارے لیے روک لینا ہی اس کوذئ کرنا ہے لہذا اگراس کی جان نکل بھی چکی ہوتب بھی وہ حلال ہے (۳) آپ کے کتے کے ساتھ اگر دوسرا کتاشکار کے قریب ملے تواگر شکار ذبح کرنے کے قابل ہوتو جائز ورنہ وہ حرام ہے (سم) ذبح یاشکار کرتے وقت اللہ کانام لینا ضروری ہے۔

2046 - أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا زَكَرِيًّا عَنْ عَامِرِ

عَنُ عَدِيّ بُنِ حَاتِم قَالَ سَأَلُتُ رَسُولَ عديٌ بن حاتم كَتْ بين كرمين نے رسول الله عَلَيْكَ الله على الله معراض کے شکار کے متعلق یوچھا پھر انہوں نے پہلی مدیث کی طرح ذکر کیا۔

اللَّهِ ﷺ عَنُ صَيْدِ الْمِعْرَاصِ فَذَكَرَ مثلة 0

فواند: "معراض" كہتے ہيں ايسے شكاركوجوچوڑ ائى كے رخ كسى شئے كے لگنے سے مراہو۔اس کی تفصیل آئندہ آرہی ہے۔دیکھیے (2052)

[2] بَابِ فِي اقْتِنَاءِ كُلُبِ الصَّيْدِ أُو الْمَاشِيَةِ شکار یا جانور کی حفاظت کے لئے کتا یالنا

2047_ أَخْبَرَنَا أَبُوْ نُعَيْمِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ دِيْنَارِ ····

ابن عمر ذالته كتريخ بي كه رسول الله الشُّطَّيَّةُ في فرمايا: "جو شخص شکار یا جانور کی حفاظت کے علاوہ کسی اور غرض کے لئے کتا پالے روزانہ اس کے اعمال سے دو قیراط کم ہو جاتے ہیں۔"

عَن ابُن عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَىٰ مَنُ اقْتَبْ مِ كَلُبًا إِلَّا كُلُبَ صَيْدٍ أَوْ مَاشِيَةٍ نَقَصَ مِنُ عَمَلِهِ كُلَّ يَوُم قِيرَاطَان . ٥

فوائد: (۱) شکار اور ربوڑ کی حفاظت کرنے والے کے علاوہ کسی قسم کا کتا کسی بھی مقصد کے لیے رکھنا اور اس کا پالناحرام ہے(۲) اس حرام کے مرتکب کے اجر سے روز اند دوقیراط نیکیاں کم ہوتی ہیں قیراط یا ماشہ

[•] صحیح: سابقہ بی مکرد ہے۔

[€] متفق عليه: البخاري، كتاب الصيد، باب من اقتني كليا ليس بكلب صيد أو ماشبة (5481) ومسلم، كتاب المساقاة باب الأمر بقتل الكلاب وبياك نسخة (4001)

حَكَلُ الْكَالِيْعِيْ الْكَالِيْعِيْ 49 كَابِ الصيد عَابِ الصيد عَابِ الصيد عَابِ الصيد عَابِ الصيد

کے قریب وزن ہے لیکن جنازے کے اجر کے بارے میں بتاتے ہوئے آپ مین آئے آئے احد بہاڑ کے برابر ایک قیراط کوقرار دیا۔ادھر بھی بہی مدنظرر کھا جائے گاجو کہ وعید بلیغ کاسب ہے (واللہ اعلم) (۳) بعض حرام کام اس قدر منحوں میں کہ سابقہ نیکیوں کے زوال کاباعث بن جاتے میں (العیاذ باللہ)

2048 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ يَزِيدَ بْنِ خُصَيْفَةَ

سائب بن بزید کہتے ہیں کہ انہوں نے سفیان بن ابوز ہیر ساتھ وہ مسجد کے دروازے کے پاس اپنے ساتھ والے لوگوں سے کہدر ہے تھے میں نے رسول الله مشاقیق کو یہ فرماتے ہوئے ساز ''جو مخص ایسا کتا پالے جو نہ کھیتی کی حفاظت کرے اور نہ جانوروں کی تو اس کے تواب سے روزانہ دو قیراط کی کمی ہو جاتی ہے۔''لوگوں نے کہا: آپ نے یہ رسول اللہ مشاقیق ہے۔''لوگوں نے کہا: آپ

عَنِ السَّائِبِ بُنِ يَزِيدَ أَنَّهُ سَمِعَ سُفُيانَ بُنِ أَبِي رُهَيْ بِي يُزِيدَ أَنَّهُ سَمِعَ سُفُيانَ بُن أَبِي رُهَيْ بِي يُحَدِّثُ نَاسًا مَعَهُ عِنْدَ بَابِ الْمَسْجِدِ فَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ عَنْ يَقُولُ مَنُ اقْتَنَى كَلُبًا لَا يُغْنِى عَنْهُ وَرُعًا وَلَا ضَرُعًا نَقَصَ مِنْ عَمَلِهِ عَنْهُ وَرُعًا وَلَا ضَرُعًا نَقَصَ مِنْ عَمَلِهِ كُلَّ يَوُم قِيرَاطٌ قَالُوا أَنْتَ سَمِعُتَ هَذَا عَلَى وَرَبِ هَذَا مِنْ رَسُولِ اللهِ عَلَيْهِ قَالَ إِي وَرَبِ هَذَا الْمَسْجِدِ. • الله عَلَيْهُ قَالَ إِي وَرَبِ هَذَا الْمَسْجِدِ. • المُسْجِدِ. • المُسْجِدِ. • الله عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهُ قَالَ إِي وَرَبِ هَذَا

فوائد: ندکورہ حدیث میں ایک قیراط کی کی کا ذکر ہے سابقہ کے برعکس لہذا اس کی علماء نے مختلف توجیہات کی ہیں کہ مکہ مدینہ میں دوجبکہ دوسرے شہروں میں ایک قیراط یاعام کتاپالنے سے ایک قیراط اورکوئی خطرناک کتا پالنے کی صورت میں دوقیراط یاعام کتاپالنے کی صورت میں ایک جبکہ سیاہ کتاپالنے کی صورت میں دوقیراط اجرکم ہوتا ہے۔ چنا نچہ ان میں سے آخر الذکر زیادہ بہتر معلوم ہوتی ہے۔ (واللہ اعلم)

کے رب کی شم! جی ہاں۔''

2049 أَخْبَرَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ عَنْ مُطَرِّفِ

عبداللہ بن معفل کہتے ہیں کہ نبی اللہ ایک نے کوں کو مارنے کا حکم دیا۔ پھر آپ نے فر مایا: '' مجھے کوں سے کوئی تعلق نہیں 'پھر آپ نے جراگاہ کی حفاظت کرنے والے کتے اور شکاری کتے کے یالنے کی اجازت دی۔

عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ مُعَقَّلٍ أَنَّ النَّبِيَّ عَلَيْ أَلَّهُ النَّبِيِّ عَلَيْ أَمَّ النَّبِيِّ عَلَيْ أَمَّ الْمَا بَالِيُ أَمَّ قَالَ مَا بَالِيُ وَلِيُكَلَابِ ثُمَّ رَخَّصَ فِي كَلُبِ الزَّرُعِ وَكُلُبِ الزَّرُعِ وَكَلُبِ الضَّيْدِ . ٥ وَكُلُبِ الصَّيْدِ . ٥

 [◘] متفق عليه: البخاري، كتاب الحرث والمزارعة، باب اقتنا الكلب للحرث (2323) ومسلم، كتاب المساقاة، باب
 الأمر يقتل الكلاب وبيان نسخه (3012)

[●]صحیح مسلم، كتاب الطهارة، باب حكم و لوغ الكلب (651) و ابوداؤد، كتاب الطهارة، باب الوضوء بسؤر الكلب

50 الكالكان الكالتكان [3] بَابِ فِي قَتُلِ الْكِكَلابِ کوں کوتل کرنا

2050- أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِع ﴿

ابن عمر فالنبيًّا كہتے ہیں كہ رسول الله طشيًا بني كوں كو مارنے کا تھم دیا۔ عَن ابُن عُمَرَ قَالَ أَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْهُ بقَتُل الْكِلاب . •

2051 ـ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِر حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنِ الْحَسَنِ ﴿

عبداللہ بن مغفل کہتے ہیں کہ رسول الله طلع کے فرمایا: "اگر کتے گروہ نہ ہوتے تو میں ان سب کو مارنے کا تھم ديتا البنة برسياه بهيم كو مار دو "سعيد بن عامر كبت بن: كېمېمكمل ساه كو كېتى ېن _

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ مُغَفَّلِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِنَّ لَوُ لَا أَنَّ الْكِلَابَ أُمَّةٌ مِنَ الْأُمَمِ لَأَمَرُتُ بِقُتُلِهَا كُلِّهَا وَلَكِنُ اقْتُلُوا مِنْهَا كُلُّ أَسُودَ بَهِيْم قَالَ سَعِيدُ بُنُ عَامِر الْبَهِيُمُ الْأَسُودُ كُلُّهُ. ۞

فواند: (۱) کے کوآل کرنامستحب جبکہ کالے کتے کو مارنا لازم ہے (۲) اللہ کی پیدا کردہ کوئی بھی مخلوق حكمت سے خالى نہيں ۔اس ليكسى بھى مخلوق كوكلى طور برختم كرنا خلاف مصلحت ہے۔ [4] بَابِ فِي صَيُدِ الْمِعُرَاضِ

معراض كاشكار

2052 أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي السَّفَرِ عَنِ الشَّعْبِيّ قَالَ.. کے تیر (چوڑائی والی جانب) کے متعلق بوچھا آ یا نے فرمایا: '' اگروه تیز دهار ہے گوشت کو بھاڑ دے تو کھالو، اور جب چوڑائی سے گلے اور مار ڈالے ۔ پس وہ (ایسے ہے جیسے) لاٹھی سے ماری ہوئی چیز ہوتی ہے،اسے نہ کھاؤ۔''

النَّبِيَّ عِنْ الْمِعُرَاضِ فَقَالَ إِذَا أَصَابَ بِحَدِّهِ فَكُلُ وَإِذَا أَصَابَ بِعَرُضِهِ فَقَتَلَ فَإِنَّهُ وَقِيْذٌ فَلا تَأْكُلُ . ٥

[◘] متفق عليه: البخاري، كتاب بدء الخلق، باب اذا وقع في شراب أحدكم (3323) ومسلم، كتاب المساقاة باب الأمر بقتل الكلاب وبيان نسخه (3992)

[◘]صحيح: ابوداؤد، كتاب الصيد، باب في اتخاذ الكلب للصيد وغيره (2845) والترمذي، كتاب الأحكام والفوائد باب ماجاء في قتل الكلاب (1486) ﴿ متفق عليه: البخاري، كتاب الذبائح والصيد (5465) ومسلم، كتاب الذبائح والصيد (1929)

يَتِنَ الْكَالِيْقُ ٢٥١ مِنْ 5١ مِنْ كَتَابِ الصيد اللهِ المِلْمُلِي اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ الل

فواند: ' معراض'' کہتے ہیں بغیر پھل والے تیریاالیی لکڑی کوجس کی اطراف دھاروالی ہوں۔ لہذا ایسی لکڑی ہے شکار کیا گیا جانور اگرتو دھار لگنے ہے خون نکل کر مرا ہوتو جائز ورنہ چوڑ ائی رخ لگنے کیوجہ سے چوٹ سے مراہوتو بین موتوذ ق ' چوٹ سے مراہوجانور ہوگا کہ جس کا کھانا حرام ہے۔ بخاری میں ب "كل ما خَرَقَ وما اصابَ يعرضه فلا تَاكل" معراض كم تعلق سوال كے جواب مين آپ سُنَّ الله نے فریایا جو پھاڑ ڈالے یعنی زخم کرکےخون نکال دے وہ کھالے اور جو چوڑ ائی رخ لگے اسے نہ کھا۔

[5] بَابِ فِي أَكُلِ الْجَرَادِ ٹڈی کھانا

2053 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي يَعْفُورِ

عَنُ عَبْدِ اللَّهِ بُن أَبِي أَوْفِي قَالَ غَزَوُنَا معبدالله بن ابواوفي كمت بين : مم في رسول الله السُّفَانَاكم کے ساتھ غزوے کیے۔اور ہم ٹڈی کھاتے تھے۔

مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ سَبُعَ غَزَوَاتٍ نَأْكُلُ

الُجَرَادَ. ٥

فواند: ٹڈی کھانا حلال ہے بیحشرات الارض کی ایک قتم ہے بیگروہ کی صورت میں نمودار ہوتی ہیں اور جس فصل یا کھیت برہے گزر جائیں توانہیں جیٹ کرجاتی ہیں یہ مری ہوئی بھی مل جائے تو حلال ہے مديث مين آتا ب "أحلت لنا ميتتان - الحُوتُ والجرادُ. " (ابن ماجه) بمار عدوم ادا طلال ہیں ۔مچھلی اور ٹڈ ی۔

[6] بَابِ فِي صَيْدِ الْبَحُر دريا كاشكار

2054 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ قِرَاثَةً عَنْ مَالِكِ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ سَلَمَةً مِنْ آلِ الْأَزْرَقِ أَنَّ الْمُغِيْرَةَ بْنَ أَبِي بُرْدَةَ وَهُوَ رَجُلٌ مِنْ بَنِيْ عَبْدِ الدَّارِ أَخْبَرَهُ

ابو ہررہ فاللہ کہتے ہیں ایک آدی نے نبی طفی ایک یو چھا ہم دریا میں سفر کرتے ہیں اور ہم اپنے ساتھ تھوڑا سا یانی رکھتے ہیں اگر اس سے وضو کریں تو پیاہے رہ جاتے

أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيُرَةَ يَقُولُ سَأَلَ رَجُلَّ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ إِنَّا نَرُكُبُ الْبَحُو وَنَحُمِلُ مَعَنَا الْقَلِيلَ مِنَ الْمَاءِ فَإِنَّ

[◘] متـفق عليه: البخاري، كتاب الذبائح والصيد، باب أكل الحراد (5495) ومسلم، كتاب الصيد والذبائح باب إباحة الحراد (5019)

الكَالِيْوَيُّ الكَالِيْوِيُّ الكَالِيْوِيُّ عَلَيْهِ الصيد عَلَيْ الكَالِيْوِيُّ الكَالِيْوِيُّ الكَالِيْوِيُ

میں کیا ہم دریا کے یانی سے وضو کرلیں؟ رسول الله مستفریق نے فرمایا: "اس کا یانی یاک ہے اور اس کا مردار حلال

تَوَضَّأْنَا بِهِ عَطِشْنَا أَفَنَتُوَضَّأُ مِنُ مَاءٍ الُبَحُـر فَقَـالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ هُوَ الطَّهُورُ مَاؤُهُ اللَّحِلُّ مَيْتَتُهُ. •

فوائد: (۱) بیعنبرنامی مجھلی تھی جو کہ سلمانوں کے ایک غزوہ سے بھوک کے ہاتھوں تنگ آجانے کے بعدانعام الی کے طور برملی مذکورہ حدیث سے اس کی حکمت کا اندازہ کرنا قطعی مشکل نہیں ۔ جو کہ اللہ کی عظمت کی دلیل ہے۔ (۲) سمندر سے باہرنکل کرا گرمچھلی مرجائے تو اسے کھانا جائز ہے۔

2055 أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيّ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرِو يَعْنِي ابْنَ دِيْنَارِ

ثُـلَاثِ مِائَةٍ فَأَصَابَنَا جُوُعٌ حَتَّى أَتَيْنَا الْبُحُرَ وَقَدُ قَذَفَ دَاتَّةً فَأَكَلُنَا مِنْهَا حَتَّى ثَابَتُ أَجُسَامُنَا فَأَخَذَ أَبُو عُبَيْدَةَ ضِلُعًا مِنْ أَضُلَاعِهَا فَوَضَعَهُ ثُمَّ حَمَلَ أَطُولَ رَجُل فِي الْجَيْش عَلَى أَعْظَم بَعِير فِي الُجَيُش فَمَرَّ تَحْتَهُ هَذَا مَعْنَاهُ . ٥

عَنْ جَابِرِ قَالَ بَعَفَنَا رَسُولُ اللَّهِ عِلَيْ فِي عَالِر رَبَّ اللَّهِ عَلَيْ سَوْل الله عَلَيْهَمْ نَ تين سو آ دمیوں کے ساتھ بھیجا ،ہمیں بہت بھوک گی حتی کہ ہم دریا کے پاس مینچ تو ایک جانور کو دریانے باہر بھینک دیا تھا۔ تو ہم نے اس سے کھایا حتی کہ ہمارے جسم (حسب سابق قوت والی حالت میں) لوٹ آئے پھر ابوعبید ؓ نے اس کے بہلو کی ایک بڈی لے کر رکھی اور لشکر کے لیے آ دی کو لشکر کے بڑے اونٹ برسوار کیا، وہ اس کے نیچے سے گزر

> گیا۔ بہاس کامعنی ہے۔ [7] بَابِ فِي أَكُلِ الْأَرُنَبِ خرگوش کھانا

> > 2056- أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

قَالَ هشَامُ بُنُ زَيْدِ بُنِ أَنَسَ أَخُبَرَنِي قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بُنَ مَالِلْتٍ يَقُولُ أنُفَجُنَا أَزُنَبًا وَنَحُنُ بِمَرِّ الظُّهُرَانِ

ہشام واللفظ بن زید بن انس کہتے ہیں میں نے انس بن ما لک کو یہ کہتے ہوئے سنا:''ہم نے'مرانظہر ان' میں ایک خرگوش بھگایا لوگ دوڑے اور اسے تھکا دیا ، تومیں نے

[•] صحيح: ابوداؤد، كتاب الطهارة، باب الوضوء بماء البحر (83) نيز و كيه مالقه (756،755)

[🛭] متـفق عليه: كتاب المغازي، باب غزوة سيف البحر (4361) ومسـلم، كتاب الصيد والذبائح باب إباحة ميتة البحر

فَسَعَى الْقَوُمُ فَلَغِبُوا فَأَخَذْتُهَا وَجِئُتُ فَصَالِكَا لَكُونَيْ فَكَالِمُ فَكَافِهُ الْأَلِيَّانَ الْكَالِمُ فَكَا اللَّهِ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللِهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْم

عَنُ مُحَمَّدِ بُن صَفُوانَ أَنَّهُ مَرَّ عَلَى

النَّبِيِّ عِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُعَلِّقُهُمَا فَقَالَ يَا

اسے بکڑ لیا اور اسے لے کر ابوطلحہ کے پاس گیا انہوں نے اسے ذکح کیا اور اس کے سرین یا دونوں رانیں رسول اللہ طفیع کیا کیا۔'' اللہ طفیع کیا کیا۔''

53 کتاب الصید

فوائد: (۱) "نَفَجَ " بمعنى بلند بوا اور انفَجْنَا ہے مراداہے بعر کایا ، خرگوش کواس کی کمین گاہ

ے نکال کر بھگایا (۲) مر الظہر ان، یہ مکہ ہے تقریباً 22 کلومیٹر شال میں حجاز کی ایک وادی کانام ہے جس کا یانی جدہ کے جنوب میں سمندر میں گرتا ہے۔ (۳) خرگوش کھانا اس کاشکار کرنا حلال ہے۔

رِ 2057 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا دَاوَدُ بْنُ أَبِي هِنْدِ عَنْ عَامِرِ

رَسُولَ اللّهِ إِنَّى دَخَلُتُ عَنَمَ أَهُلِى عَيْنَ اللّهِ عَائدان كَى أَصُولَ اللّهِ إِنَّى دَخَلُتُ عَنَمَ أَهُلِى عَيْنَ اللّهُ اللّهِ عَائدان كَى أَصَطَدُتُ هَدَيْنِ الْأَرْنَبَيْنِ فَلَمُ أَجِدُ خَرُلُوسُولَ كَا شَكَارِكِيا - " عَدِيدَةً أُذَكِيْهِمَا بِهَا فَذَكَيْتُهُمَا بِمَرُوةٍ يَالُى ، جَل عَائِيل وَرَا عَدِيدَةً أُذَكِيْهِمَا بِهَا فَذَكَيْتُهُمَا بِمَرُوةٍ يَالُى ، جَل عَائِيل وَرَا اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ

[8] بَابِ فِي أَكُلِ الضَّبِ گوه کھانا

2058 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ دِينَارِ

ابن عمر خالئی کہتے ہیں نبی طفی آیا ہے گوہ کھانے کے متعلق پوچھا گیا آپ نے فرمایا: ''نہ میں اسے کھا تا ہوں نہ حرام کہتا ہوں۔''

عَنِ ابُنِ عُمَرَ قَالَ سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنُ السَّسَبِّ فَقَالَ لَسُتُ بِآكِلِهِ وَلَا مُحَرِّمِهِ. ۞

 [◘] متفق عليه: البخاري، كتاب الهية، باب قبول هدية الصيد (2572) ومسلم، كتاب الصيد الذبائح، باب في اباحة الأرنب (5022)

[€] صحيح: ابوداؤد، كتاب الأصناحي، باب في الذبيحة بالمروة (2822) والنسائي، كتاب الصيد والذبائح، باب الأرنب (4324)

[€] متفق عليه: البخاري، كتاب الصيد، باب الضب (5536) ومسلم، كتاب الصيد والذبائح، باب اباحة الضب في أكل (5001)

الكالم المعنى الكالم ال

فوائد: (۱) "ضب" کا ترجمہ گوہ اور سانڈھ دوطرح کا کیا گیا ہے۔ضب بیگرہ دار دم والا جانور ہوتا ہے (شرح ابن ملج کحد فواد) یہ پانی نہیں بیتا بلکہ ہوا کی نمی پر ہی گزارا کرتا ہے۔ لہذا عرب ناممکن کا م کے لیے کہاوت استعال کرتے ہیں "لا افعلُ کذا حتی یَرِ دَ الضّب" ضب کے پانی پینے تک میں بینیں کروں گا۔ (الفتح) لہذا بیعلامات سانڈے پرزیادہ صادق آتی ہے۔ (واللہ اعلم)

2059 أَخْبَرَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا الْحَكَمُ قَالَ سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ وَهْبِ يُحَدِّثُ عَن الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبِ

عَنُ ثَابِتِ بُنِ وَدِيعَةً قَالَ أُتِيَ النَّبِيُّ عِنْهُ

بِضَبٍّ فَقَالَ أُمَّةٌ مُسِخَتُ وَاللَّهُ أَعُلَمُ . •

ٹابٹ بن ودیعہ کہتے ہیں کہ نبی طفی میں ایک گوہ ایک گوہ لائی گئ آپ نے فرمایا: ''بیدایک امت ہے جومنح کردی گئ اور الله زیادہ جانتا ہے۔''

ف واند: ابن ماجہ میں ہے کہ بیہ بنی اسرائیل کے لوگ تھے جن میں سانڈے کی شکل میں سنخ کیا گیا۔لیکن موجودہ سانڈے ان کی نسل میں سے نہیں۔ کیونکہ آپ میٹے آئی نے فرمایا کہ اللہ نے مسخ شدہ لوگوں کی نسل نہیں چلائی۔ (مسلم۔القدر)

2060 أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّهِ بْنُ صَالِح حَدَّثَنِي اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونْسُ عَنِ ابْنِ شِهَابِ أَنَّهُ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبُوْ أُمَامَةَ بْنُ سَهْل بْنِ حُنَيْفِ الْأَنْصَادِيُّ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسِ أَخْبَرَهُ

أَنَّ حَسَالِدَ بُنَ الْوَلِيُدِ الَّذِي يُقَالُ لَهُ سَيُفُ اللّهِ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ دَحَلَ مَعَ رَسُولِ اللهِ عَلَى مَيْمُونَةَ زَوْجِ النَّبِي عَلَى مَيْمُونَةَ زَوْجِ النَّبِي عَلَى مَيْمُونَةَ زَوْجِ النَّبِي عَلَى مَيْمُونَةَ وَوَجِ النَّبِي عَبَّاسٍ فَوَجَدَ وَهِي حَالَتُهُ وَخَالَةُ ابْنِ عَبَّاسٍ فَوَجَدَ عِنْ نَدُهُ وَاللهِ عَنْ نَجُدٍ فَقَدَمَت بِهِ أُخْتُهَا حُفُيدَةُ بِننتُ الْحَارِثِ مِنْ نَجُدٍ فَقَدَمَت بِهِ أَخْتُهَا حُفَيدَةُ بِننتُ الْحَارِثِ مِنْ نَجُدٍ فَقَدَمَت الْحَارِثِ مِنْ نَجُدٍ فَقَدَمَت السَّهِ اللهِ عَنْ نَجُدٍ فَقَدَمَت السَّهِ اللهِ عَلَى مَا يَعَدَ اللهِ عَلَى مَا يَعْدَ اللهِ عَلَى مَا يَعَدَ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى مَا يَعَدَى اللهِ عَلَى مَا يَعَدَ اللهِ عَلَى مَا يَعْدَلُ اللهِ عَلَى مَا يَعْدَلُهُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى مَا اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى مَا اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهُ المُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ ال

عناب الصيد على الماليكية عناب الصيد عناب الصد عناب الصيد عناب الصداد عناب الصداد عناب الصداد عناب الصداد عناب الصداد عناب الصداد عنا

بناؤ یہ کیا چیز ہے؟ انہوں نے کہا: یہ گوہ ہے۔رسول اللہ طیکھ آئے نے اپنا ہاتھ اٹھا لیا خالد بن ولید نے کہا: ''یا رسول اللہ! کیا آپ گوہ کوحرام قرار دیتے ہیں؟ آپ نے فرمایا: ''نہیں ہوئی اس لئے میں فرمایا: ''نہیں ہوئی اس لئے میں اسے ناپند کرتا ہوں۔'' خالد کہتے ہیں: ''میں نے اسے کھینچ لیا اور اسے کھانے لگا۔رسول اللہ طیکھ آئے جھے دکیھ رہے تھے انہوں نے جھے منع نہیں کیا۔''

يَدَهُ إِلَى الطَّبِ فَقَالَتِ امُرَأَةٌ مِنُ نِسُوةِ الْمُحَصُورِ أَخُبِرُنَ رَسُولَ اللهِ عَلَىٰ مَا قَدَمُتُنَّ لَهُ قُلُنَ هَذَا الطَّبُ فَرَفَعَ رَسُولُ اللهِ عَلَىٰ الْوَلِيُدِ اللهِ عَلَىٰ يَهَ الطَّبُ فَرَفَعَ رَسُولُ اللهِ عَلَىٰ الْوَلِيُدِ النَّهِ عَلَىٰ اللهِ قَالَ أُرَاهُ اللهِ قَالَ أُرَاهُ لَا وَلَيكِ اللهِ قَالَ أَرَاهُ وَلَيكِ اللهِ قَالَ خَالِدٌ فَاجْتَرَرُتُهُ فَالَمَ عَالَمُ اللهِ عَلَىٰ يَنْظُرُ فَلَمُ فَا مَا اللهِ عَلَىٰ يَنْظُرُ فَلَمُ فَا اللهِ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ يَنْظُرُ فَلَمُ فَا اللهِ عَلَىٰ يَنْظُرُ فَلَمُ فَا اللهِ عَلَىٰ اللهِ اللهِ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَىٰ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ
يَنْهَنِيُ. 0

[9].... يَاب فِي الصَّيُدِ يَبِيُنُ مِنْهُ الْعُضُوُ وه عَضوجوشكارے الگ ہوجائے

2061- أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيْدِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِيْنَارِ حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ أَحْسَبُهُ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارِ

عَنُ أَبِى وَاقِدِ اللَّيْتِي قَالَ قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ عَنُ أَبِى وَاقِدِ اللَّيْتِي قَالَ قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ عَنَى الْحَدَينَةَ وَالنَّاسُ يَجُبُّونَ أَسُنِهَ الْإِبِلِ وَأَلْيَاتِ الْعَنَمِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَنَى اللَّهِ عَنَى اللَّهِ عَنَى اللَّهِ عَنَى اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنَى اللَّهِ عَنْ اللَّهِ اللَّهُ اللْلَهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْلِهُ اللْلِهُ اللْلِهُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ الْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ الْمُلْمُ اللَّهُ اللْمُلْمُلُمُ اللَّهُ الْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ الْمُلْمُ ال

ابو واقد لینی کہتے ہیں کہرسول الله منظم کی ہے۔ لوگ اونٹوں کی کوہانیں اور ونبوں کی جگیاں کاٹا کرتے تھے تو رسول الله منظم کی آئے کاٹا کرتے تھے تو رسول الله منظم کی کاٹا کرتے کاٹا جائے وہ مروار ہے۔''

وَهِيَ حَيَّةٌ فَهُوَ مَيْتَةٌ . ٥

فوائد: زندہ جانورے کا ٹا جانے والا گوشت کا گلزا مردار ہے۔اس کا کھا نا حلال نہیں۔ یہ چونکہ جانوروں کی تکلیف کا بھی جانوروں کے لیے نکلیف کا بھی جانوروں کے لیے نکلیف کا بھی خیال رکھا گیا لہٰذا ضرررساں کام سے روک دیا گیا (واللہ اعلم)

- ◄ متفق عليه: البخاري، كتاب الأطعمة، باب ماكان النبي الله الايأكل حتى (5391) ومسلم، كتاب الصيد والذبائح، باب إباحة الضب في أكل (5009)
- صحيح: ابوداؤد، كتاب الصيد، باب في صيد قطع منه قطععة (2858) وابن ماجه كتاب الصيد، باب ماقطع من البهيمة وهي حية (3219)



ومن كتاب الاطعمة

أطعمه يطعام كى جمع بطعام براس چيز كوكت بين جوبطورخوراك استعال بومثلاً آثا ،سبريال كيل وغیرہ۔اسلام میں کھانے کی ہر چیز حلال ہے گر وہ جس کو شریعت نے کسی ضرر کی بنایر ہمارے لیے حرام تھیرا دیا ہو۔

[1].... بَابِ فِي التَّسُمِيَةِ عَلَى الطَّعَامِ کھانا شروع کرتے وقت بھم اللہ کہنا

2062 أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدِ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ وَهْب بْن كَيْسَانَ

عَنُ عُمَرَ بُنِ أَبِي سَلَمَةً أَنَّ النَّبِيَّ عِنْ السِّم عَمْرٌ بن الوسلم كَتِ بين كه نبي ن اس ع فرمايا: "الله كا قَالَ لَهُ سَمّ اللَّهَ وَكُلُّ مِمَّا يَلِيلُتُ . • نام لواورايخ آ كے سے كھاؤ''

فوائد: خالق کائنات کاففل عظیم ہے کہ اس نے اپنے رسول کے توسط سے ہمارے لیے ایسے ابدی اصول وضع فرمادیے جواخروی فوائد رہنی ہونے کے ساتھ دنیوی فوائد کوبھی اینے اندرسمیٹے ہوئے ہیں اور ان کا اپنانا سراسر باعث خیروبرکت ہے انہیں میں سے بیکھانے کے آداب بھی ہیںان آداب کو ملحوظ خاطر رکھنے سے نہ صرف یہ کہ کھانا عبادت بن جاتا ہے بلکہ نام اللہ سے شروع کیا گیا کھانا حصول برکت کا بھی باعث ہوتا ہے اور قریب سے کھانا ہے آ دمی کی تہذیب کی علامت ہے۔

2063 - أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ بُدَيْلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ

[◘] متفق عليه: البخاري، كتاب الأطعمة، باب التسمية على الطعام والأكل باليمين (3576) ومسلم، كتاب الأشربة باب أداب الطعام والشراب وأحكامهما (5237)

الكالكاني المالكاني المالك

عائشہ و والعنها كہتى ہيں نبى طفي الله الله جهد صحابة كے ساتھ كھانا كھا رہے تھے ہيں ايك ديباتى آيا تو اسے دولقموں ميں كھانا كھا رہے تھے ہيں ايك ديباتى آيا تو اسے دولقموں ميں كھانا تو بي طفي الله كهد ليتا تو كھانا تم سب كوكافى ہو جاتا ، البذا جب كوئى كھانا كھائے تو اسم اللہ كہدا كروہ بسم كہنا بھول جائے تو "بينسم الله كهدا الله علم الله كهدا كروہ بسم كہنا بھول جائے تو "بينسم الله في آخرة وُ."

عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَ عَلَىٰ كَمَانَ يَا كُلُ طَعَامًا فِي سِتَّةِ نَفَرٍ مِنُ أَصْحَابِهِ فَجَاءَ أَعُرَابِيٌّ فَأَكَلَهُ بِلُقَمَتُيْنِ فَقَالَ النَّبِيُ عَلَيْ أَمَا إِنَّهُ لَوُ ذَكَرَ اسْمَ اللّهِ لَكَفَاكُمْ فَإِذَا أَكَلَ أَحَدُكُمْ فَلَيَذُكُرِ اسْمَ اللهِ فَإِنَ نَسِى أَنْ يَدُكُرَ اسْمَ اللهِ فَلْيَقُلُ بِسُمِ الله أَوَّلَهُ وَآخِرَهُ. •

. 2064 مَّخْبَرَنَا بُنْدَارٌ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ بُدَيْلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُبَيْدِ بْنِ عُمَدُ

ا ام کلثوم عائشہ والجہاسے یہی حدیث نقل کرتی ہیں۔

عَـنُ أُمِّ كُـلُثُـوُمٍ عَـنُ عَـائِشَةَ بِهَـذَا الْحَديث . @

[2] بَابِ الدُّعَاءِ لِصَاحِبِ الطَّعَامِ إِذَا أَطُعَمَ جِبِ وَلَى كَانَ كَا اللَّعَامِ إِذَا أَطُعَمَ جب وَلَى كَانَا كَالَائِ تَوَاسَ كَ لِنَ وَعَا كُرِ فَي جَاتِمَ

2065 أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ عَمْرِو

عبداللہ بن بسر جو کچھ دریآ پ کی صحبت میں رہے ، کہتے ہیں میرے والد نے میری والدہ سے کہا ، کاش تم رسول اللہ مستعظم آیا کے کھانا تیار کروتو انہوں نے کچھڑ ید تیار

حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بُنُ بُسُرٍ وَكَانَتُ لَهُ صُحُبَةٌ يَسِيُرَةٌ قَالَ قَالَ أَبِى لِلْمَّيِى لَوُ صَنَعُتِ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ طَعَامًا فَصَنَعَتُ

❶ صحيح: ابو داؤد، كتاب الأطعمة، باب التسمية على الطعام (3767) والترمـذي، كتاب الاطعمة، باب ماجاء في التسمية على الطعام (1858)

[🛭] صحیح: مابقه بی مکرد ہے۔

و المعمة على المعمة على المعمة
ثَوِيدَةً وَقَالَ بِيَدِه يُقَلِّلُ فَانْطَلَقَ أَبِى فَدَعَاهُ فَوَضَعَ رَسُولُ اللّهِ عَلَى فَوَضَعَ رَسُولُ اللّهِ عَلَى فَرُوتِهَا ثُمَّ قَالَ خُذُوا بِاسْمِ اللّهِ فَأَخَذُوا بِاسْمِ اللّهِ فَأَخَذُوا مِنْ نَوَاحِيْهَا فَلَمَّا طَعِمُوا دَعَا لَهُمُ فَقَالَ اللّهُمَّ اعْفِرُ لَهُمُ وَارْحَمُهُمُ لَهُمُ وَارْحَمُهُمُ وَبَارِكُ لَهُمُ وَارْحَمُهُمُ وَبَارِكُ لَهُمُ فِي رِزُقِهم . • •

رَبُّنَا . 🛭

فوائد: (۱) ''ثرید' یه روئی کے کلاوں کوشور بے میں خصوصاً گوشت کے شور بے میں بھگو کرتیار کی جاتی ہے۔ یہ کھانے کولذیذ اور بھتم میں بہترین ہوتی ہے۔ اور یہ عرب کی پندیدہ غذائقی۔ حدیث میں آتا ہے آپ سے کھانے کولذیذ اور بھتم میں بہترین ہوتی ہے۔ اور یہ عرب کی پندیدہ غذائقی۔ حدیث میں آتا رابن ملجہ وضح بخاری) ''عائشہ کو باقی خواتین پرایسے فضیلت حاصل ہے جسے ٹرید کو بقیہ کھانوں پر، ندکورہ تمثیل ثرید کے اعلی وعدہ کھانا ہونے پر شاہد ہے (۲) وعوت کرنا اور وعوت قبول کرنا (۳) وعوت میں حتی الوسع تکلف پندیدہ ہے (۲) کورعا دینا مسنون ہے اگر ممکن ہوتو اس کابدلہ بھی دینا چاہیے جساکہ آپ میلئی آیے میں جساکہ آپ میلئی آیے کے اور طیب اس کی شاہد ہے۔

[3] بَابِ الدُّعَاءِ بَعُدَ الْفَوَاغِ مِنَ الطَّعَامِ كھانے سے فراغت كى دعا

2066 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْقَاسِمِ الْأَسَدِيُّ حَدَّثَنَا ثَوْرٌ عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ

عَنُ أَبِى أَمَامَةَ قَالَ كَانَ رَسُولُ الوامامُ كَتَ بِين كه رسولُ الله عَضَامَةُ جب كَمانَ يا پينے الله عَضَامَةُ أَكُلَ أَوُ شَوِبَ قَالَ الْحَمُدُ ہے فارغ ہوتے تو كہتے: "تمام تعرفیں الله كے ليے بيں ليرقي اور بركت والى ، نہ ناشكرى والى ليَّهِ حَمُدًا كَثِيرًا طَيّبًا مُبَارَكًا فِيهِ غَيْرَ بهت زيادہ تعرف يا كيزگي اور بركت والى ، نہ ناشكرى والى مَكُفُودٍ وَلَا مُودَةً عِ وَلَا مُسْتَغُنَّى عَنُهُ اور نہ چھوڑى جانے والى اور نہ بى اس سے اے ہمارے مُكُفُودٍ وَلَا مُودَةً عِ وَلَا مُسْتَغُنَّى عَنُهُ اور نہ جي الى اور نہ بى اس سے اے ہمارے

رب! لا پرواه ہوا جا تا ہے''

Фصحیح مسلم، کتاب الأطعمة، باب استحباب وضع النوی خارج التمر (5296) وابو داؤد، کتاب الأشربة، باب متع النفخ في الشراب والتفنس فيه (3729)

[●] صحيح البخارى، كتاب الأطعمة، باب مايقول اذا فرغ من طعامه (5458) و ابوداؤد، كتاب الأطعمة، باب مايقول الرجل اذا طعم (3849)

المنافقة الكالمنع المنافقة الم

فواند: کھانا پینا انسانی حاجات ہیں ان کا پورا کرنا رحمت خداوندی کے بغیر ناممکن بےلہذا اس کی رحمت کے فیضان کے فوری بعداس کی حمد کے ترانے گانا اور برکت کی دعا اوراینی عاجزی کا اظہار جوکہ ندکورہ دعا سے مترشح ان سبھی امور کی جامع دعا کوپڑھنا ان فوائد کے حصول کاباعث ہے (واللہ الموفق) [4] بَابِ فِي الشُّكُرِ عَلَى الطُّعَامِ کھانا کھا کرشکر کرنا

2067- أَخْبَرَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْن أَبِيْ حُرَّة

سنان بن سنة اينے والد سے بيان كرتے بي كمانہوں نے وه صبر کرنے والے روزہ دار کی طرح ہے۔" عَنُ سِنَان بُنِ سَنَّةَ عَنُ أَبِيُهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الطَّاعِمُ الشَّاكِرُ كَالصَّائِمِ الصَّابِرِ . •

فسوائسد: روزه کس قدراہمیت کا حامل ہے ندکورہ خبر سے اس کا اندازہ لگا ناقطعی مشکل نہیں کہ روزے جیسے عظیم عمل کا جر جزیل لکھنے کی ذمہ داری اللہ نے کرام الکاتبین کے سپر ذہیں کی بلکہ اس کا اجراللہ خود بندے کودیں گے۔ حدیث قدی ہے اللہ روزے کے بارے میں فرماتے ہیں: "فَوَانَّهُ لِنْي وَ أَنَا أَجْزَىٰ به . " متنق علیہ) (روزہ) یقیناً وہ میرے لیے ہے اور میں ہی اس کی جزا دوں گا۔للبذا کھانا کھا کراس کھلانے والی ہتی کاشکرادا کرنا ایسے اجر جزیل کاباعث ہے جس کا تصور بھی ناممکن ہے چنانچہ اسے قطعی نظر انداز نہیں کرنا عاي (اللهم اجعلنا من الشاكرين)

[5].... بَابِ فِي لَعُقِ الْأَصَابِعِ انگليول كوحيا ثنا

2068 حَدَّثَنَا إِسْحَقُ بْنُ عِيسَى أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ ثَابِتِ

عَنُ أَنْسِ عَنِ النَّبِيِّ عِنْهُ قَالَ إِذَا أَكُلَ الْسِ وَلَيْنَ كُتِ بِين كَه نِي الشَّفَوَيْمُ نِ فرمايا: "جب كوكي کھانا کھائے تو اپنی نتینوں انگلیوں کو حیاٹ لے''

أَحَدُكُمُ فَلْيَلْعَقُ أَصَابِعَهُ الثَّلاكَ . ٥

¹ حسن: ابن ماجه، كتاب الصيام، باب فيمن قال الطعائم الشاكر كالصائم الصابر(3849)

[🗨] صحيح مسلم، كتاب الأطعمة ، باب استحباب، لعق الأصابع (5274) وابو داؤد، كتاب الأطعمة، باب في اللقمة تسقط (3845)

60 كتاب الاطعمة TO RESULTIVE

[6] بَابِ فِي الْمِنْدِيلِ عِنْدَ الطَّعَام کھانے کے بعدرومال استعال کرنا

2069 ـ أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارِ عَنْ عَطَاءٍ

ابن عماس فالنا كت بن كه نبي طشائل نے فرمایا: "جب أَكُلَ أَحَدُكُمُ فَلا يَمْسَعُ يَدَهُ حَتَّى كُونَى كَانا كَالَ تَووه ابني انْظَيال حاشْ يا چِثوانے سے ىملےابناياتھەنە بونچھے۔''

يَلُعَقَ أَصَابِعَهُ أَوُ يُلُعِقَهَا. • فوائد: (١) کھانا کھانے کے بعد ہاتھوں کوصاف کرنے کی بجائے آئییں جائے سیامستحب ہے۔ (٢) كھانا ہاتھ سے كھانا سنت ہے كيونكه آپ ملك كونيا الله كى تين انگليوں (ديكھيے سابقه حديث) سے کھانا کھاتے تھے۔حدیث میں ہے: (فانہ لا یدری فی ای طعامہ برکة مسلم) (بندے) کومعلوم نہیں کہ کون سے کھانے میں برکت ہے۔ لہذا ہاتھوں کو لگنے والا حصہ بھی چونکہ کھانے کا جزء ہوتا ہے اس لیے برکت کے متلاش کے لیے اسے ضائع کرناقطعی مناسب نہیں ۔لہذا اگرخود نہ بھی حاٹنا حاہے تو کسی اورمثلاً غلام ، بیح

[7] بَابِ فِي لَعُقِ الصَّحُفَةِ برتن كوصاف كرنا

2070 - أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ الْبَرَّاءُ هُوَ مُعَلَّى بْنُ رَاشِدِ قَالَ

کھانا کھا رہے تھے۔ہم نے اسے بلایا اس نے ہمارے ساتھ کھانا کھایا اور کہا: رسول الله طشیقی نے ہم سے بیان كيا: "جس نے پیالے میں كھانا كھايا پھراسے حاث ليا تو یالہاں کے لئے بخشش کی دعا کرتا ہے۔''

حَـدَّتُتْنِي جَدَّتِي أُمُّ عَاصِم قَالَتُ دَخَلَ عَلَيْنَا نُبَيُشَةُ مَوْلَى رَسُولِ اللَّهِ عِلَيُّ وَ نَحُنُ نَأْكُلُ طَعَامًا فَدَعَوْ نَاهُ فَأَكُلَ مَعَنَا ثُمَّ قَالَ حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ عَلَيُّ أَنَّهُ مَنُ أَكِيلَ فِي قَصْعَة ثُمَّ لَحسَهَا اسْتَغُفَرَتُ أَهُ الْقُصْعَةُ ۞

، بیوی وغیر ہ کو چٹوادے جواسے ناپیند نہ کرتا ہو۔

عَن ابُن عَبَّاس أَنَّ النَّبِيَّ عِبَّكُمْ قَالَ إِذَا

[◘] متفق عليه: البحاري، كتاب الأطعمة، باب لعق الأصابع ومصها قبل (5456) ومسلم، كتاب الأشربة، باب استحباب لعق الأصابع (5262)

² رجاله ثقات: الترمذي، كتاب الأطعمة، باب ماجاء في القصعة تسقط (1804) نيزام عاصم ابن حبان كي شرط بريخ ہے-

الأطعمة المراجع الأطعمة المراجع الأطعمة المراجع المراع

فوائد: جدیدیت کے نام پرمغربیت نے کھاس طرح سے ہمارے دہنوں کومتاثر کیا ہے کہ ہم ا بنی اصل تہذیب وشناخت کھو ہیٹھے ہیں اورالیم مفیدسنتوں کو کہ جس کے فوائد کا جدید سائنس بھی اقرار کررہی ہے اپنی اس بیار ذہنیت کی بنایر چھوڑ دیتے ہیں لہذا پھر سے الیی سنتوں کواپنا کر ان کو پھیلانے کی ضرورت ے_(واللہ الموفق)

[8].... بَابِ فِي اللُّقُمَةِ إِذَا سَقَطَتُ گرے ہوئے لقمہ کے متعلق

2071 - أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ ثَابِتٍ

انس وُلِينَّهُ كَتِيمَ مِن كه رسول الله ﷺ فَإِنْ نِهُ فرمايا: ''جب سَفَطَتُ لُقُمَةُ أَحَدِثُكُمُ فَلْيَمْسَحُ عَنُهَا لَمُ سَكِي كَالْقَمَةُ رَجَائِ تُو اس كَمِي صاف كرك بسم الله كهد كركهالي'

عَنُ أَنَّس قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إذَا التُّرَابَ وَلُيُسَمِّ اللَّهَ وَلُيَّأْكُلُهَا . •

ف 1 نسب کھانا کھاتے اگر کوئی لقمہ گرجائے تواہے کھالینامسنون ہی نہیں بلکہ یہ غرور وتکبرجیسی بری عادت سے چھٹکارے کاباعث بھی ہے۔ نیز گرا پڑالقمہ شیطان کی خوراک بنتا ہے لہذا اسے بالکل نہیں حچوڑ نا جاہیے ۔جبیبا کہ سلم ، کتاب الاشربة میں سیدنا جابر دہائننڈ سے مروی ہے۔

2072 - أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيِّ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعِ عَنْ يُوْنُسَ

حسن کہتے ہیں کہ معقل ؓ بن بیار کھانا کھارے تھے کہان کا لقمہ گر گیا ،انہوں نے اسے پکڑ کرای کی مٹی صاف کی اور اے کھالیا۔ تو بیہ کسان لوگ اس پر اشارے کرنے لگے، لوگوں نے معقل بن بیارے کہا: آپ دیکھتے نہیں کہ عجمی کیا کہدرہے ہیں کہ دیکھوان کے سامنے کتنا کھانا ہے پھر بھی پیلقمہ نیچے ہے اٹھار ہے ہیں؟ تومعقلؓ بن بیار نے کہا: میں ان عجمیوں کے کہنے سے وہ بات نہیں چھوڑ سکتا جو میں نے رسول الله طفاع الله سے سی ہے ، ہم حکم دیج جاتے تھے کہ جب کسی کالقمہ گریڑے تو وہ اسے صاف کر

عَنِ الْحَسَنِ قَالَ كَانَ مَعْقِلُ بُنُ يَسَار يَتَغَدَّى فَسَقَطَتُ لُقُمَتُهُ فَأَخَذَهَا فَأَمَاطَ مَا بِهَا مِنُ أَذًى ثُمَّ أَكَلَهَا فَجَعَلَ أُولَئِكَ الدَّهَاقِينُ يَتَغَامَزُونَ بِهِ فَقَالُوا لَهُ مَا تَوى مَا يَقُولُ هَؤُلَاءِ الْأَعَاجِمُ يَفُولُونَ انْـظُرُوا إِلَى مَا بَيُنَ يَدَيُهِ مِنُ الطَّعَام وَإِلَى مَا يَصْنَعُ بِهَذِهِ اللَّقُمَةِ فَقَالَ إِنِّى لَمُ أَكُنُ أَدَعُ مَا سَمِعُتُ بِقَوْلِ هُوُّ لَاءِ ٱلْأَعَاجِمِ إِنَّا كُنَّا نُؤُمَرُ إِذَا

العمد المعمد عن المعمد عن المعمد المع

سَ قَطَتُ مِنُ أَحَدِنَا لُقُمَةٌ أَنْ يُمِيُطَ مَا كَكُماكُ

بِهَا مِنَ الْأَذَى وَأَنْ يَأْكُلَهَا . •

[9].... بَابِ الْأَكُلِ بِالْيَمِينِ واكبي باتھ سے کھانا

2073 أَخْبَرَنَا أَبُوْ مُحَمَّدِ الْحَنَفِيُّ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِيْ بَكْرِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ ابْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ فَيَ مَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ فَيَ عَلَمَ اللَّهِ فَكَا أَكُلُ الْحَدُكُمُ فَلْيَأْكُلُ بِيَمِينِهِ فَإِنَّ الشَّيُطَانَ يَأْكُلُ بِشِمَالِهِ وَيُشُرَبُ بِشِمَالِهِ. ٥ يَأْكُلُ بِشِمَالِهِ. ٥

فوائد: شیطان اوراس کے پیروکاروں کی مخالفت اسلام کامطلوب ہے جیسا کہ کی مقامات پرآپ طفیقاً آنے اہل اسلام کو یہود ونصاری کی مخالفت کا حکم دیا مثلاً صحنوں کوصاف رکھنے اور جوتوں میں نماز پڑھنے کا حکم وغیرہ جب شیطان کے حیلوں کی مخالفت کی تاکید ہے تو شیطان کی کس قدر ہوگ ۔ نیز آپ طفیقاً آنے مشیقاً آنے مسلے آنے اسلام کے حکم سے واضح ہوا کہ دائیں ہاتھ سے کھانا پینا لازم ہے۔

2074 أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن عَنِ ابْنِ غُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي بَكْرٍ

عَنِ ابْنِ عُمَوَ عَنُ النَّبِيِ عَنَى النَّبِي اللَّهِ اللهُ اللَّهِ اللهُ اللّهُ اللهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُل

2075 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارِ

عدَّ تَغِنَى أَبِى الْمِانِ اللهِ مِن اللهِ مِن اللهِ مِن اللهِ اللهِ على اللهول الله على اللهول الله على الله الله على ال

حَدَّثَنِى إِيَّاسُ بُنُ سَلَمَةَ حَدَّثَنِى أَبِى قَالَ أَبُصَرَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بُسُرَ بُنَ رَاعِى الْعِيرِ يَاأْكُلُ بِشِمَالِهِ فَقَالَ كُلُ

• صحيح بالشواهد: ابن ماجه، كتاب الأطعمة، باب اللقمة اذا سقطت (3278)

♦ صحيح مسلم، كتاب الأشربة، باب آداب الطعام والشراب وأحكامهما (5233) وابوداؤد، كتاب الأطعمة، باب الأكل بالبعين (3776)

3 صحیح: سابقہ بی کررے_

بِيَ مِنْ نِكُ الْكَالِيْنِيُّ الْكَالِيْنِيُّ فَالَ لَا أَسْنَطِيعُ قَالَ لَا أَسْنَطِعُهُ قَالَ لَا اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ ا

کے مند تک نہ رہے سکا۔

فوائد: سستی وکا ہلی کی بناپراگرشر بعت سے سرتا بی ہوجائے توبیة قابل معانی اور درگزر کے قابل ہے لیکن تکبر کی وجہ سے شارع کے تھم کو صراحنا رد کردینا نا قابل معانی جرم اور فوری مواخذے کا باعث ہے (العیاذ باللہ)

[10] بَابِ الْأَكُلِ بِثَلَاثِ أَصَابِعَ تين الكيول سے كھانے كابيان

2076 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةً عَنْ هِشَامٍ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ ابْنِ سَعْدِ الْمَدَنِيِّ.........

کعب بن مالک اپنے والد سے بیان کرتے ہیں کہ نبی مشیکی تین انگلیوں سے کھاتے تھے۔اور اپناہاتھ حاشے سے پہلے صاف نہیں کرتے تھے۔ عَنِ ابْنِ كَعُبِ بُنِ مَالِلْتٍ عَنُ أَبِيهِ قَالَ كَانَ النَّبِيُ عَنُ أَبِيهِ قَالَ كَانَ النَّبِيُ عَنَ أَكُلُ بِفَلَاثِ أَصَابِعَ وَلَا يَمُسَحُ يَدَهُ حَتَّى يَلْعَقَهَا . ٥

فوائد: (۱) تین انگلیوں سے کھانا کھانا مسنون ہے تین انگلیوں میں بیر حکمت معلوم ہوتی ہے کہ نوالہ چھوٹا لیاجائے کیونکہ بڑا نوالہ کئی مفاسد کا ذریعہ بنتا ہے ایک تواسے چبانا پھرٹگلنا مشکل ہوتا ہے (واللہ اعلم) (۲) کھانے کے بعد ہاتھوں کوصاف کرنے کی بجائے انہیں چائے لینا ہی بہتر ہے۔ایک تو بیر مسنون دوسرا کھانے کے ضیاع سے بچت ہے۔تیبرااس سے حصول برکت کی امید ہے۔

2077 حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْن سَعْدِ الْمَدَنِيِّ......

بنِ سَعَدِ المُدَيِي أَنَّ عَبُدَ اللَّهِ بُنَ كَعُبِ أَوُ عَبُدَ الرَّحُمَنِ

عبدالله خالله؛ بن كعب يا عبدالرحل بن كعب خالله؛ 'مشام كو '

[•] صحيح مسلم، كتاب الأشربة، باب آداب الطعام والشراب وأحكامهما (5236)

صحيح مسلم، كتاب الأطعمة، باب استحباب نعق الأصابع (5265) وأبو داؤد، كتاب الأطعمة باب في المنديل
 (3848)

وكل يُتِكِنَ الْكَلِيْتِينَ فِي 64 وَ وَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللّ

شک ہے وہ اپنے والد سے بیان کرتے ہیں کہ نبی مشکوری آ اپنی تین انگلیوں سے کھایا کرتے تھے۔اور فارغ ہو کرانہیں چاہئے تھے۔ہشام نے اپنی تین انگلیوں سے اشارہ کیا۔ بُنَ كَعُبٍ شَكَّ هِشَامٌ أَخُبَرَهُ عَنُ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيِّ عِلَيُّ كَانَ يَأْكُلُ بِأَصَابِعِهِ الثَّلاثِ فَإِذَا فَرَغَ لَعِقَهَا وَأَشَارَ هِشَامٌ بأَصَابِعِهِ الثَّلاثِ . •

[11] بَابِ فِي الضِّيَافَةِ مهمان نوازي كِمتعلقِ

2078_ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحٰقَ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِيْ سَعِيْدٍ

ابوشری خزای گہتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ طفی آنے کے دن پر یہ فرماتے ہوئے سنا جو شخص اللہ اور آخرت کے دن پر ایمان رکھتا ہے وہ اپنے ہمسائے کی عزت کرے ، اور جو اللہ اور آخرت کرے ، اور جو خاموش رہے ، اور جو شخص اللہ اور آخرت کے دن پر ایمان خاموش رہے ، اور جو شخص اللہ اور آخرت کے دن پر ایمان لاتا ہے ہی وہ اپنے مہمان کی عزت کرے ، ایک دن رات اس کا تخد (جو خوب اچھی مہمان نوازی کرنا) ہے اور مہمان نوازی کرنا کے بعد صدقہ ہے۔''

عَنُ أَبِى شُرَيُحِ النُحُزَاعِي قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللّهِ عَنَى أَبِى شُرَيُحِ النُحُزَاعِي قَالَ سَمِعُتُ بِاللّهِ وَالْيَوْمِ اللّهِ عَلَى يُقُولُ مَنُ كَانَ يُؤُمِنُ بِاللّهِ وَالْيَوْمِ اللّاحِرِ فَلْيَقُلُ خَيْرًا أَوِ لُيَسُكُتُ وَمَنُ كَانَ يُؤُمِنُ بِاللّهِ وَالْيَوْمِ اللّاحِرِ فَلْيَقُلُ خَيْرًا أَوِ لُيَسُكُتُ وَمَنُ كَانَ يُؤُمِنُ بِاللّهِ وَالْيَوْمِ صَيْفَةُ جَائِزَتَةُ وَالْيَوْمِ صَيْفَةُ جَائِزَتَةُ يَوْمًا وَلَيُسَلَّهُ وَالطَّيَافَةُ ثَلَاثَةُ أَيَّامٍ وَمَا يَوْمًا وَلَيُسَلَّهُ وَالطَّيَافَةُ ثَلَاثَةُ أَيَّامٍ وَمَا يَوْمًا وَلَيُسَلَّهُ وَالطَّيافَةُ ثَلَاثَةُ أَيَّامٍ وَمَا بَعُدَ ذَلِكَ صَدَقَةٌ . ٥

فوائد: (۱) چھ چیزوں پرایمان لانالازم ہے۔اللہ اوراس کے رسولوں ،اس کی کتابول ،اس کے فرشتوں ،اچھی بری تقدیر اورآخرت پر۔ان سب میں پہلے اللہ اورآخرت کا تذکرہ آخری ہے گویا پہلی اورآخری چیز درمیان کی سجی اشیاء کا اعاط کے ہوئے ہے چنانچہ گویا ان پرایمان لاناسبھی پرایمان لانے کے مترادف ہے۔ (۲) مومن کے لیے ضروری ہے کہ وہ مہمان کی تین دن تک مہمان نوازی کرے پہلے دن خصوصی اہتمام کرے بقیہ دو دنوں میں کچھ نہ کچھا ہتمام کیا جائے اس کے بعدمہمان کو اپنے عمومی کھانے میں شریک کرلیا جائے۔ (۳) جائزہ نیہ جائزکی مؤنث ہے اوراس کا معنی عطیہ وانعام ہے (المنجد) (۴) اسی طرح

[•] صحيح مسلم، كتاب الأطعمة، باب استحباب لعق الأصابع (5266)

❸ متفق عليه: البخارى، كتاب الأدب، باب من كان يؤمن بالله واليوم الآخر (5673) ومسلم، كتاب الإيمان باب الحجث على إكرام الجاروالضيف(173)

والمرابعة المرابعة ال

مومن کے لیے اچھی بات کہنا اور ہمسائے کا اگرام کرنا لازم ہے۔

2079 أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ سَمِعَ نَافِعَ بْنَ

وره **جب**ير.....

عَنُ أَبِى شُرَيْحِ النِّخَزَاعِيِّ أَنَّ دَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ مَنُ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْلَّهِ وَالْيُومِ الْلَّخِرِ فَلْيُخُومُ صَيْفَةً وَمَنُ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيُومِ الْآخِرِ فَلْيُحُسِنُ إِلَى جَارِهِ وَمَنُ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُحُسِنُ إِلَى جَارِهِ وَمَنُ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيَحُسِدُ إِلَى الْآخِرِ فَلْيَحُسِنُ إِلَى اللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيَحُسِنُ إِلَى اللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيَقُلُ حَيْرًا أَوِ لُيَسُكُثُ . •

ابوشری خزای کہتے ہیں کہ رسول اللہ الله الله الله علی از خرمایا: "
جواللہ اور بوم آخرت پر ایمان رکھتا ہے وہ مہمان کی عزت
کرے۔اور جو اللہ اور بوم آخرت پر ایمان رکھتا ہے وہ
اپنے ہمسارے سے اچھا سلوک کرے۔اور جو اللہ اور
آخرت کے دن پر ایمان رکھتا ہے اسے چاہئے کہ اچھی
بات کے یا خاموش رہے۔"

2080_ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي الْجُوْدِيِّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُهَاجِرِ

2080 ـ الحبرنا يزيد بن هارون حدتنا غن المُعِقَدَام بُنِ مَعُدِئ كُرِبَ أَبِي كَرِيْمَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَيْسَمَا مُسْلِمٍ ضَافَ قَوْمًا فَأَصُبَحَ الطَّيْفُ مَحُرُومًا فَإِنَّ عَلَى كُلِّ مُسُلِمٍ نَصُرَهُ حَتَّى يَأْخُذَ لَهُ بِقِرَى لَيُكَتِهِ مِنْ زَرُعِهِ وَمَالِهِ. ٥

فوائد: سجان الله اسلام کی تعلیمات میں مہمان نوازی کی کس قدرتا کید ہے کہ اسے ایمان کی علامت کے ساتھ ساتھ مہمان کا حق بنادیا گیا تا کہ اگر کوئی غاصب مہمان کے حق کی ادائیگی سے پہلو تہی اختیار کرتا ہے تواسے مہمانی کے بقدر مالی جرمانہ کیا جاسکتا ہے۔مہمان میں طاقت ہو وہ خود لے لے یا دوسرے مسلمان اسے اس کا حق دلوادیں۔

[12] بَابِ الذُّبَابِ يَقَعُ فِى الطَّعَامِ كَا نِ مِين كَمَى كَاكُرَجَانَا

2081- أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلالٍ عَنْ عُتْبَةَ بْنِ مُسْلِمٍ أَنَّ عُبَيْدَ بْنَ

[•] صحیح: سابقہ بی مررے-

حسن: ابو داؤ د، كتاب الأطعمة، باب ماجاء في الضيافة (3751)

كتاب الاطعمة 管线测剂管线

حُنين أَخبرَ أَسس

أنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِنْ إِذَا سَقَطَ الذُّبَابُ فِي شَرَاب أَحَدِكُمُ فَلُيَغُمِسُهُ كُلَّهُ ثُمَّ لَيَنُزعُهُ فَإِنَّ فِي أَحَدِ جَنَاحَيْهِ دَاءً وَفِي الْآخَو شِفَاءً . ٥

ابو ہررہ واللہ کہتے ہیں کہ رسول الله طفاعی نے فرمایا: "جب تم میں سے کسی کے مشروب (یینے والی چیز) میں کھی گر جائے وہ اسے ساری کو ڈبو دے پھر اسے نکال دے۔ کوئکہ اس کے ایک پر میں بھاری ہے اور ایک میں

فوائد: کمهی ، تکیم ذات کی حقیری مخلوق ہے اس کے ایک پر میں بیاری جبکہ دوسرے میں شفا ہے اس حکیم ذات کی کاری گری ہے ۔للہذا تکھی کھانے یا پینے کی کسی شئے میں واقع ہوجائے تواسے ڈبو كر يجر يُعِينكنا جائي مديث من "يتقى بجناحه الذي فيه داءً" او كما قال عليه السلام وہ اپنے اس پرسے دفاع کرتی ہے جس میں بیاری ہوتی ہے یعنی وہ گرتے ہوئے اپنے بیاری والے پر کوآ گے رکھتی ہے لہذاصحت کے طالب پر دوسرے تریاق والے پر کوڈ بونالا زم ہے۔

2082 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ ثُمَامَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ

عَنُ أَبِي هُوَيُوةَ عَنِ النَّبِيِّ عَلَىٰ قَالَ إِذَا وَقَعَ الذُّبَابُ فِي إِنَاءِ أَحَدِكُمُ فَلُيَغُمِسُهُ فَإِنَّ فِي أَحَدِ جَنَاحَيُهِ ذَاءً وَفِي الْآخَر شِفَاءً قَالَ أَبُو مُحَمَّد قَالَ غَيْرُ حَمَّادٍ تُمَامَةُ عَنُ أَنَس مَكَانَ أَبِي هُوَيُوَةً وَقَوْمٌ يَـقُولُونَ عَنِ الْقَعُقَاعِ عَنُ أَبِي هُرَيُرَةَ وَحَدِيثُ عُبَيْدِ بُنِ حُنَيْنِ أَصَحُّ . ٥

الو ہررة فالله كت بي كه ني الفيكية نے فرمايا: "جبتم میں سے کسی کے برتن میں مکھی گر جائے تو اسے ڈبو دے کونکہ اس کے ایک پر میں بھاری اور ایک میں شفا ہوتی ہے۔''ابومحد کہتے ہیں:''حماد کے سوا اور لوگ ابو ہر ریا ہ کی جَّكه ثمامة عن انس كہتے ہيں اور پچھ عن القعقاع عن الي ہر ريةٌ کہتے ہیں اور عبید بن حنین کی بات ہی زیادہ صحیح ہے۔''

[₫] صحيح البخاري، كتاب بدء الخلق، باب اذا وقع الذباب في شراب احدكم (3320) وابوداؤد، كتاب الأطعمة، باب في الذباب يقع في الطعام (3844)

[🛭] منقطع ضعيف : مسند احمد 63/2

المنظمة المنظم

137.... بَابِ الْمُؤْمِنُ يَأْكُلُ فِي مِعْي وَاحِدٍ مومن ایک آنت میں کھاتا ہے

2083 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجِ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ

عَنُ جَابِرِ عَنِ النَّبِي عِنَى النَّبِي عِنَى النَّبِي عِنَى النَّبِي عِنْ النَّبِي عِنْ النَّبِي عِنْ النَّبِي عِنْ النَّبِي عَنِ النَّبِي آنت میں کھاتا ہے اور کا فرسات آنتوں میں کھاتا ہے۔''

يَأْكُلُ فِي مِعًى وَاحِدٍ وَالْكَافِرُ يَأْكُلُ فِي سَبْعَةِ أَمْعَاء . •

ف وائد: بيمومن كي شان ہے كه بسم الله يوسف اور ديگرسنن كى محافظت كى بنا برالله اس كے تھوڑے رزق میں برکت عطا فردیتا ہے اور وہ جلد سیر ہوجاتا جبکہ کا فرکے کھانے میں ایسی بے برکتی ہوتی ہے کہ وہ سیر ہونے برنہیں آتا اور کھائے جاتا ہے۔ ابو ہریرہ رخالفہ سے مروی ہے ایک آدمی آپ طفی قایم کا مہمان بنا جبکہ وہ کا فرتھا آپ مشکی آئے ہے اسے سات بکریاں دھوکر پلا ڈالیں ایکے دن وہ مسلمان ہوگیا توایک بکری کا دود ہے بشکل ختم کرسکا۔ دیکھیے مسلم۔ابن حجر راٹیٹلیہ کے مطابق نہ کورہ مخص جبجاہ غفاری زمائٹی ممکن ہے (افقح) 2084 أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ الْقَوَارِيرِيُّ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ حَدَّثَنى

عَنِ ابُنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِي عَلَى اللَّهِ

2085 و حَدَّثَنِي يَحْمَى عَنْ مُجَالِدٍ عَنْ أَبِي الْوَدَّاكِ

عَنُ أَبِي سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ عَنِي النَّبِيِّ عَنِي النَّبِيِّ عَنِي النَّبِيِّ عَنِي النَّهِ

ابوسعید نبی مشیکی سے پہلی حدیث کی طرح نقل کرتے

2086 و حَدَّثَنِي يَحْيَى عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو عَنْ أَبِيْ سَلَمَةَ .

ابو ہررة وفائقة كہتے ہيںكه نبى السَّالَة نام فرمايا: "مومن ایک آنت میں اور کافرسات آنتوں میں کھاتا ہے۔''

عَنُ أَبِي هُوَيُوَ ـةَ عَنِ النَّبِيِّ عِلْمُ اللَّهِيِّ عَلَىٰ اللَّهِيِّ عَلَىٰ اللَّهِيِّ عَلَىٰ الْـمُوُّ مِنُ يَأْكُلُ فِي مِعِّى وَاحِدِ وَالْكَافِرُ

يَأْكُلُ فِي سَبُعَةِ أَمْعَاءٍ. ٥

[•] صحيح مسلم، كتاب الأشربة، باب المؤمن يأكل في معًى واحد (5344)

[•] متفق عليه: البخاري، كتاب الأطعمة، باب المؤمن يأكل في معى واحد (5394) ومسلم كتاب الأشربة، باب المؤمن 🛭 صحيح: (2084) لما فظر كيج ًـ يأكل في معي واحد (5340)

[•] صحيح: (2084) لما خطر يجيح -

سَيِّسَ الدَّالِينَ عَلَى الأطعمة 68 مَدَّ الرَّالِينَ الدَّاطعمة

[14] بَابِ طَعَامُ الْوَاحِدِ يَكُفِي الِاثْنَيُنِ ایک آ دمی کا کھانا دو کے لئے کافی ہوتا ہے

2087 أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَاصِم عَنِ ابْنِ جُرَيْج عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ

عَنُ جَابِو عَنِ النَّبِي عِنَي الْمُعَامُ الْوَاحِدِ ﴿ جَابِرِ وَالنَّهُ كُتِّ مِين كَه فِي الْتَفَاقَيْلُ نِ فرمايا: " أيك آ ومي كا

الْأَرْبَعَةَ وَطَعَامُ الْأَرْبَعَةِ يَكُفِي فَمَانِيَةً . • آثُهِ آ دميوں كے لئے كافي ہوتا ہے''

يَكُفِي إلاثُنيَّن وَطَعَامُ الاثنيُّن يَكُفِي كُون كُون كَ لِيَ اور دوكا عار كے لئے اور جاركا

فوائد: ایک آ دی جتنا کھانا سپر ہوکر کھا سکتا ہے اگر مسنون طریقے سے پیٹ کے تین جھے کرک مثلًا ایک حصه کھانے دوسرایانی تیسرا ہوا کے لیے ہوتولاز ما ایسا کھانا جہاں صحت کا ضامن ہوگاوہاں فرکورہ حدیث کےمطابق دوگنا تعداد کے لیے کافی ہوگا۔

[15] بَابِ فِي الَّذِي يَأْكُلُ مِمَّا يَلِيُه اس شخص کے متعلق جواییے سامنے سے کھائے

2089 ـ أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ وَهْبِ بْنِ كَيْسَانَ

عَنُ عُمَر بُن أَبِي سَلَمَةً أَنَّ النَّبِيِّ عِليًّ عمر وَالنَّهُ بن ابوسلمه وَالنَّهُ كَبِّ بِيل كه ان سے نبي طفي الم قَالَ لَهُ سَمِّ اللَّهَ وَكُلُّ مِمَّا يَلِيْكَ . ٥ نُورِ مَايا: "لِهِم اللَّه يرْهواورايين آ كَ سِي كهاؤ'

فوائد: (۱) کھانا شروع کرتے وقت حصول برکت کے لیے ہم اللہ پڑھنا لازم ہے (۲) کھانا کھانے کا بیدادب ہے کہ کھانا صرف اپنے آ گے ہے ہی کھایا جائے البتہ اگر برتن میں مختلف انواع کے کھانے ہیں تو پھراجازت ہے کہ کسی دوسرے کے آگے سے کوئی شے لے لی جائے۔

[16] بَابِ النَّهِي عَنُ أَكُل وَسَطِ الثَّريدِ حَتَّى يَأْكُلَ جَوَانِبَهُ

ٹریدکو کناروں سے کھانے سے پہلے درمیان سے کھانے کی ممانعت

2090 - أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرِ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرِ

عَنِ ابُنِ عَبَّاسِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ ابن عباس رَفَاتِينَ كَبْتِ بِين كه رسول الله عَنْ اَيْمَ كَ ياس

[•] صحيح مسلم، كتاب الأشرية، باب فضيلة المواساة في الطعام، (5336) وابن ماجه ،كتاب الأطعمة، باب طعام الواحد يكفي الاثنين (3254)

² منفق علیه: (2062) کے تحت گزر چکی ہے۔

العمدة المعالمة المعا

ثرید کا ایک برتن یا انہوں نے کہا: پیالد لایا گیا تو آپ نے فرمایا: ''اس کے کناروں سے کھاؤ اور اس کے درمیان سے نہ کھاؤ کیونکہ برکت اس کے درمیان میں اتر تی ہے۔'' أُتِى بِحَفُنَةٍ أَوُ قَالَ قَصْعَةٍ مِنُ ثَرِيدٍ فَقَالَ كُلُوا مِنُ حَافَاتِهَا أَوُ قَالَ جَوَانِبِهَا وَلَا تَأْكُلُوا مِنُ وَسَطِهَا فَإِنَّ الْبَرَكَةَ تُنْزِلُ فِي وَسَطِهَا . •

فوائد: (۱) کھانا اکٹھے ہوکرمل کرکھانا مستحب ومفید ہے (۲) کھانا درمیان سے نہیں کھانا چاہیے کیونکہ درمیان میں برکت کانزول ہوتا ہے۔

[17] بَابُ النَّهُي عَنُ أَكُلِ الطَّعَامِ الْحَارِّ كُرم كِهانا كِهانِ كَي مِمانِعت

2091 حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدِّمَشْقِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ قُرَّةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَن الزُّهْرِيِّ......

عروة کہتے ہیں اساء بنت الوبکر نظافہ کے پاس جب ثرید لایا جاتا تو وہ تھم کرتیں کہ اسے ڈھا تک دوتا کہ اس کی گرمی اور نقصان زائل ہو جائے اور وہ کہتیں' میں نے رسول اللہ طلطے آیا ہے سناوہ فرماتے: ''اس میں برکت زیادہ ہوتی

عَنُ عُرُوةَ عَنُ أَسُمَاءَ بِنُتِ أَبِى بَكُرِ أَنَّهَا كَانَتُ إِذَا أُتِيَتُ بِغُرِيْدٍ أَمَرَتُ بِهِ فَغُطِّى حَتَّى يَدُهُ هَبَ فَوُرَةٌ دُخَانِهِ وَتَقُولُ إِنِّى سَمِعُتُ رَسُولَ اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ عَلَى اللهُ
فوائد: گرم کھانا جہاں برکت ہے محروی کا سبب بنما ہے وہیں معدے اور منہ کے لیے زخمت پیدا ہوتی ہے۔ پیدا ہوتی ہے اس کیے حکماء کا قول ہے کہ شعنڈ اکھانا اور گرم پانی بیصحت، چستی ونشاط کا باعث ہے۔
[18] ہَابِ أَیُّ الْإِدَامِ کَانَ أَحَبَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ
کون ساسالن نبی مِنْ اللَّهِ عَلَیْ کو مجبوب تھا

2092 - أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا الْمُثَنَّى بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا طَلْحَةُ بْنُ نَافِعِ أَبُوْ سُفْانَ........

[●] صحيح: ابوداؤد، كتاب الأطعمة، باب ماجاء في الأكل من اعلى الصحفة (3772) وابن ماجه، كتاب الأطعمة، باب النهى عن الأكل من ذروة التريد (3277)

ی حسن: داری منفرد میں۔

الكانكانكية كالكانكية 70 كتاب الاطعمة ك

حابر بن عبدالله خالفهٔ کہتے ہیں کہ نبی ملنے ملکے ایک دن میرا ہاتھ پکڑ کرایے مکان کی طرف لے گئے پھر آپ نے فرمایا:" کیاصبح یا شام کا کھانا ہے؟" طلحہ کوشک ہوا جابر" کہتے ہیں: پھر آپ کے پاس روٹی کے فکڑے لائے گئے۔ تو آپ نے فرمایا: کوئی سالن نہیں؟ انہوں نے کہا: نہیں' تھوڑا ساسر کہ ہے۔آ پ نے فرمایا:''اسے لے آؤ، تو بہت اجھاسالن ہے۔''جابر واللہ کہتے ہیں:''جب سے میں نے یہ بات رسول الله طفاع الله علی میشد سر کے کو پند کرتا رہا۔''ابوسفیان کہتے ہیں: جب سے میں نے بہ ہات حابرؓ ہے تی ہمیشہ اسے بیند کرتا رہا۔

حَدَّثَنَا جَابِرُ بُنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ أَحَدَ النَّبيُّ عِن اللَّهِ بَيدِي ذَاتَ يَوُم إِلَى مَنْزِلِهِ فَقَالَ هَلُ مِنْ غَدَاءِ أُوْ مِنْ عَشَاءِ شَكَّ طَلُحَةً قَالَ فَأَخُرَجَ إِلَيْهِ فِلَقًا مِنُ خُبُز فَقَالَ أَمَا مِنُ أُدُم قَالُوا لَا إِلَّا شَيْءٌ مِنُ خَلِّ فَقَالَ هَاتُوهُ فَنِعُمَ الْإِدَامُ الْخَلُّ قَالَ جَابِرٌ فَمَا زِلْتُ أُحِبُ الْخَلَّ مُنُذُ سَمِعُتُهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ أَبُوُ سُفُيَانَ فَمَا زِلْتُ أُحِبُّهُ مُنْذُ سَمِعْتُهُ مِنُ جَابر . 🏻

فوائد: (١) رول كے ساتھ سالن كااستعال آپ الني الله كي سنت ہے۔ بلا وجر سالن جيور دينا اورسوکھی روٹی کواپنی خوراک بنالینا آپ مٹھے کیا کاطریقہ نہیں۔ (۲) ہروہ چیز جس کے ساتھ روٹی کھائی جاسکے وہ سالن ہے (۳) سر کہ لذت اور فوائد کے اعتبار سے ایک بہترین چیز ہے اسے اپنانا جا ہے۔

2093 حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِكَالِ عَنْ هِشَامٍ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ

الْإِذَامُ أَوْ نِعُمَ اللَّادُمُ الْنَحَلُّ . ٥

عَنُ عَسَائِشَةَ عَنِ النَّبِي عِلَيْ قَالَ نِعُمَ عَاكَثُم وَلَيْهِا كَبِي مِن بِي طِيْعَالِمْ فَ فرمايا: "مركه كيابي احیما سالن ہے۔''

> [19].... بَابِ فِي الْقَرُع كدو كمتعلق

2094- أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحٰقَ بْن عَبْدِ اللهِ بْن أَبِيْ طَلْحَةَ

عَنُ أَنَس قَالَ رَأَيْتُ النَّبِيَّ عِلَيُّ أُتِي السُّ كَتِ بِين مِن فِي مِكَانِي السُّكَوَيْمَ كَ ياس شوربالايا بِمَوقَةٍ فِيهَا دُبَّاءٌ وَقَدِينٌ فَرَأَيْتُهُ يَتَبُّعُ عَلَيْ الله مِن كرواور خنك كوشت تفا آب اس ميس سے كرو

❶ صحيح مسلم، كتاب الأشربة، باب فضيلة الخل والتأدم به (5321) وابوداؤد، كتاب الأطعمة، باب ماجاء في الخل (3821)

[🗨] صحيح مسلم، كتاب الأشربة ، باب فضيلة الخل والتأدم به (3518) والترمذي، كتاب الأطعمة، باب ماجاء في الخل (1840)

71 كتاب الاطعمة يتين الكاليوي الدُّنَّاءَ بَأْكُلُهُ •

تلاثی کر کے کھاتے تھے۔

فوائد: (۱) "قديد" بيعربول كاطريقة تفاكه كوشت كي لم المي كلاك كاث كرانبيس سحما ليت اور بطور سالن کے ایکا کر کھاتے (بخاری) (۲) کدو ایک مفید سبزی ہے اس کو گوشت کے ساتھ ایکا کر کھانا مسنون و سلح ہے۔

2095 أَخْبَرَنَا الْأَسْوَدُ بْنُ عَامِرِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ

انس زاللہ کہتے ہیں نبی طفی ایم کا کدو کو بہت پیند کرتے تھے۔وہ کہتے ہیں: آ ب کے یاس کدولایا گیا تو میں شروع موااسے (برتن میں کدو کے مکروں کو) بکر کر آ یا کے

عَنُ أَنَس قَالَ كَانَ النَّبِيُّ عِنْ أَنَس قَالَ كَانَ النَّبِيُّ عِنْكُ يُعُجِبُهُ اللَّهَ رُعُ قَالَ فَقُدِّمَ إِلَيْهِ فَجَعَلْتُ أَتَنَاوَلُهُ وَ أَجُعَلُهُ بَيْنَ يَدَيْهِ . ٥

سا منرر کھنےاگا۔

ر207 بَابِ فِي فَضُلِ الزَّيُتِ زیتون کے تیل کی فضیلت کا بیان

2096 - أَخْبَرَنَا أَبُوْ نُعَيْم حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عِيسَى عَنْ عَطَاءٍ وَلَيْسَ بِابْنِ أَبِي

عَنُ أَبِي أَسِيبُ إِلْأَنْصَارِيّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَشَمٌ كُلُوا الزَّيْتَ وَاثْتَذِمُوا بِهِ وَادُّهِ نُدُوا بِهِ فَإِنَّهُ يَخُرُجُ مِنُ شَجَوَةٍ مُبَارَكَة . 🗷

ابواسید انصاری وظائفه کہتے ہیں کہ رسول الله طفی آیا نے فرمایا: ' در بیون کا تیل کھاؤ' کیونکہ وہ مبارک چیز ہے اس کا سالن بناؤ اور اسے تیل کی جگہ استعال کرو۔ کیونکہ وہ مارک درخت سے نکلتا ہے۔''

فعاند: زینون کومبارک درخت قرار دیا گیا ہے جیسا که''سورة النور'' کی آیت میں مذکورہ ہے۔ نیز سورة التین میں اللہ کا ان درختوں کی قتم کھانا ان کے عظیم الفائدہ ہونے پر دال ہے۔ لہذا اسکے تیل کوبطور کھی ، یا تیل مالش وغیرہ کے لیے استعال کرنا انتہائی مفید دکارگر ہے۔

◘ متفق عليه: البخاري، كتاب البيوع، باب الخياط (2092) مسلم، كتاب الأطعمة، باب حواز أكل المرق واستحباب أكل اليقطين (5293)

- وصحيح: سابق مديث ك ايك طرف ب-
- € حسن: الترمذي، كتاب الأطعمة، باب ماجاء في أكل الزيب (1852)

حَوْلَ مَيْنَ الْكَالِمِينَ اللَّالِمِينَ اللَّالِمِينَ اللَّالِمِينَ اللَّالِمِينَ اللَّهُ وَمِ الللَّهُ وَمِ اللَّهُ وَمِ الللَّهُ وَمِ الللَّهُ وَمِ الللَّهُ وَمِ الللْمُؤْمِ اللَّهُ وَمِ الللَّهُ وَمِ اللَّهُ وَمِ اللَّهُ وَمِ اللَّهُ وَمِ الللْمُ اللَّهُ وَمِ الللَّهُ وَمِ الللْمُؤْمِ الللَّهُ وَمِ الللْمُؤْمِ اللَّهُ وَمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ اللَّهُ وَمِ الللْمُؤْمِ اللَّهُ وَمِ الللْمُؤْمِ الللَّهُ وَمِ الللَّهُ وَمِ اللَّهُ وَمِ اللَّهُ وَمِ اللَّهُ مِنْ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ اللللْمُؤْمِ اللللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ اللللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ اللللْمُؤْمِ اللللْمُؤْمِ الللْمُومِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ اللللْمُؤْمِ اللللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ اللْمُؤْمِ اللللْمُؤْمِ اللللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ اللللْمُؤْمِ اللْمُؤْمِ اللْمُؤْمِ اللْمُؤْمِ اللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ اللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ الللْمُؤْمِ ال

2097 حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ أَخْبَرَنِيْ نَافِعٌ

ابن عمر خالتُهُ کہتے ہیں کہ نبی مطفیٰ آنے غزوہ خیبر میں فرمایا: '' جو شخص کہن کھائے وہ مسجد میں نہ آئے۔'' عَنِ ابُنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ عَلَيْ قَالَ فِي غَرُوَةِ خَيْبَرَ مَنُ أَكَلَ مِنُ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ يَعْنِى النُّومَ فَلَا يَأْتِينَّ الْمَسَاجِدَ . •

فوائد: (۱) المهن اور پیاز (ویکھیے ابن ماجه) کھا کرمبحہ میں آناممنوع ہے (۲) اگرکوئی بھولا بھٹکا آجائے تواسے مبحد سے نکالنا درست ہے۔ عمر وُٹائنو بیان کرتے ہیں "لَقَدْ کنت اری الرجل علی عهد رسول الله ﷺ یہ وجد ریحه منه فیؤ خذ بیده حتی یُخرَج به الٰی البقیع فمن کان اکله ما لابُدَّ ملیمتهما طبحًا . "(ابن ماجه: صحیح) میں نے دَوررسول مُشَاعَلَم میں ایک آوی کود یکھا کہ اس کے منہ ہے اس کی اگر اُق تواس کا ہاتھ پکڑ کر اسے بقیع کی جانب نکال دیا جاتا لہذا جوکوئی انیس ضروری استعال کرنا چا ہے تو پکا کران کی اُو مارے ۔ چنانچہ یکے ہوئے ایسن پیاز کھا کر مبحد آنا جائز ہے۔ انہیں ضروری استعال کرنا چا ہے تو پکا کران کی اُو مارے ۔ چنانچہ یکے ہوئے ایسن پیاز کھا کر مبحد آنا جائز ہے۔ 1998ء مَنْ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ حَدَّثَنَا سُفْیَانُ بْنُ عُیشَنَةَ حَدَّثَنِی عُبَیْدُ اللّٰهِ بْنُ أَبِیْ یَزِیدَ عَنْ أَبِیْ یَزِیدَ عَنْ اللّٰهِ اللّٰهِ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ حَدَّثَنَا سُفْیَانُ بْنُ عُیشَنَة حَدَّثَنِی عُبَیْدُ اللّٰهِ بْنُ أَبِیْ یَزِیدَ عَنْ اللّٰهِ اللّٰهِ بْنُ اَبِیْ یَزِیدَ عَنْ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ بْنُ اَبْنُ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ اللّٰهِ بْنُ اللّٰهِ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ حَدَّثَنَا سُفْیَانُ بْنُ عُیشَنَة حَدَّثِنِی عُبَیْدُ اللّٰهِ بْنُ اَبِیْ یَزِیدَ عَنْ اللّٰهِ بِنَ اللّٰهِ بِنُ اللّٰهِ بِنُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ بَالَٰ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ

أَنَّ أُمَّ أَيُّوبَ أَخْبَرَتُهُ قَالَتُ نَوْلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ عَلَيْنَا لَهُ طَعَامًا فِيهِ مَسُىءٌ مِنْ بَعْضِ هَذِهِ الْبَقُولِ فَلَمَّا أَتَيْنَاهُ بِيهِ كَرِهَهُ وَقَالَ لِأَصْحَابِهِ كُلُوهُ فَإِنِّى بِهِ كَرِهَهُ وَقَالَ لِأَصْحَابِهِ كُلُوهُ فَإِنِّى لَبُستُ كَرَهَهُ وَقَالَ لِأَصْحَابِهِ كُلُوهُ فَإِنِي لَكُم لَيْنَى أَخَافُ أَنُ لَسُتُ كَارَةً مَ إِنِّى أَخَافُ أَنُ لَسُتُ كَارَةً مَ إِنِّى أَخَافُ أَنُ الْمُ مُحَمَّد إِذَا لَمُ الْوَذِي صَاحِبِي قَالَ أَبُوهُ مُحَمَّد إِذَا لَمُ يُؤَذِ أَحَدًا فَلَا بَأْسَ بِأَكْلِهِ. ٥

❶ مشفق عليه: البخاري، كتاب الأذاك، باب ماجاء في الثوم النبي والبصل والكراث (853) ومسلم، كتاب المساجد. باب نهي من أكل ثوماً أو بصدً (1248)

[•] صحيح: الترمذي، كتاب الأطعمة، باب ماجاء في الرحصة في الثوم مطبوعاً (1810)

الأطعمة حرار الأطعمة المرابعة
فوائد: (۱) لہن ، پیاز کو پکا کراس کا استعال درست ہے اگر پھر بھی بُو اچھی طرح ختم نہ ہوئی ہو تو بچنا بہتر ہے۔ (۲) اگر کوئی دعوت قبول کر لینے کے بعد کسی مجبوری پر کھانا نہ کھائے تواہے مجبور نہیں کرنا چاہیے۔

[22] بَابِ فِي أَكُلِ الدَّجَاجِ مرغى كھانے كے متعلق

2099 - أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ عَنْ أَيُّوْبَ عَنِ الْقَاسِمِ التَّمِيْمِيِّ

زہدم جرمی کہتے ہیں ہم ابومویٰ کے پاس تھے وہ کھانا لائے تو اس میں مرغی کا گوشت بھی تھا۔لوگوں میں بنوتیم اللہ کا ایک سرخ رنگ کا آ دمی بھی تھا۔وہ کھانے کے قریب نہ آیا تو ابومویٰ نے اس سے کہا: "قریب آ جاؤ' میں نے رسول اللہ طشے آیا ہے کومرغی کا گوشت کھاتے ہوئے دیکھا تھا۔''

عَنُ زَهُ دَمِ الْجَرُمِيّ قَالَ كُنَّا عِنْدَ أَبِيُ مُوسَى فَقُدِمَ فِى طَعَامِهِ مُوسَى فَقُدِمَ فِى طَعَامِهِ لَحُمْ دَجَاجٍ وَفِى الْقَوْمِ رَجُلٌ مِنْ بَنِى تَيْسِمِ اللّهِ أَحُرَمُ فَلَمُ يَدُنُ فَقَالَ لَهُ أَبُو مُوسَى ادُنُ فَالِيّمُ قَدُ رَأَيْتُ رَسُولَ مُسُولَ اللّهِ عَلَى الْمُلْهِ اللّهِ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهِ عَلَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللهُ اللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ اللّهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ الللهُ اللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ الللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللّهُ اللهُ اللّهُ الللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللهُ اللللهُ الللهُ اللهُ الللهُ اللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللّه

فواند: (۱) مرغ كا كھانا آپ طفاع آيا سے ثابت ہے (۲) عرب ميں مرغ اوراس كا گوشت اتنا عام ندتھا۔

2100 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِيْ قِلابَةَ

زہرم جرمی ابوموی سے نقل کرتے ہیں انہوں نے مرغی کا ذکر کیا تو کہا: "میں نے رسول اللہ منظم میں کا گومرغی کا گوشت کھاتے ہوئے دیکھا۔"

عَنُ زَهُدَم الُجَرُمِيِّ عَنُ أَبِى مُوسَى أَنَّهُ ذَكَـرَ الدَّجَاجَ فَقَالَ رَأَيُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَأْكُلُهُ. ۞

[23] بَابِ مَنُ كَرِهَ أَنُ يُطُعِمَ طَعَامَهُ إِلَّا الْأَتُقِيَاءَ اس كِمتعلق جواپنا كھانا پرہيز گاروں كے علاوه كسى اور كو كھلانا نا پيند كرتا ہے

2101- أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِءُ حَدَّثَنَا حَيْوَةُ حَدَّثَنَا سَالِمُ بْنُ غَيْلانَ أَنَّ الْوَلِيدَ بْنَ قَيْسٍ

 [♣] متفق عليه: البخاري كتاب الذبائح والصيد، باب لحم الدجاج (5518) ومسلم، كتاب الأيمان، باب ندب من حلف يميناً (4241)

² متفق عليه: سالقد بي مكرر بـ

THE SELECTION OF THE PERSON OF كتاب الاطعمة

أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبًا سَعِيْدِ أَوْ عَنْ أَبِي الْهَيْثَم

عَنُ أَبِي سَعِيُدٍ الْنُحُدُرِيّ أَنَّهُ سَمِعَ نَبِيّ الوسعيد خدري وَاللَّهُ كَتِ بِي كَه انهول نے نبي السَّيَعَيْلُم كو اللَّهِ عَلَى يَفُولُ لَا تَصْحَبُ إِلَّا مُؤْمِنًا يوفرمات بوئ سنا: "مومن كي ساتهي بنواور تمهارا كهانا یر ہیز گاروں کے علاوہ اور کوئی نہ کھائے۔''

وَلَا يَأْكُلُ طَعَامَكَ إِلَّا تَقِنَّى . ٥

فواند: آدى كوحى الوسع كوشش كرنى جايي كهاس كامال كسى يربيز گار پيك كا بندهن بن اس کار مطلب ہرگز نہیں کہ کسی گنہگار نافر مان کو کھانانہیں دینا کیونکہ اس کا ثبوت ہمیں نبی طبیع آنے کے فعل سے ملتا ہے کہ جب انہوں نے ایک کافر کی مہمان نوازی کی۔ دیکھیے (2083) لہذا دعوت میں مؤمنین کور جمج دین چاہیے البتہ ضرورت کے مطابق فاسقین و کافرین او گنہگارلوگوں کوبھی مدعو کیا جاسکتا ہے۔

> [24]....بَاب مَنُ لَمُ يَرَ بَأْسًا أَنْ يُجْمَعَ بَيُنَ الشَّيْئَيْن جو خض دو چزیں اکٹھی کھانے میں حرج نہیں سمجھتا

2102 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدِ عَنْ أَبِيْهِ

عَنُ عَبْدِ اللَّهِ بُن جَعْفَر قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ عبداللَّهُ بن جعفر كہتے ہيں ميں نے رسول الله طفيَعَيْم كو اللَّهِ ﷺ يَأْكُلُ الْقِفَّاءَ بِالرُّطَبِ. 🗨 ديكهاوه ككري كجورك ساته كهارب تھے۔

ف اشیاء کواکشے کھانا درست ہے مطابق مختلف المزاج اشیاء کواکشے کھانا درست ہے ۔ کھجور گرم جبکه کری سرد مزاج ہوتی ہے۔ لہذا دونوں ایک دوسرے کومعتدل کردیتی ہیں۔ چنانچہ بیفرحت بخش اورجسمانی صحت کا باعث ہے اور کمزورجسم کوفر بہ کرنے کے لیے مؤثر چیز ہے۔ جیسا کہ عاکشہ وظافھا کی والدہ انہیں رفعتی سے قبل فربہ کرنے کے لیے انہیں میکھلاتی رہی ہیں۔(ابن ماجہ) (۲)''قثاء'' ککڑی (تر) اور کھیرے دونوں كوكهتي ہيں۔

[25].... بَابِ النَّهِي عَنِ الْقِرَان (دو چیوارے) ملا کر کھانے کی ممانعت کا بیان

2103 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

[◘] صحيح: ابوداؤد، كتاب الأدب، باب من يؤمر أن يحالس (4832) والترمذي، كتاب الزهد، باب ماجاء في صحية

٢ متفق عليه: البخاري، كتاب الأطعمة، باب القثاء بالرطب (5440) ومسلم، كتاب الأطعمة، باب أكل القثاء بالرطب (5298)

الله المعمد على المعمد
نُ سُحَيْمٍ قَالَ كُنَّا جبلہ بن تحمیم کہتے ہیں ہم مدینہ میں سے۔ کہ ہم پر قط پڑا پس ابتُنا سَنَةٌ فَكَانَ ابْنُ ابن ابن زبیر ہمیں خربادیتے تھے۔ ابن عمر فالٹی ہمارے پاس مُسرَ وَكَانَ ابْنُ عُمَو سے گزرتے تو کہتے: ''دو کھجوریں اکٹھی نہ کھاؤ كيونكه 'تُقَادِنُوْا فَإِنَّ رَسُولَ رسول الله طِنْ اَلَيْمَ فَيْ الله عِلْ مَا كُلُّ كَمَانَ سے منع كيا ہے۔ عَسِنِ الْقِورَانِ إِلَّا أَنْ مُريه كه وہ اپنے بھائى سے اجازت لے لے۔''

فوائد: (۱) شارع نے ہرکام میں انصاف کو مدنظر رکھنے کی تاکید کی ہے حتی کہ اگرلوگ مل کر کھا نابھی کھارہے ہیں تو ہرایک کو برابر کھانے کا تکم نہ کہ کوئی تیزی دکھائے اور دوسروں کا حق بھی کھا جائے کھا نابھی کھارہے ہوئے بھی کو برابر برابر کھانے کی اجازت ہے البتہ زیادہ لینے کے لیے ساتھیوں (۲) میوہ جات وغیرہ کھاتے ہوئے بھی کو برابر برابر کھانے کی اجازت ہے البتہ زیادہ لینے کے لیے ساتھیوں سے اجازت ماصل کرنا ضروری ہے (۳) مشتر کہ چیز کامعروف طریقے سے استعال جائز ہے۔البتہ خصوصی استعال کے لیے شرکاء سے اجازت لینا ضروری ہے۔

[26].... بَابِ فِی الْتَّمُوِ خشک تحجور کے متعلق

2104 ـ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ طَحْلاءَ عَنْ أَبِي الرِّجَالِ عَنْ أَيِّهِ عَمْرَةَ

زوجة النبی عائشہ وظافها کہتی ہیں که رسول الله منظے میل نے فرمایا: ''اے عائشہ! جس گھر میں خشک تھجور نہ ہواس گھر کے لوگ بھو کے ہیں' دو باریا تین بار فرمایا۔'' ف ان کھانا نہ ملنے پرکی دن کے جورغذائیت سے بھر پورتوانائی کاخزانہ ہے جی کہانسان کھانا نہ ملنے پرکی دن کی جند کھجوروں پرگزارا کرتا ہے توبیاس کوضعف سے محفوظ رکھتی ہیں۔ (۲) کھجور بھی غلے کے زمرے میں

[•] متفق عليه: البخارى، كتاب الأطعمة، باب القِران في التمر (5446) ومسلم، كتاب الأطعمة، باب نهى الأكل مع جماعة (5301)

[🛭] صحيح مسلم، كتاب الأطعمة، باب في ادخار النمر ونحوه (3505)

العمد المعدة على المعدة المعدد
آتی ہے لہذا جس گھر میں تھجور ہواہے فاقہ زدہ با بھوکا شارنہیں کیا جائے گا (۳) غلے کو گھر میں جمع کیا جاسکتا ہے(۴) تھجور صرف ایک پھل ہی نہیں بلکہ بھوک ہے کفایت کرنے والی خوراک بھی ہے۔

2105 ـ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالِ عَنْ هِشَامٍ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ

عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَ عِنْكَ هَلَ لَا يَجُوعُ عَاسَتْهِ وَلَيْهَا كَهَنَى بِين فِي طِيْكَ لَيْمُ نَے فرمایا: ''جس گريس أَهُلُ بَيْتٍ عِنْدَهُمُ التَّمُوُ. • خشك كهوري بول وه بهي بعو كنبيل بول كَـ''

2106 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْم حَدَّثَنَا مُصْعَبُ بْنُ سُلَيْم

قَالَ سَمِعْتُ أَنَسَ بُنَ مَالِكِ يَقُولُ أَهُدِى إِلَى النَّبِي ﷺ تَمُرٌ فَأَحَدَ يُهَدِّيهِ أَهُدِى إِلَى النَّبِي ﷺ تَمُرٌ فَأَحَدَ يُهَدِّيهِ وَقَالَ رَأَيُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَأْكُلُ تَمُرًا مُقْعِيًا مِنَ البُوعِ قَالَ أَبُو مُحَمَّد يُهَدِي هَاهُنَا وَهَاهُنَا .

عُهُدِيه يَعْنِي يُهُدى هَاهُنَا وَهَاهُنَا .

هُهُدِيه يَعْنِي يُهُدى هَاهُنَا وَهَاهُنَا .

انس ڈھائٹھ بن مالک کہتے ہیں کہ نبی طفیقی آن کو خشک کھجوروں کا تحفہ دیا گیا۔آپ اسے ہدیہ کرنے لگے اور انس ڈھائٹھ کہتے ہیں: میں نے رسول اللہ طفیقی آنے کو دیکھاوہ بھوک کی (تختی کی) وجہ سے خشک مجبوریں غیر متمکن طریقے سے بیٹھ کر کھارہے تھے۔ابو محمد کہتے ہیں: یُھَدِیْہِ کامعنی

ہے انہیں ادھر ادھر بھیجنے گئے۔ [27] بَابِ فِی الْوُضُوءِ بَعُدَ الطَّعَامِ کھانے کے بعد ہاتھ دھونا

2107 - أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن عَنْ خَالِدٍ عَنْ سُهَيْلٍ عَنْ أَبِيهِ

عَنُ أَبِسى هُسرَيُسرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنُ أَبِسى هُسرَيُسرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَيْ مَنُ نَامَ وَفِى يَدِهِ رِيحُ غَمَرٍ فَعَسرَضَ لَسهُ عَسارِضٌ فَلا يَسلُومَنَّ إِلَّا نَفُسَهُ. ۞

ابو ہریرۃ فیالٹی کہتے ہیں رسول اللہ ملتے اللہ نے فرمایا: ''جو شخص سو جائے اور اس کے ہاتھ میں چکنائی کی بوجو، تو اس کو کوئی (موذی چیز) پہنچے تو وہ اپنے آپ کو ہی ملامت

 [●] صحيح مسلم، كتباب الأطعمة، باب في ادخار التمر ونحو (5304) وابوداؤد، كتباب الأطعمة، باب في التمر
 (3830)

[€] صحيح مسلم، كتاب الأطعمة، باب استحباب تواضع الأكل وصفة قعوده (5299) وابوداؤد، كتاب الأطعمة، باب ماجاء في الأكل متكنًا (3771)

[●]صحيح: ابوداؤد، كتاب الأطعمة، باب في غسل البدعن الطعام (3852) والترمذي، كتاب الأطمعة، باب ماجاء في كراهية البيتوتة وفي يده ريح غمر (1860)

الله المعمة المراجعة
فوائد :....(۱) "عَمَر" به وشت كي كيلنائي كوكيت بي (٢) كهانے كے بعد ماتھوں كادھونامنون ہے (٣) چکنائی کی او سے نقصان کا اندیشہ ہوتا ہے (٣) نقصان وہ چیز کے خطرے سے آگاہی کے بعد مالک کی بچائے نقصان اٹھانے والاخود ذمہ دار ہوگا۔

r28₁.... بَابِ فِي الْوَ لِيمَة وليمه سےمتعلق

2108 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ

عَنُ أَنَاسَ أَنَّ النَّبِي عَلَيْ قَالَ لِعَبُدِ الْسُ كَتِي مِين كه نبي الشَّيَقِيْنَ في عبدالرطنُ بن عوف ك کیڑے پرزردنشان دیکھا تو فرمایا:''بہ کیا ہے؟''اس نے مِنْ صُفُرَةِ مَهْيَهُ قَالَ تَزَوَّجُتُ قَالَ أَوْلِهُ ﴿ كَهَا: مِنْ صُفُرَةٍ مَهْيَهُ قَالَ تَزَوَّجُتُ قَالَ أَوْلِهُ ﴿ كَهَا: مِنْ صُفُرَةٍ مَهْيَهُ قَالَ تَزَوَّجُتُ قَالَ أَوْلِهُ ﴿ كَهَا مِنْ صُفُرةٍ مَا لَا يَا مِنْ كَالِ كَيَا سِي آبُ عُنْ مَايا: 'وليمدكرو الرّ ایک بمری ہو۔''

الرَّحْمَن بُن عَوُفٍ وَرَأَى عَلَيْهِ وَضَرًا وَلُوْ بِشَاةٍ . 0

فواند: (۱) شادی کرنے والے کے لیے آپ النظامیا کا حکم ہے کہ ولیمہ کرے (۲) "اولیم ونو لبشاة" مع بعض نے تکثیر مرادلی ہے کہ زیادہ سے زیادہ ایک بحری کردو۔جیسا کہ انس خالفی کی حدیث ہے بھی اس معنی کو تقویت ملتی ہے کہتے ہیں نبی مطاع اللہ نے اپنی کسی بیوی براس قدر ولیمہ نہ کیا جتنا زینٹ یرکیا(اس میں) آپ مشکھ اِنے ایک بری کے ساتھ ولیمہ کیاتھا(متفق علیہ)لیکن صحیح بات یہی ہے قاضی عیاض راثیجید نے بیان کی ہے کہ اس بات پراجماع ہے کہ ولیمہ میں کمی بیشی کی کوئی قیدنہیں (نیل الاوطار) (٢) شادى ميں سادگى كواپنانا جاہيے زيادہ اكھ اور بھير سے احتر از كرنا بہتر ہے عبدالرحليّ كى سادگى ملاحظه کیجیے که نبی رحت مشیّعاتیا تک کوخبر نه هو یا بی اور نه بی آپ مشیّعاتیا کو دعوت دی گئی۔

2109_ أَخْبَرَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنِ الْحَسَنِ......

عبدالله بن عثان تقفی کہتے ہیں کہ تقیف کے ایک کانے شخص نے کہا جے لوگ معروف کہتے تھے لین اس کی تعریف کرتے تھے اگر اس کا نام زہیر بن عثان نہیں تو میں نہیں جانتا کہ اس کا کیا نام ہے۔کہ نبی طفی اللے نے فرمایا:

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُن عُثْمَانَ الثَّقَفِيّ عَنُ رَجُل مِنْ ثَقِيفٍ أَعُورَ قَالَ كَانَ يُقَالُ لَهُ مَعُرُوفٌ أَيُ يُثُنِّي عَلَيْهِ 'خَيْرٌ إِنْ لَمُ يَكُن اسُمُهُ زُهَيُرَ بُنَ عُثُمَانَ فَلا أَدُرى

[◘] متفق عليه: البخاري، كتاب النكاح، باب كيف يدعى للمتزوج (5155) ومسلم، كتاب النكاح، باب الصداق و جواز كونه تعليم (3475)

حَالِ الْمُعْمَةُ ﴾ (78 كتاب الاطعمة) المحالية المعالمة المحالية المعالمة المحالية
مَا السُمُهُ أَنَّ النَّبِيَّ عِنْ قَالَ الْوَلِيمَةُ '' پہلے دن ولیہ حق ہے دوسرے دن مردج ہے اور اوَّلَ يَوْمِ حَقُّ وَالنَّائِي مَعُرُوفُ وَالنَّائِثَ وَمِل مِن اللَّهُ مَعْدِ بَنِ المُسَعِيدِ اللَّهُ وَعَلَى اللَّهُ وَعَلَى اللَّهُ وَعَلَى اللَّهُ وَعَلَى اللَّهُ وَعَلَى اللَّهُ وَاللَّ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ ا

وَرِيَاءٍ . •

2110 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو الْمُغِيرَةِ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ

عَنِ الْأَعْرَجِ عَنُ أَبِى هُرَيُرَةَ أَنَّهُ قَالَ شَرُّ الطَّعَامِ طَعَامُ الْوَلِيمَةِ يُدُعٰى إِلَيُهَا الْأَعْنِيَاءُ وَيُعُرَكُ الْمَسَاكِيْنُ وَمَنُ اللَّمَ اللَّهَ عَصَى اللَّهَ تَسَرَكَ الدَّعْصَى اللَّهَ

اعرج کہتے ہیں الوہرریۃ رہائی کہا: ''ولیمہ کا وہ کھانا بدر ین کھانا بدرین کھانا ہر ین کھانا ہدرین کھانا ہے جس میں امراء بلائے جا کیں اور مسکین چھوڑ دیا اس نے اللہ اور اس کے رسول کی نا فرمانی کی۔''

وَرَسُولَهُ. 🍳

فواند : (۱) اسلام نے ظاہری شان وشوکت کی بجائے انسان کی ذات اس کی نیکی وطہارت کومقدم رکھا ہے اوراسے شرف ومنزلت کی بنیاد قرار دیا ہے اورا دمیت کا احترام سکھایا ہے اس لیے مال وحشمت کے بجاریوں کی الیمی دعوت جس میں فقط اغنیاء وامراء کوہی مدعو کیا گیا الیمی دعوت کو بدترین قرار دیا گیا (۲) ولیمے کی دعوت قبول کرنا لازم ہے '' عَصَی'' کالفظ اس پردال ہے۔البتہ کھانے کی رخصت ہے کھائے یانہ کھائے۔حدیث میں ہے '' فَان شاء طعم وان شاء تر لئد . " (مسلم) چا ہے تو (ولیمے کا کھانا) کھائے چا ہے تو چھوڑ دے ۔تاہم ہم مکرات والی دعوتوں سے اجتناب ہی بہتر ہے۔
کھائے جا ہے تو چھوڑ دے ۔تاہم ہم مکرات والی دعوتوں سے اجتناب ہی بہتر ہے۔

[•] ضعيف: ابوداؤد، كتاب الأطعمة، باب في كم تستحب الوليمة؟ (3745) نيز مرسمًا بيري بحد

[€] متـفـق عليه: البخاري، كتاب النكاح، باب من ترك الدعوة فقد عصى الله ورسوله (177°) ومسلم، كتاب النكاح، باب الأمر بالاجابة الداعي الى دعوة (3507)

حكال كالمنافق المنافق
عَنُ أَنَسِ قَسَالَ جَسَاءَ رَجُلٌ قَدُ صَنَعَ طَعَامًا إِلَى رَسُولِ اللّهِ عَلَيْ يَعْنِى فَدَعَاهُ فَقَالَ رَسُولُ اللّهِ عَلَيْ هَكَذَا وَأُومًا إِلَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللّهِ عَلَيْ هَكَذَا وَأُومًا إِلَيْهِ عَلَيْ هَكَذَا وَأُومًا إِلَيْهِ عَلَيْ هَكَذَا وَأَومًا إِلَيْهِ عَلَيْ هَكَذَا وَأَومًا إِلَيْهِ الثَّانِيَة هَنَهُ رَسُولُ اللّهِ عَلَيْ فَأَوْمًا إِلَيْهِ الثَّانِيَة عَنْهُ رَسُولُ اللهِ عَلَيْ فَأَوْمًا إِلَيْهِ الثَّانِيَة وَأُومًا إِلَيْهِ الثَّانِيَة عَنْهُ رَسُولُ اللهِ عَلَيْ وَأَومًا إِلَيْهِ الثَّالِينَة عَنْهُ رَسُولُ اللهِ عَلَيْ وَالْمَا إِلَيْهِ الثَّالِينَة فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ عَلَيْ وَاللهِ عَلَيْ فَا عُومَ مَنْ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْهُ وَعَلَيْمَ وَعَلَيْمَ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْ وَعَلَيْمَ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْهِ وَعَالِمَ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْهِ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْهِ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْهِ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْهِ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْهِ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْ وَعَالِمَ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَيْهِ وَعَالِمَ اللهِ عَلَى وَعَالِمَ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَيْهُ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْهُ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْهِ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْهُ وَعَالِمَ اللهِ عَلَيْهُ وَالْمَا اللهِ عَلَيْهُ وَعَالِمُ اللهِ عَلَيْهِ وَعَالِمَ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَيْهُ وَعَالِمَ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهُ وَعَالِمُ اللهُ ال

انس برنائن کہتے ہیں ایک آ دی نے کھانا تیار کیا اور رسول اللہ مطفی آنے کے پاس آیا۔ آپ کو دعوت دی اور اس نے کہا: ''یا رسول اللہ! اس طرح' آپ کی طرف اپنے ہاتھ سے اشارہ کیا۔' انس برنائن کی کہتے ہیں: رسول اللہ مطفی آنے کی اس منائن کہتے ہیں: رسول اللہ مطفی آنے کی اس سے فرمایا: اس طرح (تو اس نے کہا نہیں تو آپ نے اس سے فرمایا: اس طرف اشارہ کیا اس نے کہا: نہیں' تو رسول اللہ مطفی آنے نے اس سے منہ پھیرلیا پھراس نے آپ کی طرف وہارہ اشارہ کیا اور رسول اللہ مطفی آنے نے اس کی طرف اشارہ کیا اور اس سے منہ پھیرلیا پھراس نے تیسری کی طرف اشارہ کیا اور اس سے منہ پھیرلیا پھر اس نے تیسری طرف اشارہ کیا اور اس سے منہ پھیرلیا پھر اس نے تیسری بار آپ کی طرف اشارہ کیا تو رسول اللہ مطفی آنے نے اس اور عائشہ وفائع اس کے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے فرمایا: 'یہ بھی' اس نے کہا: 'ہاں' پھر رسول اللہ مطفی آنے نے اس اور عائشہ وفائع اس کے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے اور عائشہ وفائع اس کے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے اور عائشہ وفائع اس کے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے اور عائشہ وفائع اس کے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے اور عائشہ وفائع اس کے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے اور عائشہ وفائع اس کے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے اور عائشہ وفائع اس کے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے اور عائشہ وفائع اس کے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے اور عائشہ وفائع اس کے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے اور عائشہ وفائع اس کے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے اس کے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے ساتھ گئے اور اس کے کھانے ساتھ گئے اور اس کے کھانے سے ساتھ گئے اور اس کے کھانے کے ساتھ کے اور اس کے کھانے کے ساتھ کی اور اس کے کھانے کے ساتھ کے اس کے کھانے کے ساتھ کے اور اس کے کھانے کے ساتھ کے اس کے کھانے کے ساتھ کے اور اس کے کھانے کے ساتھ کے اس کے کھانے کے ساتھ کے اس کے کھانے کے ساتھ کے اس کے کھانے کے ساتھ کی کھی کے کھی کے دور اس کے کھی کے اس کے کھی
2112 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِيْ وَائِلِ

كھايا۔

ابومسعود رفائن کہتے ہیں: ایک آ دی آیا جے ابوشعیب کہا جاتا تھا، اس کا ایک غلام قصاب تھا۔ اس نے کہا: میرے لیے کھانا تیار کرو، میں رسول الله طفیقی الله سمیت پانچ آ دمیوں کو بلاؤں گا۔ ابومسعود رفائن کہتے ہیں: اس نے رسول الله طفیقی آ سمیت پانچ آ دمیوں کو دعوت دی تو ان کے بیچھے ایک اور آ دی آ گیا۔ رسول الله طفیقی آ نے فرمایا:

د تم نے ہمیں پانچ آ دمیوں کو دعوت دی تھی اور یہ آ دمی میرے پیچھے آیا ہے، اگر چا ہوتو اسے اجازت دو، اگر چا ہوتو اسے اجازت دو، اگر چا ہوتو

عَنُ أَبِى مَسْعُودٍ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ أَبُو شُعَيْبٍ وَكَانَ لَهُ عُلامٌ لَحَّامٌ فَقَالَ اللهِ عَنْ لِي طَعَامًا أَدُعُو رَسُولَ اللهِ عَنْ اللهُ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهُ عَنْ اللهِ عَنْ اللهُ عَلَا اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ الله

[•] صحيح مسلم، كتاب الأطعمة، باب مايفعل الضيف اذا تبعة غير (5280) والنسائي، كتاب الطلاق، باب الطلاق باب الطلاق بالإشارة المفهومة (3436)

قَالَ فَأَذِنَ لَهُ. • تَوَ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْ عَلَيْهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهُ

ف**ے ائے:** (۱) بزرگان دین کی خصوصی دعوتوں کا اہتمام کرنا چاہیے۔ (۲) دعوت میں تکلف برتا چاسکتا ہے لیکن اس قدر کہ مشقت محسوس نہ ہو (۳) جس بندے کو دعوت نہ ہواہے ساتھ لے جانا مناسب

جاسما ہے ین اس مدر میں منطق سوں مہرور الک میں میں جودوت میں ہوائے منا تھے جانا سماسب نہیں، ہوسکتا ہے میز بان اجازت نہ دے اور غیر مدعوکو ذلت کا سامنا کرنا پڑے اور مہمان کو بھی اس سے خفت رہے ہیں۔

کاسامناکرناپڑے۔

[29].... بَابِ فِى فَضُلِ الشَّرِيدِ ثريركى فضيلت

2113 حَرِدَّتَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْدٍ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ أَبِى طُوَالَةً عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ

انس بنائفی کہتے ہیں کہ رسول اللہ طیکھی نے فرمایا: 'عاکشہ کی فضیلت تمام عورتوں پرایسے ہے جیسے ٹرید کو باقی کھانوں ... عَنُ أَنَّسِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَضُّلُ عَائِشَةَ عَلَى النِّسَاءِ كَفَضُلِ التَّرِيدِ عَلَى سَائِرِ الطَّعَامِ . ۞

فوائد: (۱) عائشہ والتھ اساری عورتوں کی سردار ہیں۔ حدیث بیں ہے کہ عورتوں بیں سے فقط میں سے فقط مریم بنت عمران ،آسیہ زوجہ فرعون ہی کامل عورتیں ہوئی ہیں۔ اس کے بعد مذکورہ حدیث والے الفاظ ہیں۔ (دیکھیے بخاری وسلم) (۲)'' ٹریڈ' اس سادہ دور کا انتہائی پرتکلف کھانا سمجھا جاتا تھا اور آج کے اس پرتیش دور میں بھی اس کی غذائیت وعمدگی کا انکار ناممکن ہے یہ کھانے میں لذیذ ہضم میں سہل ترین ہے۔

[30] بَابِ فِيمَنُ استَحَبَّ أَنْ يَنْهَسَ اللَّحْمَ وَلَا يَقُطَعَهُ

گوشت چھری کانٹے کی بجائے دانتوں سے کھانامستحب ہے

2114 حَدَّثَنَا عَلِيًّ بْنُ الْمَدِينِيِّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ.....

❶ متـفـق عليه: البخاري، كتاب البيوع، باب ماقيل في اللحام والجزار (2081) ومسلم، كتاب الأطعمة، باب مايفعل الضيف إذا تبعة (5277)

[♦] متفق عليه: البخارى، كتاب فضائل الصحابه، باب فضل عائشة رَثَاثِيمًا (3770) ومسلم، كتاب فضائل الصحابة، باب فضل عائشة رَثَاثِمًا (6249)

الله المعملة الماليمين العالم المعملة الماليمين العالم المعملة الماليمين العالم الماليمين المالي

عبدالكريم ابواميه كتب بين كه عبداللد من حارث بن نوفل في الكريم ابواميه كتب بين كه عبداللد من حارث بن نوفل في كها: مير و والد في عثان زائية كى خلافت مين ميرا نكاح كيا تو انهول في رسول الله طفياً في الله عن صفوان مين سي ايك جماعت (گروه) كو بلايا دان مين صفوان بين اميه تح وه بهت بوژه مع تقد انهول في كها رسول الله طفياً في أخرهايا: "كوشت دانتول سي كها كونكه اس طرح اس كي خواهش زياده هوتا طرح اس كي خواهش زياده هوتا هو اور مضم بهي زياده هوتا

حَدَّثَنَا عَبُدُ الْكَرِيمِ أَبُو أُمَيَّةَ قَالَ قَالَ عَبُدُ اللَّهِ بُنُ الْحَارِثِ بُنِ نَوُفَلٍ زَوَّ جَنِى عَبُدُ اللَّهِ بُنُ الْحَارِثِ بُنِ نَوُفَلٍ زَوَّ جَنِى أَبِى فِي فِي إِمَارَةٍ عُثُمَانَ فَدَعَا رَهُطًا مِنُ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ عَلَى فَكَانَ فِيمَنُ أَصْحَابٍ رَسُولِ اللَّهِ عَلَى فَكَانَ فِيمَنُ دَعَا صَفُوانُ بُنُ أُمَيَّةَ وَهُوَ شَيْحٌ كَبِيرٌ دَعَا صَفُوانُ بُنُ أُمَيَّةَ وَهُوَ شَيْحٌ كَبِيرٌ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَى قَالَ انْهَسُوا اللَّهِ عَلَى قَالَ انْهَسُوا اللَّهِ عَلَى قَالَ انْهَسُوا اللَّهُ عَلَى وَأُمْرَأً . •

فوائد : (۱) گوشت کونوج کرکھانامسنون وستحب ہاس سے جہاں کھانے کی لذت برحتی ہے وہیں ہضم میں بھی خوشگوار ہوتا ہے۔ (۲) ہاتھ یا چھری سے چھوٹی چھوٹی بھوٹی بوٹیاں بنا کرکھانے سے آوئی فہکورہ فوائد سے محروم رہتا ہے۔ (۳) فہکورہ حدیث اگر چیضعف بہرحال نوچ کرکھانے کی مسنونیت مرفوع حدیث سے ثابت ہے۔ ابن باجہ میں ہے "فر فیص والیہ الذراع و کانت تعجبہ ، فنہس منہا . " مین مین کے این بازوکا گوشت پکڑایا گیا جوکہ آپ کو پہندھاتو آپ مین کھیا۔

[31].... بَابِ فِي الْأَكُلِ مُتَّكِئًا تَكُدلًا كُركَهانا

2115 ـ أَخْبَرَنَا أَبُوْ نُعَيْم حَدَّنَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْأَقْمَرِ

فوائد: سلی لگا کر کھانے سے احتراز کرنا چاہے۔ ابن ماجہ میں حدیث ہے کہ آپ سے اَلَّا کے اَلَّا کہ میں حدیث ہے کہ آپ سے اَلَّا کہ معنوں کے بل بیٹ کر کھار ہے تھے۔ ایک اعرابی کے اعتراض پر آپ سے اَلَّا نے فرمایا ''اِن اللّٰه جعلنی عبداً کریما ولم یجعلنی جبّارًا عنیدًا' (کتاب الاطمعہ) اللّٰہ نے یقینا مجھے معزز بندہ بنایا ہے متکبر

¹ اسناده ضعیف: داری منفرد بیل-

 [◘] صحيح البخاري، كتاب الأطعمة، باب الأكل مثكمًا (5398) و ابوداؤد، كتاب الأطعمة، باب ماجاء في الأكل (متكمًا
 (3769)

كتاب الاطعمة

وسرکش نہیں بنایا۔لہذا ہرفعل حتی کہ کھانے میں بھی عاجزی کا اپنا نامستحب ہے۔

[32].... بَابِ فِي الْبَاكُورَةِ نئے کھل سےمتعلق

2116 - أَخْبَرَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ سُهَيْلِ عَنْ أَبِيْهِ

ابوہرریة و فالنفز سے روایت ہے کہ رسول الله طفی والے اللُّهِ عِلَىٰ إِذَا أَتِي بِالْبَاكُورَةِ بِأَوَّل ياس جب نيا كِمل لايا جاتا تو آيً فرمات: "ا الله! مارے مدینے مارے کیل مارے مداور مارے صاع میں برکت کے ساتھ برکت دے کھرسب سے چھوٹے لڑ کے وہ کھل کھلاتے تھے''

عَنُ أَبِيمُ هُـرَيُـرَةَ قَالَ كَيانَ رَسُولُ الشَّمَرَةِ قَسَالَ اللَّهُمَّ بَسَادِكُ لَسَافِي مَدِينَتِنَا وَفِي ثَمَرَتِنَا وَفِي مُدِّنَا وَفِي مُدِّنَا وَفِي صَاعِنَا بَرَكَةً مَعَ بَرَكَةِ ثُمَّ يُعُطِيُهِ أَصْغَرَ

مَنُ يَحُضُرُهُ مِنَ الُولُدَانِ . •

فوائد: (۱) باغ کا پېلاپل کس بزرگ کی خدمت میں پیش کرنا جا ہے (۲) بزرگ کوجا ہے کہ پیل چکھ کردعا کرے تا کہ اس کی دعا ان کے لیے باعث برکت ہو۔ (۳) بزرگول برلازم ہے کہ بچول سے مشفقانه سلوک کریں جبیبا کہ اسوہ رسول منظ میں ہے ثابت ہے ورنہ ان کی بدتمیزی ، بدلی ظی کے قصور وار ان ہے زیادہ بزرگ خود ہوں گے۔

[33].... بَابِ فِي إِكُرَام النَّحَادِم عِنْدَ الطَّعَام کھانے کے وقت خادم کی تو قیر کرنا

2117 حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا إِسْمَعِيْلُ بْنُ أَبِيْ خَالِدِ عَنْ أَبِيْهِ

اللَّهِ عِنْ إِذَا جَاءَ خَادِمُ أَحَدِكُمُ بِالطَّعَامِ فَلْيُجُلِسُهُ فَإِنَّ أَبْى فَلْيُنَاوِلُهُ . ٥

عَنْ أَسِى هُسرَيْسرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ ابو برريه وَلِي مَنْ أَسِي مِن رسول الله طَنْ اَيْد الله عَلَيْ ال جبتم میں ہے کس کا خادم کھانا لے کر آئے ، تو اسے ساتھ بٹھائے ، اگر وہ انکار کرے ، تو اسے کچھ کھانا دے

[◘] صحيح مسلم، كتاب الحج، باب فضل المدينه (3322) وابن ماجه، كتاب الأطعمة، باب اذا أتى بأول الثمرة (3329)

² صحيح البخاري، كتاب الأطعمة، باب الأكل مع الخادم (5460) والترمذي، كتاب الأطعمة، باب ماجاء في الأكل مع المملوك والعيال (1853)

العامة على العامة على العامة ا

2118 حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ قَالَ

سَمِعُتُ أَبَ اهُرَيُ وَ قَيُحَدِّثُ عَنِ الوهررة فِالنَّهُ بَيان كرتے بيں كه نبى طَنْفَقَامَ نے فرمايا:
النَّبِي عَنْ قَالَ إِذَا أَتَى أَحَدَكُمُ خَادِمُهُ ('جب تمهارا خادم كھانا لے كرآئة تو اے اپنے ساتھ بِطَعَامِهِ فَلْيُجُلِسُهُ مَعَهُ وَلَيْنَاوِلُهُ لُقُمَةً أَوْ بِهُا وَيا ايک دو لقے دے دو كونكه اس نے اس كى گرى اور لُقُهُ مَتَيْنِ أَوْ أَكُلَتَيْنِ فَإِنَّهُ وَلِى وَهُوال برداشت كيا ہے۔'' وَهُوال برداشت كيا ہے۔''

حَرَّهُ وَدُخَانَهُ. ٥

فوائد: خادموں کواپنے ساتھ کھلانا ان کی ضروریات کاخیال رکھنا ہے۔ یہ مالکوں کاحق ہے۔ اس طرح اہل صنعت حضرات کے لیے ضروری ہے کہ وہ اپنے مزدوروں کی خوثی کا سامان کرتے رہیں جو کہ ان کے وظیفے سے ہٹ کر ہو بلکہ غلاموں کے بارے میں آپ طفے آئی نے فرمایا کہ یہ تمہارے بھائی ہیں صرف اتنا فرق ہے کہ "جعل اللہ تحت ایدیکم" او کما قال آئییں اللہ نے تمہارا ماتحت کردیا۔ لہذا اپنے غلاموں ، خادموں کواچھا کھلانا پلانا اور پہنانا ہے مالک کی ذمہ داری ہے۔

[34] بَابِ فِي الْحَلُوَاءِ وَالْعَسَلِ مُعَالَى اورشهد كِمْ عَلَقَ

2119 حَدَّثَنَا فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ حَدَّثَنَا عَلِيٌّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ

عَنُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتُ كَانَ عائشه وَلَيْهَا بيان كرتى بين كه رسول الله عَنْهَ آلَا كومها لَل رَسُولُ اللَّهِ عِلَيْ يُحِبُّ الْحَلُواءَ اورشهد يندها-"

وَالْعَسَلَ . ٥

فوائد: (۱) "حلوًاء" ہمراد صرف سوجی کا ہی حلوہ نہیں جیسا کہ جاہلوں میں مشہور ہے بلکہ سیمی میٹھی اشیاء پر بولا جاتا ہے جا ہے وہ پھل ہی کیوں نہ ہول (۲) شہد سیانتہائی مفید چیز ہے اور کئی بیار یوں کے لیے تریاق کا کام کرتا ہے۔ اے خوراک کا حصہ بنانا بہترین صحت کا ضامن ہے۔

[•] صحیح: سابقه،ی کررے-

و متنفق عليه: البخاري، كتاب الأطعمة، باب الحلواء والعسل (5431) ومسلم، كتاب الطلاق، باب وحوب الكفارة على من حرم امرأته (3664)

84 كتاب الاطعمة ستنن الكايني [35].... بَابِ فِي الْأَكُلِ وَالشَّرُبِ عَلَى غَيْرٍ وُضُوءٍ بغير وضو کے کھانا بینا

2120 حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا شُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي الْحُوَيْرِثِ

ابن عماس بنافی ایان کرتے ہیں کہ نمی پیشیونی بہت الخلاء الْبُوازِ فَقُدِمَ إِلَيْهِ طَعَامٌ فَقِيلَ لَهُ أَلا سے نظے آپ کے سامنے کھانا پیش کیا گیا۔ کہا گیا: کیا آب وضونبیں کریں گے؟ آپ نے فرمایا: میں نماز بردھتا مول تو وضو كرتا مول؟ الومحمر كهته مين: "راوى سعيد بن

عَنِ ابُنِ عَبَّاسِ قَالَ خَوَجَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ تَوَضَّأُ قَالَ فَقَالَ أُصَلِّي فَأَتَوَضَّأُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد إِنَّمَا هُوَ سَعِيدُ بُنُ الْحُوَيُرِثِ . •

حویرث ہے ابوحوبرث نہیں ہے۔''

فواند: کھانے کے لیے وضو ضروری نہیں، وضوفقظ الیں حالت میں مستحب ہوتا ہے جب بندہ جنبی ہوجنبی کے لیے ہے کہ وہ عسل سے پہلے اگر کھانا کھانا یا دوسرے کام سرانجام دینا حیابتا ہے تو وضو کرے جبیا کہ اگل حدیث سے واضح ہے۔

2121 حَدَّنَنَا أَبُو نُعَيْمٍ عَنْ سُفْيَانَ بْنِ عُيَيْنَةً عَنْ عَمْرِو بْنِ دِيْنَارِ

ایک اور سند میں دیگر راوی ابن عباس طالنی سے روایت کرتے ہیں۔

عَنُ سَعِيدِ بُنِ الْحُوَيُسِرِثِ عَنِ ابُن عَبَّاس . 🍳

2122- قَـالَ وَسَمِعْتُ أَبَا عَاصِمٍ يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْحُوَيْرِ ثِا

مزیدایک سند میں راوی ابن عماس خانٹیؤ سے روایت کرتے

عَنِ ابُنِ عَبَّاسِ بِإِسْنَادِهِ . 5

[36].... بَابِ فِي الْجُنُبِ يَأْكُلُ جنابت کی حالت میں کھانا

2123 - حَدَّثَنَا سَهْلُ بْـنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ قَالَ سَمِعْتُ إِبْرَاهِيمَ يُحَدِّثُ عَنِ

[•] صحيح مسلم، كتاب الحيض، باب حواز أكل المحدث الطعام وأنه (825)

² صحيح: سابقه ي مكرر بـ

[🛭] صحیح: سابقہ دونوں حدیثوں کا تکرار ہے۔

والمرابعة المرابعة ال

الْأَسُوَ دِ.....

عائشہ زلائی بیان کرتی ہیں کہ رسول اللہ منظ میکن جب جنبی ہوتے اور کھانے یا سونے کا ارادہ کرتے تو وضو کر لیتے۔

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ ا

[37] بَابِ فِي إِكْفَارِ الْمَاءِ فِي الْقِدُرِ مِنْدِيا مِين (شوربِ كے لئے) يانی زيادہ ڈالنا

2124 أَخْبَرَنَا أَبُونُ عَيْمٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِيْ عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ عَنْ عَبْدِ اللّهِ بْنِ الصَّامِت

ابوذر والنيم كہتے ہيں مجھے ميرے فليل طفي مين نے وصيت كئ فرمايا: "جب شور با يكاؤ اس ميں پانی زيادہ ڈال لو پھر اپنے بروسيوں ميں سے كوئی (ضرورت مند) گھر والے ديكھوتو انہيں اس ميں سے دو-"

عَنُ أَبِيُ ذَرِّ قَالَ أَوْصَانِيُ خَلِيلِيُ ﷺ فَقَالَ إِذَا طَبَخُتَ مَرَقَةً فَأَكْثِرُ مَاثَهَا ثُمَّ انظُرُ أَهُلَ بَيُتٍ مِنُ جِيْرَانِكَ فَاغُرِفُ لَهُمُ مِنُهَا . ۞

فوائد: (۱) شارع نے چھوٹی ہے چھوٹی نیکی کاخیال رکھنے کی ترغیب دی ہے یہاں تک کہ کسی کو دینے کو چھنہیں تو کہا کہ کشادہ چہرے ہے ہی کسی کول لو یہی صدقہ ہوجائے گا۔ چنانچہ ہنڈیا میں شور ب کو بڑھا کر یہی کسی جو کے ہمسائے کودے دینا بظاہر یہ حقیر ومعمولی چیز ہے ۔لیکن اپنے اندر ممخواری وحمگساری کا ایک باب لیے ہوئے ہے (۲) ہمسائے کاخیال رکھنے کی اسلام میں انتہائی اہمیت ہے حتی کہ پڑوی کے ساتھ احسان کوایمان کی علامت قرار دیا گیا ہے ۔آپ مطافی آئے نے فرمایا: "من کان یؤ من بالله وبالیوم الآخر فلیحسن الی جارہ: (بخاری) جواللہ اور آخرت پرایمان رکھتا ہے وہ ہمسائے سے احسان کرے۔

[38].... بَابِ فِي خَلْعِ النِّعَالِ عِنْدَ الْأَكُلِ كَمَانِ كَي وَتَت جُوتِي اتارنا

2125 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ سَعِيْدٍ حَدَّنَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ عَنْ مُوسَى بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ

❶ صحيح مسلم، كتاب الحيض، باب حواز أكل الجنب واستحياب (698) ابوداؤد، كتاب الطهارة، باب من قال يتوضأ الجنب (224)

 [◘] صحيح مسلم، كتاب البروالصلة، باب الوصية بالجار والإحسان اليه (6631) والترمذي، كتاب الأطعمة، باب
 ماجاء في إكثار ماء المرقة (1833)

86 كتاب الاطعمة كا الكالكالكان الكالكان الكان الكالكان الكان
انس بن مالک رہائن کہتے ہیں کہ رسول الله طف اللہ ا فرمایا: '' جب کھانا رکھ دیا جائے تو اپنی جو تیاں اتار دو کیونکہ اس ہے تمہارے یاؤں کوراحت ہوگی۔''

عَنُ أَنَس بُن مَالِلْتِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا وُضِعَ الطَّعَامُ فَاخُلَعُوا نِعَالَكُمُ فَإِنَّهُ أَرُوَ حُرِلاً قُدَامِكُمُ . •

[39] بَابِ فِي إِطْعَامِ الطَّعَامِ

كهانا كهانا

2126 - أُخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ عَنْ أَبِيْهِ

عبدالله بن عمرو والنها كہتے ہيں كه رسول الله طفاقاتيا نے فرمایا: ''رحمٰن کی عبادت کرو ٔ سلام کو عام کرو ٔ اور کھانا کھلا وُ جنتوں میں داخل ہو جاؤ گے۔''

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عَمُرِو قَالَ قَالَ رَسُولُ اللُّهِ ﷺ اعْبُدُوا الرَّحُمْنَ وَأَفُشُوا السَّكَامَ وَأَطُعِمُوا الطَّعَامَ تَدُخُلُوا

الجنانَ . ٥

فوائد: (۱)" جنات" یہ جنہ کی جمع ہے جنت کلی طور برتوایک ہی ہے لیکن آدمی کو حاصل ہونے والی جنت میں چونکہ مختلف الاقسام باغات ہوں گے اس اعتبار سے اس پر جنات کا صیغہ بول دیا گیا (واللہ اعلم) (۲) عبادت وافشاء سلام کے بعد تیسر نے مبریر دخول جنت کے لیے کھانا کھلانے کاذکر کیا گیا ہے۔ جس سے اس کی اہمیت عیاں ہے جبکہ بہت سے لوگ کھانے کوہی ترجیح دیتے ہیں جو کہ آخرت کونظر انداز کرنے کے متراوف ہے(العیاذ ہاللہ)

ر40ر.... بَابِ فِي الدُّعُوَة دعوت قبول كرنا

2127 - أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنْ مُوسَى بْن عُقْبَةَ عَنْ

ابن عمر وفاقف كتب بين كه رسول الله طفي الله عن فرمايا " جب تنہیں کوئی دعوت دے تو اسے قبول کرو۔'' نافع کہتے بیں ۔' عبداللہ بن عمر رہائفہ شادی اورغیر شادی کی (عام) عَن ابُن عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِنْهُ قَالَ أَجِيبُوا الدَّاعِيَ إِذَا دُعِيتُمُ قَالَ وَكَانَ عَبُدُ اللَّهِ يَأْتِي الدَّعُوَةَ فِي الْعُرُسِ وَفِي

شعيف جدًا: أخرجه الطبراني في الاوسط (3226) والحاكم 119/4

² صحیح: اس کے شواہر بھی موجود ہیں۔

الأطعمة ١٥٥ كاب الاطعمة ١٥٥ كاب الاطعمة ١٥٥ كاب الاطعمة

دعوت میں جاتے تھے اور روزہ رکھا ہوتا تو پھر بھی جاتے

غَيْرِالْعُرُسِ وَيَأْتِيهَا وَهُوَ صَائِمٌ . •

تقص

فوائد: (۱) نہ کورہ حدیث سے واضح ہوا کہ دعوت کا قبول کرنا واجب ہے بلکہ اسے مسلمان کے دوسرے مسلمان پر چھ حقوق میں سے قرار دیا گیا ہے۔ حدیث میں ہے" حت السمسلم علی السمسلم سٹ ")" مسلمان کے مسلمان کے ذیعے چھ حق ہیں ،آگے بیان ہے (وا ذا دعاک فاجب) (مسلم) اور جب وہ تختے دعوت دی تو اسے قبول کرو (۲) ابن عمر والی اس شخوت ملتا ہے کھانا کھانے یا نہ کھانے کی رخصت ہے۔ جیسا کہ (2110) کے تحت بھی گزر چکا ہے۔

[41] بَاب فِي الْفَأْرَةِ تَقَعُ فِي السَّمُنِ فَمَاتَتُ چوہیا کے متعلق جوگھی میں گر کرمرجائے

2128 مَا خَبَرَنَا عَلِيٌّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الرُّهْرِيُّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ

ابْنِ عَبَّاسٍ

میمونہ وُلِیُّوہا کہتی ہیں کہ رسول اللہ ﷺ سے اس چوہیا کے متعلق بوچھا گیا جو گھی میں گر گئی ہو؟ آپ نے فرمایا: ''اسے اور آس پاس کے گھی کو (کھرچ) کر پھینک دو اور (ماتی) کھالو۔''

عَنُ مَيْهُ مُونَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ سُئِلَ عَنُ مَيْهُمُ اللَّهِ ﷺ سُئِلَ عَنُ فَقَالَ أَلْقُوهَا وَمُا حَوْلَهَا وَكُلُوا . ۞

فواند: (۱) چوہیاان پانچ فاسق جانوروں میں سے ہے جنہیں آپ مطبق اللہ نے قتل کا تھم دیا ہے (بخاری) (۲) چوہیا چونکہ خبیث جانور ہے اس لیے اگر میگی وغیرہ میں داخل ہوجائے تواسے پھینک دینا چاہیے البتہ اگر وہ جما ہوتو اس کے اردگر دکو نکال کر بقیہ تھی کو استعال کرنا درست ہے جبیہا کہ "ماحولھا" کالفظ اس کے جامہ ہونے کی طرف اشارہ کرتا ہے۔ امام ابن العربی بھی اسی کے قائل ہیں (تخفہ) البتہ خراب تھی کو کھانے کے علاوہ دیگر استعال کے بارے اختلاف ہے جبکہ رائج جواز ہی معلوم ہوتا ہے یہی قول ابوصیفہ رائے جواز ہی معلوم ہوتا ہے یہی قول ابوصیفہ رائے اور شافعی رائے ہیں اللہ ہے۔

 [♣] متفق عليه: البخارى، كتاب النكاح، باب اجابة الداعى في العرس وغيره (5179) ومسلم، كتاب النكاح باب الأمر
 باجابة الداعى إلى دعوة (3502)

عبد البخاري، كتاب الوضوء، باب مايقع من النجاسات في السمن والماء (235) وابوداؤد، كتاب الأطعمة، باب في الفارة تقع في السمن (3841)

كتاب الاطعمة كالك الكالتين

2129. أُخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ يُوسُفَ عَن

ابُن عُيَيْنَةَ بِإِسْنَادِهِ. •

كَانَ ذَائِبًا أُهَرِيقَ . 🏵

٣٠-

2130 - حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدِ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَن ابْن شِهَابِ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْن عَبْدِ اللهِ

ابن عباس والله كت بين كه نبي طشكر الله سے اس جو ميا كے عَنِ ابْنِ عَبَّاسِ قَالَ سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنُ متعلق یوچھا گیا جو گھی میں گر کر مرجائے؟ تو آپ نے فَأَرَـةٍ وَقَعَتُ فِي سَمُنِ فَمَاتَتُ فَقَالَ فرمایا: ''اے اور اردگر دیے تھی کو لے کر بھینک دو۔'' خُذُوْهَا وَمَا حَوْلَهَا فَاطُرَحُوهُ . ٥

2131 - رحَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ

عَن ابُن عَبَّاس عَنُ مَيْمُونَةَ عَن ابن عباس میموند سے اور وہ نبی طفیعیل سے اسی طرح بیان كرتى بين _ابوممر كهتي بين: "جب كھي بيھلا ہوا ہوتو سارا النَّبِيِّ عَلَيْ الْمُوهُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد إِذَا گراد ما جائے گا۔''

محمد بن توسف ابن عینہ سے اسی سند سے بان کرتے

[42].... بَابِ فِي التَّخُلِيل خلال كرنا

2132- أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَاصِمٍ حَدَّثَنَا ثَوْرُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ الْحِمْيَرِيُّ أَخْبَرَنِي أَبُوْ سَعْدِ

ابو ہرریة زائنیو میں که رسول الله الله الله علی نامایا: ' جو کھانا کھائے وہ خلال کرے۔ (اور جو چیز خلال سے نکلے) اسے پھینک دے اور جو زبان کے ساتھ نکلے ، اسے نگل

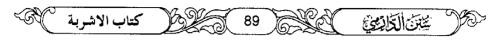
عَنُ أَبِي هُرَيُرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَنُ أَكُلَ فَلُيَتَخَلَّلُ فَمَا تَخَلَّلَ فَلُيَلُفِظُهُ وَمَا لَاكَ بلِسَانِهِ فَلْيَبُتَلِعُ . ٥

فوائد: کھانے کے بعدا گر کھانے کے کچھ ذرات زبان یادانتوں سے چٹ جا کیں توانہیں صاف کرنا لازم ہے۔ دانتوں میں تھنے رہ جانے والے ذرات بعد میں منہ کے نتفن اورجسمانی امراض کا باعث بنتے ہیں اس لیے انہیں بھینک دینے کا حکم دیا گیا ہے۔ (واللہ اعلم)

***** *** *****

[♦] متفق عليه: ويكفئ سابقه (765) 🛈 صحیح: سابقدی کررے۔

[🗗] حسن: (689) میں مطولاً گزر چکی ہے۔ **ہ** متفق علیہ: سابقہ بی مکرر ہے۔



..... ومن كتاب الاشربة پينے پلانے كابيان

[1].... بَابِ مَا جَاءَ فِي الْخَمُر شراب کی مذمت کے متعلق

2133- أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِع حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ

ابو ہررہ و فائف فرماتے ہیں کہ نبی کریم طفی آیا کے یاس معراج کی رات بیت المقدس میں دو پیالے شراب اور دودھ کے لائے گئے۔آپ نے انہیں دیکھا پھر دودھ لے لیا۔ جرائیل مَالیا نے کہا: "الله کا شکر ہے جس نے آپ كوفطرت كى رہنمائى كى اگر آب شراب ليتے تو آپ كى امت گمراه ہو جاتی ۔''

أنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيُرَةً يَقُولُ أَتِيَ النَّبِيُّ عَلَيْ لَيُلَةَ أُسُرِى بِهِ بِإِيلِيَاءَ بِهَ دَحَيُن مِنُ خَمُر وَلَبَن فَنَظَرَ إِلَيْهِمَا تُمَّ أَخَذَ اللَّبَنَ فَقَالَ جبريلُ الْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَاكَ لِلُفطُرَة لَوُ أَحَذُتَ الْخَمُرَ غَوَتُ أُمَّتُكَ. ٥

فوائد: (۱) "ايليا" بيت المقدس ك شبركانام ب(٢) فطرة سے مرادامام ابن حجر رايتيد ك تول کے مطابق دین حق پراستقامت ہے(الفتح) (۳) شراب نوشی غیرفطرتی عمل ہے اورانسان کی گمراہی کا سبب ہے۔اس سے آ دمی تمییز کرنے کی ساری صلاحتیں کھودیتا ہے اس لیے اس کوام الخبائث کہاجاتا ہے۔ (٣) دودھ بھوک ویباس سے کفایت کرنے والاعظیم عطیہ خدادندی ہے اوراس کا فطرت کے قریب ہونا اس کے اسلام سے گہرے تعلق کی غمازی کرتا ہے۔

[•] صحيح مسلم، كتاب الأشربة، باب جواز شرب اللبن (5208) والبخاري، كتاب الأشربة، باب قوله تعالىٰ (انما الخمر والميسر.....) (5576)

الكاليكي الكاليكي المسربة على المسربة المسربة على المس

[2] بَابِ فِي تَحُوِيمِ الْخَمُو كَيُفَ كَانَ شراب كى حرمت كيے ہوكى ؟

2134 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَان حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ حَدَّثَنَا ثَابِتُ

عَنُ أَنَسٍ قَالَ كُنتُ سَاقِى الْقَوْمِ فِى مَنُ زِلِ أَبِى طَلُحَة قَالَ فَنَزَلَ تَحُرِيمُ الْخَمُرِ قَالَ فَأَمْرَ مُنَادِيًا فَنَاذَى فَقَالَ الْخَمُرِ قَالَ فَأَمْرَ مُنَادِيًا فَنَاذَى فَقَالَ الْخَمُرَ خَنَ فَقُلُتُ هٰذَا مُنَادٍ يُنَادِى أَلا فَخَرَجُثُ فَقُلُتُ هٰذَا مُنَادٍ يُنَادِى أَلا فَخَرَجُثُ فَقُلْتُ هٰذَا مُنَادٍ يُنَادِى أَلا فَخَرَجُثُ فَقُلْتُ هٰذَا مُنَادٍ يُنَادِى أَلا فَخَرَجُثُ فَقَالَ لِى اذُهَبُ فَقُلْتُ هٰذَا مُنَادٍ يُنَادِى أَلا فَخَرَتُ فِى سِكَلْثِ فَأَهُرِ قُقِالَ لِى اذُهَبُ الْمَدِينَةِ قَالَ وَكَانتُ خَمُرُهُمُ يَوْمَنِذٍ الْمَدِينَةِ قَالَ وَكَانتُ خَمُرُهُمُ يَوْمَنِذٍ اللهَ عَرَّ وَجَلَّ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ اللهُ عَرَّ وَجَلَّ اللهُ عَلَى اللهُ عَرَّ وَجَلَّ اللهُ عَلَى اللهُ عَرَّ وَجَلَّ اللهُ عَرَّ وَجَلَّ اللهُ عَلَى الْمُعَمُوا إِذَا مَا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا التَّقُوا وَآمَنُوا الْآيَةِ . ٥

انس فالله کی جہتے ہیں: میں ابوطلحہ فالله کے مکان میں قوم کا ساتی تھا، جب شراب کی حرمت نازل ہوئی۔ آپ شی آیا ہے نے ایک منادی کو حکم دیا ، تو اس نے اعلان کر دیا ۔ ابوطلحہ نے کہا: جا کر دیکھویہ کیا ہے؟ میں نکلا ، پھر میں نے کہا: یہ ایک اعلان کر رہا ہے کہ شراب ایک اعلان کر رہا ہے کہ شراب حرام کر دی گئی ہے ۔ انہوں نے مجھے کہا: جاؤ اور اسے ہمادو، کہتے ہیں: مدینے کی گلیوں میں شراب بہنے گئی ۔ ان بہادو، کہتے ہیں: مدینے کی گلیوں میں شراب بہنے گئی ۔ ان وہ لوگ مجور کی شراب بناتے تھے۔ پچھ لوگوں نے کہا: اللہ نے بہا کہ ہو گئے جن کے بیٹوں میں شراب تھی ، تو وہ لوگ تو ہلاک ہو گئے جن کے بیٹوں میں شراب تھی ، تو اللہ نے اور اعلی صالحہ کیے ان پر پچھ گناہ نہیں ہے جو انہوں نے کھا لیا بشرطیکہ ایمان کے بعد پر ہیز گاری اختیار کریں ۔ " اعمال صالحہ کیے ان پر پچھ گناہ نہیں ہے جو انہوں نے کھا لیا بشرطیکہ ایمان کے بعد پر ہیز گاری اختیار کریں ۔ " (سورہ ما کہ ہو)

فوائد: (۱)" السفضيخ" ہے کی تھجور مراد ہے جیے ڈوکا کہاجاتا ہے (۲) خبر واحد حجت ہے اور عمل صحابہ زنگانیہ اس کا شاہد ہے۔ گربعض حدیث رشمن لوگوں نے خبر واحد کو جہال ظنی کہا وہاں عقائد میں بھی حجت شلیم نہ کیا ایبارویہ انکارِ حدیث کا چور دروازہ کھولنے کے مترادف ہے۔ (۳) صحابہ زنگانیہ کا طرزعمل یہ تھا کہ وہ قرآن وحدیث ہے دلیل واضح ہوتے ہی فوری عمل کرتے تھے (۴) شراب وغیرہ کوگلی میں بہایا جاسکتا ہے۔ (۵) مسئلہ واضح نہ ہونے پراگر کوئی شخص سنت ہے ہٹ کر بھی عمل کرتا ہوا فوت ہوجائے تواس کے ہے۔ (۵) مسئلہ واضح نہ ہوں گے اور فہ کورہ فعل بھی اس کی شقاوت کا باعث نہیں ہے گا۔

❶ متفق عليه: البخاري، كتاب البيوع، باب ماقيل في الصواغ (2089) ومسلم، كتاب الأشربة، باب تحريم الخمر وبيان أنها تكوك(5103)

حكل سَيْنَ الْكَالِيمِينَ ﴾ في الله المناسبة على المناسبة على المناسبة على المناسبة
[3] بَابِ فِي التَّشُدِيدِ عَلَى شَادِبِ الْحَمُوِ شراب پينے پریخق کرنا

2135 ـ أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِع

عَنِ ابُنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَنُ شَرِبَ الُحَمُرَ فِى الدُّنِيَا ثُمَّ لَمُ يَتُبُ مِنْهَا حُرِمَهَا فِى الْآخِرَةِ فَلَمُ يُسُقَهَا . •

فوائسد: (۱) کبیره گناه کامرتکب اگراس پرمصر بهوتو بیاس کی شرمندگی کاباعث ہوگا۔ خصوصاً شرابی بخشش کے باوجود جنتی شراب کی دستیابی سے محروم ہوگا۔ (۲) کبیره گناه بھی معافی سے معاف ہوجاتے ہیں۔ معتزلہ کبیرہ کے مرتکب کومخلد فی النار کہتے ہیں ان کابیہ موقف صریح قرآنی آیات اور سیح احادیث مبارکہ کے خلاف ہے۔

2136 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنِ الْأُوْزَاعِيِّ قَالَ حَدَّثَنِيْ رَبِيْعَةُ بْنُ يَزِيدَ

عبدالله بن دیلی کہتے کہ میں عبدالله بن عمرو بن عاص کے پاس ان کے ایک باغ میں گیا، جو طائف میں تھا، جسے وصط کہا جاتا تھا۔ تو وہ قریش کے ایک جوان کا ہاتھ کمر کے پاس سے پکڑے ہوئے تھے، جس پرشراب پینے کی تہمت لگائی گئی تھی ۔ میں نے کہا: جھے بیہ بات پیچی ہے کہ آپ رسول الله مین کہا: جھے بیہ بات پیچی ہے کہ آپ رسول الله مین کو ایک حدیث بیان کرتے ہیں کہ آپ نے فرمایا: ''جو تحص ایک حدیث بیان کرتے ہیں کہ روز تک اس کی نماز قبول نہیں ہوگی۔''جب اس نوجوان نے شراب کا ذکر سنا، تو عبداللہ کے ہاتھ سے اپنا ہاتھ چھڑا کے شراب کا ذکر سنا، تو عبداللہ کے ہاتھ سے اپنا ہاتھ چھڑا کہ چو بار کیا گیا ۔ عبداللہ نے کہا! اے اللہ میں اس چیز کو جائز نہیں کرتا کہ وہ میرے ذمہ وہ بات لگائے، جو میں نے نہیں کرتا کہ وہ میرے ذمہ وہ بات لگائے، جو میں نے

عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ الدَّيُلَمِيّ قَالَ دَحَلُتُ عَلَى عَبُدِ اللّهِ بُنِ عَمُرِو بُنِ الْعَاصِ فِى عَلَى عَبُدِ اللّهِ بُنِ عَمُرِو بُنِ الْعَاصِ فِى حَائِطٍ لَهُ بِالطَّائِفِ يُقَالُ لَهُ الْوَهُطُ فَإِذَا هُوَ مُخَاصِرٌ فَتَى مِنْ قُرَيُسْ يُزَنُ هُو مُخَاصِرٌ فَتَى مِنْ قُريُسْ يُزَنُ هُو مُخَاصِرٌ فَقُلُتُ الْمُحَمُرِ فَقُلُتُ الْمُحَمُرِ فَقُلُتُ الْمَحَمُرِ فَقُلُتُ الْمُحَمُرِ فَقُلُتُ اللّهِ عَنْ اللّهِ عُنْ اللّهِ عُنْ اللّهِ ثُمَّ اللّهُ اللّهُ عَنْ اللّهِ اللّهِ عُنْ اللّهِ عُنْ اللّهِ عُنْ اللّهِ عُنْ اللّهِ عُنْ اللّهُ عَنْ اللّهِ عُنْ اللّهِ عُنْ اللّهُ عَنْ اللّهِ عُنْ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ال

[♠] متفق عليه: البخاري، كتاب الأشربة، باب قول الله تعالى (إنما الحمر والميسر.....) (5575) ومسلم، كتاب الاشربة باب عقوبة من شرب الخمر إذا (5191)

92 كتاب الاشربة ك

کہی: اور میں نے رسول اللہ طفیقیلی سے سنا آپ فرماتے تھے:'' جو شخص ایک دفعہ شراب یئے گا اس کی جالیس روز تک نماز قبول نہیں ہوگی ۔ پھراگر وہ تو یہ کرے ، تو اللہ اس کی توبہ قبول کر لے گا۔ پھر میں نہیں جانتا تیسری یا چوشی مرتبہ ینے سے ہی۔اللہ کے ذمہ حق ہوگا، کہ قیامت کے دن اس کوجہنمیوں کا نجوڑ ملائے۔

لَا أُحِلُّ لِأَحَدِ أَنْ يَقُولَ عَلَيَّ مَا لَمُ أَقُلُ وَإِنِّي سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ مَنُ شَرِبَ الْنَحْمُرَ شَرْبَةً لَمُ تُقُبَلُ لَهُ صَلاةٌ أَرْبَعِينَ صَبَاحًا فَإِنُ تَابَ تَابَ اللُّهُ عَلَيْهِ فَلا أَدُرى فِي الثَّالِثَةِ أَمْ فِي الرَّابِعَةِ كَانَ حَقًّا عَلَى اللَّهِ أَنُ يَسُقِيَهُ مِنُ رَدُغَةِ النَّحَبَالِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. ٥

فوائد: (۱)"الـوهط" بموارجگه كوكت بين اور" مخاصرة" به چلتے موئے دوآ دميول كاليك دوسرے کے ہاتھ تھامنا اس طرح کہ ہرایک کا ہاتھ دوسرے کے پہلویر ہواور'' زدغة الخبال' سے مراد جہنیوں کی پیپ ہے۔واللہ اعلم (۲) شرانی کی جالیس دن کی نماز قبول نہیں ہوتی ۔اس کا پیہ مطلب ہر گزنہیں کہ وہ نماز جھوڑ دے بلکہ اسے جاہیے کہ شراب نوشی سے توبہ کرے اور نماز کی ادائیگی کرے۔ امام نووی رایٹید فرماتے ہیں کہ عبادت کے دواعتبار ہوتے ہیں (۱) ادائیگی کرنے والے سے قضا۔ (۳) تیسری یا چوتھی دفعہ شراب پینے ے اللہ پرلازم ہوجاتا ہے کہاہے جہنمی عذاب چکھا کیں جو کہ پیپ یینے کی صورت میں ہوگا (العیافہ باللہ)

> [4] بَابِ فِي النَّهُي عَنِ الْقُعُودِ عَلَى مَائِدَةٍ يُدَارُ عَلَيْهَا الْخَمْرُ شراب والے دسترخوان پر بیٹھنے کی ممانعت

2137 ـ أَخْبَرَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ أَبِيْ جَعْفَرِ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ

عَنُ جَابِرِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِنْ مَنُ جَابِرُ كَهَ بِينَ كَدَرُولَ اللَّهُ عَنْ عَنْ مَايا: ''جس كا الله كَانَ يُؤُمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِو فَلا يَقُعُدُ اور يوم آخرت يرايمان ہے اس وسر خوان برمت بيتے جس پرشراب ہو۔''

عَلَى مَائِدَةِ يُشُوبُ عَلَيْهَا النَّحُمُرُ. ٥

فوائد: ایمان کا تقاضا ہے کہ آ دی شراب کی محافل ودسترخوان سے بر ہیز کرے کیونکہ جتنا بھی

[◘] صحيح: النسائي، كذب الأشربة، باب ذكر الرواية المبينة عن (5680) وابن ماجه، كتاب الأشربة، باب من شرب الخمر لم تقبل له صلاة (3377)

عصحيح: الترمذي، كتاب الأدب، باب ماجاء في دخول الحمام (2810)

حَكُلْ لِيَّنِينَ لِكَالِيْكِينَ كَالِ الأَسْرِبَة عَلَى الْكُلِينِينَ لِكَالِ الأَسْرِبَة عَلَى الْكُ

یر ہیز گار ہو بری محفل سے متاثر ہونے بغیر نہیں رہ سکتا۔ جیسا کہ آپ سے مین اُنے بری صحبت کو (نافح الکیر) بھٹی بھڑ کانے کے پاس بیٹھنے سے تشبیہ دی ادھر سے آ دمی اگر چہ بچھ حاصل نہ بھی کرے بہر حال اس کی چنگاریوں ، او سے بچنا ناممکن ہوتا ہے۔ للبذاصحبت بدضرور متاثر کر کے رہتی ہے چنانجداس سے بچنا ہی عقلمندی ہے۔

[5] بَابِ فِي مُدُمِنِ الْخَمُرِ ہمیشہ شراب پینے والے کے متعلق

2138- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيْرِ الْبَصْرِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورِ عَنْ سَالِم بْنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ جَانَانَ

عبدالله بن عمرو کہتے ہیں کہ نبی طلط میں نے فرمایا: ''جنت میں ولدالزنا اور احسان جتانے والا۔والدین کا نافر مان اور بميشه شراب يينے والا داخل نہيں ہوگا۔''

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُن عَمُرو عَنِ النَّبِيِّ عَلَيْكُ قَالَ لَا يَدُخُلُ الْجَنَّةَ وَلَدُ زِنْيَةٍ وَلَا مَنَّانٌ وَلَا عَاقٌ وَلَا مُدُمِنُ خَمُرٍ . •

فواند: (۱) ندکورہ بالا اشخاص جنت میں نہیں جا کیں گے۔ بیر بہت سخت وعید ہے البتہ اس کا بیر مطلب نہیں کہ بدابدی جہنمی ہیں ۔جیسا کہ خوارج کاعقیدہ تھا کہ مرتکب کبیرہ ابدی جہنمی ہوتا ہے بلکہ اس سے مراد وہ اول دفعہ میں ہی جنت میں نہیں جا کمیں گئے بلکہ اپنی سزا بھگت کر جنت میں جاسکیں گے (۲) پینجمی کمبیر ہ گناہ ہیں (۳) ولدزنا کاجہنمی ہونا اس کے حرام کے نطفے ہونے کی وجہ سے نہیں بلکہ بیقصور تو اس کے والدین كاتفا اورقرآن ميں ہے ﴿ لَا تَوْرُ وَانِدَةٌ وَذُرَّ أُخُرى ﴾ (اسراء:15) كوئى (جان)كى دوسرے كابو جونييں اٹھائے گی ۔للبذاولدزنا سے مراد ایبالڑ کا ہے جو کہ بڑا ہو کراینے باپ کے نقش قدم پر چل پڑا ہو (واللہ اعلم) 2139 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْحَجَّاجِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُورِ عَنْ سَالِم بْنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ نُبَيْطِ بْنِ شَرِيْطٍ عَنْ جَابَانَ

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بَن عَمُرو عَن النَّبِي ﷺ عبداللهُ بن عمره بيان كرتے بيں كه نبي النَّهُ إِنْ خَ فرمايا: ''والدين كا نا فرمان' احبان جمّانے والا۔اور ہمیشہ شراب يينے والا جنت ميں داخل نہيں ہوگا۔"

قَالَ لَا يَدُخُلُ الْجَنَّةَ عَاقٌّ وَلَا مَنَّانٌ وَلَا مُدُمِنُ خَمْرٍ. ٥

[◘] صحيح: النسائي، كتاب الأشربة، باب الرواية في المدمنين في الخمر (5688)

[🕰] اسنادہ جنّد

عَنْ الْكَالِيمَةِ عَلَى الْمُولِدِ عَنْ الْكَالِمِينَ عَلَى الْمُولِدِ عَنْ الْكَالِمِينَ عَلَى الْمُولِدِ ال

[6] بَابِ لَيْسَ فِي الْخَمُوِ شِفَاءً شرابِ مِيل شفانهيں ہے

2140 ـ أَخْبَرَنَا سُهَيْلُ بْنُ حَـمَّادٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا سِمَاكُ قَالَ سَمِعْتُ عَلْقَمَةَ بْنَ وَائِلٍ نُحَدِّتُ........

عَنُ أَبِيهِ وَائِلٍ أَنَّ سُويُدَ بُنَ طَارِقٍ سَأَلَ واكل ہے منقول ہے کہ سوید بن طارق نے رسول رَسُولَ اللهِ عَنَى اللهِ عَنَى اللهِ عَنَهَا فَقَالَ إِنَّهَا دَوَاءٌ فَقَالَ اللهِ عَنَهَا اللهِ عَنَهُ اللهِ عَنَهُ اللهِ عَنَهُ اللهِ عَنَهُ اللهِ عَنْهُ اللهِ عَنْهُ اللهِ عَنْهُ اللهِ عَنْهُ اللهُ اللهِ عَنْهُ اللهُ اللهِ عَنْهُ اللهُ ال

فوائد: شراب یا کسی بھی نظی چیز کوبطور دوااستعال کرناممنوع ہے۔شراب اگر چہ فوائد بھی ہیں بہر حال اس کے مفاسد فوائد سے بڑھ کر ہیں۔ جیسا کہ قرآن میں ﴿ إِنْ مُهُمّ اَ أَكْبَرُ مِنْ تَفْعِيمَا ﴾ ان كا گناه نفع سے زیادہ ہے۔ ان کو گناه قرار دینا ان كے حرام ہونے كی دلیل ہے اور ظاہرى بات ہے شریعت میں حرام کردہ چیزیں ان كے مفاسد كے باعث ہی ہیں۔ لہذا سامنے نظر آتے فائدے كی بجائے خفیہ نقصانات کوپیش نظر رکھتے ہوئے ان سے استفادہ حرام ہے۔

[7] بَابِ مِمَّا يَكُونُ الُخَمُرُ شرابِ كَمُرْجَ كابيان

2141 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو الْمُغِيرَةِ عَنِ الْأَوْزَاعِيّ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا كَثِيْرٍ

يَقُولُ سَمِعُتُ أَبَا هُرَيُرَةَ يَقُولُ سَمِعُتُ ابو جرية وَاللَّهُ كَتِ بِن كه مِن نَ رسول الله طَيْخَ اللَّهُ عَاوه رَسُولَ الله طَيْخَ الله عَلَيْ كَتَ بِن كه مِن نَ مِن الله طَيْخَ الله عَلَيْ عَلَيْ الله عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله عَلِي الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله عَلَيْ ا

فوائد: ندکوره حدیث میں ان دودرختوں کا ذکر بطور حصر ذکرنہیں ہوا کہ فقط انہی کی شراب بنتی

❶ صحيح مسلم، كتاب الأشربة، باب تحريم، التداول بالخمر (5112) الترمذي، كتاب الطب، باب ماجاء في كراهية التداوي بالمسكر (2046)

[•] صحيح مسلم، كتاب الأشربة، باب بيان أن جميع ماينبذ مما يتحذ (5114) وابو داؤد، كتاب الأشربة، باب الخمر مماهي (3678)

عدا العلم المسربة الم

الہذا ندکورہ دلائل کی بناپر یہی بات رائح معلوم ہوتی ہے جسے امام راغب نے مفردات القرآن میں ذکرکیا ہے کہتے ہیں'' شراب کوخمراس لیے کہتے ہیں کیونکہ یہ عقل کوڈھانپ لیتی ہے۔ بعض لوگوں کے نزدیک یہ برنشہ آور چیز پر بولی جاتی ہے۔ اور بعض کے نزویک فقط انگور سے بنی اور بعض کے نزویک محجور وانگور دونوں سے بنی پر اور بعض کے نزدیک جو پکائی نہ گئی ہواس پرخمر کالفظ بولا جاتا ہے۔ جبکدرانح یہی ہے۔ ہر چیز جوعقل کوڈھانپ لے وہ حقیقی طور پر''خمز'' شراب ہے۔ تفصیل کے لیے دیکھیے (تحفۃ الاحوذی)

[8] بَابِ مَا قِيلَ فِي الْمُسْكِرِ

نشهآ ورچیزوں کا بیان

فوائد: (۱) "البتع" يشهد سے بن شراب پر بولا جاتا ہے۔ امام بخاری الشيد باب باندھتے ہيں (السخہ من العسل و هو البتع) شهد سے تيار کرده شراب اور ده تی ہے۔ (۲) برنشه آور چيز مشروب حرام ہے چاہے يد فيكے سے بوکسی فتم كے سلوش كے سوتكھنے سے بوغرض كوئى صورت ہو۔ 2143 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِيْ إِسْحَقَ عَنْ أَبِيْ بُرْدَةَ بْنِ

 [♣] متفق عليه: البخارى، كتاب الوضوء، باب لايجوز الوضوء بالنبيذ ولا المسكر (242) ومسلم، كتاب الأشربة، باب
بيان أن كل مسكر خمر وأن كل خمر حرام (5180)

و الشربة عنى الداريخ المارية عنى المارية عنى المارية عنى المارية عنى المارية عنى المارية المار

ابوموی کہتے ہیں کہرسول الله طفی آیا نے مجھے اور معاذین جبل کو یمن بھیجا تو فرمایا: ''(ہر چیز) پیو، مگر نشه آور چیز نه پیو-کیونکه ہرنشه آور چیز حرام ہے۔''

أَبِى مُوسَى عَنُ أَبِيهِ قَالَ بَعَثَنِى رَسُولُ اللهِ عَنَى رَسُولُ اللهِ عَنَى أَنَا وَمُعَاذَ بُنَ جَبَلٍ إِلَى الْيَمَنِ فَقَالَ اشْرَبُوا وَلَا تَشُرَبُوا مُسْكِرًا فَإِنَّ

كُلَّ مُسْكِرِ حَرَامٌ . •

2144 حَدَّثَ نَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ أَخْبَرَنَا أَبُوْ أُسَامَةَ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ كَثِيْرِ بْنِ سِنَانِ حَدَّثَنِى الضَّحَّاكُ بْنُ عُثْمَانَ عَنْ بُكَيْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْأَشَجَ عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ

عَنُ سَعُدٍ عَنُ رَسُولِ اللّهِ ﷺ قَالَ أَنْهَاكُمْ عَنُ قَلِيلِ مَا أَسُكَرَ كَثِيرُهُ. ٥

سعد کہتے ہیں رسول الله طفی آیا نے فرمایا: ''میں تہمیں اس چیز کی تھوڑی مقدار سے بھی روکتا ہوں جس کی زیادہ مقدار نشہ لاتی ہے۔''

فواند: كوئى هخص نشے يا شراب جيسى كسى چيز كا عادى ہوجائے تولاز ماتھوڑى بہت مقدار سے وہ نشے بيں نہيں آئے گا لہذا وہ بير نہ سمجھے سابقہ حدیث کے مطابق كہ مجھ پر شراب وغيرہ حرام نہيں بيرسراسر غلط ہے۔جيسا كہ ندكورہ حديث سے واضح ہے لہذا جس چيز كى كثرت نشہ آور ہوقليل مقدار بيں استعال كرنا بھى حرام ہے۔فقد خفى بيں شراب نوشى كے كئى حيلے بہانے تراشے گئے جيں۔ بلكہ بنيادى شرى اصطلاحات كوتبديل كرے جديد نام متعارف كردائے گئے يہيں وہ سب كے سب باطل ہيں۔

عَنُ عَـائِشَةَ قَـالَتُ سَـمِعُتُ رَسُولَ اللهِ عَنَّ عَائِشَةَ قَـالَتُ سَـمِعُتُ رَسُولَ اللهِ عَنَّ يَقُولُ إِنَّ أُوَّلَ مَا يُكُفَأُ قَالَ زَيْدُ يَعُنِى الْإِسُلامَ كَـمَا يُكُفَأُ الْإِنَاءُ كَفَى الْخَمُرِ فَقِيلَ فَكَيُفَ يَا رَسُولَ اللهِ وَقَدُ النَّهِ وَقَدُ اللهِ وَقَدُ اللهُ وَقَدُ اللهِ وَقَدُ اللهُ وَقَدُ اللهِ وَقَدُ اللهِ وَقَدُ اللهُ وَقَدُ اللهُ وَقَدُ اللهُ وَقَدُ اللهُ وَقَدُ اللهُ وَقَدُ اللهِ وَقَدُ اللهُ وَقَدُ اللهِ وَقَدْ اللهُ اللهُ وَقَدْ اللهُ اللهُ وَقَدْ اللهُ اللهِ وَقَدْ اللهُ اللهِ وَقَدْ اللهِ وَقَدْ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ وَقَدْ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ الله

عائشہ کہتی ہیں کہ میں نے رسول اللہ مطابقین سے سنا وہ فرماتے تھے: اسلام میں شراب وہ پہلی چیز ہوگی جس کواس طرح الث دیا جائے گا جس طرح برتن اوندھا کردیا جاتا ہے کہا گیا! یارسول اللہ مطابقین ہے تو رسول اللہ مطابقین ہے۔

 [♣] متفق عليه: البخاري، كتاب المغازى، باب بعث ابى موسى ومعاذ الى اليمن قبل حجة الوداع_ (4343)
 ♦ ومسلم، كتاب الأشربة، باب بيان أن كل مسكر خمر وأن كل خمر حرام (5182)

حسن: أحرجه النسائي، كتاب الأشرية، باب تحريم كل شراب أسكر كثيره (5624)

97 كتاب الاشربة نتين الكايني

نے فرمایا لوگ اس کا اور نام رکھ لیس گے اور اسے حلال سمجھ لیں گے''

اللَّهِ عَلَيْ يُسْمُّونَهَا بِغَيْرِ اسْمِهَا فَيَسْتَحِلُّه نَهَا . ٥

ف وائد: اخیرز مانے میں مسلمانوں میں ارتکاب کبائر کاعام رواج ہوگا وہ بجائے خفت محسوں كرنے كے وہ ان معاصى كانام بدل كردوسرے ناموں سے أبيس حرام كردہ اشياء كوفروغ ديں گے۔آج مغرب اس محاذ کوبھی گرم کیے ہوئے ہے کہ وہ گندے ، نا پاک ونا جائز افعال کواہل اسلام میں رواج دینے کے لیے ان کے اصل نام کی بجائے ووسری اصطلاحیں متعارف کروا دیتے ہیں اورسادہ لوح مسلمان وہنی مرعوبیت کی بناء بلاسو ہے سمجھے ان کے پیچھے چل پڑتے ہیں۔جیسے ذمّیوں کے لیے اقلیت کالفظ اور کافر کی بجائے غیر مسلم جیسے الفاظ اگر چہ معنی کے اعتبار سے یہ وہی مراد ہوتے ہیں۔ بہرحال لفظ کی تبدیلی سے ذہن میں موجود شناءت دور ہوجاتی ہے۔

2146 ـ أَخْبَرَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ حَدَّثِنِي أَبُوْ وَهْبٍ عَنْ مَكْحُولٍ عَنْ

أَبِي ثَعْلَبَةَ الْخُشَنِيِّ

ابوعبيده بن جراح والله كمت بين كهرسول الله السي آيا في فرمایا: ' متمهارے دین کا پہلا حصہ نبوت اور رحمت ہے بھر بادشاہت اور رحمت ہے۔اور پھر خاک آلود بادشاہت ہے۔ پھر بادشاہت اور ظلم ہے۔جس میں شراب اور رہیم حلال كيا جائے گا۔''ابومحد كہتے ہيں''عفر كےمتعلق سوال کیا گیا۔تو انہوں نے کہا وہ بادشاہت مٹی کی طرح ہو گى _اوراس مىں بھلائى نېيىں ہوگى _''

عَنُ أَبِي عُبَيُلَهَ بُنِ الْجَرَّاحِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَوَّلُ دِينِكُمُ نُبُوَّةٌ وَرَحُمَةٌ ثُمَّ مُلُكٌ وَرَحُمَةٌ ثُمَّ مُلُكٌ أَعُفَرُ ثُمَّ مُلُكٌ وَجَبَرُونٌ يُسْتَحَلُّ فِيهَا البُّخَمُو وَالْحَرِيْرُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد سُئِلَ عَنِ الْأَعُفَرُ فَقَالَ يُشَبِّهِهُ بِالتُّرَابِ وَلَيْسَ فِيهِ خَيْرٌ طَمَعٌ . ٥

[9].... بَابِ النَّهُي عَنُ بَيْعِ الْخَمُرِ وَشِرَائِهَا شراب کی خرید وفروخت کی ممانعت

2147- أَخْبَرَنَمَا سَهْ لُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا طُعْمَةُ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ بَيَانِ التَّغْلِبِيُّ عَنْ عُرْوَةَ

صدن: الحاكم، 147/4، وسنن البيهقي، كتاب الشراب، باب الدليل على أن الطبخ لا يحرج 194/8

ایونعلبہ کوئیں یایا۔

مغیرہ بن شعبہ اپنے والد سے روایت کرتے ہیں کہ رسول الله ﷺ نے فرمایا: ''جوشراب بیچ اسے چاہئے کہ خزیر کا گوشت بیچ۔''ابومحمد کہتے ہیں وہ عمرو بن بیان ہیں۔ الُـمُ فِيرَةِ بُنِ شُعْبَةَ عَنُ أَبِيهِ عَنُ رَسُولِ اللّٰهِ ﷺ أَنَّـهُ قَـالَ مَنُ بَـاعَ الْخَمْرَ فَلْيُشَقِّصِ الْخَنَاذِيرَ قَالَ أَبُو مُحَمَّد إِنَّمَا هُوَ عُمَرُ بُنُ بَيَانِ . •

فوائد: (۱) "شقص" کامعنی قطع کرنا ،کا ثنا ہے لہذا قصاب کو مشقص کہاجا تا ہے۔ (۲) اس کا مطلب ہے کہ جو شخص شراب بیچے وہ خنازیر کا قصائی بن جائے یعنی جوشراب کی خرید وفروخت حلال سمجھتا ہے وہ خنزیر کی خرید وفروخت کو حلال سمجھے کیونکہ دونوں تحریم میں ہم شل ہیں۔

2148 - حَدَّثَنَا يَعْلَى عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَقَ عَنِ الْقَعْقَاعِ بْنِ حَكِيمِ

النه عبدالرحمان بن وعله کہتے ہیں میں ابن عباس واللہ اسکانہ کا فیلے اللہ فیل

عَنُ عَبُدِ الرَّحُمَنِ بُنِ وَعُلَةً قَالَ سَأَلُتُ ابُنَ عَبَّاسٍ عَنُ بَيْعِ الْخَمْرِ فَقَالَ كَانَ لِرَسُولِ اللَّهِ عَنَّ صَدِيقٌ مِنُ ثَقِيفٍ أَوُ لِرَسُولِ اللَّهِ عَنَّ صَدِيقٌ مِنُ ثَقِيفٍ أَوُ مِنْ دَوْسٍ فَلَقِيَة بِمَكَّة عَامَ الْفَتْحِ بِرَاوِيَةٍ مِنْ خَمُسٍ يُهُدِيُهَا لَهُ فَقَالَ رَسُولُ مِنْ خَمُسٍ يُهُدِيُهَا لَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ يَا فَلانُ أَمَا عَلِمُتَ أَنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَدْ حَرَّمَهَا قَالَ فَأَقْبَلَ الرَّجُلُ اللَّهِ عَلَى عُلَامِهِ فَقَالَ اذْهَبُ فَيعُهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَى عُلَامُ اللَّهِ عَلَى عُلَامِهِ فَقَالَ اذْهَبُ فَيعُهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْمَعْمَا عَلَى اللَّهُ عَلَى الْمَاكِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْمَعْلَى اللَّهُ عَلَى الْمَعْلَى اللَّهُ عَلَى الْمَاكِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْمَعْمَا عَلَى الْمَعْلَى الْمَاكِ اللَّهُ عَلَى الْمُعْمَى الْمُعْلَى الْمَعْلَى اللَّهُ عَلَى الْمُعْلَى ا

2150 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَحْمَدَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍ و يَعْنِي ابْنَ دِينَارٍ عَنْ طَاوْسِ

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ بَلَغَ عُمَرَ أَنَّ سَمُرَةً

ابن عباس وللفها كہتے ہیں كه عمر والفوا كو بيد خبر كينجى كه سمره

[🛈] صحيح: ابوداود، كتاب الإجارة، باب في نُمن الخمر والميتة (3489)

[🗗] صحيح مسلم، كتاب المساة، باب تحريم بيع الخمر (4020) والنسائي، كتاب البيوع، باب بيع الخمر (4678)

بَاعَ خَمْرًا فَقَالَ قَاتَلَ اللَّهُ سَمُوةَ أَمَا فَ شَراب بَيْلَ عَدِرت عمر فِالنَّمَةُ فَ كَهَا اللَّه سمو ك

فَبَاعُوٰهَا قَالَ سُفْيَانُ جَمَلُوْهَا أَذَابُوُهَا . •

عَلِمَ أَنَّ النَّبِيِّ عِلَيَّ قَالَ لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ

حُرِّمَتُ عَلَيْهِمُ الشُّحُومُ فَجَمَلُوُهَا

جگه "اذا بوها"كالفظ استعال كيا --

فوائد: (۱) حرام چیز کی خرید و فروخت بھی حرام ہے (۲) حلال کوحرام یاحرام کو حلال کرنے کے لیے کسی بھی قتم کا حیلہ ناجائز ہے اور ایسے حیلے لعنۃ اللّٰہ کاباعث ہیں۔احناف کو فقہ خنی کے ایسے پینکڑوں مسائل سے براءت کرنا چاہیے (۳) سابقہ امم پر پاک اشیاء بطور امتحان بھی ناجائز تھیں۔ جبکہ امت محمد یہ پراس کے براءت کرنا چاہیے ومعز اشیاء کوہی حرام کیا گیا ہے۔ (واللّٰہ اعلم)

[10] بَابِ الْعُقُوبَةِ فِي شُرُبِ الْحَمُوِ شراب پینے کی سزا

2151 حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ عَنِ الْحَارِثِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي

عَنُ أَبِى هُسرَيُسرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنُ أَبِى هُسرَيُسرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَيْهِ إِذَا سَكِرَ فَاجُلِدُوهُ ثُمَّ إِذَا سَكِرَ فَاجُلِدُوهُ شَمَّ إِذَا سَكِرَ فَاجُلِدُوهُ ثُمَّ إِذَا سَكِرَ فَاجُلِدُوهُ

ابو ہریرۃ مٹائن ہیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ ملطے آئے نے فرمایا: ''جب کوئی نشہ کرے اسے کوڑے لگاؤ' پھر نشہ کرے تو کوڑے لگاؤ' اس کے بعد کرے تو کوڑے لگاؤ' اس کے بعد کرے تو اس کی گردن اڑا دولیعنی چوتھی دفعہ''

الرَّابِعَةِ . 🏻

ف وائد: (۱) شرابی کی سزااتی کوڑے ہیں زانی کی سزا ہے ہیں کم جس سے اس کی شناءت کا انداز ہ لگا ناقطعی مشکل نہیں (۲) تین دفعہ تک تو اسے حد لگائی جائے گی البتہ چوتھی دفعہ امام کو اختیار ہے کہ چاہے تو اسے قید کرمے یاتعزیراً قتل کردہے تا کہ بیہ دوسروں کے لیے فساد کا باعث نہ ہے۔ویکھیے

[◘] صحيح: ابوداؤد، كتاب الحدود، باب اذا تتابع في شرب الخمر (4484) والنسائي، كتاب الأشربة، باب ذكر الروايات المغلظات في شرب الخمر (5678)

الكاليقة الكاليقة الكالمانية الكا كتاب الاشدية

(مختصر الفقه الاسلامي)

[11] بَابِ فِي التَّغُلِيظِ لِمَنُ شَرِبَ الْخَمُرَ شراب بینے والے کے لئے تختی

2152- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنِ الْأُوزَاعِيِّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِيْ سَلَمَةَ ...

ابو ہربرہ فائنہ بیان کرتے ہیں کہ رسول اللہ مطفوق نے فر مایا: ' 'زنا کرنے والا زنا کے وقت مومن نہیں رہتا اور نہ چوری کرنے والا چوری کرتے وقت مومن رہتا ہے اور نہ شرالی شراب پیتے وقت مومن رہتا ہے۔''

عَنُ أَبِي هُـرَيُدِ ةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَا يَوْنِي الزَّانِي حِينَ يَزُنِي وَهُ وَ مُؤْمِنٌ وَلَا يَسُرِقُ السَّارِقُ حِينَ يَسُوقُ وَهُوَ مُؤُمِنٌ وَلَا يَشُوَبُ الْخَمُرَ حِينَ يَشُرَ بُهَا وَهُوَ مُؤُمِّ مِنْ ٥

فوائد: معلوم ہوا ان کبیرہ گنا ہوں کے ارتکاب کے وقت ایمان بندے کے دل سے نکل جاتا ہے حتی کہ بندہ جب گناہ سے فارغ ہوتا ہے تو وہ پھراس میں پلٹتا ہے لہذا ایسے ایمان شکن گناہ کوسرانجام دیتے ہوئے اچھی طرح سوچ لینا جاہیے کہ کہیں یہ آخری گناہ ہی نہ ہو۔

[12] بَابِ فِيمَا يُنْبِذُ لِلنَّبِيِّ عِلَيْكُ

اس برتن کے متعلق جس میں نبی منتفیظیم کے لئے نبیذ تیار کی حاتی تھی

2153- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ أَبِي سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ

حابر خائفہ کہتے ہیں کہ نی طفائظ کے لئے مشک میں نبیذ السِّقَاءِ فَإِنْ لَمُ يَكُنُ سِقَاءٌ نُبِذَ لَهُ فِي بِنَالَ جِاتَى شَى الرَمْكَ نَمِلَى تو مِنزيا ميس بنائي جاتى -

عَنُ جَابِرِ قَالَ كَانَ يُنْبَذُ لِلنَّبِيِّ ﷺ فِي

تُوُرِ مِنُ بِرَامٍ . 🗗

فعواند: (۱) "نبیز" کھجوروغیرہ کوایک دن کے لیے یانی میں بھگودیتے ہیں حاصل ہونے والے میٹھے شربت کونبیز کہاجاتا ہے جو کہ انتہائی مفرح ومقوی ہوتا ہے اور عرب میں عام استعال ہوتا تھا اور'' برام'' یہ مُرمةً كى جمع ہے بيرمطلقاً ہنڈيا كو كہتے ہيں جبكه يبال اس سے مراد حجاز ديمن ميں استعال ہونے والى بيتركى

[◘] متفق عليه: البخاري، كتاب المحابين، باب اثم الزناة (4886) ومسلم، كتاب الإيمان، باب بيان نقصان الإيمان بالمعاصى ويفيه عن المتلبس بالمعصية (205).

² صحيح مسلم، كتاب الاشربة، باب بيان النهي عن الانتباذ في المزفت (5173) وابو داؤد، كتاب الأشربة، باب في الأوعية (3702)

مشہور ہنڈیا ہے(۲)مشکیزے اور ہندمنہ برتن میں نبیذ بنانا جائز ہے۔

[13] بَابِ فِى النَّقِيعِ نقيع كابيان

2154 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيْرِ عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِيْ عَمْرِو السَّيْبَانِي

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بْنِ الدَّيُلَمِيِّ عَنُ أَبِيهِ أَنَّ أَبَاهُ أَوْ أَنَّ رَجُلًا مِنْهُمُ سَأَلَ النَّبِيَّ عِنَى اللهِ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا قَدُ عَبُدُ اللَّهِ عَنُ عَدُ خَرَجُنَا مِنْ حَيْثُ عَلِمُتَ وَنَوَلُنَا بَيْنَ ظَهُرَانَىُ مَنُ قَدُ عَلِمُتَ فَمَنُ وَلِيُّنَا قَالَ اللَّهُ

عبداللہ بن دیلی اپ والد سے نقل کرتے ہیں کہ ان کے والد نے یا لوگوں ہیں سے کی آ دی نے بی سے نظر آ ہے سوال کیا۔ کہا: ''یا رسول اللہ! ہم جہاں سے نکلے آ پ کوعلم ہے اور جن لوگوں میں آ ئے ان کوبھی آ پ جانتے ہیں تو کون ہمارا دوست ہے؟ آ پ نے فرمایا: ''اللہ اور اس کا رسول۔''انہوں نے کہا: یا رسول اللہ! ہمارے پاس اگور اور شراب تھی۔ اللہ نے شراب حرام کر دی۔ اب ہم انگوروں کا شراب تھی۔ اللہ نے فرمایا: ''اس کی کشمش بنا لیں۔' انہوں نے کہا: ہم کشمش کا کیا کریں؟ آ پ نے فرمایا: ''اس کی کشمش بنا لیں۔' انہوں نے کہا: ہم کشمش کا کیا کریں؟ آ پ نے فرمایا: ''مشکوں میں اس کا شربت بنالوضیح کو بنا کرشام کو پی لو اور شام کو بنا کرضیح کو پی لو کیونکہ جب اس پرضیح اور شام گر رجاتی ہے تو شراب بننے سے پہلے سرکہ بن جا تا ہے۔'' گر رجاتی ہے تو شراب بننے سے پہلے سرکہ بن جا تا ہے۔''

وَرَسُولُهُ قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا كُنَّا أَصْحَابَ كَرُم وَحَمْرٍ وَإِنَّ اللَّهَ قَلُهُ حَرَّمَ النِّحَابُ كَرُم وَحَمْرٍ وَإِنَّ اللَّهَ قَلُهُ حَرَّمَ النَّحَنَعُ بِالْكَرُمِ قَالَ اصْنَعُوهُ وَبِيبًا قَالُوا فَمَا نَصْنَعُ بِالزَّبِيبِ اصْنَعُوهُ وَبِيبًا قَالُوا فَمَا نَصْنَعُ بِالزَّبِيبِ قَالَ انْقَعُوهُ وَفَى الشِّنَانِ انْقَعُوهُ عَلَى غَشَائِكُمُ وَاشُرَبُوهُ عَلَى عَشَائِكُمُ وَاشُرَانُ وَلَيْهُ الْعَصُرانِ وَكُولُونَ خَمُوا فَي عَلَى الشَيْعُولُ وَالْمُ اللّهُ الْعُصُرانِ وَكُولُونُ خَمُولًا فَي عَلَى الْمُعُمُ وَاللّهُ الْعُمُولُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الْعُصُولُ اللّهُ الْعُلُولُ اللّهُ الْعُلُولُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّه

فوائد: (۱) منطے سے مراد روغی مرکا ہے جو کہ نبیذ کوجلد نشہ والی کردیتا ہے لہذا اس ہے روک دیا گیا۔ لیکن یہ تھم شرع واسلام میں تھا جبکہ شراب نی نئی حرام ہوئی تھی لیکن جب شراب کی حرمت ذہنوں میں راتخ ہوگئی اورلوگ نشے سے بچنے لگے تو فد کورہ برتن میں نبیذکی اجازت مل گئے۔ جابر شائنڈ سے روایت ہے

❶ صحيح بالشاهد: ابوداؤد، كتاب الأشربة، باب صفة النبيذ (3710) والنسائي، كتاب الأشربة، باب ذكر مايجوز شربه من الأنبذة ومالايجوز (5752) واحمد 332/4

الكاليكي الكاليكي الكاليكي الماليكي الماليكي الماليكي الماليكي الكاليكي الماليكي الم

"نهى رسول الله عن الظروف فنشكت اليه الانصار فقالوا ليس لناوعاء، قال فلا اذًا . " (تر مذى صحيح) آب مطفع النا نے برتنوں میں سے روكاتو انصار نے آپ سے شكایت كى كه مارے پاس تو اور برتن ہی نہیں ہیں آپ ملئے آئے ہم ایا تو پھراجازت ہے۔ بخاری ومسلم میں بھی اسی معنی کی حدیث مذکور ہے جو کہ برتنوں میں نبیز بنانے کی حرمت کے منسوخ ہونے بردلیل ہے۔امام خطابی رافقیہ فرماتے ہیں ان کے سنخ كاقول عى بہترين قول ہے۔ (تحفة الاحوذي)

[14] بَابِ النَّهُي عَنُ نَبيذِ الْجَرِّ وَمَا يُنْبَذُ فِيهِ منکے اور شراب کے برتنوں میں نبیز بنانے کی ممانعت

2155 ـ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِر عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي عَرُوبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ عَزْرَةَ

عَنُ سَعِيدِ بُنِ جُبَيْرِ قَالَ سَأَلُتُ ابْنَ سعيدٌ بن جبير كت بيل كميل في ابن عمر وَاللهُ سے مطكى نبیز کے متعلق یو چھا تو انہوں نے کہا: ''رسول الله عليہ الله عليہ الله نے اسے حرام کر دیا ہے۔'' پھر میں ابن عماس خالیا سے ملا اور انہیں ابن عمر ظافی کی بات بتائی تو انہوں نے کہا: "ابوعبدالرحلن نے سیج کہاہے۔"

عُمَرَ عَنُ نَبِيذِ الْجَرِّ فَقَالَ حَرَّمَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَلَقِيتُ ابُنَ عَبَّاسِ فَأَخْبَرُتُهُ بِقَوْلِ ابْنِ عُمَرَ فَقَالَ صَدَقَ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ . 0

2156 أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِع عَنْ شُعَيْبٍ بْنِ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ

حَدَّ ثَنِي أَنسُ بُنُ مَالِلْتِ أَنَّ النَّبِي عِلَيْ الْسَ بن ما لك وَاللَّهُ بيان كرت بي كم في عَلَيْمَ إِن حَدَّ ثَنِي أَنسُ بَنُ مَالِلْتِ أَن النَّبِي عَلَيْهِ إِن السَّامِينَ السَامِينَ السَّامِينَ السَّامِينَ السَّامِينَ السَّامِينَ السَّامِينَ السَّامِينَ السَّامِينَ السَّامِينَ السَّامِينَ السَامِينَ السَ

قَالَ لَا تَنْتَبِذُواْ فِي اللَّهُ بَّاءِ وَالْمُزَفَّتِ. 🛭 🛮 فرمایا: ' کرو کے برتن اور رغیٰ برتن میں نبیذ مت بناؤ''

فوائد: (۱)"الدّباء" يركي بوئ كدوكودرميان سے كاٹ كرتو كھوكھلا كرلياجاتا ہے جيباك ما تکت لوگوں کے باس تشکول ہوتا ہے اور'' مزفت'' تارکول مَلا ہو برتن ہوتا ہے ملاعلی قاری را پیایہ کے مطابق ان میں منع کی علت یا تو ان کی عادت کی بنایر ہے کہ وہ ان برتنوں میں شراب یہتے تھے تو اس سے مشابہت کی بنا پران سے روک دیا گیا یاان برتنوں کے کثیف ہونے کی بناپران میں پڑے نبیذ میں جلدنشہ پیدا ہوجاتا ہے للبذا ان سے روک ویا گیالیکن بعد میں نشے سے بیخے والی عادت کے پختہ ہوجانے کے بعد

[◘] صحيح مسلم، كتاب الأشربة، باب النهبي عن الإنتباذ في المزفت والدباء والحنتم (5156) وابوداؤد، كتاب الأشربة، باب في الاوعية (3691)

² صحيح البخاري، كتاب الأشربة، باب الخمر من العسل (5587) ومسلم، كتاب الأشربة، باب النهي عن الانتباذ في المزفت (1992)

الكارتين الكارتين الكارتين (103 حرور كتاب الاشربة)

ان کی اجازت مل گئی (تحفۃ)

2157 ـ أَخْبَرَنَا أَبُوْ زَيْدٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلِ قَالَ سَمِعْتُ

ابوالحكم كيت بي كه مين نے ابن عباس والله سے مظلے كى أَبَا الْحَكَم قَالَ سَأَلُتُ ابُنَ عَبَّاس أَوُ نبیز کے متعلق یو چھایا ان سے کسی اور نے سوال کیا میں سَمِعُتُهُ سُئِلَ عَنُ نَبِيذِ الْجَرِّ فَقَالَ نَهٰى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَن الُجَرِّ وَالدُّبَّاءِ نے سنا انہوں نے کہا'' رسول اللہ ﷺ نے کدو اور ملکے کی نبیز سے منع کیا ہے۔'' پھر میں نے ابن زبیر سے یو چھا وَسَأَلُتُ ابُنَ الزُّبَيُرِ فَقَالَ مِثْلَ قَوْلِ ابْن تو انہوں نے بھی ابن عباسؓ کی طرح کہا۔ بیدابن عباس والتُّجاہ عَبَّاس قَالَ وَقَالَ ابُنُ عَبَّاس مَنُ سَرَّهُ نے بہ بھی کہا:' دجو شخص اللہ اور اس کے رسول کی حرام کردہ أَنُ يُسحَرَّمَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَوْ مَنُ چزوں کوحرام کرنا جا ہتا ہے وہ جان لے کہ نبیذ حرام ہے كَانَ مُحَرِّمًا مَا حَرَّمَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ اور بی بھی کہا: " مجھے میرے بھائی نے ابوسعید خدری سے فَلْيُحَرِّم النَّبيذَ قَالَ و حَدَّثَنِي أَخِيُ عَنُ بيان كياكه رسول الله الله الله الله عنكم ، كدو ، رغن ، برتن اور أَبِي سَعِيدِ النُحُدُرِيّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِلْمَا کچی اور پختہ تھجور کی اکٹھی نبینہ بنانے سے منع فرمایا۔'' نَهٰى عَنِ الْجَرِّ وَالدُّبَّاءِ وَالْمُزَفَّتِ وَعَنِ الْبُسُر وَالتَّمُر . 🗣

2158 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَان حَدَّثَنَا ثَابِتُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ

فضیل بن زید رقاشی بیان کرتے ہیں کہ وہ عبداللہ بن مغفل کے پاس گئے۔اور کہا: مجھے حرام کردہ پینے کی چیزوں کے متعلق بتائیے۔انہوں نے کہا: "شراب حرام ہے۔" میں نے کہا: یہ قرآن میں ہے؟ انہوں نے کہا: "میں نے کہا: یہ قرآن میں ہے؟ انہوں نے کہا: "میں نے تم سے وہ بات بیان کی ہے جو میں نے "میں نے تم سے وہ بات بیان کی ہے جو میں نے "میر مطابق آئے ہے" سنی یا انہوں نے "رسول اللہ طابق آئے ہے" کہا۔ پھر کہا: "آپ نے کدو "سزروغنی منا اور مجور کی جر کہا۔ پھر کہا: "آپ نے کدو "سزروغنی منا اور مجور کی جر کے کھدے ہوئے برتن میں نبیذ بنانے سے منع فر مایا۔

عَنُ فُصَيُ لِ بُنِ ذَيُدٍ الرَّقَاشِي أَنَّهُ أَلَى عَنُ فُصَيُ لِ بُنِ مُعَفَّلٍ فَقَالَ أَحُبِرُنِى بِمَا عَبُدَ اللَّهَ بُنَ مُعَفَّلٍ فَقَالَ أَحُبِرُنِى بِمَا يَحُرُمُ عَلَيْنَا مِنُ الشَّرَابِ فَقَالَ الْحَمُرُ قَالَ الْحَمُرُ قَالَ فُكالَ فَكَالَ فَكَالَ مَا أَحَدِثُكُ مُحَمَّدًا عَلَى مَا اللَّهُ مُثَلًا عَلَى الْقُرْآنِ قَالَ مَا المَعِمْتُ مُحَمَّدًا عَلَى مَا بَدَأً بِالِاسُمِ أَوْ قَالَ بِالرِّسَالَةِ قَالَ نَهَى عَن اللَّهُ اللَّهِ قَالَ نَهَى عَن اللَّهُ اللَّهَ قَالَ نَهَى عَن اللَّهُ المَ

[•] صحيح: احمد، 1/229، والطبراني، في الكبير 152/12_ 153 (12738)

②صحيح: احمد 57/5، والطبراني في الاوسط (5276)

كتاب الاشربة 104 المنافئة المنافئة

[15] بَابِ فِي النَّهِي عَنِ الْخَلِيطَيْنِ دو چنز وں کی نبیذ بنانے کی ممانعت

2159 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ وَسَعِيدُ بْنُ عَامِر وَاللَّفْظُ لِيَزِيدَ قَالَا أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْد اللَّه بْنِ

ابوقادة والنيو كيت بن كه ني الني الني الني الله الديكي اور تاز ہ تھجور کی اور کشمش اور تھجور کی انتھی نبینے نہ بناؤ بلکہ ہر ایک کی علیجدہ علیجدہ بناؤ۔''

أَبِي قَتَادَةَ عَنُ أَبِيُهِ عَنِ النَّبِيِّ عَلَيْ قَالَ لَا تَنْتَلُوا الزَّهُوَ وَالرُّطَبَ جَمِيعًا وَلَا تَنتَبِذُوا الزَّبِبَ وَالتَّمُرَ جَمِيُعًا وَانْتَهِـذُوا كُلَّ وَاحِد مِنْهُمَا عَلَى

حدَته. ٥

فوائد: "خليطين" ہے مراديہ ہے كه دوالگ چيزوں كومثلًا دُوكا اورتر تحجوريا تحجور ومنقى كوملاكر نبیز بنائی کیونکه مسلم میں زبیب منقی اور مجور کوملانے کی نہی بھی وارد ہے عبدالرحمٰن مبار کیوری رافیعیه فرماتے جس کہ ہمارے اصحاب اوردیگر علماء کے تول کے مطابق ان میں کراہت کی وجدان میں جلدنشہ پیدا ہوجاتا ہے۔ جبکہ اس کا ذا نقنہ بھی نہیں بدلا ہوتا یہنے والا یہی سمجھتا ہے کہ بیانشہ آور نہیں حالانکہ وہ نشہ آور ہوتا ہے۔ نیز جمہورعلاءاس کے مکروہ تنزیمی کے قائل میں جب تک نشہ پیدا نہ ہو۔ (تحفہ)

[16] بَابِ فِي النَّهُي أَنُ يُسَمَّى الْعِنَبُ الْكَرُمَ انگورکو ٔ کرم ٔ کہنے کی ممانعت

2160 حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ سِمَاكِ

عَنْ عَلْقَمَةَ بُنِ وَائِلِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ عَلْمَةً بن وأكل اين والدي الله عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَيْنَ قَالَ لَا تَعَفُولُوا الْكُرْمَ وَقُولُوا اللَّدِينَ اللَّهُ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَن الله عنب اور حبله

الُعِنَبَ أَو الْحَبَلَةَ. ٥

فوائد: "الحَبِلَةُ" بيانگور كى جراياس كرسركند بيسى چيز كوكت بي -

[₫] متفق عليه : البخاري، كتاب الاشربة، باب من رأى أن لا يخلط البسر والتمر اذا كان (5602) ومسلم. كتاب الأشربة، باب تحريم التداوي بالخمر (5215)

وصحيح مسلم، كتاب الألفاظ، باب كراهة تسمية العنب كرما (5833)

105 كتاب الاشربة E553/51/1055E [17].... بَابِ فِي النَّهُي أَنُ يُجُعَلَ الْخَمُرُ خَلًّا شراب کا سر کہ بنانے کی ممانعت

2161 - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنِ السُّدِّيِّ عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبَّادٍ

انس بن ما لك فالينهُ كهت مين كدابوطلحد كى كود ميس چنديتيم تھے۔انہوں نے ان کے لئے شراب خریدی۔تو جب شراب کی حرمت نازل ہوئی تو انہوں نے نبی طفی ہوٹا کے ماس حاكر اس كا ذكركيا اوركها كيا مين اس كا سركه بنا لوں؟ آپ مطفی آیا نے فرمایا: "نہیں۔" انہوں نے اسے

عَنُ أَنْس بُن مَالِلْتٍ قَالَ كَانَ فِي حِجُر أَبِي طَلُحَةَ يَتَامَى فَاشْتَرْى لَهُمُ خَـمُرًا فَلَمَّا نَزَلَ تَحُرِيْمُ النَّحُمُر أَتَى النَّبِيُّ عَلَيْ اللَّهُ فَقَالَ أَجُعَلُهُ خَلَّا قَالَ لَا فَأَهُرَ اقَهُ. ٥

فوائد: (۱) اگر کوئی بچه بتیم ہوتو اسے دوسروں کی نگرانی میں دیا جاسکتا ہے بشرطیکہ وہ اس کے مال کی حفاظت کرنے والے ایماندار ہوں (۲) شراب کاسرکہ بنانا جائز نہیں جبکہ امام ابوصنیفہ رہیں کے سرکہ بنالینے کے قائل ہیں۔ نیز بیکوئی نئ بات نہیں بلکہ امام ابوصنیفہ راٹیجیہ اکثر مسائل میں حدیث رسول منتظم آیا کی مخالفت ہی کرتے ہیں ای طرح فقہ حنفی کے سینکڑوں مسائل صحیح صریح احادیث کے خلاف ہیں۔ مزید تفصیل کے لیے "انظفر المبین" کامطالعہ کریں۔امام قرطبی رائی اس کے بارے میں فرماتے ہیں" اگرسرکہ بنانا جائز تھا تواس کا مطلب بیہ ہوا کہ رسول الله الله علیہ الله علیہ میں کا مال ضائع کردیا۔ کیونکہ سرکہ کی اجازت نہ دیناضائع کردیئے کے مترادف ہے۔(العیاذباللہ)(بدایة المجتھد)

[18] بَابِ فِي سُنَّةِ الشَّرَابِ كَيُفَ هيَ ینے کے شرعی طریقہ کے متَعلق

2162 - أَخْبَرَنَا أَبُو الْمُغِيرَةِ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ

عَنُ أَنْس بُنِ مَالِلْتٍ أَنَّهُ دَأَى دَسُولَ السُّر بِن مالك كميت بين كدانهوں نے رسول الله الله الله عليه ا و یکھا کہ آپ شخیتا نے دودھ پیا۔اور آپ کے باکیں طرف ابو بكر فالنيزُ واكيل طرف ايك ويباتى تفا- آب طفي الله

اللَّهِ ﷺ شَرِبَ لَبَنَّا وَعَنُ يَسَارِهِ أَبُوُ بَكُر وَعَنُ يَمِينِهِ رَجُلٌ أَعُرَابِيٌّ فَأَعُطَى

[◘] متـفـق عليه : البخاري، كتاب البيوع، باب ما قيل في الصواغ (2089) ومسلم، كتاب النكاح، باب تحريم الخمر وبيان أنها تكون (5102)

المناب الاشربة المناب الاشربة المنافقة المنافقة

الْأَعْدَابِيَّ فَضَلَهُ فُهُمَّ قَالَ اللَّايُمَنَ فَعُلِيابِيا بها دوده ديباتي كوديا اور فرمايا: "باكيل طرف ہے شروع کرنا جاہے۔'' فَالْأَيْمَانَ 0

فوائد: (۱) اصول وضوالط میں شرف ومنزلت کالحاظنہیں رکھا جائے گا (۲) مجلس میں کسی بھی کام کی ابتداء دائیں جانب ہے کی جائے گی۔ (۳) اپنا ہاقی ماندہ سامان خوراک دوسرے کو دینا جائز ودرست ہے۔ [19] بَابِ فِي النَّهُي عَنُ الشَّرُبِ مِنُ فِي السِّقَاءِ مثك كومنه لگا كرياني پينے كي ممانعت

2163 ـ أَخْبَرَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ أَخْبَرَنَا قَتَادَةُ عَنْ عِكْرِمَةَ

عَن ابُن عَبَّاس أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِينًا نَهَى ابن عباس نَاتُها سے روایت ہے کہ رسول الله عَنْ اَبُن عَباس الله عَلَيْ نَه مثک سے مندلگا کریانی پینے سے منع فرمایا۔ أَنْ يُشُرَبَ مِنُ فِي السِّقَاءِ . 6

فوائد: مشكيزے ياايے برتن جس ميں ياني كاذخيره كياجاتا ہومثلاً صراحي وغيره ان سے براو راست یانی پینامنع ہے چونکہ بیضرر کاباعث بن سکتا ہے مثلاً یانی میں اگر کوئی کیڑا وغیرہ ہو یا یانی میں گندگی واقع ہوئی ہوتود کھے بغیریٹے سے اس کے منہ میں جانے کااحمال ہے جوکہ ضرر کاباعث بن سکتا ہے۔اس لیے جائے کہ یانی کسی برتن میں یاباتھ میں ڈال کر پیا جائے۔(واللہ الموفق)

2164 ـ أَخْبَرَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ خَالِدِ الْحَذَّاءِ عَنْ عِكْرِمَةَ

عَنُ أَبِسَى هُسَوَيُسُوةَ قَالَ نَهَى رَسُولُ الوهريةُ وَلِيْنَ فَرَاتِ بِي كه رسول الله الشَّامَةِ أَ فَ مشك

اللهِ عِنْ أَنْ يُشُوبَ مِنْ فِي السِّقَاءِ . ٥ سيمندلكاكرياني ييخ سيمنع فرمايا-

2165 - أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ عَنِ ابْنِ أَبِي ذِئْبِ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِاللهِ

عَنْ أَبِي سَعِيدِ الْخُدُرِيّ أَنَّ النَّبِيّ فِي السِّعِيدِ ضرري وَلَيْنَ كُتِ مِين كُه نِي طِنْ آيَا فَ مَثَك كَ منہ کوموڑ کریانی پینے سے منع فرمایا۔

نَهٰى عَنِ اخْتِنَاثِ الْأَسُقِيَةِ . ٥

• متفق عليه: البخاري، كتاب الأشربة، باب الأيمن فالأيمن في الشرب (5619) ومسلم، كتاب الأشربة، باب استحباب ادارة الماء اواللبن (5257)

♦ صحيح البخاري، كتاب الاشربة، باب الشرب من حم السقاء (5629) وابوداؤد، كتاب الأشربة، باب في الشراب من في السقاء (3719)

3 صحيح البخاري، كتاب الأشربة، باب الشرب من قم السقاء (5628)

♦ صحيح البخاري، كتاب الأشربة، باب اختناث الأسقية (5625) و مسلم، كتاب الأشربة، باب آداب الطعام والشراب وأحكامها (5239)

المسترالطاريخي المسربة
فواند: "اختناث" کہتے ہیں مشکیزے کے منہ کوالٹ کراس کا اندرونی حصہ باہر تکال کریانی

ینے کو۔ امام زہری راٹیے سے یو چھا گیا اختناث الاسقیہ کیا ہے تو فرمانے گلے مشکیزوں کے منہوں سے بینا

(منحة المعبود) للذا فدكوره طريقے سے بھی سابقه علت كى بناير بيناممنوع ہے۔

[20] بَابِ فِي الشَّرْبِ بِثَلَاثَةِ أَنْفَاس

تین سانسوں میں بینا

2166 أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا عَزْرَةُ بْنُ ثَابِتِ

عَنُ ثُمَامَةَ قَالَ كَانَ أَنَسٌ يَتَنَفَّسُ فِي مُمامه فِاللَّهُ كُتِ بِي كه السّ فِاللَّهُ إِنّى يبيت وقت دويا تبن

الْإِنَـاءِ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا وَزَعَمَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﴿ اللَّهِ عَلَىٰ كَانَ يَتَنَفَّسُ فِي الْإِنَاءِ مَرَّتَيُن

أَهُ ثَلاثًا ۞

مرتبه سانس ليت تھاان كاخيال ہے كدرسول الله والله الله الله الله بھی دویا تین مرتبہ سانس لیتے تھے۔

فوائد: پیتے وقت تین سانس لے کر بینا سنت ہے۔ بخاری ومسلم میں بھی بیر حدیث مروی ہے جس سے اس کی صراحت ہوتی ہے۔ ابن ماج میں ہے "کان یتنفس فی الاناء ثلاثاً" آپ سے این ماج میں میں تین سائس لیتے تھےاس لیے تین سائس ہی زیادہ ولی ہیں۔

> [21].... بَابِ مَنُ شَرِبَ بِنَفُسٍ وَاحِدٍ اس کے متعلق جوایک سانس میں پیئے

2167 أَخْبَرَنَا إِسْحٰقُ بْنُ عِيسَى عَنْ مَالِكِ عَنْ أَيُّوْبَ بْنِ حَبِيبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ

عَنُ أَبِي الْمُفَنِّي قَالَ كُنْتُ عِنْدَ مَرُوانَ الوامَثْنَ شِاللَّهُ كَتِ بِين مِن مردان كے ياس تھا كه ابوسعيد آئے اور کہا کہ ایک مخص نے کہا یا رسول اللہ! میں ایک سانس میں سیر شہیں ہوتا۔آپ کھیے آتے نے فر مایا''برتن کو اینے منہ سے ہٹا کرسانس لے۔''اس نے کہا مجھے اس میں تِكَانَظُرآ تابِ؟ آبِ لِطُهَيَّا نِهُ مُراما!"اے بہا دو۔"

فَحَجَاءَ أَبُوُ سَعِيْدٍ فَقَالَ قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّيُ لَا أَرُوَى مِنْ نَفَس وَاحِدٍ قَالَ فَأَبِنِ الْإِنَاءَ عَنُ فِيلَتُ ثُمَّ تَنَفَّسُ قَالَ إِنِّي أَرَى الْقَذَاةَ قَالَ أَهُرِقُهُ. 🍳

[•] صحيح البخاري، كتاب الأشربة، باب الشرب بنفسين أو ثلاثة (5631) ومسلم، كتاب الاشربة، باب كراهة التفنس في نفس الإناء (5254)

صحيح: احمد 57/3، والترمذي، كتاب الأشربة، باب ماجاء في كراهية النفخ في الشراب (1887).

حَرِّ لِيُنْ الْكَالِيمِيُّ ﴾ ﴿ 108 كُولُ كُتَابِ الاشربة ﴾ ﴿ 108 كُتَابِ الاشربة ﴾ ﴿

فوائد: (۱) دوران پینے کے سانس لیتے ہوئے برتن کو منہ سے ہٹا کر سانس لیاجائے گا (۲) سانس لے کرپانی بینا زیادہ سیرانی کا باعث ہے (۳) اگرپانی میں تنکاوغیرہ نظر آجائے تواسے گرادینا چاہیے یہ اسراف میں داخل نہیں ۔

2168 - أَخْبَرَنَا أَبُو الْمُغِيْرَةِ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ

أَبِى قَتَاحَةَ قَالَحَدَّ ثَنِى أَبِى أَنَّهُ سَمِعَ ابوقادة وَثَاثَهُ كَتِ بِين بِحَدَ سَهِ مِيرَ عَ بَالِ لَا اللهِ فَي اللهُ ال

[22] بَابِ فِي اللَّذِي يَكُرَعُ فِي النَّهُرِ نهرے یانی پینے والے کے متعلق

2169 ـ أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْحَارِثِ الْأَنْصَارِيّ........

عَنُ جَسَابِ بِنِ عَبُدِ اللّهِ قَالَ أَتَى جَابِرٌ بِنَ عَبُدِ اللّهِ قَالَ أَتَى جَابِرٌ بِنَ عَبِدَاللّه كَبَتِ بَيْنَ كَه بِي طَنِّعَ الْمَارِكَ ا يَكُ آدَى النَّبِيُّ وَجُلًا مِنَ اللَّهُ قَالَ إِنْ كَانَ عِنُدَكُمُ كَامُ عِنْ وَتَ كُوكُ اللهِ عَلَى اللهِ عَنْ اللّهُ اللهُ عَنْ اللّهُ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَنْ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَنْ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَنْ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَنْ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَنْ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَّمُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَّا عَلَا عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ

فوائد: "ال کرع" ہے مراد (۱) "الشن" پرانے مشکیزے کو کہتے ہیں یہ نے کی بنسبت پانی زیادہ شخد اکرتا ہے (۲) "الکرع" ہے تھیلی وبرتن کے بغیر منہ سے پانی لینے کو کہتے ہیں اورایک قول کے مطابق دونوں ہتھیلیوں سے اکٹھا چلو بھرنا اس معنی میں بھی یہ استعال ہوتا ہے (۳) جاری پانی پاک ہوتا ہے اگر اس میں بھی کوئی حرج نہیں۔ (واللہ اعلم) میں بطاہر گندگی نظر نہ آر ہی ہوتو اس کے استعال میں بھی کوئی حرج نہیں۔ (واللہ اعلم)

 [♣]متـقق عليه: البخاري، كتاب الوضوء، باب النهى عن الاستنجاء باليمين (153) ومسلم، كتاب الطهارة، باب النهى
 عن الاستنجاء باليمين (612)

عصحيح البخاري، كتاب الأشربة، باب شرب اللبن بالماء (5613)

الكَّالِيَّةِ الْكَالِيَّةِ الْكَالِيَّةِ الْكَالِيَّةِ الْكَالِيَّةِ الْكَالِيِّةِ الْكِيْلِيِّةِ الْمُعَالِمِي الْمُعَالِمِ

است باب قبی انسربِ کھڑے ہو کر یانی بینا

2170 حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ سَلَمَةَ الْخُزَاعِيُّ حَدَّثَنَا شَرِيكٌ عَنْ عَبْدِ الْكَرِيمِ عَنِ الْبَرَاءِ ابْنِ ابْنَةِ

أَنُس عَنْ أَنُس

اس عن اس سسسس عَنُ أُمِّ سُلَيْمٍ أَنَّ النَّبِيَّ عِلَى شَرِبَ مِنُ المسلمُ كَبَى بِيل كه نبي طَنْ قَيْمَ نے كھرے ہوكر مشك سے

فَمِ قِرْبَةٍ قَائِمًا . • پانی بیا تھا۔ فوائد: شریعت آداب کانام ہے کھانے میں اہم ادب یہی ہے کہ بیٹھ کر کھانا کھایا جائے۔

جیسا کہ رسول اللہ طنے آیا اوراصحاب رسول بڑی اللہ کامعمول تھا۔ طبی نکتہ نظر سے بھی بیٹھ کرکھانا ہی زیادہ فوائد کا حامل ہے اس لیے کھانا کھاتے ہوئے بیٹھ جانا چاہیے۔ البتہ دین میں کھڑے ہوکر کھانے پینے کی اجازت موجود ہے ،اگر کوئی شخص کھڑا ہوکر کھا، بی لے آپ اس کو گنہگار نہیں کہہ سکتے۔ جیسا کھمل رسول طبیع اور عمل

صحابہ رخی المیم سے واضح ہوتا ہے۔ اور یہی رائے معتدل فقہا محدثین کی ہے۔ 2171 - حَدَّ ثَنَا عُشْمَانُ بْنُ عُمَرَ أَخْبَرَنَا عِمْرَانُ بْنُ حُدَيْرِ عَنْ أَبِي الْبَزَرِيّ يَزِيْدَ بْنِ

21/1- حدوث عشمال بن عثمر احبوب عِثمرال بن حديرٍ عن ابِي البزرِي يزيد بنِ عُطَارِدَ------

عَنِ ابُنِ عُمَّمَ قَالَ كُنَّا نَشُوبُ وَنَحُنُ ابْنَ عَمِ وَلَهُ مِنَ ابْنَ عَمِ وَلَهُ اللَّهِ عَبِيلَ كَه بم في مِنْ النَّامَةِ عَلَى عَهُدِ ابْنَ عَمِ وَلَيْهُ كَبَتَ بَيْلَ كَه بم في مِنْ النَّهُ اللَّهُ عَلَى عَهُدِ كَمَانَا كَمَا لِيَتَ عَدَاوَرَ فِي اللَّهِ عَلَى عَهُدِ كَمَانًا كَمَا لِيتَ عَدَاوَرَ فِي اللَّهِ عَلَى عَهُدِ تَعْدَاوَرَ فِي اللَّهُ عَلَى عَهُدِ تَعْدَاوَ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى عَهُدِ تَعْدَاوَمُ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ اللَهُ اللَّهُ الللللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللْمُ اللَّهُ الللَّهُ اللْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللْمُ اللَّهُ اللللْمُ الللْمُ اللْمُ اللَّهُ اللْمُ اللَّهُ الل

2172 - أَخْبَرَنَا أَبُوْبَكُرِ بْنُ أَبِيْ شَيْبَةَ حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ

عَنُ نَافِعٍ عَنِ ابُنِ عُمَرَ نَحُوَهُ. ۞ نافع بِنَاتَدُ ابن عَمرِ فِالنَّدُ سے اس طرح بیان کرتے ہیں۔ [24].... بَاب مَنُ كُرةَ الشُّرُبَ قَائِمًا

كھڑے ہوكر پينے والے كونا پيند كرنے والے كے متعلق

2173 - أَخْبَرَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ

[•] حسن: احمد، 376/6، والترمذي في الشمائل (215)

[🛭] صحیح : ابن ابی شیبه 8/205 (4167) نیز آکنده سندد کیھئے

[🛭] صحيح : سمالقدد ليھئے۔

110 كتاب الاشربة المالية

> عَنُ أَنَّ النَّبِيُّ عَنْ لَهُ عَنْ النَّبِيُّ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ اللَّالِمُ اللَّهُ اللَّهُ الشُّورُبِ قَائِمًا قَالَ فَسَأَلْتُهُ عَنِ الْأَكُلِ فَقَالَ ذَاكَ أَخُمَتُ . •

انس بنالیّن کتنے ہیں کہ نبی منت میں نے کھڑے ہو کر یانی ینے سے منع کیا۔ کہتے ہیں :اور میں نے آپ ملنے ای سے كهان كمتعلق يوجها توآب ينتين في مايا: "بداس

ہے بھی برا کام ہے۔''

فداند: آپ مضایم از سے فقط کھڑے ہوکر یینے کے بارے میں نہی وارد ہے جبکہ کھانے کے بارے'' انحبث' کے لفظ کا استعال یہ انس زمائننہ کا اپنا اجتہاد ہے جبکہ سابقہ ابن عمر زمائنہا کی تقریری حدیث کے مقابلے میں یہ اجتہاد مرجوع ہے بہرحال بیٹھ کر کھانا پینا آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا اسوؤ ہے اور یہی مستحب ہے۔(واللہ اعلم)

2174 ـ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي زِيَادِ الطَّحَّانِ قَالَ

سَمِعُتُ أَبَا هُرَيُوةَ عَنِ النَّبِيِّ عَلَىٰ قَالَ لِرَجُل رَآهُ يَشُرَبُ قَائِمًا قءُ قَالَ لِمَ قَالَ أَتُحِبُّ أَنُ تَشُرَبَ مَعَ الُهِرِّ قَالَ لَا قَالَ فَقَدُ شَرِبَ مَعَكَ شَرٌّ مِنْهُ الشُّيطَانُ. 🛭

ابو ہررہ ہ واللہ کہتے ہیں کہ نبی مطبقہ نے ایک آ دمی کو دیکھا جو كفرا موكر بي ربا تقارآب الفيليان نے فرمايا: "ق كر دو۔'اس نے کہا کیوں؟ آپ سے اللے اللے نے فرمایا:'' کیا تو پند کرتا ہے کہ بلی کے ساتھ ہے؟" اس نے کہا: ''نہیں۔''آب طاع آئے نے فرمایا: اس سے بھی برے مخف

نے تیرے ساتھ پاہے۔ یعنی شیطان نے۔

فوائد: اس سے ثابت ہوابلا وجہ کھڑے ہو کریٹنے سے شیطان ساتھ حصہ ڈالتا ہے سوان متعارض احادیث کے درمیان ابن جرر طینیہ نے یہی تطبیق دی ہے کہ اگر مجبوری ہویا تو کھڑے ہوکر پینے کی اجازت ہے

> ُ [25].... بَابِ الشَّرُبِ فِي الْمُفَضَّض طاندی کے برتن میں یانی بینا

2175 ـ أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُوْنُسَ حَدَّثَنَا لَيْتُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ نَافِع عَنْ زَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ

- ◘ صحيح مسلم، كتاب الأشربة، باب كراهية الشرب قائما (5243) والترمذي كتاب الأشربة، باب ماجاء في النهي عن الشرب قائماً (3424)
- 🛭 متـفق عليه : البخاري، كتاب الأشربة، باب انية الفضة (5634) مسلم، كتاب اللباس والزينة، باب تحريم استعمال أواني الذهب (5353)

عَنْ عَبْدِ اللّهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِيْ بَكْرِ

عَنُ أُمِّ سَلَمَةَ أَنَّهَا أَخْبَرَتُهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ الَّذِى يَشُرَبُ فِى آنِيَةٍ مِنُ فِظَّةٍ فَإِنَّمَا يُجَوُجِوُ فِي بَطُنِهِ نَارَ

ام سلمہ وظافرہ کہتی ہیں کہ رسول الله طفرہ کیا نے فرمایا: ''جو چاندی کے برتن میں بیتیا ہے وہ اپنے بیٹ میں جہنم کی آگ بھرتا ہے۔''

جَهَنَّمَ. ٥

فوائد: فيمتى دهاتوں سے بغ برتن بيانسان كے اندراحساس تفاخر جگاتے ہيں اور كبر پيدا كرتے ہيں اور كبر پيدا كرتے ہيں جوكدانها كى معيوب صفات ہيں اور آخرت كى تباہى كاباعث ہيں اى ليے كافروں كے بارے ميں آپ طلط تعلق نے فرمایا: "هى لهم فى الدنيا وهى لكم فى الآخرة . " (ابن ماجه: صحيح) بيان كے ليے دنيا جبكة تمہارے ليے آخرت ميں ہيں (ديكھيے آئندہ حديث)

2176 حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْن عَنْ مُجَاهِدٍ

عبدالرحمٰن بن ابولیا بنائی کہتے ہیں ہم حذیفہ کے ساتھ مدائن گئے۔ راہتے میں انہوں نے پانی مانگا۔ تو ایک کسان چاندی کے برتن میں پانی لایا۔ تو انہوں نے اس کے چرے پر چھنیک دیا۔ ہم نے کہا خاموش رہو۔ اگر ہم نے اب پوچھا تو وہ اب نہیں بتا کمیں گے۔ بعد میں انہوں نے خود ہی کہا: کیا تم جانتے ہو میں نے اسے کیوں پھیکا؟ ہم نے کہا نہیں ۔ انہوں نے کہا نہیں ۔ انہوں نے کہا: میں نے اسے کیوں پھیکا؟ ہم انہوں نے کہا: میں نے اسے منع کیا تھا ، اور نے کہانہیں ۔ انہوں نے کہا: میں نے سونے اور چاندی کے برتن میں پانی پینے اور باریک اور موٹے ریشم پہنے سے منع فرمایا۔ اور فرمایا کہ وہ کافروں کے لئے دنیا میں ہیں اور فرمایا کہ وہ کافروں کے لئے دنیا میں ہیں اور

عَنُ عَبُدِ الرَّحُ مَنِ بُنِ أَبِى لَيُلَى قَالَ خَسرَ جُسَا مَعَ حُلَيْفَة إِلَى الْمَدَائِنِ خَسرَجُسَا مَعَ حُلَيْفَة إِلَى الْمَدَائِنِ فَاستَسْفَى فَأَتَاهُ دِهُقَانٌ بِإِنَاءٍ مِنُ فِطَّةٍ فَلَاسَتَسْفَى فَأَتَاهُ دِهُقَانٌ بِإِنَاءٍ مِنُ فِطَّةٍ فَلَاسَاتُهُ لَهُ لَا السُكُتُوا فَإِنَّا إِنُ سَأَلُسَاهُ لَمُ يُحَدِّثُنَا فَلَمَّا كَانَ بَعُدُ قَالَ سَأَلُسَاهُ لَمُ يَحَدِّثُنَا فَلَمَّا كَانَ بَعُدُ قَالَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ الْمُنْ اللَّهُ اللَّلْمُ اللَّهُ اللَ

تمہارے لئے آخرت میں۔

 [◘] متفق عليه: البخاري، كتاب الأطعمة، باب الأكل في إناء مفضض (5426) ومسلم، كتاب اللباس، والزينة، باب تحريم، استعمال إناء الذهب (5361)

[•] متفق عليه: البخاري، كتاب الأطعمة، باب الأكل في إناء مفضض (5426) ومسلم، كتاب اللباس، والزينة، باب تحريم استعمال إناء الذهب والفضة (5361)

مر المستراف المربة على المربة عل

[26].... بَابِ فِیْ تَخْمِیُرِ الْإِنَاءِ برتنوں کے ڈھاپیخ کا بیان

2177 ـ أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَاصِم عَنِ ابْنِ جُرَيْج عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ حَدَّثَنِيْ جَابِرٌ قَالَ

حَدَّ تَنِي أَبُو حُمْدِ السَّاعِدِيُّ قَالَ البوميد ساعدى بن لَيْنَ كَتِ بِي كَمِ مِن رسول الله طَيْنَ اللهِ الله عَلَيْهِ عَلَى الله طَيْنَ الله الله عَلَيْهِ عَلَى الله عَلَيْهِ عَلَى الله عَلَيْهِ عَوْدًا . ٥ وود لَ كَرَّيا- آپ طَيْنَ الله عَلَيْهِ عَوْدًا . ٥ وهانها كيول نبيل - اگر چاك رجهى لكرى بى ركه لية - خَمَّوْتَهُ وَلَوْ تَعُوضُ عَلَيْهِ عُودًا . ٥ وهانها كيول نبيل - اگر چاك رجهى لكرى بى ركه لية -

محمولة و تو تعوِظ محدید طور استان کی گردگانا یہ کی قسم کے مصائب وآلام سے حفاظت کا باعث ہے مسلم وائن محدید میں اس کی وجہ رہی بیان کی گئی ہے "لا یک شف انساء" (شیطان) ایسے برتن کونظ نہیں کرسکتا اورایک

مدیث کے مطابق آسان سے اتر نے والی مصبتیں نظے برتن کوبھی متاثر کرتی ہیں جبکہ ڈھکے برتن محفوظ رہتے ہے۔ صحیحہ میں اس سے اتر نے والی مصبتیں نظے برتن کوبھی متاثر کرتی ہیں جبکہ ڈھکے برتن محفوظ رہتے

ہیں صحیح بخاری میں ہے کہ برتن ڈھانیتے ہوئے بسم اللہ کہنا چاہیے۔ بیت میں دورہ کو میں میں میں میں میں اللہ کہنا چاہیے۔

2178 ـ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ عَنْ خَالِدٍ عَنْ سُهَيْلٍ عَنْ أَبِيْهِ

عَنْ أَبِى هُورَيُورَةَ قَالَ أَمَوَنَا رَسُولُ الوهرية وَالنَّمَ كَتَ بِي كدرسول الله الله الله عَن أَبِى هُو الله عَنْ أَبِى هُورَيُورَةَ قَالَ أَمَوَنَا رَسُولُ الوهرية وَالنَّهُ كَتَ بِي كدرسول الله الله عَن الله عَن الله عَنْ أَبِي هُورَكُونَ الله عَن ال

[27] بَابِ النَّهُي عَنُ النَّفُخِ فِي الشَّرَابِ ينے کی چیز میں پھونکنے کی ممانعت

2179 أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّنَنَا مَالِكٌ عَنْ أَيُّوبَ بْنِ حَبِيبٍ

عَنُ أَبِى الْمُشَنَّى الْبُحَهَنِيِّ قَالَ قَالَ قَالَ مَ مُنَ أَبِى الْبُحَهَنِيِّ قَالَ قَالَ مَ مُسرُوانُ لِأَبِى سَعِيدٍ الْبُحُدُرِيِّ هَلُ سَمِعُتَ رَسُولَ اللَّهِ عَلَيْكَ يَنُهٰى عَنِ الشَّرَابِ قَالَ نَعَمُ .

النَّفُخِ فِى الشَّرَابِ قَالَ نَعَمُ .

•

[•] صحيح مسلم، كتاب الأشربة، باب جواز شرب الحمر (5210)

[·] ابن ماجه، كتاب الأشربة، باب تخمير الاناء (3411)

[•] صحيح: ديكھے گزشته (2167)

الأشربة ١١٥ كاب الاشربة ١٢٥ كتاب الاشربة

فوائد: (۱) پانی میں پھونک مارنے سے پر ہیز کرنا چاہیے یہی تھم دوسری مادی اشیاء کا ہے مثلاً چاہے وغیرہ کہ ان کو شنڈ اکرنے کی غرض سے پھونک مارنے کی بجائے کسی دوسرے ذریعے سے شنڈ اکرلیا جائے یا تکاوغیرہ ہٹانے کے لیے چچ وغیرہ استعال کرلیا جائے (۲) بعض علاء اس سبب پانی پردم کرنے سے بھی منع کرتے ہیں جبکہ مخافین اسے خاص حالت قرار دے کراس کی اباحت کے قائل ہیں (تفصیل کے لیے دیکھیے ۔الدین الخالص)

2180 ـ أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن عَنِ ابْنِ عُينَةَ عَنْ عَبْدِ الْكَرِيمِ الْجَزَرِيِّ عَنْ عِكْرِمَةَ

عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ عَنَّ ابْنَعَاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ عَنُ ابْنَعَاسِ مَنْ النَّذَ كَبَّ بِي كَهَ بَي كَمَ بَي طَيْقَالِمُ نَ بِينَ كَى چيز مِيل النَّفُخ فِي الشَّرَابِ . • پُهو نَكنے ہے منع كيا۔

[28].... بَابِ فِي سَاقِي الْقَوْمِ آخِرُهُمُ شُرُبًا لوگوں کو پانی پلانے والاخود آخر میں پیئے

2181 حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةً وَسُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ رَبَاح

عَنُ أَبِي قَتَادَةً قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عِلَيْ الوقاده وَ اللهِ عَلَيْ كَتِمْ مِين كرسول الله طَيْعَ فَ فرمايا: "قوم سَاقِي الْقَوْمِ آخِرُهُمُ شُرُبًا. ٥٠ كو بلانے والاخود آخريس بيتا ہے۔ "

فواند: پانی پلانے والا سب سے آخر میں پانی پیئے گا یہی تھم ہراس خدمتگار کے لیے ہے جوعوام الناس کی خدمت پر مامور ہے اس اعتبار سے امرا ورؤسا کو چاہیے عوام کی ضروریات کو پورا کرنے کے بعد اپنی ضروریات پر تقویہ دیں۔ یقینا میسوچ اگر معاشروں ، ملکوں کی سطح پر پھیل جائے تو یہ عافیت کے گہوار سے بن جا کیں اور رعایا جذبہ خدمت سے سرشار ہوجائے۔ (واللہ الموفق)

❶صحيح: ابوداؤد، كتاب الأشربة، باب في التفخ في الشراب (3728) والترمذي، كتاب الأشربة، باب ماجاء في كراهية النفخ في الشراب (1888)

صحيح مسلم، كتاب المساحد، باب قضاء الصلاة، الفائنة واستحباب تعجيلها (681) وابن ماجه، كتاب الأشربة،
 باب ساقي القوم آخرهم شربا (3434)



ومن كتاب الرؤيا

خوابوں کے بیان میں

"السروعية" اس كى جمع رُوًي تى باس كامعنى خواب بخواب كو يحص مجمان كے ليے مخلف دانشور وں وعقلاء نے اپنے نظریات پیش کیے مگر اس کی حقیقت صحیح طور پر آشکارنہیں ہوسکی ،علامہ ابن خلدون اس بارے کھتے ہیں نفس ناطقہ اپنی روحانیت کی بدولت آنے والے واقعات کی بخو بی مطالعہ کر لیتا ہے اور اپنی قوت ادراک سے کام لیتا ہے بھی پیملم کمزور ہوتا ہے یعنی خیالی تمثیل ومحاکات کے باعث زیادہ صاف نہیں ہوتا تپ اس کی تعبیر کی ضرورت پیش آتی ہے اور مجھی بیعلم قوی ہوتا ہے محا کات کی بندشوں ہے میرا ایسی صورت میں اس کی تعبیر کی حاجت نہیں ہوتی ۔بہرصورت ہاری تحقیق کے مطابق خوابوں کاالگ جہان ہے جس کوعالم رؤیا کہتے ہیں اورخواب بھی انسان کے لیے بہت بری نعت ہے۔

> 1٦-... بَابِ فِي قَوُلِهِ تَعَالَى ﴿ لَهُمُ الْبُشُرَى فِي الْحَيْوةِ الدُّنْيَا ﴾ آيت ﴿ لَهُمُ الْبُشُوٰي فِي الْعَيَوٰةِ الذُّنْيَا ﴾ كَاتْغير

2182 - أَخْبَرَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَبَانُ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ أَبِيْ سَلَمَةَ ·

عَنُ عُبَادَةَ بُنِ الصَّامِتِ قَالَ قُلُتُ يَا نَبِيَّ اللَّهِ قَوْلُ اللَّهِ لَهُمُ الْبُشُرٰي فِي الْحَيَاةِ عَنْهُ أَحَدٌ قَبُلَكَ أَوْ أَحَدٌ مِنْ أُمَّتِي قَالَ هي الرُّؤُيا الصَّالِحَةُ يَرَاهَا الْمُسْلِمُ أَوْ تُرَى لَهُ. •

عباده والنفؤ بن صامت كت بن كهيس نے كها: نبي مطف الله لَهُمُ الْبُشُرٰى فِي الْحَيْوةِ الدُّنْيَا عَلَى الرادع؟ آب الدُّنْيَا فَقَالَ سَأَلُتِنِي عَنْ شَيْءٍ مَا سَأَلَنِي فَي فِرمايا: "تم نے اليي بات يوچي ہے كمتم سے يہلےكسى نے یا فرمایا کہ میری امت میں سے کسی نے نہیں بوچھی۔ پر فرمایا: 'نیا چھا خواب ہے جے مسلمان دیکھا ہے ہااس کے لئے دیکھاجا تاہے۔"

الكرايعي الكرايعي المرابع المر

ف وائد: مومنول كو دنيا ميس ملنه والى خوشخرى كاطريقه كارنيك خواب بيس كيونكه وحي كاسلسه تو

انبیاء کے ساتھ خاص ہے لہذا عام مؤمن بندے تک اللہ کے پیغام پہنچانے کا طریقہ یا تو الہام ہے کہ اجا تک ، دل میں القاء کر دیا جائے یا اسے سونے میں حقیقت سے آگاہ کر دیا جائے ۔

[2].... بَابِ فِي رُؤُيَا الْمُسُلِم جُزُءٌ مِنُ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزُنًا مِنُ النَّبُوَّةِ مسلمان کا خواب نبوت کے چھپالیس حصوں میں سے ایک حصہ ہے

2183 ـ أَخْبَرَنَا الْأَسْوَدُ بْنُ عَامِرِ حَدَّنَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنْسِ

عَنْ عُبَادَةً بُن الصَّامِتِ عَن النَّبِي عِلَيْ عَبِاده فِالنَّهُ بن صامت كمت بي كدني مِسْ عَلَيْ لم نع فرمايا: "مومن کا خواب علم نبوت کے چھیالیس حصول میں سے

قَى الْ رُؤُيَا الْمُؤْمِن جُزُةٌ مِنْ سِتَةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزُنًا مِنُ النُّبُوَّةِ. ٥

أيك حصه ہوتا ہے۔''

فواند: (١) آب كتيس ساله دورنبوت مين يبلع جمع ماه آپ كوخوابول ك ذريع آگابى ہوتی رہی ہے ہوتا یہ ہے کہ جو بچھ آپ مطاع آیا کوخواب میں نظر آتا وہ دن کوروشنی کی طرح واضح ہوجاتا لہذا تھیں سالوں کو چھے میننے کی صورت میں تقتیم کیا جائے تو یہ چھیالیس جھے نبوت کے بنتے ہیں ان میں سے ا کے سبلا حصہ فقط خوابوں برمشمنل ہے اس اعتبار سے بینبوت کا چھیالیسواں حصہ قراریایا (۲) نبوت کا حصہ ہونے کا بیمطلب ہر گزنہیں کہ اس میں نبوی وصف پیدا ہو گیا اس سے فقط تشبیہ مراد ہے کہ جس طرح اونجی آوا زاشهدان لا اله الاالله كيخوالامؤذن نهيس بوتا اگرچه بياذان كابي كلمه باس طرح خواب ديكھنے والے كوحامل جزء النبوة نہيں كہا جاسكتا (الفتح)

[3].... بَابِ ذَهَبَتِ النُّبُوَّةُ وَبَقِيَتِ الْمُبَشِّرَ اتُّ نبوت ختم ہوگئی ہےاور بشارتیں باقی ہیں

2184 حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي يَزِيدَ عَنْ أَبِيهِ

عَنْ سِبَاع بْنِ ثَابِتٍ

ام كرز كعبيد والثور كمبتى بين كه ميس في رسول الله طفي الله ہے سنا آپ فرماتے تھے:''نبوت ختم ہوگئی اورخوش خبریاں

عَنْ أُمّ كُور الكَعْبِيَّةِ قَالَتُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ ذَهَبَتِ النُّبُوَّةُ

❶ متـفـق عـليه: البخاري، كتاب التفسير، باب الرؤيا الصالحة جزء من ستة واربعين جزءًا من النبوة (6988) ومسلم، كتاب الرؤيا باب كون الرؤيا من الله وأنها جزء من النبوة

116 كتاب الرؤيا 83511755 ياقي ره گئي ٻن'' و نقيت المُسَدّ ات . ٥

فوائد: (١) ثابت بوا آب مستفاية أخرى يغير تق آب مستفاية ك بعدكوكى نبي آن والانبين (۲) نبوت کے اختتام کی بناء براب رحمٰن کا اینے بندوں کوآگاہی کا طریق کا رانہیں خوشخریاں عطا کرتا ہے جو کہ صاً کج خوابوں کے ذریعے ہوگگی البتہ صالح خواب وہی ہو گا جو دین وشریعت کے تابع ہو ورنہ وہ شیطان کو دھو کہ تو ہوسکتا ہے رحمٰن کی رہنمائی ہر گزنہیں ۔ نیز غیر نبی کا خواب دین میں دلیل نہیں ہے۔

[4] بَابِ فِي رُؤُيَةِ النَّبِيِّ ﴿ فِي الْمَنَامِ

خواب میں نبی طشیقاتی کود یکھنا

2185 ـ أَخْبَرَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيْ إِسْحْقَ عَنْ أَبِي الْأَحْوَصِ

عَنْ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَيْنَ عَبِداللَّهُ وَاللَّهُ عَبُدِ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَبُدِ اللَّهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْكُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْكُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْكُ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْكُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْهِ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُمْ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُمْ عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَاكُمُ عَلَيْكُ عَ

كيونكه شيطان ميري صورت نبيس بن سكتا.

مَنُ رَآنِي فِي الْمَنَام فَقَدُ رَآنِي فَإِنَّ نِهِ مَعِي حُوابٍ مِين ويكما اس نے حقيقاً مجھے ہی ويكما الشَّيُطَانَ لَا يَتَمَثَّلُ مِثْلِيُ. ٥

فسواند: (۱) صحابہ رئی الدیم کے حق میں تو بیاصد یہ میں کے میں کے تفصیلی آگاہی کی ضرورت ہے یعنی اگر تو آپ مطفع آیا کی شکل ایسی ہی نظر آتی ہے جو کہ قرآن سنت سے ملنے والی معلومات کے مطابق ہے اورخواب میں کوئی الیی بات بھی نہیں ہوتی جو کہ شریعت کے برعکس ہوتو پھر ممکن ہے آج آپ مشرطین کی زیارت کرنے والا واقع آپ مشکور نی می کی زیارت کررہا ہو ورنہ شیطان تو جھوٹ بول ہی سکتا ہے کہ کسی اور کی صورت اپنا کرآ کر کہدوے کہ میں رسول اللہ ہوں "فافھم پھدیك الله" (۲) اگر آپ مِنْ عَلَيْهِ الْجِيمِي صورت ميں نظر آئيں توبيد ديھنے والے كے اچھے ہونے كى علامت ہے اگر كوئى كى وغيره نظر آئے تو بیاصل میں دیکھنے والے کے دین میں موجود ہے (الفتح) للبذا خواب دیکھنے والے کواس کی اصلاح کی کوشش کرنی جاہیے۔

2186- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُصَفِّى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ عَنْ الزُّبَيْدِيِّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي

صحيح: ابن ماجه، كتاب تعبير الرؤيا، باب الرؤيا الصالحه يراها المسلم أو ترى له (3496)

[◙] صحيح: الترمذي، كتاب الرؤيا، باب ماجاء في قول النبي من رأني في المنام فقد رأني) (2279) وابن ماجه، كتاب تعبير الرؤيا، باب رؤية النبي ﴿ 3900)

الكافيعيّ الكافيعيّ كتاب الرؤيا كتاب الرؤيا كتاب الرؤيا

ابو قادہ فالٹھ کہتے ہیں کہ رسول اللہ منظی میں نے فرمایا: ''جس نے مجھے خواب میں دیکھا اس نے حقیقتا مجھے ہی

عَنُ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَنُ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْهُ مَنُ رَآنِي فِي الْمَنَامِ فَقَدُ رَأَى الْحَقَّ. • مَنُ رَآنِي فِي الْمَنَامِ فَقَدُ رَأَى الْحَقَّ. •

[5] بَابِ فِيمَنُ يَرِٰى رُؤُيا يَكُرَهُهُ بُراخوابِ دِيكِفِ والِيُضِ كَمْتَعَلَّلَ

وتكها "

2187- أَخْبَرَنَا أَبُو الْمُغِيرَةِ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ عَنْ يَحْيَى

لَ عبدالله بن ابوقادہ رہ النظائے والد سے بیان کرتے ہیں کہ رسول الله سے آئے فرمایا: ''اچھا خواب الله تعالیٰ کی فرا طرف سے اور برا خواب شیطان کی طرف سے نُی ہے۔ جب کوئی برا خواب دیکھے جس سے ڈرتا ہوتو اپنی با کیں طرف تین دفعہ تھو کے اللہ تعالیٰ کی شیطان سے پناہ مائکے اس سے اسے تکلیف نہیں بہنچے گی۔''

عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ أَبِى قَتَادَةَ عَنُ أَبِيُهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عِنْ اللّهِ عَنْ السَّوْوَيَا الصَّالِحَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِذَا مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِذَا حَلَمَ أَحَدُكُمُ حُلْمًا يَحَافُهُ فَلْيَبُصُقُ عَنُ حَلَمًا يَحَافُهُ فَلْيَبُصُقُ عَنُ شِمَالِهِ ثَلَاكَ مَرَّاتٍ وَلْيَتَعَوَّذُ بِاللّهِ مِنَ شِمَالِهِ ثَلَاكَ مَرَّاتٍ وَلْيَتَعَوَّذُ بِاللّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهَا لَا تَصُرُّهُ. ٥ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهَا لَا تَصُرُّهُ. ٥ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهَا لَا تَصُرُّهُ.

فوائد: (۱) "الحُدم" خواب میں نظرآنے والے فاسد خیالات کا نام ہے (۲) برے خیالات وخواب شیاطین کے سبب ہوتے ہیں لہذا الیک صورت میں اکلی تحقیر و تذلیل کے لیے تین دفعہ تھوکا جائے گا (۳) بائیں طرف کو خاص کرنے کی وجہ ہے کہ دائیں کے برعکس بیگندگی اور نالیند بدہ چیزوں کا مقام ہے (۳) خوابوں کے نقصان دہ اثرات ہوتے ہیں خواب دیکھنے کے بعد درج بالا اُمورسر انجام دینے سے بندہ اس سے محفوظ رہتا ہے۔

2188_ أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ رَبِّهِ بْنِ سَعِيْدٍ قَالَ.....

ابوسلمہ و اللہ بن عبدالرحل كہتے ہيں: "ميں خواب ديكها تھا اور بيار ہوجاتا تھا ميں نے اس كا ذكر ابوقادة والله سے كيا تو انہوں نے كہا: "ميں بھى خواب ديكھا تھا جس سے بيار

سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ بُنَ عَبُدِ الرَّحُمَنِ يَقُولُ إِنْ كُنْتُ لَأَرَى الرُّؤُيَا تُمُرِضُنِى فَذَكَرُتُ ذٰلِكَ لِأَبِى قَنَادَةَ قَالَ وَأَنَا

❶ متفق عليه: البخاري، كتاب التعبير، باب من رأى النبي في المنام (6996) ومسلم، كتاب الرؤيا، باب قول النبي ﷺ (5880)

[•] متفق عليه: البخاري، كتاب الطب، باب النفث في الرقية (5747) ومسلم، كتاب الرؤيا، باب في كون الرؤيا من الله (5863)

الكانوي المرويا ١١٥ المرويا كتاب الرويا المرويا المرويا المرويا المرويا المرويا المرويا المرويا المرويا المرويا

ہو جاتا تھا۔ حتی کہ بیں نے رسول اللہ منظی آیا ہے سنا وہ فرماتے سے زامچھا خواب اللہ کی طرف سے ہے تم بیں سے جواپی پیند کا خواب دیکھے تو اللہ کی تعریف کرے اور الحقے آدمی کے علاوہ اور کسی سے بیان نہ کرے اور جب برا خواب دیکھے تو اپنی بائیس جانب تین دفعہ تھوکے اور اس کے شرسے اللہ کی بناہ مائے اور اسے کسی سے بیان نہ کرے اس طرح اسے ضرر نہیں ہنچے گا۔''

إِنْ كُنْتُ لَأَرَى الرُّؤُيَا تُمُوضُنِى حَتَى سَمِعَتُ رَسُولَ اللهِ عَلَىٰ يَقُولُ الرُّؤُيَا السَّالِحَةُ مِنَ اللهِ فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمُ مَا السَّالِحَةُ مِنَ اللهِ فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمُ مَا يُحِبُ فَلْيَحُمَدِ اللهَ وَلَا يُحَدِّثُ بِهَا إِلَّا مَنُ يُحِبُ فَلْيَتُفُلُ مَنَ يُحِبُ وَإِذَا رَأَى مَا يَكُرَهُ فَلْيَتُفُلُ مَن يُحِبُ وَإِذَا رَأَى مَا يَكُرَهُ فَلْيَتُفُلُ عَن يُسَارِهِ ثَلاثًا وَلْيَتَعَوَّذُ بِاللهِ مِن عَن يَسَارِهِ ثَلاثًا وَلْيَتَعَوَّذُ بِاللهِ مِن شَرِهَا وَلَا يُحَدِّثُ بِهَا أَحَدًا فَإِنَّهَا لَنُ تَصُدُّ هُولًا فَإِنَّهَا لَنُ تَصُدُّ هُ . •

فوائد: "لا يحدث به احدا" معلوم ہوا كه برا خواب كى كو بيان كرنے سے احتراز كرنا چاہيے كيونكه بيان كرنے كا يہ نقصان ہے كه اگر كوئى برى تعبير منه سے نكال دے تو وہ پورى ہو جاتى ہے حديث ميں ہے كہ خواب پرندے كى ٹا نگ كے ساتھ بندھا ہوتا ہے تعبير بيان كرنے پر وہ واقع ہو جاتا (ترندى) لهذا جيسى كوئى منه سے بات نكالے گا ويبا بى ہو جائے گا اى ليے اگر بيان كرنا بھى پڑے تو ايسے آدى كا انتخاب كيا جائے جو جھدار ہواور علم التعبير سے آگاہ ہواور حدیث ميں ہے "لا تحددث الا جيبا اولبيبا." رترندى) (خواب) فقط بيارے يا مجھدار آدى كو بيان كرو۔

[6] بَابِ الرُّؤُيَا ثَـُلاثُ

خواب تین طرح کے ہوتے ہیں

2189 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيْرِ عَنْ مَخْلَدِ بْنِ حُسَيْنِ عَنْ هِشَامٍ عَنِ ابْنِ سِيْرِيْنَ

ابو ہریرۃ والنی کہ میں کہ رسول اللہ مطفی آئے نے فرمایا:

د خواب تین قتم کے ہوتے ہیں۔ اچھا خواب اللہ کی طرف سے بثارت ہوتا ہے اور ایک خواب شیطان کی طرف سے خمگین کرنے کے لئے ہوتا ہے اور ایک خواب وہ ہے کہ انسان اس ہیں اینے دل میں خیالات دو ہرایا کرتا ہے لہذا

عَنُ أَبِى هُ رَيُ رَةً قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنُ أَبِى هُ رَيُ رَقَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَى اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ ا

الكانيني الكانيني ١١٩ كتاب الرؤيا ٢٥٠ كتاب الرؤيا

يُحَدِّثُ بِهِ وَلْيَقُمُ وَلْيُصَلِّ . 9

جب کوئی ایس بات دیکھے جواسے نا پیند ہوتو اسے حاہیے

کہ اٹھ جائے اور دعا کرے۔"

[7] بَابِ أَصُدَقُ النَّاسِ رُوُيًا أَصُدَقُهُمُ حَدِيثًا لوگوں میں سے زیادہ سچا خواب زیادہ سچے انسان کا ہوتا ہے

2190 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرِ عَنْ مَخْلَدِ بْن حُسَيْنِ عَنْ هِشَامٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ

ابو ہرریۃ خالتی کہتے ہیں کہ رسول الله طفی می نے فرمایا:
"جب قیامت قریب ہوگی تو ایسے بہت کم ہوگا کہ موس کا خواب حوال ہوگا جوان

ہے زیادہ سے بولنے والا ہوگا۔

عَنُ أَبِسى هُسرَيُسرَةً قَالَ قَالَ دَسُولُ اللّهِ ﷺ إِذَا اقْتَرَبَ الزَّمَانُ لَمُ تَكَدُ رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ تَكُذِبُ وَأَصُدَقُهُمُ رُؤُيَا

أَصُدَقُهُمُ حَدِيثًا . 9

فوائد: (۱) اخیر دور میں زمانہ قریب آجائے گا وقت انتہائی تیزی سے گزرے گا (۲) ایسے دور میں اہل ایمان کے خواب حقیقوں پر بنی ہوں گے اور سب سے سچا خواب سب سے سچ بندے کا ہوگا امام مہلب رائیں لوگوں کو تین درجات میں تقیم کرتے ہیں (۱) انبیاء: ان کے خواب فقط سچائی پر بنی ہوتے ہیں بسا اوقات یہ تعبیر کے محتاج ہوتے ہیں (ب) نیک لوگ: ایکھا کھر خواب تعبیر کے محتاج ہوتے ہیں (ج) ان کے علاوہ بقیہ لوگوں کے خوابوں میں سے ، جمولے ملے جلے ہوتے ہیں (تنقیح الرواق)

[8] بَابِ النَّهُي عَنُ أَنْ يَحُتَلِمَ الرَّجُلُ رُوُيَا لَمُ يَرَهَا اللهِ عَنْ أَنْ يَحُتَلِمَ الرَّجُلُ رُوُيَا لَمُ يَرَهَا

2191 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ عَبْدِ الْأَعْلَى عَنْ أَبِيْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ

ایک جوگرہ لگانے کے لئے دیا جائے گا۔''

عَنُ عَلِيِّ يَرُفَعُ الْحَدِيثَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ مَنُ كَذَبَ فِى حُلْمِهِ كُلِّفَ عَقُدَ شَعِيرَتَيْن يَوُمُ الْقِيَامَةِ . ۞

فوائد: (۱) جھوٹا خواب بیان کرنا انتہائی فتیج حرکت ہے(۲) ایسے شخص کو ناممکن کام کا مکلّف

❶ متفق عليه: البخاري، كتاب التعبير، باب القيد في المنام (7017) ومسلم، كتاب الرؤيا، باب في كون الرؤيا من الله (5865)

وصحيح: سابقه صديث كى ايك طرف --

[€] صحيح بالشواهد: تاريخ بغداد للخطيب 93/11 الترمذي، كتاب الرؤيا، باب في الذي يكذب في حلمه (2281)

الرويا كتاب الرويا كالتحديد

تھرایا جائے گانہ یہ کام وقوع پذیر ہواور نہ ہی اس کی بخشش کی کوئی سبیل نکلے۔ [9] بَابِ أَصُدَقُ الرُّوُ يَا بِالْأَسْحَادِ سحری کے وقت خواب سیا ہوتا ہے

2192 - أَخْبَرَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ وَهْبٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ عَنْ دَرَّاجٍ

أَبِي السَّمْحِ عَنْ أَبِي الْهَيْثَمِ

ابوسعید خدری و الله کہتے ہیں کہ رسول الله ملطی الله نے فرمایا: ''سحری کے وقت کا خواب بہت سیا ہوتا ہے۔''

عَنُ أَبِى سَعِيدٍ الْخُدُرِيِّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ أَصُدَقُ الرُّؤُيَا

بِالْأَسْحَارِ. 9

فواند: ندکورہ حدیث کی سندگر چیضعیف ہے بہر حال حاکم رکھیے نے متدرک جب کہ ابن حبان حبان رکھیے نے اپنی صحیح میں اسے صحیح قرار دیا ہے اور امام بیہتی رکھیے نے بھی اس کی صحت کی جانب اشارہ کیا ہے (سنقیح الرواق) کے اوقات میں سیچ خواب آنے کی وجہ یہی ہے کیونکہ اس وقت خیالات منتشر نہیں ہوتے وہن کی موجہ یہی ہوتا ہے اور معدہ خالی ہونے کی وجہ سے بخارات بھی ذہن کی طرف نہیں چڑھتے کہ جس سے ذہن میں فاسد خیالات بیدا ہوں اور کیونکہ فرشتوں کے نزول کا وقت ہوتا ہے واللہ اعلم (فتح الباری)

[10] بَابِ كَرَاهِيَةِ أَنُ يَعُبُرَ الرُّؤُيَا إِلَّا عَلَى عَالِمٍ أَوُ نَاصِحٍ عَالَمٍ مَا فَ نَاصِحٍ عالم يا ناصح كے علاوہ كسى اور سے خواب بيان كرنے كى كراہت

2193 ـ أَخْبَونَا مُحَمَّدُ بُنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بَنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ ابْنِ

ابو ہرریہ ڈائٹن کہتے ہیں کہ نبی منطق میں فرماتے تھے:خواب کو عالم یا خیرخواہ کے علاوہ کسی اور سے بیان نہ کرو '' عَنُ أَبِى هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ لَا تَقُصُّوا الرُّؤُيَّا إِلَّا عَلَى عَالِمٍ أَوُ

نَاصِح. 🤨

¹ ضعيف: الترمذي، كتاب الرؤيا، باب (بهم البشري في الحياة الدنيا)

صحیح : الترمذی، کتاب الرؤیاء باب فی تأویل مایستحب منها ومایکره (2280)

الكَالِيَّا الْكَالِيَّا فِي اللهِ ا

پیارے وظ مند کے سامنے (خواب) بیان کرو۔ان سے معلوم ہوتا ہے کہ خواب ایسے بندے کے سامنے بیان کیا جائے جو سنتے ہی الٹی سیدھی منہ سے نکالنے کی بجائے سوچ سمجھ کراچھی بات ہی منہ سے نکالے کیونکہ تعبیر کرنے والے کے مطابق ہی خواب واقع ہوکر رہتا ہے (دیکھئے آئندہ اثر)

[11] بَابِ الرُّوُيَا لَا تَقَعُ مَا لَمْ تُعَبَّرُ خوابِ کی تعبیر بیان کرنے سے پہلے اس کا اثر واقع نہیں ہوتا

2194- أَخْبَرَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ يَعْلَى بْنِ عَطَاءٍ قَالَ سَمِعْتُ وَكِيعَ بْنَ عُدُس يُحَدِّثُ عَنْ عَمِّه........

أَبِى رَذِينٍ الْعُقَيْلِي أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ الورزين عَقَيلَ فِالنَّمَ كَمَةَ بِي كَه انهول في رسول اللهِ وَاللهِ وَلَا اللهُ وَلَا اللهُ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَالللهِ وَاللهِ وَاللهُ وَاللهِ وَاللهُ وَاللهِ وَاللهُ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهُ وَاللهِ وَاللهِ وَالل

فواند: سوائد ہواس کی ہے جیسے کہ ایک مربع الحرکۃ پرندہ ہواس کی اللہ علیہ مربع الحرکۃ پرندہ ہواس کی اللہ کے ساتھ معلق شے ہلکی سی جنبش ہے گر پڑتی ہے اس طرح گویا تقدیر کے وقوع کے لیے مجر کے ہونٹوں کی حرکت ہی کافی ہوتی ہے جیسا کہ الطبی راٹیویہ فرماتے ہیں۔

[12] بَابِ فِي رُؤُيَةِ الرَّبِّ تَعَالَى فِي النَّوُمِ خُوابِ مِن رب تَعَالَى كُود كِينا

2195 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثِنِي الْوَلِيْدُ حَدَّثِنِي ابْنُ جَايِرٍ عَنْ خَالِدِ بْنِ اللَّجُلَاجِ وَسَأَلَهُ مَكْحُولٌ أَنْ يُحَدِّثُهُ قَالَ

عبدالرحل بن عائش والفيز كہتے ہيں ميں نے رسول الله طفي آئے سے سناوہ فرماتے تھے: "ميں نے اپنے رب كو بہت اچھى صورت ميں ديكھا۔ اس نے فرمايا: "متهيں علم بہت اچھى صورت ميں ديكھا۔ اس نے فرمايا: "متهيں علم بے كه فرشتے كس كے متعلق بات كررہے ہيں؟" ميں نے

سَمِعُتُ عَبُدَ الرَّحُمَنِ بُنَ عَائِشِ يَقُولُ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ رَأَيُتُ رَبِّى فِى أَحُسَنِ صُورَ-ةٍ قَالَ فِيمَ يَخُتَصِمُ الْمَلُا ٱلْأَعُلٰى فَقُلُتُ أَنْتَ

 [●] صحيح: ابو داؤد، كتاب الأدب، باب ماجاء في الرؤياء (5020) والترمذي، كتاب الرؤيا باب اذا رأى في المنام مايكره (2278)

المُعْلِينَ المُعْلِينَ المُعْلِينَ المُعْلِينَ المُعْلِينَ المُؤْمِلِ المُؤمِلِ المُؤمِلِ المُؤمِلِ المُؤمِلِ

کہا: '' تو ہی بہتر جانتا ہے اے میرے پروردگار، پھراللہ تعالی نے اپنا ہاتھ میرے دونوں کندھوں کے درمیان رکھا تو میں نے اپنا ہاتھ میرے دونوں کندھوں کے درمیان رکھا تو میں نے اس کی ٹھنڈک اپنے دونوں بیتانوں کے درمیان محسوس کی ، پس میں نے آسان و زمین کی ہر چیز کو جان لیا ، اور آپ نے بیآ بیت تلاوت کی: '' اور اسی طرح ہم نے ابر اہیم کوزمین و آسان کی بادشاہت دکھائی تا کہ وہ یقین کرنے والوں سے ہو جائے'' (سورۃ انعام: ۵۷)

فوائد: (۱) احد کے ہاں معاذ زالتہ سے سے ہے ہے (قلت لا ادری یا رب) سوال اس کا بہ جواب (أنت يا اعلم يا ربّ) 2 دفعة كرارك ساته مواجب كرزندى كمطابق آپ الني الله في آيا في الله اوری) کہاتھا (۲) ان صفات والی احادیث پر ایمان لا نالازم ہے بغیر کسی تا ویل تمثیل وتنشبیہ وتعطیل کے امام جوینی رہنے یہ فرماتے ہیں ان طواہر کے بارے علماء کے مختلف مسالک ہیں پچھان کی تا ویل کے قائل ہیں وہ قرآنی آیات اور صحح احادیث میں اس کا احر ام کرتے ہیں جب کہ ائمہ سلف تا ویل ہے رک جانے کے قائل ہیں ان کے نزدیک ان ظاہری دلائل کو اس طرح مانا جائے گا اور اُن کی تشریح ومعنی رب تعالی کے سپر دہو نگے (س) لہذا سلف و خلف کا یمی عقیدة ہے جیسا کہ استواء کے متعلق سوال جواب میں سلف سے منقول ہے "الاستواء معلوم و كيفية مجهول والايمان به واجب والسؤال عنه بدعة . " السُّعرش پر مستوی ہونے کا ہمیں علم ہے جب کہ کیفیت سے ہم ناواقف ہیں اس برایمان لانا فرض جب کہ اس بارے سوال بدعت ہے کیونکہ صحابہ و ان سفات کو جیسے سنا ویسے ہی مان لیا کسی نے کیفیت بارے دریافت نہیں کیا (واللہ اعلم) (۴) بعض لوگ اس حدیث کی بناء پرمحمہ ﷺ کوبشریت سے نکال دیتے ہیں اور کہتے ہیں آپ مطفی این سبھی کچھ جان گئے تھے جو ہوا اور جو ہونے والا تھا آپ مطفی کیا ہے کو لوح وقلم سبھی کاعلم تھا حالان بيلوگ قرآن كوير صحة بين الله تعالى واضح فرمات بين (١) ﴿ قُلُ مَا كُنتُ بِدُعُامِّنَ الرُّسُلِ وَمَا آذرى مَا يُفْعَل بِيُ وَ لَا بِكُمْ _ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوْحِي إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴾ (الاهان 9) كم دو میں کوئی انوکھا رسول نہیں ہوں مجھے پینہیں پتہ میرے ساتھ (آخرت میں) کیا ہونا اور تمہارے ساتھ كيا_ مين توصرف اپني طرف مونے والى وحى كى بيروى كرتا مون اور مين صرف واضح ڈرانے والا مول ـ

 [◘] حسن بالشواهد: السنة لابن ابي عاصم (465) واحمد 243/5، والترمذي، كتاب التفسير، باب ومن سورة (ص) 3233

الله المرويا (123 كتاب الرويا (١٤٥ كتاب (١٤٥ كتال

(ب) ﴿قُلُ لَّا آمُلِكُ لِنَفْسِمُ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا إِلَّا مَاشَآءَ اللَّهُ طوَلَو كُنْتُ آعُلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكُثُرُتُ مِنَ الْغَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوَّءُ إِنْ آنَا إِلَّا نَذِيْرٌ وَّ بَشِيْرٌ لِّقَوْم يُّؤُمِنُونَ ﴾ (الاناف: 188) '' کہہ دومیں اینے نفع ونقصان کا ما لک نہیں ہوں مگر جواللہ جا ہے اورا گرمیں غیب دان ہوتا تو میں بہت سی خیر كوا كهنا كرليتا اور مجھے كوئى تكليف نه پنجتي ميں تو صرف ڈرانے والا خوشخبرى دينے والا ہوں '' چنانچہ بيداوراس جیسے بہت سے دلائل ہیں جواس بات پرشاہد ہیں کہ آپ مطفی آیا بشر ہی تھے اور آپ کو انسانوں کی طرح ہی فقر وغنی صحت و مرض لاحق ہوتی تھی لیکن آپ مطابقاتیا اللہ کے رسول او رسلغ امین تھے اور ان صفات کی بناء پر ساری کا ئنات کے امام تھے جب کہ ندکورہ دلائل کوسامنے رکھتے ہوئے حدیث برغور کرنے سے معلوم ہوتا ہے کہ اللّٰہ کا سوال فرشتوں کے جھکڑنے کے بارے تھا جو کہ آپ مِشْجَاتِیْ کومعلوم کروایا گیا اور آپ مِشْجَاتِیْنَ فقط انبیں امور ہے آگاہی حاصل کرسکے _(واللہ اعلم)

2196 - أَخْبَرَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَٰنِ عَنْ قُطْبَةَ

عَنُ يُوسُفَ عَن ابُن سِيوينَ قَالَ مَنُ يوسف كتب بيل كه ابن سيرين ن كها: "جس ن خواب

رَأَى رَبَّةً فِي الْمَنَامِ وَخَلَ الْجَنَّةَ. ٥ مين ايخ رب كود يكما وه جنت مين واخل موكار "

[13] بَابِ فِي الْقُمُصِ وَالْبِئُرِ وَاللَّبَنِ وَالْعَسَلِ وَالسَّمُنِ وَالتَّمُر وَغَيْر ذٰلِكَ فِي النَّوُم

تمیض' کنوال' دوده شهد کهی اور تھجور وغیرہ کا خواب میں دیکھنا

2197 ـ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِح حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ هُوَ ابْنُ سَعْدِ عَنْ صَالِح بْنِ كَيْسَانَ عَنِ ابْنِ شِهَابِ عَنْ أَبِي أَمَامَةَ بْنِ سَهْلِ بْنُ حُنَيْفٍ

ابو سعید خدری و الله کیتے ہیں کہ انہوں نے رسول نے دیکھا کہ لوگ میرے یاس پیش کئے جارہے ہیں۔اور انہوں نے قمیض بہنی ہوتی تھیں جن میں سے کھی میسیں سینے تک پیچی تھیں اور کچھ اس سے پنچ تھیں۔ میرے سامنے عمرٌ بن خطاب بھی پیش کئے گئے ۔ انہوں نے ایسا

عَنُ أَبِي سَعِيدٍ النَّحُدُرِيِّ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ بَيْنَا إِذَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ النَّاسَ يُعُرَضُونَ عَلَيَّ وَعَلَيْهِمُ قُمُصٌ مِنُهَا مَا يَبُلُغُ الثُّدِيُّ وَمِنُهَا مَا يُبُلُغُ دُونَ ذٰلِكَ وَعُرضَ عَلَيَّ عُمَرُ بُنُ الْخَطَّابِ وَعَلَيْهِ قَمِيصٌ يَجُرُّهُ فَقَالَ الكاليمين الكالي

مَنُ حَوْلَـهُ فَمَاذَا تَأَوَّلُتَ ذَٰلِكَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ الدِّينَ . •

کرتہ پہنا ہوا تھا جوز مین پرلگ رہا تھا۔"آپ ملط آئے آ آس پاس کے لوگوں نے کہا ، یا رسول الله ملط آئے آیا اس کی کیا تعبیر ہے؟ آ یا نے فرمایا:" دین۔"

فوائد: (۱) معبر کے لیے قرآن وسنت کا عالم ہونا ضروری ہے تا کہ وہ قرآن وسنت میں غور کر کے اس کی تعبیر کر سکے (۲) خواب میں قمیض کا نظر آنا یہ بندے کی دینداری کی علامت (۳) فضیلت عمر وُٹائِنَّهُ سے آگا ہی ہوتی ہے کہ آپ وُٹائنۂ دین کے معاملے میں سب سے آگے تھے۔

2198 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو عَلِيّ الْحَنَفِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللّهِ هُوَ ابْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِع

أَنَّ ابُنَ عُمَسِ قَسَالَ كُنُتُ فِي عَهُدِ النَّبِي فَيْ وَمَا لِى مَبِيتُ إِلَّا فِى مَسْجِدِ النَّبِي فَيْ وَمَا لِى مَبِيتُ إِلَّا فِى مَسْجِدِ النَّبِي فَيْ وَكَانَ النَّبِي فَيْ الْمُ الْمَبَحَ مَا لِي مَلِيهِ الرُّوُيَا قَالَ فَقُلُتُ مَا لِى لاَ أَرَى شَيْنًا فَرَأَيُتُ كَأَنَّ النَّاسَ مَا لِى لاَ أَرَى شَيْنًا فَرَأَيُتُ كَأَنَّ النَّاسَ يُحْشَرُونَ فَيُسرُمٰي بِهِمُ عَلَى أَرُجُلِهِمُ فَى رَكِي فَلَحُدُتُ فَلَمَّا ذَنَا إِلَى الْبِيْرِ فَى رُكِي فَلَمَّا ذَنَا إِلَى الْبِيْرِ فَلَمَّا ذَنَا إِلَى الْبِيْرِ فَلَمَّا ذَنَا إِلَى الْبِيْرِ فَلَمَّا اللَّهُ لَو فَي رَكِي فَلَمَّا خَلُوا بِهِ ذَاتَ الْيَمِينِ فَلَمَّا اللَّهِ لَو اللهِ فَاتَ الْيَمِينِ فَلَمَّا اللهِ لَو مَنْ اللّهِ لَو مَنْ اللّهِ لَو فَسَأَلُتُ حَفْصَةً عَنُهَا فَقَالَتُ بِعُمَ الرَّجُلُ عَبُدُ اللّهِ لَو فَسَأَلُتُ حَفْصَةً عَنُهَا فَقَالَتُ بِعُمَ الرَّجُلُ عَبُدُ اللّهِ لَو فَسَأَلُتُ مَعْ الرَّجُلُ عَبُدُ اللّهِ لَو فَسَأَلُتُ مُ فَقَالَ بِعُمَ الرَّجُلُ عَبُدُ اللّهِ لَو فَسَأَلُتُ مُ فَقَالَ بِعُمَ الرَّجُلُ عَبُدُ اللّهِ لَو فَسَأَلُتُ مُ وَاللّهُ لِلْ فَعَمَ الرَّجُلُ عَبُدُ اللّهِ لَو كَانَ يُصَلِّى مِنَ اللّهِ لَو كَانَ يُصَلِّى مِنَ اللّهِ لَو اللّهِ لَو كَانَ يُصَلِّى مِنَ اللّهِ لَو كَانَ يُصَلِّى مِنَ اللّهُ لِي

فوائد: (۱) بالغ آدی معدیس سوسکتا ہے (۲) مجبوری کی حالت میں حالت جنابت میں مسجد

 [◘] متفق عليه: البخاري، كتاب الإيمان والشرائعه، باب تفاضل أهل الإيمان في الأعمال (23) ومسلم، كتاب فضائل
 الصحابه، باب مناقب عمرٌ بن خطاب ابي حفص القرشي العدوي (3691)

②متفق عليه: البخارى، التهجد، باب فضل قيام الليل (1131) ومسلم، كتاب فضائل الصحابه، باب من فضائل عبدالله بن عمر رئائذ (6320)

حَكَرُ لِيُنْ الْكَالِيْفِي الْمُولِيا اللهِ وَيَا اللهِ وَيَا اللهِ وَيَا اللهِ وَيَا اللهِ وَيَا اللهِ وَيَا

سے گزرا جا سکتا ہے (۳) پریثان خواب کسی اپنے چاہنے والے یا کسی مجھدار کے سامنے بیان کرنا چاہیے (۴) خواب بسا اوقات موجود کوتا ہیوں کی طرف اشارے کے لیے بھی آتے ہیں (۵) تہجد کی ادائیگی انسان کی اچھائی کی علامت ہے۔

2199 حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ خَالِدٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مُحَمَّدٍ الْفَزَارِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ

فواند: (۱) خواب میں دودھ کا نظر آنا بیلم کی جانب اشارہ ہوتا ہے (۲) آپ طفی آئی کے علم سے عمر خوانی نے کئی سے میں دودھ کا نظر آنا بیلم کی جانب اشارہ ہوتا ہے جانچہ عمر خوانی سے کئی علمی آئی ہے کئی علمی آئی ہے کئی علمی آئی ہے کہ فقیہ ہے کہ فقی ہے کہ فقیہ آئی ہے کہ فقیہ ہے کہ فقیہ ہے کہ فقیہ آئی ہے کہ فقیہ ہے کہ فقیہ ہے کہ فقی ہے کہ فقیہ ہے کہ فقی ہے کہ فقی ہے کہ فقیہ ہے کہ فقیہ ہے کہ کے کہ فقی ہے کہ فتا ہے کہ فتا ہے کہ فقیہ ہے کہ کے کہ فتا ہے کہ کو کی کے کہ کے کہ کی کے کہ کے کہ کے کہ کے کہ کے کہ کو کی کے کہ کے کہ کے کہ کے کہ کے کہ کے کہ

2200 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّلْتِ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ حَمْزَةَ ابْنِ عَيْدِ اللّٰهِ يْنِ عُمَرَ

ابن عمر کہتے ہیں کہ میں نے نبی طفظ اللے سنا آپ فرماتے تھے: "میں سویا ہوا تو۔میرے پاس دودھ کا بیالہ لایا گیا۔میں نے اسے پیا۔حق کہ میں ناخنوں تک سیر ہو گیا۔میں نے بقیہ دودھ عمر کودیا۔ "لوگوں نے کہا: یارسول اللہ!اس کی کیا تعبیر ہے۔آپ سے اللہ اس کیا تعبیر ہے۔ آپ سے اللہ اس کی کیا تعبیر ہے۔آپ سے اس کی کیا تعبیر ہے۔آپ سے اللہ اس کی کیا تعبیر ہے۔آپ سے اس کی کیا تعبیر ہے۔آپ سے اس کیا تعبیر ہے۔ اس کیا تعبیر ہے۔ اس کیا تعبیر ہے تعبیر ہے۔ اس کیا تع عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ سَمِعُتُ النَّبِيَّ عَلَىٰ الْمَعُتُ النَّبِيَّ عَلَىٰ الْمَعُتُ النَّبِيَّ عَلَىٰ الله الله الله الله مَن الله مِن الله مَن الله م

2201 ـ أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ أَخْبَرَنَا الْوَلِيدُ حَدَّثَنَا ابْنُ جَابِرِ

¹ اسناده جيد: سابقه كاتكرار بـ

[◙]متفق عليه: البخاري، كتاب العلم، باب فضل العلم(82) ومسلم، كتاب فضائل الصحابه، باب من فضائل عمر رُوالتَّمُّ (6140/

الكاليكي الكاليكي المرؤيا المر

محد بن قیس فالنی کہتے ہیں کہ کہ مجھ سے نبی طفی این کے ایک الیک اللہ اللہ دودھ کا دیکھنا ایک سے بیان کیا کہ دودھ کا دیکھنا اسلام ہے۔ اور اونٹ نم ، اور سبزہ جنت اور عورت کا دیکھنا جملائی ہے۔

2202 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ كَثِيْرٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ هُوَ ابْنُ كَثِيْرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ

، بن.....

عبدالله بن عباس كہتے ہيں كه رسول الله والله الله الله الله صحابیوں سے فرماتے تھے:تم میں سے سی نے خواب دیکھا ہوتو وہ مجھے بتائے میں اس کی تعبیر بناؤں گا ۔'' کہتے ہیں: ایک آ دی آیا اور اس نے کہایا رسول اللہ! میں نے آسان اور زمین کے درمیان ایک سائبان دیکھا جس سے شہداور میں میک رہا ہے۔ اور میں نے ایک رسی دیکھی جوآ سان سے زمین تک پینی ہوئی ہے۔ اور میں نے پچھ لوگوں کو ویکھا اس میں سے مقبلی بحر بحر کر لے رہے ہیں ۔ کوئی زیادہ لیتا ہے اور کوئی تھوڑا۔ تو آ ب مشکھ کیٹا رسی پکڑ کراوپر چے ہے ۔اللہ نے آپ طنے قاتی کواوپر چڑھایا۔ پھرآپ کے بعد والا شخص أسے بكر كراوپر چرا هايا _تواس كو بھى الله نے اویر چڑھا دیا۔ پھراس کے بعد والا مخص اس کو پکڑ کر اویرچ صا۔اسے بھی اللہ نے اوپر چڑھادیا۔ پھراس بعد کے والے خض نے اس کو پکڑا تو وہ کاٹ دی گئی۔ پھراسے جوڑ دیا گیا ۔ پس وہ جڑ گئی ،حضرت ابو بکر رفائنۂ نے کہا: یا رسول الله مضافية إ مجها جازت ديجيم من اس كي تعبير بيان كرول - آب مططع الله نفي أنه فرمايا: "اس كى تعبير بيان كرو ـ "

عَبُدِ اللُّدِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَلَىٰ كَانَ مِمَّا يَقُولُ لِأَصْحَابِهِ مَنُ رَأْي مِنُكُمُ رُؤُيَا فَلُيَقُصَّهَا عَلَيَّ فَأَعُبُرَهَا لَهُ قَالَ فَجَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللُّهِ رَأَيُتُ ظُلَّةً بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرُضِ تَنْطِفُ عَسَلًا وَسَمُنًا وَرَأَيْتُ أُنَّاسًا يَتَكَفَّفُونَ مِنْهَا فَمُسْتَكُثِرٌ وَمُسْتَعِيلٌ وَرَأَيْتُ سَبَبًا وَاصِلًا مِنَ السَّسَمَاءِ إِلَى الْأَرُضِ فَسَأَخَذُتَ بِهِ فَعَلَوْتَ فَأَعُلاكَ اللَّهُ ثُمَّ أَخَذَ بِهِ الَّذِي بَعُدَكَ فَعَلا فَاغُلاهُ اللَّهُ ثُمَّ أَخَذَهُ الَّـذِي بَـعُدَهُ فَعَلا فَأَعُلاهُ اللَّهُ ثُمَّ أَخَذَهُ الَّذِي بَعُدَهُ فَقُطِعَ بِهِ ثُمَّ وُصِلَ فَاتَّصَلَ فَقَالَ أَبُوْبَكُر يَا رَسُولَ اللَّهِ ائُذَنُ لِي فَأَعُبُرَهَا فَقَالَ اعْبُرُهَا وَكَانَ أَعْبَرَ النَّاس لِلرُّؤُيَا بَعُدَ رَسُولِ اللَّهِ عِنْكُ فَقَالَ أَمَّا الظُّلَّةُ فَالْإِسُلَامُ وَأَمَّا الْعَسَلُ

حَـدَّ تَنِي مُحَمَّدُ بُنُ قَيْسٍ حَدَّ ثَنِي بَعْضُ

أَصْحَابِ النَّبِيِّ عِنْكُمْ قَالَ اللَّبَنُ الْفِطُرَةُ

وَالسَّفِينَةُ نَجَاةٌ وَالْجَمَلُ حُزُنَّ

وَ الْخُصُر ةُ الْجَنَّةُ وَ الْمَرْ أَةُ خَيْرٌ . 9

الكَالِيَّانِيُّ الْكَالِيَّانِيُّ الْكَالِيَّانِيُّ الْكَالِيِّانِيُّ الْكَالِيَّانِيُّ الْكَالِيَّانِيُّ الْكَالِيَّانِيُّ الْكَالِيِّ

اور رسول الله ﷺ کے بعد ابو بکر اچھی تعبیر کرتے تھے، انہوں نے کہا: کہ وہ سائبان اسلام ہے۔ اور شہد کی مٹھاس اور کھی کی چکنائی سے مراد قرآن ہے ۔ اور وہ لوگ جو ہتھیلیاں بھر بھر کر لے رہے تھے کوئی زیادہ لیتا تھا اور کوئی کم تو وہ لوگ قرآن حاصل کرنے والے ہیں ۔ اور ری جو· آسان سے زمین تک پینی ہوتی ہے اس سے مراد وہ حق ہے جس برآ ب میں۔آپ مشکور نے اس کو پکڑا کیں اللہ نے آپ کواس کے ذریعے بلند کیا۔ پھر آپ مطفی آپا کے بعداہے کوئی آ دمی پکڑے گا۔ تو وہ بھی اس کے ذریعے بلند ہوگا پھروہ آ دمی اسے پکڑے گا اور وہ بھی اس کے ذریعے بلند ہوگا۔ پھراسے ایک اور آ دی پکڑے گا تو وہ کاٹ دی جائے گی ۔ پھراسے ملا دیا جائے گا تو وہ اس کے ذریعے بلند ہو جائے گا ، میرا باپ آپ مطبق ایم پر قربان ہو، یا رسول الله الشيطية ! مجه بنائيس ميس في حج كها يا غلط؟ يس رسول ۔ تو انہوں نے کہا۔ میں نے صحیح کیا کہا اور غلط کیا کہا؟

آپ طفی این نے انہیں یہ بتانے سے انکار کر دیا۔

وَالسَّمُنُ فَالْقُرُآنُ حَلَاوَةُ الْعَسَلِ وَلِينُ السَّمُنِ وَأَمَّا الَّذِينَ يَسَكَفَّقُونَ مِنهُ فَصَمُسَتَ كُثِرٌ وَمُستَقِلٌ فَهُمُ حَمَلَةُ فَصَمُسَتَ كُثِرٌ وَمُستَقِلٌ فَهُمُ حَمَلَةُ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ الَّذِي أَنْتَ عَلَيْهِ، السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ الَّذِي أَنْتَ عَلَيْهِ، السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ الَّذِي أَنْتَ عَلَيْهِ، تَأْمُ يَأْخُذُ بِهِ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ اللَّهُ بِهِ، ثُمَّ يَأْخُذُ بِهِ وَجُلُ اللَّهُ بِهِ، ثُمَّ يَأْخُذُ بِهِ رَجُلُ اخَرُ فِيعُلُو بِهِ، ثُمَّ يَوْصَلُ لَهُ فَيَعُلُو بِهِ اخْرُ فَينَعُلُو بِهِ ، ثُمَّ يُوصَلُ لَهُ فَيَعُلُو بِهِ الْخَرُ فَينَعُلُو بِهِ ، ثُمَّ يُوصَلُ لَهُ فَيعُلُو بِهِ فَا خُطُلُ مِن اللهِ بِأَبِي أَنْتَ اللهِ مِنْمَى اللهِ بِأَبِي أَنْتَ اللهِ مِنْ اللهِ بِأَبِي أَنْتُ السَّرِيلُ اللهِ بِأَبِي أَنْتُ السَّيْطِ اللهِ مِنْ أَنْ اللهِ مِنْ اللهِ مِنْ اللهِ مِنْ اللهِ مِنْ اللهِ مِنْ اللهِ مِنْ أَنْ اللهِ مَا اللهِ مَا أَنْ اللهِ مِنْ اللهِ مَا اللهِ مَا اللهِ مَا اللهِ مَا أَنْ اللهُ مَا اللهِ مَا أَنْ اللهُ مَا اللهِ مَا أَنْ اللهِ مِنْ اللهُ مَا اللهِ مَا اللهِ مَا اللهِ مَا اللهُ مِنْ أَنْ اللهُ مَا اللهُ مِنْ اللهُ مَا اللهُ مِنْ اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مِنْ اللهُ مَا اللهُ مُنْ اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مُنْ مَا اللهُ مَا اللهُ مِنْ اللهُ اللهُ مُنْ اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ المَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مِنْ اللهُ اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ مَا اللهُ

فواند: (۱) عَبَرَ (نَصَرَ) اس کامعنی ہے تاویل تفییر کرنا۔ عابر کہتے ہیں کسی خاص شئے میں نظر ڈالنے والے کو اوراس طرح '' معز' ایک شیے ہے دوسری شئے پراستدلال کرنے والے کو کہتے ہیں۔ نظف نظر ڈالنے والے کو اوراس طرح '' معز' ایک شیے ہے دوسری شئے پراستدلال کرنے والے کو کہتے ہیں۔ نظف (نَصَرَ) کامعنی قطرہ قطرہ کر کے تھوڑ اتھوڑ انگینا۔ (۲) کسی مسئلے کاحل در پیش ہوتو استاذ اپنے کسی لائق شاگرد کو وضاحت کی اجازت وے سکتا ہے۔ اس میں اشارہ ہے کہ خلافت عثمان ڈائٹیز میں بچھ نہ بچھ گڑ بڑ پیدا ہوگ ببر حال بعد میں معاملہ سلجھ جائے گا۔

❶ متفق عليه: البخاري، كتاب التعبير، باب من لم يراء الرؤيا لأول عابر اذا لم يصب (7046) ومسلم، كتاب الرؤيا، باب في تاؤيل الرؤيا (5887)

الكَالِيْعِينَ الكَالِيْعِينَ الكَالِيْعِينَ الكَالِيْعِينَ الكَالِيْعِينَ الكَالِيْعِينَ الكَالِيَّةِ المُولِيا المُؤيا

2203 - أَخْبَونَا مُحَمَّدُ بْنُ مِهْرَانَ حَدَّثَنَا مِسْكِينُ الْحَرَّانِيُّ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ بُرْقَانَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ

الْأَصَمِّ

عَنِ الْعَبَّاسِ بُنِ عَبُدِ الْمُطَّلِبِ فَقَالَ رَأَيُتُ فِى الْمَنَامِ كَأَنَّ شَمْسًا أَوُ قَمَرًا شَكَ أَبُو جَعْفَرٍ فِى الْأَرْضِ تُرُفَعُ إِلَى شَكَ أَبُو جَعْفَرٍ فِى الْأَرْضِ تُرُفَعُ إِلَى السَّمَاءِ بِأَشُطَانِ شِدَادٍ فَلَاكَرَ ذَٰلِكَ السَّمَاءِ بِأَشُطَانِ شِدَادٍ فَلَاكَرَ ذَٰلِكَ لِلسَّمَاءِ بِأَشُطَانِ شِدَادٍ فَلَاكَرَ ذَٰلِكَ لِلسَّمَاءِ بِأَشُطَانِ شِدَادٍ فَلَاكَرَ ذَٰلِكَ لِلسَّيِّ فَقَالَ ذَاكَ ابْنُ أَخِيلُكَ لِللَّالِي فَيْ فَاللَّهُ فَقَالَ ذَاكَ ابْنُ أَخِيلُكَ يَعْنِى رَسُولُ اللَّهِ فَيَكُلِي نَفْسَهُ . •

عباس ولائن من عبد المطلب كہتے ہيں۔ كه ميں نے خواب ميں ديكھا سورج يا چاند زمين پر ہيں۔ اور يہ سخت رسيوں كے ذريع آسان پر اٹھايا جا رہا ہے۔ اس بات كا آپ طفيع آيا نے فرمايا: "نيه تمهارا جھينجا ہے فرمايا: "نيه تمهارا جھينجا ہے فودرسول الله طفيع آيا ہے."

فواند : (۱) اس معلوم ہواسورج یا جاند کے اٹھائے جانے سے مراد کسی عظیم ہتی کے اٹھائے جانے کا اشارہ ہوتا ہے (۲) خواب ضروری نہیں کہ اپنے متعلقین کے متعلقین کے متعلق بھی خواب نظر آسکتا ہے۔

2204 أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بَرِيدَ عَنْ أَبِيْ بُرْدَةَ

عَنُ أَيِى مُوسَى عَنِ النَّبِي ﷺ قَالَ رَأَيُستُ فِي مُوسَى عَنِ النَّبِي ﷺ قَالَ رَأَيُستُ فِي مُؤَدِّتُ هَزَرُتُ مَنَ الْمُومُ مِنِ الْمَوْمِنِينَ يَوْمَ أَحُدٍ ثُمَّ هَزَرُتُ لَهُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ أَحُدٍ ثُمَّ هَزَرُتُ لَهُ مَا جَاءَ اللَّهُ بِهِ مِنَ الْفَتْحِ وَاجْتِمَاعِ الْمُؤُمِنِينَ مَا كَانَ فَإِذَا هُوَ مَا جَاءَ اللَّهُ بِهِ مِنَ الْفَتْحِ وَاجْتِمَاعِ الْمُؤُمِنِينَ وَرَأَيْتُ فِيهَا أَيُضَا بَقَرًا وَاللَّهِ خَيْرٌ فَإِذَا هُوَ النَّهُ مُرَا الْمُؤمِنِينَ يَوْمَ أُحُدٍ وَإِذَا الْخَيْرُ مَا السَّلَا فَي السَّلَا الْحَيْرُ مَا السَّلَا وَاللَّهِ عَلَى وَاقَوَابِ الصَّلَاقِ عَنَ الْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ الْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ الْمَوْمِنِ وَتَوَابِ الصَّلَاقِ السَّلَا السَّلَا السَّلَا السَّلَا السَّلَا السَّلَا السَّلَا السَّلَا السَلَا السَّلَا السَلَا السَّلَا السَّلَةِ عَلَى السَّلَا السَّلَا السَّلَا السَلَلْ السَلَا السَ

الَّذِي آتَانَا بَعُدَ يَوُمِ بَلُرٍ. ٥

ابوموی کہتے ہیں کہ نبی طفی آیا نے فرمایا: ''میں نے خواب میں دیکھا کہ میں نے تلوار کو ہلایا تو اس کا سرا ٹوٹ گیا۔ یہ وہ مصیبت تھی جو احد کے دن مسلمانوں کو پہنچی۔ میں نے دوسری دفعہ اسے حرکت دی تو وہ پہلے جیسی اچھی ہوگئی۔ تو یہ فتح مکہ اور مسلمانوں کی جمیعت تھی۔ جو اللہ نے دی۔ میں نے اس میں ایکگائے بھی دیکھیا ور اللہ بہتر ہے۔ وہ گائے احد کے دن مسلمانوں کی جماعت تھی (جو شہید ہوئی اور احد کے دن مسلمانوں کی جماعت تھی (جو شہید ہوئی اور بھلائی وہ اس بھلائی اور سیائی کا بدلہ تھا جو اللہ نے ہمیں یوم بدر کے بعد دیا۔''

[♦] اسناده صحيح: كشف الأستار للبزار 397/1 (844) مريد كيض مجمع الزوائد 23/9-24.

[♦] متفق عليه: البخارى، كتاب المناقب، باب علامات النبوة في الاسلام (36222) ومسلم، كتاب الرؤيا، باب رؤيالنبي (5893)

129 كتاب الرؤيا يُتُنَا الدِّالِيُونَ

فے اب : خواب میں تلوار کے ٹو منے کود کھنا پینقصان چینجنے کی جانب اشارہ ہےاورتلوار شیح سلامت لہرانا یہ فتح وکا مرانی کی نشانی ہے۔

2205 - أَخْبَرَنَا الْحَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ ··

عَنُ جَابِرِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَى قَالَ رَأَيُتُ كَأَنِّي فِي دِرُع حَصِيْنَةٍ وَرَأَيْتُ بَفَرًا يُنْحَرُ فَأَوَّلُتُ أَنَّ الدِّرُعَ الْمَدِينَةُ وَأَنَّ الْبَقَرَ نَفَرٌ وَاللَّهِ خَيْرٌ وَلَوُ أَقَمُنَا بِالْمَدِينَةِ فَإِذَا دَخَلُوا عَلَيْنَا قَاتَلْنَاهُمُ فَقَالُوا وَاللُّهِ مَا دُخِلَتُ عَلَيْنَا فِي الُجَاهِ لِيَّةِ أَفَتُدُخَلُ عَلَيْنَا فِي الْإِسْلَامِ قَسَالَ فَشَسَأْنَكُمُ إِذًا وَقَالَتِ الْأَنْصَارُ لِبَعُضِ دَدُنَسَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَأَيْهُ فَجَائُوا فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ شَأْنُكَ

فَقَالَ الْآنَ إِنَّهُ لَيُسَ لِنَبِيّ إِذَا لَبِسَ لَأُمَتَهُ

أَنُ يَضَعَهُ حَتَّى يُقَاتِلَ . ٥

جابر و الله كت مين كرسول الله طفي الله عن فرمايا: "مين نے خواب دیکھا گویا کہ میں مضبوط زرہ پہنچے ہوئے ہوں۔ اور ایک بیل (البقره کا اطلاق گائے اور بیل ہر دو یہ ہوتا ہے) ویکھا جو ذرج کیا جا رہا ہے۔ میں نے تعبیر کی کہ زرہ تو مدینہ ہے اور وہ بیل کچھ لوگوں کی جماعت ہے اور اللہ ہی بہتر ہے اگر ہم مدینہ میں ہی رہتے ، اگر وہ ہم پر داخل ہوتے تو ہم ان سے اوتے ۔مسلمانوں نے کہا: اللہ کی قتم! وہ لوگ کفر میں (دو ر جاہلیت میں) تو ہم پر داخل نہیں ہوئے، کیا اب حالت اسلام میں ہم ان کوایے او پر داخل كرليس؟ آب ن فرمايا: " پهرتم جو جا بوكرو-"انصار ن آپس میں کہا: ہم نے نبی مشکھیا کی رائے نہیں مانی کھروہ آئے انہوں نے کہا: یا رسول اللہ! آپ کواختیار ہے آپ نے فرمایا: ''اب؟ 'نبی جب اپنی زرہ پہن لیتا ہے تو اسے لائق نہیں کہ وہاڑائی کے بغیر اسے اتارے۔''

فواند: (۱) مدینه مسلمانوں کے لیے محفوظ قلعہ ہے یہاں اسلام وٹمن تو تیں پورش نہیں کرسکتیں (۲) جنگ احد میں آپ مشیقین کاارادہ مدینہ میں تھہر کرہی لڑنے کا تھا (۴) ساتھیوں کامشورہ اگر جہ تھم نہیں ہوتا۔ بہرحال اگرزیادہ لوگ مصر ہوں توان کی مان لینا اسوہ رسول ہے (۵) نبی کے ہتھیار پہن لینے مربغیر جنگ ہا کافروں کوذلیل کیے بغیرانہیں ا تارنا جائزنہیں۔

2206 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الرَّقَاشِيُّ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْع حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيْرِينَ

[🛭] صحيح على شرط مسلم : احمد3/1/3، والطبقات لابن سعد 31/1/2-32

الكانِيْعَيَّ الكَالِيْعِيُّ الكَالِيِّعِيُّ الكَالِيِّعِيُّ الكَالِيِّةِ المُولِيا المُولِيا المُولِيا المُولِيا

ابو ہرریة وظائفۂ کہتے ہیں کہ نبی طفیط اللہ فرماتے تھے: ''میں خواب میں طوق دیکھنے کو برا جانتا ہوں اور قید (بیر یوں) کو پہند کرتا ہوں قید دین کی مضبوطی ہے۔''

عَنُ أَبِي هُرَيُرَةَ عَنِ النَّبِيِ عِلَيُّا أَلَّهُ كَانَ يَعُنُ أَبِي هُرَيُرَةً عَنِ النَّبِي عِلَيُّا أَلَّهُ كَانَ يَعُونُ الْقَيْدُ الْعُلْمُ الْعُلِمُ الْعُلْمُ الْعُل

فوائد: خواب مين بير يول كانظر آتا كه بنده ان مين جهر اهواه ويدوين ثابت قدمى كى علامت ب- 2207 أُخبَرَنَا سُلَيْ مَانُ بْنُ دَاوُدَ الْهَاشِمِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ

سَالِم بْن

عَبُدِ اللّهِ عَنُ أَبِيُهِ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ عبدالله كَهَ مِين كه مِن نے رسول الله طَيْحَ الله عن اوه الله عَنْ أَبِيهِ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ فَرماتِ سَح: 'مين نے خواب مِن ايک كالى اور پريثان سَوُدَاءَ فَائِرَةَ الشَّعُرِ تَفِلَةً أُخُرِجَتُ مِنَ الله الول والى ميلى كَيلى عورت ديمى - جو مدينه سے ثكال كر السَمَدِينَةِ فَالسُّكِنَتُ مَهْيَعَةَ فَاُوَّلُتُهَا وَبَاءَ مميعه مِن مُعْمِرائى كَى - مِن نے اس كى تعبير يہ كه ده الله الله إلى مَهْيَعَة فَاوَّلُتُهَا وَبَاءَ مين مَهْمِدينَةِ يَنْقُلُهَا اللّهُ إلى مَهْيَعَة . • مين كوبا ہے جے الله نے مهيعه ميں جيج ديا۔''

فوائد: (۱) تفلۃ گندی بد بودارکو کہتے ہیں (۲) جب مسلمان جمرت کر کے مدینہ آئے تو یہاں وبا پھیلی تھی جس کی وجہ سے صحابہ رفح اللہ ہمیار ہوگئے اور بلال کھ کو یادکر کے شعروں کی صورت میں پریٹانی کا ظہار کرتے۔ آپ مطاب کو تحابہ رفح اللہ ہمیں کہ اے اللہ ایک معلوم ہوئی تو آپ مطاب کے دعاکی کہ اے اللہ! ہمیں کمہ کی طرح مدینہ محبوب کردے اور اس کی بیاری کو جھہ منتقل کردے۔ چنا نچہ آپ مطابق آپ مطابق کی دعا تبول ہوئی اور بطور علامت آپ مطابق کے خواب میں ساری حقیقت سے آگاہ کردیا گیا۔

2208 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاءِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا عَبِيدَةُ بْنُ الْأَسْوَدِ عَنْ

مُجَالِدٍ عَنْ عَامِرِ

عَنُ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ اللَّهِ اللَّهُ قَالَ يَوْمًا مِنَ اللَّيَامِ رَأَيُتُ فِي الْمَنَامِ أَنَّ رَجُلا مِنَ الْأَيَّمَامِ أَنَّ رَجُلا أَتَى الْمَنَامِ أَنَّ رَجُلا أَتَى الْمَنَامِ أَنَّ رَجُلا أَتَى الْمُنَامِ أَنَّ مَلَى الْمُنَامِ أَنَّ مَا فَوَجَدُتُ فِي الْمَنَامِ اللَّهُ الْمَنَامِ اللَّهُ اللِهُ اللِهُ اللَّهُ اللَ

¹ متفق عليه: البخاري، كتاب التعبير، باب القيد في المنام (7017) ومسلم، في الرؤيا (2263)

عصحيح البخاري، كتاب التعبير الرؤيا، باب اذا رأى انه أخرج الشئ من كوة (7038) واحمد (137/2)

الكاليني الكاليني المرويا
اس نے مجھے دوسرا پیاند دیا تو میں نے کہا: ''جو پیانہ تم نے مجھے پہلے دیا تھا۔ اس میں ایک تضلی تھی جس سے مجھے تکلیف ہوئی چرمیں نے اسے کھالیا تو ابو بکر رہائٹ نے کہا: ''یا رسول اللہ آپ کوسکون کی نیندنھیب ہو! یہ وہی لشکر ہے جو آپ نے ہوا ان کو دو دفعہ مال غنیمت ملا۔ دونوں دفعہ انہوں نے ایک آ دمی پایا جو آپ کا ذمہ یاد دلاتا تھا۔''
میں نے مجاہد سے کہا: آپ کا ذمہ کیا ہے؟ انہوں نے کہا: لا

أَعُطَانِى كُتُلَةً أُخُرى فَقُلْتُ إِنَّ الَّذِى أَعُطَانِى كُتُلَةً أُخُرى فَقُلْتُ إِنَّ الَّذِى أَعُطَيْتَ بِنِى وَجَدُّتُ فِيهَا نَوَاةً آذَتُنِى فَأَكُلُتُهَا فَقَالَ أَبُوبَكُرٍ نَامَتُ عَيُنُكَ يَا رَسُولَ اللهِ هَذِهِ السَّرِيَّةُ الَّتِى بَعَثْتَ بِهَا غَنِمُوا مَرَّتَيُنِ كِلُتَاهُمَا وَجَدُوا رَجُلًا غَنِمُهُ وَجَدُوا رَجُلًا يَنُشُدُ وَمَتَكَ فَقُلْتُ لِمُجَالِدٍ مَا يَنْشُدُ وَمَتَكَ قَالَ يَقُولُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ . • وَمَتَكَ قَالَ يَقُولُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ . • وَمَتَكَ قَالَ يَقُولُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ . •

فواند: (۱) "كُتْلة" بيد متفقد رائے ركھنے والى جماعت كوكہتے ہيں اوراس طرح كسى بھى چيز كے اكشے كلائے كوبھى (۲) سرية كوحاصل ہونے والا سبھى بہترين وعمدہ تھا كيونكہ وہ كفار سے حاصل كيا گيا تھا البت كسى مسلمان كامال اس كى اجازت كے بغير ليا گيا ہو وہ ناپاك وناپنديدہ اور تكليف كاباعث ہے جيسا كہ حديث سے واضح ہے۔

2209 أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ بْنُ يَعِيشَ حَدَّثَنَا يُونُسُ هُوَ ابْنُ بُكَيْرٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ إِسْحَاقَ عَنْ مُحَمَّدِ ابْنِ

عَمْرِو بْنِ عَطَاءِ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارِ

زوجہ نبی و و التحااکہ میں ایل مدینہ میں ایک عورت تھی۔
جس کا شوہر تاجر تھا۔ (سفر پہ) آتا جاتا رہتا تھا۔ جب اس
کا شوہر باہر ہوتا تھا تو وہ خواب دیکھا کرتی تھی۔ اور وہ
اے حاملہ چھوڑ کر باہر جاتا تھا۔ وہ رسول اللہ سے آنے کے
پاس آکر کہتی میرا خاوند تجارت کے لئے باہر گیا تھا اور
مجھے حاملہ چھوڑ گیا۔ میں نے خواب میں دیکھا کہ میرے
گھر کا ایک ستون ٹوٹ گیا ہے۔ اور میں نے ایک کانا بچہ
جنا ہے۔ رسول اللہ طابع آئے آئے نے فرمایا: اچھا خواب ہے تنہارا
شوہر تمہارے پاس انشاء اللہ خیریت سے لوٹے گا۔ اور

الرؤيا ١٤٤ كتاب الرؤيا ٢٥٠ كتاب الرؤيا

تمہارے ماں نیک بچہ پیدا ہوگا۔ یہی خواب وہ دویا تین مرتبہ دیکھتی۔ ہر مرتبہ وہ رسول مشکھیا کے پاس آتی تھی۔ آپ طفی آیا اسے اس طرح کہتے۔اس کا شوہر لوٹا اور اس کے بچہ پیدا ہوتا۔ ایک دن وہ اس طرح آئی جیسے پہلے آیا کرتی تھی تو رسول اللہ ملط کی موجود نہیں تھے۔ اس نے وبی خواب و یکھا تھا میں نے اس سے کہا۔ اے اللہ کی بندی تو رسول الله مطاقية سے كيا يو چھنا جا ہتى ہے؟ اس نے کہا میں خواب دیکھا کرتی تھی۔ اور رسول الله مطابقة کے پاس آ کراس کے متعلق یوچھا کرتی تھی آپ مستقلیم فرماتے "بہتر ہے۔" تواسی طرح ہو جاتا جس طرح وہ فرماتے۔ میں نے کہا: مجھ سے اپنا خواب بیان کرو۔ اس نے کہا رسول اللہ مطابقیۃ آئیں تو میں انہی کو بتاؤں۔جس طرح میں پہلے بتاتی تھی۔ اللہ کی قتم! جب تک اس نے مجھے نہ بتایا میں نے اسے نہ چھوڑا۔ میں نے اسے کہا: اللہ کی قتم! اگر تیرا خواب سیا ہے تو تیرا شوہر مرجائے گا۔ اور تیرے ہاں برالڑ کا پیدا ہوگا۔وہ بیٹھ کررونے گی۔اوراس نے کہا مجھے اس وقت کیا ہو گیا تھا جب میں نے اپنا خواب تمہارے سامنے پیش کر دیا۔ پھر رسول الله طفی آیا آئے اور وہ رور بی تھی آ ب طنے آیا نے مجھے فرمایا:''اے عاکشہ! اسے کیا ہوا ہے؟ تو میں نے آپ طشے ایل کو آ کے خواب اور تعبیر کی خبر دی۔ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:''اے عائشہ وظائمیا! حجور وجب مسلمان کے خواب کی تعبیر کرونو اچھی تعبیر کرو۔ کیونکہ خواب اس طرح واقع ہو جاتا جس طرح اس کی تعبیر کیجاتی ہے۔'' چنانچہ الله کی قتم اس کا شوہر

يَرُجعُ زَوْجُلتِ عَلَيُلثِ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى صَالِحًا وَتَلِدِينَ غُلَامًا بَرًّا فَكَانَتُ تُرَاهَا مَرَّتَيُن أَوُ ثَلاثًا كُلُّ ذٰلِكَ تَـأْتِـى رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَيَـقُولُ ذٰلِكَ لَهَا فَيَرُجعُ زَوْجُهَا وَتَلِدُ غُلامًا فَجَائَتُ يَوُمًا كَمَا كَانَتُ تَأْتِيُهِ وَرَسُولُ اللَّهِ عَلَيْثُ وَقَدُ رَأَتُ تِلُكُ الرُّوُيَا فَقُلْتُ لَهَا عَمَّ تَسُأَلِيْنَ رَسُولَ اللَّهِ عِنْهُ يَا أَمَةَ اللَّهِ فَقَالَتُ رُؤُيًا كُنُتُ أُرَاهَا فَآتِي رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَأَسُأَلُهُ عَنُهَا فَيَقُولُ خَيْرًا فَيَكُونُ كَمَا قَالَ فَقُلُتُ فَأَخْبِرِيْنِي مَا هِيَ قَالَتُ حَتَّى يَأْتِيَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَأَعُرضَهَا عَلَيْهِ كَمَا كُنْتُ أَعُرِضُ فَوَاللَّهِ مَا تَرَكُتُهَا حَتَّى أَخُبَرَتُنِي فَقُلُتُ وَاللَّهِ لَئِنُ صَدَقَتُ رُؤُياكِ لَيَـمُوتَنَّ زَوُجُكِ وَتَلِدِينَ غُلَامًا فَاجِرًا فَقَعَدَتُ تَبُكِي وَقَالَتُ مَا لِي حِينَ عَرَضُتُ عَلَيُكِ رُؤُياىَ فَدَخَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهيَ تُبُكِى فَقَالَ لَهَا مَا لَهَا يَا عَائِشَةُ فَأَخُبُورُتُهُ الْنَحْبَرَ وَمَا تَأَوَّلُتُ لَهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَنَّى مَهُ يَا عَائِشَةُ إِذَا عَبَرُتُمُ لِلْمُسُلِمِ الرُّوُيَا فَاعْبُرُوهَا عَلَى الْخَيْرِ فَإِنَّ الرُّؤُيا تَكُونُ عَلَى مَا يَعُبُرُهَا

الكَالِيَّا الْكَالِيَّا فِي اللهِ ا

مر گیا اور میرا خیال ہے کہاں کے ہاں بچہ بھی برا پیدا ہوا۔

صَاحِبُهَا فَمَاتَ وَاللَّهِ زَوْجُهَا وَلَا أَرَاهَا

إِلَّا وَلَدَتُ غُلَامًا فَاجِرًا . •

فوائد: (۱) ندکورہ حدیث میں اگر چہ محمد ابن اسحاق راٹیجیہ مدس عن سے بیان کرتے ہیں کیکن ابن ججر راٹیجیہ نے دارمی کے حوالے سے فتح الباری میں اس حدیث کوحسن قرار دیا ہے۔ (واللہ اعلم) (۲) خواب کی تعبیر کرتے ہوئے انتہائی احتیاط پیش نظر تو تی چاہیے (۳) مغبر کوچاہیے کہ وہ کوشش کر کے اچھا استدلال کرکے اچھی تعبیر کرے اور یہ ذہن میں رکھے یہ میرے بیان کردہ طریقہ پرواقع ہوجائے گا (سم) اگر باوجود کوشش کے کوئی اچھی تعبیر نہ بن سکے تو بری تعبیر سے بھی آگاہ کیا جاسکتا ہے جیسا کہ یوسف ڈاٹھا نے اپنے دوساتھیوں کوان کے خوابوں کی تعبیر بنائی تھی۔ (واللہ اعلم)





ومن كتاب النكاح

نکاح کے بیان میں

تکاح یہ باب نکح (ضَرَبَ) ہے مصدر ہے اس کامعنی شادی کرنا ، جماع کرنا دونوں ہی مستعمل ہیں۔ابن حجررالیٰظید فرماتے ہیں کہ لفظ نکاح لغت میں'' ملانا اور ایک دوسرے میں داخل ہونا'' کے معنی میں ہے اور شرعی طور پراس کاحقیقی معنی شادی کرنا اور مجازی طور پر جماع کرنا ہے (فتح الباری) امام الرجاجی جزماً بیان كرتے ہيں كه بيد دونوں كے ليے مشترك ہے عبدالرحن مباركيورى التياب نے بھى اسے ہى ترجيح دى ہے۔ (والله اعلم)

[1].... بَابِ الْحَتِّ عَلَى التَّزُويج نكاح كى ترغيب دينا

2210 ـ أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَاصِم عَنِ ابْنِ جُرَيْج عَنْ أَبِي الْمُغَلِّسِ

عَنْ أَبِيى نَدِيتِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ وَيُ كَتَّ كَيْتَ بِي كدرسول الله عَيْنَ في مايا: "جس کو نکاح کرنے کی طاقت ہو پھروہ نکاح نہ کرے تو وہ ہم میں سے نہیں ہے۔

اللُّهِ ﷺ مَنُ قَدَرَ عَلَى أَنُ يَنُكِحَ فَلَمُ يَنُكِحُ فَلَيْسَ مِنَّا . ٥

ف السيريدين ودنيا ك خسار ح كاباعث المسوات المريدين ودنيا ك خسار ح كاباعث ہے۔خصوصاً موجودہ ماحول میں اس سے ستی عظیم کوتا ہی ہے۔ لبندا انسان جب بالغ ہوجائے اور نکاح کے اخراجات کے قابل موتو فوری نکاح ہی باعث خیر ہے(۲) (فیلیس منا) کامعنی ہے۔لیس علی طریقتنا لیخی وہ ہارے طریقے پنہیں نہ کہ وہ ملہ سے ہی خارج ہے البتہ اگر وہ اس سنت سے اعراض

[🗗] مرسل ضعیف: اس کی ممل تخ تخ "محمع الزوائد" من 7396 کے تحت ندکور ہے۔ نیز مراسیل لاہی داؤد : 202

الكاح كتاب النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح

کرے یا اس کے برعکس کورانج سمجھے تو ایسی صورت میں وہ ملت سے خارج مقصود ہوگا۔ واللّٰداعلم۔

(دیکھیے۔ہماری کتاب" فلیس منا")

[2] بَابِ مَنُ كَانَ عِنْدَهُ طَوُلٌ فَلْيَتَزَوَّ جُ بَابِ مَنُ كَانَ عِنْدَهُ طَوُلٌ فَلْيَتَزَوَّ جُ بَ

2211 أَخْبَرَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ عُمَارَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ

عبداللہ کہتے ہیں کہ ہم چند نو جوان رسول سے آیے ایک تھے۔ ہمارے پاس کچھ نہیں تھا۔ آپ ہے گئے نے فرمایا:

"اے نو جوانوں کی جماعت! تم میں سے جو نکاح کی طاقت رکھتا ہے نکاح کرے۔ کیونکہ اس سے نگاہ نیجی رہتی ہے اور شرم گاہ کی حفاظت رہتی ہے۔ جواس کی طاقت نہیں رکھتا وہ روزے رکھے۔ کیونکہ روزہ شہوت کو توڑ دینے والا

قَالَ عَبُدُ اللّهِ كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللّهِ ﷺ شَبَابًا لَيُسَ لَنَا شَىءٌ فَقَالَ يَا مَعُشَرَ الشَّبَابِ مَنُ استَطَاعَ مِنْكُمُ الْبَائَةَ فَلْيَتَزَوَّ جُ فَإِنَّهُ أَغَضُّ لِلْبَصَرِ وَأَحُصَنُ لِلْفَرُجِ وَمَنُ لَمُ يَسُتَطِعُ فَعَلَيْهِ بِالصَّوُم فَإِنَّ الصَّوْمَ لَهُ وَجَاءٌ. •

"-

فوائد: (۱) "الباءة" سے مراد نکاح وشادی ہے۔ باءة بدالمباءة سے ہادرالمباءة بیمنزل کو کہتے ہیں چونکہ شادی کرنے والا اپنی ہوی کو جگہ فراہم کرتا ہے اس لیے شادی پر باءة کالفظ بولا جاتا ہے۔ (دیکھیے تخفہ) (۲) باءة سے مراد شادی کے اخراجات ہیں۔ امام نووی رائیٹیہ کے مطابق یہی بات قابل ترجی ہے۔ کیونکہ اگر بعض اہل علم کے مطابق اس سے مراد شہوت سے عاجزی ہوتو ایسے بندے کوشہوت توڑنے کے لیے روزے رکھنے کا تکم دینا کوئی معنی نہیں رکھتا (۳) روزے نوجوان غیرشادی شدہ حضرات کے لیے انتہائی تقوی و طہارت کا باعث ہیں۔ اس کے علاوہ ان کے دیگر فضائل ان کی اہمیت کودوچند کردیتے ہیں۔ (و فقناالله)

2212- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ.....

سیّدنا علقمہ زلائیہ کہتے ہیں کہ سیّدنا عبداللّه زلائیہ کو حضرت عثمان فرائیہ ملے اور میں ان کے ساتھ تھا۔ سیّدنا عثمان ذلائیہ

عَنُ عَلُقَ مَهَ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ لَقِيَهُ عُشُمَانُ وَأَنَىا مَعَـهُ فَقَالَ لَهُ يَا أَبَا

❶ أخرجه البخاري، كتاب النكاح، باب من لم يستطع الباءة فليصم (الحديث 5066) وأخرجه مسلم، كتاب النكاح، باب استحباب النكاح لمن تاقت اليه نفسه و وجد مؤنه (الحديث 3386)

الكاح كاب النكاح (136) كتاب النكاح (36)

نے ان سے کہا اے ابوعبد الرحلٰ واللہ کیا آپ کو الی الرک کی خواہش ہے جو آپ کو ماضی یاد دلائے؟ تو عبد اللہ نے کہا: آپ نے یہ بات کہی ہے میں نے رسول اللہ مطاقیۃ سے سنا وہ فرماتے تھے۔ اے نوجوانوں کے گروہ! تم میں سے جو نکاح کی طاقت رکھتا ہے نکاح کرے۔ کیونکہ اس سے نگاہ نیجی اور شرم گاہ کی حفاظت رہتی ہے۔ اور جوطاقت نہیں رکھتا تو وہ روزہ رکھے۔ کیونکہ روزہ شہوت کو توڑ دیتا

عَبُدِالرَّحُمَنِ هَلُ لَلْثَ فِى جَارِيَةٍ بِكُرٍ

تُذَكِّرُكَ فَقَالَ لَئِنُ قُلُتَ ذَاكَ فَقَدُ
سَمِعُتُ رَسُولَ اللّهِ عِنْ يَقُولُ يَا
مَعُشَرَالشَّبَابِ مَنُ كَانَ يَسْتَطِيعُ مِنْكُمُ
الْبَائَةَ فَلْيَتَزَوَّجُ فَإِنَّهُ أَغَضُ لِلْبَصَرِ
وَأَحُصَنُ لِللَّفَرْجِ وَمَنُ لَمُ يَسْتَطِعُ
فَلْيَصُمُ فَإِنَّ الصَّوْمَ لَهُ وِجَاءً . •

<u>-</u>

فواند: (۱) "التَّبت لُ" کہتے ہیں نکاح نہ کرنے عورتوں سے الگ رہنے کواس سے بتول ہے جو کہ الی عورت کے لیے بولا جاتا ہے جو کہ مردول سے الگ تھلک رہے اس میں حاجت نہ رہے۔ (۲) اسلام میں رہبانیت اختیار کرنا نکاح چھوڑ دینا جائز نہیں بلکہ آپ طفی میں یہ ایک سے ایک سے زیادہ نکاحوں کا استحباب ثابت ہوتا ہے۔

[3] بَابِ فِي النَّهُي عَنِ التَّبَتُّلِ عُورتوں سے علیحدہ ہونے کی ممانعت

سَعُدَ بُنَ أَبِى وَقَساصِ يَقُولُ لَقَدُ رَدَّ ذَلِكَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى عُثْمَانَ وَلَوُ أَجَازَ لَهُ النَّبَتُّلَ لَاخْتَصَيْنَا . • وَلَوُ أَجَازَ لَهُ النَّبَتُّلَ لَاخْتَصَيْنَا . •

سیدناسعد بن ابووقاص فی النین کہتے ہیں کہ رسول اللہ مطابقیۃ نے سیّدنا عثان والنین کوعورتوں سے علیحدگی کی اجازت نہیں دی۔ اگر آپ مطابقی علیحدہ ہونے کی اجازت دے دیت تو ہم ضمی ہوجاتے۔

2214- أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ مَسْعَدَةَ حَدَّثَنَا الْأَشْعَثُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ عَنِ الْحَسَنِ

أخرجه البخاري، كتاب النكاح ، باب قول النبي ﷺ من استطاع منكم البائة فليتزوج (الحديث 5065 - واخرجه مسلم، كتاب النكاح ، باب النكاح لمن تاقت نفسه اليه و وجد مؤنه(الحديث 3384)

[€] أخرجه البخاري، كتاب النكاح،باب مايكره من التبتل والخصاء(الحديث 5073) واخرجه مسلم، كتاب النكاح،باب استحباب النكاح لمن تاقت اليه نفسه ووجد مؤنه واشتغال من عجز عن المؤن بالصوم(الحديث3390)

الكاح كتاب النكاح (137 كتاب النكاح) الم

عَنْ سَعْدِ بْنِ هِشَامٍ

عَنُ عَائِشَةَ قَالَتُ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ عَنِ التَّبَتُّلِ . •

سیّدہ عاکشہ وُلِیُّوہا کہتی ہیں کہ رسول الله ﷺ نے عورتوں سے الگ تھلگ ہوجانے ہے منع کیا۔

2215 ـ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ الْحِزَامِيُّ حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ بْكَيْرٍ حَدَّثِنِي ابْنُ إِسْحَقَ حَدَّثَنِي

الزُّهْرِيُّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ

عَنُ سَعُدِ بُن أَبِي وَقَاصِ قَالَ لَمَّا كَانَ مِنْ أَمُر عُثْمَانَ بُنِ مَظُعُونِ الَّذِي كَانَ مِنُ تَرُكِ النِّسَاءِ بَعَثَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ عَنَّى لَهُ أُومَرُ بِالرَّهُبَانِيَّةِ أُرَغِبُتَ عَنُ سُنَّتِي قَالَ لَا يَا رَسُولَ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ أُصَلِّى وَأَنَاهَ وَأَصُوْهَ وَأَطْعَمَ وَأَنْكِحَ وَأُطَلِّقَ فَمَنُ رَغِبَ عَنُ سُنَّتِي فَلَيْسَ مِنِّى يَا عُشُمَانُ إِنَّ لِأُهُلِكَ عَلَيْكَ حَقًّا وَلِعَيْنِكَ عَلَيْكَ حَقًّا قَالَ سَعُدٌ فَوَاللُّهِ لَقَدُكَانَ أَجُمَعَ رَجَالٌ مِنَ الُمُسُلِمِينَ عَلَى أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَلَى إِنَّ هُ وَ أَقَرَّ عُشْمَانَ عَلَى مَا هُوَ عَلَيْهِ أَنُ نَحُتَصِيَ فَنَتَبَتَّلَ . ٥

سيّدنا سعد بن ابو وقاص في فقد كهت مين كه جب عثان بن مظعون اس حالت میں تھے کہ وہ عورتوں کو ترک کرتے تھے۔ تو رسول اللہ مصر نے ایک آ دی کو بھیج کر انہیں بولايا۔ اور فر مایا ''اے عثان! مجھے رہبانیت کا حکم نہیں دیا گیا۔ کیاتم میری سنت سے منہ پھیرتے ہو؟ انہوں نے کہا یا رسول الله نهیں - آب طنی این نے فرمایا: میری سنت س ہے کہ میں نماز بھی پڑھتا ہوں اور سوتا بھی ہوں اور روزہ بھی رکھتا ہوں اور کھا تا بھی ہوں۔ اور نکاح کرتا ہوں اور طلاق بھی دیتا ہوں جس نے میری سنت سے روگر دانی کی وہ مجھ سے نہیں۔اے عثان! تہاری بیوی کاتم برحق ہے اورتمہار نے نفس کا بھی تم برحق ہے۔ "سعد کہتے ہیں اللہ کی فتم! مسلمانوں میں سے کچھ مرداس بات برآ مادہ تھے کہ اگر رسول الله ﷺ نے عثانؓ کوان کی حالت پر قائم رکھا ۔ تو ہم خصی ہو کرعورتوں سے علیحدہ ہو جا کیں گے۔

فعوائد: (۱) اسلام میں رہانیت ممنوع اور سنت سے بے رغبتی ہے (۲) راتوں کوسلسل قیام

بلاآرام کیے اوردن مسلسل روز بے بلاچھوڑ ہے ، یہ ولایت کی نہیں بلکہ سنت سے انحراف کی علامت ہے جوکہ

[•] اسناده صحيح: حسن كا تابعي سے "عن"كو سينے سے روايت كرنا نقصان دونيس سے داخىر جمه ترمذى، كتاب النكاح، باب ماجماء في النهى عن التبتل (الحديث 3216) والنسائى، في كتاب النكاح، باب النهى عن التبتل (الحديث 3216) وابن ماجه في كتاب النكاح، باب النهى عن التبتل (الحديث 1849)

اسناده صحیح: بیحدیث منفق علیہ ہاں کی تخ بی (حدیث 2213 کے تحت گزر چکی ہے۔

كتاب النكاح

بحائے کسی خونی کے دینی بسماندگی کی نشانی ہے اور طریقد اسلام سے راہ انحراف ہے۔ [4] بَابِ تُنكَحُ الْمَرُأَةُ عَلَى أَرْبَع عورت سے جارچیزوں کی بنا پر نکاح کیا جاتاً ہے

2216 - أَخْبَرَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ

ابو بربرة والله كت بي من كه نبي النامين نام الله عورتول سے حار باتوں کی بنا برنکاح کیا جاتا ہے: وین خوبصورتی ، مال حسب ونسب تيرا باتھ خاک آلودہ ہؤ دينداري كو اختياركر_"

عَنُ أَبِي هُ رَيُرَ ـةَ عَنِ النَّبِيِّ عَلَىٰ قَالَ تُنكَحُ النِّسَاءُ لِأَرْبَعِ لِللِّيْنِ وَالْجَمَالِ وَالْمَالِ وَالْحَسَبِ فَعَلَيْكَ بِذَاتِ الدِّيُن تَربَتُ يَدَاكَ . •

فوائد: (۱)"الحسب" يرآباؤاجداداوراعزاء كشرفكانام مع يدلفظ حماب سع ماخوذ ہے کیونکہ عرب کی بیادت تھی کہ جب ایک دوسرے پرفخر کرتے توایخ آباء کے کارناموں کو ثار کرتے جس ك كارنام زياده موت اس سب مين فوقيت حاصل موجاتي (ديكھيے فتح الباري) (٢) اصل مين آپ ملط الآيا ان جارخصلتوں کی خبر دے رہے ہیں کہ لوگ ان خصائل کی بناپر شادی رجاتے ہیں جبکہ مسلمان کو تنبیہ ہے کہ دین والی کوتر جی وے اس میں سعادت دارین ہے کیونکہ مال ودولت اورحسن مل جائے اورسکون نہ ملے تو بیہ سبھی چیز بیکار وفضول معلوم ہوتی ہیں لہٰذا ایک مسلم کی یہی ترجیح ہونی جاہیے ۔ قرطبی راٹیلیہ فرماتے ہیں کہ یہ جار خصلتیں شادی کی ترغیب کاسبب بنتی ہیں ہاس کے وجود کی خبر ہے نہ کہ امر واقعی بلکہ اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ ان میں سے ہرقصد کی بناء پر شادی جائز ہے کیکن دین کامقصداولی ہے۔

2217 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَلِيّ بْنِ مُسْهِرِ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ عَنْ عَطَاءِ

عَنُ جَسَابِ مِ عَنِ النَّبِيِّ فَي إِلهُ ذَا ﴿ جَابِرِ وَاللَّهُ بَهِى نِي عَلَيْهُ سِهِ اللَّهُ عَن مُ طَرح بيان کرتے ہیں۔

الُحَديث. ٥

❶ اخرجه البخاري، كتاب النكاح، باب الأكفاء في الدين(الحديث 5090) ومسلم، في كتاب الرضاع، باب استحباب النكاح ذات الدين (الحديث3620)

اسنادہ صحیح: اس کی تخریج بھی سابقہ صدیث کے مطابق ہے۔

الكانين الكانين (139) الماح كتاب النكاح [5] بَابِ الرُّخُصَةِ فِي النَّظَرِ إِلَى الْمَرُأَةِ عِنْدَ الْخِطُبَةِ

ننگنی کے وقت عورت کو دیکھنے کی احازت

2218- أَخْبَرَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَاصِم الْأَحْوَلِ عَنْ بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الْمُزَنِيّ

مغیرہؓ بن شعبہ کہتے ہیں کہ انہوں نے انصار کی ایک عورت ہے منگنی کی۔ تو رسول الله منطقی نے ان سے فرمایا: جاؤ ''اوراہے ایک نظر دیکھ لؤ کیونکہ اس ہے تمہارے درمیان

مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ عِلَيْ اذُهَبُ فَانُظُرُ إِلَيْهَا فَإِنَّهُ أَجُدَرُ أَنُ يُؤُدَمَ نَنْكُمَا . •

عَن المُهْغِيرَةِ بُن شُعْبَةَ أَنَّهُ خَطَبَ امْرَأَةً

محت بيدا ہوگی۔''

فواند: شارع مَالِنال نے اس کی اجازت مرحت فرمائی ہے کہ جن دونفوں کی شادی ہوانہیں ایک دوسرے کود کیفنے کی اجازت دی جائے نہ کہ اسے غیرت کامسلہ بنایا جائے کیونکہ اس کاحکم دینے والی ہستی كائنات كى سب سے برى غيرت والى تقى - نكاح سے قبل عدم موافقت كى بناير راست الگ كر لينا آسان ب بجائے اس کے بعد میں کوئی تفریق کاسبب سنے ۔ گر جابل لوگوں کو بی حقیقت سمجھ نہیں آتی ۔

> [6] بَابِ إِذَا تَزَوَّجَ الرَّجُلُ مَا يُقَالُ لَهُ جب آ دمی نکاح کرے تواہے کیا کہا جائے

2219- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيْرِ الْعَبْدِيُّ الْبَصْرِيُّ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ يُونُسَ قَالَ......

عَنِ الْتَحسَنِ قَالَ سَمِعْتُهُ يَقُولُ قَدِمَ حسن مِلتِي كَتِي بِين كَعْقِيل مِثَاثِهُ بن ابوطالب بعره آئے اور بنوجشم کی ایک عورت سے نکاح کیا۔ لوگوں نے ان سے کہا: "بالرفاء و البنین". توانہوں نے کہا: "اس طرح نه كهو رسول الله مطاعية نے اس سے منع كيا ہے اور جميل سيد كَيْخُ كَاتْكُم دِيا: "بَسَارَكَ اللَّهُ لَكَ وَبَسَارَكَ عَــلَيْكُ". الله تعالى تيرے ليے مبارك كرے،اور تجھ ر برکت فر مائے۔

عَقِيلُ بُنُ أَبِي طَالِبِ الْبَصْرَةَ فَتَزَوَّجَ امُرَأَدَةً مِنُ بَنِي جُشَم فَقَالُوْا لَهُ بِالرِّفَاءِ وَالْبَنِينُ نَفَقَ الَ لَا تَقُولُوا ذٰلِكَ إِنَّ رَسُولَ اللُّهِ عِنْ ذَلِكَ اللَّهِ عَنُ ذَٰلِكَ وَأَمَرَنَا أَنُ نَقُولَ بَارَكَ اللَّهُ لَكَ وَبَادُكَ عَلَيْكَ . ٥

مساجساء فسي النظرالسي المخطوبة(الحديث 1087)والنسسائسي،فسي الكتساب النكاح،بياب إبياحة النظر قبل التزويج(الحديث3235) ك صحيح : أخرجه النسائي،كتاب النكاح،باب كيف يدرو للرجل اذا تزوج (الحديث 3371) وابن ماجه في كتاب النكاح باب تهنئة النكاح (الحديث 1906)

الكات
فوائد: (۱) "الرقاء" بیرفوسے جوکہ اردو میں کپڑے بھٹا وُ وغیرہ کو دھاگے سے پرکرنے کے لیے ہوتا ہے اس طرح اس کامعنی ملاپ واتفاق ہے (۲) حافظ ابن حجرر پڑھید نے احسن کے ساع کے بارے میں بہت کیا اظہار کیا ہے۔ دیکھیے افتح 222/9 جبکہ (سیراعلام النبلاء) میں ابن علیہ کا قول ہے کہ قتل کی میں بہت علیہ کا قول ہے کہ قتل کی وفت حسن بھری رہیں جا لیس سال کے اردگر دیتھے عقیل کی بھرہ آمد پران سے ساع بعیز ہیں۔ واللہ اعلم (۳) لہذا فہ کورہ حدیث کی صحت کے رائح ہونے پر معلوم ہوا کہ مسنون ادعیہ کا اہتمام اولی بنسبت دوسرے دعاؤں کے۔

2220 حَدَّثَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ عَنْ سُهَيْلِ عَنْ أَبِيْهِ

ابو ہریرة فالنَّهُ کہتے ہیں کہ نبی ﷺ جب کی شخص کو نکاح کرنے پر دُعا دیتے تو یوں فرماتے تھے: "بَارَ كَ اللّٰهُ لَلْكَ وَبَارَ كَ عَلَيْكَ وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ الله تیرے لئے اور جھ پر برکت فرمائے اور دونوں میں بھلائی پیدا فرمائے۔"

عَنُ أَبِي هُرَيُرَةَ عَنِ النَّبِي عِنَى اللَّهُ كَانَ إِذَا رَقَّا لِإِنْسَانِ قَالَ بَارَكَ اللَّهُ لَكَ وَبَارَكَ اللَّهُ لَكَ وَبَارَكَ اللَّهُ لَكَ وَبَارَكَ عَلَيْكَ وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْر . •

فوائد: (۱) کی مسلم کی منگنی کے پیغام پر پیغام بھیجنا ممنوع ہے کیونکہ بیددلوں میں بغض وحسد کا باعث بنتا ہے اور مسلمانوں کے آپس میں معاملات کے بگاڑ کا سبب ہے (۲) اس طرح کسی ایک طے ہوتے سودے پر جاکر شودا کرناممنوع ہے البتہ بولی والی بیج اس سے مشتنی ہے

[7] بَابِ النَّهُي عَنُ خِطْبَةِ الرَّجُلِ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيْهِ اينِ بِهَائَى كَمَنَّنَى بِمِنَّكَى كرنے كى ممانعت

2221 - أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِح عَنْ أَبِيهِ

عَنْ أَبِي هُورَيُوةً عَنِ النَّبِي عِنْ أَنَّهُ لَهٰى عَنْ الوهرية وَالنَّمَةُ كَتِمْ بِينَ كَه فِي طَيْقَيْمُ نِهُ اللَّهُ عَالًى كَ

أَنْ يَخُطُبَ الرَّجُلُ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيهِ . • مَنْكَىٰ بِمِنْكَىٰ كرنے سے منع فرمایا۔

• حسن نعيم بن تماد كرسب جبكر قدراويول ساس كى متابعت بحى موجود مهد الحرجة البوداؤد، كتباب النكاح، باب ميقال للمتزوج (الحديث 3130) والترمذي في كتاب النكاح، باب ماجاء ما يقال للمتزوج (الحديث 1091) وصحيح ابن حبان (الحديث 4052)

②مشفق عليه: أخرجه البخاري، كتاب البيوع، باب لا يبيع على بيع اخيه ولا يسوم على سوم اخيه حتى يأذن له أو يترك (الحديث 2444) ومسلم، في كتاب النكاح، باب تحريم الخطية على خطية اخيه حتى يازن أو يترك (الحديث 3444)

الكاريخ الكاريخ الكاريخ الما الماح ا

2222 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللّهِ بْنُ سَعِيْدِ حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللّهِ قَالَ حَدَّثَنِي نَافِعٌ

عَنِ ابُنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَى خَلْمَ قَالَ ابن عمر وَالتَّهُ كَتِمَ مِن كدرسول الله عَلَيَّ إن وَلَا يَكُولَ كَلَ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُول الله عَلَيَ خِطْبَةِ أَخِيهِ صَحْص الله عِلْمَ كَلَ مَثَلَى بِمِثَلَى نَدَرَ اور نه اس كى تَعْ پر وَلَا يَسُعُ عَلَى بَيْع أَخِيهِ حَتَّى يَأْذُنَ ابْع كرے فَى كدوہ اسے اجازت دے دے۔''
وَلَا يَسُعُ عَلَى بَيْع مَلَى بَيْع أَخِيهِ حَتَّى يَأْذُنَ ابْع كرے فَى كدوہ اسے اجازت دے دے۔''

0.4

2223 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو

ابوسلمة سے مروى ہے كہ فاطمة بنت قيس نے ان سے بيان عَنُ أَبِي سَلَمَةَ عَنُ فَاطِمَةَ بِنُتِ قَيْس کیا اور انہوں نے ابوسلمہ کو فاطمہ کی طرف سے خط ککھا۔ کہ أنَّهَا حَدَّثُتُهُ وَكَتَبَهُ مِنْهَا كِتَابًا أَنَّهَا وہ قریش کے قبیلہ بن مخزوم کے ایک مخص کے نکاح میں كَانَتُ تَحُتَ رَجُل مِنُ قُرَيُشٍ مِنُ بَنِي مَخُزُوم فَطَلَّقَهَا الْبَتَّةَ فَأَرُسَلَتُ إِلَى تھیں۔اس نے انہیں تین طلاقیں دیں۔انہوں نے اس کے خاندان کے پاس خرچ لینے کے لیے آ وی جمیجا تو أَهْلِهِ تَبُتَغِي مِنْهُمُ النَّفَقَةَ فَقَالُوا لَيُسَ لَكِ نَفَقَةٌ فَبَلَغَ ذٰلِكَ رَسُولَ انہوں نے کہا:''(ہارے ذمہ) تمہارا خرج نہیں ہے۔'' اللُّهِ عِثْثُ فَقَالَ لَيُسَ لَكِ نَفَقَةٌ یہ بات رسول اللہ کھی کے یاس کینی تو آپ نے فرمایا: "تمہارے لیےخرچ نہیں ہے اورتم پرعدت ہے تم وَعَلَيْكِ الْعِدَّةُ وَانْتَقِلِي إِلَى بَيُتِ أُمَّ شَريُكٍ وَلَا تُفَوِّتِينَا بِنَفُسِكِ ثُمَّ قَالَ ام شریک کے گھر چلی جاؤ پھر ہم سے ملنا۔'' پھر فرمایا:''ام إِنَّ أُمَّ شَرِيلِتِ امْرَأَـةٌ يَـدُحُـلُ عَلَيُهَـا شریک کے پاس اس کے مہاجر بھائی آتے جاتے ہیںتم ابن ام مکتومؓ کے گھر رہو کیونکہ وہ اندھے آ دمی جیں اگر اگر تو إخُوَانُهَا مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَلَكِنِ انْتَقِلِيُ إِلَى بَيْتِ ابُن أُمّ مَكُتُوم فَإِنَّهُ رَجُلٌ نے کیڑے اتار بھی دیے تواہے کچھ نظر نہیں آئے گا۔اس کے بعد ہم سے ملنا'۔ وہ ابن ام مکتومؓ کے گھر چلی گئیں۔ أُعُمٰى إِنَّ وَضَعُتِ ثِيَابَلْثِ لَمُ يَرَ شَيُّنَّا جب ان کی عدت بوری ہوگئ تو بتایا که معاویہ اور ابوجہم ا وَلا تُفَوِّينا بنَفُسِكِ فَانْطَلَقَتُ إلى بَيْتِ ابْنِ أُمِّ مَكْتُوم فَلَمَّا حَلَّتُ ذَكَرَتُ نے انہیں نکاح کا پیغام بھیجا ہے۔ تو رسول اللہ مستحقیج نے أَنَّ مُعَاوِيَةَ وَأَبَا جَهُمٍ خَطَبَاهَا فَقَالَ فرمایا:''معاوییٌ غریب آ دی تھے،اور ابوجم ؓ اپنی لاکھی اینے

 [◘] متفق عليه: اخرجه البخاري، كتاب النكاح، باب لا يخطب على خطبة اخيه حتى ينكح او يدع (الحديث 5142)
 ومسلم، في كتاب النكاح باب تحريم الخطبة على خطبة اخيه حتى ياذن أو يترك (الحديث 3441)

الكاح كاب النكاح كالم النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح

كندهے ينہيں اتارتا، پستم اسامة ہے كہال ہو؟ پس گویا کہ اس کے خاندان والوں نے اسے ناپسند کیا بتواس نے کہا: میں تو اس سے نکاح کروں گی جس سے رسول بن عمرو کہتے ہیں کہ محمد بن ابراہیم نے کہا:اے فاطمہ!اللہ سے ڈرو کیونکہ تمہیں معلوم ہے کہ بیکس مسلاکے بارے میں تھا۔اور ابن عباس فالنفون نے فرمایا: فرمان باری ہے: اے نبی مطبق این اجب تم عورتوں کو طلاق دینا جا ہوتو ان کی عدت(کے دنوں کے آغاز) میں انہی طلاق دواورعدت کا حباب رکھو،اور اپنے بروردگار اللہ سے ڈرتے رہواور" تم انہیں ان کے گھروں ہے مت نکالواور نہ وہ خوڈگلیں البتہ اگر وہ تھلی بے حیائی کا ارتکاب کریں تو نکال دو۔'' (سورة الطلاق: ١) فاحشريه به كم عورت ايخ كنب والوں سے بدزبانی کرے اور جب وہ ایبا کرے تو ان کے لئے جائز ہے کہاسے نکال دیں۔"

رَسُولُ اللّهِ عَلَىٰ أَمّا مُعَاوِيَةٌ فَرَجُلٌ لَا مَسَالُ لَهُ وَأَمّا أَبُو جَهُمٍ فَكَا يَضَعُ عَصَاهُ عَنُ عَاتِقِهِ فَأَيْنَ أَنْتَ مِنْ أَسَامَةَ فَكَأَنَّ عَنُ عَاتِقِهِ فَأَيْنَ أَنْتَ مِنْ أَسَامَةَ فَكَأَنَّ أَمُسَكُم عَصَاهُ أَهُ لَهَا كَوهُوا ذَلِكَ فَقَالَتُ وَاللّهِ لَا أَنْكِحُ إِلّا الّذِي قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَلَىٰ فَنَكَ عَمْ وِ أَنْكِحُ إِلّا الّذِي قَالَ مُحَمَّدُ بُنُ عَمْ وِ فَنَكَ حَتُ أَسَامَةَ قَالَ مُحَمَّدُ بُنُ عَمْ وِ فَالَ مُحَمَّدُ بُنُ عَمْ وَ فَالَ مُحَمَّدُ بُنُ عِمْ وَ فَالَ مُحَمَّدُ بُنُ عَمْ وَ اللّهَ فَقَلْ مَعْمَدُ اللّهَ فَقَدُ عَلِمْتِ فِي أَي شَي عَمْ وَ كَانَ هَذَا اللّهَ تَعَالَى لا اللّهَ تَعَالَى لا قَالَ اللّهُ تَعَالَى لا قَالَ اللّهُ تَعَالَى لا قَالَ اللّهُ تَعَالَى لا أَنْ يَخُوجُوهُ فَا حِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ وَالْفَاحِشَةُ مُبَيِّنَةٍ وَالْفَاحِشَةُ وَالْفَاحِشَةُ فَا فَا ذَا فَعَلَتُ ذَٰ لِلكَ اللّهُ مَا لَيْ يُعُرَجُوهُ هَا وَقَالُ اللّهُ مَا لَيْ يُعُرجُوهُ اللّهُ اللّهُ مَا لَيْ يُعُرجُوهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ مَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ا

فواند: (۱) طلاق بتد یعن تین طلاقوں کے بعد عورت کار ہائش وخر چہ دینا مرد کی ذمہ داری نہیں (۲) "ان وضعتِ ثیابك لم یوشیئا" کے بارے امام نووی رائی فرماتے ہیں کہ اس ہے بعض اہل علم نے عورت کے لیے غیر مرد کود کیمنا جائز کھی ایا ہے بیضعیف ہے جبکہ سیحے بات جمہور کی ہے کہ مرد کی طرح عورت پہلی اجنبی مرد کود کیمنا حرام ہے قرآن میں ﴿قُلْ یَلْلُمُوْمِنْتِ یَغُضُوْا مِنْ اَبْصَادِ هِمْ ﴾ "معومنہ عورتوں سے کہوکہ اپنی نظر نیچی رحمین ۔ " (شرح نووی) ندکورہ صدیث میں ہے کہ معاویہ وابوجہم بڑائین نے اکٹھے پیغام جیج دیا اس کے متعلق مالک رائین فرماتے ہیں بیتب ہے جب وہ عورت پہلے پیغام والے پر راضی ہو (فرضیت به) توالیے وقت میں کسی دوسرے کے لیے پیغام جب جب وہ عورت پہلے پیغام والے پر راضی ہو (فرضیت به) توالیے وقت میں کسی دوسرے کے لیے پیغام جب جب وہ عورت پہلے پیغام والے پر راضی ہو (فرضیت به)

 [◘] صحيح اخرجه مسلم، كتاب الطلاق، باب المطلقه ثلاثا لا نفقة لها (الحديث 3681) و ابو داؤد نفي كتاب الطلاق، باب في نفقة المبتوتة (الحديث 2284)

سے الکام کی دوسرے کے لیے متنی به ، ورکنن الیه) وه عورت راضی ہوجائے اور مائل ہوجائے جوالی حالت میں کی دوسرے کے لیے متنی

. کاپیغام بھیجنا ممنوع وناجائزہے۔(تخفۃ الاحوذی)(۴) اگرکوئی مشورہ مانگے تواسے پوری دیانتداری سے مشورہ دینالازم ہے۔حدیث میں المستشارامین''جس سےمشورہ مانگاجائے وہ امین ہوتا ہے''الی حالت میں کسی کو ضرر سے بچانے کے لیے دوسرے کی برائی بیان کرنے میں کوئی حرج نہیں بیچنلی میں شارنہیں ہوگا۔

[8] بَابِ الْحَالِ الَّتِي يَجُوزُ لِلرَّجُلِ أَنْ يَخُطُبَ فِيهَا كس حال مين آ دمي كومنكني كرنا جائز ہے

2224 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ حَدَّثَنَا دَاوَدُ يَعْنِي ابْنَ أَبِيْ هِنْدٍ حَدَّثَنَا عَامِرٌ

ابو ہریرۃ فرالٹھ کہتے ہیں کہ رسول اللہ طیکھی نے اس بات
سے منع کیا کہ عورت سے اس کی پھوپھی کے نکاح میں
ہوتے ہوئے نکاح کیا جائے۔ اور پھوپھی سے اس کی ہیں جی جی
کے ہوتے ہوئے۔ اور عورت سے اس کی خالہ کے ہوتے
ہوئے اور خالہ سے اس کی بھا نجی کے ہوتے ہوئے۔ نہ
بری کے ہوتے ہوئے چھوٹی سے نکاح کیا جائے اور نہ
چھوٹی کے ہوتے ہوئے بردی سے نکاح کیا جائے اور نہ
چھوٹی کے ہوتے ہوئے بردی سے نکاح کیا جائے اور نہ

حَـدَّ ثَـنَـا أَبُو هُوَيُوةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهْى أَنُ تُسُكِحَ الْـمَـرُأَةُ عَلَى عَمَّتِهَا وَالْعَمَّةُ عَلَى عَمَّتِهَا وَالْعَمَّةُ عَلَى الْمَدُأَةُ عَلَى خَالَتِهَا أَوِ الْمَرُأَةُ عَلَى خَالَتِهَا أَوِ الْمَرُأَةُ عَلَى خَالَتِهَا أَوِ الْمَرُأَةُ عَلَى بِنُتِ أَحُتِهَا وَلَا خَالَةُ عَلَى بِنُتِ أَحُتِهَا وَلَا تُسُخُرَى عَلَى الْكُبُرَى وَلَا تُسُخُرَى عَلَى الْكُبُرَى وَلَا الشَّغُرَى عَلَى الْكُبُرَى وَلَا الْكُبُرَى عَلَى الْكُبُرَى عَلَى الشَّغُرَى . •

فوائد: (۱) ندکورہ رشتوں یعنی پھوپھی بھیتی اورخالہ بھانجی کوکئی بندہ ایک ہی وقت میں اپنے نکاح میں نہیں لے سکتا (۲) قرآن میں حرام رشتوں کا ذکر ہے جس سے نکاح کرنا جائز نہیں ان رشتوں میں یہ رضتے ندکر نہیں اگر صرف قرآن کو جمت مانا جائے تو ان رشتوں کو طلال سمجھا جائے گا اور بیہ حرام میں مبتلا ہونے کا باعث ہوگا۔ لہذا سمجھآئی کہ قرآن کی طرح حدیث بھی جمت و پختہ دلیل ہے ورنہ ہمیں حرام کے ارتکاب ھے کوئی چیزروک نہیں سکتی۔ انسعیا ذباللہ (۳) ندکورہ حدیث قرآن کریم کے عموم کوخاص کرتی ہے جس سے نابت ہوا کہ سنت قرآن کی شخصیص کر سکتی ہے۔ (واللہ اعلم)

2225 حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ

 [♣] متفق عليه: اخرجه البخاري، كتاب النكاح، باب لتنكع المرأة على عمتها (الحديث 5109) و (الحديث 5110)
 ♦ ومسلم، في كتاب النكاح، باب تحريم الجمع بين المرأة وعمتها وخالتها في النكاح (الحديث 3429)

الكاح كتاب النكاح ١٤٩ المحال كتاب النكاح المحال ١٤٩

ابو ہر ریرۃ زمالٹیٰ کہتے ہیں کہ رسول اللہ منظور آنے جھیجی اور پھو پھی خالہ اور بھانجی نکاح میں جمع کرنے سے منع

عَنُ أَبِى هُرَيُرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهٰى أَنُ يُجُمَعَ بَيُنَ الْمُرَأَةِ وَعَمَّتِهَا وَالْمَرَأَةِ وَخَالَتَهَا . •

[9].... بَابِ فِي النَّهُي عَنِ الشِّغَادِ شِغاركِ ممانعت

2226 حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِع

عَنِ ابُنِ عُمَرَ قَالَ نَهٰى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنِ الشِّعَارِ .قَالَ مَالِكٌ وَالشِّعَارُ أَنُ عَنِ الشِّعَارُ أَنُ يُؤوِّجَ الرَّجُلُ الْآخَرَ ابُنتَهُ عَلَى أَنُ يُزَوِّجَهُ الْآخَرُ ابُنتَهُ بِغَيْرِ صَدَاقٍ قِيلَ يُزَوِّجَهُ الْآخَرُ ابُنتَهُ بِغَيْرِ صَدَاقٍ قِيلَ لِكَاجًا قَالَ لَا يَعْجُنِينُ. ٥ يُعْجَنِينُ. ٥

فوائد: "الشغار" كہاجاتا ہے "شغر القلب" جب كتابيثاب كے ليے اپنا پاؤل اٹھاتا ہے جب يہال اس سے عورت كا دوسرى عورت كے بدلے لكاح ہے۔ اس شرط پر كد دونوں كے درميان حق مهر نہ ہو۔ البت مهر ہو بھى تب بھى يہ ناپنديدہ ہے جبيا كہ ابو تدكا قول ہے۔ اور اس كے ناجائز ہونے كى حكمت يہ بھى معلوم ہوتى ہے كہ اختلافات كے وقت ايك گھر كامعالمہ برنا ہے مگر عنادوسر شى كرتے ہوئے ضدسے دوسر كے گھر كو بربادى كاسامنا كرنا پڑتا ہے۔ معاشرہ ميں بالتجر بدا يسے رشتوں ميں خير كم نظر آتى ہے۔

[10] ہاب فیی نِگاحِ الصَّالِحِیْنَ وَالصَّالِحَاتِ نیک مردول اورعورتوں کے نکاح کے متعلق

2227 أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِم عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عُمَرَ بْنِ كَيْسَانَ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ وَهْبِ بْنِ أَبِي مُغِيثٍ حَدَّتْنِي أَسْمَاءُ بِنْتُ أَبِيْ بَكْرِ

❶ متفق عليه: اخرجه البخاري، كتاب النكاح، باب لا تنكح المرأة على عمتها (الحديث 5109) ومسلم، في كتاب النكاح، باب تحريم الجمع بن المرأة وعمتها أو خالتها في النكاح (الحديث3422)

②متفق عليه: أخرجه البخاري، كتاب النكاح، باب الشغار (الحديث 5113) ومسلم، في كتاب النكاح، باب تحريم النكاح الشغار وبطلانه (الحديث 3450)

الكارخ الكارخ الكارخ المكارخ ا

عائشہ طالعی کہتی ہیں کہ نبی طیکی نے فرمایا: ''نیک مردوں اورعورتوں سے نکاح کرو۔'' ابومحمد کہتے ہیں:''اس حدیث کا بید حصہ مجھ سے ساقط ہو گیا ہے تو جو بچھ بعد میں لوگوں کو ملا وہ اچھا ہے۔''

فوائد نیک بچ یا بچی کے لیے اس کے ہم پلہ کوئی نیک رشتہ ہی تلاش کرنا چاہیے بیشریعت کے تفاضوں کو پورا کرنے کے لیے بہترین اور نکاح کے دوام کے لیے اچھا ہے۔ قرآن میں ہے: ﴿ اَلوَّ النِی لَا یَنْکِحُ اِلَّا ذَانِی اَوْ مُشْرِ کُ وَاُم کُورِ مَدُ ذٰلِكَ عَلَى الْمُوَّمِنِیْنَ ﴾ یَنْکِحُ اِلَّا ذَانِی اَوْ مُشْرِ کُ وَکُورِ مَدُ ذٰلِكَ عَلَى الْمُوَّمِنِیْنَ ﴾ الله وردنی اور کی مردی شادی کرتی ہے۔ ای طرح زانیے ورت سے زانی مرد یا مشرک مردی شادی کرتی ہے۔ ای طرح زانیے ورت سے زانی مرد یا مشرک مردی شادی کرتا ہے اور مومنوں پر بیر حرام ہیں۔ معلوم ہوا دینداروں کے لیے دیندار رشتے ہی مشرک مردی شادی کرتا ہے اور مومنوں پر بیر حرام ہیں۔ معلوم ہوا دینداروں کے لیے دیندار رشتے ہی ایم میں اس کاخیال نہیں رکھتے ،اور ہوے بوے سافی الفکر لوگ اہل شرک و بدعت سے تعلقات قائم کر لیتے ہیں اور پھر بعد میں اس کاخیان نہیں رکھتے ،اور ہوے ۔ (واللہ الموفق)

[11] بَابِ النَّهُي عَنِ النِّكَاحِ بِغَيْرِ وَلِيٍّ بغيرولي كے نكاح كى ممانعت

2228 ـ أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمْعِيْلَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيْلُ عَنْ أَبِيْ إِسْحٰقَ.....

عَنُ أَبِى بُودَةَ عَنُ أَبِيهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ ابوبردة وَاللهِ اللهِ والدسنقل كرتے بي كه رسول اللهِ اللهُ ال

فوائد: اس روایت کو 30 کے قریب صحابہ رکھ اندیم نے بیان کیا ہے جن میں سے پھے سندیں میں اور پچے اور پچے اور پچے اور پی بیان کیا ہے جن میں سے پچے سندیں میں اور پچے ضعیف ہیں ۔ جمہور کے نزدیک شادی کے لیے ولی اور دوگواہوں کا ہونا ضروری ہے ورنہ نکاح نہیں ہوگا۔ ولی یا باپ کی عدم موجودگی میں دادایا بھائی وغیرہ ہو کتے ہیں ۔ فقد فنی میں ولایت صحب نکاح کے لیے شرطنہیں، جبکہ یہ موقف سراسر کتاب وسنت کے اور عقل ودائش کے خلاف ہے اور عملاً آپ اس کی خرابیاں

۔ اسنادہ حسن: اس کی سند میں عمر بن کیمان راوی ہے جم کوامام بخاری نے "تاریخ کبیر" 189/6 اور این افی حاتم نے "المحرح والتعدیل" 24/9 میں ذکر کیا ہے۔ کیکن اس پر جرح تاتعدیل نہیں کی جب کہ ابن حبان الثقات 182/7 میں اسے تقد قرار دیا ہے۔ کے استعدیل "24/9 میں ذکر کیا ہے۔ کیکن اس پر جرح تاتعدیل الدی التعدید تا التحدید ابو داؤد، کتاب النکاح، باب فی الولی (المحدیث 5085) والتر مذی ، فی کتاب النکاح، باب ما جاء لانکاح الابولی (المحدیث 1101)

الكاح ١٤٥ المالية النكاح ١٤٥ المالية النكاح
دن بدن د کھے رہیں ہیں کہ لڑکیاں لڑ کے والدین سے بغاوت کرتے ہوئے بغیر ولی کے عدالت میں نکاح كر ليتے ہیں۔ حالانكہ ايسا نكاح باطل ہے اوروالدين كے ساتھ بہت برى زيادتى ہے دين ايسے رشتوں ، نکاحول کی ہرگز حوصلہ افزائی نہیں کرتا، فقہ حنفی جس قدر پشت پنائی کرتی رہے ہے دین سے بھا گئے کے چور دروازے ہی ہں جن سے خیر و بھلائی قطعاً نہیں آسکتی۔

2229 حَدَّثَنَا عَلِيٌّ بْنُ حُجْرِ أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ عَنْ أَبِي إِسْلَحْقَ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ

عَنُ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِي عِينًا قَالَ لَا ﴿ الوموَىٰ وَالنَّهُ كُتِ بِي كَهُ نِي عَلَيْهِ لَ فَرَمَايا: ' الغيرولي کے نکاح نہیں ہے۔''

2230 - حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ مُوْسَى عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ

عَنُ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِي ﴿ اللَّهِ عَلَىٰ اللَّهُ اللَّهُ مَا امُرَأَةٍ نُكِحَتُ بِغَيْرِ إِذُن وَلِيَّهَا فَنِكَاحُهَا بَاطِلٌ فَنِكَاحُهَا بَاطِلٌ فَيْكَاحُهَا بَاطِلٌ فَإِنَّ اشْتَجَرُوا قَالَ أُبُوعَاصِم وَقَالَ مَرَّةً فَإِنُ تَشَاجَرُوُا فَالسُّلُطَانُ وَلِيُّ مَنُ لَّا وَلِيَّ لَهُ فَإِنُ أُصَابَهَا فَلَهَا الْمَهُرُ بِمَا اسْتَحَلَّ مِنُ فَرُجِهَا قَالَ أَبُو عَاصِمٍ أَمُلاهُ عَلَيَّ سَنَةَ سِتِّ وَأَرُبَعِينَ وَمِائَةٍ . ٥

نِكَاحَ إِلَّا بِوَلِيٍّ . •

سيّده عائشه وظافوابيان كرتى بين نبي الطينيّز نه فرمايا: "جو عورت اینے ولی کی اجازت کے بغیر نکاح کرے۔اس کا نکاح باطل ہے اس کا نکاح باطل ہے اس کا نکاح باطل ہۓ اگروہ جھکڑا کریں تو جس کا کوئی ولی نہیں اس کا بادشاہ ولی ہے۔ اگر مرد نے اس سے صحبت کی تو اس کی شرمگاہ کو حلال کرنے کی وجہ ہے اس(عورت) کے لیے حق مہر ے۔ ''ابوعاصم کہتے ہیں:''ابن جریج نے بیرحدیث مجھے ا ہجری میں تکھوائی تھی۔''

فواند: (۱) عورت کا ولی کے بغیر نکاح حرام ہے۔ (۲) جمہور کے مطابق عصبہ میں سے قریبی رشتہ دار ولی ہوگا۔ چنانچہ اگر ایک مرتبے میں کئی افراد ہوں جو کہ بھی ولی بننے کے اہل ہوں تو ان کے جھگڑے کی صورت میں بیداختیار سلطان کونتقل ہوجائے گا اوران کی حیثیت ختم ہوجائے گی۔ (۳) اگر بغیر ولی کے

اسناده ضعیف: لیکن سابقه صدیث کے شاہد کی ماء پرمعنی سیج ہے۔

² استفاده حمس: سليمان بن موسى كفي بناء پر اخرجه ابوداؤد، كتاب النكاح، باب في الولى (الحديث 2083) والترمذي، في الكتاب النكاح،باب ماجاء لا نكاح الابولي(الحديث 1102)

www.sirat-e-mustageem.com

الكاح كتاب النكاح كتاب النكاء
نکاح ہو گیا ہوتو دخول ہونے کی صورت میں عورت کوحق مہر دے کر علیحدہ کردیا جائے گا اوران کا نکاح ختم کردیا جائے گا۔

[12] بَابِ فِي الْيَتِيمَةِ تَزَوَّ جُ يتيم لرُ كي جوخود نكاح كرے

2231 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّتَنَا يُونْسُ بِنُ أَبِي إِسْحٰقَ حَدَّثَنِيْ أَبُو بُرْدَةَ بِنُ أَبِي مُوسَى

سیّدنا ابوموی بی نی کی این کی کی این می کی این الله می کی آخر مایا:

دنیتم لاک سے نکاح کی اجازت کی جائے گی اگر وہ
خاموش رہی تو اجازت ہوگی۔اگر انکار کرے تو اسے مجبور
نہیں کیا جائے گا۔'

ف واند: معلوم ہوا کہ بنتیم بچی سے پوچھ کراس کی شادی کی جائے گی اگر وہ موجودہ رشتے پر رضامند نہ ہوتوا سے مجبور کرنا خلاف شریعت ہے۔ عموماً معاشرہ میں بنتیم بچیوں کے جذبات کومجروح کیاجاتا ہے جوسراسرظلم کے زمرہ میں آتا ہے۔

[13] باب استِنه مارِ الْبِكُرِ وَالنَّيِّبِ كنوارى اوربيوه سے آجازت لينا

2232 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو الْمُغِيْرَةِ حَدَّثَنَا الْأُوْزَاعِيُّ حَدَّثَنِي يَحْيَى عَنْ أَبِيْ سَلَمَة

سیّدنا ابو ہریرۃ وَالنَّوْ کہتے ہیں کہ رسول الله طِیَّایِّۃ نے فرمایا: '' بیوہ عورت کی اجازت کے بغیراس کا نکاح نہ کیا جائے اور نہ کنواری عورت کی اجازت کے بغیراس کا نکاح کیا جائے ان کی اجازت سے کہوہ خاموش رہیں۔''

عَنُ أَبِى هُ رَيُ رَةً قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنَى أَبِى هُ رَيُ رَسُولُ اللهِ عَنَى تُسْتَأْمَرَ وَلَا يُنكَحُ النَّيِبُ حَتَى تُسْتَأْمَرَ وَإِذْنُهَا وَلَا تُنكَحُ البِكُرُ حَتَى تُسْتَأْذَنَ وَإِذْنُهَا الصَّهُونُ . ٥ الصَّهُونُ . ٥

فوائد: (۱) شوہردیدہ اور کنواری کی اجازت میں تھوڑا فرق ہے شوہر دیدہ کے لیے اپنی رائے کا ظہار لازم اور جبکہ کنواری کی خاموشی کو اس کی رضامندی پرمحمول کیا جائے گا۔مطلقہ ، بیوی یا خلع عورت

¹²⁹⁸⁾ موارد الظمآن (الحديث4085) موارد الظمآن (الحديث1298)

[•] متفق عليه: البخارى، كتاب النكاح، باب لاينكح الأدب وغير البكروالثيب إلا برضاهما (الحديث 5136) ومسلم، كتاب النكاح بال استئذان الثيب في النكاح بالنطق والبكر بالسكوت (الحديث 3458)

ازدواجی تجربات سے بخوبی آگاہ ہوتی ہے وہ کھل کراپی رائے کا ظہار کرسکتی ہے جبکہ کواری بچی پر شرم ازدواجی تجربات سے بخوبی آگاہ ہوتی ہے وہ کھل کراپی رائے کا ظہار کرسکتی ہے جبکہ کواری بچی پر شرم وحیا کا پہلو غالب ہوتا ہے۔ (۲) ان سے مشورے یا اجازت کا مطلب یہی ہے کہ ولی ان کی اجازت کا پابند ہے اسے زبردتی کرنے کا کوئی اختیار نہیں ایسی صورت میں نکاح غیر سجح ہوگا اور اسے فنح کردیا جائے گا اور جہور کرنے ہیں ان کی ولایت ختم ہوجائے گا بیت قاضی کونتقل ہوجائے گا واللہ اعلم)

2233 ـ أَخْبَرَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيْرِ حَلَّتَنَا هشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِيْ سَلَمَةَ

أَنَّ أَبَا هُرَيُورَةَ حَدَّثَهُ عَنُ رَسُولِ اللَّهِ عِلَى سَيْدنا ابو برية فَالْتُونِ الى حديث كو دوسرى سند سے بهذا الْحَدِيثِ . • رسول الله طَنَا الله عَلَيْنَ سے روایت كرتے ہیں۔

2234 حَدَّ ثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْفَصْلِ عَنْ نَافِع بْنِ جُبَيْرِ بْنِ

مُطْعِم.....

عَنِ اَبْنِ عَبَّاسٍ قَالَ وَسُولُ سَيْدنا ابن عباس رَفَائِدَ كَتَ بِي كَرَسُولُ اللَّهِ عَلَيْهَ نَ عَبَّاسِ وَاللَّهِ عَلَيْهَ اللَّهِ عَلَيْهَ اللَّهِ عَلَيْهَ اللَّهِ عَلَيْهَ اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَيْهُ اللّهِ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ الللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلْ عَلَيْهُ عَلَّا عَلَيْهُ عَلَيْه

فوائد: (۱) "الأيم" بيالثيب كے ہم معنی ہے يعنی شو ہرديدہ (۲) يہاں احناف "احق" كے لفظ سے استدلال كرتے ہيں كه اس كے ليے ولايت كی شرطنہيں جو كه ضعيف ہے كيونكه احق كالفظ شراكت كامتقاضى ہے كه دوشر يكوں ميں سے ايك كو فضيلت حاصل ہونہ كه دوسرا بالكل معدوم كرديا جائے (والله اعلم) للبذا شوہر ديدہ عورت كی شادى ميں اس كی رائے كوتر جے دى جائے گی۔

2235 - حَدَّثَنَا إِسْحٰقُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنِي مَالِكٌ أَوَّلُ شَيْءٍ سَأَلَتُهُ عَنْهُ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ ابْنُ الْفَضْلِ عَنْ نَافِع بْنِ جُبَيْرٍ

¹ متفق عليه يهي سابقه حديث والي تخريج بي بي ب

² صحيح مسلم، كتاب النكاح، باب استئذان الثيب في النكاح بالنطق (الحديث3461) وابو داؤد، كتاب النكاح، باب في الثيب (الحديث2098) و (الحديث2100)

149 کتاب النکاح الكَالِيُونَ المُعَلِّينِ المُعَلِينِ المُعَلِّينِ المُعَلِّينِ المُعَلِّينِ المُعَلِّينِ المُعَلِينِ المُعَلِّينِ المُعَلِّينِ المُعَلِّينِ المُعَلِّينِ المُعَلِينِ المُعَلِّينِ المُعَلِّينِ المُعِلِّينِ المُعِلِينِ المُعِلِينِ المُعِلِينِ المُعِلِينِ المُعِلِينِ المُعِلِينِ المُعِلِينِ المُعِلِينِ المُعَلِينِ المُعَلِينِ المُعِلِينِ نِ المُعِلِينِ المُعِلِينِينِ المُعِلِينِينِ المُعِلِينِ المُعِلِينِ المُعِلِينِ المُعِلِينِ المُعِلِينِ المُعِلِينِينِ المُعِلِينِ المُعِلِي المُعِلِي المُعِلِي المُعِلِينِ المُعِلِينِ المُعِلِينِ المُعِلِي المُعِلِي المُعِلِي المُعِ

سيّدنا ابن عباس وَلَيْنَهُ كَمِتْ مِين رسول الله طَيَّا فَيْ أَنْ فرمايا: '' کنواری عورت سے نکاح کے متعلق اجازت کی جائے اس کی اجازت یہ ہے کہ خاموش رہے۔''

عَـن ابُن عَبَّـاس قَـالَ قَـالَ رَسُولُ اللُّهِ عِنْ تُسُتَأَذُنُ الْسِكُرُ وَإِذُنُهَا

صُمَاتُهَا . ٥

2236 أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيْدِ حَلَّ ثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مَوْهَبِ

أَخْبَرَنَا نَافِعُ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِم

عَن ابُن عَبَّاسِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ الْأَيُّهُ أَمْلَكُ بِأَمُوهَا مِنُ وَلِيَّهَا وَالْبِكُرُ تُسْتَأْمَرُ فِي نَفُسِهَا وَصَمْتُهَا إِقْرَارُهَا . ٥

سيّدنا ابن عباس وظائمة ما كمت بين كدرسول الله عظاميم في فرمایا: ''بیوه عورت کواینے معاملہ میں اینے ولی سے زیادہ اختیار ہے اور کنواری عورت کے متعلق اس اجازت کی جائے۔اس کی اجازت پیہے کہ وہ اقرار کر لے۔''

> [14].... بَابِ الثَّيّبِ يُزَوِّ جُهَا أَبُوُهَا وَهِيَ كَارِهَةٌ وہ بیوہ جس کا نکاح اس کے باپ نے کر دیا ہواور اسے نا پسند ہو

2237- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ أَنَّهُ سَمِعَ الْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدٍ أَنَّهُ

عَبُدَ الرَّحُمَنِ بُنَ يَزِيدَ وَمُجَمِّعَ بُنَ يَزِيدَ الْأَنْصَارِيَّيُن حَدَّثَاهُ أَنَّ رَجُلًا مِنْهُمْ مِنَ الْأَنُصَارِ يُدُعَى خِذَامًا أَنْكَحَ بِنُتًا لَهُ فَكُرهَتُ نِكَاحَ أَبِيُهَا فَأَتَتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَدَكَرَتُ ذٰلِكَ لَهُ فَرَدَّ عَنُهَا نِكَاحَ أَبِيهَا فَنَكَحَتُ أَبَا لُبَابَةَ بُنَ عَبُدِ الُمُنُذِر فَذَكَرَ يَحُيَى أَنَّهُ بَلَغَهُ أَنَّهَا

عبدالرحليٌّ بن يزيد اور مجمع يزيدٌ انصاري بيان كرت بي انسار کے کے ایک آ دی جنہیں خدام کہا جاتا تھانے اپنی بین کا نکاح کیا۔ اور وہ اینے والد کے کئے ہوئے نکاح کو پند نہیں کیا۔ وہ رسول الله الطفائق کے پاس آئی تو اور آپ کے لیے اس کا ذکر کیا۔ آپ نے نکاح فنخ کر دیا پھراس نے ابولبابہ بن عبدالمنذر سے نکاح کیا۔ یکی نے ذکر کیا انہیں خبر ملی کہوہ بیوہ تھی۔

كَانَتُ ثُسًا . 😉

[🜓] اسناده صحیح: (2231) کے تحت اس کی تخریج گزر چی ہے۔

عسن: عبدالله بن عبدالرحمٰن بن موہب كسبب(2231) عتحت تخ تح كر رچكى ہے۔

[◙] صحيح البخاري، كتاب النكاح،باب اذا زوج الرجل ابنته وهي كارهة من نكاحه مردود (الحديث 5138) وابوداؤد، كتاب النكاح، باب في النيب (الحديث 2101) ابن ماجه، كتاب النكاح، باب من زوج ابته وهي كا رهة (الحديث 1873)

عَنْنَ الْكَارِينَ عَنْ الْكَارِينَ الْمُعَالِينَ الْمُعَالِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِي الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ عِلَّيْعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِينِ الْمُعِلَّيِعِلِي الْمُعِلَّيْعِ الْمُعِلَّي الْمُعِلِي الْمِينِي الْمُعِلِينِ الْمُعِلِي الْمُعِلِي الْمُعِلِي الْمُعِلَّيِي الْمُعِلَّيِي الْمُعِلِي الْمُعِلْمِينِ الْمُعِلِي الْمُعِلِي ا

فوائد: شوہر دیدہ عورت کا نکاح اگر اس کی مرضی کے برخلاف کردیا جائے توبین کاح نہ قابل قبول ہوگا اور قاضی اس نکاح کے ننخ کردے گا۔

2238- أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ …

سیدنا یزید بن جاریہ کے بیٹے عبدالرحمٰن اور مجمع سے منقول ہے کہ خنساءؓ بنت خدام کا نکاح اس کے والد نے کر دیا۔ اور وہ بیوہ تھی تو اس نے اس نکاح کو نا پیند کیا۔ اور وہ رسول الله ﷺ کے یاس آئی تو آپ نے اس کا نکاح فنخ

عَنُ عَبُدِ الرَّحْمَنِ وُمُجَمِّعِ ابُنَى يَزِيدَ ابُن جَارِيَةَ أَنَّ خَنْسَاءَ بنُنتَ خِذَام زَوَّجَهَا أَبُوهَا وَهِيَ ثَيّبٌ فَكُرِهَتُ ذٰلكَ فَاتَتُ رَسُولَ اللَّهِ عَلَى فَرَدَّ نگاحَهَا . ٥

لِلْأُوَّلِ مِنْهُمَا . 🎱

[15].... بَابِ الْمَرُأَةِ يُزَوِّجُهَا الْوَلِيَّانِ وہ عورت جس کا دوولی نکاح کریں

2239- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ الْحَسَنِ

زَوَّجَهَا وَلِيَّان لَهَا فَهِيَ لِلْأَوَّلِ مِنْهُمَا وَأَيُّسَمَا رَجُلٍ بَاعَ بَيُعًا مِنْ رَجُلَيْنِ فَهُوَ . لئے ہوگا "

عَنْ عُقْبَةَ بُنِ عَامِرٍ أَوْ سَمُواَة بُن جُندُب سيرنا عقبه بن عامر والنَّهُ يا سمرة بن جندب والنَّهُ بيان أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِنْ قَالَ أَيُّمَا امُرَأَةٍ مَ كُرتَ بِي كرسول الله عَيَيْ نِ فرمايا: "جسعورت كا نکاح دو ولی کریں تو وہ پہلے کے لئے ہو گی اور جو شخص دوآ دمیوں سے بیع کرے تو مال دونوں میں سے پہلے کے

فواند: نکوره حدیث ضعیف ہے کیکن امام ترندی رائیجید نے اسے حسن قرار دیا ہے (ترمذی _ باب ماجاء فی الولیین یزوجان) اور کہتے ہیں کہ اہل علم کاای پڑمل ہے (الا تَعلَم بینهم فی ذلك اختهلافًا) ہمیں کسی کے اختلاف کرنے کاعلم نہیں لیکن اگر دوولی انتظمے نکاح کردیں توسیحی کافنخ شار ہوگا یہ توری ،احمہ، اسحاق پیلشے کا قول ہے (تر مذی)

2240 حَدَّثَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ أَخْبَرَنَا قَتَادَةُ عَنِ الْحَسَنِ

❶ استناده قوى: البخاري، كتناب المنكاح،باب اذا زوج الرجل ابنته وهي كارهة(الحديث5138)ومالك، كتاب النكاح،باب جامع مالا يجوز في النكاح(الحديث25)

[€] اسناده ضعيف: حسن كاسمرة سيماع ثابت بيس - ابوداؤد، كتباب النكاح، باب إذا أنكح الوليان (الحديث 2280) الترمذي، كتاب النكاح، باب ماجاء في الوليين يزوجان(الحديث1110)

الكاح كتاب النكاح كالم الماح كتاب النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح

عَنْ سَمُرَةَ عَنْ رَسُولِ اللّهِ عَلَيْ بِنَحُوهِ. • سيّدناسمرة رسول عَيَيْنَ سے اس طرح بيان كرتے ہيں -

[16] بَابِ النَّهُي عَنُ مُتَّعَةِ النِّسَاءِ عورتوں سے متعہ کی ممانعت

2241 أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ

سيّدنا ربيع مبرة وفائفو اين والدسے بيان كرتے ہيں كہ ججة الوداع كے موقع يرلوگ رسول الله مطابقة كے ساتھ حلے۔ آپ نے فرمایا: ''تم ان سے متعہ کر لو اور متعہ کرنا ہمارے نزدیک یہ ہے کہ نکاح کیا جائے ۔پس ہم نے یہ بات عورتوں ہے کہی تو انہوں نے کہا کہ ہمارے اور ان کے درمیان کوئی مدت مقرر کریں۔ تو رسول الله عظیمایی نے فرمایا:"ایما بی کرو" چنانچه مین اور میرا چیا زاد باهر نکلے اس کے پاس ایک جا در تھی اور میرے پاس بھی ایک جاور تھی۔اس کی جا درمیری جا در سے اچھی تھی مگر میں اس سے زیادہ جوان تھا ہم ایک عورت کے باس گئے اسے میری جوانی پیندآئی اوراس کی جا دراچھی گئی ۔ پھر کہا: جا در جا در کی طرح ہے میرے اور اس کے درمیان دس روز کی مت مقرر ہوئی تھی۔ وہ رات میں اس کے پاس رہا ، پھر میں نے صبح کی تو ویکھا کہ رسول الله طفی مین اور باب کے درمیان کھڑے یہ فرما رہے ہیں:''لوگو! میں نے مہیں عورتوں سے متعہ کی اجازت وی تھی لیکن خبر دار! اب اللہ نے قیامت تک کے لئے اسے حرام کرویا۔ جس کے پاس ان میں ہے کوئی عورت ہو۔ تو وہ اسے حچھوڑ دے اور جو

عَنِ الرَّبِيعِ بُنِ سَبُرَةَ أَنَّ أَبَاهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُمُ سَارُوُا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ عَلَيْ فِي حِجَّةٍ الُوَدَاع فَقَالَ اسْتَمْتِعُوْا مِنُ هٰذِهِ النِّسَاءِ وَالِاسْتِهُتَاعُ عِنْدَنَا التَّزُويجُ فَعَرَضْنَا ذٰلِكَ عَلَى النِّسَاءِ فَأَبَيْنَ أَنُ لَا نَصُرِبَ بَيُنَنَا وَبَيْنَهُنَّ أَجَلًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الْحَعَلُوا فَخَرَجُتُ أَنَا وَابُنُ عَمِّ لِى مَعَهُ بُرُدٌ وَمَعِى بُرُدٌ وَبُرُدُهُ أَجُودُ مِنُ بُرُدِى وَأَنَا أَشَبُ مِنْهُ فَأَتَيُنَا عَلَى امُرَأَةٍ فَأَعُجَبَهَا شَبَابِي وَأَعُجَبَهَا بُرُدُهُ فَقَالَتُ بُرُدٌ كَبُرُدٍ وَكَانَ الْأَجَلُ بَيُّنِي وَبَيْنَهَا عَشُرًا فَبِتُّ عِنُدَهَا تِلُكَ اللَّيُلَةَ ثُمَّ غَدَوُتُ فَإِذَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَائِمٌ بَيْنَ الرُّكُن وَالْبَابِ فَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّى قَدُ كُنُتُ أَذِنْتُ لَكُمُ فِي الاستِ مُتَاع مِنَ النِّسَاءِ أَلا وَإِنَّ اللَّهَ قَدُ حَرَّمَ ذَٰلِكَ إِلَى يَوُمِ الْقِيَامَةِ فَمَنُ كَانَ عِنُدَهُ مِنْهُنَّ شَيْءٌ فَلَيْخَلَّ سَبِيلَهَا وَلَا

 [♣] منقطع ضعيف: ابو داؤ د، كتاب النكاح (الحديث 2088) الطبراني الكبيير 203/7 (الحديث6839) البيهقي، كتاب النكاح والمحديث 139/7

الكاح الكام
تَأْخُذُوا مِمَّا آتَيْتُمُوهُنَّ شَيْئًا . ٥ ﴿ يَهُمَّ فَ أَنْهِيلَ دِيابٍ وه ان سے كھواليل ندلو''

فواند: ناح متعه بوتا ہے کسی عورت سے مقررہ مدت تک نکاح کرلینا۔ ہفتہ، 10 دن یام ہینہ یا جتنی در آ دمی سفر میں کسی مقام پر کھہرنا جا ہے۔اس کی اجازت مسافروں کے لیے ہوتی تھی۔لہذا متعدد اسفار میں اس سے روکا گیا۔ ابن حجر رطیعی فرماتے ہیں حیو مختلف مقامات برنکاح متعہ کامنسوخ ہوجانا مروی ہے(۱) خیبر میں (ب) عمرة القصاء میں (ج) فتح مکہ کے سال (د) اوطاس کے سال (ھ) غزوہ تبوک میں (و) ججۃ الوداع میں (فتح الباری) عبدالرحمٰن مبار کپوری رہے اور ماتے ہیں متعہ کی اجازت سفر میں ہوتی تھی گھر میں اس کی اجازت کے بارے میں کوئی بات نہیں ملتی للندا آپ السے اللہ نے کئی دفعہ اس سے اسفار میں منع كياحتى كه آخرى دفعه ججة الوداع مين بميشه كے ليے حرام كرديا (تخفة الاحوذي 226/4) نيز سيدنا ابن عباس طافی اگر چہ حلت متعہ کے قائل تھے مگر صحیح سند سے ثابت ہے کہ انہوں نے بعد میں اس موقف سے رجوع کرلیا تھا اور حرمت کے قائل ہو گئے تھے۔

2242 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيّ.

قَالَ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنُ نِكَاحِ

عَنِ الرَّبِيعِ بُنِ سَبُرَةَ الْجُهَنِيِّ عَنُ أَبِيهِ سِيِّنا رئيج بنسبرة جَهَى وَاللَّهُ اين والديال كرتے بي کہ رسول اللہ ﷺ نے فتح کمہ کے سال متعہ کے نکاح ہے منع فر مایا۔

2243 حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثِنِي ابْنُ عُيِيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ.....

سیّدنا حسن اور عبدالله دِی تنه این والدے بیان کرتے ہیں انہوں نے کہا میں نے علی بڑھند سے سنا وہ ابن عباس زائند ے کہ رہے تھے: "رسول الله مضين نے خيبر كے سال عورتوں کے متعہ اور گھریلو گدھے کے گوشت سے منع فرما ديا_''

عَن الْحَسَنِ وَعَبُدِ اللَّهِ عَنُ أَبِيُهِمَا قَالَ سَمِعُتُ عَلِيًّا يَقُولُ لِابُنِ عَبَّاسِ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهْى عَنِ الْمُتُعَةِ مُتُعَةٍ النِّسَاءِ وَعَنُ لُحُومِ الْحُمُرِ الْأَهْلِيَّةِ عَامَ خَيْبَرَ . 🛭

الُمُتُعَةِ عَامَ الْفَتُحِ. ٥

❶ صحيح مسلم، كتاب النكاح،باب نكاح المتعة(الحديث 2406)وابوداؤد، كتباب النكاح،باب في النكاح المتعة (الحديث 2072) النسائي، كتاب النكاح، باب تحريم المتعة (الحديث 3368)

² صحيح: اخرجه الحميدي في المسند (الحديث869) مسلم (الحديث1406)

[🚯] متفق عليه : (2033) نمبرحديث كتحت اس كى تخ تح گزر يكل ہے۔

www.sirat-e-mustageem.com

يَّتَنَ الْكَارِينِيُّ كَتَابِ النكاح كَتَّابِ النكاح كَتَّابِ النكاح كَتَّابِ النكاح كَتَّابِ النكاح كَتَّابِ النكاح كَتَابِ النكاح كَتَابِ النكاح المُخْرِمِ [17].... بَابِ فِي نِكَاحِ المُخْرِمِ مُحْمٍ كَا نَكَاحَ كَابِيان مُحْمٍ كَا نَكَاحَ كَابِيان

2244 ـ أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ أَيُّوبَ بْنِ مُوسَى عَنْ نُبَيْهِ بْنِ وَهْبٍ عَنْ أَيُّوبَ بْنِ مُوسَى عَنْ نُبَيْهِ بْنِ وَهْبٍ عَنْ أَبَانَ بْنِ عُثْمَانَ

عَنْ عُثْمَانَ عَنِ النَّبِي عَلَىٰ قَالَ الْمُحُومُ سَيِّدنا عَثَانَ وَالنَّيْ بِيانَ كَرَتْ بِي كَه بَى عَلَيْنَ فَ فَرَ مايا: لَا يَنْكِحُ وَلَا يُنْكِحُ . • " "محرم نه خود نكاح كرے اور نه كى كاكروائے."

فوائد: ج میں فقط مناسک کی ادائیگی اور کمل توجه اللہ کی جانب مرکوز کرنا مطلوب و مقصود ہوتا ہے جسمی تواس کی ادائیگی کے بعد انسان کی جمیع خطائیں مٹادی جائیں ہیں حتی کہ وہ ایسے ہوتا ہے جیسے ابھی بطن مادر سے خارج ہوا ہو۔ لہذا اسی بناء پر ایسے بھی امور جو کہ عام حالات میں جائز ہوتے ممنوع ہوجاتے ہیں۔ حتی کہ بیوی سے تعلقات تورہ ایک طرف اس سے ایسے موضوع پر گفتگو بھی نہیں کی جاسکتی۔ چنانچہ نکاح بھی فقط چونکہ اسی قبیل سے تعلق رکھتا ہے اس لیے اس سے بھی منع فرمادیا گیا۔

2245 ـ أَخْبَرَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ هُوَ ابْنُ مُحَمَّدٍ عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ

مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ

سیّدنا ابوسلمہ زبانی کہتے ہیں میں نے سیّدنا زبانی اے پوچھا رسول الله مطابقی کی بیویوں کا کیا مہر تھا؟ انہوں نے کہا: آپ کی بیویوں کا مہر بارہ اوقیے اور ایک نش تھا اور کہنے لگیں جانتے ہونش کتنا ہوتا ہے؟ میں نے کہا: نہیں انہوں نے کہا: ''نصف اوقیہ بیرسول اللہ مطابقی کی بیویوں کا مہر عَنُ أَبِى سَلَمَةَ قَالَ سَأَلُتُ عَائِشَةَ كَمُ كَسَانَ صَدَاقَ أَزُوَاجِ رَسُولِ اللّهِ عِنْ اللّهِ عِنْ اللّهِ عِنْ اللّهِ عِنْ اللّهِ عَشُرَةَ قَالَتُ كَانَ صَدَاقُهُ لِأَزُوَاجِهِ اثْنَتَى عَشُرَةَ أُوقِيَّةً وَنَشَّا وَقَالَتُ أَتَدُرِى مَا النَّشُ قَالَ قُلْتُ لَا قَالَتُ نِصُفُ أُوقِيَّةٍ فَهٰذَا صَدَاقَ قُلْتُ لَا قَالَتُ نِصُفُ أُوقِيَّةٍ فَهٰذَا صَدَاقَ رَسُولِ اللّهِ عِنْ لِلَّهُ إِلَّهُ وَاجِهِ. ٥ وَسُولِ اللّهِ عِنْ لِلَّهُ إِلَّهُ وَاجِهِ. ٥ وَسُولِ اللَّهِ عِنْ لِلَّهُ إِلَّهُ وَاجِهِ. ٥

❶ صحيح مسلم، كتاب النكاح، باب تحريم النكاح المحرم (الحديث3433) وابوداؤد، كتاب المناسك، باب المحرم يتزوج (الحديث1841) وابن ماجه، كتاب النكاح، باب المحرم يتزوج (الحديث1966)

② صحيح مسلم، كتاب النكاح، باب الصداق وجواز كو نه تعليم قران (الحديث 3474) ابوداؤد، كتاب النكاح، باب الصداق (الحديث 1886)

كتاب النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح كتاب النكاح

فوائد: (۱) "صداق" كہتے ہيں حق مهر كوعر بي ميں اس كے ليے نو (۹) الفاظ آتے ہيں (۱) صداق (۲) صدقه (۳) مهر (۳) نحله (۵) فريضه (۲) اجر (۷) علائق (۸) عقر (۹) حباء (المغنى لابن قدامه) (۲) آپ مين آيا کا اپنی بيويوں كے ليے ساڑھے بارہ اوقيہ حق مهر ہوتا تھا۔جو كه تقريباً پندرہ سوتيں گرام جاندى ہوتی ہے۔

2246 أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ عَنْ مَنْصُور بْن زَاذَانَ عَنِ ابْنِ سِيْرِينَ

سیّدنا ابوعِفاء سلی و الله اسیّد بیں۔ میں نے سیّدنا عمرابن خطاب و الله کے سناوہ خطبہ دے رہے تھے۔ تو انہوں نے الله کی حمد و ثنا بیان کی، پھر فرمایا: خردار! تم لوگ عورتوں کے مہر میں زیادتی نہ کرو، اگر یہ کام دنیا میں بزرگی اور الله کے نزد یک پر ہیزگاری کا ہوتا۔ تو اس کے ستحق تم سے بڑھ کر رسول الله طفظ المی کا ہوتا۔ تو اس کے ستحق تم سے بڑھ کر آپ نے ، حالانکہ بارہ اوقیہ سے زیادہ نہ تو سی سے کسی کا کیا گیا۔ "خبر دار! بعض لوگ اپنی بیوی کے مہر میں زیادتی کرتے ہیں۔ اس کے دل میں عورت کی طرف میں زیادتی کرتے ہیں۔ اس کے دل میں عورت کی طرف سے عداوت باتی رہتی ہے۔ حتی کہ وہ کہتا ہے: "میں نے دیا میں میں تکلیف المھائی۔ "

عَنُ أَبِى الْعَجُفَاءِ السَّلَمِي قَالَ سَمِعُتُ عُمَرَ اللَّهَ عُمَرَ الْمَخَطَّابِ خَطَبَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَالَّذِي عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ اللَّا لَا تَعَالُوا فِي صُدُقِ وَالَّذِي عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ اللَّا لَا تَعَالُوا فِي صُدُقِ اللَّهِ عَانَتُ مَكُومَةً فِي النِّسَاءِ فَإِنَّهَا لَوْ كَانَتُ مَكُومَةً فِي النِّسَاءِ فَإِنَّهَا لَوْ كَانَتُ مَكُومَةً فِي اللَّهِ كَانَ أَوْ لَا كُمُ اللَّهِ كَانَ أَوْ لَا كُمُ اللَّهِ كَانَ أَوْ لَا كُمُ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى الْهُ عَلَى اللَّهُ ع

الُقِرُبَةِ . •

فواند: (۱) "علق القربة" يمشكز على متعلق رى كوكت بين-اور" عرق القربة" مشكز على الرجه كوئى حدمقر رنبيل قرآن كريم مشكز على على الرجه كوئى حدمقر رنبيل قرآن كريم ميل الرقم في ان كوخزانه بهى ديا موتو الله على به لو (النساء: 20) الى طرح ايك شادى كے خواہ شمند كو آپ مشخط في ان كو خواہ شمند كو آپ مشخط في في ايك الكوشى بى كيول نه موه وه بهى نه بلى قرآن كى چندسورتول كوش نكاح كرديا (بخارى) البذاكم ازكم يازياده سے زياده كوئى جتناحق موه وه بهى نه بلى قرآن كى چندسورتول كوش نكاح كرديا (بخارى) البذاكم ازكم يازياده سے زياده كوئى جتناحق

❶ صحيح: ابوداؤد، كتاب النكاح، باب الصداق (الحديث 2106) ترمذي، كتاب النكاح، باب منه (الحديث 1114) و ابن ماجه، كتاب النكاح، باب صداق النساء (الحديث 1887)

مہر دینا جاہے وہ دے سکتا ہے البتہ حق مہر دیتے ہوئے شوہر کواپی وسعت کا خیال رکھنا جاہیے تا کہ بعد میں پریشانی نہ بنے۔(نیزعوام میں مشہور ہے کہ شرع حق مہر سواہتیں روپے ہیں یہ بناوٹی بات ہے دین میں کہیں سواہتیں روپے کاذکرنہیں ہے۔

[19] بَابِ مَا يَجُوزُ أَنُ يَكُونَ مَهُرًا وہ چیزیں جن کا مہر دینا جائز ہے

2247 حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن أَنْبَأَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَبِيْ حَازِم

سیّدناسهل بن سعد فی تی کیتے ہیں۔ ایک عورت نے نی می ایک الله اوراس کے میں آ کرکہا: اس نے اپنا آپ الله اوراس کے رسول کو ہبہ کر دیا ہے۔ تو رسول الله می فی آن کی ضرورت نہیں۔'' ایک آ دی نے کہا: آپ اس عورتوں کی ضرورت نہیں۔'' ایک آ دی نے کہا: آپ اس سے میرا نکاح کر دیجئے۔ آپ نے فرمایا:''اے ایک کپڑا دے دو۔'' اس نے کہا: میرے پاس نہیں ہے۔ آپ نے فرمایا: 'اس نے فرمایا: 'اس نے معذوری کا اظہار کیا آپ نے فرمایا:''تھریں قرآن کی کوئی معذوری کا اظہار کیا آپ نے فرمایا:''تھریں قرآن کی کوئی سورت یاد ہے؟ انہوں نے کہا: ''قلال اور فلال۔'' آپ نے فرمایا:''قرآن کی ان سورتوں کے عوض جو تہیں یاد ہی ترمایا:''قرآن کی ان سورتوں کے عوض جو تہیں یاد ہی ترمایا:'' قرآن کی ان سورتوں کے عوض جو تہیں یاد ہی تہارا نکاح اس سے کر دیا ہے۔''

عَنُ سَهُلِ بُنِ سَعُدٍ قَالَ أَتَتِ امْرَأَةٌ إِلَى النّبِي عِنْ سَهُلِ بُنِ سَعُدٍ قَالَ أَتَتِ امْرَأَةٌ إِلَى النّبِي عِنْ فَصَهَا لِنّبِي عِنْ فَصَلَا اللهِ عَنْ مَا لِللّهِ عَنْ اللهِ عَنْ مَا لِللهِ عَنْ اللهِ عَنْ مَا اللهِ عَنْ مَا اللهِ عَنْ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ عَلَى اللهُ
فوائد (۱) شریعت نے جہاں بدکاری کونا قابل معافی جرم تھہرایا اوراس کی انتہائی تھین سزا مقرر کی و بین نکاح کو انتہائی آسان کردیا تا کہ معاشرے سے بدکاری وزنا کاری کی جڑ بی کث جائے جب کہ اس کے برعکس نظام جہاں بھی بروئے کارہوگا و بین بدکاری کی تخم ریزی شروع ہوجائے گی۔جس کا ہم اپنے اردگرد جائزہ لے سکتے بیں (۲) معلوم ہوا شریعت میں کم از کم حق مہرکی کوئی قید نہیں ۔

 [◘] متفق عليه: البخاري، كتاب النكاح، باب ترويج المعسرم(الحديث 5087) ومسلم، كتاب النكاح، باب الصداق وجواز كونه تعليم قران وخاتم حديد.... (الحديث 3472)

كتاب النكاح 156 m

[20] بَابِ فِي خُطُبَةِ النِّكَاحِ نکاح کے خطبہ کے متعلق،

2248 حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ وَحَجَّاجٌ قَالَا حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَنْبَأَنَا أَبُوْ إِسْحْقَ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا عُسُلَةً يُحَدِّثُ

سيّدنا عبدالله وفائقة بيان كرت بن كه جميس رسول الله عَـُ: عَبُد اللُّه قَـالَ عَلَّمَنَا رَسُولُ الله عليه عاجت اس طرح سکھایا "ممام تعریفیں الله اللهِ عَلَيْ خُعُبَةَ الْحَاجَةِ الْحَمُدُ لِلَّهِ أَوْ کے لئے ہیں۔ہم اس کی تعریف کرتے ہیں اور اس سے إِنَّ الْحَمُّدَ لِلَّهِ نَحُمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ مدد مانگتے ہیں۔ ہم اس سے بخشش مانگتے ہیں اور ہم این وَنَسُتَغُفِرُهُ وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنُ شُرُور نفس کی شرارتوں سے اللہ کی پناہ میں آتے ہیں۔ جے اللہ أَنُفُسِنَا مَنُ يَهُدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ ہدایت دے اسے کوئی گمراہ کرنے والانہیں ہے اور جسے اللہ وَمَنُ يُضُلِلُ فَلا هَادِي لَهُ أَشْهَدُ أَنْ لا مراہ کر دے اسے کوئی ہدایت دینے والانہیں ہے میں إِلَّهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ گواہی دیتا ہوں کہ اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں اور میں وَرَسُولُهُ ثُمَّ يَقُرأُ ثَلاثَ آيَاتٍ يَا أَيُّهَا گواہی دیتا ہوں کہ سیّدنا محمہ ﷺ اس کے بندے اور رسول الَّـذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا بير _ پهرتين آيات برهة: "اے ايمان والو! الله سے ايسے ورو تَـمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمُ مُسُلِمُونَ يَـا أَيُّهَا جیے ڈرنے کاحق ہے۔ تہمیں اسلام ہی کی حالت میں موت النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِى خَلَقَكُمُ مِنْ آئے'' (آل عمران :١٠٢)''اے لوگو! اینے رب سے ڈرو نَهُس وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوُجَهَا يَا أَيُّهَا جس نے تہمیں ایک ہی نفس سے پیدا کیا اور اس سے جوڑے الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللُّهَ وَقُولُوُا قَولًا بنائے'' (نساء: ۱)"اے ایمان والو! اللہ سے ڈرواور درست سَدِيُدًا يُصُلِحُ لَكُمُ أَعُمَالَكُمُ وَيَغُفِرُلَكُمُ بات کہو۔ وہ تمہارے اعمال کی اصلاح کر دے گا اور تمہارے ذُنُوبَكُمُ وَمَنُ يُطِعُ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدُ ليتمهارے گناہوں كو بخش دے گا۔اورجس نے اللہ اوراس فَازَ فَوُزًا عَظِيمًا ثُمَّ يَتَكَلَّمُ بِحَاجَتِهِ. ٥ کے رسول کی اطاعت کی اس نے بہت بردی کامیابی یالی۔"

(احزاب: ۷۰) پھرآ گاینی حاجت کا ذکر کرتے۔

الكاح النكاح الكاح المحام المح

فوائد: نكوره خطبه كوخطبة الحاجة كهاجاتا بي الشيئية كوكس فتم كي حاجت بوتى تو خطبه ك لیے آپ مطنع میں الفاظ کا چناؤ کرتے جو کہ انتہائی جامع ومانع اور خشیت الہی کامرقع ہیں۔ لہذا نکاح خطبہ لازم تونہیں البتہ مستحب ضرور ہے۔ جو کہ نکاح میں برکت کاباعث ہے۔ نیز خطبہ سے قبل لڑکی لڑ کے کو کلمہ پڑھانا کسی صحیح صدیث سے ثابت نہیں ۔ یہ بدعتی مولو یوں کی شریعت سازیاں ہیں کہ نکاح سے پہلے کلمے سننا شروع کردیتے ہیں۔ [21].... بَابِ الشُّرُطِ فِي النِّكَاحِ نكاح ميںشرط لگانا

2249- أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَاصِمٍ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيْدِ بْنِ جَعْفَرِ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِيْ حَبِيْبٍ عَنْ مَرْثَدِ

بْن عَبْدِ اللَّهِ

عَنُ عُـقُبَةَ بُنِ عَامِرِ عَنِ النَّبِيِّ عَلَيْ قَالَ إِنَّ أَحَقَّ الشُّرُوطِ أَنُ تُوفُوا بِهَا مَا استَحُلَلُتُمْ بِهِ مِنَ الْفُرُوجِ. •

کیے جانے کی زیادہ مستحق وہ شرط ہے جس کی وجہ سے تمہارے لیےعورت کی شرمگاہ حلال ہوئی۔''

ف فوائد: نکاح کے موقع پر طے ہونے والی شرائط کا خیال رکھنا انہیں پورا کرنا زوجین کی ذمدداری ہے۔البتہ الیی شرائط جوشریعت سے جٹ کر ہوں ایسی شرائط لگانا پانہیں یورا کرنا درست نہیں۔

[22] بَابِ فِي الْوَلِيمَةِ وليمد كے متعلق

2250 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَان حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ

سيَّدنا انس والله كتب بين كه نبي السُّيِّاء في عبدالرحمل بن عوف طِلْنَهُ ير زردي رجيهي تو آڀ نے فرمايا: 'يه زردي (رنگ) کیباہے؟اس نے کہامیں نے ایک عورت سے سونے کے یانچ درہم حق مہر کے عوض نکاح کیا ہے۔"آ یا نے فرمایا: "الله تعالى بركت دے وليمه كرواگر چهايك بكرى ہى ہو۔"

عَنُ أَنَس أَنَّ النَّبِيَّ عِلَى عَبُدِ الرَّحْمَنِ بُنِ عَوُفٍ صُفُرَةً فَقَالَ مَا هٰذِهِ الصُّفُرَةُ قَالَ تَزَوَّجُتُ امُرَأَةً عَلَى وَزُن نَوَادةٍ مِنُ ذَهَبِ قَالَ بَارَكَ اللَّهُ لَكَ أُولِمُ وَلَوْ بِشَاةٍ . •

❶ متفق عليه: البخاري، كتاب الشروط، باب الشروط في المهر عند عقدة النكاح(الحديث 2721) ومسلم، كتاب النكاح، باب الوفاء بالشروط في النكاح (الحديث 3457)

[◙] متفق عليه: البحاري، كتاب النكاح،باب كيف يدعى للمتزوج(الحديث 5155)ومسلم، كتاب النكاح،باب الصداق وجواز كونه تعليم قران وحاتم الحديد(الحديث3475)

الكاح ١٥٨ ١٥٨ كتاب النكاح

فوائد: (۱)" النواة" لفظى معنى تصلى برالبته امام خطاني رايعيد فرمات بين النواة بيان مين ایک معروف مقدار کا نام ہے۔جو کہ سونے کے یانچ درهموں کے برابرہوتی ہے جبیبا کہوہ اس کی تفسیر کرتے میں: 'الولیم' نیشادی برتیار ہونے والے کھانے کو کہتے ہیں بدلفظ الولم بعنی جمع سے مشتق ہے۔ چونکداس موقع برز وجین میں اکھ ہوا ہوتا ہے للبذا ولیمہ کالفظ بولا جاتا ہے۔ (۲) سادگی سے شادی کرنا مسنون ومندوب ہے شادی کی بجائے ولیعے میں اعزا کو ہلانا انہیں اطلاع کرنامتحب ہے۔ (۳) ولیمہ کرنا سنت ہے ۔ولیمے میں کی بیشی کی کوئی قیرنہیں بلکہ حسب ضرورت ووسعت کاولیمے کا کھانا یکایا جاسکتا ہے وہ تھوڑا ہویازیادہ ۔اسی طرح ولیمه میں جانورذ مح کرنا یا گوشت یکانا بہ بھی ضروری نہیں ۔ولیمه میں خشک میوہ جات، پھل فروث یامٹھائی وغیرہ پراکتفا کرنابھی بالکل درست ہےقرضے اٹھا کر تکلفات نہیں کرنے حام بیس ۔

[23_].... بَابِ مَاجَاءَ فِي إِجَابَةِ الْوَلِيمَةِ وليمه كي دعوت قبول كرنا

2251 - أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ عَنْ نَافِع

''جبتم میں ہے کسی کو ولیمہ کی دعوت دی جائے تو وہ قبول کرے ، ابو محمد کہتے ہیں: ''قبول کرنا بہتر ہے اور کھانا ضرورې نېيس''

عَن ابُن عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عِنْ مَن سيّدنا ابن عمر رَفي الله عَن كبت بين كدرسول الله عن من أن فرمايا: إذَا دُعِيَ أَحَدُكُمُ إِلَى وَلِيُمَةٍ فَلَيُحِبُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد يَنْبَغِيُ أَنْ يُجِيِّبَ وَلَيْسَ الْأَكُلُ عَلَيْهِ بِوَاجِبٍ . •

ف واست : معلوم ہوا و لیے کی دعوت قبول کرنا لازم ہے۔ کیونکدالی خوشی کے موقعہ پر ندآ ناکی شكوك وشبهات كوجنم ويتاب البنة مسلم مين الفاظ بين "أن شاء طعم وأن شاء ترك" وعوت مين جاني کے بعد اگر چاہے تو کھالے یا جھوڑ دے۔ لہذا کھانا کھانا ضروری نہیں کیکن ایسی محافل جن میں منکرات کا دور دورا ہوالی محافل سے بیخاہی اولی ہے۔

[24].... بَابِ فِي الْعَدُلِ بَيْنَ النِّسَاءِ عورتوں کے درمیان عدل کرنا

2252 حَدَّثَنَا أَبُّو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ النَّضْرِ بْنِ أَنْسِ عَنْ بَشِيْرِ

[●] متفق عليه: البخاري، كتاب النكاح، باب حق اجابة الوليمة والدعوة (الحديث 5173) ومسلم، كتاب النكاح، باب الأمر باجابة الداعي إلى دعوة (الحديث2495) بوداؤد، كتاب الأطعمة باب ماجاء في اجابة الدعوة (الحديث3736)

الكاح كاب النكاح (159 كتاب النكاح كتاب النكاح (١٤٩ كتاب النكاح)

بْنِ نَهِيْكِ..... عَـُــُ أَـــُ هُــُ ثُــُةَ عَــُر

سیّدنا ابو ہریرة رفیقی کہتے ہیں کہ نبی مظیّقی نے فرمایا: "جس کی دو ہیویاں ہوں اور وہ ان میں سے ایک کی طرف رغبت رکھتا ہووہ قیامت کے دن اس حال میں آئے گا کہ اس کا ایک پہلوچھکا ہوا ہوگا۔"

فوافد: معلوم ہوا زیادہ ہویوں سے نکاح اس صورت میں درست ہے جب بندہ عدل قائم کرسکتا ہو۔ ورنہ یہ وعیدانسان کو متنبہ کرنے کے لیے کافی ہے۔ البتہ یہ عدل معاملات کی حد تک مطلوب ہے اگر کوئی ایک بیوی زیادہ محبوب ہو دل اس کی جانب زیادہ مائل ہوتو یہ انسانی وسعت سے باہر ہے اوراسلام میں "تک لیف مالا یہ طاق" درست نہیں۔ اور آپ طبح آلا ہے عمل عدل قائم رکھنے کے ساتھ ساتھ دلی طور پر عائشہ نواٹھا کی طرف زیادہ مائل شے لہذا دل کا میلان قابل گرفت نہیں۔ ہمارے ملک کے حالات اس قد رابتر ہیں کہ یہاں دوسری شادی کو صدر جہ نفرت کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے۔ اور پہلی بیوی طلاق لیے بغیر ایک دن نہیں گزارتی۔ دوسری شادی کو وہ اپنے لیے نہ جانے کیا مجھتی ہے؟ حالا نکہ ایس سوچ دین دخمن لوگوں کوتو ہوسکتی ہیں گزارتی۔ دوسری شادی کو وہ اپنے لیے نہ جانے کیا مجھتی ہے؟ حالا نکہ ایس سوچ دین دخمن لوگوں کوتو ہوسکتی ہیں۔ اللہ ہمیں خواہشات کی پیروی سے بچائے اور دین کے تا کھ رہنے کی تو فیق عطا کرتے گو اللّٰہ یہدی)

[25] بَابِ فِي الْقِسُمَةِ بَيْنَ النِّسَاءِ عورتول مِين باريول كي تقسيم

2253 ـ أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْن يَزيدَ الْخَطْمِيِّ

سیّدہ عائشہ فالیّن اکہتی ہیں کہ رسول الله می آیا باریاں تقسیم کرتے تو عدل کرتے اور فرماتے: ''اے اللہ! میری سیقسیم اختیاری چیزوں ہیں ہے مجھے ان چیزوں میں مؤاخذہ نہ عَنُ عَائِشَةَ قَالَتُ كَانَ رَسُولُ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهُ عَ يَقُسِمُ فَيَعُولُ وَيَقُولُ اللهُ عَلَيْ هَذَا قَسُمِى فِيمَا أَمُلِلتُ فَكَلا تَلُمُنِي فِيمَا

❶ صحيح كتاب النكاح، باب في القسم بين النساء (الحديث 3133) الترمذي، كتاب النكاح، باب ماجاء في التسوية بين الضوائر (الحديث 1141) صحيح ابن حباين (الحديث 4207)

الكاح ١٥٥ المراكزة النكاح ١٥٥ المراكزة النكاح

كرنا جوتير اختيار مين بين مير اختيار مين نبين بين-''

تَمُلِكُولًا أَمُلِكُ . •

فواند: (۱) بندے کے ذیے تقسیم میں عدل لازم ہے (۲) جس چیز کا بندہ ما لک نہیں ہے یعنی دل کا اس بارے میں نہ کورہ کلمات کے ذریعے دعا کرتے رہے۔ ان شاء اللہ اس بارے اس سے پوچھ کھی نہیں ہوگی۔ (۳) نہ کورہ روایت مرسل مردی جبکہ موصول بیان کرنے والے فقط جماد بن سلمہ ہیں لہذا امام نسائی، ترندی، داقطنی وابوزرعہ دی لئے ہیں کہ ہمیں جماد کے وصل پرمتابعت کاعلم نہیں نووی رائی پیشرے مسلم میں اس کے تعاقب میں کہتے ہیں کہ جب راویوں میں وصل وارسال کا اختلاف ہوتو فقہاء ،اصولیوں اور محققین محدثین کا بھی مؤقف ہے کہ موصول کوتر جمع حاصل ہوگی۔

و 26] بَابِ الرَّ جُلِ يَكُونُ عِنْدَهُ النِّسُوَةُ السِّسُوَةُ السِّسُوَةُ السِّسُوَةُ السِّسُونَ اللَّ

2254- أَخْبَرَنَا إِسْمَعِيلُ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُهُ وَ قَ.........

سیّدہ عائشہ رفیاتیئ کہتی ہیں کہ رسول الله مطفیقیّن جب سفر (کا ارادہ) کرتے تو اپنی از واج کے درمیان قرعہ ڈالتے ہتو جس کا نام نکلتا اسے اپنے ساتھ لے جاتے۔

عَنُ عَاثِشَةَ قَالَتُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﴿ اللَّهِ ﴿ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّه إِذَا سَسافَ رَ أَقُرَعَ بَيْنَ نِسَساثِهِ فَأَيْتُهُنَّ خَرَجَ سَهُمُهَا خَرَجَ بِهَا مَعَهُ . ٥

فواند: سفر کا عارضہ چونکہ بھی بیش آتااس لیے باری مقرر کرنے کی بجائے آپ منظم آتا اس میں قرعہ اندازی کر لیتے۔

[27] بَابِ الْإِقَامَةِ عِنْدَ الثَّيِّبِ وَالْبِكُرِ إِذَا بَنَى بِهَا ابتَرائى ملاقات مِن بيوه اوركنوارى عورت كے پاس قيام

2255 ـ أَخْبَرَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحٰقَ عَنْ أَيُّوْبَ عَنْ أَبِيْ قِلَابَةَ

عَنُ أَنَسِ بُنِ مَالِلْثٍ قَالَ قَالَ دَسُولُ سَيْدنا الْس بَن ما لک فِيْ اللهِ عَنْ كَبَ بِي كه رسول الله عَيَلَا السَّلِّهِ عَنْ أَنَسِ بُنِ مَالِلْثٍ قَالَ قَالَ دَسُولُ سَيْدنا الْس بَن ما لک فِيْ اللهِ عَلَيْهِ کَهِ رسول الله عَيْمَةِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْهُ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلْهُ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَي

• صحيح: ابوداؤد، كتاب النكاح، باب في القسم بين النساء (الحديث 2134) النسائي، في عشرة النساء (الحديث 5) وصحيح ابن حباك (الحديث 4205)

♦ مشفق عليه: البخاري، كتاب النكاح، باب الترمذي، بين النسائي اذا اراد سفرا (الحديث 5211) ومسلم في التوبة، باب في حديث الافك وقبول توبة القازف (الحديث 2770)

www.sirat-e-mustageem.com

الكاح كتاب النكاح كتاب النكاء كتاب النكاء كتاب النكاح كتاب النكاء
ئكرٿ. ◘

تنین دن ہیں۔''

فوائد: (۱) شادی کرنے والے کی اگر پہلے بھی ہویاں ہوں تو نئی ہوی اگر تو کنواری ہے تو اس کے پاس 7 را تیں اورا گرشو ہر دیدہ بھی اپنے خاوند کو است را تیں اورا گرشو ہر دیدہ بھی اپنے خاوند کو سات را توں تک رو کناچا ہے تو اس کی بھی اجازت ہے۔جیسا کہ آئندہ حدیث میں مذکور ہے۔ (۲) جتنی را تیں اس نئی ہوی کے پاس قیام کیاجائے اسی بقدر پھر باقی ہویوں کو وقت دیاجائے گا (دیکھیے آئندہ اثر)

2256 أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِى شَيْبَةَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدِ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِى شَيْبَةَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدِ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِى بَكُو بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ عَنْ بْنِ أَبِى بَكُو بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ عَنْ

ه د م

سیدنا ام سلمہ رفائیہ کہتی ہیں کہ رسول الله مطابقی نے جب
ام سلمہ رفائی سے نکاح کیا تو ان کے پاس تین دن قیام کیا
اور فرمایا: ''تمہاری وجہ سے تمہارے اہل پر کوئی ذلت نہیں
ہے اگر جا ہو تو تمہارے پاس سات دن رہوں۔ اگر
تمہارے پاس سات دن رہوگا تو اپنی باتی عورتوں کے

عَنُ أُمِّ سَلَمَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﴿ لَكُمُ لَمَّا تَرَوُ وَ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ
پاس بھی سات دن رہوں گا۔' [28] بَابِ بِنَاءِ الرَّ جُلِ بِأَهْلِهِ فِی شَوَّالٍ شوال کے مہینہ میں بیوی سے پہلی ملاقات کرنا

2257 ـ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ سُفْيَانَ عَنْ إِسْمَعِيلَ بْنِ أُمَيَّةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ عُرُوةَ

عَنُ عَائِشَةَ قَالَتُ تَزَوَّجَنِى رَسُولُ اللهِ عَلَيْهِ فِي اللهِ عَلَيْهِ فَي عِنْدَهُ

سیدہ عائشہ وہائین کہتی ہیں رسول الله ﷺ نے شوال میں مجھ سے نکاح کیا اور شوال میں ہی میں آپ کے پاس داخل کی گئے۔ مجھ سے بڑھ کرآپ کے ہاں کون می ہوہ مجھ

 [♦] متفق عليه: احرجه البخاريكتاب النكاح، باب اذا تزوج البكر على الثيب (الحديث 5213) ومسلم، كتاب الرضاء، باب قدر ما تستحقه البكرو الثيب من إقامة الزوج عندها عقب الزفاف (الحديث 1461)

 [◘] صحيح مسلم، كتباب الرضاع، باب قدر ماتستحقه البكروا الشيب (الحديث 3606) وابن ماجه، كتاب النكاح، باب الاقامة على البكر والثيب (الحديث 1917)

الكاح الكام
مِنِي قَالَ وَكَانَتُ تَسُتَحِبُّ أَنُ تُدُخِلَ عِيزياده خُوش نصيب تفي عروةٌ كہتے ہيں: ' وه اس بات كو پند کرتی تھیں کہ مرد عورت کے پاس شوال میں جائے۔''

عَلَى النِّسَاءِ فِي شُوَّال . •

فوائد: شوال ، اس میس نحوست کے معنی یائے جاتے ہیں للبذا اہل عرب شوال میں شادی وغیرہ ہے اجتناب کرتے تو آپ مشکھانے نے اس بدشگونی کوتوڑنے کے لیے جان بوجھ کر ایبا کیا۔ چنانچہ اسلام میں بدفالی، براشگون لینا جائز نہیں۔اہل جاہلیت کا طریقہ ہے ہمارے ایک قاری صاحب تھے وہ اپنے اس عمل کے بارے میں بتاتے ہیں کہ میں نے دس محرم کوشادی کی تا کہ اس دن شادی کرنے کی جابلی رسم کوتوڑا جاسکے۔ کیونکہ اسلام میں اگرا کابر کی موت وحیات کا خیال رکھاجائے تو پھرتو بہت تھوڑے بن بیجتے ہیں جن میں کسی کی موت یاحیات نہ ہوئی ہو۔ چنانچہ اللہ نے انہیں پہلا ہی بیٹادیااور وہ خوش وخرم زندگی بسر کررہے ہیں۔ آپ مشر میں شادی عائشہ وٹاٹھیا سے ماہ شوال میں ہوئی اورآپ مشر میں تاکشہ وٹاٹھیا کا از دواجی تعلق امت کے لیے بہترین نمونہ ہے۔

[29].... بَابِ الْقَوُلِ عِنْدَ الْجِمَاعِ صحت کے وقت دعا

2258 ـ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسِى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ مَنْصُورِ عَنْ سَالِمٍ عَنْ كُرَيْبِ

عَن ابُنِ عَبَّاسِ قَالَ قَالَ دَسُولُ سِيْدنا ابن عباس فِالنَّهُ كَبْتِ بِي كه رسول الله عَيْدَا ن فرمایا: ' متم میں ہے کسی کواس بات سے کیا چیز روکتی ہے کہ اینی بیوی ہے صحبت کرے تو بید عا پڑھے:"اللہ کے نام سے اے اللہ! ہم شیطان کے شرسے تیری پناہ میں آتے ہیں اور اس کو بھی شیطان سے بچا جو تو ہمیں دے۔ ''اگر اللہ نے اولا لکھی ہوگی تو اسے شیطان ضرنہیں پہنچا سکے گا۔

اللَّهِ عِنْ مَا يَهُنعُ أَحَدَكُمُ أَنُ يَقُولَ حِينَ يُجَامِعُ أَهْلَهُ بِسُمِ اللَّهِ اللَّهُمَّ جَنِبُنَا الشَّيُطَانَ وَجَنِّبُ الشَّيُطَانَ مَا رَزَقُتَنَا فَإِنُ قَضَى اللَّهُ وَلَدًا لَمُ يَضُرَّهُ الشَّيُطَانُ . ٥

ف وائد: اسلام میں ہرذی شان کام سے پہلے اللہ کے ذکر کوانتہائی پیندیدگی کی نگاہ سے دیکھا گیا ہے۔ چنانچہ جماع جیسے نازموقع پر اللہ کو یادکر نا انتہائی خیر وبرکت کاباعث ہے۔ ندکورہ دعا کی برکت سے

❶ صحيح مسلم، كتباب النكاح، باب استحباب التزوج والتزويج في شوال(الحديث 3468)والنسائي، كتاب النكاح،باب التزويج في شوال(الحديث3236)

[🛭] متفق عليه: البخاري، كتاب بدء الخلق،باب ابليس وجنوده (الحديث 3271) ومسلم، كتاب النكاح،باب مايستحب أيقوله عند الجماع (الحديث3591)

الكاح ١٤٥ الكاح كتاب النكاح ١٤٥ المركز التكاح النكاح التكاح التكام التكا

اللہ بچے کوشیطان کے شرسے محفوظ کردیتے ہیں اور بندے کی بیہ حاجت براری بھی عبادت کے زمرے میں آجاتی ہے۔ نیز وظیفہ زوجیت سے قبل دعا پابندی سے اہتمام کرنے سے جواولا دپیدا ہوگی وہ شیطانی اثرات وسوسات سے پاک ہوگی۔ان شاءاللہ

[30] بَابِ النَّهُي عَنُ إِتُيَانِ النِّسَاءِ فِي أَعُجَا لِهِنَّ عَنُ إِتُيَانِ النِّسَاءِ فِي أَعُجَا لِهِنَّ عورتوں كے دہر ميں صحبت كرنے كى ممانعت

2259 ـ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبُوْ أُسَامَةَ عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ كَثِيرٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ ا

سیّدنا خزیمه ابن ثابت فی الله کمت میں که میں نے رسول الله مطاعی کو بی فرماتے ہوئے سنا: "الله تعالی حق (کہنے) سے نہیں شرما تا مم اپنی بیویوں کی دہر سے صحبت نہ کرو۔ "

سَمِعُتُ خُزَيُمَةَ بُنَ ثَابِتٍ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللّهِ عَلَيْ يَقُولُ إِنَّ اللّهَ لَا رَسُولَ اللّهِ عَلَيْ يَقُولُ إِنَّ اللّهَ لَا يَستَدُيى مِنَ الْحَقِّ لَا تَأْتُوا النِّسَاءَ فِي أَعُجَازِهِنَ . • وَمُحَازِهِنَ . • وَمُحَازِهُنَا لَا لَعُلْمُ اللّهُ مُعْلَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللل

فوائد: (۱) اسلام کے احکام سجھنے میں کسی قتم کی شرم کوآڑے نہیں آنے دینا جاہیے۔جیبا کہ مقولہ ' شرع میں شرم نہیں' (۲) جماع کے لیے عورت کی دیر کا استعال حرام اور باعث لعنت ہے حدیث میں ہے: "ملعونٌ من اتی امراة دبر ھا . "(ابوداؤد؛ حسن)" ایباشخص لعنتی ہے جوعورت کی دیر میں جماع کرے۔'' 2260 حدَّنَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدِ حَدَّنَنَا مَالِكٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ

سیّدنا جابر بن عبدالله ذالته فلطفهٔ کهتی بین یبودیول نے مسلمانوں سے کہا: ''جو شخص اپنی بیوی سے پشت کی جانب سے صحبت کرے گا تو اس کی اولاد جھینگی ہوگی۔ توالله تعالیٰ نے یہ آیت نازل کی: ''تمہاری عور میں تمہاری کھیتیاں ہیں' جس طرح چاہوا بی کھیتی میں جاؤ۔'' (بقرة: ۲۲۳)

عَنُ جَابِرِ بُنِ عَبُدِ اللّهِ أَنَّ الْيَهُودَ قَالُوا لِللّهِ أَنَّ الْيَهُودَ قَالُوا لِللّهِ أَنَّ الْيَهُودَ قَالُوا لِللّهُ سَلِمِينَ مَنُ أَتَى امُواَّتَهُ وَهِي مُدُبِرَةٌ جَاءَ وَلَدُهُ أَحُولَ فَأَنُولَ اللّهُ تَعَالَى نِسَآؤُكُمُ حَرُثٌ لَكُمُ فَأْتُوا حَرُثَكُمُ اللّهُ اللّهُ تَعَالَى أَنَّى شِئْتُمُ . • اللّهُ تَعَالَى اللّهُ تَعَالَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللللللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللللللللللللّهُ اللللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللللللللللللّهُ اللللل

 [♦] اسناده جيد: صحيح ابن حبان(الحديث 198 4-4200) ابن ماجه ، كتاب النكاح، باب النهى عن اتيان النساء في ادبار هن (الحديث 1934)

 [◘] متفق عليه: البخارى، كتاب التفسير، باب (نساء و كم حرث لكم) (الحديث 4528) ومسلم، كتاب النكاح، باب جو از جماعه امراته في قبله (الحديث 3421)

الكاح
فوائد: (۱) یہود کا نظریہ کہ پشت کی جانب سے عورت سے جماع کیا جائے تو بچہ بھینگا ہوتا ہے غلط تھا۔ (۲) ایسے نظریات جو کہ نہ تو کوئی شرعی دلیل رکھتے ہوں اور نہ ہی سائنسی طور پر ان کا کوئی ثبوت ہوا ہونے ہیں اور نہ ہی سائنسی طور پر ان کا کوئی ثبوت ہوا ہوتے ہیں (۳) نہ کورہ آیت کے مطابق عورت سے کسی بھی جانب سے جماع کیا جاسکتا ہے لیکن ہووہ قُبُل لیمنی عورت کی اگلی شرمگاہ میں ہی۔

[31] بَابُ الرَّجُلِ يَوَى الْمَوُّأَةَ فَيَخَافُ عَلَى نَفُسِهِ اس آ دمی کے متعلق جوعورت کودیکھے اور اپنے نفس کے متعلق خوف محسوں کرے

2261 - أَخْبَرَنَا قَبِيصَةُ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيْ إِسْحٰقَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَلَّامٍ

دونوں کے پاس ایک ہی طرح کی چیز ہے۔''

فوائد: (۱) رسول اللہ طفی ایک بشری صفات عام انسانوں کی طرح ہی ہے۔ اگر چہ تیخبری اللہ بیزار سے وہ عام انسانیت سے انتہائی اعلی اور کا نئات میں اللہ بزرگ وبرتر کے بعدسب سے عظیم مستی ہے۔ (۲) عورتوں کا ایک دوسرے سے ملنے جلنے چلے جانا اکٹھے بیٹھنا معیوب نہیں۔ (۳) جیسے ہی آدی کے دل میں کسی عورت کے دیکھنے سے شہوت اکبر آئے توانی بیوی سے حاجت پوری کرلینی چاہیے بیاس شیطانی وسوسے کو بھگانے کا باعث ہے ہے جہ کمکن ہے جب بیوی کی تربیت اسلامی طرز پر ہوئی ہواوردہ شوہر کے مقام سے شناسا ہواس کی ضرورتوں کا خیال رکھنے والی ہو۔ یہ نہ ہوکہ وہ وفت کے تقاضے کو بیجھنے کی بجائے ناک بھوں چڑھائے اورلیکچر شروع کردے۔

[•] اسنادہ حسن: عبداللہ بن طام کو بخاری نے '' تاریخ کمیر' 5 / 69 میں اور ابن ابی حاتم نے ''المحرح و التعدیل'' 5 / 40 میں اس کا تذکرہ کیا ہے۔ اس کا تذکرہ کیا ہے۔ کین کوئی جرح یا تعدیل و کرنیس کی جبکہ ابن حبان نے اسے الشفات 5 / 27 میں و کرکیا ہے۔

165 کتاب النکاح

[32] بَابِ فِی تَزُوِیجِ الْأَبُكَادِ کنواری عورتوں سے نکاح کرنا

2262 أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُطِيْع حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا سَيَّارٌ عَنِ الشَّعْبِيّ

کے ساتھ ایک سفر میں تھے۔ جب ہم واپس لوٹے تومیں نے جلدی کی مجھے ایک سوار ملا میں نے مؤکر دیکھا تو وہ تونے جلدی کیوں کی؟ میں نے کہا: میری نئی نئی شادی ہوئی ہے۔آپ نے فرمایا:'' کنواری سے نکاح کیا ہے یا بوہ ہے؟ جابڑ كہتے ہيں: ميں نے كہا: "بيوہ ہے۔" آ ب نے فرمایا: کنواری سے کیوں نہ کی وہتم سے اورتم اس سے کھیلتے؟ '' پھرآ گ نے مجھ سےفرمایا: ' جب واپس جاؤ تو ہوشیاری سے جانا۔ 'الکیس کامعنی جماع اور عقل دونوں ہے، یہاں اس سے مراد جابر والفن كوطلب ولد يرترغيب دینا ہے،مطلب میرکہ جماع سے مقصو وصرف حصول لذت نه مو بلكه اولادكي بهي تلاش مور جب مهم يهنيخ مم كهرول میں جانے گے تو آ یا نے فرمایا: "رات ہونے تک طہر جاؤتا کہ بکھرے بالوں والی تنگھی کرلے اور شوہر کو غائب یانے والی لوما استعال کرے (صفائی کرلے) "

لَيْتُنْ إِلَا كَالِرَجِي الْكَالِرَجِي مَا

فوائد: (۱) "باکرة" کواری عورت سے شادی زیادہ چاہنے اور تلذذ کا باعث ہوتی ہاں اللہ میں اللہ کو اطلاع دے کر گھر آئے تا کہ وہ اس کے لیے باکرہ کو تلاش کرنا چاہیے (۲) سفر سے لوٹے والا اپنے اہل کو اطلاع دے کر گھر آئے تا کہ وہ اس کے آنے پر بن سنور کر تیار ہوجو کہ دونوں کی محبت کے دوام کا باعث سے (۳) عورت بھی استرا یاسیفٹی وغیرہ

[•] صحبح مسلم، كتاب الرضاع، باب استحباب النكاح ذات الدين (الحديث 3621) والبخاري، كتاب المغاز، باب (اذا همت طائفتان منكم إن تقشلا (الحديث 4052)

www.sirat-e-mustageem.com

كتاب النكاح سُتُنُ الكَالِيُونَ المُ

بالوں کی صفائی کے لیے استعال کرسکتی ہے۔

[33].... بَابِ فِي الْغِيلَةِ غيابه تحمتعلق

2263 - أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نَوْفَلِ الْأَسَدِيّ

عَنْ عُرُو ةَ عَنْ عَائشَةَ فَإِلَيْهُ

سيّدنا جدامةٌ بنت وجب اسديه كهتي بين كهرسول الله ﷺ نے فرمایا: "میں نے جاہا کہ غیلہ سے منع کر دوں چر مجھے یاد آیا که فارس وروم والے غیله کرتے ہیں ان کی اولا دکو کھ نقصان نہیں ہوتا۔'' ابو محمد کہتے ہیں: 'تغیلہ یہ ہے کہ مرد انی عورت سے دودھ بلانے کی حالت میں صحبت

عَنُ جُدَامَةَ بنُتِ وَهُب الْأَسَدِيَّةِ قَالَتُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ لَقَدُ هَمَمُتُ أَنُ أَنْهَى عَن الْغِيلَةِ حَتّى ذَكَرُتُ أَنَّ فَارِسَ وَالرُّومَ يَصْنَعُونَ ذَٰلِكَ فَلا يَضُرُّ أَوُلادَهُمُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد الْغِيلَةُ أَنُ يُجَامِعَهَا وَهِيَ تُرُضِعُ . 🏵

[34].... بَابِ فِي النَّهُي عَنُ ضَرُبِ النِّسَاءِ عورتوں کو مارنے کی ممانعت

2264- حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن أَنْبَأَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ ٠

سیّدہ عائشہ والنّف كہتى ہیں كه رسول الله مطابقین نے نه جمعی کسی خادم مارا اور نہ بھی کسی اور چیز کوایینے ہاتھ سے مارا گر الله کی راہ میں جہاد کرتے ہوئے''

عَنُ عَالِشَةَ قَالَتُ مَا ضَوَبَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ خَادِمًا قَطُّ وَلَا ضَرَبَ بِيَدِهِ شَيْئًا قَطُّ إِلَّا أَنُ يُجَاهِدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ. ٥

ف انت ایک کامل اور مجھد ارمعلم کی پی علامت ہے کہ وہ مارے سزا دیے بغیرایے معتقدین ، خادمین وطلاب کی راہنمائی کرے اور وہ ان کی الیی تربیت کرے کہوہ اس کی سزاکی بجائے اشارہ ابرو پر ہر عمل سرانجام دینے کے لیے تیارر ہتے ہوں۔بہرحال سزا کاتصور اسلام میں موجود ہے جیسے ماننے والوں کے

[◘] صحيح مسلم، كتاب النكاح،باب جواز الغيلة وهي وطء المرضع وكراهة العزل (الحديث 3549)ومالك في الرضاع،باب ماجاء في الرضاعته(16)

صحيح مسلم، كتاب الفضائل، باب مباعدته فلل الآثام واختياره من المباح أسهله (الحديث 6004)

www.sirat-e-mustageem.com

الكاح الكاح المكاح 167 المكاح كتاب النكاح

لیے جنت اور نافر مانوں کے لیے جہنم کی سزا اسی طرح بیچے کی نماز پرتربیت کرتے ہوئے اسے مارنے کی اجازت كاهونا وغيره

2265 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَحْمَدَ بْنِ أَبِي خَلَفٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ

عَنُ إِيَاسٍ بُنِ عَبُدِ اللَّهِ بُن أَبِى ذُبَاب قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَا تَـضُرِبُوُا إمَاءَ اللَّهِ فَجَاءَ عُمَرُ بُنُ الْخَطَّابِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ عِنْكُ فَقَالَ قَدُ ذَيْرُنَ عَلَى أَزُوَاجِهِنَّ فَرَحَّصَ فِي ضَرُبِهِنَّ فَأَطَافَ بآلِ رَسُولِ اللُّهِ عِنْ السَّاءُ كَثِيرٌ يَشُكُونَ أَزُوَاجَهُنَّ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لَقَدُ طَافَ بآل مُحَمَّدٍ نِسَاءٌ كَثِيرٌ يَشُكُونَ ہےتمہارے بیاجھےلوگ نہیں ہیں۔'' أَزُوَاجَهُنَّ لَيُسَ أُولَئِكَ بِخِيَارِكُمُ . •

سيّدنا اياس بن عبدالله بن ابوذباب ولينعهُ كهتم مين كهرسول الله ﷺ مَن أَن الله كل بنديول كومت مارو "عمر بن خطاب رہائنی نے رسول اللہ منطقی کے یاس جا کر کہا:''عورتیں اینے شوہروں پر نا فرمان ہو گئیں ہیں۔'' تو آپ نے لوگوں کو انہیں مارنے کی اجازت دے دی پھر بہت ی عورتوں نے رسول اللہ مضافیۃ کے باس جا کراینے شوہروں کی شکایت کی تو نبی مطبقی آنے فرمایا: "میرے یاس بہت ی عورتوں نے آ کرایئے شوہروں کی شکایت کی

فواند: (۱) اعتدال ومیاندروی به اسلام کا شعار ہے کسی بھی معاملے بیس افراط وتفریط اس کے بگاڑ کا باعث ہے (۲) بیو یوں کو مارنے کی اجازت ہے بشرطیکہ مارزخی کرنے والی نہ ہو(مسلم)اورنہ ہی بہت زیادہ ہو (دیکھیے آئندہ) (۳) مرد کوعورت پر فوقیت حاصل ہے یہی فطرت اور قانون قدرت ہے۔

2266 أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنِ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ

سيّدنا عبدالله وفالفه بن زمعه كهت بين كه أيك دن رسول الله مُنْ اللَّهُ فِي اللَّهُ مِنْ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ مَعَلَقُ اللَّهِ عَلَيْهِ مَعَلَقُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ ِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ نصیحت کی اور فرمایا: ''اس آ دمی کا کیا خال ہے جواپنی ہوی کوغلام کی طرح مارتا ہے۔ شاید کہ رات کواس کے ساتھ

عَنُ عَبُدِ اللُّهِ بُن زَمَعَةَ قَالَ خَطَبَ رَسُولُ اللَّهِ عِلَى النَّاسَ يَوْمًا وَعَظَهُمُ فِي النِّسَاءِ فَقَالَ مَا بَالُ الرَّجُلِ يَجُلِدُ امُرَأَتَهُ جَلُدَ الْعَبُدِ وَلَعَلَّهُ يُضَاجِعُهَا فِي

آخِر يَوُمِهِ. 🛭

 [◘] صحيح: ابوداؤد، كتاب النكاح، باب في ضرب النساء (الحديث 2146) صحيح ابن حبان (4189)

[◙]متفق عليه: البخاري،كتاب التفسير،باب (والشمس وضحاها)(الحديث 4942)ومسلم،كتاب الحنة وصفة نعيمها، باب النار يدخلها الحبارون والجنة يدخلها الضعفاء(الحديث7120)

الكاح كتاب النكاح
[35].... بَابِ مُدَارَاةِ الرَّجُلِ أَهْلَهُ بيوي كي خدمت كرنے كابيان

2267 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الرَّقَاشِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا الْجُرَيْرِيُّ عَنْ أَبِي الْعَلاءِ عَنْ نُعَيْمِ بْنِ قَعْنَبِ

> عَنُ أَبِى ذَرِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ إِنَّ الْـمَـرُلَّةَ خُلِقَتُ مِنُ ضِلَعٍ فَإِنُ تُقِمُهَا كَسَرُتَهَا فَدَارِهَا فَإِنَّ فِيهَا أُوَدًّا وَبُلُغَةً . •

کفایت بھی ہے۔'

فوائد: (۱) عورت بحثیت مجموعی بنقص وکی سے عبارت ہے ہوسکتا ہے کہ کوئی عورت کی مرد
کے مقابلے میں زیادہ باصلاحیت وکامل ہولیکن جنس عورت کوجنس مرد کے مقابلے میں ایسے قرار نہیں دیا جاسکتا۔
(۲) عورت کی پیدائش مرد کی پہلی سے ہوئی ہے یعنی اتمال ﴿ اکوآ دم فِالِیْهَا کی پہلی سے پیدا کیا گیا تھا اس لیے
اصل مرد ہی ہوا۔ (۳) عورت کو پھسلا کراپنا کام نکالنا چاہیے وہ جتنا کام کردے اس پرقناعت کرتے ہوئے
اس کی دل سے قدر کرنی چاہیے نہ کہ بندہ اسے تیر کی طرح سیدھی کرنے پرلگ جائے نتیج میں وہ اس سے
ہاتھ ہی دھو بیٹھے۔

2268 ـ أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ

عَنْ أَبِسَى هُورَيُورَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ سيّدنا ابو ہرير فَالْنَهُ كَمِتْ بَيْن كُرُسُول الله الطَّيَةِ إَنْ تُومُهَا اللهِ عِلَيْ إِنْ تُقِمُهَا اللهِ عِلَيْ إِنْ تُقِمُهَا اللهِ عِلَيْ إِنْ تُقِمُهَا اللهِ عِلَى اللهِ عِلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهُ الل

فوائد: (۱)" عزل" یہ ہے کہ بندہ اپنی بیوی ہے جماع کرے اور انزال کے وقت اپنے عضو کو

اسناده صحيح: اخرجه احمد5/151 والنسائي في ععشرة النساء(270)

[€]متفق عليه : البخاري، كتاب النكاح،باب الوصاة بالنساء(الحديث 5185)ومسلم، كتاب الرضاع،باب الوصية بالنساء(الحديث 3631)

الكاريخ الكاريخ (169 و الكار كتاب النكاح (169 و الكار كتاب النكاح (169 و الكار كتاب النكاح (169 و الكار النكاح (199 و الكار النكاح (169 و الكار النكاح (199 و الكار النكاح (199 و الكار النكاح (199 و الكار النكاح (199 و الكار الكار الكار النكاح (199 و الكار الكار الكار الكار الكار الكار الكار الكار الكار ال

عورت کی شرم گاہ سے نکال لے اور مادہ باہر خارج کرے(۲) عزل کرناجائز ہے لیکن اس پرتیاس کرتے ہوئے ایسے طریقے استعال کرنا جن سے حمل کا اندیشہ بالکل جاتا رہے مثلاً کنڈوم وغیرہ استعال کرنا یہ ممنوع ہیں۔ کیونکہ عزل میں بہر حال حمل کا اختال ہوتا ہے جبکہ فدکورہ طریقوں سے وہ معدوم ہوجاتا ہے جو کہ مطلوب شریعت سے بھس ہے جیسا کہ آپ مشاریخ نے فرمایا" تَزَوَّ جُوْا الولود الودود" زیادہ بچے جننے والی اور چاہنے والی عورتوں سے شادی کرو۔ لہذا کشرت اولادشریعت میں مطلوب ہے۔ (واللہ اعلم)

[36].... بَابِ فِي الْعَزُلِ عزل كرنے كا بيان

2269- أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوْدَ الْهَاشِمِيُّ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدِ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ ابْن عَبْدِ اللهِ بْن عُتْبَةَ

عَنُ أَبِى سَعِيْدٍ قَالَ سَأَلَ رَجُلُّ رَسُولَ سِيْدِنَ الوسعِيدِ فَالْتُنَ كَبَتِ بِين كَهُ اليَّ آوَى فَي رسولَ اللهِ عَنَ الْعَوْلِ فَقَالَ أَوْ تَفْعَلُونَ اللهِ عَلَى عَنِ الْعَوْلِ فَقَالَ أَوْ تَفْعَلُونَ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَوْ اللهُ اللهُ تَعَلَقُ اللهُ تَعَلَقُ اللهُ تَعَالَى أَنُ اللهُ تَعَالَى أَنْ اللهُ لَهُ اللهُ الل

تَكُونَ إِلَّا كَانَتُ . •

2270 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيْرِينَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ بِشْرِ يَرُدُّ الْحَدِيثَ إِلَى

سیّدنا ابوسعید خدری و النّهٔ کہتے ہیں ہم نے کہا: اللہ کے رسول طفیعَ آئی آدی اپنی لونڈی سے صحبت کرتا ہے اور اس کے حاملہ ہونے کو نالپند کرتا ہے تو کیا اس سے عزل کر سکتا ہے؟ اور کوئی اپنی دودھ پلانے والی بیوی سے صحبت کرتا ہے اور اس کے حاملہ ہونے کونا پند کرتا ہے تو کیا اس سے عزل کرسکتا ہے؟ آپ نے فرمایا: ''اگر نہ کروتو کوئی سے عزل کرسکتا ہے؟ آپ نے فرمایا: ''اگر نہ کروتو کوئی

أَبِى سَعِيْدِ الْنُحُدُرِيِّ قَالَ قُلْنَا يَا رَسُولَ اللهِ الرَّجُلُ تَكُونُ لَهُ الْجَارِيَةُ فَيُصِيْبُ مِنْهَا وَيَكُونُ لَهُ الْجَارِيةُ فَيُصِيْبُ وَنَهُا وَيَكُونُ أَنُ تَحْمِلَ أَفَيَعُزِلُ عَنْهَا وَيَكُونُ عِنْدَهُ الْمَرْأَةُ تُرْضِعُ فَيُصِيبُ مِنْهَا وَيَكُودُهُ أَنُ تَسْحَمِلَ فَيَعْزِلُ عَنْهَا مِنْهُا وَيَكُودُهُ أَنُ لَا تَفْعُلُوا فَإِنَّمَا هُوَ قَالَ لَا عَلَيْكُمُ أَنُ لَا تَفْعُلُوا فَإِنَّمَا هُوَ

¹ متفق عليه: البخاري، كتاب التوحيد، باب قول الله تعالى (هو الله الخالق البارى المصور) (الحديث 7409) ومسلم، كتاب النكاح، باب حكم العزل (الحديث 3538)

الكاح كاب النكاح ١٦٥ من كتاب النكاح ١٦٥ من الكام كتاب النكاح

الُقَدَرُ قَالَ ابُنُ عَوْنِ فَذَكُرُتُ ذَٰلِكَ حَرَرُ لِلْحَسَنِ فَقَالَ وَاللَّهِ لَكَأَنَّ هٰذَا زَجُرًا بَي وَاللَّهِ لَكَأَنَّ هٰذَا زَجُرًا . • كَها

حرج نہیں' کیونکہ یہ تقدیری بات ہے۔' ابن عون کہتے ہیں میں نے حسن سے اس کا تذکرہ کیا تو انہوں نے کہا:''اللہ کی قتم یہ بات ڈانٹ کے لئے تھی۔اللہ کی قتم یہ بات ڈانٹ کے لئے تھی۔اللہ کی قتم یہ بات ڈانٹ کے لئے تھی۔''

[37].... بَابِ فِي الْغَيْرَةِ غيرت كِمتعلق

2271 حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ شَقِيْق

سیّدنا عبدالله و الله علی که رسول الله مطاقی آن فرمایا:

فر می در الله سے زیادہ کوئی غیرت مندنہیں اس لیے اس نے

فر می کورام کیا ہے اور الله سے زیادہ کسی کوتعریف بسند

نہیں ''

فوائد: (۱) "السغیرہ " کہتے ہیں بندے کا اپنی بیوی یا بیوی کا اپنے خاوند پردل متغیرہ وجائے ہوی کا کسی دوسرے مرد اپنی زینت ظاہر کرنے پر بندے کا بوصک اٹھنا اسی طرح بیوی کا بوصک اٹھنا۔ (۲) اسلام کے بھی احکام ہرایک سے بڑھ کرغیرت والے اللہ کی طرف سے منزل ہیں جو کہ انتہائی غیرت کے حامل ہیں لہٰذا ایسے غیرت والے احکام پراپنی اضافی غیرت کا اظہار نا پہندیدہ ہے۔

2272 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو الْمُعْيِرَةِ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيْرِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ

إِبْرَاهِيمَ

حَـدَّ ثَنِي ابُنُ جَابِرِ بُنِ عَتِيلُثٍ حَدَّثِي ابُنُ جَابِرِ بُنِ عَتِيلُثٍ حَدَّثِي أَبِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَيْكَ قَالَ مِنَ الْغَيْرَةِ مَا يُبُغِضُ اللَّهُ مَا يُبُغِضُ اللَّهُ فَالْغَيْرَةُ فِي الرِّيبَةِ فَالْغَيْرَةُ فِي الرِّيبَةِ

سیّدنا ابن جابر بن علیک کہتے ہیں مجھ سے میرے والد نے بیان کیا کہرسول الله طفی آنے فرمایا: ' دبعض غیرت کو الله تعالیٰ پیند کرتا ہے اور بعض کونا پیند کرتا ہے۔ جوغیرت الله کو پیند ہے وہ غیرت ہے جوتہمت کے موقع پر ہوتی ہے

[•] صحيح مسلم، كتاب النكاح، باب حكم العزل (الحديث3535) النسائي، كتاب النكاح، باب العزل (الحديث3327) وصحيح مسلم، كتاب النكاح، باب الغيرة (الحديث 5220) ومسلم، كتاب التوبة، باب غيرة الله تعالى وتحريم

www.sirat-e-mustageem.com

المحال (171) کتاب النکاح (171) الكالعق الكالعق

وَالْعَيْرَةُ الَّتِي يُبْعِضُ اللَّهُ الْعَيْرَةُ فِي اورجوغيرت نا پيند ہے وہ جوتهمت كے علاوه كسي اور موقع

غَيْر ريبَةٍ . 0

یر ہوتی ہے۔''

2273 حَدَّثَنَا ابْنُ عَدِيِّ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَمْرِو عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرِ عَنْ وَرَّادٍ مَوْلَى

المُغدَة

عَنِ الْمُغِيرَةِ قَالَ بَلَغَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَنَّ سَعُدَ بُنَ عُبَادَةً يَقُولُ لَوُ وَجَدُتُ مَعَهَا رَجُلًا لَضَرَبُتُهَا بِالسَّيُفِ غَيُرَ مُصْفَح فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَتَعُجَبُونَ مِنُ غَيُرَةٍ سَعُدٍ أَنَا أَغَيْرُ مِنُ سَعُدٍ وَاللَّهُ أُغَيْرُ مِنِّي وَلِذٰلِكَ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا شَخُصَ أَغَيْرُ مِنَ اللَّهِ وَلَا أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنَ الْمَعَاذِرِ وَلِذَٰلِكَ بَعَثَ النَّبِيِّينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنُذِرِيُنَ وَلَا شَخُصَ أَحَبُّ إِلَيْدِ الْمَدُحُ مِنَ اللَّهِ وَلِذٰلِكَ وَعَدَ الْجَنَّةَ. ٥

سيّدنا مغيرة والله بيان كرت بين كدرسول الله مي و يه خبر ملی که ستیدنا سعد بن عبادة والنیمهٔ سکتے ہیں اگر میں کسی کو این بیوی کے باس دیکھوں تو سیدھی تلوار سے اسے قل کر دوں اور درگزر نه كروں تو رسول الله ﷺ نے فرمایا " كيا تم سعد کی غیرت سے تعب کرتے ہو؟ میں سعد سے زیادہ غیرت مند ہوں اور اللہ مجھ سے زیادہ غیرت مند ہیں ۔اس لئے اس نے ظاہری و باطنی بے حیائی کوحرام کر دیا ہے۔ کوئی شخص اللہ سے زیادہ غیرت مندنہیں ہے اور اس سے زیادہ کسی کوعذر پسندنہیں ہے۔اس لئے اس نے نبیوں کو خوشخری دینے کے لئے اور ڈرانے کے لئے بھیجا۔ اور کسی ھخص کواللہ سے بڑھ کر مدح پیند نہیں ہے۔ای لئے اس

نے جنت کا وعدہ کیا ہے۔''

[38].... بَابِ فِي حَقِّ الزَّوُجِ عَلَى الْمَرُأَةِ

بیوی پرخاوند کے حقوق کا بیان

2274 حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ أَخْبَرَنَا قَتَادَةُ عَنْ زُرَارَةَ بْنِ أَوْفَى الْعَامِرِيِّ.....ا

[€] جيدصحيح: ابن حبان(الحديث295)وابوداؤد،كتاب الجهاد،باب في الخيلاء في الحرب(الحديث2659)

² متـفق عليه: البخاري، كتاب التوحيد، باب قوله النبي ﷺ لاشخص اغير من الله (الحديث 7416) ومسلم في اللعان (الحديث1499) واحمد 248/4

الكاح ١٦٤ والكاح كتاب النكاح ١٦٤ والمواقع النكاح النكاح التكام التكام التكام التكام التكام التكام التكام التكام

سیّدنا ابوہریرة والنی کہتے ہیں کہ نبی مطابَقیّن نے فرمایا: ''جب عورت اپنے شوہر کا بستر چھوڑ کر رات گزارے تو فرشتے اس پرلعنت کرتے ہیں حق کہ وہ لوٹ آئے۔''

عَنُ أَبِى هُرَيُوةَ عَنِ النَّبِيِّ عَلَىٰ قَالَ إِذَا بَاتَتُ الْمَرُأَةُ هَاجِرَةً لِفِرَاشِ زَوُجِهَا لَعَنتُهَا الْمَلائِكَةُ حَتَّى تَرُجِعَ . • • لَعَنتُهَا الْمَلائِكَةُ حَتَّى تَرُجِعَ . • •

فوائد: نکاح کامقصدنسل انسانی کے دوام کے ساتھ ساتھ معاشرے کی طہارت بھی ہے جو کہ
نکاح سے ہی ممکن ہے نکاح انسان کے حیوانی جذبے کو تسکیس پہنچانے کا جائز ذریعہ ہے اگر کسی کو یہ جائز ذریعہ
میسر نہ ہوتو وہ ندکورہ جذبے کی تسکیس کے لیے غلط راہ اختیار کرتا جو کہ اس کی آخرت کے ساتھ معاشرے کی
عبابی کا بھی سبب بنتی ہے اسی لیے آپ طفیق آئے آئے نے صاحب استطاعت کو شادی کرنے کا تھم دیا جیسا کہ شروع
میں آپ پڑھ آئے ہیں۔ چنانچہ شادی کے بعد بھی اگر آدمی کے لیے حلال طریقے میں رکاوٹ پیدا ہوجائے تو
میں آپ پڑھ آئے ہیں۔ چنانچہ شادی کے بعد بھی اگر آدمی کے لیے حلال طریقے میں رکاوٹ پیدا ہوجائے تو
وہ خطرات دوبارہ سراٹھانے لگتے ہیں اوران خطرات کا باعث بنے والی عورت یقیناً لعنت کی مستحق ہے۔

[39].... بَابِ فِی اللِّعَانِ لعان کا بیان

2275 حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيْدِ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابِ

عَنُ سَهُ لِ بُنِ سَعُدِ أَنَّ عُوَيُ مِرًا الْعَجُلانِيَّ قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيُتَ رَجُلا وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلا أَيَقْتُلُهُ فَيَقْتُلُونَهُ أَمُ كَيْفَ يَهْعَلُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَنَى قَدُ أَنْزَلَ اللَّهُ فِيلَتَ وَفِي صَاحِبَتِكَ فَاذُهَبُ فَأْتِ بِهَا قَالَ سَهُلُ فَتَلاعَنَا وَأَنَا مَعَ النَّاسِ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ عَنْدَ رَسُولِ اللهِ عَنْدَ رَسُولِ كَذَبُتُ عَلَيْهَا يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ أَمُسَكُتُهَا فَطَدَّهُ قَالَ اللهِ إِنْ أَمُسَكُتُهَا فَطَدَّا قَهَا ثَلَاثًا قَبُلَ أَنْ يَأْمُونُ رَسُولُ

سیّدناسہل بن اللہ بن سعد کہتے ہیں کہ عویم عجلانی نے کہا:

(اے اللہ کے رسول ! آپ کا کیا خیال ہے کوئی آ دمی اپنی ہوی کے پاس کی آ دمی کو دیکھے تو کیا وہ اسے قبل کردے ؟

تو لوگ اسے بھی قبل کردیں ۔ یا پھروہ کیا کرے ؟ "تو رسول اللہ ملے تین نے فرمایا:" اللہ تعالی نے تمہارے اور تمہاری یوی کے متعلق تھم نازل کیا ہے جاد اسے لے آؤ۔" سہل یوی کے متعلق تھم نازل کیا ہے جاد اسے لے آؤ۔" سہل کے ساتھ رسول اللہ ملے تین کیا اور میں لوگوں کے ساتھ رسول اللہ ملے تین کے پاس تھا۔ جب دونوں لعان ساتھ رسول اللہ ملے تو عویم نے کہا:" یا رسول اللہ! اگر میں نے اس پر تہمت لگائی تھی نے اسے اپنے پاس رکھا تو میں نے اس پر تہمت لگائی تھی

اللُّهِ عَلَىٰ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ وَكَانَتُ تِلُكَ بَعُدُ سُنَّةَ الْمُتَلاعِنَيْن . • تِلُكَ بَعُدُ سُنَّةَ الْمُتَلاعِنَيْن . • •

اسے تین طلاقیں دے دیں۔ ابن شہاب کہتے ہیں:''لعان کرنے والوں کے لئے بعد میں یہی طریقہ سنت بن گیا۔''

فواف : (۱) ''لعان' یہ ہے کہ مردا پنی عورت پرزنا کی تہمت لگا تا ہے اوراس کے پاس چارگواہ نہیں ہوتے اور بیوی انکار کردیتی ہے لہٰذا اب بیصورت ہے کہ مردحا کم وقاضی کے سامنے چارتشمیں اٹھائے گا کہ اللہ کی قتم میں سچا ہوں پانچویں مرتبہ کہ گا اگر میں جھوٹا ہوں توجھ پراللہ کی لعنت ہو۔اس طرح بیوی چار قتمیں اٹھانے کے فقہ میں اٹھانے کے بعد پانچویں مرتبہ کہ گی مجھ پراللہ کا غضب ہوا گرمیں جھوٹی ہوں۔ لعان کے بعد ان میں جدائی واقع ہوجائے گی طلاق دینے کی ضرورت نہیں اور یہ جدائی عمر زمائٹی کے قول کے مطابق ہمیشہ کے لیے جدائی واقع ہوجائے گی طلاق دینے کی ضرورت نہیں اور یہ جدائی عرز خالتے کا۔

2276 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنِ الْأَوْزَاعِي عَنِ ابْنِ شِهَابِ.....

سیّدناسہل فِل اُن بن سعد کہتے ہیں کہ عویمر ماصم بن عدی اُ کے پاس گئے بنوعجلان کے سردار تھے۔ پھر پہلی حدیث کی طرح ذکر کیا مگر تین طلاقوں کا ذکر نہیں کیا۔

عَـاصِـمَ بُـنَ عَـدِيِّ وَكَـانَ سَيِّدَ بَنِـى عَـدِيِّ وَكَـانَ سَيِّدَ بَنِـى عَـجُلانَ فَـذَكَرَ مِثْلَةَ وَلَمُ يَذُكُرُ طَلَّقَهَا

ئىكلائا . 🍳

2277 - أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَنْبَأَ نَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ أَبِيْ سُلَيْمَانَ قَالَ سَمِعْتُ

سیّدنا سعید رفائق بن جبیر رفائعہ کہتے ہیں مجھ سے مصعب اللہ بن زبیر کی خلافت میں مجھ سے لعان کے متعلق بوچھا گیا کیا دونوں میں جدائی ڈال دی جائے ؟ میری سمجھ میں نہیں آیا کہ میں کیا کہوں، میں کھڑا ہوا اور عبداللہ بن عمر رفایتا کے مکان کی طرف گیا میں نے بیچ (یا غلام) سے کہا: میرے لئے ان سے اجازت لو۔اس نے کہا: وہ سورے ہیں آپ

سَعِيُدَ بُنَ جُبَيْرٍ يَقُولُ سُئِلْتُ عَنِ الْمُتَّلاعِنَيْنِ فِى إِمَسارَةِ مُصُعَبِ بُنِ الزُّبَيْرِ أَيُفَرَّقُ بَيُنَهُمَا فَمَا ذَرَيْتُ مَا أَقُولُ قَالَ فَقُمْتُ حَتَّى أَتَيْتُ مَنْزِلَ عَبُدِ اللّهِ بُنِ عُمَرَ فَقُلُتُ لِلُغَلامِ اسْتَأْذِنُ لِى عَلَيْهِ فَقَالَ إِنَّهُ قَائِلٌ لَا تَسْتَطِيعُ

عَنُ سَهُل بُن سَعُدٍ أَنَّ عُوَيُمِرًا أَتَى

[•] متفق عليه: البخارى، كتاب الأحكام، باب من قضى في المسجد (الحديث 7165) ومسلم، كتاب اللعان، في فاتحته (الحديث 3723) و ابو داؤد، كتاب الطلاق، باب في اللعان (الحديث 2245)

② صحیح: سابقہ صدیث بی کرر آئی ہے۔

الكاح كاب النكاح ١٦٤ والكام كتاب النكاح المكام

ان کے پاس نہیں جا سکتے۔ابن عمر رفائند نے میری آ وازس لى انہوں نے كہا: ابن جبير ہے؟ ميں نے كہا: "جي مال-" انہوں نے کہا: آؤاس وقت تم کسی ضرورت سے ہی آئے ہو گے۔ابن جبیر کہتے ہیں: میں ان کے یاس گیا میں نے انہیں اس حالت میں پایا کہ وہ یالان کا نمبل بجھائے موئے تھے۔ اور موفقة يا كهانه موقة عبدالله كوشك موا ہے۔ یعنی تکیے برطیک لگائے ہوئے تھے۔ جو تھجور کی حصال ے جرا ہوا تھا، میں نے کہا: اے ابوعبدالرحمٰنُ! کیا لعان كرنے والوں ميں جدائي ڈال دي جائے؟ انہوں نے كہا: دوسبحان الله جي مال يهلي يهل اس كے متعلق فلال آ دي ن يوجها تقا اس نے كها: "يا رسول الله الله علي آب ير الله کی رحت ہوآ پ بتائیں اگر ہم سے کوئی اپنی بیوی کو بدکاری کرتا ہوا یائے تو کیا کرے؟ اگر خاموش رہے تو بوی بات پر خاموشی اختیار کرتا ہے۔ اگر بیان کرتا ہے تو برای بات بیان کرتا ہے۔ تو رسول الله طنی الله خاموش رہے ، اور اسے کوئی جواب نہ دیا۔ اپنی ضرورت کے لئے کھڑے ہوئے اس کے بعداس نے بھرنبی مشکر آئے یاس آ کر كها: "يا رسول الله! جو بات ميس في آپ سے بوچھى تھى میں خود اس میں مبتلا ہوں۔ تو الله تعالیٰ نے ان کے متعلق سورہ نور میں آیات نازل کی وہ لوگ جو اپنی بیویوں پر تہمت لگاتے ہیں۔اور ان کوکوئی گواہ بجز خود ان کی ذات کے نہ ہوتو ایسے لوگوں میں سے ہرایک کا ثبوت ہیہ ہے کہ چار مرتبہ اللہ کی قتم کھا کر کہیں کہ وہ پچوں میں سے ہے۔اور یانچویں مرتبہ کھے کہاس پر اللہ تعالیٰ کی لعنت ہو

أَنُ تَـدُخُـلَ عَلَيْهِ قَالَ فَسَمِعَ ابْنُ عُمَرَ صَوْتِي فَقَالَ ابُنُ جُبَيْرِ فَقُلْتُ نَعَمُ فَقَالَ ادُخُلُ فَمَا جَاءَ بلكَ هَذِهِ السَّاعَةَ إِلَّا حَاجَةٌ قَالَ فَدَخَلُتُ عَلَيْهِ فَوَجَدُتُهُ وَهُوَ مُفْتَرِشٌ بَرُ ذَعَةَ رَحُلِهِ مُتَوَسِّدٌ مِرُفَقَةً أَوُ قَالَ نُـمُرُقَةً شَكَّ عَبُـدُ اللَّهِ حَشُوهَا لِيفٌ فَقُلْتُ يَسا أَبَسا عَبُدِ الرَّحُمَن الُمُتَ العِنَانِ أَيُفَرَّقُ بَيْنَهُمَا قَالَ سُبُحَانَ اللُّهِ نَعَمُ إِنَّ أُوَّلَ مَنُ سَأَلَ عَنُ ذُلِكَ فُلانٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَرَأَيْتَ لَوُ أَنَّ أَحَدَنَا رَأَى امْرَأَتَهُ عَلَى فَاحِشَةٍ كَيُفَ يَصُنعُ إِنُ سَكَتَ سَكَتَ عَلَى أَمُر عَظِيم وَإِنُ تَكَلَّمَ فَمِثُلُ ذٰلِكَ قَالَ فَسَكَتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَلَمُ يُجِبُهُ فَقَامَ لِحَاجَتِهِ فَلَمَّا كَانَ بَعُدَ ذٰلِكَ أُتَّى النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ الَّذِي سَ أَلْتُكَ عَنْهُ قَدُ ابْتُلِيْتُ بِهِ قَالَ فَأَنْزَلَ اللُّـهُ تَـعَالَبي هٰـؤُلاءِ الْآيَاتِ الَّتِي فِي سُودَ-ةِ النُّورِ : ﴿ وَالَّذِيْنَ يَرُمُونَ اَزُوَاجَهُمُ وَلَمُ يَكُنُ لَهُمُ شُهَدَاءُ إِلَّا اَنفُسُهُم فَشَهَافَةُ اَحَدِهم اَرْبَعُ شَهْدَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّدِقِيُنَ ٥ وَالْخُمِسَةُ أَنَّ لَعُنَةَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكُذِبِيُنَ ٥ وَيَدُرَا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنُ

الكاح ١٦٥ كتاب النكاح ١٦٥ كتاب النكاح ١٣٥

اگر وہ جھوٹوں میں سے ہو،اور اس عورت سے سزا اس تَشُهَدَ اَرْبَعَ شَهْدَاتٍ بِسَالِلْهِ إِنَّهُ لَمِنَ طرح دور ہوسکتی ہے کہ وہ حارمرتبہ اللہ کی قتم کھا کر کھے کہ الُكْذِبِينَ ٥ وَالُخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ یقتیناً وہ (اس کا خاوند)جھوٹ بولنے والوں میں سے ہے عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصَّدِقِيُّنَ ٥ ﴾ قَالَ ،اور یانچویں دفعہ کیے کہ''اگراس کا خاوند پچوں میں ہے فَدَعَا الرَّجُلَ فَتَلاهُنَّ عَلَيْهِ وَذَكَّرَهُ بِاللَّهِ وَأَخْبَرَهُ أَنَّ عَذَابَ الدُّنْيَا أَهُوَنُ مِنْ عَذَابِ ہوتو اس پراللہ تعالیٰ کاغضب ہو (سورہ نور: ۲)حتی کہتمام آیات کی تلاوت کی پھر آ دمی کو بلا کر بیہ آیات بڑھ کر الْآخِرَةِ . فَقَالَ مَا كَذَبُتُ عَلَيْهَا . ثُمَّ دَعَا سنائیں اوراسے اللہ کی یاد دلائی اسے بتایا کہ دنیا کا عذاب الُمَرَأَةَ فَوَعَظَهَا وَذَكَّرَهَا وَأَخْبَرَهَا أَنَّ آخرت كے عذاب سے آسان باس نے كہا: "ميں نے عَ لَمَابَ الدُّنْيَا أَهُ وَنُ مِنْ عَلَابِ الْآخِرَةِ اس برتہت نہیں لگائی۔'' پھر عورت کو بلایا اسے وعظ و فَقَالَتُ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ إِنَّهُ لَكَاذِبٌ . نفیحت کی اے بتایا کہ دنیا کا عذاب آخرت کے عذاب فَدَعَا الرَّجُلَ فَشَهِدَ أُرْبَعَ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ سے بہت آسان ہے۔ اس نے کہا: "مجھے اس ذات کی إنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعُنَةَ فتم! جس نے آ یا کوحل کے ساتھ بھیجا ہے یقیناً پر جھوٹا اللُّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ .ثُمَّ ہے۔" پھرآ یا نے آ دی کو بلایا۔ اس نے چار دفعہ ای أُتِيَ بِالْمَرُأَةِ فَشَهِدَتُ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ طرح موابيال دين "كه الله كي قتم! وه سي ب-" اور بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ وَالْخَامِسَةَ أَنَّ یانچویں باریہ کہا:''اگروہ سچا ہوتو اس پراللہ کاغضب ہو۔'' غَضَبَ اللَّهِ عَلَيُهَا إِنَّ كَانَ مِنَ پھرآ پ نے دونوں کو جدا کر دیا۔ الصَّادِقِيْنَ ثُمَّ فَرَّقَ بَيْنَهُمَا. ٥

فوائد: (۱) علمی بات اگر معلوم نہ ہوتو اے پوچھ لینا چاہے اگر چہ عالم آپ کا ہم عصر ومنصب ہی کیوں نہ ہو۔ (۲) قیلو لے کے وقت کسی کوتنگ کرنا جائز نہیں الآیہ اشد ضرورت ہو (۳) صحابہ ریخی کیئے ہم سادہ زندگی بسر کرتے تھے اور یہی ان کی ترجیح ہوتی تھی (۴) لعان کرنے والوں کوجدا کر دیا جائے گا استے بڑے واقع کے بعد ان کے اکٹھے رہنے کی کوئی صورت نہیں بنتی۔

2278 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الرَّقَاشِيُّ حَدَّثَنِي مَالِكٌ قَالَ سَمِعْتُ نَافِعًا

عَنْ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ مُعَمَو قَالَ فَرَّقَ رَسُولُ سيّدنا عبدالله بن عمر وَاللَّهُ كَتِمْ بِين كه رسول الله الطّيَامَةِ لهُ

❶ صحيح: اخرجه مسلم، كتاب اللعان، كَثَرُوعٌ مِن (الحديث3726) والترمذي، كتاب الطلاق،باب ماجاء في اللعان (الحديث1202)

اللهِ عَلَيْ بَيْنَ الْكَالِيْمِيْ فَالْحَقَ لَعَانَ كَرِنْ والول كوجدا كيا اور بجيه مال كوديا-الوُلَد بأُمِية. •

ف وائد ہیں۔ بھان کرنے والوں کی اولا دیعنی لعان کے بعد پیدا ہونے والا بچہ ماں کی طرف ہی منسوب ہوگا ۔ کیونکہ باپ تواس کی ماں پرزنا کی تہمت لگا کراس بچے سے برأت کا اظہار کر چکا ہے اس لیے یہ فقط ماں کے ساتھ منسوب ہوگا یہی دونوں ایک دوسرے کے وارث بنیں گے۔

[40] بَابِ فِي الْعَبُدِ يَتَزَوَّ جُ بِغَيْرِ إِذُن مِنُ سَيِّدِهِ اس غلام كے متعلق جو ما لك كي اجازت كے بغیر نكاح كرے

فواند: (۱) ما لک اگرد کیھے کہ غلام جوان ہاوراس کی شادی سے خدمت میں کوئی حرج واقع نہیں ہوتا تو وہ اپنے غلام کی شادی کرسکتا ہے البتہ غلام کو ہرگز ہے اجازت نہیں کہ وہ ما لک کی اجازت کے بغیر نکاح کرے کیونکہ غلام اپنے نفس پر قادر نہیں (۲) غلام کا نکاح آقا کی اجازت کے بغیر منعقد نہیں ہوتا (۳) ایسا کرنے بیغلام سزا کا مستحق ہوگا۔واللہ اعلم

2280 حَدَّتَ نَا مَالِكُ بْنُ إِسْمْعِيلَ حَدَّنَنَا مِنْدَلُ بْنُ عَلِيٍّ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ

عَنْ نَافِعِعَنْ نَافِعِ

عَنِ ابُنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِي عَلَيْ قَالَ أَيُّمَا سَيِّدنا ابن عمر فَالْتَيْ كَتِ بِي كَه بِي كَه بِي كَانَ فَر مايا: "جوفلام عَبْدٍ تَزَوَّ جَ بِغَيْرٍ إِذُنِ مَوَ الِيهِ فَهُو زَانٍ ۞ اپن مالك كى اجازت كے بغير ثكاح كرے وہ زانى ہے۔"

- ♣ متـقـق عليه: البخارى، كتاب الطلاق، باب يلحق ابو لد بالملاعنة (الحديث 5315) ومسلم، كتاب اللعان كي شروع،
 ميں هي (الحديث 1831) و ابن ماجه، كتاب الطلاق، باب اللعان (الحديث 2069)
- ٢٠٠٠ حسن: ابوداؤد، كتاب النكاح، باب في نكاح العيد بغير اذن سيده (الحديث 2078) وابن ابي شيبه 261/4 باب من كره للعبد أيتزج بغير اذن سيده
- ⊕ ضعیف ابوداؤد: میں اس معنی کی حدیث ہے جے ابوداؤد مرفوعًا ضعیف قرار دیتے ہیں سیجے میہ کہ وہ موقوف ہے جیہا کہ بیتی میں بھی ابوداؤد کی سند ہے ہے۔ کتاب المنکاح، باب نکاح العبد بغیراؤن مالکہ (127/7 نیز مصنف عبدالرزاق (12982) میں بھی ابن عمر والے ہے۔ موقوعًا بیروایت مردی ہے۔

www.sirat-e-mustageem.com

سُنِينَ الْكَالِيْوَيُّ كَتَابِ النكاحِ النكاحِ النكاحِ النكاحِ النكاحِ النكاحِ [41].... بَابِ الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ

اس بات كابيان كه بحيد بستر والے كے لئے ہے

2281- أَخَبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ

عَنْ أَبِي هُورَيْرَةَ يَوْفَعُهُ قَالَ الْوَلَدُ سَيِّدنا ابو بريرة وَاللَّهُ مرفوع بيان كرت بين بجدبسر والے

لِلْفِرَاشِ وَلِلْعَاهِ الْحَجَوُ . • کے لئے ہے اور زانی کے لئے پھر ہیں۔

فوائد: لونڈی یا آزادعورت کے طن سے بیدا ہونے والا بچاس کا شار ہوگا جس کی وہ اس وقت لونڈی پابیوی ہواگر چہ وہ حرام کا نطفہ ہی کیوں نہ ہوالبتہ اگر خاوند ہیوی کے درمیان لعان جیسی صورتحال پیش آ جائے توالیی صورت میں صاحب فراموش ہے اس کاتعلق ختم ہوجائے گاادروہ فقط اپنی ماں کی طرف منسوب _6~

2282 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ

زوجه نبي مطايقة سيّده عائشه والثوي بيان كرتى مين كه رسول عَـنُ عَـائِشَةَ زَوُجِ النَّبِيِّ أَنَّ رَسُولَ الله طَيْنَا فِي إِنْ وَبِهِي بِسرَ والعَ كَلِيمَ بِهِ بِسرَ اللهِ عَلَى قَالَ الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ . ٥

2283 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِع حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِيْ عُرْوَةُ

عَنُ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتُ كَانَ عُتْبَةُ بُنُ أَبِي وَقَسَاصِ عَهِدَ إِلَى أَخِيبِهِ سَعُدِ بُنِ أَبِي وَقَّاصِ أَنُ يَقُبِضَ إِلَيْهِ ابُنَ وَلِيسَدةِ زَمُعَةَ فَقَالَ عُتْبَةُ إِنَّهُ ابُنِي فَلَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ زَمَنَ الْفَتُح أَخَذَ سَعُدُ بُنُ أَبِئُ وَقَّاصِ ابُنَ وَلِيدَةِ زَمُعَةَ فَإِذَا هُ وَ أَشُبَهُ النَّاسِ بِعُتْبَةَ بُنِ أَبِي وَقَّاصِ فَقَالَ النَّبُّ عَبُّكُ مُ وَ لَكَ يَا عَبُدُ بُنَ

زوجه نبی سیّدہ عائشہ والنها بیان کرتی ہیں کہ (نبی منظمیّا کے زمانہ میں عتبہ بن ابو وقاص نے اینے بھائی سعر بن ابووقاص کونصیحت کی تھی کہ وہ زمعہ کی لونڈی کے بیٹے پر تبضه کرے۔ عتبہ نے کہا: وہ میرا بیٹا ہے ،جب نبی سفی ا فتح کمہ کے زمانہ میں تشریف لائے تو سعدٌ بن ابو وقاص نے زمعہ کی لونڈی کے بیٹے کو لے لیا۔ اور وہ عتبہ بن ابووقاص کے ساتھ بہت مشابہ تھا۔ تو نبی سے این نے فرمایا: ''اےعبد بن زمعہ! بیلز کامتہیں ملنا چاہئے۔اس کئے کہ

صحيح مسلم، كتاب الرضاع، باب الولد للفراش (الحديث 3600)

صحيح البخاري، كتاب البيوع، باب شراء المملوك من الحربي وهبته وعتقه (الحديث 2218) والنسائي، كتاب الطلاق،باب الحاق الولد بالفراش اذا لم ينفه (الحديث3484)

الكاح ١٦٥ كتاب النكاح ١٦٥ كتاب النكاح ١٢٥ كتاب النكاح

نِ أَبِيْهِ وه اس كے باپ كے بسر پر بيدا ہوا تھا۔ اور نبی مُضَعَّمَ الله فَ مُودَةً فَ فَر مایا: ''اے سودہ اس سے پردہ كيا كرو۔ اس بَهَ ابْنِ لَكُ كُه آ بُ فَ اس كو عتبہ بن ابی وقاص كے مشابہ بايا تھا۔ اور سودة زمعه كی بیٹی تھیں۔

زَمُعَةَ مِنُ أَجُلِ أَنَّهُ وُلِدَ عَلَى فِرَاشِ أَبِيهِ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ احْسَجِبِي مِنْهُ يَا سَوُدَةُ بِنُتَ زَمُعَةَ مِمَّا رَأَى مِنْ شَبَهِهِ بِعُتُبَةَ بُنِ أَبى وَقَّاصِ وَسَوْدَةُ بِنُتِ زَمُعَةَ . •

فواند: (۱) اسلام میں جا بلی جرائم کی پوچھ پچھ نہیں ہوگ ۔ بلکہ اسلام قبول کرتے ہی وہ مجی معاف ہوجا کیں گے (۲) خاہر پچھ بھی ہو فیصلہ قانون وشریعت کے مطابق ہی ہوگا۔ (واللہ اعلم)

[42].... بَابِ مَنُ جَحَدَ وَلَدَهُ وَهُوَ يَعُرِفُهُ

اس شخص کا بیان جواپنی اولا د کو پیچاننے کے باوجودا نکار کرتا ہے

2284 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ

يُونُسَ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ

عَنُ أَبِسَى هُسَرَيُسَرَةَ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ عَنَّمُ الْمَسَعِةَ رَسُولَ اللَّهِ عَنَّمُ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ عَلَيْ قَوْمُ السُمَّا لَيُسَ مِنْهُمُ فَلَيُسَتُ مِنَ اللَّهِ فِي نَسَبًا لَيُسَ مِنْهُمُ فَلَيُسَتُ مِنَ اللَّهِ فِي نَسَبًا لَيُسَ مِنْهُمُ فَلَيُسَتُ مِنَ اللَّهِ فِي نَسَبًا لَيُسَ مِنْهُمُ فَلَيُسَتُ مِنَ اللَّهِ عَنَيْهُ وَأَيُّمَا شَيُءٍ وَلَنُ يُدُحِلَهَا اللَّهُ جَنَّتَهُ وَأَيُّمَا رَجُلٍ جَحَدَ وَلَدَهُ وَهُو يَنْظُرُ إِلَيْهِ احْتَى رَجُ لِ جَحَدَ وَلَدَهُ وَهُو يَنْظُرُ إِلَيْهِ احْتَى رَجُ لِ جَحَدَ وَلَدَهُ وَهُو يَنْظُرُ إِلَيْهِ الْتُهُ مِنْهُ وَفَضَحَهُ عَلَى رُولُ وَسِ اللَّهُ وَلَيْنَ وَالْآخِرِينُ قَالَ عَبُدُ اللَّهِ وَاللَّهُ مِنْهُ وَقُولَ عَلَى اللَّهُ وَاللَّهُ مِنْهُ وَهُو يَنْ قَالَ عَبُدُ اللَّهِ وَاللَّهُ مِنْهُ وَهُو يَنْ قَالَ عَبُدُ اللَّهِ قَالَ مُحَمَّدُ بُنُ كَعُبِ الْقُرَظِيُّ وَسَعِيدٌ وَسَعِيدٌ يُحَدِّرُنُ قَالَ مُحَمَّدُ بُنُ كَعْبِ الْقُرَظِيُّ وَسَعِيدٌ وَسَعِيدٌ يُحَدِّرُ فَي اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا لَهُ وَاللَّهُ مَا اللَّهُ عَلَى رَولُ وَلَا عَبُدُ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى مَعَلَى اللَّهُ مَا اللَّهُ عَلَى وَسَعِيدٌ وَاللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ عَلَى وَسَعِيدٌ وَاللَّهُ مِنْهُ وَاللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا مُعَلِيدُ اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ

سیّدنا ابو ہریرۃ بنائی کہتے ہیں کہ انہوں نے رسول اللہ مظافی کو یہ کہتے ہوئے سا،جس وقت لعان کی آیت نازل ہوئی: ''جوعورت کسی قوم میں ایمنسل کو داخل کرے جو اس قوم سے نہیں ہے تو اللہ تعالی سے اس کا پچھتعلق نہیں۔ اور اللہ تعالی اسے ہرگز جنت میں داخل نہیں کرے گا اور جو آ دمی اپنی اولاد کو دیکھنے کے بعد اس کیا انکار کرے۔ اللہ اس سے پردیے میں رہے گا۔ اسے پہلے اور بعد والے تمام لوگوں کے سامنے رسواکرے گا۔ اسے پہلے اور بعد والے تمام لوگوں کے سامنے رسواکرے گا۔ عبداللہ کہتے بعد والے تمام لوگوں کے سامنے رسواکرے گا۔ عبداللہ کہتے ہیں: ''یہ حدیث ہمیں رسول اللہ سے بینے نے کہتے ہے۔''

الُحَدِيثُ عَنُ رَسُولِ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ

[🗗] صحیح: (1179) حدیث ہی مطول دوبارہ وارد ہوئی ہے۔

استاده حيد: صحيح ابن حبان (الحديث 4108) والنسائي، كتباب الطلاق، بباب التغليظ في الانتفاء من الولد (الحديث 3481)

الكاح النكاح (179 كتاب النكاح الكاح الكاح النكاح التكام النكاح التكام النكام ال

فواند: (۱) اسلام اصلاح کے کسی پہلو کوتشہ نہیں چھوڑتا بلکہ ہرایک حقق تقرر کرکے بعدان میں اصلاح کاابیاطریقہ کاراختیار کرتا ہے کہ افراط وتفریط سے پاک اعتدال کانمونہ بن جاتا ہے (۲) پیچھے بیچ کو صاحب فراش کی طرف منسوب کیا تو یہاں عورت کو بھی سنبیہ کردی کہ اگراس نے حرام کاری کے ذریعے بیچ کو اپنے خاوند کے خاندان میں داخل کیا تو یہ اس کے لیے جنت سے محرومی کا سبب ہوگا۔ اور ساتھ بی خاوند کو بھی سنبیہ کردی کہ اس کا بلاوجہ کا انکار اس کی رسوائی کا باعث ہے جس طرح وہ ایک پاک دامن کی رسوائی کا سبب بنا ہے (۳) آخرت کو مزاجرم کی جنس سے ہوگی اور کہیں زیادہ شدید ہوگی۔

[43] بَابِ الرَّجُلِ يَتَزَوَّ جُ امُواَّةً أَبِيهِ الصُّخْصَ كابيان جوآ دمی اسٹے باپ کی بیوی سے نکاح کرے

2285 حَدَّثَ نَمَا عَبُدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرِ الرَّقِّيُّ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَمْرِو عَنْ زَيْدٍ عَنْ عَدِيّ بْنِ

ئابِتِ.....ئا

سیّدنا برید بن براء اپنے والد سے بیان کرتے ہیں۔ میں اپنے چھا ہے ملا ،اوران کے پاس ایک جھنڈا تھا میں نے کہا: '' جھے رسول کہا: کہاں جانا چاہتے ہیں؟ انہوں نے کہا: '' جھے رسول الله مظامین نے اس آ دی کی طرف بھیجا ہے جس نے اپنے والد کی بیوی سے نکاح کیا ہے اور آپ نے جھے تکم دیا ہے والد کی بیوی سے نکاح کیا ہے اور آپ نے جھے تکم دیا ہے کہ میں اس کی گردن اڑا دوں اور اس کا مال لے لوں۔''

عَنُ يَزِيدَ بُنِ الْبَرَاءِ عَنُ أَبِيهِ قَالَ لَقِيتُ عَنُ أَبِيهِ قَالَ لَقِيتُ عَمِى مَعَهُ رَايَةٌ فَقُلُتُ أَيْنَ تُرِينُهُ فَقَالَ بَعَضِيى رَسُولُ اللهِ عَلَيْ إلى رَجُلٍ نَكَحَ امُورًا فَ أَبُيهِ فَ أَمَرَنِي أَنُ أَصُوبَ عُنَقَهُ وَآخُذَ مَالَهُ. •

فواند: (۱) جھنڈ اان کے ایکی ہونے کی علامت تھی کسی ادارے کے لیے اپنے نمائندے کو جھیجتے ہوئے کوئی نہ کوئی علامت فراہم کرناہی مسنون ہے اور پریشانی سے بچنے کا ذریعہ ہے (۲) سوتیلی ماں سے نکاح حرام ہے (۳) اس کی سزاگردن زنی ہے اور مال کی قرقی۔

[44] بَابِ قَوُلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعُدُ ﴾ الله الله كَانُونِ بَعُدُ ﴾ النِّسَآءُ مِنْ بَعُدُ ﴾ كَانْسِر

2286 حَدَّثَنِي مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ قَالَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ دَاوْدَ بْنِ أَبِي هِنْدِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِيْ

[•] حسن: ال كي سند شرط يرب- صحيح: ابن حبان (الحديث 4112) والنسائي، كتاب النكاح، باب نكاح مانكح الآباء (الحديث 3332)

كتاب النكاح المنتان الدانون

انصار کا زیاد نامی آدمی کہتا ہے میں نے ابی بن کعب سے عَنُ رَجُل مِنَ الْأَنْصَار يُسَمَّى زيَادًا قَالَ قُلُتُ لِأُبَىّ بُن كَعُب أَرَأَيُتَ لَوُ أَنَّ كها: مجھے بنائي اگر نبي ﷺ كى بيوياں انقال كر جاتيں تو آ ب كو نكاح كرناجائز جوتا؟ انهول في كها: جي بال-أَزُوَاجَ النَّبِي ﴿ لَكُمْ مُتُنَ كَانَ يَحِلُّ لَهُ أَنُ کونکہ اللہ تعالی نے آئے کے لئے خاص قتم کی عورتیں يَتَزَوَّ جَ قَالَ نَعَمُ إِنَّمَا أَحَلَّ اللَّهُ لَهُ ضَرُبًا حلال کیں اوران کی صفت بیان کی اور فر مایا: ''ان عورتوں منَ النَّسَاء وَ وَصَفَ لَهُ صِفَةً فَقَالَ لَا يَجِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعُدُ مِنْ بَعُدِ

کے علاوہ کوئی عورت آ ب کے لئے حلال نہیں ہے۔'' هَذه الصّفَة . ٥

ف واند: (۱) يەرسول الله كاخاصة قعاكة آپ مطفع الله على حابين عورتون سے شادى كرين جبكه مونین کوفقط حارتک کی اجازت ہے(۲) ندکورہ حدیث سے واضح ہوتا ہے کہ آپ طفی این کومزیدشادی سے منع کے بعد دوبارہ اجازت مل گئی تھی البتہ آپ مطفی آئی نے کوئی نکاح نہیں کیا۔ (ابن کثیر: احزاب: 52) 2287 ـ أَخْبَرَنَا الْمُعَلِّي حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجِ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتُ مَا تُوقِي رَسُولُ سيّده عائشه وَنَاهُم اللهِ عِن كهرسول الله عَلَيْمَ إلى أنقال اللهِ عَنْ حَتْمَ أَحَلُ اللَّهُ لَهُ أَنْ يَعَزَقَ جَ فَي فَهِ اللَّهِ عَلَى كَاللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى الله عَلَى ال دى كه آپ جس قدر جا بين نكاح كريں -''

مِنَ النِّسَاءِ مَا شَاءً . ٥

رِ45ر.... بَابِ فِي الْأَمَةِ يُجْعَلُ عِتُقُهَا صَدَاقَهَا اس لونڈی کے متعلق جس کی آ زادی کواس کاحق مہرمقرر کیا جائے

2288 حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدِ عَنْ شُعَيْب بْنِ الْحَبْحَابِ

عَنْ أَنْسِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عَنْ صَفِيَّة سيِّدنا انس وظائمً كمت بيس كرسول الله طنكَ وَالله عَن أَنس آ زاد کیا اوران کی آ زادی ہی ان کا مہرمقرر کیا۔

وَجَعَلَ عِتُقَهَا صَدَاقَهَا . 9

🗗 ضعیف: عبداللہ بن احمہ نے اسے مند کی زوائد میں 5 /133 اور بخاری نے تاریخ الکبیر میں 3 /359-360 میں اے روایت کیا

عصحیح: ابن جریج سے صراحت ساع مجی طبری کے ہاں موجود ہے۔ ابن حبان (6366) وموارد الظمآن (2126)

[•] منفق عليه: البخاري، كتاب النكاح، باب من جعل عتق الامة صداقها (الحديث5086) ومسلم، كتاب النكاح، باب فضيلة اعتاقه أمة ثم يتزوجها(الحديث 2054)ابن ماجه، كتاب النكاح، باب الرجل يعتق امنه ثم يتزوجها (الحديث 1957)

النكاح كتاب النكاح (181) كتاب النكاح

فهاند: (۱) آزادی چونکه انتهائی قیمتی شئے ہے البندااس کی قیت کوہی مبرمقررکیا جاسکتا ہے (۲)

مہر کاحس ہونا ضروری نہیں کوئی معنوی چیز بھی مہر قرار پاسکتی ہے۔

2289_ أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَان حَدَّثَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ عَنْ قَتَادَةَ......

عَنُ أَنَسِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِنْ أَعْمَقَ سيّدنا انس فِالنَّذَ كَبّ بين كدرسول الله من الله عَن أَن رَسُولَ الله من الله عَن ال آ زاد کیا پس ان سے نکاح کیا اوران کی آ زادی کو ہی ان کا

صَفِيَّةَ وَتَزَوَّجَهَا وَجَعَلَ عِتُقَهَا صَدَاقَهَا. ٥

مهرمقرر کیا۔

[46].... بَابِ فَضُل مَنُ أَعْتَقَ أَمَةً ثُمَّ تَزَوَّجَهَا اس شخص کی فضیلت کا بیان جوکسی لونڈی کوآ زاد کرے پھراس سے نکاح کرے

2290 أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنِ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ.

سيّدنا صالح بن صالح بن في مداني كيت بي كه مين شعبي کے پاس تھا ،ان کے پاس خراسان کے ایک آ دی نے آ كركبا:ا _ ابوعمرو! جمارے علاقے میں خراسان كے لوگ اس شخص کے متعلق جوابی لونڈی کوآ زاد کرے پھراس سے نکاح کرے اس طرح کہتے ہیں: کہ"اس کی مثال ایس ہے جیسے وہ قربانی کے اونٹ پرسوار ہو۔'' شعمی کہتے ہیں: مجھ سے ابودرداء بن ابومویٰ نے اینے والد سے نقل کیا کہ انہوں نے کہا: رسول اللہ مستی اِنے نے فرمایا: " تین مخص ہیں ا جنہیں دوہرااجر ملے گاایک وہ جواہل کتاب سے ہو،ایخ نبی برایمان لایا ہو پھر (آخری) نبی <u>طشک</u>ینے کو پایا اس پر پر ایمان لایا۔ اور اس کی پیروی کی دوسرا وہ غلام جو کسی کی ملكيت ميں ہو_الله اور اينے مالك كاحق ادا كرتا رہا اس کے لئے دوہرااجر ہے۔ تیسرا وہ مخص جس کے پاس لونڈی تھی۔ اس کی برورش کی اور انچھی برورش کی اسے ادب

عَـنُ صَــالِح بُنِ صَـالِح بُنِ حَيّ الْهَمُدَانِيّ قَالَ كُنْتُ عِنْدَ الشَّعْبِيّ فَأَتَاهُ رَجُلٌ مِنُ أَهُ ل نُحرَاسَانَ فَقَالَ يَا أَبَا عَــمُــرو إِنَّ مَـنُ قِبَلَنَا مِنُ أَهُل خُرَاسَانَ يَقُولُونَ فِي الرَّجُلِ إِذَا أَعْتَقَ أَمَتَهُ ثُمَّ تَزَوَّجَهَا فَهُوَ كَالرَّاكِب بَدَنْتَهُ فَقَالَ الشَّعُسِيُّ حَدَّثَنِي أَبُو بُرُدَةَ بَنُ أَبِي مُوُسَى عَنُ أَبِيلِهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِلَى اللَّهُ يُلُونَا أَجُرَهُمُ مَرَّتَيُن : رَجُلٌ مِنُ أَهُلِ الْكِتَابِ آمَنَ بنَبيّهِ ثُمَّ أَذُرَكَ النَّبِيَّ عَلَى اللَّهِ وَاتَّبَعَهُ وَعَبُدٌ مَـمُـكُوكٌ أَدَّى حَقَّ اللَّهِ وَحَقَّ مَوَالِيهِ فَلَهُ أَجُوَان . وَرَجُلٌ كَانَتُ لَهُ أَمَةٌ فَغَذَّاهَا فَأَحُسَنَ غِذَائَهَا وَأَدَّبَهَا

الكاح كاب النكاح ١١٤٥ المح كتاب النكاح المحاد المحا

سکھایا اور اچھا ادب سکھایا۔ پھراسے آآ زاد کر کے اس سے
نکاح کیا۔ اس کے لئے دہرا اجر ہے۔ '' پھراس شخص سے
فر مایا:''اس حدیث کو بغیر کسی شے کے لیاد پہلے زمانہ میں
اس سے چھوٹی حدیث کے لئے مدینہ کا سفر کیا جاتا تھا' بٹیم
کہتے ہیں:'' مجھے لوگوں نے بھر ق میں خبر دی تو میں نے
صالح کے پاس جا کراس کے متعلق پوچھا۔''

فَأَحُسَنَ أَدْبَهَا فَأَعْتَقَهَا وَتَزَوَّ جَهَا فَلَهُ أَجُرَانِ ثُمَّ قَالَ لِللرَّجُلِ حُدُهَدَا الْحَدِيثَ بِغَيْرِ شَىءٍ فَقَدُ كَانَ يُرُحَلُ فِيمَا دُونَ هٰذَا إِلَى الْمَدِينَةِ قَالَ هُشَيْمٌ أَفَادُونِيُ بِالْبَصْرَةِ فَأَتَيْتُهُ فَسَأَلْتُهُ عَنهُ. ٥ أَفَادُونِيُ بِالْبَصْرَةِ فَأَتَيْتُهُ فَسَأَلْتُهُ عَنهُ. ٥

فوائد: (۱) جابلی معروف باتوں کی اہل علم سے علمی تو جیہ معلوم کر لینی جا ہے تا کہ حقیقت حال سے واضح ہوجائے (۲) دوسری محنت پراللہ کے ہاں اجر بھی دو ہرا ملے گا۔ شعر کا مصرعہ ہے ''بقدر الکد تکسب المعالی'' محنت کے بقدر ہی بلندیاں حاصل ہوتی ہیں (۳) اسلام میں غلامی کی حوصلہ افزائی تو ہے لیکن غلاموں کی فلاح و بہبود پر بھی انتہائی زیادہ توجہ دی گئی ہے جس کی بدولت عموماً غلام اسلام کے ہی ہور ہے۔ بلکہ تاریخ کی فلاح و بہبود پر بھی انتہائی زیادہ توجہ دی گئی ہے جس کی بدولت عموماً غلام اسلام کے ہی ہور ہے۔ بلکہ تاریخ کے مطابعے سے معلوم ہوتا ہے کہ تبلیخ اسلام اور خدمت حدیث میں غلام محدثین وفقہا کی خدمات نا قابل فراموش ہیں۔

2291 أَخْبَرَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ صَالِح بْنِ حَيِّ عَنِ الشَّعْبِيِّ.....

سیّدنا ابو بردۃ رہی اللہ اپنے والد سے نقل کرتے ہیں کہ نی پیشیمین نے اس حدیث کی طرح فرمایا۔

عَنُ أَبِى بُرُدَةَ عَنُ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِ النَّبِي النِّبِي النَّبِي النِّبِي النَّبِي النِّبِي النَّبِي النَّبِي النَّبِي النِّبِي النَّبِي الْمِنْ النَّبِي النَّبِي النَّبِي النَّبِي النَّبِي النَّامِ النَّامِ النَّامِ النَّامِ النَّامِ النَّامِ النَّامِ النَّامِ النَّبِي النَّامِ الْمَامِلُولِيلِ النَّامِي النَّامِ النَّامِ النَّامِ الْمَامِلِي الْمَامِ الْمَا

عَنُ عَلُقَ مَةَ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ فِى رَجُلٍ تَزَوَّجَ امُرَأَةً وَلَمُ يَكُنُ فَرَضَ لَهَا شَيْئًا وَلَمُ يَدُخُلُ بِهَا وَمَاتَ عَنُهَا قَالَ فِيهَا:

سیّدنا علقمہ رُقائِیْ کہتے ہیں کہ عبداللہ نے اس آ دی کے متعلق جس نے کسی عورت سے نکاح کیا پھر مہرمقرر کرنے اور صحبت کرنے سے پہلے اسے چھوڑ کرمر گیا' یوں کہا:''اس

 [◘] متفق عليه: البخاري، كتاب العلم، باب تعليم الرجل امنه وأهله (الحديث 97) ومسلم، كتاب وجوب الايمان برسالة.... (الحديث 385) والترمذي، كتاب النكاح، باب ماجاء في الفضل في ذلك (الحديث 116)

۵ سابقہ صدیث کے مطابق تخ تا ہے۔

الكاح المنكال الكام المنكاح (183 المنكاح كتاب النكاح المنكاح ا

صورت میں عورت کواس کے خاندان کی کسی عورت جتنا مہر ملے گا۔ اور اس پر عدت بھی ہوگی۔ اسے میراث ملے گی۔ معقل انتجی نے کہا کہ رسول اللہ طفی آیا نے بروع بنت واشق کے بارے میں 'جو بنورواس کی عورت تھی' ایسا ہی فیصلہ کیا جیسا آپ نے فرمایا۔عبداللہ بیس کرخوش ہوئے۔ محمد اور سفیان کہتے ہیں۔''۔ محمد اور سفیان کہتے ہیں۔''۔

لَهَا صَدَاقَ نِسَائِهَا وَعَلَيُهَا الْعِدَّةُ وَلَهَا الْمِيْرَاكُ قَالَ مَعُقِلٌ الْأَشْجَعِيُّ قَضَى الْمِيْرَاكُ قَالَ مَعُقِلٌ الْأَشْجَعِيُّ قَضَى رَسُولُ اللهِ عَلَيُّ فِي بِرُوعَ بِنُتِ وَاشِقِ امْرَأَةٍ مِنْ بَنِي رُواسٍ بِمِثُلِ مَا قَضَيُتَ. امْرَأَةٍ مِنْ بَنِي رُواسٍ بِمِثُلِ مَا قَضَيُتَ. قَالَ هُ حَدَّدُ فَالَ هُ حَدَّدً قَالَ هُ حَدَّدً وَسُفْيَانُ نَأْخُذُ بِهٰذَا . ٥

فوائد: (۱) نکاح کے موقع پر حق مہر مقرر نہ ہوتو کوئی حرج نہیں البتہ یہ عورت کا حق ہے جاہے بعد میں ہی ہوا ہے دینا لازم ہے الا میہ کہ وہ معاف کردے (۲) اسلامی احکام بالمقابل عقل کی کوئی حیثیت نہیں۔ (۳) جس عورت کا مہر مقرر نہ ہواور وہ فوت ہوجائے تواسے مہر شل ملے گا یعنی جتنا ان کے (مرد) خاندان کی دوسری عورتوں کو ملتا ہے نیز وہ میراث کی بھی مستحق ہوگ۔

[48] بَابِ مَا يَحُورُهُ مِنَ الرَّضَاعِ كَن كَن رضاعي رشتول سے حرمت ثابت ہوتی ہے

2293 ـ أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ حَدَّثَنَا رَوْحٌ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِيْ بَكْرِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ

عَنْ عَمْرَةَ

سیدہ عائشہ وفائعہا کہتی ہیں کہ وہ نبی مطابقہ کے ساتھ حفصہ وفائعہا کہتی ہیں انہوں نے کسی آ دی کی آ وازسی سیدہ عائشہ وفائعہا کہتی ہیں میں نے کہا: یا رسول اللہ! میں نے آپ کے گھر میں کسی آ دی کی آ وازسی ہے تو رسول الله مطابقہ نے آپ کے گھر میں کسی آ دی کی آ وازسی ہے تو رسول الله مطابقہ نے آپ کا رضاعی جیا۔'' سیدہ عائشہ وفائعہا کا رضاعی جیا۔'' سیدہ عائشہ وفائعہا کا رضاعی جیا۔'' سیدہ عائشہ وفائعہا نے اپنی رضاعی جیا کے بارے میں کہا: یا رسول اللہ! اگر وہ زندہ ہوتے تو میرے پاس آ کے شے؟ رسول اللہ مطابقہ نے نے فرمایا:''جی ہاں' جن نسبی رشتوں سے حرمت ثابت ہوتی فرمایا:''جی ہاں' جن نسبی رشتوں سے حرمت ثابت ہوتی

عَنُ عَائِشَةَ أَنَّهَا كَانَتُ مَعَ النَّبِي ﷺ فِي عَنُ عَائِشَةَ أَنَّهَا كَانَتُ مَعَ النَّبِي ﷺ فِي عَنْ مَوْتَ إِنْسَانٍ فِي بَيْتِكُ سَمِعُتُ صَوْتَ إِنْسَانٍ فِي بَيْتِكُ سَمِعُتُ صَوْتَ إِنْسَانٍ فِي بَيْتِكُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أُرَاهُ فَلانًا لِعَمِّ حَفُصَةَ مِنَ الرَّضَاعَةِ قَالَتُ عَائِشَةً لِعَمِّ حَفُصةَ مِنَ الرَّضَاعَةِ قَالَتُ عَائِشَةً لِعَمِّ حَفُصةً مِنَ الرَّضَاعَةِ قَالَتُ عَائِشَةً لِعَمِّمَ المَّرْضَاعَةِ وَحَلَ عَلَى فَقَالَ لِعَمِّهَا مِنَ الرَّضَاعَةِ وَحَلَ عَلَى فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ نَعَمُ يَحُومُ مُ مِنَ الرَّضَاعَةِ وَسُولُ اللَّهِ ﷺ نَعَمُ يَحُومُ مِنَ الرَّضَاعَةِ وَسُولُ اللَّهِ ﷺ نَعَمُ يَحُومُ مِنَ الرَّضَاعَةِ وَسُولُ اللَّهِ ﷺ نَعَمُ يَحُومُ مِنَ الرَّضَاعَةِ وَسُولُ اللَّهِ اللَّهُ الْمَاعِةِ الْمَعْمَ يَحُومُ مُ مِنَ الرَّضَاعَةِ وَسُولُ اللَّهِ عَلَى المَّاعَةِ الْمَاعَةِ وَالْمَاعِةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَلَوْمَ عَلَى الرَّضَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَالَةُ مَا اللَّهُ اللَّهُ الْمَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَلُولُ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمَاعَةِ وَالْمَاعَةِ وَالْمَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمَاعَةُ الْمَاعَةُ الْمَاعَةُ اللَّهُ اللَّهُ الْمَاعِةُ وَالْمَاعِةُ الْمَاعِةُ الْمُعُولُ اللَّهُ الْمَاعِلَةُ الْمَاعِةُ الْمُعَلِّمُ اللَّهُ الْمَاعَةُ الْمَاعِةُ الْمَاعِةُ الْمَاعِةُ الْمَاعِةُ الْمَاعِلَةُ الْمَاعِلَةُ الْمَاعِةُ الْمُلْكِلِهُ الْمَعْمُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِلُولُ اللَّهُ الْمُعْمَالَةُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِلُولُ اللَّهُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنَ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنَ الْمُؤْمُولُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنَ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنَ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنَ الْمُؤْمُنُ الْمُؤْمِنَ الْمُؤْمِنَ الْمُؤْمِنَ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُ

الكاح كاب النكاح كالم المكاح كاب النكاح كاب

فوائد: (۱) اگر کوئی بچیشر بعت کے مقرر کردہ ضابطہ کے مطابق کسی عورت کا دودھ پی لے تو یہ عورت اس کی رضاعی ماں کہلائے گی اوراس کے حقیقی بچے کے لیے حرام رشتے اس دودھ پینے والے کے لیے بھی حرام ہوں گے جو کہ سورۃ النسا: 23 میں مذکور ہیں (۲) پردے کے احکام بھی رضاعی وقیقی اولاد کے لیے برابر ہوں گے۔

2294 أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بِنُ عَوْنِ أَنْبَأَنَا هِشَامُ بْنُ

عُرُوةَ عَنُ أَبِيهِ قَالَ أَخُبَرَتُنِى عَابِشَةُ أَنَّ عَمَهَا أَخِا أَبِى الْقُعَيْسِ جَاءَ يَسُتأَذِنُ عَلَيْهَا بَعُدَمَا صُوبِ الْحِجَابُ فَأَبَتُ عَلَيْهَا بَعُدَمَا صُوبِ الْحِجَابُ فَأَبَتُ أَنُ تَأْذَنَ لَهُ حَتَّى يَأْتِى رَسُولُ اللّهِ عَلَيْ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى ا

سیّدنا عروة خالین کیت بین سیّده عائشه و النه و بی محص سے بیان کیا کہ ان کے چھا ابو القعیس کے بھائی پرده مقرر مونے کے بعد آئے اور اجازت چاہی انہوں نے اجازت دینے سے انکارکر دیا کہ رسول اللہ میں تاہوں نے آب وان سے اجازت لوں گی جب نبی میں تی اللہ میں آئے تو انہوں نے آپ سے اس بات کا ذکر کیا اور کہا:''میرے چھا ابوالقعیس کے سے اس بات کا ذکر کیا اور کہا:''میرے چھا ابوالقعیس کے بھائی آئے تھے۔ میں نے انہیں واپس کر دیا ہے تاکہ آپ منہیں ہوائی آئے فرمایا:''کیا وہ تیرا چھا منہیں ہے؟ ''سیّدہ عاکشہ وظافی نے کہا!'' مجھے دودھ تو عورت نے بلایا ہے مرد نے نہیں پلایا۔'' آپ نے فرمایا: ''وہ تمہارے پاس آسکتے ہیں۔'' عروۃ تاب کہتی تصیس بیات کی شخوں نے مرایا کے تاب کہتی تصیس بیات کی رشتوں سے حرمت نابت ہوتی ہے وہی رضائی رشتوں سے حرمت نابت ہوتی ہے وہی رضائی رشتے بھی حرمت

والے ہوتے ہیں۔''

فوائد: متفق عليه روايت مين عائشه والنها كرضاى چپاكانام اللح آيا بي يرآب طفي ينا

متفق عليه: البخاري، كتاب الشهادات، باب الشهادة على الأنساب والرضاع المستفيض والموت القديم (الحديث< 2646)
 ومسلم، كتاب الرضاع، باب يحرم من الرضاعته ما يحرم من الولادة (الحديث 3553)

②متفق عليه: البخاري، كتاب الشهادات، باب الشهادة على الأنساب والرضاع المستفيض (الحديث 2346) ومسلم، كتاب الرضاع، باب تحريم الرضاعته من ماء الفحل (الحديث 3560)

www.sirat-e-mustageem.com

الكاريخي الكاريخي المكاريخي (185) المكاريخي
ایک قول کے مطابق ام سلمہ والی کا آزاد کردہ غلام تھا۔اصل میں عائشہ والی کھا تھے ایک نبی سے ایک کی زندگی میں خالق حقیق سے جاملا جبکہ دوسرا آپ کی مرضعہ کا دیور یا جیٹھ تھا۔

2295 أَخْبَرَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ مَالِكِ حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارِ

عَنْ سُلَيْمَانَ بْن يَسَار عَنْ عُرْوَةَ

سیّدہ عائشہ وٹائٹھا کہتی ہیں کہ نبی ﷺ نے فرمایا:''جن عَنُ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ عِنْ اللَّهِ عَلَيُّ قَالَ يَحُرُمُ نسبی رشتوں سے حرمت ٹابت ہوتی ہے ان رضاعی مِنَ الرَّضَاعَةِ مَا يَحُرُمُ مِنَ الْوَلَادَةِ. ٥

رشتوں سے بھی حرمت ثابت ہوتی ہے۔''

2296 قَالَ مَالِكٌ وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِيْ بَكْرِ عَنْ عَمْرَةَ

سيّده عائشه والونها كهتى بين كه نبي السَّقَوَّة ن يبلى حديث كي عَنُ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِي عِلَيُّكُ مِثْلَهُ. ٥

[49].... بَابِ كُمُ رَضُعَةً تُحَرِّمُ سنتنی دفعہ دورھ پینے سے حرمت ثابت ہوتی ہے؟

2297 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ صَالِح حَدَّثَنِي اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُوْنُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ ء ، ر عروة

سیّدہ عائشہ ظافھا کہتی ہیں کہ نبی مطاقیم نے فرمایا: ''ایک' رود فعہ دودھ چوسنے سے حرمت ثابت نہیں ہوتی۔''

عَنُ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ لَا تُحَرِّمُ المُصَّةُ وَالمُصَّتَانِ. 9

فوائد: (۱)"المصّة " كمت بين چونے كوية "مَصَّ " عمدر ب (۲) اگر بي نے دودھ پینا شروع کیا پھر چھاتی کوچھوڑ دیا توبیا ایک دفعہ ہے دوبارہ پیے گا توبید دوسری دفعہ شار ہوگا۔ (۳) رضاعت کے تھم میں اختلاف ہے جمہور کے نزدیک تھوڑ ایازیادہ دودھ پینے سے بیثابت ہوجاتی ہے داؤد ظاہری، اسحاق، ابوعبیدہ نطشے کے مطابق ندکورہ حدیث کی بناپر تین دفعہ دودھ پینے سے حرمت ثابت ہوگی۔جبکہ امام شافعی یا کج

صحيح: مؤطا امام مالك ، كتاب الرضاع ، باب جامع ماجاء في الرضاعة (15) ومسلم، كتاب الرضاع ، باب يحرم من الرضاعة ما يحريم من الولادة(الحديث 3554)

[🛭] صحیح: (2293) کے تحت اِس کی تخ تئے گزر چکی ہے۔

اسناده ضعیف: لیکن عدیث مجے ہے۔ انصر جمه مسلم فی کتاب الرضاع، باب فی المصة و المصتان (الحدیث: 3575) وابن ماجه، كتاب النكاح، باب لاتحيم المصة والمصتاك(الحديث1941)

رفعہ دودھ پیٹے کولازم تھہراتے ہیں جیسا کہ آئنہ ہو حدیث سے واضح ہورہا ہے۔ جمہور کی دلیل سے ﴿ وَاُمَّهَا اُنگُکُمُ اللّٰہِ اِنْ السّاءِ (23) تہماری ہا ئیں وہ ہیں جنہوں نے تہمیں دودھ پلایا ہے۔ احادیث کونظر اللّٰہ اِنْ اَسْتُ اِنْ اَسْتُ اِنْ اللّٰہِ اِنْ اللّٰہِ اِنْ اللّٰمِ اللّٰہِ اللّٰہُ اللّٰہِ اللّ

2298 ـ أَخْبَرَنَا شُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدِ عَنْ أَيُّوْبَ عَنْ أَبِي الْخَلِيلِ عَنْ عَبْدِ

اللهِ بْنِ الْحَارِثِ

سیدنا ام فضل کہتی ہیں کہ ایک آدمی نبی مطابقہ کے پاس آیا ایک دوسری عورت بھی ہے۔ پہلی کہتی ہے کہ اس نے دوسری کو دودھ پلایا ہے۔ آپ نے فرمایا: ''ایک دو دفعہ دودھ پینے سے حرمت ثابت نہیں ہوتی۔'' عَنُ أُمِّ الْفَصُٰلِ أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِي ﷺ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّى قَدُ تَزَوَّجُتُ اللَّهِ إِنِّى قَدُ تَزَوَّجُتُ الْمُولَى الْمَرَأَةَ وَعِنْدِى أَخُرَى فَزَعَمَتِ الْأُولٰى الْمَرَأَةَ وَعِنْدِى أَخُرَى فَزَعَمَتِ الْأُولٰى أَنَّهَا أَرُضَعَتُ الْمُحُدُثَى فَقَالَ لَا تُحَرِّمُ الْإِمْلَاجَتَان . • الْإِمْلَاجَتَان . • الْإِمْلَاجَتَان . • •

2299- أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ أَخْبَرَنَا رَوْحٌ حَدَّثَنَا مَالِكُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِى بَكْرِ عَنْ عَمْرَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتُ نَزَلَ الْقُرُآنُ بِعَشُو سِيْده عائشَهُ وَاللهِ بْنِ بَهِا عَلَى مَرْآن مِي سِيَهُم نازل ہوا رَضَعَاتٍ مَعُلُومَاتٍ يُحَرِّمُنَ ثُمَّ نُسِخُنَ تَهَا كه دَى بار دوده پينے ہے حرمت نازل ہوتی ہے۔ پھر بخمه سِ مَعُلُومَاتٍ فَتُوفِقَى رَسُولُ الصمنوعُ كركے بانچ بار دوده پينے كا حمم ملا۔ پھر رسول

❶ صحيح مسلم، كتاب الرضاع، باب في المصة و المصتان (الحديث 2576) و النسائي، كتاب النكاح، باب القدر الذي يحرم من الرضاعة (الحديث 3308)

www.sirat-e-mustageem.com

الكاح الكام
اللَّهِ ﷺ وَهُنَّ مِمَّا يُقُوزُ أَمِنَ الْقُرُآنِ . • الله ﷺ فَي وفات يائي تو قرآن سے وہ پڑھاجاتا تھا۔ فوائد: مطلب ميركم يا في وفعد ييني عرمت ثابت موجانے والے حكم كى تلاوت كى جاتى تقى ، اس آیت کا تھم تو تا قیامت موجود اور بر قرار ہے لیکن اس کی تلاوت منسوخ ہو چکی ہے،جولوگ رسول الله مشافِرة كي وفات كے بعد بھى اسے تلاوت كرتے تھے ان كو ابھى اس كا نسخ معلوم نہيں ہوا تھا۔امام نو وی راٹیجیہ اس بارے میں فرماتے ہیں کہ اس کامعنی یہ ہے کہ پانچ کی تعداد کا کشخ اتنی تاخیر سے ہوا کہ نبی منتظ عَلَامً کی وفات کاواقعہ پیش آگیا اور بعض لوگ آپ مشخصین کے بعد ہی بطور قرآن ان کی تلاوت کرتے رہے کیونکہ ان کا ننخ آپ مشیکاتیم کی وفات ہے متصل ہی ہوا تھا۔اس لیے لوگوں کوخبر نہ ہو کی آپ مشیکاتیم کی وفات کے بعد جب لوگوں کوعلم ہوا توانہوں نے اس سے رجوع کرلیا اور بھی متفق ہو گئے۔لہذا ہے آیات تو منسوخ ہو پیس بہر حال ان کا حکم باقی رہا ہے جیسا کہ بیر ننخ کی ایک صورت ہے کہ آیت کے الفاظ منسوخ ہوجا کیں جبکہ اس کا تھم ہاتی رہے۔

[50].... بَابِ مَا يُذُهِبُ مَذَمَّةَ الرِّضَاعِ کس چیز ہے رضاعت کاحق ادا ہوتا ہے؟

2300 - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ

عَنُ حَجّاج بن حَجّاج الله سُلَمِي عَنُ سيّدنا حجاج بن حجاج اللهي اين والديفال كرت بيل كه انہوں نے کہا: یا رسول اللہ! میری طرف سے رضاعت کا حق کس چیز سے ادا ہوگا؟ آ یا نے فرمایا: "غلام یا لونڈی

أَبِيْهِ أَنَّهُ قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا يُذُهِبُ عَنِّىُ مَذَمَّةَ الرَّضَاعِ قَالَ الْغُرَّةُ الْعَبُدُ أُوِ الْأُمَةُ . 9

فسوائد: (۱) رضاعت ایک بہت بڑا احسان ہوتا ہے اس کے بدلے کی فقط بیصورت ہے کہ رضای ماں پاباپ غلامی کی حالت میں ملیں توبندہ آئہیں خرید کر آزاد کردے (۲) اس سے آزادی کی قدرمعلوم ہوتی ہے کہ بیکس قدر بڑی نعمت ہے۔

❶ صحيح مسلم، كتاب الرضاع،باب التحريم بخمس رضعات(الحديث 3582)والترمذي، كتاب الرضاع،باب ماجاء لا تحرم المصة والمصتان(الحديث1150) وابن ماجه، كتاب النكاح، باب رضاع الكبير(الحديث1944)

[◙] صحيح: ابن حبان(4230-4231)وابوداؤد، كتباب المنكاح، بياب في الرضح عند الفصال (الحديث 2064) والنسائي، كتاب النكاح، باب حق الرضاع و حرمته (الحديث3329)

الكاح كتاب النكاح كالمنظمة المناح كالمناح كالم

[51].... بَاب شَهَادَةِ الْمَرُأَةِ الْوَاحِدَةِ عَلَى الرَّضَاعِ رضاعت پرایک عورت کی گواہی

2301 حَدَّثَنَا أَبُّو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ...

ابن الی ملیکہ کہتے ہیں مجھ سے ستدنا عقبہ بن حارث شاہذہ نے بان کیا پھر انہوں نے کہا: بیان نہیں کیا میں نے ان سے سنا وہ لوگوں سے بیان کررہے تھے،کہا'' کہ میں نے ابو وہاب کی بیٹی سے نکاح کیا تو ایک سیاہ لونڈی نے آ کر كها: "ديس نے تم دونوں كودودھ بلايا ہے۔" ميں نبي السَّيَا الله کے پاس گیا اور اس کا ذکر کیا آپ نے مجھ سے منہ پھیر لیا۔ ابو عاصم کہتے ہیں: عقبہ نے کہا: تیسری یا چوتھی دفعہ آب نے فرمایا: ''یہ کیسے ہوسکتا ہے۔ حالانکہ اس نے ایسا کہہ دیا ہے۔ اور آپ نے ان کوعورت کے ساتھ رہنے ہے منع کیا۔ابو عاصم کہتے ہیں: ''عمرو بن سعید بن ابوحسین نے ابن ابوملیہ سے صرف اتنا بی نقل کیا ہے: " یہ کسے ممکن ہے ٔ حالانکہ اس کے متعلق ایسا کہد دیا گیا۔ بینہیں کہا كه آب نے اسے اس عورت كتعلق سے منع كيا۔" ابومر کہتے ہیں: "ہمارے نزدیک بھی یہی مسکلہ ہے۔"

فوائد: (۱) رضاعت کے مسئلہ میں ایک عورت کی گواہی قابل قبول ہوگی یہی قول امام احمد رالیّنیه کا ہے جب کہ امام شافعی رائیّتیہ چارعورتوں اور ابوضیفہ رائیْتیہ دومردوں یا ایک مرد، دوعورتوں کی گواہی کو جت سجھتے ہیں ان کے دلائل ﴿ وَاسْتَشْهِدُو الشّهِیدَدَیْنِ مِنْ رِّجَالِکُمْ ﴾ (البقرہ: 282) مردوں میں سے دوگواہ بنالو۔ مذکورہ آیت ہے بیتکم عام جبدرضاعت کا مسئلہ اس سے خاص ہے اور مذکورہ حدیث اس کی خصوصیت پردال

[•] صحيح: ليكن يستدأضعف ب، ابن جرت كعنعن كى وجرس البخارى، كتباب العلم، باب الرحلة في المسألة النازلة وتعليم اهله (الحديث 88) وابوداؤد، كتباب الأقضية، باب الشهادة على الرضاع (الحديث 3603) والنسائى، كتاب النكاح، باب الشهادة في الرضاع (الحديث 3330)

الكاح كاب الدكاح (189 كتاب الدكاح كاب الدكاح (189 كتاب ال

ہے لہذا امام احمد بن حنبل رہی ہی افر ب الی الصواب ہے۔ (۲) حصول علم کے لیے سفر کرنا مسنون ہے (۳) اگر طالب علم کا سوال بے سرویا ہوتو استاذ اس سے اعراض کرسکتا ہے۔

[52] بَابِ فِی رَضَاعَةِ الْكَبِيُرِ بڑے آ دمی کی رضاعت کے لئے

2302- أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَشْعَثَ بْنِ سُلَيْمٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ

مَسْرُوْ**قِ**.....

سیدہ عائشہ ظافیہ کہتی ہیں کہ رسول اللہ مطفیقی ان کے پاس گئے اور وہاں ایک آ دمی تھا۔ آپ کا چہرہ متغیر ہوگیا۔
گویا کہ آپ نے اس بات کو براسمجھا میں نے کہا: ''میرا
رضای بھائی ہے۔'' آپ نے فرمایا:''دیکھا کرو کہ کون
لوگ تمہارے بھائی ہیں۔ کیونکہ رضاعت بھوک مٹنے ہے
ثابت ہوتی ہے۔''

فواند:رضاعت صرف چندگھونٹ دودھ چوسے سے نہیں بلکہ سیر ہوکر پینے سے ثابت ہوگی جوکہ جم کی نشوونما کاسب بے اور بیتھی ممکن ہے جب بچے نے بچینے میں سیر ہوکر پیا ہو کیونکہ بڑے کا اس سے سیر ہوناممکن نہیں اس لیے امام بخاری رائی یہ نے اس پر باب باندھا ہے" لار ضاع بعد حولین" دوسال کے بعد دودھ یینے سے رضاعت ثابت نہیں ہوتی۔

2303- أَخْبَرَنَا أَبُو الْيَمَانِ الْحَكَمُ بْنُ نَافِعِ أَنْبَأَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ

البوحد یفت میں اور کہتی ہیں کہ سہلہ است سہیل بن عمرو جو ابوحد یفہ بنت سہیل بن عمرو جو ابوحد یفہ بنت سہیل بن عمرو جو ابوحد یفہ اللہ مظام اللہ مظام اللہ علیہ اور کہا: ''سالم جو ابوحد یفہ کا آزاد کردہ غلام ہے ہمارے پاس آتا ہے اور میں پھٹے پرانے کیڑوں میں ہوتی ہوں ہم اسے بیٹا ہی سمجھتے ہیں۔ ابوحد یفہ نے اسے ہوتی ہوں ہم اسے بیٹا ہی سمجھتے ہیں۔ ابوحد یفہ نے اسے

عَنُ عَائِشَةَ قَالَتُ جَانَتُ سَهُلَةُ بِنُتُ سُهُلَةُ بِنُتُ سُهُيُ لِ بُنِ عَمُو وَكَانَتُ تَحُتَ أَبِى سُهَيُ لِ بُنِ عَمُو وَكَانَتُ تَحُتَ أَبِى حُدَدَيُ فَةَ بُنِ عُتُبَةً بُنِ رَبِيعَةً رَسُولَ اللهِ عَلَيْ فَعَدَي أَبِى اللهِ عَلَيْ فَعَدُلُ عَلَيْنَا وَأَنَا فُصُلُ وَإِنَّمَا حُذَي فَةَ يَدُخُلُ عَلَيْنَا وَأَنَا فُصُلُ وَإِنَّمَا

 [◘] مشفق عليه: البخاري، كتاب النكاح، باب من قال لارضاع بعد حولين (الحديث 5103) و مسلم، كتاب الرضاع، باب انما الرضاعة من المجاعة (الحديث 3591)

الكاح النكاح ١٩٥ المراجع النكاح ١٩٥ المراجع النكاح المراجع الم

لے پالک بنایا تھا۔ جس طرح نبی مطابع نے زیر کو لے پالک بنایا ، تو اللہ نے یہ آیت نازل کی: "مند ہولے بیٹوں کی نسبت ان کے باپو سے کرویہی اللہ کے نزدیک انصاف ہے۔ "(سورة الأحزاب: ۵)" پھر نبی مطابق نے سہلہ گو کھم دیا کہ سالم کے لئے خاص تھا۔ "
سلام کے لئے خاص تھا۔ "

نَرَاهُ وَلَدًا وَكَانَ أَبُو حُذَيْفَةَ تَبَنَّاهُ كَمَا تَبَنَّهُ وَلَدًا فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى الْمُعُ وَلَيْفَةً تَبَنَّاهُ كَمَا الْمُعُومُ مُو أَقُسَطُ عِنْدَ اللَّهِ فَا أَقُسَطُ عِنْدَ اللَّهِ فَا أَمْسَرَهَا النَّبِيِّ عَنْدَ ذَٰلِكَ أَنُ تُرُضِعَ سَالِمًا قَالَ أَبُو مُحَمَّد هَذَا لِلسَالِم خَاصَّةً . 0

فوافد: (۱)"فیضُل" کہتے ہیں کام کاج کے کپڑے پہنے ہونے کو(۲) منہ ہولے بیٹے کوہکی ان کے اصل نسب کے ساتھ ہی پکارا جائے گا (۳) جمہوراس بات کے قائل ہیں کہ رضاعت فقط دو سال سے قبل ثابت ہوگی۔ جبکہ ابوصنیفہ رطیبیہ اڑھائی سال کی مدت بتاتے ہیں جبکہ سالم کی حدیث کویہ خاص قرار دیتے ہیں دوسرا موقف عائشہ وظائیما کا ہے جو کہتی ہیں بالغ کی رضاعت بھی ای طرح ثابت ہوگی جس طرح نبج کی ہوتی ہے ان کی دلیل ندکورہ حدیث ہے اور تیسرا موقف جو کہ امام ابن تیمیہ رطیبیہ وابن قیم رطیبیہ وغیرہ کا ہے اور یہی درست بھی ہے۔ تیسرا مسلک ہیہ ہے کہ حدیث سہلہ وٹائیر منسوخ نہیں اور نہ ہی مخصوص ہے اور نہ ہی موارد ہوگی درایا ہونا لازم ہے اور باربار پردہ مشقت کا سبب بنتا ہے جس طرح سالم کا مسله تھا الی حالت میں رضاعت کیر بھی مؤثر ہوگی اس سے ہٹ کرصرف رضاعت صغیر ہی اثر انداز ہوگی (زادالمعاد)

[53].... بَابِ فِي النَّهُي عَنِ التَّحُلِيلِ طلالہ کرنے کی ممانعت

2304 أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيْ قَيْسٍ عَنِ الْهُزَيْلِ

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ سيّدنا عبدالله فِاللَّهُ كَتِمْ مِي كدرمول الله عَنْ الله عَلَيْنَا عنه الله فَاللَّهُ عَلَيْهُ عَنْ عَبُدِ اللهِ عَلَيْهُ عَنْ عَبِدالله فَاللَّهُ عَلَيْهُ عَنْ كَامِد اللَّهُ عَلَيْهُ عَنْ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَنْ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَل

فوائد: (۱) بعض نسخوں میں "السمحلّل" كالفظ آيا ہے دونوں كامعنى ايك ہى ہے (۲) معلوم

[•] متفق عليه: البخارى، كتاب المنكاح، باب الأكفاء (الحديث 5088) ومسلم، كتاب الرضاع، باب رضاعة الكبير (3585) رضاعته كيركم مئله مين تيميه كامسلك قابل توجه محسول بوتا به كمضرورت اشد بوتو بيرصديث قابل عمل ورزيس - (3585) رضاعته كيركم مئله من التمام، باب ما حاء في المحل ولمحلل له (الحديث 1120) والنسائي، كتاب الطلاق، باب احلال المطلقة ثلاثا ومافيه من التغليظ (3416)

المحال المرنے والا اور کرانے والا دونوں لعنتی جیں ۔صاحب بل الساؤم کہتے ہیں: "السحدیث دلیل علی ہواطالہ کرنے والا اور کرانے والا دونوں لعنتی جیں ۔صاحب بل الساؤم کہتے ہیں: "السحدیث دلیل علی تسحویم التحلیل لانه لایکون اللعن الا علی فاعل المحرم. " حدیث طالہ کے حرام ہونے پر دلیل ہے۔ کیونکہ لعنت حرام کے مرتکب پر ہی ہوسکتی ہے اور عمر ڈوائٹوز فر ماتے ہیں میرے پاس اگر محلل اور محلل لہ کولا یاجائے تو ہیں ان دونوں کورجم کردوں (ان ابی شیبہ) امام ما لک، احمد، وکیع ،سفیان ربیطتہ سبجی کے نزد یک یہ نکاح فاسد ہوگا اگر محلل کی نیت بدل جائے اور وہ عورت کور کھنے کا ارادہ کر لے تو اسے دوبارہ نکاح کرنا پڑے گا جبکہ اصحاب رائے احناف کے نزدیک نکاح ہوجائے گا اگر چہ وہ مکروہ ہوگا۔ تفصیل کے لیے ویکھیے بہر حال کی طرح مدیث اور ائم ومحد ثین کے موقف کو مدنظر رکھ کر یہی بات رائج معلوم ہوتی ہے کہ یہ نکاح باطل ہوگا اور ایبا کرنے والے ملعون ہول عے اور یہ عورت پہلے خاوند کے لیے حال نہیں ہوگی ۔واللہ اعلم ۔ کتب فقہ فی ماضی قریب کے حتی عالم اور لا ہور جامعہ قاسمیہ حنفیہ کے رئیس علامہ عبد الحليم قاسمی واللہ اور بریا ویہ ہوگا۔ تو میں طلاقیں صرف ایک ہی واقع والم پیر کرم شاہ از ہری رائیٹیہ حلالہ کو بے غیرتی قرار دیے ہیں اور ایک مجلس کی تین طلاقیں صرف ایک ہی واقع ہوئے کے قائل ہیں۔

[54] بَابِ فِي وُجُوبِ نَفَقَةِ الرَّجُلِ عَلَى أَهُلِهِ آدمی پرایۓ اہل کا نفقہ فرض ہے

2305- أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن أَنْبَأَنَا هِشَامُ بْنُ عُوْوَةَ عَنْ أَبِيهِ

سیّده عائشہ رفایتها کہتی ہیں معاویہ کی ماں ابوسفیان کی ہیں ہوی ہند رسول اللہ مطاقیہ کے پاس آئی اس نے کہا:

"پارسول اللہ! ابوسفیان کنجوں آ دی ہے۔ وہ مجھے اتنا خرچ نہیں دیتا جو مجھے اور میرے بیٹوں کو کافی ہو البتہ میں لاعلمی میں اس کی جیب سے نکال لیتی ہوں کیا مجھے اس کا گناہ ہوگا۔ آپ نے فرمایا: "دستور کے مطابق اتنا لوجو تمہیں اور تہاری اولاد کو کافی ہو۔"

أَبِسَى سُفُيَسَانَ أَتَستُ رَسُولَ اللّهِ عِثَمَّ فَقَالَتُ يَا رَسُولَ اللّهِ إِنَّ أَبَّا سُفُيَانَ رَجُلٌ شَحِيُحٌ وَإِنَّهُ لَا يُعُطِينِى مَا يَكُفِينِى وَبَنِى إِلَّا مَا أَحَدُتُ مِنْهُ وَهُو لَا يَعُلَمُ فَهَلُ عَلَى فِى ذٰلِكَ جُنَاحٌ فَقَالَ حُسذِى مَسَا يَسكُ فِيلُكِ وَوَلَدَكِ

عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ هنسُدًا أُمَّ مُعَاوِيَةَ امُرَأَةَ

بِالْمَعُرُوفِ. 9

 [♣] متـفـق عليه: البخارى، كتاب النفقات، باب اذا لم ينفق الرجل للمرأة أن تأخذ بغير علمه مايكفيها وولد ها بالمعروف (الحديث5334) مسلم، كتاب الأقضية، باب قضية الهند(4452)

الكاح النكاح الكاح الكام الكام الكام الكام

فوائد: گھر کاخرچہ بیخاوند کے ذمے ہے کہ وہ اپنا اورایے بیوی بچوں کے کھانے بینے کا ان کی ضروریات کاخیال رکھے۔اگر وہ اینے اس فریضے میں کوتا ہی کامرتکب ہوتا ہے توبیوی کواجازت ہے کہوہ بقدر ضرورت اس کے مال سے جیکے سے لے عتی ہے مگر صرف بقدر ضرورت۔

[55].... بَابِ فِي حُسُن مُعَاشَرَةِ النِّسَاءِ عورتوں سے احیما سلوک کرنا

2306 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ هشَام بْن عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ تَسِيده عَاتَشْهِ وَاللَّهِ عَالَ مِن كَدرسول الله عَلَيْنَ نَ فرمايا: خَيْسُونُكُمْ خَيْسُوكُمْ لِأَهْلِهِ وَإِذَا مَاتَ " "تم میں سے بہتر وہ ہے جو اپنی بیوی کے ساتھ بہتر ہو۔اور جب تمہارا کوئی ساتھی فوت ہو جائے تو اسے چھوڑ دو(لعِنیای کی برائی نه کرو)۔"

صَاحِبُكُمْ فَدَعُوهُ ٥٠٠٠

فوائد: (۱) عورت کو یاؤں کی جوتی سیجھنے والے نہ صرف غلطی پر ہیں بلکہ انتہائی خسارے میں ہیں کہ وہ خیریت جیسے بہترین وصف سے محروم ہیں ہیوی سے بہترین سلوک جہاں گھر کی خوشیاں لوٹاسکتا ہے وہیں آخرت کی خوشبوؤں کے حصول کابھی آسان ذریعہ ہے (۲) فوت ہوجانے والے کے عیب ٹو لنے سے ير ميز كرنا جاسي البته بطور عبرت بيان كرنے ميں كوئى حرج نہيں -

> [56] بَابِ فِي تَزُوِيجِ الصِّغَارِ إِذَا زَوَّجَهُنَّ آبَاؤُهُنَّ صغرسنی میں والدین کالڑ کیوں کا نکاح کردینا

2307 أَخْبَرَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ خَلِيلِ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرِ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتُ تَزَوَّ جَنِي رَسُولُ سَيْده عائشة وَلَيْعِهَا كَبْتَى جِي كدرسول الله مِنْ اللهِ عَلَيْنَ نَ مجم الله على وَأَنَا بِنْتُ سِتِ سِنِينَ فَقَدِمْنَا عَ ثَكَاحَ كِيا اور ميرى عَرْجِه برس ملى - اور بم مدينم من آئے ہم بنو حارث بن خزرج میں اترے۔ مجھے بخار ہوگیا اور میرے سرکے بال اتر گئے۔ پھر کندھوں تک پہنچ گئے۔ ام رومانٌ میرے باس آئیں میں جھولے میں تھی میری سہلیاں میرے یاس تھیں۔ انہوں نے مجھے بلایا تو میں

الُـمَـدِينَةَ فَنَـزَلْنَا فِيُ بَنِي الْحَارِثِ بُنِ الُخَـزُرَجِ فَوُعِكُتُ فَتَمَرَّقَ رَأْسِي فَأَوْفٰي جُمَيْمَةً فَأَتَنِي أُمُّ رُوۡمَانَ وَإِنِّي لَفِي أُرُجُوحَةٍ وَمَعِي صَوَاحِبَاتٌ لِي

الكاح كاب النكاح (193 من كتاب النكاح)

ان کے پاس گی میں نہیں جاتی تھی ان کا کیا ارادہ ہے؟
انہوں نے میرا ہاتھ پکڑ کر مجھے گھر کے دروازے پر کھڑا کر
دیا میں ہانپ رہی تھی۔ پھر میری طبیعت پچھ سنبھلی تو انہوں
نے پانی سے میرا چہرہ اور میرا سرصاف کیا۔ پھر مجھے گھر
لے گئیں میں نے دیکھا کہ ایک گھر میں انسار کی چند
عورتیں ہیں انہوں نے کہا: ''مھلائی' عزت اور برکت
نصیب ہو۔'' ام رومان ؓ نے مجھے ان کے سپرد کر دیا۔ انہوں
نے میرا بناؤ سنگھار کیا۔ میں چاشت کے وقت رسول
اللہ میں تی انہوں کی مام رومان ؓ نے مجھے آپ کے سپرد
کردیا۔اور میں اس دن نو برس کی تھی۔''

فَه صَرَحَتُ بِى فَأَتُدُتُهَا وَمَا أَدْرِى مَا تُرِيدُ لُهُ فَأَحَدُتُ بِيَدِى حَتَى أَوْقَفَتُنِى عَلَى بَسَابِ الدَّارِ وَإِنِّى لَأَنْهُجُ حَتَّى عَلَى بَسَابِ الدَّارِ وَإِنِّى لَأَنْهُجُ حَتَّى سَكَنَ بَعُضُ نَفَسِى ثُمَّ أَحَدَتُ شَيْئًا مِنُ مَاءٍ فَمَسَحَتُ بِهِ وَجُهِى وَرَأْسِى ثُمَّ أَدْحَلَتُنِى الدَّارَ فَإِذَا نِسُوةٌ مِنَ الْأَنْصَارِ فَى الْبَيْتِ فَقُلُنَ عَلَى الْحَيْرِ وَالْبَرَكَةِ فِى الْبَيْتِ فَقُلُنَ عَلَى الْحَيْرِ وَالْبَرَكَةِ وَعَلَى حَيْرٍ طَائِرٍ فَأَسُلَمَتُنِى إِلَيْهِنَ وَعَلَى عَلَى الْحَيْرِ وَالْبَرَكَةِ وَعَلَى حَيْرٍ طَائِرٍ فَأَسُلَمَتُنِى إِلَيْهِنَ وَعَلَى عَلَى الْحَيْرِ وَالْبَرَكَةِ وَعَلَى عَلَى الْحَيْرِ وَالْبَرَكَةِ وَعَلَى حَيْرٍ طَائِرٍ فَأَسُلَمَتُنِى إِلَيْهِ وَعَلَى الْمَعْرَدِي وَالْبَرَكَةِ فَلَمُ يَرُعُنِى إِلَيْهِ فَلَمُ يَرُعُنِى إِلَيْهِ وَسُولُ اللّٰهِ عِلَى الْمُعَدِى فَأَسُلَمَتُنِى إِلَيْهِ وَسُولُ اللّٰهِ عَلَى الْمَعْرِي وَالْمُعَرِي وَالْمَالِمَتُنِى إِلَيْهِ وَسُولُ اللّٰهِ عَلَى الْمُعْرِي وَالْمُعَرِي وَالْمُعَلَى الْمُعَلَى الْمَعْرَدِي وَالْمُولُ اللّٰهِ عَلَى الْمُعَلَى الْمُعْرَدِي وَالْمُعَلَى الْمُعَلِي اللّهِ عَلَى الْمُعَلَى الْمُعَلَى الْمُعَلَى الْمَعَلَى الْمُعَلَى اللّهُ عَلَى الْمُعَلَى الْمُعَلَى الْمُعَلَى الْمُ عَلَى الْمُعَلَى الْمُعَلَى الْمُعْرَدِي اللّهِ عَلَى الْمُعْرَدِي اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ الْمُعَلّى الْمُعْمَالُولُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ الل

وَأَنَا يَوُمَثِذِ بِنُتُ تِسُعِ سِنِينَ . •

فوائد: عائشہ وَفَاتُهَا كا آپ مِنْظَامَةًا كَا مَ يَجْطَانَ كَا وَ الطلاق : 4) اوروہ جنہیں جیف نہیں آیا۔مراد بالغ نہیں ہوئیں ان كی عدت تین ماہ ہے جبیبا كہ آیت میں فدکورہان ادلّہ سے واضح ہوتا ہے كہ والدانى نابالغ اولا دكا نكاح كرسكتا ہے۔مہلب رہینیہ اس پراجماع بیان كرتے ہیں۔(فتح الباری)

[•] متفق عليه: البخارى، كتاب مناقب الأنصار، باب تزويج النبي الله عائشة وقدومها المدينة (الحديث 3896) ومسلم، كتاب النكاح، باب تزويج الأب البكر الصغيرة (الحديث 3464)



١٢ ومن كتاب الطلاق

طلاق کے بیان میں

"طللاق" یہ اِطلاق ہے مشتق ہے جس کا مطلب جھوڑ دینا ہے۔اصطلاحی طور پرطلاق نکاح کی گرہ کھول دینے کو کہتے ہیں امام الحرمین کے مطابق جاہلیت میں بھی اس کے لیے لفظ طلاق مستعمل تھا جسے شریعت نے باتی رکھا۔ (الفتح)

شریعت میں طلاق وہی معتبر ہے جوہوش وحواس کے قیام کے ساتھ برضادی جائے ۔ ابن عباس وظافتہ فرماتے ہیں: "طلاق السکر ان والمستکرہ لیس بجائز . " (بخاری) نشہ والے اور مجبور کی طلاق جائز نہیں ۔ امام مالک ، شافعی ، احمد رہنے اس کے قائل ہیں ۔

[1] بَابِ السُّنَّةِ فِي الطَّلاقِ طلاق كا شرى طريقه

2308- أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ

عَنُ نَافِعِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ طَلَّقَ امُرَأَتَهُ وَهِي حَائِضٌ فَذَكُرَ ذَٰلِكَ عُمَرُ لِلْنَبِي عِلَيُّ فَقَالَ مُرُهُ أَنُ يُرَاجِعَهَا وَيُمُسِكَهَا حَتَّى تَطُهُرَ ثُمَّ تَحِيْضَ ثُمَّ تَطُهُرَ ثُمَّ إِنُ شَاءَ أَمُسَلَثَ وَإِنْ شَاءَ طَلَّقَ قَبُلَ أَنُ يَمَسَّ فَتِلُكَ الْعِلَّةُ الَّتِي أَمَرَ اللَّهُ أَنْ يُطَلَّقَ لَهَا النِّسَاءُ.

سیّدنا نافع کہتے ہیں کہ ابن عمر رہائی نے اپنی بیوی کوحض کی حالت میں طلاق دی۔ انہوں نے نبی میٹی ہے اس بات کا ذکر کیا تو آپ نے فرمایا: ''اسے حکم دؤوہ اس سے رجوع کرے۔ اور اسے پاک ہونے تک اپنے پاس رکھے۔ پھر اسے حیض آئے پھر پاک ہو۔ اس کے بعد اگر چاہتو روک لے اگر چاہتو صحبت سے پہلے اسے طلاق دے دے۔ یہی وہ عدت ہے۔ جس میں عورتوں کو طلاق دینے کا اللہ نے حکم دیا ہے۔''

الكاليمين الكاليمين الكاليمين (195) المحاول
فوائد: (۱) حالت حیض میں طلاق ممنوع ہے اور اسے طلاق بدی کہاجاتا ہے (۲) الیم حالت میں دی گئی طلاق سے رجوع کرنالازم ہے (۳) طلاق بدی واقع ہوجائے گی جیسا کہ "مُسر ہُ ان یُر اجعَها" کے الفاظ سے واضح ہے کیونکہ مراجعت ،رجوع طلاق کے وقوع کے بعد ہی ہوتا ہے۔ جمہور اور ائمہ اربعہ ای کے قائل ہیں (نیل الاوطار) نیز ابن عمر فراقے ہیں: "حسبت علی بتطلیقة . " (بخاری) یہ میری ایک طلاق شاری کی گئی ہے (۲) حیض میں دی گئی طلاق سے رجوع کے بعد آئندہ کی بجائے اس سے اگلے طہر میں طلاق دی حائے گی۔

2309 أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بُنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ

سیّدنا سالم ابن عمر فالنَّیْ سے نقل کرتے ہیں کہ جب ابن عمر فلانی نے اپنی میر فلانی نے اپنی میں کہ جب ابن عمر فلانی نے اپنی میں کو طلاق دی تو عمر فلانی نے ابن سے رجوع سے ذکر کیا آپ نے فرمایا اس سے کہو: 'اس سے رجوع کرے پھر اسے طلاق دے جب کہ وہ پاک ہو۔' ابو محمد کہتے ہیں: ''ابن مبارک اور وکیج نے اس حدیث میں اتنا اور اضافہ کہا ہے: ''یا حاملہ ہو۔''

سَالِمًا يَذُكُرُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ عُمَرَ قَالَ لِلنَّبِيِ عَلَى الْمُنَاتَةُ لِلنَّبِي عَلَى الْمُواتَّةُ فَلَيْرَاجِعُهَا ثُمَّ لِيُطَلِّقُهَا وَهِي طَاهِرٌ قَالَ أَبُو مُحَمَّد رَوَاهُ الْمُن الْمُبَارَكِ وَوَكِيعٌ أَوْ حَامِلٌ . • الْمُبَارَكِ وَوَكِيعٌ أَوْ حَامِلٌ . • •

فوائد: (۱) اس روایت میں ایک طهر چھوڑ کرا گلے طهر کی قینہیں بلکہ عموم ہے اس طرح ایک روایت میں ہے "ثم یطلقها طاهر او حاملا" پھراسے طهر یا جمل کی حالت میں طلاق دے دے۔ اس سے بعض علاء لیتے ہیں کہ چیف سے اگلے طهر میں ہی طلاق دی جاسکتی ہے بہر حال اول الذکر بات کہ ایک طهر چھوڑ کرا گلے میں طلاق دی جائے ہے جیمین کی روایت میں زیادہ ہے اور (زیادہ ثقہ مقبولہ) کے تحت اسے قبول کیا جائے گا اوراسے ہی ترجیح حاصل ہوگی نیز اگر ٹانی الذکر پر بھی عمل کیا جائے تو درست ہے۔ (واللہ اعلم) کیا جائے گا اوراسے ہی ترجیح حاصل ہوگی نیز اگر ٹانی الذکر پر بھی عمل کیا جائے تو درست ہے۔ (واللہ اعلم) کے نظامی مواکہ حالت جمل میں دی گئی طلاق ،طلاق میں ان کے لفظ سے معلوم ہوا کہ حالت جمل میں دی گئی طلاق ،طلاق میں کرنا

2310 - حَدَّثَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ خَلِيلِ وَإِسْمَعِيلُ بْنُ أَبَانَ قَالَا حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ

 [◘] متـ فـ ق عليه: البخارى، كتاب الطلاق، باب قول الله تعالى (يايها النبي إذ طلقتم) (الحديث 5251) ومسلم، كتاب الطلاق، باب تحريم الطلاق الحائض بغير رضاها (الحديث 3637)

الطلاق ١٩٥ كور كتاب الطلاق ١٩٥ كتاب الطلاق

صَالِح بْنِ صَالِح عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ

عَنُ عُمَرَ قَالَ طَلَقَ رَسُولُ اللهِ ﷺ سيّدنا عمر فَاتَّةُ كَتِمَ مِين كدرسول الله عَيَّا في خصة كو حَفُصَة ثُمَّةَ وَاجَعَهَا . ٥ طلاق وى پُعراس سے رجوع كيا-

فوائد: (۱) بہلی اور دوسری طلاق کے بعد آدمی کواپنی بیوی سے رجوع کاحق حاصل ہے قرآن میں ہے ﴿الطّلاقُ مَرَّتٰنِ فَامُسَاكٌ بِمَعُرُوفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌ بِاحْسَانٍ ﴾ (البقرة: 229) طلاق دومرتبہ ہیں ہے پھریا تواچھائی کے ساتھ روک لینا ہے یاا چھے طریقے کے ساتھ چھوڑ دینا ہے۔ (۲) کس ایک مقام پر حدیث کامروی ہونا اور دوسری جگہ پر نہ ہونا اس کا حدیث کی صحت سے کوئی تعلق نہیں ۔ لہذا فدکورہ علت حدیث کے ضعف کاسید نہیں۔

2311- أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ هُشَيْمٍ عَنْ حُمَيْدٍ

سیّدنا انس وَالله کہتے ہیں کہ نبی مِنْ اَلله نے حفصہ کوطلاق دی پھراس سے رجوع کیا۔ ابومحمد کہتے ہیں: علی بن مدین نے اس حدیث کا انکار کیا اور کہا: ہمارے پاس سے حدیث بھرہ میں حمید سے منقول نہیں ہوئی۔'' عَنُ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِى عَلَى طَلَق حَفُصَة ثُمَّ رَاجَعَهَا قَالَ أَبُو مُحَمَّد كَانَ عَلِيٌّ بُنُ الْمَدِينِي أَنُكَرَ هَذَا الْحَدِيثَ وَقَالَ النَّمَدِينِي أَنْكَرَ هَذَا الْحَدِيثَ وَقَالَ لَيُسَ عِنْدَنَا هَذَا الْحَدِيثُ بِالْبُصُرَةِ عَنُ لَيْسَ عِنْدَنَا هَذَا الْحَدِيثُ بِالْبُصُرَةِ عَنُ

حُمَيْدِ . ٥

[3] بَاب لَا طَلَاقَ قَبُلَ نِكَاحٍ نكاح سے يہلے طلاق نہ ہونے كا بيان

2312 - أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بُنُ مُوْسَى حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ دَاوُدَ حَدَّثَنِى الزُّهْرِئُ عَنْ أَبِىْ بَكْرِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ جَدِّهِ

قَالَ الْحَكَمُ قَالَ لِي يَحْيَى بُنُ حَمُّزَةً تَحَمَّمَ اللهِ عَلَيْ يَكُم يَكُم بِينَ كَمَ يَكُم بِينَ كَم أَفُصِ لُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَلَيْ كَتَبَ إِلَى الْجَيْ طرح ياد ہے رسول الله مِنْ اللهِ عَلَيْ نَ الله يَكَ أَهُلِ الْيَمَنِ أَنْ لَا يَمَسَّ الْقُرُ آنَ إِلَّا طَاهِرٌ قُر آن كو وہى ہاتھ لگائے جو پاک ہو۔ اور نكاح سے پہلے

❶ صحيح: ابن حباك (4275) ابو داؤد، كتاب الطلاق، باب في المراجعة (2283) و ابن ماجه، كتاب الطلاق، باب حدثنا سويد بن سعيد (2016)

ر مرب میں ہے۔ ورب سیسے : اخر جه الحاکم 197/2 وقبال علی شرط الشیخین امام ذہبی گئے بھی ان کی موافقت کی ہے اور واقعی ہے بھی سیخ معالم جہ

197 كتاب الطلاق ك الكانتين الكانتين

طلاق نہیں اورخریداری سے پہلے آ زاد کرنانہیں ہے۔ابو محم وَلَا طَلَاقَ قَبُلَ إِمُلَاكٍ وَلَا عَتَاقَ حَتَّى سے سلیمان کے بارے میں سوال گیا تو انہوں نے کہا: يَبُتَاعَ . سُئِلَ أَبُومُ حَمَّدٍ عَنُ سُلَيْمَانُ "ميراخيال ہے وہ عمر بن عبدالعزيز كي كتاب سے لكھنے والا قَالَ: أَحُسَبَهُ كَاتِبًا مِنْ كُتَّابِ عُمَرَ بُن عَبُدِ الْعَزِيزِ . ٥

فوائد: بیرهدیث اگرچه یابی ثبوت کوئیس بہنچتی بہر حال صحیح حدیث بیر بات ثابت شدہ ہے کہ شادى سے يہلے طلاق معترنييں -آب طفي الله في الله في الله الله السط الله في المن أخَذَ بالسَّاق. "حن ارواء الغليل) طلاق صرف ايسے بندے كاحق بجس نے ينڈلى كونچر ركھا ہے۔ مراد نكاح كيا ہوا ہو۔ [4] بَابِ مَا يُحِلُّ الْمَرُأَةَ لِزَوْجِهَا الَّذِي طَلَّقَهَا فَبَتَّ طَلاقَهَا تین طلاقیں دینے والے شوہر کے لئے بیوی کیسے حلال ہوتی ہے؟

2313 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ سَمِعْتُ عُرُوَةَ بْنَ

سيّده عائشه وظافوا كهتي بين كه رفاعه قرظي وظافيهُ كي بيوي رسول الله ﷺ کے یاس آئی اور آپ کے یاس ابو بکر زخالٹیک تھے۔ اور خالد بن سعید بن عاص کے دروازے پر انظار کر رے تھے کہ انہیں رسول الله مطابق کے یاس جانے کی اجازت دی جائے۔اس عورت نے کہا:" ایارسول اللہ! میں رفاعہ کے پاس تھی اس نے مجھے مین طلاقیں دیں۔آپ نے فرمایا: ''کیا تو رفاعہ سے رجوع کرنا جا ہتی ہے؟ سنہیں ہوسکتاحتی کہ وہ تجھ سے محبت کرے اور تو اس سے محبت كرے۔ تو خالد بن سعيد نے ابوبكر كو آواز دى كه آب و کھتے نہیں کہ بیعورت رسول اللہ کے باس کسی باتیں کر

عَنُ عَائِشَةَ قَالَتُ جَائَتُ امْرَأَةُ رِفَاعَةَ الُقُرَظِيِّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَعِنْدَهُ أَبُو بَكُو وَخَالِدُ بُنُ سَعِيدِ بُنِ الْعَاص عَلَى الْبَابِ يَنْتَظِرُ أَنُ يُؤُذَنَ لَهُ عَلَى رَسُول اللَّهِ عِنْ فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي كُنُتُ عِنُدَ رِفَاعَةَ فَطَلَّقَنِي فَبَتَّ طَلَاقِي . قَالَ أَتُريُدِينَ أَنُ تَرُجِعِي إِلَى رفَاعَةَ لا ، حَتَّى يَذُونَ عُسَيُلَتَكِ وَتَلُوقِي عُسَيلَتَهُ فَنَاذى خَالِدُ بُنُ سَعِيدٍ أَبَا بَكُو أَلا تَرَى مَا تَجُهَرُ بِهِ هَذِهِ عِنُدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ . 🗗

رہی ہے؟

¹ ضعيف : صحيح ابن حباك (6559) وموارد الظمآك (793)

② متفق عليه : البخاري، كتاب الشهادات،باب الشهادة المختبئ(الحديث 2639)ومسلم، كتاب النكاح،باب لا تحل المطلقة ثلاثًا لمطلقها حتى تنكح زوجًا(الحديث3512)

حكل سَيْنَالْكَالِيْنَ الْكَالِيْنَ 198 السَّلُولُ كتاب الطلاق الله

ف انته: تین طلاقوں ، یعنی طلاق بتہ کے بعد رجوع کاحق ختم ہوگیا اب اس خاوند سے دوبارہ ملاب کے لیے اس کی صورت یہ ہے کہ عورت کسی دوسر شخص سے شادی کرے یہ نکاح صحیح شرعی اصولوں کے مطابق ہو پھر ان کی آپس کی نا جاتی یا کسی وجہ سے طلاق ہوجائے یا یہ دوسرا شوہر فوت ہوجائے اب اس عورت کوجائز ہے کہ پہلے خاوند کی طرف لوٹ جائے بشرطیکہ دوسرے خاوندسے اس کے تعلقات قائم ہوں جیسے کہ حدیث میں "لا حتی یذوق عَسَیْلَتَكِ"حتی كه وه تیراشهد چكھ لے نیزبعض حفی وبریلوی حضرات نے اپنے اداروں میں حلالہ سنٹرینار کھے ہیں۔ جوبے غیرتی کانا درنمونہ ہیں۔

2314 حَدَّثَنَا فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ حَدَّثَنَا عَلِيًّ بْنُ مُسْهِر عَنْ هِشَام بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ

عَنْ عَانِشَةً قَالَتُ طَلَّقَ رِفَاعَةُ رَجُلٌ مِن سيّده عائشه وَاللَّهِ اللّهِ عَنْ عَانِشَة وَاللّهِ كا آدى بَنِنِي قُبُويُنظَةَ امْرِ أَتَكُ فَتَزَوَّ جَهَا عَبُدُ ﴿ إِينَ بِيوِي كُوطِلاقِ دِي اوراسِ سے عبدالرحمٰن بن زبير نے نکاح کیا وہ رسول اللہ منظم کیا کے پاس آئی اس نے کہا: اے اللہ کے رسول ﷺ ! اللہ کی قتم! وہ تو میرے اس کیڑے کی جھالی کی مانند ہے۔ رسول اللہ منظیمین نے اس ے فرمایا: "شایدتو رفاعہ سے رجوع کرنا جاہتی ہے؟ مگر اسانہیں ہوسکتاحتی کہ تو اس سے صحبت کرے۔''

الرَّحُمَن بُنُ الزُّبَيُر فَلَخَلَثُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ عِنْكُ فَقَالَتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَاللَّهِ إِنْ مَعَهُ إِلَّا مِثْلُ هُدُبَتِي هَذِهِ . فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ عِنْ لَعَلَّكِ تُريدِينَ أَنَّ تَسرُجعِي إِلَى رفَاعَةَ لَا حَتَّى يَذُوقَ عُسَيْلَتِكُ أَوُ قَالَ تَذُو قَيْ عُسَيْلَتَهُ. ٥

[5].... بَابِ فِي الْخِيَارِ عورت کواختیار دینے کا بیان

2315 ـ أَخْبَرَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ أَبِيْ خَالِدٍ عَنِ الشَّعْبِيّ...

عَنُ مَسُرُوقَ قَالَ سَأَلُتُ عَائِشَةَ عَن سَيْدِنَا مَرُونَ وَلَيْنَا كَتِ بِينَ مِن فَي سَيْدِه عَالَشَهُ وَلَا ثُمَا ے اختیار کے متعلق تو چھا انہوں نے کہا: ہمیں رسول الله ﷺ نے اختیار دیا۔ کیاوہ طلاق کا اختیار تھا؟

الُخِيَهُ وَ فَقَالَتُ قَدُ خَيَّرَ نَا رَسُولُ الله عَلَيْ أَفَكَانَ طَلاقًا . ٥

O متفق عليه: سابقة تخ تني بي بي ب

②مشفق عليه: البخاري،كتاب الطلاق،باب من خيرا زواجه (الحديث 5263)ومسلم،كتاب الطلاق،باب بيان أ تخيير امرُته لا يكون طلاقا الا بالنية (الحديث3629)

الكالمنوني الكالمنوني المعلاق ١٩٩ المولال كتاب الطلاق ١٩٩

فوائد: اگرشو بر بیوی کوساتھ رہنے یا علیحدہ ہونے کا اختیار دے دے تو اس کوطلا قنہیں سمجھا جائے گاالا بیکہ اس کی نیت ہو۔ جیسا کہ سلم اس کے لیے باب باندھتے ہیں "بیان ان تخییر امراته لا یکون طلاقا الا بالنیّة" اس چیز کابیان کہ اپنی بیوی کواختیار دینا طلاق نہیں ہوتی الا کہ مردنیت کرے۔

[6] بَاب النَّهُي عَنُ أَنْ تَسُأَلَ الْمَرْأَةُ زُوْجَهَا طَلاقَهَا عورت کا اینے شو ہر سے طلاق مانگنے کی ممانعت

2316 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بُنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِيْ قِلَابَةَ عَنْ أَبِي

سیّدنا ثوبان والنفو کہتے ہیں رسول الله مصفیّق نے فرمایا:'' جو عورت کسی تکلیف کے بغیر اپنے شوہر سے طلاق مانگے اس یر جنت کی خوشبوحرام ہے۔''

فواند: (۱) خاندان اسلام کی ایک بنیادی اکائی ہے اس کی تخریب اسلام کی ممارت پرایک کاری ضرب ہے اس لیے خاندانی نظام کو تباہی ہے بچانے کے لیے اسلام نے انتہائی سخت قوانین وضع کیے ہیں جو کہ اس کی اہمیت پردال ہیں (۲) بلاوجہ عورت کا پنے خاوند سے طلاق مانگنا حرام ہے کیوں کہ جہنم کی وعید کسی صغیرہ گناہ پرنہیں دی جاتی (۳) اگرکوئی سبب ہواور گزران مشکل ہو جائے تو عورت کے لیے طلاق کا مطالبہ جائز ودرست ہے۔

[7].... بَاب فِی الُخُلُعِ خلع کابیان

2317 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا يَحْيَى هُوَ ابْنُ سَعِيْدٍ

 أَنَّ عَمْرَةَ أَخْبَرَتُهُ أَنَّ حَبِيبَةَ بِنُتَ سَهُلٍ تَزَوَّجَهَا ثَابِتُ بُنُ قَيْسِ بُنِ شَمَّاسٍ فَذَكَرَتُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ هَمَّ أَنْ يَتَزَوَّجَهَا وَكَانَتُ جَارَةً لَهُ وَأَنَّ ثَابِتًا

❶ صحيح ابن حبان (4184)وابوداؤد، كتاب الطلاق، باب الخلع (الحديث 2226)وابن ماحه، كتاب الطلاق، باب
 كراهية الخلع للمرأة (الحديث 2055)

200 کیاب الطلاق کیاب الطلاق الكانتين الكانتين

کے وقت اندهیرے ہی میں رسول الله مطابق کے یاس عنى _ اور رسول الله الشيئة باجر فكك اور ايك آ دمى كو ديكها آپ نے فرمایا: بدکون ہے؟ اس نے کہا: میں حبیبہ بنت سہل ہوں ،آپ نے فرمایا: کیا کام ہے؟ اس نے کہا: نہ میں ثابت کے پاس رہ سکتی ہوں اور نہ وہ میرے پاس رہ سکتے ہیں۔ ثابت رسول الله مطاقات کے باس سے تو آپ نے اس سے فرمایا: ''اس سے پچھ لے لو اور اسے چھوڑ دو'' حبيبة نے كها: يا رسول الله! جو يجھاس نے مجھے ديا تھا وہ سب کچھ میرے پاس موجود ہے ثابت نے اس سے لے لیا اور وہ اینے گھر چلی گئی۔

ضَرَبَهَا فَأَصْبَحَتُ عَلَى بَابِ رَسُول اللُّهِ عِلَيْ فِي الْعَلْسِ وَأَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِنْ خَرَجَ فَرَأَى إِنْسَانًا فَقَالَ مَنُ هَـذَا قَـالَـتُ أَنَا حَبِيبَةُ بِنُتُ سَهُلِ فَقَالَ مَا شَأْنُكِ قَالَتُ لَا أَنَا وَلَا ثَابِتٌ . فَأَتَى ثَابِتٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ خُذُ مِنْهَا وَخَلَّ سَبِيْلَهَا فَقَالَتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ عِنُدِى كُلُّ شَيْءٍ أَعُطَانِيُهِ فَأَخَذَ مِنْهَا وَقَعَدَتُ عِنْدَ أَهُلِهَا . ٥

فواند: (۱) اسلام ایک معتدل نظام حیات ہے جو ہرایک کے لیے اعتدال بیٹن حقوق مقرر کرتا ہے جہاں باہم نااتفاقی کی صورت میں مرد کو بیرحق ہے کہ وہ عورت کوطلاق دے کراینی جان چھڑ واسکتاہے و ہیں عورت کو بھی خلع کا اختیار دیا گیا ہے (۲) خلع لینے کے لیے عورت کوشو ہر سے حاصل کردہ مال لوٹانا ہوگا (٣) خلع حاصل كرنے كے ليے عورت حاكم ، قاضى كے ياس جاسكتى ہے البت بيضرورى نہيں كه عمر والتد نے خلع کے لیےسلطان یا قاضی کوغیرضروری قراردیا ہے (بخاری) جبکہ ائمہ اربعہ بھی اس کے قائل ہیں۔

(المغنى ابن قدامه)

[8] بَابِ فِي طَلَاقِ الْبَتَّةِ تنين طلاقوں كا بيان

2318 ـ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ..

سَعِيدٍ رَجُلِ مِنْ بَنِي عَبُدِ الْمُطَّلِبِ قَالَ سيدنا سعيد فِي اللهُ عَبِدالمطلب ك آدم بين في الله بَلَغَنِيُ حَدِيثٌ عَنُ عَبُدِ اللهِ بُن عَلِيّ بُن مجصاليك مديث عبدالله بن على بن يزيد بن ركاندس يَيْجَى وہ اینے ایک گاؤں میں تھے میں نے ان کے پاس جاکر ان سے یوچھا تو انہوں نے کہا: میرے والد نے میرے

يَـزيدَ بُن رُكَانَةَ وَهُوَ فِي قَرُيَةٍ لَهُ فَأَتَيُتُهُ فَسَأَلُتُهُ فَقَالَ حَدَّثَنِي أَبِي. عَنُ جَدِّي

حَكْرُ لِيَّنَى الْكَالِيْفِيُّ ﴾ 201 كتاب الطلاق كتاب الطلاق

دادا نے نقل کیا کہ انہوں نے اپنی بیوی کو تین طلاقیں دیں پھر نبی ملے تیا کہ انہوں اس کا ذکر کیا آپ نے فرمایا: تیرا کیا ارادہ تھا؟ اس نے کہا: ایک طلاق کا آپ نے فرمایا: اللہ کی قسم؟ اس نے کہا: اللہ کی قسم؟ آپ نے فرمایا: ''وئ

فوائد: (۱) ندکورہ روایت کی سنداگر چے ضعیف ہے بہرحال ابور کا نہ ف^{النی}ز کی ندکورہ حدیث شخ

ہے جوتم نے نیت کی۔''

صحی طاق نے حسن قراردیا ہے۔ (بلوغ المرام (1009) کی شرح سبل السلام پرتعلیق ملاحظہ بیجیے) (۲) ثابت ہوا کیے مجلس میں انتھی دی گئیں تین طلاقیں ایک ہی شار ہوگیں۔ ابن عباس والتھا ہے مردی ہے رسول اللہ والتی ایک وابی ابکر و سنتین من خلافة اللہ والتی ایک وابی ابکر و سنتین من خلافة علم عہدرسول الله والتی ابو براور عرف التی کی خلافت میں ابتدائی عہد وسال تین طلاق الشدات واحدة . " (مسلم) رسول الله والتی ابو براور عرف التی کی خلافت میں ابتدائی دوسال تین طلاقیں ایک ہی شار ہوتی رہیں ہیں۔ بی صریح ادلہ اس بارے واضح ہیں کہ اگر کوئی شخص اپنی یوی کو تین طلاقیں دے دیتا ہے تو وہ ایک ہی مقصود ہوگی۔ نیز عرف التی کا تین طلاقوں کو تین ہی قرار دینا وہ وقتی مصلحت کی بنا پر لوگوں کی زجر دوتو بیخ کے لیے تھا۔ ایک مجلس کی تین طلاقوں کو تین گردان کرمیاں بیوی میں ہمیشہ کے لیے جدائی کروا دینا بعقل وقل اور دین کے سراسر خلاف ہے۔ طلالہ کی لعنت کوفروغ دینے کے مترادف ہے۔ (علینا البلاغ و علیکم الحساب)

[9].... بَابِ فِي الظِّهَادِ ظهار كِمتعلق

2319 حَدَّثَنَا زَكَرِيًّا بْنُ عَدِيِّ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ إِدْرِيْسَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحْقَ عَنْ مُحَمَّدِ

ابْنِ عَمْرِو عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ

سیّدناسلمہ بن صحر بن بیاضی کہتے ہیں میں عوتوں سے اس قدر صحبت کرتا تھا میرے علاوہ کوئی اور نہ کرتا تھا۔ جب رمضان کا مہینہ آیا تو جھے خوف ہوا کہ میں رات کو کچھ کرنہ لوں جس کی وجہ سے صبح تک برائی میں بڑا رہوں۔ میں الطلاق كتاب الطلاق كالمنظمة عن الطلاق كالمنظمة المنظلاق كالمنظمة المنظلات ا

نے پورے ماہ کے لئے ظہار کرلیا۔ ایک رات میری بیوی میری خدمت کر رہی تھی۔ تو مجھے اس کے بدن کا پچھ حصہ نظرآ یا۔ میں نے بے قرار ہو کراس سے صحبت کر لی۔ جب صبح ہوئی میں اپنی قوم کے باس گیا انہیں بتایا اور کہا: میرے ساتھ رسول اللہ ﷺ کے یاس چلو لوگوں نے کہا: ''اللہ کی قتم! ہم تیرے ساتھ نہیں چلیں گے۔ہمیں خوف ہے کہ تمہارے بارے میں قرآن کی کوئی ایسی آیت نازل ہو جائے یا تنہارے بارے میں رسول الله مطابع الله كوئى الیی بات فرمائیں جس کا عیب ہمیں لازم ہو جائے ،اور ہم تہمیں تہارے گناہ سمیت رسول اللہ ﷺ کے سپرد کر دیں گے۔ میں رسول اللہ مضینے کے پاس گیا اور ان سے اپنا قصد بیان کیا تو آب نے فرمایا: 'اےسلمۃ! تونے اس طرح کیا ہے؟" میں نے کہا: میں نے ایبا ہی کیا ہے۔ آب نے فرمایا: اےسلمۃ تونے اس طرح کیا ہے؟ میں نے کہا: میں نے ایسے ہی کیا ہے آپ نے پھر فر مایا: اے سلماتونے بیکام کیا؟ میں نے کہاجی ہاں! میں نے بیکام کیا ہے اور میں حاضر ہوں میرانفس ثابت قدم ہے اللہ کی طرف ہے آپ میرے متعلق جو فیصلہ کریں سیجے ہے۔ آپ نے فرمایا '' ایک غلام آ زادکر۔'' میں نے ہاتھ اپنی گردن پر ماركركها: مجھاس ذات كى قتم! جس نے آپ كوفق دے كر بھیجا ہے میری ملکیت میں اس وقت اس گردن کے علاوہ اور کوئی گردن نہیں۔ آپ نے فرمایا: ''دو ماہ کے مسلسل روزے رکھو'' میں نے کہا: پیرمصیبت مجھے روزے کی وجہ ہے ہی پیچی؟ آپ نے فرمایا: ' کھجور کا ایک وسل ساٹھ

شَيئًا فَيَتَتَابَعَ بِي ذٰلِكَ إِلٰى أَنُ أُصُبِحَ قَالَ فَتَظَاهَرُتُ إِلَى أَنُ يَنْسَلِخَ فَبَيْنَا هيَ لَيُلَةً تَخُدُمُنِي إِذُ تَكَشَّفَ لِي مِنْهَا شَـُ، ءٌ فَـمَا لَبِثُتُ أَنُ نَزَوُتُ عَلَيُهَا فَلَمَّا أُصْبَحْتُ خَرَجُتُ إِلَى قَوْمِي فَأَخْبَرُتُهُمُ وَقُلُتُ امْشُوا مَعِيُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالُوُا لَا وَاللُّهِ لَا نَمُشِي مَعَكَ مَا نَامَنُ أَنُ يَنُولَ فِيلُكَ الْقُوْآنُ أَوُ أَنُ يَكُوُنَ فِيلَتَ مِنُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مَقَالَةً يَلُزَمُنَا عَارُهَا وَلَنُسُلِمَنَّكَ بِجَرِيرَتِكَ فَانُطَلَقُتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ عَلَيْ فَقَصَصُتُ عَلَيْهِ خَبَرِى فَقَالَ يَا سَلَمَةُ أنْتَ بِذَاكَ قُلْتُ أَنَا بِذَاكَ قَالَ يَا سَلَمَةُ أَنَّتَ بِذَاكَ قُلْتُ أَنَا بِذَاكَ قَالَ يَا سَلَمَةُ أَنْتَ بِذَاكَ قُلُتُ أَنَّا بِذَاكَ وَهَا أَنَا صَابِرٌ نَفُسِيُ فَاحُكُمُ فِيَّ مَا أَرَاكَ اللُّهُ قَالَ فَأَعْتِقُ رَقَبَةً قَالَ فَضَرَبُتُ صَفُحَةً رَقَبَتِي فَقُلُتُ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا أَصُبَحُتُ أَمُلِكُ رَقَّبَةً غَيُرَهَا قَالَ فَصُمُ شَهُرَيْن مُتَتَابِعَيْن قُلُتُ وَهَلُ أَصَابَنِي الَّذِي أَصَابَنِي إِلَّا فِي الصِّيَام قَالَ فَأَطُعِمُ وَسُقًا مِنُ تَمُر سِتِّينَ مِسُكِينًا فَقُلْتُ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لَقَدُ بِتُنَا لَيُلَتَنَا وَحُشَى مَا لَنَا

الكَالِيْكِينَ الكَالِيْكِينَ الْكَالِيْكِينَ الْكَالِيْكِينَ الْكَالِيْكِينَ الْكَالِيْكِينَ الْكَالِقِينَ الْكَالِي الْطَلَاقِ الْمُعَالِي الْمُعَلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِينِ الْمُعِلِينِ الْمِعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِي

طَعَامٌ قَالَ فَانُطَلِقُ إِلَى صَاحِبِ صَدَقَةِ

بَنِى زُرَيُتٍ فَلْيَدُفَعُهَا إِلَيُكَ وَأَطْعِمُ

سِتِينَ مِسْكِينًا وَسُقًا مِنْ تَمْرٍ وَكُلُ بَقِيَّةُ

أَنْتَ وَعِيَالُكَ قَالَ فَأَتَيْتُ قَوْمِی فَقُلُتُ

وَجَدُتُ عِنُدَكُمُ الضِّيقُ وَسُوءَ الرَّأْيِ

وَجَدُتُ عِنُدَ رَسُولِ اللهِ عَنَى السَّعَةَ

وَحُسُنَ الرَّأْيِ وَقَدُ أَمْرَ لِي بِصَدَقَتِكُمُ . •

فوائد: (۱) '' ظہار' یہ ہوتا ہے کہ آ دی اپنی ہوی کو کہے کہ تو مجھ پرمیری ماں کی پشت کی طرح (حرام) ہے اس قول کی چاہاں سے مدت مقرر کی ہویانہ کی ہو۔ اب اس مرد پر ہوی کوچھونے سے پہلے کفارہ لازم ہے۔ جیسے کہ قرآن میں اللہ نے اس کوجھوٹی اور نا گوار بات کہہ کراس کے کفارے کا ذکر کیا ہے۔ (سورۃ مجادلہ آیت 1,4) اور فہ کورہ صدیث بھی اس کی وضاحت ہے پہلے نمبر پرایک غلام آزاد کرنا اس کی طاقت نہ ہوتو تیسرے نمبر پر طاقت نہ ہوتو تیسرے نمبر پر طاقت نہ ہوتو تیسرے نمبر پر کا ملک کو کہ ما گھو مساکین کو کھانا کھلانا ہے ایک وس جو کہ تقریباً ایک سونچیس کلوگرام ہوتا ہے۔ (۲) اگر کفارے سے پہلے کوئی ہم بستری کرے تو ایسے خص کے لیے بھی ایک ہی کفارہ ہے (۳) صدقہ کے مال آگے صدقہ کیا جاسکتا ہے۔ (۲) صدقہ کیا جاسکتا ہے۔

[10] بَابِ فِي الْمُطَلَّقَةِ ثَلاثًا أَلَهَا السُّكُنَى وَ النَّفَقَةُ أَمُ لَا تَين طلاق والى عورت كے لئے مكان ونفقہ ہے يانہيں؟

2320- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ

❶ منقطع،ضعیف: ابوداؤد، کتاب الطلاق باب فی الظهار (الحدیث 2213) وابس ماجه، کتاب الصلاق باب الصهار (الحدیث 2013) وابس ماجه، کتاب الصلاق باب الصهار (الحدیث 2062) لیکن اس باب میں ابن عباس بڑھ کا صدیث جو کدا بوداؤد، ترفدی، نسائی وغیرہ میں صحیح سند ہے مروق اس کی شاہر ہے۔ شاہر ہے۔

الطلاق كالمرابعة عن العالم الطلاق كالمرابعة كا

عَنُ فَاطِمةَ بِنُتِ قَيْسٍ أَنَّ ذَوْجَهَا فَالْمَ بِنتِ قَيْسٍ أَنَّ ذَوْجَهَا قَالُم بِنت قِيسِ فَاللَّهُ كُواس كَ شُوبِر فِي تين طلاقيل دي طَلَّقَهَا فَكُرُقُ اللَّهُ عَلَمُ يَجْعَلُ لَهَا النَّبِي عَلَيْ اللَّهِ النَّبِي عَلَيْ اللَّهُ النَّبِي عَلَيْ اللَّهُ النَّبِي عَلَيْ اللَّهُ النَّبِي عَلَيْ اللَّهِ اللَّهُ اللِهُ اللَّهُ اللَّلَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَ

فوائد: عرز النين كايتول ﴿ وَلِلْهُ طَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْهَعُرُوفِ ﴾ (البقره: 241) طلاق يافته عورتوں كومعروف طريقے سے فائده پنچانا ہے۔ جيسى آيت كي عموم سے ہے كہ جمى طلاق شده عورتوں كور ہائش وخرچ شوہرى طرف سے ملے گا۔ جبكہ بير آيت طلاق رجعى والى عورت كے ليے خاص ہے حديث ميں ہے كہ "اندما النفقة والسكنى للمراة اذا كان لزوجها عليها الرجعة . " (احمد الصحيحه للالبانى) عورت كاخرچه ور ہائش فقط اليى عورت كے ليے جس پرخاوند كورجوع كاخت حاصل ہو۔ نيز آپ مطفق آن فاطمہ رفائي كا حريافت برفر مايا" لا نفقة لكِ الا ان تكونى حاملا . " (مسلم) مجھے صرف حمل كى علامت ميں خرچيل سكتا ہے اور قرآن ميں بھى (الطلاق: 6) سے واضح ہے كہ عاملہ عورت ، كاخر ہے كى متحق علامت ميں خرچيل سكتا ہے اور قرآن ميں بھى (الطلاق: 6) سے واضح ہے كہ عاملہ عورت ، كاخر ہے كى متحق علامت ميں خرجيال سكتا ہے اور قرآن ميں بھى (الطلاق: 6) سے واضح ہے كہ عاملہ عورت ، كى بات قابل ترجيح عرف خلائي وقت ہوا ہو۔ لہذا فاطمہ رفائي ہنت قيس كى بات قابل ترجيح عرف خلائي وقت ہوا ہو۔ لہذا فاطمہ رفائي ہنت قيس كى بات قابل ترجيح عرف نوت ہوا واللہ الم

2321 ـ أَخْبَرَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا زَكَرِيًّا عَنْ عَامِرِ

حَدَّنَتُنِی فَاطِمَةُ بِنْتُ قَیْسِ أَنَّ زَوْجَهَا أَلَا عَلَیْ الله عَلَیْ بیان کرتی ہیں: اس کے شوہر نے طَلَقَهَا فَکَاتًا فَأَمْرَهَا النَّبِی فَیْ اَللهٔ فَیْ دیں۔ تو نبی طُلَقَهَا فَکَرَهُ النَّبِی فَیْ اَللهٔ اللهٔ عَلَیْ اللهٔ الله

2322 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاءِ حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ عَنِ الْأَشْعَثِ عَنِ الْحَكَمِ وَحَمَّادٍ

 [◘] صحيح مسلم، كتاب الطلاق، باب المطلقة ثلاثا لا نفقة لها (الحديث 3689) و النسائي، كتاب الطلاق، باب الرخصة في ذلك (الحديث 2403) و ابن ماجه، كتاب الطلاق، باب من طلق ثلاثا في مجلس و احد (2024)

[🗗] صحيح: بيرمابقد حديث كابي ايك مكرام-

www.sirat-e-mustageem.com

سیدنا اسود زالنین کہتے ہیں کہ عمر زالنین نے کہا: کسی عورت

کے کہنے سے اپنے رب کی کتاب اور اُس کے نبی کی سنت

کونہیں چھوڑیں گے۔ جس عورت کو تین طلاقیں دی گئی

سیّدنا اسود رضافید عمر رضافیهٔ سے میلے قول کی طرح روایت

جس عورت کو تین طلاقیں دی گئی ہوں۔ اس کے لئے

مكان ونفقه ہے۔' ابومحمد كہتے ہيں: ''ميرے خيال ميں

مطلقہ کے لئے رہائش اورخرچہ بیں ہے۔''

موں اس کے لئے رہائش اور خرچ ہے۔''

205 كتاب الطلاق الكاليق

عَنْ إِبْوَاهِيمَ

عَينِ الْأُسُودِ عَنْ عُمَرَ قَالَ لَا نَدَعُ كِسَابَ رَبّنَا وَسُنَّةَ نَبِيّه بقَوُل امْرَأَةٍ

الْمُطَلَّقَةُ ثَكِرِثًا لَهَا السُّكُنِي وَالنَّفَقَةُ . •

2323 ـ أَخْبَرَنَا طَلْقُ بْنُ غَنَّام عَنْ حَفْصِ بْن غِيَاثٍ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ

عَنِ الْأَسُودِ عَنُ عُمَرَ نَحُوهُ . ٥

کرتے ہیں۔ 2324 أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَفْصٌ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ

سيّدنا اسود وظافئه كمت بين كه عمر وظافئه نے كها: "جم الله ك عَن الْأَسُودِ قَالَ قَالَ عُمَرُ لَا نُجيُزُ دین میں ایک عورت کے قول کو جاری نہیں کریں گے۔ قَوُلَ امُرَأَةٍ فِي دِين اللهِ الْمُطَلَّقَةُ ثَلَاثًا

لَهَا السُّكُنِي وَالنَّفَقَةُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد لَا

أَرَى السُّكُنَى وَالنَّفَقَةَ لِلمُطَلَّقَةِ . 3

[11] بَابِ فِي عِدَّةِ الْحَامِلِ الْمُتَوَفِّي عَنْهَا زَوُجُهَا وَالْمُطَلَّقَةِ حامله عورت کی عدت جس کا شو ہر فوت ہو گیا ہواور مطلقہ کی عدت

2325 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ أَنَّ سُلَيْمَانَ بْنَ يَسَارِ أَخْبَرَهُ سیدنا ابوسلمة بن عبدالرحمٰن بیان کرتے ہیں کہ وہ اور ابن أَنَّ أَبَا سَلَمَةَ بُنَ عَبُدِ الرَّحُمَنِ أَخُبَرَهُ أَنَّهُ عباس ابو ہرریرة کے پاس اکٹھے ہوئے۔ اور انہوں نے اس الْجَتَىمَعَ هُوَ وَابُنُ عَبَّاسِ عِنْدَ أَبِي هُرَيْرَةَ آ دى كا ذكر كيا جو بيوى كوچپوڙ كرفوت ہو گيا تھا اور پچھ دنول فَذَكَرُوا الرَّجُلَ يُتَوَقَّى عَنِ الْمَرُأَةِ فَتَلِدُ بعد بحد بیدا ہوا تو ابن عباس باللہ نے کہا: بعد میں پوری بَعُدَهُ بِلَيَالِ قَلاثِلَ فَقَالَ ابُنُ عَبَّاسِ

@ صحيح: تخ ت يي گزر چى ب-

• صحیح: تخ تا پیھے گزر چک ہے۔

[•] صحيح: ليكن يه حديث سنداً ضعيف ب-ال مسلم في باب المطلقة ثلاثًا لانفقة لها (1480) ك تحت ثكالا ب-

حكاب الطلاق كالمنافع
ہونے والی عدت وہ یوری کرے گی۔ ابوسلمۃ نے کہا: جب اس نے بیچ کوجنم دیا تو اس کی عدت بوری ہوگئی۔ دونوں نے اس کے متعلق آپی میں بات چیت کی۔ تو ابو مررة فالله ن كها: "مين اين سينج يعنى ابوسلمة ساتھ ہوں۔'' انہوں نے ابن عباس کے آزاد کردہ غلام كريب كوام سلمة كے ياس جھيجااس نے ان سے يو جھاتو امسلمة نے ذکر کیا کہ سپیعہ بنت حارث اسلمیہ کا شوہر فوت ہو گیا۔ تو اس کے بچھ دن بعد اسے نفاس ہوا بنو عبدالدار کے ایک آ دمی جس کی کنیت ابوسابل ہے نے اس ہے منگنی کا پیغام دیا اور بتایا کہ اس کی عدت پوری ہوگئ۔ سبیعہ نے اس کے علاوہ کسی اور سے نکاح کا ارادہ کیا تو ابو نابل نے اس سے کہا: تیری عدت یوری نہیں ہوئی۔ سبیعہ نے اس کا رسول الله ﷺ کے یاس ذکر کیا تو آپ نے اسے حکم دیا کہ وہ نکاح کرے۔''

حِلُهَا آخِرُ الْأَجَلَيْنِ وَقَالَ أَبُو سَلَمَةَ إِذَا وَضَعَتُ فَقَدُ حَلَّتُ فَتَرَاجَعَا فِي ذلك بَيْنَهُ مَا فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ أَنَا مَعَ ابُن أَخِي يَعُنِي أَبَا سَلَمَةَ فَبَعَثُوا كُرَيْبًا مَوْلَى ابْن عَبَّاسِ إِلَى أُمِّ سَلَمَةَ فَسَأَلَهَا فَذَكَرَتُ أُمُّ سَلَمَةَ أَنَّ سُبَيْعَةَ بنُتَ الُحَارِثِ الْأَسُلَمِيَّةَ مَاتَ عَنُهَا زَوُجُهَا فَنُفِسَتُ بَعُدَهُ بِلَيَالٍ وَأَنَّ رَجُلًا مِنُ بَنِيُ عَهُدِ الدَّارِيُكُنِي أَبَا السَّنَابِلِ خَطَبَهَا وَأَخْبَرَهَا أَنَّهَا قَلُ حَلَّتُ فَأَرَادَتُ أَنُ تَتَزَوَّ جَ غَيُرَهُ فَقَالَ لَهَا أَبُو السَّنَابِل فَإِنَّكِ لَمُ تَحِلِّينَ فَذَكَرَتُ سُبَيْعَةُ ذٰلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَأَمَرَهَا أَنُ تَتَزَوَّ جَ . 0

فوائد: (۱) اہل علم کے اختلاف کے وقت اپنے سے اعلم کی طرف رجوع کرنا سلف کا طریقہ رہا ہے (۲) عالم کومئلے کے بارے وضاحت کرتے ہوئے قرآن وسنت کی ادلّہ کا انتزام کرنا چاہیے (۳) حاملہ کی عدت وضع حمل ہے اگر چہ وہ طلاق یا خاوند کی وفات کے ایک دن بعد ہی ہوجائے ۔قرآن میں ہے "واو لات الاحمالِ اجلهن ان یضعن حملهن" حمل والیوں کی عدت وضع حمل ہے۔ وولولات الاحمالِ اجلهن ان یضعن حملهن تمنی والیوں کی عدت وضع حمل ہے۔ 2326۔ أَخْبَرَنَا مُ حَمَّدُ بُنُ يُوسُفَ حَدَّنَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَحْيَى بُن سَعِيْدِ عَنْ سُلَيْمَانَ بُنِ يَسَارِ

عَنْ كُرَيْبِ

عَنُ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتُ تُوُفِّي زَوْجُ سُبَيْعَةً سيّده ام سلمة رَفَاتَيْ كَهِنَ بِين كه سيعه بنت حارث كاشو بر بِنُتِ الْحَارِثِ فَوَضَعَتُ بَعُدَ وَفَاقِ وَات پاگيا۔ اس نے اپنی شوہر کی وفات کے چندون بعد

[●] متفق عليه: البخاري، كتاب التفسير، باب(وأولات الأحمال أجلهن أن يضعن) (4909 ومسلم، كتاب الطلاق باب التقضاء عد المتوفى عنها (3707)

www.sirat-e-mustageem.com

الكاليق الكاليق 207 كتاب الطلاق زَوُجِهَابِأَيَّامِ فَأَمَرَهَا رَسُولُ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ

بحدجنم دیا۔رسول الله مطابق نے اسے نکاح کا حکم دیا۔

تَتَزُوُّ جَ . 0

2327- أَخْبَونَا بِشْرُ بْنُ عُمَرَ الزَّهْرَانِيُّ حَدَّنَنَا أَبُو الْأَحْوَصِ حَدَّثَنَا مَنْصُوْرٌ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنِ اْلاَّسْوَ د

عَنُ أَبِى السَّنَابِلِ قَالَ وَضَعَتْ سُبَيْعَةُ

ابوسنابل کہتے ہیں کہ سبیعہ بنت حارث نے اینے شوہر کی وفات کے تقریباً بیس دن بعد یجے کوجنم دیا۔ جب وہ بِنْتُ الْحَارِثِ حَمُلَهَا بَعُدَ وَفَاةِ زَوُجِهَا بِبِضُع وَعِشُرِينَ لَيُلَةً فَلَمَّا تَعَلَّتُ مِنُ نفاس سے فارغ ہوئی تو اس نے بناؤ سنگھار کیا۔ بہاس نِفَاسِهَا تَشُوَّفَتُ فَعِيبَ ذٰلِكَ عَلَيُهَا كے لئے براسمجھا گيا۔ تو اس (سبيعہ)نے بيہ بات رسول

فَذَكَرَتُ أَمُرُهَا لِرَسُولِ اللَّهِ عَلَى فَقَالَ الله عظيمة سے ذكر كى تو آب نے فرمايا:"اگروه ايسے كرتى ہے تو کچھ حرج نہیں کیونکہ اس کی عدت پوری ہوگئی ہے۔'' إِنْ تَفُعَلُ فَقَدُ انْقَضَى أَجَلُهَا . ٥

2328 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مَنْصُورِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ

سیّدنا اسود مِنْ اللَّهِ مُن کَهِ بین که سبیعه نے اینے شوہر کی وفات کے چند دن بعد بیچے کوجنم دیا اس نے بناؤ سنگھار کیا۔ ابو سنابل نے اسے براسمجھا اس نے اپنا معاملہ رسول الله عظامية سے ذكركيا تو آب نے اسے نكاح كرنے كا حكم

وَفَاةِ زَوْجِهَا بِأَيَّامِ فَتَشُوَّفَتُ فَعَابَ أَبُو السَّنَابِل فَسَأَلَتُ أَوْ ذَكَرَتُ أَمُرَهَا لِرَسُولِ اللَّهِ عَلَيْ فَأَمَرَهَا أَنُ تَتَزَوَّ جَ . ٥

عَن الْأَسُودِ أَنَّ سُبَيُعَةَ وَضَعَتُ بَعُدَ

[12] بَابِ فِي إِحُدَادِ الْمَرُأَةِ عَلَى الزَّوُجِ عورت کا شوہر کے لئے سوگ منا نا

2329- أُخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيْرٍ أُخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ كَثِيْرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ

عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِي عِينًا قَالَ لَا يَحِلُّ سيِّده عائشه ظَيْعَ كَهِي مِين كه نبي عَيْمَ إِن فَر مايا: "كسي لِامْسُرَاً فِي تُدُومِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ اللَّاحِوِ . عورت ك لئ جوالله اور يوم آخرت يرايمان رصى ب

صحیح: سابقدحدیث کا اختصار ہے۔

🛭 متـفق عليه: البخاري، كتاب المغازي،باب(10)(الحديث3991)ومسـلم، كتاب الطلاق باب انقضاء عدة المتوفي عنها زوجها وغيرها بوضع الحمل(3706)

صحیح: سابقدحدیث کررآئی ہے۔

حكر يُنِينَ الْكَانِيمَةِ عَنْ الْكَانِيمَةِ عَنْ الْكَانِيمَةِ عَنْ الْكَانِيمَةِ عَنْ الْكَانِمِينَ عَنْ الْكِلْمُ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ الِكُولِ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُولِ عَلَيْكُ عَلَيْكُوالِكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَّالِكُولِ عَلَيْكُ عَلَيْ

یہ جائز نہیں کہ وہ اپنے شوہر کے علاوہ کسی اور کی وفات پر تین دن سے زیادہ سوگ منائے۔

ف وائد: (۱) ایمان کا نقاضا ہے کہ تین دن سے زیادہ سوگ نہ کیا جائے اور یہ اجازت بھی فقط عورت کو ہے کیونکہ کمزور دل واقع ہوئی ہے جبکہ مرد کو سوگ کی بھی بالکل اجازت نہیں (۲) عورت شوہر کی وفات پر چار ماہ دس دن تک سوگ منائیگی اس عدت کے دوران عورت نہ تو سرمہ لگا سکتی ہے نہ عمدہ کپڑے۔ مسلم نے اسے واجب قرار دیتے ہیں جیسا کہ وہ باب با ندھتے ہیں (باب وجوب الا صداد فی عدۃ الوفاۃ) وفاۃ کی عدت میں سوگ کا واجب ہونے کا بیان۔

2330- أَخْبَرَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

سیّدنا حمید رفائی بن نافع کہتے ہیں میں نے زینب بنت ابوسلمۃ سے سنا وہ ام حبیبہ بنت ابی سفیان سے روایت کرتی ہیں کہ: ان کے بھائی یا کسی اور رشتہ دار نے وفات پائی اس نے زردی کی اور اپنے ہاتھوں پر ملنے گئی۔اور کہا:

میں بیاس لئے کرتی ہوں کہ نبی مشفیقی نے فرمایا: ''جو عورت اللہ اور بوم آخرت پر ایمان رکھتی ہاس کے لئے عین عورت اللہ اور بوم آخرت پر ایمان رکھتی ہاس کے لئے عین عورت اللہ وہ اپنے شوہر کے علاوہ کی اور کے لئے تین ون سے زیادہ سوگ منائے' اپنے شوہر کے لئے عیار ماہ دس دن زینت ترک کرے۔''

ہ و روست فواند: صحابہ و اگر کسی بہت بلکہ آپ میں ہوتی تو سنت کے شائق سبھی اس کوسرانجام دینے کی اسلامی تربیت کی تھی کہ وہ اگر کسی کام کی ضرورت نہ بھی ہوتی تو سنت کے شائق سبھی اس کوسرانجام دینے کی کوشش کرتے۔

2331 ـ أَخْبَرَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ نَافِعٍ قَالَ سَمِعْتُ

 [●] صحيح مسلم، كتاب الطلاق، باب و جوب الاحداد في عدة الوفاة، و تحريمه (الحديث 3791) وابن ماجه، كتاب الطلاق، باب هل تحدالمرأة على غير زوجها (الحديث 2085)

[.] المحرك يا بيان المسلم، كتاب الطلاق، باب و حوب الإحداد في عدة الوفاة، و تحريمه (الحديث 3791) وابن ماجه، كتاب الطلاق، باب هل تحدالمرأة على غير زوجها (الحديث 2085)

عَلَىٰ الْكَالِيْفِيُّ الْكَالِيْفِيُّ فَي مَا لَمُ اللَّهِ فَي اللَّهِ الْعَلَاقِ فَي اللَّهِ الْعَلَاقِ فَي ك وَمُ مَا مُنَّالًا اللَّهُ اللَّهِ عَلَىٰ اللَّهِ الْمُعَالِمُ اللَّهِ الْمُعَلِّمُ اللَّهِ الْمُعَالِمُ اللَّ

زَيُنَبَ بِنُتَ أُمْ سَلَمَةَ تُحَدِّثُ عَنُ أُمِّهَا سَيْده نين بنت ام سلمة اپن والده يا نبى المُنَّيَّةِ كَكَ أو امْرَأَةٍ مِنُ أَزُوَاجِ النَّبِيِّ فَلَى نَحُوهُ. • (دوسرى) زوجه سے اس طرح بيان كرتى بيں۔ -[13] بَابِ النَّهٰي لِلْمَرُأَةِ عَنِ الزِّينَةِ فِي الْعِدَّةِ عورت كا ايام عدت بين آراستہ ہونے كى مما نعت

2332 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنْ هِشَامٍ بْنِ حَسَّانَ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ

مِيْرِينَ.....

سیّدہ ام عطیہ ڈٹاٹیئہ کہتی ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:
''عورت تین دن سے زیادہ کسی پرسوگ نہ منائے مگر اپنے
شوہر کے لئے چار ماہ دس دن زینت ترک کرے۔عصب
کے علادہ کوئی رَنگین کپڑانہ پہنے۔ نہ سرمہ لگائے اور نہ خوشبو
لگائے۔البتہ جب غسل کرے تو طہارت کی ابتداء میں قسط
منداور اظفار مل لے۔''

عَنُ أُمَّ عَطِيَّةَ عَنِ النَّبِي عَلَيْ قَالَ لَا تُحِدُّ الْمَرُأَةُ فَوُق ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ إِلَّا عَلَى زَوْجٍ فَإِنَّهَا تُحِدُّ عَلَيْهِ أَرْبَعَة أَشُهُرٍ وَعَشُرًا لَا فَإِنَّهَا تُحَدِّ عَلَيْهِ أَرْبَعَة أَشُهُرٍ وَعَشُرًا لَا تَلْبَسُ قَوْبًا مَصُبُوغًا إِلَّا ثَوْبَ عَصْبٍ وَلَا تَكْتَحِلُ وَلَا تَمَسُّ طِيبًا إِلَّا فِي أَدُنى فَلَا تَمَسُّ طِيبًا إِلَّا فِي أَدُنى طُهُرِهَا إِذَا اغْتَسَلَتُ مِنْ مَحِيضِهَا نَبُذَةً طُهُرِهَا إِذَا اغْتَسَلَتُ مِنْ مَحِيضِهَا نَبُذَةً

مِنُ كُسُتِ وَأَظُفَادِ . ٥

فوائد: (۱) "عصب" یہ یمنی چاوریں ہوتی تھیں جن کا سوت کات کر رنگاجاتا پھر انہیں بناجاتا تھا۔ "نبیلت یہ گئارے یا چھوٹی سی چیز کو کہتے ہیں (۲) شوہر کی وفات پر عدت گزار نے والی عورت کسی قتم کی زیب وزینت اختیار نہیں کرسکتی رنگین کپڑوں میں سے فقط وہ پہن سکتی ہے جورٹگین دھا کے کا بنا کپڑا ہونہ کہ بُن کر رنگا گیا ہو (۳) معتدہ خوشبو کا استعال بھی نہیں کرسکتی البتہ چیش کے خسل کے بعد اس کی کریہ یو کو زائل کرنے کے لیے تھوڑی بہت استعال کرسکتی ہے۔

[14] بَاب خُرُو جِ الْمُتَوَفَّى عَنُهَا زَوُجُهَا بِهِ الْمُتَوَفَّى عَنُهَا زَوُجُهَا بِهِ الْمُتَو

2333 ـ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللّٰهِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِسْحَقَ بْنِ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ عَنْ عَمَّتِهِ زَيْنَبَ بِنْتِ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ

[🗗] صحیح سابقہ حدیث ہی مکرر آئی ہے۔

๑ متفق عليه: البخارى، كتاب الحيض، باب الطب للمرأة عند غسلها من المحيض (313) ومسلم، كتاب الطلاق، باب وجوب الإحداد في عدة الوفاة (3722)

المُعْلِقِينَ المُعْلِقِينِ المُعْلِقِينَ المُعْلِقِينِ المُعْلِقِينَ ال

ستدہ فربعہ خاہنی بنت مالک بیان کرتی ہیں کہ انہوں نے رسول الله مطالقية سے اجازت مائل كه وہ اين الل ك یاس چلی جائے۔ (اور انہوں نے کہا:)میرا شوہر اینے بھا گے ہوئے غلاموں کو ڈھونڈنے گیا تھا۔اس نے انہیں یا لیاحتی که جب وه قدوم (جگه) کی طرف میں پنجاتو انہوں نے اسے قتل کر دیا' رسول اللہ منظامین نے فرمایا ''اپنے گھر میں مھہری رہؤ حتی کہ مقررہ وقت بورا ہو جائے ۔'' میں نے كها: "اس نے مجھے اس گھر ميں چھوڑا ہے جس كى ميں مالک نہیں ہوں اور نہ ہی خرچ ہے۔" آپ نے فرمایا: " تظہری رہوحتی کہ مقررہ عدت بوری ہو جائے۔"اس نے ادهر بی چار ماه دس دن عدت گزاری ـ وه کهتی میں: جب عثان ن للنه خلیفہ ہوئے تو میری طرف آ دمی بھیج کراس کے متعلق بوجھا میں نے اسے بتایا انہوں نے اسی برعمل کیا اوراس کے مطابق فیصلہ کیا۔

أَنَّ الْفُريَعُةَ بِنِنْتَ مَالِكِ أَخْبَرَتُهَا أَنَّهَا أَنَّ اللهِ عَلَيْ أَنُ يَأْذَنَ لَهَا أَنُ اللهِ عَلَيْ أَنُ يَأَذَنَ لَهَا أَنُ اللهِ عَلَيْ أَنُ يَأْذَنَ لَهَا أَنُ اللهِ عَلَيْ أَهُلِهَا فَإِنَّ زَوْجِى قَدُ خَوجَ لَي طَكِبِ أَعُبُدٍ لَهُ أَبَقُوا فَأَدُرَكَهُمْ حَتَّى فِي طَلَبِ أَعُبُدٍ لَهُ أَبَقُوا فَأَدُرَكَهُمْ حَتَّى إِذَا كَانَ بِعَلَرَفِ اللّقَدُومِ قَتَلُوهُ فَقَالَ رَسُولُ اللّهِ عَلَيْ المُكْثِى فِي بَيْتِكِ مَتَى يَبُلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ فَقُلُتُ إِنَّهُ لَمُ عَتَى يَبُلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ فَقُلُتُ إِنَّهُ لَمُ المُكْثِى حَتَّى يَبُلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ فَقُلُتُ إِنَّهُ لَمُ المُكِنِي عَنْ المُكْثِى حَتَى يَبُلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ فَاعْتَذَتُ اللهُ فَاعَدَلْتُ المُكَثِى حَتَى يَبُلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ فَاعُتَدَّتُ الْمُكُنِى حَتَى يَبُلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ فَاعُتَدَّتُ الْمُكَنِى حَتَى يَبُلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ فَاعُتَدَّتُ اللهُ فَاعَدَلْتُ فَلَمَا لَيْعَ عَلَيْكُ وَعَشَرًا قَالَتُ فَلَمَا لَي عَنْ اللّهُ عَلَيْكُ وَعَشَى عَنْ اللّهُ فَا تَبْعَ ذَلِكَ وَقَطَى كَانَ عُلُم مَانُ أَرُسَلَ إِلَى فَسَأَلَئِى عَنُ اللّهُ فَاعَدُونَ اللهُ فَاعَدَلَتُ اللهُ فَاعَدَلَتُ اللّهُ فَاعَدَلَتُ اللّهُ فَاعَدَلَتُ فَلَمُ اللّهُ فَاعَدَلُوهُ وَقَلْمُ اللّهُ فَاعَدُونُ وَقَطَى اللّهُ فَاعَدَلَتُ فَلَكُ اللّهُ فَاعُتَلَاثُ فَاعَدَلُهُ الْمُعَلِى عَلَى الْمُعَلِى عَلَى اللّهُ فَاعْتَلَاثُ فَلَكُ الْمَتَلُولُ وَقَطَى اللّهُ اللّهُ الْمُعَلِى عَلَى اللّهُ الْمُنْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَقَطَى اللّهُ اللّه

فواند: جس عورت کا خاوند فوت ہوجائے وہ اس گھر میں عدت گزارے گی جس میں وہ قیم ہے یااسے خبر پہنچتی ہے۔

2334 ـ أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ

عَنُ جَابِرٍ قَالَ طُلِّقَتُ جَالِتِی فَأَرَادَتُ أَنُ تَسُجُدٌ نَخُلا لَهَا وَجُلٌ لَيُسَ أَنُ تَسُجُدٌ نَخُلا لَهَا وَجُلٌ لَيُسَ لَلْبُ أَنُ تَسُجُدُرِجِی قَالَتُ فَأَتَيُتُ النَّبِی ﷺ فَذَكَرُتُ ذٰلِتَ لَسَهُ فَقَالَ الْخُرُجِي فَجُدِّي نَخُلَكِ فَلَعَلَّكِ

سیدنا جابر فالنی کہتے ہیں: میری خالد کوطلاق دی گئ۔اس نے چاہا کہ وہ درخت سے تھجوریں توڑ کر لائے۔اسے ایک آ دی نے کہا: تہمارے لئے باہر نکلنا جائز نہیں وہ کہتی ہیں: میں نبی کھی نے کہا: '' ہار جاؤ اور آپ سے اس بات کا ذکر کیا۔ آپ نے فرمایا: '' باہر جاؤ ادر کھجوریں توڑ کر لاؤ۔

حكل شِيْنَ الْكَالِيْفِيُّ الْكَالِيْفِيُّ الْكَالِيْفِيُّ الْكَالِقِينِ الطلاق المُعَالِقِينَ الْكَالِيفِيُّ

أَنُ تَصَدَّقِينَ أَوْ تَصْنَعِي مَعُووُفًا . ٥ كُونكه الميد بِ كُمَّ صدقه كروگ يا اجها كام كروگ - "

ف واند: (۱) معتد وکسی ضرورت کی بنایر گھر سے نکل سکتی ہے (۲) عورت بھی مردوں کی طرح مالک بھی بن کتی ہے اور کام بھی کر سکتی ہے بشر طبکہ اختلاط وفتن سے بیاؤ ہو۔

[15].... بَابِ فِي تَخْيِيرِ الْأَمَةِ تَكُونُ تَحْتَ الْعَبُدِ فَتُعْتَقُ

اس لونڈی کے اختیار دینے کا بیان جوغلام کے نکاح میں ہو پھر آ زاد کر دی جائے

2335 ـ أَخْبَرَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الْأَسْوَدِ

سیّدہ عائشہ وہالفیا کہتی ہیں انہوں نے بریرہ وہالفیّہ کو خریدنے کا ارادہ کیا۔اس کے وارثوں نے اس کی ولاء کی شرط لگانا جاہی سترہ عائشہ وظائنیا نے رسول اللہ طشے تاہے سے ذكركيا توآب نے فرماياً: "اسے خريدلؤ كيونكه ولاء اس ك لئے ہے جو آزاد کرے انہوں نے اسے خرید کر آزاد کر دیا۔اور آپ نے اسے شوہر کی طرف سے اختیار دے دیا وہ آزاد تھا۔ رسول اللہ طفی مین کے پاس گوشت لایا گیا۔ آپ نے فرمایا: بیکہاں سے آیا ہے؟ جواب ملا: "بریرہ کو صدقہ ملاہے۔"آپ نے فرمایا:"اس کے لئے صدقہ ہے ادر ہمارے لئے تحفہ ہے۔''

عَنُ عَائِشَةَ أَنَّهَا أَرَادَتُ أَنُ تَشُتَرى بَرِيرَةَ فَأَرَادَ مَوَالِيهَا أَنُ يَشُتَرطُوا وَلَائَهَا فَذَكَوَتُ ذٰلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ اشتريهَا فَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنُ أَعْتَقَ فَاشْتَرَتُهَا فَأَعْتَقَتُهَا وَخَيَّرَهَا مِنُ زَوُجِهَا وَكَانَ حُوًّا وَأَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أُتِي بِلَحْمِ فَقَالَ مِنُ أَيُنَ هَذَا قِيلَ تُصُدِّقَ بِهِ عَلَى بَرِيرَةَ فَقَالَ هُوَ لَهَا صَدَقَةٌ وَلَنَا هَدِيَّةٌ . ٥

فوائد: (۱)"الولاء" يآزاد ہونے والے غلام كا آزاد كرنے والے كے ساتھ تعلق ہوتا ہے جو که رشتوں ناطوں کی طرح نہ توبدلا جاسکتا ہے نہ اس کی خرید و فروخت ہوسکتی ہے اور نہ ہی پیر صبہ ہوسکتا ہے۔ (۲) اسود راتیجید عائشہ زنالھیا ہے بیان کرتے ہیں کہ بریرہ کا خاوند آزادتھا۔جبکہ آئندہ احادیث اس بات کی شاہد جیں کہ وہ غلام تھا۔ امام بخاری واٹھید نے بھی اسی کو ترجیح دی ہے فرماتے ہیں قول الاسودمنقطع جبکہ ابن عباس بناٹیز کاصحیح ترین ہے۔للبذا بریرہ کا خاوند غلام ہی تھا یہی راج ہے۔ (۳) لونڈی جب آزاد ہوگی تواہے

[•] صحيح: احمرك بال ابن جريج كرساع كي صراحت موجود ب_مسلم، كتاب الطلاق، باب حواز حروج المعتدة البائن..... (3705) وابو داؤ د، كتاب الطلاق، باب في المبتوتة تخرج بالنهار (1197)

[€] متفق عليه : البخاري، كتاب البيو ٢، باب اذا اشترط شروطا في البيع(2168) ومسلم، كتاب الزكاة، باب اباحة الهدية للنبي الله (2468) وصحيح ابن حبال (4269-4271-4279)

ا پنا سابقہ نکاح برقرار رکھنے یا فنخ کرنے میں اختیار ہے۔ بشرطیکہ اس کا شوہرغلام ہو (۴) صدقہ لینے والا اس چز کو ھدیہ کرسکتا ہے اور جوصد تے کامستحق نہ ہواس کے لیے اس کا استعال یا کھانا پینا جائز ہوگا۔

2336 ـ أَخْبَرَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ خَلِيْلٍ حَدَّثَنَا عَلِيٌّ بْنُ مُسْهِرٍ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ عَبْدِ

الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ

عَنُ عَائِشَةَ قَالَتُ ذَخَلَ النَّبِيُّ عَلَى الْعَبِيُ عَلَى الْعَبِيُ عَلَى الْعَبِيُ عَلَى الْعَمَ اللهِ الله

سیّدہ عائشہ رُخانی کہتی ہیں کہ نبی مطاق میرے پاس آئے۔ میں نے آپ کے سامنے کھانا رکھا جس میں گوشت نہیں تھا۔ آپ نے فرمایا: ''کیا میں نے (گوشت کی) ہنڈیا بیکی ہوئی نہیں دیکھی؟'' میں نے کہا: ''یا رسول اللہ مطاق آئے ایر گوشت ہے جو بریرہ کوصدقہ ملا ہے اور اس نے لئے میں تخفہ دیا ہے۔'' آپ نے فرمایا: ''وہ اس کے لئے صدقہ ہے اور ہمارے لئے تخفہ ہے۔'' وہ شادی شدہ تھی۔ جب آزاد ہوگئی تو اسے اختیار دے دیا گیا۔

2337 ـ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الضَّحَّاكِ عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْمَحْزُومِيّ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيْهِ

عَنُ عَالِشَةً أَنَّ بَرِيرَةَ حِينَ أَعُتَقَتُهَا عَالِشَةً كَانَ زَوُجُهَا عَبُدًا فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَجَعَلَتُ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَجَعَلَتُ مَسُولُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَجَعَلَتُ تَقُولُ لِرَسُولِ اللَّهِ عَلَيْهُ أَلَيْسَ لِى أَنُ أَفُارِقَهُ قَالَ بَلَى قَالَتُ فَقَدُ فَارَقَتُهُ. ٥

سیّدہ عائشہ وَالْقَهَا کَہِتی ہِیں جب انہوں نے بریرہ کو آزاد

کیا تو اس کا شوہر غلام تھا۔ رسول اللہ مِلْظَیَقِیٰ اے اپنے
شوہر کے پاس رہنے کی ترغیب دینے لگے۔ وہ رسول اللہ
ملٹی ہُنے ہے کہنے گئی:''کیا میرے لئے جائز نہیں کہ میں اس
سے الگ رہوں؟ آپ نے فرمایا: ''کیوں نہیں۔'' اس
نے کہا:''میں اس کوعلیحہ ہ کرویا ہے۔''

فوائد: (۱) جس کام کوبندہ جائز خیال کرے اس کی سفارش کرنامسنون ہے (۲) سفارش یامشورہ کو ماننا ضروری نہیں بلکہ مشورہ دینے والے کو جا ہے کہ مشورے کومشورہ ہی سمجھے اسے تھم کا درجہ نہ دے

¹ صحيح: سابقه صديث كى بى ايك جانب ب-

[@]صحيح: پيلے گزرنے والى حديث كى ايك طرف بـ

الطلاق كتاب الطلاق كتاب الطلاق كتاب الطلاق كتاب الطلاق

(٣) آب مُشْعَلَيْلَ جوبات بحثيت بشريت كرين اس كا قبول لازمنهين -

2338- أَخْبَرَنَا عَمْرُوبْنُ عَوْنِ أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ خَالِدٍ يَعْنِى الْحَذَّاءَ عَنْ

عِكْرِمَةً

سیّدنا ابن عباس فی الیّن کہتے ہیں کہ بریرہ کا شوہر غلام تھا۔
اسے ''مغیث' کہا جاتا تھا گویا کہ میں اسے دیکھ رہا ہوں
وہ بریرہ کے پیچھے چکر لگا رہا تھا اور اس کے آنسواس ک
واڑھی پر بہہ رہے تھے۔ نبی مطفی نے عباس سے
فرمایا: ''اے عباس! کیا تم مغیث کی بریرہ کے ساتھ شدید
محبت اور بریرہ کے اسے نالبندیدہ سیحفے سے تعجب نہیں
محبت اور بریرہ کے اسے نالبندیدہ سیحفے سے تعجب نہیں
کرتے۔ پھر آپ نے بریرہ سے فرمایا اگر تو اس کے پاس
واپس چلی جائے تو کیا ہی اچھا ہو کیونکہ وہ تیری اولاد کا
واپس چلی جائے تو کیا ہی اچھا ہو کیونکہ وہ تیری اولاد کا
والد ہے۔'اس نے کہا:''یا رسول اللہ! کیا آپ مجھے تھم
دے رہے ہیں؟''آپ نے فرمایا:'نہیں میں تو سفارش کر
رہا ہوں۔' اس نے کہا:''مجھے اس کی ضرورت نہیں۔''

عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ أَنَّ زَوُجَ بَرِيرَةَ كَانَ عَبُدًا يُقَالُ لَهُ مُغِيثٌ كَأَنِى أَنْظُرُ إِلَيْهِ عَبُدًا يُقَالُ لِلهُ مُغِيثٌ كَأَنِى أَنْظُرُ إِلَيْهِ يَطُووُ فَ خَلْفَهَا يَبُكِى وَدُمُوعُهُ تَسِيلُ عَلْى لِبِحْيَتِهِ. فَقَالَ النَّبِيُ عِنَيْلًا لِلمُعَبَّاسِ عَلْى لِبِحَيَتِهِ. فَقَالَ النَّبِي عِنْ شِدَّةِ مُحَبِ مِنُ شِدَّةِ مُعُضِ بَرِيرَةَ مُغِيثٍ بَرِيرَةَ وَمِنُ شِدَّةِ بُعُضٍ بَرِيرَةَ مُغِيثٍ بَرِيرَةَ وَمِنُ شِدَّةِ بُعُضٍ بَرِيرَةَ مُغَيثٍ فَإِنَّهُ أَبُو مُغِيثٍ فَإِنَّهُ أَبُو مُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ المُلْمُ الل

[16] بَابِ فِي تَخْيِيرِ الصَّبِيِّ بَيْنَ أَبُولَيْهِ

عِي كُووالدين كورميان اختيار دينا كابيان

2339 أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِمٍ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ أَخْبَرَنِي زِيَادُ بْنُ سَعْدِ عَنْ هِلَالِ بْنِ

عَنُ أَبِى مَيُمُونَةَ سُلَيُمَانَ مَوُلِّى لِأَهُلِ الْمَدِينَةِ قَالَ كُنْتُ عِنْدَ أَبِي هُرَيُرَةَ فَجَائَتُهُ امْرَأَةٌ فَقَالَتُ إِنَّ زَوُجِي يُرِيدُ أَنْ يَذُهَبَ بِوَلَدِي. فَقَالَ أَبُو هُرَيُرَةَ

ابومیمونہ سلیمان اہل مدینہ کے آزاد کردہ غلام کہتے ہیں میں ابو ہریرۃ رہائٹۂ کے پاس تھا ان کے پاس ایک عورت نے آکر کہا: میراشو ہرمیرے بچے کو لے جانا چاہتا ہے ابو ہریرۃ نے کہا: کیا تو رسول اللہ سے آیا کے پاس تھی جب کی

متفق عليه: البخاري، كتاب الطلاق، باب شفاعة النبي في في زوج بريرة (2583) صحيح ابن حبان (4270) وابن ماجه، كتاب الطلاق، باب حيار الأمة إذا أعتقت (2075)

العلاق ١٤١٤ كالماليكوني كتاب الطلاق ١٤١٧ كتاب الطلاق

عورت نے آ کرکہا: یا رسول اللہ! میرا شوہر میرے بچکو کے جانا چاہتا ہے۔ حالانکہ اس نے مجھے فائدہ دیا ہے اور ابی عنبہ کے کنویں کا پانی پلایا ہے۔ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: ''تم دونوں قرعہ ڈال لو۔'' اس کا شوہر آیااس نے کہا: ''میرے بچ کے متعلق مجھ ہے کون جھڑا کرتا ہے؟ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: ''اے لڑے! یہ تیرا والد اور یہ تیری والدہ ہے، جس کا چاہو ہاتھ پکڑلو۔'' ابوعاصم نے کہا: ''دونوں میں سے جس کے ساتھ چاہے چلا جا۔'' اس نے اپنی ماں کا ہاتھ پکڑا اور اس کے ساتھ چلا گیا۔

كُنُتُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ الْهِ الْهُ الْهُ الْهُ اللَّهِ اللَّهُ الْهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ ا

فوائد: بچرجب تک نامجھدار ہواس کی زیادہ حقدار اس کی ماں بی ہے جیسا کہ آپ مشیقی آنے نے ایک آنے والی عورت کواس بارے کہا" انتِ احتی به مالم تنکحی . " (حصن: ابوداو) تواس (بچ) کی زیادہ حقدار ہے جب تک نکاح نہ کرے۔ البتہ بچے کے مجھدار ہوجانے کی صورت میں اے والدین میں سے کسی کو چننے کا اختیار ہوگا۔ اختیار کی عمرسات یا آٹھ سال ہونے کے بارے میں ایک ضعیف اثر مردی ہے بہر حال شافعی ، احمد ، اسحاق دیا تھا اس کو ترجے دیتے ہیں (داند اعلم)

[17].... بَابِ فِي طَلَاقِ الْأَمَةِ لونڈی کی طلاق کے متعلق

2340 ـ أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَاصِمٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِيْ مُظَاهِرٌ وَهُوَ ابْنُ أَسْلَمَ أَنَّهُ سَمِعَ الْقَاسِمَ نُ:َ مُحَمَّد

> عَنُ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِي ﷺ قَالَ لِلْأَمَةِ تَـطُلِيقَتَـان وَقُرُوُهَا حَيْضَتَان قَالَ

❶صحیح: مسند حمیدی (1113) وابو داؤد، کتاب الطلاق، باب من احق بالولد (2277) وابن ماجه، کتاب الأحکام،
 باب تخییر الصبیع بن والدیه (2351)

www.sirat-e-mustageem.com

الطلاق كالمنافظ الطلاق كالمنافظ كالمناف

أَبُوْ عَاصِم سَمِعُتُهُ مِنُ مُظَاهِرٍ . • كُتِمَ بِين: مِن نَه الصمظاهر سے سنا۔

فوائد: لونڈی پرجس طرح سزانصف ہوتی ہے اس اعتبار سے نکاح وطلاق کے باب میں اس پر نصف طلاقیں وعدت ہوگی۔ ندکورہ اثر تواگر چہضعف ہے بہرحال عمر زخالفی سے مروی ہے کہ غلام دوعورتوں سے نکاح کرسکتا ہے اورعورت کودوطلاقیں دے سکتا ہے۔ (صحیح؛ ارواء الغلیل) للخدا حدیث کے معنی کواثر عمر زخالفی سے تقویت حاصل ہوتی ہے (واللہ اعلم)

2341- أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ عَنْ قَيْسِ بْنِ وَهْبِ عَنْ أَبِي الْوَدَّاكِ

سیّدنا ابوسعید رفاتین کہتے ہیں کہ رسول الله مظافیۃ نے اوطائ کی لونڈیوں کے متعلق فرمایا: ''حاملہ لونڈی سے صحبت نہ کی جائے گی حتی کہ وہ جنم دے دئے غیر حاملہ سے ہمی صحبت نہ کی جائے گی حتی کہ اسے ایک حیض آ جائے۔''

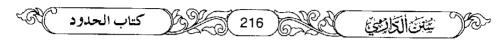
عَنُ أَبِيُ سَعِيدٍ وَرَفَعَهُ أَنَّهُ قَالَ فِي سَبَايَا أَوُطَاسٍ لَا تُوطَأُ حَامِلٌ حَثَّى تَضَعَ حَـمُلَهَا وَلَا غَيُـرُ ذَاتِ حَمُّلٍ حَثَّى تَحِيضَ حَيُضَةً . ۞

فواند: (۱) وضع حمل بي آزاد وغلام عورت سجى كے ليے برابر عدت ہے (۲) نئی حاصل ہونے والی لونڈی جو كہ خرید كریاغنیمت سے حاصل ہوئی ہواس كے پیك كی صفائی بعنی استبراء رحم كے ليے ایک حیض انتظار كرنا كافی ہے۔



🕰 سنده حسن: کیکن بیچدیث میچ ہےاہے مسلم نے کتاب الرضاع،باب حواز وطء السبایا (1456) والحکام 195/3

[•] ضعیف: الترمذی، کتباب الطلاق باب ماحاء أن طلاق الأمة تطلیقتان (1182) والبیه قبی فسی (معرفته السنن والآثا (14884) والحاکم 205/2 این عمر بیانتها کی حدیث بطور شاهد آتی به کیکن مرفوعًا اس کی سند بھی ضعف ہے جبکہ موقوقًا صحیح ہے۔ و کیکھئے تلخیص الحبیر 212/3ء21 و نیل الأوطار 26/7-27)



..... ومن كتاب الحدود صدودالله كيان يس

"الحدود" بيرمدي جمع ہے اس كامعنى ركاوك موتا ہے۔شرعى طور يربيدالله تعالىٰ كے حق كى بناء يركسى معصت ونافر مانی میںمقررکردہ سزاکو کہتے ہیں۔

اسلام میں جوحدیں مقرر ہیں:

1۔ حدالزنا 2۔ بہتان کی حد 3۔ شراب پینے کی حد

4_چوري کي حد 5_ ڏا کے کي حد 6 _ باغي کي حد

[1] بَابِ رُفِعَ الْقَلَمُ عَنُ ثَلاثَةٍ

تین چیزوں سے قلم اٹھا دی گئی ہے

2342_ أَخْبَرَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الْأَسْوَدِ

عَنْ عَافِشَةَ عَنِ النَّبِي عَلَيْ فَالَ رُفِع سيّده عائشه واللها كهتى بين نبي عظيمًا نه فرمايا: " تين الْقَلَمُ عَنْ ثَلَاثَةٍ عَن النَّائِم حَتَّى يَسْتَيْقِظ فَ فَصُول سے محاسبہیں ہوگا۔سونے والے سے حق کہ وہ بیدار ہو جائے اور بیجے سے حتی کہ وہ بالغ ہو جائے اور ديوانے ہے حتى كه وعقلمند جوجائے . "حماد نے المجنون کی جگہ 'المعتوہ 'کا لفظ بولا ہے۔

وَعَسن السصَّغِيرِ حَتَّى يَحْتَلِمَ وَعَن الُـمَـجُنُونِ حَتَّى يَعُقِلَ وَقَدُ قَالَ حَمَّادٌ أَيُضًا وَعَنِ المُمَعُتُونِ وَحَتَّى يَعُقِلَ. ٥

فوائد: معلوم ہوا يہ مين اشخاص (١) سونے والا (ب) نابالغ بحد (ج) يا گل بيشرى احكام ك

[◘] صحيح : ابن حبان(142)وأخرجه ابن ابي شيبه 2/868)ابوداؤد، كتاب الحدود،باب في المحنون يسرق أو يصيب حداً (الحديث4398)

عَنْ الْكَلِيْدَيْنَ كُنَّالِكُلِيْدَيْنَ كُنَّابِ الحدود كَنَابِ الحدود كُنَّابِ الحدود كُنَّابِ الحدود كُنَّا

مكلّف نہيں ہيں دلہذاان سے سرزد ہونے والا جرم قابل صديا تعزيز نہيں ہوگا۔ [2] باب مَا يَحِلُّ بِيهِ دَمُ مُسُلِمٍ

[2] باب ما يحِل بِهِ دم مُسلِمٍ كس جرم كى بنا پرمسلمان كافل جائز ہے

2343 - أَخْبَرَنَا أَبُو النَّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدِ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدِ عَنْ أَمُامَةَ بْنِ سَهْلِ بْن خُنَيْفِ

عَنُ عُشُمَانَ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ سِيْدنا عَهَان رَهُ اللهِ عَنْ عُشُمَانَ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ الله عَنَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَنْ عُشَالِهِ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَنْ اللهُ عَنْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَى اللهُ عَلْ اللهُ عَلْ اللهُ عَلْ اللهُ عَلْ اللهُ عَلْ اللهُ عَلْ اللهُ ا

ف وائس الله من قبل انسانی کوایک عظیم جرم گردانا ہے لہذا کسی مسلمان کے لیے کسی دوسرے مسلمان کو ایک عظیم جرم گردانا ہے لہذا کسی مسلمان کو ما کم دوسرے مسلمان کو قبل کرنا کسی بھی طور پر درست نہیں۔ ہاں فقط یہ تین جرم ایسے ہیں کہ ان کے مرتکب کو حاکم وقت قبل کی سزا دے گا۔ ایک مرتد دوسرا شادی شدہ زانی تیسرا قاتل۔ (۲) اس سے ان افعال کی شنا عت بھی معلوم ہوئی کہ یہانسانیت کے لیے کس قدر تباہ کن ہیں۔

2344_ حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُرَّةَ عَنْ مَسْرُوقِ

سیّدنا عبدالله وَلَا لَهُ مَلِيَّهُ کہتے ہیں که رسول الله طِیّقَ آنے فرمایا:

د مسیّ آ دمی کا خون جائز نہیں جو گواہی دے که الله کے سوا

کوئی معبود برحق نہیں اور میں (محمہ) الله کا رسول ہوں؛ مگر

تین میں سے کسی ایک کا: جان کے بدلے جان، شادی شدہ

مزانی اور دین کو چھوڑ کر (مسلمانوں کی) جماعت سے الگ

عَنُ عَبُدِ اللّهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ ﷺ ((لَا يَحِلُّ دَمُ رَجُلٍ يَشُهَدُ أَنُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهِ ﷺ اللهُ وَأَنِى رَسُولُ اللّهِ إِلَّا أَحَدَ ثَلَا ثَهَ نَفَرٍ النَّهُ وَأَنِى رَسُولُ اللّهِ إِلَّا أَحَدَ ثَلَا ثَهَ نَفَرٍ النَّهُسُ بِالنَّهُسِ وَالتَّيِّبُ الزَّانِى وَالتَّارِكُ لِلْجَمَاعَةِ)). ۞ لِدِيْنِهِ الْمُفَارِقُ لِللْجَمَاعَةِ)). ۞

Фصحيح: ابوداؤد، كتاب الديات، باب الامام يأمر بالعفو في الدم(4502) و النسائي، كتاب التحريم، باب مايحل به دم المسلم (4031) و البيهقي، كتاب المرتد، باب قتل من ارتدعن الاسلام 194/8

๑ متفق عليه: البخاري، كتاب الديات، باب قول الله تعالى (ان النفس بالنفس والعين بالعين) (6878) ومسلم، كتاب القسامة والمحاربين، باب ما يباح به دم المسلم (4351)

الكاليون عن الكاليون عن المحدود عن المحدود عن المحدود عن المحدود المح

[3] بَابِ السَّارِقِ يُوُهَبُ مِنْهُ السَّرِقَةُ بَعُدَ مَا سَرَقَ اس چور كِمتعلق چورى كے بعد جمع مال بخش ويا جائے

2345 ـ أَخْبَرَنَا سَعْدُ بْنُ حَفْصِ حَدَّنَنَا شَيْبَانُ عَنْ أَشْعَتَ عَنْ عِكْرِمَةَ

سیّدنا ابن عباس رفائی کہتے ہیں کہ صفوان بن امیہ رفائی ممجد میں سوئے ہوئے تھے۔اوران کی ای حالت میں کسی آ دی نے ان کے سر کے نیچ سے چا در کھینج کی۔ انہیں اس کا پتہ چل گیا اور انہوں نے دوڑ کر اسے پکڑ لیا۔ اسے رسول اللہ بی اور انہوں نے دوڑ کر اسے پکڑ لیا۔ اسے میں مجد میں سویا ہوا تھا ،میرے پاس یہ آیا اور اس نے میں مجد میں سویا ہوا تھا ،میرے پاس یہ آیا اور اس نے میرے سر کے نیچ سے چا در کھینج کی۔ میں نے دوڑ کر اسے پکڑا آپ نے اس کا ہاتھ کا شخ ڈیا۔صفوان نے کہا: "یا رسول اللہ! میری چا در اتنی قیت کی نہیں ہے کہ اس کے بدلہ میں اس کا ہاتھ کا ٹا جائے۔ آپ نے فرمایا: "میرے یاس لانے سے پہلے کیوں نہ چھوڑا۔"

فوائد: (۱) صفوان گارادہ چورکوفقط تنبیہ کروانا تھا۔لیکن جب انہوں نے اس کا ہاتھ گٹتے دیکھا تورتم کھا کر کہامیں اسے بیچا در ہبہ کرتا ہوں (صبح ابوداؤد) لہذا قاضی کے سامنے فیصلہ پیش ہوجانے سے پہلے اگرتصفیہ ہوجائے تو ٹھیک ورند سزالازم ہوگی (۲) مجرم کی حالت یا مجبوری کی بناپر قاضی اس پرترس نہیں کھائے گا بلکہ شریعت کے مطابق فیصلہ کرے گا۔

[4] بَابِ مَا تُقُطَعُ فِيهِ الْيَدُ كُنتَى مقدار مِين باته كا ناجائے

2346 - أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوْدَ الْهَاشِمِيُّ أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدِ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ

[•] اسناده ضعیف لیکن می متابعت ای کی متابعت این کی متابعت این کیبر (7326) و السحاکم 380/4 و السخاری فی الکیبر (334/4) و السحار در و السخاری فی الکیبر (4394)

219 کتاب الحدود الكالتك الكالتك عَنُ عَائِشَةَ عَلِيًّا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَيْهُ سيّده عائشه والفيها كبتى بين كه رسول الله الطيّعيّم ني فرمايا: ''چوتھائی دیناریا اس سے زائد کی چوری پر ہاتھ کاٹا جاتا قَسَالَ تُسقُسطَعُ الْيَدُ فِي رُبُعِ دِيُسَار

فوائد: چورى كى وجرے باتھ كاشنے كانساب ربع الديناريعنى دينار كا چوتھا حسب الراتى مقدار میں کوئی سونایاس کی قیت کے برابر چیز چرا لے تواس کا ہاتھ کا ٹا جائے گا۔

2347 - أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَيُّوبَ وَإِسْمَعِيلَ بْنِ أُمَيَّةَ وَعُبَيْدِ اللهِ وَمُوسَى بْنِ

عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ .

فِي مِجَنِّ قِيمَتُهُ ثَلَاثُةُ دَرَاهِمَ . ٥

فَصَاعِدًا. 0

سیّدنا ابن عمر وظافیا کہتے ہیں که رسول الله مصَّقَیْن نے ایک عَنِ ابُنِ عُمَرَ قَالَ قَطَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ڈ ھال کی چوری پر ہاتھ کاٹ ڈالا جس کی قیمت تین درہم

فواند: دينار چونكه باره درجم كاتفا اورتين درجم اس كاچوتفا حصد بنتا بهدا نصاب كوچيخ ك بنايراس كاباته كانا كيا حديث يس "كان ربع ديناريومئذ ثلاثة دراهم والدينار اثنى عشر در هما . " (احمه) چوتگانی دیناران دنول تین درهمول کا تقااوردینارباره درېم کا ـ

> [5] بَابِ الشُّفَاعَةِ فِي الْحَدِّ دُونَ السُّلُطَانِ حد کے متعلق بادشاہ کے سامنے سفارش کرنا

2348-أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ

سیّدہ عائشہ زمالیم کہتی ہیں کہ مخر ومیہ عورت کی چوری نے قریش کو بہت عملین کیا۔ انہوں نے کہا: اس کے متعلق رسول الله مصفية المستحدين بات كرے گا؟ لوگوں نے كہا: اسامہ بن زید خاتین جورسول اللہ میشین کو بہت بیارا ہے۔ اس کے علاوہ آپ سے بات کرنے کی کون جرأت كرسكتا

عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ قُرَيْشًا أَهَمَّهُمُ شَأْنُ الُمَرُأَةِ الْمَخُزُومِيَّةِ الَّتِي سَرَقَتُ فَقَالُوُا مَنُ يُكَلِّمُ فِيهَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالُوا وَمَنْ يَجُتَرِءُ عَلَيْهِ إِلَّا أُسَامَةُ بُنُ زَيْدٍ حِبُّ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَكَلَّمَهُ أَسَامَةُ فَقَالَ

- ◘ متفق عليه: البخاري، كتباب الحدود، قول الله تعالىٰ (السيارق والسيارقة فا قطعوا ايديهما) وفي كم يقطع (6789)ومسلم، كتاب الحدود، باب حد السرقة ونصابها (4374)
- **٧** متفق عليه: البخاري، كتباب الحدود، باب قوله الله تعالىٰ (والسارق والسارقة فاقطعوا ايد يهما) وفي كم يقطع (6795) ومسلم، كتاب الحدود،باب وحد الرقة ونصابها(4382)

220 کی کی کتاب الحدود کی کتاب الحدود کی کتاب الحدود کی کتاب الحدود کی کتاب الله سے کا کتاب الله کی کتاب الله کی کتاب الله کی کتاب الله کی کتاب کی کتاب کا کتاب کی کتاب کا کتا

جب کوئی غریب چوری کرتا تو اس به حد قائم کرتے تھے۔

الله كي قتم! اگر فاطمه بنت محمر بھي چوري كرتي تو وه اس كا

باتھ کاٹ دیتے۔''

رَسُولُ اللّهِ عَلَى الْتَشْفَعُ فِى حَدِّمِنُ مُحدُودِ اللّهِ ثُمَّ قَامَ فَاخْتَطَبَ فَقَالَ إِنَّمَا هُلَكُمُ اللَّهِ مُكَانُوا إِذَا هَلَكُمُ اللَّهُمُ كَانُوا إِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ وَإِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ وَإِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الشَّعِيفُ أَقَامُوا عَلَيْهِ سَرَقَ فِيهِمُ الشَّعِيفُ أَقَامُوا عَلَيْهِ الْمُحَدَّةُ وَايْمُ اللَّهِ لَوُ أَنَّ فَاطِمَةً بِنُتَ مُحَمَّدِ سَرَقَ فَي عَمَدُ اللَّهِ لَوُ أَنَّ فَاطِمَةً بِنُتَ مُحَمَّدِ سَرَقَ لَعَلَيْهِ اللَّهِ لَوُ أَنَّ فَاطِمَةً بِنُتَ مُحَمَّدِ سَرَقَ فَي لَهُ اللَّهِ لَوُ أَنَّ فَاطِمَةً بِنُتَ مُحَمَّدِ سَرَقَ فَتُ لَقَطَعُتُ يَدَهَا. 9

الكرين المالية المالية

ف**ے ائد:** (۱) حدود کے معاملے میں سفارش کرنا یا اسے قبول کرنا حرام ہے (۲) اسامہ بن زید آپ ملنے آئیا کے انتہائی چہیتے تھے۔ (۳) مصلح کے کردار وعمل کی دعوت انتہائی مؤثر ہوتی ہے۔

[6] بَابِ الْمُعْتَرِفِ بِالسَّرِقَةِ چورى كا اقرار كرنے والے كے متعلق

2349 ـ أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ إِسْحَقَ بْنِ عَبْدِ اللّهِ بْنِ أَبِي

طَلْحَةَ عَنْ أَبِى الْمُنْذِرِ مَوْلَى أَبِىْ ذَرِّ -------عَنُ أَبِيُ أُمَيَّةَ الْـمَـخُرُومِيّ أَنَّ رَسُولَ

سَرَقُتَ قَالَ بَلَى قَالَ فَاذُهَبُوافَاقُطُعُوا يَدَهُ ثُمَّ جِينُوا بِهِ فَقَطَعُوُا يَدَهُ ثُمَّ جَائُوُا

بِه فَقَالَ اسْتَغُفِرِ اللَّهَ وَتُبُ إِلَيْهِ فَقَالَ أَسْتَغُفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فَقَالَ اللَّهُمَّ

ابوامیمخرومی کہتے ہیں کہ رسول اللہ مطاقیۃ کے پاس ایک چور لایا گیا جس نے چوری کا اقرار کرلیا تھا اور اس کے پاس مال نہیں تھا آپ نے فرمایا: "میرا خیال ہے تونے چوری نہیں ۔ آپ نے فرمایا: "میرا گمان ہے کہ تونے چوری نہیں گی؟ اس نے کہا: میرا گمان ہے کہ تونے چوری نہیں گی؟ اس نے کہا: "کیوں نہیں ۔ آپ نے کہا: چوری نہیں گی؟ اس نے کہا: چوری نہیں ۔ آپ نے کہا: چوری نہیں ۔ آپ نے کہا: کیوں نہیں ۔ آپ نے فرمایا: "جاؤ اس کا ہاتھ کا ٹا اوراسے میرے پاس لائے آپ نے فرمایا: "اللہ سے اوراسے آپ کے پاس لائے آپ نے فرمایا: "اللہ سے اوراسے آپ کے پاس لائے آپ نے فرمایا: "اللہ سے اوراسے آپ کے پاس لائے آپ نے فرمایا: "اللہ سے

 [♦] متفق عليه: لبخارى، كتاب احاديث الأنبياء، باب 54 (الحديث 3475) ومسلم، كتاب الحدود، باب قطع السارق الشريف وغيرها (4386)

221 کے کتاب الحدود کے کتاب الحدود کے بخش بخشش مانگ اور تو بہ کر۔''اس نے کہا: میں اللہ سے بخشش مانگنا ہوں اور اس کی طرف رجوع کرتا ہوں ۔'' آپ نے فرمایا: اے اللہ! اس کی تو بہ قبول کر اے اللہ! اس کی تو بہ قبول کر اے اللہ! اس کی تو بہ قبول کر۔

فوائد: سام البانی رائید ای روایت کوابوداؤد میں ضعیف قرار دیا ہے۔ اس لیے بید حدیث جمت بننے کے قابل نہیں۔ چور سے کہیں دوسری، تیسری دفعہ اقرار کا ثبوت نہیں ملتا۔ چنانچہ مالک، شافعی، ابو صنیفہ رئیلتا کے نزدیک ایک دفعہ اقرار ہی کافی ہے۔ (الروضة الندیة)

[7] بَابِ مَا لَا يُقُطَعُ فِيهِ مِنَ الشِّمَارِ کھلوں کی چوری سے ہاتھ نہ کاٹا جائے

2350- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا يَحْيَى هُوَ ابْنُ سَعِيدِ أَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ أَخْتَهُ

سیّدنا رافع بن خدیج فالنّهٔ کہتے ہیں میں نے رسول الله علیّ اور کھور کے گوند میں ہاتھ ہوئے ساز" کھل اور کھور کے گوند میں ہاتھ نہیں کا نا جائے گا۔"

عَنُ رَافِع بُنِ خَـدِيجٍ قَــالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَـقُولُ لَا قَطُعَ فِى ثَمَرٍ وَلَا كَثَرٍ . •

130 XX (151 XX) (151 XX)

تُبُ عَلَيْهِ اللَّهُمَّ تُبُ عَلَيْهِ . •

فوائد: جوخض کھل وغیرہ چیکے سے مالک کی اجازت کے بغیر لے اس کے ذرعے قطع برنہیں۔ حدیث میں ہے "من اتخذ بفمہ فلیس علیہ شیء و من احتمل فعلیہ ثمنہ مرتین و ضرب نکال و ما اخذ من اجر انہ ففیہ القطع اذا بلغ ما یؤ خذ من ذلك ثمن المجن. " (حسن الوداؤد) جس نے اپنے منہ کے ساتھ لیا (یعنی ادھر ہی بقدر ضرورت کھالیا) اس پر کچھ بھی واجب نہیں اور جوافعالے گیا اس پر ڈبل قیمت اور بطور عبرت ماراجائے گا اور جوڈ ھرول سے اٹھائی جائے اس میں (ہاتھ) کٹنا بھی ہے جب لی جانے والی شئے ڈھال کی قیمت کو پینچی ہو۔ لہذا جب تک پھل ذخیرہ نہ کیا گیا ہواس سے الکا اس میں الیا کہ اس میں الیا کہ اللہ میں کہتا ہو اس سے الیا کہ اللہ اللہ کہتا ہو اللہ ہی ہے جب لی جانے والی شئے ڈھال کی قیمت کو پینچی ہو۔ لہذا جب تک پھل ذخیرہ نہ کیا گیا ہواس سے الیا گیا ہوا سے کہتا ہو ہو کہتا ہوا ہو کہتا ہو کہ

[•] صحیح: اس سندیس ابومنذررادی کوکسی نے ثقة قرارنہیں ویا۔ بہر عال حاکم 4/1881 المدر قطنی 102/3) البیه قبی 271/8 میں ابو ہر پرہ بڑائنڈ کی حدیث بطور شاہد سے خابت ہے امام حاکم نے اس کے رجال کوشیخین کے رجال قرار دیا ہے۔ اور ابن قطان نے ان کی موافقت کی ہے۔

[€]صحيح: طبراني كبير 260/4 ابو داؤد، كتاب الحدود، باب مالا قطع فيه (4388) والنسائي. كتاب السارق، باب مالا قطع فيه (4976)

حكال المعدود على المعدود المحدود المح

بقدر ضرورت لینے والے پرکوئی جرمانہ پاسز انہیں البتہ سٹور سے چوری کرنے والا اگراس کاسامان جواس نے جارا ہے جوال ہے جوال ہے جوالی کا ہاتھ کا نا جائے گا۔

2351 حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ بْنُ مَنْصُوْرٍ حَدَّثَنَا أَبُوْ أُسَامَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى

بْنِ حَبَّانَ عَنْ رَجُلٍ مِنْ قَوْمِهِ

عَنُ رَافِعِ بُنِ حَدِيجٍ عَنِ النَّبِيِّ عَنَ الرَّارِيُّ

لَا قَطُعَ فِي ثُمَرٍ وَلَا كَثَرٍ . •

سیدنا رافع بن خدیج زلائی کہتے ہیں کہ نبی مطابع نے فرمایا: ''شمر اور کشر میں ہاتھ نہ کا ٹا جائے۔''

2352 ـ أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى ابْنِ

حَبَّانَ عَنْ عَمِّهِ وَاسِع بْنِ حَبَّانَ

عَنُ رَافِعِ بُنِ حَدِيُجٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَا قَطُعَ فِي ثَمَرٍ وَلَا كَثَرِ

حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ . ٥

2353 ـ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ

عَنُ رَافِعِ بُنِ حَدِيْجٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ نَحْدَ هُ. ۞

ے سیدنا رافع بن خدیج نبی کھی اسے پہلی حدیث کی طرح انقل کرتے ہیں۔

2354 ـ أَخْبَرَنَا إِسْلِحْقُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ وَالثَّقَفِيُّ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ أَخْبَرَنِى مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى الْهِ صَعِيدٍ أَخْبَرَنِى مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى الْهِ حَبَّانَ

سیّدنا رافع بن خدیج والیّؤ کہتے ہیں کہ میں نے رسول اللّه مشیّق کو بی فرماتے ہوئے شا: '' ثمر اور کثر میں ہاتھ نہیں کا ٹا جائے گا۔'' راوی کہتا ہے: '' ثمر پھل کو اور کثر تھجور کے گودے کو کہا جا تا ہے جے عربی میں' جمار' کہتے ہیں۔'' عَنُ رَافِع بُنِ خَدِيُج قَالَ سَمِعُتُ النَّبِيَ فَالَ سَمِعُتُ النَّبِيَ فَي لَمَرٍ وَلَا النَّجُ فِي ثَمَرٍ وَلَا كَفُرٍ قَالَ كَفُرٍ وَلَا كَفَرٍ قَالَ وَهُوَ شَحُمُ النَّخُلِ وَالْكَثَرُ النَّخُلِ وَالْكَثَرُ الْنُجُمَّارُ. ٥ الْجُمَّارُ. ٥

اسنادہ ضعیف: اس میں ابواسامہ جمپول راوی ہے جبکہ صدیث سابقہ کے مطابق ہونے کی وجہ سے حج ہے۔

² اسناده صحيح: سابقه مديث بي ب-

³ اسناده صحبح: مالقدمديث بى -

اسناده صحیح: سابقه حدیث بی ملاحظه بور

2355 - أُخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُورِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدِ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدِ عَنْ مُحَمَّدِ

بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ غَنْ أَبِي مَيْمُوْن

عَنُ رَافِع بُنِ خَدِيْعٍ قَسالَ سَمِعُتُ

النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ لَا قَطْعَ فِي كَثَر قَالَ

أَبُو مُحَمَّد الْقَوْلُ مَا قَالَ أَبُو أُسَامَةَ . •

سیدنا رافع بن خدیج کہتے ہیں کہ میں نے نبی می الم فرماتے ہوئے سنا: ' کھجور کے درخت کے گودے پر ہاتھ نہیں کاٹا جائے گا۔'' ابومحمہ کہتے ہیں:''صحیح سندوہ ہے جو

[8] بَابِ مَا لَا يُقُطّعُ مِنَ السُّرَّاق

ابواسامہ نے تاری کی ۔''

وہ چورجن کا ہاتھ نہ کا ٹا جائے

2356 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِم عَنِ ابْنِ جُرَيْجِ قَالَ قَالَ أَبُو الزُّبَيْرِ

قَـالَ جَـابِـرٌ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَيْسَ ﴿ سَيِّدِنَا جَابِر رَبِّنْتُنَّ كُمِّتِم بِينِ كَه رسولِ الله ﷺ فَيْرَا نَ فرمايا:

عَلَى الْمُنْتَهِبِ وَلَا عَلَى الْمُخْتَلِسِ وَلَا عَلَى الْخَائِنِ قَطُعٌ. ٥

'' ڈاکہ ڈال کرسامان لوٹنے والے دھوکے سے یا چھٹا مار کر

لوٹے والے اور بددیانت کا ہاتھ نہیں کا ٹا جائے گا۔"

فوائد: ' نائن' وہ ہے جو خیرخواہ کے روپ میں مال بٹورنے والا اور 'منجب' جو مال جھیٹ كرچين ك_آب طفائلاً كفرمان كمطابق ان يقطع ينهيس بلكدان كے جرم كے موافق ان سےسلوك كياجائے كا-امام شافعى والوحنيف بھى اسى كے قائل ہيں كدان كے ہاتھ نہيں كائے جاكيں كے (تخفة الاحوذى)

[9].... بَابِ فِي حَدِّ الْخَمُر شراب کی حد کے متعلق

2357 حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِم حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ

عَنُ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أُتِيَ بِرَجُلِ قَدُ شَرِبَ خَمْرًا فَضَرَبَهُ بِجَرِيدَتَيُن ثُمَّ فَعَلَ أَبُو بَكُرٍ مِثْلَ ذٰلِكَ فَلَمَّا كَانَ

سیّدنا انس فالٹیو کہتے ہیں کہ نبی مطّعَ میّن کے یاس کوئی آ دمی لایا گیاجس نے شراب لی تھی۔ آپ نے اسے دو چھڑیوں ہے مارا۔ پھرابو بکرنے بھی اسی طرح کیا۔ جب سیّدناعمر خاتیجہ

اسنادہ صعیف : اس میں ابومیمون مجبول ہے جبکہ سابقہ حدیث کی بناء ہر بیاحدیث سیح ہے۔

[🛭] صحيح: ابن حبان(4456-4457) وابو داؤد، كتاب الحدود، باب القطع في الخلسة والخيانة (4391) وابن ماجه، كتاب الحدود، باب الخائن، المنتهب، المختلس (2591)

الكَالِيْعِينَ الكَالِيْعِينَ الكَالِيْعِينَ الكَالِيْعِينَ الكَالِيْعِينَ الكَالِيْعِينَ الكَالِيَعِينَ الكَالِينِينَ الكَالِيَعِينَ الكَالِينِينَ الكَالْمِينِينَ الكَالْمِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالْمِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالْمِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالْمِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالْمِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالْمِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالْمِينِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالْمِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالْمِينِينَ الكَالْمِينِينَ الكِلْمِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالِينِينِينَ الكَالِينِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالِينِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالِينِينَ الكِلْمِينِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالِينِينَ الكَالْمِينِينَ الْمُلْمِينِينَ الْمُلْمِينِينَ الْمُلْمِينِينِ المِنْلِينِينِينِينِينَ الْمُلْمِينِينِينِينِينِينِينَ الْمُلْمِينِينِ المِلْمِينِينِينِي المِلْمِينِينِي المِلْمِينِينِينِينِينِينِينِي

خلیفہ ہوئے انہوں نے لوگوں سے مشورہ لیا عبدالرحل بن عوف نے کہا: سب سے ملکی حداتی کوڑے ہے تو انہوں نے اسی طرح کیا۔

عُمَّرُ اسْتَشَارَ النَّاسَ فَقَالَ عَبُدُ الرَّحُمْنِ بُنُ عَوْفٍ أَخَفُّ الْحُدُودِ ثَمَانِيْنَ قَالَ فَفَعَلَ . •

فوائد: انس خالته بی کی روایت میں بیلفظ بھی ہیں "فجلده بجرید تین نحو اربعین" آپ طفے ایک نے دوجھڑ یوں سے چالیس کے قریب ضربیں لگا کیں۔ جبکہ عمر خالفہ نے عبدالرحل بن عوف زائشہ کے مشورے پرائی کوڑے لگا ناہی بہتر ہے۔ جبیبا کہ آگے آرہا ہے۔ کے مشورے پرائی کوڑے لگا ناہی بہتر ہے۔ جبیبا کہ آگے آرہا ہے۔ 2358۔ حَدَّ اَنَا مُسْلِمُ بُنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّهِ الْمُخْتَارِ حَدَّ اَنَا عَبْدُ اللّهِ اللّهَ اللّهُ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّه

حَدَّثَنَا حُضَيْنُ بُنُ الْمُنُلِدِ الرَّقَاشِيُّ قَالَ شَهِدُثُ عُثْمَانَ بُنَ عَفَّانَ وَأَتِى بِالُولِيدِ شَهِدُثُ عُثْمَانَ بُن عَفَّانَ وَأَتِى بِالُولِيدِ بُنِ عُقَانَ وَأَتِى بِالُولِيدِ بُنِ عُقَانَ وَأَتِى بِالُولِيدِ بُنِ عُقَانَ وَعُمَدُ النَّبِيُّ عَلَمَ النَّبِيِّ عَلَمَ النَّبِيِّ عَلَمَ اللَّهِينَ وَعُمَرُ أَرْبَعِينَ وَعُمَرُ فَكُم أَرُبَعِينَ وَعُمَرُ فَمُانِينَ وَكُلُّ سُنَّةً . ٥ فَمَانِينَ وَكُلُّ سُنَّةً . ٥

حصین بن منذررقائی کہتے ہیں کہ میں سیدنا عثان بن عفان کے پاس حاضر ہوا اور ولید بن عقبہ لا یا گیا۔ علی والنو فلائن کے کہا: ''دنی مشکلین کے چالیس کوڑے مارے۔ اور ابو بکر والنی کے چالیس کوڑے مارے اور سیدنا عمر والنی کے اس کوڑے مارے اور سیدنا عمر والنی کے اس کوڑے اس کوڑے کا سنت ہے۔''

فواند: "وكل سنة " كے بعد على فرائن كالفاظ بين "و هذا احب الى " اور يہ مجھے زياده پند ہے (مسلم) البذامستحب يہى ہے كہ اگر گن كركوڑے لگائے جائيں تو وہ چاليس ہونے چاہئيں ورنہ عبرت كے ليے بلاشار كيے بھى مارا جاسكتا ہے۔ سائب فرائن كہتے بين كہ عبدِ رسالت منظم آيا ، امارت ابو بكر وعمر فرائن كا ابتدا ميں ہمارے پاس شرا بى كولا يا جاتا تو ہم اے جوتوں چھر يوں اور چاوروں سے مارتے (بخارى احمد) كى ابتدا ميں ہمارے پاس شرا بى كولا يا جاتا تو ہم اے جوتوں چھر يوں اور چاوروں سے مارتے (بخارى احمد) وقتی بيد الرّ ابعد قبی شارِ بِ الْخَدُمُ وَ إِذَا أُتِي بِدِ الرّ ابِعَدَ عَمَى بارشراب يبنے والے كے متعلق جوتى بارشراب يبنے والے كے متعلق

2359 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الرَّقَاشِيُّ خَدَّثَنَا يَزِيدُ هُوَ ابْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ هُوَ ابْنُ إِسْحَقَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُنْبَةَ بْنِ عُرْوَةَ بْنِ مَسْعُوْدِ الثَّقَفِيُّ

 [◘] متفق عليه: كتاب الحدود، باب الضرب بالحريدو النعال (6776) ومسلم، كتاب الحدود، باب حد الخمر (4429)
 ◘ صحيح مسلم، كتاب الحدود، باب حد الخمر (4432) و إبوداؤد، كتاب الحدود، باب الحد في الخمر (4480) و ابن ماجه كتاب الحدود، باب حد السكراك (2571)

الكاليق FIRM T 225 كتاب الحدود

سیّدنا عمروبن شرید رہائشہ اینے والد سے بیان کرتے ہیں انہوں نے کہا میں نے رسول اللہ منظیمی کو یہ فرماتے ہوئے سنا: جب تم میں سے کوئی شراب ییئے تو اسے مارو اگر دوبارہ یعے تو اسے مارو اگر پھر یعے تو اسے مارو اگر چوتھی ہاریدئے تواسے قبل کر دو۔'' عَنُ عَـمُـرِو بُـنِ الشَّـرِيُدِ عَنُ أَبِيُهِ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ إِذَا شَرِبَ أَحَدُكُمُ فَاضُرِبُوهُ ثُمَّ إِنَّ عَادَ فَاضُربُوهُ ثُمَّ إِنْ عَادَ فَاضُربُوهُ ثُمَّ إِنْ عَادَ الرَّ ابِعَةَ فَاقُتُلُو أُهُ . •

ف واند: ندکوره حدیث کی سنداگر چیضعیف ہے کیکن ابوداؤد میں اس معنی کی روایت صحیح طریق سے وارد ہے۔جس سے اس کی شہادت ملتی ہے۔لیکن بیچکم منسوخ ہے۔جابر خالفیڈ اس حدیث کو بیان کرنے کے بعدیہ کہتے ہیں کہ چرنی طفائی آن یا ایک آوی لایا گیا جس نے شراب بی رکھی تھی ۔آپ طفائی آن نے اسے مارالیکن قتل نہ کیا۔امام ترندی ولٹید بھی اس کی منسوحیت کے قائل ہیںاور وہ'' مسلمان کاخون کسی دوسرے کے لیے حلال نہیں مگران تین وجوں سے 'والی حدیث کوبطوردلیل لیتے ہیں۔ (ترندی1444) للندا اب چوتھی مرتبہ شراب یینے والے کوتل نہیں کیا جائے گا الا میہ کہ سی مصلحت کا تقاضا ہو۔

[11]....بَاب التَّعُزِيرِ فِي الذَّنُوبِ عام گناہوں کی سزا کا بیان

2360 ـ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيْدَ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ هُوَ ابْنُ أَبِيْ أَيُّوْبَ حَدَّثِنِي يَزِيْدُ بْنُ أَبِيْ حَبِيْب عَنْ بُكَيْرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْأَشَجَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ هُوَ ابْنُ جَابِر

عَنُ أَسِى بُوكَةَ بُن نِيَاد قَالَ سَمِعُتُ سيّدنا ابو بردةٌ بن نيار كت بين مين في رسول الله عَيْدَا سے سنا وہ فرما رہے تھے: ''کسی کے لئے جائز نہیں کہ وہ الله کی حدود کے علاوہ کسی کو دس کوڑے سے زیادہ لگائے ''

رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ لَا يَحِلُّ لِأَحَدٍ أَنْ يَـضُـرِبَ أَحَدًا فَوُقَ عَشَرَةٍ أَسُوَاطٍ إلَّا فِي حَدٍّ مِنُ حُدُودِ اللَّهِ . ٥

[12]باب الاغتراف بالزّنا زناكا اقراركرنے كابيان

2361 أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَاصِمٍ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجِ أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ أَبِيْ سَلَمَة

[🗗] ضعیف: کیکن شوابد کی بناء پر بیرحدیث می جهیا که ابو ہر پرة والنفز کی حدیث می این حبان (4447)اور معاوید والنفز کی حدیث مندموسلی (7363) میں ہے۔

[◘] متفق عليه: البخاري، كتاب الحدو دباب كم التعزير والأدب(9848) ومسلم، كتاب الحدو د،باب قدرأسواط التعزير (1708)

عَنْ الْكَانِينَ الْكِينِ الْعِيلُود اللهِ اللهِ
عَنْ جَابِ إِنَّ رَجُلًا مِنُ أَسُلَمَ أَتَى سِيّنا جابِر فَالِّمَ كَتِ بِي فَبِيلِه اللّم كَ ايك آوى نے بى النّبِيّ عَلَىٰ فَحَدَّ ثُهُ أَنَّهُ زَنَى فَشَهِدَ عَلَى فَيْ اللّهِ عَلَى اللّهُ اللهُ الللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ الللهُ اللّهُ الللهُ اللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللللهُ الللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللهُ اللّهُ الللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللهُ الللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ الللهُ الللّهُ الللهُ الللهُ اللّهُ الللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللّهُ الللهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللللللهُ الللهُ اللللللهُ الللهُ اللللللللهُ الللهُ الللللللهُ الللهُ الللللللهُ الللهُ الللللللهُ اللللهُ الللللللهُ اللّهُ اللللللّهُ الللللهُ الللللللهُ الللللهُ الللللللللهُ الللللهُ الللللهُ اللللللهُ ا

فوائد: (۱) یہ ماعز آسلی بڑائی کا واقعہ ہے انہوں نے آپ مطنع آپ یاس آکر چار مرتبہ زنا کا قرار کیا تھا۔ (۲) زنا کا قرار زانی کتنی دفعہ کرے تواس پر حدجاری کی جائے گی اس کے بارے میں اختلاف ہے احمد رائی یہ وابوطنیفہ رائی لیے خزو یک چاردفعہ اقرار شرط ہے۔ امام شوکانی رائی ایک مرتبہ اقرار کا فی ہے اور جن احادیث میں ماعز سے چاردفعہ اقرار کروانے کا ذکر ہے وہ فقط معالمے کی تحقیق پرتنی مرتبہ اقرار کا فی ہے اور جن احادیث میں ماعز سے چاردفعہ اقرار کروانے کا ذکر ہے وہ فقط معالمے کی تحقیق پرتنی تھا۔ وہ سوال شرط کے جبوت کے لیے نہ تھا ورنہ غامدیہ عورت کو ایک دفعہ اقرار پررجم نہ کیا جاتا (نیل الاوطار) مالک وشافعی رائی اس کے قائل جیں اور یہی بات رائے واقر ب الی الصواب ہے۔ ان شاء الله (۳) شادی شدہ زانی کورجم کیا جائے گا۔

2362 - أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوْسٰي عَنْ إِسْرَائِيْلَ عَنْ سِمَاكٍ

أنّهُ سَمِعَ جَابِرَ بُنَ سَمُرَةَ يَقُولُ أَتِيَ السَّبِيُ عَلَيْهِ رِدَاءٌ وَرَسُولُ السَّبِيُ عَلَيْهِ رِدَاءٌ وَرَسُولُ السَّهِ عَلَيْهِ رِدَاءٌ وَرَسُولُ السَّهِ عَلَيْهِ رِدَاءٌ وَرَسُولُ السَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى السَّهِ عَلَى وسَادَةٍ عَلَى السَّهِ عَلَى مَسَارِهِ فَكَلَّمَهُ فَمَا أَدُرِى مَا يُكَلِّمُهُ بِهِ يَسَارِهِ فَكَلَّمَهُ فَمَا أَدُرِى مَا يُكَلِّمُهُ بِهِ وَأَنَا بَعِيدٌ مِنهُ بَيْنِي وَبَيْنَهُ الْقَوْمُ ثُمَّ قَالَ وَدُوهُ الْمَهُ مُ اللَّهُ وَاللَّهُ الْمَوْمُ ثُمَّ قَالَ وَدُوهُ الْمَعْ عَيْرَ أَنَّ بَيْنِي اللَّهُ اللَّهُ مَا اللَّهُ الْحُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْحُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللِّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعِلِي اللَّهُ الْمُؤْمِ اللَّهُ الْمُلْمُ الل

فَارُجُمُوهُ)) ثُمَّ قَامَ النَّبِيُّ عَلَيْ فَخَطَبَ

سیّدنا جابر بن الله بن سمرة کہتے ہیں ماعز بن مالک نبی مظافیۃ کے پاس لائے گئے وہ چھوٹے قد کے آ دمی سے تہبند باندھے ہوئے تھے۔ چاور نہیں اوڑھی تھی۔ رسول الله بلائی آیک تکیہ پر فیک لگائے ہوئے تھے۔ وہ آپ کے بائیں طرف تھا۔ آپ نے اس سے بات کی۔ مجھے معلوم نہیں کہ آپ نے اس سے بات کی۔ مجھے معلوم نہیں کہ آپ نے اس کے دور تھا میرے اور آپ کے درمیان اور لوگ تھے۔ آپ نے فرمایا: ''اسے لے جاؤ اور رجم کر دو۔'' پھر آپ نے فرمایا: ''اسے لے جاؤ اور رجم کر دو۔'' پھر آپ نے فرمایا: میرے اور آپ کے درمیان کے چھاوگ تھے۔ آپ نے میں میں رہا تھا۔ میرے اور آپ کے درمیان کے کھاوگ تھے۔ پھر آپ نے میں میں رہا تھا۔ میرے اور آپ کے درمیان کے کھاوگ تھے۔ پھر آپ نے میں میں رہا تھا۔

Ф صحيح: اخرجه البخاري، في النكاح، باب الطلاق في الإغلاق (5270) ومسلم، كتاب الحدود، باب من اعترف على نفسه الزني (1691)

و المنظر المنطق
فرمایا: 'اسے لے جاؤ اور رجم کر دو۔' پھر نبی السّطَائِیّا ہے کھڑے ہوئے تو آپ السّطَائِیّا نے خطبہ دیا اور میں اُسے من رہا تھا ، پھر آپ نے فرمایا: ''جب ہم اللّه کی راہ میں جہاد کے لئے جاتے ہیں تو پچھاوگ پیچھےرہ جاتے ہیں۔ جبن کے لئے الیمی آ واز ہوتی ہے جبیا کہ بکرے کی آ واز مادہ سے جفتی کرتے وقت ہوتی ہے،وہ ان میں سے کسی کو تھوڑا سا بھی دودھ دیتا ہے؟اللّه کی قتم! میں ان میں سے کسی کو جس پر قابو یاؤں انہیں قابل عبرت سزادوں گا۔''

فوائد: (۱) "نبیب" یه "نَبّ" باب طَرَبَ سے مصدر ہے اس کے معنی مینڈ ھے کا جوش کے وقت آواز نکالنا ہے نیز "السیکٹنبة" یہ دودھ یاکسی بھی شے کی حقیری مقدار پر بولا جاتا ہے (۲) مجاہدین فی سبیل اللہ کے گھروں میں خیانت کا مرتکب ہونا انتہائی فتیج حرکت ہے اور حکومت کا فرض ہے کہ ایسے شخص کونشان عبرت بنادے۔

2363- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّتَنَا ابْنُ عُيَيْنَةً عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ ابْنِ

عُتبةً

عَنُ أَبِى هُرَيُرةَ وَزَيُدِ بُنِ خَالِدٍ وَشِبُلٍ قَالُوا جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ عَلَىٰ قَالُوا جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ عَلَىٰ فَقَالَ أَنْشُدُكُ الله إِلَّا قَضَيْتَ بَيُنَا فَقَالَ اللهِ فَقَالَ خَصُمُهُ وَكَانَ أَفْقَهَ مِنْهُ صَدَقَ اقُضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ مِنْهُ صَدَقَ اقُضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ مِنْهُ صَدَقَ اقُضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ وَأَذَنُ لِي يَا رَسُولَ اللهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَىٰ عَلَىٰ عَسِيفًا اللهِ عَلَى اللهِ فَقَالَ إِنَّ الْبَنِي كَانَ عَسِيفًا عَلَى اللهِ فَقَالَ اللهِ فَقَالَ إِنَّ الْبَنِي كَانَ عَسِيفًا عَلَى اللهِ فَقَالَ إِنَّ الْمَنْ اللهِ فَافَتَدَيُتُ عَلَىٰ عَلَىٰ اللهِ عَلَى اللهِ فَقَالَ إِنَّ الْمِنْ أَتِهِ فَافَتَدَيُتُ عَلَىٰ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ اللهِ فَقَالَ إِنَّ الْمُنْ اللهِ فَقَالَ إِنَّ الْمُعَالِقِ اللهِ فَقَالَ عَلَىٰ عَلَىٰ عَلَيْكُ عَلَىٰ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ اللهُ اللهِ عَلَى اللهِ فَقَالَ إِنَّ الْمُؤَلِّ فَقَالَ إِنَّ الْمُولُ اللهُ اللهِ عَلَىٰ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ ا

مِنُهُ بِمِائَةِ شَاةٍ وَخَادِمٍ وَإِنِّيُ سَأَلُتُ

سیّدنا ابو ہریرة و النّون اور سیّدنا زید بن خالد اور همل والنّون کہتے ہیں کہ ایک آ دمی رسول الله مین الله کے پاس آیا۔ اور اس نے کہا: میں آپ کو الله کی قتم دے کر کہتا ہوں آپ ہمارے درمیان کتاب الله سے فیصلہ کریں۔ اس سے وشکر نے والے نے کہا جواس سے زیادہ عقائد تھا' اِس نے میک کہا آپ ہمارے درمیان کتاب الله سے فیصلہ کریں۔ یا میک کہا آپ ہمارے درمیان کتاب الله سے فیصلہ کریں۔ یا رسول الله اور مجھے بات کرنے کی اجازت دیجئے' رسول الله میں خادم تھا اس نے اس کی بیوی سے زنا کیا۔ میں نے میں خادم تھا اس نے اس کی بیوی سے زنا کیا۔ میں نے میں نے میں خادم تھا اس نے اس کی بیوی سے زنا کیا۔ میں نے

المحدود عَيْنَ الدَّارِيمِيُّ عَنْ الدَّارِيمِيُّ عَيْنَ الدَّارِيمِيُّ عَيْنَ الدَّارِيمِيُّ عَيْنَ الدَّارِيمِيُّ

اس کی طرف سے سو بحریاں اور غلام فدیہ میں دیا۔ میں نے چند علاء سے پوچھا ہے انہوں نے جھے بتایا کہ میرے بیٹے پرسوکوڑے اور ایک سال کی جلا وطنی ہے اس کی بیوی کی سزا رجم ہے۔ آپ نے فرمایا:'' مجھے اس ذات کی قشم کے جس کے ہاتھ میں میری جان ہے بقینا میں تمہارے درمیان کتاب اللہ سے فیصلہ کروں گا۔ سو بحریاں اور غلام بختے واپس مل جا کیں گئرے بیٹے کوسوکوڑے اور ایک سال کی جلا وطنی کی سزا ہوگی۔ اور اے انیس اس کی بیوی کے پاس جا کر پوچھواگر وہ اقر ارکر لے تو اسے رجم کر دیا۔

رِجَالًا مِنُ أَهُلِ الْعِلْمِ فَأَخْبَرُ وُنِى أَنَّ عَلَى الْبَنِى جَلْدَ مِاثَةٍ وَتَغُرِيبَ عَامٍ وَأَنَّ عَلَى الْبَنِى جَلْدَ مِاثَةٍ وَتَغُرِيبَ عَامٍ وَأَنَّ عَلَى الْبَنِى الْمَرَأَةِ هٰذَا الرَّجُمَ فَقَالَ وَالَّذِى نَفُسِى بِيَدِهِ لَأَقُضِينَ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللَّهِ الْمُسِى بِيَدِهِ لَأَقُضِينَ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللَّهِ الْمُسائَةُ شَاةٍ وَالْخَادِمُ رَدُّ عَلَيْكَ وَعَلَى الْمُعانَةِ وَتَغُرِيبُ عَامٍ وَيَا أُنيسُ اعْدُ عَلَى امْرَأَةِ هٰذَا فَسَلُهَا فَإِنُ اعْتَرَفَتُ الْمُدَعَلَى امْرَأَةِ هٰذَا فَسَلُهَا فَإِنُ اعْتَرَفَتُ فَا حُمْمَهَا فَاعْتَرَفَتُ فَرَجَمَهَا . •

فواف است کی روشی میں جواب طلب کرے والے یا فیصلے کے متقاضی کوچاہیے کہ وہ کتاب وسنت کی روشی میں جواب طلب کرے(۲) نواجوان لڑکوں کو گھروں میں ملازم رکھنے سے احرّ از کرنا چاہیے چونکہ یہ مختلف مفاسد کا سبب ہے۔ (۳) عوام کوئی سائی باتوں کی بجائے اہل علم سے مسئلے دریافت کرنے چاہئیں (۳) کنوارے زائی پرسوکوڑے اورائیک سال کی جلاوطنی ہے الا جماع لابن منذر میں ہے کہ جلاوطنی پراجماع ہے۔ (۵) آپ مسئل کے اورائیک سال کی جلاوطنی ہے الا جماع لابن منذر میں ہے کہ جلاوطنی پراجماع ہے۔ سوکوڑوں کا ذکر ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ حدیث بھی قرآن کا حصہ ہے اس کے کلمات میں سے حدیث کے بغیر قرآن کو سمجھانا ناممکن ومحال ہے۔ چنانچہ حدیث کو قرآن سے الگ قرار دینا ان کو نا قابل عمل کھرانا باعث گراہی وضلالت ہے۔ (العیاذ باللہ) (۲) شادی شدہ زائی کورجم کیاجائے گا کیونکہ ایک جائز ذرایعہ بوائے کہ بوائے جوکسی صورت نا قابل قبول ہے۔ (۷) یہاں آپ سے کہائی نامرائی کو اس سے چارمرتبہ اقرار کروائے کا حکم نہیں دیا بلکہ ایک دفعہ اقرار پرہی رجم کولازم قرار دیالہذا نے انس بڑائیڈ کو اس سے چارمرتبہ اقرار کروائے کا حکم نہیں دیا بلکہ ایک دفعہ اقرار پرہی رجم کولازم قرار دیالہذا کی سنت ہے۔

 [◘] مشفق عليه: البخارى، كتاب الوكالة، باب الوكالة في الحدود (2314) ومسلم، كتاب الحدود، باب من اعترف على نفسه بالزنا (4410) وابن ماجه، كتاب الحدود، باب حد الزنا (2549)

رُحِيُّ الْكَالِمِيُّ الْكَالِمِيُّ (كتاب الحدود) (كتاب ال

[13] بَابِ الْمُعُتَرِفِ يَرُجِعَ عَنِ اعْتِرَا وه فخص جواقرار كركے پھر جائے

2364 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ عَبْدِ اللهِ الرَّقَاشِيُّ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ هُوَ ابْنُ إِسْلِقَ بْنِ يَسَارِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ التَّيْمِيُّ

ابوالهیثم بن نفر بن وہر اسلی اپنے والد سے بیان کرتے بیں انہوں نے اسے بیں انہوں نے اسے سے تفاجنہوں نے اسے سگسار کیا تھا۔ ابو گھر کہتے ہیں: یعنی ماعز بن مالک کو جب انہیں بقر گئے تو وہ سخت گھبرا گئے۔ ہم نے اس بات کا رسول اللہ ملے تائے سے ذکر کیا آپ نے فرمایا: ''تم نے اسے کے حصور اکیوں نہیں۔'

عَنُ أَبِسَى الْهَيْشَمِ بُنِ نَصُرِ بُنِ دَهُرٍ الْأَسُلَمِي عَنُ أَبِيهِ قَالَ كُنتُ فِيمَنُ الْأَسُلَمِي عَنُ أَبِيهِ قَالَ كُنتُ فِيمَنُ رَجَمَهُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد يَعْنِى مَاعِزَ بُنَ مَالِلْتٍ فَلَمَّا وَجَدَمَسَّ الْحِجَارَةِ مَالِلْتٍ فَلَمَّا وَجَدَمَسَّ الْحِجَارَةِ جَزِعَ جَزَعًا شَدِيدًا قَالَ فَلَا حَزِعَ جَزَعًا شَدِيدًا قَالَ فَلَا كُرُنا فَلِلْكَ لِرَسُولِ اللَّهِ عِيْنَ قَالَ فَلَا كُرُنا فَلَا اللَّهِ عِيْنَ قَالَ فَلَالَا فَلَا لَهُ اللَّهُ عَلَيْنَ قَالَ فَلَا لَهُ اللَّهِ عَلَيْنَ قَالَ فَلَا لَهُ اللَّهُ عَلَيْنَ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلَيْنَ اللَّهُ عَلَيْنَ اللَّهُ عَلَيْنَ اللَّهُ عَلَيْنَ اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَ اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَىٰ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَىٰ اللَّهُ عَلَيْنَ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَىٰ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْنَا الْمُعَلِيْنَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَىٰ الْعَلَى الْعَلَى اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَى الْعَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعُلَى الْعَلَى الْ

تَرَكُتُمُونُهُ . 0

فوائد: جو خص زنا کے اقرار کے بعداس سے رجوع کرلے تواس کے رجوع کو قبول کیا جائے گا اور بقیہ حداس سے ساقط کردی جائے گا۔ اس روایت کے ایک لفظ یہ ہیں "ھیلا تسر کت موہ ل علیه ان یتوب فیتوب الله علیه" (ابوداؤد: صحیح) تم نے اسے چھوڑ کیوں نددیا شاید کہ وہ توبہ کر لیتا اور اللہ اس کی توبہ قوب فیتوب الله علیه " (ابوداؤد: صحیح) تم نے اسے چھوڑ کیوں نددیا شاید کہ وہ توبہ کر لیتا اور اللہ اس کے مدساقط ہوجائے گی اور چور اور شرائی کا بھی یہی کہ اس سے حدساقط ہوجائے گی اور چور اور شرائی کا بھی یہی تحم ہوگا (شرح السنة 467/5) اور احمد ، شافعی اور امام ابوحنیفہ رجائے بھی اس طرف گئے ہیں۔ (نیل الاوطار 500/4)

[14] بَابِ الْحَفُرِ لِمَنْ يُرَادُ رَجُمُهُ

رجم ہونے والے کے لئے گڑھا کھودنے کا بیان

2365- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسٰي حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِيْ زَائِدَةَ عَنْ دَاوْدَ عَنْ أَبِيْ نَصْرَةَ

[●] حسن: اس کی سند میں ایک راوی ابوالہیثم بن تھر ہے جس کا امام بخاری وابن ابی حاتم نے تکذکرہ تو کیا ہے لیکن کوئی جرح وتعدیل نہیں کی جب کہ حافظ ابن ججر برالتی نے تقریب میں اسے''مقبول'' کہا ہے بقیہ حدیث کے رجال ثقه ہیں۔ احسر جسه احسد 431/4 والنسانی فی الکیویٰ (7207)

حرار كتاب العدود ١٥٥ من كتاب العدود ١٥٥ من العالم العدود ١٥٥ من العالم العدود ١٥٥ من العالم العدود ١٥٥ من العالم العدود ١٥٠ من العالم العدود ١٥٠ من العالم العدود ١٥٠ من العالم العدود ١٥٠ من العالم ا

سیّدنا ابوسعید خدری فالنّف سیّت بین که رسول الله منظیّق نے فر مایا: "ماعز بن مالک کو لے جاؤ اسے رجم کر دو بم انہیں دبقیع غرقد میں لے گئے۔"اللّه کی قتم! نه ہم نے انہیں باندھا نہ ان کے لئے گھڑا کھودا بلکہ وہ خود کھڑے ہوئے ہم نے انہیں بڑیاں کنگر اور پھر مارے۔"

عَنُ أَبِى سَعِيُدٍ الْخُدُرِيِّ قَالَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَى اللهِ الْخُدُرِيِّ قَالَ بَمَاعِزِ بُنِ مَالِثٍ فَارُجُمُوهُ فَانُطَلَقْنَا بِهِ إِلَى بَقِيعِ النَّعُرُقَدِ فَوَاللهِ مَا أُوتَقُنَاهُ وَلَا حَفَرُنَا لَهُ وَلَكِينَ قَامَ فَرَمَيْنَاهُ بِالْعِظَامِ وَالْحَزَفِ وَالْجَنَدُلِ. • وَالْجَنْدُلِ. • وَالْجَنْدُلِ. • • وَالْجَنْدُلِ. • وَالْجَنْدُلِ. • وَالْجَنْدُلُ. • وَالْجَنْدُلِ. • وَالْجَنْدُلُ. • وَالْجَنْدُلُ. • وَالْجَنْدُلُ . • وَالْجُنْدُلُ . • وَالْمُ اللَّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّ

فوائد: معلوم ہوا کہ رجم کے لیے گر صاکھودنا ضروری نہیں۔ پھر یا ایسی کوئی چیز جوزخی کرنے یا ایسی کوئی چیز جوزخی کرنے یا ارنے کی اہلیت رکھتی ہواس کے ذریعے مارنا ہی مقصود ہے حتی کہ وہ مجرم قتل ہوجائے۔ 2366 حدَّثَنَا أَبُو نُعَیْم حَدَّثَنَا بَشِیرُ بْنُ الْمُهَاجِرِ

حَدَّثِي عَبُدُ اللهِ بُنُ بُرِيَّدَةَ عَنُ أَبِيهِ قَالَ كُنُتُ جَالِسًا عِنُدَ النَّبِي عَلَىٰ فَجَانَهُ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ مَاعِزُ بُنُ مَالِكٍ فَاعْتَرَفَ عِنْدَهُ بِالزِّنَا فَرَدَّهُ ثَلاث مَرَّاتٍ ثُمَّ جَاءَ الرَّابِعَةَ فَاعْتَرَف فَأَمَر بِهِ النَّبِيُّ عَلَىٰ فَيهَ إِلَى صَدُرِهِ فَحُفِرَ لَهُ حُفُرةٌ فَجُعِلَ فِيهَا إِلَى صَدُرِهِ وَأُمَرَ النَّاسَ أَنْ يَرُجُمُوهُ . •

سیّدنا عبدالله بن بریدة اپ والد سے بیان کرتے ہیں انہوں نے کہا: '' میں نبی مظامین کے پاس بیٹا ہوا تھا۔ آپ کے پاس ایک آدی آیا جے ماعز بن مالک کہتے ہیں اس نے آپ کے پاس زنا کا اقرار کیا آپ نے اسے تین بار واپس لوٹا دیا چوتھی باراس نے اقرار کیا تو نبی مظامین نے تک دیا اس کے لئے گھڑا کھودا جائے۔ اس میں انہیں سینے تک ویا اس کے لئے گھڑا کھودا جائے۔ اس میں انہیں سینے تک گاڑ دیا گیا' لوگوں کو تھم دیا کہ انہیں رجم کرو' (انہوں نے گاڑ دیا گیا' لوگوں کو تھم دیا کہ انہیں رجم کرو' (انہوں نے

اسے مارڈ الا)۔

فوائد: (۱) معلوم ہوا کہ گڑھا کھود کر مجرم کو سینے تک اس میں فن کرکے رجم کرنا سنت سے ثابت ہے۔ جبیبا کہ غامد بی عورت کے بارے آتا ہے "شہ امر ھا فحفر لھا الی صدر ھا . " (مسلم) پھر تھم کے مطابق اس کے لیے سینے تک گڑھا دکھودا گیا۔ (۲) ندکورہ اور سابقہ احادیث میں جو بظاہر اختلاف ہے اس کی تطبق یوں ہے کہ پہلے ان کے لیے گڑھا نہ کھودا گیا ہو پھران کے بھا گئے پردوبارہ پکڑ کر گڑھا کھود کر ان کورجم کیا گیا ہو۔ (واللہ اعلم) جس طرح مسلم میں ہے کہ وہ پھروں کی تکلیف کی وجہ سے بھاگ نکلے تھے۔

❶ صحيح: اخرجه مسلم، كتاب الحدود، باب من اعترف على نفسه بالزنا(1694) وصحيح ابن حباك(4438)

حسن: أخرجه احمد 347/5-348 ومسلم في الحدود، باب من اعترف على نفسه بالزنا (1695)

حَثَلُ الْمُلْفِئِ الْمُلَاثِئِ الْمُلَاثِ الْمُلَاثِ الْمُلَاثِ الْمُلَاثِ الْمُلِيثِ الْمُلَاثِ الْمُلَاثِ الْمُلَاثِ الْمُلَاثِ الْمُلَاثِ الْمُلِيثِ الْمُلَاثِ الْمُلْتِينِ الْمُلَاثِ الْمُلْتِينِ الْمُلَاثِ الْمُلْتِينِ الْمُلَاثِ الْمُلْتِينِ الْمُلَاثِ الْمُلْتِينِ الْمُلِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلِينِينِ الْمُلِينِينِي الْمُلِينِينِ الْمُلْتِينِي الْمُلْتِينِي الْمُلِينِينِي الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِي الْمُلْتِينِ الْمُلِينِي الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلِيلِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمِلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْمُلْتِينِ الْل

[15] بَابِ فِي الْحُكُمِ بَيُنَ أَهُلِ الْكِتَابِ إِذَا تَحَاكَمُوا إِلَى حُكَّامِ الْمُسُلِمِينَ اللهِ الْكِتَابِ إِذَا تَحَاكَمُوا إِلَى حُكَّامِ الْمُسُلِمِينَ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللّهُ اللهُ
2367 أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِع

سیدنا ابن عمر زالنیه کہتے ہیں یہودی رسول الله مطابقاتی کے یاس اپنا ایک مرد وعورت لائے۔جنہوں نے زنا کیا تھا۔ آپ نے فرمایا: "تم میں سے جوزنا کرتا ہے اسے کیا سزا دیتے ہو؟ انہوں نے کہا: ہم اس کے متعلق کھے نہیں یاتے۔عبداللہ بن سلام نے ان سے کہا:تم نے جھوٹ بولاً تو رات میں رجم کرنے کا حکم موجود ہے اگرتم سے ہو توتورات لا كريرهو وه تورات لائے اس كويره والے نے جو پڑھ کر سناتا تھا رجم کی آیت پر اپنا ہاتھ رکھ دیا۔عبداللد بن سلام والله نے کہا: بدکیا ہے؟ لوگوں نے اسے دیکھا تو کہنے لگا یہ رجم کی آیت ہے۔رسول اللہ م ان کے متعلق تھم دیا۔ وہ اس جگہ کے قریب رجم کئے گئے جہاں مجد کے پاس جنازے رکھے جاتے تھے۔ عبدالله کہتے ہیں: میں نے اس عورت کے ساتھی کو دیکھا اسے بقروں سے بیانے کے لئے اس کے آگے آتا تھا۔

عَن ابُن عُمَرَ أَنَّ الْيَهُودَ جَانُوا إِلَى رَسُوُلِ اللَّهِ ﷺ بِرَجُلٍ مِنْهُمُ وَامْرَأَةٍ قَدُ زَنَيَا فَقَالَ كَيُفَ تَفُعَلُونَ بِمَنُ زَنَى مِنْكُمُ قَالُوا لَا نَجِدُ فِيهَا شَيْئًا فَقَالَ لَهُمُ عَبُدُ اللَّهِ بُنُ سَلَام كَذَبُتُمُ فِي التَّوْرَاةِ الرَّجُمُ فَأْتُوا بِالتَّوُرَاةِ فَاتَلُوهَا إِنَّ كُنتُمُ صَادِقِيُنَ فَجَائُوا بِالتَّوْرَاةِ فَوَضَعَ مِـدُرَاسُهَا الَّذِي يَـدُرُسُهَا مِنْهُمُ كَفَّهُ عَلَى آيَةِ الرَّجُم فَقَالَ مَا هٰذِهٖ فَلَمَّا رَأُوا ذٰلِكَ قَالُوا هِيَ آيَةُ الرَّجُمِ فَأَمَرَ بهِمَا رَسُولُ اللهِ عَلَى حَيُثُ تُوضَعُ الْجَنَائِزُ عِنْدَ الْمَسْجِدِ قَدالَ عَبُدُ اللُّهِ فَدرَأَيْتُ صَاحِبَهَا يُخْبِيُّعَلَيْهَا يَقِينُهَا الْحِجَارَةَ. •

فواند: (۱) "السمدراس" يه يهودكى كتب كو يرضف والے كو كتب بي (۲) جب الل كتاب ايخ معاملات ، جمكر عملان قاضى كے پاس لے كرآ ئيں تووہ كتاب وسنت كے مطابق ،ى فيصله كرے گا۔ الم مر ندى اس حديث كے ذكر كے بعد كتب بيں "و هو قول احد مد واست حاق و قال بعضهم لايقام عليهم الحد فى الزنا والقول الاول اصح : (تر ندى بعد الحديث: 1461) يكي تول احمد واسحاق كا ہے اوران ميں سے بعض نے كہا كه ان برحد قائم نہيں كى جائے گى جبكه پہلا تول ،ى زيادہ صحيح ہے واسحاق كا ہے اوران ميں سے بعض نے كہا كه ان برحد قائم نہيں كى جائے گى جبكه پہلا تول ،ى زيادہ صحيح ہے

 [◘] متفق عليه: البخارى، كتاب الحدود، باب أحكام اهل الذمه.....(6841) ومسلم، كتاب الحدود، باب رجم اليهود أهل الذمة في الزنا(4412-4413)

العدود ١٥٥ كال العدود ١٥٥ كتاب العدود ١٥٥ كتاب العدود ١٥٥

(m) رجم کی سزاان زانی مردول کے لیے ہوگی جوشادی شدہ ہوں۔

[16] بَابِ فِي حَدِّ الْمُحُصَنِينَ بِالزِّنَا شادى شده زانى كى حد

2368 - أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ

سیدنا ابن عباس و فائی کہتے ہیں کہ سیدنا عمر و فائی نے کہا:
اللہ تعلیٰ نے سیدنا محمہ طیف آئی کو حق کے ساتھ بھیجا اور
آپ پر کتاب نازل کی اور جوا تارا اُس میں رجم کی آیات
بھی تھی۔ ہم نے اسے پڑھا یاد کیا اور سمجھا رسول اللہ طیف ہے اُس نے رجم کیا۔ اور آپ کے بعد ہم نے بھی رجم کیا۔ میں اس
بات سے ڈرتا ہوں۔ کافی عرصہ گزرنے کے بعد لوگوں کو
بات سے ڈرتا ہوں۔ کافی عرصہ گزرنے کے بعد لوگوں کو
کوئی بید نہ کہے۔ ہم کتاب اللہ میں رجم کی آیت نہیں
پاتے۔ حالانکہ کتاب اللہ میں وہ شخص رجم کے جانے کا
مستحق ہے جس نے زنا کیا ہو۔ خواہ مرد ہو یا عورت البتہ
شادی شدہ ہو۔ جبکہ اس پر گواہی ہو جائے حمل ہو یا وہ
قرار کرلے ''

عَنِ ابُنِ عَبّاسٍ قَالَ قَالَ عُمَوُ إِنَّ اللَّهُ تَعَالَى بَعَثَ مُحَمَّدًا عِنْ بِالْحَقِّ وَأَنُولَ عَلَيْهِ الْحَقِّ وَأَنُولَ الْمَهُ عَلَيْهِ الْحَقِّ وَأَنُولَ آيَةُ الرَّجُمِ فَقَرَأُنَاهَا وَوَعَيْنَاهَا وَعَقَلْنَاهَا وَرَجَمُ اللَّهِ فَلَ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى مَنْ زَنِى مِنَ الرِّجَلِ وَالرَّجُمُ فِي كِتَابِ اللَّهِ عَلَى مَنْ زَنِى مِنَ الرِّجَالِ وَالنِسَاءِ وَقَى عَلَى مَنْ زَنِى مِنَ الرِّجَالِ وَالنِسَاءِ وَلَى اللَّهِ الْبَيْنَةُ أَو الرَّجُمُ اللَّهُ الْبَيْنَةُ أَوْ الاعْتِرَافُ . •

ف واند: ایسے حالات جوخواہش کی آگ کو شنٹرا کردیں بید حالات چاہے شادی ہوجانے کی صورت میں پیدا ہوئے ہوں یا شباب کے گزرجانے کی بنا پران کے باوجودا گرکوئی حرام کاری کا مرتکب ہوتو یہ اس کی قباحت و شناعت کودو چند کردینے کا باعث ہے لہذا ایسے محض کو انتہائی سخت سزا کا ستحق تھم رایا گیا ہے کہ ایسے کوزمین میں دبا کر پھروں کے ذریعے ہلاک کردیاجائے۔(العیاذباللہ)

 [◘] متنفق عليه: البخاري، كتاب الحدود، باب الاعتراف بالزنا(6829) ومسلم، كتاب الحدود، باب رجم الثيب في الزنا
 (4394) وابوداؤد، كتاب الحدود، باب في الرجم (4418)

که بوژها (شادی شده) مردوعورت جب زنا کریں ،تو انہیں ضرور رجم کرو۔

2369 أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا بَشِيْرُ بْنُ الْمُهَاجِر

حَدَّثَنِي عَبُدُ اللَّهِ بُنُ بُرَيْدَةَ عَنُ أَبِيهِ قَالَ

سیدنا عبدالله بن بریده رفاهدای والدے نقل کرتے ہیں کہ انہوں نے کہا: میں نبی طفی کی اس بیا تھا، تو آب مطفی این بنو غامد کی ایک عورت نے آ کر كها "اك الله ك ني السيكة من في زناكيا ب، من عامتی مول که آب مشخطین مجھ یاک کردیں۔ آب مشخطین نے اس سے فرمایا: 'واپس چلی جاؤ'' اگلے دن پھر وہ آپ کے پاس آئی، اُس نے آپ کے پاس زنا کا اقرار کیا اور کہا:''اے اللہ کے نمی! مجھے یاک کر دیں شاید آپ مجھے ماعز بن مالک کی طرح واپس کرنا جاہتے ہیں اللہ کی قتم! میں حاملہ ہوں۔" نبی ﷺ نے اس سے فرمایا: ''واپس چلی جاحتی کہ جنم دے۔'' جب اس نے جنم دیا تو بيح كوكير بي لييث كرلائي اوركها: "الله ك بي مين نے اسے جنم دیا ہے۔'' آپ نے فرمایا:'' جاؤ اسے دودھ یلاؤ پھراس کا دودھ چھڑانا' دودھ چھڑا کروہ پھر بیچے کو لے كرآئي اس كے ہاتھ ميں روٹي كا ايك مكڑا تھا۔ اس نے کہا:''اے اللہ کے نبی! میں نے اس کا دودھ چھڑایا ہے۔'' نی منت کی از حکم دیا اور بچه کسی مسلمان کودے دیا گیا۔ پھر آپ نے حکم دیا اس کے لئے ایک گھڑا کھودا گیا اور سینے تك اس كواس كے اندر گاڑ ديا گيا۔ پھر آپ نے لوگوں كو اس کے رجم کا حکم دیا۔ خالد بن ولید ایک پھر لے کر گئے اس کے سریر پھینکا توان کے رخساریراس کے خون کا چھینٹا

كُنُتُ جَالِسًا عِنْدَ النَّبِيِّ عِنْهُ فَجَائَتُهُ امُ رَأَةٌ مِنْ بَنِي غَامِدٍ فَقَالَتُ يَا نَبِيَّ اللَّهِ إِنِّي قَدْ زَنَيْتُ وَإِنِّي أُرِيْدُ أَنْ تُطَهِّرَنِي فَقَالَ لَهَا ارُجعِيُ فَلَمَّا كَانَ مِنَ الْغَدِ أَتَّتُهُ أَيُضًا فَاعُتَرَفَتُ عِنْدَهُ بِالزِّنَا فَقَالَتُ يَا نَبِيَّ اللَّهِ طَهِّرُنِي فَلَعَلَّكَ أَنُ تَرُدَّنِي كَـمَـا رَدَدُتَ مَـاعِزَ بُنَ مَالِئْكِ فَوَاللَّهِ إِنِّي لَحُبُلَى فَقَالَ لَهَا النَّبِيُّ عِنْ الْجعِي حَتْى تَلِدِي فَلَمَّا وَلَدَتُ جَائَتُ بالصَّبيّ تَحْمِلُهُ فِي خِرُقَةٍ فَقَالَتُ يَا نَبِيَّ اللَّهِ هَذَا قَـدُ وَلَدُتُ قَالَ ((فَاذُهَبِي فَأَرُضِعِيْهِ ثُمَّ افُطِ مِيهِ)) فَلَمَّا فَطَمَتُهُ جَائَتُهُ بالصَّبيّ فِي يَدِهِ كِسُرَةُ خُبُزِ فَقَالَتُ يَا نَبِيَّ اللَّهِ قَدُ فَطَمْتُهُ فَأَمَرَ النَّبِيُّ عِنْكُمْ بِالصَّبِيّ فَدُفِعَ إِلَى رَجُلِ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ وَأَمَرَ بهَا فَحُفِرَ لَهَا حُفُرَةٌ فَجُعِلَتُ فِيهَا إِلَى صَـدُرِهَا ثُمَّ أَمَرَ النَّاسَ أَنُ يَرُجُمُوهَا فَأَقُبَلَ خَالِـ لُهُ بُنُ الْوَلِيدِ بِحَجَرٍ فَرَمَى رَأْسَهَا فَتَلَطَّخَ الدُّمُ عَلَى وَجُنَةِ خَالِدِ بُنِ الْوَلِيدِ فَسَبَّهَا فَسَمِعَ النَّبِيُّ اللَّهُ سَبَّهُ

234 كتاب الحدود المتاتن الكالاتخ

بر گیا۔ خالد بن ولید نے اسے گالی دی۔ نبی مشکھتان نے اس کی گالی کومن لیا۔اور فر مایا:''اے خالد! تھبرواسے گالی نہ دو مجھے اس ذات کی قتم! جس کے ہاتھ میں میری جان یقینا اس نے ایس توبہ کی ہے اگر میکس وصول کرنے والا الی توبد کرتا تو وہ بھی بخش دیا جاتا۔''پھر آپ کے حکم سے اس کی نماز جنازہ پڑھائی گئی اوراسے دفن کیا گیا۔'' إِيَّاهَا فَقَالَ مَهُ يَا خَالِدُ لَا تَسُبَّهَا فَوَالَّذِي نَفُسِي بِيَدِهِ لَقَدُ تَابَتُ تَوْبَةً لَوُ تَابَهَا صَاحِبُ مَكُس لَغُفِرَ لَهُ فَأَمَرَ بِهَا فَصُلِّي عَلَيْهَا وَ دُفِنَتُ . 0

فوائد: (۱) زنا کے اعتراف کے لیے جار دفعہ اقرار ضروری نہیں (۲) صحابہ رفحالتہ اس قدر پختہ ایمان کے حامل تھے کہ جان کی قیمت پر بخشش طلب کرلیا کرتے تھے (۳) کسی عذر کی بنایر حدکومؤخر کیا جاسکتا ہے(م) رجم کے لیے گڑھا کھود کرمجرم کو اس میں فن کرنا جائز ہے۔ (۵) حد گناہ کے کفارے ،بندے کو یاک کردینے کا سبب ہوتی ہے۔ (۲) جگاٹیکس بیانتہائی کبیرہ گناہ ہے۔

> [17] بَابِ الْحَامِلِ إِذَا اعْتَرَفَتُ بِالزِّنَا حامله عورت جب زنا كااعتراف كرےاس كابيان

2370 حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِير حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي قِلابَةَ عَنْ أَبِي الْمُهَلَّبِ..... عَنُ عِـمُـوَانَ بُن حُصَيْن أَنَّ امْوَأَةً مِنُ سيّدنا عمران بن هين رايُنْ لا كتّ بين جبيد س ايك عورت نبی مشکی اس آئی۔ وہ زناکی وجہ سے حاملہ تھی۔اس نے کہا: یا رسول اللہ! میں نے حدوالا کام کیا ہے۔ آ ب مجھ یرحد نافذ کریں رسول اللہ مطاق نے اس کے وارث کو بلایا اورفر مایا: '' (اسے لیے) جاؤ اور اس کے ساتھ اچھا سلوک رکھو جب وہ جنم دے تو اِسے میرے پاس لے کر آنا۔"اس نے ایسے ہی کیا۔ رسول اللہ عظیم نے اس کے (رجم) کا حکم دیاتو اس کے کیڑے باندھ دیئے گئے اور وہ رجم کی گئی۔ پھرآ پ نے اس کی نماز جنازہ پڑھی۔سیّدناعمر

و الله نے کہا: ''اے اللہ کے رسول! آپ نے اس کی نماز

جُهَيْنَةَ أَتَتِ النَّبِيِّ عِيدٌ وَهِيَ حُبُلَي مِنَ الزِّنَا فَقَالَتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَصَبُتُ حَدُّا فَأَقِمُهُ عَلَىَّ فَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ وَلِيَّهَا فَقَالَ اذُهَبُ فَأَحُسِنُ إِلَيْهَا فَإِذَا وَضَعَتُ حَمُلَهَا فَأْتِنِي بِهَا فَفَعَلَ فَأَمَرَ بهَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَشُكَّتُ عَلَيُهَا لِيَابُهَا ثُمَّ أَمَرَ بِهَا فَرُحِمَتُ ثُمَّ صَلَّى عَلَيْهَا فَقَالَ عُمَرُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتُصَلِّي عَلَيُهَا وَقَدُ زَنَتُ فَقَالَ لَقَدُ تَابَتُ تَوُبَةً

تَوْ فُسِمَتُ بَيْنَ سَبْعِيْنَ مِنْ أَهُلِ الْمَدِينَةِ جنازه پُرْسَى ہے حالانکہ وہ زانی ہے۔' تو آپ نے فرمایا: لَوَ فُسِمَتُ بَیْنَ سَبْعِیْنَ مِنْ أَهُلِ الْمَدِینَةِ جنازه پُرْسَی ہے حالانکہ وہ زانی ہے۔' تو آپ نے فرمایا: لَوَسِعَتُهُمْ وَهَلُ وَجَدُتَ أَفْضَلَ مِنْ أَنُ ''اس نے ایسی توبہ کی ہے کہ اگر اہل مدینہ کے سرّ آ دمیوں

اس کے ایک توبہ کی ہے کہ اگر اہل مدینہ کے ستر اومیوں پرتقسیم کر دی جائے تو ان کے لئے کافی ہوگی۔کیا اس سے افضل کوئی اور بات ہے کہ اس کے اللہ عز وجل کے لئے

افضل کوئی اور بات ہے کہ اینی جان قربان کر دی۔''

فوائد: (۱) اسلام غیور ما لک کاغیرت والا دین ہے اس کے مقابلے میں اپنی ہے جاغیرت کا ظہار انتہائی ناپندیدہ ہے جبیبا کہ آپ میں گئے نے اس معتر ضہ کواس کے ولی کے حوالے کر دیا اس یقین کے ساتھ ساتھ کہ یہ اس سے اچھاسلوک کرے گا اور ساتھ اس کی نقیعت بھی کر دی (۲) عوام کے ساتھ ساتھ حکومت کا بھی فرض بنتا ہے کہ وہ ان کو انصاف مہیا کرے ان کے جذبات کا خیال رکھے تا کہ قانون کو ہاتھ میں لینے کی نوبت ہی نہ آئے۔

[18] بَابِ فِي الْمَمَالِيكِ إِذَا زَنَوْا يُقِيمُ سَادَاتُهُمْ عَلَيْهِمُ الْحَدَّ دُوْنَ السُّلُطَانِ زانی غلاموں پر باوشاہوں کے علاوہ ان کے مالکوں کے حد جاری کرنے کا بیان 2371 حَدَّنَا مَالِكُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ

عُتْبَةً

عَنُ زَيُدِ بُنِ خَالِدِ الْجُهَنِيِّ وَأَبِيُ هُرَيُرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﴿ لَكُمْ الْاَمَةِ تَزُنِى وَلَمُ تُحْصَنُ فَقَالَ إِنْ زَنَتُ فَاجُلِدُوهَا ثُمَّ إِنْ زَنَتُ فَاجُلِدُوهَا .قَالَ فَمَا أَدُرِى فِى الثَّالِثَةِ أَوْ فِى الرَّابِعَةِ فَبِيعُوْهَا وَلَوُ بضَفِيْر. ۞

رجم اليهود أهل الذمة في الزنا(4423)

جَادَتُ بِنَفُسِهَا لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ . •

فواند: (۱) معلوم مواا گرلوندی بھی زنا کی مرتکب موگی تواسے بھی مستوجب سزاکھ ہرایا جائے گا

❶ صحيح مسلم، كتاب الحدود، باب من اعترف على نفسه بالزنا(4408) وابوداؤد، كتاب الحدود، باب العرأة التي أمر
 النبي صلعم ير حمها سن جهينة (4440) والترمذي، كتاب الحدود، باب تربص الرجم بالحبلي حتى تضع (1435)
 ② متفق عليه: البخاري، كتاب العتق، باب كراهية التطاول على الرقيق (2555-2556) ومسلم، كتاب الحدود، باب

المحدود عن الماريمين الماريمين المحدود عن المحدود عن المحدود عن المحدود المحدو

اوراس آزاد کے مقابلے میں نصف حدلگائی جائے گی۔ قرآن میں ہے ﴿ فَعَلَيْهِنَّ نِصُفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنْتِ مِسَ الْسَعَانِ عَلَى الْمُحْصَنْتِ مِسَنَ الْسَعَانِ (النساء:25) ان (لونڈیوں) پر آزاد کے مقابلے میں نصف عذاب (سزا) ہے۔ (۲) اگرلونڈی مسلسل زنا کی مرتکب ہوتی ہے تواسے بچ کراس سے جان چیڑانی چاہیے۔

[19] بَابُ فِي تَفُسِيْرِ قَوْلِ اللّهِ تَعَالَىٰ : ﴿أَوْ يَجُعَلَ اللّهُ لَهُنَّ سَبِيًّلا﴾ آيت ﴿أَوْيَجُعَلَ اللّهُ لَهُنَّ سَبِيًّلا﴾ كي تفير

2372 ـ أَخْبَرَنَا بِشْرُ بْنُ عُمَرَ الزَّهْرَانِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ الْحَسَنِ عَنْ حِطَّانَ بْنِ عَبْدِ اللهِ

عَنُ عُبَادَةَ بُنِ الصَّامِتِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَنَى عُدُواْ عَنِى قَدُ اللهِ عَنَى قَدُ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَ

فوائد: (۱) قرآن میں اللہ تعالی نے زناکارعورت کوقیدر کھنے کا تھم دیا تھا تا آئکہ کوئی اور تھم نازل ہو بعد میں اللہ تعالی نے بی تھم نازل فرما دیا کہ کنورہ ، کنواری سے زنا کر بے تو سو، سوکوڑ نے اور ایک سال کی جلاوطنی ہے۔ البتہ عورت کی جلاوطنی کے بارے میں اختلاف ہے کیکن حدیث کاعموم عورت کے لیے بھی جلاوطنی کا متقاضی ہے اور یہی رائح ہے (ان شاء اللہ) (۲) شادی شدہ مرد یا عورت کو پھر سوکوڑ نے مارے جا کمیں گے اور رجم کیا جائے گا جبکہ فقط رجم پراکتفا کرنا بھی درست ہے جس طرح کہ آپ طیف آئے نے باعز اور عامر نے رقم کا تھم دیا اور جمہوراتی کے قائل ہیں۔

2373 ـ أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنِ أَنْبَأَنَا هُشَيْمٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنِ الْحَسَنِ عَنْ حِطَّانَ بْنِ عَبْدِ الله

❶ صحيح مسلم، كتاب الحدود، باب حد الزنا(4390) والترمذي، كتاب الحدود، باب الرحم على الثيب (1434) وابن ماجه، كتاب الحدود، باب حدالزنا (2550)

237 كتاب الحدود المُتَاوَّى الْكَالِيَّةِ عَلَيْهِ

سیدنا عبادة بن صامت رفائق نبی سی سے سیلے کی طرح

عَنُ عُبَادَةَ بُنِ الصَّامِتِ عَنِ النَّبِي ﷺ بنُحُوهِ . 9

ہی بیان کرتے ہیں۔

[20] بَابِ فِيمَنُ يَقَعُ عَلَى جَارِيَةِ امْرَأْتِهِ وہ شخص جواینی بیوی کی لونڈی سے زنا کرنے والے کا بیان

2374 ـ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا أَبَانُ بْنُ يَزِيدَ.....

سیدنا قادة رفائند کہتے ہیں کہ خالد بن عرفط نے مجھے لکھا کہ حبیب بن سالم نے بیان کیا ایک غلام جس کا لقب گر تور تھا نے اپنی بیوی کی لونڈی سے زنا کرلیا۔ بیہ واقعہ نعمان بن بشرکو بتایا گیا۔ انہوں نے کہا: میں اس کے متعلق اچھا فیصلہ کروں گااگر اس کے لئے عورت نے اجازت دی تو میں اسے سوکوڑے لگاؤں گا اور اگر اس نے اسے اجازت نہیں دی تو میں اسے رجم کروں گا۔عورت ہے کہا گیا وہ تیرا شوہر ہے!اور رجم کیا جائے گا اس لئے کہو: میں نے اسے اجازت دی تھی۔اس نے کہا: میں نے اسے احازت دی تھی تو اسے سو کوڑے لگائے گئے۔ کیجیٰ کہتے ہیں:"بہ قول مرفوع ہے۔"

عَنُ قَتَاكَةً قَالَ كَتَبَ إِلَىَّ خَالِدُ بُنُ عُرُفُطَةَ عَنُ حَبيب بُن سَالِمِ أَنَّ غُلامًا كَانَ يُنبَزُ قُرُقُورًا فَوَقَعَ عَلَى جَارِيَةٍ امُرَأَتِهِ فَرُفِعَ ذٰلِكَ إِلَى النُّعُمَانِ بُنِ بَشِيُرِ فَقَالَ لَأَقُضِيَنَّ فِيهِ بِقَضَاءٍ شَافٍ إِنْ كَانَتُ أَحَلَّتُهَا لَهُ جَلَدُتُهُ مِائَةً وَإِنْ كَانَتُ لَمُ تُحِلَّهَا لَهُ رَجَمُتُهُ فَقِيلَ لَهَا زَوُجُلِثِ فَقَالَتُ إِنِّي قَدُ أَحُلَلُتُهَا لَهُ فَضَرَبَهُ مِائَةً قَالَ يَحْيَى هُوَ مَرُفُوعٌ. ٥

فوائد: ينبز قرقورًا " يعنى اسة قرقور كالقب دياجاتا تها، قرقور بينظيم بحرى جهاز كوكهاجاتا ہے۔

2375 حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرِ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي بِشْرِ عَنْ خَالِدِ

ابْن عُرْ فُطَةَ عَنْ حَبيب بْن سَالِم

عَنِ النُّعُمَانِ بُنِ بَشِيرٍ عَنِ النَّبِيِّ عِنْ

نقل کرتے ہیں۔

سیّدنا نعمان بن بشرنبی مصفیق سے پہلی حدیث کی طرح

1 صحيح: مالقه حديث بي مررآ ألى بـ

عبوقوفاً ضعيف: اخرجه احمد 276/4 والنسائي، كتاب

النكاح،باب احلال الفر(3360)وابن ماجه، كتاب الحدود، باب من وقع على جارية امرأته (2551)

€ ضعيف: ال من خالد بن عرفطة ضعيف ب_اخرجه احمد 277/4و الطيالس 300/1و والترمذي في الحدود (1451) وابن ماجه في الحدود،باب من وقع على جارية امرأته (3551)

عَنِينَ الْكَلِيمَيْ عَلَيْهِ (كَتَّابِ الْحَدُّودِ (كَتَّابِ الحدود () كَتَّابِ الحدود () كَتَّابُ الْحَد 21 س. بَابِ الْحَدُّ كَفَّارَةٌ لِمَنُ أُقِيْمَ عَلَيْهِ

[21] بَابِ الْحُدُ كُفَارَةً لِمَنَ اقِيمَ عَلَيهِ مدجس بِرِنافد كَي حِائِ وه اس كِ لِحَ كَفَاره بِ

2376 ـ أَخْبَونَا مَوْوَانُ بْنُ مُحَمَّدِ الدِّمَشْقِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ عَنْ مُحَمَّدِ الدِّمَشْقِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ عَنْ مُحَمَّدِ ابْنِ الْمُنَكْدِر

ابن خزیمہ بن ثابت رفائق اپنے والدسے بیان کرتے ہیں کہ انہوں نے کہا: رسول اللہ منظم اللہ نے فرمایا: "جس پر حد قائم کی گئی تو اس کا وہ گناہ بخش دیا گیا۔"

عَنِ ابُنِ خُزَيْمَةَ بُنِ ثَابِتٍ عَنُ أَبِيهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَيْهِ حَدَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَيْهِ حَدَّ عَلَيْهِ حَدَّ عُفِهَ لَهُ ذَٰلِكَ الذَّنُدُ. • عُفِهَ لَهُ ذَٰلِكَ الذَّنُدُ. • وَاللَّهُ الدَّنُدُ. • وَاللَّهُ الدَّنُونُ اللَّهُ الل

فوائد: حدے اس کی وجہ بننے والا گناہ معاف ہوجاتا ہے اور بیمعافی جوجان کود کھ دے کر یا ہلاکت میں ڈال کرحاصل کی گئی ہوتی ہے بیستر بندے یا ٹیکس خور کی معافی کا ذریعہ بھی بن سکتی ہے جیسا کہ پیچھے (2370,2369) میں گزر چکاہے۔



[•] حسن: الحرجه طبراني في الكبير 88/4 حديث 3731) والدار قطني 214/3 جب كمع باده بن صامت راهيد كامتن عليه صدي بطور شابد موجود ب-



12 ومن المنذور والايمان نذرول كابيان

[1].... بَابِ الْوَفَاءِ بِالنَّذُرِ نذر بوری کرنے کا بیان

2377 أَخْبَرَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِيْ بِشْرِ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ ..

عَن ابُن عَبَّاس أَنَّ الْمُسرَأَةً نَذَرَتُ أَنُ تَحُجَّ فَمَاتَتُ فَجَاءَ أَخُوهَا إِلَى رَسُول اللهِ عَن ذٰلِكَ فَعَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَوُ كَانَ عَلَيْهَا ذَيْنٌ كُنُتَ قَاضِيَهُ قَالَ نَعَمُ قَالَ فَاقُصُوا اللَّهَ فَاللَّهُ أَحَقُّ بِالْوَفَاءِ . •

سیدنا این عباس و الله کہتے ہیں ایک عورت نے حج کی نذر مانی اور وہ مرگئ اس کا بھائی رسول اللہ ﷺ کے پاس گیا اوراس كم متعلق يوجها تورسول الله الطيرية في اسعفرمايا: ''اگراس پر قرض ہوتو اسے تو ادا کرتا؟ اس نے کہا: جی ہال' آپ نے فرمایا: "نذر پوری کرو سے پوری کئے جانے کی زیادہ مشخق ہے۔''

2378 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا حَفْصٌ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ نَافِع

سيّدنا عمر فِي الله الله على من في كها: يا رسول الله الله على في جاہلیت میں نذر مانی تھی پھر اسلام قبول کر لیا آپ نے فرمایا:''این نذر بوری کرو۔''

عَن ابُن عُمَرَ عَنْ عُمَرَ قَالَ قُلُتُ يَا رَسُولَ اللُّهِ إِنِّيُ نَذَرُتُ نَذُرًا فِي الُجَاهِ لِيَّةِ ثُمَّ جَاءَ الْإِسُلَامُ قَالَ فِ

بِنَدُرِكَ . ٥

[●] صحيح البخاري، كتاب الأيمان والنذر، باب من مات عليه نذر (6699)

[◙] متفق عليه: البخاري، كتاب الايمان والنذو رباب اذا نذر أوحلف أن لايكلم انسانا في الحاهلية (6697) ومسلم، كتاب الأيمان، باب نذر الكافر، وما يفعل فيه اذا اسلم(4268-4269)

240 كتاب النذور والايمان EST | [[[] []] [2] بَابِ فِي كَفَّارَةِ النَّذُر

نذر کا کفارہ دینے کا بیان

2379 أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيْدِ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ زَحْرِ عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ

الرُّعَيْنِيِّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَالِكٍ .

سیّدنا عقبہ بن عامر جنی کہتے ہیں: میری بہن نے اللّٰد کے لئے پیدل اور نظے سر ج کی بذر مانی میں نے اس کا رسول الله ﷺ تع ذكر كيا-آب فرمايا: "اين بهن سے كهو وہ جا در اوڑ ھے اور سواری کرے اور نتین ون روزہ رکھے۔''

عَنُ عُقُبَةَ بُنِ عَامِرِ الْجُهَنِيِّ قَالَ نَذَرَتُ أُخْتِي أَنُ تَحُجَّ لِلَّهِ مَاشِيَةً غَيْرَ مُخْتَمِرَةٍ فَذَكَسرُتُ ذٰلِكَ لِسرَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَـقَـالُ((مُـرُ أُخُتَكَ فَـلُتَخُتَمِرُ وَلُتَرْكَبُ وَلُتَصُمُ ثَلاثَةَ أَيَّام)). •

2380 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ أَخْبَرَنِيْ قَتَادَةُ عَنْ عِكْرِمَةَ

عَنِ ابُنِ عَبَّاسِ أَنَّ أُخُتَ عُقْبَةَ نَلَوَتُ سیدنا این عباس فالنف کہتے ہیں عقبہ کی بہن نے بیت اللہ أَنُ تَسَمُشِىَ إِلَى الْبَيْتِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَنُّ نَدُر أُخُتِكَ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنُ نَدُر أُخُتِكَ لتَرُ كُبُ وَ لُتُهُد هَدُيًا . ٥

کی طرف پیدل جانے کی نذر مانی۔رسول الله طفی الله فر مایا: ''الله تعالی کوتمهاری بهن کی نذر کی کوئی ضرورت نہیں وہ سواری کرے اور (کفارہ کے طوریر) قربانی کرے۔"

فواند: اینے آپ کومشقت میں ڈالنا کوئی نیکی نہیں، دین سے دورلوگ اپنی تمام تقصیروں کا کفارہ بامشقت نذر سجھتے ہیں کہ اگر ہم نے پیدل یا سائیل وغیرہ پرکسی سرکاریا پیرصاحب کے دربار کی حاضری دے دی تو ہم بخشے جائیں گے یمل عبث ہونے کے ساتھ ساتھ شرک کے زمرہ میں بھی آتا ہے۔ دین میں جائز نذر کی بھی ترغیب نہیں چہ جائے کہ شرکیدامور پرمشتمل نذر مانی جائے ۔احادیث میں واضح راہنمائی موجود ہے۔ 2381 حَدَّثَ نَا سَعِيْدُ بْنُ مَنْصُوْرِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِي عَمْرِو عَنِ اْلْأَعْرَجِ ..

❶ متفق عليه: البخاري، كتاب جزاء الصيد،باب من نذر المشي الى الكعبة(1866(ومسلم، كتاب النذر،باب من نذر أن يمشى الى الكعبة (4226-4227)

² صحيح: ابوداؤد، كتاب الأيسان والنذور،باب من رأى عليه كفارة اذا كان في معصية (3296-3297 3295-) والبيهقي، كتاب النذور،باب الهدى فيها ركب79/10واخرجه احمد239/1

سیّدنا ابو ہریرۃ خالیّو کہتے ہیں کہ رسول الله طفیۃ نے کسی بوڑھے کو دیکھا جو اپنے بیٹوں کے ساتھ جا رہا تھا۔ آپ نے فرمایا: ''اس کا کیا حال ہے؟ اس کے بیٹوں نے کہا: اس نے چلے کی نذر مانی تھی' آپ نے فرمایا: ''سوار ہو جاؤ کیونکہ اللہ تمہاری نذر سے تجھ سے بے یرواہ ہے۔''

عَنُ أَبِى هُرَيُرَدةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَذُرَكَ شَيْخًا يَسُمْشِى بَيْنَ ابْنَيُهِ فَقَالَ مَا شَأْنُ هَذَا الشَّيْخِ فَقَالَ ابْنَاهُ نَذَرَ أَنُ مَا شَأْنُ هَذَا الشَّيْخِ فَقَالَ ابْنَاهُ نَذَرَ أَنُ يَسَمُشِى . فَقَالَ ابْنَاهُ نَذَرَ أَنُ يَسَمُشِى . فَقَالَ ارْكَبُ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌ يَسُمُشِى . فَقَالَ ارْكَبُ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌ يَعُمُلُكَ وَعَنُ نَذُرِكَ . ٥

2382 - أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِى قِلَابَةَ عَنْ أَبِى

لَمُهَلَبِ.....

سیّدنا عمران بن حصین رفالنّهٔ کہتے ہیں که رسول الله مطّعظیّم الله مطّعظیّم کے فرمایا:''الله کی نافر مانی کی نذر پوری نہیں کرنی چاہئے۔ اور نه ہی وہ نذر جس کا ابن آ دم (اس کے اختیار میں نه

عَنُ عِمُرَانَ بُنِ مُصَيْنٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَيْ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ وَفَاءَ لِنَذُرٍ فِى مَعُصِيَةِ اللهِ وَلَا فِيمَا لَا يَمُلِكُ ابُنُ آدَمَ . ٥

2383 - حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ الْمَلِكِ الْأَيْلِيِّ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ

مُحَمَّدٍ

سیدہ عائشہ رہا تھا کہتی ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: ''جس نے اللہ کی اطاعت کی نذر مانی اس کی اطاعت کرنے اور جس نے اللہ کی نافرمانی کی نذر مانی وہ اس کی نافرمانی خرمانی
عَنُ عَائِشَةَ قَالَتُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ فَلَيُطِعُهُ وَمَنُ لَلَّهِ فَلَيُطِعُهُ وَمَنُ لَلْهَ فَلَيُطِعُهُ وَمَنُ لَلْهَ فَلَيُطِعُهُ وَمَنُ لَلْهَ فَلَيُطِعُهُ وَمَنُ لَلْهَ فَلَيْطِعُهُ وَمَنُ لَلْهَ فَلَا يَعُصِهِ . ۞

 [◘] صحیح مسلم، کتاب النذور، باب من نذر أن قلشي الى الكعبة (4224) وابن ماجه، كتاب الكفارات ، باب من نذر أن يحج ماشيا (2135)

[◘] صحيح مسلم، كتاب النذور، باب لا وفاء لنذر في معصية الله ولا فيها لا يملك العبد (4221) وابن ماحه، كتاب الكفارات، باب النذر في المعصية (2124)

³ صحيح البخاري، كتاب الأيسان والنذور، باب النذور، باب ماجاء في النذر في معصية (3289) والنسائي كتاب الأيمان والنذور، باب النذر في المعصية (3812)

العَلَمْ اللَّهُ اللّلْمُ اللَّهُ اللّ

فوائد: سس نذر بورا کرنا واجب ہے بصورت دیگر آدمی گنهگار ہوگا اگر کسی وجہ سے نیک نذر پوری نہ ہو سکے تو قتم کی طرح کفارہ ادا کرنے سے نذر کا وجوب ختم ہوجاتا ہے نافر مانی کی نذر مانے والے اور کفارہ دے کرمعانی ماگئی جا ہے۔

[4] بَابُ مَنُ نَذَرَ أَنُ يُصَلِّى فِى بَيْتِ الْمَقُدِسِ أَيُجُزِئُهُ أَنُ يُصَلِّى بِمَكَّةَ جَلَاسَ بَابُ مِنْ الْمُقَدِّسِ مِينِ الْمَقْدِسِ مِينِ الْمَقْدِسِ مِينِ الْمُقَدِّسِ مِينِ اللهِ هَا كَانُ اللهِ هَا كَانُ اللهِ هَا كَانِيانِ؟

2384 - حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ حَبِيبٍ بْنِ أَبِى بَقِيَّةَ الْمُعَلِّمِ عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِى رَبَاحِ

> عَنُ جَابِرِ بُنِ عَبُدِ اللّهِ أَنَّ رَجُلًا قَالَ يَا رَسُولَ اللّهِ إِنِّى نَلَرُتُ إِنُ فَتَحَ اللّهُ عَلَيْكَ أَنُ أُصَلِّى فِى بَيْتِ الْمَقْدِسِ فَقَالَ صَلِّ هَا هُنَا فَأَعَادَ عَلَيْهِ ثَلاثَ مَرَّاتٍ فَقَالَ النَّبِيُّ عِنَى فَشَأْذُكَ إِذَنُ . •

سیّدنا جابر رفی نیخد بن عبدالله کهته بین کسی آدمی نے کہا: اے
الله کے رسول! میں نے نذر مانی تھی اگر الله نے آپ کو فتح
دی تو میں بیت المقدس میں نماز پڑھوں گا۔ آپ نے
فرمایا: "بہیں نماز پڑھ لو۔" اس نے تین دفعہ اسے دھرایا تو
نی سے ایک اللہ نے فرمایا: " مجھے اختیار ہے۔"

[5] بَابِ النَّهُى عَنِ النَّذُرِ أَنْذُر كَيْ مِمَانَعت

2385 - أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَوَانَةً عَنْ مَنْصُورِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُرَّةَ

سیّدنا ابن عمر فرانین کہتے ہیں رسول الله مشکیّن نے فرمایا: "نذر سے بچھ بدلتانہیں ہے اس سے صرف بخیل آ دمی کا مال نکالا جاتا ہے۔" عَنِ ابُنِ عُـمَرَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ إِنَّ السَّهِ إِنَّ السَّهِ إِنَّ السَّهِ إِنَّ السَّهُ وَإِنَّمَا يُسْتَخُرَجُ بِهِ مِنَ الشَّحِيح. •

[6] بَابِ النَّهُي أَنُ يَحُلَفَ بِغَيْرِ اللَّهِ اللَّهُ الللللِّهُ الللللِّهُ اللللللِّهُ الللللِّهُ الللللِّهُ الللللِّهُ الللللِّهُ اللللللِّهُ الللللِّهُ اللللللللِّهُ الللللِّهُ اللللللللِّهُ الللللللللللِّهُ اللللللللللِّ

2386 - أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ أَنْسٍ عَنْ نَافِع

❶ صحيح : اخرجه الحاكم 304/4-305والبيهقي في النذور،باب من لم يرو جوب بالنذر82/10

€متفق عليه: البخاري،كتاب القدر،باب إلقاء العبد النذر الى القدر(6608)ومسلم،كتاب النذر،باب النهى عند النذر وأنه لا يرد شيئًا (4212) وابن ماجه ، كتاب الكفارات با النهى عن النذر (2122) عن ابُن عُمَد أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَلَيْ الْكَالِيمَة عَلَى اللهُ عَلَيْهَا كُمْ مِنْ اللهُ عَلَيْهَا مَعْ مِن اللهِ عَلَيْهَا مَعْ مِن اللهِ عَلَيْهَا مَعْ مِن اللهِ عَلَيْهَا مَعْ مِن اللهِ عَلَيْهَا مَعْ مِن اللهُ عَلَيْهَا مِن اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ مِن اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ عَلَى اللهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ مِن اللهُ عَلَيْهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهِ عَلَى اللهُ عَلَيْهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهُ عَلَى اللهُ عَلَى الللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهُ عَلَى ال

رَسُولُ اللّهِ عَلَىٰ إِنَّ اللّهَ يَنْهَاكُمُ أَنُ فرمايا: "الله تعالى تهمين النه بالول كى قسمين كهانه سے تَحلِفُوا بِآبَائِكُمُ فَمَنُ كَانَ حَالِفًا مع كُرتا ہے۔ جو شخص قسم كهائ وہ الله كى قسم كهائ يا فَلَيْحُلِفُ بِاللّهِ أَو لَيُصُمُتُ . • خاموش رہے۔ "

[7] بَابِ فِي الْاسْتِثْنَاءِ فِي الْيَمِينِ قَتْم مِينُ ان شاءاللهُ كَهْنِ كَا بِيانِ

2387 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِع

عَنِ ابْنِ عُمَمَ : أَنَّ النَّبِيَ عَلَيْ قَالَ مَنُ سَيِّدَا ابن عمر وَالنَّيُ كَهَ مِن كَهُ بَى عَلَيْهِ فَ فرمايا: "جس حَمَلَ اللهُ عَلَى يَعِينِ ثُمَّ قَالَ إِنْ شَاءَ اللهُ فَ فَرَماياً " فَكَى معامله بِرُسْمَ كَمَالَى اورانشاء الله كَها وه مختار موكّياً "

فَقَلِ اسْتَثْنَى . 9

2388 ـ أَخْبَرَنَا حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةً حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ نَافِعِ عَن ابُن عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ سَيِّدِنَا ابن عَمْرِ فَيْنَيُّ اكْبَتْ بِين كه رسول الله

عَنِ ابُنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِنَّا قَالَ سَيْدِنَا ابن عَمرِ ثِنَا ثَيْهُ اللهِ عِنْ كَدرسول الله طَيَّقَةِ نَهُ فَرمايا: مَنُ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ ثُمَّ قَالَ إِنْ شَاءَ ''جس نَفْتَم كَعَالَى پَمرانثاء الله كها وه مخار بؤاكر چا ہے تو اللَّهُ فَهُوَ بِالْخِيَارِ إِنْ شَاءَ فَعَلَ وَإِنْ شَاءَ كرے چاہے تو نہ کرے۔''

اللهُ فَهُوَ بِالُخِيَارِ إِنُ شَاءَ فَعَلَ وَإِنُ شَاءَ لَمُ يَفُعَلُ . ۞

[8] بَابِ الْقَسَمُ يَمِينٌ لفظ دفتم' بھی قتم ہی ہے

2389 أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِحِ حَدَّثَنِي اللّٰيثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللّهِ

متفق عليه : البخارى، كتاب الأدب، باب من لم يريا كفار من قال ذلك متأولا او جاهلا (6108) ومسلم، كتاب الأيمان، باب النهى عن الحلف بغير الله تعالى (4233)

صحيح: ابن حبان (4339) اخرجه ابوداؤد، كتاب الأيمان، باب الاستشناء في اليمين (1531) والنسائي، في الكتاب الأيمان ، باب من حلف فاستشنى (3702)

[🗗] صحیح: تخ تایج گزرچکی ہے۔

بْن عَبْدِ اللَّهِ …

سیدنا ابن عباس فالنفظ کہتے ہیں نبی منتی این کے ابوبکر سے فرمایا: ' قتم نه کھاؤ' ابو بکر کہتے ہیں: یہ کبی حدیث ہے۔

عَن ابُن عَبَّاس أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لِأَبِي بَكْرٍ لَا تُقْسِمُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد الْحَدِيثُ فيه طُولٌ . ٥

[9] بَابِ مَنُ حَلَفَ عَلَى يَمِيُن فَرَأًى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا جو خص قتم کھائے پھر کسی اور کام میں اس سے زیادہ بھلائی دیکھے

2390- أَخْبَرَنَـا أَبُـو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو هُوَ ابْنُ مُرَّةَ قَالَ سَمِعْتُ رَجُّلا

نُقَالُ لَهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ

سیّدناعمرو ڈائٹیئہ جومرۃ کے بیٹے ہیں بیان کرتے ہیں کہ میں نے جماجم کے زمانہ میں عبداللہ بن عمرو رہائفہ سے سنا وہ بیان کرتے تھے۔ ایک شخص نے عدی بن حاتم سے سوال کیا (کچھ مانگا)، انہوں نے قتم کھائی کہ وہ اسے کچھ نہ دیں ع پھر كہا: اگر ميں نے رسول الله عظيميّا سے يہ نه سنا موتا که وه فرماتے تھے: ' دجو مخص کسی بات برتسم کھائے پھر کسی اور کام میں اسے بھلائی نظر آئے تو بھلائی والا کام کرے۔ اورتهم کا کفارہ ادا کرے۔'' (تو میں تہہیں نہ دیتا)

عَمُرو زَمَنَ الْجَمَاجِمِ يُحَدِّثُ قَالَ سَأَلَ رَجُلٌ عَدِيَّ بُنَ حَاتِم فَحَلَفَ أَنُ لَا يُعْطِيَهُ شَيئًا ثُمَّ قَالَ لَوْلَا أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ مَنْ حَلَفَ عَلَى يَحِيُنِ فَرَأَى غَيُرَهَا خَيُرًا مِنْهَا فَلُيَأْتِ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَلَيُكَفِّرُ عَنْ يَمِينِهِ. ٥

2391 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ

سيّدنا عبدالرحلن بن سمرة والتنوي كبتي مين رسول الله عظيميّا نے فرمایا: ''اے عبدالرحلٰ بن سمرة فِاللَّمَةُ! ثم إمارت مت مانگو اگر تمہیں مانگ سے دی جائے گی تو تم پر چھوڑ دی جائے گی اور اگرین مانگے دی گئی تو تمہاری مدد کی جائے

حَدَّثَنَا عَبُدُ الرَّحْمَنِ ابْنُ سَمُرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَا عَبُدَ الرَّحُمَن بُنَ سَمُرَةَ لَا تَسُأَلِ الْإِمَارَةَ فَإِنَّكَ إِنَّ أُعُطِيتَهَا عَنُ مَسُأَلَةٍ وُكِلُتَ إِلَيْهَا وَإِنَّ

[•] اسناده صغیف: کیکن حدیث منفق علیہ ہے بدحدیث (2202) نمبر حدیث کے تحت ممل گزر چکی ہے۔

صحيح مسلم، كتاب الأيمان، باب ندب من حلف يمينافر أى غيرها خيراً منها (1651) والنسائي، كتاب الأيمان،باب الكفارة بعد الحنث(3794)

حَكُرُ لِيُعَانِينَ الْكَالِيمِينَ عَلَيْهِ اللَّهُ وَ الايمان اللَّهُ وَ الايمان اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ وَالايمان اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ وَالْايمان اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ وَالْايمان اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ وَالْايمان اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ وَالْايمان اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْ

گئ اور جب تم قسم کھاؤ پھر کسی اور بات میں بھلائی نظر آئے تواینی قسم کا کفارہ دواور بہتر کام کرد۔''

أُعُطِيتَهَا مِنُ غَيُرِ مَسْأَلَةٍ أُعِنْتَ عَلَيْهَا فَإِذَا حَلَفُتَ عَلَى يَمِينٍ فَرَأَيْتَ غَيُرَهَا خَيُرًا مِنْهَا فَكَفِّرُ عَنُ يَمِيْنِكَ وَأَتِ

عَنُ عَبُدِ الرَّحُمَنِ بُنِ سَمُرَةَ قَالَ قَالَ

رَسُولُ اللُّهِ ﷺ فَذَكَرَ نَحُوَ

الَّذِي هُوَ خَيْرٌ . •

2392 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يُونُسَ عَنِ الْحَسَنِ

سيدنا عبدالرحل بن سمرة والنفيز كهت بين كدرسول الله الطيطية

الْحَديث. 9

10_].... بَابِ إِذَا كَانَ عَلَى الرَّجُلِ رَقَبَةٌ مُؤُمِنَةٌ اس شخص كے متعلق جس كے ذمہ غلام يالونڈى آزاد كرنا ہو

2393 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةً عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو عَنْ أَبِي

سَلَمَةً.....

شرید گہتے ہیں کہ میں نبی مظامین کے پاس آیا۔ اور کہا:
میری والدہ کے ذمہ ایک غلام یا لونڈی آزاد کرنا ہے
میرے پاس ساہ رنگ کی حبثی لونڈی ہے کیا وہ کفایت کر
جائے گی؟ فرمایا: اسے بلاؤ پھر فرمایا: ''کیا تو گواہی وین
ہے کہ اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں اس نے کہا: ''جی
ہاں۔''آپ نے فرمایا: ''یہ مومنہ ہے اسے آزاد کردو۔''

عَنِ الشَّرِيدِ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ عَلَى فَقَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ عَنْدِى فَقَالُ أَقَيْدُ وَإِنَّ عِنْدِى خَارِيَةً سُودَاءَ نُوبِيَّةً أَفَتُجُزِءُ عَنْهَا قَالَ ادُعُ بِهَا فَقَالَ أَتشُهَدِيْنَ أَنُ لَا إِلْهَ إِلَّا اللَّهُ قَالَ اللَّهُ الْمُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُعِلَّالَ الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَمُ الْمُعْلَى الْمُعْمِي الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَمُ اللَّهُ الْمُعْلَى الْمُعْلِمُ الْمُعْلَمُ الْمُعْلَمُ اللَّهُ الْمُعْلَمُ الْمُعْلَمُ اللْ

[11] بَابِ الرَّجُلِ يَحُلِفُ عَلَى الشَّىءِ وَهُوَ يُوَرِّكُ عَلَى يَمِينِهِ فَا السَّعَابِ الرَّابِ عَلَى يَمِينِهِ فَا السَّعَابِ اللَّهِ عَلَى يَمِينِهِ فَالْمِلُ اللَّهِ عَلَى يَمِينِهِ فَاللَّهِ عَلَى يَمِينِهِ فَاللَّهِ عَلَى يَمِينِهِ فَاللَّهِ عَلَى يَمِينِهِ فَاللَّهُ عَلَى يَمِينِهِ اللَّهُ عَلَى يَمِينُهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى يَمِينِهِ اللَّهُ عَلَى يَمِينُهِ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى يَمِينُهِ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى يَمِينُهِ اللَّهُ عَلَى اللَّ

2394 أَخْبَرَنَا عُثْمَالُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِيْ صَالِحٍ عَنْ أَبِيْهِ

 [◘] متـفــق عـليه: البخارى، كتاب كفارات الأيمان، باب الكفارة بعد الحنث وبعده (6722) ومسلم، كتاب الأيمان، باب ندب من حلف يمينا (4257-4258)

ہ متفق علیہ: سابقہ *حدیث بی مکرر آ*ئی ہے۔

[🛭] اسناده حسن : محمد بن ممروكي وجدسي محيح ابن حبان (189)

246 كتاب النذور والايمان ك الكالكان الكاليك

سيّدنا ابو مررة وظائف كت بين رسول الله عظيمة في فرمايا: " تمہاری اس قتم کا یقین ہو گا جس کی تمہارے ساتھی نے

عَنُ أَبِسَى هُسرَيُسرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَى مَا صَدَّقَلَ بهِ صَاحِبُكَ . ٥

اللَّهِ ﷺ الَّتِي يَـحُـلِفُ بِهَا لَا وَمُقَلِّبِ

الْقُلُوبِ. [والله أَعْلَمُ بِالصَّوَابِ .] •

فوائد: قتم كامفهوم وہى معتبر ہوگا جوتم دلانے والاسمحتا ہوگا، چكر بازى سے ذومعنى جمله كهدكر تتم ولانے والے کو دھوکہ دینا ہرگز درست نہیں ہے تھے مسلم ۔ الایمان:1653 میں آپ مشی آیا کے واضح الفاظ" إِنَّمَا الْيَمِيْنُ عَلَى نِيَّةِ الْمُسْتَحْلِفِ . " فتم صرف فتم ولانے والے كى نيت ير موكى _ [12] بَابِ بِأَىِّ أَسْمَاءِ اللَّهِ حَلَفُتَ لَوْمَكَ الله کے جس نام کی فتم کھائے اسے لازمی بورا کرنے کا بیان

2395 - أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوْسَى عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ سَالِم

عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ كَانَتُ يَمِينُ رَسُول سيِّرنا ابن عمر وْلَاثِينَ كَتِ بِين رسول الله عَلَيْنَ فَي اس طرح قتم کھاتے تھے: ''دلوں کو پھیرنے والے کی قتم!'' (والله أعلم بالصواب)

صحيح مسلم، كتاب الأيمان، باب يمين الحالف على نية المستحلف(4259-4260) والترمذي، كتاب الأحكام، باب ماجاء أن اليمين على ما يصدقه صاحبه(1354) وابن ماجه، كتاب الكفارات، باب من و ري في يمينه (6120) 2 صحيح البخاري، كتاب الأيمان والنذور،باب كيف كانت يمين النبي صلعم(6628)ابوداؤد، كتاب الأيمان والنذور،باب ماحاء في يمين النبي صلعم ماكانت؟(3263)



۱ ومن كتاب الديات ديت كربيان بي

"الدّيات" يوالدّية كى جمع ہے جوكہ باب يدى سے مصدر ہاس كے معنى خون بہادينا ہے يعنى كى بھی زخمی ہونے والے یامقنول کے ورشہ کو مال دینا۔ اصطلاحی طور پر ہردیت ایسے مال کو کہتے ہیں جو کہ کسی انسانی جان یاعضو کے ہلاک ہوجانے پر ندکورہ مخض یااس کے درشہ کے حوالے کیا جاتا ہے۔

[1] بَابِ الدِّيَةِ فِي قَتُل الْعَمُدِ عمراقش کرنے کی دیت کا بیان

2396 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحْقَ عَنِ الْحَارِثِ بْنِ فُضَيْلٍ عَنْ سُفْيَانَ

بْن أَبِي الْعَوْجَاءِ السُّلَمِيِّ ...

عَنُ أَبِي شُرَيُحِ الْخُزَاعِيِّ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ مَن أَصِيبَ بِدَم أَوُ خَبُل وَالْخَبُلُ الْكَجُرُحُ فَهُوَ بِالْحِيَادِ بَيُنَ إِحُدَى ثَلَاثٍ فَإِنْ أَرَادَ الرَّابِعَةَ فَخُدُوا عَلَى يَدَيُهِ بَيْنَ أَنُ يَقُتَصَّ أَوُ يَعُفُوَ أَوْ يَأْخُذَ اللَّعَقُلَ فَإِنَّ أَخَذَ مِنْ ذٰلِكَ شَيْئًا ثُمَّ عَدَا بَعُدَ ذٰلِكَ فَلَهُ

النَّارُ خَالِدًا فِيهَا مُخَلَّدًا . •

ابوشری خزاعی کہتے ہیں میں نے رسول اللہ الطاقية كويد فرماتے ہوئے سنا جس کوخون یا زخم سے صدمہ پہنچے اسے تین باتوں کا اختیار ہے آگر چوتھی بات کو تلاش کرے تو اس كا باته پكر لو قصاص لے يا معاف كر دے يا ديت لے پھر اگر ان میں ہے کسی کو اختیار کرنے کے بعد زیادتی كري تواس كے لئے جہم ہے وہ اس ميں ہميشدرہے گا۔

ضعيف ، منكر: ابوداؤد، كتاب الديات، باب الإمام يأمر بالعفو في اللم (4496) وابن ماجه، كتاب الليات، باب من قتل له قتيل فهو بالخيار بين أحدى ثلاث(2623)

الديات ١٤٤ كتاب الديات ١٤٥٠ كتاب الديات

فوائد: (۱)" السخبل" بیاعضاء کی خرابی پر لفظ بولا جاتا ہے نیز" العقل' اس سے مراد دیت ہے اس کا لفظی معنی باندھا ہے چونکہ قاتل وہ دیت کے طور پر مقتول کے گھر اونٹ باندھ آتا ہے تواس سے اس کا نام" عقل' پڑھ گیا۔ (۲) بیحدیث اگر چہ ضعیف ہے بہر حال بات درست ہے کہ مقتول کے ورثہ یا مظلوم کوان تین چیزوں میں ایک کو اختیار کرنے کی اجازت ہے۔ جیسا کہ قرآن وسنت سے اس کا ثبوت ماتا ہے ان کے علاوہ چوتھا راستہ اختیار کرنا حرام ہے۔ قرآن میں ہے: ﴿فَلَنِ اغْتَدٰی بَعُنَ ذٰلِكَ فَلَهُ عَنَابٌ اَلِیْمٌ ﴾ (البقرہ: 178) جس نے اس کے بعد زیادتی کی اس کے لیے دردناک عذاب ہے۔

2397 ـ أَخْبَرَنَا الْمَحَكَمُ بُنُ مُوْسَى حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ دَاوْدَ حَدَّثَنِي النُّهْ يُ

عَنُ أَبِى بَكُرِ بُنِ مُحَمَّدِ بُنِ عَمْرِو بُنِ
حَـزُمٍ عَنُ أَبِيهِ عَنُ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ
اللهِ عَنَّ أَبِيهِ عَنُ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ
اللهِ عَنَّ كَتَب إِلَى أَهْلِ الْيَمَنِ وَكَانَ
فِي كِتَابِهِ أَنَّ مَنُ اعْتَبَطَ مُؤْمِنًا قَتُلاعَنُ
بَيْنَةٍ فَإِنَّهُ قَوَدُ يَدِه إِلَّا أَنْ يَرُضَى أَوْلِيَاءُ
اللهَ قُتُولُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد اعْتَبَطَ قَتَلَ
مِنُ غَيْرِ عِلَّةٍ . •

ابوبكر بن محمد بن عمرو بن حزم وناتية اپ والد سے اور وہ اپنے دادا سے نقل كرتے ہيں كەرسول الله طفيقيا نے اہل يمن كوايك خط لكھا اور اس ميں سي بھى تحرير تھا: ''جس نے كسى مسلمان كو ناحق مار ؤالا جس پر دليل قائم ہوتو اس نے اپنے ہاتھوں قصاص خريد ليا ۔ گر سي كہ مقتول كے رشتہ دار راضى ہو جا كيں ۔'' ابو محمد كہتے ہيں: ''اعتبط كامعنى ہے: اس نے ناحق مار ؤالا ۔''

فواند: (۱)" اعتبط" کہتے ہیں کسی کو بلا جرم ماردینے کو۔ (۲) اسلام میں تین جرم ہیں جن کی بنا پر کسی مومن کوتل کیا جاسکتا ہے۔ (۱) شادی شدہ زانی (ب) مرتد (ج) کسی کے بدلے میں ۔ان کے علاوہ بلا جرم کسی کو مارنا شریعت میں نا قابل قبول ہے (۳) مقتول کے اولیا کوان میں سے ایک کا اختیار ہے چاہے تو قصاص لے لیں یا پھر دیت یا معاف کردیں۔اوروہ اس پر رضا مند ہوں۔

[2] بَابِ فِي الْقَسَامَةِ

قسامت كابيان

2398 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الرَّقَاشِيُّ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحٰقَ حَدَّثَنَا بُشَيْرُ بْنُ يَسَارِ

عَيْنَ الْكَادِيْوَيُّ ﴾ 249 و249 كتاب الديات

عَنُ سَهُل بُنِ أَبِي حَثْمَةَ قَالَ خَرَجَ عَبْدُ سيّد ناسهيل وللنيُّهُ بن ابوحثمه كهته بين عبدالله بن سهل بن ابو اللُّهِ بُنُ سَهُلِ أَحَدُ بَنِي حَارِثَةَ إِلَى حمد جو بنوحارثہ قبیلے سے تھے وہ اپنی قوم کے چند آ دمیوں ے ساتھ خیبر کوغلہ لینے کے لئے گئے ۔عبداللہ برظلم کیا گیا خَيْبَرَ مَعَ نَفَرِ مِنُ قَوْمِهِ يُرِيدُونَ الْمِيرَةَ وہ قبل کر دیئے گئے ۔ان کی گردن اس طرح موڑ دی گئی کہ بخَيْبَرَ قَالَ فَعُدِى عَلَى عَبُدِ اللَّهِ فَقُتِلَ وہ ٹوٹ گئی۔ اور خیبر کے ایک گھاٹ میں انہیں ڈال دیا فُتِلَتُ عُنُقُهُ حَتَّى نُخِعَ ثُمَّ طُرحَ فِي گیا۔ان کے ساتھی انہیں دیکھ کر چلائے۔اور انہیں نکال مَنْهَلِ مِنْ مَنَاهِلِ خَيْبَرَ فَاسْتُصُرِخَ عَلَيْهِ كر چھيا ديا۔ پھر وہ مدينه ميں رسول الله ﷺ كے ياس أَصْحَابُهُ فَاسْتَخُرَجُوهُ فَغَيَّبُوهُ ثُمَّ قَدِمُوا عَلْى رَسُولِ اللَّهِ عِنْكُ الْمَدِينَةَ فَتَقَدَّمَ آئے۔ ان کے بھائی عبدالرحنٰ بن سہل آگے بڑھے اور أَخُوهُ عَبُدُ الرَّحُمٰنِ بُنُ سَهُلٍ وَكَانَ ذَا رسول الله والمنافية ك ياس ببل ك ان كا ايك خاص مقام قَدَم مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَابُنَا عَمِّهِ مَعَهُ تھا آئے ہوئے تھے۔ان کے دونوں چیا زاد بھائی حویصہ بن مسعود اور محیصہ ان کے ساتھ تھے۔عبدالرحمٰن گفتگو حُوَيَّضَةُ بُنُ مَسُعُوْدٍ وَمُحَيَّضَةُ فَتَكَلَّمَ كرنے لگے۔ وہ سب سے كمن تھے۔ وہى خون كے مدى عَبُدُ الرَّحْمَن وَكَانَ أَحْدَثَهُمْ سِنَّا وَهُوَ تھے۔ اور وہ این قوم میں سب سے زیادہ فضل وشرف والا صَاحِبُ الدَّم وَذَا قَدَم فِي الْقَوُم فَلَمَّا تهات وه يات كرن ككوتو رسول الله الله المنظيمين فرمايا: تَكَلَّمَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : (الْكُبُرَ ''برے کوموقع دو۔'' وہ پیچیے ہٹ گئے تو محیصہ اور حویصہ الْكُبُرَ)) قَالَ فَاسُتَأْخَرَ فَتَكَلَّم حُوَيَّصَةٌ نے گفتگو کی تو رسول اللہ مصلی نے فرمایا: "ایے قاتل کا وَمُسحَيِّصَةُ ثُمَّ هُوَ . فَقَالَ رَسُولُ نام لے کر پھر اس پر بچاس قشمیں کھاؤ ، پھرہم اسے اللُّهِ ﷺ ((تُسَمُّونَ قَاتِلَكُمُ ثُمَّ تمہارے سپر دکر دیں گے۔''انہوں نے کہا:''یا رسول اللہ! تَحُلِفُونَ عَلَيْهِ خَمْسِينَ يَمِينًا ثُمَّ ہم نا معلوم بات پرکس طرح فتم کھائیں ہم نہیں نُسَلِّمُهُ إِلَيْكُمُ))قَالُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا جانتے کہ اسے کس نے قتل کیا البتہ یہود ہمارے وشمن كُنَّا لِنَحُلِفَ عَلَى مَا لَا نَعُلُمُ مَا نَدُرِى مَنُ قَتَلَهُ إِلَّا أَنَّ يَهُودَ عَمَدُوُّنَا وَبَيْنَ ہیں۔ انہی کے درمیان ووقل کئے گئے۔" آپ نے فرمایا: ''پھروہ تمہارے مقابلہ میں قسمیں کھائمیں گے کہ وہ تمہارے أَظُهُ رِهِمُ قُتِلَ قَالَ :((فَيَحُلِفُونَ لَكُمُ ساتھی کےخون سے بری ہیں چھراس سے بری ہو جائیں بِاللَّهِ إِنَّهُمُ لَبُرَنَاءُ مِنُ دَم صَاحِبِكُمُ ثُمَّ يَبُرَئُونَ مِنْهُ)). قَالُوا مَا كُنَّا لِنَقُبَلَ عر '' انہوں نے کہا: ''ہم یہود کی قسموں کا کیسے یقین

عَنْ الْخَالِقِي الديات 250 كتاب الديات كتاب الديات

کریں گے جھوٹی قشمیں اُٹھانا ان میں کوئی بردی بات نہیں ۔'' رسول الله مظامین نے انہیں اپنے پاس سے سو اونٹنیاں دیت دے دیں۔

أَيُسَانَ يَهُ وَدَ مَسَا فِيهِمُ أَكْبَرُ مِنُ أَنُ يَحُلِفُوا عَلَى إِنْمٍ قَالَ فَوَدَاهُ رَسُولُ اللهِ عَلَى عِنْدِهِ بِعِائَةِ نَاقَةٍ . •

فوائد: (۱) "السميرة" غله وغيره كوكت بين كه جيخريد وفروخت كے ليے حاصل كيا گيا ہو۔

"وَخُعْ " كَبَةِ بِين برى طرح مارنے كو۔ (۲) اہل كتاب سے خريد وفروخت جائز ہے (۳) مجلس ميں برك آدى كو ترجيح ديني چاہيے كہ وہ بات كرے (۴) اگر كى كاكوئى عزيز كى بستى كے باہر يا آس پاس مقتول مطاقو بستى والوں ميں ہے كى شخص يا جماعت كونا مزدكر كے اس سے ميت كے اوليا پچاس سميس اٹھاليں كه نه ہم نے مارا نه بى ہم قاتل كے بارے علم ركھتے ہيں الي صورت ميں ملزم برى ہوجائيں گے اسے قسامہ كها جاتا ہے مارا نه بى ہم قاتل كے بارے علم ركھتے ہيں الي صورت ميں ملزم برى ہوجائيں گے اسے قسامہ كها جاتا ہے (۵) اگر معاملہ مشتبہ ہوجائے توبیت المال سے دیت اداكی جائے گا۔

[3] بَابِ الْقَوَدِ بَيْنَ الرِّ جَالِ وَالنِّسَاءِ مردول اورعورتول كے درميان قصاص كابيان

2399 ـ أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بُنُ مُوسٰى حَدَّثَنَا يَحْبَى بْنُ حَمْزَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ دَاوْدَ حَدَّثَنِى النَّهْ وَيُ

و بن ابوبكر بن محمد بن عمر و بن حزم اپنے والد سے اور وہ اپنے دادا اللہ ملے اور وہ اپنے دادا اللہ ملے آتا نے اہل يمن كو خط اللہ ملے آتا نے اہل يمن كو خط كان كھا اس ميں بيتحريجى تھى: دوعورت كے بدله ميں مردق تل كما اس على بيتحريجى تھى: دوعورت كے بدله ميں مردق تل كما حائے گا۔''

عَنُ أَبِى بَكُرِ بُنِ مُحَمَّدِ بُنِ عَمُرِو بُنِ حَـزُمٍ عَنُ أَبِيهِ عَنُ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَتَبَ إِلَى أَهُلِ الْيَمَنِ وَكَانَ فِى كِتَابِهِ أَنَّ الرَّجُلَ يُقْتَلُ بِالْمَرُأَةِ . ٥

فیواند:(۱) معلوم ہوا قصاص میں مردوعورت برابر ہیں مرد کے بدلے عورت اورعورت کے بدلے عورت اورعورت کے بدلے مرد کوتل کردیاجائے گا۔ (۲) اس حدیث کی سنداگر چہ ضعیف ہے لیکن بخاری ومسلم میں اس کا شاہد موجود ہے جس سے اس معنی کوتقویت حاصل ہوجاتی ہے۔

 [◘] متنفق عليه: البخاري، كتاب الجزية ، باب الموادة والمصالحة مع المشركين بالمال وغيره (3173) ومسلم ،
 كتاب الفسامته ، باب القسامة (4334)

عضعیف: لیکن اگلی متفق علیه حدیث اس کی شام ب

سَيْنَ الْكَالِيْنَ الْكَالِيْنَ عَمَابِ الديات 251 مَنْ الْكَالِيْنَ الْكَالِيْنَ عَمَابِ الديات

[47 بَابِ كَيُفَ الْعَمَلُ فِي الْقَوَدِ قصاص کے طریقہ کا بیان

2400- أَخْبَرَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ

عَنُ أَنَسِ أَنَّ جَارِيَةً رُضَّ رَأْسُهَا بَيُنَ حَجَرَيْن فَقِيلَ لَهَا مَنُ فَعَلَ بِلْكِ هَذَا أَفَّلانٌ أَفَّلانٌ حَتَّى سُمِّى الْيَهُ ودِيُّ فَأُوْمَأَتُ بِرَأْسِهَا فَبُعِثَ إِلَيْهِ فَجِئَ بِهِ فَاعُتَرَفَ فَأُمَرَ بِهِ النَّبِيُّ عِثْثًا فَرُضَّ رَأْسُهُ بَيْنَ حَجَرَيُن . ٥

وَلَا يُقْتَلُ مُسلِمٌ بمُشُرِكٍ. ٥

سیّدنا انس رہائنہ سے منقول ہے کہ ایک لونڈی کا سر دو پھروں کے درمیان رکھ کر کچل ویا گیا۔اس سے یوچھا گیا: تیرے ساتھ بیکام کس نے کیا: فلاں نے یا فلاں نے حتی کدایک یہودی کا نام لیا گیا تو اس نے اینے سرسے اشارہ کیا: ہاں! آپ نے اس کی طرف آ دمی بھیجا تو اسے لایا گیا اس نے اعتراف کرلیا۔ تو نبی مطابق کے مکم سے اس کا سر بھی دو پھروں کے درمیان کچل دیا گیا۔

> فواند: قصاص میں اس طرز کو اپنایا جائے گا جو مجرم نے اپنایا تھا۔ [5] بَابِ لَا يُقُتَلُ مُسُلِمٌ بِكَافِر کافر کے بدلہ میں مسلمان کوثل نہ کرنے کا بیان

2401- أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ عَنْ مُطَرِّفٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ.......

عَنُ أَبِي جُحَيُفَةَ قَالَ قُلُتُ لِعَلِيّ يَا أَمِيرَ المُمُومِنِينَ هَلُ عَلِمُتَ شَيْئًا مِنَ الْوَحْي إِلَّا مَا فِي كِتَابِ اللَّهِ تَعَالَى قَالَ لَا وَالَّذِي فَلَقَ الْحَبَّةَ وَبَرَأَ النَّسَمَةَ مَا أَعُلَمُهُ إِلَّا فَهُمًا يُعُطِيْهِ اللَّهُ الرَّجُلَ فِي الْقُرُآن وَمَا فِي الصَّحِيفَةِ قُلُتُ وَمَا فِي الصَّحِيفَةِ قَالَ الْعَقُلُ وَفِكَاكُ ٱلْأَسِيرِ

ستدنا ابو جحیفہ زبالٹنڈ کہتے ہیں میں نے علی زبالٹنڈ سے کہا:'' اے امیر المؤمنین! کیا آپ کتاب اللہ کے علاوہ کسی اور وي كوبهي جانة مين ؟ كها: "دنهين أس ذات كي قتم! جس نے دانے کوا گایا اورنفس کو پیدا کیا مجھے اور پچھ معلوم نہیں مگر سمجھ جواللہ تعالی آ دمی کو قرآن کے متعلق دیتا ہے اور جو اس صحیفہ میں ہے۔ میں نے کہا: صحفہ میں کیا ہے؟ کہا: '' دیت دینا اور قیدی کو حیم انا' اور په که مسلمان کومشرک کے بدلہ میں قتل نہ کیا جائے۔"

[€] متفق عليه: البخاري، كتاب الخصومات،ما يذر في الأشخاص الخصومة بين المسلم واليهود (2413) ومسلم ، كتاب القسامة،باب ثبوت القصاص في القتل بالحجر وغيره (4341)

[◘]صحيح البخاري، كتاب الديات، باب لا يقتل المسلم بالكافر (6915) والترمذي، كتاب الديات، باب ماجاء لايقتل مسلم يكافر (1413) وابن ماجه، كتاب الديات، باب لايقتل مسلم يكافر (2658)

عَنْ الْكَالِيْنَ الْكَالِيْنَ عَلَى الديات كَابِ الديات كَابِ الديات كَابِ الديات كَابِ الديات كَابُ الديات ك

ف اند: (۱) دَورصحابِهِ رَجُمَالِينَهِ مِينِ احاديث لكصين ہوئين موجود تقين اس سے منکرين حديث كارد ہوتا ہے جو کہتے ہیں کہ سنت چونکہ عہد رسول میں مدون نہیں تھی اس لیے ججت نہیں ان کی یہ بات قطعی غلط ہے (۲) استاذ کے بتائے ہوئے سبق میں ہے مشکل سبق کولکھ لینا مسنون اورطالب علم کی سمجھداری کی علامت ہے۔ (۳) کسی کا فر کے بدلے مسلم کو قصاص میں قتل نہیں کیا جاسکتا جبکہ ذمی جو کہ معاہدہ کر کے مسلمانوں کے ہاں مقیم ہواس کے بارے اختلاف ہے بہر حال حدیث میں کافر کے لفظ کے عموم سے معلوم ہوتا ہے کہ ذمی ك بدل بهي مسلم كول نهيس كيا جائے گا۔ ہاں ديت دينا ہوگى۔ (نيز قرآن ميں سے ﴿ وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْم بَيْنَكُمْ وبَيْنَهُمْ مِيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَى آهُلِهِ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَة ﴾ (النباء:92) اوراكرمقولَ الیی قوم سے ہے جن سے تمہارا معاہدہ ہے تو ان کو دیت دینی ہے اورایک گردن آزاد کرنی ہے۔ [6] بَابِ فِي الْقَوَدِ بَيْنَ الْوَالِدِ وَالْوَلَدِ

بیٹے اور باب کے درمیان قصاص کا بیان

2402 أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن عَنْ إِسْمَعِيلَ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِيْنَارِ عَنْ طَاؤس

عَن ابْنِ عَبَّاسِ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ عَلَيْهِ لا سيدنا ابن عباس ظَلْمَ كَمْتِ بين كه نبي النَّامَ النَّا

تُقَامُ الْحُدُودُ فِي الْمَسَاجِدِ وَلَا يُقَادُ نُصَحِد مِن صَحِد مِن اللَّهُ عَادَ اللَّهِ عَلَى اورن بين ك بدلدين

باب سے قصاص لیا جائے گا۔'' بِالْوَلَدِ الْوَالِدُ . •

فواند: (۱) مساجد میں حدود کا قیام منوع ہے (۲) باب اگر بیٹے کومزاد ہے ہوئے اسے زخمی

كردے ياكوئى بھى نقصان كروے بدلے ميں والدسے قصاص نہيں ليا جائے گا۔

[7] بَابِ فِي الْقَوَدِ بَيْنَ الْعَبْدِ وَسَيّدِهِ مالک اور غلام کے درمیان قصاص کا بیان

2403 ـ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ الْحَسَنِ

عَنْ سَمْ وَةَ بُن جُنْدُب أَنَّ رَسُولَ سِيْدناسمة بن جندب وَالنَّهُ كَتَ مِي كررول الله السَّالِيّ الله على قَالَ : ((مَنُ قَتَلَ عَبُدَهُ قَتَلُنَاهُ فَعَلَنَاهُ فَتَلُنَاهُ فَتَلُنَاهُ فَعَلَنَاهُ فَعَلَنَاهُ وَمَنُ جَدْعَهُ جَدْعُنَاهُ)). قَالَ ثُمَّ نَسِي حَرِي كَ اور جواسے زخى كرے گا ہم اسے زخى كري الُحَسَنُ هَذَا الْحَدِيثَ وَكَانَ يَقُولُ لَا ﴿ كَــالْجِدِعَ كَامِعَىٰ حِمْ نَاكَ وَغِيرِهِ كَا ثَنَا ۖ قَادَةَ زَاتُنْهُمُ

عن الديات كالم
كمت مين: پهرحسن اس حديث كوبمول كئة اور كهتر تھے:

يُقْتَلُ حُرُّبِعَبُدٍ ، •

غلام کے بدلہ میں آ زاوکوٹل نہیں کیا جائے گا۔''

فوائد: غلام کے بدلے آزاد کوتل کرنے کے بارے میں کوئی بھی تیجے حدیث مروی نہیں اور نہ بی منع کے بارے لین کوئی بھی تیجے حدیث مروی نہیں اور نہ بی منع کے بارے لہذا علماء اس بارے مختلف ہیں جن سے رائج یہی معلوم ہوتا ہے کہ آزاد کوغلام کے بدلے قتی نہیں کیا جائے گا۔

[8] بَابِ لِمَنُ يَعُفُو ُ عَنُ قَاتِلِهِ اينے (عزیز کے) قل کومعاف کرنے والے تخص کا بیان

2404- أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْهَمْدَانِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ عَوْفٍ عَنْ حَمْزَةَ أَبِيْ عَمْرٍ و

عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَائِلِ الْحَضْرَمِيّ

عَنُ أَبِيهِ وَائِلِ بُنِ حُجُرٍ قَالَ شَهِدُتُ النَّبِيَ عَنَى أَبِيهِ وَائِلِ بُنِ حُجُرٍ قَالَ شَهِدُتُ النَّبِيَ عَلَى إِلرَّجُلِ الْقَاتِلِ يُقَادُ فِي بِالرَّجُلِ الْقَاتِلِ يُقَادُ فِي نِسْعَةٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَى لَا قَالَ: ((فَتَأْخُذُ الْمُقْتُولِ ((أَتَعُفُو))قَالَ لَا قَالَ: ((فَتَقُتُلُهُ ؟))قَالَ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَا عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَل

صَاحِبِكَ)). قَالَ فَتَرَكَهُ قَالَ فَأَنَّا

رَأَيْتُهُ يَجُرُّ نِسُعَتَهُ قَدُ عَفَا عَنُهُ . ٥

سیّدنا واکل بن جحر را النی کیت بین که مین اس وقت نبی میشدنا واکل بن جحر را النی کیت بین که مین اس وقت نبی میشدنی کے پاس موجود تھا جب ایک قاتل آ دمی لایا گیا جو رسی میں بندھا ہوا تھا رسول الله مطاقی کرتے ہو؟" اس نے کہا: در بیت لیتے ہو؟" اس نے کہا: در نبیس ۔" آپ نے فرمایا: ''دبیت لیتے ہو؟" اس نے کہا: در نبیس ۔" آپ نے فرمایا: ''دبیت لیتے ہو؟" اس نے کہا: در نبیس ۔" آپ نے فرمایا: اسے قتل کرو گے؟ اس نے کہا: در بی بال ۔" تو رسول الله مین آئے نے فرمایا: ''اگر تو اسے معاف کر دے تو تیرا اور تیر ساتھی کا گناہ اس پر ہوگا۔" اس نے اسے چھوڑ دیا۔ واکل زائی کہتے ہیں: میں نے در کھا: وہ این رسی صینی رہا تھا حالانکہ اسے معاف کر دیا تھا۔ در کھا: وہ این رسی صینی رہا تھا حالانکہ اسے معاف کر دیا تھا۔

فوائد: (۱) نِسْعَةٌ " به بنا ہوتىمہ ہوتا ہے جو كداون كے ليے بطور لگام استعال ہوتا ہے (۲) ماضى مقول كے ورشد كومعا فى كى ترغيب دے سكتے ہيں ليكن خود معاف نہيں كر سكتے اسلامى نقط نظر سے

[•] منقطع، ضعيف: حسن كاثمرة سسماع ثابت ثيل . والحرجة ابوداؤد، كتباب الديبات، باب من قتل عبده (4515) والنسائي، كتاب القسامة، باب القدر من السيد للمولى (4750) وابن ابي شيبه 187/14 والحاكم 367/4

صحيح مسلم، كتاب القسامة، باب صحة الإقرار بالقتل (4363-4364) والبيهة في الجنايات، باب ماجاء في الترغيب في العفو عن القصاص 55/8 وابوداؤد، كتاب الديات، باب الإمام يأمر بالعفو في الدم (4499)

حكاب الديات كالمحالية كالم

بہ حق فقط مقتول کے اولیاء کوہی ہے (۳) ورثہ کومعافی ، دیت یا قصاص ان تنیوں میں سے ایک کا اختیار ہے (۷) معاف کردینا مفتول اوراس کے ولی کے گناہوں کے کفارے کاسب ہے۔

_[9].... بَابِ التَّشُدِيدِ فِي قَتُلِ النَّفُسِ الْمُسُلِمَةِ مسلمان کے تل میں شخی کابیان

2405 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ بَشَارِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ فِرَاسِ عَنِ الشُّعْبِيِّ ,....الشُّعْبِيِّ

سیدنا عبداللد بن عمرو والنفوذ نبی سے اللہ سے روایت کرتے بي كدآب عصر التراغ فرمايا: "بوع كناه يه بين: الله كا شریک کرنا' والدین کی نا فر مانی کرنا' اورسی نفس کوقل کرنایا

قَسَالَ: ((الْكَبَسَائِسُ الْإِشْرَاكُ بِاللَّهِ وَعُقُوقُ الُوَالِدَيُنِ وَقَتُلُ النَّفُسِ شُعُبَةً حبھوٹی قشم اٹھانا۔'' شعبہ کوشک ہے۔ الشَّاكُّ أُو الْيَمِينُ الْغَمُوسُ)). •

فواند: "كبائر" سے مرادا يسے گناه بين جوكه نيكيوں كے سبب خود بخو دمعاف ہونے كى بجائے ان کے لیے خصوصی مغفرت کی ضرورت ہوتی ہے اگر توبہ نہ کی جائے توبید دخول جہنم کا سبب بن جاتے ہیں۔ ر10ر.... بَابِ التَّشُدِيدِ عَلٰي مَنُ قَتَلَ نَفُسَهُ

خورکشی کی وعید کا بیان

2406 حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيْرِ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِيْ قِلَابَةَ

سيّدنا ثابت بن ضحاك فالنفؤ كتبته بين كدرسول الله مطفولية نے فرمایا: 'دکسی پرلعنت کرنا اس کے قتل کے مترادف ہے اور جو مخص کسی چیز سے خود کشی کرے قیامت کے دن ای چز ہے اسے عذاب دیا جائے گا۔''

عَنُ ثَابِتِ بُن الضَّحَّالِثِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَعُنُ الْمُؤُمِن كَفَتُلِهِ وَمَنُ قَتَلَ نَفُسَهُ بِشَيْءٍ فِي الدُّنْيَا عُذِّبَ به يَوُمَ الْقِيَامَةِ)). 9

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُن عَمُرِو عَنِ النَّبِيِّ عَلَيْ

فوائد:(۱) بلاوجه کسی مومن برلعن طعن کرنا کبیره گناه کی مانند ہے (۲) خودکشی کرنا حرام ہے (۳) جرم کی مثل ہی آخرت میں عذاب بھگتنا پڑے گا۔

❶ صحيح البخاري، كتاب الأيمان والنذور،باب اليمين الغموس(6675)والترمـذي، كتاب التفسير،باب ومن سورة النساء (3021) والنسائي، كتاب التحريم الدم، باب الكبائر (4022)

عنفق عليه: البخاري، كتاب الادب، باب ماينهي عن السباب واللعن (6047) ومسلم، كتاب الإيمان، باب غلظ تحريم فتل الانسان نفسه (298-298)

عَنْ الْكَالِيْقِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّالَّ اللَّهُ ال

2407 حَدَّثَنَا يَعْلَى بْنُ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ أَبِيْ صَالِحٍ

عَنُ أَبِسى هُ رَبُسرَةً قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللهِ اللّهِ اللهِ اللهُ الله

مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا). •

سیّدنا ابو ہریرۃ فرالیّن کہتے ہیں کہ رسول الله مطفقہ نے فرمایا: ''جوایے آپ کوکس تیز چیز سے ہلاک کرے گا تو وہ اسے جہنم کی آگ میں اپنے بیٹ میں گھویٹنار رہے گا اور ہمیشہ ہمیشہ وہاں رہے گا۔اور جوز ہرسے خودکش کرے گا وہ اپنے ہاتھ میں زہر گئے ہوئے اسے بیتیا رہے گا اور ہمیشہ جہنم میں رہے گا' اور جس نے اپنے آپ کو پہاڑے گرایا وہ جہنم میں رہے گا' اور جس نے اپنے آپ کو پہاڑے گرایا وہ جہنم میں رہاڑ سے گرتا رہے گا اور ہمیشہ ہمیشہ وہاں رہے

[11] بَاب كَمِ الدِّيَةُ مِنَ الُوَدِقِ وَالدُّهَبِ الدِّيةُ مِنَ الُوَدِقِ وَالدُّهَبِ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللْمُلِمُ اللَّهُ اللَّالِمُ اللَّهُ اللللْمُلِمُ اللللْمُلِمُ اللللْمُلِمُ اللللْمُولِي الللللِّلْمُ اللللْمُلِمُ الللللْمُلِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللَّالِمُلِمُ اللللْمُلِمُ اللللْمُلِمُ اللللْمُلِمُ الل

2408 حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هَان عِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِيْنَارِ عَنْ عِكْرِمَةَ

سیّدنا عبدالله بن عباس بناها کہتے ہیں۔ کدرسول الله مطاقیق کے زمانہ میں ایک شخص نے دوسرے آ دمی کو مار ڈالا تو نبی مطاقیق نے اس کی دیت بارہ ہزار (درہم) مقرر کی اور اس آ یت سے یہی مراد ہے: '' یہ الله کی قشمیں کھا کر کہتے ہیں کہ انہوں نے نہیں کہا ، حالانکہ یقینا کفر کا کلمہ ان کی زبان سے نکل چکا ہے اور یہ اپنے اسلام کے بعد کافر ہو گئے ہیں اور انہوں نے اس کام کا قصد بھی کیا جو پورا نہ کر سکے ہیں اور وہ ان سے صرف اس وجہ سے ناراض ہیں کہ انہیں الله اور وہ ان سے صرف اس وجہ سے ناراض ہیں کہ انہیں الله

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَتَلَ رَجُلٌ رَجُلًا عَلَى عَهُدِ رَسُولِ اللّهِ عَلَى عَهُدِ رَسُولِ اللّهِ عَلَى النّبِي عَهُدِ رَسُولِ اللّهِ عَشَرَ أَلُفًا فَهُوَ النّبِي عَشَرَ أَلُفًا فَهُو قَوْلُهُ: ﴿ يَحُلِفُونَ بِاللّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدُ قَدُلُهُ اللّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدُ قَدَلُوا كَلِمَةَ الدُّكُ فُسِرِ وَكَفَرُوا بَعُدَ السَلَامِهِمُ وَ هَمُوا بِمَا لَمُ يَنَالُوا وَ مَا السَلامِهِمُ وَ هَمُوا بِمَا لَمُ يَنَالُوا وَ مَا نَصَمُوا اللهُ وَ رَسُولُهُ مِنُ اللّهُ وَ رَسُولُهُ مِن فَضَلِه ﴾ بِأَخْذِهِمُ الذِيةَ . ٥ فَضُلِه ﴾ بِأَخْذِهِمُ الذِيةَ . ٥ فَضُلِه ﴾ بِأَخْذِهِمُ الذِيةَ . ٥

[•] متفق عليه: البخاري، كتاب الطب، باب شرب السم، والدواء به وما يخاف منه (5778) ومسلم، كتاب الإيمان، باب غلظ تحريم قتل الإنسان نفسه (296)

[◘] مرسل : اخرجه ابوداؤد، كتاب الديات، باب الدية كم هي (4546) والترمذي، كتاب الديات، باب الدية كم هي من الدراهم (1388-4818)

256 كتاب الديات كتاب الديات تتنزن الكايني

اور ان کے رسول طیفی آیا نے اپنے فضل لعنی دیت سے مالداركرديا ہے۔" (سورة التوبد:٣٧)

فوائد: دیت اونث اورنفتری دونوں صورتوں میں اداکی جاسکتی ہے آب سے ایک نے دینارایک ہزار مقرر کیے تب دینا رچونکہ 12 درہم کا ہوتا تھا اس کیے دینار ایک جبکہ درہم بارہ ہزار اوا کرنا ہوں گے حدیث میں ہے: "على اهل الذهب الف دينار . " (مؤطا) سونے والوں ير بزاروينار بي نیز جیسا که آئنده آرما ہے۔

2409 حَدَّثَنَا الْحَكُمُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ دَاوْدَ قَالَ حَدَّثِني الزَّهْرِيُّالزَّهْرِيُّ

> عَنُ أَبِي بَكُو بُن مُحَمَّدِ بُنِ عَمُرِو بُنِ حَــزُم عَنُ أَبِيــهِ عَنُ جَـلِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عِنْهُ كَتَبَ إِلَى أَهُلِ الْيَمَنِ وَعَلَى أُهُل الذَّهَب أَلُفُ دِينَارِ. •

سیّدنا ابو بکر بن محمد بن عمرو بن حزم اینے باپ سے اور وہ اسنے واداسے بیان کرتے ہیں کدرسول الله مطابقة نے اہل یمن کو لکھا تھا: ''جس کے پاس سونا ہو اس کے ذمہ (وبت) ہزار دینار ہے۔''

[12] بَابِ كُمِ الدِّيَةُ مِنَ الْإِبِل اُونٹوں ہے دیت کی گنتی کا بیان

2410 ـ أَخْبَ رَنَا الْـحَكَمُ بْـنُ مُـوْسٰي حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةً عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ دَاوْدَ حَدَّثَا الزُّهْرِيُّ....ال

ابوبكر بن محد بن عمرو بن حزم اين باپ سے اور وہ اينے دادا سے بیان کرتے ہیں کدرسول الله سے الل یمن کو بوں لکھا کر بھیجا: ''محمد نبی کھی آنے کی طرف سے ذی رعین معافر اور ہدان کے بادشاہوں شرحبیل بن عبد کلال حارث بن عبد کلال اورنعیم بن عبدکلال کی طرف اور اس الور میں بہ بھی تھا: '' کسی سے قتل میں سواونٹ دیت ہے۔''

عَنْ أَبِي بَكُر بُن مُحَمَّدِ بُنِ عَمُرِو بُنِ حَـزُم عَنُ أَبيُـهِ عَنُ جَـدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَتَبَ إِلَى أَهُلِ الْيَمَنِ ((بِسُم اللُّهِ الرَّحُهُنِ الرَّحِيعِ مِنْ مُحَمَّدٍ النَّبِي عَلَيْ إِلَى شُرَحْبِيلَ بُن عَبُدِ كُلالِ وَالْحَارِثِ بُنِ عَبُدِ كُلالِ وَنُعَيْمِ بُنِ عَهُدِ كُلالِ قِيَـلِ ذِي رُعَيُنِ وَمَعَافِرَ

ضعيف: صحيح ابن حباك (6559)ونيل الاوطار لشوكاني 163/7-164

حَالِ الديات ٢٥٠ (257) كتاب الديات ٢٥٠ (كتاب الديات ٢٥٠)

وَهَـمَـدَانَ فَكَـانَ فِي كِتَـابِهِ وَإِنَّ فِي

النَّفُسِ الدِّيَةَ مِائَةٌ مِنَ الْإِبِلِ)). •

فوائد: قتل کی دیت اونٹوں کی صورت میں سو اونٹ ہوں گے بیسندا گرچے ضعیف ہے بہر حال ابودا وُد میں اس کا شاہد موجود ہے جس کو امام البانی رکٹیلیا نے '' حسن'' قرار دیا ہے۔

2411 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بِنُ مُوسَى حَدَّثَنَا يَحْيَى بِنُ حَمْزَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ بِنِ دَاوُدَ حَدَّثِنِي

الزُّهْرِيُّ

عَنُ أَبِى بَكُرِ بُنِ مُحَمَّدِ بُنِ عَمُرِو بُنِ
حَنُمْ عَنُ أَبِيْهِ عَنُ جَدِهِ أَنَّ رَسُولَ
اللهِ عَنَ أَبِيْهِ عَنُ جَدِهِ أَنَّ رَسُولَ
اللهِ عَنَى كَتَبَ إِلْى أَهُلِ الْيَمَنِ وَكَانَ
فِسَى كِتَبَابِهِ وَفِى الْأَنْفِ إِذَا أُوعِبَ
جَدْعُهُ الدِّيَةُ وَفِى اللِّسَانِ الدِّيَةُ وَفِى النَّيْصَتِيُنِ الدِّيَةُ وَفِى النَّيْصَتِيُنِ الدِّيَةُ وَفِى النَّيْصَتِيُنِ الدِّيَةُ وَفِى النَّيْصَتِيُنِ الدِّيَةُ وَفِى النَّيْصَتِينِ الدِّيَةُ وَفِى النَّيْصَتِينِ الدِّيَةُ وَفِى النَّيْصَةِ ثُلُثِ الدِّيَةِ وَفِى الْمَأْمُومَةِ ثُلُثُ الدِّيَةِ وَفِى الْمَأْمُومَةِ ثُلُثُ الدِّيَةِ وَفِى الْمَأْمُومَةِ ثُلُثُ الدِّيَةِ وَفِى الْمُنَقِّلَةِ وَفِى الْمَأْمُومَةِ ثُلُثُ الدِّيَةِ وَفِى الْمُنَقِلَةِ عَمْسَ عَشَرَةَ مِنَ الْإِبِلِ . •

ابوبكر بن محمد بن عمر و بن حزم اپنے والد سے اور وہ اپنے دادا

سے نقل كرتے ہيں كه رسول الله طفير نے ابل يمن كى
طرف خط لكھا جس ميں ية كريه مي تقى: "ناك جب جڑسے ،
كافى جائے تو اس كى ايك ديت ہے، اور زبان ميں بھى
ايك ديت ہے اور دونوں ہونٹوں كى ايك ديت ہے اور دونوں ہونٹوں كى ايك ديت ہے اور دونوں ميں يورى ديت ہے اور دونوں آ تھوں كى ديت ہے۔
دونوں خصيوں ميں يورى ديت ہے دونوں آ تھوں كى ديت ہے۔
اور ايك پاؤں كى نصف ديت ہے سرے گہرے زخم ميں
اور ايك پاؤں كى نصف ديت ہے سرے گہرے زخم ميں
تہائى ديت ہے۔ جا كفه (دماغ يا پيك كا زخم) ميں تہائى
ديت ہے اور منقله (بلاى كوتوڑنے والى ضرب ديت ہے۔ ويوٹ) ميں يندره أونث ہيں۔"

فوائد: (۱) "المأمومة" اليے زخم كوكتے بيں جوكد سركو پھاڑتا ہود ماغ كى جھلى تك پنج جائے۔
"الجائفه" ايبا زخم جو پيد كے اندرتك پنج جائے۔" المنقِلَة" بياليي چوث ہے جس سے ہڑى نكل آئ يا نتقل ہوجائے مراد ٹوٹ جائے۔ (۳) پورى ناك، زبان، دونوں ہونٹ، صتين، ذكر، پشت، دونوں آئكھيں اور دونوں ٹائكيں۔ ان ميں پورى ديت ہوگى۔ امام شوكانى رائيليد اى كواختيار فرماتے ہيں (السدُّرَرُّ) ابن قدامہ

[•] اسناده ضعيف: ليكن ابوداؤد، كتاب الديات، باب الدية كم هي؟ (4541) والنسائي في القسامة، باب كم دية شبه العمد من الروايت كاشام موجود ب-

² اسناده ضعيف: سابقة تعليقات الما حظمري-

[13] بَاب كَيُفَ الْعَمَلُ فِي أَخُذِ دِيَةِ الْخَطَإِ غلطی سے مارے گئے شخص کی دیت کابران

2412 ـ أَخْبَوْنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنْ حَجَّاجٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنْ خِشْفِ بْن مَالِكِ

سیدنا عبداللہ سے منقول ہے کہ رسول اللہ مطابقی نے خطا سے مارے گئے شخص کی دیت میں پانچ اقسام کے اونٹ عَنُ عَبُدِ اللّهِ أَنَّ رَسُولَ اللّهِ عَبُدِ اللّهِ عَلَى اللهِ عَلَى عَلَى اللهِ عَلَى اللّهِ عَلَى عَلَى اللّهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللّهِ

مقرر کئے۔

فوائد: امام دارقطنی رائید نے اسے اپنی کتاب میں ذکر کیا ہے اور ساتھ اخماس کی تفصیل بھی دی ہے بہر حال یہ حدیث ضعیف ہے۔ جبکہ حیجا یہی مروی ہے کہ "الا ان دیة الدخط أشب المعمد." (ابوداؤد: حسن) خبردار! بقینا خطا کی دیت عمد کی طرح ہی ہوتی ہے جو کہ سواونٹنیاں جبکہ چالیس حاملہ ہوں۔ لہذا غلطی ہے بھی اگر کوئی تل ہوجائے تو سواونٹ ہی ادا کرنا پڑیں گے۔

[14] بَابِ الْقِصَاصِ بَيْنَ الْعَبِيدِ غلامول كے درمیان قصاص كا بيان

2413 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ يَزِيدَ الرِّفَاعِيُّ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي

سیّدنا عمران بن حسین سے منقول ہے غریبوں کے ایک فلام نے امیروں کے فلام کا ہاتھ کاٹ دیا اور اس کے مالکوں نے نبی مطابقی کے پاس جا کر کہا: یا رسول اللہ! یہ غریبوں کا غلام ہے؟ تو نبی مطابقی نے اس کے ذمہ کچھ مقرر نہیں کیا۔

عَنُ عِمُرَانَ بُنِ حُصَيُنٍ أَنَّ عَبُدًا لِأَنَاسٍ فَقُواءَ قَطَعَ يَدَ خُلامٍ لِأَنَاسٍ أَغُنِيَاءَ فَأَتَى فَقَرَاءَ قَطَعَ يَدَ خُلامٍ لِأَنَاسٍ أَغُنِيَاءَ فَأَتَى أَهُلُهُ النَّبِيَ عَلَيْ فَقَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّهُ لِأُنَاسٍ فُقَدراءَ فَلَمْ يَجْعَلُ عَلَيْهِ النَّبِيُ عَلَيْهِ النَّبِيُ عَلَيْهِ النَّبِيُ عَلَيْهِ النَّبِيُ عَلَيْهِ النَّبِيُ عَلَيْهِ النَّبِي عَلَيْهِ النَّبِي عَلَيْهِ النَّهِ النَّهِ النَّهُ عَلَيْهِ النَّهِ النَّهُ عَلَيْهِ النَّهِ النَّهِ النَّهِ النَّهُ عَلَيْهِ النَّهُ النَّهُ عَلَيْهِ النَّهُ النَّهُ عَلَيْهِ النَّهُ النَّهُ النَّهُ النَّهُ اللهُ النَّهُ اللهُ النَّهُ اللهُ النَّهُ اللهُ اللهُ النَّهُ اللهُ اللهُ النَّهُ اللهُ النَّهُ اللهُ النَّهُ اللهُ النَّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ

❶ ضعيف: النمين تجاج ضعيف ب_ اخرجه احمد 1/384 والبيهقي في الديات،باب من قال هي أحماس 75/8 -

ع حسن: ابوداؤد، كتاب الديات، باب حنابة العيد يكون للفقراء (4590) والنسائي، كتاب القسامة، باب سقوط القود بين المماليك فيما دون النفس (4765)

الديات ١٤٥٧ كتاب الديات ١٤٥٧ كتاب الديات ١٤٥٧ كتاب الديات

فهاند: غلاموں کے معاملے میں بھی اگر چہ دیت وقصاص کا اہتمام کیاجائے گا بہر حال یہ آزاد لوگوں کی طرح ضروری نہیں بلکہ اس میں تخفیف کی گنجائش ہے۔

[15].... بَابِ فِي دِيَةِ الْأَصَابِعِ انگلیوں کی دیت کا بیان

2414 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ غَالِبِ التَّمَّارِ عَنْ مَسْرُوقِ بْنِ أَوْسِ

عَنْ أَسِي مُسوسَى الْأَشْعَرِي عَن سيّدنا ابوموى اشعرى رَبُّ الله عَن بي مِنْ عَنْ أَسِهُ مِن الله عَن أَرايا النَّبيِّي عَلَى اللَّهُ صَابِعُ سَوَاءٌ ''انگليال برابر بين' مين في كها: دن دن اون ؟ آپ نے فرمایا:''جی ہاں۔''

)).قَالَ فَقُلُتُ عَشُوْ عَشُوْ قَالَ ((نَعَمُ)). •

ف واشد: ہرانگلی کی دس اونٹ دیت ہے یاس کے بقدر نفتدی جیسا کہ پیچھے ابھی بیان ہوا ہے

الكيول ميں ياؤں ہاتھ كى مجى انگلياں برابر ہيں جائے انگوٹھا يايا چھنگل ديكھيے آئندہ احاديث۔

2415 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ عِكْرِمَةَ

سيدنا ابن عباس وظافها كہتے ہيں كه نبي طفي الله نے فرماياً "بي اور بیر برابر بین 'اوراین چفظی اور انگوشے کی طرف اشارہ

عَنِ ابُنِ عَبَّاسِ عَنِ النَّبِيِّ عَلَىٰ اللَّهِ عَلَىٰ اللَّهِ عَلَىٰ اللَّهِ عَلَىٰ اللَّهِ عَلَىٰ اللَّهُ ((هٰلَا وَهٰلَا سَوَاءٌ وَقَسَالَ بِخِنُصَرِهِ وَ إِبْهَامِهِ)). 🍳

2416 - حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ مُوسٰى حَدَّثَنَا يَحْمَى بْنُ حَمْزَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ دَاوْدَ حَدَّثِني الزُّهْرِيُ

حَـدَّتَنِي أَبُو بَكُرِ بُنُ مُحَمَّدِ بُنِ عَمْرِو بُنِ حَزُمٍ عَنُ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﴿ كَتَبَ إِلَى أَهُلِ الْيَمَنِ : فِي كُلِّ إِصْبَع مِنُ أَصَابِعِ الْيَدِ وَالرِّجُلِ

سیدنا ابوبکر بن محمد بن عمرو بن حزم این باپ سے اوروہ اسے دادا سے بیان کرتے ہیں کدرسول اللہ مطابق نے اہل يمن كولكها كه: '' ہاتھ اور پاؤں كى تمام انگليوں ميں در) دس اونٹ (دیت)ہیں۔''

عَشُرَ قُمِنَ الْإِبل. 9

 [◄] حيد، صحيح: ابوداؤد، كتاب الديات، باب ديات الأعضاء (4557) والنسائي، كتاب القسامة، باب عقل الأصابع (4860) وابن ماجه، كتاب الديات، باب دية الأصابع (2654)

صحيح البخاري، كتاب الديات، باب دية الأصابع(6895) كتاب الديات، باب ماجاء في دية الأصابع(1392) وابن ماجه كتاب الديات،باب دية الأصابع(2652)

³ ضعيف: صحيح ابن حبان (6559)

عَنِينَ الْكِلِيْفِيُّ كَتَابِ الدياتِ 260 كتاب الديات

[16] بَابِ فِي الْمُوضِحَةِ موضحہ (بڑی کونٹکا کرنے والے زخم) کی دیت کا بیان

2417 - أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدَةُ عَنْ سَعِيْدٍ عَنْ مَطَرِ

عَنُ عَمُوو بُن شُعَيب عَنُ أَبيهِ عَنُ سيدنا عمروبن شعيب اين والدسه اوروه اين داداسه جَدِّهِ قَالَ قَضَى رَسُولُ اللهِ عَلَيْ فِي فَي الْكُورِينَ بِين كه رسول الله السَّايَةِ فَي مواضح كمتعلق

الْمَوَاضِع خَمُسًا خَمُسًا مِنَ الْإِبلِ . • يَا يَيْ اللهِ اون كافيهلكيا

فوائد: (۱)" السمو اضِعَ "المُوضِحَة كى جمع بدايس زخم يربولا جاتا ب جوبدُى نَكَى كردے۔(٢) ايسے زخم ميں يانچ اونٹ ديت ہوگی۔

2418 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ دَاوُدَ حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّالزُّهْرِيُّ

سیدنا ابوبکر بن محمد بن عمرو بن حزم اینے والد سے اور وہ این وادا سے نقل کرتے ہیں کدرسول الله مطاقع نے الل يمن كولكھا كە: '' ہاتھ اور ياؤں كى تمام اڭگيوں ميں دس' دس اونث اورموضحه میں پانچ اونٹ ہیں۔'' عَنْ أَبِي بَكُر بُن مُحَمَّدِ بُنِ عَمْرِو بُنِ حَــزُم عَنُ أَبيُــهِ عَنُ جَــدِهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِثْثًا كَتَبَ إِلَى أَهُلِ الْيَمَنِ وَفِي كُلِّ إِصْبَع مِنُ أَصَابِع الْيَدِ وَالرِّجُلِ عَشُرٌ مِنَ الإبل وَفِي الْمُوضِحَةِ خَمُسٌ مِنَ الْإِبل. ٥

[17] بَابِ فِي دِيَةِ الْأَسُنَانِ دانتوں کی دیت کا بیان

2419 - أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ مَطر

عَنُ عَـمْـرِو بُنِ شُعَيُبِ عَنُ أَبِيُـهِ عَنُ مَ عَمُو بن شعيب اينے والد سے اور وہ اينے دادا كُفَل

جَدِهِ قَالَ قَصَى رَسُولُ اللهِ عِنَي في حَرت بين كه رسول الله عَيَا في دانوں كمتعلق

❶ اسناده حسن: ابوداؤد، كتاب الديات،باب ديات الاعضاء(4566)والترمـذي، كتـاب الـديـات،باب ماجاء في الموضحة (1390) والنسائي، كتاب القسامة بباب المواضح (4867)

🗗 استنادہ ضعیف: کیکن اس حدیث کے شواہر موجود ہیں و کیھئے حدیث نمبر (2399-2409-2410-2416) ان میں اس حدیث کے اطراف گزر کیے ہیں۔

الديات ١٤٥١ كاب الديات ١٤٥١ كاب الديات

الْأَسْنَان خَمْسًا خَمْسًا مِنَ الْإِبِلِ . ٥ يَا يُحُ اللَّ اللَّهُ اللّ

2420 ـ أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بُنُ مُوسِى حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ دَاوُدَ حَدَّثِنِي

الزُّهْرِيُّ

ابوبكر بن محمد بن عمر و بن حزم اپنے والد سے اور وہ اپنے دادا سے نقل كرتے ميں رسول الله مضافي نے اہل يمن كولكها كه دانت ميں يانچ اونث ميں۔

عَنُ أَبِى بَكُرِ بُنِ مُحَمَّدِ بُنِ عَمُرِو بُنِ حَـزُم عَنُ أَبِيـهِ عَنُ جَـدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَلَيُّ كَتَبَ إِلَى أَهُـلِ الْيَمَنِ وَفِى السِّنِ خَمُسٌ مِنَ الْإِبل . •

[18] بَابِ فِيمَنُ عَضَّ يَدَ رَجُلٍ فَانْتَزَعَ الْمَعْضُوضُ يَدَهُ اس شخص كم تعلق جس نے كى كا باتھ كا ٹا اور اس نے اپنا باتھ سے ليا

2421 حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ قَتَادَةُ أَخْبَرَنِي قَالَ سَمِعْتُ زُرَارَةَ بْنَ

أوْفَى.....أ

سیدنا عمران بن حمین براٹھ روایت کرتے ہیں کہ ایک آدمی نے ایک شخص کا ہاتھ کا ٹاس نے اپنا ہاتھ کھینچ لیا تو کا شخص والے کے دو الحکے دانٹ کر سے لوگ جھڑا رسول اللہ مطابق کے پاس لائے تو آپ نے فرمایا: "تم میں سے کوئی اپنے بھائی کو ایسے کا ٹا ہے جیسے اونٹ کا ٹا ہے تیرے لئے کوئی دیت نہیں ہے۔''

عَنُ عِمُرَانَ بُنِ مُصَيْنِ أَنَّ رَجُلَا عَصَّ يَدَهُ فَوَقَعَتُ ثَنِيَّتَاهُ يَدَهُ فَوَقَعَتُ ثَنِيَّتَاهُ فَاخْتَصَمُوا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ عَنَى فَقَالَ: ((يَعَضُّ أَحَدُكُمُ أَخَداهُ كَمَا يَعَضُّ الْفَحُلُ لَا دِيَةَ لَكَ)). •

فواند: معلوم بوا اگردفاع ، بچاؤ كرتے بوئے مخالف كاكوئى نقصان بوجائے تو ، رائيگال جائے گا۔

[19] بَابِ الْعَجُمَاءِ جُرْحُهَا جُبَارٌ جانور كے زخم كا تاوان نه ہونے كابيان

2422_ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ حَدَّتَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ

اسناده حسن: اخرجه ابو داؤد، كتاب الديات بباب ديات الأعضاء (4563) والنسائي، كتاب القسامة بباب عقل الأسنان (4856)
 وابن ماجه، كتاب الديات، باب دية الأسنان (2651)

◙ متفق عليه: البخاري،كتاب الديات،باب اذا عض رحلًا فوقعت ثناياه(6892)ومسلم،كتاب القسامة،باب القود من العضة (4773)

عن الديات ١٤٥٥ و ١٤٥٥ كتاب الديات

سیّدنا ابو ہررہ و وَالنّهُ کہتے ہیں رسول الله مَشَالَیّا نے فرمایا: "جانور کا لگا ہوا زخم معاف ہے کنویں اور کان کے نقصان کا تاوان نہیں اور رکاز میں پانچوال حصہ ہے۔"

فوائد: (۱) جانور سے پینچنے والا نقصان، کنویں کی کھدائی کے دوران یا کان میں ہونے والے کسی بھی قتم کے نقصان کامالک یا کام لینے والا ذمہ دار نہ ہوگا۔ تو گویا ایسے خطرے والے کام جن میں مالک بے اختیار ہوتو ایسے کاموں میں وہ بری ذمہ ہوگا۔ (۲) پوشیدہ خزانہ ملے تو اس میں پانچواں حصہ بیت المال میں جمع کروانا ہوگا۔ پھر بقیہ مال اس خص کے لیے یاک ہوگا۔

2423 ـ أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي

عَسنُ أَسِى هُسرَيُسرَةَ عَنِ النَّبِيِّ عَلَىٰ قَالَ: ((جُرُحُ الْعَجْمَاءِ جُبَارٌ وَالْبِثُرُ جُبَارٌ وَالْسَعُدِنُ جُبَارٌ وَفِى الرِّكَازِ الْحُمُسُ)). ٥

سیدنا ابو ہررہ و فلنٹ کہتے ہیں کہ نبی مطبق نی السی نے فرمایا:
''جانور کا لگا ہوا زخم معاف ہے۔ کنوال اور کان کا ہر جانہ
باطل ہے اور رکاز (وفن شدہ دھاتوں) میں پانچوال حصہ

2424 ـ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ

سیّدنا ابوہریرۃ ڈٹاٹنڈ کہتے ہیں کہ نبی مطابِیۃ نے فرمایا: ''کان باطل ہے' جرنے والے جانور ضائع ہیں' کنواں رائیگاںاور دفینے (زمین میں قدرتی گڑی ہوئی معدنیات) عَنُ أَبِى هُوَيُوَةَ عَنِ النَّبِيِ ﷺ قَالَ: ((الْـمَـعُدِنُ جُبَارٌ وَالسَّائِمَةُ جُبَارٌ وَالْبِنُو جُبَارٌ وَفِى الرِّكَاذِ الْخُمُسُ)). ۞

میں یانچوال حصہ ہے۔

[20] باب في دِيَةِ الْجَنِينِ پيت كے بچ كى ديت كابيان

2425 حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُورِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عُبَيْدِ بْنِ نُضَيْلَةَ

3 صحیح: سابقہ صدیث مرر آئی ہے۔

 [♦] متفق عليه: البخاري، كتاب الديات، باب المعدن حبار والبُر حبار (6912) ومسلم، كتاب الحدود، باب حرح العجماء والمعدن والبئر (440)

ہ اسنادہ حسن: لیکن حدیث مثنق علیہ ہے (1710) کے تحت بیر صدیث گزر چکی ہے۔

263 كتاب الديات

عَنِ الْمُغِيرَةِ بُنِ شُعُبَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ الْمُرَأَتَيُنِ كَانَتَا تَـحُتَ رَجُلٍ فَتَعَايَرَتَا الْمُرَأَتَيُنِ كَانَتَا تَـحُتَ رَجُلٍ فَتَعَايَرَتَا فَصَرَبَتُ إِحُـدَاهُمَا اللَّاحُرَى بِعَمُودٍ فَضَرَبَتُ إِحُداهُمَا اللَّاحُرَى بِعَمُودٍ فَقَتَلَتُهَا وَمَا فِي بَطُنِهَا فَاخْتَصَمَا إِلَى

رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَصْبِي فِيهِ عُرَّةً

وَجَعَلَهَا عَلَى عَاقِلَةِ الْمَرُأَةِ . •

الكانتين الكانتين

سیّدنا مغیرہ بن شعبہ فرانشوں کہتے ہیں کہ دوعورتیں ایک شخص کے نکاح میں تصیں ان دونوں آپس میں غیرت کھانے لگیں تو ان میں سے ایک نے دوسری کے خصے کی چوب سے مارا اور اسے اور بیٹ کے بیچ دونوں کوئل کر دیا وہ رسول اللہ ملے آتا ہے یاس جھٹڑ الائے۔ تو آپ نے بیٹ کے بچہ کے مدلہ میں ایک غلام یا لونڈی کا فیصلہ کیا اور اس کوعورت کے مدلہ میں ایک غلام یا لونڈی کا فیصلہ کیا اور اس کوعورت کے عصبہ (باپ کی جانب سے رشتہ دار) کے فرمہ مقرر کیا۔

2426 حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجِ عَنْ عَمْرٍو هُوَ ابْنُ دِينَارٍ عَنْ طَاوْسٍ

سیّدنا ابن عباس و فائین کہتے ہیں کہ سیّدنا عمر و فائین نے پیٹ کے بیٹ کو فیصلہ پوچھا تو حمل بن مالک بن نابغہ کھڑے ہوئے انہوں نے کہا: ''دوعورتوں میں جھڑا ہوا ان میں سے ایک نے دوسری کو خیمے کی چوب سے مارا تو نبی مشاکلیا نے بیچ کے متعلق ایک لونڈی یا غلام کا فیصلہ کیا اور فرمایا عورت کے بدلے عورت قبل کی جائے۔''

عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ أَنَّ عُمَرَ نَشَدَ النَّاسَ قَضَاءَ رَسُولِ اللَّهِ عَنَّى فِي الْجَنِينِ فَقَامَ حَمَلُ بُنُ مَالِكِ بُنِ النَّابِغَةِ فَقَالَ كُنتُ بَيْنَ امْرَأَتَيْنِ فَضَرَبَتُ إِحُدَاهُمَا الْأُخْرَى بِمِسُطَحٍ فَقَضَى رَسُولُ اللَّهِ عَنَى فِي جَنِينِهَا بِغُرَّةٍ وَأَنْ تُقْتَلَ بِهَا . ٥

[21] بَابِ دِيَةِ الْنَحَطَّإِ عَلَى مَنُ هِى خطاسے مارے گئے خص کی ویت کے ذمّہ وارکا بیان

2427 ـ أَخْبَرَنَا عُشْمَانُ بْسُ عُمَرَ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِيْ سَلَمَةً

 [◘] متفق عليه: البخارى، كتاب الديات، باب جنين المرأة (6905) ومسلم، كتاب القسامة، باب دية الحنين و وجوب الدية...... (4369) و (4370)

اسناده صحيح: البوراؤوش الين برت تحديث كصيغه بروايت بيان كرت بين -أخرجه ابوداؤد، كتاب الديات، باب دية المجنين (4572) والنسائي، كتاب القسامة، باب قتل المرأة بالمرأة (4753) وابن ماجه، كتاب الديات، باب دية المجنين (2641)

264 كتاب الديات المراقعة الم سیدنا ابو ہرریۃ زائش سے منقول ہے کہ قبیلہ بزیل کی دو عَنُ أَبِي هُرَيُرةَ أَنَّ امْرَأْتَيْن مِنْ هُلَيْل عورتیں لڑیریں،ایک نے دوسری کو پھر مارا جس سے وہ اقْتَتَكَتَـا الْحَرَمَـتُ إحُـدَاهُمَـا الْأُخُرَى اوراس کا پیٹ کا بچرمر گئے۔لوگوں نے دیت کے متعلق بحجر فَقَتَلَتُهَا وَمَا فِي بَطُنِهَا نی کھی کے باس جھڑا کیا تو آپ نے پیٹ کے بچے فَىاخُتَصَمُوا فِي الدِّيَةِ إِلْى دَسُول کے بدلہ میں ایک لونڈی یا غلام کا فیصلہ کیا۔ اور اس کی اللَّهِ ﷺ فَقَضَى أَنَّ دِيَةَ جَنِينِهَا غُرَّةُ دیت عورت کے عصبہ کے ذمہ مقرر کی اس کی اولا داوراس عَبُدِ أَوُ وَلِيلَدةِ وَقَضَى بِدِيَتِهَا عَلَى کے ساتھ والے لوگوں کو اس کا وارث بنایا۔ توحمل بن نابغہ عَاقِلَتِهَا وَوَرِثَتُهَا وَرَثَتُهَا وَلَلُهَا وَلَلُهَا وَهَنُ بزلی نے کہا: 'میں اس کا تاوان کیے دوں؟' ، جس نے نہ مَعَهَا فَقَالَ حَمَلُ بُنُ النَّابِغَةِ الْهُذَلِيُّ کھایا نہ بیانہ بولا اور نہ چیخااس طرح کا تاوان تو ساقط ہوتا كَيُفَ أَغُرَهُ مَنُ لَا شَرِبَ وَلَا أَكَلَ وَلَا ہے تو رسول الله من الله عن فرمایا: "به کا ہنوں کا بھائی ہے" نَطَقَ وَلَا اسْتَهَلَّ فَمِثُلُ ذٰلِكَ يُطَلُّ (بيآب نے)اس لئے (فرمایا کدأس) نے ان کی طرح فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((إنَّ مَا هُوَ مِنُ قافیہ بندی سے کام لیا۔' إخُوَانِ الْكُهَّانِ)). مِنْ أَجُلِ سَجُعِهِ الَّذِي سَجَعَ . •

ف واند: (۱) پھر ياس جيسي كوئى چيز مثلاً لاھى ،كوڑا وغيره چونكه بيل كى بجائے فقط زخمى كرنے یاچوٹ لگانے کے لیے استعال ہوتے ہیں لہذا ان سے اگریسی کوخطرناک چوٹ لگنے کے باعث وہ ہلاک ہوجاتا ہے تواسے قتل خطأ باشبہ العمد كہيں سے ۔جس ميں فقط ديت لى جاسكتى ہے قصاصاً قتل نہيں كياجاسكتا اوراس ميس ويت مغلظه بي بوكى _آب طفي الله في الله ان دية الخطأ شبه العمد . " (ابوداؤد؛ صن خبروار يقيياً قتل نطأ كى ديت عمر كي طرح باوردوسرى مديث مي ب "عقل شبه العمد مغلظ مثل عقل العمد و لا يقتل صاحبه "(حسن ابوداؤد) شبه عمد كي ديت عمد كي طرح مغلظ موكى (سواونٹنیاں جن میں جالیس حاملہ ہوں)اور قاتل کوقل نہیں کیا جائے گا (۲) ناطق وحی کے مقابلے میں کسی کی بات برکاه کی حیثیت بھی نہیں رکھتی جاہے وہ جتنا بھی عقل کل، پڑھالکھا کیوں نہ ہو۔

[₫] متفق عليه: البخاري، كتاب الديات، باب حنين المرأة وأن العفل على الوالد..... (6909) ومسلم، كتاب القسامة باب الدية الجنين و وجوب الدية في قتل الخطاء.....(4367)

الديات 265 كتاب الديات [22] بَابِ الدِّيَةِ فِي شِبُهِ الْعَمُدِ

جس کے عداً مارے جانے کا شبہ ہواس کی ویت کا بیان

2428 - أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَيُّوبَ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ رَبِيْعَةَ

سيدنا عبدالله بن عمرو والني كبت بين كدرسول الله مي الم عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُن عَمُرو قَالَ قَالَ رَسُولُ

فرمایا:''جو شخص غلطی سے مارا گیا ہو مگر اس پر قصداً مارے اللَّهِ عِنْ ذِينَةُ قَتِيلُ الْحَطَا شِبُهِ الْعَمُدِ مَا

حانے کا شبہ ہو جیسے کوڑے اور لکڑی سے مارا گیا۔ تو اس کی كَانَ بِالسَّوُطِ وَالْعَصَا مِنْهَا أَرْبَعُونَ فِي

> ديت حاليس حامله اونثنيان ہوں گی۔'' بُطُونِهَا أَوُلادُهَا . ٥

فواند: (۱) شبه العمد سے مراد ایباقتل ہے جوکس ایس چیز کے ذریعے ہوا ہوجس سے عموماً بندہ قتل تونہ ہوتا ہوبہر حال احمال ہوجیسے لاتھی، پھر وغیرہ اسے قتل خطا بھی کہاجا تا ہے یعنی غلطی سے ہونے والا

(٢) ایسے قاتل کوقتل نہیں کیا جاسکتا البتہ ویت لی جائے گی حوالہ بچھلے فوائد میں ملاحظہ سیجیے۔ (٣) دیت مغلّظ بیے کہ سوا ونٹنیوں میں جالیس اونٹنیاں حاملہ ہوں۔

[23].... بَابِ مَنُ اطَّلَعَ فِي دَارِ قَوْمٍ بِغَيْرِ إِذُنِهِمُ

کسی کے گھر میں بغیرا جازت جھا نکنے واٹے شخص کا بیان

2429 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ سیدناسبل بن سعد ساعدی والنیز بیان کرتے ہیں کہ ایک عَنُ سَهُل بُنِ سَعُدِ السَّاعِدِيِّ أَخْبَرَهُ

آ دمی نے نبی مطفیقاتی کے ایک مکان میں جھا نکا اور رسول الله مطاقطة ك بإس لوب كى الك كتكمي تقى جس سے آب سركے بالسيدھے كررہے تھے۔رسول الله مي الله الله علي الله علي الله تو فرمایا:"اگر میں جان لیتا کہ تو و کچے رہا ہے تو میں ای کو

فَقَالَ لَوُ أَعُلَمُ أَنَّلَكَ تَنْظُرُنِي لَطَعَنْتُ بِهَا تیری آئکھ میں مارتااور رسول الله ﷺ نے فرمایا: 'و یکھنے فِي عَيُنِكَ وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَيْنَا: کے خوف ہے ہی تو اجازت مقرر کی گئی ہے۔'' ((إِنَّمَا جُعِلَ الْإِذُنُ مِنْ أَجُلِ النَّظَرِ)). 🗗

باب تحريم النظر في بيت غيره (5603)

أَنَّ رَجُلًا اطَّلَعَ مِنْ جُحُو فِي حُجُرَةِ

النَّبيِّ ﷺ وَمَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مِدْرًى

يُخَلِّلُ بِهَا رَأْسَهُ فَرَآهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ

[🗨] صحيح: ابن حبان(6011)وأخرجه ابوداؤد، كتاب الليات،باب في الخطاء شبه العمد(4547(والنسائي في القسامة، باب ذكر الدية من الورق (4817)

[•] متفق عليه: البخارى، كتاب الديات، باب من اطلع من بيت قو م ففقاً عينه فلا دية له (6901) ومسلم، كتاب الآداب

الكالم المات
فواند: (۱) "مدری" بولو ہے کی تنگھی کی سی شکل ہوتی ہے (۲) گھر میں جھا تکنے پراگر مالک اس کی آگھ پھوڑ دے یا کوئی اور نقصان کردے تو ایسا نقصان رائیگاں ہوگا۔ (۳) اجازت کی حکمت یہی ہے کہ کسی ایسی چیز برنظرنه برٔ جائے جس کاد کیمنا حرام ہو۔ لہذا ضروری ہے کہ کسی کے گھر اجازت لے کر داخل ہوا جائے۔ بلکہ اینا گھر بھی ہوتو کھٹکھٹائے بغیر داخل نہ ہوا جائے۔ ہوسکتا آپ کی ماں ،بہن بردہ اتارے بیٹھی مواورآپ کااما نک دخول ان کے لیے بریثانی کا باعث بنے۔

2430 ـ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوْسِي عَنِ ابْنِ أَبِيْ ذِئْبِ عَنِ الزُّهْرِيِّ

يَحُلُّتُ بِهِ رَأْسَهُ اطَّلَعَ عَلَيْهِ رَجُلٌ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِلَى : ((لَوُ أَعُلَمُ أَنَّكَ تَنْظُرُ لَقُمْتُ حَتَّى أَطُعَنَ بِهِ عَيْنَكَ إِنَّمَا جُعِلَ الْإِذُنُ مِنْ أَجُلِ النَّظَرِ)). •

عَنُ سَهُل بُن سَعُدٍ قَالَ بَيْنَمَا رَسُولُ سَيْدِنا لَهُل بن سعد كَبْتَ بين كه رسول الله عِيْنَةِ أيك مكان اللَّهِ عِلَيْ فِي حُرْدَةٍ وَمَعَهُ مِدُرًى مِن تَصِداور آپ كے پاس ایک لوہ كى كنگھى تھى جس سے آپ اپناسر کھجارہے تھے۔ آپ کواس وقت ایک شخص نے جما تک کر دیکھا تورسول اللہ کھنے آئے نے فرمایا:"اگر مجھےمعلوم ہوتا کہ تو دیکھ رہا ہے تو میں اٹھ کر تیری آ کھے میں اس سے مارتا۔ کیونکہ دیکھنے ہی کے خوف سے تو اجازت مقرر کی گئی ہے۔''

ر24ر.... بَابِ لَا يُقْتَلُ قُرَشِيٌّ صَبُرًا قریثی کو باندھ کر مارنے کی ممانعت کا بیان

2431 ـ أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن عَنْ زَكَرِيَّا عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُطِيْع

عَنُ مُطِيعُ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللهِ عِنْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ الله عَلَيْنَ اللهُ عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ عَلَيْنَ اللهُ عَلَيْنَ اللهُ عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ اللهُ عَلَيْنَ الله عَلْمَ الله عَلَيْنَ اللهُ عَلَيْنَ اللهُ عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنَا الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ اللهُ عَلَيْنِ اللهِ عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنِ اللهِ عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ اللهِ عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ اللهُ عَلَيْنَ اللهُ عَلَيْنَ اللهُ عَلَيْنَ اللهُ عَلَيْنِ الللهُ عَلَيْنَ اللهُ عَلَيْنَ ع سنا فتح مکہ کے دن انہوں نے فرمایا: ''اس دن کے بعد قيامت تك كوئي قريشي بانده كرنه مارا جائے ـ''

يَقُولُ يَوُمَ فَتُح مَكَّةَ : ((لَا يُقُتَلُ قُرَشِيٌّ صَبُرًا بَعُدَ هٰذَا الْيَوْمِ إِلَى يَوْم الُقيَامَة). 9

فوائد: یہاں برمحل شاہریہ ہے کہ قصاص میں قتل کرناجائز ورواہے۔ 2432 حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا عَنْ عَامِرٍ قَالَ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُطِيْعٍ …

متفق علیه: سابقه حدیث مرر ذکر ہوئی ہے۔

عصحيح مسلم، كتاب الجهاد، باب لايقتل قرشي صيرا بعد الفتح (4203)

267 كتاب الديات كالم

الله عِنْهُ فَلَدُكَ نَحُوهُ فَالَ أَيُو مُحَمَّد

الكالكان الكان الكالكان الكالكان الكان سَمِعْتُ مُطِيُعًا يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ

سیّدنا مطیع فالنیم کہتے ہیں ہیں نے رسول الله سے اللہ

ہے سنا پھر سابق حدیث کی طرح ذکر کیا۔ ابومحمہ کہتے ہیں:

''اس کی تفیر ہوں ہے کہ کوئی قریثی شخص کفر برنہیں مارا حائے گا یعنی یہ بات نہیں ہوگی آج کے بعد کوئی قریثی شخص کا فرہو لیکن قصاص میں قتل کیا جائے گا۔''

فَسَّرُوا ذٰلِكَ أَنُ لَا يُقُتَلَ قُرَشِيٌّ عَلَى الُكُفُر يَعْنِي لَا يَكُونُ هَذَا أَنُ يَكُفُرَ قُرَشِيٌّ بَعُدَ ذٰلِكَ الْيَوُم فَأَمَّا فِي الْقَوَدِ

فَيُقْتَالُ 0

فواند: " كسى قريش كوقيدكر حقل نهيس كياجائے گا"اس كى تفيير ومطلب بيہ ہے كه قريش چونكه کمہ کے رہائش تھے اور فتح کمہ برہی مسلمان ہوگئے تھے توبیا ویا ان کے اسلام کی جانب اشارہ تھا کہ انہیں کفریاار تداد کی بنارقتل نہیں کیا جاسکتا ہے البتہ قصاص میں بیمکن ہے۔واللہ اعلم ۔

[25].... بَابِ لَا يُؤُخِذُ أَحَدٌ بِجِنَايَةِ غَيْرِهِ کسی شخص کوکسی غیر کے جرم میں نہ پکڑنے کا بیان

2433 ـ أَخْبَوْنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ يَعْنِي ابْنَ حَازِمٍ قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ الْمَلِكِ بْنَ

عُمَيْرِ حَدَّنَنِيْ إِيَادُ بْنُ لَقِيطٍ

وَعَلَيْهِ ثُوبُانِ أَخُضَرَانِ فَلَمَّا رَأَيُتُهُ

عَرَفْتُهُ بِالصِّفَةِ فَأَتَيْتُهُ فَقَالَ: ((مَنُ هَذَا

الَّذِي مَعَكَ؟)) قُلُتُ ابْنِي وَرَبّ

الْكَعْبَةِ فَقَالَ: ((ابْنُلَثَ))فَقُلْتُ أَشْهَدُ

به قَالَ: ((فَإِنَّ ابُنَكَ هَـذَا لَا يَجُنِي

سیّدنا ابورمی کہتے ہیں میں مدینہ گیا اور میرے ساتھ میرا عَنُ أَبِي رَمُثَةَ قَالَ قَدِمُتُ الْمَدِينَةَ بیٹا تھا۔ اور ہم نے رسول الله مطابقی کونبیس و یکھا تھا میں وَمَعِىَ ابُنٌ لِئَ وَلَمْ نَكُنُ دَأَيْنَا دَسُولَ آپ کے یاس گیا رسول الله مطابق نکلے اور آپ سبز اللَّهِ عَلَى اللَّهِ

کیڑے سنے ہوئے تھے۔ جب میں نے آپ کو دیکھا تو وضح وصف سے ہی بہوان لیا۔ میں آپ کے پاس گیا آپ نے فرمایا: ' بیتمہارے ساتھ کون ہے؟ '' میں نے کہا: رب

کعبہ کی قتم! میرابیٹا ہے۔ آپ نے فرمایا: تیرابیٹا ہے؟ میں نے کہا: جی ہاں امیں اس کی گوائی دیتا ہوں۔ آپ

نے فرمایا: تمہارے بیٹے کا قصور تمہارے ذمہ اور تمہارا قصور

تمہارے میٹے کے ذمنہیں ہوگا۔''

• صحیح: سابقہ حدیث ہی کررآئی ہے۔

عَلَيْكَ وَلَا تَجْنِي عَلَيْهِ)). ٥

2 اسناده صحيح: ابن حبال (5995)

الديات ١٤٥٥ كتاب الديات ١٤٥٠ كتاب الديات

فواند: معلوم ہوا مجرم ہی اصل سزا کا مستحق ہوگا اس کے جرم کی سزا اس کے کسی عزیز کوئیس دی جا سکتی۔ یہ جورواج ہے کہ اگر کوئی مجرم نہ ملے تو اس کے گھروالوں کو گرفتار کر کے تھانے لاکر بند کردیا جائے یہ بالکل غیراسلامی ہے۔

2434 - أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ إِيَادٍ حَدَّثَنَا إِيَادٌ

عَنُ أَبِى رِمُثَةَ قَالَ انْطَلَقْتُ مَعَ أَبِى نَحُو رَسُولِ اللّهِ عَنَى فَقَالَ لِآبِى: ((ابُنُكَ هَذَا؟)) فَقَالَ إِي وَرَبِّ الْكَعْبَةِ قَالَ: ((حَقَّا أَشُهَدُ بِهِ)) قَالَ: ((حَقَّا أَشُهَدُ بِهِ)) قَالَ: ((حَقَّا أَشُهَدُ بِهِ)) قَالَ: ((حَقَّا أَشُهَدُ بِهِ)) قَالَ فَتَبَسَّمَ رَسُولُ اللّهِ عَنَى ضَاحِكًا مِنُ ثَبَتِ شَبَهِى فِى أَبِى وَمِنُ حَلِفٍ أَبِى مَن ثَبَتِ شَبَهِى فِى أَبِى وَمِن حَلِفٍ أَبِى عَلَى فَي اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ الله



۱۹ ومن كتاب الجهاد جهادك بيان بس

لغوى طورير جہاد باب" جَاهد يجاهد " (مفاعله) سے مصدر ہے اس كے معنى مشقت أشانا ، کوشش کرنا ہے۔ جب کہ شرعی طور پر اپنی تو انا ئیوں کو کفار سے لڑائی میں صرف کرنے کا نام ہے اور اسی طرح بیہ نفس، شیطان اور فساق کے خلاف مجاہدے پر بھی بولا جاتا ہے۔ فتح الباری 5/6) شیخ وصیہ زهیلی کہتے ہیں کہ کفار کے خلاف لڑائی یااینے دفاع میں جان ،مال اورز بان کے ساتھ بوری طاقت صرف کرنا جہاد بـ (الفقه لاسلامي وادلته)

لہٰذا ائمہ ومحدثین کی آراء اورقر آن میں عام استعمال کے اعتبار سے جہاد کو کفار سے لڑائی کے لیے اصلا استعال کیا گیا ہے۔اگر چہ بیددوسری اقسام کوبھی محیط ہے۔جس طرح ابن قیم رہیتید فرماتے ہیں کہ آپ مطبق الم كاجهادقلب وزبان، وعوت وبيان اورسيف وسنان جي كيساته تقارزاد المعاد)

[1] بَابِ الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَفْضَلُ الْأَعُمَالِ الله کی راہ میں جہاد کرنا افضل عمل ہے

2435 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيْرٍ عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِيْ كَثِيْرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ

عبدالله بن سلام كہتے ہيں كه رسول الله عظيمين كے ہم چند صحابی بیٹے تھے آپس میں تذکر کیا کہ کاش ہمیں معلوم ہوتا کہ کونساعمل اللہ کوزیادہ محبوب ہے تو ہم اسے اپناتے تو۔ الله في سورة القف نازل ي عبدالله كهتم بي رسول الله والمنطقة نے ہمیں پوری سورت بڑھ کر سائی ابوسلمہ کہتے ہیں:

عَنُ عَسُدِ اللَّهِ بُنِ سَلام قَالَ قَعَدُنَا نَفَرُّ مِنُ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَتَذَاكُرُنَا فَقُلُنَا لَوْ نَعُلَمُ أَيَّ الْأَعْمَالِ أَحَبَّ إِلَى اللُّهِ تَعَالَى لَعَمِلْنَاهُ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿ سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ

270 كتاب الجهاد ٢٦٠ الكانك الكانك المالك

ہمیں ابن سلام نے سائی کیل کہتے ہیں: کہ ہمیں ابوسلمہ، یجیٰ 'اوزاعی' اورمجر نے سنائی۔ وَمَا فِي الْأَرُضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٥ يَا أَتُهَا الَّذِبِّ آمَنُهِ الْهَ تَقُولُهِ نَ مَا لَا تَـفُعَلُونَ كَبُرَ مَقُتًا ﴾ حَتَّى خَتَمَهَا قَالَ عَبُدُ اللَّهِ فَقَرَأَهَا عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْنَا حَتْمٍ، خَتَمَهَا قَالَ أَبُو سَلَمَةَ فَقَرَأَهَا عَلَيْنَا ابُنُ سَلام قَالَ يَحْيَى فَقَرَأَهَا عَلَيْنَا أَبُو سَلَّمَةً وَقَرَ أَهَا عَلَيْنَا يَحْيَى وَقَرَأُهَا عَلَيْنَا الْأُوزَاعِيُّ وَقَرَأُهَا عَلَيْنَا

مُحَمَّدٌ ٥

فواند: (۱) صحابہ کرام وی نفیم کی مجالس ہمارے برسکس ذکر وفکر اور خواہشیں نیک اعمال بر مشمل موتى تقيس "جعل الله همو منا كذا" (٢) اسلامي سوچ وه جواعمال ميس رغبت والى مونه كه مال ومتاع كى حريص (٣) سورة القف آيت 4 مين الله تعالى اليغ محبوب لوكون كا تذكره فرمات بين: ﴿ الَّذِينَ يُقَالِمُونَ فِيْ سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوص، وه لوگ جوراو الى مس صف باندھ چونا سج عمارت كى ما نندار تے ہیں ۔ تو کویا یم ل اللہ کے ہاں پیندیدہ اور بہترین ہے (و فق ساالله ذلك) (م) اسمد وحدثین سنت رسول کے کس قدر والہ شیدا نتھے اللہ ہمیں بھی ایسے شوق سے بہر ہ مندفر مائے۔

[2].... بَابِ فَضُلِ الْجِهَادِ

جهاد کی فضیلت

2436_ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ …

عَنُ أَبِي هُورَيْوَ قَالَ قَالَ رَسُولُ سيّدنا ابو برية وَلَانَهُ كَتِ بِين رسول الله المُعَالَمُ في فرمايا: '' جو شخص صرف الله کی راہ میں جہاد کرنے ادراس کے کلمے کی تقدیق کے لئے ایے گھر سے نکاتا ہے اللہ تعالیٰ اس

اللَّهِ عِنْ اللَّهُ لِمَنُ خَوَجَ مِنُ اللَّهُ لِمَنُ خَوَجَ مِنُ بَيْتِهِ لَا يُخُرِجُهُ إِلَّا جِهَادٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

[📭] استباده ضعیف: محمر بن کثیر راوی کی بناء پرلیکن ولیداین مسلم کی متابعت کی بناء پر پیضعف دور ہوجا تا ہے۔احسر جسه الترمذی ، كتاب التفسير، باب و من سورة الصف (3309)

الجهاد ٢٦١ كتاب الجهاد ٢٦١ كتاب الجهاد وَ تَصْدِيقٌ كَلِمَاتِهِ أَنْ يُدْخِلُهُ الْبَحَنَّةَ أَوْ ﴿ كَ لِيَ إِسَ إِتْ كَا ضَامَنِ مِوتَا ہِ كَهِ اسے جنت میں

وافل کرے یا ثواب یا مال غنیمت کے ساتھ اسے اس کے يَرُدَّهُ إِلَى مَسُكَنِهِ الَّذِي خَرَّجَ مِنْهُ مَعَ مَا نَالَ مِنْ أَجْرِ أَوْ غَنِيمَةٍ ﴾. • هم كالمرك طرف لوثائ جهال سے وہ لكا تھا۔''

فواند: جو تحض قرآن وحدیث کی تصدیق کرتے ہوئے اسے دل وجان سے تتلیم کرتے ہوئے گھرسے جہاد کی نیت کر کے نکل بڑتا ہے تو گویا اس کا پیمل اس کے جنتی ہونے کی علامت ہے کیونکہ اللہ اس کاضامن بن جاتا ہے۔ بہر حال اگر اس کی شہادت نہ بھی ہوتو اجر وغنیمت اس کے لیے لازم ہے یعنی مجاہد کی موت وحیات دونوں ہی خیر و برکت کا باعث ہیں۔

[3] بَابِ أَيُّ الْجِهَادِ أَفْضَلُ افضل جهاد كالبيان

2437 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلِ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي سُفْيَانَ عَنُ جَابِو قَالَ قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ سَيِّرنا جابر وْلِاتْمَةُ كَتِتْ بَيْل كَهَا كَلِيا الله! كونسا جهاد الْجهَادِ أَفْضَلُ قَالَ: ﴿ مَنْ عُقِرَ الْعُلْ بِ؟ فرمايا: "اسْمَحْص كاجس كالمُحورُا ماراجات اور جَوَادُهُ وَأُهُرِيقَ دَمُهُ ﴾. ٥٠ وه خُور بحى مارا جائے''

فوائد: (۱) ایما مجام جواین مال اورجان دونوں کوراہ اللہ میں قربان کردے وہ بہترین مجام ہے (۲) جہاد کامطلق استعال قال کے معنی میں ہی ہوتا ہے

[4].... بَابِ أَيُّ الْأَعُمَالِ أَفْضَلُ اعمال میں افضل عمل کا بیان

2438- أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ صَالِح حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدِ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنِ ابْنِ

سیدنا ابو ہریرة فالنف کہتے ہیں کہ رسول الله مطابق سے عَنْ أَبِئَ هُوَيُونَ قَالَ سُئِلَ رَسُولُ یو چھا گیا کونساعمل افضل ہے؟ آپ نے فرمایا: ''الله اور

اللُّهِ عِنْكُمُ أَيُّ الْأَعْمَالِ أَفْضَلُ قَالَ:

[₫] متفق عليه: البخاري، كتاب الإيمان،باب الجهاد من الإيمان(36)و مسلم، كتاب الإمارة،باب فضل الحهاد والخروج في سبيل الله(4838)

اسناده صحيحية: شرط مسلم پر ههـ صحيح ابن حباد (4639)مسند الحميدي (1313)

اس کے رسول پر ایمان لانا۔'' کہا گیا: پھر کونسا؟ فرمایا: ''اللّٰد کی راہ میں جہاد کرنا۔'' کہا گیا: پھر کونسا؟ فرمایا:''وہ رجج جس میں گناہ نہ ہو۔'' ((إِسمَانٌ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ))قَالَ قِيلَ ثُمَّ مَاذَا قَالَ:((ثُمَّ الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ)) قِيلَ ثُمَّ مَاذَا قَالَ:((ثُمَّ حَجُّ

مَبْرُورٌ)). ٥

فواند: سب سے بہترین اعمال بالترتیب ایمان، جہادادر حج ہیں جبکہ بعض احادیث میں نماز یاجہاد کو پہلے نمبر پرافضل بیان کیا گیا ہے توان میں تطبیق یہی ہے کہ بیہ حالات پر شخصر ہے کہ جیسے حالات ہوں اس کے مطابق تھم ہوگا۔ (واللہ اعلم)

> [5] بَابِ مَنُ قَاتَلَ فِي سَبِيلِ اللّهِ فُوَاقَ نَاقَةٍ اوْمُنى كا دودها ترنے تك جہاد كرنے كابيان

2439 - أَخْبَرَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا بَقِيَّةُ عَنْ بَحِيْرٍ عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ عَنْ مَالِكِ بْنِ يَخَامِرَ

عَنُ مُعَساذِ بُنِ جَبَلٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ أَنْ اللّهُ أَنْ خَلْمُهَا . ﴿ وَهُوَ قَلْدُرُ مَلْمُهُا . ﴿ وَهُوَ لَلْهُ أَنْ خَلْمُهَا . ﴿ وَلَمُ اللّهُ اللّهُ أَنْ خَلْمُهَا . ﴿ وَلَمُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ا

سیّدنا معاذ بن جبل وظائفهٔ کہتے ہیں که رسول الله ملطّ عَلَیْم نے فر مایا: ''جو الله کی راہ میں آئی دیر جہاد کرے که دودھ کا کا ایک کے اس کے لئے کا دودھ الرّ آئے اس کے لئے جنت واجب ہوجاتی ہے۔''

فواند: "فواق النّاقة" مرادوو وفعه دووه دهون كاورمياني وقفه م جوكه چندسكنثرول برشتمل بوتا م و كوركا جهادانسان ككامياب بون كاباعث مد (اللهم اجعلنا من المجاهدين)

[6] بَابِ أَفْضَلُ النَّاسِ رَجُلٌ مُمُسِكٌ بِرَأْسِ فَرَسِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ جَالِسُ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى الللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى الللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى الللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى الللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى الللللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى الللللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى الللللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللللللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى الللللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى الللللْهُ عَلَى اللللْهُ عَلَى الللللْهُ عَلَى الللللّهِ عَلَى الللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى الللللّهُ عَلَى الللللْهُ عَلَى الللللْهُ عَلَى الللللّهُ عَلَى الللللللّهُ عَلَى الللللّهُ عَلَى الللللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى الللللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى

2440- أَخْبَرَنَا عَاصِمُ بْنُ عَلِيّ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ خَالِدٍ عَنْ إِسْمَعِيلَ بْنِ

◄ حسن: أخرجه ابو داؤ د، كتاب الجهاد، باب فيمن سئال الله الشهادة (2541) و الترمذي، كتاب فضائل الجهاد، باب ما حاء فيمن يكلم في سبيل الله (1657)

[•] صحيح البخاري، كتاب الإيمان، باب18 (26) والترمذي، كتاب فضائل الجهاد، باب أي الأعمال افضل (1658)

المرابعة المرابعة عن المرابعة
عَبْدِالرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي ذُوَيْبٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ

عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَ عِنَّا خَرَجَ عَلَيْهِمُ وَهُمُ جُلُوسٌ فَقَالَ: ((أَلا عَلَيْهِمُ وَهُمُ جُلُوسٌ فَقَالَ: ((أَلا أُحْبِرُكُمُ بِخَيْرِ النَّاسِ مَنْزِلَةً؟)) قُلْنَا بَلْى قَالَ ((رَجُلْ مُمُسِلْتُ بِرَأْسِ فَى سَبِيلِ اللَّهِ فَرَسِهِ أَوُ قَالَ فَرَسٍ فِى سَبِيلِ اللَّهِ حَتَّى يَمُوتَ أَو يُقْتَلَ)). قَالَ فَأُخْبِرُكُمُ بِاللَّهِ فَقُلْنَا نَعَمُ يَا رَسُولَ اللَّهِ بِاللَّهِ عَلَيْكِ فَقُلْنَا نَعَمُ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: ((امُرُوَّ مُعْتَزِلٌ فِى شِعْبِ يُقِيمُ السَّعَلِ اللَّهِ وَلَا يُعْطَى الْ اللَّهِ وَلَا يُعْطَى اللَّهِ وَلَا يُعْلَى اللَّهِ وَلَا يُعْطَى اللَّهِ وَلَا يُعْطَى الْ اللَّهِ وَلَا يُعْطَى اللَّهِ وَلَا يُعْطَى الْ الْمِلْ اللَّهِ وَلَا يُعْطَى الْ اللَّهِ مُنْ الْ الْمُعْمِعِي الْ الْمُلْعِلَى اللَّهِ وَلَا يُعْطِى الْمُنْ الْ الْمُنْ الْ

سيّدنا عبدالله بن عباس فالنَّهُ كَتِي بِين كه نبي مِنْ الرَّاللهُ الوَّلول ك ياس تشريف لائ وہ بيٹے ہوئے تھے۔ آپ نے فر مایا کیا میں تہمیں اس شخص کی خبر نہ دوں جو مرتبے کے لحاظ سے لوگوں میں سب سے بہتر ہے؟ ہم نے کہا: کیوں نہیں' آپ نے فرمایا:'' وہ مخص جوقل ہونے تک اپنا گھوڑا لے کر اللہ کے راستہ میں موجود ہو۔" پھر آپ نے فر مایا: ' و و خص نه بتاؤں جواس کے بعد ہے؟ ہم نے کہا: كيون نبيس يا رسول الله الصيارة إ آب نے فرمايا: "و و تحف جو کسی گھاٹی میں الگ رہتا ہے نماز بڑھتا ہے اور زکوۃ ادا کرتا ہے' برے لوگوں سے الگ رہتا ہے۔'' پھر فرمایا: کیا میں تنہیں وہ محض نہ بتاؤں جس کا مرتبہ سب سے براہے؟ مم نے کہا: کیوں نہیں یا رسول الله الطبيعية ضرور فرمائے۔ آب نے فرمایا:''وہ مخص جس سے اللہ کے نام پر مانگا جاتا ہےاور وہ نہیں دیتا۔''

فوائد: (۱) جب جہادافضل ترین عبادت ہے جیسا کہ پیچے گزر چکا ہے تولاز ان مجاہد جوعملاً اس جہاو میں مصروف ہویا تیاری کی حالت میں اس کے انظار میں ہووہ بھی بہترین قرار پائے گا اور بیصدیث اس پر واضح دلیل ہے (۲) ایسا بندہ جومعا شرے سے کٹ کرالگ تھلگ کسی جنگل بیاباں میں رب تعالی کی عبادت بجالاتا ہے بیاس مجاہد سے قریب ترین ہوگا جورب کی راہ میں جہاد کے لیے تیار کھڑا ہے لیکن بیت ہے جب اصلاح ناپید ہواوردا کی کے خود گمراہ ہوجانے راہ راست سے ہٹ جانے کا خطرہ ہو ور نہ معا شرے میں گھل مل کرر ہنا اوراس میں اپنا اصلاحی کردارادا کرتے رہنا بہتر ولازم ہے۔ حدیث میں ہے: "السمؤ من الذی کی بیخالط الناس و لا یصبر یہ بین المؤمن الذی لایخالط الناس و لا یصبر

❶ صحيح: اخرجه الترمذي، كتاب قضائل الجهاد، باب ماجاء أي الناس خير (1252) و النسائي، كتاب الزكاة، باب فمن سأل الله عزو جل و لا يعطى به (2568)

عَنْ الْكَالِيْنِ الْكَالِيْنِ عَلَى الْمُعَالِدِي الْمُعَادِ الْمُعِلَّ الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعِلَّ الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعِلَّ الْمُعَادِ الْمُعِلِي الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعِلِي الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْمُعِلَّ الْمُعِي الْمُعَادِ الْمُعَادِي الْمُعَادِ الْمُعَادِ الْم

على اذاهه . "(اوكما قال) وهمون جولوگوں كے ساتھ مل جل كرر ہتا ہے اوران كى تكليفوں يرصبر كرتا ہے وہ اس مومن سے بہتر ہے جونہ تولوگوں سے ملتا ہے اور نہ ان کی تکالیف برصبر کرتا ہے (۳) اللہ کے نام بر مانگنے والے کوٹھکرا نانہیں جا ہیے۔

[7] بَابِ فِي فَضُلِ مَقَامِ الرَّجُلِ فِي سَبيلِ اللَّهِ اللّٰد کی راہ میں آ دمی کے کھڑے ہونے کی فضیلت کا بیان

2441 - أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِح حَدَّنِني يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ عَنْ هِشَام عَن الْحَسَن

عَنُ عِـمْـرَانَ بُنِ حُصَيْنِ أَنَّ رَسُولَ سيّدنا عمران بن حين فاتَّن كمت بين كه رسول الله السُّفَالَة إ نے فر مایا: ''اللہ کے راستہ میں آ دمی کا صف میں کھڑا ہونا ساٹھ برس کی عبادت سے افضل ہے۔''

اللُّهِ عِنْهُ قَسَالَ: ((مَقَامُ الرَّجُل فِي الصَّفِّ فِي سَبيل اللَّهِ أَفُضَلُ مِنُ عِبَادَةِ الرَّجُل سِتِّينَ سَنَةً)). •

فوائد: بیروایت دووجهو رسے ضعیف ہے ایک عبداللہ بن صالح کاضعف دوسری حسن اور عمران کے درمیان انقطاع للہذابدروایت ضعیف ہے لیکن جہاد کاعبادت کے مقابلے میں انتہائی افضل ہونا اس معنی کی بہت سی روایات ہیں جن سے جہاد کی فضیلت وافضلیت ٹابت ہوتی ہے نیز آئندہ (۲۴۴۳) ملاحظہ سیجے۔ [8] بَابِ فِي فَضُلِ الْغُبَارِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الله کے راستہ میں گرد آلود ہونے کی فضیلت کا بیان

2442 ـ أَخْبَرَنَا الْقَاسِمُ بْنُ كَثِيْرِ قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ شُرَيْح يُحَدِّثُ

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ سُلَيْمَانَ أَنَّ مَالِكَ عبداللہ بن سلیمان سے منقول ہے کہ مالک بن عبداللہ کا بُنَ عَبُدِ اللَّٰدِ مَـرَّ عَلَى حَبِيبِ بُن مَسْلَمَةَ أَوْ حَبِيبٌ مَرَّ عَلَى مَالِكٍ وَهُوَ يَقُودُ فَرَسًا يَمُشِى فَقَالَ ارْكُبُ حَمَلَكَ اللَّهُ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِنْكُ قَالَ: ((مَنِ اغُبَرَّتُ قَدَمَاهُ فِي سَبِيل

حبیب بن مسلمہ کے پاس سے گزر ہوا یا حبیب کا مالک کے پاس سے اور وہ گھوڑ ہے کو لگام پکڑے ہوئے پیدل جا رہے تھے۔ انہوں نے کہا: اللہ نے آپ کوسواری دی ہے سوار كيون نهيس ہوتے؟ كها: رسول الله طَيْنَ عَلَيْهَا في فرمايا: "جس كے قدم جهاد ميں غبار آلود ہو جاكيں الله تعالى نے

◘ ضعيف: احرحه اليزار 1/264(1666) والطبراني في الكبير 168/18 (377) ليكن الحاكم في المستدرك 2/86اور احمد 2 / 524 میں حسن سند ہے اس کا شاہد موجود ہے۔

حكل يَتِنَ الْكَالِيْنَ كَابِ الجهادِ 275 كتاب الجهاد

اللهِ حَرَّمَهُ اللهُ عَلَى النَّارِ) . • اس ير آ گ حرام كردي ہے ـ''

فوائد: (۱) ثابت ہوا اللہ کی راہ میں جسم پر پڑنے والا غبار اور جہنم کی آگ بھی اکٹھے نہیں ہوں گے(۲) صحابہ رفتانیہ فضائل کے حصول میں انتہائی حریص ہوتے تھے۔

> [9].... بَابِ الْغَدُوَةِ وَالرَّوُحَةِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ الله کے راستہ میں ایک مرتبہ صبح یا شام نگلنے کی فضیلت کا بیان

> > 2443 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنْ يُوْسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِيْ حَازِم

اللَّهِ ﷺ : ((لَغَدُوَةً فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوُ نُوايا: "اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ مَا م ونيا سے بہتر

رَوْحَةٌ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا)). 🔊 🌎 ے''

فوائد: (۱) فى سبيل الله سے مراد جہاد ہے۔ امام ابن جوزى رائيطيه فرماتے ہيں: "اذا اطلق ذكر فى سبيل الله فالمرادبه الجهاد. " (فتح البارى 59/6) جب في سبيل الله كامطقاً وكر بوتواس عمراد جهاد ہوتا ہے۔جبکہ امام قرطبی رہیتیہ اس سے طاعۃ اللّٰہ مراد لیتے ہیں۔امام ابن حجر رہیُّٹی، "ف و انسد ابسی الطاهر لـذهـلـي. " ميں موجود حديث كى بنايرابن جوزى رائيليد كے موقف كوہى ترجيح ديتے ہيں۔جس كے الفاظ ہيں "مامن مرابط في سبيل الله فيصوم يومًا في سبيل الله "(حوالمالقه) يعني الله كراه ش سرحد کی حفاظت کرتا ہوا کوئی روز ہ رکھے۔ان الفاظ سے ظاہر ہے کہ فی سبیل اللہ سے یہاں مراد جہاد ہی ہے۔ جیسا کہ امام دارمی راٹیلیہ نے بھی اس حدیث کو کتاب الجہاد میں ذکر کرکے اس کوتر جیجے دی ہے(۲) یہ فضیلت ایسے بندے کے حق میں ہوگی روزے سے کمزوری محسوں نہ کرے توالیے بندے کو دوعبادتوں کو جمع کرنے یہ یہ فضیلت حاصل ہوگی اس کے علاوہ کے لیے روزہ حچوڑ دینا ہی افضل ہے (مزیر تفصیل کے لیے دیکھیے فتح الباری 59/6)

[10] بَابِ مَنُ صَامَ يَوُمًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ اللّٰد کے راستہ میں ایک دن روز ہ رکھنے کا بیان

2444 ـ أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَال حَلَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ سُهَيْلِ بْنِ أَبِي صَالِح عَنِ

[🕡] صحيح: اخرجه الترمذي، كتاب فضائل الجهاد، باب ماجاء في فضل من أغبرت قدماه في سبيل الله (1632)صحيح ابر حبال (4604)

متفق عليه: البخارى، كتاب الجهادو السير، باب الغدوة والروحة في سبيل الله (6415).

عَنْ الْكَالِيْنِيُّ 276 وَ الْكُولِيْنِيُّ كَتَابِ الْجِهَادِ الْمُ

النُّعْمَان بْنِ أَبِيْ عَيَّاشِ

ابوسعید خدری خالفی کہتے ہیں کہ نبی منطق آیا نے فرمایا: ''جو شخص اللہ کی رضا مندی کے حصول کے لئے اس کی راہ میں ایک دن روزہ رکھے گا اللہ اس کے اور دوزخ کے درمیان ستر سال کا فاصلہ کردے گا۔''

[11] بَابِ فِي اللَّذِي يَسُهَرُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ حَارِسًا اللَّهِ كَارِسًا اللَّهِ كَارِسًا اللَّه كَارِه مِين يهره دينے كے ليے جاگئے والے شخص كابيان

2445 - أَخْبَرَنَا الْقَاسِمُ بْنُ كَثِيْرٍ قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ شُرَيْحٍ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي الصَّبَّاحِ مُحَمَّدِ بْنِ سُمَيْرِ عَنْ أَبِي عَلِيِّ الْهَمْدَانِيِّ

عَنُ أَبِى رَيُسِحَانَة أَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُولِ اللهِ عَنَى أَبِى رَيُسِحَانَة أَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُولِ اللهِ عَنَى فِي عَنُووَةٍ فَسَمِعَهُ ذَاتَ لَيُلَةٍ وَهُو يَقُولُ: ((حُرِّمَتِ النَّارُ عَلَى عَيْنِ سَهِرَتُ فِى سَبِيلِ اللهِ وَحُرِّمَتُ النَّارُ عَلَى عَيْنِ عَلْنِي اللهِ وَحُرِّمَتُ النَّارُ عَلَى عَيْنِ خَشَيةِ اللهِ عَلْنِ خَشُيةِ اللهِ قَالَ وَقَالَ الثَّالِفَةَ فَنَسِيتُهَا . قَالَ أَبُو شَعْتُ مَنُ يَقُولُ ذَاكَ شُرَيْحٍ سَمِعْتُ مَنُ يَقُولُ ذَاكَ شَرَيْحٍ سَمِعْتُ مَنُ يَقُولُ ذَاكَ ((حُرِّمَتُ النَّارُ عَلَى عَيْنِ غَضَّتُ عَنُ اللهِ عَرْبَ فَقِنتُ فِى سَبِيلِ مَحَارِمِ اللهِ عَرُّ وَجَلَّ)). •

ابور یحانہ سے منقول ہے کہ وہ ایک غروۃ میں رسول اللہ طفیٰ میں ارات آپ اللہ طفیٰ میں ارات آپ سے ساند دی ساتھ تھے۔ انہوں نے ایک رات آپ سے ساند 'آ گا اس آ تکھ پرجمام ہے جو اللہ کی راہ میں جاگے اور اس آ تکھ پرجمی حرام ہے جو اللہ کے خوف سے روئے۔ اور تیسری بات بھی تھی میں اسے بھول گیا ابوشر کے کہتے ہیں: میں نے ایک شخص سے سنا وہ کہتا تھا، وہ یہ بات تھی کہ دوز نے اس آ تکھ پرجمام ہے جو حرام چیزوں سے بندر کھی گئی۔ یا وہ جو اللہ عر وجل کے راستہ میں پھوڑ گئی۔'

¹ متفق عليه: البخارى، كتاب الجهاد، باب فضل الصوم في سبيل الله (2840) مسلم، كتاب الصيام، باب فضل الصيام في سبيل الله لم يطبقه (2804)

ی اسنادہ صحیح: اس میں محمد بن شمیر راوی ہے جس کا امام بخاری نے تاریخ کبیر جب کدابن الی عاتم نے" الحبر حب" میں اس کا تذکرہ تو کیا ہے لیکن کوئی جرح یا تعدیل ذکر نہیں کی جب کہ ابن حجر نے انہیں مقبول قرار دیا ہے نیز مندموصل میں (4346) نمبر حدیث اس کی شاہد ہے۔

حال المنظالة المنظلة
فواند: معلوم ہوا یہ دوآئکھیں ایک اللہ کی راہ میں پہرہ دینے والی دوسری اللہ کے خوف سے آنسو بہانے والی دونوں جہنم سے محفوظ رہیں گی۔ لاز ما آئکھیں انسان سے کیکر تو نہیں محفوظ کی جائیں گی بلکہ یہ

جسم انسانی ہے متصل ہی رہیں گی جودال ہے کہ انسان کا پورا وجود جہنم سے بری ہوجائے گا۔

2446 ـ أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ أَنْبَأَنَا ابْنُ الدَّرَاوَرْدِيِّ عَنْ صَالِح بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ زَائِدَةَ قَالَ

سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ

عَنُ عُقْبَةَ بُنِ عَامِرٍ الْجُهَنِيَ عَنِ سِيْدنا عقبه بن عامر جَمَى وَاللَّهُ كَبَ بَيْل كَه فِي السَّيَافَةُ خَارِسَ السَّبِي عَنَى اللهُ قَالَ: ((رَحِمَ اللَّهُ حَارِسَ فرمايا: "الله تعالى ببرے داروں كے پبرے دار پر رقم السَّحَرَسِ)). قَالَ عَبُدُ اللهِ وَعُمَرُ بُنُ كرے "عبدالله كتے بين: "عربن عبدالعزيز كى عقبه بن عَبُدِ الْعَزيز لَمْ يَلُقَ عُقْبَةَ بُنَ عَامِرِ . • عامرے ملاقات نہيں ہے۔"

فوائد : انسان کے خلوص کے بقدرا سے اس کی نیکی کا اجرماتا ہے جو کہ معلوم تعداد کے مطابق سات سوگنا تک ہوتا ہے اور جب خلوص لا متنا ہی ہوتو ثو اب بھی لا متنا ہی ہوجا تا ہے قرآن میں اللہ اس مضمون کویوں بیان کرتے ہیں ﴿ مَشَلُ الَّذِیْنَ یُنفِقُونَ اَمْوَالَهُمُ فِی سَبِیْلِ اللّٰهِ کَمَشَلِ حَبَّةٍ اَنْبَتَتُ سَبْعَ سَبَعً لِللّٰهِ کَمَشَلِ حَبَّةٍ اَنْبَتَتُ سَبْعَ سَبَالِ اللّٰهِ کَمَشَلِ حَبَّةٍ وَاللّٰهُ یُضِعِفُ لِمَن یَّشَاءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴾ (بقرہ: 261) الله کی راہ میں خرچ کرنے والوں کی مثال ایسے ہے جیسے دانہ سات بالیاں اگا ہے ہر بالی میں سودانہ ہواوراللہ جس کے لیے جا ہے (مزید) دگنا کردے اور اللہ وسیع علم والا ہے۔

[12] بَابِ فِي فَضُلِ النَّفَقَّةِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ عَنَّ وَجَلَّ اللَّهِ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى

2447_ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِىْ عَمْرٍو الشَّيْبَانِيّ

سَیّدنا البو مسعود انصاری و الله کی میں ایک شخص ایک مہاروالی اونٹنی لایا اور کہا: بیداللہ کے راستہ میں ہے تو رسول اللہ میں اللہ میں کے بدلہ میں مہمین سات سومہاروالی اونٹنیاں ملیس گے۔''

عَنُ أَبِى مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيّ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ بِنَاقَةٍ مَخْطُومَةٍ فَقَالَ هَذِهِ فِى سَبِيلِ اللّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللّهِ عَلَيْ: ((لَكَ بِهَا يَوُمَ الْقِيَامَةِ سَبُعُ مِائَةٍ نَاقَةٍ

❶صحيح: اخرجه مسلم، كتاب الإمارة، باب فضل الصدقة في سبيل الله وتضعيفها (4874) والنسائي، كتاب الجهاد، باب فضل الصدقة في سبيل الله عزو حل (3187)

المجاد عَيْنَ الْكَالِيْوَيُ الْكَالِيْوِيُ 278 مِنْ الْكَالِيوِيُّ الْكَالِيْوِيُّ الْكَالِيْوِيُّ الْكَالِيوِيُّ الْكَالِيوِيِّ المجهاد

كُلُّهَا مَخُطُو مَةٌ)). •

[13] بَاب مَنُ أَنْفَقَ زَوْجَيُنِ مِنُ مَالٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ اللهِ عَلَّ وَجَلَّ اللهِ عَلْ وَاللّٰهِ عَلَّ اللهِ عَلْ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلْ اللهِ عَلْ اللهِ عَلْ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلْ اللهِ عَلَى اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِيْ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ ال

2448 ـ أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنِ الْحَسَنِ

عَنُ صَعُصَعَةَ بُنِ مُعَاوِيَةَ قَالَ لَقِيتُ أَبَا ذَرٍ وَهُو يَسُوقُ جَمَلًا لَهُ أَو يَقُودُهُ فِي خَنُقِهِ قَوْبَةٌ فَقُلْتُ يَا أَبَا ذَرٍ مَا مَالَكَ عَنُقِهِ قَوْبَةٌ فَقُلْتُ يَا أَبَا ذَرٍ مَا مَالَكَ قَالَ لِي عَمَلِى فَقُلْتُ مَالَكَ قَالَ لِي عَمَلِى قُلْتُ حَدِيثًا سَمِعْتُهُ مِنُ رَسُولَ رَسُولِ اللهِ عَلَى عَدِيثًا سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ إِلَّا اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ الل

سیّدناصعصعہ فِیٰ اُنْوَد بن معاویہ کہتے ہیں میں ابوذر سے ملا تو وہ اپنا ایک اونٹ ہا تک رہے تھے ان کے گلے میں مشک تھی۔ میں نے کہا: ''ابو ذرا آپ کو کیا ہو گیا ہے؟ '' کہا: میرائمل میرے لئے ہے۔ میں نے کہا: ابو ذرا آپ کو کیا ہو گیا ہے؟ '' کہا: میرائمل میرے لئے ہے۔ '' میں نے کہا: ہو گیا ہے؟ کہا: میرائمل میرے لئے ہے۔ '' میں نے کہا: میرائمل میرے لئے ہے۔ '' میں نے کہا: میرائمل میرے لئے ہے۔ '' میں نے کہا: میں اللہ میں ہوگئے ہے ہو آپ نے رسول اللہ میں ہوگئے ہے ہو آپ نے رسول اللہ میں ہوگئے ہے۔ '' جو اپنے مال سے اللہ کی راہ میں منا آپ فرماتے تھے: ''جو اپنے مال سے اللہ کی راہ میں استقبال کرتے ہیں۔'' ابو محمد کہتے ہیں: ''جوڑا دو درہم' دو لونڈی' دوغلام یادو جانور ہیں۔''

فوائد: (۱) الله کی راه میں جوڑا جوڑا خرچ کرنامتحب ہے (۲) جنت کے دروازوں پردربان مقرر ہیں۔ (۳) اسلام میں اگر چہ ولا ق کا دروازوں پردربان مقرر کرنااسے مکروہ جانا ہے بہرحال کسی معزز ہستی کی آ مدکسی کومہمان کووصول کرنے کے لیے دروازے پر کھڑا کیا جاسکتا ہے۔

[14] بَابِ فِي فَضُلِ الرَّمُي وَ ٱلْأَمُرِ بِهِ تيراندازى كى فضيلت اوراس كاحكم كابيان

2449 - أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِءُ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِيْ أَيُّوْبَ حَدَّثَنِيْ يَزِيدُ بْنُ أَبِي

اسناده صحيح: اخرجه ابن ابي شيبه 348/5-349وابن عبدالبر في التمهيد 186/7واخرجه الحاكم 86/2صحيح
 ابن حبان (2940)و (4643)

صحيح: الحرجه مسلم، كتاب الإمارة، باب فضل الرمى والحث عليه وذم من علمه ثم نسيه (4923) وابو داؤد، كتاب الجهاد، باب في الرمى (2813)

حكار الجهاد ٢٥٥ كتاب الجهاد ٢٥٠ كتاب الجهاد ٢٥٠

حَبِيْبِ

عَنُ أَبِى النَّحَيْرِ مَرْ تَلِدِ بُنِ عَبُدِ اللَّهِ عَنُ عُمْدِ اللَّهِ عَنُ عُقَةَ بُنِ عَامِرٍ أَنَّهُ تَلَاهَلِهِ الْآيةَ ﴿ وَأَعِدُوا لَهُ مَ مَا اسْتَ طَعُتُمُ مِنُ قُوَّةٍ ﴾ لَهُ مُن قُوَّةٍ ﴾ [الانفال: ٦٠] ألا إنَّ الْقُوَّةَ الرَّمُيُ . •

ابو الخير مرثد بن عبدالله عقبه بن عامر سے روایت کرتے بیں کہ انہوں نے یہ آیت پڑھی: "اور جتنی تم طاقت رکھتے ہوان کے لئے قوت تیار رکھو۔ "اور کہا: "قوت سے مراد تیراندازی ہے۔ "

فوائد: (۱) استطاعت کے مطابق ہر مسلمان پر تربیت حاصل کرنا اپنے آپ کو جہاد کے لیے تیار کرنا فرض ہے (۲) رمی یہ قوت کا باعث ہے حقیقت یہ ہے کہ شروع سے لے کر آج کے ترقی یا فتہ دور تک رمایۃ ہمیشہ اہمیت کی حامل رہی ہے آج بھی جس ملک کے پاس بہترین میزائل ٹیکنالوجی ہے وہ عسکری میدان میں سب سے آگے کھڑے نظر آتے ہیں۔

2450 - أَخْبَرَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَّامٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَيْدِ الْأَزْرَقِ

سیّدنا عقبه بن عامر والیّن کہتے ہیں کدرسول الله طفیّاتیا نے فرمایا: "الله ایک تیرکی بنا پر تین اشخاص کو جنت میں داخل کرتا ہے۔اس کے بنانے والے کوجس کی نیت اچھی ہواس کے متعلق مدد کرنے والے کوادر تیراندازی کرنے والے کو کی متعلق مدد کرنے والے کو اور تیراندازی اورسواری کرؤ میرے نزدیک تیر اندازی سواری سے بہتر ہے۔" اور میرے نزدیک تیر اندازی سواری سے بہتر ہے۔" اور فرمایا: "انسان کی تمام کھیلنے والی اشیاء بے کار ہیں گر تیراندازی کرنا این گھوڑے کو وفا دار بنانا اور اپنی ہوی سے کھیٹا یہ سب صحیح ہیں اور فرمایا: "جس نے سکھنے کے بعد تیراندازی جھوڑ دی اس نے سکھانے والے کی ناشکری تیراندازی جھوڑ دی اس نے سکھانے والے کی ناشکری کی۔"

عَنُ عُقُبَةَ بُنِ عَامِرٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَلَىٰ اللّهُ عَل

اسناده حيد: اخرجه احمد 144/4 وابوداؤد، كتاب الجهاد، باب في الرمي (2513) والنسائي، كتاب الجهاد، باب من رمي بسهم في سبيل الله عزو جل (3146)

②متفق عليه: البخارى،كتاب الوضوء،باب مايقع من النجاسات في السمن والماء،ومسلم في الإمارة،باب فضل الجهاد وخروج في سبيل الله(1876)

عَنْ الْكَالِيْفِيُّ الْكَالِيْفِيُّ ١٤٥٥ ﴿ كِتَابِ الجهادُ ١٤٥٠ ﴿ كِتَابِ الجهادُ ١٤٥٠ ﴿ كَتَابِ الجهادُ الْ

فهائد: (۱) ایک تیرموجوده دور میں ایک گولی یامیزائل مین اشخاص کی بخشش کا ذریعہ ہے(۱) بنانے والا (ب)اس کے ذریعے مددکرنے والا مراداس کو پکڑانے والا یاخرید کردینے والا یاجوکوئی بھی مدد کی صورت ہو۔ (۲) نشانہ بازی اورسواری بر ہردور میں الرائی کا حصدرہ ہیں جبکدان دونوں میں سے اہمیت کے اعتبار سے نشانہ بازی مقدم رہی ہے۔ لہذا اس کو مذفطر رکھ کرآپ نے اس کی شخصیص فرمائی (۳) ہوی سے کھیلنا اورا یے کھیل جو جہادی تیاری کاباعث ہوں درست ان کے علاوہ بقیہ کھیل نضول وباطل ہیں (۲۲) نشانہ بازی سکے کرمسلسل اس کی مشق کرتے رہنا ہے ایک مسلم مجاہد سے مطلوب جبکہ اس کا چھوڑ نا خسارے کا باعث ہے۔ 15] بَابِ فِي فَضُلِ مَنُ جُوحَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ جُرُحًا الله کے راستہ میں زخمی ہونے والے خص کی فضیلت کا بیان

2451 - أَخْبَوَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الرَّقَاشِيُّ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْع حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحٰقَ

حَدَّثَنِي عَمِّيْ مُوْسَى بْنُ يَسَار

عَنُ أَبِي هُرَيُرَدةً قَالَ قَالَ أَبُو الُقَاسِم ﷺ : ((مَا مِنْ مَجُرُوح يُجُرَحُ

فِي سَبِيلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ إِلَّا بَعَثَهُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ يَوُمَ الْقِيَامَةِ وَجُرُحُهُ يَدُمَى

الرِّيحُ دِيحُ الْمِسُلِثِ وَاللَّوْنُ لَوُنُ

الدَّمِ)). 🍑

سیّدنا ابو ہریرة فالله كہتے ہيں كه رسول الله طفيّاتيا نے فر مایا: ''جو شخص الله کی راه میں زخمی ہوگا اسے قیامت کے دن الله عز وجل اس حالت میں اٹھائے گا کہ اس کے زخم ہے خون بہہ رہا ہو گا' اس کی خوشبو مشک جیسی ہو گی اور رنگ خون کا ہوگا۔''

[16] بَابِ فِيمَنُ سَأَلَ اللَّهَ الشَّهَادَةَ الله سے شہادت طلب کرنے والے تخص کی فضیلت کا بیان

2452 ـ أَخْبَرَنَا الْقَاسِمُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ شُرَيْح يُحَدِّثُ أَنَّهُ سَمِعَ

سَهُلَ بُنَ أَبِي أَمَامَةَ بُن سَهُل بُن حُنَيْفٍ سيدناسبل بن حنيف اين باب سے اور وہ ان ك دادا سے روایت کرتے ہیں که رسول الله طفيع الله نے فرمایا: "جو سیے دل سے اللہ سے شہادت طلب کرے گا اللہ تعالیٰ اسے

يُحَدِّتُ عَنُ أَبِيْدٍ عَنُ جَدِّهِ قَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَىٰ قَالَ: ((مَنُ سَأَلَ اللَّهَ

❶ صحيح مسلم، كتاب الإمارة، باب استحباب طلب الشهادة في سبيل الله(4907) وابو داؤد، كتاب الصلاة، باب في الاستغفار(1520) والترمذي، كتاب فضائل الجهاد باب ماجاء فيمن سأل الشهادة (1653)

الكانين الكانين الكانين الكانين المعاد (281)

شہداء کے مرتبہ پر پہنچائے گا اگر چہاس کی موت اس کے بستریر واقع ہو۔'' الشَّهَاكَةَ صَادِقًا مِنْ قَلْبِهِ بَلَّعَهُ اللَّهُ مَنَاتَ عَلْى

فِرَاشِهِ). 0

فواند: الله سے صدق دل سے شہادت کی طلب ، محرومی کے باوجودان مراتب تک پہنچانے کا باعث ہے بہتر ہوئی نے باوجودان مراتب تک پہنچانے کا باعث ہے بیت ہوئی ہوئیکن حالات کا باعث ہے بیت ہوئی نے تربیت بقدر وسعت حاصل کی ہواور جہاد کا ارادہ بھی ہوئیکن حالات بیدانہ ہورہے ہوں۔ یہ نہیں کہ گھر بیٹھے بغیر ہاتھ پاؤں ہلائے یہ دعا کرتا رہے الہی ادھر شہادت نصیب کردے۔

[17] بَابِ فِي فَضُلِ الشَّهِيدِ شهيدكي فضيلت كابيان

2453 ـ أَخْبَرَنَا مُحَـمَّدُ بُنُ يَزِيدَ الرِّفَاعِيُّ حَدَّثَنَا صَفْوَانُ بْنُ عِيسَى عَنِ ابْنِ عَجْلانَ عَنِ الْقَعْقَاعِ بْنِ حَكِيمٍ عَنْ أَبِىْ صَالِحِ

سیّدنا ابو ہریرۃ زخائی کہتے ہیں کہ رسول الله طفی این نے فرمایا: 'دشہید قتل ہوتے وقت صرف اس قدر دردمحسوں کرتا ہے جتنا چیونی کے کا نئے سے محسوس ہوتا ہے۔' عَنُ أَبِى هُ مَرَيُ رَةً قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنْ أَبِى هُ مَن أَلَم اللهِ عَلَىٰ اللهُ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ اللهُ اللهُ عَلَىٰ اللهُواللهُ عَلَىٰ اللهُ عَلَىٰ اللّهُ عَلَىٰ اللّهُ عَلَىٰ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ

الْقَتُلِ إِلَّا كُمَا يَجِدُ أَحَدُكُمُ مِنُ أَلَمٍ

الْقَرُصَةِ)). 🎱

فواند: شہادت کا متلاثی جب اپنی منزل کی جانب رفتہ رفتہ رینگ رہا ہوتا ہے ایسے وقت اللہ اس پر اپنی رحمتوں کے دروازے کھول دیتا ہے لہذا شہید ہونے والے اللہ کی رحمتوں کے نظارے میں اس قدر محوہوتا ہے کہ دنیاوی الم و تکالیف اس کے لیے بے معنی ہوجاتی ہیں اور وہ اپنے رب کی بے پایاں رحمتوں سے لطف اندوز ہوتا اینے رب سے جاملتا ہے (اسعدنا اللہ منہ)

[18] بَابِ مَا يَتَمَنَّى الشَّهِيدُ مِنَ الرَّجُعَةِ إِلَى الدُّنْيَا شہیدکا دنیا میں دوبارہ جانے کی خواہش کرنا

2453 ـ أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَلِيِّ الْحَنَفِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ

حسن: صحيح ابن حبان(4655)و اعرجه الترمذي، كتاب فضائل الجهاد، باب ماجاء فضل الرباط (1668)

 [◘] متفق عليه: البخارى، كتاب الجهاد، ب اب الحور العين وصفتهن (2795) ومسلم، كتاب الإمارة، باب فضل الشهادة في سبيل الله (4844)

عَنَ الْكَائِمَةِ عَلَى الْجَهَادِ الْجَهَادِ الْجَهَادِ الْجَهَادِ الْجَهَادِ الْجَهَادِ الْجَهَادِ الْجَهَاد

سیّدنا انس فِلَا لَمْ اللهِ عَلَیْ که رسول الله طَفِیَا اَلله عَلَیْ اَللهٔ عَلَیْ اَللهٔ عَلَیْ اَللهٔ عَلَی که رسول الله طفی اَللهٔ عَلی در خود در کوئی شخص مرنے کے بعد جنت میں داخل ہونے کے بعد بیخواہش نہیں کرتا کہ وہ تمہاری طرف لوث آئے اور دنیا اور جو پچھاس میں ہے اس کے لیے ہوگر شہید اپنے تواب کو دیکھ کر میتمنا کرے گا کہ وہ دنیا میں آئے اور اتنی دفعہ

عَنُ أَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا مِنُ نَفُسٍ تَمُونُ فَتَدُخُلُ الْجَنَّةَ فَتَوَدُّ أَنَّهَا اللَّهُ نَيَا فَتَوَدُّ أَنَّهَا اللَّهُ نَيَا وَمَا فِيهَا إِلَّا الشَّهِيدَ فَإِنَّهُ وَدَّ أَنَّهُ قُتِلَ كَذَا مَرَّةً لِمَا رَأَى مِنَ النَّوَابِ)).

مارا حائے۔''

[19] بَابِ أَرُوَاحِ الشُّهَدَاءِ شهداء کی روحول کا بیان

2454 - أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِر عَنْ شُعْبَةَ عَنْ شُلَيْمَانَ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُرَّةَ

عَنُ مَسُرُوقِ قَالَ سَأَلُنَا عَبُدَ اللَّهِ عَنُ مروق والنو كہتے ہيں ہم نے عبدالله والنفظ عشمداء كى روحوں کے متعلق یو چھا اگر عبداللہ نه ہوتا تو ہم سے کوئی أَرُوَاحِ الشُّهَدَاءِ وَلَوْلَا عَبُدُ اللُّهِ لَمُ بیان نہ کرتا کہا:''شہداء کی رومیں قیامت کے دن اللہ کے يُحَدِّثُنَا أَحَدٌ قَالَ: ((أَرُوَا حُ الشُّهَدَاءِ عِنُدَ اللَّهِ يَوُمَ الُقِيَامَةِ فِي حَوَاصِلِ طَيُرِ یاس سبز برندوں کے بوٹوں میں ہوں گی ان کے لئے عرش میں کئکی ہوئی قندیلیں ہوں گی وہ جہاں جاہیں گی جنت میں خُعضُو لَهَا قَنَادِيلُ مُعَلَّقَةٌ بِالْعَرُش کھاتی پھریں گی۔ پھراپی قندیلوں میں لوٹ آئیں گی۔ تَسُرَ حُ فِي الْجَنَّةِ حَيْثُ شَاءَ تُ ثُمَّ پھران کارب ان کی طرف متوجہ ہو کر فرمائے گا: کیا تمہاری تَرُجعُ إِلَى قَنَادِيلِهَا فَيُشُرِفُ عَلَيْهِمُ کوئی اور حاجت ہے؟ کچھ اور چاہتے ہو؟ وہ کہیں گے: رَبُّهُمْ فَيَقُولُ أَلَكُمُ حَاجَةٌ تُرِيُدُونَ شَيْئًا ' د منین البتہ ہم یہ جا ہے ہیں کہ ہم دنیا میں لوٹ کر جا کیں فَيَقُولُونَ لَا إِلَّا أَنُ نَرُجعَ إِلَى الدُّنْيَا اور پھر دوسری د فعیل کئے جائیں ۔''

فَنُقَتَلَ مَوَّةً أُخُوٰى)). • اور پھردوسری دفع تل کئے جائیں۔' فوائد: شہادت کی موت کس قدر کریم اور باعث برکت ہے کہ اس کے علاوہ کوئی بھی دنیا میں پلٹنے کی خواہش نہیں کرتا۔ یہ فقط شہید ہی کی کرامت ہے ابن بطال راٹیے اس بارے فرماتے ہیں (ھسندا التحدیث اجل مَا جَاءَ فِی فَضْلِ الشَّهَادَة) شہادت کی فضیلت کے بارے مروی احادیث میں سے

❶ صحيح: اخرجه مسلم،كتاب الإمارة،باب بيان أن رواح الشهداء في الجنة (4862)والترمذي،كتاب تفسير القران، باب ومن سورة آل عمران(3011) وابن ماجه،كتاب الجهاد،باب فضل الشهادة في سبيل الله(2801)

عناب الجهاد) کی بیات الکاریمی کا کوئی بھی ایسا کا منہیں جس میں جان الدی کا کوئی بھی ایسا کا منہیں جس میں جان النانی پڑے سوائے جہاد کے اس کا ثواب بھی عظیم ہے۔ (فتح الباری 41/6)

[20] ... بَابِ فِي صِفَةِ الْقُتُلَى فِي سَبِيلِ اللَّهِ الله كراسة مين قبل مونے كي فضيلت

2455- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ يَحْيَى هُوَ الصَّدَفِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا صَفْوَانُ بْنُ عَمْرو عَنْ أَبِي الْمُثَنَّى الْأُمْلُوكِيِّ

سيّدنا عتبه بن عبدالسلمي فِنْ لَيْهَا كَهِتِهِ بَسِ كَه رسول الله عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْ نے فرمایا: ''مارے جانے والے تین قتم کے ہوتے ہیں ،ایک وہ مؤمن ہےجس نے اللہ کے راستہ میں مال و حان ہے جہاد کیا دشمنوں سے ملاقات ہوئی تو لڑائی کی حتی کہ مارا گیا۔ اس کے متعلق نبی می این نے فرمایا:''یہ امتحان لیا مواشہید ہے۔اللہ کے عرش کے بنیج اس کے خیمہ میں موگا صرف نمی ہی اٹی نبوت کے مرتبہ کے لحاظ سے اس سے بڑھ کر ہول گے۔'' ایک وہ مؤمن ہے جس نے اچھے برے دونوں کام کئے اس نے اللہ کی راہ میں جان و مال سے جہاد کیا دشمن سے ملالوائی کی جتی کہ مارا گیا۔اس کے متعلق نبی طفی آن نے فرمایا: ' یاک شہادت ہے اس کے گناہ اور خطا کیں مٹادیئے کیونکہ تلوار سے گناہ مٹ جاتے ہیں'جس دروازے سے چاہے جنت میں داخل ہوگا۔''اور ایک منافق ہے جس نے اپنی جان ومال سے جہاد کیا دشن سے ملاحتی کہ مارا گیا۔تو دوزخ میں گیا کیونکہ تلوار سے نفاق نهيس مُتنا-' عبدالله داري كهتير بين: ' جب كيرًا دهويا جاتا ہے تو کہتے ہیں''مُصْمِصَ ''لعنی یاک ہوگیا۔'' عَنُ عُتُبَةَ بُن عَبُدٍ السُّلَمِيِّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ :((الْقَتُلَى ثَسَلَاثَةٌ مُؤُمِنٌ جَاهَدَ بنَفُسِهِ وَمَالِهِ فِي سَبيل اللُّهِ إِذَا لَقِيَ الْعَدُوَّ قَاتَلَ حَتَّى قُتِلَ). قَالَ النَّبِي عِنْ فِيهِ: ((فَذٰلِكَ الشَّهِيدُ الْمُمُتَحَنُ فِي خَيْمَةِ اللَّهِ تَحْتَ عَرُشِهِ لَا يَسَفُ ضُلُكُ النَّبِيُّونَ إِلَّا بِدَرَجَةِ النُّبُوَّةِ. وَمُؤْمِنٌ خَلَطَ عَمَّلا صَالِحًا وَ آخَرَ سَيَّنَا جَاهَدَ بِنَفُسِهِ وَمَالِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ إِذَا لَقِينَ الْعَدُوَّ قَاتَلَ حَتَّى يُقْتَلَ). قَالَ النَّبِي عِنْ فِيهِ: ((مَصْمَصَةٌ مَحَتُ ذُنُوبَهُ وَخَطَايَاهُ إِنَّ السَّيْفَ مَحَّاءٌ لِلُخَطَايَا وَأَدُخِلَ الْجَنَّةَ مِنُ أَىّ أَبُوَابِ الْجَنَّةِ شَاءَ وَمُنَافِقٌ جَاهَدَ بِنَفُسِهِ وَمَالِهِ فَإِذَا لَقِيَ الْعَدُوَّ قَـاتَلَ حَتْى يُقُتَلَ فَذَاكَ فِي النَّارِ إِنَّ السَّيْفَ لَا يَـمُحُو النِّفَاقَ)). قَالَ عَبُد اللَّهِ يُقَالُ لِلنَّوْبِ إِذَا غُسِلَ مُصْمِصَ . •

فواند: (۱) جہاد بالنفس والمال بیسب سے افضل ہے (۲) جان ومال کواللہ کی راہ میں قربان کرنے والا شہید قیامت کو انبیاء میں بین کے رہے کے قریب ہوں گے (۳) شہید کی بھی خطا کیں بخش دی حاتی ہیں ہاں قرض معانے نہیں ہوتا (دیکھیے آئندہ) (۴) منافق کاجہاد قبول نہیں اس کی قربانی بھی رائگاں جائے گی۔

[21] بَابِ مَنُ قَاتَلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ صَابِرًا مُحُتَسِبًا اس شخص کے متعلق جواللہ کے راستہ میں صبر اور نیک نیتی سے مارا جائے

2456 ـ أَخْبَرَ نَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْمَجيدِ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبِ عَنِ الْمَقْبُرِيّ

سیّدنا عبدالله رفائلیّهٔ این والد ابوقیادة رفائلیّهٔ سے بیان کرتے عَنُ عَبُدِ اللَّهِ ابْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنُ أَبِيْهِ أَنَّ بیں کدرسول الله طنے اللہ اللہ علام نے کھڑے ہو کر خطبہ دیا تو اللہ کی رَسُولَ اللَّهِ عَلَيْ قَامَ فَخَطَبَ فَحَمِدَ

حدوثنا بیان کی پھر جہاد کا ذکر کیا تو فرائض کے علاوہ کسی اللُّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ ذَكَرَ الْجِهَادَ فَلَمُ چیز کواس سے افضل نہ کہا ایک آ دمی کھڑا ہوا اور کہا: یا رسول يَدَ عُ شَيْئًا أَفُضَلَ مِنْهُ إِلَّا الْفَرَائِضَ فَقَامَ

الله! آپ کا کیا خیال ہے جوشخص اللہ کے راستہ میں مارا رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيُتَ حائے کیا اس کے گناہوں کا کفارہ ہو جائے گا؟ رسول مَنُ قُتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَهَلُ ذُلِكَ

الله طفي الله عن فرمايا: " إن جب وه اس حالت ميس مارا مُكَفِّرٌ عَنُهُ خَطَايَاهُ فَقَالَ رَسُولُ

حائے کہ وہ وغمن کے مقابلہ میں صابر اور نیک نیت الله على : ((نَعَمُ إِذَا قُتِلَ صَابِرًا مُحُتَسِبًا ہوا آ گے بوصنے والا ہو پیٹھ نے چھیرنے والا ہو مگر قرض مُ قُبِلًا غَيْرَ مُدُبِرِ إِلَّا الدَّيْنَ فَإِنَّهُ مَأْخُوذٌ بِهِ

کے متعلق اُس سے مؤاخذہ ہو گا جس طرح مجھ سے كَمَا زَعَمَ لِي جِبُرِيلُ عَلِيكُ)). • جبرائيل مَالِيلًا نِهِ كَهاـ''

ف واسد: (۱) حصول شهادت كى شرائط يه بين كه مقابله دف كركيا جائ دوسرانيت بهى الحجى ہوتیسری کہ پیٹھ پھیرکر بھا گانہ جائے جب یہ جمیع شرائط موجود ہوں گی بدلے میں شہادت مقبول اور گنا ہوں کے کفارے کا باعث ہوگی (۲) دین کے معاملے میں آپ کی ہربات پختہ وجت ہوتی تھی اگرکوئی کمی کوتا ہی ہوبھی جاتی تو فورا جبریل مَالیٰلا کے ذریعے آپ طلط آیا کو متنبہ کردیا جاتا۔ (۳) شہادت قرض کے علاوہ سمجی

❶ صحيح: اخرجه مسلم، كتاب الإمارة، باب من قتل في سبيل الله كفرت خطاياه إلا الدين(117)و الترمذي، كتاب الحهاد، باب ماجاء فيمن يستشهد وعليه الدين(1712)

و الجهاد على الجهاد كتاب الجهاد كالم كتاب الحباد كتاب

معاصی کی شخشش کاباعث ہے۔

[22] بَابِ مَا يُعَدُّ مِنَ الشُّهَدَاءِ شهداء ميں شار كئے جانے والے لوگوں كابيان

2457- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ هُوَ التَّيْمِيُّ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ عَامِرِ بْنِ

عَنُ صَفُوانَ بُنِ أُمَيَّةَ عَنِ النَّسِيِّ

قَالَ: ((الطَّاعُونُ شَهَادَةٌ وَالُعَرَقُ شَهَادَةٌ وَالُعَزُو شَهَادَةٌ وَالْبَطُنُ شَهَادَةٌ وَالنُّفَسَاءُ شَهَادَةٌ)). •

فرمایا: ''طاعون سے مرنا شہادت ہے پانی میں ڈوب کر مرنا شہادت ہے جہاد میں مارا جانا شہادت ہے پیٹ کی بیاری سے مرنا شہادت ہے بچہ جنم دیتے وقت مر جانا شہادت

"_~

2458 - أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَاثِيلَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِيْ بَكْرِ بْنِ حَفْصٍ عَنْ مُوسَى عَنْ إِسْرَاثِيلَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِيْ بَكْرِ بْنِ حَفْصٍ عَنْ

شُرَحْبِيلَ بْنِ السِّمْطِ

شَهَادَةٌ ي. ٥

عَنُ عُبَادَةَ بُنِ الصَّامِتِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ شَهَادَةٌ وَالبَطُنُ السَّهَادَةٌ وَالبَطُنُ

شَهَافَةٌ وَالمُمرُأَةُ يَقْتُلُهَا وَلَدُهَا جُمُعًا

وہ عورت شہید ہے جس کے پیٹ میں بحد ہووہ اس کی وجہ

سیّدنا صفوان بن امید رضائفهٔ کہتے ہیں کہ نبی مستعقبہ نے

سےمرجائے۔"

فوائد: (۱) "جُ مُعًا" يه مُجموع كم عنى ميں ہے يعنى ايبا مُجموعہ جو كه عورت كے ساتھ متصل ہو اور وہ اس كے ساتھ بى مركى ہو(واللہ اعلم) (۲) طاعون ، پيك كى بيارى اور بچه جنتے ہوئے اگركوئى فوت ہوجائے تواس كو بھى شہداء كے مرتبے ميں شاركيا جائے گا۔

[•] اسناده حید: اس میں عامرین ما لک کوحافظ این تجر رائید سے تقریب میں مقبول قرار دیا ہے، احسر جده النسسانی، کتاب الحنائز باب الشهید (2053)

² اسناده صحيح: اخرجه احمد/323

كتاب الجهاد

[23].... بَابِ مَا أَصَابَ أَصُحَابَ النَّبِي ﴿ إِلَّهُ فِي مَغَازِيهِمُ مِنَ الشِّدَّةِ نی طفیعی کے اصحاب کوغز وات میں پہنچنے والے مصائب کا بیان

2459- أَخْبَرَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا إِسْمَعِيْلُ عَنْ قَيْسِ

مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ مَا لَنَا طَعَامٌ إِلَّا السَّـمُورُ وَوَرَقُ الْحُبُلَةِ حَتَّى إِنَّ أَحَدَنَا

لَيَضَعُ كَمَا تَضَعُ الشَّاةُ مَا لَهُ خِلُطٌ ثُمَّ

أَصْبَحَتُ بَنُو أَسَدٍ يُعَزِّرُونِي لَقَدُ خِبْتُ إِذَنُ وَضَلَّ عَمَلِي . ٥

عَنُ سَعُدِ بُن أَبِي وَقَاصِ قَالَ كُنَّا مَغُزُو سيِّدنا سعد بن ابووقاص رَثَاتِيْرُ كَهِتَهِ بِين بهم رسول الله يَضْفَعَوْمَ کے ساتھ مل کرغزوہ کرتے تھے ہمارے پاس تھجور اور حبلہ کے بیوں کے علاوہ کچھ نہ تھاحتی کہ ہم لوگوں کا یا خانہ ایسے خشک ہوتا جیسے بکری کی مینگنی کھر بنواسد مجھےاحکام ،فرائض كى تعليم دينے گلے تب تو ميں ناكام ہوا اور ميراعمل ضائع

فوائد: (١) " السَمُرو ورَقُ الحَبلَة " بيدونون صحرائى درخون كى اقسام بين - سمُرة كى جمّع اسمر آتی ہے دیکھیے (فتح الباری)'' خِلط'' سے مراد ہے کہ وہ کھانا ، یتے جوشکی کی بنایر مینگنی کی طرح اسمے بھی نہیں ہوتے تھے (۲) جب رجال صالح ہمتیں اعلیٰ، نیتیں خالص اور جہاد مسلسل ہوتو مصائب کے برے بڑے یہاڑ رائی کے ذرات ٹابت ہوتے ہیں اور مقاصد ومنازل جلد حاصل ہوجاتی ہیں یہی وجہ ہے صحابہ ری تھیں منگیاں ترشیاں برداشت کیں لیکن عمل جہاد میں سستی نہ دکھائی تھوڑ ے عرصے بعد ہی صحرا کے بوریا نشین عالی مندوں کے وارث بن گئے۔

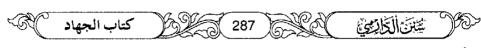
[24] بَابِ مَنُ غَزَا يَنُوى شَيْعًا فَلَهُ مَا نَوَى جہاد کرتے ہوئے آ دمی نے جس کی نبیت کی وہی اسے ملے گا

2460 أَخْبَرَنَا الْحَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ حَدَّثَنَا جَبَلَةُ بْنُ عَطِيَّةَ

یجیٰ بن ولید بن عبادة بن صامت کہتے ہیں که رسول الله الله الله الله عن فرمايا: " جو فحض الله كراست مين جهاد كرے اس كى نيت ايك رسى لينے كى جوتو اسے صرف وہى ملے گی۔''

عَنُ يَحْيَى ابُنِ الْوَلِيدِ بُنِ عُبَادَةَ بُنِ الصَّامِتِ عَنْ عُبَادَةَ بُنِ الصَّامِتِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ:((مَنُ غَزَا فِي سَبِيُـلِ اللَّهِ وَهُوَ لَا يَنُوِىُ فِي غَزَاتِهِ إِلَّا

[🕻] متـفــق عـليـه: اخـرجـه البـخـاري، كتـاب فـضـائل الصحابه،باب مناقب سعد بن ابي وقاص(3728)ومســلم، كتاب الزهد:باب الدنيا سجن المؤمن وجنة الكافر(7359)



عِقَالًا فَلَهُ مَا نَوْي)). •

فوائد: رسول الله طفی آنان صحابہ نگی آندیم جیسی عظیم ہستیوں سے مخاطب ہیں کہ اگر جہاد جیسا کبیر عمل بھی آپ لوگ خلوص نیت کی بجائے کسی حقیر شئے کی تلاش میں کرو گے تواس کے اجرعظیم سے محروم قرار پاؤ گے۔ لہٰذا اس برعمل جائے چھوٹا ہو یابڑا اس کے لیے نیت کی در تنگی لازم ہے۔ اگر نیت میں ذرا بھی فتور آگیا تو یہ بھی اعمال کوضائع کرنے کا باعث ہوگا۔

[25].... بَابِ الْغَزُو ِ غَزُوَانِ جہاد دوشم کے ہیں

2461- أَخْبَرَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا بَقِيَّةُ بْنُ الْوَلِيدِ عَنْ بَحِيرِ بْنِ سَعْدِ عَنْ خَالِدِ بْنِ مَعْدَانَ عَنْ أَبِيْ بَحْرِيَّةَ

سیّدنا معاذبی جبل دخالیو کہتے ہیں کہ رسول اللہ طلع اللہ الله الله کے لئے فرمایا: ''جہاد دوقتم کے ہیں: جس نے اللہ کی رضا کے لئے جہاد کیا' امام کی اطاعت کی اور مال خرچ کیا اور ساتھی کے ساتھ اسانی کا معاملہ کیا ، اور جھٹر سے اجتناب کیا اس کا سونا اور جا گنا سب باعث اجر ہے' جس نے فخر کرنے' دکھانے' سنانے کے لئے جہاد کیا امام کی مخالفت کی اور زمین میں فساد کیا وہ اس کے برابر کے ساتھ بھی نہیں لوٹنا۔''

عَنُ مُعَاذِ بُنِ جَبَلٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَنُ مُعَاذِ بُنِ جَبَلٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَزُا اللّهِ عَزُوانِ فَأَمَّا مَنُ غَزَا البُّهِ وَأَطَاعَ الْإِمَامَ وَأَنْفَقَ اللّهِ عَلَى اللّهَ مِلْكَ وَاجْتَنَبَ النَّصَادَ فَإِنَّ نَوْمَهُ وَنُبُهَهُ أَجُرٌ كُلُّهُ وَأَمَّا الْفَسَادَ فَإِنَّ نَوْمَهُ وَنِبُهَهُ أَجُرٌ كُلُهُ وَأَمَّا مَن غَزَا فَحُرًا وَرِيَاءً وَسُمْعَةً وَعَصَى الْإَرْضِ فَإِنَّهُ لَا الْإَمْسِ فَإِنَّهُ لَا يَرْجِعُ بِالْكَفَافِ)). ٥

[26] بَابِ فِيمَنُ مَاتَ وَلَمُ يَغُزُ اسْخُصْ كابيان جومر گيا اور جهادنه كيا

2462 أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِم حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ الْحَارِثِ عَنِ

اسناده جيد: صحيح ابن حبان (4638) و اخرجه النسائي كتاب الجهاد، باب من غزا في سبيل الله و لم ينومن غزاته إلا عقال (3138)

اسناده ضعیف: بقید بن ولید کے عنعنہ کی وجہ ہے لیکن احمد وغیرہ میں تحدیث کی تقریح موجود ہے۔ احرجہ احمد 234/5 وابوداؤد، کتباب البعقة با فی التشدید فی عصیان الامن (4206) والنسائی ، کتاب البیعة ، با فی التشدید فی عصیان الامن (4206) لہٰذا حدیث محج ہے۔

حكات الجهاد ١٤٥٥ و ١٤٥٥ كتاب الجهاد ١٤٥٠ و ١٤٥٥ كتاب الجهاد

الْقَاسِمِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ

عَنُ أَبِي أَمَامَةَ أَنَّ النَّبِيَ عَلَىٰ قَالَ: ((مَنُ لَهُم يَ خُولُ وَلَهُم يُحَقِّزُ غَازِيًا أَوُ يَخُلُفُ غَازِيًا أَوُ يَخُلُفُ غَازِيًا أَوُ يَخُلُفُ غَازِيًا فِي أَهُلِهِ بِخَيْرٍ أَصَابَهُ اللَّهُ بِقَارِعَةٍ

عَارِيا فِي اهْلِهِ بِحَيْرٍ اصَّابُه الله بِعَارٍ. قَبُلَ يَوُم الْقِيَامَةِ)). •

سیّدنا ابوامامه کہتے ہیں کہ نبی مظیّر نے فرمایا: ''جس شخص نے نہ خود جہاد کیا اور نہ کسی نمازی کے لئے سامان تیار کیا۔ یا کسی غازی کے گھر میں اس کے بعد بھلائی سے نہ رہا۔ قیامت سے پہلے اسے اللہ کی طرف مصیبت پہنچے گا۔''

فوائد: (۱) "قَارِعَةٌ " كامعنى تكليف، بلاكت ہاس كى جمع قوارع آتى ہے۔ (۲) جہاد چونكه فرض كفايہ ہے جيسا كه قرآن ميں ہے: ﴿ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ ﴾ تم پرلزائى فرض كردى گئي لبذا كه افراد السے ہونے چاہئيں جواس فريضے كى ادائيگى كے ليے ہروفت لگه رہيں اور جوافراد چيچے رہيں ان كولازم ہے كه وہ مجاہدوں كوسامان بم پہنچائيں اوران كے اہل وعيال كى ضروريات كاخيال ركھيں۔ غرض ہرفردكى ذمه وارى ہے كه وہ دشمن كے خلاف نبردآ زمانهيں تو مجاہدين كى جمع وضروريات كاخيال ركھ اوراس سے خفلت نہ برتے ورنہ بيانتهائى خمارے كاسودا ہوگا۔

[27] بَابِ فِي فَضُلِ مَنُ جَهَّزَ غَاذِيًا غازی کے لیے سامان تیار کرنے والے مخص کی فضیلت کا بیان

2463- أُخْبَرَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ عَنْ عَطَاءِ

عَنُ زَيُدِ بُنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيَ عَنِ النَّبِيِ عَنِ النَّبِيِ عَلَى النَّبِي عَنِ النَّبِي عَلَى النَّبِي عَلَى النَّبِي عَلَى النَّهُ سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ خَلَفَ فِي أَهُلِهِ كَتَبَ اللَّهُ لَهُ مِثُلَ أَجُومٍ إِلَّا أَنَّهُ لَا يَنْقُصُ مِنُ أَجُولِ الْفَازِي شَيْئًا)). ٥

سیدنا زید بن خالد جہنی والٹیئ کہتے ہیں کہ نبی مطفع آیا نے فرمایا: ''جس شخص نے اللہ کی راہ میں کسی غازی کے لئے سامان تیار کیا۔ یا اس کے بعداس کے گھر میں رہا اللہ تعالی اس کے لئے غازی کے برابر اجر لکھے گا مگر غازی کے ثواب سے پھے کی نہیں ہوگی۔

فوائد: معلوم ہوا پیچے سے مجاہدین کی ضروریات کا خیال رکھنے والے ان کے ساتھ جہادیس

❶ استاده حيد: اخرجه ابوداؤد، كتاب الحهاد، باب كراهية ترك الغزو (2503) وابن ماجه، كتاب الجهاد، باب التغليظ في ترك الجهاد (2762)

② صحيح البخارى، كتاب الجهاد والسير،باب فضل من جهز غازيا أو خلفه بخير(2843)و ابو داؤد، كتاب الإمارة،باب فضل اعانة الغازى في سبيل الله بمركوب وغيره وخلافته في أهله بخير(4879)و الترمذي، كتاب الجهاد،باب ماجاء في فضل من جهز غازيا(1628)و (1631)و

والمرابعة الكاليدي (289) كتاب الجهاد الم

برابر کے حصہ دار ہوں گے لیکن بیا جران کومجاہدوں کے ثواب سے منہا کر کے نہیں دیا جائے گا بلکہ ان کے لیے اتنا ہی اجرالگ ہوگا۔۔

[28].... بَابِ الْعُذُرِ فِى التَّخَلُّفِ عَنِ الْجِهَادِ جَهاد سے پیچے رہنے کے عذرکا بیان

2464_ أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَنْبَأَنَا أَبُوْ إِسْحْقَ قَالَ

سیّدنا براء خالیّن کہتے ہیں کہ جب یہ آیت نازل ہوئی:

"بیشنے والے مومن برابر نہیں ہو سیّتے۔" (نساء: ۹۵)

رسول اللّٰہ نے زید کو بلایا تو وہ ایک بازو کی ہڈی لائے۔اور
اس آیت کولکھا۔ جب ابن ام مکتوم خلائی نے عدم بینائی کی
شکایت کی تو یہ آیت نازل ہوئی ""بغیر عذر کے بیشنے والے
مومن ان کے برابر نہیں ہو سیّتے جو اللّٰہ کی راہ میں جہاد
کرتے ہیں۔" (نساء: ۹۵)

سَمِعُتُ الْبَرَاءَ يَقُولُ لَمَّا نَزَلَتُ هَذِهِ
الْآيَةُ ﴿ لَا يَسُتَ وِى الْقَاعِدُونَ مِنَ
الْمُؤُمِنِيُنَ ﴾ [النساء: ٩٥] دَعَا رَسُولُ
اللّٰهِ ﷺ زَيْدًا فَجَاءَ بِكَيْفٍ فَكَتَبَهَا
وَشَكَا ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ ضَرَارَتَهُ فَنَزَلَتُ
﴿ لَا يَسُتَوِى الْقُعِدُونَ مِنَ الْمُؤُمِنِيُنَ
عَيْرُ أُولِي الضَّرَر ﴾ .[النساء: ٩٥]. •

پر کتابت کی جاتی تھی۔ (۳) جہاد سے بلاوجہ پیچھے رہنے والے مومن اور مجاہدین یہ اجر میں بھی برابر نہیں ہو سکتے۔ (۳) معذورین جو کسی عذر کی بناپر پیچھے رہے ہوں اوران کے دل جہادی جذبات سے لبریز ہوں تو یہ مجاہدوں کے ساتھ ان کے اجروں میں برابر شریک ہول گے۔

[29_].... بَابِ فِی فَضُلِ عُزَاةِ الْبَحُرِ بحری جهادکی فضیلت کا بیان

2465 ـ أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ

> عَنُ أَنْسِ بُنِ مَالِلِثٍ قَالَ حَدَّتُنِي أَمُّ حَرَامٍ بِنُتُ مِلْحَانَ أَنَّ النَّبِيَ ﷺ قَالَ

سیدنا انس بن مالک وظائف کہتے ہیں کہ مجھ سے ام حرام بنت ملحان نے بیان کیا کہ نمی منتظ مین نے ایک دن

[●] متـفـق عـليه: اخرجه البخاري، كتاب الجهاد، والسير ،باب قول الله(لا يستوى القاعدون من المؤمنين)إلى قوله (غفوراً رحيما) (2831) ومسلم، كتاب الإمارة، باب سقوط فرض الجهاد عن المعذورين (4888)

المجهاد عن
میرے گھر میں قبلولہ کیا۔ جب بیدار ہوئے تو ہنس رہے رے ہیں آ ب نے فر ماہا:''میں نے اپنی امت کی ایک قوم کو دیکھا۔ دریا پر ایسے سوار ہیں جیسے بادشاہ تختوں پر مول ـ' میں نے کہا: یا رسول الله! دعا سیجے الله تعالی مجھے بھی ان میں (شار) کر دے۔آب نے فرمایا: ''تم انہیں سے ہو۔" پھرآ ب اس طرح سو گئے اور جب بیدار ہوئے تو بنس رے تھے، میں کہا:اے اللہ کے رسول مشفی فی آ ب کیوں بنس رہے ہیں؟آب مشکور آنے فرمایا: میں نے اینی امت کی ایک قوم کو دیکھا کہ وہ دریا پر ایسے سوار ہیں جبیا کہ بادشاہ تختوں پر ہوں، میں نے کہانیا رسول الله! مُشْرَعَكُمْ الله سے رُعا سیحتے کہ وہ مجھے بھی ان سے کر دے، آب طف و نامان م تخول يبل واللوكول ميس ہو۔انسی بن مالک فائنڈ کہتے ہیں کہ عبادہ بن صامت نے ان سے نکاح کیا اور دریا میں غزوہ کیا اینے ساتھ انہیں بھی لے گئے۔ جب لوگ آئے۔ تو ان کی سواری کے لئے نجے لا ما كما _اس نے انہيں كرا ديا _ پس اس كى كردن اوٹ عنى ، اور و وفوت ہوگئیں _

فِي بَيْتِهَا يَـوُمَّا فَاسْتَيْقَظَ وَهُ يَضْحَلُتُ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا أَضْحَكَكَ قَالَ: ((أُريتُ قَوُمًا مِنُ أُمَّتِبِي يَوْكَبُونَ ظَهُرَ هَـٰ ذَا الْبَحُر كَالْمُلُولُ فِي عَلَى الْأُسِوَّةِ مِي قُلُتُ بَا رَسُولَ اللهِ ادُّ عُ اللَّهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمُ قَالَ: ((أُنْتِ مِنْهُمُ)) ثُمَّ نَامَ أَيْضًا فَاسْتَيْقَظَ وَهُوَ يَضْحَكُ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا أَضْحَكَكَ ؟قَالَ: ((أُريتُ قَوْمًا مِنُ أُمَّتِي يَرُكَبُونَ هَذَا الْبَحُرَ كَالْمُلُولِثِ عَلَى الْأَسِرَةِ)). قُلُبِتُ يَسَا رَسُولَ اللَّهِ اذُعُ اللَّهَ أَنُ يَجُعَلَنِي مِنْهُمُ قَالَ: ((أَنْتِ مِنَ الْأُوَّلِيُنَ) . قَالَ فَتَن وَ جَهَا عُبَادَةُ بُنُ الصَّامِتِ فَغَزَا فِي الْبَرْسُ وَحَمَلَهَا مَعَهُ فَلَمَّا قَدِمُوا قُرَّبَتُ لَهَا بَغُلَةٌ لِتَرُكَبَهَا فَصَرَ عَتُهَا فَدُقَّتُ عُنُقُهَا فَمَاتَتُ . •

[30].... بَابِ فِي النِّسَاءِ يَغُزُونَ مَعَ الرِّجَالِ

جہاد میں مردوں کے ساتھ عورتوں کے شریک ہونے کا بیان

2466 أَخْبَرَنَا عَاصِمُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا أَبُوْ إِسْحٰقَ الْفَزَارِيُّ عَنْ هِشَامٍ عَنْ حَفْصَةَ

[●] مشفق عليه: البخاري، كتاب الحهاد والسير، باب فضل من يصرع في سبيل الله فمات فهو مسلم (2799)و. (2800) ومسلم، كتاب الإمارة، باب فضل الغزو في البحر (4912)

291 كتاب الجهاد الكاليكان الكاليك

عَنْ أُمَّ عَطِيَّةَ قَالَتُ غَزَوْتُ مَعَ سيّده ام عطيه كهتى بين مين نبي طَنْ اللّهَ اللّه كَا عُزوات میں شریک ہوئی میں زخی کو یا زخیوں کو مرہم یٹی کرتی اور ان کے لئے کھانا تیار کرتی۔ اور ان کے بعد ان کی قیام گاہوں میں رہتی۔

السنَّبِسيِّ ﷺ سَبُسعَ غَسزَوَاتٍ أُدَاوى الُجَرِيْحَ أَوِ الْجَرْحَى وَأَصُعْنَعُ لَهُمُ الطَّعَامَ وَأَخُلُفُهُمْ فِي رِحَالِهِمُ . •

ف وائد: معلوم ہواعورتیں بھی مردوں کے ساتھ غزوات میں شریک ہوسکتی ہیں کین ان کا کام لزائی نہیں بلکہ زخمیوں ،مریضوں کی مرہم یٹی اور کھانا وغیرہ تیار کرنا ہے۔

> [31].... بَابِ فِي خُرُوجِ النَّبِيِّ ﷺ مَعَ بَعُض نِسَائِهِ فِي الْغَزُو نی طفی میں کے اپنی بعض بیوبوں کو جہاد میں لے جانے کا بیان

2467- أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَيْمَنَ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْقَاسِم بن مُحَمَّد

سيّده عائشه وظافيها كهتى بين جب رسول الله طني ولين باهر جاتے۔ اپنی بیویوں کے درمیان قرعہ ڈالتے۔ایک دفعہ قرعه عائشہ ونائیم اور هصه ونائیما کے نام کا نکلا وہ دونوں آپ کے ساتھ گئیں۔ عَنُ عَائِشَةَ قَالَتُ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْهُ إِذَا خَوَجَ أَقُوعَ بَيْنَ نِسَائِيهِ فَطَارَتُ الُقُرُعَةُ عَلَى عَائِشَةَ وَحَفُصَةَ فَخَرَجَتَا مَعَهُ جَميعًا . 8

فواند: (۱) سفر عام ہو یا جہاد کاعورتوں کوساتھ لے کرنگانا سنت نبوی ملتے عَلَیْ ہے (۲) اگر کسی چیز میں زیادہ اشخاص حصہ دار ہوں تو کسی ایک کے حق میں فیصلے کے لیے قرعہ اندازی کرنا جائز ہے (س) آپ ﷺ تَا يَى از واج مِيں عدل كا اہتمام فرياتے تا كەكسى كى حق تكفی نہ ہو۔

> [32].... بَابِ فَضُلِ مَنُ رَابَطَ يَوُمًا وَلَيُلَةً ایک دن اور رات سرحد کی حفاظت کرنے والے خص کی فضیلت کا بیان

2468 - أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا لَيْثُ بْنُ سَعْدِ حَدَّثَنَا أَبُو عَقِيْلٍ زُهْرَةُ بْنُ مَعْبَدِ عَنْ أَبِي صَالِح مَوْ لَى عُثْمَانَ قَالَ.....

[◘] استاده صحيح: اخرجه ابن ابي شيبه (525/12) الحديث (10497) و مسلم، في الجهاد والسير، باب النساء الغازيات يرضخ (1812) واحمد 84/5

② متفق عليه: الحرجه البحاري، كتاب النكاح، باب القرعة بين النساء اذا اراد نفرا (5211) ومسلم، كتاب فضائل الصحابه، باب، في فضل عائشة رَاشِها (6248)

سَمِعُتُ عُثْمَانَ عَلَى الْمِنْبَرِ وَهُوَ يَقُولُ إِنِّى كُنْتُ كَتَمْتُكُمْ حَدِيثًا سَمِعُتُهُ مِنُ إِنِّى كُنْتُ كَتَمْتُكُمْ حَدِيثًا سَمِعُتُهُ مِنُ رَسُولِ اللهِ عَنِي كَرَاهِيَةَ تَفَرُّ قِكُمْ عَنِي ثُمَّ بَدَا لِى أَنْ أُحَدِّنَكُمُوهُ لِيَخْتَارَ امْرُوَّ ثُمَّ بَدَا لِى أَنْ أُحَدِّنَكُمُوهُ لِيَخْتَارَ امْرُوَّ لِيَنْعَتَارَ امْرُوَّ لِيَنْعَتَارَ امْرُوَّ لِيَنْعَلَى اللهِ عَنْدَ مِنَ اللهِ عَنْدُ مِنْ اللهِ عَنْدُ مِنْ اللهِ عَنْدُم فِيمَا سِوَاهُ مِنَ اللهِ عَنْدُ مِنْ اللهِ عَنْدُم فِيمَا سِوَاهُ مِنَ النَّهِ عَنْ مَنْ اللهِ عَنْدُم فِيمَا سِوَاهُ مِنَ النَّهِ عَنْ مَنْ اللهِ عَنْدُم فِيمَا سِوَاهُ مِنَ الْمَعَاذِلِ)). • •

سیّدنا عثان کے غلام ابوصالے کہتے ہیں میں نے عثان بڑائیڈ سے سنا وہ منبر پر فرما رہے تھے: میں نے ایک حدیث تم سے جھپائی جو میں نے رسول اللہ طفے آئی ہے سی اس خوف سے کہتم مجھ سے جدا ہو جاؤگے۔ پھر میں نے مناسب سمجھا کہ اسے تمہارے پاس بیان کر دول۔ تاکہ آ دی وہ بات افتیار کرے جو اس کے لئے بہتر ہو۔ میں نے رسول اللہ طفی آئی کی راہ میں ایک اللہ طفی آئی کو یہ فرماتے ہوئے سنا: ''اللہ کی راہ میں ایک دن سرحد کی حفاظت کے لئے رہنا اور مقامات میں بڑار

برس رہنے سے بہتر ہے۔''

[33] بَابِ فِی فَضُلِ مَنُ مَاتَ مُوَابِطًا سرحد کی حفاظت کرتے ہوئے مرجانے والے مخص کی فَضیلت کا بیان

2469 ـ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيْعَةَ عَنْ مِشْرَحٍ قَالَ

یقُولُ سَمِعُتُ سیّرنا عقبہ بن عامر زائنی کہتے ہیں میں نے رسول اللہ اللہ میّتِ ہیں میں نے رسول اللہ کی میّتِ اللہ طائع اللہ طائع کی اللہ طائع اللہ کی راہ میں سرحدی حفاظت کی لَهُ عَمَلُهُ حَتّٰی کرنے والے کے مل کا تُواب اسے برابر ملتار ہتا ہے۔ حق کہ فاغ عَمَلُهُ حَتّٰی کہ وہ (قامت کو) اٹھا یا جائے۔'

سَمِعُتُ عُقْبَةَ بُنَ عَامِرٍ يَقُولُ سَمِعُتُ رَسُولَ اللّهِ عَقْبَةَ بُنَ عَامِرٍ يَقُولُ سَمِعُتُ رَسُولَ اللّهِ عَلَى عَمَلِهِ إِلّا الْمُرَابِطَ فِي يَخْتَمُ عَلَى عَمَلِهِ إِلّا الْمُرَابِطَ فِي سَبِيلِ اللّهِ فَإِنَّهُ يُجُرَى لَهُ عَمَلُهُ حَتَّى سَبِيلِ اللّهِ فَإِنَّهُ يُجُرَى لَهُ عَمَلُهُ حَتَّى يَبُعِثَى). ٥

فوائد: انبان جس حالت میں فوت ہوا ہوائی حالت میں اسے اٹھایا جائے گا۔ جب کہ وہ اس وقفے میں اسے اٹھایا جائے گا۔ جب کہ وہ اس وقفے میں ثواب کا متحق نہیں گردانا جائے گا۔ ہاں نہ کورہ حدیث کے مطابق راہ جہاد میں پہرہ دینے والا ایبا شخص ہے کہ جس کا ممل جودہ دوران پہرہ سرانجام دے رہا ہوکوئی اذکار ہوں یا نماز وغیرہ کوئی عبادت اس کا اجر قیامت تک کے لیے جاری کردیا جاتا ہے۔

 [♣] حيد" اخرجه البيهقي 39/9، وصحيح ابن حبان (4609) والترمذي، كتاب فضائل الجهاد، باب فضل المرابط
 (1667) والنسائي، كتاب الجهاد، باب ففل الرباط (3169)

و است ادہ صدیف: ابن لھیعہ کے ضعف کی وجہ ہے جب کہ اس کا شاہر صحح سند سے صحح ابن حبان (4624) میں مذکور ہے۔ لبذا حدیث صحح ہے۔۔

عَنْ الْكَالِيْنِيُّ كَتَابِ الجهادِ ٢٩٥ وَ كَتَابِ الجهادِ ٢٥٥ وَ كَالْتُونُ لِنَّ أَلْكُولُونُ عَلَيْكُولُ لَكُولُ وَ لَكُولُ وَ لَيْكُولُ وَ لَكُولُ وَ لَكُولُ وَ لَيْكُولُ لَاللَّهُ لَا لَهُ عَلَيْكُولُ وَ لَكُولُ وَ لَكُولُ وَ لَكُولُ وَ لَكُولُ وَ لَكُولُ وَلَاللَّهُ لَاللَّهُ لَاللَّهُ لَاللَّهُ لَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَاللَّهُ لَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَاللَّهُ لَاللَّهُ لِلْكُولُ وَلَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَاللْكُولُ وَلَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَاللَّهُ لَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَالْلُولُ لِلللللَّهُ لِللْكُولُ وَلَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَاللَّهُ لَلْكُولُ وَلَاللْلَهُ لَلْكُولُ وَلَالْلُولُ لِلْلَهُ لَلْلِهُ لَلْلِلْلُولُ لَلْكُولُ لَلْلِلْلُهُ لَلْلِلْلُهُ لَلْلِلْلُولُ لِلللللْلِهُ لَلْلُولُ لِلللللْلِهُ لِللْلِلْلِلْلِلْلُولُ لِلْلِلْلِلْلِلْلِلْلِلْلُولُ لِلْلِلْلِلْلِلْلُولُ لِلللللللْلِلْلِلْلُولُ لِلْلِلْلِل

[34] بَابِ فَضُلِ الْحَيُلِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ جهاد مِين گھوڑوں کی فضیلت کا بیان

2470 - أَخْبَرَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا زَكَرِيًّا عَنْ عَامِرٍ

اللَّهِ عَلَىٰ : ((الْسَخَيُلُ مَعُقُودٌ فِى نَوَاصِيُهَا النَّحَيُرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ: الْأَجُرُ

عَنُ عُرُوةَ الْبَارِقِيِّ قَالَ قَالَ رَسُولُ

وَالْمَغْنَمُ)). 0

فوائد: گوڑوں کی پیثانیوں میں قیامت تک کے لیے خیرومنفعت کابندھ جانا ایک قطعی امر ہے۔ یہی وجہ ہے کہ زمانہ قدیم سے لے کر آج ترتی یافتہ دور کے اندر کہ جب حقیقت میں لوگ ستاروں پر کمندیں ڈال رہے ہوں اورخلا میں گشت کررہے ہوں ابھی تک میدانوں میں گھوڑوں کا استعمال ترک نہیں ہوا جو کہ اس حدیث کے ثبوت کی عملی دلیل ہے۔

2471 ـ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ حُصَيْنٍ وَعَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي السَّفَرِ عَنِ

الشَّعْبِيِّ

سیّدنا عروة رفائفهٔ بارق کہتے ہیں که رسول الله ملتَّظَ اللهِ نے فرمایا: ''گھوڑوں کی پیشانیوں میں قیامت تک اجر اور ننیمت باندھ دی گئی ہے۔''

عَنُ عُرُوَـةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((الُـخَيُـلُ مَعُقُودٌ فِي نَوَاصِيهَا الْخَيُرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ الْأَجُرُ وَالْمَغْنَمُ)). ٥

[35].... بَابِ مَا يُسُتَحَبُّ مِنَ الْخَيُلِ وَمَا يُكُرَهُ

اچھے اور برے گھوڑے کا بیان

2472 - أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الدِّمَشْقِيُّ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ حَدَّثِنِي ابْنُ لَهِيعَةَ عَنْ يَزِيدَ ابْنِ أَبِيْ حَبِيبٍ عَنْ عُلَيِّ بْنِ رَبَاحٍ

 [♦] متفق عليه: أخرجه البخاري، كتاب الجهاد، باب الخيل معقود في لواصيحها الخير الى يوم القيامة (2850)
 ومسلم، في الإمارة باب الخيل في نواصيها الخير الى يوم القيامة (1873)

عصحیح سابقدحدیث بی مررآئی ہے۔

عَنْ الْكَالِيْوَيُّ الْكَالِيُونِيُّ 294 وَ 294 كتاب الجهاد المجهاد

عَنُ أَبِى قَتَادَةَ الْأَنْصَارِيّ أَنَّ رَجُلًا قَالَ يَسَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّى أُرِيْدُ أَنُ أَشُتَرِى فَ وَلَا يَسَا فَأَيُّهَا أَشُتَرِى قَالَ: ((اشتر أَدُهَمَ أَرُثَمَ مُحَجَّلَ طَلُقَ الْيَدِ الْيُمْنَى أَوْ مِنَ الْكُدِ الْيُمْنَى أَوْ مِنَ الْكُدِ الْيُمْنَى أَوْ مِنَ الْكُدِ الْيُمْنَى أَوْ مِنَ الْكُدُ الْيُمْنَى أَوْ مِنَ الْكُدِ الْيُمْنَى أَوْ مِنَ الْكُدُ الْيُمْنَى أَوْ مِنَ الْكُدِ الْيُمْنَى أَوْ مِنَ الْكُدُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ الللّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ الللّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللّهُ الل

سیّدنا ابو قادة رفی انتخاری کہتے ہیں ایک آدمی نے کہا: یا رسول اللہ! ہیں گھوڑا خریدنا چاہتا ہوں کس طرح کا گھوڑا خریدوں؟ آپ نے فرمایا: ''مفکی گھوڑا خریدوجس کی ناک اور اوپر والا ہونٹ اگلے دائیں پاؤں کے علاوہ باقی پاؤں سفید ہوں۔ یا اسی قسم کا کمیتی گھوڑا خریدؤ اس سے تہیں مال غنیمت بھی ملے گا اور تم محفوظ بھی رہوگے۔''

فوائد: (۱) "الأدهم" بیساه رنگ والا گور ابوتا ہے۔ "از شَم" ایبا گور اجس کاناک اوراو پری بونٹ سفید بول۔ (مؤار دالظمآن 222/5) "الْمُحَجَّلْ" ایبا گور اجس کے پاؤل کلائیول سے اوپراور گھنوں سے بنچ تک سفید بول (۲) ہارے اعلیٰ وار فع پنیمبر جہانبانی کے اصولوں کے ساتھ ساتھ جہادی معلومات پر بھی مکمل عبور رکھتے تھے اس لیے تو آپ طفی آیا تفصیل سے گور سے کی عمدہ صفات کے بارے آگاہ کررہے ہیں۔

[36] بَابِ فِی السَّبُقِ (گھوڑ دوڑ میں) سبقت لے جانے کا بیان

2473 حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِع

سیدنا ابن عمر فالنی کہتے ہیں کہرسول الله طفی آنے تضمیر کیے گئے گھوڑوں کو مقابلہ پر دوڑایا جس کی حد هیاء، ثدیة تک تھی ،اور بغیر تضمیر والے گھوڑوں کو بھی مقابلہ پر دوڑیا، جس کی حد 'مفدیۃ' سے مجد ، بنوزریق' تک تھی اور ان عمر فائن کھی ان لوگوں میں سے تھے کہ جنہوں نے گھوڑ دوڑ میں حصال تھا۔'

عَنِ ابُنِ عُمَرَ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللهِ عَلَىٰ اللهُ اللهِ عَلَىٰ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَىٰ اللهُ اللهُ عَلَىٰ اللهُ اللهُ عَمَرَ كَانَ فِيمَنُ سَابَقَ بِهَا . ٥ عُمَرَ كَانَ فِيمَنُ سَابَقَ بِهَا . ٥

فوائد: (۱) تضمير كاطريقه كاريه موتائه كه هوڙے كوبانده كرخوب كھلايا جاتا جب وہ خوب

[•] اسناده ضعيف: ليكن بيرهديث هي بيء و كيص حيح ابن حبان (4676)

 [⊙]متفق عليه: اخرجه البخاري، كتاب الصلاة، باب هل يقال مستحد بني فلان (420) ومسلم، كتاب الإمارة، باب المسابقة بين الخيل وتضميرها (4820)

حال المعاد 295 من كتاب الجهاد كالمنافقة

موٹا تازہ ہوجاتا تواس کے بعداہے میدانوں میں دوڑایا جاتا اسے کرے میں باندھ کرموٹا کیڑا ڈال دیتے اور رفتہ رفتہ خوراک کم کرنا شروع کردیتے جس سے اس کی چربی پگھل جاتی اور وہ گھٹے جسم کامالک بن جاتا عرب کے ہاں تضمیر کی مدت چالیس یوم ہے۔ (۲) امام بخاری رائیٹید سفیان سے بیان کرتے ہیں کہ هیاء اور ثنیہ کے درمیان فاصلہ پانچ یا چومیل کا ہے جبکہ ابن عتبہ چھے یا سات میل کہتے ہیں (واللہ اعلم) (۳) جہادی کھیلوں کا اہتمام سنت نبوی میٹنے آئی ہے۔

[37] بَابِ فِي رِهَانِ الْخَيُلِ گھوڑے دوڑانے کا بیان

2474 - أَخْبَرَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ زَيْدٍ حَدَّثَنِي الزُّبَيْرُ بْنُ الْخِرّيتِ

عَنُ أَبِى لَبِيدٍ قَالَ أُجُوِيَتُ الْخَيُلُ فِى زَمْنِ الْحَجَّاجِ وَالْحَكُمُ بُنُ أَيُّوبَ عَلَى الْبَصُرَةِ فَاتَيُسَا الرِّهَانَ فَلَمَّا جَائَتُ الْمُصُرَةِ فَاتَيُسَا الرِّهَانَ فَلَمَّا جَائَتُ الْمُحيُّلُ قَالَ فَلَمَّا إِلَى أَنْسِ بُنِ الْمَحيُّلُ قَالَ قَالَ قُلْنَا إِلَى أَنْسِ بُنِ مَالِكٍ فَسَالُنَا أَنُ مِلْنَا إِلَى أَنْسِ بُنِ مَالِكٍ فَسَالُنَاهُ مَالِكٍ فَسَالُنَاهُ عَلَى عَهُدِ رَسُولِ اللَّهِ فَيَ الزَّاوِيَةِ فَسَأَلْنَاهُ وَهُو فِى قَصْرِهِ فِى الزَّاوِيَةِ فَسَأَلْنَاهُ فَعَلَى عَهُدِ رَسُولِ اللَّهِ فَيَى الزَّاوِيَةِ فَسَأَلْنَاهُ عَلَى عَهُدِ رَسُولِ اللَّهِ فَيَ الزَّاوِيَةِ فَسَأَلْنَاهُ عَلَى عَهُدِ رَسُولُ عَلَى عَهُدِ رَسُولُ اللَّهِ فَيَ أَكَانَ مَسُولُ اللَّهِ فَيَالُونَ عَلَى وَاللَّهِ فَيَ اللَّهِ فَيَ اللَّهِ عَلَى وَاللَّهِ عَلَى فَرَسِ لَهُ يُقَالُ لَهُ سَبُحَةً وَاللَّهِ مَلَى اللَّهِ عَلَى فَرَسِ لَهُ يُقَالُ لَهُ سَبُحَةً وَاللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَهُ اللَّهُ اللَّه

سیدنا ابولید اللہ کہتے ہیں کہ میں نے حجاج کے زمانہ میں گھوڑ دوڑ کا مقابلہ کروایا اور تھم بن ابوب بصرہ کے امیر(گورنر) تھے۔ ہم گھوڑ دوڑ کے مقام پر گئے۔ جب گھوڑے آئے تو ہم نے کہا: '' کاش ہم انس بن مالک ڈاٹنے ا ك ياس جاكران سے يو جھتے كه رسول الله الله علي كيا زمانہ میں لوگ گھوڑے دوڑ ایا کرتے تھے کہ نہیں؟ ہم ان كے ياس كئے وہ 'زاويہ ميں اينے محل ميں تھے ہم نے ان ے یوچھا اور کہا: "اے ابو حزہ! آب رسول الله طفي عليه کے زمانہ میں گھوڑے دوڑایا کرتے تھے؟ اور رسول "جی ہاں۔" اللہ کی قتم! آپ نے ایسے گھوڑے کی دوڑ لگائی جے سبحة 'كہا جاتا تھا آپ لوگوں سے آ كے نكل كئے آپ کو بیہ بات اچھی گی اور پیند آئی۔عبداللہ کہتے میں'' أنهشه'' كامعنى ہے كه آپ كويد بات پسندآ ئي۔''

❶ حسن: اخرجه احمد 160/3، والطبراني في الأوسط (8845) والبيقي في السبق والرمي، باب ماجاء في الرهان على الخيل (21/10)

الجهاد ١٥٥ كاب الجهاد ١٥٥ كتاب الجهاد ١٥٥

فوائد: (۱)"الزّاوية" يبتى بصرة يقريباً 4 كلوميٹر كے فاصلے يرب- "نَهَش "كتّ بي کسی پیندیدہ چیز کودیکھ کر جاہت ہے اس کی طرف لیکنا (۲) صحابہ ڈٹی ٹینیہ اوران کے بعد تابعین کی یہ کیفیت ہوتی کہ جہاں کہیں ان کے ذہن میں اشکال پیدا ہوتا فوری اس کے شرعی تھم کے بارے دریافت کر لیتے کہ كهيس بي مجى ميس حرام ميس نه يرجا كيس (جعل الله همّنا هم الآخرة)

> [38].... بَابِ فِي جَهَادِ الْمُشُرِكِينَ بِاللِّسَانِ وَالْيَدِ مشرکین سے زبان و ہاتھ سے جہاد کرنا

2475 ـ أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِم حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةً حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ

عَنُ أَنَا لَى رَسُولَ اللَّهِ عَلَى أَنَا اللَّهِ عَلَى أَلَ : سيّدنا انس بَالْتُنَا كَمْتُ بِين كه رسول الله عَلَيْمَا فَ فرمايا: (رجَاهدُوا الْمُشُرِكِينَ بِأَمُوَ الِكُمُ نُورِينَ بِأَمُوا لِكُمُ نُونَ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ الل

وَأَنْفُسِكُمُ وَأَلْسِنَتِكُمُ) . • كرو''

ف وائد: جہاد کالفظ فقط قال کے لیے ہی مستعمل نہیں بلکہ لغۃ اس میں جس طرح عموم ہے اصطلاحی طور پر بھی اس کامعنی عموم کا حامل ہے کہ اعلائے کلمۃ اللہ کے لیے کی جانے والی ہرکوشش جہاد کہلائے۔جیبا کہ مذکورہ حدیث میں مال ،جان اورزبان سے جہاد کاذکر ہے۔البتہ جب جہاد کالفظ مطلق استعال ہوتو وہاں یہ قبال کے معنی میں ہوگا (واللہ اعلم)

> [39].... بَابَ لَا تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ هَذِهِ الْأُمَّةِ يُقَاتِلُونَ عَلَى الْحَقّ اس امت کے کچھلوگ ہمیشہ حق کے لئے لڑتے رہیں گے

2476 أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن حَدَّثَنَا إِسْمْعِيلُ بْنُ أَبِيْ خَالِدٍ عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِم

عَن الْمُغِيرَةِ بُن شُعْبَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ سيّدنا مغيره بن شعبه كبتم بي كه رسول الله طيّعَ الله عن اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهُ عَوْمٌ مِن أُمَّتِي فَرَالًا: "ميرى امت ك لوك بميشه دوسر لوكول ير ظَاهرينَ عَلَى النَّاسِ حَتَّى يَأْتِيَ أَمُرُ اللَّهِ وَهُمُ ظَاهِرُونَ)). •

غالب رہیں گے حتی کہ اللہ تعالی کا تھم آ جائے اور وہ غالب ہی ہوں گے۔''

[€] صحيح: صحيح ابن حباك (4808) ومسند موصلي (3875)

[◘]متـفـق عـليـه: اخـرجـه البـخـاري، كتاب الإعتصام بالكتاب والسنة باب، قول النبي ﷺ (لاتزال أمتي ظاهرين) (7311) ومسلم كتاب الإمارة، باب قوله ﷺ (لاتزال طائفة من أمتى ظاهرين على الحق.....)

الجهاد ١٥٥ كاب الجهاد

فوائد: جہاں اس حدیث سے بیٹابت ہوا کہ جہاد قیامت تک جاری رہے گا وہیں بیکھی معلوم ہوا کہ جہاد قیامت تک جاری رہے گا وہیں بیکھی معلوم ہوا کہ صالحین کی ایک جماعت جا ہے ان کے پاس حکومت ہویا نہ ہودہ حق پر قائم اور لوگوں پر غالب رہے گی نہ تو کوئی کا فر انہیں زیر کرسکے گا اور نہ کوئی منافق نیز امام احمد نے اس سے حماعت محدثین مراد لی ہے۔ (تنقیح الرواة)

2477 أَخْبَرَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا أَبُو دَاؤُدَ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ الرَّبِيعِ

عَنُ عُمَرَ بُنِ الْبَحَطَّابِ قَالَ سَمِعْتُهُ سَيِّدنا عمر بن خطاب بْنَا عَمْ بِين رسول الله السَّيَعَيْنَ نے يَعَنُ عُمَرَ بُنِ الله عِنْ الله عَنْ الله عَلَى الله عَنْ الله عَلَمْ ع

[40] بَابِ فِي قِتَالِ الْخَوَارِجِ فارجِيول كُول كرنا

2478 - أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ بْنِ قَعْنَبٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ هُوَ ابْنُ الْمُغِيرَةِ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ

الله طفيظيل سے سنا۔

سیّدنا ابو ذر فاتین کچ بین که رسول الله طفی آیا نے فرمایا:

''میرے بعد میری امت میں پچھا لیے لوگ ہوں گے۔ وہ
قرآن پڑھیں گے جو ان کے حلق سے نیچ نہیں جائے گا
وہ دین سے اس طرح نکل جائیں گے جس طرح تیر کمان
سے نکل جاتا ہے۔ پھر وہ دین میں لوٹ کر نہیں آئیں
گے۔ وہ تمام انسانوں اور جانوروں سے بدتر ہوں گے۔'
سلیمان کہتے ہیں: حمید نے بیان کیا: عبداللہ بن صامت رفائیئ سلیمان کہتے ہیں: حمید نے بیان کی رافع سے ملا اور یہ حدیث بیان کی رافع سے ملا اور یہ صول

عَنُ أَبِى ذَرِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَلَيْ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللل

هَلال عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ



الله على . ٥

فوائد: (۱) اس حدیث کے مرادخوارج ہیں جو کہ اپنے تیک بڑے پختہ کار اور عبادت گازار تھے لیکن فرمان نبوی مشکم آنے کے مطابق بیرمخلوق کے بدترین بندے تھے (۲) تیر جب انتہائی تیز ہوتو وہ ہدف کو پار کرجاتا ہے اورخون وآلائش وغیرہ سے اس طرح صاف وشفاف ہوتا ہے جس طرح ابھی غیر مستعمل ہوبالکل اسی طرح نیکی وطہارت کا مرقع نظر آنے والے خوارج کا حال ہے۔





۱۷ ومن كتاب السير سيركابيان

"السّير" بيسيرة كى جمع ب سير كالفظ ابواب جهاديراس ليے بولا جاتا ہے كيوں كه بيغزوات ميں آب الشيئة إلى كاحوال كوشمن ميس ليع ہوتا ہے۔ (تخفة الاحوذي 128/5)

[1] بَاب بَارِكُ لِأُمَّتِي فِي بُكُورِهَا

نبی طنتے علیم کی دعا کہ میری امت کو صبح کے کام میں برکت دیے

2479 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرِ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ يَعْلَى بْنِ عَطَاءِ عَنْ عُمَارَةَ بْنِ حَدِيدٍ

سيدناصح غامري كہتے ہيں كه رسول الله مطفي مين في فرمايا: ''اے اللہ! میری امت کوضح کے کام میں برکت دے اور مجیجتے تھے۔ راوی کہنا ہے یہ مخض (صحر غامدی ڈٹاٹنڈ) سودا گرتھا اور تجارت کے لئے اینے غلاموں کو مج جیجا کرتا تھا۔جس سے یہ مالدار ہو گیا۔

عَنُ صَخُو الْغَامِدِيّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِنْهُ قَالَ: ((اللَّهُمَّ بَادِكُ لِأُمَّتِي فِي بُكُورِهَا)) وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا بَعَثَ سَرِيَّةُ بَعَثَهَا مِنُ أُوَّلِ النَّهَارِ قَالَ فَكَانَ هٰ ذَا الرَّجُلُ رَجُلًا تَاجِرًا فَكَانَ يُسُعَثُ غِلْمَانَهُ مِنُ أَوَّلِ النَّهَارِ فَكَثُرَ

مَالَهُ ٥

فوائد: يرآب من النام كانتيج ب كصبح كاول وقت آدى جوكام سرانجام داسكان ب وہ کام دن کے کسی اور جھے میں کیا جائے تواس کے لیے زیادہ وقت درکار ہوگا لہذا دینی امور ہوں یا دنیاوی ان کی انجام دہی کے لیے اول وقت کا انتخاب مجھداری کی علامت ہے۔

[📭] اسنادہ حسن: عمارة بن حديد كوابن الى حاتم نے مجبول جبكه ابن حبان نے انقات 5 / 341 ميں اسے ذكر كيا ہے۔ ابو داؤد، كتاب الحهاد، باب في الإبتكار في السفر (2606) والترمذي، كتاب البيوع، باب ماحاء في التبكير بالتحارة (1212)

الكانوي عن الكانوي (300 كاب السير)

[2] بَابِ فِي الْخُرُو ِجِ يَوُمَ الْخَمِيسِ

جعرات کے دن سفر کرنے کا بیان

2480 حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ أَنْبَأَنَا يُوْنُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ.....

عَنُ عَبُدِ الرَّحُ مَنِ بُنِ كَعُبٍ عَنُ أَبِيهِ عَدُ أَبِيهِ عَدُ أَبِيهِ عَدُ أَبِيهِ عَنُ أَبِيهِ عَدُ أَبِيهِ قَالَ لَقَلَّمَا كَانَ رَسُولُ اللهِ عَنَ اللهِ عَنْ أَبِيهِ فَي اللهِ عَنْ أَبِيهِ عَنُ أَبِيهِ فَي اللهِ عَلَيْ مَا اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ عَلَيْ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ الله

فوائد: جعرات کوسفر کے لیے نکانا آپ سے ایک کا کو کوب تھا اس کا یہ مطلب ہرگر نہیں کہ آپ سے ایک فقط جعرات کوبی نکا کرتے تھے۔ جیہا کہ ابن جررات کی طراز ہیں "و کونسه کان یحب السخر وج یوم المخمیس لا یستلزم المواظیة لقیام مانع منه '' (فتح الباری) 138/6) اور آپ کا جعرات کو نکلنے میں پند کرنا اس کی جیشگی کوسٹزم نہیں اس سے مانع کے پائے جانے کی وجہ سے اور بتاتے ہیں کہ امام بخاری رائے یہ بعد لاتے ہیں جس میں ہفتہ والے دن نکلنے کاذکر ہے۔ لہذا جعرات کے علاوہ دوسرے ایام میں سفر کے لیے نکانا آپ میں جس میں جن بیاب ہے۔

[3].... بَابِ فِی حُسُنِ الصَّحَابَةِ لوگوں کے ساتھ اچھا سلوک کرنے کا بیان

2481 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا حَيْوَةُ وَابْنُ لَهِيْعَةَ قَالَا حَدَّثَنَا شُرَحْبِيلُ بْنُ شَرِيْكِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبًا عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحُبُلِيَّ يُحَدِّثُ

> عَنْ عَبُدِ اللّهِ بُنِ عَمُرِو بُنِ الْعَاصِ عَنُ سَيْهِ رَسُولِ السَّهِ ﷺ قَسَالَ: ((خَيُسُرُ اللهِ الْأَصْحَابِ عِنْدَ اللهِ خَيْرُهُمُ لِصَاحِبِهِ الْجَ وَخَيْرُ الْجِيرَانِ عِنْدَ اللهِ خَيْرُهُمُ لِصَاحِبِهِ الْجَ

سیّدنا عبدالله بن عمرو بن عاص سے منقول ہے کہ رسول الله طفی آتی ہے کہ رسول الله طفی آتی ہے کہ رسول الله طفی آتی ہے جو الله طفی آتی ہے جو ایٹ ساتھ الله کے نزدیک احجما ہو۔ اور الله کے نزدیک احجما ہمسامیہ وہ ہے جو اپنے ہمسائے کے ساتھ احجما ہو۔''

لِجَارِهِ)). 🗗

❶ صحيح البخاري، كتاب الحهاد، باب من اراد غزوة فورّى بغيرها (2949) و (2950) وابوداؤد، كتاب الحهاد، باب في اي يوم يستحب السفر (2605)

اسناده صحیح: اس میں ابن تھی عرضعیف ہے۔ لیکن اس کی مثابعت موجود ہے۔ احرجه الترمذی، کتاب البرو الصله، باب ماجاء فی حق الحوار (1944) صحیح ابن حبان (518، 519)

ف السير على السير الشروري في الله جس قدر زياده اورعمد في ادا كيه جائين بياى قدر بلندى ورجات كاباعث مول على المين فيريت، بهترين كاوصف حاصل كرنے كے ليے حقوق العباد مين عمد في الناضروري على الله عن المين على اسلام مين برزور رغبت دلائي گئي ہے بردوی كے بارے قرآن مين ہے:
﴿ وَالْجَارُ الْجُنُبِ ﴾ (النباء:36) يعنی اجنبي بروی سے حن سلوك كرنا ہے (و فقنا الله لذلك)

[4] بَابِ فِي خَيْرٍ 'أَلْأَصُحَابِ وَالسَّرَايَا وَالْجُيُوشِ بِ [4] بيان بهتر ساتھيول' وستول اور لشكرول كابيان

2482 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بُنُ الصَّلْتِ حَدَّثَنَا حِبَّانُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ يُونُسَ وَعُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ

بهَابِ....

سیدنا عبدالله بن عباس فاتنه کہتے ہیں که رسول الله طفی آیا کے اسیدنا عبدالله بن عباس فاتنه کہتے ہیں که رسول الله طفی آیا کہ برار کا ہے۔ اور اچھا دستہ چار سو کا ہے، ایسانہیں ہوسکتا کہ بارہ ہزار کا اشکر صبر اور سچ کے باوجود کمی کی وجہ سے مغلوب ہو جائے۔''

أَرُبَعُ مِسائَةٍ وَمَسا بَلَغَ اثْنَا عَشَرَ أَلُفًا فَصَبَرُوا وَصَدَقُوا فَعُلِبُوا مِنُ قِلَّةٍ)). •

عَنُ عُبَيْدِ اللِّهِ بُن عَبُدِ اللَّهِ عَن ابُن

عَبَّساس قَسَالَ قَسَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِيُّهُ:

((خَيُسرُ الْأَصْحَسابِ أَرْبَعَةٌ وَخَيُسُ

الُجُيُوش أَرُبَعَةُ آلافٍ وَخَيْرُ السَّرَايَا

فوائد است میں ایک دوسرے کے ممدومعاون ثابت ہوں۔ آپ طینے آئے خرمایا: "واحد شیطان ، اورراست میں ایک دوسرے کے ممدومعاون ثابت ہوں۔ آپ طینے آئے نے فرمایا: "واحد شیطان ، واثنان شیطانان و ثلاثة رکب" (اَو کَمَا قَالَ) ایک شیطان (۲) دوشیطان اور تین کا قافلہ ہاں واثنان شیطانان و ثلاثة رکب" (اَو کَمَا قَالَ) ایک شیطان (۲) دوشیطان اور تین کا قافلہ ہاں سے معلوم ہوتا ہے کہ کم از کم تین اور چار سے اوپر جتنے ہواتے ہی بہتر ہیں۔ ہاں مجوری کی صورت میں مثلاً جاسوی وغیرہ کے لیے اکیے آدی کاسفر کرنا بھی درست ہے۔ (۳) کہیں پرشبخون مارنے کے لیے چار سو اور با قاعدہ جنگ کے لیے چار ہزار کالشکر کافی ہے کے لیے چار ہزار کالشکر کہترین ہے۔ (۴) بڑے سے بڑے لشکر سے نکرانے کے لیے بارہ ہزار کالشکر کافی ہے جب اتی تعداد میں افراد ہوں تو وہ قلت تعداد کی بناپر مغلوب نہیں ہو سکتے ہاں کوئی اور سبب بن جائے تو الگ بات ہے۔ نیز امام البانی رائے ہے۔ (واللہ اعلم)

[●] اسناده حسن: كيكن حديث من عنه اخرجه ابوداؤد، كتاب الجهاد، باب فيما يستحب من الجيوش والرفقاء والسرايا (2611) والترمذي، كتاب السير، باب ماحاء في السرايا (1555) صحيح ابن حبان (4717)

يُتِنَىٰ الْكَالِيْنِيُّ كَتَابِ السير

[5].... بَابِ وَصِيَّةِ الْإِمَامِ فِي السَّرَايَا امام کا جہادی دستوں کو وصیت کرنے کا بیان

2483 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْكَدِ

عَنُ سُ لَيُ مَانَ بُن بُرَيْدَةَ عَنُ أَبِيْهِ قَالَ كَانَ دَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا أُمَّـرَ دَجُلًا عَلَى سَرِيَّةِ أَوْصَاهُ فِي خَاصَّةِ نَفُسِهِ بتَـقُوَى اللَّهِ وَبِمَنُ مَعَهُ مِنَ الْمُسُلِمِينَ خَيْرًا وَقَالَ: ((اغُزُوا بسُم اللَّهِ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ قَاتِلُوا مَنُ كَفَرَ بِاللَّهِ اغْزُوُا وَ لَا تَغُدِرُوا وَ لَا تَغُلُّوا وَلَا تُمُثِّلُوا وَلَا تُمَثِّلُوا وَلَا تَقُتُلُوا وَلِيُدًا)). ٥

سیّدنا سلیمان وفائد بن بریدہ این والد سے بیان کرتے بیں کہ رسول اللہ طنے والے جب سی شخص کو دیتے کا امیر مقرر كرتے تو اسے اپنے نفس كے متعلق اللہ سے ورنے اور اینے مسلمان ساتھیوں سے بھلائی کی وصیت کرتے۔ اور فرماتے: "اللہ کے نام سے اللہ کے راستہ میں جہاد کرنا اللہ کے مکروں سے لڑائی کرنا جہاد کرنا اور بدعہدی نہ کرنا' خيانت نه كرنا' مثله نه كرنا ادر بچوں گفتل نه كرنا۔''

فهاند: ان نصحتوں کی اگر گهرائی میں اترا جائے تو معلوم ہوگا جو جہاد ، جوقبال ندکورہ حدود وقیود كاحامل مووه ونياميس فتنه كانبيس بلكه امن كاباعث وسبب موكا .. (والله المستعان)

[6] بَاب لَا تَتَمَنُّوا لِقَاءَ الْعَدُوّ دشمن سے ملنے کی تمنا نہ کرنے کا بیان

2484 ـ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمٰنِ بْنُ زِيَادٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْن يَزِيْدَ

وَاسُالُوا اللُّهَ الْعَافِيَةَ فَإِنْ لَقِيتُمُوهُمُ فَاثُبُتُوا وَأَكْثِرُوا ذِكْرَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجُلَبُوا وَضَجُوا فَعَلَيُكُمُ بِالصَّمْتِ)). ٥

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عَمُ رو أَنَّ دَسُولَ سَيْدِنَا عبدالله بن عَمُ و ثَالِثَهُ كَبْتِ بِين كه رسول الله الطُّطَعَيْمَ إ اللهِ عِنْ قَالَ: ((لَا تَتَمَنُّوا لِفَاءَ الْعَدُو لِي فَاءَ فرمايا: "وثمن سے ملنے كى تمنا نه كرواور الله سے عافیت طلب کرؤ جب وشن سے ملوتو ثابت قدم رہو اور الله کا کشت سے ذکر کرو اگر وہ شور کریں اور چلائیں تو تم خاموشی اختیار کرو۔''

[◘] صحيح اخرجه مسلم، كتاب الجهاد والسير، باب تأميرالامام الامراء على البعوث ووصيته اياهم (4496) وابوداؤد، كتاب الجهاد، باب في دعاء المشركين (2613)

³متفق عليه: اخرجه البخاري، كتاب الحهاد والسير، باب الجنة تحت بارقة السيوف (2818) ومسلم، كتاب الجهاد، باب كراهية تمنى لقاء العدو والأمر بالصبر عند اللقاء (4817)

فوائد: لڑائی، دیمن کاسامنا ایک آزمائش للبذا اس سے پناہ ہی مائکی چا ہے انسان جتنا بھی توی الایمان ہوائی کے لیے فتنے کی چاہت کرنا قطعی معیوب، ناپندیدہ ۔البتہ دیمن سے سامنا ہوجانا یا فتنے میں مبتلا ہوجانے کے بعد جزع وفزع کرنا بے صبری کامظاہرہ کرنا ایک مومن کے لائق نہیں للبذا ایسی حالت میں ثابت قدمی ،اولوالعزمی کامظاہرہ کرنا چاہیے۔

[7] ···· بَابِ فِی الدُّعَاءِ عِنْدُ الْقِتَالِ لڑائی کے وقت دعا کرنے کا بیان

2485- أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَنْل

سیدناصهیب فالنفی کہتے ہیں کدرسول الله مطفی مین کے زمانہ میں یوں دعا کیا کرتے تھے: ''اے اللہ! تیری مدد سے جملہ کرتا ہوں' اور ترمی ہی مدد سے جملہ کرتا ہوں' اور ترمی ہی مدد سے خل افی کرتا ہوں۔''

ف وہر دکھلانے ہیں وہیں اللہ کے سے انست : (۱) دورانِ لڑائی جہاں اپنی ہمتوں ، شجاعتوں کے جوہر دکھلانے ہیں وہیں اللہ کے سامنے اپنی عاجزی کا اظہار کرتے رہنا ہے تاکہ اللہ کی مدد بھی شامل حال رہے (۲) دشمن سے مقابلہ کے دوران اسے پڑھنا باعث قوت ہے اورمسنون ہے۔

[8] بَابِ فِي الدَّعُوَةِ إِلَى الْإِسُلامِ قَبُلَ الْقِتَالِ الرَّالَى سے پہلے اسلام کی دعوت دینے کابیان

2486- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوْسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْتَدِ......

سیّدنا سلیمان بن بریده زالتینهٔ اپنے والد نقل کرتے ہیں که رسول اللّد طِطْفَائِیا جب کسی شخص کو دستے کا امیر مقرر کرتے تو اسے وصیت کرتے: ''جب تم اپنے دشمن مشرکوں سے ملو تو ان پر تین با تیں پیش کرو' جو بات وہ مان لیس تو اسے منظور کرلواوران سے لڑائی نہ کرو'ان پراسلام پیش کرو

عَنُ سُلَيْمَانَ بُنِ بُرَيُدَةَ عَنُ أَبِيهِ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللّهِ ﷺ إِذَا أَمَّرَ رَجُلًا عَلَى سَرِيَّةٍ أَوْصَاهُ: ((إِذَا لَقِيتَ عَدُوَّكَ مِنَ الْمُشُرِكِينَ فَادُعُهُمُ إِلَى إِحُدَى شَلَاثِ خِلَالٍ أَوْ خِصَالٍ فَأَيْتُهُمُ مَا

عَنُ صُهَيُب أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِلَيْ كَانَ

يَدُعُو أَيَّامَ حُنَيُن: ((اللَّهُمَّ بلَثَ أَحَاوِلُ

وَبِكَ أُصَاوِلُ وَبِكَ أُقَاتِلُ)). •

حَالِ اللَّهِ الْكَالِمُ فِي اللَّهِ اللَّ

اگر وہ مان لیں تو اسے منظور کرلواور ان سے لڑائی نہ کرو۔ پھر ان سے کہو کہ اپنا ملک جیموڑ کر مہاجرین کے ملک میں حلے حائیں اور ان سے کہو اگر انہوں نے ایبا کیا تو انہیں وہی حق حاصل ہو گا جومہاجروں کو ہے۔اوران کے ذھے وہی باتیں ہوں گی جومہاجروں کے میں اگر وہ إ كاركريں تو کہو کہ وہ دیباتی مسلمانوں کی طرح ہوں گے ان پراللہ کا تھم جاری ہوگا جو تمام مسلمانوں پر جاری ہوتا ہے۔ اور مال فے اور مال غنیمت میں ان کا کچھ حصہ نہ ہوگا۔ مگر جب ملمانوں کے ساتھ جہاد میں شریک ہوں۔ اگر وہ اسلام لانے سے انکار کریں تو ان سے کہو جزیہ دیں اگر اسے مان لیں تو ان کے ساتھ لڑائی سے رک جاؤ۔ اگر اس ہے انکار کریں تو اللہ سے مدد مانگتے ہوئے ان سے لڑائی کرو۔اگرتم کسی قلعہ کا محاصرہ کرواور وہ تم سے اللہ اور اس کے نبی کا ذمہ جا ہیں تو تم انہیں اللہ اور اس کے نبی کا ذمہ نہ دینا۔ بلکہ انہیں اپنا اپنے باپ اوراپنے ساتھیوں کا ذمہ دینا۔ کیونکہ اپنا اور اینے آباء کا ذمہ توڑنا تمہارے لئے اللہ اوراس کے نبی کا ذمہ توڑنے سے آسان ہے۔ اگرتم کسی قلعه کا محاصرہ کرو اور وہ جاہیں کہ اللہ کے حکم پر اتریں تو انبیں اللہ کے حکم پر نہ اتاریں بلکہ انہیں اپنے حکم پر اتاریں كيونكه تههيس علمنهيس كهتم ان كے متعلق الله كے حكم تك پہنچو گے کہ نہیں۔ پھر جو جا ہوان کے متعلق فیصلہ کرو۔''

أَجَابُولُ لِليُهَا فَاقْبَلُ مِنْهُمْ وَكُفَّ عَنْهُمُ ثُمَّ ادْعُهُمُ إِلَى الْإِسْلَامِ فَإِنْ هُمُ أَجَابُولُ فَاقْبَلُ مِنْهُمُ وَكُفَّ عَنْهُمُ ثُمَّ ادُعُهُمُ إِلَى التَّحَوُّلِ مِنْ دَارِهِمُ إِلَى دَارِ الْـمُهَاجِرينَ وَأَخُبِرُهُمُ إِنَّ هُمُ فَعَلُوا أَنَّ لَهُمُ مَا لِلمُهَاجِرِينَ وَأَنَّ عَلَيْهِمُ مَا عَلَى المُهَاجِرِينَ فَإِنْ هُمُ أَبُوا فَأَخْبِرُهُمُ أَنَّهُمْ يَكُونُونَ كَأَعُرَابِ الْمُسْلِمِينَ يَجُرِيُ عَلَيُهِمُ حُكُمُ اللَّهِ الَّذِي يَجُرِيُ عَلَى المُؤُمِنِينَ وَلَيْسَ لَهُمُ فِي الْفَيْءِ وَالْغَنِيمَةِ نَصِيُبٌ إِلَّا أَنْ يَجاهِدُوا مَعَ الْمُسُلِمِيْنَ فَإِنَّ هُمُ أَبَوُا أَنْ يَدُخُلُوا فِي الْإِسُلام فَسَلْهُمُ إعْطَاءَ الْجزَّيَةِ فَإِنَّ فَعَلُوا فَاقْبَلُ مِنْهُمُ وَكُفَّ عَنْهُمْ فَإِنْ هُمُ أَبُوا فَاسُتَعِنُ بِاللَّهِ وَقَاتِلُهُمْ وَإِنْ حَاصَرُتَ أَهُلَ حِصْنِ فَإِنُ أَرَادُوكَ أَنُ تَجْعَلَ لَهُمُ ذِمَّةَ اللَّهِ وَذِمَّةَ نَبِيّهِ فَلا تَجْعَلُ لَهُمُ ذِمَّةَ اللُّهِ وَلَا ذِمَّةَ نَبِيِّهِ وَلَكِنِ اجْعَلُ لَهُمُ ذِمَّتَكَ وَذِمَّةَ أَبِيُكَ وَذِمَّةَ أَصْحَابِكَ فَإِنَّكُمُ إِنْ تُخْفِرُوا بِلِمَّتِكُمُ وَفِمَّةِ آبَائِكُمُ أَهُوَنُ عَلَيْكُمُ مِنْ أَنُ تُخُفِرُوُا ذِمَّةَ اللَّهِ وَذِمَّةَ رَسُولِهِ وَإِنْ حَاصَرُتَ حِصْنًا فَأَرَادُولَكَ أَنْ يَنْزِلُوا عَلَى حُكُم اللَّهِ فَلَا تُنْزِلُهُمُ عَلَى حُكُمِ اللَّهِ وَلَكِنُ

أَنْ زِلُهُمُ عَلَى حُكُمِكَ فَإِنَّكَ لَا تَــُدرِى أَتُـصِيُبُ حُكُمَ اللَّهِ فِيهِمُ أَمُ لَا

ثُمَّ اقُضِ فِيهِمُ بِمَا شِئْتَ)). •

فوائد : (۱) الرائی ہے تبل کفار کے سامنے تمین رائے رکھے جا کیں گے (۱) مسلمان ہو جا کیں (ب) جزید پرصلح کرلیں مسلمانوں کی محکوی قبول کرلیں (ج) الرائی کے لیے تیار ہوجا کمیں (۲) اگر کوئی قبول اسلام کے بعد دارالسلام میں ہجرت کرے آ جائے تو مجاہدین کے برابر کا مال غنیمت وغیرہ میں حصہ دار ہوگا (۳) قبول اسلام کے ساتھ علاقہ چھوڑ ناضروری نہیں (۴) اگر لرائی میں کسی کو ضانت دینی ہوتو سالار اپنی یا اپنے ساتھوں میں ہے کسی کی ضانت دے اللہ اور اس کے رسول کی ضانت نہ دے تا کہ کسی سبب اگر اس میں میں بیشی بھی ہوجائے تو زیادہ گناہ نہ ہو۔ (۵) وشمن اگر لرائی سے باز آ جائے اور قرآن وسنت کے مطابق میں کے اتفاضا کرے تو آئیں قرآن وسنت کے فیصلے کی بجائے اپنے فیصلے پر آئیں لرائی روکنے پرآ مادہ کرنا چیا ہے۔ کیونکہ ہوسکتا ہے کہ آ دمی قرآن وسنت سے شیح محکم اخذ کرنے کی بجائے غلطی کرجائے اور فیصلہ اللہ اور اس کے رسول کی منشاء کے مطابق نہ ہو سکے۔

2487. قَالَ عَلْقَمَةُ فَحَدَّثُتُ بِهِ مُقَاتِلَ بُنَ حَيَّانُ فَقَالِكَ مُسَلِمٌ بُنُ بُنَ حَيَّانِي مُسلِمٌ بُنُ هَيْ صَبِي مُسلِمٌ بُنُ هَيْ صَبِي النَّعُمَانِ بُنِ مُقَرِّنٍ عَنِ النَّعُمَانِ بُنِ مُقَرِّنٍ عَنِ النَّعْمَانِ بُنِ مُقَاتِلًا اللَّهُ اللْمُعْلِمُ اللَّهُولُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ

حیان کے پاس بیان کی تو انہوں نے کہا: مجھ سے مسلم بن مصلم بنان کیا۔

2488-أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوْسَى عَنْ سُفْيَانَ عَنِ ابْنِ أَبِيْ نَجِيْحٍ عَنْ أَبِيْهِ

سیدنا ابن عباس و النه کہتے ہیں کدرسول الله طفی آنی نے کسی قوم سے لڑائی نہیں کی حتی کہ ان پر اسلام پیش کیا ،عبدالله کہتے ہیں: "سفیان نے ابن ابو نجیح سے یہ حدیث نہیں

سیدنا علقمہ زاہنی کہتے ہیں کہ میں نے بیحدیث مقاتل بن

عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ قَالَ: مَاقَاتَلَ رَسُولُ اللَّهِ عَنِي ابُنِ عَبَّاسٍ قَالَ: مَاقَاتَلَ رَسُولُ اللَّهِ عَنِي قَوْمًا حَتَّى دَعَاهُمُ قَالَ عَبُدُاللَّهِ: سُفَيَانُ لَمُ يَسُمَعُ مِنِ ابُنِ أَبِي نَجِيْح يَعْنِي: هٰذَا الْحَدِيْتَ. ۞

♣ صحيح مسلم، كتباب الحهاد، باب تأمير الأمام الأمراء على البعوث و وصية اياهم بآداب الغزوة وغيرها (4497)
 وابوداؤد، كتاب الجهاد، باب في دعاء المشركين (2612)

• صحيح: سفيان في ابن الي تحج عال حديث كونيس ساليكن كي نقات سفيان كي متابعت كرتي بين - الحرجه أحمد 231/1،

والطبراني 11269، وابويعليْ في المستد (2494)

16 7 306 FM يُقَانِينُ إِلاَّ الْكُولُونِيَ [9].... بَابِ الْإِغَارَةِ عَلَى الْعَدُقِ

وتتمن برحمله کرنے کا بیان

2489 حَدَّنَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَال حَدَّنَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ ثَابِتِ

عَنْ أَنَس أَنَّ النَّبِيَّ عِنَّا كَمَانَ يُعِيْرُ عِنْدَ سيِّدنا انس رَفَاتِيْدَ عِمْقُول هِ كُهُ فِي السِّفَاتِيمَ فَجرك نمازك وقت حمله كرتے تھے۔ يہلے آپ توجہ سے سنتے اگراذان كي آواز آتی تو حملے سے رک جاتے اگراذان نہ سنتے تو حملہ کر دیتے۔

صَلاقِ الْفَجُرِ وَكَانَ يَسْتَمِعُ فَإِنُ سَمِعَ أَذَانًا أَمْسَكَ وَإِنْ لَمْ يَسْمَعُ أَذَانًا أُغَارَ . 0

فوائد: (۱) حربی کافرول کواچا تک غفلت پرجالینا رواو درست ہے (۲) مسلمانوں کواین بستیوں میں اذان کا اہتمام کرنا چاہیے۔ بیشعار اسلام ہے (۳) مسلمانوں کود فاع کی بجائے جارھیت کی پالیسی اپنانی حاہیے کیونکہ جارحیت بہترین دفاع ہے۔

> [10] بَابِ فِي الْقِتَالِ عَلَى قَوُلِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ نبی طلطی آیا کے اس قول کے موافق لڑائی کرنا کہ مجھے حکم ہوا ہے كەلوگول سے لروں حتى كەرە "لا اله الا الله" كەرس"

2490 أَخْبَرَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ النَّعْمَان بْنِ سَالِمِ قَالَ

اوس بن ابواوس تقفی کہتے ہیں کہ میں تقیف کے قاصدوں نجلے حصہ میں تھا جہاں کوئی نہیں تھا صرف نبی ماللے تیم سوئے ہوئے تھے۔ اتنے میں آپ کے پاس ایک شخص آیا اس نے آپ سے آیا کے ساتھ آستہ باتیں کیں آپ نے فرمایا:'' حاوُ اسے قُل کر دو۔'' پھرفر مایا: کیا وہ گواہی نہیں دیتا كەللد كے سواكوئى معبورنېيں؟شعبدنے بيلفظ بھى روايت کیے ہیں: اور بے شک محمد طشائق اللہ کے رسول ہیں؟اس

سَمِعْتُ أُوْسَ بُنَ أَبِي أَوْسِ الثَّقَفِيَّ قَالَ أَتَيُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فِي وَفُدِ ثَقِيُفٍ قَالَ وَكُنُتُ فِي أَسُفَلِ الْقُبَّةِ لَيُسَ فِيهَا أَحَدُ إِلَّا النَّبِيُّ ﷺ نَائِهُمْ إِذُ أَتَاهُ رَجُلٌ فَسَارَّهُ فَقَالَ : ((اذُهَبُ فَاقُتُلُهُ)).ثُمَّ قَالَ: ((أَلَيُسَ يَشُهَدُ أَنُ لَا إِلَهُ إِلَّا اللُّهُ؟)) قَالَ شُعْبَةُ وَأَشُلُّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ قَالَ بَلَى قَالَ: ((إِنِّي أُمِرُتُ

❶ صحيح: انحرجه مسلم، كتاب الصلوة، باب الإمساك عن الإغارة على قوم في دارالكفر (845) وابوداؤد، كتاب الجهاد، باب في دعاء المشركين (2634)

فوائد: (۱) شھادتین کے اقرار ہے آدمی کی جان ومال محفوظ ہوجاتا ہے کسی مسلم کے لیے جائز نہیں کہ وہ اس آدمی کی اجازت کے بغیراس کی کوئی شئے لے اگر چہ شھادتین کا اقرار دارالحرب میں ہی کیوں نہ کیا ہو۔ بخاری رائے یہ اس حدیث پر یوں باب باندھتے ہیں "اذا اسلم قوم فی دار الحرب ولهم مال و ارضون فہی لهم . " (بخاری 3058) جب کوئی قوم دارالحرب میں اسلام لے آئے توان کے مال و زمینیں آئہیں کی ہوں گی۔ (۲)"الا بحقها" سے مرادوہ جرائم ہیں جن کی اسلام نے سزاموت رکھی ہے جیسے زمینیں آئہیں کی ہوں گی۔ (۲)"الا بحقها" سے مرادوہ جرائم ہیں جن کی اسلام نے سزاموت رکھی ہے جیسے کسی کوناحی قبل کرنا ،اسلام سے پھر جانا، شادی شدہ کا زنا کرنا۔ یہ ایسے حقوق ہیں جن کی بنا پر مسلمان کوئل کرنا حائز ہے (دیکھئے آئندہ حدیث)

[11].... بَاب لَا يَحِلُّ دَمُ رَجُلٍ يَشُهَدُ أَنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

"لا اله الا الله" كا قرار كرنے والے تخص كا خون حلال نه ہونے كا بيان

2491 ـ أَخْبَرَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُرَّةَ عَنْ مَسْرُوْقِ

سیّدنا عبدالله و فالله کتب میں که رسول الله طفی آیا نے فرمایا:
"اس مخص کا خون حلال نہیں جو 'لا الله الا الله' کا اقرار
کرتا ہو مگران تین آ دمیوں سے کوئی ہوتو حلال ہے:" جان
کے بدلے جان شادی شدہ زانی اور جوایئے دین کو جھوڑ

عَنُ عَبُدِ اللّهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ ﴿ اللّهِ ﴿ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّ : ((لَا يَسِحِلُ دَمُ رَجُلٍ يَشُهَدُ أَنُ لَا إِلْهَ إِلَّا اللّهُ إِلّا ثَلَاثَةِ نَفَرِ النَّفُسُ بِالنَّفُسِ وَالشَّيِّبُ السَّزَّانِ مَى وَالتَّسَادِكُ لِدِينِهِ

[●] صحيح: اخرجه الطيالسي 26/1 (37) والطبراني في الكبير 218/1 (594) وابن ماجه، كتاب الفتن، باب الكف عمن قال لا اله الا الله (3929)

المرابعة الم

کر جماعت ہے الگ ہو جائے''

المُفَارِقُ لِلْجَمَاعَةِ)). •

فوائد: ان تین جرائم پرتل کی سزا کامقرر ہونا بیان کے'' من اکبر الکبائر'' ہونے کی دلیل ہے چنانچہ ناحق قتل ،حرام کاری اور ارتدادان کی شکینی ان کی سزاؤں سے روزِ روثن کی طرح عیاں ہے۔ (ف افھم بھدیك الله)

[12] بَابِ فِي بَيَانِ قَوْلِ النَّبِيِّ الصَّلَاةُ جَامِعَةٌ بَي طِلْقَالُ الصَّلَاةُ جَامِعَةٌ بَي طِلْقَالِمَ مَن طُلِيَانِ بَي طِلْقَالِمَ مَا يَانِ الصَلَوْةُ جَامِعَةٌ ''كابيان

2492 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا الْأَسْوَدُ بْنُ شَيْبَانَ عَنْ خَالِدِ بْنِ سُمَيْرٍ قَالَ قَدِمَ عَلَيْنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ رَبَاحِ الْأَنْصَارِيُّ وَكَانَتِ الْأَنْصَارُ تُفَقِّهُ قَالَ.....

حَدَّثَنَا أَبُو قَتَادَةً أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِنَى اللهِ عَنَى اللهِ قَادة رَقَاقَة رَقَاقَة كَمَ بِين كه رسول الله عَنَا أَبُو مَنْفُور بَعَيَاوه عِلَى كَهُ رسول الله عَنَى جَيُشَ الْأُمْوَاءِ قَالَ: فَانْطَلَقُواْ فَلَبُواْ فَلَبُواْ اللهِ عَنَى الله وَمَنْفُور مَعَ اللهُ وَمَنْفُور مَا اللهُ عَنَى اللهُ وَمَنْفُور مَا اللهُ عَنَى اللهُ عَنَى اللهُ وَمَنْفُور مَا اللهُ عَنَى اللهُ عَنْهُ عَنَى اللهُ عَنْهُ وَمَا اللهُ عَنْهُ وَمَا اللهُ عَنْهُ وَمَا اللهُ عَنْهُ وَمَا اللهُ عَنْهُ عَنَى اللهُ عَنْهُ وَمَا اللهُ عَنْهُ وَاللّهُ اللهُ عَنْهُ وَاللّهُ اللهُ اللهُ عَنْهُ وَاللّهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَنْهُ وَاللّهُ اللهُ الللهُ اللهُ
فواند: آپ طینی آن کامعمول تھا کہ کوئی بھی پیش آمدہ واقعہ جس کاتعلق کسی اجتماعی معاملے سے ہوتا آپ طینی تین آمدہ اور اگر نماز کا وقت نہ ہوتا تو صحابہ میں اُنتین ہوتا آپ طینی تین آمدہ کا دفت نہ ہوتا تو صحابہ میں اُنتین کوجمع کرنے لیے (الصلا قبامعة) پکاراجا تا چنانچہ جمع ہوجاتے اور معاملہ طے کرلیاجا تا۔

[13].... بَابِ الْمُسْتَشَارُ مُؤُتَّمَنَّ

مشورہ دینے والا امین ہے

 [♣]متـفـق عليه: البخارى، كتاب الديات، باب قول الله تعالىٰ (أن النفس بالنفس والعين بالعين) (6878) ومسلم،
 كتاب الفسامة والمحاربين، باب مايباح دم المسلم (4351)

② صحيح: اخرجه ابن سعد 26/1/3 والبيهتمي في دلائل النبوة 367/4، واخرجه احمد5/299_ 300

حسن: اخرجه الترمذي، كتاب الأداب، باب إن المستشار مؤتمن (2823)

عَنَ الْخَانِينَ ﴾ (309) كتاب السير كتاب السير المسير الم

فوائد: مشورہ ایک امانت ہے لہذا جس سے وہ طلب کیا جائے تواسے جا ہے کہ پوری دیانت داری سے اسے ادا کر ہے، دے کیونکہ کوئی امانت کی طرح اگر مشورہ پوری نیک نیتی سے نہ دے توالیا مستشار خائن، خائب وخاسر ہوگا۔ (العیاذ باللہ)

[14] ہَابِ فِی الْحَرُبِ خُدُعَةٌ لڑائی کے دھوکہ ہونے کا بیان

2494 - أَخْبَ رَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ الْحِزَامِيُّ حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَبْدِ

الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبٍ

عَنُ كَعُب بُن مَالِلْتٍ قَالَ كَانَ رَسُولُ

السلِّسِهِ ﷺ إِذَا أَرَادَ غَسرُوَسةً وَرَّى

سيّدنا كعب بن مالك رُخالِقُدُ كَهِتْم جِين كه رسول الله طَلِيَّ اللهِ الله طَلِيَّ اللهِ اللهُ طَلِيَّ اللهِ ا جب جهاد كا اراده كرتے تو تو ربي فرماتے تھے۔''

بغَيْرِهَا. 0

فوائد: (۱) توریہ ہے کہ ارادہ کوئی اور ہواور ظاہر کچھ اور کیا جائے (۲) جنگ میں جھوٹ بولنا، تورید کرنا جائز ہے۔

[15_].... بَابِ الشِّعَارِ شعار كِمتعلق

2495 حَدَّثَنَا إِسْحَقُ بِنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا وَكِيْعٌ عَنْ أَبِي عُمَيْسِ.....

ایاس بن سلمة وظائمت بن اکوع اپنے باپ سے نقل کرتے ہیں کہ میں نے ایک شخص سے مقابلہ کیا اور اسے قبل کر ڈالا تو رسول اللہ طائے آئیز نے اس کا مال مجھے دے دیا۔ خالد بن ولید کے ساتھ ہمارا شعار 'امت' یعنی' مار ڈالؤ تھا۔

رَسُولُ اللَّهِ ﷺ سَلَبَهُ فَكَانَ شِعَارُنَا مَعَ خَالِدِ بُنِ الْوَلِيدِ أَمِثُ يَعْنِي اقْتُلُ . ٥

عَنُ إِيَىاسِ بُسِ سَلَمَةَ بُنِ الْأَكُوَعِ عَنُ

أَبِيُهِ قَالَ بَارَزُتُ رَجُلًا فَقَتَلْتُهُ فَنَقَلَنِي

ف وائد : (۱) اگرحر بی کافر کا قاتل معین ہوتو اس مقتول کا فر کا سارا سامان قاتل مسلمان کا ہوگا (۲) اگر ساتھیوں کی بیجیان مشکل ہوتو بعض الفاظ کو علامت مقرر کرلینا مسنون ہے۔

 [◘] صحيح: أخرجه ابوداؤد، كتاب الحهاد، باب المكر في الحرب (2637) وابن ابي شيبه 29/12_ 530
 ◘ مشفق عليه: البخاري، كتاب الحهاد، باب الحربي، اذا دخل دار الإسلام بغير أمان (3051) و مسلم، كتاب الجهاد والسير، باب استحقاق القاتل سلب القتيل (1754)

سِيِّنَ الْدَارِينِيُّ كَابِ السيرِ

[16] بَابِ فِي قَوُلِ النَّبِي ﷺ شَاهَتِ الْوُجُوهُ نبی طشیّ مَیْنِ کا فرمان: چیرے بگر حائیں کا بیان

2496 حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَال وَعَفَّانُ قَالَا حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةٌ عَنْ يَعْلَى بْن عَطَاءِ عَنْ

عَبْدِ اللهِ بْن يَسَار أبي هَمَّام

عَنُ أَبِي عَبُدِ الرَّحْمَنِ الْفِهُرِيِّ قَالَ كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي غَزُوَةِ حُنيُن فَكُنَّا فِي يَوُم قَائِظٍ شَدِيدِ الْحَرِّ فَنَزَلْنَا تَحُتَ ظِلَالِ الشَّجَرِ فَذَكَرَ الْقِصَّةَ ثُمَّ أَخَذَ كَفًّا مِنُ تُرَابِ قَالَ فَحَدَّثَنِي الَّذِي هُوَ أَقُرَبُ إِلَيْهِ مِنِّي أَنَّهُ ضَرَبَ بِهِ وُجُوهَهُمُ وَقَالَ: ((شَاهَتِ الْوُجُوهُ)) فَهَ زَمَ اللَّهُ الْمُشُرِكِينَ قَالَ يَعُلَى فَحَدَّثَنِي أَبُنَاؤُهُمُ أَنَّ آبَائَهُمُ قَالُوا فَمَا بَقِيَ مِنَّا أَحَدٌ إِلَّا امْتَلَأَتُ عَيْنَاهُ وَفَمُهُ

تُرَانًا. 🗗

ابوعبدالرحمٰن فهري رضائفهٔ سهتے ہیں کہ ہم غز وہ حنین میں رسول الله ﷺ کے ساتھ تھے۔ اور اس دن بخت گرمی تھی۔ ہم درختوں کے سائے میں اتر ہے پھر سارا واقعہ بیان کیا۔ پھر آپ نے مٹی ہے مٹھی بھر لی ابوعبدالرحمٰن کہتے ہیں مجھے اس شخص نے بتایا جومیری نسبت آپ کے قریب تھا۔ کہ وہ مٹی آ ب نے ان کے چرول پر ماری اور فرمایا:۔'' منه بگر گئے۔'' پھر اللہ تعالی نے کافروں کوشکست دی۔ یعلی کہتے ہں:۔'' مجھےمشرکوں کے بیٹوں اور آبا واجداد نے بتایا کہ ہم میں سے کوئی ایبانہیں تھا جس کی آ تکھیں اور منہ مٹی ہے نہ کھر گئے ہو۔''

ف**عوانسد**: يه آپ طلطة مَيْنَ كامعجزه تها كه آپ طلطة مَيْنَ كَمْ تَعْمِلَى بَعِرَمْنَ سَجَى كفار كے منه اور آئكھيں بھرگئی اگرایسے معجزے عقل میں نہ ساسکیں توعقل کاعلاج کرنا چاہیے نہ کہ خود ٹیڑھی راہ کواختیار کرکے ان کا ہی ا نکار کر دیا جائے جیسا کہ بعض اہل اھواء کاوطیرہ وشیوہ ہے۔

> [17].... بَابِ فِي بَيُعَةِ النَّبِيِّ ﷺ نی طفی ایم کی بیعت کرنے کا بیان

2497 حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِيْ إِدْرِيْسَ ·

عَنْ عُبَادَةَ بُنِ الصَّامِتِ قَالَ قَالَ لَنَا رَسُولُ سيِّدِنا عباده وَلِيَّيْ بن صامت كَتِ بين بم رسول الله مَسْتَطَيَّا اللَّهِ عِنْ وَنَحُنُ مَعَهُ فِي مَجْلِسِ: كَ ساته ايك جُديس تح آپ نے فرمايا: "مجھ سے اس

مر المسار المسار على المسار على المسار المسا

بات پر بیعت کرو کہ اللہ کے ساتھ کسی کو شریک نہیں کرو گے نہ نہ نا کرو گے اور نہ اپنی اولا دکوئل کرو گے نہ اپنے ہاتھ اور پاؤل سے بہتان با ندھو گے جو اس کو پورا کرے گا اس کا اجر اللہ کے ذمہ ہے جس نے ان کے علاوہ کوئی بات کی پھر اللہ نے اس کی پردہ پوشی کی تو اس کا معاملہ اللہ پر ہے چاہے تو اسے سزادے اور چاہے تو معاف معاملہ اللہ پر ہے چاہے تو اسے سزادے اور چاہے تو معاف کردے اور جس نے ان میں سے کوئی گناہ کیا پھر دنیا میں کردے اور جس نے ان میں سے کوئی گناہ کیا پھر دنیا میں اسے اس کی سزامل گئی۔ تو وہ اس کے لیے کفارہ ہے۔'' عبادة زائش بن صامت کہتے ہیں:'' ہم نے ان باتوں پر آپ سے بیعت کی۔''

فوائد: (۱) کبیره گناه توبه سے تومعان موہی جاتے ہیں لیکن اگر توبه ندگی گئی موتو پھر بھی اللہ کی

رحمت شامل حال ہوتو ان کے کفارے کی امید کی جاستی ہے البتہ شرک کی بلاتوبہ معافی نہیں قرآن میں اس مضمون کا بیان یوں ہے ﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَغُولُ أَنُ يُنْشُرَكَ بَهِ وَيَغُولُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَسْاَءُ﴾ مضمون کا بیان یوں ہے ﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَغُولُ أَنُ يُنْشُركَ عَلاوہ بقيہ بخش ديتا ہے جس کے ليے چاہے۔ (النساء: ۴۸) اللہ اپنے ساتھ شرک کومعاف نہیں کرتا اور اس کے علاوہ بقیہ بخش دیتا ہے جس کے لیے چاہے۔ (۱) حدود گنا ہوں کے کفارے کا باعث ہیں حدلگ جانے کے بعد بندہ اس گناہ سے بری الذمہ ہوجاتا ہے۔

[18].... بَابِ فِي بَيُعَةِ أَنُ لَا يَفِرُّ وا

جنگ سے نہ بھا گئے پرلوگوں سے بیعت کینے کابیان

2498 ـ أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا لَيْثُ بْنُ سَعْدِ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ

سیّدنا جابر و اللهٔ بن عبدالله کہتے ہیں کہ ہم حدیبیہ کے روز ایک ہزار چارسو تھے۔ ہم نے آپ کی بیعت کی اور عمر و اللهٔ درخت کے نیچ آپ کا ہاتھ کیڑے ہوئے تھے۔ وہ کیکر کا درخت تھا۔ ہم نے آپ سے اس بات پر بیعت کی کہ

عَنُ جَابِرِ بُنِ عَبُدِ اللّهِ أَنَّهُ قَالَ كُنَّا يَوُمَ الْحُدَدَيْبِيَةِ أَلُفًا وَأَرْبَعَ صِائَةٍ فَبَايَعُنَاهُ وَعُمَرُ آخِذُ بِيَدِهِ تَحْتَ الشَّجَرَةِ وَهِى سَمُرَةٌ وَقَالَ بَايَعُنَاهُ عَلَى أَنُ لَا نَفِرَّ وَلَمُ

[●] متفق عليه: البخاري، كتاب الإيمان، باب (11) الحديث (18) ومسلم، كتاب الحدود،، باب الحدود كفارات لأهلها (4436)

المتنزن الكالزيوع كتاب السير كتاب 312

الرائی سے نہ بھاگیں گے اور مرنے پر ہم نے آپ سے

نُبَايِعُهُ عَلَى الْمَوُتِ . •

بیعت نہیں کی ۔''

فوائد: (۱) حدیبیمیں مسلمانوں کی تعداد ۲۰۰۰اتھی۔ (۲) لڑائی کے وقت امام بیعت لے سکتا ہے(۳) حدیدہ کے موقع پرعدم فرار پر بیعت ہوئی تھی۔

> [19].... بَابِ فِي حَفُرِ الْخَنُدَق خندق کھود نے کے متعلق

2499 أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُوْ إِسْحَقَ قَالَ

سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بُنَ عَازِب يَقُولُ كَانَ سیدنا براء خالید بن عازب کہتے ہیں کہ احزاب کے دن رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَنْقُلُ مَعَنَا التُّرَابَ يَوُمَ رسول طفی ایم است ساتھ مٹی کھینگ رہے تھے اور آپ کی بغلوں کی سفیدی مٹی سے جھی گئتھی۔ اور آپ فرما الْأَحُزَابِ وَقَدُ وَادَى التُّرَابُ بَيَاضَ إِسطَيْهِ وَهُ وَ يَقُولُ اللَّهُمَّ لَوُلَا أَنْتَ مَا رے تھے:''اے اللہ! اگر تو نہ ہوتا تو ہم ہدایت نہ یاتے۔ الهُتَدَيْنَا وَلَا تَصَدَّقُنَا وَلَا صَلَّيْنَا فَأَنُولَنُ نه صدقه كرت اور نه نماز يرص البدا تو جميل اطمينان سَكِينَةً عَلَيْنَا وَثَبَّتُ الْأَقُدَامَ إِنُ نصیب فرما اگر ہم دشمنوں سے ملیں تو ہمیں ثابت قدم رکھنا لَاقَيْنَاإِنَّ الْأُولَى قَدُ بَغُوا عَلَيْنَا وَإِنَّ انہوں نے ہم پرزیادتی کی ہے اگر وہ فساد کرنا چاہیں گے تو أَرَادُوا فِتْنَةً أَبَيْنَا وَيَرُفَعُ بِهَا صَوْتَهُ . ٥ ہم انہیں روکیں گے۔''اسے بلندآ واز سے کہتے تھے۔

فواند: (۱) رسول الله طفي عَيْم دورٍ حاضر كے مشائخ وقائدين كے برعكس عوام كے ساتھ ال جل ر منا پند فرماتے اور اجماعی کاموں میں ان کا ہاتھ بٹاتے تھے (۲) اللہ کے رسول ملت اللہ نے مجمی اشعار نہیں کہ اور نہ ہی ہیآ پ طفیع آیا کے شایان شان تھالیکن جنگ ایبا موقع ہے جس میں آپ طفیع آیا نے صحابہ رہائیں كى ہمتيں بندھانے كے ليے اوران كوابھارنے كے ليے اس سے بھى گريز نہيں كيا جس سے جہاد كے مقام کااندازہ کیاجاسکتا ہے۔

[◘]صحيح: اخرجه مسلم، كتاب الإمارة، باب استحباب مبابعه الإمام الحيش عند ارادة القتال (4784)

[🛭] متفق عليه: البخاري، كتاب الجهاد، والسير، باب حفر الخندق (2836) ومسلم، كتاب الجهاد، باب غزوة الأحزاب وهي الخندق (4646)

ر20ر... بَابِ كَيُفَ ذَخَلَ النَّبِيُّ عِثْثُ مَكَّةً نی طشی قائم کے مکہ میں داخل ہونے کی کیفیت کا بیان

يُتِنَىٰ الْكَالِيْمِينَ ﴾ 313 ﴿ 313 أَكُالِيْمِينَ كتاب السير

2500 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ خَالِدِ بْنِ حَازِم حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ

عَنُ أَنَسَ أَنَّ النَّبِيَّ عِينَ أَن النَّبِيِّ عِينَ الْحَلَ مَكَّةَ عَامَ سيِّدنا السِّرِينَا السَّرِينَا السَّرِينَ السَّرِينَا السَّرِينَا السَّرِينَا السَّرِينَا السَّرِينَا السَّرِينَا السَّرِينَا السَّرِينَا السَّرِينَ السَّرِينَ السَّرِينَا السَّرِينَ السَّرَاسِ السَّرَاسِ السَّرِينَ السَّرِينَ السَّرَاسِ السَّرِينَ السَّرَاسُ السَّرَاسُ السَّرَاسُ السَّرَاسُ السَّرِينَ السَّرَاسُ السَّرَاسُ السَّرَاسُ السَّرَاسُ السَّرَاسُ السَّرِينَ السَّرَاسُ السَّلَّ السَّلَّ السَّلَّ السَّلَّ السَاسُ السَّلَّ السَّلَّ السَّلَّ السَّلَّ السَّلَّ السَّلَّ السُ داخل ہوئے اور آپ کے سر برخودتھی جب آپ نے اسے اتاراتوایک آ دی نے آ کرآ ب سے یو چھا:" یارسول اللہ! ابن خطل کعبہ کے بردوں سے لئکا ہوا ہے۔ رسول الله طلح في نے فر مایا: ''اے قل کر ڈالو۔''

الُفَتُح وَعَلَى رَأْسِهِ مِغُفَرٌ فَلَمَّا نَزَعَهُ جَائَهُ رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا ابْنُ خَطَلِ مُتَعَلِّقٌ بِأَسْتَارِ الْكَعُبَةِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((اقْتُلُوهُ)). •

فوائد: (۱) دفاع کے لیے جنگی لباس،خود وغیرہ پہننا جائز ہے توکل کے خلاف نہیں (۲) ابن خطل ان اشخاص میں تھا جن کوآپ طشے آئے نے قبل کرنے کا حکم دیا تھا۔

[21] بَابِ فِي قَبِيعَةِ سَيُفِ رَسُولِ اللَّهِ عِلَيْكُ

2501 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَان حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِم عَنْ قَتَادَةَ

عَسنُ أنسس قَسالَ كَسانَ قَبيعَةُ سَيْفِ سيِّدنا انس رَخْاتَهُ كُتِتِ بِين كه نبي مِشْكِعَيْنَ كَي تلواركا وسته واندی کا تھا۔عبداللہ کہتے ہیں کہ ہشام دستواکی نے (جربر کی) مخالفت کی ہے اور کہا ہے کہ قادہ نے سعید بن انی حسن سے روایت کرتے ہیں اور وہ نی طفاع ہے بان کرتے ہیں۔لوگ کہتے ہیں یہی محفوظ ہے۔

النَّبِي عِنَّ أَيْ مِنُ فِضَّةٍ قَالَ عَبُد اللَّهِ هِشَامٌ الدُّسُتَوَائِيُّ خَالَفَهُ قَالَ قَتَادَةٌ عَنُ سَعِيدِ بُن أبى الُحَسَن عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَزَعَمَ النَّاسُ أَنَّهُ هُوَ الْمَحُفُوظُ . ٥

ف السيف " السيف " السيف " السيف " السيف الوال بين (١) يتلوار ع قبض كو كهتم بين (ب) تلوار کے نیلے حصے کو (ج) یہ تلوار کے قبضے کے سرے کوکہاجاتا ہے اور یہی راجح ہے۔ (۲) اسلیح میں جا ندی کا استعال درست ہے۔

[◘]متفق عليه: اخرجه البخاري، كتاب الجهاد، باب قتل الأسير (3044) ومسلم، كتاب الحج، باب جواز دخول المكة بغير احرام (3295)

[🛭] صحيح: اخرجه ابوداؤد، كتاب الجهاد، باب، في السيف يحلي (2583) والترمذي، كتاب الجهاد، باب ماجاء في السيوف وحليتها (1691) والطحاوي في مشكل الأثار 166/2.

سَيِّنَ الْكَارِينِيِّ كَابِ السير عَابِ السير عَابِ السير عَابِ السير عَابِ السير [22].... بَابِ أَنَّ النَّبِيَّ إِذَا ظَهَرَ عَلَىٰ قَوْمٍ عِلَىٰ أَقَامَ بِالْعَرُصَةِ ثَلاثَةً نبی طفی میں رسول اللہ طفی میں اللہ آنے کے بعد لڑائی کے میدان میں رسول اللہ طفی میں کے تنین دن گھیرنے کا بیان

2502 أَخْبَرَنَا الْمُعَلَى بْنُ أَسَدِ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ عَنْ قَتَادَة عَنْ أَنْس

سيّدنا ابوطلحه ولانفذ كهتر جي كه نبي طلط بير جب سي قوم ير عَنْ أَبِي طَلُحَةَ أَنَّ النَّبِيَّ عِلَى كَانَ إِذَا عالب آتے۔تو پیند کرتے تھے کہ میدان جنگ میں تین ظَهَرَ عَلَى قَوْم أَحَبَّ أَنُ يُقِيْمَ بِعَرُصَتِهِمُ دن کھیریں۔

فوائد: فنّح حاصل کر لینے کے بعد دشمنان دین جنگ کے مقام میں تین ایام قیام کرنامتحب ہے بیان بررعب وهبیت طاری کرنے کاباعث ہے۔

> [23] بَابِ فِي تَحُرِيقِ النَّبِيِّ عِنْ لَكُولَ بَنِي النَّضِير نی طین مالی کا بیان سی میں کے مجوروں کے باغ جلا دینے کا بیان

2503 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِع

عَن ابُن عُمَرَ قَالَ حَرَّقَ رَسُولُ سَيْدنا عبدالله بن عمر وَالنَّذَ كَهَ بِي كَه بِي طَلْحَالَا إِن الله علامة اللهِ عَلَيْ نَخُلَ بَنِي النَّضِير . ٥ بونضير كا كمجورول كا باغ جلا ديا-

وَ كِلاقًا ٥

فواند: بونفیر کی سرکشی پر جب آب طفی نیا نے ان کا محاصرہ کیا تو تھجور کے درخت درمیان میں حائل تھے اوراوٹ کاباعث بن رہے لہذا آپ ملے والے نے انہیں کا نے کا حکم دے دیا جس سے ایک توان کی آ رختم ہوگئی دوسرا انہیں اپنی مغلوبیت کا بھر پوراحساس ہوگیا جس سے انہوں نے قلعہ سے باہر آنا قبول کرلیااور الله نے آپ مِنْ الله عَلَى الله عَلَى كو يون شرف قبوليت سے نوازا قرآن ميں ﴿مَا قَطَعْتُ مُ مِّنْ لِيْنَةٍ أَوْ تَرَكُتُهُوْهَا قَائِمَةً عَلَى اصُوْلِهَا فَهِإِذُنِ اللَّهِ كَعَجورول كُوتمهارا كاننا اور كفرى حِيورُ وينابيالله كي اجازت ہے ہی ہوا جس سے معلوم ہوا کہ بھیتی و باغات کو ضرورت کی بنایر ضائع کرنے میں کوئی حرج نہیں۔

[₫] متيفيق عليه: البخاري، كتاب الجهاد، باب من غلب على العدوو أقام في عرصتهم ثلاثاً (3065) ومسلم، في الجنة وصفة نعيمها (2875)

عمتفق عليه: البخاري، كتاب الحهاد، باب حرق الدور والنخيل (3031) ومسلم، كتاب الحهاد، السير، باب جوازقطع اشجار الكفار وتحريقها (4527)

سیّدنا ابو ہریرۃ دوی ڈھٹھ کہتے ہیں کہ ہمیں رسول اللّٰہ طِنْظَافَاتِ نے ایک دیتے کے ساتھ بھیجا اور فرمایا: ''اگرتم فلاں اور فلاں شخص کو پاؤتو انہیں آگ سے جلا دینا پھر دوسرے دن ہمارے پاس ایک آ دمی کو یہ کہہ کر بھیجا کہ میں نے تہمیں ان دوشخصوں کو جلا دینے کا حکم دیا تھا۔ پھر میں نے خیال کیا کہ اللّٰہ کے علاوہ کسی کو یہ لائق نہیں کہ وہ کسی کو نے خیال کیا کہ اللّٰہ کے علاوہ کسی کو یہ لائق نہیں کہ وہ کسی کو اللّٰہ کے علاوہ کسی کو یہ لائق نہیں کہ وہ کسی کو اللّٰہ کے علاوہ کسی کو یہ لائق نہیں کہ وہ کسی کو اللّٰہ کے علاوہ کسی کو یہ لائق نہیں کہ وہ کسی کو اللّٰہ کے علاوہ کسی کو یہ لائق نہیں کہ وہ کسی کو یہ لائق قبل کر دینا۔''

عَنُ أَبِى هُ رَيُورَةَ الدَّوُسِيِّ قَالَ بَعَنَنَا رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ فِي سَرِيَةٍ فَقَالَ: ((إِنُ ظَفِرُتُمُ بِفُلانٍ وَفُلانٍ فَ حَرِقُوهُ مَا بِالنَّارِ)) حَتَّى إِذَا كَانَ الْعَلُ بَعَثَ إِلَيْنَا فَقَالَ ((إِلِّى كُنُتُ أَمَرُ تُكُمُ بِتَحُويِقِ هَذَيُنِ الرَّجُلَيُنِ ثُمَّ رَأَيُتُ أَنَّهُ لَا يَنبَغِى الأَحَدِ أَنْ يُعَلِّنِ ثُمَّ رَأَيُتُ أَنَّهُ لَا يَنبَغِى وَلَمُحَدٍ أَنْ يُعَلِّنِ بِالنَّارِ إِلَّا اللَّهُ فَإِن ظَفِرُ تُهُ بِهِمَا فَاقْتُلُوهُمَا)). •

فوائد: الیی سزائیں جن کا تذکرہ قرآن وصدیث سے ہمیں ملتا ہے جوکہ مجرموں ، کافروں کورب ذوالجلال کی طرف سے دی جائیں گئی انسان کے جائز نہیں کہ ولیسی سزائیں کسی اور کے لیے تجویز کرے اس میں رب کی برابری کا شائیہ ہے لہذا ہے حرام ہیں (واللہ اعلم)

[25] بَابِ فِي النَّهِي عَنُ قَتُلِ النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ عَنْ قَتُلِ النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ عورتول اور بجول كِنْ كَي ممانعت كابيان

2505 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَلِيّ بْنِ مُسْهِرٍ عَنْ عُبَيْدِ اللّهِ هُوَ ابْنُ عُمَرَ بْنِ حَفْصِ ابْنِ عَاصِمِ عَنْ نَافِع

سیّدنا عبدالله بن عمر رفالفهٔ کہتے ہیں که رسول الله ملطّفَ عَلَیْهُمْ کے ایک غزوہ میں ایک عورت قلّ کی جوئی ملی تو رسول

عَنِ ابُنِ عُـمَرَ قَـالَ وُجِـدَ فِى بَعُضِ مَغَازِى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ امْرَأَةٌ مَقْتُولَةٌ

❶ صحيح البخاري، كتاب الجهاد، باب يعذب بعذاب الله (3016) وابوداؤد، كتاب الجهاد، باب كراهية حرق العدو بالنار (2674) والترمذي، كتاب السير، باب حرق بالنار (1571)

فَنَهَى رَسُولُ اللَّهِ النِّسَاءِ السَّيْسَاءِ السَّيْسَاءِ السَّيْسَةِ نَعُ عُورَوْں اور بِحِوں كُوثَل كرنے ہے مُعْ كر وَ الصَّبْيَانِ . • والصَّبْيَانِ . • والسَّوْنَ وَالْمُعُنِّلُ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَلَا اللّٰهِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِ وَالْمُؤْمِ وَالْمُؤْمِ وَالْمُؤْمِ وَالْمُؤْمِ وَالْمُومِ وَالْمُؤْمِ وَالْ

فوائد: اسلام نے ''محبت اور جنگ میں سبھی پچھ جائز ہے' کے کلیے کاردکرتے ہوئے جنگ کی حدود وقیو دمقرر کی ہیں ایک مسلم کے لیے جہاد جبیا عظیم عمل اجر کی بچائے خسارے کاباعث بن سکتا ہے آئییں قیود میں سے ایک سے کہ بے ضرر لوگ یعنی عورتوں اور بچوں کوئییں چھیڑنا نہیں قبل نہیں کرنا۔

2506 أَخْبَرَنَا عَاصِمُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَقَ الْفَزَارِيُّ عَنْ يُونُسَ بْنِ عُبَيْدٍ عَنِ

مَعَ سیّدنا اسود بن سریع فِی این که جم رسول الله طَیْحَ این که جم رسول الله طَیْحَ این که جم رسول الله طَیْحَ این کے ساتھ جہاد میں گئے لوگوں نے مشرکوں کو پایا تو لوگ فیل جلدی جلدی جلدی قبل کر ڈالا فیل کر ڈالا نبی طِیْحَ ایک کواس کی خبر ملی تو آپ نے فرمایا: ''ان لوگوں کا کی طِیْحَ ایک حال ہے۔ جن کوتل کرنے کے شوق نے یہاں تک کیا حال ہے۔ جن کوتل کرنے کے شوق نے یہاں تک کیا حال ہے۔ جن کوتل کر ڈالا۔ خبردار! بچوں کومت قبل کر ڈالا۔ خبردار! بچوں کومت قبل کروتین دفعہ فرمایا۔'

عَنِ الْأَسُودِ بُنِ سَرِيعٍ قَالَ خَرَجُنَا مَعَ رَسُولِ اللّهِ عَلَيْ فِي عَنْ الْهَ فَظَفِرَ رَسُولِ اللّهِ عَلَيْ فِي عَنْ الْهَ فَظَفِرَ بِالْمُشُوكِينَ فَأَسُرَعَ النّاسُ فِي الْقَتُلِ حَتْبِي قَتَلُوا الذُّرِيَّةَ فَبَلَغَ ذٰلِكَ النّبِي عَلَيْ فَقَالَ: ((مَا بَالُ أَقُوامٍ ذَهَبَ النّبِي عَلَيْ فَقَالَ: ((مَا بَالُ أَقُوامٍ ذَهَبَ النّبِي عَلَيْ فَقَالَ: ((مَا بَالُ أَقُوامٍ ذَهَبَ النّبِي عَلَيْ فَقَالَ : ((مَا بَالُ أَقُوامٍ ذَهَبَ النّبِي عَلَيْهُ أَلُا لَا لَا لَكُريّنَةً أَلَا لَا لَا لَكُوتَانَ ذُرّيَّةً ثَلَالًا). ٥

[26] بَابِ حَدِّ الصَّبِيِّ مَتَى يُقُتَلُ لِرْ كِي حد جبِ وهُلَّ كيا جائے

2507 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ

سیّدنا عطیہ قرظی کہتے ہیں ہم قریظہ کے دن نبی مُشِیَّ اللّٰہِ کے سیّدنا عطیہ قرظی کہتے ہیں ہم قریظہ کے دن نبی مِلْ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ مِنْ اللّٰ
عَنُ عَطِيَّةَ الْقُرَظِيِّ قَالَ عُرِضُنَا عَلَى النَّبِيِّ عَلَيْ يَوُمَئِذٍ فَمَنُ أَنْبَتَ الشَّعُرَ قُتِلَ وَمَنُ لَمُ يُنُبِثُ تُرِكَ فَكُنْتُ أَنَا مِمَّنُ

 [♣] متفق عليه: البخاري، كتاب الجهاد، باب قتل الصبيان في الحرب (3014) ومسلم، كتاب الجهاد، باب تحريم قتل النساء و الصبيان في الحرب (4522، 4523)

² صحيح: صحيح ابن حبان (132) واخرجه ابوداؤد

َ مَنْ الْمَالِيَّةِ فَيْ الْكَالِيَّةِ فَيْ الْكَالِيَّةِ فَيْ الْمَالِيَةِ فَيْ الْمَالِينِ عَلَيْهِ السير كَ مَعَاجِنَ الشَّعُرَ فَلَمُ يَقُتُلُونِي يَعْنِي يَوُمَ مِينِ عِلَيْ الْمِن عَلَيْهِ الْمَالِينِ عَلَيْهِ الْمَالِينِ عَلَيْهِ الْمَالِينِ عَلَيْهِ الْمَالِينِ عَلَيْهِ الْمَالِينِ عَلَيْهِ الْمَالِينِ عَلَيْهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللللللّهُ الللّهُ اللللللّهُ اللّهُ الل

فوائد: عطیہ ناٹیز یہ بنو قریظہ کے فرد تھے جو کہ سعد بن معاذ ناٹیز کے فیصلے کی بناپر نی گئے تھے کہ لڑائی کے قابل مردوں کوقل کر دیاجائے اور بچوں کوچھوڑ دیاجائے تو بچوں کی بہچان کا میہ طریقہ اپنایا گیا کہ زیرناف بال دیکھے گئے جس کے ہوئے وہ بالغ مردشار ہوا جب کہ دوسرے بچے۔ توان بچوں میں سے ایک فرکورہ عطبہ بھی تھے۔

[27] بَابِ فِی فِکَاكِ الْأَسِيرِ قیدیوں کوچھڑانے کا بیان

2508 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ شُفْيَانَ عَنْ مَنْصُورِ عَنْ أَبِيْ وَائِل

عَنُ أَبِى مُوسَى عَنِ النَّبِي ﷺ قَالَ: سيِّدنا ابوموى كَتِ بِين كه نِي طِيْعَالَيْنِ نِهِ طَلَيَا: ''قيدى كو

((فُكُّوا الْعَانِيَ وَأَطُعِمُوا الْجَائِعَ)). 🏵 🧪 آ زادكرواور بموكِ كوكهلاؤ''

فوائد: رسول الله مطابق جمع پنیمبرول سے رفیع الثان تھ اس لیے آپ مطابق کوخصوصی امتیازات سے نوازا گیا۔ وہ امتیازات مذکورہ حدیث کے مطابق درج ذیل تھ (۱) آپ مطابق جمیع کا نئات کی طرف مبعوث تھ جبکہ دوسرے پنیمبر خاص قوم یابتی کی طرف جمیع جاتے تھ (ب) آپ مطابق آپ کے لیے ساری زمین مجدیدی آپ مطابق اورآپ مطابق آپ کے امتی جہاں نماز کا وقت ہونماز اواکر سکتے ہیں اس طرح ساری زمین مجدیدی آپ مطابق اورآپ مطابق جمید ہیں (ج) سابقہ قوموں وانبیاء رکھا تھیں کے لیے عنائم حلال نہ کی عدم دستیابی کی بناپر مٹی سے تیم کر سکتے ہیں (ج) سابقہ قوموں وانبیاء رکھا تھیں کے لیے عنائم حلال نہ حکمہ الله قسیں بلکہ وہ مال غنیمت اکٹھا کر کے ایک میدان میں ڈھر کردیتے آسان سے آگ آتی اسے کھا جاتی جبکہ الله فیرس منتی مسافت نے اس امت کی فقیری مفلسی و کھر کراس کے لیے وہ حلال کردی (د) پیدل یا سوار ایک ماہ میں جتنی مسافت سے کرسکتا ہے آتی دور سے دشمن آپ مطابق آپ سے خوفر دہ رہتا تھا (ھ) ہم پنیمبر کو دنیا میں ایک مقبول وعا کا اختیار ویا گیا جو کہ ہرایک نے کرلی جبکہ ہمارے رفیع الثان پنیمبر مطابق آپ نے وہ دعا قیامت کے لیے محفوظ کرلی تا کہ ویا گیا امت کو معاف کروا سکیں۔

[•] صحيح عملى شرط السخارى: ابوداؤد، كتاب الحدود، باب في الغلام، يصيب الحد (4404) والترمذي، كتاب المير، باب ماجاء في النزول على الحكم (1584)

عصحيح البخاري، كتاب الجهاد، باب فكاك الأسير (3046) صحيح ابن حبان (4780)

الكاليمين الكاليمين عناب السير عناب السير عناب السير المنافقة

[28].... بَابِ فِي فِدَاءِ الْأَسَارَى

قیدیوں کے فدیہ دینے کا بیان

2509- أَخْبَرَنَا أَبُونُ عَيْمٍ حَدَّثَنَا حَمَّاهُ بِنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوْبَ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ أَبِي الْمُهَلَّى

> عَنُ عِمُسرَانَ بُنِ مُحصَيُنٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَادَى رَجُلًا بِرَجُلَيُنِ . •

سیّدنا عمران بن حصین وظائمیٰ سے منقول ہے کہ رسول اللّد طفیٰ ایک ایک شخص کے بدلہ میں دو شخص دیے۔

[29].... بَابِ الْغَنِيمَةِ لَا تَحِلُّ لِأَحَدِ قَبُلَنَا

ہم سے پہلے غنیمت کا مال کسی کے لئے حلال نہ ہونے کا بیان

2510 ـ أَخْبَرَنَا يَـخْيَى بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ عُبَيْدِ بْنِ

عَنُ أَبِسَى ذَرِّ أَنَّ النَّبِسَى عَلَىٰ قَالَ اللَّهُ عَمُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَمُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَمُ اللَّهُ اللِّهُ اللَّهُ الْ

سیّدنا ابو ذر فالیّن سے منقول ہے کہ نبی طفیّا اَلَیْ نے فرمایا:

"مجھے پانچ چیزیں الیی دی گئی ہیں جو مجھ سے پہلے کسی نبی

کونہیں دی گئی تھیں۔ مجھے سرخ وسیاہ سب کے لئے نبی بنایا

گیا۔ میرے لئے تمام زمین (نماز پڑھنے کے لئے) مسجد

اور پاک بنائی گئی۔ میرے لئے غلیمت کا مال حلال کیا گیا
جو مجھ سے پہلے کسی کے لئے حلال نہ تھا۔ مجھے ایک مہینے کی
مسافت کے رعب سے مدودی گئی۔ دشمن مجھ سے ایک ماہ کی
مسافت پر ڈر جا تا ہے۔ مجھ سے کہا گیا۔ جو ماگو دیا جائے گا

میں نے اپنی اس دُعا کو اپنی امت کی شفاعت کے لئے رکھا
ہواللہ کے ساتھ کسی چیز کوشر یک نہ کرتا ہو۔ (ان شاء اللہ)

❶ صحيح: اخرجه مسلم، كتاب النذور، باب لاوفاء لنذر في معصية ولا فيما لايملك العبد (1641) صحيح ابن حبان . (4391)

² صحيح: صحيح ابن حبان (6462) واخرجه احمد 148/5

السير عن الكاريخي عن الكاريخي عن الماليون عن السير عن السير عن الكاريخي الكاريخي عن الكاريخي
[30] بَاب قِسُمَةِ الْغَنَائِم فِي بِلادِ الْعَدُوِّ وَثَمَّن كَ مَلَك مِين مال غَيْمت تَقْسِم كرنے كابيان

2511 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عَاصِمٍ

عَنُ أَبِسَى وَائِسَلٍ قَسَلَ قَسَمَ رَسُولُ ابو واكل كَهَ بِين كه رسول الله طَيْكَانَيْ نَهُ عَنَن كا مال الله عَنَيْ غَنَائِمَ مُنَيْنِ بِالْجِعُوانَةِ قَالَ فَنَيْمَت 'بعر انه كَ مقام پرتقيم كيا-عبدالله دارى كهت عَبُد الله عَبُدُ الله بُنُ مَسُعُودٍ فِى بين: سندين عبدالله بن مسعود وَاللهُ بين م

الْإِسْنَادِ . ٥

فواند: سس ثابت ہوا غنائم کواکٹھا کرکے دارالسلام میں لے کرآناضروری نہیں ،اگر حاجت ہوغنائم راستے میں اس سرزمین پرتقسیم کی جا علتی ہیں۔

> [31] بَابِ فِي قِسْمَةِ الْغَنَائِمِ كَيْفَ تُقْسَمُ مال غنيمت كي تقسيم كطريقه كابيان

2512- أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرِ الرَّقِيُّ حَدَّثَنَا عُبِيْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرِو عَنْ زَيْدٍ عَنِ

الْحَكَمِ

عبدالرحمٰن بن ابولیل اپنے باپ سے بیان کرتے ہیں۔
انہوں نے کہا میں رسول اللہ طفی آیا کے ساتھ نیبر کی فتح
میں حاضر تھا مشرکوں کوشکست ہوئی ہم ان کے گھروں میں
لوٹ پڑے۔ لوگوں نے بحریاں وغیرہ جو چیز ہاتھ لگی
اٹھائی۔ پھر پچھ ہی دیر بعد ہانڈیاں پکنے لگیں۔ تو رسول
اٹھائی۔ پھر پچھ ہی دیا اور وہ الٹ دی گئی۔ پھر رسول
اللہ طفی آیا نے علم دیا اور وہ الٹ دی گئی۔ پھر رسول
اللہ طفی آیا نے مال ننیمت تقسیم کیا اور دس آ دمیوں کو ایک
بری دی۔ قبیلہ بنوفلاں کے پاس نو آ دمی تھے اور میں اکیلا
تھا پھر میں نے ان کی طرف مڑ کر دیکھا ہم دس آ دمی تھے۔
جن کے پاس ایک بکری تھی۔عبداللہ کہتے ہیں: مجھے معلوم

عَنْ عَبُدِ الرَّحُمَنِ بُنِ أَبِى لَيُلَى عَنْ أَبِيهِ عَبِدَالِالْ وَالْهِلَ الْهُولِ الْهِلِيَّةُ فَانُهَزَمَ الْمُشْرِكُونَ فَوقَعُنَا فِى الْهُولِ اللهِ فَيْ فَانُهَزَمَ الْمُشْرِكُونَ فَوقَعُنَا فِى الْهُلِيِّةُ فَانُهَزَمَ الْمُشْرِكُونَ فَوقَعُنَا فِى اللهِ فَيْ فَانُهَزَمَ النَّاسُ مَا وَجَدُوا مِنُ لُوث بِرُ الْهَالَ . بُرُ وَلَا مِنْ اللهِ فَيْ فَالْمَ يَكُنُ ذَٰلِكَ بِأَسْرَعَ مِنْ اللهُ اللهِ فَيْ فَالَمُ يَكُنُ ذَٰلِكَ بِأَسْرَعَ مِنْ اللهُ اللهِ فَيْ فَالَمُ يَكُنُ ذَٰلِكَ بِأَسْرَعَ مِنْ اللهِ اللهِ فَيْ فَالَمُ يَكُنُ ذَٰلِكَ بِأَسْرَعَ مِنْ اللهِ اللهِ فَيْ فَالَمُ يَكُنُ ذَٰلِكَ بِأَسُوعَ مِنْ اللهِ اللهِ فَيْ فَالَمُ اللهِ فَيْ فَالَمْ مَعَدُ يَسْعَةً اللهُ عَشْرَةٍ اللهُ اللهِ فَيْ فَالَانِ مَعَدُ يَسْعَةً اللهُ عَشْرَةٍ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ فَيْ فَلَانِ مَعَدُ يَسْعَةً اللهُ
السير عَيْنَ الْخَالِمُونِيُّ الْخَالِمُونِيُّ عَيْنَ الْخَالِمُ السير

ہوا ہے کہ تمہارا ساتھی کہتا ہے: صحیح عن قیس بن مسلم سے ہوا کہتے ہیں کہ انہیں یادنہیں رہا۔

عَشُرَةً بَيْنَنَا شَاةٌ قَالَ: عَبُد اللّهِ بَلَغَنِى أَنَّ صَاحِبَكُمُ يَقُولُ عَنُ قَيْسِ بُنِ مُسُلِمٍ كَأَنَّهُ يَقُولُ إِنَّهُ لَمُ يَحْفَظُهُ . •

2513- أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيٍّ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو عَنْ زَيْدٍ هُوَ ابْنُ أَبِى أُنَيْسَةَ عَنْ قَيْسِ

بْنِ مُسْلِمٍ عَنُ عَبُدِ الرَّحْمَنِ بُنِ أَبِي لَيُلِي عَنُ أَبِيهِ

عَنِ النَّبِيِّ ﷺ نَحُوَهُ قَالَ فَأَلِّفُتُ إِلَيْهِمُ قَالَ فَأَلِّفُتُ إِلَيْهِمُ قَالَ قَالَ قَالَ أَبُو مُحَمَّد الصَّوَابُ عِنْدِى مَا قَالَ زَكَرِيًّا فِي الْإِسْنَادِ. 6

عبدالرحمٰن بن ابولیل اپنے والد نے قال کرتے ہیں کہ وہ نی طرح بیان کرتے ہیں کہ وہ نی طرح بیان کرتے ہیں۔ (اس میں ہے) فرماتے ہیں کہ مجھے ان سے جوڑ دیا گیا۔ ابومحمد داری کہتے ہیں: ''میرے نزدیک صحیح وہ ہے جوز کریانے دوسری حدیث کی سندمیں کہا۔''

[32].... بَابِ سَهُمٍ ذِي الْقُرْبَي

رشته داروں کے حصہ کا بیان

2514 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو النَّعْمَان حَدَّنَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ حَدَّثَنِي قَيْسُ بْنُ سَعْدِ

یزید بن ہر مزکہتے ہیں بخدہ بن عامر نے ابن عباس کو خط

لکھ کر اس سے چند باتیں پوچیس ابن عباس رہائٹ نے
انہیں جواب دیا: ''تم نے مجھ سے ذی القربی کے حصول
کے متعلق پوچھا جس کا اللہ نے ذکر کیا۔ ہمارا خیال تھا ہم
حضور ملے متعلق کے رشتہ دار ہیں۔ تو ہماری قوم نے انکار کر

فوائد: نركوره صديث مين اس آيت كى طرف اشاره ج ﴿ وَاعْلَمُوْ ا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَا اللَّهِ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهُ عَنْ مِنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلْمُ اللَّهُ عَا عَلَا عَنْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ عَلَا اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ عَلَى الللَّهُ عَلَيْ اللَّهُ عَلَيْ عَلَهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلَيْ عَلَا اللَّهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَمُ عَا عَلَمُ عَلَمُ عَلَمُ عَلَمُ عَلَيْ عَلَمُ ع

 [●] صحیح: امام داری نے اے معلل قرار دیا ہے جبکہ وہ علت قارح نہیں ہے۔ آئندہ سند ملاحظہ کریں۔

اسناده صحيح: اخرجه احمد 348/4، والطبراني في الأوسط (509)

[•] صحيح : احرجه مسلم، كتاب الجهاد، باب النساء الغازيات يرضخ لهن (4661، 4662، 4664، 4664، 4664، 4664، 4664، 4666، 4665، 4666، 4665)

عَن الْوَالِينِ السير عَن الْوَالِينِ عَن الْوَالِينِ عَن الْوَالِينِ السير عَن الْوَالِينِ السير عَن الْوَالِينِ السير

جان لو جوبھی تم غنیمت حاصل کرواس کا'' خمس' پانچواں حصہ اللہ ، اس کے رسول، قریبی اعزہ ، تنیموں ، مسکینوں اور مسافروں کے لیے ہے۔ تو نجدہ ورائیلہ کا سوال قریبی رشتہ داروں بارے تھا کہ ان سے کون مراد ہیں جن کو مال غنیمت کے پانچویں حصے میں سے نوازا جاتا ہے تو جواب میں ابن عباس والٹھانے ندکورہ جواب ارشاد فرمایا۔

[33] بَاب فِی سُهُ مَانِ الْحَیُٰلِ گُوڑے کے حصول کا بیان

2515- أَخْبَرَنَا إِسْحَتُ بْنُ عِيسَى حَدَّنَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَازِمٍ أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ

عَنْ نَافِعِ

 عَنِ ابُنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَسُهَمَ يَـوُمَ خَيْبَــرَ لِـلُـفَـارِسِ فَــكلاَفَةَ أَسُهُم وَلِلرَّاجِل سَهُمًا . •

فوائد: (۱) ایک شاہ سوار جو کارگزاری انجام دے سکتا ہے پیدل کے لیے وہ ممکن نہیں ،للہذا گر سوار تین جب کہ پیدل کو ایک حصہ ملے گا (۲) گھڑ سوار پیدل کے مقابلے میں تین مُنا زیادہ فعال ہوتا۔ 2516۔ حَدَّ ثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ یُو سُفَ عَنْ سُفْیَانَ عَنْ عُبَیْدِ اللهِ

نافع ابن عمر والنيئة سے سابق حدیث کی طرح نقل کرتے

عَنُ نَافِعٍ عَنِ ابُنِ عُمَرَ نَحُوَةً. ٥

[34].... بَابِ فِي الَّذِي يَقُدَمُ بَعُدَ الْفَتْحِ هَلُ يُسْهَمُ لَهُ

جوفتح کے بعد آئے اسے حصہ دیا جائے کہیں؟

2517- أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ عَلِيِّ بْنِ زَيْدٍ عَنْ عَمَّادِ بْنِ أَبِي عَمَّادِ

 [◘] متـفق عليه: البخارى، كتاب الجهاد، باب سهام الفرس (2863) ومسلم، كتاب الجهاد، والسير، باب كيفية قسمة
 الغنيمة بين الحاضرين (4561)

[🗗] صحیح: مابقه حدیث بی مررآئی ہے۔

الكاريخيُّ الكاريخيُّ عن الكاريخيُّ عن الكاريخيُّ عن الكاريخيُّ ال

سیّدنا ابو ہریرۃ فی اللہ کہتے ہیں جب بھی میں رسول اللہ طفی آئی کے ساتھ کی غنیمت کے مال میں حاضر ہوا آپ نے میرا حصہ رکھا مگر خیبر کے روز وہ خاص حدیبیہ والوں کے لئے تھا۔ راوی کہتا ہے: ابو موی اور ابو ہریرۃ حدیبہ کے درمان میں آئے تھے۔

[35] بَابِ فِي سِهَامِ الْعَبِيدِ وَالصِّبْيَانِ غلام اور نيج ك حصه كابيان

2518- أَخْبَرَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ خَلِيلٍ أَخْبَرَنَا حَفْصٌ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ زَيْدِ

سیّدناعمیر فالنّهٔ آبوا اللحم کے آزاد کردہ غلام کہتے ہیں میں خیبر میں حاضر ہوا ان دنوں میں خلام تھا رسول الله ملطّ آئیا نہا ہے استعال کی چیزیں دیں اور ایک تلواردی اور فر مایا: 'اے لئکا لو۔'

عَنُ عُمَيْرٍ مَوْلَى آبِى اللَّحْمِ قَالَ شَهِدُتُ خَيْبَرَ وَأَنَا عَبُدٌ مَمُلُوكٌ فَأَعُطَانِى رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ مِنُ خُرُثِيّ المُمَتَاعِ وَأَعُطَانِى سَيُفًا فَقَالَ: ((تَقَلَّدُ

بهَذَا)) . 🌣

فوائد: (۱) * خُرِیْق یکم ترسامان کے لیے بولا جاتا ہے اوراس طرح گھریلوسامان کوبھی *خُر ٹی " کہاجاتا ہے۔ (۲) غلام کوغنیمت میں ہے حصنہیں ملے گا بلکداس کی فقط حوصلہ افزائی ہی کی جائے گے۔ گ۔

[36] بَابِ فِي النَّهُي عَنُ بَيْعِ الْمَغَانِمِ حَتَّى تُقُسَمَ الْمَعَانِمِ حَتَّى تُقُسَمَ الْمَعَانِمِ تَعْنِي كَامِيان التَّقْيم سے پہلے مال غنیمت بیچنے کی ممانعت کا بیان

2519- أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بُنُ حُمْيَدٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ بْنِ جَابِرٍ عَنِ الْقَاسِمِ وَمَكْحُولِ

¹ اسناده ضعيف: على بن زيد ضعيف راوي ب، احرجه احمد 535/2

②صحيح: صحيح ابن حبان (4831) اخرجه ابو داؤد، كتاب الجهاد، باب المرأة والعبد يحذبان من الغنيمة (2730)
 والترمذي، كتاب المبير، باب هل يسهم للعبد (1557)

323 كتاب السير 323 الكالكالة

عَنُ أَسِي أَمَامَةَ عَنِ النَّبِي عِلَيُّ أَنَّهُ نَهِي سيِّدنا ابوامامه رَاليُّهُ كُتِّ مِين كه ني السَّاعَيْن أَنَّهُ نَهِي سيِّدنا ابوامامه رَاليُّهُ كُتِّ مِين كه ني السَّاعَيْن أَنَّهُ نَهِي سيِّدنا الوامامه رَاليُّهُ كُتَّ مِين كه ني السَّاعَيْن أَنَّهُ نَهِي پہلے مال غنیمت کے تھے بیچنے سے منع فرمایا۔

أَنْ تُبَاعَ السِّهَامُ حَتَّى تُقُسَمَ. ٥

فواند: حصه ملنے سے قبل بینا اس میں چونکہ غرر، دھوکہ کا اخمال سے لہذا میمنوع ہے۔

[37].... بَابِ فِي اسْتِبُرَاءِ الْأُمَةِ لونڈی کے استبراء کا بیان

2520 أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَقَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي

مَوْزُوق مَوْلَى لِتُجَيْبَ قَالَ

سیدنا حنش صنعانی کہتے ہیں ہم نے ملک شام میں جہاد کیا۔ ہمیں رویفع بن ثابت انصاری نے وعظ ساما۔ ہم نے ایک بستی فتح کی جے جربہ کہتے ہیں۔ ہمارے ہاں رویفع بن ثابت نے کھڑے ہو کر خطبہ دیا۔ تو کہا: میں منههیں وہی یا تیں بتاؤں گا جورسول الله <u>طش</u>حوَیم سے سنیں۔ جس دن ہم نے خیبر فتح کیا تو آپ نے ہمیں وعظ سنایا کہ جو کوئی اللہ اور آخرت کے دن بر ایمان رکھتا ہو۔ وہ کی قیدی عورت سے صحبت نہ کرے حتی کہ وہ استبراء کرے۔''

حَـدَّثُنيي حَنشُّ الصَّنْعَانيُّ قَالَ غَزَوُنَا الُمَغُرِبَ وَعَلَيْنَا رُوَيُفِعُ بُنُ ثَابِتٍ الْأَنُصَارِيُّ فَافْتَتَحُنَا قَرُيَةً يُقَالُ لَهَا جَوْبَةُ فَقَامَ فِينَا رُوَيُفِعُ بُنُ ثَابِتِ الْأَنْصَارِيُّ خَطِيبًا فَقَالَ إِنِّي لَا أَقُومُ فِيكُمُ إِلَّا مَا سَمِعُتُ مِنُ رَسُول اللُّه عِنْ أَعَامَ فِينَا يَوُمَ خَيْبَوَ حِينَ افُتَتَحْنَاهَا فَقَالَ مَنْ كَانَ يُؤُمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوُمِ الْآخِرِ فَلَا يَأْتِيُ شَيْئًا مِنَ السَّبِّي

حَتَّى يَسُتُبُرئَهَا)). 🍳

فوائد: (۱) "اسبتراء" كامطلب ہے رحم كى صفائى جانچنے كے ليے لونڈى كاايك مت تك انتظار كرنا (البفيقه الاسلامي وادلته 2709/9) (٢) جنَّك مين حاصل موني والى لوندى كواستبراء رحم کے بغیر استعال کرنا اس سے جماع کرنا ممنوع ہے ضروری ہے کہ اس کے استبراء رحم کے لیے ایک حیض تک انظاركياجائرآب والنظيمة كافرمان ب: "ولا توطأ حامل حتى تضع ولا غير ذات حمل

[🗨] صبحیح: تسکمول نے ابوا مامہ کو دیکھا تو ہے جبکہ ساع ثابت نہیں لیکن اس کی متابعت موجود ہے،احبر جہ البطبيرانسي في المكبير (7594)154/8

[﴿] اسناده ضعيف: كَبُهُ صِدِيثَ فِيحِ بِـ صحيح ابن حبان (4850) واخرجه ابن ابي شببه 436/12 (15169)

کتاب السیر کتاب 324 324 654 654 104

حتى تحيض حيضة . " (صحيح؛ ابو داؤد) حالمه وضع حمل قبل جبكه غير حالمه ايك حیض گزرنے ہے تبل وطی ، جماع نہ کیا جائے۔

[38].... بَابِ فِي النَّهُي عَنُ وَطُءِ الْحُبَالَي حامله لونڈیوں سے صحبت کی ممانعت کا بیان

2521 - أَخْبَرَنَا أَسَدُ بْنُ مُوْسِي حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ خُمَيْرِ أَبِيْ عُمَرَ الشَّامِيّ الْهَمْدَانِيّ قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرِ عَنْ أَبِّيهِ

> امُ رَأَدةً مُسجعَّدةً يَعْنِي حُبُلَي عَلَى بَاب فُسُطَاطٍ فَقَالَ: ((لَعَلَّهُ قَدُ أَلَمَّ بِهَا؟)). قَالُوا: نَعَمُ قَالَ: ((لَقَدُ هَمَمُتُ أَنُ ٱلْعَنَهُ لَعْنَةُ تَدُخُلُ مَعَهُ قَبُرَهُ كَيُفَ يُوَرَّثُهُ وَهُوَ لا يَحِلُّ لَـهُ وَكَيْفَ يَسْتَخُدِمُهُ وَهُوَ لَا يَحِلُّ لَهُ)). •

عَنُ أَبِي اللَّذِوْدَاءِ أَنَّ النَّبِيِّ عِلْمَا رَأَى سيدنا الودرداء واللَّهُ كُمَّتِ مِن كَه فِي السَّاعَيْنَ فَي عَلَي مَا اللَّهُ عَنْ أَبِي اللَّهُ عَنْ أَبِي اللَّهُ عَلَيْهُ فَي عَلَيْهُ فَي عَلَيْهِ مَا لَكُورُواء وَاللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْه دروازے برایک مجحد مینی حاملہ عورت دیکھی ۔ تو آپ نے فرمایا: ''شایداس سے کسی نے صحبت کی ہے۔'' لوگوں نے کہا: ''جی ہاں۔''آپ نے فرمایا: ''میں نے ارادہ کیا ہے کہ اے الی لعنت پہنچاؤں جو قبر تک اس کے ساتھ جائے۔ بیچ کو کیسے وارث بنائے گا۔ حالاتکہ وہ اس کے لئے حائز نہیں۔ اور کس طرح اس سے خدمت لے گا حالانکہ وہ اس کے لئے جائز نہیں۔''

فواند: حاملہ لونڈیوں کوروندنا ان سے تعلقات قائم کرناسخت معیوب ہے اس سے ختی سے روکا گیا ہے کیونکہ یہ ایک توغیر کی اولاد کواپنا وارث بنانے یااپنا خادم بنانے کے مترادف ہے جو کہ ممنوع ہے۔ کیونکہ جب مالک کااس لونڈی ہے تعلق قائم ہو گیا تواب چاہے لونڈی پیٹ میں پہلے ہی نطفہ موجود ہے کین مالک کے ہاں بچہ تولد ہونیکی کی صورت میں وہ اسی کامتصور ہوگا۔

> [39].... بَابِ فِي النَّهُي عَنِ التَّفُرِيقِ بَيْنَ الُوَالِدَةِ وَوَلَدِهَا ماں کو بیچے سے جدا کرنے کی ممانعت کا بیان

2522 - أَخْبَرَنَا الْقَاسِمُ بْنُ كَثِيرٍ عَنِ اللَّيْثِ بْنِ سَعْدٍ قِرَائَةً عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جُنَادَةَ ...

[◘] صحيح: أخرجه مسلم، كتاب النكاح، باب تحريم وطء الحامل المسبية (3547) وابوداؤد، كتاب النكاح، باب في وطء السبايا (2156)

حال السير عنه الكالم السير عنه السير عنه السير عنه السير عنه السير السير عنه السير ا

ابوعبدالرحل حبلی کہتے ہیں کہ ابوابوب ایک لفکر میں تھے۔ بچوں کو ان کی ماؤں سے جدا کر دیا گیا۔ انہوں نے انہیں روتے ہوئے دیکھا۔ تو بچے کو اس کی ماں کے پاس ہیجنے گے اور کہتے تھے کہ رسول اللہ طبط الآخے نے فرمایا: ''جو کوئی ماں کو اس کے بچے سے جدا کرے گا اللہ تعالیٰ قیامت کے دن اس کے دوستوں کو اس سے جدا کر دے گا۔''

عَنُ أَبِى عَبُدِ الرَّحُمَنِ الْحُبُلِيِّ أَنَّ أَبَا الْصُبُلِيِّ أَنَّ أَبَا الْصُبُلِيِّ أَنَّ أَبَا الْصِبُيَانِ وَبَيْنَ أَمَّهَاتِهِمُ فَرَآهُمُ يَبُكُونَ الصَّبِيَّ إِلَى أُمِّهِ وَيَقُولُ إِنَّ فَحَعَلَ يَرُدُّ الصَّبِيَّ إِلَى أُمِّهِ وَيَقُولُ إِنَّ وَسُولَ اللهِ عَلَيْ قَالَ: ((مَنُ فَرَقَ بَيْنَ وَرُسُولَ اللهِ عَلَيْ قَالَ: ((مَنُ فَرَقَ بَيْنَ اللهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْوَالِلَهِ عَلَيْ قَالَ: ((مَنُ فَرَقَ بَيْنَ اللهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ اللهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْوَالِلَهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ اللهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ

فوائد: جس دین ، ند بب میں غلاموں ، لونڈ یوں تک کے حقوق مقرر ہوں ان کا قدم قدم پر خیال رکھا گیا ہوا دخیال کرتے ہوا کہ انہیں قدروں کا خیال کرتے ہوا گیا ہوا درخیال رکھنے کی تاکید کی گئی ہو وہ انسانیت کا کس قدر خیرخواہ ہوگا انہیں قدروں کا خیال کرتے ہوئے اسلام نے لونڈی اوراس کی اولا دمیں تفریق سے منع کردیا۔

[40].... بَابِ فِي الْحَرُبِيِّ إِذَا قَدِمَ مُسُلِمًا حربي جبمسلمان موكراً ئے

2523 - أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا أَبَانُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْبَجَلِيُّ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ أَبِي حَازِمٍ

سیّدناصحر بن عیله (بعض کے نزدیک غیله) کہتے کہ مغیرہ بن شعبه کی پھوپھی میں نے پکڑی اور اسے رسول اللہ مطفی ہونے کے پاس لے کر گیا۔ انہوں نے نبی مطفی ہونے ہوں کے اللہ مطفی ہونے کے پاس لے کر گیا۔ انہوں نے نبی مطفی ہونے جب اپنی پھوپھی کو مانگا آپ نے فرمایا: ''اے صحر! جب کوئی قوم مسلمان ہوتی ہے تو اس کی مال و جان محفوظ ہو جاتی ہے لہٰذا اسے ان کی طرف لوٹا دو۔'' بنوسلیم کا ایک جاتی ہوائی ہو گئے تو انہوں نے آپ کے پاس جا کر وہ تالاب مانگا آپ نے جھے بلایا اور فرمایا: ''اے صحر! جب کوئی قوم مسلمان ہوتی تو ان کے مال و جان صحر! جب کوئی قوم مسلمان ہوتی تو ان کے مال و جان

عَنُ صَخُو بُنِ الْعَيْلَةِ قَالَ أَبُو مُحَمَّد وَمِنْهُمْ مَنُ يَقُولُ الْعِيْلَةِ قَالَ أَبُو مُحَمَّد وَمِنْهُمْ مَنُ يَقُولُ الْعِيْلَةِ قَالَ أَخَذُتُ عَمَّة الْمُغِيرَةِ بُنِ شُعُبَة فَقَدِمْتُ بِهَا عَلَى رَسُولِ اللّهِ عَلَى فَسَأَلَ النّبِي عَلَى رَسُولِ اللهِ عَلَى فَسَأَلَ النّبِي عَلَى عَلَى رَسُولِ اللهِ عَلَى فَسَأَلَ النّبِي اللهِ عَمَّتَهُ فَقَالَ اللهِ عَلَى اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ الله

استاده جید: احرجه احمد 412/5 ـ 413، والترمذی، کتاب البیوع، باب ماجاء فی کراهیة (1283)
 والحاکم (55/2)

CON ESTRICIE VO 326 كتاب السير على 326

محفوظ ہو جاتے ہن لہٰذا وہ اُنہیں واپس کر دو'' میں نے

انہیں واپس کر دیا۔

أَحْرَزُوا أَمْوَ الْهُمَ وَ دَمَالَهُمْ فَادُفَعُهُ إلَيْهِمُ) فَدَفَعُتُهُ. ٥

[41].... بَابِ فِي أَنَّ النَّفُلَ إِلَى الْإِمَامِ

حصہ سے زیادہ دیناامام کے اختیار میں ہے

2524- أَخْبَرَ نَا خَالِدُ نْنُ مَخْلَدِ حَدَّثَنَا مَالِكٌ

سیّدنا نافع این عمر ضائفیہ سے بیان کرتے ہیں۔انہوں نے کہا: رسول الله طنت ملیے نے ایک کشکر بھیجا جس میں ابن عمر ان ماللہ مجھی تھے انہیں غنیمت میں بہت سے اونٹ ملے۔ ان اثْنَتْ عَشَوْ بَعِيوًا أَوْ أَحَدَ عَشَوَ بَعِيوًا ﴿ كَ حَصِهِ مِن كَيارِه بِإِيارِه اوْنَ آئِد ايك ايك اونت انہیں زیادہ دیا گیا۔

عَنُ نَسافِع عَنُ ابِن عُمَرَ قَالَ بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ سَرِيَّةً فِيهَا ابْنُ عُمَرَ فَغَنِهُ وَا إِبَّلا كَثِيرَةً فَكَانَتُ سِهَامُهُمُ وَ نُفَّلُوا بَعِيرًا بَعِيرًا . 9

فوائد: امام کواختیار ہے کہ وہ مال غنیمت کی تقسیم کے بعد نے رہنے والے مال کو بیت المال میں جمع کرنے کی بجائے وہ بھی لشکریوں میں شجیع وحوصلہ افزائی کے لیے تقیم کردے اوراس میں امام کواختیار ہوگا کہ وہ کئی کوزیادہ دے یا کم۔جیسا کہ غز وۂ حنین کے موقع پر کیا گیا۔

[42] بَابِ فِي أَنُ يُنَفَّلَ فِي الْبَدُأَةِ الرُّبُعُ وَفِي الرَّجُعَةِ النُّلُثُ

جاتے ہوئے چوتھائی اورلوٹتے ہوئے تہائی مال صبہ سے زیادہ دیا جانے کا بیان 2525- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا أَبُوْ إِسْحْقَ الْفَزَادِيُّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَيَّاشِ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ مُوسَى عَنْ أَبِيْ سَلَّام عَنْ أَبِيْ أُمَامَةَ الْبَاهِلِتِي

عَنُ عُبَاحَةَ بُنِ الصَّامِتِ قَالَ كَمانَ سيِّدنا عبادة فِي ثُنْ بن صامت كبتے بس كه رسول الله طيفيَ مَيْلِمَ رَسُولُ اللُّهِ ﷺ إذَا أَغَسَارَ فِي أَرُض جب وشمن كى سرزيين يرحمله كرتے تھ تو چوھائى مال جھے سے زیادہ دیتے تھے۔ جب واپس آتے تھے تو چوتھائی مال

الُعَدُوِّ نَفَّلَ الرُّبُعَ وَإِذَا أَقُبَلَ رَاجِعًا

[🗗] حسن: (1715) كے تحت اس كى تخ تئ گزر چكى ہے۔

[🛭] استناده قنوي : اخرجه مالك، في الجهاد، ياب جامع النفل في الغزو (15) والبنخناري، في فرض التحمس، باب من الدليل على أن الحمس لنوائب المسلمين (3134) ومسلم، كتاب الحهاد، باب الأنفال (1749)

السير عَنْ الْكَالِيْءَ الْكَالِيْءَ السير عَنْ 327 الله السير عَنَابِ السير عَنَابِ السير

جھے سے زیادہ دیتے تھے۔ جب دالیں آتے تھے تو لوگ تھکے ہوئے ہوتے آپ انہیں تہائی مال دیتے تھے۔

فوائد : (۱) ' د نفل' یہ امام کی طریع وہ زائد حصہ ہوتا ہے جو مجاہدین کو حوصلہ افزائی کے لیے خمس سے دیا جاتا ہے۔ (۲) اقدام کے وقت نفل کی مقدار کم رکھنے کی یہی وجہ مجھ آتی ہے کہ چونکہ ابھی مزید پیش قدمی درکار ہوتی ہے اس لیے حالات کے لیے مال کو ذخیرہ رکھاجاتا نیز جاتے ہوئے مجاہدین چونکہ تازہ دم ہوتے ہیں اسلیے زیادہ مشقت نہ ہوکی لہذا ان کو نفلا کم دیا جاتا۔ جبکہ والیسی پراس کی ضرورت نہ ہوتی اور مجاہد ہیں جھکے ہوتے تو انہیں شجیع کے لیے زیادہ حصہ دیا جاتا لہذا نفل کی مقدار بڑھا دی جاتی۔

[43].... بَابِ فِي النَّفُلِ بَعُدَ الُخُمُسِ خس کے بعد مالِ غنیمت تقسیم کرنے کا بیان

2526- أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ يَزِيدَ بْنِ جَابِرٍ عَنْ مَكْحُولٍ عَنْ زِيَادِ بْنِ جَارِيَةَ.........

عَنُ حَبِيبِ بُنِ مَسْلَمَةً أَنَّ النَّبِيَّ عِنَى النَّبِيَ عَنْ حَبِيبِ بن ملمه وَالنَّوْ كَبَ بِي كه نبى النَّكَانَةِ فَي عَنْ حَبِيبِ بن ملمه وَالنَّوْ كَبَ بِي كه نبى النَّكَانَةِ فَي عَنْ حَبِيبِ بن مسلمة والدُّونِ مَسْلَمَةً أَنَّ النَّبِي عَنْ النَّكُ عُمُسِ . • مَس ك بعد حصد ويا - النَّالُكَ بَعُدُ الْحُمُسِ . • مَس ك بعد حصد ويا - النَّالُكَ بَعُدُ الْحُمُسِ . • مَس ك بعد حصد ويا - النَّالُكُ النَّالُكُ النَّالُكُ النَّالُكُ النَّالُةُ الْمُعْمَلِ . • مَس ك بعد حصد ويا - النَّالُكُ النَّالُكُ النَّالُةُ النَّالُةُ النَّالُةُ النَّالُةُ النَّالُةُ النَّالُةُ النَّالُةُ النَّهُ النَّالُةُ النَّالُةُ النَّالُةُ النَّهُ النَّهُ النَّهُ النَّهُ النَّهُ النَّهُ النَّلُكُ النَّهُ النَّالِي النَّهُ النَّهُ النَّهُ النَّهُ الْعُلِيلُ النَّهُ الْعُلِيلُ النَّهُ الْمُعُلِيلُ الْعُلِيلُولُ النَّهُ الْعُلِيلُولُ الْمُ

44_].... باب مَنُ قَتَلَ قَتِيلًا فَلَهُ سَلَبُهُ جو خص کسی کوتل کرنے اس کا سامان اسی کے لئے ہے

2527 أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ حَدَّثَنَا إِسْحَقُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي

طَلْحَةَ

وَكُلُّ النَّاسُ نَفَّلَ النُّلُثُ . •

سیّدنا انس بن مالک خِلِیْمُ کہتے ہیں کہ نبی طفی آیل نے فرمایا: ''جوکسی کافر کوقل کرے اس کا سامان اس کے لئے ہے۔'' ابوطلحہ خِلِیُمُ نے اس دن بیس کفار کوقل کیا اور ان کا سامان انہی کوملا۔

عَنُ أَنَسِ بُنِ مَالِلْتِ أَنَّ النَّبِيَّ عَلَىٰ أَنَّ النَّبِيِّ عَلَىٰ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللَّلِمُ اللَّهُ الْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللْمُلْمُ الْمُلْمُ ا

 [●]حسن: صحيح ابن حبان (4855) والترمذي، كتاب السير، باب في النفل (1561) وابن ماجه، كتاب الجهاد، باب النفل (2852)
 النفل (2852)

[€]صحيح : صحيح ابن حبان (4836)و (4836)و (4838)و (4841)اخرجه ابوداؤد، كتاب الحهاد، باب في السلب بعطي القاتل (2718)

مرا الماليان
فعاند: اگرية موكه فلال كافر كوفلال مسلم نے قل كيا ہے تواس كا سارا مال واسباب اسي مسلم كو ملے گا جس نے اسے قتل کیا ہوگا۔البتہ جن کا فروں کے قاتل غیرمعین ہوں ان کا مال مسلمانوں میں بطور مال غنيمت برابرتقسيم ہوگا۔

2528- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ بْنِ عُيَيْنَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَن ابْن كَثِيْر ابْن أَقْلَحَ هُوَ عُمَرُ بْنُ كَثِيْرِ عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ

عَنْ أَبِيْ قَتَادَةً قَالَ بَارَزُتُ رَجُلًا فَقَتَلُتُهُ لَي سَيِّدِنا ابوقاده وْلِاتِّينَ كَهْتِهِ بِس مِين نِي سَي آدي سے مقابليه کیا اسے قتل کر دیا تو رسول اللہ مِشْئِرَ آخے اس کا سامان

فَنَقَّلَنِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ سَلَبَهُ. ٥

فوائد: "بَارَزْتُ" میں نے مبارزہ کی مبارزہ بیتی کہ جنگ سے قبل دونوں جانب کی صفیں برابر ہوجاتیں تودونوں شکروں میں سے بہادر سورے نکلتے جنہیں اپنی طاقت برناز ہوتا اور وہ اشکروں کے تحقم گھتا ہونے سے قبل اپنی شجاعتوں کی داستاں رقم کرتے۔

[45] بَابِ فِي كَرَاهيَةِ الْأَنْفَالِ وَقَالَ لِيَرُدَّ قُويُّ الْمُؤُمِنِينَ عَلَى ضَعِيفِهمُ حصہ سے زائد مال مکروہ ہے اور قوی مسلمان کو جانبے کہ کمزور کو دے دے

2529 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحٰقَ الْفَزَارِيُّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰن بْن عَيَّاش عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ مُوسَى عَنْ أَبِيْ سَلَّامٍ عَنْ أَبِيْ أَمَامَةَ الْبَاهِلِيّ

عَنُ عُبَاحَةَ بُنِ الصَّامِتِ أَنَّ النَّبِيِّ عِنْ السَّبِي عِنْ اللَّهِ عَلَيْهِ صلى السَّامِينَ المستران عبادة بن صامت وللنَّذ كهت بي السُّامِينَ حصد كَانَ يَكُوهُ الْأَنْفَالَ وَيَقُولُ: ((لِيَرُدُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى ع

قَوِيُّ الْمُسْلِمِيْنَ عَلَى صَعِيْفِهِمْ)). 🛭 مسلمانوں كوجائے كدوه كمزوروں كوديں ـ''

ف واست بیر روه کین جب الم کوچا ہے کنفل کا اہتمام بلا وجہ نہ کرے ایسی حالت میں پیمروہ کین جب حالات کا تقاضا ہوتو نفل عطا کرنے میں کوئی حرج نہیں پچھلی احادیث ملاحظہ سیجیے (۲) قوی مسلمانوں کوضعفاء كاخيال ركهنا عابي عديث بين آتا ب: "وهل ترزقون وتنصرون الابضعفائكم." (احمد: 173/1) منہیں رزق اور مدد فقط تمہارے کمزوروں کی بناء پر دی جاتی ہے۔

[◘] متفق عليه : البخاري، كتاب البيوع،باب بيع السلاح في الفتنة وغيرها(2100)ومسلم، كتاب المغازي،باب استحقاق القاتل سلب القتيل (4541-4542-4543)

ع حسن: (2525) کے تحت اس کی تخ تنج گزر چکی ہے۔

ﷺ مَنْ اَلْكَالِيْنِيُ كَتَابِ السيرِ فَيْ الْكَالِيْنِيُ كَتَابِ السيرِ فَيْ الْمُخِيطَ وَالْمَخِيطَ وَالْمَخِيطَ وَالْمَخِيطَ فَيْ اللّهِ اللّهِ عَلَى اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ ا

2530 - حَدَّثَ نَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَقَ الْفَزَارِيُّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَيَّاشٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ مُوسَى عَنْ أَبِيْ سَلَّامٍ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ وَبِهٰذَا الْإِسْنَادِ.........

عَنُ عُبَادَةً أَنَّ النَّبِيِّ عِنَى عَبَادَةً أَنَّ النَّبِيِّ عِنَى كَانَ يَقُولُ: سيّدنا عبادة سے مروی ہے فرماتے ہیں كہ يقينا نبى سَيُّنَا عَلَى اللهِ عَنَى عُبَادَةً أَنَّ النَّبِي عَلَى اللهِ
فوائد: (۱) کوئی بوی چیز چھپالینائی خیانت نہیں بلکہ سوئی، دھا گہ یہ بھی غنیمت کی تقسیم سے پہلے لے لینا خیانت میں شار ہوتا ہے۔ (۲) قیامت والے دن جرائم کی فہرست عوام الناس کے سامنے پڑھ کرسنائی جائے گی جو کہ مجرموں کی رسوائی کا باعث ہوگ۔

[47] بَابَ النَّهُي عَنْ رُكُوبِ الدَّابَّةِ مِنَ الْمَغْنَمِ وَلُبُسِ الثَّوُبِ مِنْهُ النَّامِ مِنْهُ مال غنيمت كے جانور پرسوارى كرنے اوراس ميں سے كپڑے پہننے كى ممانعت كابيان 2531 ـ أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ هُوَ ابْنُ إِسْحٰقَ عَنْ يَزِيدَ هُوَ ابْنُ أَبِى حَبِيْبٍ عَنْ

أَبِى مَوْزُوْقٍ مَوْلَى لِتُجِيبَ قَالَ عَنَوُنَا صَنَى صَعَانَى كَبَةٍ بِين كه بم نَ ملك شَام مِن جهادكيا-عَدَّتَ نِن عَبَ الْصَارِى مَارَ سَرَ الرَّحِهِ مِن عَبَ الصَارى مَارَ سَرَ الرَحِهِ مِن عَبَ اللَّهُ عُولَ اللَّهُ عُرُنَةً يُقَالُ لَهَا جَرُبَةُ الكِلِيقِ وَفَعَ كَيا جَهِ جَرِبِهِ وَالنَّهُ كَبَةٍ بِين تَو رويفَع بَن الْأَنْصَارِي فَافَتَتَ حُنَا قَوْرُيَةً يُقَالُ لَهَا جَرُبَةُ الكِلِيقِ وَفَعَ كَيا جَهِ جَرِبِهِ وَالنَّهُ اللَّهِ عِيلَ تَو رويفَع بَن الْمَارَى فَ مَارِكَ يَاسَ مَوْرَ خَطِيدُ الوَرِ اللَّهِ عَلَيْ فَامَ فِينَا اللهُ عَلَيْ فَامَ فِينَا اللهُ عَلَيْ فَامَ فِينَا اللهُ عَلَيْ فَا اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ ا

یر رہ بیب ر بین کو اللہ میں اللہ کو اللہ کو گئی ۔ ایمان رکھتا ہے وہ مسلمانوں کے مال فے سے کسی جانور پر ایک حسن: بیسابقہ مدیث کا ایک جزء ہے۔اس کو بخاری نے تاریخ کبیر میں معلق ذکر کیا ہے 8/57 حَكَرُ لِيَنْكَ الْكَالِمُونِيَّ ﴾ ﴿ 330 كَتَابِ السيرِ ﴾ ﴿ كَتَابِ السيرِ ﴾ ﴿ كَتَابِ السيرِ ﴾ ﴿ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللّهُ اللهُ الل

سواری نہ کرے۔ حتی کہ جب وہ بیکار ہو جائے۔ یا وہ لاغر ہو جائے تو اے واپس کر دے۔ ابو محمد کہتے ہیں: مجھے اس میں شک ہوا ہے۔ اور جو کوئی اللہ اور آخرت کے دن پرایمان رکھتا ہے وہ مسلمانوں کے مال فے سے کیڑے نہ پہنے۔ حتی کہ جب وہ بوسیدہ ہو جائے تو اے واپس کر

فوائد: (۱) "جربة " بيرب سے مغرب كى جانب ايك بستى ہے اس كا فتو حات ميں تذكره آتا ہے (ديكھيے معجم البلدان 118/6) (۲) غنيمت كے مال كے تقسيم ہونے سے قبل اس سے كسى قسم كاستفاده ممنوع ہے جاہے وہ سوارى يا كيڑا ہويا اس جيسى كوئى خراب ہونے والى چيز۔واللہ اعلم

[48] بَابِ مَا جَاءَ فِي الْغُلُولِ مِنَ الشِّدَّةِ مَالْغُلُولِ مِنَ الشِّدَةِ مَالُ غَيْمِت مِين خيانت كرنے كى وعيد كابيان

2532 حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارٍ حَدَّثَنِى أَبُّو زُمَيْلٍ حَدَّثِنِي ابْنُ عَبَّاسٍ وَلَيْدِ اللهِ عَلَيْ عَبَّاسٍ وَالْوَلِيْدِ حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ وَالسَّاسِينَ

حَدَّثِنِي عُمَرُ بُنُ الْحَطَّابِ قَالَ قُتِلَ نَفَرٌ يَسُومُ خَيْسَرَ فَقَالُوا فَلانٌ شَهِيدُ فُلانٌ شَهِيدُ فُلانٌ شَهِيدُ فُلانٌ شَهِيدٌ فُلانٌ شَهِيدٌ فَلانٌ شَهِيدٌ فَلانٌ شَهِيدٌ خَتَى ذَكُرُوا رَجُلا فَقَالُوا فَلانٌ شَهِيدٌ فَقَالُوا فَلانٌ شَهِيدٌ فَقَالُوا فَلانٌ اللهِ عَبَائَةٍ أَوْ فِي بُرُدَةٍ إِنِّى رَأَيْتُهُ فِي النَّارِ فِي عَبَائَةٍ أَوْ فِي بُرُدَةٍ غَلَقَهَا) قَالَ لِي: ((يَا ابْنَ الْحَطَّابِ قُمُ غَلَقَهَا)) قَالَ لِي: ((يَا ابْنَ الْحَطَّابِ قُمُ فَنَاهِ فِي النَّاسِ أَنَّهُ لا يَدُحُلُ الْجَنَّةَ إِلَّا فَنَاهُ مِنُونَ)) فَقُمْتُ فَنَادَيْتُ فِي النَّاسِ. ٥ المُؤمِنُونَ)) فَقُمْتُ فَنَادَيْتُ فِي النَّاسِ. ٥

[•] اسناده ضعیف: جب که حدیث محج بے (2520) کے تحت گزر چکی ہے۔

صحيح: اخرجه مسلم، كتاب الإيمان، باب غلظ تحريم الغلول وأنه لا يدخل الجنة إلا المؤمنون (305) والترمذي،
 كتاب السير، باب ماجاء في الغلول (1574)

السير عَيْنَ الْكَالِيْفِي الْمُلْكِينِ عَلَى اللَّهِ السير عَنْ الْكَالِيْفِي السير عَمْلُ اللَّهِ السير عَمْلُ

فوائد: (۱) "غَلَّ يَغُلُّ عَلُول" اس کامعنی خیانت ہے اور یہ غیمت کے ساتھ خاص ہے جبکہ بعض نے اسے عام بھی قرار دیا ہے۔ (۲) کسی کو قطعیت کے ساتھ بلا تعلیق (یعنی ان شاء اللہ کے بغیر شہید کہنا درست نہیں (۳) قرض کی طرح شہید سے خیانت بارے وریافت کیا جائے گا (۴) آدمی کو قیامت سے قبل قبر میں بھی عذاب سے دوچار کیا جاتا ہے عذاب قبر کا انکار حقیقت میں صدیث رسول کا انکار ہے اور حدیث کا انکار قرآن کا انکار ہے جو کہ سراسر ضلالت ورزالت ہے (العیاذ باللہ) (۵) کنیت سے پکارنا باعث عزت اور مسنون ہے (۲) جنت میں وہی جا کیں گے جوایمان کے ساتھ ساتھ اس کے ارکان کی ادائیگی میں کسی قشم کی ستی کا شکار نہ ہوئے۔

[49].... بَابِ فِي عُقُوبَةِ الْغَالِّ مال غنيمت ميں خيانت كرنے والے كى سزا كا بيان

2532 مكرر - حَـدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مَنْصُوْرٍ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ زَائِدَةَ

عَنْ سَالِم بُنِ عَبُدِ اللّهِ عَنُ أَبِيهِ عَنْ سالم بن عبدالله وَلَيْهُ اللهِ باپ سے اور وہ اللهِ وادات جند وقالَ قَالَ وَسُولُ اللهِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ روايت كرتے بين كدرسول الله عَلَيْهَا فَر مايا: "جس كو

وَجَـدُتُـمُوهُ غَـلَّ فَـاصُـرِبُوهُ وَأَحُرِقُوْا مَنْ مَالْ غَيْمِت ؛ مَنَاعَهُ».

روایت کرتے ہیں کہ رسول الله دھنے مین نے فر مایا: ''جس کو تم مال غنیمت میں خیانت کرتا ہوا پاؤ اے مارو اور اس کا

[50].... بَابِ فِي الْغَالِّ إِذَا جَاءَ بِمَا غَلَّ بِهِ

خیانت کرنے والے کے متعلق جب وہ مال خیانت لائے گا

2533 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَاتِمِ الْمُكْتِبُ حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ مَالِكِ

سیّدنا کثیر بن عبدالله بن عمر و بن عوف مزنی رفالیّهٔ اپ والد

سے اور وہ وہ ان کے دادا سے روایت کرتے ہیں کہ رسول

الله طفی ایّم نے فرمایا: ''لوٹ اور مال غنیمت میں خیانت

کرنا جائز نہیں اور اسلال بھی نا جائز ہے اور جو مال غنیمت

میں خیانت کرے گا قیامت کے دن اسے لائے گا۔'' ابومحمہ

عَوُفٍ الْـمُزَنِىُ عَنُ أَبِيهِ عَنُ جَدِّهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لَا نَهُبَ وَلَا إِغُلَالَ وَلَا إِسُلَالَ وَمَنُ يَغُلُلُ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوُمَ الُقِيَامَةِ)). قَالَ أَبُو مُحَمَّد

حَدَّثَنِي كَثِيرُ بُنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عَمُرِو بُنِ

الكالمِينَ الكَالِمُونِيَ الكَالِمُونِيَ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ

کہتے ہیں:''اسلال' چوری کو کہا جاتا ہے۔''

الْإِسُلالُ السَّرِقَةُ . •

[51] بَابِ فِي أَنُ لَا تُقُطَّعَ الْأَيْدِي فِي الْغَزُوِ جِهادِ مِيْن چور كا باتحدنه كا تا جائے اس كابيان

2534 حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ عُمَرَ الزَّهْرَانِيُّ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ هُوَ ابْنُ لَهِيْعَةَ حَدَّثَنَا عَيَاشُ بْنُ عَبَاسٍ عَنْ شُيَيْم بْن بَيْتَانَ

عَنُ جُنَادَةَ بُنِ أَبِي أُمَيَّةَ قَالَ لَوُلَا أَنِّي سَمِعُتُ ابُنَ أَرُطَاةَ يَقُولُ قَدُ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَا تُقطَعُ الْأَيْدِي فِي الْغَزُو)) لَقَطَعُتُهَا . ۞

فوائد: (۱) "ارض الحرب" لين جنگ والى زمين ميں حدودنا فذنهيں كى جائيں گى (۲) اسلام نہيں بدلتا ليكن حالات كے موافق فتوى بدلا جاسكتا ہے اس سے اسلام كے حكمتوں كے حامل ندہب ہونے كى نشاندہى ہوتى ہے۔

[52] بَابِ فِی الْعَامِلِ إِذَا أَصَابَ فِی عَمَلِهِ شَيْئًا فَارِم کے تعلق جے اینے کام کے بدلہ میں کچھ ہدیہ ملے

2535 ـ أَخْبَرَنَا الْحَكُمُ بْنُ نَافِعِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عُرُوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ

عَنُ أَبِى حُمَيُدِ السَّاعِدِيِّ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ النَّبِيَ عَلَى الصَّدَقَةِ النَّبِيَ عَلَى الصَّدَقَةِ فَ جَائَمُ الْعَامِلُ حِينَ فَرَغَ مِنُ عَمَلِهِ فَ جَائَمُ الْعَامِلُ حِينَ فَرَغَ مِنُ عَمَلِهِ فَ جَائَمُ اللهِ هٰذَا الَّذِى لَكُمُ وَهَالَ النَّبِيُ الْحَيْقَ :

ابو حميد ساعدى كه جي كه نبى طفي آيل ني زكوة وصول كرنے كے لئے ايك عامل مقرر كيا جب وہ كام سے فارغ موكر واپس آيا تو اس نے (آپ كے سامنے) كها: "بية آپ كا ہے اور يہ مجھے ہديد ديا گيا ہے نبی طفي آيل نے فرمايا: "تو اللہ كے گھر كيوں نہ بيٹھا رہا تو ميں ديكھا كه

[•] اسناده ضعيف: صارح بن تُحربن زاكرة ضعيف ب- الحرجه احمد 22/1 وابوداؤد، كتباب الجهاد، باب في عقوبة الغال (2713) والترمذي ، كتاب الحدود، باب ماجاء في الغال ما يصنع به (1461)

② اسناده ضعيف: ليكن بيشوابرك بناء برضي بهاء بو احرجه ابوداؤد كتاب الحدود، باب في الرحل يسرق في الغزو أيقطع (5508) و الترمذي، كتاب الحدود، باب ما جاء أن لا تقطع الأيدى في الغزو (1450) و النسائي، كتاب السارق، باب القطع في السفر (4994)

سُنَانَ الْكَالِيَّةِ الْكُونِيَّ

333 کاب السیر کتاب السیر تہمیں کیے ہدیدماتا ہے۔ پھر نبی مطبقہ آثام کی نماز کے

بعد منبریر کھڑے ہوئے۔ انہوں نے تشہد بڑھا (الله کی واحدامیت اور این رسالت کی گواہی دی)اللہ تعالیٰ کے لائق اس کی حمد و ثنا کی پھر فرمایا: "اما بعد! عاملوں کا کیا معاملہ ہے جے ہم زكوة كى وصولى كے لئے بھيجة جيں۔ جب وہ واپس آتا ہیں تو کہنا ہے: یہ آپ کے لئے ہواور بہ مجھے مربہ دیا گیا ہے۔ وہ اینے والدین کے گھر بیٹے رہتے تو میں دیکتا انہیں ہدیہ ملتا ہے کہ نہیں۔اس وات کی فتم! جس کے ہاتھ میں محرکی جان ہے۔تم میں سے جو بھی خیانت کرے گا وہ اسے قیامت کے دن اپنی گردن پراٹھا كر لائے گا۔ اگر أدنث ہوگا اسے لے كر آئے كا اور وہ بلبلاتا ہوگا ،اگر گائے ہوگی تو اسے لے کرآئے گا اور وہ چین ہوگ۔ اگر بکری ہوگی تواہے لے کر آئے گا اور ممیاتی ہو گی۔ میں نے تہمیں پہنیا دیا۔ ابو مید کہتے ہیں: پھر نبي الشَّيَاتَيْمَ نِي اين دونول باتهدات اللهائ كرآب كى بغلوں کی سفیدی نظر آنے گئی۔ابوحمید ساعدی کہتے ہیں کہ

((فَهَلَّا قَعَدُتَ فِي بَيْتِ أَبِيُكَ وَأُمِّكَ فَنَظَرُتَ أَيُهُدَى لَكَ أَمُ لَا)) ثُمَّ قَامَ النَّبِيُّ عَلِيًّا عَشِيَّةً بَعُدَ الصَّلاةِ عَلَى الْمِنْبَرِ فَتَشَهَّدَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ بِهَا هُوَ أَهُلُهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعُدُ فَمَا بَالُ الْعَامِلِ نَسُتَعُمِلُهُ فَيَأْتِينَا فَيَقُولُ هٰ ذَا مِنُ عَمَلِكُمُ وَهٰذَا أُهُدِي لِي فَهَاَّلا قَعَدَ فِي بَيْتِ أَبِيْهِ وَأُمِّهِ فَيَنْظُوَ أَيُهُدَى لَهُ أَمُ لَا وَالَّذِي نَفُسُ مُحَمَّدِ بِيَدِهِ لَا يَغُلُّ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنْهَا شَيْئًا إِلَّا جَاءَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَحُمِلُهُ عَلَى عُنُقِهِ إِنْ كَانَ بَعِيرًا جَاءَ بِهِ لَهُ رُغَاءٌ وَإِنَّ كَانَتُ بَـقَـرَـةُ جَـاءَ بِهَـا لَهَا خُوَارٌ وَإِنُ كَانَتُ شَادةً جَاءَ بِهَا تَيْعِرُ فَقَدُ بَلَّغُتُ)). قَالَ أَبُوُ حُمَيُدٍ ثُمَّ رَفَعَ النَّبِي عِلَيٌّ يَدَيْهِ حَتَّى إنَّا لَنَنُطُرُ إلَى عُفُرَةِ إِبطَيْهِ . قَالَ أَبُورُ میرے ساتھ اس حدیث کو رسول الله طفی این سے زید بن حُمَيْدٍ وَقَدُ سَمِعَ ذٰلِكَ مَعِي مِنْ رَسُول اللُّهِ عَلَيْ زَيْدُ بُنُ ثَابِتٍ فَسَلُوهُ . • ٹابت نے بھی سا ہے اس سے بوجھ لو۔

فوائد: (۱) کسی ملازم یاعبدے دارکو ملنے والے تخف اس ادارے کے ہول گے جس کا وہ ملازم ہے اگریہ تحالف اسے اس کے عہدے ، ملازمت کے سبب ملے ہیں تو (۲) اگر کوئی عدم واقفیت کی بناپر شدید غلطی کرتا ہے تواسے شدت سے ڈانتا جاسکتا ہے بشرطیکہ وہ معالمہ تنگین ہو (۳) کسی مسئلے بارے عوام کی جہالت کاعلم ہوتواہے سبھی کے سامنے کھول کربیان کردینا جاہیے (۴) اگر کوئی عہدیدارعہدے کے سبب ملنے

[₫] متـفـق عـليـه: أخرجه البخاري، كتاب الجمة،باب من قال في الخطبة بعد الثناء،أما بعد(925)ومسلم، كتاب الإمارة باب تحريم هدايا العمال(4715)و (4716)و (4717)و (4718)و (4718)

الكالم السير عنان الكالم الكال

والے تحا کف کو چھیا تا ہے تو وہ خیانت شار ہوگی (۵) قیامت کو جرم کی مثل عذاب ہوگا۔ (۲) خطاب کے بعد دعا کرنامسنون ہے۔

[53] بَابٌ: فِي قَبُول هَدَايَا الْمُشُركِيُنَ مشرکین کا ہدیہ قبول کرنے کا بیان

2536- أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنِ أَنْبَأْنَا عُمَارَةُ بْنُ زَاذَانَ عَنْ ثَابِتٍ ··

عَنُ أَنَس بُن مَالِلتٍ أَنَّ مَلِكَ ذِي مِ سَيْدنا انس بن مالك رَاتُن كمت بير - كم بادشاه ذي يزن نے نی مشیر کی کو کیروں کا جوڑا ہدیہ بھیجا۔ جواس نے تینتیں اونٹ یا اونٹنیاں دے کرخریدا تھا۔ آپ نے اسے قبول کرلیا۔

يَـزَن أَهُدى إِلَى النَّبِي ﷺ حُلَّةً أَخَذَهَا بِفَلَاثَةِ وَثَلَاثِينَ بَعِيرًا أَوُ ثَلَاثٍ وَثَلَاثِينَ نَاقَةً فَقَبلَهَا . ٥

فواند: کفار کے ساتھ محبت ومودت اور دوئتی کا ناطہ قائم کرنا حرام ہے ہاں اس کے بغیران کی دعوت کا قبول کرنا ان کے تحاکف وغیرہ قبول کرلینا جائز ودرست اور آپ مطفیقیا کے طریقے سے ثابت ہے۔ 2537 ـ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلَالِ عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى عَنْ عَبَّاسِ ابْن سَهْل السَّاعِدِيّ …

سیّدنا ابوحمید فاتعهٔ ساعدی کہتے ہیں: والی ایلہ نے رسول الله طَيْنَا عَلَيْ كُو خط لكها اور سفيد خير مديه ديا تو رسول الله طفي مين نے اسے جواب لکھا اور جا در مدید دی۔'' عَنُ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيّ قَالَ بَعَثَ صَاحِبُ أَيُلَةَ إِلْى رَسُولِ اللَّهِ عَلَى الكَّابِ الْكَابِ وَأَهُدَى لَـهُ بَغُلَةً بَيْضَاءَ فَكَتَبَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَأَهُدَى لَهُ بُوُدًا . 🍳

[54] بَابِ فِي قَوُلِ النَّبِي عِلَيُّ إِنَّا لَا نَسْتَعِينُ بِالْمُشُرِكِينَ نی طفیقارم کے قول کے متعلق: کہ ہم مشرکین سے مدونہیں لیتے

2538 - أَخْبَرَنَا إِسْحٰقُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنْسِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ نِيَادٍ عَنْ

¹ حسن: أخرجه ابوداؤد، كتاب اللباس، باب ليس الرفيع من الشباب (4034)

[◄] متـفق عليه: البخاري، كتاب الزكاة، باب خرص التمر (1481) ومسـلم، كتاب الفضائل، باب في معجزات النبي صلعم (5907)

عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ وَسُولَ اللهِ عِلَيُهُ قَالَ: سيّده عائشه وَالنَّهِ عِلَيْهِ كَهِي مِن كه رسول الله يَ عَلَيْهِ فَ فرمايا:

((إِنَّا لَا نَسْتَعِينُ بِمُشُولْ)) . • ((إِنَّا لَا نَسْتَعِينُ بِمُشُولْ)) . •

فواند: لڑائی میں کفار ومشرکین سے مدد لینا مکروہ ہے مسلم رافیّایہ اس حدیث پر باب قائم کرتے بی (باب: كراهية الاستعانة في الغزوة بكافر) كافر عزور مين مدوحاصل كرنا مكروه ب کیونکہ ندکورحدیث کے برنکس آپ ملٹے تاتی کا احد، فتح کمہاور حنین میں کفار ومشرکیین سے مدد لینا ثابت ہے۔ 2539- أَخْبَونَا إِسْحَقُ عَنْ رَوْحٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ فُضَيْلٍ هُوَ ابْنُ أَبِيْ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ

عَنْ عُرُوةَ عَنْ عَائِشَةَ أَطُولُ مِنْهُ . ٥ سیّدنا عروة زائنی سیّدہ عائشہ واللہاسے اس ہے لمی حدیث نقل کرتے ہیں۔

[55] بَابِ إِخُوَاجِ الْمُشُوكِينَ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ جزيرة العرب ہےمشرکین کو نکالنا

2540- أَخْبَوْنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدِ الْقَطَّانُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مَيْمُون رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْكُوفَةِ حَدَّثَنِي سَعْدُ بْنُ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ عَنْ أَبِيهِ سَمُرَةَ

کی آخری باتوں میں بیتھا: '' يہود کو جازے اور اہل نجران كوجزيرة العرب سے نكال دينا۔"

فِي آخِرِ مَا تَكَلَّمَ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْهُ قَالَ:((أُخُرِجُوا يَهُودَ الْحِجَازِ وَأَهُلَ

نَجُرَانَ مِنُ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ). ٥

ف واند: سن نجران چونکه عیمائی بت تصاس کیے ان کے بارے آپ مشاکی نے اہل نجران کو بولا ۔لہذا حجاز میں یہود،نصاریٰ کورہنے کی اجازت نہیں۔

[◘] صحيح: أحرجه مسلم، كتاب الحهاد، باب كراهة الاستعانة في الغزو بكافر (4677)و ابو داؤد، كتاب الجهاد، ١ باب في المشرك؛ يسبهم له(2732) وابن ماجه، كتاب الجهاد، باب استعانة بالمشركين(2832)

² صحیح: سابقہ حدیث مکرر آئی ہے۔

[◙]صحيح: مجمع الزوائد(2091)مسند حميدي(85)والبيهـقي، كتباب الجزية، باب لايسكن أرض الحجاز مشرك (208/9)

يُتَاتَىٰ الْكَارِينِيُّ كَتَابِ السير

[56] بَابِ فِي الشَّرُبِ فِي آنِيَةِ الْمُشُرِكِينَ مشرکین کے برتنوں میں کھانے پینے کے متعلق

2541- أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ حَيْوَةَ بْنِ شُرَيْحٍ حَدَّثَنِي رَبِيعَةُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنِي أَبُو

سیّدنا ابونغلیہ والنّف کہتے ہیں میں نے رسول الله ملتّ اللّه ے باس جا کر کہا: یا رسول اللہ! ہم اہل کتاب کی زمین میں رہتے ہیں کیا ہم ان کے برتنول میں کھا کیں؟ تو رسول ذکر کیا تو مجبوری کے سوا ان کے برتنوں میں نہ کھانا اگر مجبوری ہوتو انہیں دھوکران میں کھالو۔''

حَدَّتَنِي أَبُو ثَعُلَبَةَ قَالَ أَتَيُتُ رَسُولَ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ إِنَّا بِأَرْضِ اللَّهِ إِنَّا بِأَرْضِ أُهُ إِن الْكِتَابِ فَنَأْكُلُ فِي آنِيَتِهِمُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِلَى ﴿ (إِنْ كُنْتَ بِأَرْضِ كَمَا ذَكُرُتَ فَلا تَأْكُلُوا فِي آنِيَتِهمُ إِلَّا أَنُ لَا تَسجدُوا مِنْهَا بُدًّا فَإِنْ لَمُ تَجدُوا مِنْهَا بُدًّا فَاغُسِلُوهَا ثُمَّ كُلُوا

فيها)). ٥

فواند: کفاروشرکین چونکه بهت می ایسی اشیاء استعال کرتے ہیں جو که اسلام کی رُوسے حرام ہیں مثلاً خزر کا گوشت ہشراب وغیرہ لہذا ان کے برتنوں کے استعال سے بچنا حاہیے ہاں نہ ملنے کی صورت میں ان کواستعمال بھی کیا جاسکتا ہے بشرطیکہ انہیں خوب اچھی طرح دھو کرصاف کرلیا گیا ہو۔ [57].... بَابِ أَكُلِ الطَّعَامِ قَبُلَ أَنْ تُقُسَمَ الْعَنِيمَةُ مال غنیمت تقسیم کرنے سے پہلے کھانے کی چیز کھالینا

2542 حَدَّنَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ هُوَ ابْنُ الْمُغِيرَةِ عَنْ حُمَيْدِ

عَنْ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ مُعَفَّلِ قَالَ دُلِّي جِرَابٌ ﴿ سَيْدِنَا عَبِدَاللَّهُ بِنِ مَعْفَلَ ثِلْتَهُ كُتِ بِينَ: خيبر كے دن ايك چربی کی تھیلی نیچے گر گئی۔ میں جا کراس سے چے گیا میں نے کہا: آج اس میں ہے کسی کو کچھ نہ دوں گا پھر میں نے مر كر د يكهانو رسول الله طفيظية ميري طرف د مكيه كرمسكرا

مِنُ شَحُمٍ يَوُمَ خَيْبَرَ قَالَ فَأَتَيْتُهُ فَالْتَزَمُتُهُ قَالَ ثُمَّ قُلُتُ لَا أُعُطِى مِنُ هَذَا أَحَدًا الْيَوْمَ شَيْئًا فَالْتَفَتُّ فَإِذَا رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ

متفق عليه: البخاري، كتاب الذبائح والصيد، باب صيد القوس (5478) ومسلم، كتاب الصيدو الزبائح، باب الصيد بالكلاب المعلمة (4960)

السير Wyw.svato mustageem و السير
يُبْتَسِمُ إِلَىَّ قَسَالَ عَبُد اللَّهِ أَرْجُو أَنْ رَبِ تَصْ-''عبدالله كت بين: مجمح اميد ب كرميد ن

يَكُونَ حُمَيْدٌ سَمِعَ مِنْ عَبُدِ اللَّهِ . • عبدالله عبدالله عنا الله عنا الله عبدالله عنا الله ع

فوائد: الل علم كااس بارے اختلاف ہے كه غنيمت كامال نمس نكالنے ہے قبل استعال كيا حاسكتا ہے یانبیں؟ جمہور کے مدہب کے مطابق ضرورت کی بنایر خوراک یاجارہ یا اس جیسی کوئی چیز امام کے حکم ،اجازت کے بغیر لی جاسکتی ہے بلکہ جمہورتو یہاں تک کہتے ہیں کہ اشد ضرورت نہ بھی ہوتو تب بھی ان کے لینے میں کوئی حرج نہیں جیسا کہ صحابہ ڈٹائٹیہ ہے اس بارے صراحت ملتی ہے اوراسی طرح جنگ کی حالت میں سواری اور کیڑا بھی استعال کیا جاسکتا ہے جو کہ بعد میں جائز نہیں (تفصیل کے لیے دیکھیے فتح الباری: (307/6

_[58].... بَابِ فِي أَخُذِ الْجزُيةِ مِنَ الْمَجُوسِ محوس سے جزیہ لینے کا بیان

2543 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةً عَنْ عَمْرِو

سیّدنا بجالہ فرائنی کہتے ہیں عمر ڈائنی مجوسیوں سے جزیہ میں لیتے تھے حتی کہ عبدالرحلن بن عوف نے گواہی دی کہ رسول الله طفي الله عنه المراح محسيول سے جزيدليا۔

عَنْ بَجَالَةَ قَالَ سَمِعُتُهُ يَقُولُ لَمُ يَكُنُ عُمَرُ أَخَذَ الْجِزُيَةَ مِنَ الْمَجُوسِ حَتَّى شَهِدَ عَبُدُ الرَّحْمَنِ بُنُ عَوُفٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عَلَيْ أَخَذَهَا مِنُ مَجُوس

فوائد: (۱)"البجزية" يجزاء سے جوكه كفاركواسلامي شهرول ميں چھوڑے ركھنے بران سے لیاجاتا ہے۔ اس کی حکمت میہ ہے کہ کفار کوانی ذلت کا حساس ہواوردوسری طرف مسلمانوں سے ملنے جلنے بران کواسلام کے محاس کی خبر ہو پھر بیاوال مل کران کے قبول اسلام کا ذریعہ بن جائیں (واللہ اعلم) (۲) قرآن میں چونکہ فقط اہل کتاب سے جزیہ لینے کا تذکرہ ہے قرآن میں اہل کتاب کے ذکر کے بعد اللہ فرماتے بین: ﴿حتَّى يُعُطُوا الْحِزْيَةَ عَنْ يَبٍ ﴾ (التوبه: 29) كدوه النيخ باتھ سے جزيدي - الجوس بارے

[◘]متفق عليه: البخاري،كتاب فرض الخمس،باب ما يصيب من الطعام في ارض الحرب(3153)ومسلم،كتاب الجهاد، باب جواز الأكل من طعام الغنيمة في دارا لحرب(4580)

² صحيح: اخرجه البخاري، كتاب الجزية والموادعة، باب الجزية والموادعة (3156) وابو داؤد، كتاب الخراج والإمارة بباب في أخذ الحزية من المجوس (3043) والترمذي، كتاب السير، باب ماجاء في أخذ الحزية (1586)

اختلاف ہے کہ ان سے جزیہ لیاجائے گا یانہیں؟ ابن الین ،عبدالملک سے بیان کرتے ہیں کہ جزیہ فقط یہودونصاریٰ سے لیاجائے گا۔ جبکہ مالک، شافعی،ابوضیفہ، مجوں بیٹش بھی جزیہ لینے کے قائل ہیں اور ابن عبدالبراس پراتفاق ذکر کرتے ہیں ۔ نیز ابوعبیدہ راٹھیہ کہتے ہیں یہودونصاریٰ سے قرآن ، جبکہ مجوں سے سنت کے ذریعے جزیہ لینا ثابت ہے اور یہی بات نہ کورہ حدیث کی بنا پردرست ہے۔

. [59].... بَابِ يُجِيرُ عَلَى الْمُسُلِمِينَ أَدْنَاهُمُ الله تارم الن كَلِم أَ

ادنیٰ مسلمان تمام مسلمانوں کی طرف سے ذمہ دار ہوکر پناہ دینے کا بیان

2544 أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيْدِ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ أَنَّ أَبَا مُرَّةَ مَوْلَى عَقِيلِ

بْنِ أَبِي طَالِبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ

ام ہانی بنت ابوطالب بیان کرتے ہیں کہ وہ فتح کے سال رسول اللہ طشیقی نے ساتھ گئیں۔ اس نے کہا: اے اللہ کے رسول! میرا اخیافی بھائی کہتا ہے وہ فلاں بن ہمیرہ کو جے میں نے بناہ دے رکھی ہے قتل کر دے گا تو رسول اللہ طشیقی نے نیاہ دے رکھی ہے قتل کر دے گا تو رسول اللہ طشیقی نے نے فرمایا: 'اے ام ہانی! جے تو نے بناہ دی ہم نے بھی بناہ دی ہے۔''

أُمَّ هَانِئُ بِنُتَ أَبِي طَالِبٍ تُحَدِّثُ أَنَّهَا ذَهَبَتُ إِنِّى أَبِي طَالِبٍ تُحَدِّثُ أَنَّهَا ذَهَبَتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ عَلَى عَامَ الْفَتُحِ فَقَالَتُ يَا رَسُولَ اللهِ زَعَمَ ابُنُ أُمِّي أَنَّهُ قَالَتُ رَجُلًا أَجَرُتُهُ فَلانُ بُنُ هُبَيْرَةَ فَقَالَ وَسُولُ اللهِ عَلَى الله عَلْ الله عَلَى الله الله عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ
ف واند.... معلوم ہوااسلام میں کمتر مسلمان یاعورت کی دی ہوئی پناہ اس طرح مؤثر ہوگی جس طرح کسی ذیثان سردار کی ہوتی ہے۔

[60] بَابِ فِي النَّهُي عَنُ قَتُلِ الرُّسُلِ قاصد كُول كرنے كى ممانعت

2545 ـ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ عَنْ عَاصِمٍ عَنْ أَبِيْ وَائِلٍ

ابن معیز سعدی کہتے ہیں میں اینا گھوڑا چرانے کے لئے نکلا تو بنو صنیفہ کی معجد وں سے ایک معجد کے پاس سے میرا گزر ہوا میں نے ان سے سنا وہ اقرار کررہے تھے مسلیمہ اللہ کا

عَنِ ابُنِ مُعَيْزِ السَّعُدِيِّ قَالَ خَرَجُتُ أَسُفِرُ فَرَسًا لِى مِنَ السَّحَرِ فَمَرَرُتُ عَلَى مَسُجِدِ مِنُ مَسَاجِدِ بَنِي حَنِيُفَةَ

 [◘] متفق عليه: البخارى، كتاب الغسل، باب التستر في الغسل عند الناس (280) ومسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب استحباب صلاة الضحي (1666)

339 كتاب السير كتاب السير

يتان الداديي

فَسَمِعْتُهُمُ يَشُهَدُونَ أَنَّ مُسَيُلَمَةَ رَسُولُ اللَّهِ فَرَجَعُتُ إِلَى عَبُدِ اللَّهِ بُن

مَسْعُودٍ فَأَخْبَرُتُهُ فَبَعَثَ إِلَيْهِمُ الشُّرَطَ فَأَخَذُوهُمُ فَجيءَ بهمُ إِلَيْهِ فَتَابَ الْقَوْمُ

وَرَجَعُوا عَنُ قَوْلِهِمُ فَخَلِّي سَبِيلَهُمُ وَقَدَّمَ رَجُلًا مِنْهُمُ يُقَالُ لَهُ عَبُدُ اللَّهِ بُنُ

النَّوَ احَةَ فَضَرَبَ عُنُقَهُ فَقَالُوا لَهُ تَرَكُتَ الْقَوْمَ وَقَتَلُتَ هَذَا فَقَالَ إِنِّي كُنْتُ عِنْدَ

رَسُولِ اللَّهِ ﷺ جَالِسًا إذُ دَخَلَ هٰذَا

وَرَجُلٌ وَافِدَيُنِ مِنُ عِنْدِ مُسَيْلَمَةَ فَقَالَ لَهُ مَسا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((أَتَشُهَدَان

أَيِّي رَسُولُ اللَّهِ؟))فَقَالَا لَا نَشُهَدُ أَنَّ مُسَيُلَمَةً رَسُولُ اللَّهِ فَقَالَ: ((آمَنُتُ

باللُّهِ وَرُسُلِهِ لَوُ كُنُتُ قَاتِلًا وَفُدًا لَقَتَلُتُكُمَا)) فَلِلْالِكَ قَتَلُتُهُ وَأَمَرَ

بمَسْجِدِهم فَهُدِمَ . ٥

فوائد: (۱) مسلمه كذاب، آب ملط الله كه دور مين ظاهر جونے والا جھوٹا مدى نبوت تھا۔ (۲) اگر کوئی کفریہ عقائد،ارتداد ہے تو بہ کرلے تواقے تل نہیں کیا جائے گا (۳) ایلی گوٹل کرنا درست نہیں (۴) ختم

نبوت کے منکرین کی مساجد گرادینی جاہئیں کیکن عوام کوقانون ہاتھ میں لینے سے احتر از کرنا چاہیے تا کہ کسی فتن كا باعث نه بن كونكه "أَلْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ" فَتَمْلَ سِه زياده علين موتا ب-

[61] ... بَابِ فِي النَّهِي عَنُ قَتُلِ الْمُعَاهَدِ

معاہد کے تل کی ممانعت

2546 أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا عُيَيْنَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ جَوْشَنِ الْغَطْفَانِيُّ عَنْ أَبِيْهِ

1 اسناده حسن: ليكن مديث مح على صحيح ابن حبان (4878) وابو داؤ د، كتاب الجهاد، باب في الرسل (2861)

رسول ہے۔ میں عبداللہ بن مسعود رفائقہ کے باس واپس گیا اور انہیں بتایا انہوں نے ان کی طرف سیاہی بھیجے وہ انہیں پر کرلے آئے ان لوگوں نے توبہ کرلی اور اپنی بات سے رجوع کرلیا عبداللہ بن مسعود خالفیٰ نے انہیں چھوڑ دیا اور ان میں سے ایک آ دمی کوسامنے کیا۔ جسے عبداللہ بن نواحہ کہتے تھے، انہوں نے اس کوتل کر دیا۔لوگوں نے ان سے کہا: آپ نے تمام لوگوں کو چھوڑ دیا اور اسے کیوں قتل کر دیا؟ انہوں نے کہا: میں رسول الله طفی ایک کے باس بیشا ہوا تھا۔ بیاور ایک اور آ دی مسلمہ کی طرف سے قاصد بن كراك ي - أنبيس رسول الله السين في فرمايا: "كياتم گوائی ویتے ہوکہ میں اللہ کا رسول ہول ؟ - ان دونوں

نے آپ سے کہا: ''ہم گواہی ویتے ہیں کہمسلمہ اللہ کا

يرايمان ركهتا ہوں۔اگر میں قاصد کوتل كرنا مناسب سمجھتا تو

رسول ہے۔'' آپ نے فرمایا:''میں اللہ اور اس کے رسولوں

تم دونوں توقل کر دیتا۔"اس لئے میں نے اسے قل کیا ہے۔

ان کی مسجد کے متعلق حکم دیا' وہ گرا دی گئی۔''

السير عن الكافيي المالي السير عداب السير عداب السير المالي
سیّدنا ابو بکر مِنْ اللهٔ کہتے ہیں رسول الله طِنْ اِللهِ اِنْ نَے فرمایا:
د جو شخص کسی معاہد کو ناحق قتل کر دے۔ الله اس پر جنت حرام کردے گا۔''

عَنُ أَبِى بَكُرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: (مَنُ قَتَلَ مُعَاهِدًا فِي غَيُرِ كُنُهِهِ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ)). •

فوائد: (۱) ذمی گوتل کرنا کبیره گناه ہے (۲) اس کے قاتل پر جنت کے حرام ہونے سے مراد اول دفعہ ہے یعنی بندہ پہلے بلّے میں ہی جنت کا مستحق قرار نہیں پائے گا بلکہ سز ابھگننے کے بعد اسے داخلہ نصیب ہوگا کیونکہ حدیث کے مطابق جس کے دل میں رائی کے دانے برابر بھی ایمان ہوگا اسے جہنم سے زکال لیاجائے گا۔ (واللہ اعلم)

[62] بَابِ إِذَا أَحُرَزَ الْعَدُقُ مِنْ مَالِ الْمُسْلِمِينَ جب وَثَن مَالِ الْمُسْلِمِينَ جب وَثَن مسلمان كے مال پر قبضة كرليں

2547- أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَلَّثَنَا حَمَّادُبْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ أَبِي الْمُهَلَّى

سیّدنا عمران بن حسین زاتین کہتے ہیں۔ عضباء بنوعیل کے ایک آدمی کی اونئی تھی۔ وہ قید ہو گیا عضباء بکڑ لی گئی رسول اللہ طفی آئی اس آدمی کے پاس سے گزرے وہ قید تھا اس نے کہا: ''اے محمد! تم مجھے میری اونٹی کو کھوں بکڑے ہوئے ہوئے ہو حالانکہ میں مسلمان ہوں۔''رسول اللہ طفی آئی آئی نے فرمایا: ''اگر تونے یہ اس وقت کہا ہوتا جب شہیں اختیار تھا تو تم پوری طرح کا میاب ہو جاتے۔'' پھر رسول اللہ طفی آئی آئی نے نہا ہوتا ہو جاتے۔'' پھر رسول اللہ طفی آئی آئی نے اور ثقیف نے رسول اللہ طفی آئی آئی کی دوصی ابد کو قید کیا تھا۔ اور ثقیف نے رسول اللہ طفی آئی آئی کے دوصی ابد کو قید کیا تھا۔ اور ثقیف نے رسول اللہ طفی آئی آئی کے دوصی ابد کو قید کیا تھا۔ اور شور اللہ طفی آئی آئی کہ ایمی کی سول اللہ طفی آئی آئی کے دوسی ابد کو قید کیا تھا۔ اور سول اللہ طفی آئی آئی کے دوسی ابد کو قید کیا تھا۔ اور شور اللہ طفی آئی آئی کہ ایمی کی سوار ہو کر آئے جس پر بیوار ہو کر آئے جس پر بیوار ہو کر آئی جس کی کی دوسی ایمی کی کا موں مجھے کھانا بیوں مجھے کھانا بیوں میں کھوکا ہوں مجھے کھانا بیوں در قیل کی دوسی کی کی دوسی کیا ہوں مجھے کھانا بیوں در جیا در تھی۔اس نے کہا: یا محمد! میں بیوکا ہوں مجھے کھانا بیا کھوکا ہوں میں کی کو دار جیا در تھی۔اس نے کہا: یا محمد! میں بھوکا ہوں مجھے کھانا کو دار جیا در تھی۔اس نے کہا: یا محمد! میں بھوکا ہوں مجھے کھانا کیں کی کھوکھانا کی کھوکھانا کی کھوکھانا کی کھوکھانا کی کھوکھانا کو کھوکھانا کیا کھوکھانا کی کھوکھانا کی کھوکھانا کو کھوکھانا کو کھوکھانا کو کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کو کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کو کھوکھانا کو کھوکھانا کو کھوکھانا کھوکھانا کو کھوکھانا کے کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کو کھوکھانا کو کھوکھانا کھوکھانا کو کھوکھانا کھوکھانا کو کھوکھانا کو کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کو کھوکھانا کے کھوکھانا کو کھوکھانا کو کھوکھانا کے کھوکھانا کو کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کو کھوکھانا کھوکھانا کے کھوکھانا کھوکھانا کو کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کے کھوکھانا کو کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کھوکھانا کھوک

عَنُ عِمُوانَ بُنِ حُصَيْنٍ قَالَ كَانَتِ الْعَضَبَاءُ لِرَجُلٍ مِنُ بَنِى عُقَيْلٍ فَأُسِرَ وَأَخِذَتِ الْعَضَبَاءُ فَمَرَّ عَلَيْهِ رَسُولُ اللّهِ عَنَى وَمُولَ عَلَيْهِ رَسُولُ اللهِ عَنَى وَمُولَ فَقَالَ يَا مُحَمَّدُ عَلَى مَا تَأْخُذُونِى وَتَأْخُذُونَ سَابِقَةَ عَلَى مَا تَأْخُذُونِى وَتَأْخُذُونَ سَابِقَةَ اللّهِ عَلَى مَا تَأْخُذُونِى وَتَأْخُذُونَ سَابِقَةَ اللّهِ عَلَى مَا تَأْخُذُونِى وَتَأْخُذُونَ سَابِقَةَ اللّهِ عَلَى مَا تَأْخُذُونِى مَا اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهِ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهِ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهِ عَلَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ الللهُ اللهُ الللهُ اللهُ الللهُ اللهُ
❶ صحيح ابن حبان(4881)و أخبرجه ابوداؤد، كتباب الجهاد،باب بالوفاء للمعاهد وحرمة ذمته (2760) والنسائي، كتاب القسامة،باب تعظيم قتل المعاهد(4761)

السير عنان الكافيين الكافيين الكافيين المالي عناب السير عناب السير المالي

كلاؤ مين يياسا مول مجهد ياني بلاؤ تو رسول الله طفي الله نے فرمایا: ''یہی تیری ضرورت ہے۔ پھر اس آ دی کے بدله میں دوآ دی دیئے گئے۔رسول الله طبیعی آنے عضباء ' کو اپنی سواری کے لئے رکھ لیا۔ اور وہ حج پر جانے والی اونٹیوں ہے اوّلیت والی تھی۔ پھرمشرکین نے مدینہ کے حانوروں برحملہ کیا ان کے ساتھ محضباء کوبھی لے گئے۔ مسلمانوں کی ایک عورت کوبھی قید کرلیا۔ جب وہ لوگ کسی منزل پر شہرتے تو سب اونٹ اس کے سامنے میدان میں ہوتے تھے۔ ایک رات وہ عورت اٹھی وہ سب سوئے ہوئے تھے۔وہ جس اونٹ بر ہاتھ رکھتی وہ بولنے لگتاحتی کہ 'عضباء' کے پاس گئی۔ وہ سکھائی ہوئی تجربہ کاراؤٹمی تھی اس يرسوار موكر مدينه كارخ كيا-اس في نذر مانى كدالله تعالى اسے نجات دے گا تو وہ اسے ذبح کرے گی۔ راوی کہتا ے: جب وہ مدینہ آئی تو اونٹن پیچانی گئی۔ اور کہا گیا: یہ رسول الله مضافية كى اومنى بهد لوگ است نبي منطق الله کے پاس لے گئے۔ اس عورت نے اپنی نذر بیان کی تو رسول الله طي وي نفر مايا: "توني اس برا بدله ديا- الله نے تجھے (اس کے ذریعہ) نجات دی اور تواہے ذرج کرنا حامتی ہے؟ خبردار! الله كى نافر مانى ميں نذر يورى نہيں كرنى جاہے ۔اور نہ ہی اس چیز میں جس کا اے اختیار نہ ہو۔''

اللُّهِ عِنْ وَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَى حِـمَارِ عَلَيُهِ قَطِيفَةٌ فَقَالَ يَا مُحَمَّدُ إِنِّي جَائِعٌ فَأَطُعِمُنِي وَظَمُآنُ فَاسُقِنِي فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ : ((هَذِهِ حَاجَتُكَ)) ثُمَّ إِنَّ الرَّجُلَ فُدِي بِرَجُلَيْنِ فَحَبَسَ رَسُولُ اللَّهِ عَنْ الْعَضَبَاءَ لِرَحُلِهِ وَكَانَتُ مِنُ سَوَابِقِ الْحَاجِ ثُمَّ إِنَّ المُشُركِينَ أَغَارُوا عَلَى سَرُح الْمَدِينَةِ فَلْهَبُوا بِهِ فِيهَا الْعَصْبَاءُ وَأَسَرُوا امُرَأَةً مِنَ الْمُسُلِمِينَ وَكَانُوا إِذَا نَزَلُوا قَالَ أَبُوُ مُحَمَّد ثُمَّ ذَكَرَ كَلِمَةً إِبلُهُمُ فِي أَفْنِيَتِهِمُ فَلَمَّا كَانَ ذَاتَ لَيُلَةٍ قَامَتِ الُمَرُأَةُ وَقَدُ نُوَّمُوا فَجَعَلَتُ لَا تَضَعُ يَدَيُهَا عَلَى بَعِيرِ إِلَّا رَغَا حَتَّى أَتَتُ الُعَضُبَاءَ فَاأَتَتُ عَلَى نَاقَةِ رَسُول اللَّهِ ﷺ ذَلُول مُسجَرَّسَةٍ فَوَكِبَتُهَا ثُمَّ تَوَجَّهَتُ قِبَلَ الْمَدِينَةِ وَنَذَرَتُ لَثِنِ اللَّهُ نَجَّاهَا لَتَنُحَرَنَّهَا. قَالَ فَلَمَّا قَدِمَتُ عُرفَتِ النَّاقَةُ فَقِيلَ نَاقَةُ رَسُول اللَّهِ عَلَيْ فَأَتُوا بِهَا النَّبِيِّ عَلَيْ وَأَخُبَرَتِ الُمَورُأَةُ بِنَذُرِهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْهُ بنُسَمَا جَزَيْتِهَا أَوُ بنُسَمَا جَزَتُهَا إِن اللُّهُ نَجَّاهَا لَتَنُحَرَنَّهَا لَا وَفَاءَ لِنَذُرِ فِي مَعُصِيَةِ اللَّهِ وَلَا فِيمَا لَا يَمُلِكُ ابْنُ

السير عَنْ الدَّالِيْعِيُّ عَلَى السير على 342 كتاب السير على السير على السير على السير السير السير السير السير

آدُمُ 0

فوائد: (۱) قید ہوجانے کے بعد اسلام کاظہور جان ومال کی حفاظت کے لیے نافع نہیں (۲) کسی آدمی کو اس کے حلیف کے جرم پر قید کیا جاسکتا ہے (۳) اللہ کی معصیت والی اورالی چیز کی نذر جس کا آدمی مالک نہ ہواس نذر کو پورا کرنا لازم نہیں۔

[63] بَابِ فِي الْوَفَاءِ لِلْمُشْرِكِينَ بِالْعَهْدِ

مشرکین ہے کیا ہوا عہد بورا کرنے کا بیان

2548 - أَخْبَرَنَا بِشْرُ بْنُ ثَابِتِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْمُغِيرَةِ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ مُحَرَّدِ بْنِ-----

سیّدنا ابو ہریرۃ رفی تین کہتے ہیں میں علی بن ابوطالب کے سیّدنا ابو ہریرۃ رفی تین کہتے ہیں میں علی بن ابوطالب کے ساتھ تھا۔ جب آئیس رسول اللہ طفی آئی نے بیجا۔ انہوں نے چار باتوں کا اعلان کیاحتی کہ ان کی آ واز بیٹے گئے۔ خبر دار! جنت میں صرف مسلمان ہی جائے گا اور اس سال کے بعد مشرک آ دی رقح ہرگز نہ کرے۔ اور نہ برہنہ خص بیت اللہ کا طواف کر ہے گا۔ اور جس سے رسول اللہ طفی آئی کا عہد ہے اس کی مدت چار ماہ ہے جب یہ گزر جا کیں گو اللہ اللہ اور اس کا رسول مشرکین سے بری ہوجائے گا۔ اللہ اور اس کا رسول مشرکین سے بری ہوجائے گا۔ اللہ اور اس کا رسول مشرکین سے بری ہوجائے گا۔ '

أَبِى هُرَيُرَةَ عَنُ أَبِيهِ قَالَ: كُنْتُ مَعَ عَلِي بُنِ أَبِى طَالِبٍ لَمَّا بَعَثَهُ رَسُولُ عَلِي بُنِ أَبِى طَالِبٍ لَمَّا بَعَثَهُ رَسُولُ اللّهِ عَلَىٰ فَنَادَى بِأَرْبَعِ حَتَّى صَحَلَ صَوْتُهُ أَلَا لَا يَدُخُلُ النَّجَنَّةَ إِلَّا نَفُسْ مُسُلِمَةٌ وَلَا يَحُجَّنَ بَعُدَ الْعَامِ مُشُوكٌ مُسُلِمَةٌ وَلَا يَحُجَّنَ بَعُدَ الْعَامِ مُشُوكٌ وَمَنُ كَانَ وَلَا يَحُجَّنَ بَعُدَ الْعَامِ مُشُوكٌ وَمَنُ كَانَ وَلَا يَحُجَّنَ بَعُدَ اللهِ عَلَىٰ وَمَنُ كَانَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ رَسُولِ اللهِ عَلَىٰ عَهُدٌ فَإِنَّ المَّهِ عَلَىٰ عَهُدٌ فَإِنَّ المَّهِ عَلَىٰ عَهُدٌ فَإِنَّ اللهِ عَلَىٰ عَهُدٌ فَإِنَّ اللهِ اللهِ عَلَىٰ عَهُدٌ فَإِنَّ اللهِ عَلَىٰ عَهُدٌ فَإِنَّ اللهِ عَلَىٰ عَهُدٌ فَإِنَّ الْمُشُوكِينَ اللهِ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ عَهُدُ فَإِنَّ اللهِ عَلَىٰ اللهِ اللهِ عَلَىٰ عَهُدُ فَإِنَّ اللهِ عَلَىٰ عَهُدُونَ المَصْتَ اللهُ عَلَىٰ اللهُ عَلَىٰ اللهُ عَلَىٰ عَهُدُ فَإِنَّ اللّهِ عَلَىٰ عَلَىٰ اللهُ عَلَىٰ عَهُدُ اللهُ عَلَىٰ اللهُ اللهُ عَلَىٰ عَلَىٰ اللهُ عَلَىٰ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَىٰ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَىٰ اللّهُ اللهُ عَلَىٰ اللّهُ اللّهُ عَلَىٰ اللّهُ اللّهُ عَلَىٰ اللّهُ عَلَىٰ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَىٰ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ

وَرَسُولُهُ. 🛭

فوائد: معاہدوں کی پاسداری کرنالازم ہے کیکن کسی پیش آمدہ واقعہ کی بناپرا گرمعاہدہ برقرار رکھنا مشکل ہوتو علی الاعلان اس کا اظہار ضروری ہے نیز اختتام معاہدہ کے لیے اتنی مدت ہونی چا ہیے کہ جو کہ دونوں فریقوں کے منجلنے کے لیے کافی ہو۔

Ф صحيح: أخرجه مسلم، كتاب النذر، باب لاوفاء لنذر في معصية الله ولا فيما لا يملك العبد (4221-4222)
 وابوداؤد، كتاب الأيمان والنذور، باب في النذر فيما لا يملك (3316) والنسائي، كتاب الأيمان، باب النذر فيما ليملك
 (3821)

[🗨] اسنادہ حید : صحیح ابن حبان(3820)،(1470) حدیث کے تحت گزر چکل ہے۔

السير عَيْنَ الْخَارِينِيُّ كَابِ السير عَنْ 343 الْحَارِينِيُّ كَابِ السير عَنْ 343 الْحَارِينِيُّ كَابِ السير

[64] بَابِ فِي صُلُحِ النَّبِيِّ عَلَيْ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ صَلْحِ النَّبِيِّ عَلَيْ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ صَلَحَ عَلَيْنَ مِنْ الْحُدَيْبِيَةِ صَلْحَ عَلَيْنَ مِنْ الْحُدَيْبِيَةِ مَنْ الْحُدَيْبِيَةِ مَنْ الْحُدَيْبِيَةِ مَنْ الْحُدَيْبِيَةِ مَنْ الْحُدَيْبِيَةِ مَنْ الْحُدَيْبِيَةِ مِنْ الْحُدَيْبِيَةِ مِنْ الْحُدَيْبِيَةِ مَنْ الْحُدَيْبِيَةِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّالِمُ مِنْ اللَّهُ مِنْ ال

عَنِ الْبَرَاءِ بُنِ عَساذِبِ قَبالَ اعْتَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ عِنْ فِي ذِي الْقَعُدَةِ فَأَبِي أَهْلُ مَكَّةَ أَنُ يَدَعُوهُ أَنْ يَدُخُلَ مَكَّةَ حَتَّى قَاضَاهُمُ عَلَى أَنُ يُقِيمُ ثَلَاثَةَ أَيَّام فَلَمَّا كَتَبُوا هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ عَلَى قَالُوا لَا نُقِرُّ بِهٰذَا لَوُ نَعُلَمُ أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ مَا مَنَعُنَاكَ شَيْئًا وَلَكِنُ أَنَّتَ مُحَمَّدُ بُنُ عَبُدِ اللَّهِ فَقَالَ: ((أَنَا رَسُولُ اللَّهِ وَأَنَا مُحَمَّدُ بُنُ عَهُدِ اللَّهِ)) فَقَالَ لِعَلِيّ ((امُحُ: مُحَمَّدُ رَسُولُ اللَّهِ)) فَقَالَ لَا وَاللَّهِ لَا أَمُحُوهُ أَبَدًا فَأَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ عِثْمٌ الْكِتَابَ وَلَيْسَ يُحُسِنُ يَكُتُبُ فَكَتَبَ مَكَانَ رَسُولِ اللَّهِ هَذَا مَا قَاضَى عَلَيُهِ مُحَمَّدُ بُسنُ عَبُدِ السَّلْدِ أَنْ لَا يَدُخُلَ مَكَّةَ بِسِلَاحِ إِلَّا السَّيُفَ فِي الْقِرَابِ وَأَنْ لَا يُخُرِجَ مِنُ أَهْلِهَا أَحَدًا أَرَادَ أَنْ يَتُبَعَهُ وَلَا يَـمُنَعَ أَحَـدًا مِنُ أَصْحَابِهِ أَرَادَ أَنُ يُقِيمَ بِهَا فَلَمَّا دَخَلَهَا وَمَضَى الْأَجَلُ أتَوُا عَلِيًّا فَقَالُوا قُلُ لِصَاحِبِكَ

سدّنا براء فالله بن عازب كبته بين كه رسول الله والسَّاعَةُ م نے ذی قعدہ میں عمرہ کرنا حایا تو اہل مکہنے آپ کو مکہ میں داخل ہونے سے روک دیا۔حتی کہ آپ نے ان سے معاہدہ کرلیا کہ (آئندہ سال آئیں گے اور) تین دن تھہریں گے۔ جب لوگوں نے دیکھا بیو ہی تحریر ہے جس پر اس بات کا اقرار نہیں ہے۔ اگر ہم جانتے کہ آپ اللہ کے رسول ہیں تو ہم آپ کوکسی بات سے منع نہ کرتے مگر آپ محمد بن عبدالله بیں آپ نے فرمایا: "میں اللہ کا رسول ہوں،اور محمد بن عبداللہ ہوں۔'' آپ نے علی ذاللہ سے فر مایا: " متم محدر سول الله طَشْطَوْلَ كا لفظ منا دو " انهول نے كها: " الله كى قتم! مين است بهي نهين مناؤل كا" وسول الله ﷺ فَيْمَ نَهِ كَاعْدُ بَكُرُ لَيا آبِ الْجَهِي طَرْحَ لَكُمَا نَهِين جانتے تھے آپ نے محمد رسول الله طفي الله کی جگه پرایسے لکھا:'' یہ وہ تحریر ہے جس پر محمد بن عبداللہ نے مصالحت کی ہے۔ کہ وہ مکہ میں ہتھیار لے کر داخل نہ ہوں گے مگر تلوار اینے میان میں ہو گی۔اور اس شخص کو اپنے ساتھ لے کر نہیں جائیں گے جوان کے ساتھ جانا حابتا ہو۔ اور اپنے صحابہ میں ہے کسی کومنع نہیں کریں گے۔ جو مکہ میں رہنا عاے۔ جب آپ مکہ میں داخل ہوئے اور مدت گذرنے

فَلْيَخُورُ جُ عَنَّا فَقَدُ مَضَى الْأَجَلُ. • ك بعد انہوں نے علی ڈاٹٹو کے یاس آ کر کہا: "اپنے

کے بعد انہوں نے علی رہائی کے پاس آ کر کہا: ''اپنے ساتھی سے کہو یہاں سے چلے جائیں۔ کیونکہ مدت پوری ہوگئی ہے۔''

فواند: (۱) عمرہ حدیبیاس میں اگر چہ آپ کوروک دیا گیا تھا بہر حال محدثین نے اسے بھی عمرہ بی شارکیا ہے۔ (۲) صلح حدیبی گرائط سے اگر چہ سلمان دیے ہوئے معلوم ہوتے تھے لیکن یہ آپ طفی آئی آئے کی حکمت اور دُورس نگاہ تھی جس کی بناپر آپ طفی آئی نے اسے قبول کیا اور بعد میں ان شرائط کا مسلمانوں کے حق میں ہونا ثابت ہوگیا جس سے کفار بہت شیٹائے (۳) حالتِ احرام میں حرم کے اندراسلحہ لاکا نا جائز ہے۔ وق میں ہونا ثابت ہوگیا جس سے کفار بہت شیٹائے (۳) حالتِ احرام میں حرم کے اندراسلحہ لاکا نا جائز ہے۔ [65] بَابِ فِی عَبِیدِ الْمُشْرِ کِینَ یَفِرُ وَنَ إِلَی الْمُسْلِمِینَ مشرکین کے غلاموں کا بیان جو بھاگ کر مسلمانوں کے باس چلے جائیں مشرکین کے غلاموں کا بیان جو بھاگ کر مسلمانوں کے باس چلے جائیں

2550- أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبُو خَالِدٍ عَنِ الْحَجَّاجِ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ

مِقْسَمٍ.....

سیدنا ابن عباس و النی کہتے ہیں 'بی طفی آیا کے پاس طاکف سے دوغلام آئے۔آپ نے ان کوآ زاد کر دیاان

عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ قَالَ أَتَى النَّبِيِّ عَلَىٰ عَبُدَانِ مِنَ الطَّائِفِ فَأَعُتَفَهُمَا أَحَدُهُمَا أَحَدُهُمَا أَحَدُهُمَا أَحَدُهُمَا أَحَدُهُمَا أَجَدُهُمَا أَجَدُهُمَا أَبُو بَكُرَةً . ۞

میں ہے ایک ابوبکرہ خالفیز تھے۔

فوائد: بیره دیث اگر چه ضعیف ہے کین مسئلہ اسی طرح ہے کہ جب کسی کا فرکا غلام مسلمان ہوکر آجائے تو وہ آزاد ہوگا إلّا بید کہ اس مالک پہلے مسلمان ہوجائے جبیبا کہ آپ مطفی تالیم نے حدیبیہ سے قبل مکہ سے ہماگ آنے والے غلاموں بارے کہا (ھم عتقاء الله) (صحیح: ابوداؤد: 2349)

[66] بَابِ نُزُولِ أَهُلِ قُرَيْظَةَ عَلَى حُكْمِ سَعُدِ بُنِ مُعَاذٍ

اہل قریظہ کا سعد بن معاذ کے حکم پراتر نے کا بیان

2551 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا لَيْثُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ

 [◘] متفق عليه: البخارى، كتاب الصلح، باب كيف يكتب هذا ما صالح فلان بن فلان.....(2698) ومسلم، كتاب الحهاد، باب صلح الحديبية في الحديبية (4605)

[•] ضعيف: حجاج بن أرطاة ضعيف هي،أخرجه ابن ابي شيبه 511/12 (15444)و البيهقي،كتاب الجزية باب من جاء من عبيد اهل الحرب مسلما 230/9)

مكل يُفِينَ الْكَالِيْفِيُّ عَلَى السير على 345 من السير كتاب السير

سيّدنا جابر خالفيهُ بن عبدالله كهتيه بين - سعد بن معاذ رفافيهُ احزاب کے روز زخمی ہو گئے۔ان کی رگ کٹ گئی۔اسے بھول گیا۔اس سے خون بہنے لگا۔ آپ نے اسے دوسری دفعہ داغ دیا۔ پھران کا ہاتھ پھول گیا۔ جب انہوں نے دیکھا تو انہوں نے کہا:''اے اللہ! جب تک بنوقر بظہ سے میری آ تکھوں کو مُصْدُک نه پہنچے میری جان نه نکالنا۔ ' تو ان کی رگ کا خون رک گیا پھر ایک قطرہ بھی نہ ٹیکا۔حتی کہ وہ سعد خالٹی کے حکم پر اتر ہے۔ آپ نے اس کی طرف آ دمی بھیجا تو سعد نے حکم دیا: ''ان کے مرقبل کئے جا کیں اوران کی عورتیں اور بیجے زندہ رکھے جا کیں تا کہمسلمانوں کواس ے مدد پنجے۔ تو رسول الله طفي في نے فرمايا: " تم نے ان ے متعلق اللہ کے حکم کے مطابق درست فیصلہ کیا۔'' اور وہ حارسو تھے جب ان کے قتل سے فارغ ہوئے تو ان کی رگ پھر مھٹ گئی اور وہ فوت ہو گئے۔

عَنُ جَابِرِ بُن عَبُدِ اللَّهِ أَنَّهُ قَالَ رُمِيَ يَوُمَ الْأَحْزَابِ سَعُدُ بُنُ مُعَاذٍ فَقَطَعُوُا أَبْجَلَهُ فَحَسَمَةُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِالنَّار فَانُتَفَخَتُ يَدُهُ فَنَزَفَهُ فَحَسَمَهُ أُخُرَى فَانْتَفَخَتُ يَدُهُ فَلَمَّا رَأَى ذٰلِكَ قَالَ اللُّهُمَّ لَا تُخُوجُ نَفُسِي حَتَّى تُقِرَّ عَيُنِي مِنْ بَنِي قُرَيْظَةَ فَاسُتَمُسَكَ عِرُقُهُ فَمَا قَطَرَ قَطُرَةً حَتَّى نَزَلُوا عَلَى حُكُم سَعُدٍ فَأَرُسَلَ إِلَيْهِ فَحَكَمَ أَنُ تُقْتَلَ رِجَالُهُمُ وَتُسْتَحُيَى نِسَاؤُهُمُ وَذَرَارِيُّهُمُ يَسْتَعِينُ بهمُ المُسُلِمُونَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : ((أَصَبُتَ مُحَكُمَ اللَّهِ فِيهِمُ))وَ كَانُوُا أُرُبَعَ مِائَةٍ فَلَمَّا فُرغَ مِنْ قَتُلِهِمُ انْفَتَقَ عِرُقُهُ فَمَاتَ . •

فواند: (۱)"الأب جل" بعض نسخوں میں "الاک حل" ہے یہ بازو کے اندرایک رگ ہوتی ہے۔ (۲) زخم کوآگ سے واغنا جائز ہے۔ (۳) اہل عرب کواپنے یااپنے ساتھیوں کے فیصلے پراتارا جائے گا

نہ اللہ اوراس کے رسول کے فیصلے پر کیونکہ ہوسکتا ہے کہ ایسی صورت میں اللہ اور اس کے رسول کی منشاء کے مطابق فیصلہ نہ وسکے۔

الدرية ع وست المارية . -

[67] بَاب فِي إِنْحَرَاجِ النَّبِيِّ ﷺ مِنُ مَكَّةَ مَدسے نِي طِشْيَاتِيْمَ كُونكا لِنْ كَابِيان

2552 - أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي

◘ صحيح: اخرجه مسلم، كتاب السلام، باب لكل داء دواء واستحباب التداوى (5712) والترمذي، كتاب اليسير باب ماجاء في النزول على الحكم (1582)

كتاب السير كتاب الكاليعي الكاليعي

أَبُوْ سَلَمَةَ بُنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ

عبداللہ بن عدی بن الحمراءالز ہری کہتے ہیں' میں نے رسول أَنَّ عَبُدَ اللَّهِ بُنَ عَدِىّ بُن الحَمُرَاءِ الزُّهُرِيَّ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ عَلَيْهُ ہوئے فرمارہے تھے۔''اللہ کی تتم! تو اللہ کی سب سے بہتر وَهُوَ عَلَى رَاحِلَتِهِ وَاقِفًا بِالْحَزُورَةِ زمین ہے۔اور اللہ کے نزدیک بہت پیاری ہے۔اگر میں يَقُولُ وَاللُّهِ إِنَّكِ لَخَيْرُ أَرُضِ اللَّهِ تجھے سے نہ زکالا جاتا۔ تو مجھی نہ جاتا۔''

وَأَحَبُ أَرُضِ اللَّهِ إِلَى اللَّهِ وَلَوْلَا أَيِّي أُخُوجُتُ مِنْكِ مَا خَوَجُتُ . •

فعوائد: (۱) "الدخورة" بيدينه مين ايك بازار تفاجوكم سجدنبوي كي توسيع مين آكيا ے (ریکھیے مجم البلدان: 255/6) (۲) آپ کی خلاف منشا آپ النظامین کو مکہ سے نکالا جانا اس بات پردال ے کہ آپ النظامین انسانوں کی طرح انسان تھے ورنہ آپ النظامین کو آپ النظامین کی منشا، جاہت کے برعکس مجبورنه كياجاسكنا تفافرق صرف بيقاكه آب الطيئولي كوايسے فضائل حاصل تصحبن كى بناير آب الطيئولية سارى انیانت ہے برتر وافضل اوررپ کا ئنات کے بعد بزرگ ترین ہتی تھے۔

> [68] بَابِ فِي النَّهُي عَنُ سَبِّ الْأُمُوَاتِ مردوں کو برا کہنے کی ممانعت کا بیان

2553 حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ الرَّبِيعِ ٱنْبَأْنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ

قَالَتْ عَائِشَةُ قَالَ رَسُولُ اللهِ عِنْ ﴿ لا سيده عائشه وْاللها كَبْتَى بِين كهرسول الله عَنْ الله عَلَيْ إن فرمايا: ' 'نمر دوں کو برا نہ کہؤ کیونکہ انہوں نے جیسا کیا تھا اس کا

تَسُبُّوا الْأَمُواتَ فَإِنَّهُمُ أَفْضَوُا إِلَى مَا قَدُّمُو ١)). ٥

فوائد: مُر دوں کو بُرا بھلا کہنا انتہائی معیوب ہے ان کوان کے حال پرچھوڑ دینا جا ہے کیونکہ وہ اینے اعمال کی طرف جاچکے ہیں اوران کی جزا بھگت رہے ہیں ہاں اگر کسی برے کی موت میں سامان عبرت ہوتو لوگوں کونصیحت کے لیے اس کے حالات ہے آگاہ کرنے میں کوئی حرج نہیں (ان شاءاللہ)

[🜓] است اده ضعیف: کیمن بدهدیت سیح ب و کیم صحیح بان حبان (2708) نیز مندموسلی میس (5954) والو مریرة زالتن کی صديث اس كي شابد ب- وأخرجه ابن ماجه، كتاب المناسك، باب فضل مكه (3108)

[€]صحيح: أخرجه البخاري، كتاب الجنائز،باب ما ينهي من سب الأموات(1393)والنسائي، كتاب الجنائز،باب النهي عن سب الأموات (1935)

عتاب السير عَنْ الْكَالِيْعِيْ مَابِ السير عَنْ الْفَتُحِ [69] بَابِ لَا هِجُرَةَ بَعُدَ الْفَتُحِ فَعْ بَعْدَ الْفَتُحِ فَعْ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللْهِ عَلَى اللهِ عَلَى

2554 أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوْسَى عَنْ إِسْرَاثِيلَ عَنْ مَنْصُوْرِ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ طَاوْسِ

عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ قَالَ لَمَّا كَانَ يَوُمُ فَتُعِ سَيْدنا ابن عباس رَفَّتَنَ كَمِتَ بَيَ : فَحْ مَلَه كَ دن رسول مَكَّةَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَى ﴿ (لَا هِجُرَةً اللَّهِ عَلَى إلَى جَادِ مَلَى اللَّهِ عَلَى أَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّ

فواند: ہجرۃ قیامت تک کے لیے مشروع ہے جب بھی کہیں پراسلامی احکام کی پیروی میں مشکلات آرہی ہوں تو ایسی سرز مین کوخیر باد کہہ کر وہاں سے ہجرت کر جانا مطلوب شریعت ہے کین فتح مکہ کے بعد بیدلازم نہیں رہی البتہ جہاد اور نبیت جہاد لازم ہے۔

[70] بَابِ إِنَّ الْهِجُرَةَ لَا تَنْقَطِعُ بجرت منقطع نهيں ہوگي

عَنُ أَبِى هِنُدٍ البَّجَلِيّ وَكَانَ مِنَ السَّلَفِ قَالَ تَذَاكُرُوا اللهِ جُرَةَ عِنُدَ مُعَاوِيَةَ وَهُوَ عَلَى سَرِيُرِهٖ فَقَالَ سَمِعُتُ النَّبِيَّ عَلَى اللهِ عُلَى سَرِيُرِهٖ فَقَالَ سَمِعُتُ النَّبِيَ عَلَى اللهِ عُرَهُ النَّبِي عَلَى اللهِ عُرَهُ النَّوْبَةُ تَلاثًا وَلا تَنْقَطِعُ اللهِ جُرَهُ حَتَّى تَنْقَطِعُ التَّوْبَةُ تَلاثًا وَلا تَنْقَطِعُ التَّوْبَةُ حَتَّى تَطُلُعَ الشَّمُسُ مِنْ مَعُربها)). ٥ حَتَّى تَطُلُعَ الشَّمُسُ مِنْ مَعُربها)). ٥

ابو ہند بجلی جو بزرگ تھے۔ کہتے ہیں لوگوں نے معاویہ والٹیؤ کے پاس ہجرت کا ذکر کیا اور وہ اپنی چار پائی پر تھے۔ انہوں نے کہا: میں نے نبی سے کہتے کہا کہ انہوں نے کہا: میں نے نبی سے کیتے کہا کہ موجائے ۔ تین دہجرت منقطع نہیں ہوگی حتی کہ تو بہ منقطع ہو جائے ۔ تین بار فرمایا اور تو بہ منقطع نہیں ہوگی حتی کہ سورج مغرب سے طاہ ع یہ ''

فوائد: سابقه حدیث ملاحظه کیجے - نیز سورج کامخرب سے طلوع ہونا یہ قیامت کی علامت ہے

- ◘ صحيح البخاري، كتاب الحنائز، باب الإذ خرو الحشيش في القبر (1349) تعليقًا اور اسى طرح كتاب الحج، باب فضل الحرم (1587) ومسلم، كتاب الحج، باب تحريم مكه وصيدها وخلاها.....(3289)
- ❸ حسن: أحرجه ابوداؤد، كتاب الحهاد، باب في الهجرة هل انقطعت (2479) والبيه قي في اليسير، باب الرحصة بالإقامة في دار الشرك 17/9

الكَالِكَانِينَ الكَالِكِينَ عَنْ الكَالِكِينَ عَلَى السير على السير على السير على السير السير السير

جس کے ظہور کے بعد توبہ کا دروازہ بند ہوجائے گا اور قیامت قائم ہوجائے گی۔

[71].... بَابِ قَوُلِ النَّبِيِّ عَلَىٰ لَوُلَا الْهِجُرَةُ لَكُنْتُ امُرَأَ مِنَ الْأَنْصَارِ نِي طَلِيَّ عَلَىٰ الْكَنْتُ امْرَأَ مِنَ الْأَنْصَارِ نِي طِلْعَ عَلَىٰ الْمَارِكَا الْكِ آدَى مُوتَا ''كابيان فِي طِلْعَ عَلَىٰ الْمَارِكَا الْكِ آدَى مُوتَا ''كابيان

2556 - أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو عَنْ أَبِيْ سَلَمَةَ

عَنُ أَبِى هُورَيُوهَ قَالَ قَالَ رَسُولُ سِيّدنا ابو ہريرة وَاللَّهُ كَبِيّ بِين كه رسول الله طَيْقَ اللهِ
فوائد: (۱) کسی کا مددگار بننا بهت فضیلت والاعمل ہے کین یہ ایثار وقربانی کی وہ مثالیں جوانصار نے پیش کیں یہ انہیں کا خاصة حیں جس وجہ سے ان کو اسلام میں انتہائی فضیلت حاصل ہوئی تبھی تو آپ مشیقی آنہ ان میں سے ہونے کی خواہش خلاہر کرتے ہیں (۲) ہجرت انتہائی فضیلت والاعمل ہے بھی تو آپ مشیقی آنہا ان میں سے ہونے کی خواہش خلاہر کرتے ہیں (۲) ہجرت انتہائی فضیلت والاعمل ہے بھی تو آپ مشیقی آنہا ان میں سے ہونے کی خواہش خلاہر کرتے ہیں ۔

[72] بَابِ فِي التَّشُدِيدِ فِي الْإِمَارَةِ حكومت كم متعلق وعيد كابيان

2557 أَخْبَرَنَا حَـجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدِ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ

عَنُ أَبِى هُرَيُرَةَ أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ ﴿ اللَّهِ عَلَىٰ قَالَ مَا مِنُ أَمِيرٍ عَشَرَةٍ إِلَّا يُؤْتَى بِهِ يَوُمَ الْقِيَامَةِ مَنْ أُمِيرُ لَقَهُ الْعَقُ الْحَقُ أَوُ مَنْقِهِ أَطُلَقَهُ الْحَقُ أَوُ أَوْبَقَهُ . ﴿

سیدنا ابو ہررہ و و و اللہ کے ہیں کہ اللہ کے نبی مطابقہ نے فر مایا: ''جو محص دی آ دمیوں کا بھی حاکم ہے وہ قیامت کے دن اس طرح لایا جائے گا کہ اس کے ہاتھ گردن سے جکڑے ہوئے ہوں گے تو حق اسے چھڑائے گا یا ہلاک کر بھا ''

فوائد: امارت مسئوليت ويكيف كوبهت سرسبز وشاداب بيكن حقيقت مين كندچهري سي ذبح

[•] صحيح: أخرجه البخاري، كتاب مناقب الأنصار، باب قول النبي الله للهجرة لكنت امرا من الأنصار (3779) وصحيح ابن حباد (7269)

[🛭] صحيح: مسند الموصلي(6570)مجمع الزوائد(7079)

' میں انگرائی میں اور میں ہول ہوگر کتاب السیر ہوگی گئی گئی انگرائی میں گرانے ہونے کے مترادف ہے یہ نگل صراط پر جلنے کے مترادف ہے کہ ذرای بھول پُوک اندھی گہرائیوں میں گرانے

ہونے کے مترادف ہے یہ پُل صراط پر چلنے کے مترادف ہے کہ ذراس بھول پُوک اندھی گہرائیوں میں گرانے کاباعث بن جاتی ہے۔(العیاذ باللہ) کیونکہ عموماً جب کوئی عزیز عہدیدار لگ جائے تو اعزاء اقارب کو امید بندھ جاتی ہے ایسے موقع پرانصاف ،معیار پرقائم رہنا جوئے شیر لانے کے مترادف ہے۔

[73] بَابِ فِي النَّهُي عَنِ الظُّلُمِ ظلم كي ممانعت كابيان

2558 أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ أَخْبَرَنِي عَمْرٌ و قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ الْحَارِثِ

يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيْ كَثِيْرٍ قَالَ

سَمِعْتُ عَبُدَ اللَّهِ بُنَ عَمْرِو يُحَدِّثُ

سیّدنا عبدالله بن عمرو بظفهٔ بیان کرتے ہیں کہ نبی مطاق آیا نے فرمایا: ' دظلم سے بچو کیونکہ قیامت کے دن ظلم سے بہت

فوائد: ظلم قیامت کوتاریکیوں کا اور تاریکیاں بربادیوں کا باعث ہوں گی کیونکہ قیامت کونور ،روشی درکار ہوگی قرآن میں آتا ہے: ﴿یَوْمَ یَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِیْنَ الْمُنُوا انْظُرُونَا آنَفُرُونَا تَقْتِیسَ مِنْ نُوْدِ کُمْ قِیْلَ ارْجِعُوا وَرَائَکُمْ فَالْتَهِسُوا نُورًا ﴾ (الحدید:13) اس دن منافق مرداور عورتی ایمان والوں سے کہیں گے ذراکھہ وہم بھی تمہاری روشی حاصل کرلیں انہیں کہاجائے گا اپنے بیجھے روشن تلاش کرو۔۔لہذا بدیوں ،برائیوں سے بچنا جا ہے کہیں یہ محرومیوں کا باعث نہ بن جا کیں۔ (السلّٰہ اجرنا من الظلم)

[74] بَابِ إِنَّ اللَّهَ يُؤَيِّدُ هَذَا الدِّينَ بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ لِهُ الدِّينَ بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ كِي اللهِ عَلَى اللهِ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ
2559 ـ أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُـرِيةَ وَلَّيْنَ كَهِمْ بِينَ بَي اللَّهِ عَلَى اللهِ مَرية وَلَّيْنَ كَهُمْ بِين بَي اللهِ عَلَى إِنَّ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلْمُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللهُ عَلَى الللهُ عَلَى الللهُ عَلَى اللهُ عَلَى الللهُ عَلَى الللهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللللللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّهُو

((إِنَّ اللَّهَ يُؤَيِّدُ هُلَذَا اللَّذِينَ بِالرَّجُلِ تَعَالُ اس دين كي فاس آ دمي عدد كرتا ہے-''

الْفَاجِرِ)). 🍳

🛈 صحيح ابن حباد (5176)

[•] متـفـق عـليه: البخاري، كتاب الجهاد،باب أن الله يؤيد الدين بالرجل الفاجر(2897)ومسلم، كتاب الإيمان،باب لا يدخل الحنة إلا نفس مسلمة(301)

الكَالِيَّانُ الْكَالِيِّيْنِ الْكَالِيِّيْنِ الْكَالِيِّيْنِ السيرِ عَمَّالِ السيرِ عَمَّالِ السيرِ عَمَّالِ

فوائد: بخاری میں ابو ہریرہ زائین سے ہی یہ قصہ یوں ندکور ہے کہ ایک مدعی اسلام خص بارے آپ بیٹے ہے ہے نے فر مایا یہ جہنی ہے جب لڑائی کا وقت ہوا تو اس نے خوب مردائی کے جو ہر دکھائے اور زخم بھی کھائے اور وہ مرگیا آپ بیٹے ہی آپ ایسے بیٹے ہی نے فر مایا وہ آگ کی جانب گیا ہے۔ ابو ہریہ وہ اللہ کہ ہے ہیں قریب تھا لوگ مشکوک ہوجاتے اسی دوران آپ بیٹے ہی کو بتایا گیا وہ مرانہیں تھا ہوا یہ کہ است شدید زخم آئے تھے لہذوہ صبر نہ کرسکا اور خود کئی کرئی تو آپ بیٹے ہی نے اللہ اکبر پکارا اور فر مایا کہ میں اللہ کا بندہ ورسول ہوں پھر بلال کو تھم دیا کہ لوگوں میں اعلان کر دوجنت میں فقط مسلم میں ہوا ہے گہ اور آگے یہ فقرہ ذکر کیا ہے۔ (بخاری: 3062) سو اس واقعے سے معلوم ہوتا ہے کہ بسااوقات اللہ اللہ جہنم کو بھی دین کی فصرت کے لیے استعمال کر لیتے ہیں۔

[75] بَابِ فِي افْتِرَاقِ هَذِهِ الْأُمَّةِ السَّامِةِ عَلَيْ الْمُلَةِ السَّامِةِ اللَّمَةِ السَّامِةِ السَّامِي السَّامِةِ السَّامِي السَّامِةِ السَّامِةِ السَّامِةِ السَّامِةِ السَّامِةِ السَّامِي السَّامِةِ السَّامِةِ السَّامِةِ السَّامِةِ السَّامِةِ السَّامِي السَّامِةِ السَّامِةِ السَّامِيَّةِ السَّامِةِ السَّامِي السَامِي السَّامِةِ السَّامِةِ السَّامِ السَّامِ السَّامِ السَّامِيَ

2560 أَخْبَرَنَا أَبُو الْمُغِيرَةِ حَدَّثَنَا صَفْوَانُ حَدَّثَنِيْ أَزْهَرُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْحَرَازِيُّ عَنْ أَبِي عَامِرٍ

هُوَ عَبْدُ اللهِ بْنُ لُحَيِّ الْهَوْزَنِيِ عَنُ مُعَاوِيَةَ بُنِ أَبِى سُفُيَانَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَنَى مُعَاوِيَةَ بُنِ أَبِى سُفُيَانَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَنَى مُنَّ قَامَ فِينَا فَقَالَ: ((أَلا إِنَّ مَنُ كَثَرَ قَبُلَكُمُ مِنُ أَهُلِ الْكِتَابِ افْتَرَقُوا عَلَى ثِنْتَيُنِ وَسَبْعِينَ مِلَّةً وَإِنَّ هَذِهِ الْأُمَّةَ عَلَى ثِنْتَيُنِ وَسَبْعِينَ مِلَّةً وَإِنَّ هَذِهِ الْأُمَّة

عَلَى ثِنْتَيُنِ وَسَبُعِينَ مِلَّةً وَإِنَّ هَذِهِ الْأُمَّةُ سَتَفُتَرِقُ عَلَى ثَلَاثٍ وَسَبُعِينَ اثْنَتَانِ وَسَبُعِينَ اثْنَتَانِ وَسَبُعِينَ اثْنَتَانِ وَسَبُعِينَ اثْنَتَانِ وَسَبُعُينَ اثْنَتَانِ وَسَبُعُينَ اثْنَتَانِ

وسبعسون يعيى مسورِ رو بِعد بيني الُجَنَّةِ)). [قَالَ عَبُد اللَّهِ الُحَوَازُ قَبِيلَةٌ

مِنُ أَهُلِ الْيَمَنِ]. •

سیّدنا معاویہ بن ابو سفیان سے منقول ہے کہ رسول اللہ طفی آئے نے ہمیں کھڑے ہو کر فرمایا: '' خبردار! تم سے پہلے اہل کتاب کے بہتر فرقے ہو گئے۔ اور اس امت کے تہتر فرقے ہول گے ۔ اور اس امت کے تہتر فرقے ہول گے ۔ اور ایک جنت میں ہول گے اور ایک جنت میں ہوگا۔'' [عبداللہ کہتے ہیں :الحراز یمن کا ایک قبیلہ ہے۔]

فوائد: سبنی اسرائیل کی طرح بیدامت بھی فرقوں میں بے گی بعنی تہتر فرقوں میں ان میں سے صوف ایک فرقه ہی جنتی ہوگا۔ ترندی کی روایت میں ہے صحابہ رہنا ہے دریافت کیا "من هے یار سول الله قال ما انا علیه و اصحابی . " وہ کون سا ہوگا فرمایا: جومیرے اور میرے صحابہ رہنا ہے طریق پر

الكالم المسير عن الكالم
ہوگا یعنی قرآن وسنت پر کیونکہ اس کے علاوہ تیسری چیز اس وقت موجود ہی نہ تھی۔لہذا لقرآن والحدیث ہی کامیالی کی ضانت ہے۔

[76] بَابِ فِي لُزُومِ الطَّاعَةِ وَالُجَمَاعَةِ امیر کی اطاعت کرنے اور جماعت کے ہمراہ رہنے کا بیان

2561 حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنِ الْجَعْدِ أَبِي عُثْمَانَ حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ الْعُطَارِدِيُّ قَالَ

سیّدنا عبدالله بن عباس والنّه سے منقول ہے کہ نبی طفی عیام نے فرمایا '' جو شخص اینے امیر میں کوئی ایس بات دیکھے جو اسے بری معلوم ہوتو وہ صبر کرے۔ کیونکہ جوشخص جماعت ہے ایک بالشت بھی الگ ہوکر مرے گا وہ جاہلیت (کفر) کی موت مرے گا۔''

سَحِعْتُ ابُنَ عَبَّاسِ يَرُويُدِهِ عَنِ النَّبِيِّ عِنَّكُ قَالَ: ((مَنُ رَأَى مِنُ أَمِيرِهِ شَيئًا يَكُرَهُهُ فَلْيَصُبِرُ فَإِنَّهُ لَيُسَ مِنُ أَحَدٍ يُفَارِقُ الُجَمَاعَةَ شِبُرًا فَيَمُوتُ إِلَّا مَاتَ مِيْتَةً جَاهلِيَّةً)). •

فوائد: (۱) مسلمانوں کی جماعت جس کا امیر، خلیفہ تعین ہواس سے چیٹے رہنا واجب ہاس سے علیحد گی جاہلی موت کا باعث ہے (۲) امیر کے ظلم براس کی اطاعت سے ہاتھ نہیں کھنچنا۔

777 بَابِ مَنُ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلَا حَ فَلَيْسَ مِنَّا جس نے ہم پرہتھیاراٹھایاوہ ہم ہے ہیں

2562 أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ بْنُ عَمَّارِ

حَدَّثَنَا إِيَاسُ بُنُ سَلَمَةَ عَنُ أَبِيهِ عَن اللَّ اللَّ بن سلمة "أيخ والديفال كرت بين وه روايت النَّبِي عِنْ قَالَ: ((مَنُ سَلَّ عَلَيْنَا ﴿ كُرِتْ بِينَ كُه نِي طِنْكَوْلَمْ نَ فَرَمَايَا: "جَس نَ بَم ير ہتھیاراٹھایاوہ ہم سےنہیں۔''

السِّلاحَ فَلَيْسَ مِنَّا)). 6

ف ایسا کرنے والامونین کی جماعت سے نکل میں میں میں میں کہ جماعت سے نکل جاتا ہے کیونکہ نداق میں بھی ممکن ہے تانا گیا اسلحہ نقصان کاباعث بن جائے اوراسلای جعیت ایک مجاہد سے

[📭] متافيق عليه: البخاري، كتاب الفتل، باب قول النبيُّ ستروك بعدي اموراً تنكرونها(7052) ومسلم، كتاب الإمارة الباب وجوب ملازمة جماعة المسلمين (4767)

² صحيح: احرجه مسلم، كتاب الإيمان، باب قول النبي من حمل علينا السلاح فليس منا (277).

حكر يَتِنَىٰ الْخَالِيْوَيِّ عَلَى السير عَيْنَ الْخَالِيْوَيِّ عَلَى السير عَلَى السير عَلَى السير

محروم ہوجائے۔

[78] بَابِ الْإِمَارَةُ فِي قُرَيْشٍ حَومت قريش مِن ہوگ

2563 - أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ عَنْ شُعَيْبِ بْنِ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ كَانَ مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْر بْن مُطْعِم

سیدنا معاویہ وہاتی کہتے ہیں میں نے رسول الله طفی آیا ہے اس سے سافر ماتے تھے: ''یہ منصب قریش میں رہے گا جوان سے دشنی کرے گا الله تعالی اسے ذلیل کرے گا۔ جب تک وہ دین کوقائم رکھیں گے (ایسابی ہوگا)۔''

يُحَدِّثُ عَنُ مُعَاوِيَةَ أَنَّهُ قَالَ وَهُوَ عِنْدَهُ فِي وَفُدٍ مِنُ قُرَيُشٍ إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ عَلَي يَقُولُ: ((إِنَّ هَـذَا الْأَمُرَ فِي قُرَيُشٍ لَا يُعَادِيهِمُ أَحَدٌ إِلَّا كَبَهُ اللهُ عَلَى وَجُهِهِ مَا أَقَامُوا الدِّينَ)). •

فوائد: قریش جب تک دینداری اورللّهیت کے پابندر ہیں خلافت کے وہی سب سے زیادہ حقدار ہوں گے ۔بصورت دیگران کاحق خلافت ختم ہوجائے گا۔

[79].... بَابِ فِي فَضُلِ قُرَيُشٍ قريش كى فضيلت كابيان

2564 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هُرْمُزَ الْأَعْرَج

سيّدنا ابو ہررية وَلَيْنَيْ كَهِمْ بِين رسول الله عَلَيْكَوْمْ نَهُ مِلْيا: "قرامايا: قرامايا: قراماي

عَنُ أَبِسَى هُسَرَيُسَرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَنُ أَبِسَى هُسَرَيُسَرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَنْ اللّهِ عَنْ اللّهِ عَلَيْسَ وَالْأَنْصَارُ وَمُزَيْنَةُ وَجُهَيُنَةُ وَأَسُلَمُ وَغِفَارٌ وَأَشْجَعُ لَيُسَ لَهُمْ مَوُلَى دُونَ اللّهِ وَرَسُولِهِ)). ٥ لَهُمْ مَوُلَى دُونَ اللّهِ وَرَسُولِهِ)). ٥

2565 حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ عَلِيِّ بْنِ زَيْدٍ.....

[◘]صحيح: اخرجه مسلم، كتاب الإيمان، باب مناقب قريش(3500) واحمد94/4 والطبراني الكبير 338/9(780)

② صحيح البخارى، كتاب فضائل الصحابه، باب من فضائل غفارو أسلم، جهينة وأشجع (6386) ومسلم في فضائل الصحابه، باب من فضائل غفارو حزينة وجهينة (2520)

353 کتاب السیو کتاب السیو کتاب السیو سیّدنا عبدالرحمٰن بن ابوبکرہ اپنے والد سے نقل کرتے ہیں کہ نبی مین ایک کی فیارا کیا خیال ہے اگر اسلم اور غفارا پنے حلیف اسد اور غطفان سے بہتر ہوں تو تم انہیں خیارے میں یاؤ گے؟ انہوں نے کہا: ''جی ہاں۔'' آپ نے فرمایا:'' ہے شک وہ ان سے بہتر ہیں۔'' پھر آپ نے بند آواز سے فرمایا:'' تمہارا کیا خیال ہے اگر مزینہ اور جہینہ ، تمیم اور عامر بن صعصعہ سے بہتر ہوں تو کیا تم انہیں جہینہ ، تمیم اور عامر بن صعصعہ سے بہتر ہوں تو کیا تم انہیں

خبارے میں یاؤ گے۔'' انہوں نے کہا:''جی ہاں۔'' آپ

نے فرمایا: ''وہ ان سے بہتر ہیں۔''

عَنُ عَبُدِ الرَّحُمَنِ ابْنِ أَبِي بَكُرَةَ عَنُ أَبِيهِ إِنَّ النَّبِيَ عَنَ أَبِيهِ إِنَّ النَّبِيَ عَنَ أَلَا النَّبِيَ عَنَ الْآلَاثُ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْ قَالَ: ((أَرَأَيُتُمُ إِنُ كَانَ أَسُلَمُ وَغِفَارٌ خَيْرًا مِنَ الْحَلِيُفَيُنِ أَسَدٍ وَغَطَفَانَ أَتَرَوُنَهُمُ خَيْرٌ مِنْهُمُ)). قَالُوا: نَعَمُ قَالَ: ((فَإِنَّهُمُ خَيْرٌ مِنْهُمُ)). قَالَ: ((أَفَرَلُيْتُمُ إِنْ كَانَتُ مُزَيْنَةُ وَجُهَينَةُ خَيْرًا مِنُ تَعِيمٍ وَعَامِرِ بُنِ وَجُهَينَةُ خَيْرًا مِنُ تَعِيمٍ وَعَامِرِ بُنِ وَجُهَينَةُ خَيْرًا مِنُ تَعِيمٍ وَعَامِرِ بُنِ صَعْمَ عَةَ وَمَدَّ بِهَا صَوْتَنَهُ أَتُرَونَهُمُ صَعْمَةً وَمَدَّ بِهَا صَوْتَنَهُ أَتُرَونَهُمُ خَيْرً وَنَهُمُ خَيْرً وَنَهُمُ خَيْرًا مِنْ نَعْمُ. قَالَ: ((فَإِنَّهُمُ خَيْرُونَهُمُ خَيْرً وَلَهُمُ خَيْرً وَلَهُمُ عَلَيْرَ وَلَهُمُ وَعَلَيْكُ وَلَا الْ وَلَا الْ وَلَا الْ الْ فَالَهُمُ مُ اللَّهُ الْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْمِلُهُ اللَّهُ الْمُلْمُ اللَّهُ الْمُلْمُ اللَّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الل

الكانِينَ الكانِينَ

خَيْرٌ مِنْهُمُ)). 0

فواند: امام نووی را شینه فرماتے ہیں ان قبائل کو بیفضیلت اسلام میں سبقت اور اسلامی احکام کی احکام کی ادائیگی کی بناری تھی ۔ (تنقیح الرواق) واللہ اعلم ۔

[80].... بَابِ فَضُلِ أَسُلَمَ وَغِفَادٍ اللم اورغفارقبيله كى فضيلت كابيان

2566 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ هُوَ ابْنُ الْمُغِيرَةِ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلالٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الصَّامِتِ

سیدنا ابو ذر بنائی کہتے ہیں کہ رسول الله مطبی کے خرمایا: ''الله تعالی قبیلہ غفار کی مغفرت فرمائے اور قبیلہ اسلم کو

عَنُ أَبِى ُ ذَرٍّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ :((غِفَارٌ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا وَأَسُلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ ﴾. €

2567 أَخْبَونَا الْحَكُمُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ

سلامت رکھے۔''

دِينَارِ

[•] اسناده ضعيف: جب كربيرهديث متفق عليه ب- أخرجه البخاري، في المناقب، باب ذكر أسلم وغفار ومزينه (3516-3515) ومسلم، في فضائل الصحابه، باب من فضائل غفارو أسلم (2522)

[€] صحيح: أخرجه مسلم، كتاب فضائل الصحابه، باب دعاء النبيّ لغفارو أسلم (6376-6377) واحمد 147/5-148

الكاليمين الكاليمين عناب السير عناب السير عناب السير عناب السير عناب السير عناب السير المناب السير المناب السير

سیّدنا این عمر خُوانیون کہتے ہیں کہرسول الله طِنْفَطَیْم نے فرمایا:
"الله تعالی نے قبیلہ غفار کو مغفرت کی اور قبیلہ اسلم کو
سلامت رکھا۔ اور عصیہ نے الله اور اس کے رسول کی نا
فریانی کی۔"

عَنِ ابُنِ عُمَسَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((غِفَارٌ غَفَرَ اللَّهُ لَهَا وَأَسُلَمُ سَالَمَهَا اللَّهُ وَعُصَيَّةُ عَصَتِ اللَّهَ وَرُسُولَهُ)). •

فوائد: (۱) غفارواسلم توقبیلی بین جب که عصیة بی قبیله یا جماعت کانام ہے (۲) شرح النة میں ہے کہ اسلم وغفار چونکه بلاجنگ مسلمان ہوئے تھے لہذا آپ سے گیار نے ان کے لیے دعا کی ۔غفار جاج کا سامان چرانے میں ملزم تھے تو آپ سے آئے نے ان کی اس برائی کے مٹادینے کی دعا کی۔ اور عصیة نے برمعونة کے پاس قراء کوشہید کیاتھا اور آپ سے تھے تو آپ سے اور آپ سے تھے الرواة: کرمونة کے پاس قراء کوشہید کیاتھا اور آپ سے تھے تارواة: این کے لیے بددعا کرتے رہے (تنقیح الرواة: 202/2)

[81] بَابِ لَا حِلْفَ فِي الْإِسُلَامِ اسلام میں بری بات پراتفاق کرنے کے عدم جواز کا بیان

2568 أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شَرِيكٌ عَنْ سِمَاكٍ عَنْ عِكْرِمَةَ

عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ قِيلَ لِشَرِيكٍ عَنِ النَّبِيِ عَنِ النَّبِيِ عَنِ النَّبِيِ عَنِ النَّبِيِ عَنِ النَّبِي عَنِ النَّبِي عَنِ الْنَجَاهِلِيَّةِ لَمُ الْاِسْلَامُ إِلَّا شِدَّةً وَحِدَّةً)). • يَزِدُهُ الْإِسْلَامُ إِلَّا شِدَّةً وَحِدَّةً)). •

سیّدنا ابن عباس و النی سے منقول ہے اسلام میں بری بات پر اتفاق کرنا جائز نہیں اور جاہلیت کی اچھی بات پر معاہدے کو اسلام نے اور بھی مضبوط اور طاقت ور بنا دیا ہے۔ شریک سے کہا گیا: کیا یہ نبی سے منقول ہے؟ انہوں نے کہا: ''جی بال۔''

فوائد: (۱)" جلف" اصل میں ایک دوسرے کی نصرت و مدد کامعاہدہ ہے اسلام میں فقط وہی حلف ، اسلام میں فقط وہی حلف ، حلف قابل قبول ہے جومظلوم کی مدد صلد رحمی اور حق کی نصرت کے لیے کیا گیا ہو۔ (۲) کفار سے ایسے جلف ، معاہدے اب درست نہیں البتہ بھی اسلام ہوا ہوتو اسے برقر اررکھاجائے گا۔ (۳) اس حدیث میں مسلمانوں کو جارحیت کاسبق دیا جارہ ا ہے کہ کافروں سے صلح کے معاہدے نہیں کرنے بلکہ میدانوں میں ان کی سرکو بی

❶ متفق عليه: البخاري،كتاب المناقب،باب ذكر أسلم وغفارو مزينة(3513)ومسلم،كتاب فضائل الصحابه، باب دعا النبيّ لغفاروأسلم(6382)

• اسنادہ ضعیف: کین مدیث سی ہے۔ صحیح ابن حباد (4370) نیز متدموسلی میں (6902) میں ام سلمه اور صحیح ابن حباد (4371) میں جیرین طعم کی حدیثیں اس کی شاہر ہیں۔

کر کے فتنے کا خاتمہ کرنا ہے۔ ہاں اگر کبھی تیاری بھر پورنہ ہو مسلمان کمزور ہوں تو ایسی صورت میں صلح حدیبیہ کوئمونہ بنایا جاسکتا ہے۔ (واللہ اعلم)

[82].... بَابِ فِی مَوُلَی الْقَوْمِ وَابُنُ أُحُتِهِمْ مِنْهُمُ الْحَوْمِ وَابُنُ أُحُتِهِمْ مِنْهُمُ اللهِ كَالَ اللهُ مَاللهُ اللهُ عَلَى الْحَلَ سِے

2569_ أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْم.....

شعبہ کہتے ہیں میں نے معاویہ بن قرہ سے کہا: کیا انس زائشی ذکر کرتے تھے کہ نبی مطفی آئے نے نعمان بن مقرن سے فرمایا: ''کسی قوم کا بھانجا اسی قوم میں داخل ہے؟۔'' کہا:

2570 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُغِيرَةِ حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ

کثیر بن عبداللہ اپنے والد سے اور وہ اپنے دادا سے نقل کرتے ہیں کہ رسول اللہ طلط آناد
کرتے ہیں کہ رسول اللہ طلط آنے فرمایا: '' قوم کا آزاد
کردہ غلام' قوم کا حلیف ہے اور قوم کا بھانجا اس میں داخل

عَنُ كَثِيُرِ بُنِ عَبُدِ اللّهِ عَنُ أَبِيُهِ عَنُ جَنُ جَدُ أَبِيهِ عَنُ جَدَّةً : جَدِّهِ قَالَ دَسُولُ اللّهِ عَنْ : ((مَوْلَى الُقَوُم مِنْهُمُ وَحَلِيفُ الْقَوُم

رُرُ رُوكِي مِنْهُمُ وَابُنُ أُخُتِ الْقَوُمِ مِنْهُمُ)). ﴿

فوائد: تومیں ، قبائل اگر چه باپ دادوں کی طرف سے وجود میں آتے ہیں کی شریعت کے مطابق بھانجا اور آزاد کردہ غلام بھی توم کا حصہ شار ہوگا۔

[83].... بَابِ فِي الَّذِي يَنْتَمِي إِلَى غَيْرِ مَوَالِيهِ

اس شخص کے متعلق جوآ قاؤں کے علاوہ کسی اور کی طرف نسبت کرے

2571 حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ الدَّسْتَوَائِيُّ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ غَنَمِ

[●] صحيح: أخرجه البحاري، كتاب فرض الخمس، باب ماكان النبيّ يعطى المؤلفة قلوبهيم وغير هم من الخمس (3156) ومسلم كتاب الزكاة، باب أعطاء المؤلفة قلوبهم على الاسلام (1059)

[•] اسناده ضعيف: كثير بن عبدالله ضعيف ب ليكن مديث تن جو كيحت مجمع الزوائد (960-961-962) اوروكيحت نصب الداية 148/4-149 اور تلخيص الحبير 214/4

حري المسار السير عنه الماليون عنه السير عنه السير عنه المسار السير عنه المسار السير المسار السير المسار الم

سیّدنا عمر و بن خارجہ کہتے ہیں: میں نبی طفیّق آن کی اونٹی کے
ینچے کھڑا تھا میں نے آپ کو بیفرماتے ہوئے سنا:''جواپی
نبست اپنے باپ کے علاوہ کسی اور کی طرف کرے
،یا(کوئی آزاد کردہ غلام) اپنے آقاؤں کے علاہ دوسروں
کی طرف اپنی نبست کرے،اس پر اللّٰہ کی اور فرشتوں'کی
اور تمام لوگوں کی لعنت ہے۔اس کی نفل اور فرض عبادت
قبول نہ ہوگی۔''

عَنُ عَمُرِو بُنِ خَارِجَةَ قَالَ كُنْتُ تَحُتَ نَاقَةِ النَّبِيِّ فَيُ : ((فَسَمِعُتُهُ يَقُولُ مَنِ الْآغِي إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ أَوِ انْتَمٰى إِلَى غَيْرِ مَوَالِيُهِ مَوَ النَّهِ لَعُنَةُ اللَّهِ مَوَالِيُهِ وَعُنَةً اللَّهِ وَالْمَالِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ لَا يُقْبَلُ وَالْمَالُ كَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرُفٌ وَلَا عَدُلٌ)). •

2572 ـ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرِ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ عَاصِمِ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ

عَنُ سَعُدٍ وَأَبِى بَكُرَةَ أَنَّهُ مَا حَدَّثَا أَنَّ رَسُعُدٍ وَأَبِى بَكُرَةَ أَنَّهُ مَا حَدَّثَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ عِنْ قَالَ: ((مَنُ اذَّعٰى إلٰى عَيْرِ أَبِيهِ وَالْجَنَّةُ عَيْرُ أَبِيهِ فَالُجَنَّةُ عَلَيْهُ مَرَامٌ)). • عَلَيْهِ حَرَامٌ)). •

سیّدنا سعد فرانش اور ابو بره وفرانش بیان کرتے بین که رسول الله طفی ایر کے علاوہ کسی اور الله طفی آئی ہے کہ وہ اس کا کی طرف نسبت کرے حالانکه وہ جانتا ہے کہ وہ اس کا بای نہیں تو اس پر جنت حرام ہے۔''

فواف است بوت ہوئے بچ کا اپنے باپ کوچھوڑ کرکسی اور کی طرف منسوب ہونا کبیرہ گناہ ہے۔ اس کے لیے یقطعی جائز نہیں اس جب لوگوں نے آپ بیٹے آئی کے منہ بولے بیٹے زید ہوائی کو زید بن محمد بیٹے آئی کھر آئی نام سے پکارا تو اللہ نے ڈانٹ دیا اور فر مایا: ﴿ وَمَا جَعَلَ اَدْعِیَاتَ کُمْ اَبْنَاتَ کُمْ ذٰلِکُمْ قَوْلَ کُمْ اَبْنَاتًا کُمْ ذٰلِکُمْ قَوْلَ کُمْ بَانَ فَعَ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ ال

[•] اسناده ضعیف: صاحب تخ تی نے شہر بن حوشب پر مندموسلی (6370) میں فیصلہ کن بحث کی ہے، أحر جه الترمذي، كتاب الوصايا، باب ماجاء لا وصية لوارث (2712)

متفق عليه: البخارى، كتاب المغازى، باب غزوة الطائف في شوال سنة ثمان (4326) و مسلم، كتاب الإيمان، باب بيان حال إيمان من رغب عن ابيه و هو يعلم (216-217)



۱ ومن كتاب البيوع خريد وفروخت كے بيان ميں

"بيوع" بي كى جمع بي ،باب باع يبيع عصدر إلى كامعنى، بينا، فروخت كرنا إلى المطلاحي طور برابن قدامہ رائیں اس کی یوں تعریف کرتے ہیں کہ'' اپنا مال دوسرے اور دوسرے کامال اپنی ملکیت میں لتے ہوئے تبادلہ کرنا''(المغنی 559/3)

ر1ً].... بَابِ فِي الْحَلَالُ بَيِّنٌ وَالْحَرَامُ بَيِّنٌ حلال اورحرام کے واضح ہونے کا باب

2573 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمِ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ

سیّدنا نعمان بن بشیر والنیه کہتے ہیں میں نے رسول ہےان کے علاوہ کچھ مشتبہ چیزیں ہیں جن کواکٹر لوگ نہیں جانتے۔ جو شخص مشتبہ چیزوں سے نیج گیا اس کی عزت اور دین محفوظ ہو گئے۔ جومشتبہ چیزوں میں پڑ گیا وہ حرام میں داخل ہو جائے گا۔ اس چرواہے کی طرح (جو شاہی) چراگاہ کے اردگرد جانور چراتا ہے۔ ہوسکتا ہے کوئی جانور اس میں داخل ہو جائے۔ اور ہر بادشاہ کی جراگاہ ہوتی ہے۔ خبر دار! اللہ تعالیٰ کی جراگاہ اس کی حرام کردہ چیزیں ہیں۔ خبردار! جسم میں ایک فکڑا ہے جب وہ درست ہوتا

سَمِعُتُ النُّعُمَانَ بُنَ بَشِيرٍ يَقُولُ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((الُحَلالُ بَيِّنٌ وَالْحَرَامُ بَيِّنٌ وَبَيْنَهُمَا مُتَشَابِهَاتٌ لَا يَعْلَمُهَا كَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ فَمَنْ اتَّقَى الشُّبُهَاتِ اسْتَبُرَأَ لِعِرُضِهِ وَدِينِهِ وَمَـنُ وَقَـعَ فِي الشُّبُهَاتِ وَقَعَ فِي الُحَرَام كَالرَّاعِي يَرُغَى حَوُلَ الْحِمَى فَيُوشِكُ أَنْ يُوَاقِعَهُ وَإِنَّ لِكُلِّ مَلِكٍ حِمَّى أَلا وَإِنَّ حِمَى اللَّهِ مَحَارِمُهُ أَلا وَإِنَّ فِي الْجَسَدِ مُضْغَةً إِذَا صَلُحَتُ

المرابيوع عن الماليوع عن المبيوع المبيع
صَلَحَ الْجَسَدُ كُلُّهُ وَإِذَا فَسَدَتُ فَسَدَ بَهِ تَوْ يُوراجِهم درست بوتا ہے۔ جب وہ خراب ہوتا ہے تو الْجَسَدُ كُلُّهُ أَلَا وَهِيَ الْقَلْبُ)). • پوراجِهم خراب ہوتا ہے۔ خبر دار! وہ دل ہے۔'

فوائد: (۱) دین میں بعض امور متشابہ ہیں جنہیں قرآن کے مطابق رایخون فی ابعلم ہی جانتے ہیں عام بندے کی رسائی ان تک ممکن نہیں اس لیے عامی کے لیے ان سے بچنا ہی دین وعزت کی حفاظت کاباعث ہے (۲) ایک غیر محسوس ،غیر واضح چیز کومحسوس مثال کے ذریعے ذہن کے قریب کردینا مسنون اور بات سمجھانے کا ابلغ طریقہ کار ہے (۳) جسم کی اصلاح کا دارومدار دل کی اصلاح پر ہے۔

[2] بَابِ دَعُ مَا يَرِيبُكَ إِلَى مَا لَا يَرِيبُكَ مشتبہ چیزوں کوچھوڑ کرواضح کواختیار کرنے کا بیان

2574 أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ أَبِيْ مَرْيَمَ

عَنُ أَبِى الْحَوْرَاءِ السَّعُدِيِّ قَالَ قُلُتُ ابو حوراء سعدى كَبَتِ بِي مِين مِن عَلَى اللَّهُ عَنُ مَسُولِ الله عَلَيْ مَا تَحْفَظُ مِنُ رَسُولِ الله عِيهِ آپ ورسول الله طَيْعَ آلَةً كَلُون كَ بات ياد ہے؟ اللّهِ عَلَىٰ قَالَ بِسَأَلَهُ رَجُلٌ عَنْ مَسُأَلَةٍ لَا انہوں نے كہا: ''آپ سے كى آ دمى نے مسئلہ يو چھا جھے الله عَلَىٰ قَالَ بِسَأَلَهُ رَجُلٌ عَنْ مَسُأَلَةٍ لَا معلوم نہيں كونيا مسئلہ تھا آپ نے فرمايا: ''مشتبہ چيزوں كو أَدُرِىٰ مَا لا يَرِيبُكَ)). • چھوڑ كر غير مشتبہ چيزوں كو اختيار كرو۔''

فوائد: مشکوک کاموں کوچورٹر کرغیرمشکوک کواپنانا بیسنت کی پیروی اورایمان کی علامت ہے کیونکہ شکوک کام محربات کی سرحدان کا کنارہ ہیں حدیث میں اس کی مثال یوں بیان دی گئی ہے "کسراعسی یسری حسول السحمیٰ یوشک ان یقع فیه . " یعنی مشکوک کام کرنے والے کی مثال ایسے چرواہے کی طرح ہے جو چراگاہ (محربات) کے گرد (بکریاں) چراتا ہے قریب ہے کہ وہ چراگاہ میں وافل ہوجائے۔ محربے جو چراگاہ شکینہ مان بن حرب حد قنا حمّادُ بن سکمة عن الزَّبیْر أَبِی عَبْدِ السَّلامِ عَنْ أَیُّوْبَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مِحْرَزِ الْفِهْرِیِ

 [◘] متفق عليه: كتاب الإيمان، باب فضل من استراء لدينه (52) ومسلم، كتاب المساقة، باب أحذ الحلال وترك الشبهات
 (4070)

[€] صحيح ابن حبان(722)اخرجه الترمذي في صفة القيامة،باب (60)(2518)والنسائي، كتاب الأشرية،باب الحث على ترك الشبهات(5727)

359 كتاب البيوع ك يَّانَ الْكَالِيْفَ

سيّدنا وابصه رخالفهٔ بن معبد اسدى وفالفهُ كہتے ہیں كه رسول الله الشَّالِيَّةُ نِي مِحْ سے فرمایا: "تم گناہ اور نیکی کے متعلق يوجهرے ہو؟" میں نے كہا: "جى بال-" آپ نے اپنى انگلیاں اکٹھی کر کے اینے سینہ پر ماریں۔ اور آپ نے تین بارفر مایا: ''اے وابصہ! اینے دل سے فتو کی یو چھ' اینے نفس سے یو چھ نیکی وہ ہے جس سے دل مطمئن ہو۔ گناہ وہ ہے جس سے ول میں کھٹا ہو۔ اور سینے میں شک کھبرے اگرچەلوگ تخھے بار بارفتویٰ دیں۔''

عَن وَاسِصَةَ بُن مَعْبَدِ الْأَسَدِيّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَيْ قَالَ لِوَابِصَةَ ((جنَّتَ تَسُأَلُ عَن البُرِّ وَالْإِثْمِ؟)) قَالَ قُلُتُ: نَعَمُ. قَالَ فَجَمَعَ أَصَابِعَهُ فَضَرَبَ بِهَا صَدُرَهُ وَقَالَ ((استَفُتِ نَفُسَكَ استَفُتِ قَلْبَكَ يَا وَابِصَةُ ثَلَاثًا الْبِرُّ مَا اطُمَأَنَّتُ إِلَيْهِ النَّفُسُ وَاطُمَأَنَّ إِلَيْهِ الُقَلُبُ وَالْإِثْمُ مَا حَالَى فِي النَّفُس وَتَودَّدَ فِي الصَّدُرِ وَإِنَّ أَفْتَاكَ النَّاسُ

وَأَفْتُهُ كُ). 0

فوائد: بینکی وگناه کی جامع تعریف اورمتفقه علامت بیکن بیعلامت ان نفوس قدسید کے لیے ہے جن کی فطرتیں سالم ہوں گنا ہوں کی آلود گیوں سے بگڑنہ گئی ہوں کیونکہ ایک عادی گنا ہگار بڑے سے برا گناه یوں اطمینان سے سرانجام دیتا ہے جیسے کوئی معروف اور نیکی کا کام کررہا ہو۔

[3] بَابِ فِي الرِّبَا الَّذِي كَانَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ حاہلیت کے سود کے متعلق کا بیان

2576 حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ أَخْبَرَنَا عَلِيٌّ بْنُ زَيْدٍ ...

عَنُ أَبِي حُرَّةَ الرَّقَاشِيِّ عَنُ عَمِّهِ قَالَ كُنُتُ آخِذًا بِزِمَام نَاقَةِ رَسُولِ اللَّهِ عَنَيْ فِي أَوْسَطِ أَيَّامِ التَّشُرِيقِ أَذُوْدُ النَّاسَ عَنُهُ فَقَالَ: ((أَلا إِنَّ كُلَّ رِبًا فِي الُجَاهِ لِيَّةِ مَوُضُوعٌ أَلا وَإِنَّ اللَّهَ قَدُ قَضَى أَنَّ أَوَّلَ رِبًّا يُوضَعُ رِبَا عَبَّاسِ

ابوحرة رقاش این چاسے نقل کرتے ہیں۔انہوں نے کہا: " میں ایام تشریق میں رسول الله منظومین کی اونٹی کی مہار پکڑ کرلوگوں کو ہٹار ہاتھا آپ نے فرمایا:''یا در کھو جاہلیت کا تمام سودختم كر ديا كيا ہے۔خبروار! الله تعالى نے فيصله كيا ہے۔ پہلا سود جومعاف کیا جاتا ہے وہ میرے چیا عباس بن عبدالمطلب كاسود ہے۔اصل مال تنہارا ہے نظلم كرونه

 منفطع: زیرنے ایوب سے نہیں شالیکن شواہد کی بناء پر بیسچے ہے جیسا کونواس بن سمعان کی مسلم کتاب البرو الصلة ،باب تفسیر البروالاثم (2553) مين صديث يهـ

حاب البيوع عن الكاليكيُّ الكاليكيُّ الكاليكيُّ عن الكاليكيُّ الكاليكيّ

بُنِ عَبُدِ الْمُطَّلِبِ لَكُمْ رُءُوسُ أَمُوَ الكُّمُ مَمْ يَرْظُم كَيَا جَائِ كَالْ-'

لَا تَظُلِمُونَ وَلَا تُظُلَمُونَ)). ٥

فوائد (۱) سودایک ایبا قرض ہے جومعیشت ،غریبوں کی کمائی کوسیونک (کئری کھانے والا کی طرح چاف کرجاتا ہے اور معاشرے میں بربادی اور غربت وافلاس کا سبب بنا ہے ای لیے قرآن میں انتہائی تخق سے اس سے روکا گیا ہے فربانِ اللہ ہے: ﴿ یَاآیُّهَا الَّذِیْنَ الْمَنُوا اتَّقُواللَّهُ وَذَرُوْا مَا بَقِی مِی النّہائی تخق سے اس سے روکا گیا ہے فربانِ اللہ ہے: ﴿ یَاآیُّهَا الَّذِیْنَ الْمَنُوا اتَّقُواللَّهُ وَذَرُوْا مَا بَقِی مِنَ اللّهِ اِنْ کُنْتُمْ مُوَّمِنِیْنِ وَ فَانُ لَّمُ تَفْعَلُوا فَأَذُنُوا بِعَرْبٍ مِنَ اللّهِ وَرَسُولِهِ وَإِنْ تُبْتُمُ فَى اللّهِ وَرَسُولِهِ وَإِنْ تُبْتُمُ فَلَكُمْ دُوُوْسُ اللّهِ وَرَسُولِهِ وَإِنْ تُلْمُ لَوْنَ وَلَا تُظْلَبُونَ وَلَا تُظْلَبُونَ وَلَا تُظْلَبُونَ وَلَا تُظَلّمُونَ وَلَا تُظْلَبُونَ وَلَا تُظَلّمُونَ وَلَا اللّهِ اللّهِ وَرَسُولِهِ وَإِنْ اللّهِ وَرَسُولِهِ وَإِنْ اللّهُ عَلَى اللّهِ وَرَسُولِهِ وَإِنْ تُنْفُرُ وَلَا اللّهِ وَرَسُولِهِ وَإِنْ تُنْفُلُونَ وَلَا تُظْلَبُونَ وَلَا تُظْلَبُونَ وَلَا اللّهُ وَلَاللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَا اللّهُ وَلَى اللّهِ وَرَسُولِ سے جنگ کے مترادف ہے ایسی عالت میں بربادیاں کی طرح ٹل سکتی ہیں۔ (۲) گویا سودی لین دین اللّه سے جنگ کے مترادف ہے ایسی عالت میں بربادیاں کی طرح ٹل سکتی ہیں۔ (۲) وائی کوسب سے پہلے عمل کی دعوت رکھنی چاہے جوکہ انتہائی مؤثر ہوتی ہے۔

[4] ِ... بَابِ فِي آكِلِ الرِّبَا وَمُؤُكِلِهِ

سود کھانے اور کھلانے والے مخص کے ملعون ہونے کا بیان

2577 أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شُفْيَانُ عَنْ أَبِي قَيْسٍ عَنْ هُزَيْلٍ

عَنْ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ عِلَيْ سَيْدِنا عبدالله فِالنَّمَ كُتِ بِينَ كَه رسول الله عَلَيْمَ نِي

آكِلَ الرِّبَا وَمُؤْكِلَةً. ۞

سود کھانے اور کھلانے والے پرلعنت کی ہے۔'' تا و

[5] بَابِ فِي التّشُدِيدِ فِي آكُلِ الرِّبَا سود كهانے والے كم تعلق وعيد كابيان

2578 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللّهِ بْنِ يُونُسَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِيْ ذِئْبِ عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيّ

((قَالَ لَيَأْتِيَنَّ زَمَانٌ لَا يُبَالِي الْمَرُءُ بِمَا فَرَايا: ''اليك زمانه آئة كاجس ميس آومي كواس بات كي

[•] است ادہ ضعیف: کیکن جج کے بیان میں جاہر کی لمبی حدیث اور ابن ابی شیبہ 15 / 26 (19009) میں عمر وکی حدیث اس کی شاہر ہے جس کی وجہ سے مستج ہے۔

² صحيح: اخرجه مسلم، كتاب مساقة،باب آكل الرباومؤكله (3333)

2579- أَخْبَرَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُوْرٍ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عُمَارَةَ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ عَمَّتِهِ........

سیّدہ عائشہ و فاقعیا کہتی ہیں کہ رسول الله طشیّقی نے فرمایا: ''آ دمی کاعمدہ کھانا وہ ہے جواس کی پاک کمائی سے ہواور اس کی اولا دبھی اس کی پاک کمائی سے ہے۔''

عَنُ عَائِشَةَ قَالَتُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((إِنَّ أَحَقَّ مَا يَأْكُلُ الرَّجُلُ مِنُ أَطُيَبِ كَسُبِسَهِ وَإِنَّ وَلَسَدَهُ مِسْنُ أَطُيَسِ كَسُبِهِ)). ٥

فوائد: (۱) سب سے زیادہ استعال کا حقدار وہ مال ہے جو بندے کی پاکیزہ کمائی کا نتیجہ ہو (۲) بیٹا بھی چونکہ بندے کے نیک کمائی سے ہوتا ہے اس لیے بیٹے کا مال باپ کے لیے بلاا جازت لے لینا، اس مال میں تصرف کرنا جائز وورست ہے۔

[7] بَابِ فِي التَّجَّارِ

تاجرون کا بیان

رتے ہیں انہوں نے کہا رسول الله طفی آیا ہقیع کی طرف تشریف کے اور آپ نے تاجروں کو متوجہ کر کے فرمایا:
"اے تاجروں کے گروہ! تاجر قیامت کے دن فاسقول میں ہوں گے گر جواللہ سے ڈرا' نیکی کی اور سے بولا۔" ابو محمد

كبتے بين: ابونعم كبتے تھے۔عبيدالله بن رفاعه حالانكه وه

عَنُ إِسْمَعِيلَ بُنِ دِفَاعَةَ عَنُ أَبِيُهِ عَنُ جَدِهِ قَالَ خَرَجَ دَسُولُ اللّهِ عَلَيْ إِلَى جَدِهِ قَالَ يَا مَعُشَرَ اللّهِ عَلَيْ إِلَى الْبَقِيْعِ فَقَالَ يَا مَعُشَرَ التَّجَّادِ حَتَى إِذَا الشُرَأَبُوا قَالَ: ((التَّجَّادُ يُحُشَرُونَ يَوُمَ الشُورَأَبُوا قَالَ: ((التَّجَّادُ يُحُشَرُونَ يَوُمَ السُورَ التَّقَى وَبَرَّ اللهِ مَنِ اتَّقَى وَبَرَّ وَصَدَقَ)). قَالَ أَبُو مُسَحَمَّدٍ: كَانَ وَصَدَقَ)). قَالَ أَبُو مُسَحَمَّدٍ: كَانَ

اسنادہ ضعیف: "لیکن صدیث محج ہے وصحیح ابن حبان (4259-4260-4261) وابو داؤد، کتاب الإمارة، باب الرحل
یأکل من مال ولدہ (3528) والترمذی، کتاب الأحکام، باب ماجاء أن الوالد یا خذ من مال ولدہ (1358)

الكاليمي عن الكاليمي عن المساوع ا

اساعیل بن عبید بن رفاعہ ہے۔

أَبُو نُعَيْمٍ يَقُولُ عُبَيْدُ اللهِ بُنُ رِفَاعَةَ

وَإِنَّمَا هُوَ إِسْمَعِيلُ بُنُّ عُبَيْدِ بُنِ رِفَاعَةَ . •

فوائد: سستجارت کانٹوں کی ہے جس میں سنجل سنجل کر پھونک پھونک کرقدم رکھنا پڑتا ہے کیونکہ تجارت کے اندراو پنج کی خدشہ زیادہ ہوتا ہے اس لیے تاج کوشریعت کا پاس کرتے ہوئے خوف خدا کو ہروقت ملحوظ رکھنا جاہیے۔

[8] بَابِ فِي التَّاجِرِ الصَّدُوُقِ سِيِّ تَاجر كابيان

2581 ـ أَخْبَرَنَا قَبِيصَةُ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الْحَسَنِ

سیّدنا ابوسعید خالیّد کہتے ہیں کہ نی طفی آیا نے فرمایا: ''سیا امانت دارتا جرنبیول' صدیقوں اور شہداء کے ساتھ ہوگا۔'' عبداللّد کہتے ہیں: '' مجھے اس بات کاعلم نہیں کہ حسن نے ابو سعید سے سنا کہ نہیں۔ اور ابو حمزہ نے اس طرح کہا کہ وہ ابراجیم کا ساتھی ہے اور وہی میمون اعور ہے۔

عَنُ أَبِى سَعِيدٍ عَنِ النَّبِي عَلَىٰ قَالَ: ((التَّاجِرُ الصَّدُوقُ الْأَمِينُ مَعَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ)) قَالَ: عَبُد الله لا عِلْمَ لِى بِهِ إِنَّ الْحَسَنَ سَمِعَ مِنُ أَبِى سَعِيدٍ وَقَالَ: أَبُو حَمُزَةَ هَذَا هُوَ صَاحِبُ إِبُرَاهِيمَ وَهُوَ مَيْمُونُ الْأَعُورُ. •

[9] بَاب فِی النَّصِيحَةِ خيرخوابی کابيان

2582 حَدَّثَنَا يَعْلَى بْنُ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا إِسْمَعِيلُ عَنْ قَيْسٍ

سیّدنا جریر فرانیمهٔ بن عبدالله کتب بین میں نے رسول الله طبیعی کی کدن مناز بردهول گائ الله طبیعی کی کدن مناز بردهول گائ زکوة دول گا اور جرمسلمان کی خیرخوابی کرول گا۔''

عَنُ جَرِيرِ بُنِ عَبُدِ اللّٰهِ قَالَ بَايَعْتُ رَسُولَ اللّٰهِ قَالَ بَايَعْتُ رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ عَلَى إِقَـامِ الصَّلاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ وَالنَّصُحِ لِكُلِّ مُسُلِمٍ . ۞

[€] اسناده حيد; صحيح ابن حباد(4910)و أخرجه الطبراني في الكبير44/54(4540)وعبدالرزاق(2099)

⁻ المن منقطع: ليكن شوابدكي بناء يرضن درج تك بكي جاتى بهراي الناس مراحه، كتاب التحارات، باب الحث على المكاسب (2139) والحرادي، في الاوسط (7390) والدار قطني 7/3 والحاكم 6/2

[•] متفق عليه: البخاري، كتاب الإيمان، باب قول النبيّ الدين النصيحه (57) ومسلم، كتاب الإيمان، باب بيان أن الدين النصيحه (57)

مر المنت الكاليوع على المنافق الكاليوع على المنافق الكاليوع ا

فوائد: (۱) امام، امیر کسی بھی شریعی مسئلے پر اپنے ماموروں سے بیعت لے سکتا ہے اگر چہوہ امور فرائض سے ہی تعلق رکھتے ہوں (۲) سبھی مسلمانوں کی خیرخواہی ایمان کا نقاضا ہے۔ [10] بَاب فِی النَّهْیِ عَنِ الْغِشِّ وهو کہ دینے کی ممانعت کا بیان

2583 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّلْتِ حَدَّثَنَا أَبُوْ عَقِيلٍ يَحْيَى بْنُ الْمُتَوَكِّلِ قَالَ أَخْبَرَنِي الْقَاسِمُ

ابْنُ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ سَالِمٍ

عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَيْ مَرَّ "

بِطَعَامٍ بِسُوقِ الْمَدِينَةِ فَأَعْجَبَهُ حُسُنُهُ بِ

فَأَدُخَلَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ يَدَهُ فِي جَوُفِهِ لَا أَخْرَجَ شَيُئًا لَيُسَ كَالظَّاهِ فَأَقَّفَ عَالَيْ اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهِ فَأَقَفَ عَالَيْ اللَّهِ فَأَقَفَ عَالَيْ اللَّهِ فَأَقَفَ عَالَيْ اللَّهِ اللَّهُ الللّهُ اللَّهُ اللِهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللّهُ اللَّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللللّهُ الللللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُو

بِصَاحِبِ الطَّعَامِ ثُمَّ قَالَ: ((لَا غِشَّ بَيْنَ الْمُسُلِمِينَ مَنْ غَشَّنَا فَلَيْسَ مِنَّا)). •

سیّدنا ابن عمر ر والنی کہتے ہیں کہ رسول الله طفی این مدینہ کے بازار میں غلہ کے پاس سے گذرے وہ آپ کو اچھا لگا، رسول الله طفی این اپنا ہاتھ اس میں داخل کیا۔ اور پکھ غلہ نکالا جو اوپر والے کی طرح نہیں تھا۔ تو آپ نے اناح والے کو ڈانٹا پھر فرمایا: ''مسلمانوں میں دھوکہ بازی نہ ہو۔

جس نے ہمیں دھو کہ دیا وہ ہم سے نہیں۔''

فواند: (۱) مسلمان کودهوکه دینا حرام ہے۔ (۲) "فسلیس منا" سے مرادامام نووک رائیٹی یول بیان کرتے ہیں "و میعنداہ ممن اهتدی بهدیی و اقتدی بعلمی و عملی و حسن طریقتنی کے مایقول الرجل اذا لم یرض فعله لست منی . " (تخفۃ الاحوذی: 453/4) اس کامعنی بیہ کہ وہ ان اشخاص میں سے نہیں جومیری سیرت کو اپناتے ہیں اور میرے علم وعمل اورائی طریقے کی پیروی کرتے ہیں جوسے کہ آدمی جب کسی کے کام سے خوش نہیں ہوتا تو کہتا ہے تو ہم سے ہی نہیں ہے۔ جبکہ سفیان رائیٹی زجروتو نیخ کے لیے اس کی کوئی تاویل ہی نہیں کرتے تھے۔ سیدھامسلمانوں کی جماعت سے خارج قرار دے وہ ہے۔

[11] بَابِ فِي الْغَدُرِ عَهِدْ تَكَنَّى كَمْ عَلْقَ

2584 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا وَائِلِ

اسناده ضعيف: ليكن سلم مين اسكا شام موجود بالبذاب صديث على به اخرجه مسلم، كتاب الإيمان ، باب قول النبي من غشنا فليس منا (102) و ابن ماجه ، كتاب التحارات ، باب غشنا فليس منا (2224) و ابن ماجه ، كتاب التحارات ، باب النهى عن الغش (2352) و ابن ماجه ، كتاب التحارات ، باب النهى عن الغش (2224)

عَنُ عَبُدِ اللّٰهِ عَنِ النَّبِي عَلَىٰ قَالَ: سيّدنا عبدالله كَبَة مِين كه في طَفَامَيْنَ نَهُ فرمايا: "قيامت (رلِكُلِّ غَادِدٍ لِوَاءٌ يَوُمَ الُقِيَامَةِ يُقَالُ كَ دن مردهوك بازك لِيّ ايك جمندًا موكا كها جائ هَذِه غَدْرَةُ فُلَان)) . • كان "ينلال كي غداري (كي علامت) هـ "

فوائد: معوے بازوں کو قیامت کو جھنڈے فراہم کیے جائیں گے اور جو کہ قیامت کو ظیم رسوائی کا سبب ہوں گے وہ دُور سے ہی پہچانے جائیں گے۔العیاذ باللہ

[12] بَاب فِي النَّهُي عَنِ الاحْتِكَارِ ذ خيره اندوزي كي ممانعت كابيان

2585 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَقَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ سَعِيدِ ابْنِ الْمُسَتَّ

سیّدنامعمر بن عبدالله بن نافع بن نصله عدوی و الله کمت بین می می الله الله می
عَنُ مَعُ مَرِ بُنِ عَبُدِ اللّهِ بُنِ نَافِعِ بُنِ نَافِعِ بُنِ نَافِعِ بُنِ نَطُ لَمَةَ اللّهِ بُنِ نَافِعِ بُنِ نَطُ لَمَةَ اللّهِ اللّهِ عَلَيْكَ رَسُولَ اللّهِ عَلَيْكَ يَقُولُ: ((لَا يَحْتَكِرُ إِلّا خَاطِءٌ مَرَّتَيُن)). • مَرَّتَيُن)). •

فواف : فخیرہ اندوزی ہے ہے کہ مال کثیر مقدار میں لے کراس نیت سے جمع کر لینا جب کہاس کی قلت کی بنا پر اس کی قیمت بڑھے گی تو مارکیٹ میں لے آئیں گے بیرام ہے ہاں اگر مال کثیر مقدار میں مارکیٹ میں موجود ہے تو اس کے جمع کر لینے میں کوئی حرج نہیں (واللہ اعلم)

2586 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ يُوسُفَ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ عَلِيّ بْنِ سَالِمٍ عَنْ عَلِيّ بْنِ زَيْدِ بْنِ جُدْعَانَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ

> عَنُ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ:((الْجَالِبُ مَرْزُوُقٌ وَالْمُحْتَكِرُ مَلْعُونٌ)). ۞

سیّدنا عمر وَالنَّوْ کہتے ہیں کہ نبی مِشْنَوَیْنَ نے فرمایا: "غلہ لانے والے کورزق دیا جاتا ہے اور غلہ رو کنے والے پر لعنت کی

حاتی ہے۔'

❶ متـفـق عليه: البخاري،كتاب الجزية والموادعة،باب اثم الغادر للبر والفاجر(3186-3187)ومسلم،كتاب الجهاد، باب تحريم الغدر(4508)

 [◘] صحيح: اخرجه مسلم، كتاب المساقاة ،باب تحريم الاحتكار في الاقوات (4098) وصحيح ابن حبان (4936)
 ⑥ ضعيف: اخرجه ابن ماجه ،كتاب التجارات باب الحكرة و الجلب (2153) والبيهقي في البيوع،باب ما جاء في الاحتكار 30/6

عتاب البيوع 365

[13] بَابِ فِي النَّهِي عَنُ أَنْ يُسَعَّرَ فِي الْمُسُلِمِينَ مسلمانوں میں قیمت مقرر کرنے کی ممانعت کا بیان

2587 أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ حُمَيْدِ وَثَابِتٍ وَقَتَادَةَ

المُعْنَىٰ الْكَالِيُّوْنَىٰ

نقصان حاکم کے سبب ہے۔

سیّدنا انس واللَّهُ کہتے ہیں کہ نبی کے زمانہ میں عَنُ أَنَس قَالَ غَلا السِّعُرُ عَلَى عَهُدِ

منگائی ہوئی تو لوگوں نے کہا:''یا رسول اللہ! مہنگائی ہوگئی النَّبِيِّ عِنْ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ السَّاسُ يَا رَسُولَ اللَّهِ ہے آپ ہمارے کئے قیمت مقرر کر دیں۔" تو رسول غَلَا السِّعُ وُسَعً لَنَا فَقَالَ رَسُولُ

الله عليه عليه في الله عن الله عن الله عن الله المسمع الله المسمع والا اللُّهِ عِنْ اللُّهَ هُوَ الْنَحَالِقُ

ہے۔ رزق دینے والا ہے قیمت مقرر کرنے والا ہے الْقَابِضُ الْبَاسِطُ الرَّزَّاقُ الْمُسَعِّرُ وَإِنِّي اور میں امید کرتا ہوں کہاہنے رب سے اس حال میں ملول أَرُجُو أَنُ أَلُقَى رَبّي وَلَيْسَ أَحَدٌ مِنْكُمُ

گا کہتم میں سے کوئی آ دمی مجھ سے ایسی چیز طلب نہ کرے يَـطُ لُبُنِي بِمَظُلَمَةٍ ظَلَمُتُهَا إِيَّاهُ بِدَمِ وَلَا

گا جومیں نے اس سے ظلم سے لی ہوخواہ جان ہو یا مال۔'' مَال)). ٥ فواند: (۱) حاکم کی طرف سے اشیاء کی قیمتیں مقرر کرنا درست نہیں کیونکہ ہرتا جرکو جائز ہے کہ

وہ مناسب انداز میں جتنا جاہے نفع کمائے البیتہ اگر تجار ملی بھگت سے ناجائز منافع کمانے لگیں تواہیے وقت میں صارفین کی سہولت کاخیال رکھنا حکومت کافرض ہے اور وہ تجار کولگام دے سکتی ہے کیونکہ قاعدہ ہے "الضرورات تبيح المحظورات" ضروريات ممنوع اموركوجائز كرديتي بين - (٢) تاجريظم يول ي کہ ایک چیز اس نے دس رویے میں خریدی ہے سرکاری ریٹ اس کا نو رویے مقرر کر دیاجا تا ہے لاز ما تاجر کا پید

[14].... بَابِ فِي السَّمَاحَةِ

رعایت کرنے کا بیان

2588 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا مَنْصُوْرُ بْنُ الْمُعْتَمِرِ عَنْ رِبْعِيّ بْنِ حِرَاشِ.....

[◘]صحيح: ابن حبان(4935)واخرجه ابوداؤد، كتاب الإجارة،باب في التسمير(3451)والترمذي، كتاب البيوع،باب ماجاء في التسعير (1314)

البيوع عن الماليوع
سیّدنا حذیفه و النی کی میت بین که رسول الله منتی آنی نے فرمایا:

"تم سے پہلے ایک آ دمی کی روح کوفر شتے ملے انہوں نے
کہا: تو نے کوئی نیکی بھی کی ہے؟ اس نے کہا: رنہیں و فرشتوں نے کہا: " یاد کرو۔" اس نے کہا: " میں لوگوں کو فرشتوں نے کہا: " یاد کرو۔" اس نے کہا: " میں لوگوں کو فرشتوں دیتا تھا اور اپنے غلاموں کو تھم ویتا تھا کہ وہ شک دست کو مہلت ویں اور مالدار سے درگذر کریں۔" الله تعالیٰ نے فرمایا: " تم بھی اس سے درگزر کرو۔"

فوائد : (۱) '' تجاوز'' میں یہ تینوں معنی آتے ہیں (۱) مہلت دینا (ب) معاف کردینا (ج) التحصطریقے سے طلب کرنا (۲) جھوٹی سی نیکی بھی جب خلوص کے ساتھ کی جائے تووہ بہت سی غلطیوں کے کفارے کاسب بن جاتی ہے (۳) بذات خود نیکی نہ بھی کی جائے فقط حکم سے بھی وہ تواب حاصل ہوجا تا ہے جو بذات خود کرنے سے حاصل ہوتا ہے (۴) مجھیلی امتوں کے واقعات جوبطور مدح بیان ہوئے ہیں وہ ہمارے لیے بھی قابل عمل ہیں۔

[15] بَابِ فِي الْبَيِّعَانِ بِالْخِيَادِ مَا لَمُ يَتَفَرَّ قَا يَحْ وَالْكُو مِدَانِهُ وَاللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُواللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِمُولُ

2589- أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ عَنْ سَعِيْدٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ صَالِحٍ أَبِى الْخَلِيْلِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ النَّهِ بْنِ

سیّدنا حکیم و الله طفیقی بن حزام کہتے ہیں که رسول الله طفیقی آنے فر مایا: ''دوؤیچ کرنے والے جدانه ہونے تک اختیار رکھتے ہیں۔ اگروہ دونوں کی بولیں اور بات ظاہر کر دیں تو ان کی بیج میں برکت ہوگی۔ اگروہ جھوٹ بول کر عیب چھپا کیں تو ان کی بیج سے برکت مٹ جائے گی۔''

عَنُ حَكِيهِ بُنِ حِنزَامٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَنُ حَكِيهِ بُنِ حِنزَامٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَلَيْ قَالَ: ((البَيِّعَانِ بِالُخِيَارِ مَا لَمُ يَتَفَرَّقَا فَإِنُ صَدَقًا وَبَيَّنَا بُورِكَ لَهُمَا فِينَ بَيْعِهِمَا وَإِنْ كَذَبًا وَكَتَمَا مُحِقَ بَرُحَةُ بَيْعِهِمَا)). ٥

[◘] صحيح: اخرجه البخاري، كتاب البيوغ بباب من أنظر موسراً (2077) واحمد 395/5

[◙] صحيح: اخرجه البخاري، كتاب البيوع،باب إذابين البيعان،لم يكتماو نصحا(2079)وابوداؤد،كتاب الإحارة،باب في اخيار المتبايعين (3459)

عَنْ الْكَالِيْمِيْ عَنْ الْكَالِيْمِيْ 367 كَتَابِ البيوع كَتَابِ البيوع كَتَابِ البيوع كَتَابِ البيوع

فوائد: (۱) دوباہم بیع کرنے والے اشخاص جب تک بیع کرنے کے بعدای مجلس میں اکٹھے بیٹھے رہتے ہیں تب تک انہیں بیع کے فنخ کرنے کا اختیار ہے ان کے جدا ہوتے ہی فنخ کا اختیار خم ہوجائے گا اللہ یہ کہ شرط لگائی گئی ہو (۲) بیع کرتے ہوئے صدق واظہار سے کام لینا چاہیے چاہے اس سے بظاہر نقصان ہوتا ہی نظر آتا ہولیکن یہ معاہدہ کے اختبار سے خیر ہی خیر ہے۔

2590 أَخْبَرَ نَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

عَنُ قَتَادَةَ بِإِسْنَادِهِ مِثْلَهُ . ٥ سيِّدنا قادة رَاتُهُ الى اساد الصاطرح بيان كرت بين -

[16] بَابِ إِذَا انْحَتَلَفَ الْمُتَبَايِعَانِ خَرِيدِ وفروخت كرنے والول كے اختلاف كابيان

2591 أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِيْ لَيْلَى عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ عَبْدِالرَّحْمَنِ عَنْ أَبِيْهِ

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ قَالَ الْمَيَّعَانِ إِذَا الْحَتَلَفَا وَاللَّهِ عَلَيْهِ وَلَيْسَ بَيْنَهُمَا بَيِنَةٌ وَالْبَسُ بَيْنَهُمَا بَيِنَةٌ فَالْفَوْلُ مَا قَالَ الْبَالِعُ أَوْ يَعَرَادَانِ الْبَيْعَ)). • الْبَيْعَ)). •

سیّدنا عبدالله رَفَّالِیْهُ کہتے ہیں میں نے رسول الله طَیَّایَّهُ کو یہ فرماتے ہوئے سنا: ''جب بائع اور مشتری آپس میں اختلاف کریں اور بھے کی چیز بعینہ موجود ہو مگر ان میں سے کسی کے کوئی دلیل بھی نہ ہوتو بائع کی خرید نے اور بیچنے والے کی بات معتبر ہوگی۔ یا وہ دونوں بھے والیس کر دیں۔''

فوائد: سامان بعینه موجود ہواس دوران اختلاف ہوجائے تو دوصور تیں ہوں گی یا تو بیچنے والے کی بات مان کی جائے یا پھر تیج فنخ کردی جائے کیونکہ ایسے وقت میں یہی دوصور تیں قابل عمل اور آسان نظر آتی ہیں۔

[17] بَابِ لَا يَبِيعُ عَلَى بَيْعِ أَخِيهِ اچے بھائی کی بیچ پر بیچ کرنے کی ممانعت کا بیان

2592 ـ أَخْبَرَنَا مُحَدَّمَّ لُهُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الرَّقَاشِيُّ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ هُوَ ابْنُ إِسْحٰقَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِى حَبِيْبٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ شِمَاسَةَ

O صحيح: مابقد حديث بي مكررآ كي بـ

[€] صحيح: مسلد موصلي(4984)وابوداؤد،كتاب الإجارة باب اذا اختلف البيعان والمبيع قائم (3511) والنسائي ، كتاب البيوع،باب اختلاف المتبايعين في الشمس(4662)

368 کی کتاب البیوع کی المراقع المراق

سیدنا عقبہ بن عامر بھاٹھ کہتے ہیں میں نے رسول عَنُ عُقْبَةَ بُن عَامِر قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ عِنْ يُقُولُ: ((لَا يَحِلُّ لِامُرءِ يُؤُمِنُ الله طنطي الله كوبه فرمات ہوئے سنا: ''الله اور يوم آخرت ير بِاللُّهِ وَالْيَوُمِ الْآخِرِ أَنُ يَبِيْعَ عَلَى بَيْع أَخِيُهِ حَتَّى يَتُوْكَهُ)). 0

ایمان رکھنے والے کسی آ دمی کے لئے جائز نہیں کہ وہ اینے بھائی کی تیع پر تیع کر ہے حتی کہوہ اسے چھوڑ دے۔''

فوائد: (۱) ایمان بالله اول اورایمان بالآخرة به آخر میں ہے درمیان میں ایمان بالرسل والكتب والملائكه والقدر كاتذكره خود بخودان كے ضمن ميں آجاتا ہے لہذا ان كاتذكره نہيں كيا كيا (٢) ايك بھائى كى اگربات چل رہی ہے دوسرا بچ میں آ کرانی بات شروع کردے یادلچیں کا ظہار کردے تو یہ پہلے خریدار کی دل آ زاری کاباعث بنے گی کیونکہ اس سے لاز ما بائع مہنگے وام پر اصرار کرے گا پھریاتو خریدار کو چیزمہنگی خرید نی یڑے گی یا بوجھل دل کے ساتھ جھوڑ نی پڑے گی۔

[18] بَابِ فِي الْخِيَارِ وَالْعُهُدَةِ غلام کی ہیچ میں اختیار کا بیان

2593 حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا أَبَانُ بْنُ يَزِيْدَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنِ الْحَسَنِ

عَسنُ عُسَفُهَةَ بُس عَامِر أَنَّ السَّبِيِّ عِنْ استِدنا عقب بن عام وَ فَاللَّهَ كُبِّ بِين كه نبي عَنْ مَايا: قَالَ: ((عُهُدَةُ الرَّقِيقِ ثَلاثَةُ أَيَّامِ)). ٥٠ نظام كي ضانت تين ون ہے۔''

2594 أَخْبَرَنَا يَزِيْدُ بْنُ هَارُوْنَ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ الْحَسَنِ

سیدنا عقبہ بن عامر ظافی کہتے ہیں کہ نی سے اللے ان فرمایا: ''غلام کی کفالت تین دن ہے۔'' قنادة رضاعه نے اس کی تفییرایسے کی ہے کہ اگر تین دن میں غلام میں کوئی عیب یائے تو دلیل کے بغیراسے واپس کرسکتا ہے۔اگر تین دن کے بعد یائے تو دلیل کے بغیر واپس نہیں کرسکتا۔''

عَنُ عُقْبَةَ بُن عَامِر قَالَ قَالَ النَّبِي عَلَيْ : ((عُهُ لَدةُ الرَّقِيقِ ثَلاثَةُ أَيَّام)) فَفَسَّرَهُ قَتَادَهُ إِنْ وَجَدَ فِي الثَّلاثِ عَيْبًا رَدَّهُ بِغَيُر بَيِّنَةٍ وَإِنَّ وَجَدَهُ بَعُدَ ثَكُلاثٍ لَمُ يَرُدَّهُ إِلَّا بِبَيِّنَةٍ. 🏵

❶ صحيح: اخرجمه مسلم، كتاب النكاح، باب تحريم الخطبة على خطبة أخيه حتى يأذن اويترك (3449)و أخرجه ابن ماجه، كتاب التحارات،باب من ياع عيبا مليبينه(4246)

❸ضعيف: اخرجه ابو داؤ د، كتاب الإجارة،باب في عهدة الترقيق (3506) وابن ماجه، كتاب التحارات باب عهدة الرقيق (2245)

[🛭] ضعیف: سابقہ صدیث بی مکرد ہے۔

يُقِنَىٰ الْكَانِكِيْ فَي اللَّهُ عَنَىٰ الْكَانِكِيْ فَي الْمُحَفَّلاتِ [19].... بَابِ فِي الْمُحَفَّلاتِ

مصراة كابيان

سیّدنا ابو ہریرۃ وَالنَّهُ کہتے ہیں کہ رسول الله طِلْطَیَا ہے فرمایا: ''جو مُحض مصراۃ بکری یا اوْئمنی خریدے اسے تین دن اختیار ہے اگر اسے واپس کرے تو ساتھ غلے کا ایک صاع دے مگر گندم نہ ہو۔''

كتاب البيوع

عَنُ أَبِسَى هُسَرَيُسِرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنُ أَبِسَى هُسَرَيُسِرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ
سَمُواءَ)). 0

فوائد: "مصراة" ہے اپنے جانور مرادین جس کومہنگا پیچنے کے لیے اس کا دودھ نہ دھویا جائے اور جب مشتری خرید نے والا اس کا دودھ دھوتا ہے تو دودھ وافر ہونے کی وجہ سے بہت متاثر ہوتا ہے اور جانور خرید لیتا ہے لیکن گھر جاکر دوبارہ دھونے سے دودھ کی وہ مقدار حاصل نہیں ہوتی تو ایسے شخص کو اجازت ہے کہ وہ تین ایام کے اندر اندر بیر جانور اور اس کے ساتھ ایک صاع غلے کا واپس کردے جو کہ گندم نہ ہو۔ اس پر بھض نادان ابو ہریرہ ڈوائٹو کو غیر فقیہ قرار دیتے ہیں کہ دیکھیں جی دوئین دن جانور کا دودھ استعمال کیا بدلے ہیں صرف ایک صاع گدم کا بہ بات نہیں بنتی حالال بیاعتراض ان کی اپنی فقا ہت صفر ہونے کی دلیل ہے کہ جس نے اس کا دودھ استعمال کیا ہے دودھ تو چارے کا بھی بندوبت کیا ہے دودھ تو چارے کہ جس نے اس کا دودھ استعمال کیا ہوئی اس نے اس جانور کے چارے کا بھی بندوبت کیا ہے دودھ تو چارے کا بھی بندوبت کیا ہے دودھ تو چارے کہ بھی اور غلے یا بعض روا تیوں کے مطابق تھور کا ایک صاع تو جانور لوٹانے پردیتا ہے دو سرا اگر اس سے ابو ہریرہ زائٹیڈ کی عدم فقا ہت خابت ہوتی ہے ابن مسعو دخوائٹیڈ جو ان کے زددیک بھی فقہ واجبتماد کے امام بخاری رہی تھی ہی تو جانور کوٹانے کے بعد ساتھ ہی ان کا فتو کی نقل کرتے ہیں دریکھیے حدیث نمبر کوڑھی ہی تو تا ہے کہ وہ بھی اس کے مطابق بی فتو کی دیے ہیں البذا بیا بات خابت ہوگی کہ نہ کورہ صدیث کو قیاس جلی کوٹالف قرار دے کرد دکرنا سراسر ہیا کمی و جہالت ہے بس کہی وجہ ہے کہ وہ کی دیکورہ صدیث کو قیاس جلی جمہور کے موائق ہی فتو کی دیے ہیں۔ (بدایۃ انجمتمد کا مام زفر رہی ہی جمہور کے موائق ہی فتو کی دیے ہیں۔ (بدایۃ انجمتمد کا مام زفر رہی ہی جمہور کے موائق ہی فتو کی دیے ہیں۔ (بدایۃ انجمتمد کا مام زفر رہی ہیں۔

 [◘] متفق عليه: اخرجه البخاري، كتاب البيوع، باب النهى للبائع أيحفل الإبل والبقر والغنم (2150) ومسلم، كتاب البيوع، باب حكم بيع المصراة (3811)

حر يُتِنَ الْكَالِيْتِي عَلَى ﴿ 370 كِتَابِ البيوع ﴾

ابن قیم رازی این میں اصل میں اصول صرف دوہی ہیں قرآن اور سنت اور جوان کے علاوہ ہیں وہ انہی کے تابع ہیں سوسنت (حدیث مصرّ آق) تو قائم بنفسہ ہے اور قیاس فرع ہے تواصل کو فرع کے بدلے کیسے رد کیا جاسکتا ہے۔ (مزید تفصیل کے لیے دیکھیے (اعلام الموقعین 2/330)

[20] بَابِ فِي النَّهُي عَنُ بَيُعِ الْغَرَدِ دھوكەكى نِيع كىممانعت كابيان

2596 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ عِيسَى حَدَّثَنَا يَحْيَى الْقَطَّانُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ أَبِى الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَج.....

عَنُ أَبِّى هُسرَيْسُوَةَ قَالَ نَهَى رَسُولُ سَيْدنا ابو برريه اللهِ عَنُ أَبِسَى كَه رسول الله طَعَاقَاتُهُ نَ اللهِ عَنُ بَيْعِ الْغَوَدِ . • وهو كَى تَجْ سِمْعَ كِيال

ف وائد: " " " الله عرز" الله على بيشار مسائل بين مثلًا بھا كے غلام كى خريد وفر وخت الى طرح معدوم اور مجهول اورائيں چيز جو پيچنے والے كى ملكيت عيں نہ ہو، پانى عيں مجھلى كى بيج وغيرہ الي جميع بيوع باطل بي الكين ضرورت كے وقت اس كى اجازت ہے جيسے گھر كاسامان گھر سميت اور حاملہ بكرى جس كے تقنول عيں دودھ بھى ہوكو بيچنا ان كى بيج درست ہے كيونكہ گھر كاسامان وروازے كھڑكياں وغيرہ ظاہرى حالت كے مطابق ہى ہوتے بيں (مزيد و كيھے: احكام الأحكام شرح عدة الأحكام 2 139)

2597 أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِع

عَنِ ابُنِ عُمَرَ قَالَ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ سَيِّدنا ابن عَمرِ اللَّهِ عِيلَ كه رسول الله طَيَّا اللهِ عَن عَنُ بَيْعِ الشِّمَادِ حَتَّى يَبُدُوَ صَلاحُهَا ظَامِر بونے سے پہلے پھل پیچل سے منع فرمایا: پیچ والے نَهَى الْبَائِعَ وَالْمُشْتَرِى. ٥٠ اور خریدنے والے دونوں کومنع کیا۔

فواند: پیل کینے سے قبل اسکی بیچ کرناممنوع ہے کیونکہ جب پیل ابھی کیا ہوتو ممکن ہوتا ہے کہ

❶ صحيح: اخرجه مسلم، كتاب البيوع، باب بطلان بيع الحصاة والبيع الذي فيه غرر(3787) وابوداؤد، كتاب البيوع والإحارات، باب بيع الغرر(3376) والترمذي، كتاب البيوع، باب ما جاء في كراهية بيع الغرر (1230)

[•] متـفـق عليه: البخارى، كتاب البيوع، باب بيع الثمار، قبل أن يبدو صلاحها (2194) ومسـلم، كتاب البيوع، باب النهى عن بيع الثمار قبل يبدو صلاحها بغير شرط القطع (3840)

حال نَيْنَنَ الْكَارِينِيُّ كَابِ البيوع عَلَى الْمُحَالِقِينَ الْكَارِينِيُّ كَابِ البيوع عَلَى الْمُحَالِقِينَ الْكَارِينِيُّ الْكَارِينِيُّ كَابِ البيوع عَلَى الْمُحَالِقِينَ الْمُحْلِقِينَ الْمُحَالِقِينَ الْمُحَالِقِينَ الْمُحَالِقِي

كوئى آفت آجائ اورمطلوبه مقدار حاصل نه بوسكة ترندى مين حديث ب"نهى رسول الله على عن بيع العنب حتى يسوَدَّ و عن بيع الحبّ حتَّى يَشْتَدَّ. " (ترندى:1246) آپ ﷺ فَيْ الْكُور کی خرید و فروخت سیاہ ہونے سے قبل اور دانے کی خرید و فروخت کینے سے قبل کرنے سے روکا ہے۔ یک جانے کے بعد ایک مقدار کا اندازہ کرناممکن ہوتا ہے دوسرا آفت سے بھی قدرے امن ہوتا ہے۔

227 بَابِ فِي الْجَائِحَةِ تعلول میں مصیبت پہنچنے کا بیان

2598 ـ أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجِ عَنْ أَبِي الزَّبَيْرِ

سيّدنا جابر والنينة كہتے ہيں كه رسول الله والله الله عنا مين '' جوشخص کھل خریدے پھراہے کوئی مصیبت پہنچے تو بیچنے والا اس سے کچھ نہ لے تو اپنے بھائی کا ناحق مال کیے لیتا

عَنُ جَابِرِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَىٰ قَالَ: ((مَنُ ابُتَاعَ ثَمَرَةً فَأَصَابَتُهُ جَائِحَةٌ فَلا يَأْخُذَنَّ مِنْهُ شَيْئًا بِمَ تَأْخُذُ مَالَ أَحِيْكَ بغَيُر حَقّ)). 🍑

فوائد: ابھی فقط بات ہوئی ہے سودہ طے ہوا ہے درختوں سے پھل اتار انہیں گیا لیکن کوئی آفت

آئی اور مال تباہ ہوگیا ۔الیی صورت میں بیچنے والے کو جائے کہ قبت نہ لے کیونکہ اب یہ فقط سودے کی قیمت ہے جب کہ مشتری مال ہے محروم ہو گیا ہے ہاں اگر وہ مال اتار کر محفوظ کر لیتا پھراگر کوئی آفت آ جاتی تو به اور بات تھی (واللہ اعلم)

> [23] بَابِ فِي الْمُحَاقَلَةِ وَالْمُزَابَنَةِ بيع محا قله اوربيع مزابنه كابيان

2599 أَخْبَرَنَا عَـمْرُو بْنُ عَوْن أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِوح و حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ

عاقله اور مزابنه مصمنع فرمایا عبدالله کہتے ہیں: محاقله به ہے کھیتی' گندم کے بدلہ میں بیچی جائے اور لوگ کہتے ہیں:

اللهِ عَلَيْ عَن المُحَاقَلَةِ وَالمُمْزَابَنَةِ قَالَ عَبُد اللَّهِ الْمُحَاقَلَةُ بَيْعُ الزَّرُعِ بِالْبُرِّ

[€] صحيح: اخرجه مسلم، كتاب المساقاة، باب وضع الحواثح(3952) والنسائي، كتاب البيوع، باب وضع الحواثح (4540) وابن ماجه، كتاب التجارات، باب بيع الثمار سنين والحائحه (2219)

البيوع عناب البيوع

وَقَالُوا كَذْلِكَ يَقُولُ ابْنُ الْمُسَيَّبِ. • ابن ميتب بهى اس طرح كمت ته_

فوائد: (۱) "محاقلة و مزابنة" دونوں تج حرام ہیں (۲) " محاقلہ" کہتے ہیں کی کھیتی کو کی کھیتی کو کی کھیتی کے بدلے تج اس طرح" مزابنة" تیار کھجور کی درخت پر کی کھیتی کے بدلے تج اس طرح" مزابنة" تیار کھجور کی درخت پر کی کھیتی کے ماتھ تج کرنا ان میں چونکہ ایک طرف معلوم پیانہ جب کہ دوسری طرف مقدار مجہول ہے اس لیے بیحرام ہے۔

[24] بَابِ فِی الْعَرَایَا نَیْع عرباکابیان

2600- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ يُوسُفَ عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ

غَنُ زَيُدِ بُنِ ثَابِتٍ قَالَ دَخَّصَ دَسُولُ اللهِ النَّهُ فِي بَيْعِ الْعَرَايَا بِالتَّهُ وَالرُّطَبِ وَلَهُ عَيْرِ ذَلِلَتَ . ٥ وَلَمُ يُرَخِّصُ فِي غَيْرِ ذَلِلَتَ . ٥

سیّدنا زید بن ثابت وَالَّهُمَّا کہتے ہیں کدرسول الله طَّنَا اَللهِ عَلَیْهِمَ نِے اللهِ عَلَیْهِمَ اللهِ عَلَی فروخت کی گھوروں کے بدلہ میں عرایا کی فروخت کی اجازت دی۔ اس کے علاوہ کسی چیز میں (سی عرایا) کی خد

اجازت نہیں دی۔

فوائد "عرایا" عربة کی جمع ہم مراداس سے یہ ہے کہ کوئی باغ کامالک کسی فقیر ،سکین کو کھورکا ایک درخت صدقہ کر دیتا ہے اب جب وہ فقیراس درخت سے کھوریں اتار نے آتا ہے تو اسے نگی محسوں ہوتی ہے تو مالک یوں کرتا ہے کہ اس درخت کے کھل کا اندازہ کر کے اس فقیر کو اپنے پاس سے اتنا اترا ہوا کھل دے دیتا ہے یہ سورت نیچ کی جائز ہے لیکن یہ بیج پانچ وی تقریباً چھے سوتمیں کلوگرام سے کم میں جائز ہے (دلیل کے لیے دیکھیے: بخاری: ۲۱۹۰)

[25] بَابِ النَّهُي عَنُ بَيْعِ الطَّعَامِ قَبُلَ الُقَبُّضِ قبضہ سے پہلے غلہ بیچنے کی ممانعت کا بیان

2601 - أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّنَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِع

[•] صحيح: اخرجه البخاري، كتاب البيوع اباب بيع الزبيب بالزبيب والطعا بالطعام (2173) والترمذي، كتاب البيوع، باب ماجاء في العرايا والرخصة في ذلك (1300) و ابن ماجه، كتاب التجارات، باب بيع العرايا بخرسها ثمراً (2268) و (2269) مسلم، كتاب البيوع، باب على متفق عليه: البخاري، كتاب البيوع، باب الزبيب والطعام بالطعام (2173) ومسلم، كتاب البيوع، باب تحريم بيع الرطب بالتمر إلا في العرايا (2855)

عَنْ الْكَالِمُ عِنْ الْكِلْمُ عِنْ الْكِلْمُ عِنْ الْكِلْمُ عِنْ الْمَالِمُ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَل

عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِي عَلَيْ قَالَ: ((مَنُ سَيْدنا ابْن عمر فِلْنَيْ كَبِتِ بِين كَه نِي طَيْعَ فَل أَن فرمايا: "جو ابْعَا عَ طَعَامًا فَلا يَبعُهُ حَتْى يَقُبضَهُ)). • غله خريد _ قبضه كرنے سے بہلے اسے آگے نہ بیجے "

فوائد: سیس مال غلّے کو قبضے میں لینے سے قبل فروخت کرنا درست نہیں کیونکہ یہ "دبسے مانسم یہ خسمن" کے زمرے میں آتا ہے یعنی ایبا نفع جوضانت کے بغیر حاصل کیا گیا ہو جو کہ اسلام میں جائز نہیں کیونکہ جس مال کے نقصان کا بندہ ذمہ دار نہ ہواس کا نفع اٹھانا بھی اس کے لیے جائز نہیں ہوتا۔

[26] بَابِ فِي النَّهُي عَنُ شُرُ طَيْنِ فِي بَيْعِ ايک بيچ ميں دوشرطول کی ممانعت کا بيان

2602- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ عَنْ حُسَيْنِ الْمُعَلِّمِ

سیّدنا عمر و بن شعیب اپنے والد سے اور وہ اپنے دادا سے
نقل کرتے ہیں کہ رسول الله مطفع الله نے تیج اور قرض سے
منع فرمایا اور ایک تیج میں دو شرطوں سے بھی منع فرمایا نیز
آپ نے اس چیز کے فائدے سے بھی منع فرمایا جس پر

عَنُ عَمُرِو بُنِ شُعَيْبٍ عَنُ أَبِيْهِ عَنُ جَدِّهِ قَسَالَ نَهْى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنُ سَلَفٍ وَبَيْعٍ وَعَنُ شَرُطَيْنِ فِى بَيْعٍ وَعَنُ سَلَفٍ وَبَيْعٍ وَعَنُ رَبْحٍ مَا لَمُ يُضْمَنُ. ۞

فوائد: "سلف و بیع" امام بغوی را تی اس کی تعریف یوں کرتے ہیں :کوئی کے میں تہہیں غلام نقد ایک ہزار کا دول گا اور لیٹ ادائیگی کی صورت میں دو ہزار کا (شرح النة :۳۰۲/۳) " شدر طین فی

غلام لفداید برارکا دول کا اور بیٹ ادایی صورت یل دو برارکا (سرے النظ ۱۹۸۴) سسر طین کی بیع " ایک بیج میں دوشرطین امام بغوی رہیں ہے۔ سابقہ صورت کو بی 'شرطین فی بیع " کی صورت قرار دیا ہے۔ " ربح مالم یضمن " اس کی صورت یوں ہے کہ آپ ایک آ دمی سے مال خریدتے ہیں سودا ہو چکا ہے مال بھی اس آ دمی کے گودام میں بی ہے کہ آپ کسی دوسرے خریدار کو وہ مال فروخت کر دیتے ہیں اور کہتے ہیں فلاں گودام میں مال پڑا ہے آپ وہاں سے اٹھالیں ۔اب مال اٹھانے سے قبل نقصان کی ذمہ داری مالک گودام کی ہے اور اٹھانے پر یہ ذمہ داری اگلے خریدار پر ہوگی جب کہ آپ کو بیٹھے بٹھائے بغیر کسی خدشے کے شوع صامل ہوگیا بیجرام ہے۔

[◘] متـفـق عـليـه: اخـرجـه البخاري، كتاب البيوع،باب الكيل على البائع والمعطى(2126)ومسـلم، كتاب البيوع،باب. بطلان بيع المبيع قبل القبض(3819)

 [◄] حسن: صحيح ابن حبان (4321) واخترجه ابوداؤد، كتاب البيوع، باب في الرجل بيع ماليس عنده (3504)
 والنسائي، كتاب البيوع، باب بيع ماليس عند البائع (4625)

سُنَّنُ الْكَارِينِيُّ كَابِ البيوعِ 374 كتاب البيوع

[27].... بَابِ فِيمَنُ بَا عَ عَبُدًا وَ لَهُ مَالٌ صاحب ما لك غلام بيجة والے كابيان

2603 - أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنِ ابْنِ أَبِي ذِئْبٍ عَنِ ابْنِ شِهَابِ.....

عَنُ سَالِم عَنُ أَبِيهِهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ سالم اين باب سے روايت كرتے بيں كه رسول شرط نہ کرےاہے چھہیں ملے گا۔''

اللُّهِ ﷺ : ((مَنُ اشْتَرَى عَبُدًا وَلَمُ يَشْتَر طُ مَالَهُ فَلَا شَيْءَ لَهُ)). •

فوائد: غلام کی این مال پر چونکه کلی ملیت نہیں ہوتی اس لیے خرید وفروخت کے موقع پر مال کی الگ ہے بات کرنا پڑے گی ۔

[28] بَابِ فِي النَّهِي عَنِ الْمُنَابَذَةِ وَالْمُلامَسَةِ بيع منابذه اوربيع ملامسه كي ممانعت كابيان

2604 - أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَن الزُّهْرِيِّ عَنْ عَطَاءِ بْن يَزِيدَ

عَنُ أَبِى سَعِيدٍ الْحُدُرِيّ قَالَ نَهَى سَيْدِنَا الوسعيد ضررى فِالنَّمَ كُمْتُ مِين كه رسول الله طَنْفَوَيْم لِبُسَتَيُنِ عَنُ بَيُعِ الْمُنَابَذَةِ وَالْمُلامَسَةِ قَالَ عَبُد اللَّهِ الْمُنَابَذَةُ يَرُمِي هَذَا إِلَى ` ذَاكَ وَيَرُمِى ذَاكَ إِلَى ذَا قَالَ كَانَ

رَسُولُ اللَّهِ عَنُ بَيْعَتَيُن وَعَنُ مَنْ وَعَنُ فَعَنُ مَا بِذِهِ اور دوسم كَ كِيرُول سِيمنع كيا - بي منابذه اور ملامدے عبداللہ کہتے ہیں: منابذہ اسے کہتے ہیں جواس کی طرف بھینک دے اور وہ اس کی طرف بھینک دے۔ اور په حامليت ميں ہوتی تھی۔

هَذَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ. ٥

فواند: (١) مصنف رالينايه كتاب البيوع مين مقصود حديث كے جزءكوبى فقط بيان كيا ب حديث كا بقيه حصه بخارى مين ابوسعيد والني عن الصماء وأن يكل عن اشتمال الصماء وأن يحتبى الرجل في ثوب واحد ليس على فرجه منه شيءٌ) آپ نے اشتمال الصماء (يعني، کپڑے کوجسم کے گردایسے لپیٹ لینا کہ آ دی کا ہاتھ باہر نہ لکل سکے)اور آ دی کے اس طرح کپڑے کو لپیٹ

- ◘صحيح: اخرجه البخاري، كتاب المساقة، باب الرجل يكون له ممرأوشرب في حائط أوفي نخل (2379) ومسلم، كتاب البيوع، باب من باع نخلا وعليه ا ثمر(1543)
- ◘متـفـق عليه: البخاري، كتاب الصلاة، باب مايستر من الحورة ((367)ومسـلم، كاب البيوع، باب إبطال بيع الملامسة والمنابذة (1512)

الكاليوع 375 حياب البيوع كالمحتاب المحتاب البيوع كالمحتاب المحتاب المح

لینے سے روکا کہ اس کی شرم گاہ پر کچھ نہ ہو۔ (۲)'' منابذۃ'' کہتے ہیں دوآ دمی طے کرلیں کہ میں اپنے ہاتھ میں جو چیز اسے تمہاری طرف پھینکتا ہوں اورتم اینے ہاتھ کی چیز میری طرف پھینکواس طرح دونوں کی آپس میں تیج منعقد ہو جائے ۔'' ملامسہ'' ہے کہ کہا جائے تم نے ان تھانوں میں سے کیڑے کے جس تھان کو ہاتھ لگایا وہ تمہارا ہوگا دیکھنے پر کھنے کی اجازت نہ ہوان دونوں ہیعوں میں چونکہ غرر ہےاس لیےممنوع ہیں ۔

[29].... بَابِ فِي بَيُعِ الْحَصَاةِ

بيع حصاة كابيان

2605 - أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ

سیّدنا ابو ہربرۃ وخالفۂ کہتے ہیں کہ رسول الله عظیمیّا نے دھوکے کی بیج اور بیع حصاۃ سے (کنگریوں کے ذریعے بیج ے) منع کیا عبداللہ کہتے ہیں: جب کنکری سینکتے تو بیع ہو

عَنُ أَبِسِي هُسرَيُسرَةَ قَالَ نَهْبِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنُ بَيُعِ الْغَسَرَدِ وَعَنُ بَيُعِ الُحَصَاةِ قَالَ عَبُد اللَّهِ إِذَا رَمْى بِحَصًا وَجَبَ الْبَيْعُ . ٥

فوائد: كنكريوں كى بيع يوں ب كه يه طركيا جائے كه شترى ،خريد نے والا كنكرى تيسيكے گا جس چیز کو گلی وہ اتنی قیمت میں ہو گی للہذا پیغرر و جہالت کی بناء برحرام ہے۔

حاتی تھی۔

[30] بَابِ فِي النَّهُي عَنُ بَيْعِ الْحَيَوَانِ بِالْحَيَوَانِ جانور کی جانور سے بیچ کی ممانعت کا بیان

2606 - أَخْبَرْنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ وَجَعْفَرُ بْنُ عَوْن عَنْ سَعِيدٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنِ الْحَسَنِ

عَنْ سَمُرَةَ بُن جُنُدُب قَالَ نَهَى رَسُولُ لَ سَيِّدنا سَمرة بن جندب بْنَاتِيْدُ كَبْتِ بِين كه رسول الله طَنْطَوَيْنَ اللَّهِ عَنْ بَيْع الْحَيَوَان بِالْحَيَوَان لِلْمُعَيَوَان في الْحَيَوَان بِالْحَيَوَان لِللَّهِ عَنْ بَيْع الْمُعَيِّق اللَّه عَنْ الْمُعَيِّق اللَّه عَنْ الْمُعَيِّق اللَّه عَنْ اللَّه عَلَيْ عَلَى اللَّه عَلَيْهِ عَلَيْ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْ عَلَى اللَّه عَلَيْ عَلَى اللَّه عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلْمَ عَلَى اللَّه عَلَهُ عَلَيْهِ عَلَى اللَّه عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّ یہ حدیث بھول گئے اور جعفر نے بیہ بات نہیں کہی کہ پھر حسن بدحدیث بھول گئے۔

نَسِيُئَةً ثُمَّ إِنَّ الْحَسَنَ نَسِيَ هَذَا الْحَدِيثَ وَلَمُ يَقُلُ جَعُفَرٌ ثُمَّ إِنَّ

الْحَسَنَ نَسِىَ هَذَا الْحَدِيثَ . 🍳

[◘] صحيح: اخرجه مسلم، كتاب البيوع،باب بطلان بيع الحصاة (3787) والترمذي، كتاب البيوع،باب ماجاء في كراهية بيع الغرر (1230) وابن ماجه، كتاب التجارات، باب النهى عن بيع الحصاة وعن بيع الغرر (2194)

ے طرق وشواہر کی بناء پرتوک ہے۔احرحہ ابو داؤ د کتباب البيبوع،بياب الحيون بالحيون نسيّة (3356) والترمذی، کتاب البيو ع،باب ماجاء في كراهية بيع الحيوان بالحيوان(1237)والنسائي، كتاب البيوع،باب بيع الحيوان نسيئة (4634)

المرابعة المرابعة على المرابعة على المرابعة المر

فوائد: ندکورة حدیث کی سنداگر چیضعیف ہے کیکن ابن ماجہ: 1841 میں امام البانی نے اسے میح قرار دیا ہے جس سے اس روایت کو تقویت حاصل ہو جاتی ہے جب کہ دوسری جانب ابو داؤد میں حسن درج کی روایت ہے جس میں ہے کہ آپ میں گئے آپائے نے عبداللہ بن عمر و کو لشکر کی تیاری کا حکم دیا اونٹ کم پڑ جانے پر آپ میں گئے آپائے نے انہیں صدقے کے دواونوں کے بدلے ایک اونٹ خریدنے کا حکم دیا سواس بناء پر علماء میں اس بارے بہت اختلاف ہے امام شافعی رہتے ہیں یوں تطبیق دیتے ہیں یہاں ادھار سے مراد دونوں طرف سے ادھار ہے (تحفۃ الاحوذی: ۳۱۲/۳) امام خطابی نے بھی اس کو پیند کیا ہے اور یہی بات درست ہے۔

[31] بَابِ فِي الرُّنْحَصَةِ فِي اسْتِقُرَاضِ الْحَيَوَانِ جانورقرض لِينے كى اجازت كابيان

2607- أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ مَالِكٍ قِرَائَةً عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ

يَسَارٍ

رسول الله ﷺ کے آزاد کردہ غلام ابورافع کہتے ہیں کہ عَنُ أَبِيُ رَافِعِ مَوُلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ رسول الله من و آب ایک اونٹ قرض لیا۔ جب زکو ہ کے قَالَ استَسُلَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَكُرًا اونٹ آئے تو آپ نے مجھے حکم دیا کہ اس آ دمی کا اونٹ فَجَائَتُ إِبلٌ مِنُ إِبلِ الصَّدَقَةِ قَالَ أَبُو واپس کر دول تو میں نے کہا: '' مجھے عمدہ رباعی (جس کے رَافِع فَأَمَرَنِي أَنُ أَقْضِى الرَّجُلَ بَكُرَهُ رباعی دانت گریکے ہوں) کے سوا اور کوئی اونٹ نہیں ملتا۔'' فَقُلُتُ لَمُ أَجِدُ فِي الْإِبِلِ إِلَّا جَمَّلا خِيَارًا رَبَاعِيًا فَفَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ تو رسول الله من و لا ين فرمايا: " اسے وي دے دؤ لوگوں میں سے بہتر وہ ہے جو قرض ادا کرنے میں اچھا ہو۔'' أَعْطِهِ إِيَّاهُ فَإِنَّ خَيْرَ النَّاسِ أَحْسَنُهُمْ عبدالله كهتے بين: بير حديث اس آدمي كي بات كو تقويت قَطَاءً [قَالَ عَبُد اللَّهِ هَذَا يُقَوّى قَوُلَ دیتیے جو کہتا ہے:'' جانور سے جانور کا بدلہ ہوسکتا ہے۔'' مَنُ يَقُولُ الْحَيَوَانُ بِالْحَيَوَانِ]. •

فوائد: 100روپیقرض دے کریہ طے کرلینا کہ واپسی 120 کی صورت میں ہوگی تو بیسود ہے جو کہ حرام ہے کین گرطے کے بغیر قرض واپس کرنے والا اپنی طرف سے پچھز اندرقم دے دیتا ہے تو یہ جائز بلکہ آدمی کے بہتر ہونے کی علامت ہے جیسا کہ آپ طفی آیا کا فرمان (فان خیر الناس احسنہ مقضاء)

❶صحيح: اخرجه مسلم، كتاب المساقاة، باب من استسلف شيا فقضى خيراً منه وخير كم احسنكم قضاء (4084)
 والنسائي، كتاب البيوع، باب استسلاف الحيوان واستقرامته (4631)

شَنْ الْكَالِيْفِيُّ مِنْ مَابِ فِي النَّهُي عَنُ تَلَقِّى الْبُيُوعِ [32].... بَابِ فِي النَّهُي عَنُ تَلَقِّى الْبُيُوعِ

2608- أَخْبَرَنَا مُحَنَّمَدُ بُنُ الْمِنْهَالِ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ عَنْ

قافلہ ہے ملنے کی ممانعت کابیان

سیّدنا ابو ہریرۃ رہائیٰ کہتے ہیں کہ رسول الله طِنْطَائیْن نے فرمایا: ''مال تجارت کے (قافلہ کے) پاس پہلے نہ پہنچو جو پہلے ملا اور پچھ خریدا تو وہ بازار میں داخل ہونے کے بعد (اس کے قائم رکھنے یا نہ رکھنے کا)اختیار رکھتا ہے۔''

فوائد: کسان ، زمیندار جب اپناغله وغیره شهر کی منڈی میں فروخت کے لیے لا رہے ہیں تو ان سے راستے میں غلّه فریدنا مکروہ ہے کیونکہ اس طرح انہیں نقصان پینچنے کا اندیشہ ہے کہ کہیں ان سے کوئی منڈی کے ریٹ ہے کم میں نہ فرید لے ،اگر کوئی خرید لے تو اب کسان کو جائز ہے کہ منڈی میں زخ معلوم کرنے کے بعد سودے کو برقر اررکھ یا منسوخ کر دے ۔

[33] بَاب لَا يَبِيعُ عَلَى بَيُع أَخِيهِ اينے بِھائی کی نَصْح پرنَصْ نہ کرنے کا بیان

2609 ـ أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِع

سیّدنا ابن عمر وظافی کہتے ہیں کہ رسول الله مطفی کیا نے فرمایا:

در کوئی شخص اپنے بھائی کی تھے پر تھے نہ کرے اور قافلوں
سے نہ ملوحتی کہ وہ سامان بازار میں لا کر ڈال دیں۔ اور

دوسرے کونقصان پہنچانے کے لیے) بولی نہ لگاؤ۔'

عُنِ ابُنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ دَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ﴿ لَا يَبِيعُ بَعُضُ كُمُ عَلَى بَيْعِ بَعُضٍ وَلَا تَسَلَقًوا السِّلَعَ حَتّْى يُهُبَطُ بِهَا الْأَسُوَاقَ وَلَا تَنَاجَشُوا ﴾. ۞

فواند: (۱) بیع پر بیع کا بیمطلب ہے ایک شخص کی بات ابھی چل رہی ہے کہ دوسرا بیج میں دلچیں کا اظہار کردے چونکہ یہ پہلے مشتری کی دل شکنی کا باعث ہے الہذا بیحرام ہے (۲)'' بولی بڑھانا'' یہ چونکہ بیع

❶ صحيح: اخرجه مسلم،كتاب البيوع،باب تحريم تلقى الجلب(3802)والبخارى،كتاب البيوع،باب النهى عن تلقى الركبان

②مشفق عليه: البخارى، كتاب البيوع،باب لا يبع على بيع أحيه ولا يسوم على سوم أخبه حتى يأذن له أو يترك (2139) ومسلم، كتاب البيوع،باب تحريم بيع الرجل على بيع اخبه.....(3790)

ہی بولی والی ہوتی ہے جوزیاد ہ نرخ لگا دے وہی چیز کامستحق قرار پاتا ہے لیکن ہوتا یہ ہے بعض شخص جو کہ خریدا رنہیں ہوتے بلکہ بائع بیچنے والے کے مقرر کردہ ہوتے ہیں جن کا کام فقط بولی بڑھانا ہوتا ہے اور وہ بڑھ چڑھ کرقیت لگاتے ہیں ایسا کرنا حرام ہے۔

[34] بَابِ فِي النَّهُي عَنُ ثَمَنِ الْكُلُبِ كَتْ كَى قَيْتَ كَهَانِ كَى مِمَانِعِتَ كَابِيان

2610 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثِنِي الزُّهْرِيُّ عَنْ أَبِيْ بَكْرِ بْنِ عَبْدِالرَّحْمَنِ

سیدنا ابومسعود و النی کمتے ہیں کہ رسول اللہ طلط آئے نے کتے کی قیمت کنجری کے مہر اور کا بن کی اجرت سے منع کیا۔ عبداللہ کہتے ہیں: ''حلوان الکا بن وہ مال ہے جوفال کھو لئے بردیا جا تا ہے۔''

فوائد: (۱) کے کو بیخناس کی قیت کھانا جرام ہوائے شکاری کتے کے کیونکہ جابر ہے مروی ہے "نکھی رسول الله ﷺ عن ثمن الکلب الاکلب صید . " (صحیح نسانی: ۳۰۳) نے کتے کی قیمت کھانے ہے روکا سوائے شکاری کتے کے ۔لہذاامام شوکانی رائے پی حدیث قابل جمت ہو تو مطلق کو مقید پرمحمول کرتے ہوئے شکاری کتے کے علاوہ باقی کتوں کی تجارت جرام ہوگ ۔ (نیل الاوطار کہ محمول کرتے ہوئے شکاری کتے کے علاوہ باقی کتوں کی تجارت جرام ہوگ ۔ (نیل الاوطار کہ مالی کو مقید پرمحمول کرتے ہوئے والی کمائی جرام ہو (۳) غیب کی خبر بتانے پر جیسے آج کل علم النجوم یا پامسٹری وغیرہ ہے ان سے ہونے والی آمدن جرام ہے ۔ان وجوہات کی بناء پر بیا ہمکن ہے کہ کسی جرام کام کے عوض ہونے والی آمدن جرام ہے۔

[35] بَابِ فِي النَّهُي عَنُ بَيُعِ الُخَمُرِ شراب بيچ كىممانعت كابيان

2611 ـ أَخْبَرَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقِ

❶متفق عليه: اخرجه البخاري، كتاب البيوع،باب ثمن الكلب(2237)ومسلم، كتباب المساقاة،باب تحريم ثمن الكلب..... (3985)

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتُ لَمَّا نَوْلَتُ الْآيَةُ فِي سَيْره عائشه وَ الله عَلَيْهِ كَهِى جَبِ بَود كَم تعلق سورة بقره عَنْ عَائِشَةَ قَالَتُ لَمَّا نَوْلَتُ الْآيَةُ فِي سَيْره عائشه وَ اللهُ عَنْ عَائِشَة وَ اللهُ عَنْ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَنْ عَنْ اللهُ عَنْ عَلَا عَلْمُ عَالِمُ عَلَا عَلْمُ عَلَا عَلْمُ عَلَا عَالِمُ عَلَا عَلَا عَلْمُ عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلْمُ عَلَا عَا عَلَا عَلْمُ عَلَا عَلْمُ عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلْمُ عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلْمُ عَلَا عَلْمُ عَلَا عَلَا عَلْمُ عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَلَا عَا

ثُمَّ حَرَّمَ التِّبَجَارَةَ فِي الْنَحَمُّدِ . • حرام کردیا۔ ف**صوائیہ**: شراب چونکہ حرام ہے لہذااس کی خرید وفرخت بھی حرام ہے اسی طرح ہروہ حلال چیز

رَسُولُ اللَّهِ عِنْ أَنَّ لَاهُنَّ عَلَى النَّاسِ

جس کا پیۃ ہو کہ بیر رام کام میں استعال ہوگی ایسی بیچ بھی حرام ہے آپ طیفے بی از مہے ہی سر کا بروہ معاں پیر العنب ایام القطاف حتی یبیعه من یہو دی اونصر انی او ممن یتخدہ خمراً فقد تقحم السعنب ایام القطاف حتی یبیعه من یہو دی اونصر انی او ممن یتخذہ خمراً فقد تقحم السنار علی بصیرة " (صحیح: مجمع الزوائد 4 /90) جس نے انگوروں کی اترائی کے وقت ان کواس لیے جمع رکھا تا کہ کسی یہودی، عیسائی یا شراب بنانے والے کو فروخت کرے تو پی خص جانتے ہو جھتے آگ میں واخل ہو گیا۔ لہذا حرام چیزوں کے ساتھ ساتھ حلال چیزوں بھی حرام مقصد کے لیے فروخت کرنا حرام ہے (واللہ اعلم) کیا۔ لہذا حرام چیزوں کے ساتھ ساتھ حلال چیزوں بھی حرام مقصد کے لیے فروخت کرنا حرام ہے (واللہ اعلم) کیا۔ لہذا حرام چیزوں کے ساتھ ساتھ حلال چیزوں بھی حرام مقصد کے لیے فروخت کرنا حرام ہے (واللہ اعلم) کیا۔ کا خب رَنَا إِسْ حَتُ بُنُ إِبْسَ اَهِ سِسَمَ حَدَّثَ نَا جَدِيدٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِی الضَّحٰی عَنْ

مَسْرُوق**ِ**.....

سیده عائشه وخالفها کهتی بین جب سورة بقره کی آخری آیات نازل موئین تو رسول الله منطقی آین نکلے اور لوگوں کو پڑھ کرسنا کمیں۔ پھر شراب کی تجارت سے منع کر دیا۔

اللَّهِ عَلَى النَّاسِ ثُمَّ لَهَى النَّاسِ ثُمَّ لَهَى عَلَى النَّاسِ ثُمَّ لَهَى عَن النِّجَارَةِ فِي النَّحَمُر . •

2613 أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ هُوَ ابْنُ إِسْحَقَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِيْ يَزِيْدَ

عَنِ الْقَعْقَاعِ بْنِ حَكِيْمٍ

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتُ لَمَّا نَزَلَتِ الْآيَاتُ مِنُ

أُوَاحِب سُودَةِ الْبُقَرَةِ خَرَجَ دَسُولُ

سیّدنا عبدالرحمٰن بن وعلة کہتے ہیں کہ میں نے ابن عباس فرائی کے متعلق بوچھا تو کہا: رسول اللہ مطلق کیا نے فرمایا: ''وہ دباغت (رکھنے) سے پاک ہو

عَنُ عَبُدِ الرُّحُمَنِ بُنِ وَعُلَةَ قَالَ سَأَلُتُ ابُنَ عَبُدِ الرُّحُمَنِ بُنِ وَعُلَةَ قَالَ سَأَلُتُ ابُنَ عَبَّاسٍ عَنُ جُلُودِ الْمَيْتَةِ فَقَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((دِبَاخُهَا طَهُورُهَا)).

❶متفق عليه: البخاري،كتاب الصلوة،باب تحريم تجارة الخمر في المسجد(459)ومسلم،كتاب المساقاة،باب تحريم بيع الخمر(4022)

² صحبح: سابقه صدیث مررآئی ہے۔

الكَالِيَّانَ الْكَالِيَّانِيِّ الْكِالِيَّانِيِّ الْكِلْلِيَانِيِّ الْكِلْلِيَّانِيِّ الْكِلْلِيَّالِيِّ الْمِيلِّ عَلَيْهِ الْمِيلِّ عَلَيْهِ عَلِيْهِ عَلَيْهِ عَلِي مِنْ عَلَيْهِ عَلْمِي عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلْ

جاتا ہے۔' میں نے ان سے کافر کوشراب بیچنے کے متعلق پوچھا۔ کہ ہمارے پاس انگور ہوتے ہیں اور ہم ان سے شراب بنا کر کافروں کو بیچتے ہیں۔ابن عباس رہائٹ نے کہا: فبیلہ ثقیف یا دوس کے ایک شخص نے جہۃ الوداع کے موقع پر شراب کا ایک مشکیزہ رسول اللہ مشکیزہ کو ہدیہ دیا۔ تو نبیل کہ اللہ غشاہ بیٹے ناز اے ابو فلاں! کیا تمہیں معلوم نہیں کہ اللہ نے اسے حرام کر دیا ہے؟ اس نے کہا: اللہ کی قتم! مجھے معلوم نہیں فرمایا کہ اللہ نے اسے حرام کر دیا ہے۔ تو اس نے مڑکر اپنے غلام سے کہا: اسے حزام کر دیا ہے۔ تو اس نے مڑکر اپنے غلام سے کہا: اسے حزام کر دیا ہے۔ ابو فلاں! مختے معلوم نہیں کہ جس نے اس کا بینا حرام کیا ہے؟ فلاں! مختے معلوم نہیں کہ جس نے اس کا بینا حرام کیا ہے؟ اس نے اس کا بینا حرام کیا ہے؟ اس نے اس کا بینا حرام کیا ہے؟ اس نے اس کا بینا حرام کیا ہے؟ کے متعلق تھم دیا وہ نالی میں بہادی گئی۔

وَسَأَلُتُهُ عَنُ بَيْعِ الْحَمْرِ مِنُ أَهُلِ اللّهِمَّةِ فَقُلُتُ لَنَا أَعْنَابًا وَإِنَّا نَتَّحِذُ مَنُهَا هَذِهِ الْحُمُورَ فَنَبِيعُهَا مِنُ أَهُلِ اللّهِمَّةِ مَنُهَا هَذِهِ الْحُمُورَ فَنَبِيعُهَا مِنُ أَهُلِ اللّهِمَّةِ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ أَهُدَى رَجُلٌ مِنُ ثَقِيفٍ أَوُ وَلَى ابْنُ عَبَّاسٍ أَهُدَى رَجُلٌ مِنُ ثَقِيفٍ أَوْ وَلَى اللهِ عَلَى رَجُلٌ مِنُ ثَقِيفٍ أَوْ وَلِي اللهِ عَلَى رَاوِيةً مِنُ حَمْرٍ فِي حَجَّةِ اللهِ وَلَا اللهِ عَلَى رَاوِيةً مِنُ حَمْرٍ عَلَى اللهِ عَلَى الله قَدُ حَرَّمَهَا قَالَ لَا عَلِمُتَ يَا أَبَا فَلان أَنَّ الله قَدُ حَرَّمَهَا قَالَ لَا عَلِمُتَ يَا أَبَا فَلان أَنَّ الله قَدُ حَرَّمَهَا قَالَ لَا عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ الل

ف**ے اُند**: (۱) مردار جانور کی چمڑی رنگنے (کیکر کی چھال سے وھونے) سے پاک ہو جاتی ہے (۲) جس چیز کا پینا حرام ہے اس کی بیع بھی حرام ہے۔

[36] بَابِ فِي النَّهُي عَنُ بَيْعِ الُوَلَاءِ وَلَاءِ وَلَاءَ وَيَحِيْ كُلِمِ الْعَتْ كَابِيان

2614 - أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارِ

سیّدنا ابن عمر وَالنَّهُ کہتے ہیں کہ رسول الله طَّنَظِیَّةِ نے ولاء کو بیچنے اور ہبہ کرنے سے منع فر مایا۔عبداللہ کہتے ہیں:''اس پر عمل ہے۔ نہ اسے بیچا جائے گا اور نہ ہبہ کیا جائے گا۔''

عَنِ ابُنِ عُمَرَ قَالَ نَهَى رَسُولُ اللهِ عَلَىٰ عَنُ بَيْعِ اللهِ عَنُ بَيْعِ اللهِ عَنْ هِبَتِهِ قَالَ عَبُد اللهِ اللهِ اللهِ عَنْ مِبَتِهِ قَالَ عَبُد اللهِ اللهِ اللهُ مُرُ عَلَى هٰذَا لايُبَاعُ وَلايُوهُمَ بُ . • الأَمْرُ عَلَى هٰذَا لايُبَاعُ وَلايُوهُمَ بُ . •

 [◘] صحيح: الحرجة مالك، كتاب الأشربة، باب جامع تحريم الخمر (12) واخرجة مسلم، كتاب الحيض، باب طهارة جلو دالميتة بالدياغ (813) وابو داؤد، كتاب اللباس، باب في إهاب الميتة (4123)

[♦] متفق عليه: اخرجه البخاري، كتاب العتق، باب عن بيع الولاء وهبتة (2535) ومسلم، كتاب العتق، باب النهى عن بيع الولاء وهبته (16) ومالك، كتاب العتق باب مصير الولاء لم أعتق(20)

حكال الميوع على المال ال

ف انسد: "ولاء "ايك رشته ناط ب جوكه غلام كوآ زاد كرنے كى صورت ميں غلام كاغلام آزاد

كرنے والے كے ساتھ قائم ہوتا ہے يہى وجہ ہے كەنەتو اسے عطيه كيا جاسكتا ہے اور ند يجا۔

[37].... بَابِ فِي بَيُعِ الْمُدَبَّرِ

بيع مدبر كابيان

2615 - أَخْبَرَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِم حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْن دِينَارِ قَالَ

سَمِعُتُ جَابِرَ بُنَ عَبُدِ اللّهِ اللهِ الله اللهِ الل

فوائد: (۱)"المُدَبَّر" ایسے غلام کوکہا جاتا ہے جس کواس کا مالک کہددے کہ تو میرے مرنے کے بعد ورشہ کے بعد آزاد ہے ۔ تو اب بیغلام مالک کی زندگی میں اس کی خدمت کرے گا اس کے مرنے کے بعد ورشہ کے حصے میں آنے کی بجائے آزاد ہوگا (۲) مدبر غلام کوکسی پیش آمدہ سبب کی بناء پر بیجا بھی جاسکتا ہے۔

[38].... بَابِ فِي بَيْعِ أُمَّهَاتِ الْأَوُلَادِ

ام ولد کا لونڈیوں کے بیچنے کا بیان

2616- أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شَرِيكٌ عَنْ حُسَيْنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ عَنْ عَكُ مَة

سیدنا ابن عباس بن الین کیتے ہیں کہ نبی منظ الیہ نے فرمایا: "جب کسی آ دمی کی لونڈی کو اس سے اولاد ہو جائے تو وہ اس کے بعد آزاد ہو جائے گی۔" عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ : ((قَالَ إِذَا وَلَـ دَنُ اللَّهِيِّ عَنَّقَةٌ إِذَا وَلَـ مَنْهُ فَهِى مُعْتَقَةٌ عَنْ دُبُرِ مِنْهُ أَوْ بَعْدَهُ)). ٥

فوائد: (۱)" ام الولد" اليى لونڈى كو كہتے ہيں جس كا مالك سے بچہ پيدا ہو گيا ہواليى لونڈى بچى نہيں جا كتى بلكہ يہ مالك كى وفات كے بعد آزاد ہوتى ہے (٢) ندكورة حديث اگر چه ضعيف ہے كيكن مؤطا

❶ صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الإيمان، باب جواز بيع المدبر (259) والبخاري، كتاب البيوع، باب بيع المدبر (2141)

[€]ضعيف جداً: اخرجه ابن ماجه، كتاب العتق باب امهات الاولاد(2515)والدار قطني 131/4 والحاكم19/2

عَنْ الْكَالِيْعِيُّ عَنْ الْكَالِيْعِيُّ 382 هـ 382 كتاب البيوع عنى الْكَالِيْعِيُّ عَنْ الْكَالِيْعِيُّ الْكِيلِيقِيُّ الْكَالِيقِيقِيُّ الْكِلْمِينِيِّ عَلَيْهِ الْمِيلِيقِيقِي الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّي الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعِلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعِلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّ الْمُعَلِّقِيلِيِّيلِيِّيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعِلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعَلِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِي الْمُعِلِّقِيلِيّ الْمُعَلِّقِيلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِّيلِيّ الْمُعِلِّيلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِي الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِي الْمُعِلِّي الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِّيلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعْلِقِيلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيلِيّ الْمُعِلِي الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِي الْمِعِلِي الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِي مِلْمِلِيّ الْمُعِلِيّ الْمُعِلِي مِلْمِلِي الْمُعِلِي مِلْمِيلِيّ الْمُعِلِي مِعْلِيلِيّ الْمُعِلِي مِلْمِلِي الْمُعِلِي مِلْمِلِيلِيّ الْمُعِلِي مِلْمِلِي مِلْمِيلِيّ الْمُعِلِي مِلْمِيلِي مِلْمِيلِي مِلْمِيلِي الْمُعِلِي مِلْمِلِي مِلْمِلِي مِلْمِيل

میں عمر وزائنی سے مروی ہے "لا تباع و لا تورث یست متع مابدا له ، فاذا مات فھی حُرفّ " فی مروی ہے "لا تباع و لا تورث یست متع مابدا له ، فاذا مات فھی حُرفّ " (مؤطا 2 / 776) (ام الولد) نہوہ بچی جا سکتی ہے اور نہ وراثت بنائی جا سکتی ہے مالک کے لیے جب تک ممکن ہواس سے فائدہ اٹھالے جب وہ مرجائے تو وہ آزاد ہے۔ جب کہ اس کے برعکس (ابوداؤد :3340) سے ان کے بیچنے کا بھی ثبوت ماتا ہے ۔ امام خطابی رائی ہے اس بارے یوں فرماتے ہیں جمکن پہلے بچ جائز ہو پھر آپ سے روک دیا آپ طفے ہو اور عمر فرائی نے نہ چنے پر اس سے روک دیا ہو (معالم السنن 4 / 74) جمہور بھی ام ولد کی بچے ناجائز ہونے کے قائل ہیں جب کہ این قدامہ رائی ہو اس پر حال ام ولد کو بی ناجائز ہونے کے قائل ہیں جب کہ این قدامہ رائی مدیث کے صحابہ کا اجماع نقل فرماتے ہیں (المغنی) بہر حال ام ولد کو بی نامن عہار ضرورت ہوتو النے داؤد کی صدیث کے مطابق بچا بھی جاسکتا ہے (واللہ اعلم بالصواب)

[39] بَابِ فِي صَاعِ الْمَدِينَةِ وَمُدِّهَا مَدِينَةِ وَمُدِّهَا مَدِينَةِ وَمُدِّهَا مِن مَا اللهِ مَا اللهُ مِن اللهُ مَا اللهُ اللهُ مَا
2617 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو مُحَمَّدٍ الْحَنَفِيُّ الْمَلَنِيُّ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ إِسْحَقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ

[40] بَابِ فِي النَّهِي عَنُ بَيْعِ الطَّعَامِ إِلَّامِثُلَا بِمِثُلِ عَنُ بَيْعِ الطَّعَامِ إِلَّامِثُلَا بِمِثُلِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ ُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ ع

2618 ـ أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ أَنْبَأَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِيْ إِسْلَحَقَ عَنْ مَسْرُوقِ

سیّد نا بلال والنّو کہتے ہیں کہ نبی مشیّعیّن کی ایک مد تھجوریں میرے پاس تھیں۔ میں نے دوصاع دے کراس کے بدلہ میں ایک صاع اچھی تھجوریں لے لیں۔ اور انہیں عَنُ بِلَالٍ قَسَالَ كَسَانَ عِنُدِى مُدُّ تَمُو لِلنَّبِيِّ عِثْثَةً فَوَجَدُتُ أَطُيَبَ مِنْهُ صَاعًا بِصَاعَيُنِ فَاشْتَرَيُتُ مِنْهُ فَأَتَيْتُ بِهِ

❶متـفـق عـليه: البخاري، كتاب البيوع،باب بركة صاع النبي صلعم(2130)ومسـلـم، كتاب الحج،باب فضل المدينه ودعاء النبي صلعيم فيها بالبركة(3312)

النَّبِيَّ فَلَنُ الْكَالِمِيْ مَنْ أَيْنَ لَكَ هَذَا يَا فَي الْمُعَيِّزِ كَ بِاس لِي آيار آپ نے فرمایا: "اے بلال الله فَلْتُ اللهُ عَرَيْتُ صَاعًا بِصَاعَيْن (وَالنَّمُوّ!) يه كها ہے لی ہیں؟ " میں نے كها: "دوصاع دے بلال قُلْتُ اللهُ عَرَيْتُ صَاعًا بصَاعَيْن (وَالنَّمُوّ!) يها ہے لی ہیں؟ " میں نے كها: "دوصاع دے

بی مصطفرہ کے پال کے آیا۔ آپ کے حرمایا: "اسے بلال (زائشیہ!) یہ کہا سے لی ہیں؟" میں نے کہا: "دوصاع دے کر ایک صاع کی ہیں۔" آپ نے فرمایا: "انہیں واپس کر دواور جماری کھجوریں لے آؤ۔"

2619- أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ هُوَ ابْنُ بِلَالٍ عَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ بْنِ سُهَيْلِ ابْن عَبْدِ الرَّحْمَن أَنَّهُ سَمِعَ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّب يُحَدِّثُ

سیّدنا ابو سعید خدری و فائفهٔ اور سیّدنا ابو مریرة و فائفهٔ بیان کرتے ہیں کہ رسول الله طفیعاً نے بنوعدی کے انصاری شخص کو خیبر کا حاکم بنا کر بھیجا۔ وہ عمدہ کھیوریں لائے۔ تو رسول الله طفیعاً نے فرمایا: '' کیا تمام خیبر کی ایسی ہی کھیوریں ہوتی ہیں؟ کہا: نہیں الله کی قتم یا رسول الله ہم اونی درج کے دوصاع دے کرایک صاع کھیوریں لیتے ہیں رسول الله طفیعاً نے فرمایا: ''ایسا نہ کرو بلکہ برابر پیچو یا انہیں نیچ دو اور ان کی قیمت سے اچھی کھیوریں خریدو ایسے ہی وزنی چیز کے متعلق ہے۔''

أَنَّ أَبَا سَعِيدِ الْخُدُرِيَّ وَأَبَا هُرَيُرَةَ حَـ لَّشَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللّهِ عِلَيُّ بَعَتَ أَخَابَنِى عَدِي الْأَنْصَارِيَّ فَاسُتَعُمَلَهُ عَلَى خَيْبَرَ فَقَدِمَ بِتَمْرِ جَنِيبٍ قَالَ ابُنُ عَلَى خَيْبَرَ فَقَدِمَ بِتَمْرِ جَنِيبٍ قَالَ ابُنُ مَسُلَمَةَ يَعُنِى جَيِّدًا فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ عِلَى اللهِ إِنَّا لَنَشْتَرِى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ يَارَسُولَ اللهِ إِنَّا لَنَشْتَرِى الصَّاعَ بِالصَّاعَيْنِ مِنَ الْجَمْعِ فَقَالَ الصَّاعَ بِالصَّاعَيْنِ مِنَ البَّحِمْعِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَى : ((لَا تَفْعَلُوا وَلَكِنُ مِثْلا بِعِمْلِ أَوْ بِيعُوا هٰ لَذَا وَاشْتَرُوا بِثَمَنِهِ مِنُ هٰذَا وَكَذْلِكَ الْمِيزَانُ)). ٥

قَالَ: ((رُدَّهُ وَرُدَّ عَلَيْنَا تَمُرَنَا)). •

فوائد: کھبور یااس جیسا غلہ ان کوآپس میں تبدیل کرنے یاان کی بیج کرتے ہوئے برابری کا خیال رکھنا لازم ہے ہاں اگر معیار دونوں جانب ایک سانہ ہو تب بھی کی بیشی جائز نہیں پیطریقہ اختیار کیا جا سکتا ہے کہ ایک تتم کی مجبور نقذ فروخت کر کے اس کے بدلے دوسری قتم خرید لی جائے۔

 [◘] صحيح : نيز ال كشوابه مجل بين الحرجه الطحاوى في معانى الآثار 68/4والطبراني الكبير 359/1 (1097) محمع
 الزوائد (6638-6639) ومسند موصلي (5710) و كيكي أنده حديث.

[ூ]متفق علیه: اخرجه البخاری، کتاب البیوع، باب اذااراد بیع تمر یتمر خیر منه (2201-2202) و مسلم، کتاب المساقاة باب بیع الطعام مثلًا بمثل (4057)

حكار البيوع على البيوع

[41] بَابِ فِی النَّهُیِ عَنِ الصَّرُفِ نقد کے بدلے نقد کی بیشی کے ساتھ پیچنے کی ممانعت کا بیان

2620 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحٰقَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَوْسِ بْنِ

الْحَدَثَان النَّصْرِيّ

عَنُ عُمَسرَ بُنِ النَّحَطَّابِ وَلَلَّهُ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ عَلَىٰ : ((يَقُولُ اللَّهِ عَلَىٰ : ((يَقُولُ اللَّهَ عَلَا وَهَاءَ وَالْفِضَةُ اللَّهُ عَلَا وَهَاءَ وَالْفِضَةُ بِالْفَضَةِ هَاءَ وَهَاءَ وَالتَّمُرُ بِالتَّمُرِ هَاءَ وَهَاءَ وَالنَّعُرِ هَاءَ وَهَاءَ وَالنَّعِيرِ بِالشَّعِيرِ وَالنَّعِيرِ بِالشَّعِيرِ اللَّهَ عِيرِ اللَّهُ عِيرِ اللَّهُ عِيرِ اللَّهُ عَلَى اللْعَلَى اللَّهُ عَلَى اللْعَلَى الْعَالَعَلَى الْعَلَى الْعَلَى اللَّهُ عَلَى اللْعَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى ال

سیّدنا عمر بن خطاب و النفو کہتے ہیں کہ میں نے رسول الله طفی و آئی سے سنا وہ فرماتے تھے: ''سونے کے بدلے سونے کی بیچ ہاتھوں ہاتھ ہو۔ اور جا ندی کے بدلے جاندی کی بیچ کھور کے بدلے گندم کی بیچ کھور کے بدلے گندم کی جو کے بدلے گندم کی بیشی جو کے بدلے جو کی بیچ ہاتھوں ہاتھ ہو۔ دونوں میں کی بیشی

2621 ـ أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنَ أَنْبَأَنَا خَالِدٌ عَنْ خَالِدِ الْحَذَّاءِ عَنْ أَبِي قِلابَةَ

ابوا محد صنعانی کہتے ہیں کہ معاویہ بڑاٹی کی خلافت میں کہھ لوگ سونے اور چاندی کے برتن وظیفہ ملنے تک کے وعدہ پر فروخت کرتے تھے۔تو سیّدنا عبادة بن صامت بڑاٹی نے سونے کے نے کھڑے ہو کر کہا: ''رسول اللہ طائے آئے نے نے سونے کے بدلے سونے چاندی' گندم کے بدلے جواور نمک کے بدلے جواور نمک کے بدلے جواور نمک کے بدلے بحوار نمک کے بدلے بوادر نمایا ہے۔ للنوا بدلے بیان کے باتھ بیچنے سے منع فر مایا ہے۔ للنوا بس نے زیادہ دیا یا لیا وہ سود ہے۔''

عَنُ أَبِى الْاَشُعَثِ الصَّنَعَانِيَ قَالَ قَامَ نَاسٌ فِى إِمَارَةِ مُعَاوِيَةَ يَبِيعُونَ آنِيَةَ الشَّنَعَانِيَ قَالَ قَامَ الشَّهِ فِى إِمَارَةِ مُعَاوِيَةَ يَبِيعُونَ آنِيَةَ الشَّهِ وَالْفِصَّةِ إِلَى الْعَطَاءِ فَقَامَ عُبَاحَةُ بُنُ الصَّامِتِ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ عُبَاحَةُ بُنُ الصَّامِتِ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَى الدَّهَبِ بِالذَّهَبِ اللَّهِ عَلَى الدَّهَبِ بِالذَّهَبِ وَالنَّهُ وَالنَّهُ بِاللَّهِ عِلَى الشَّعِيرِ وَالتَّهُ وَالنَّهُ بِالنَّهِ وَالنَّهُ وَالتَّهُ بِالشَّعِيرِ وَالتَّهُ بِالشَّعِيرِ وَالنَّهُ بِالشَّعِيرِ وَالنَّهُ مِنْ بِالشَّعِيرِ وَالنَّهُ لِ بِالشَّعِيرِ وَالْمِلُحِ إِلَّا مِثْلَا بِمِنْلُ سَوَاءً بِسَوَاءٍ بِسَوَاءٍ فَمَنُ زَادَ أَوْ ازُدَادَ فَقَدُ أَرُبَى . •

فوائد: تجارتی سود کی دوسمیں ہیں (۱) "ربا الفصل" دوہم جنس اشیاء کو کی بیش کے ساتھ

[♣] متفق عليه: البخارى، كتاب البيوع، باب ما يذكر في بيع الطعام والحكرة (2134) ومسلم، كتاب المساقاة، باب الصرف و بيع الذهب بالورق نقداً (4035)

[€] صحيح: اخرجه مسلم، كتاب المساقاة باب في الصرف وبيع الذهب بالورق نقداً (4037) و ابو داؤد، كتاب البيوع، باب في الصرف(3249-325) صحيح ابن حبان (5015)

المَّالِينَ المَّالِينِينَ المَّلِينِينَ المَّالِينِينَ المَّالِينِينَ المَّلِينِينَ المِلْمِينَ المَّلِينِينَ المَلِينِينَ المَّلِينِينَ المَّلِينِينَ المَّلِينِينَ المَلِينِينِينَ المَلِينِينَ المَلْلِينِينَ المَلْلِينِينِينَ المَلْلِينِينَ المَلْلِينِينَ المَلْلِينِينَ المَلْلِينِينِينَ المَلْلِينِينَ المَلْلِينِينِينَ المَلْلِينِينَ المَلْل

فروخت کرنا (ب)" رہا النسینه" بیرے که مقدار تو برابر ہولیکن ایک جانب ہے ادھار ہو۔موجودہ حدیث دلیل ہے کہ ان چھ چیزوں کوآپس میں نقذ ونقذ اور برابر، برابر کی بنیاد پر تبدیل کیا جائے گا۔ جب کہ ان مذکورة اشیاء کے علاوہ دوسری اشیاء میں سود کے پائے جانے بارے اختلاف ہے جمہور کا موقف ہے کہ جہال بھی ان جے اجناس کے علاوہ سود والی علّت یائی جائے گی ان میں بھی وہ سود ہی ہوگا۔

[42].... بَابَ لَا رِبَا إِلَّا فِي النَّسِيئَةِ سودصرف ادھار میں ہوتا ہے

2622 ـ أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَاصِم عَنِ ابْنِ جُرَيْرِ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِيْ يَزِيْدَ.

عَن ابُن عَبَّاس قَالَ أَخُبَرَنِي أُسَامَةُ بُنُ سيِّدنا ابن عباس بِخَالِمَذ كَهَتِ بين مجھ اسامہ بن زيد و فالعد نے بتایا که رسول الله الله الله نے فرمایا: "سود صرف ادھار میں ہے۔'عبداللہ کہتے ہیں:''اس کا مطلب سے ہے کہ دو درہم کے بدلہ میں ایک درہم ہو۔''

زَيُدٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ إِنَّمَا الرِّبَا فِي الدَّيُن قَالَ عَبُدُ اللَّهِ مَعْنَاهُ دِرُهَمَّ بدِرُهَمَيْن . 0

فواند: "ربا النسيئة " كى تعريف يجهل صديث من كزريكى ب جب كريجهل صديث مي س بات ثابت ہو چکی ہے کہ سابقہ ذکر کروہ اجناس میں بھی سود ہوتا ہے جسے ربا الفصل کہا جاتا ہے او پھراس حصر کے کیامعنی ، کہ سود صرف قرض ادھار میں ہے اسکے علماء نے مختلف جواب دیے ہیں (۱) حصر زیادتی میں ہے کہ ادھار میں انتہائی زیادہ سود ہے (۲) بیصدیث عام ہے جب کہ پچپلی حدیث خاص تھی (واللہ اعلم)

[43].... بَابِ الرُّخُصَةِ فِي اقْتِضَاءِ الْوَرِقِ مِنَ الذَّهَبِ سونے کے بدلے جاندی لینے کی رخصت کا بیان

2623 - أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةً عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ

سيَّدنا ابن عمر وفي تعدّ كتب مين مين بقيع مين اونث بيجيا تها-اور دینار کے بدلے چے کر درہم لیتا تھا۔ اور درہم کے بدلے بچ کر دینار لیتا تھا۔ میں نے رسول الله طفی ایکا کے

عَن ابُن عُمَرَ قَالَ كُنْتُ أَبِيعُ الْإِبِلَ بِالْبَقِيعِ فَأَبِيْعُ بِالدَّنَانِيرِ وَآخُذُ الدَّرَاهِمَ وَأَبِيْعُ بِالدَّرَاهِمِ وَآخُذُ الدَّنَانِيرَ وَرُبَّمَا

[◘] متـفـق عليه: البخاري، كتاب البيوع،باب الدينار بالدينار نساء(2178)و مســلم، كتاب المساقاة،باب ببع الطعام مثلاً بمثل(4065)

386 کیاب البیوع کتاب البیوع الكالغيث الكالغيث المحاسطة

یاس جا کر کہا: یا رسول الله! فررا رکیے میں نے آ ب سے سوال یو چھنا ہے۔ میں بقیع میں اونٹ بیتیا ہوں۔ دینار کے بدلے ج کرورہم لیتا ہوں اور درہم کے بدلے چ کر دینار لیتا ہو۔ آپ نے فر مایا: ''اس میں کوئی حرج نہیں کہ تم اس دن کی قیت لے لؤجب تک تم جدانہ ہواور قیت كالبجه حصه باتى ندره جائے۔''

قَىالَ أَقُبِضُ فَأَتَيُتُ رَسُولَ اللَّهِ عَلَيْ فَقُلُتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ رُوَيُدَكَ أَسُأَلُكَ إِنِّى أَبِيعُ الْإِبِلَ بِالْبَقِيْعِ فَأَبِيْعُ بِالدَّنَانِيُر وَآخُـلُ الدَّرَاهِمَ وَأُبِيعُ بِالدَّرَاهِمِ وَآخُلُ الدَّنَانِيُرَ قَالَ:((لَا بَأْسَ أَنُ تَأْخُذَ بِسِعُو يَوُمِكَ مَا لَمُ تَفُتَرِقَا وَبَيْنَكُمَا شَيُّ). •

فوائد: دینارسونے اور درهم چاندی کا ہوتا ہے لہذا ان کے تباد لے کے وقت مقدار کا برابر ہونا نا ممکن ہے دور نبوی مطفع میں ایک دینا بارہ درهموں کے برابر ہوتا تھا معلوم ہوا جب جنسیں مختلف ہو جا کیں تو کی بیشی جائز ہے لیکن بیج نقد ہو۔

[44].... بَابِ فِي الرَّهُن رہن کا بہان

2624 - أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا هشَامٌ عَنْ عِكْرِمَة

سيّدنا ابن عباس وللني كيت بي كه رسول الله طي و جب عَنِ ابُنِ عَبَّساسِ قَسالَ تُـوُفِّي رَسُولُ اللُّهِ عِنْكُ وَإِنَّ دِرُعَهُ لَمَرُهُونَةٌ عِندَ یبودی کے یاس گروی رکھی ہوئی تھی۔ رَجُلِ مِنَ الْيَهُودِ بِنَ كَاثِيْنَ صَاعًا مِنْ

شُعِيْرٍ. 🍳

فوت ہوئے تو آپ کی زرہ تیں صاع جو کے بدلہ میں ایک

فوائد :..... (۱) جب اشیاء کی جنس مختلف ہوتو کمی بیشی اور ادھار دونوں جائز ہے (۲) عبدالرحمٰن بن ^ا عوف خلائمۂ ،عثان غنی خلیمۂ جیسے جلیل اور امیر صحابہ کی موجود گی میں ایک یہودی سے قرض لینا اس کی یہی وجہ سمجھ آتی ہے کہآپ پرکوئی رحم کھا کریہ نہ کہددے کہ چلیں رہنے دیں یا ویسے عطیہ کردے بلکہ قرض کے لیے ایسے شخص کا ابتخاب کیا جومطالبے میں کسی قتم کی نرمی نہ کرے (۳) آپ مشکر آپ مشکر انوں کے مالک نہ تھے

 [◘] حسن: صحيح ابن حبان (4920) والترمذي، كتاب البيوع، باب ماجاء في الصرف (1242) والنسائي، كتاب البيوع، باب بيع الذهَب، بالفضة والفضة بالذهب(4596)

[🗨] صحيح: اخرجه احمد 236/1و ابن ابي شيبه 18/6 (63) كتاب البيوع باب ماجاء في الرخصة في الشراء إلى أجل (1214)والنسائي، كاب البيوع، باب مبايعة أهل الكتاب (4665)وابن ماجه، كتاب الرهون، باب أبواب الرهو ن

مَا البيوع على البيوع

ورنهآپ کی بیرحالت نه ہوتی ۔

[45].... بَاب فِی السَّلَفِ بِیع سلف کابیان

سیدنا عبدالله بن عباس والنفه کہتے ہیں کہ رسول الله طفی الله علی کہ سیدنا عبدالله بن عباس والنفه کہتے ہیں کہ رسول الله طفی الله علی ملک سیاوں میں بیع سلم کرتے ہے۔ تو رسول الله طفی این نے فرمایا:

''وزن اور ناپ معلوم ہو تو بیع سلم کرو۔ اور سفیان ایک زمانہ تک ہی ہمی ذکر کرتے ہے کہ مدت بھی معلوم ہو پھر خمارالله بن کثیر نے آنہیں شک میں ڈال دیا۔

فوائد: (۱) ''سلف'' یہ ہے کہ ایک آدمی دوسرے نقد ادائیگی کردے کہتم مجھے یہ مال اتنی مدت تک دے دینا اگر چہوہ مال اس شخص کے پاس ہویا نہ ہو (۲) بیدع سلف کے لیے ندکورۃ شرائط کا پایا جانا لازم ہے (۱) اس کا وزن وصف معلوم ہو (ب) مدت متعین ہو۔

[46] بَاب فِی حُسُنِ الُقَضَاءِ قرض کواچھی طرح ادا کرنے کا بیان

2626 حَدَّثَنَا شَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

محارب کہتے ہیں میں نے سیّدنا جابر فِیانیّئۂ سے سنا کہ رسول اللّٰہ ﷺ نے ان کے لئے درہم کا وزن کیا تو زیادہ کیا۔

عَنُ مُحَارِبٍ قَالَ سَمِعُتُ جَابِرًا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَزَنَ لَسَهُ دَرَاهِمَ فَأَرْجَحَهَا . ۞

وقصرها،باب استحباب تحية المسجد بركعتين(653)

 [◘] متفق عليه: البخاري، كتاب السلم، باب السلم في كيل معلوم (2239) ومسلم، كتاب المساقاة، باب السلم (4094)
 ◘ متفق عليه: البخاري، كتاب الصلاة، باب الصلاة اذا قدم من السفر (443) ومسلم، كتاب صلاحة المسافرين

المُعْلِينَ الْكَالِيْوَعُ الْمُعْلِقِينَ الْكَالِيْوَعُ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِيهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِ

فواند: (۱) بياصل ميں ايك سفر سے واپس كا واقعه تھا دوران سفر آپ مِشْ عَلَيْهُ نے جابر زُوالْعُدُ سے سواری خریدی تھی جس کی قیمت گھر پہنچ کرادا کرناتھی۔ (۲) نہ کور ۃ حدیث دلیل ہے کہ ادائیگی کرتے ہوئے متعین مقدار سے زیادہ دینا حائز ومسنون ہے۔

[47].... بَابِ الرُّجُحَانِ فِي الْوَزُنِ زباده تولنے کا بیان

2627 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ سِمَاكِ بْن حَرْب

عَنْ سُويَيْدِ بُن قَيْسِ قَالَ جَلَبْتُ أَنَا سَيِّدنا سويد بن قيس كتب بين: كه بين اورمخر مع عبدي بحرين ہے کیڑا لے کر مکہ گئے۔تو رسول اللہ پیشٹی میزا ہے باس پیل آئے۔ اور ہم سے ایک شلوار خریدی۔ وہاں ایک وزن کرنے والاتھا جو قیت پر وزن کررہا تھا آپ نے اسے فرمایا:''وزن کروتو زیادہ کرو'' جب آ پ چلے گئے تو لوگول نے کہا: ''بہرسول الله طلطيَّة لِلْمَ تتھے''

وَ مَخُوَمَةُ الْعَبُدِيُّ بَزًّا مِنَ الْبَحْرَيْنِ إِلَى مَكَّةَ فَأَتَانَا رَسُولُ اللَّهِ ﴿ يُمْشِي فَسَاوَمَنَا بسَرَاوِيلَ أَوُ اشُتَرَى مِنَّا سَرَاوِيلَ وَثَــمَّ وَزَّانٌ يَـزنُ بِـالْأَجُـرِ فَقَالَ لِلُوزَّانِ:((زنُ وَأُرُجِحُ)). فَلَمَّا ذَهَبَ يَهُشِي قَالُوا هَذَا رَسُولُ الله الله

فوائد: يه بني لبيب كا فرمان عاليشان بي كه تو لوتو جهكتا ديا كروتا كه كي نه موبيثي موجائ جوكه باعث رحت ہے جب کہ بعض عاقبت نا اندیش لوگوں نے لینے دینے کے باٹ الگ رکھے ہوتے ہیں یا تولتے ہوئے عین یورا بورا تو لنے کی کوشش کرتے ہیں جا ہے وہ کم ہی رہ جائے یہ چیزیں فرمان نبوی مِنْ اَلَيْمَا لَيْ مخالفت کی بناء پر برکات کےمحوہو جانے کا باعث ہیں۔

> [48] بَابِ فِي مَطُلُ الْغَنِيّ ظُلُمٌ غنی کا تاخیر کرناظلم ہے

2628 حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ

[◘] استناده قوى: صحيح ابن حبان (5147)اخرجه ابوداؤد، كتباب البيوع،باب في الرجحان في الوزن بالأجر (3337-3336) وابن ماجه، كتاب التحارات،باب الرجحان في الوزن(2220-2221)والنسائي، كتاب البيوع،باب الرجحان في الوزن(4606)

عَنْ الْكَالِيْدِي اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ ع

عَنُ أَبِسَى هُ رَيُسِرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنَى أَبِسَى هُ رَيُسُولُ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ الل

سیّدنا ابو ہریرة فرائی کہتے ہیں که رسول الله طفی آیا نے فرمایا: "غنی کوتا خیر کرنا (قرض کی ادائیگی میں)ظلم ہے۔ جب کسی کا امیر سے واسطہ ریٹ جائے تو چاہئے کہ اس کے پیچھے لگ جائے۔"

فوائد: (۱) مال، پیے ہونے کے باوجود ٹال مٹول کرنا، پھیرے لگواناظلم ہے (۲) جب قرض خواہ پیے لینے کے طالب کو جب کسی آدمی بارے کہا جائے کہ فلال سے پیے لے لینا اور اگلا آدمی بھی مان جائے کے میں دے دول گا تو پھر بلا وجہ اٹکنا اور اپنے قرض دار سے ہی لینے پر اصر ارکرنا بیوتوفی اور خلاف سنت ہے۔

[49].... بَابِ فِي إِنْظَارِ الْمُعُسِرِ تنكدست كومهلت دينے كابيان

2629 حَدَّنَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ

عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ كَعُبٍ عَنُ أَبِيهِ أَنَّهُ تَقَاضَى ابُنَ أَبِى حَدْرَدٍ دَيُنًا كَانَ لَهُ عَلَيْهِ فِي ابْنَ أَبِى حَدْرَدٍ دَيُنًا كَانَ لَهُ عَلَيْهِ فِي ابْنَ أَبِى حَدْرَدٍ دَيُنًا كَانَ لَهُ عَلَيْهِ فِي ابْنَهُ عَلَى الْمُسْجِدِ فَارْتَفَعَتُ أَصُواتُهُمَا حَتَى سَمِعَهَا النَّبِي عَلَيْهِ وَهُو فَى بَيْتِهِ فَخَرَجَ إِنْهُهِمَا فَنَاذَى يَا كَعُبُ فِي بَيْتِهِ فَخَرَجَ إِنْهُهِمَا فَنَاذَى يَا كَعُبُ قَالَ ذَى يَا كَعُبُ قَالَ لَيْهِ فَقَالَ: قَالَ لَيْهُ فَقَالَ: ((ضَعُ مِن دَيُنِكَ فَأُومَا إِلَيْهِ الشَّعُرَ)). قَالَ قَدْ فَعَلْتُ قَالَ: ((قُمُ الشَّعُلَ)). قَالَ قَدْ فَعَلْتُ قَالَ: ((قُمُ فَاقُضُه)). ٥

سیّدنا عبدالله بن کعب اپن والد نقل کرتے ہیں که انہوں نے معجد میں ابن ابو حدرد سے قرض کے پینے مانگے جو ان کی آ وازیں اس قدر بلند ہو گئیں کہ نبی مطفظ آنے نے اپنے گھر میں سن لیں تو آپ ان کے پاس تشریف لے گئے۔ اور پکارا: ''اے کعب!۔'' اس نے کہا: جی اے اللہ کے رسول! تو آپ نے فرمایا: ''اپنے قرض سے اس قدر چھوڑ دو' اس کی طرف نصف کا اشارہ کیا۔ اس نے کہا: میں نے چھوڑ دیا۔ آپ نے (ابن ابو عدرد) سے فرمایا: '' کھڑ ہے ہو جاؤ اور اسے دو۔''

فوائد: (۱) مسجد میں ذاتی مسائل زیر بحث لائے جاسکتے ہیں (۲) اگر قرض دار نگک دست ہو

 [♣] متفق عليه: البخارى، كتاب الحوائج، باب إذا لحال على مى فليس له رد(2288) مسلم، كتاب المساقاة، باب تحريم، مطل الغنى (3978)

೨ صحيح: الحرجة مسلم، كتباب الزهد، بياب حديث جابر الطويل وقصه ابى اليسر(7437) وابن مناجه، كتاب الصدقات، باب انظار المعسر (2419)

عَلَى الْكَارِيْقِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ

تو قرض خواہ کو نرمی والا معاملہ اختیار کرنا جا ہے (٣) بلا مطالبہ فریقین میں ٹالٹی کی جاسکتی ہے بشر طیکہ وہ راضی ہوں _

[50].... بَابِ فِيمَنُ أَنُظُوَ مُعُسِرًا تنگدست کومہلت دینے والے کی فضیلت کا بیان

2630 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرِ عَنْ رِبْعِيّ.

اللَّهِ ﷺ يَـقُولُ: ((مَنُ أَنْظَرَ مُعُسِرًا أَوُ وَضَعَ عَنْهُ أَظَلَّهُ اللَّهُ فِي ظِلِّهِ يَوُمَ لَا ظِلَّ إلَّا ظِلُّهُ)). قَالَ فَبَزَقَ فِي صَحِيفَتِهِ فَقَالَ اذْهَبُ فَهِيَ لَكَ لِغَرِيْمِهِ وَذَكَرَ أَنَّهُ كَانَ مُعُسرًا . •

کو بہ فرماتے ہوئے سنا:'' جوکسی تنگدست کومہلت دے گایا اسے (کچھ) قرض معاف کر دے تو اللہ تعالی اس دن اسے سابہ دے گا جس دن اس کے سائے کے علاوہ کوئی سایہ نہ ہوگا۔ ربعی کہتے ہیں: ابو یسر نے اینے باقی تحریر کاغذول پرتھوک کر اس اینے قرض دار سے کہا: جاؤ ہیہ تمہارے لیے ہے۔اور ذکر کیا کہ وہ غریب آ دی تھا۔

فدوائد: (۱) تنگدست قرض دارکومهلت دینایا قرض معاف کردینا انتهائی فضیلت کا باعث ہے (٢) قيامت كوصرف عرش اللي كاساميه موكا - (٣) صحابه كرام وكأنطيم عمل بالمنة كانتهائي شاكل تصقران يا آپ کا فرمان ہوتا تو فوری اس پڑمل پیرا ہو جاتے۔

2631 - حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِم حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ حَدَّثَنَا أَبُوْ جَعْفَرِ الْخَطْمِي عَنْ مُحَمَّدِ ابْن كَعْب الْقُرَظِيّ

کو بیفرماتے ہوئے سنا:''جواسے قرض دارکومہلت دے یا قرض معاف کر دے تو قیامت کے دن وہ عرش کے سابیہ تلے ہو گا۔'' عَنُ أَبِي قَتَاكَةً قَالَ سَبِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ عَنَّ عَنْ غَريْمِهِ اللَّهِ عَنْ غَريْمِهِ أَوْ مَـحَا عَنْهُ كَانَ فِي ظِلِّ الْعَرْشِ يَوْمَ الُقيَامَة)). 9

[◘] صحيح: اخرجه مسلم، كتاب الزهد، باب حديث جابر الطويل وقصه ابن اليسر(7437) وابن ماجه، كتاب الصدقات، باب انظار المعسر (2419)

[🗗] صحيح: اخرجه احمد 200/-308وابن ابي شبيبه 23/7

يُنْتِنَ الْكَالِينَ عَلَى الْمُوعِ عَلَيْهِ الْمِيوعِ عَلَيْ الْمُؤْمِنِ كُتَابِ الْبِيوعِ

[51] فِي الْمُفْلِسِ إِذَا وُجِدَ الْمَتَاعُ عِنْدَهُ مفلس کے پاس بعینہ سامان پائے جانے کا بیان

2632 ـ أَخْبَرَنَا يَرِيْدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا يَحْيَى أَنَّ أَبَا بَكْرِ بْنَ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ عُمَرَ بْنَ

عَبْدِ الْعَزيزِ يُحَدِّثُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا بَكُر بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَن بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَام

أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُوَيُورَةَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ سَيِّدنا ابو برية وَاللَّهُ كُتِّ بين كه رسول الله طَيْ الله عَلَيْنَا الله عِلْمَا الله عَلَيْنَا عَلَيْنَا الله عَلَيْنَا عَلَيْنَا الله عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا الله عَلَيْنَا الله عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا الله عَلَيْنَا عَلَيْنَ عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَ عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَ عَلَيْنَا عَلَيْنَ عَلَيْنَا عَلَيْنَ عَلَيْنَ عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عُولِيْنَ عَلَيْنَا عُلْلَ عَلَيْنَا عُلْمَالِكُ عَلَيْنَا عُلْمَ عَلَيْنَا عُلْمُ اللّهُ عَلَيْنَا عُلْمَ عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلْمُ عَلَيْنَا عُلْمَ عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلْمَ عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلْمِ عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلْمُ عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلْمَا عُلِي عَلَيْنَا عُلْمَا عُلِي عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلْمُ عَلَيْنَا عُلْمُ عَلَيْنَا عُلْمَا عُلِي عُلْمَا عُلِي عَلَيْنَا عُلْمَ عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنِ عَلَيْنَا عُلْمِ عَلَيْنَا عُلِي عَلَيْنَا عُلْمَا عُلْمَا عَلَيْنِ عَلَيْنِ عَلَيْنَا عُلِي عُلْمِ عَلَيْنَا عُلْمَ عَلَيْنِهُ عَلَيْنِ عَلَيْنَا عُلْمُ عَلَيْنَا عُلْمَا عُلِي عَلَيْ فرمایا: '' جو شخص اپنا مال بعینه مفلس آ دمی کے پاس یا لے تو وہ دوسروں کے علاوہ اس کا زیادہ حق دار ہے۔''

اللَّهِ عَلَيْهِ : ((مَنُ أَدُرَكَ مَالَهُ بِعَيْنِهِ عِنْدَ إنُسَان قَدُ أَفُلَسَ أَوْ عِنْدَ رَجُل قَدُ أَفُلَسَ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ مِنْ غَيْرِهِ)). •

فواند: کسی تخص یا تمپنی کے مفلس ، دیوالیہ ہو جانے کی صورت میں اس شخص یا تمپنی کی جا کداد اس کے اٹاثے وغیرہ فروخت کر کے حاصل ہونے والی رقم کو قرض خواہوں کے درمیان ان کے حصے کے مطابق برابرتقسیم کر دیا جائے گا البتہ اگر کسی آ دمی کا مال بعین اس حالت میں مل جاتا ہے جس حالت میں اس نے بھجوایا تھا تو وہ آ دمی اینے مال کا زیادہ حقدار ہوگا۔

[52].... بَابِ مَا جَاءَ فِي التَّشُدِيدِ فِي الدَّيْنِ قرض کے متعلق وعید کا بیان

2633 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عُمَرَ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِيْهِ

سیّدنا ابو ہررة وظائف کہتے ہیں کہ رسول الله طفیّقیلم نے فرمایا:''جب تک مومن برقرض ہوگا اس کی جان لنگی رہے۔

عَنُ أُبِي هُـرَيُـرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عَلَيْ : ((نَفُسُ الْمُؤُمِن مُعَلَّقَةٌ مَا كَانَ عَلَيْه دَيْرُي. ٥

فوائد: تکبر، خیانت اور قرض بدالی خوشیں ہیں جو بڑے سے بڑے عل ،اور عامل سمندر کی

[₫] متفق عليه: البخاري، كتاب الاستقراض، ببا اذا و جد ساله عزر مفلس في البيع (2402) ومسلم، كتابالمساقاة، باب من ادرك ماباعه عندالمشتري وقد أفلس فله الرجوع فيه(3963)

[😵] اسناده حسن: ليكن صديث حج بـ صحبح ابن حبان (3061) اخرجه الترمذي، كتاب الجنائز، باب ماجاء عن النبي صلعم أنه قال (نفس المؤمن معلقة بدينه حتى يقضي عنه (1078-1079) وابن ماجه، كتاب الصدقات،باب التشديد في الدين(13 24)

عَنَى الْكَلِيْدِينَ ﴾ 392 و كوا كتاب البيوع كا

جھاگ کی طرح کر دیتے ہیں ۔ آخر الذکر دونو ں امور خیانت اور قرض ان کے کفارے کا سبب نہیں بن سکتی ۔ (دیکھیے سابقہ صدیث 2532)

2634- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الرَّقَاشِيُّ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ سَالِم بْن أَبِي الْجَعْدِ عَنْ مَعْدَانَ بْن أَبِي طَلْحَةَ

 عَنُ ثَوْبَانَ مَوُلَى رَسُولِ اللّهِ ﴿ أَنَّ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ
[53] بَابِ فِي الصَّلَاةِ عَلَى مَنُ مَاتَ وَعَلَيْهِ دَيُنُ مَا مَاتَ وَعَلَيْهِ دَيُنُ مَا مَا مِنْ مَا مَا مِنْ مَا رَجْنَا وَهُ كَابِيانَ مُعَارِجِنَا وَهُ كَابِيانَ مُعَارِجِنَا وَهُ كَابِيانَ

2635- أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ وَأَبُو الْوَلِيدِ عَنْ شُعْبَةً عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللّهِ بْنِ مَوْهَب

عَنُ عَبُدِ اللهِ بُنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنُ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ بُنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنُ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَلَيْ أَتِي بِرَجُلٍ لِيُصَلِّى عَلَيْهِ فَقَالَ ((صَلُّوا عَلَى صَاحِبِكُمُ فَإِنَّ عَلَيْهِ دَيْنًا)). قَالَ أَبُو قَتَادَةَ هُوَ عَلَى يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ بِالْوَفَاءِ قَالَ بِالُوفَاءِ قَالَ فَصَلَّى عَلَيْهِ . ۞

❶ صحيح: أخرجه الترمذي، كتاب السير، باب ماجاء في الغلو ل(1573) وابن ماجه، كتاب الصدقات، باب التشديد في الدين(2412)

[•] صحيح: ابن حبائا(3058-3059-3060) أخرجه النسائي،باب الصلاة على من عليه دير (1959)وابن ماجه ، كتاب الصدقات،باب الكفالة(3407)

المنافقة الكاليني المنافقة الم تھم دیا آپ منظامین کا جنازہ نہ پڑھنا تنبیہ کے لیے تھا (۲) بیہتی میں ہے کہ آپ منظامین نے بعد میں ابو قادة زائن سے ملا قات ہونے پر دریافت کیا کہ قرض چکا دیا ہے تو انہوں نے کہانہیں پھر بعد میں قرض چکانے کے بعد انکا آپ مشخص کے اس منا ہوا تو انہوں نے آپ مشخص کے بعد انکا آپ مشخص نے کہا کہ اب اس میت کا چمڑا ٹھنڈا ہواہے ۔ بعنی قرض کی ادائیگی تک میت قبر میں معذب رہتی ہے ۔ لہذا قرض جیسی خطرناک چیز سے ہر وقت متنبہ رہنا جاہے کہیں دائی خسارے کاباعث نہ بن جائے ۔(العیاذ باللہ) نیز آپ ملتے ایک كافرمان بهي ہے كہ جو بچنا جا ہے اللہ اسے بچالے گا۔

ر547 بَابِ فِي الرُّخُصَةِ فِي الصَّلَاةِ عَلَيْهِ قرض دار کی نماز جنازه کی رخصت کا بیان

2636- أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسٰى عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِى الزِّنَادِ عَنِ الْأَعْرَجِ …

عَنْ أَبِسَىٰ هُسرَيُسرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ سیّدنا ابو ہرریرۃ وخلیّنہ کہتے ہیں کہ رسول الله طلطیّنی نے فرمایا: "اس ذات کی فتم! جس کے قضہ میں میری جان اللَّهِ عِلَى اللَّهِ عَلَى ٱلْأَرُضِ مُؤْمِنٌ إِلَّا أَنَا أَوْلَى النَّاسِ ہے روئے زمین پر جینے مومن ہیں میراان کے ساتھ سب بِهِ فَمَنُ تَرَكَ دَيْنًا أَوُ ضَيَاعًا فَلَأُدُ عَ لَهُ ہے زیادہ تعلق ہے۔لہذا جو قرض ضباع حیصوڑ جا کیں میں فَأَنَا مَوُلاهُ وَمَنُ تَرَكَ مَالًا فَلِعَصَبَتِهِ اس کے لئے بلایا جاؤں کیونکہ میں اس کا سر پیست ہوں۔ اور جو مال چھوڑے وہ اس کے عصبہ کے لئے ہے۔" مَنُ كَانَى). قَالَ عَبُد اللَّه ضَيَاعًا يَعُنى عِيَالًا وَقَالَ فَلَأَدُ عَ لَهُ يَعْنِي ادُعُونِي لَهُ عبداللہ کہتے ہیں: ضاع اہل وعمال کو کہتے ہیں۔ میں اس کے لئے بلایا جاؤں بینی اس کی طرف سے مجھے بلاؤ اور ادا

کرول گا۔

أَقُض عَنْهُ . 0

فسوانسد: ابتداء میں پیطریقه تھا کہ اگر کوئی مرجاتا تو اس کے قرضے کی ذمہ داری اس کے گھر والول ير ہوتى يا پھر اہل شروت ميں سے كوئى اٹھاليتالكين جب الله نے اسلام كو وسعت دى جہاد كے ذريعے مال آنا شروع ہو گیا تو آب ﷺ نے یہ بوجھ اپنے ذیے لیا۔

[◘] متفق عليه: البخاري، كتاب النفقات،باب قول النبي صلعم من ترك كلا أوضياعًا فإلى (5371)ومسلم، كتاب الفرائض، باب من ترك مالًا لو رثته (4135)

الكالم المنافقة الكالم المنافقة المنافق [55] بَابِ فِي الدَّائِنُ مُعَانٌ قرض دار كي مددكي جاتى ہے

2637- أَخْبَونَا إِبْوَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ الْحِزَامِيُّ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَعِيلَ بْنِ أَبِي فُدَيْكٍ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُفْيَانَ مَوْلَى الْأَسْلَمِيِّيْنَ عَنْ جَعْفَر بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِيْهِ

سیّدنا عبدالله بن جعفر کہتے ہیں: رسول الله طفیّاتیا نے فرمایا: ''جب تک قرض دار' قرض ادا نه کرے الله تعالیٰ اس کے ساتھ ہوتا ہے۔ جب کہ وہ ایسے کام میں قرض نہ لے جواللّٰد کو نا پیند ہو۔'' راوی کہتا ہے: عبداللّٰد بن جعفر اینے خزانجی سے کہتے تھے:''حاؤ میرے لئے قرض لؤ' کیوں کہ رسول الله طلق الله عنے کے بعدید برامعلوم ہوتا ہے کہ

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُن جَعُفَر قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَنَّى اللَّهُ مَعَ الدَّائِن حَتَّى يُقُضٰى دَيُنُهُ مَا لَمُ يَكُنُ فِيمَا يَكُرَهُ اللُّهُ)). قَالَ وَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ بُنُ جَعْفُر يَقُولُ لِنَحَازِنِهِ اذْهَبُ فَخُذُ لِي بِدَيُن فَإِنِّي أَكُرَهُ أَنُ أَبِيْتَ لَيُلَةً إِلَّا وَاللَّهُ مَعِي

بَعُدَمَا سَمِعْتُ مِنُ رَسُول اللّهِ عَلَيْ . • مرى ايك رات بهى الله كى معيت كے بغير كررے . "

تُؤُ دُيَٰهُ)) . 🗗

فوائد: قرض دار جب اس کی نیت ادائیگی کی ہوتو الله اس کی اچھی نیت کی بناء پر اس کا معاون بن جاتا ہے حتی کہ وہ قرض ادا کردے پھیلی احادیث میں قرض لینے کی حوصله مکنی کی گئی ہے جب کہ فداورة حدیث میں اس کی حوصلہ افزائی کی گئی ہے کہ اجھائی کا اجھائی کی صورت میں تو وینا ہے جب کہ برائی کے بدلے میں برائی نہیں کرنی لعنی پھول کی طرح رہنا ہے جوسلنے والے کے ہاتھ کو خوشبودار کردیتا ہے۔

[56].... بَابِ فِي الْعَارِيَّةُ مُؤَدَّاةٌ أدهار لي موئي چيز واپس كردين كابيان

2638 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمِنْهَالِ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعِ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي عَرُوبَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَن الْحَسَنِ

عَنُ سَمُرَةَ بُنِ جُنُدُبِ قَالَ قَالَ رَسُولُ سیّدنا سمرة بن جندب کہتے ہیں کہ رسول الله طفائلیّا نے فرمایا: "وہ چیزآوی کے ذمہ ہے جواس نے کسی سے لی حتی اللَّهِ ﷺ : ((عَلَى الْيَدِ مَا أَخَذَتُ حَتَّى کہاہے واپس کر دے۔''

♪ اسناده حيد: أخرجه ابن ماجه في الصدقات،باب من دان دينا وهو ينوي قضاء ه(2409)وأخرجه البخاري في الكبير 476/3) والحاكم 23/2

[◙] اسناده ضعيف: أخرجه احمد 8/5-12) وابو داؤد، كتاب البيوع، باب في تضمين العارية(3561) والترمذي، كتاب البيوع،باب ماجاء في ان العارية مؤاده(1266) وابن ماجه، كتاب الصدقات،باب العارية(2400)

عَابَ الْبِيوعِ عَنْ الْكَالِيَّةِ فَالْمُوالَةِ وَ الْجُنَالِيَّا الْبِيوعِ عَنْ الْمُوالَةِ وَ الْجُنَابِ الْبُحِيَانِ الْمُخِيَانِ الْبُحِيَانِ الْمُخِيَانِ ِ وَالْمُحِيَانِ الْمُخِيَانِةِ وَالْمُحِيَّانِ الْمُخِيَانِةِ وَالْمُحِيَّانِ الْمُخِيَانِةِ وَالْمُعِيْنِ فِي الْمُعَانِيَةِ وَالْمُحِيَّانِ الْمُخِيانِةِ وَالْمُعِيْنِ الْمُعِيْنِ فِي الْمُعَانِيَةِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمِيْنِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمِيْنِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمِيْنِ وَالْمِعِيْنِ وَالْمِعْمِيْنِ وَالْمُعِيْنِ وَالْمِعِيْنِ وَالْمِعِيْنِ وَالْمِعِيْنِ وَالْمِعِيْنِ وَالْمِعِيْنِ وَالْمِيْنِ وَالْمِعِيْنِ
[57] بَابِ فِي أَدَاءِ الْأَمَانَةِ وَاجُتِنَابِ الْجِيَانَةِ امانت اداكرنا اور خيانت سے نيخے كابيان

2639 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاءِ حَدَّثَنَا طَلْقُ بْنُ غَنَّامٍ عَنْ شَرِيكٍ وَقَيْسٍ عَنْ أَبِيْ حَصِيْنِ عَنْ أَبِيْ صَالِح

سیّدنا ابو ہرریة و الله کتب میں که نبی مطفی ایم نے فرمایا: "امانت مال والے کو والیس کر دو جس نے تم سے خیانت کی تم اس سے خیانت نہ کرو۔" عَنُ أَبِي هُوَيُوةَ عَنِ النَّبِيِ ﷺ قَالَ: ((أَدِّ الْأَمَانَةَ إِلَى مَنِ ائْتَمَنَكَ وَلَا تَخُنُ مَنُ خَانَكَ)). •

[58] بَابِ مَنُ كَسَرَ شَيْئًا فَعَلَيُهِ مِثْلُهُ چِيزِنُوٹ جائے تو وہ چِيزاس كے ذمہ ہے

2640 - أَخْبَرَنَا يَزِيْدُ بْنُ هَارُوْنَ حَذَّثَنَا حُمَيْدٌ

سیّدنا انس وَلَا اُلْهُ کَتِ بِی که نبی اللّهُ اَلَیْهُ کَا کی کسی بیوی نے آپ کو رُید کا بیالہ تخفہ بھیجا آپ اپنی کسی بیوی کے گھر تھے تو اس نے اسے تو رُ دیا۔ نبی اللّه اَلَیْ اَ رُید پکر کر بیالے میں دالنے گئے۔ اور آپ نے فرمایا: '' کھاؤ تمہاری ماں کو غیرت آئی۔ پھر مشہرے رہے حتی کہ وہ صحیح پیالہ لائی آپ نے وہ پیالہ لیا اور اسے دے دیا جس کا پیالہ لوٹا تھا۔ عبداللہ کہتے ہیں: ہم بھی اسی کے قائل ہیں۔

عَنُ أَنسِ قَالَ أَهُدَى بَعُضُ أَزُوَاحِ النّبِي عَنَى أَنسِ قَالَ أَهُدَى بَعُضُ أَزُوَاحِ النّبِي عَنْ إِلَيْهِ قَصْعَة فِيهَا ثَرِيدٌ وَهُوَ فِى بَيْتِ بَعْضِ أَزُوَاجِهِ فَصَرَبَتِ الْقَصْعَة فَى بَيْتِ بَعْضِ أَزُوَاجِهِ فَصَرَبَتِ الْقَصْعَة فَالُدَكَ سَرَتُ فَحَعَلَ النّبِي عَنْ يَشَا يُلَكُمُ لُكُم النّبِي عَنْ يَشَا يُلَكُم لُكُم النّبِي عَنْ يَقُولُ الشّريدَ فَيَرُدُهُ فِي الصّحُفَةِ وَهُو يَقُولُ الشّريدَ فَي الصّحُفَةِ وَهُو يَقُولُ الشّريدَ فَي الصّحَفَةِ وَهُو يَقُولُ المَّلُوا غَارَتُ أَمُّ كُم ثُم النّقَلَ حَتَى المَلْمُ اللّهُ عَلَمَا اللّهُ المَكْمُ المُحَلَمَ المَكمَ اللّهُ المَكمَ المَكمَ اللّهُ المَكمَلُورَةِ فَا المَكمَلُورَةِ المَلْمُلُورَةِ المَلْمُورَةِ المَلْمَلُورَةِ المَلْمُلُورَةِ المَلْمُلُورَةِ المَلْمُ الْمَلْمُورَةِ المَلْمُلُولُ الْمَلْمُ الْمُعُولِ الْمَلْمُ الْمُلُولُ الْمَلْمُورَةِ اللْمَلْمُعُولُ المَلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُرْتِ الْمُتَلِيقِ المَلْمُ المَلْمُ الْمَلْمُ الْمُلْمُ الْمُلُمُ الْمُلْمُ الْمُلُمُ الْمُلْمُ الْمُلْم

قَالَ عَبُد اللَّهِ نَقُولُ بِهَذَا . ٥

فواند: (۱) رحمة كائنات ﷺ ،مربی انسانیت كے گر جب ان كی بیویاں سوكنا بے پرغیرت كھا جاتی ہیں تو كوئی دوسرا كيسے ان كو اكھٹا ركھ كر اس كی نفی كرسكتا ہے لہذا عورتوں كو الگ ہى ركھنا بہتر ہے۔

[•] حسن: أخرجه ابواداؤد، كتاب البيوع، باب في الرجل يأخذ حقه من تحت يده (3535) و الترمذي، كتاب البيوع، باب ما حاء ان العارية مؤادة (1264)

②صحيح: الحرجه البخاري، كتاب المظالم والغضب،باب اذا كسر قصعة أو شيئا لغير(1125)وابوداؤد، كتاب البيرع،باب فيمن أفسد شيئاً يغرم مثله(3567)

عَنْ الدِّالِيوع عَنْ الدِّالِيوع عَنْ الدِّالِيوع عَنْ الدِّالِيوع عَنْ الدِّالِيوع عَنْ الدِّالِيوع عَنْ الدُّالِيوع عَنْ الدُّورِ وَالدِّورِ الدِيوعِ عَنْ الدِّورِ الدِيوعِ عَنْ الدِّورِ الدِيوعِ عَنْ الدِّورِ الدِيوعِ عَنْ الدِيوعِ عَنْ الدِّورِ الدِيوعِ عَنْ الدَّالِيَّالِيِّيْ الدِيوعِ عَنْ الدِيوعِ عَنْ الدِيوعِ عَنْ الدِيوعِ عَنْ الدِيوعِ عَنْ الدِّيْ الدِيوعِ عَنْ الدِيوعِ عَنْ الدِّيْ الدِيوعِ عَنْ الْمِيعِ عَنْ الدِيوعِ عَنْ الدَّامِ عَنْ الْعِيْ عِلْمِي عَنْ الْمِيْعِي عَنْ الْمِيْعِيْ عِيْ الْمِيْعِي عَنْ الْمِيْعِي عَن

(۲) نیچ گری چیز کواٹھا کر استعال کرنا سنت نبوی ﷺ آیا ہے۔ (۳) اگر کسی کی چیز کا آپکے ہاتھوں نقصان ہو جائے تو اس کے بدلے صحیح چیز فراہم کرنالازم ہے۔

[59] بَابِ فِي اللَّقَطَةِ گرى موئى چيز كابيان

2641 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ كَثِيرٍ قَالَ حَدَّثَنِيْ عَمْرُو ابْنُ

عَنُ عَمُرٍ و وَعَاصِمٍ ابْنَى سُفُيانَ بُنِ عَبُدِ اللّهِ بُنِ رَبِيعَةَ التَّقَفِيّ أَنَّ سُفُيانَ بُنِ عَبُدِ اللّهِ وَجَدَ عَيْبَةً فَأَتَى بِهَا عُمَرَ بُنَ عَبُدِ اللّهِ وَجَدَ عَيْبَةً فَأَتَى بِهَا عُمَرَ بُنَ النَّحَطَّابِ وَلَيْهَ فَقَالَ عَرِّفَهَا سَنَةً بُنِنَ النَّحَطَّابِ وَلَيْهَ فَقَالَ عَرِّفَهَا سَنَةً فَإِنْ عُرِفَتُ فَذَاكَ وَإِلَّا فَهِى لَلْكَ فَلَمُ تُعُرَفُ فَقَالَ عُمِونَ لَلْكَ فَلَمُ تُعُرَفُ فَقَالَ عُمَرُهِي النَّعَامِ النَّمُقُبِلِ فِي النَّعَامِ النَّمُقُبِلِ فِي النَّعَامِ النَّمُ فَقَالَ عُمَرُهِي النَّعَامِ النَّمُ وَسِمِ فَذَكَرَهَا لَهُ فَقَالَ عُمَرُهِي النَّعَامِ النَّهُ فَقَالَ عُمَرُهِي لَكَ فَا لَلْهُ فَقَالَ عُمَرُهِي النَّهُ فَقَالَ عُمَرُهِي النَّعَ وَالنَّهُ اللَّهُ اللْهُ الْعُلْمُ اللَّهُ الْمُ اللَّهُ اللَّ

عُمَرُ فَجَعَلَهَا فِي بَيْتِ الْمَالِ. •

عمرو اور عاصم سفیان بن عبداللہ بن ربعہ تقفی کے بیٹوں سے منقول ہے کہ سفیان بن عبداللہ کوایک گھڑی ملی ۔ تو وہ اسے عمر بن خطاب بڑائٹی کے پاس لے گئے۔ انہوں نے کہا: ''ایک برس تک اس کا اعلان کرو۔ اگر پہچان لی گئی تو صحیح ورنہ تمہاری ہے ۔ تو وہ نہیں پہنچانی گئی۔ وہ دوسر سال عمر رفائٹی نے کہا: وہ تمہاری ہے کیونکہ رسول ذکر کیا تو عمر والٹی نے کہا: وہ تمہاری ہے کیونکہ رسول اللہ طفائل نے نے ہمیں اس بات کا حکم دیا ہے۔ اس نے کہا: محصے اس کی ضرورت نہیں تو عمر رفائٹی نے کہا: عمر والٹی نے کہا: محصے اس کی ضرورت نہیں تو عمر رفائٹی نے لے کرا سے خزانہ میں جمع کر دیا۔

فواند: "نقطة" گرى پرى چيز اگرال جائے تو اٹھانے والے کے ذے لازم ہے کہ اگر تو وہ تھوڑى بہت ہے جس کی عام طور پر کوئی پرواہ نہیں کی جاتی تو اسے اٹھا کر استعال کر ہے جیسا کہ آپ مطابقاً آپا ہے مردی ہے کہ آپ مطابقاً نے اور اگر کوئی نہیں تھے ور ملی تو آپ مطابقاً نے ضدقہ کے خدشہ سے نہ کھایا (بخاری 2431) اور اگر کوئی ذیشان اہمیت والی شئے ہے تو ایک سال تک اس کا اعلان کرنا لازم ہے اس کے بعد اٹھانے والا اس کی نشانی و کھے لے اور اس کو اپنے استعال میں لے آئے اب میا ٹھانے والے کے لیے جائز ہے استعال کے بعد اگر کوئی آدمی آئے پاس آگر آئی وہی نشانی بنا دیتا ہے تو وہ چیز ادا کرنا لازم ہے ، بخاری میں زید بن حارث والٹھ کے روایت ہے کہ آپ مطابقاً نقطة بارے پوچھنے والے کوفر مایا ایک سال تک تشمیر میں زید بن حارث والٹھ کے سے روایت ہے کہ آپ مطابقاً نقطة بارے پوچھنے والے کوفر مایا ایک سال تک تشمیر

[€] اسناده جيد: اخرجه الطحاوي في (شرح معافي الآثار) 137/4-138 وأخرجه النسائي في الكبري(5818)

حكار المنافعة عن الكافعة عن الكافعة عن الكافعة
کے بعدا سے استعال کرلولیکن یہ تمہارے پاس امانت ہوگی۔ (بخاری ۔:2429) [60] بَابِ فِی النَّهُی عَنْ لُقَطَةِ الْحَاجِ حاجی کی گری ہوئی چیز اٹھانے کی ممانعت

2642 - أَخْبَرَنَا مُعَاذُ بْنُ هَانِيءٍ مِنْ أَهْلِ الْبَصْرَةِ حَدَّثَنَا حَرْبُ بْنُ شَدَّادٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي

كَثِيْرٍ حَدَّثَنَا أَبُوْ سَلَمَةً

سیّدنا ابو ہریرۃ رفیانی کہ ہیں کہ رسول اللہ طفی آئے نے فتح
مکہ کے دن کھڑے ہو کر فرمایا: "اللہ تعالیٰ نے ہاتھی کو مکہ
سے روکا اور اہل مکہ پر اپنے رسول اور مسلمانوں کو غالب
کیا۔ خبردار! مکہ میں لڑائی نہ مجھ سے پہلے جائز ہوئی اور نہ
میرے بعد کسی کے لیے جائز ہوگی اور خبردار! میرے اِس
وقت سے بیر(مکہ) حرام (اس میں لڑائی کرنا حرام ہے)۔
اس کی گری ہوئی چیز کوکوئی اٹھائے۔ البتہ اعلان کرنے
اس کی گری ہوئی چیز کوکوئی اٹھائے۔ البتہ اعلان کرنے
کے لئے اٹھاسکتا ہے۔'

فوائد: (۱) مکہ ہے ہاتھیوں کوروکنااس ہے ابر ہہ کے شکر کی تابی کی طرف اشارہ ہے (۲) مکہ شروع کا گنات ہے اخیر تک حرمت والا ہے (۳) مکہ فقط رسول مکرم مشکھ آئی ہے گئے گئے اس حلال ہوا تھا کہ آپ یہاں لڑائی کرلیں (۴) مکہ حرم میں ہے گھاس کا ٹنا اور درخت کا ٹنا دونوں ممنوع ہیں (۵) مکہ میں گمشدہ چیز کو فقط اعلان کرنے والا بی اٹھا سکتا ہے کسی کو وہاں ہے اٹھا کر استعمال کرنا جا تر نہیں جمہور کے شرد کے مکہ سے شکی اٹھانے والا ہمیشہ اس کا اعلان کرے گا۔

[61].... بَابِ فِي الطَّبالَّةِ كَمشده چزكابيان

2643 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ خَالِدِ الْحَذَّاءِ عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الشِّيخِيْرِ

❶ متفـق عـليـه: البخاري، كتاب اللقطة . باب كيف تعرف اهل المكة(2434)ومـــــــم، كتاب الحج،باب تحريم مكة وتحريم صيدها وخلاها وشحر هاو لقطتها(3292)

المُورِ الله المبيوع على المرابع المبيوع على المرابع المبيوع على المرابع المبيوع المرابع المبيوع المرابع المبيوع المرابع المبيوع المرابع المرا

عَنْ أَبِى مُسْلِمٍ

عَنِ الْجَارُودِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِنَيْنَا جَارُودِ مِنْ لَنَيْنَ كَتِمْ مِين كَهُ رَسُولُ اللَّهُ عَنَيْنَا فَعَلَمَا عَنِ الْبَعَارُةِ فَى اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا فَيْ اللَّهُ عَلَيْنَا فَيْ اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا فَيْ اللَّهُ عَلَيْنَا فَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا فَيْ اللَّهُ عَلَيْنَا فَيْ اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا فَيْ اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْنَا ِكُولُولُولُ اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا عَلَيْنَالِمُ عَلَيْنَا عَلَيْنَا اللَّهُ عَلَيْنَا عَلَيْ

فوائد: کسی مسلمان کے گمشدہ جانورکو پکڑ لینا اسے چھپالینا حرام ہے بخاری میں اس بارے مروی ہے آپ طفی آنے نے فرمایا اسے چھوڑ دے اس کے مروی ہے آپ طفی آنے نے فرمایا اسے چھوڑ دے اس کے پاس اس کا جوتا اور مشکیزہ ہے وہ پانی کے گھاٹ پر جائے گا درختوں سے کھائے گا یہاں تک کہ اسے اس کا مالک مل جائے پھر آپ طفی آنے نے خرمایا پکڑ لے وہ یا تو تیرے لیے مالک مل جائے پھر آپ طفی آنے نے خرمایا پکڑ لے وہ یا تو تیرے لیے یا تیرے بھائی کے لیے یا بھیڑ ہے کے لیے (بخاری: 2429)

2644- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا الْجُرَيْرِيُّ عَنْ أَبِى الْعَلَاءِ عَنْ أَبِى مُسْلِمِ الْجَذْمِيِّ........

عَنِ الْجَارُودِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَنِ الْجَارُودِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَنَى النَّارِ ضَالَّةُ الْمُسْلِمِ الْمُسْلِمِ حَرَقُ النَّارِ ضَالَّةُ الْمُسْلِمِ الْمُسُلِمِ حَرَقُ النَّارِ ضَالَّةُ الْمُسْلِمِ حَرَقُ النَّارِ ظَالَةُ الْمُسُلِمِ حَرَقُ النَّارِ لَا تَقُرَبَنَّهَا). قَالَ فَقَالَ رَجُلُّ يَا رَسُولَ اللهِ اللَّقَطَةُ نَجِدُهَا قَالَ اللهِ اللَّقَطَةُ نَجِدُهَا قَالَ اللهِ اللَّقَطَةُ نَجِدُهَا قَالَ اللهِ اللَّقَطَةُ نَجِدُهَا قَالَ رَبُّهَا فَادُفَعُهَا وَلَا تَكْتُمُ وَلَا تُعَيِّبُ فَإِنْ جَاءَ رَبُّهَا فَادُفَعُهَا إلَيْهِ وَإِلَّا فَمَالُ اللهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ . ٥

سیّدنا جارود برقائی کہتے ہیں کہ رسول الله ططّ اَلَیْ نے فرمایا:

دمسلمان کی گمشدہ چیز بھڑکائی ہوئی آگ ہے۔مسلمان کی گمشدہ چیز

گمشدہ چیز بھڑکائی ہوئی آگ ہے۔مسلمان کی گمشدہ چیز

بھڑکائی ہوئی آگ ہے۔اس کے قریب نہ جانا ایک آ دی
نے کہا:''یا رسول اللہ! جو ہم گری ہوئی پا کیں؟'' آپ نے
فرمایا:''اس کا اعلان کر دواسے نہ چھپاؤ اور نہ ہی غائب

کرو۔اگر اس کا مالک آ جائے تو اسے واپس کر دو وگرنہ وہ
اللّٰد کا مال ہے جسے جا ہتا ہے دیتا ہے۔''

[62] بَابِ فِيمَنُ اقْتَطَعَ مَالَ امْرِءٍ مُسُلِمٍ بِيَمِينِهِ فَتَمَ كَابِيان قَتَم كَابِيان

2645 - أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ يَعْقُوبَ الْكُوفِيُّ عَنْ إِسْمَعِيلَ بْنِ جَعْفَرِ عَنِ الْعَلاءِ عَنْ مَعْبَدِ بْنِ

❶ اسناده صحيح: اخرجه الطبراني في الكبير 265/2(2112)والبيه قي في القطة باب مايجوز له اخذه ومالا يجوز ما يجده191/6)

[🛭] صحيح: سابقة تخ تج لما حظه فرما ئيں۔

الكالكان الكان الك كتاب البيوع 399 كَعْبِ السَّلَمِيِّ عَنْ أَخِيْهِ عَبْدِ اللَّهِ بْن كَعْب

سیّدنا ابو امامہ والنین کہتے ہیں کہ رسول الله منظ الله الله عَنُ أَبِي أُمَامَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِلَّا فر مایا: " بو شخص قتم کھا کر کسی مسلمان کا حق لے لے۔ اللہ قَالَ: ((مَن اقتَطَعَ حَقَّ امُرءٍ مُسُلِم تعالیٰ دوزخ اس کے لئے لازم کر دے گا۔اوراس پر جنت بيَـمِينِهِ فَقَدُ أُوْجَبَ اللَّهُ لَهُ النَّارَ وَحَرَّمَ حرام كرے گا۔" آپ سے كى آ دى نے كہا: اگر چہ چھوٹى عَلَيْهِ الْجَنَّةَ)). فَقَالَ لَهُ رَجُلُّ وَإِنْ كَانَ ے چیز ہو یا رسول اللہ! آپ نے فرمایا:"اگرچہ پیلوکی شَيْئًا يَسِيرًا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: ((وَإِنُ قَضيبًا مِنُ أَرَاكٍ)) . 0

فوائد: اسلام میں فقط الله، اس کی صفات کی شم کھانا جائز ہے کیونکہ جس کی شم کھائی جا رہی ہو تی ہے اصل میں بیاس کی عظمت کا اعتراف ہوتا ہے اورعظمت کے لائق فقط اللہ بزرگ و برتر کی ذات ہی ہے فتم کے ذریعے چونکہ اللہ کا واسطہ ڈالا جارہا ہوتا ہے لہذا اللہ کو ثالث بنا کر کی جانے والی بات انتہائی پراہمیت ذیثان ہو جاتی ہے اگر چہوہ کسی حقیر شکی بارے ہی ہواس لیفتم کھا کر کی جانے والی بات انتہائی مختاط رویتے کی متقاضی ہوتی ہے۔

2646 - أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنِ الْوَلِيْدِ بْنِ كَثِيْرِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ كَعْبِ بْن مَالِكِ أَنَّهُ سَمِعَ أَخَاهُ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ كَعْب بْن مَالِكِ يُحَدِّثُ

أَنَّ أَبَا أَمَامَةَ الْحَارِثِيَّ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ سَيِّدنا ابو امامه حارثی فِالنَّمَةُ کہتے ہیں انہوں نے رسول الله ﷺ کی طرح ذکر کیا۔ رَسُولَ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ فَذَكَرَ نَحُوَهُ. ٥

[63] بَابِ فِي الْيَمِينِ الْكَاذِبَةِ حھوٹی قشم کا بیان

2647- أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ وَحَجَّاجٌ قَالَا ثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثِنِيْ عَلِيٌّ بْنُ مُدْرِكٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا زُرْعَةَ يُحَدِّثُ عَنْ خَرَشَةَ بْنِ الْخُرِّ

❶صحيح: اخرجه مسلم، كتاب الإيماك، باب وعيد من اقتطع حق مسلم بيمين قاجرة بالنار (351) والنسائي، كتاب

آداب القضاة، باب القضاة في قليل المال و كثيره (4434)

وصحيح: سابقه مديث الماحظ فرمائين ـ

حَكْرٌ يُقِبَنُ الْكَالِمَةِيُّ ﴾ ﴿ 400 ﴿ كُتَابِ البيوع ﴾ ﴿ حَتَابِ البيوع ﴾ ﴿

سیّدنا ابوذر رفی الیّد جی جی که رسول الله طفی آیا نے فرمایا:

"تین آ دمی ایسے جی جن سے الله تعالی قیامت کے دن

نه بات کرے گا اور نه ان کی طرف دیکھے گا۔ اور نه بی

انہیں پاک کرے گا ان کے لئے دردناک عذاب ہوگا۔"

میں نے کہا:"یا رسول الله! وہ کون لوگ جی ؟ جو نامراد

ہوئے اور خمارے میں پڑ گئے تو آپ نے پھر وہی بات

دوھرائی۔ میں نے کہا:"یا رسول الله! وہ کون جین؟ آپ

نے فرمایا:"تہمہ بند مخنوں سے نیچ رکھنے والا بہت زیادہ

احسان جملانے والا اور جھوٹی قسم سے اپنا مال نکا لنے والا۔"

فسوائد: "الله ان سے کلام نہیں کرے گا'اس سے مرادر حمت والی کلام ہے اور اس طرح نہ دکھنے کا بھی یہی معنی ہے کہ ان پر رحمت بھری نگاہ نہیں ڈالے گا اور نہ ان کے گناہ معاف کرے گا قیض القدیر 329/3 علامہ الطبعی سے منقول ہے کہ تینوں قتم کے اشخاص ایک صفت میں منفق ہیں وہ ہے اپنی بوائی "مسبل" تہبند کو مختول سے نیچے لئکانے والا تکبر میں جتلا ہوتا ہے اور خود کولوگوں سے او نیچا سمجھتا ہے اس طرح "مسبل" تہبند کو مختول سے نیچے لئکانے والا تکبر میں جتلا ہوتا ہے اور خود کولوگوں سے او نیچا سمجھتا ہے اس طرح "منان" احسان جتلانے والا سے بھی حاجت مند کو عطاء کر کے احساس تفاخر میں جتلا ہو کر اس کو جتلاتا ہے اور جموثی قتم کھا کر مال بیچنے والا اسے بھی احساس تفاخر میں جتلا ہو کر دوسر سے کو حقیر سمجھ رہے ہوتے ہیں تو آخرت ہے سب کا عاصل میہ ہے کہ سے بھی احساس تفاخر میں جتلا ہو کر دوسر سے کو حقیر سمجھ رہے ہوتے ہیں تو آخرت میں اللہ بھی ان سے حقارت آ میز ہی سلوک کر ہے گا۔

[64].... بَابِ مَنُ أَخَذَ شِبُرًا مِنَ الْأَرُضِ

ناحق ایک بالشت زمین پر قبضه کرنے والے شخص کا بیان

2648 ـ أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ عَنْ شُعَيْبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي طَلْحَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ سَهْلِ أَخْبَرَهُ

❶ صحيح: اخرجه ،مسلم، كتاب الإيمان،باب بيان غلظ تحريم اسيال الازار(289)و ابو داؤد، كتاب اللباس،باب ماجاء في اسبال الازار(4087)و الترمذي، كتاب البيوع،باب ماجاء في من حلف على سلعة كاذبة(1211)

ر الله المعالق المعال

سیدنا سعید بن زید بناتی کہتے ہیں: میں نے رسول اللہ سے کہ کی اللہ سے کہ کی کی اللہ سے کہ کی کی اللہ سے کہ کی کی اللہ سے کہ کار اسے ساتوں زمینوں کا طوق بہنا ما جا گا۔'

فواند: غاصب کے گلے میں زمینوں کوطوق بنا کر ڈالنااس کی علماء بیصورت بیان کرتے ہیں کہ اسے زمین میں دھنسا دیا جائے گا اور زمین اس کے گلے میں طوق کی طرح ہو جائے گی ایک قول ہے ہے کہ اسے طوق کی صورت زمینوں کو اپنے گلے میں ڈالنے کا کہا جائے گا یعنی اسے طوق پہنے کا مکلف بنایا جائے گا نہ کہ طوق اس کے گلے میں لئکا یا جائے گا۔

[65] بَابِ مَنُ أَحْيَا أَرُضًا مَيْتَةً فَهِيَ لَهُ جَوْحُص بَجْر زمين آبادكرے وہ اس كے لئے ہے

2649 ـ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا أَبُوْ أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ بْنِ عُرْوَةَ قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ

بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ رَافِعِ

الله عِنَّا يَقُولُ: ((مَنُ ظَلَمَ مِنَ الْأَرُضِ

شِبُرًا فَإِنَّهُ يُطَوَّقُهُ مِنُ سَبْعِ أَرُضِينَ)). •

أَنَّ جَابِرَ بُنَ عَبُدِ اللَّهِ أَخُبَرَهُ عَنُ رَسُولِ اللَّهِ أَخُبَرَهُ عَنُ رَسُولِ اللَّهِ أَخُبَا أَرُضًا مَيْتَةً فَلَهُ فِيهَا أَحُرُ وَمَا أَكُلَتِ الْعَافِيَةُ مِنْهَا فَلَهُ فِيهَا أَحُرُ وَمَا أَكُلَتِ الْعَافِيَةُ مِنْهَا فَلَهُ فِيهَا صَدَقَةٌ). قالَ أَبُو مُحَمَّدٍ فَلَهُ الطَّيْرُ وَغَيْرُ ذَلِكَ .

الْعَافِيَةُ الطَّيْرُ وَغَيْرُ ذَلِكَ .

• الْعَافِيةُ الطَّيْرُ وَغَيْرُ ذَلِكَ .

سيّدنا جابر فالنيّز بن عبدالله فالنيّد كہتے ہيں كه رسول الله فالنيّد بن عبدالله فالنيّد كہتے ہيں كه رسول الله طلق آيا بن جو فرمایا: ''جو شخص بنجر زمين آباد كرے گا اس كے لئے وہ باعث اجر ہے۔ جو پرندے اس سے كھا كيں گئے وہ اس كے لئے صدقہ ہے۔'' ابومحمد كہتے ہيں: عافیہ مرندوں كو كہتے ہيں۔

فواند: (۱) "العافية" اس كى ندكر عانى اورجع عوافى آتى ہے اور يہ ہر طالب رزق كو كہتے ہيں عوام دوران ان ہو يا حيوان (۲) جو شخص بنجر بے آباد زبين جو كدكسى كى ملكيت نه ہوا ہے آباد كرے وہ اسى كى ملكيت به ہوا ہے آباد كرے وہ اسى كى ملكيت ہوگى (۳) فصل يا باغ ميں ہے آگركوئى انسان يا چرند، پرندكوئى دانه لے جاتے ہيں وہ صاحب كھيت و ماغ كا صدقه ہوگا۔

[●] متدفق عليه: البخاري، كتاب المظالم، باب إتم من ظلم شئيا من الارض(2452) ومسلم، كتاب المساقاة، باب تحريم الظالم وغصب الأرض وغير(4108)

³ صحيح: أخرجه الترمذي، كتاب الأحكام، باب مايذكر في احياء ارض الموات (1379)

[66].... بَابِ فِي الْقَطَائِعِ

زمین دینے کا بیان

> عَنُ أَبُيَضَ بُن حَمَّال أَنَّهُ اسْتَقُطَعَ الْمِلْحَ مِنُ رَسُولِ اللَّهِ عِنْ الَّذِي يُقَالُ لَـهُ مِـلُـحُ سُـذِّامَأُرِبَ فَأَقُطَعَهُ ثُمَّ إِنَّ الْأَقُرَعَ بُنَ حَابِسِ التَّمِيمِيَّ قَالَ يَا نَبِيَّ اللَّهِ إِنِّي قَدُ وَرَدُتُ الْمِلْحَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ وَهُوَ بِأَرُضِ لَيْسَ لَهَا مَاءٌ وَمَنُ وَرَدَهُ أَخَذَهُ وَهُوَ مِثُلُ مَاءِ الْعِدِّ فَاسْتَقَالَ النَّبِيُّ عَيْدٌ الْأَبُيَضَ فِي قَطِيعَتِهِ فِي الُمِلُح فَقُلُتُ قَدُ أَقَلُتُهُ عَلَى أَنُ تَجُعَلَهُ مِنِّى صَدَقَةً . فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : (هُوَ مِنُكَ صَدَقَةٌ وَهُوَ مِثُلُ مَاءِ الْعِدِّ مَنْ وَرَدَهُ أَخَذَهُ)). قَالَ وَقَطَعَ لَـهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَرُضًا وَنَخُلًا وَكَذَا بِالْجَوُفِ جَوُفِ مُرَادٍ مَكَانَهُ حِينَ أَقَالَهُ مِنْهُ قَالَ الْفَرَجُ فَهُوَ عَلَى ذٰلِكَ مَنُ وَرَدَهُ أَخَذَهُ. 9

سیّدنا ابیض بن حمال بیان کرتے ہیں۔ انہوں نے رسول مأرب "(وادي مأرب كانمك) كيت بين-آب نان کو وہ قطعہ دے دیا۔ پھر اقرع بن حابس تمیمی نے کہا: "الله کے نی! میں جاہلیت میں نمک کی زمین سے گزرا تھا جہاں یانی نہیں ہے۔ جو شخص وہاں جاتا ہے اسے لے لیتا ہے۔ اور وہ دائی یانی کی طرح ہے۔ تو نبی مشکریان نے ابیض سے وہ نمک کا قطعہ واپس لے لیا۔ ابیض رخالفہ کہتے ہیں' میں نے آپ سے کہا: ''میں اس شرط پر واپس كرول گا كەمىرى طرف سے اسے صدقہ كرديں ـ" آپ نے فرمایا: '' تیری طرف سے صدقہ ہے۔ اور وہ الی چیز ے جیسے دائمی ہوا یانی جو بھی اس کے پاس جاتا ہے وہ اس سے لیتا ہے۔ اور رسول الله طفي الله نے جب اسے والی لے لیا تو اس کی جگہ انہیں زمین اور تھجور کا باغ جرف مراؤ میں دیا۔ فرج کہتے ہیں: وہ الی چیز ہے جواس کے باس جاتا ہے وہ اس سے لے لیتا ہے۔

فواند: (۱) امام، حكّام بي آبادز مين كسي كوالاث كريكتي بين _ (۲)"الماءُ العِدّ" بيهميشه

 [◘] حـــن: أخرجه ابوداؤد، كتاب الخراج والإمارة واقتى باب في اقطلاع الأرضين(3058) والترمذي، كتاب الأحكام،
 باب ماجاء في الاقطاع(1380) و ابن ماجه، كتاب الرهوك، باب اقتطلاع الأنهار والعيوك(2475)

حال المنطق المن

تھہرے رہنے والے پانی کو کہتے ہیں جو بھی ختم نہ ہواس کو' ملح'' نمک سے اس لیے تشییہ دی گئ ہے کیونکہ ایک تو بیختم نہیں ہوتا دوسرا بلامشقہ حاصل ہو جاتا ہے جیسے کہ نمک۔

2651 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سِمَاكِ بْنِ حَرْبِ

سیّدنا علقمہ بن واکل اپنے والد سے بیان کرتے ہیں رسول
الله طِنْ اَیْنَ نے مجھے زمین کا ایک مکڑا دیا اور آپ نے
میرے ساتھ معاویہ وُٹائیڈ کو بھیجا فرمایا: ''یہ زمین اے
دے دینا۔'' کیکی کہتے ہیں محمد بشار نے اور غندر نے اس
حدیث کو بمان کیا۔

[67] بَابِ فِی فَضُلِ الْغَرُسِ درخت لگانے کی فضیلت کا بیان

2652 أَخْبَرَنَا الْمُعَلَّى بْنُ أَسَدِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ الْأَعْمَشُ حَدَّثَنَا اللهِ عَدُّلَنَا سُلْمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُوْلُ

حَدَّ تَتُنِى أُمُّ مُبَشِّرِ امْرَأَةُ زَيُدِ بُنِ حَارِثَةَ قَالَتُ دَخَلَ عَلَى رَسُولُ اللهِ عَلَى فِي عَالِمَ اللهِ عَلَى أَمُّ مُبَشِّرٍ أَمُسُلِمٌ عَالِي فَقَالَ يَا أُمَّ مُبَشِّرٍ أَمُسُلِمٌ عَرَسَ هٰذَا أَمُ كَافِيرٌ قُلُتُ مُسُلِمٌ فَعَرَسَا فَقَالَ: ((مَا مِنُ مُسُلِمٍ يَغُرِسُ غَرُسًا فَقَالَ: ((مَا مِنُ مُسُلِمٍ يَغُرِسُ غَرُسًا فَيَا أَكُلُ مِنهُ إِنْسَانٌ أَوْ ذَابَّةٌ أَوْ طَيُرٌ إِلَّا كَانَتُ لَهُ صَدَقَةٌ). ٥

سیّدنا زید بن حارثہ کی بیوی ام مبشر کہتی ہیں کہ رسول الله طفی آیا میرے پاس باغ میں تشریف لائے تو آپ نے فرمایا: اے ام مبشر! یہ باغ کسی مسلمان نے لگایا ہے یا کافر نے؟ میں نے کہا: "مسلمان نے ۔" آپ نے فرمایا: "کوئی مسلمان جو درخت لگاتا ہے اس سے انسان جانور یا پرندے کھاتے ہیں وہ اس کے لئے صدقہ ہوتا ہیں ۔"

فوائد: (۱) آج ماحل کی بہتری کے لیے شجر کاری کا بہت شوروغوغا ہے جب کداسلام میں شجر کاری دین کا حشہ ہے اس لیم اللہ میں شجر کاری دین کا حشہ ہے اس لیے اسلام کو دین فطرت کہا جاتا ہے کہ بیفطرت کے اصولوں کی نگہبانی کرتا ہے اور

[•] صحيح: بيشرط مسلم برب، ابوداؤد، كتاب المحراج والإمارة باب اقتطاع الأرضين (3058) والترمذي، كتاب الأحكام، باب ماجاء في الاقتطاع (1381)

عسجيج: اخرجه مسلم، كتاب المساقاة، باب فضل الغرس والزرع (3948)

حكاب البيوع كالمحالي الماليوع كالمحالي المبيوع كالمحالي المبيوع كالمحالي المبيوع كالمحالي المبيوع كالمحالية كالمحالية كالمحالية كالمحالية كالمحالية كالمحالية كالمحالية كالمحالية كالمحالية كالم

السے مفید امور کو جو دنیا وانسانیت کی بہبود وفلاح کا باعث ہوں انہیں اینے وسیع دامن میں سمیٹ لیتا ہے۔ (۲) کھیتی یا درخت ہے کسی بھی قتم کا اٹھایا جانے والا نفع اس کے بونے والے کے لیے اجر کا باعث ہے۔ (والله ولي التوفيق)

[68].... بَابِ فِي الُحِمَى زمین گھیرنے کا بیان

2653 - أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ الزُّبَيْرِ حَدَّثَنَا الْفَرَجُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ أَخْبَرَنِي عَمِّي ثَابِتُ بْنُ سَعِيدٍ

عَنْ أَبِيهِ سَعِيدٍ عَنْ جَدِّهِ

سیدنا ابیض بن حمال کہتے ہیں کہ انہوں نے رسول الله الشيطية سے بيلو كا درخت كيرنے كے متعلق يوجها تو رسول الله عظيمة في فرمايا: "بيلوك ورخت كوكهرنا جائز نہیں ۔' اس نے کہا: میں جا ہتا ہوں بیلو کا ایک ٹکڑا زمین میرے قبضه میں ہو۔ " تو نبی الشَّعَ اللّٰم نے فرمایا: " پیلو کو گھیرنا جائز نہیں۔' فرج کہتے ہیں: قبضہ سے ابیض کی مراد ریقی كەز مىن مىرىجىتى ہواوراس پراحاطە كيا ہوا ہو۔

أَبُيَضَ بُن حَمَّال أَنَّهُ سَأَلَ رَسُولَ اللُّه عِنْ حِمَى الْأَرَاكِ فَقَالَ رَسُولُ اللّه عَلَيْ لَا حمَى في الْأَرَاكِ فَـقَـالَ أَرَاكَةٌ فِـى حِـظَارِى فَقَالَ النَّبِيُّ عَلَيْ : ((لا حِمَى فِي الْأَرَاكِ)). قَسالَ فَسرَجٌ يَعُنِسي أَبْيَضُ بِحِظَارِى الْأَرُضَ الَّتِسي فِيهَا الزَّرُعُ الْمُحَاطُ

عَلَيْهَا . ٥

فوائد: پیلو یصحراء میں یایا جانے والاخودرو بودا ہے معلوم ہوا کہالی جڑی بوٹیوں کو جوعام لوگوں کے لیے نفع کا باعث ہوں ان کواینے لیے خاص نہیں کیا جاسکتا ہے بلکہ وہ استفادۃ عام کے لیےسب کی مشتر كه شار ہونگى بلككسى كى خاص زمين ميں بھى ہوں تو ان سے كسى كوروكنا درست نہيں _

[69].... بَابِ فِي النَّهِي عَنُ بَيُعِ الْمَاءِ یانی بیچنے کی ممانعت کا بیان

2654 حَدَّلَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِيْنَارٍ عَنْ أَبِي الْمِنْهَالِ

سَمِعُتُ إِيَاسَ بُنَ عَبْدٍ الْمُزَنِيَّ وَكَانَ سَيْدنا اياس بن عبدالمز في جونبي طَيْعَيْزَ كصحاب والنفريت

الكَلْمِينَ الكَلْمِينَ الكَلْمِينَ الكَلْمِينَ الكَلْمِينَ اللهِ ع ١٩٥٥ المسلوع ٢٥٥ المسلوع ٢٥٥ المسلوع ٢٥٥ المسلوع ٢٥٥ المسلوع ٢٥٥ المسلوع ١٩٥٥ ال

سے کہتے ہیں'' پانی نہ بچو کیونکہ میں نے نبی مطفع آیا ہے ساوہ پانی بیچنے سے منع فرماتے سے اور عمرو بن دینار نے کہا: ہمیں علم نہیں کہ کون سا پانی ؟ راوی نے کہا: مجھے علم نہیں کہ جاری پانی یا کنویں سے لیا ہوا؟

فوائد: اس پانی سے مراد کھی باڑی سے فی رہنے والا پانی ہے آپ مشکی آنے فریایا: کہ ذاکد پانی سے لوگوں کو نہ روکو کہ اس کے ذریعے تم زائد گھاس بھی روک لو (بخاری) ۔ کیونکہ گھاس پانی کے پاس ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی تو گویا پانی سے روکنا گھاس سے روکنا ہے۔ (واللہ اعلم)

[70] بَابِ فِي الَّذِي لَا يَحِلُّ مَنْعُهُ وه چيز جس مع كرنا ناجا زَنْ ہے

2655 حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا كَهْمَسٌ عَنْ سَيَّارٍ رَجُلٍ مِنْ فَزَارَةَ عَنْ أَبِيْهِ

عَنُ بُهَيُسَةَ عَنُ أَبِيهَا عَنِ النَّبِيِ عَنَى النَّبِي عَنَى النَّبَي اللَّهُ عَلَى النَّبِي النَّبَعُهُ اللَّذِي لَا يَبِعِلُ مَنْعُهُ قَالَ: ((المُولُحُ وَالْمَاءُ)) قَالَ مَا الشَّيءُ اللَّذِي لَا يَبِعِلُ مَنْعُهُ قَالَ: ((إِنْ تَفْعَلِ النَّذِي لَا يَبِعِلُ مَنْعُهُ قَالَ: ((إِنْ تَفْعَلِ النَّذِي لَا يَبِعِلُ مَنْعُهُ قَالَ: ((إِنْ تَفْعَلِ النَّذِي اللَّهِ عَدُولً المَّدِي اللَّهِ عَلَى النَّهُ عَلَى النَّعَلِ النَّذِي لَا يَبِعِلُ مَنْعُهُ قَالَ: ((إِنْ تَفْعَلِ النَّذِي اللَّهِ عَلَى النَّعَلِ النَّي عَلَى النَّي عَلَى النَّي عَلَى النَّعَلَى النَّعَلَى النَّعَلَى النَّعَلَى النَّعَلَى النَّعْدَ خَيْلًى النَّعْدَ وَالْمَاءِ قِيلَ لَلْكَ)) وَانْتَهٰ عِلَ إِلَى الْمِلْعِ وَالْمَاءِ قِيلَ لَلْعَبُدِ اللَّهِ تَقُولُ بِهِ فَأَوْمَا بُوالْسِهِ. ﴿ وَالْمَاءِ قِيلَ لَلْهِ تَقُولُ بِهِ فَأَوْمَا بُوالْسِهِ وَالْمَاءِ قِيلَ لَا لَعَبُدِ اللَّهِ تَقُولُ بِهِ فَأَوْمَا بُوالْسِهِ . ﴿ اللّهِ اللّهِ تَقُولُ بِهِ فَأَوْمَا بُوالْسِهِ . ﴿ وَالْمَاءُ قِيلَ اللّهُ عَلَى الْمَاءِ قَيلَ اللّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْمِلُ الْمُعْدِ اللَّهِ تَقُولُ اللَّهُ عَلَى الْمُعْلِى اللَّهُ عَلَى الْمُعْلِى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلِى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْعِلْمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْعُلُولُ اللَّهُ الْعَلَى الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ اللَّهُ الْعَلَى الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِ اللَّهُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ اللَّهُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ اللَّهُ الْمُؤْمِ اللَّهُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤُمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُو

سیّدنا بُسید آپ والدسے بیان کرتی ہیں کہ وہ نبی طفی الله الله کے اور آپ سے اجازت لے کرآپ کے اور آپ کی قمیض کے درمیان داخل ہوگئے عثان نے کہا:
"انہوں نے آپ کو گلے لگا لیا اور کہا: وہ کون می چیز ہے جس سے روکنا ناجائز ہے؟" آپ نے فرمایا: "نمک اور پانی کی منہوں نے کہا: اور کون می چیز؟ آپ نے فرمایا: "نیکی کرنا تمہارے لئے بہتر ہے۔" انہوں کہا: کس چیز سے روکنا ناجائز ہے؟ آپ نے فرمایا: "نیکی کرنا تمہارے لئے بہتر نا جائز ہے؟ آپ نے فرمایا: "نیکی کرنا تمہارے لئے بہتر نا جائز ہے؟ آپ نے فرمایا: "نیکی کرنا تمہارے لئے بہتر ہے۔" نمک اور پانی پر ہی انتہا کی عبداللہ سے کہا گیا: آپ بھی اس کے قائل ہیں؟ انہوں نے اپنے سرسے اشارہ کیا۔

[•] صحيح: شرط بخاري پر ب، ابو داؤد، كتاب البيوع، باب بيع فضل الماء (3478) و الترمذي، كتاب البيوع، باب ماجاء في يع بيع فضل الماء (1271)

[€] صحيح : أخرجه ابن حزم في المحلى 54/6، وابو داؤ د، كتاب الإجارة، باب في منع الماء (3476)

حرك سِّنَانَ الْكَالِيْنَ الْكَالِيْنَ الْكَالِيْنَ الْكَالِيْنَ الْكَالِيْنَ الْكَالِيْنَ الْكَالِيْنَ الْكَالِيْنَ الْكَالِينَ الْكِيلِيْنَ الْكَالِيْنِ الْمِينَ الْمُؤْمِنِ الْمِينَ الْمِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِينِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِينِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِينِينَ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِينِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينَ الْمُؤْمِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمِ

فوائد: بيدونوں چيزيں چونکه تھل الحصول اور عام ہيں للبذا ان سے لوگوں کو رو کناغير مناسب ہے۔ [71].... بَابِ إِنَّ النَّبِيِّ ﷺ عَامَلَ خَيْبَرَ نی طشکتاتی نے اہل خیبر سے معاملہ طے کرنے کا بیان

2656 ـ حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ حَدَّثَنِي نَافِعٌ

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَمَلَ سيِّدنا عبدالله والله والله على الله
خَيْبَوَ بشَ طُو مَا يَخُورُ جُ مِنْهَا مِنْ ثَمَوَةٍ عَيْدَ وَهِي بِيراوار كَجُور يا غَلَى كَيْنَ يرمعالم طيكيار

أُو زَرُع . •

فُواند: خيبر مين منعقد ہونے كى بناء يراس بيع كوئيع تخابرة بھى كہا جاتا ہے اور آپ طفيع آيا كے عمل کی بناء پریہ بلاشبہ جائز ہے آ دھے، تہائی یا چوتھائی جس ھتے پر بات طے ہو جائے اس کے کرنے میں کوئی حرج نہیں _

[72] بَابِ فِي النَّهُي عَنِ الْمُخَابَرَةِ بیج مخابرہ کی ممانعت کا بیان

2657 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو الْحَسَنِ عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ إِسْحْقَ حَدَّثَنَا أَبُو الزُّبَيْرِ

بَسَنَتَيُنِ أَوُ ثَلاثٍ عَلَى النُّلُثِ وَالشَّطُر وَشَسَىءٍ مِسنُ تِبُن فَقَالَ لَنَا رَسُولُ اللُّبِهِ ﷺ : ((مَنُ كَانَتُ لَهُ أَرُضٌ فَلْيَحُرُثُهَا فَإِنَّ كُرِهَ أَنْ يَحُرُثُهَا فَلْيَهُ مَنْحُهَا أُخَاهُ فَإِنْ كَرِهَ أَنْ يَمُنَحَهَا أَخَاهُ فَلُيَدَعُهَا)) . 6

أَنَّهُ سَمِعَ جَابِوًا يَقُولُ كُنَّا نُحَابِوُ قَبُلَ سَيِّدنا جابر وَلَّتَهُ كُنتٍ بِين كه بم دو يا تين برس كے لئے أَنُ يَنْهَانَا رَسُولُ اللّهِ عَن الْحِبُر تَهَائَى اور آ دھے اور کھے بھوسے برز بین بونے کے لئے دیا كرت تح حتى كه رسول الله السيطيكية في جميس اس بات ے منع کر دیا۔ پھر ہم سے رسول الله طفی الله نے فرمایا: ''جس کی زمین ہے وہ خود کاشت کرے اگر خود کاشت کرنا نہیں جاہتا تو اپنے بھائی کو دے دے۔اگر وہ اپنے بھائی کونہیں دینا جا ہتا تو تو اسے چھوڑ دے۔''

¹ منفق عليه: البخاري، كتاب الإجارة، باب إذا استاجر ارضاً فمات احدهما (2275) ومسلم، كتاب المساقاة، باب المساقاة والمعاملة يحزء من الثمر والزرع(3941)

[🗗] صحيح : أخرجه مسلم، كتاب البيوع بهاب كراء الارض(3901) والبخاري، كتاب الحرث والمزارعة، باب ماكان به اسر اصحاب النبي صلعم بعضهم بعضا في الزراعة (2340)

حركا يُتِنِينَ الْكَارِينِينَ الْمُعَالِينِينَ الْمُعَالِينِينَ الْمُعَالِينِينَ الْمُعَالِمِينِينَ الْمُعَالِمِينَ الْمُعَلِمِينَ الْمُعِلَى الْمُعَلِمِينَ الْمُعِلَى الْمُعِلَى الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلِمِينَ الْمُعِلِمِينَ الْمُعِلِمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلِمِينَ الْمُعِلِمِينَ الْمُعِلِمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمِعِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلِمِينَ الْمُعِلِمِينَ الْمُعِلِمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلِمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلِمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِينَ الْمُعِلَمِ

فواند: کچیلی مدیث میں ہم بڑھ آئے ہیں کہ نے تخابرة جائز ہے جب کہاس مدیث ک مطابق آپ مشی کی اس سے روک دیا تھا۔اس میں تطبیق بول ہوگی جیسا کدرافع بن خدیج سے بخاری میں مروی ہے۔ فرماتے ہیں: انصار میں سے ہم سب سے زیادہ کھیٹیاں والے تھ "کنا نکری الارض علی ان لنا هذه ولهم هذه فربما اخرجت هذه ولم تخرج هذه فنهانا عن ذلك و اما بالورق ف لم ينهانا . " (بخارى: 2332) ہم اس شرط يرزيين كرائے يرويتے كرزيين كاس حصے كي فصل ہمارى اور اس کی ان کی جھی اس حصے کی فصل ہو جاتی اس کی نہ ہوتی تو آپ مٹنے آیا نے ہم کواس سے روک دیا۔ جب کہ جاندی کے عوض ایسے کرنے سے نہ روکا ۔ تو گویا منع الی صورت میں جب قطعہ اراضی خاص ہواور اس میں غرر کا امکان ہواگر پیداوار میں ہے حصّہ طے ہے غرر کا اندیشنہیں تو بلا شبہ یہ جائز ہے (واللہ اعلم) 2658 - أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَلِيّ بْنِ مُسْهِرِ عَنْ أَبِي إِسْحٰقَ الشَّيْبَانِيّ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ السَّائِبِ قَالَ سَأَلْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَعْقِل عَنِ الْمُزَارَعَةِ فَقَالَ

أَخْبَونِسي ثَابِتُ بُنُ الطَّبِحَالِ سيّدنا ثابت بن ضحاك وظافئ انصارى كمت بين كه رسول الله طفي من ارعت مع فرمان عبدالله على كما كما: آپ اس کے قائل ہیں: انہوں نے کہا: نہیں میں پہلی بات کا قائل ہوں۔

الْأَنْصَارِيُّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ نَهَى عَن الُـمُزَارَعَةِ قَالَ لِعَبُدِ اللَّهِ تَقُولُ بِهِ قَالَ لَا أَقُولُ بِالْأَوَّلِ . 0

[73] بَابِ فِي النَّهُي عَنُ بَيْعِ الْأَرْضِ سَنتَيْن دو برس کے لئے زمین بٹائی پر دینے کی ممانعت کا بیان

2659 أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمِ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ

عَنْ جَابِرِ قَالَ نَهَى رَسُولُ اللّهِ عَنَّ سَيِّدنا جابر فَالنَّهُ كَتِ بِين كرسول الله عَنْ عَن وويا تين

بَيْع اللَّرُضِ الْبَيْضَاءِ سَنَتَيْنِ أَوْ ثَلاثًا . ٥ برس كے لئے سادہ زمین بٹائی پردينے سے منع كيا-

[74] بَابِ فِي الرُّخُصَةِ فِي كِرَاءِ الْأَرُضِ بِالذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ سونے اور جاندی کے بدلہ میں زمین کرائے پر دینے کی اجازت

2660 - أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدِ عَنْ مُحَمَّدِ

❶صحيح: أخرجه مسلم، كتاب البيوع،باب في الزراعة والمؤاجرة(3933)واحمد33/3

صحيح: أخرجه مسلم، كتاب البيوع، باب كراء الأرض (3906) واحمد 33/3

المُعْلِينَ الْكَالِيْعِينَ الْكَالِيْعِينَ الْكَالِيمِينَ الْكِلِينِ البيوع المُعْلِقِينَ الْكِلِيمِ البيوع الم

بْنِ عِكْرِمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَبِيبَةَ

عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ

سیّدنا سعد بن ابو وقاص رفی تین کتب بین ہم رسول الله مطفی الله علی الله علی کتب بین ہم رسول الله مطفی الله علی کے زمانہ میں نالیوں کی پیداوار پر زمین کرائے پر دیتے ہے۔ تو ہمیں رسول الله طفی الله طفی الله علی اور چاندی کے بدلے زمین کرائے پر دینے کی احازت دے دی۔

عَنُ سَعُدِ بُنِ أَبِى وَقَاصٍ قَالَ كُنَّا نُكُرِى اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ الللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُلْمُ الللَّهُ اللللللْمُ اللللَّهُ اللْمُلْمُ اللللْمُ الللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الل

فوائد: یه حدیث اگر چرضعف ہے مگر بخاری میں رافع بن خدی بناہیا کی حدیث اس کی شاهد ہے جس سے اس کے معنی کو تقویت حاصل ہو جاتی ہے مزید تفصیل کے لیے حدیث (2657) کا فائدہ ملاحظہ سے جس سے اس کے معنی کو تقویت حاصل ہو جاتی ہے مزید تفصیل کے لیے حدیث (2657) کا فائدہ ملاحظہ سے جسے۔

[75].... بَابِ فِی الُخَرُ صِ اندازے کے متعلق

2661 - حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ ابْن مَسْعُودِ بْنِ نِيَارِ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ

جَاءَ سَهُلُ بُنُ أَبِى حَثُمَةَ إِلَى مَجُلِسِنَا فَ حَدَّمَةَ إِلَى مَجُلِسِنَا فَ حَدَّمَةَ إِلَى مَجُلِسِنَا فَ حَدَّثُ أَنَّ النَّبِيَ النَّلُثُ فَإِنُ خَرَصْتُمُ فَخُذُوا وَدَعُوا النُّلُثُ فَإِنُ لَمُ تَدَعُوا النُّلُثُ فَإِنُ لَمُ تَدَعُوا النُّلُثُ فَإِنْ لَمُ تَدَعُوا النَّلُثُ فَإِنْ لَمُ تَدَعُوا النَّلُثُ فَإِنْ النَّلُثُ فَإِنْ النَّلُثُ فَا عَلَى النَّلُثُ فَإِنْ النَّلُثُ فَا النَّلُثُ فَا عَلَى النَّلُثُ فَإِنْ النَّلُثُ فَا عَلَى النَّلُثُ فَإِنْ النَّلُثُ فَا عَلَى النَّلُثُ فَإِنْ النَّلُثُ فَإِنْ النَّلُثُ فَا عَلَى النَّلُثُ فَإِنْ النَّلُثُ فَا النَّلُثُ فَا عَلَى النَّلُثُ فَا النَّلُثُ فَا عَلَى اللَّهُ الْمُؤْلُولُ اللَّهُ الْمُ اللَّهُ الْمُعْلِى اللَّهُ الْمُعَالِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعَالِمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلِى اللْمُعْلِمُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعُلِمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلَى الْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلَى الْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُولُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّالِمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللَّهُ الْمُعْلِمُ اللْمُعْلِمُ اللَّهُ ا

فوافد: اس حدیث کا اصل تعلق تو باب الزکوة سے ہے بہر حال جب بھی کسی موقع پر درخت گے پھل کا اندازہ کرنامقصود ہوتو اندازہ کرنے والا اندازے سے ایک تہائی یا چوتھائی کم پھل کا حساب کرے۔

❶ ضعيف : أخرجه ابوداؤد، كتاب البيوع،باب في المزارعة (3391)وابن ماجه، كتاب الرهوك،باب مايكره من العزارعة (2461)

[€]صحيح: فتح الباري 347/3 أخرجه ابو داؤد، كتاب الزكاة،باب في الخرص، (1605) و الترمذي، كتاب الزكاة،باب ماجاء في الخرص

يُنْهَنَ الْكَالِيمِيُّ كُلُّ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَ [76] بَابِ فِي النَّهِي عَنُ كَسُبِ الْأَمَةِ لونڈی کی کمائی کھانے کی ممانعت

2662 حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جُحَادَةَ عَنْ أَبِيْ حَازِم ··

عَنُ أَسِي هُورِيُورَةَ قَالَ نَهَى رَسُولُ سَيِّدنا ابو مريرة والنَّذ كُتِ بِن كه رسول الله سَيَّا الله مِن أَ لونڈی کی کمائی کھانے سے منع فر مایا۔

اللَّهِ ﷺ عَنُ كَسُبِ الْإِمَاءِ . •

[77].... بَابِ فِي النَّهِي عَنُ كَسُبِ الْحَجَّامِ سینگی لگانے والے کی کمائی کی ممانعت کا بیان

2663 - أَخْبَرَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيْرِ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قَارِظٍ أَنَّ السَّائِكَ بْنَ يَزِيدَحَدَّثَهُ

سیّدنا رافع بن خدیج بیان کرتے ہیں که رسول الله ملطّ عیم نے فرمایا: ''سینگی لگانے والے کی کمائی خبیث ہے اور بازاری عورت کا مہر خبیث بے اور کتے کی قیمت خبیث

أَنَّ رَافِعَ بُنَ خَدِيجِ حَدَّثَنَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ : ((قَسَالَ كَسُسِبُ الْحَجَّام خَبِيتٌ وَمَهْرُ الْبَغِيّ خَبِيتٌ وَثَمَنُ الْكُلُب خَبيتٌ)) . 9

فوائد: (١) "حبّام" سينكى لكانے والے كو كہتے ہيں بيسينك كي شكل كا كھوكھلا آلد ہوتا ہے جس ك ذريع جسم كے فاسد حقے ير في لگا كر خون كھينيا جاتا ہے بيانتہائي مجرّب ومسنون طريقه علاج ہے (٢) جاّم کا اجرت لینا مروہ ہے جیسا کہ آگلی حدیث ہے اس کی وضاحت ہورہی ہے (٣) زنا کارعورت کی کمائی نایاک ہے (۴) کتے کی قیت کھانا حرام ہے البتہ شکاری کتے کی قیت حاصل کی جاسکتی ہے کیونکہ ایک حدیث میں" إلا كلب صيد" كا استثناء آتا ہے۔

[78].... بَابِ فِي الرُّخُصَةِ فِي كَسُبِ الْحَجَّام سینگی لگانے والے کی کمائی کی رخصت کا بیان

2664- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ الطَّوِيْلُ

[◘] صحيح : أخرجه البخاري، كتاب الإجارة، باب كسب البغي والإماء(22283) وابوداؤد، كتاب البيوع، باب في كسب الإماء (2425)

صحيح : أخرجه مسلم، كتاب المساقاة، باب تحريم ثمن الكلب، وحلوان الكاهن ومهرا لبغي (1568 وابو داؤد، كتاب البيوع ، باب في كسب الحجام(3421)

المن المنافق الكافية المنافق المنافق المنافق المنافق المنافقة المن عَنُ أَنْ سِ بُن مَسَالِكِ أَنَّ رَسُولَ سَيِّدِنَا الْسِ وَالنَّيْ بِن مَالِكَ سِي مَنْقُولَ سِي كَه رسول

لئے دوصاع غلہ دینے کا حکم دیا۔

اللَّهِ ﷺ حَجَمَةً أَبُو طَيْبَةً وَأَمَرَ لَـهُ بصَاعَيْن مِنُ طَعَام . ٥

[79].... بَابِ فِي النَّهُي عَنُ عَسُبِ الْفَحُلِ جانورکوحاملہ کروانے کی اجرت منع ہے

2665 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلِ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي حَازِمِ

عَنُ أَبِي هُرَيُدُو فَ قَالَ نَهَى رَسُولُ سيِّدنا ابو ہررة رَضُّنُو كُتِ مِن كه رسول الله طِيْحَالَيْمَ نِي

اللَّهِ عَنُ ثَمَن عَسُبِ الْفَحُلِ . ٥ جانوركوحامله كرواني كي اجرت منع كيار

فوائد: جانور کی جفتی کے عوض میں یسیے لینا حرام ہے ہاں کوئی کرامۂ دے دے تو کوئی حرج نہیں تر مذی میں حدیث ہے کہ آپ مٹنے آتا نے ایک شخص کو کرامۃ کی رخصت دی کہ کرامۂ (یعنی ایبا عطیہ جو بلاطے کیے مادہ جانور کا مالک دے دے) ملنے والے عطیے کوتم لے سکتے ہو۔

2666 أَخْبَرَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا أَبِيْ عَنِ الْمَهْرِيّ قَالَ.....قا

ستدنا ابوہررة فالنيز كتے ہن كه رسول الله ملطق آن نے حانور کو حاملہ کروانے کی اجرت اور بدکارعورت کی اجرت قَالَ أَبُو هُـرَيْرَةَ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ عِلَيْكَ

عَنْ عَسُبِ الْفَحُلِ وَأَجُرِ الْمُوْمِسَةِ . 3

ہے منع کیا ہے۔ [80].... بَابِ فِيمَنُ بَاعَ دَارًا فَلَمُ يَجْعَلُ ثَمَنَهَا فِي مِثْلِهَا

مکان بھے کراسکی قیت مکان ہی میں نہ صرف کرنے والے شخص کے متعلق

2667 أَخْبَوْنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا إِسْمَعِيْلُ هُوَ ابْنُ إِبْرَاهِيْمَ بْنِ مُهَاجِرِ قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ الْمَلِكِ بْنَ عُمَيْرِ يُحَدِّثُ قَالَ سَمِعْتُ عَمْرُو بْنَ خُرَيْثِ عَنْ أَخِيْهِ

[♦] متفق عليه : البخاري، كتاب الطب،باب الحجامة في الداء (5696) و مسلم، كتاب المساقاة،باب حل أجرا الحجامة (4014)

[◘]صحيح: أخرجه البخاري، كتاب البيوع،باب بيع الغرر وحبل الحبلة(2143)وابوداؤد، كتاب البيوع،باب في عسب الفحل (3429) وابن ماحه، كتاب التجارات، باب النهى عن ثمن الكلب (2160)

❸اسناده جيد: اخرجه احمد2/232وعلقه البخاري في الكبير 115/7

المال البيوع المال البيوع المالة الماليوع المالة ال الكالكان الكان الك

سیّدنا سعید بن حریث کہتے ہیں کہ میں نے رسول سَعِيدِ بُن حُرَيْثٍ وَكَانَتُ لَهُ صُحْبَةٌ قَالَ سَبِعِتُ رَسُولَ اللَّهِ عِنْ يَقُولُ: ییجاس لائق نہیں کہاہے برکت دی جائے۔ گر جب اس ((مَنُ بَا عَ مِنْكُمُ دَارًا أَوْ عَقَارًا قَمِنٌ أَنُ لَا يُبَارَكَ لَهُ إِلَّا أَنْ يَجْعَلَهُ فِي مِثْلِهِ)) . • کی قیمت ای میں صرف کرے۔''

[81].... بَابِ فِي حَرِيمِ الْبِئُرِ کنوس کے احاطہ کا بیان

2668 أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا عَرْعَرَةُ بْنُ الْبِرِنْدِ السَّامِيُّ حَدَّثَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ مُسْلِم

عَن الْحَسَنِ الْحَسَنِ

سيّدنا عبدالله بن مغفل مع منقول مع كدرسول الله عليا عَلَيْهِ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُن مُغَفَّل عَنُ رَسُولِ نے فرمایا:'' جو شخص کنواں کھودے۔اس کے اردگر د حالیس اللَّهِ ﷺ قَالَ((مَنُ احْتَفَرَ بِئُوًا فَلَيْسَ ہاتھ تک کسی اور کو کنواں کھودنا جائز نہیں تا کہ اس کے جانور لِلْحَدِ أَنُ يَحْفِرَ حَوْلَهُ أَرْبَعِينَ ذِرَاعًا کے لئے بیٹھنے کی مگہ ہو۔'' عَطَنًا لِمَاشِيَتِهِ)). 🏻

فوائد: عربوں میں یانی چونکدانتائی اہمیت کا حامل تھا یانی کی موجودگی پر پورا پورا قبیلداس کے یاس پرا جمان ہو جاتا ای کو مذنظر رکھتے ہوئے آپ مشخطین نے کویں کے گرد حیالیس ہاتھ زبین کے استعال کو نا جائز تھہرادیا تا کہ اس کا خاندان اگر نہ بھی آئے تو تم از تم وہ اپنا مال واسباب،ریوڑ وغیرہ تو ادھرر کھ سکے۔ [82] بَابِ فِي الشَّفُعَةِ شفعه كابيان

2669 أَخْبَرَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ عَنْ عَطَاءِ

عَنْ جَابِرِ عَنِ النَّبِي عَلَيْ فِي الشُّفُعَةِ إِذَا لَا سَيْرنا جابر وْلِيُّمْ كَتِهُ بِن كَه نبي السُّفَاقَانِ فَ شفعه كم تعلق تَحَانَ طَبِيقُهُ مَا وَاحِدًا قَالَ يُنْظُوُ بِهَا ﴿ فَرِمَا يَا ` فرمايا: ` جب دونوں كاراسته ايك بهوتواس كے متعلق انتظار ہوگااگر چہاں کا ساتھی غائب ہو۔''

وَإِنْ كَانَ صَاحِبُهَا غَائِبًا . 6

[◘] قـوى بشـواهـد: أخـرجه ابن ماجه، كتاب الرهوك،باب من باع عقاراً لم يحعل ثمنه في مثله(2490)و مجمع الزوائد (6627)

[🛭] ضعيف : اخرجه ابن ماجه، كتاب الرهون،باب حريم البئر (2486) كيكن الع بريرة زائني كي صديث يطور شاهر آتي به وكيك نصب الراية 291/4-293و تلخيص الحبير 63/3و الحاكم 97/4

[€]صحيح : أحرجه مسلم، كتاب المساقاة، باب الشفعه (4103) وابو داؤد، كتاب البيوع، باب في الشفعة (3514)

المن المنافق الكالم المنافق ال

ف اند: (۱)" الشُفعة "بي شفع سے ہے جس كامعنى جوڑنا، ملانا وغيره ہاورشرى طور يربي اجنبی کی طرف نتقل کرنا ہے۔ (فتح الباری 192/0) (۲) مشترک زمین وغیرہ میں سے اگر کوئی اپنا حصہ فروخت کرنا چاہے تو اس کے لیے لازم ہے کہ پہلے اپنے شریک پراس کو پیش کرے اگر وہ خرید لے تو فیھا ورنداب اے اجازت ہے کہ کہیں باہر فروخت کردے بشرطیکہ راستہ ایک ہولیکن اگر راستہ مختلف ہو گیا ہے تواب حق شفعہ ختم ہو گیا۔امام شوکانی رائیلیہ فرماتے ہیں بیرحدیث اس بات کی دلیل ہے کہ محض ہمسائیگی کی بناء یر حق شفعہ ثابت نہیں ہوتا بلکہ رائے مشترک ہونا لازم ہے اور نبی ﷺ کا پیفر مان اس کامؤید ہے: جب حد بندى ہو جائے راستے جدا جدا ہو جا ئيں تو پھر شفعہ كا استحقاق نہيں رہتا _ (نيل الأوطار 3 /43) 2670 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْسُ الْعَلاءِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ عَنِ ابْنِ جُرَيْجِ عَنْ أَبِي

عَنُ جَابِرِ قَالَ قَصٰى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بالشُّفُعَةِ فِي كُلِّ شِرُكٍ لَمْ يُقْسَمُ رَبُعَةٍ أَوُ حَاثِطٍ لَا يَحِلُّ لَهُ أَنْ يَبِيعَ حَتَّى يُؤُذِنَ شَرِيكَةُ فَإِنَّ شَاءَ أَخَذَ وَإِنَّ شَاءَ تَرَكَ فَإِن بَاعَ فَلَمُ يُؤُذِنْهُ فَهُوَ أَحَقُّ به قِيلَ لِأَبِي مُحَمَّدٍ تَقُولُ بِهٰذَا قَالَ نَعَمُ . ٥

سیّدنا حابر و النّیف کہتے ہیں کہ رسول الله طبیّے آئے ہر مشترك چيزيين شفعه كافيصله كياج تقسيم نه هوئي هو - مكان ہو یا باغ 'شریک کواینے ساتھی کی اجازت کے بغیراہے بیخا جائز نہیں۔ اگر جاہے تولے لے اگر جاہے تو چھوڑ دے اگر اس کی اجازت کے بغیر پچ دے تو وہی اس کا مستحق ہوگا۔' ابومحمہ سے کہا گیا: آ بھی اس کے قائل میں؟ انہوں نے کہا:''جی ماں۔''

فوائد :....(۱) شفعہ کاحق ہر مشتر کہ چیز میں ہے جاہے وہ منقولہ ہویا غیر منقولہ یہی قول مالک رہی ہیں، احمد رالیتایہ اور احناف کا ہے جب کہ جمہور فقط غیر منقولہ اشیاء میں ہی اسے درست قرار دیتے ہیں المغنی 44/7 (۲) اگرشریک بلا اطلاع اپنا حصه فروخت کر دیتا ہے تو شریک کوحق شفعہ حاصل ہے وہ عدالت کے ذریعے اپنا حق لےسکتا ہے۔

******* ***

❶ متـفـق عـليـه : أخرجه البخاري، كتاب البيوع،باب بيع الشريك من شريك(2213)ومسـلـم، كتـاب المساقاة ،باب الشفعة (1608)



ومن كتاب الا اجازت كے بيان ميں

[1] بَابِ الْاسْتِئُذَانِ ثَكَلاثُ احازت تین دفعہ لی جائے

2671 أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَان حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْع حَدَّثَنَا دَاوُدُ عَنْ أَبِي نَضْرَةَ

سيِّدِينَا ابوسعيد خدري بْوَاتْنُهُ كَيْتِي مِين كه ابوموسَّىٰ اشْعِرِي بْرَاتِيْهُ نے سیّدنا عمر مُلائید سے تین دفعہ اجازت مانگی۔ اور انہیں اجازت نہ دی گئ وہ واپس طلے سے۔ انہوں نے کہا: واپس کیوں طیع؟ کہا: میں نے رسول اللد مطفی اللہ سے سنا وہ فرماتے تھے: ''اجازت لینے والے کو تین دفعہ اجازت لینی چاہئے اگر اسے اجازت مل جائے تو ٹھیک وگرنہ واپس لوث آئے''سبّدناعمر زائشۂ نے کہا:''اس بات کا گواہ لاؤ ورنہ میں تم سے براسلوک کروں گا۔" ابوسعید کتے ہیں: بیٹھا تھا وہ عمر رہائٹیز کی دھمکی سے گھبرائے ہوئے آئے۔ اور ہمارے ماس کھڑے ہو کر کہا: میں تمہیں قتم دیتا ہوں لئے گواہی دے تو میں نے سراٹھا کر کہا: ان سے کہو میں

عَنُ أَهِيُ سَعِيدٍ النُحُدُرِيِّ أَنَّ أَبًا مُوسَى الْأَشُعَرِيَّ اسْتَأْذَنَ عَلَى عُمَرَ ثَلاثَ مَرَّاتٍ فَلَمُ يُؤُذُنُ لَهُ فَرَجَعَ فَقَالَ مَا رَجَعَكَ قَالَ سَمِعَتُ رَسُولَ اللَّهِ عِنْكُ يَقُولُ إِذَا استَأْذَنَ الْمُسْتَأْذِنُ ثَكَاتَ مَرَّاتٍ فَإِنْ أَذِنَ لَهُ وَإِلَّا فَلُيَرُجِعُ فَقَالَ لَتَأْتِيَنَّ بِمَنْ يَشْهَدُ مَعَكَ أُو لَأَفُعَلَنَّ وَلَأَفُعَلَنَّ قَالَ أَبُو سَعِيْدٍ فَأَتَانَا وَأَنَا فِي قَوُم مِنُ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي الُمَسُجِدِ وَهُوَ فَزعٌ مِنُ وَعِيْدِ عُمَرَ إِيَّاهُ فَقَامَ عَلَيْنَا فَقَالَ أَنْشُدُ اللَّهَ مِنْكُمُ رَجُلًا سَمِعَ ذٰلِكَ مِنُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ إِلَّا شَهِدَ لِيُ بِهِ قَالَ فَرَفَعُتُ رَأْسِي فَقُلُتُ

414 كتاب الاستئذان كالم الكانتي الكانتي

اس بات میں تمہارے ساتھ ہوں ٔ دوسر بے لوگوں نے بھی اب ہی کہا تو ابوموی خانثیہ مطمئن ہو گئے۔ أُخُبِرُهُ أَنِّي مَعَكَ عَلْي هٰذَا وَقَالَ ذَاكَ آخَـرُونَ فَسُـرّى عَنُ أَبِي

مُه سُمِي ٥

فواند: (۱) آنے والے برلازم ہے کہ وہ اجازت حاصل کر کے سی کے گھر داخل ہو (۲) تین بارا جازت ما تکنے پراگر نہ ملے تولوٹ آنا جاہیے۔ (۳) عمر خالٹیز کا ابوموسی ڈالٹیز ہے گواہی طلب کرنا اس سے خبرواحد کے ججت نہ ہونے براستدلال کرنا درست نہیں کیونکہ عمر رہائی کا بیغل حیرانی و تعجب کی بنا برتھا کیونکہ محال ہے کہ روزمر ہ زندگی میں پیش آنے والا بیامام واقعہ سی کومعلوم نہ ہواسی بات نے عمر ظائفیہ کو گواہی طلب كرنے يرمجبوركيا ورنہ بہت سے دلاكل ہيں جن سے خبرواحد كے جست ہونے كى وليل ملتى ہے۔ جس طرح قرآن میں ہے: ﴿إِنْ جَا مَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَا فَتَبَيَّنُوا ﴾ (الحجرات) الركوكي فاس تمهارے ياس كوكي خبر لے كرآئے تواس كى تحقيق كرليا كرو واضح ہوا كه اگركوئى فاسق نه ہوتواس كى بات بالتحقيق قبول كرلى جائے گى اس طرح رمضان کے روزے ایک عادل کی گواہی پررکھنے کا مسئلہ ہے۔ (ویکھئے: ابوداؤد) (۲) کوئی کیسی بھی جليل القدر بستى كيون نه بوشرعي مسئلے مين اس بركلي اعتاد برگزنبين كيا جاسكتا۔

21 بَابِ كَيُفَ الْاسْتِئْذَانُ

احازت کسے لی حائے

2672 أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِر قَالَ

رَسُولَ اللَّهِ عَلَيْهُ فَحَدَ بُتُ بَابَهُ فَقَالَ ((مَنُ ذَا؟)). فَقُلُتُ أَنَا قَالَ:((أَنَا أَنَا !)) فَكُرة ذَاكَ . ٥

سَمِعُتُ جَابِرَ بُنَ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ أَتَيُتُ سَيْدنا جابر بن عبدالله فَاتَنْهُ كَتَّ بِين مِين فَي رسول الله طَشِيَةِ أَكَ ياس جاكر دروازه كَعَنْكُصْايا آب نے فرمایا: کون؟ میں نے کہا:''میں۔''آپ نے فرمایا:''میں میں کیا آپ نے اسے ناپند کیا۔

ف اند: گویا دروازه کھولنے والے کو جواب میں ''مین' کے ذریعے جواب دینا غیرمہذبا نداز ہے جس کورسول معظم مطابع نے ناپیند کیا ہے چونکہ یو چھنے والاآپ کی ذات بارے دریافت کررہا ہوتا ہے

❶ متفق عليه: البخاري، كتاب الإستيذان، باب التسليم والاستئذان ثلاثًا(6245)ومسلم، كتاب الآداب،باب الاستئذان

🛭 متـ فــق عــليه: البحاري، كتاب الإسننذاك،باب اذا قال من ذا؟ فقال أن(6250) ومـــلم، كتاب الأداب،باب في كراهية قول المستأذك أناءإذا قيل من هذا؟ (5600)

عَيْنَ الْكَالِيْنِي الاستنذان ﴿ 415 ﴿ كُتَابِ الاستنذان ﴿ 415 ﴿ كُتَابِ الاستنذان ﴿

لہٰذا اے اپنانام بنانا اپنا تعارف کرانا ہی قرین قیاس ہے۔ جب کہ میں ،میں کی رث لگانا جاہلا نہ طرزعمل ہے جس سے احتراز برتنا جاہیے۔

[3].... بَابِ فِي النَّهِي أَنُ يَطُونُ قَ الرَّجُلُ أَهُلَهُ لَيُّلا رات کو (سفر سے) آتے ہی بیوی کے پاس آنے کی ممانعت کا بیان

2673 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ سَمِعْتُ مُحَارِبَ بْنَ دِئَارِ يَذْكُرُ

سیدنا چابر بن عبداللہ رہائی کہتے ہیں میں نے رسول ہی اپنی بیوی کے پاس آئے۔اوراس کو خائن قرار دےاور اس کے عیب تلاش کرے۔سفیان کہتے ہیں: مجھے علم نہیں کہ نقصان اور عیب ڈھونڈنے کی ممانعت محارب کا قول

ہے یا حدیث کے الفاظ ہیں۔

عَنُ جَابِر بُن عَبُدِ اللَّهِ قَالَ نَهٰى رَسُولُ اللَّهِ عِلَيْهِ أَنْ يَطُونَ الرَّجُلُ أَهُلَهُ لَيُلَّا أَوُ يُحَوّنَهُمُ أَوْ يَلْتَمِسَ عَثَرَاتِهِمُ قَالَ سُفُيَانُ قَوْلُهُ أَوْ يُخَوِّنَهُمُ أَوُ يَلْتَمِسَ عَشَرَاتِهِ مُ مَا أَذُرى شَيْءٌ قَالَهُ مُحَارِبٌ أُوْ شَيْءٌ هُوَ فِي الْحَدِيثِ . ٥

فوائد: (۱) شادی شده مرد کے لیے یہ مسنون ہے کہ وہ رات کو گھرنہ لوٹے نبی مطابق اس کی وجديون بيان كرت بين كه: تَسْتَحِدَّ الْمُغِيبَةُ وَتَمْتَشِطَ الشَّعِئَةُ "عورت اين بال صاف كراور کنگھی وغیرہ کرکے صاف ستھری ہوجائے کہیں در بعد آنے والا مرد اس کی براگندہ حالت دیکھ کرمتنفرنہ ہوجائے لہذا بیمعاشرے کی بنیادی اکائی ،خاندان کو بچانے کا اصول ہے۔ (۲) بیوی سے مشکوک، بدگمان رہنا، اس کی جاسوس کرنا بیاس احساس رشتے کے لیے انتہائی خطرناک ہے لہذا مردا گر کسی عیب برمطلع ہوتا ہے تواس کی اصلاح کردیے کیکن بلاوجہ عیب ٹٹو لنے سے احتر از کرے۔

[4] بَابِ فِي إِفُشَاءِ السَّلام سلام کو عام کرنے کا بیان

2674 أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ عَنْ عَوْفٍ عَنْ زُرَارَةَ بْنِ أَوْفَى …

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ سَكُامٍ قَالَ لَمَّا قَدِمَ سيّدنا عبدالله بن سلام وظافي كيتم بي كه جب رسول

رَسُولُ اللَّهِ عِنْ الْمَدِينَةَ اسْتَشُوفَهُ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَّا عَلَيْهِ عَلَّا عِلْمِ عَلَّهُ عَلَيْهِ عَلَّا عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَيْهِ عَلَّهُ عَلَيْهِ عَلَّهُ عَلَيْهِ عَلَّمِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهِ عَلَّا عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَّهُ عَ

[◘]متفق عليه: البخاري،كتاب العمرة،باب لايطرق أهله اذا بلغ المدينه(1801)ومسلم،كتاب الإمارة،باب كراهية الطروق (4946)

الكانين الكانين الكانين الكانين الكانين الاستاذان المستاذان المستد

کہہ رہے تھے: ''رسول اللہ مضایق تشریف لائے۔ اور لوگوں کے ساتھ میں بھی آپ کو دیکھنے گیا۔ جب میں نے آپ کی صورت دیکھی ای وقت پیچان گیا کہ یہ جھوٹی صورت نہیں ہے۔ اور پہلی بات جو میں نے آپ سے تی وہ یہ تھی۔'' آپ فرما رہے تھے: ''سلام تو عام کرو' کھانا کھلاؤ' رشتہ داروں کے ساتھ نیکی کرو' اس وقت نماز پڑھو جب لوگ سورہے ہول' تم سلامتی کے ساتھ جنت میں داخل ہوجاؤ گے۔''

النَّاسُ فَقَالُوا قَدِمَ رَسُولُ اللّهِ عَلَىٰ قَالَ فَخَرَجُتُ فِيهَ مَنُ حَرَجَ فَلَمَّا رَأَيْتُ وَجُهَهُ لَيُسَ بِوَجُهِ وَجُهَهُ لَيُسَ بِوَجُهِ كَذَّابٍ فَكَانَ أَوَّلَ مَا سَمِعُتُهُ يَقُولُ: كَذَّابٍ فَكَانَ أَوَّلَ مَا سَمِعُتُهُ يَقُولُ: ((يَسَا أَيُهَسَا السنَّاسُ أَفُشُوا السَّكَلامَ وَأَطُعِهُ مُوا الطَّعَامَ وَصِلُوا اللَّرُحَامَ وَصَلُوا اللَّرُحَامَ وَصَلُوا اللَّرُحَامَ وَصَلُوا اللَّرُحَامَ وَصَلُوا اللَّرَحَامَ وَصَلُوا اللَّرَحَامَ وَصَلُوا اللَّرَحَامَ بَسَكُامٍ)) . •

فوائد: (۱) عبداللہ بن سلام فائن یہ یہودی عالم اور چہرہ شناس سے (۲) کسی معزز شخصیت کا آگے بڑھ کراستقبال کرنا درست ہے جیسا کہ آپ سے فیڈ نے بنوتر بظہ کے متعلق سعد فیٹن کو بلایا توان کے آنے پر آپ سے فیڈ کی استعمال کرنا درست ہے جیسا کہ آپ سے فیڈ و مُو السی سید کم "'ایپ سردار کی جانب بڑھو' آنے پر آپ سے فیڈ کر اماز کی فیڈ کے الیے حقوق العباد کی ادائیگی بھی ضروری ہے جو کہ دافلے کوسلامتی والا بنادیتے ہیں اور حقوق العباد میں سے فیکورہ بالاحقوق کو خصوصا اس لیے ذکر کیا گیا کیونکہ یہ دیگر حقوق کی ادائیگی میں مہیز کا کام دیتے ہیں لہذا جوان خصائل حنہ کو اپنائے گا اس کے لیے دیگر امور خیر کی انجام دبی قطعی مشکل نہیں ہوگی۔

[5] بَابِ فِي حَقِّ الْمُسُلِمِ عَلَى الْمُسُلِمِ ايك مسلمان كے دوسرے مسلمان پر حقوق كابيان

2675 أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِيْ إِسْحٰقَ عَنِ الْحَارِثِ

سیّدنا علی فالنیز کہتے ہیں رسول الله النظیاریا نے فرمایا:

د مسلمان کے مسلمان پر چھ حق ہیں: جب اسے ملے تو

سلام کے جب وہ حصینکے اسے دعا دے جب بیار ہواس کی

عیادت کرے جب وہ دعوت دے تو قبول کرے اور جب

عَنُ عَلِيٍّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((لِلُهُ مُسُلِمٍ عَلَى الْمُسُعِلِمِ سِتُّ يُسَلِّمُ عَلَيْهِ إِذَا لَقِيَهُ وَيُشَمِّتُهُ إِذَا عَطَسَ وَيَعُودُهُ إِذَا مَرِضَ وَيُجِيبُهُ إِذَا دَعَاهُ

 [◘] صحيح: أخرجه الترمذي، كتاب صفة القيامة، باب (42)(2485) وابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها
 (1334) والحكام 13/3

417 كتاب الاستئذان كالم التلاث الكالايخ

وہ مرجائے تو اس کے جنازے میں شریک ہو۔ جو بات اینے لئے پیند کرے وہی اس کے لئے پیند کرے اور اس کی غیر حاضری میں اس کی خیرخواہی کرے۔''

وَيَشْهَدُهُ إِذَا تُولِقِي وَيُحِبُّ لَهُ مَا يُحِبُّ لِنَفُسِهِ وَيَنُصَحُ لَهُ بِالْغَيْبِ)). •

ف اند: پیروایت مختلف حوالوں اورالفاظ کی کی بیشی کے ساتھ مروی ہے ایک روایت میں لفظ "وَإِذَا اسْتَـنْـصَـحَكَ فَانْصَـحْهُ (مسلم) اور جب وہ تھے ہے مشورہ مانگے تواس کی خیرخواہی کراچھا مشورہ دے۔اس کے علاوہ دیگر بہت سے حقوق العباد میں ہے ان کوخاص کرنے کامقصدان کاذی شان ہونا ہے ان ٔ حقوق کی یاسداری معاشرے میں صالحیت کاعضر پیدا کر کے اسے ایک بہترین معاشرہ بنادیتی ہے۔ [6] بَابِ فِي تَسُلِيمِ الرَّاكِبِ عَلَى الْمَاشِي

سوار کا پیدل کوسلام کرنے کا بیان

2676 أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا حَيْوَةُ أَخْبَرَنَا أَبُو هَايِيءِ الْخَوْلانِيُّ أَنَّ أَبَا عَلِيّ الْجَنْبِيّ

سيّدنا فضاله بن عبيد والنيَّة كت بي كه رسول الله طفيَّ الله نے فرمایا: "سوار پیدل کو کھڑا بیٹھے کو اور کم لوگ زیادہ لوگوں کوسلام کریں۔''

عَـنُ فَـضَالَةَ بُن عُبَيُدٍ عَنُ رَسُولِ اللهِ عَلَىٰ قَالَ: ((يُسَلِّمُ الرَّاكِبُ عَلَى الُـمَاشِي وَالْقَائِمُ عَلَى الْقَاعِدِ وَالْقَلِيلُ عَلَى الْكَثِيرِ)). 🍳

[7] بَابِ فِي رَدِّ السَّلَام عَلَى أَهُل الْكِتَابِ اہل کتاب کوسلام کا جواب دینے کا بیان

2677 - أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْن دِيْنَار

فرمایا: "بهود جبتم كوسلام كهتے بين تو وه السام عليكم (تم ير يَقُولُ السَّامُ عَلَيْكَ قُلُ عَلَيْكَ) . ٥ موت مو) كبت بين قرتم كبو: عليك (تم يرمو) -

عَن ابُن عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَىٰ : ((إِنَّ الْيَهُودَ إِذَا سَلَّمَ أَحَدُهُمُ فَإِنَّمَا

❶ حسس: أخرجه ترمذي، كتاب الأدب،باب ماجاء تشميت العاطس(2736)وابن ماجه، كتاب الجنائز،باب ماجاء في عيادة المريض (4133)

[🗗] صحيح: اخرجه الترمذي، كتاب الإستئذان، باب ماجاء في تسليم الراكب على الماشي (2705)

❸ متفق عليه: البخارى، كتاب الإستيذان،باب كيف الرد على اهل الذَّمة (6257)ومسلم، كتاب السلام،باب النهى عن المدنية عن المدنية عن المدنية الم ابتداء أهل الكتاب بالسلام 5620)

الاستنذان كالمنافق الكافيعي المستنذان كالمنافق المنافذان كالمنافذان كالمنافذ المنافذان كالمنافذان كالمنافذ المنافذان كالمنافذ المنافذان كالمنافذ المنافذ المنا

فواند: يهودى قوم بميشه بى شرير دى به للمذانه تو ان كوابتداء سلام كها جائى كا (ديكھيه مسلم) اور نه بى جواب ميں مسنون كلمه اداكيا جائے كا بلكه فقط "عليك" پر بى اكتفاكيا جائے كا بدان كى بدعاكو انہيں پر بلانا نے كا باعث ہو كا نيز بميں بھى سلام كو كہتے ہوئے في ادائيگى كا خيال ركھنا چاہيے جو كه "السّكامُ عَلَيكُم " ياسكلمٌ عَلَيكَ ہے جب كه عدم اعتناكى وجہ سے جج بدل كرسلام كهنامعنى كر يجھ كا بجھ بناديتا ہے (والله الموفق و المعين)

[8].... بَاب فِي التَّسُلِيمِ عَلٰى الصِّبُيَانِ بِجُول كُوسلام كَهِے كابيان

2678 حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

سیّدنا سیار براللہ کہتے ہیں میں ثابت بنانی براللہ کے ساتھ جا رہا تھا ،وہ بچوں کے پاس سے گزرے تو انہیں سلام کہا اور ثابت نے براللہ بتایا کہ وہ انس رٹائٹیئر کے ساتھ تھے وہ بچوں کے یاس سے گزرے تو انہیں سلام کہا۔

عَلَيْهِمُ. 0

فواند: بچوں کوسلام کہنا ہے آپ طرف کی سنت اور تربیت کا ایک انداز ہے اور دعا ہے کہ جس میں عموماً ہم سستی کر جاتے ہیں حالاں بچوں کی انہیں خطوط پر کی ہوئی تربیت انہیں جوانی میں اعلیٰ کردار کا مالک بناتی ہے۔

[9] بَابِ فِي التَّسُلِيمِ عَلَى النِّسَاءِ عودتوں کوسلام کرنے کا بیان

عَنْ أَسْمَاءَ بِنُتِ يَزِيْدَ بُنِ السَّكَنِ إِحْدَى سيّدنا اساء بنت يزيد بنسكن وَاللَّهُا بنوعبدالا همل كى ايك

❶متفق عليه: البخاري، كتاب الإستيذان، باب التسليم على الصبيات (6247) ومسلم، كتاب السلام، باب استحباب السلام على الصبيات (5630)

عَنْ الْخَالِيْنِي الْمُعَالِينِ الْمُعَلِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعِلَّيِنِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِي الْمُعَالِينِ الْمُعِلَّيِنِ الْمُعَالِينِ الْمُعِلَّيِنِ الْمُعِلَّيِنِ الْمُعَالِينِ الْمُعِلَّيِنِ الْمُعِلَّيِنِ الْمُعِلْمِينِ الْمُعِلَّيِنِ الْمُعِلَّينِ الْمُعِلَّينِ الْمُعِلَّي

عورت سے منقول ہے کہ وہ چندعورتوں کے ساتھ تھی۔ نبی طشے ایک ان کے پاس سے گزرے اور انہیں سلام کہا۔

عَلَيُهِنَّ . 🕈

فوائد: معلوم ہوا ،عورتوں كوسلام كها جاسكتا ہے بشرطيكه فتنے كا خوف نه ہو۔

[10] بَابِ إِذَا قُرِءَ عَلَى الرَّجُلِ السَّلَامُ كَيُفَ يَرُدُّ جب آدى كو (كسى كا) سلام كهاجائة واس كاجواب كيد دے؟

2680 ـ أَخْبَرَنَا الْحَكُمُ بْنُ نَافِعِ عَنْ شُعَيْبِ بْنِ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ

بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ

أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِ عَلَيْ قَالَتُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ النَّبِي الْمَا وَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ السَّكَامَ)). قَالَتُ جِبُرِيلُ يَقُرَأُ عَلَيُلِثِ السَّكَامَ)). قَالَتُ وَهُوَ وَعَلَيْهِ السَّكَامُ وَرَحُمَةُ اللَّهِ قَالَتُ وَهُوَ رَحْمَةُ اللَّهِ قَالَتُ وَهُوَ

فوائد: جس طرح ہدیہ تخذ انسان کی کے ہاتھ کی اپنے بھائی کو بھیج سکتا ہے بعینہ سلام بھی ایک تخذ ہے جو کہ آدی کسی دوسرے کے ذریعے بھیج سکتا ہے اس کے جواب کا طریقہ کاریہ ہے کہ '' وعلیک وعلیہ السّلام'' اور تجھ پر اور (سلام بھیجنے والے) اس پر سلامتی ہو (دیکھیے منداحمہ) جبکہ فقط بھیجنے والے کو'' وعلیہ السلام'' اور اس پر سلامتی ہو نکے بھی جواب دیا جا سکتا ہے

[11] بَاب فِي رَدِّ السَّكَامِ سلام كاجواب دين كابيان

للم إلى بواب رين مَوْد اللهِ بن مِلالِ عَنْ عَدْد اللهِ بن مِلالٍ عَنْ عَدْد اللهِ عَنْ عَدْد اللهِ اللهِ عَنْ عَدْد اللهِ اللهِ عَنْ عَدْد اللهِ اللهِ عَنْ عَدْد اللهِ عَنْ عَدْد اللهِ اللهِ عَنْ عَدْد اللهِ عَنْ عَدْد اللهِ اللهِ عَنْ عَدْد اللهِ اللهِ عَنْ عَدْد اللهِ اللهِ عَنْ عَدْد اللهِ اللهِ اللهِ عَنْ عَدْد اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَنْ عَدْد اللهِ الل

عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الصَّامِتِ

 [◘] حسن: أخرجه ابوداؤد، كتاب الأدب، باب في السلام على النساء (5204) و ترمذي، كتاب الإستئذان، باب ماجاء في التسليم (2697)

[♦] متفق عليه: البخاري، كتاب الإستقذاك، باب تسليم الرجال على النساء والنساء على الرجال (6249) ومسلم، كتاب فضائل الصحابه، باب من فضل عائشة (6240)

420 كتاب الاستئذان 420 الكانتين الكانتين المالك

سيّدنا ابو ذر والنُّهُ كُنتِ مِن: رسول الله الله عَلَيْهِ مَمَاز يره رہے تھے جب آپ نماز سے فارغ ہوئے تو میں آپ کے باس گیا۔ میں بہلافخص تھا جس نے آپ کوسلام کا تخفه پیش کیا۔ آپ نے فرمایا: "علیک السلام ورحمة الله کس قبیلے سے ہو؟ میں نے کہا: ''غفار سے۔'' آب نے اینا باتھ بڑھایا تو میں نے این دل میں کہا:''آپ نے ناپند کیا کہ میں قبیلہ غفار سے ہوں۔''

عَنُ أَبِي ذَرِّ قَالَ صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَأْتَيْتُهُ حِينَ قَضَى صَلاتَهُ فَكُنْتُ أَوَّلَ مَنُ حَيًّا بِتَحِيَّةِ الْإِسْلامِ قَالَ ((عَلَيْكَ السَّكامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ مِمَّنُ أَنْتَ)). قَالَ قُلُتُ مِنُ غِفَارِ قَالَ فَأَهُوٰى بِيَدِهٖ قُلُتُ فِي نَفُسِي كُرِهَ أَنِّي الْتَمَيُّثُ إِلَى غِفَار . ٥

فوائد: (۱) ابو ذر را الله يقديم الاسلام تح يه مكه مين يانجوين نمبر يراسلام لائ يه عالبًا اس وقت کا واقعہ ہے (۲) سلام کے جواب میں اس سے بہتر کلمات ادا کرنے جاجیں قرآن میں ہے ﴿اذا حُيّيتّتُ مُر بتَحِيّهِ فَحَيَّوُا بِأَحْسَنَ مِنْهَاأُ ورُدُّوها ﴾ (الناء:86) جبتهين كوكي تخدد يا جائة واس سے بہتر لوٹاؤیا ویبا ہی لوٹا دو نیز السلام علیم ورحمۃ الله کہنے والے کے جواب میں علیم السلام ورحمته الله کہنا ضروری ہے۔ (٣) نئے ساتھی سے پہلے تعارف کرنامسنون ہے۔

[12] بَابِ فِي فَضُلِ التَّسُلِيمِ وَرَدِّهِ سلام كاجواب دينے كى فضيلت كابيان

2682 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيْرِ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ عَوْفٍ عَنْ أَبِي رَجَاءٍ

سيّدنا عمران بن حصين وظائفه كت بن ايك آدمي إِلَى النَّبِي عِنْ فَقَالَ السَّلامُ عَلَيْكُمُ بِي شَيْرَةِ كَ ياس آيا اس ن كها: السلام عليم آب ن اسے جواب دیا اور فرمایا: اس کے لئے دس نیکیاں ہیں۔ پھرایک آ دمی آیا اس نے کہا: السلام علیم ورحمة الله آپ نے اسے جواب دیا اور فرمایا: "اس کے لئے ہیں نیکیاں بیں۔ ' پھرایک آ دمی آیا اس نے کہا: السلام علیم ورحمة الله و بركانة آب نے اسے جواب دیا اور فرمایا: "اسے تمیں

عَنُ عِمْرَانَ بُنِ حُصَيْنِ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ فَرَدَّ عَلَيْهِ وَقَالَ عَشُرٌ ثُمَّ جَاءَ رَجُلُ فَسَلَّمَ فَقَالَ السَّلامُ عَلَيْكُمُ وَرَحُمَةً اللُّهِ فَرَدَّ عَلَيْهِ وَقَالَ ((عِشُرُونَ)) ثُمَّ جَاءَ رَجُلٌ فَسَلَّمَ فَقَالَ السَّلامُ عَلَيْكُمُ وَرَحُمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ فَرَدَّ عَلَيْهِ وَقَالَ:

❶ صحيح : أخرجه مسلم، كتاب فضائل الصحابه،باب من فضائل ابي ذر رُقُ الله (6309)والبيهـ قي في الحج،باب مقاية الحاج والشرب منها من ماء زمزم 147/5

www.sirat-e-mustaqeem.com

421 ביוף וצ

((ثَلا ثُونَ)). • نيکياں مليں گ-'

فواند: معلوم ہواسلام کے مندرجہ ذیل الفاظ ہیں السّلام علیکم ورحمتہ اللّٰہ برکانہ ابن جریر میں ای طرح کی حدیث ہے اس کے آخر میں ہے السلام علیکم ورحمتہ اللّٰہ و برکانہ کہنے والے شخص نے کہا کہ حضور سلنے قیانی آپ سلنے آپی نے نہائم نے آپ سلنے آپی نے نہائم نے ہمارے لیے بچھ چھوڑا ہی نہیں ابن کثیر رائیٹیہ فرماتے ہیں اس سے معلوم ہوا کہ سلام کے کلمات استے ہی ہیں اگرزیادہ ہوتے تو آپ آ خری صحالی کے لیے لازما ہولتے (دیکھئے تفییر ابن کثیر ،''اذا جیتم بخیة ''کی تفییر'') اگرزیادہ ہوتے تو آپ آ خری صحالی کے لیے لازما ہولتے (دیکھئے تفییر ابن کثیر ،''اذا جیتم بخیة ''کی تفییر'') ہوئے اگر کی سلام کہنے کا بیان بیشا برنے والے آ دمی کوسلام کہنے کا بیان

2683 - أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ قَتَادَةَ عَنِ الْحَسَنِ عَنِ اللهُ ال

الْحُضَيْنِ

عَنِ الْمُهَاجِرِ بُن قُنُفُذٍ أَنَّهُ سَلَّمَ عَلَى

النَّبِيِّ عَلَيْهِ وَهُوَ يَبُولُ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ

السَّلامَ حَتَّى تَوَضَّأَ فَلَمَّا تَوَضَّأَ رَدَّهُ

سیّدنا مہاجر بن قنفذ وظائفتہ کہتے ہیں کہ انہوں نے نبی طنع میّن کو انہوں نے نبی طنع میّن کو سلام کیا اور آپ بیشاب کررہے تھے آپ نے سلام کا جواب نہ دیا۔ حتیٰ کہ وضو کیا، اور جب وضو کرلیا

عَلَيْه 😉

تب اس كا جواب ديا ـ

فوائد: (۱) پیثاب کرنے والے کوسلام نہیں کہنا چاہے ابن ماجہ میں حسن سند ہے مروی ہے کہ آپ سے ایک ایک ایسے تخص کوفر مایا" اذا رایْت نبی علی مثل هذه الحالة فلا تسلم عل فانك اذا فعلت ذلك لم ارد علیك . " (سلسله صحیحة 1/170) جب تو مجھ الی حالت میں و کیھے تو مجھ سلام نہ کہ اگر تونے ایبا کیا تو میں تھے جواب نہیں دوگا (۲) بیت الخلاء میں ذکر جائز نہیں البت عدم طہارت پر جائز ہے جیسا کہ آپ سے آئے آئے کی عادت تھی "کان یذکر الله علی کل احیانه . " (او کما قال) کہ آپ سے آئے الم ہروقت ذکر الله میں مصروف رہتے تو یہ طہارت اور عدم طہارت دونوں حالتوں کوشامل ہے جیسا کہ آپ سے آئے آئے نے سمجھا کہ اب سلام کے جواب کوموثر کر ہے حالت طہر میں ہی جواب دے دول گا۔

[•] صحيح: أخرجه ابوداؤد، كتاب الأدب، كيف السلام (5195) والترمذي، كتاب الاستيذان، باب ماذكر في فضل السلام (2689) احمد 439/44

[●] صحيح: أخرجه ابوداؤد اكتاب الطهارة،باب أيرد السلام،رد السلام وهو يبول(17)والنسائي،كتاب الطهارة،باب رد السلام بعد الوضوء(38)وابل ماجه،كتاب الطهارة وستها،باب الرجل يسلم عليه وهو يبول(350)

حَكْلُ الْكَالِيْكِيُّ الْكَالِيْكِيُّ الْكَالِيْكِيُّ الْكَالِيْكِيُّ الْكَالِيْكِيُّ الْكَالِيْكِيُّ الْكَالِيكِيُّ الْكَالِيكِيُّ الْكَالِيكِيُّ الْكَالِيكِيُّ الْكَالِيكِيُّ الْكَالِيكِينِيُّ الْكَالِيكِيُّ الْكَالِيكِيُّ الْكَالِيكِيُّ الْكَالِيكِينِيُّ الْكَالِيكِيُّ الْكَالِيكِيُّ الْكَالِيكِيُّ الْكَالِيكِيِّ الْكِيلِينِينِي الْمُسْتِئَذَانَ لَيَالِيكِينِي الْمُسْتِئَذَانَ الْمُسْتِئَذَانَ الْمُسْتِئَذَانَ الْمُسْتِئِذَانَ الْمُسْتِئِذَانِ الْمُسْتِئِذِي الْمُسْتِئِذِي الْمُسْتِئِذِي الْمُسْتِئِذِي الْمُسْتِئِذَانِ الْمُسْتِئِذِي الْمُسْتِئِينِي الْمُسْتِئِذِي الْمُسْتِئِذِي الْمُسْتِئِذِي الْمُسْتِئِينَ الْمُسْتِئِذِي الْمُسْتِئِذِي الْمُسْتِئِيلِيِّ الْمُسْتِئِيلِينِي الْمُسْتِئِدِي الْمُسْتِئِيلِي الْمُسْتِيلِي ِي الْمُسْتِيلِي الْمُع

[14] بَابِ فِي النَّهُي عَنِ الدُّخُولِ عَلَى النِّسَاءِ عورتول كي ياس جانے كى ممانعت كابيان

2684 ـ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ بِسْطَامَ حَدَّثَنَا لَيْثُ بْنُ سَعْدِ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِيْ حَبِيْبٍ عَنْ أَبِى الْخَبْرِ

سیّدنا عقبہ بن عامر رہا تھ کہتے ہیں رسول الله طفی آئے نے فرمایا: ''عورتوں کے پاس مت جاؤ۔'' کہا گیا: یا رسول الله 'حمو' کی اجازت دی جائے ۔ فرمایا: ''وہ تو موت ہے۔'' کی کہتے ہیں: 'حموٰ خاوند کے قریبی رشتہ دارکو کہتے ہیں۔

فوائد: (۱) اگر صرف عورتیں ہی گھر میں ہوں تو ایس حالت میں گھر داخل نہیں ہونا چاہیے خصوصاً اکیلی عورت کے پاس جانا تو انتہائی خطرناک ہے آپ طفے آئے نے فرمایا "لا یہ خلو نَ رجل بامر اہ الا ٹالٹھ ما الشیطان . " کہ جب بھی کوئی آ دمی کسی عورت سے علیحد گی اختیار کرتا ہے تو ان میں تیسرا شیطان ہوتا ہے۔ ایسی حالت میں برائی بچنا محال ہے۔ (۲) "الہ حمو" پیلفظ شوہر کے باپ دادااور اولاد کو چھوڑ کر اس کے بھی قریبی مردوں پر بولا جاتا ہے (مرقاق) تو جس طرح موت سے فرارمکن نہیں اس طرح ان کے ساتھ علیحد گی سے بچنا بھی بہت مشکل ہے لہذا جس طرح موت سے زندگی کی حفاظت حتی الوسیع ہے اس طرح ان کی علیحد گی سے بچنا بھی فرض ہے (واللہ المستعان)

[15].... بَابِ فِي نَظُرَةِ الْفَجُأَةِ

اچا تک نظر پڑنے کا بیان

2685 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بُنُ يُوسُفَ وَأَبُو نُعَيْمٍ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ يُونُسَ عَنْ عَمْرِو بْنِ سَعِيدِ......

 [♣] مشفق عليه : البخارى، كتاب النكاح، باب لا يخلون رجل بامرأة إلا ذى محرم والد خول على المغيبة (5232) و
 مسلم ، كتاب السلام، باب تحريم الخلوة بالأجنبية (5638)

سیّدنا ابوذرعه بن عمرو بن جریر خِلاَعُدُ این دادا سے بیان کرتے ہیں انہوں نے نبی مِشْنَ این سے اچا کک نظر کے متعلق بوچھا تو آپ نے فرمایا: ''اپی نظر پھیرلو۔''

عَنُ أَبِى زُرُعَةَ بُنِ عَمُرِو بُنِ جَرِيرٍ عَنُ أَبِي ذَرُعَةَ بُنِ عَمُرِو بُنِ جَرِيرٍ عَنُ أَبِيهِ ،عَنُ جَرِيرٍ قَالَ سَأَلُتُ النَّبِيَ عَنُ عَنُ نَظُرَةِ اللَّهَ خُأَةِ فَقَالَ: ((اصُرِفُ مَصَرَكَ)). • • نَصَرَكَ)).

فوائد: (۱) "نظر الفجاءة" كامطلب بكراجنية كے چبرے پر بلامقصدنظر پر جائة و ايے تو ايے ميں بندے پر كوئى گناه نہيں البته اے نظر پھير ليني چاہيے (۲) مردوں كوغض نظر يعنى نظريں جھكا كر ركھنى چاہيں (۳) عورتوں كو چبره و هانپ كر نكانا چاہيے خصوصا اليى جگہوں ميں جہاں انسانوں كى آمدرونت زيادہ ہو۔ على النيساءِ [16] بَابِ فِي ذُيُولِ النيساءِ

عورت کی جا در کا بیان

2686 ـ أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ هُوَ ابْنُ إِسْحٰقَ عَنْ نَافِعِ عَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ أَبِي

عَنُ أُمِّ سَلَمَةَ زَوُجِ النَّبِيِ عَنُ قَالَتُ سَخِلَ النَّبِي عَنَّ قَالَتُ سَخِلَ النَّبِي عَنْ ذَيُلِ الْمَرُأَةِ فَقَالَ ((شِبُرًا) فَقُلُتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِذَنُ تَبُدُو أَقُدَامُهُنَّ قَالَ: ((فَلِراعًا لَا يَزِدُنَ تَبُدُو أَقُدَامُهُنَّ قَالَ: ((فَلِراعًا لَا يَزِدُنَ عَلَيْهِ)). قَالَ عَبُد اللهِ النَّاسُ يَقُولُونَ عَلَيْهِ)). قَالَ عَبُد اللهِ النَّاسُ يَقُولُونَ مَا يُنَاسُ يَقُولُونَ

عَنُ نَافِعٍ عَنُ سُلَيْمَانَ بُنِ يَسَادٍ. •

فَ وَالْمَدَ: بیعدیث اگر چشعیف ہے بہرحال اس بات کا خیال رکھنا ضروری ہے کہ احکام شریعت کو بجا لاتے ہوئے غلو سے بچنا بھی ضروری ہے تا کہ اسراف کا شکار ہو کر کہیں گناہ ہی لازم نہ ہوجائے۔

❶ صحيح : أخرجه مسلم، كتاب الآداب،باب نظر الفجأة (5609) وابوداؤد، كتباب المنكاح،باب ما يومر به من غض البصر (2148)

[€]ضعيف : أخرجه ابوداؤد، كتاب اللباس، باب قدر ذيل (4117) والترمذي، كتباب اللباس، باب ماجاء في خير ذيول ذبول (1731) والنسائي، كتاب الزينة، باب ذبول النساء (5353)

ستنذال العرب الاستنذان على المستنذان

[17] بَابِ فِي كَرَاهِيَةِ إِظُهَارِ الزِّينَةِ زینت ظاہر کرنے کی ممانعت کا بیان

2687 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورِ حَدَّثِنِي رِبْعِيٍّ بْنُ حِرَاشِ عَنْ امْ أَتُه

> عَنُ أُخُت لِحُذَيْفَةَ قَالَتُ خَطَبَنَا رَسُولُ اللَّهِ عَنَّى فَقَالَ: ((يَا مَعُشَرَ النِّسَاءِ أَمَا لَكُنَّ فِي الْفِضَّةِ مَا تَحَلَّيُنَ بِهِ أَمَا إِنَّهُ لَيْسَتُ مِنْكُنَّ امْرَأَةٌ تَحَلَّى الذَّهَبَ فَتُظُهرَهُ إِلَّا عُذِّبَتُ بِهِ)). •

سيّدنا حذيفه والنُّهُ كي بهن كهتي بين ايك وفعه رسول الله طفي من خطبه دبا تو فرماما: "اے عورتوں کے گروہ! کیاتمہارے لئے جاندی کا زیور کافی نہیں؟ خبردار! جوسونے کا زبور پہن کر ظاہر کرے گی اسے عذاب ہوگا۔''

[18].... بَابِ فِي النَّهُي عَنِ الطِّيبِ إِذَا خَرَجَتُ باہر نکلتے وقت خوشبولگانے کی ممانعت کا بیان

2688- أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَاصِم عَنْ ثَابِتِ بْنِ عُمَارَةَ.......

عَنُ غُنيُم بُن قَيْس عَنُ أَبِي مُوسلى أَيُّمَا عَنْ أَبِي مُوسلى أَيُّمَا عَنْ عَنِي الدِمويٰ عَنْقُل كرتے بين: 'جوعورت خوشبو المُولَّةِ السُنَعُطُوَتُ ثُمَّ خَوَجَتُ لِيُوْجَدَ لَكُ كُر بابر فَكِلَ اوراس كَى خوشبو ياكَي جائے وہ بدكار بـ رِيحُهَا فَهِيَ زَانِيَةٌ وَكُلُّ عَيُن زَان وَقَالَ أَبُو عَاصِم يَرْفَعُهُ بَعْضُ أَصْحَابِنَا . ٥

اور ہرآ نکھ زانی ہے۔' ابو عاصم کہتے ہیں:''ہمارے بعض ساتھی اسے مرفوع بیان کرتے ہیں۔''

فوائد: (۱) عورت كاعطرلكا كربام نكانا كبيره كناه ب(٢) زانيية مراديه ايى عورت ب جو سنج رواورلوگوں کو مائل کرنے والی ہے۔واللہ اعلم

[19] بَابِ فِي الْوَاصِلَةِ وَالْمُسْتَوُ صِلَةِ نقتی بال لگانے اورلگوانے والی کا بیان

2689- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ...

❶ ضعيف: أخرجه ابوداؤد، كتاب الخاتم،باب ماجاء في الذهب للنساء(4237) والنسائي، كتاب الزينة،باب كراهية للنسائي في إظهار الزينة الحلي والذهب(5152)

🛭 صحيح : أخرجه الترمـذي، كتـاب الأدب،باب ماجاء في كراهية حروج المرأة متعطرة(2786)والـنسائي، كتاب الزينة، باب مايكره للنساء في الطيب (5141) 425 كتاب الاستئذان كالم الكانتين الكانتين

سيّدنا علقمه رفائعة كبت بين:عبدالله نے كها: "الله كى ان ير لعنت ہو جو نیل بھرتی اور بھرواتی ہں بھنووں اور چہرے ے بال اکھاڑتی ہیں اور حسن کے لئے دانت باریک کرتی ہں۔اللہ کی بیدا کی ہوئی چز کو بدلتی ہیں یہ بات بنی اسد کی ایک عورت کو پنجی جے ام یعقوب کتے تھے، اس نے آ کر کہا:''مجھے خبر ملی ہے کہ آپ ایسے لعنت کرتے ہیں۔'' انہوں نے کہا: ''جس کو رسول اللہ طشاعیے نے لعنت کی اور اس کا ذکر قرآن میں ہے۔ اس پر میں کیوں ندلعنت كرون؟ اس نے كہا: ''میں نے تو مكمل قرآن پڑھ لیا ہے میں نے آپ کی بات اس میں نہیں یائی' انہوں نے کہا اگر تم بڑھتی تو ضرور یاتی کیا تم نے یہ آیت نہیں بڑھی: ''رسول تنهیں جو دس وہ لے لؤاور جس سے منع کریں اس ے رک جاؤ۔' (سورۃ الحشر: ۷)اس نے کہا:'' کیول نہیں۔' انہوں نے کہا: اس سے آپ نے منع کیا ہے۔ اس نے کہا: میں تمہاری بیوی کو دیکھتی ہوں وہ ایسا کرتی ے۔ انہوں نے کہا: جاؤ دیکھ لو۔اس نے جا کر دیکھا تو اے اپنی غرض کی کوئی چیز نظر نہ آئی۔انہوں نے کہا:''اگر وہ الیمی ہوتیں تو میں ان کے ساتھ نہ رہتا۔''

عَنُ عَلُقَمَةَ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ لَعَنَ اللَّهُ البو الشهات والهمستوشمات وَالْـمُتَنَيِّ صَاتِ وَالْمُتَفَلِّجَاتِ لِلْحُسُن الْهُ غَيْرَ ابِ خَلْقَ اللَّهِ فَبَلَعَ ذٰلِكَ امُواَّةً مِنْ بَنِي أَسَدِ يُقَالُ لَهَا أُمُّ يَعْقُوبَ فَجَائَتُ فَقَالَتُ بَلَغَنِيُ أَنَّكَ لَعَنْتَ كَيْتَ وَكَيْتَ فَقَالَ وَمَا لِي لَا أَلُعَنُ مَنُ لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَهُوَ فِي كِتَابِ اللَّهِ فَ قَالَتُ لَقَدُ قَرَأْتُ مَا بَيْنَ اللَّوْحَيُن فَمَا وَ حَدُثُ فِيهِ مَا تَقُولُ قَالَ لَئِنُ كُنُتِ قَرَ أُتِيهِ لَقَدُ وَجَدُتِيهِ أَمَا قَرَأْتِ: ﴿ مَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمُ عَنُهُ فَانْتَهُوا وَاتَّقُوا اللُّه إِنَّ اللُّهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴾[الحشر: ٤] فَقَالَتُ بَلْي قَالَ فَإِنَّهُ قَدُ نَهِي عَنْهُ . فَقَالَتُ فَإِنِّي أَرْي أَهْلَكَ يَفْعَلُونَـهُ. قَالَ فَادُخُلِيُ فَانُظُرِي فَدَخَلَتُ فَنَظَرَتُ فَلَمُ تَرَ مِنُ حَاجَتِهَا شَيْمًا فَقَالَ لَوْ كَانَتُ كَذَلِكِ مَا جَامَعُتُهَا. ٥

بالحديث كاالتزام كيا كرتے تھے اورعمل بالحديث كوعمل بالقران سجھتے تھے (٣) حديث پرعمل حقيقت ميں قران پڑھل کرنا جب تک حدیث کوشلیم نہیں کیا جائے گا قران پڑھل محض خواب اور دیوانے کی آرزو

[◘] متـفـق عـليه: كتاب اللباس،باب متفلحات للحسن(5931)ومـــلـم،كتاب اللباس والزينة،باب تحريم فعل الواصلة والمستوصلة والواشمة والمستوشة والنامصة والمتنامصة(5538)

ے۔فافهم يهديك الله

[20] بَابِ فِي النَّهُي عَنُ مُكَامَعَةِ الرَّجُلِ الرَّجُلَ وَالْمَرُأَةِ الْمَرُأَةَ الْمَرُأَةَ مردكوم داورعورت كورت كيساته ليُن كي ممانعت كابيان

2690 - أَخْبَرَنَا عُشْمَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ حُبَابٍ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ الْحَضْرَمِيُّ

أَخْبَرَنِي عَيَّاشُ بْنُ عَبَّاسٍ الْحِمْيَرِيُّ عَنْ أَبِي الْحُصَيْنِ الْحَجْرِيِّ عَنْ أَبِيْ عَامِرٍ قَالَ

سَمِعُتُ أَبَا رَيُحَانَةً صَاحِبَ رَسُولِ
اللّهِ عَلَىٰ يَقُولُ كَانَ رَسُولُ اللّهِ عَلَىٰ يَنهُى عَنُ عَشُو خِصَالٍ مُكَامَعَةِ الرَّجُلِ
الرَّجُلَ فِى شِعَارٍ وَاحِدٍ لَيْسَ بَيْنَهُمَا
الرَّجُلَ فِى شِعَارٍ وَاحِدٍ لَيْسَ بَيْنَهُمَا
شَىءٌ وَمُكَامَعَةِ الْمَرُأَةِ الْمَرُأَةَ فِى شِعَادٍ
وَاحِدٍ لَيُسسَ بَيُنهُ مَا شَىءٌ وَالنَّتُفِ
وَاحِدٍ لَيُسسَ بَيُنهُ مَا الْمَرُأَةِ فَرُكُوبِ النَّمُورِ وَاتِخَاذِ
وَاحِدٍ لَيُسسَ بَيُنهُ مَل اللهِ اللهِ وَالنَّهُ وَرُكُوبِ النَّمُورِ وَاتِخَاذِ
اللّهِ يَهَا هُنَا عَلَى الْعَاتِقَيْنِ وَفِى أَسُفَلِ
الظّيابِ قَالَ عَبُد اللّهِ أَبُو عَامِرٍ شَيْخٌ لَهُمُ
الْشَيَابِ قَالَ عَبُد اللّهِ أَبُو عَامِرٍ شَيْخٌ لَهُمُ

فواند: (۱) ''شعار' اس کپڑے کو کہا جاتا ہے جوجم ہے میں ہولینی اسے چھوئے کیونکہ شعار کا شعر سے تعلق ہے جس کے معنی بال کے ہوتے ہیں تو جسمانی بالوں کو چھونے والے کپڑے کو شعار کہا جاتا ہے اور ''مکامعۃ'' کہتے ہیں باہم لیٹنے کو (۲) دومر دوں یا عورتوں کا اس طرح آپیں میں لیٹنا کہ دونوں کے چمڑے ایک دوسر ہے ہے میں ہور ہے ہوں اس میں چونکہ فتنے کا خدشہ اس لیے بیممنوع ہے (۳) چیتے کی کھال پر سواری چونکہ تکبر میں مبتلا کرنے کا باعث اس لیے یہ کھی ممنوع ہے اس طرح ریشم کا استعال بھی مردوں پرحرام ہواری چونکہ تکبر میں مبتلا کرنے کا باعث اس لیے یہ بھی ممنوع ہے اس طرح ریشم کا استعال بھی مردوں پرحرام ہواں دوانگیوں یا تین جتنا چوڑاریشم کی خوبصورتی کے لیے کپڑے پرلگایا جا سکتا ہے۔ (دیکھیے مسلم) ہواں دوانگیوں یا تین جتنا چوڑاریشم کی خوبصورتی کے لیے کپڑے پرلگایا جا سکتا ہے۔ (دیکھیے مسلم)

❶ صحيح : ابوداؤد، كتاب اللباس، باب في كراهه (4049) والنسائي، كتاب الزينة، باب تحريم الوشر (5126) واحمد 134/4

عَنْ عِكْرِمَةَ

عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَ الْمُتَوَجَّلاتِ الْمُحَنَّ فِيْنَ الرِّجَالِ وَالْمُتَوَجَّلاتِ مِنَ الزِّجَالِ وَالْمُتَوَجَّلاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَقَالَ أَخُرِجُ وهُمُ مِنُ بُيُوتِكُمُ قَالَ فَأَخُرَجَ النَّبِيُ فَيَ فَلانًا وَأَخُرَجَ النَّبِيُ فَيَ فَلانًا وَأَخُرَجَ النَّبِيُ فَيَ فَلانًا وَأَخُرَجَ النَّبِي فَيَ فَلانًا وَأَخُرَجَ النَّبِي فَيَ فَلانًا وَأَخُرَجَ النَّبِي فَيَ فَلانًا

سیّدنا ابن عباس بیان کرتے ہیں کہ نبی کریم مظیر آن نے اُن مردوں پر لعنت فرمائی جو خشین (پیجروں) کی مشابہت اختیار کرتے ہیں۔ اور اُن عورتوں پر جومردوں کی مشابہت اختیار کرتی ہیں، اور فرمایا: تم ان کواپنے گھروں سے نکالو۔ پھر کہا کہ نبی کریم مطیر آنے قلاں کو نکالا ، ای طرح عمر واللہ نبی کریم مطیر آنے قلاں کو نکالا ، ای طرح عمر واللہ نبی کریم مطیر آنا کا اُن کو نکالا ، ای طرح عمر واللہ نبی کریم مطلق آلیہ اُن کالا۔

فوائد: (۱)' مخنث' بیمرداورعورت کی درمیانی مخلوق کو کہتے ہیں ان کے اعضاء کی مشابہت کے اعتبار دیا ان پر مرد یا عورت والا تھم لگایا جاتا ہے (۲) مرد یا عورت کا جنس مخالف کی مشابہت کرنا کمیرہ گناہ ہے۔

[21] بَابِ فِي أَنَّ الْفَخِلَا عَوُرَةٌ مُخنثوں اور مردوں جیسی وضع بنانے والی پرلعنت ہے

2692 - أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ عَنْ زُرْعَةَ بْنِ

عَبُدِ السَّرُّحُسَنِ عَنُ أَبِيْهِ وَكَانَ مِنُ أَصُحَابِ الصُّفَّةِ قَالَ جَلَسَ عِنُدَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَفَحِذِی مُنْکَشِفَةٌ فَقَالَ حَمِّرُ عَلَيُكَ أَمَا عَلِمُتَ أَنَّ

الْفَخِذَ عَوْرَةً. ٥

سیدنا عبدالرحمٰن زیافین جو اصحاب صفه سے بیں کہتے ہیں ایک دفعہ ہمارے پاس رسول الله مطاع آیا بیٹھے تھے۔میرا زانو کھلا تھا۔آپ نے فرمایا: ''زانو ڈھانپ لوکیا تہمیں علم نہیں کہزانو پردہ ہے۔''

فواند: سرمگاہ کا حصہ ہاوراہے ڈھانپا جائے گا البتہ اے ڈھانپاضروری نہیں بلکہ متحب ہے جیسے کہ بخاری میں انس زلان شرمگاہ کا حصہ ہاروی ہے کہ آپ اپنے گھر میں صحابہ زشن شرم کی موجودگی میں نگا کر کے بیٹے رہے اور عثمان نوائشۂ کی آمدیراہے ڈھانپ لیا لہٰذا احادیث کے تتبع سے پتہ چلتا ہے کہ شرمگاہ دو

 [◘] صحيح البخارى، كتاب الحدود، باب نفى أهل المعاصى والمختثين (6834) والترمذي، كتاب الأدب، باب ماجاء فى المتشابهات بالرجال من النساء (2785)

 [◄] جيد: أخرجه ابو داؤد، كتاب الحمام، باب النهى عن التعرى (4014) والترمذي، كتاب الأدب، باب ماجاء أن الفخذ عورة (2795)

الكانيخ الكانيخ الكانيخ 428 (كتاب الاستنذان ١٩٥٠)

قتم کی ہے ایک کوڈ ھانینا فرض ہے جھے قبل ود ہر جب کہ دوسری متحب ہے جیسے رانیں (تنقیح الرواۃ 3/6) [22] بَابِ فِي النَّهِي عَنُ دُخُولِ الْمَرُأَةِ الْحَمَّامَ عورت ذات کا حمام میں داخل ہونا (جانا)ممنوع ہے۔

2693 ـ أَخْبَرَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ عَمْرِو بْن مُرَّةَ

عَنْ سَالِم بُن أَبِي الْجَعُدِ قَالَ دَخَلَ عمرو بن مهره سالم بن الي الجعدے بيان كرتے ہيں۔ كتب عَلَى عَائِشَةَ نِسُوَةٌ مِنْ أَهُل حِمُصَ يَسُتَفُت نَهَا فَقَالَتُ لَعَلَّكُنَّ مِنَ النَّسُوَةَ اللَّاتِبِيُ يَدُخُدُنَ الْحَمَّامَاتِ قُلُنَ نَعَمُ قَالَتُ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ عَلَى يَقُولُ مَا مِنُ امْرَأَةِ تَنضَعُ ثِيَابَهَا فِي غَيْرِ بَيُتِ زَوُجِهَا إِلَّا هَتَكَتْ مَا بَيْنَهَا وَبَيْنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَالً 0

ہیں کچھ خواتین حضرت عائشہ والنفہا کے پاس آئیں اور وہ آنے والی خواتین حمص کے علاقہ کی تھیں۔خواتین نے حضرت عائشه خالنونا سے مسئلہ دریافت کیا۔سیّدہ عائشہ خالفونا نے فرمایا: کہیں وہ خواتین حمامات میں تو واخل نہیں ہونے والیں _انہوں نے جواباً عرض کیا: ہاں _ تو انہوں نے فرمایا: اینے کپڑے اُتارے اپنے خاوند کے گھر کے علاوہ۔ تو الیمی

عورت اینے اور اللہ کے درمیان والا بردہ بھاڑ دیتی ہے۔

2694 قَالَ أَبُوْ مُحَمَّد أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ مَنْصُورِ عَنْ سَالِمِ

عَنُ أَسِي الْمَلِيُحِ عَنُ عَائِشَةَ هَذَا ابو ملیح نے بھی سیدہ عائشہ زال نے اس حدیث کا بیان الْحَدِيثَ. 🛭

> [23].... بَابِ لَا يُقِيمَنَّ أَحَدُكُمُ أَخَاهُ مِنْ مَجُلِسِهِ کوئی اینے بھائی کواس کی جگہ سے نہ اٹھائے

2695- أَخْبَرَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِع

عَن ابُن عُمَوَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عِنْ مُن سيّدنا ابن عمر وَن عُن كَبْت بين كدرسول الله طن الله عن فرمايا: '' کوئی آ دمی انبے بھائی کواس کی جگہ سے نہاٹھائے۔تا کہ

لَا يُبقِيمُ الرَّجُلُ يَعْنِي أُخَاهُ مِنُ مَجُلِسِهِ

[🗘] منقطع: جب كرهديث آكنده سندكي بناء يريح ب_أخرجه ابو داؤد، كتاب الحمام، باب في فاتحته (4010) والترمذي، كتاب الأدب،باب دخول الحمام(3750)

² اسنادہ صحیح: سابقہ *حدیث ہی مرر* آئی ہے۔

429 كتاب الاستئذان 429 سُنِينَ الدِّالِينِيَ

نُمَّ يَفْعُدُ فِيهِ وَلَكِنْ تَفَسَّحُوا ولا فود بينه جائے - بلكه مجلس كثاده كرو اور كلے موكر

وَيُّهُ سُّعُهُ ل 0

[24] بَابِ إِذَا قَامَ مِنُ مَجُلِسِهِ ثُمَّ رَجَعَ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ جب کوئی آ دمی این جگہ سے اٹھ جائے پھر واپس آئے تو وہی اس کامستحق ہے

2696 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا سُهَيْلٌ عَنْ أَبِيْهِ

عَنْ أَسِى هُوَيْ مَا لَ قَالَ وَسُولُ سَيّن الوهرية فِالنَّهُ كَبْتِ مِين كه رسول الله طَيْعَالِمُ نَ اللهِ عِلَيْ إِذَا قَامَ أَحَدُكُمُ أَو الرَّجُلُ مِنُ فرمايا: "جب كوئى آدى ايني جَّمه عد الله جائ چرواپس آئے تو وہی اس جگہ کامشحق ہے۔''

مَجُلِسِهِ ثُمَّ رَجَعَ إِلَيْهِ فَهُوَ أَحَقُّ بهِ. ٥

[25].... بَابِ فِي النَّهِي عَنِ الْجُلُوسِ فِي الطُّرُقَاتِ راستوں میں بیٹھنے کی ممانعت

2697 أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا أَبُوْ إِسْحَقَ

سيّدنا براء وخاليَّهُ كہتے ہيں كه رسول الله عظيّ الله عليه چند انصاریوں کے باس سے گزرے۔جو راستہ میں بیٹھے ہوئے تھے۔آپ نے فرمایا:''اگرتم بیکام کرنا (راہتے میں بيشنا) بى جاية موتو راسته بناؤ اورسلام كو عام كرواور مظلوم کی مدد کرو۔ 'شعبہ کہتے ہیں: ابوالحق نے براء زالتین سے بہ حدیث نہیں سی۔

عَنِ الْبَرَاءِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مَرَّ بِنَاسٍ جُهُلُوس مِنَ ٱلْأَنْصَارِ فَقَالَ إِنْ كُنْتُمُ لَا بُدَّ فَاعِلِيُنَ فَاهَدُوا السَّبيلَ وَأَفُشُوا السَّلامَ وَأَعِينُوا الْمَظُلُومَ قَالَ شُعُبَةً لَمُ يَسْمَعُ هَـٰذَا الْحَدِيثَ أَبُوُ إِسُحْقَ مِنَ

الُدَ اءِ . 😉

ف وائد: راستوں میں بیٹھنا مکروہ ہے البتہ اگر کہیں متبادل جگہ میسر نہ ہوتو ندکورۃ بالاحقوق کی ادا نیگی کی صورت میں بیٹھنے کی اجازت ہے۔

[€] متفق عليه: البخاري، كتاب الإستيذان،باب اذا قيل لكم تفسحوا.....(6270) ومسلم، كتاب السلام،باب تحريم إقامة الإنسان من موضعه المباح الذي سبق اليه(5648)

[◘]صحيح: أخرجه مسلم، كتاب السلام، باب اذا قام من محلسه ثم عاد فهوا حق به (5653) وابوداؤد، كتاب الأدب، باب اذا قام من مجلس ثم رجع(4853)

³⁷²⁶⁾ على الطريق (3726) حديث صحيح أخرجه الترمذي، كتاب الاستيذان، باب ماجاء في المجالس على الطريق (3726)

[26] بَابِ فِي وَضُع إِحُدَى الرِّجُلَيْنِ عَلَى الْأُخُرَى ایک پاؤں دوسرئے یاؤں بررکھنے کے متعلق

2698 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَحْمَدَ بْنِ أَبِى خَلَفٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ و بر و بر سند

سیّدنا عباد خالفید بن تمیم اینے چیا سے قل کرتے ہیں انہوں نے کہا: میں نے رسول الله طلط ایکا کو دیکھا آپ ایک یاؤں دوسرے یاؤں بررکھے ہوئے معجد میں پیٹھ کے بل

عَنْ عَبَّادِ بُن تَمِيم عَنْ عَمِّهِ قَالَ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ عَلَيْهُ مُسْتَلُقِيًّا فِي الْمَسْجِدِ وَاضِعًا إِحْدَى رَجُلَيْهِ عَلَى الْأُخُرَى . •

فوائد: (۱) مجدين آرام كرناليننا درست ج الرچة وى بالغ بى مو(٢) چت ليك كرايك یاؤں کو دوسرے پر رکھنا جائز ہے بشرطیکہ بے پردگی کا خطرہ نہ ہو۔

[27].... بَابِ لَا يَتَنَاجَى اثْنَان دُونَ صَاحِبهمَا دوآ دمی تیسرے کو چھوڑ کر سر گوشی نہ کریں

2699 ـ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِيْ وَائِلِ

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَى مُ سَيِّدنا عبدالله وَاللَّهُ عَبْدِ اللَّهِ عَالَ الله عَلَيْ اللَّهِ عَلَى الله عَلَيْ اللَّهِ عَلَيْهِ مَ عَبْدِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلْهُ عَلَيْهِ عَلْمَ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلْمَ عَلَيْهِ عَلْ إِذَا كُنتُمُ قَلَاثَةً قَلا يَتَناجَى اثْنَان دُونَ " "جبتم تين آدى بوتو دوآدى ايخ سأتفى كوچهور كر صَاحِبهِ مَا فَإِنَّ ذَٰلِكَ يُحُزِنُهُ. ٥ مركَّوْق نه كرير _ يُونكهات اس عَمْ يَنْجُ كُا-''

فوائد: اسلام نے اینے ساتھی کے احوال کا خیال رکھنے کا کس قدر تھم دیا ہے نہ کورة حدیث سے صاف واضح ہے کہ ایک جائز بات جائز طریقے سے کرنے کی بھی اجازت نہیں اگر وہ کسی دوسرے مسلمان بھائی کی پریشانی کا سبب بن رہی ہوتو البتہ اگر تین زیادہ افراد ہوں تو پھراییا کرنے میں کوئی حرج نہیں ۔

[28] بَابِ فِي كُفَّارَةِ الْمَجْلِس مَمِلُس كَا كَفَارِهِ

2700 حَدَّثَنَا يَعْلَى بْنُ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ يَعْنِي ابْنَ دِينَارِ عَنْ أَبِي هَاشِمٍ عَنْ رُفَيْع أَبِي

◘متفق عليه: البخاري،كتاب الصلاة،باب الإستلقاء في المسجد (475)ومسلم،كتاب اللباس والزينة،باب اباحة الاستلقاء و وضع إحدى الترجلين(5471)

▲متفق عليه: البخاري، كتاب الاستيذان،باب اذا كان اكثر من ثلاثة (6290) ومسلم، كتاب السلام،باب تحريم منا جاة الاثنين دون الثالث بغير رضاه (5660)

الْعَالِيَة...

عَنُ أَبِى بَرُزَةَ الْأَسُلَمِي قَالَ لَمَّا كَانَ بِأَخَرَةٍ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ عِلَىٰ إِذَا جَلَسَ فِأَرَادَ أَنْ يَقُومَ قَالَ فِي الْمَحْلِسِ فَأَرَادَ أَنْ يَقُومَ قَالَ شِبُحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمُدِكَ أَشُهَدُ شُبُحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمُدِكَ أَشُهَدُ أَنُ لَا إِلْهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُّوبُ أَنْ لَا إِلَيْهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ فَقَالُ اللهِ إِنَّكَ لَتَقُولُ اللهِ إِنَّاكَ لَلْهَ إِلَى اللهِ إِلَى اللهِ إِلَى اللهِ إِلَى اللهِ إِلَى اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ
سیّدنا ابوبرزه و الله الله که کهتے بین آخری عمر میں رسول الله طفی آبی جب کسی مجلس میں بیٹھتے اور اٹھنا چاہتے تو اس طرح کہتے: ''اے الله اپن تعریف کے ساتھ تو پاک ہے میں گواہی دیتا ہوں تیرے علاوہ کوئی معبود نہیں میں تجھ سے میں گواہی دیتا ہوں اور تیری طرف رجوع کرتا ہوں۔'' اوگوں نے کہا: یا رسول الله! آپ الیی بات کہتے ہیں جو پہلے نہیں کہا کرتے تھے۔آپ نے فرایا: ''یہ مجلس کی باتوں کا کفارہ ہے۔''

[29].... بَابِ إِذَا عَطَسَ الرَّجُلُ مَا يَقُولُ جبِ كُوكَى حَصِيْكِ تُو كَياكِمِ

2701 ـ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِى لَيْلَى عَنْ أَخِيْهِ عِيسَى عَنْ أَبِيْهِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِى لَيْلَى

سیّدنا ابوابوب انصاری رضائیهٔ کہتے ہیں نبی طِشْنَطَیْنَ نے فرمایا:

''جس کو چھینک آئے وہ ایسے کہے:''ہر حال میں تعریف
اللّہ ہی کے لئے ہے۔''اور سننے والا شخص ایسے کہے:''اللّٰہ تم

پر رحم کرے۔'' چھینکنے والا پھر اسے یوں کہے:''اللّٰہ تمہیں
ہدایت دے اور تمہارے معاطے کو درست کر دے۔''

عَنُ أَبِسَى أَيُّـوُبَ الْأَنْصَـادِيِّ عَنِ النَّبِيِ عَنَى أَيُّـوُبَ الْأَنْصَـادِيِّ عَنِ النَّبِيِ عَلَى النَّبِي عَلَى النَّبِي عَلَى النَّامِ وَيَقُولُ الَّذِى لِلَّهَ وَيَوُدُ الَّذِى يُشَـمِّتُـهُ يَرُحُمُكُمُ اللَّهُ وَيَرُدُ عَلَيْهِ يَهُدِيكُمُ اللَّهُ وَيُصُلِحُ بَالكَمُ . •

• صحيح: أخرجه ابو داؤد، كتاب الأدب، باب في كفارة المحلس (4859)

[€] ضعیف: کیکن اس کے شواہر موجود ہونے کی بناء پریتو کی ہوجاتی ہے۔ ویکھتے بخساری کتباب الأدب،باب اذا عطس کیف یشمت (6224) وابو داؤد، کتاب الأدب،باب ماجاء فی تشمیت العاطس (5433)

الكالكاليين الكاليين 432 من كتاب الاستنذان ك

ف اند: (۱) چھینک الله کی نعت ہے لہٰذا جب بھی کسی کو چھینک آئے تو اسے الحمد لله کہنا جا ہے اور بننے والا یسر حمك الله كے ساتھ جواب دے ليكن اگر كوئى غيرمسلم اسلام كى تعليم سے متاثر ہوكر چھينك كرالحمد لله كهدويتا تواس كوجواب ميس (يهدديكم الله) اللهمهيس مدايت دے كہا جائے گا جيسا كه آب الشيخية يبود كے ساتھ يبي طريقة عمل اختيار كرتے تھے (٢)"الحمد لله على كل حال" بيالفاظ ضعیف ہیں البتہ فقط الحمد لللہ یا الحمد للدرب العالمین (ابو دا وُدسندہ صحیح) کہنا مسنون ہے ۔

[30].... بَابِ إِذَا لَمُ يَحُمَدِ اللَّهَ لَا يُشَمِّتُهُ جب چھنکنے والا الحمد اللہ نہ کھے تو اسے جواب نہ دو

2702 ـ أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللّهِ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ سُلَيْمَانَ

عَنُ أَنَهِ فِي اللَّهِ عَلَمَ مَ جُلان عِنُدَ سيِّدنا انس رَالتَّهُ كُتِي مِين فِي مِشْتَهَ لَيْمَ كِي إِس ووآ وميول كو چھینک آئی آب نے ایک کا جواب دیا دوسرے کا جواب النَّبِي عِنْكُمْ فَشَـمَّتَ أَوْ سَمَّتَ أَحَدَهُمَا ندویا۔ کہا گیا: یا رسول اللہ! آپ نے اس کا جواب دیا ہے اور دوسرے كانہيں ديا تو آپ نے فرمايا: "ايك نے الحمد للّٰد کہا ہے اور دوسرے نے نہیں کہا۔''

وَلَمْ يُشَمِّتُ ٱلْآخَرَ فَقِيلَ لَهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ شَمَّتَ هَذَا وَلَمُ تُشَمِّتُ ٱلآخَوَ فَقَالَ إِنَّ هَذَا حَمِدَ اللُّهَ وَإِنَّ هَذَا لَمُ يَحُمَدِ اللُّهَ قَالَ عَبُد اللُّه سُلَبُمَانُ هُوَ التيميّ. 9

ر 31 س. بَابِ كُمْ يُشَمَّتُ الْعَاطِسُ چھنکنے والے کو کتنی دفعہ جواب دیا جائے

2703- أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ هُوَ ابْنُ عَمَّارِ قَالَ

أَبِي قَالَ عَطَسَ رَجُلٌ عِنْدَ النَّبِي ﷺ فَقَالَ يَرُحَمُكَ اللَّهُ ثُمَّ عَطَسَ أُخُرَى فَقَالَ الرَّجُلُ مَزُكُومٌ . ٥

حَدَّ ثَنِي إِيَاسُ بُنُ سَلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنِي سَيْدنا اياس بن سلمة كمت بين مجه سے ميرے والد نے بیان کیا کہ نبی مشافلیا کے باس کس آ دمی نے چھینکا۔ آپ نے فرمایا: ''اللہ تجھ پر رحم کرے۔'' پھروہ دوسری دفعہ چھینکا توآب نے فرمایا:"اس کوزکام ہے۔"

[₫] متفق عليه: البخاري، كتاب الأدب، باب الحمد للعاطس (6221) ومسلم، كتاب الزهد، باب تشميت العاطس (7411) • متفق عليه: البخاري، كتاب الأدبءباب اذا عطس كم يشمت (6224) مسلم، كتاب الزهد، باب تشميت العاطس (7414) .

الكان الكان الكان الكان المستندان المستدان المستندان الم

ف**واند**:..... معلوم ہوا ایک د فعہ چھینکنا رپرحت الہی جب کہ دو بارہ چھینکنا بیز کام کی علامت ہے لہذا دوباره پاسه باره چینکنے والے کو جواب دینا ضروری نہیں۔

[32].... بَابِ فِي النَّهُي عَنِ التَّصَاوِيرِ

تصويرر كھنے كى ممانعت

2704 أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرِ عَنْ شُعْبَةً عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ

قَالَتْ عَائِشَةُ كَانَ لَنَا قُونٌ فِيهِ سيده عائشه وظلها كهتى بين هارا أيك تصورون والاكبرا

تَصَاوِيرُ فَجَعَلْتُهُ بَيْنَ يَدَى النَّبِيِّ عَلَيُّكُ

قَالَتُ فَجَعَلْتُهُ وَسَائِدَ. ٥

جُنُبٌ . 0

تھا۔میں نے اسے نبی منتی آئے کے آگے کر دیا اور آپ نماز وَهُوَ يُصَلِّي فَنَهَانِي أَوُ قَالَتُ فَكُرِهَهُ ﴿ يُرْهُ رَبِ شَهِ -آپ نے مجھ منع كيا - يا انہوں نے كہا: آپ نے اسے براسمجھا۔ میں نے اس کے تکیے بنادیئے۔

فواند: (۱) نمازی کے سامنے تصاویر اور نقش ونگار والا کیٹر اہونا خشوع کے زوال کا باعث ہے

اس لیے اس سے احتز از برتنا جا ہے اس طرح آجکل استعال ہونے والے جائے نماز جو کہ دیدہ زیب نقوش ہے مزین ہوتے ہیں ان کی بجائے سادہ جائے نماز استعال کرنے حاجئیں (۲) ای طرح تصاور والا کپڑا

اس کا گدایا نمدہ بنالیا جائے تو اس اک استعال درست ہے۔

[33].... بَاب لَا تَدُخُلُ الْمَلائِكَةُ بَيْتًا فِيهِ تَصَاوِيرُ تصوریوں والے گھر میں فرشتے نہیں جاتے

2705 - أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَان حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ حَدَّثَنَا عُمَارَةُ بْنُ الْقَعْقَاعِ حَدَّثَنَا

الْحَارِثُ الْعُكْلِيُّ عَنْ أَبِيْ زُرْعَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ جَرِيْرِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ نُجَيِّ

عَنْ عَلِي أَنَّ النَّبِي عِنْ قَالَ إِنَّ الْمَلَكَ تُسِيِّدناعلى وَالنَّهُ كُتِ بِي كَه نِي عَلَيْ آنِ فرايا: "فرشت ایسے گھر میں نہیں جاتے جس میں کتا اور تصوریں لَا يَدُخُلُ بَيْتًا فِيهِ كَلُبٌّ وَلَا صُورَةٌ وَلَا

ہوں۔اور نہ بیہ جنبی کے گھر میں جاتے ہیں۔''

₫متـفـق عـليـه: البخاري،كتاب المظالم،باب هل تكسر الدناك التي فيها حمر أو تخرق الزقاق(2476)ومسلم،كتاب اللباس والزينة باب تحريم تصوير صورة الحيوان(5478)

است اده حید: عبدالله بن فی کاعل فات سماع ثابت مرد می است است حدان کی الثقات 30/5، أحر حده ابو داؤد، كتاب البطه ارة، باب في الجنب يومر بالغسل(2207)والنسائي، كتاب الطهارة، باب في الجنب اذالم يتوضا(2301)وابن ماجه، كتاب اللباس، باب الصور في البيت (3650)

الاستئذان (كتاب الاستئذان) (434 كتاب الاستئذان) (كتاب الاستئدان)

فوائد : معلوم ہوا جس گھر میں تصویر یا کتا ہو یا بلا وجہ جنابت کی حالت میں ہووہ گھر اللّٰد کی رحمت سے محروم اور معدوم البرکۃ ہے ہاں اگر کسی مجبوری کی بناء پر فوری عسل نہ کیا جا سکتا ہو یا آ دمی فقط وضوء کر لے تو وہ اس سے مشنی ہوگا کیونکہ بخاری میں ہے کہ آپ مشاع نے جنابت کی حالت میں کھانے پینے یا سونے کا ارادہ ہوتا تو وضوئر لینے واللہ اعلم دیکھیے تلخیص سبل اسلام (نسلیمان کیلانی)

2706. حدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ عَدِيٌّ بْنُ ثَابِتٍ أَخْبَرَنِي فَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ يَزِيدَ يُحْدَّثُ اللهِ بْنَ يَزِيدَ يُحْدَّثُ اللهِ عَدْ يُخْدَ أَنَّا اللهِ عَدْ يُخْدَ اللهِ عَنْ عَبْدَ اللهِ عَدْ يُخْدَ اللهِ عَدْ يَا عَدْ اللهِ عَدْ يَخْدُ اللهِ عَدْ اللهِ عَدْ يَا عَدْ اللهِ عَدْ اللهِ عَدْ اللهِ عَدْ اللهِ عَدْ يَا عَدْ اللهِ عَدْ اللهُ عَدْ اللهِ عَدْ اللهِ عَدْ اللهِ عَدْ اللهِ عَلَى اللهِ عَدْ عَدْ اللهِ عَلَا اللهِ عَدْ اللهِ عَدْ اللهِ عَدْ اللهِ عَدْ اللّهِ عَدْ اللهِ عَدْ اللّهِ عَدْ اللّهِ عَدْ اللّهِ عَدْ اللّهِ عَدْ اللّهِ عَا عَدْ اللّهِ عَدْ اللّهِ عَدْ اللّهِ عَدْ اللّهِ عَدْ اللّهِ عَا اللّهِ عَدْ عَلْ اللّهِ عَدْ اللّهِ عَدْ اللّهِ عَلَا الللّهِ عَلْ اللّ

سیّدنا ابومسعود و النیْد بدری کہتے ہیں نبی طفی الله نے فرمایا الله مسلمان جب الل پرخرچ کرتا ہے اسے باعث اجر سمحتا ہے تو وہ اس کے لئے صدقہ ہے۔''

[35] باب فِي الدَّابَّةِ يَرُكُبُ عَلَيْهَا ثَلاثَةً سوارى يرتين دميون كاسوار مونا

2707- أَحِب نَا أَسُو السُّعُسِمِ الرَّحِيَّاتِ التَّسِيِّ بُنُ يَزِيدَ قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ الْآخولُ عنْ مورَق سس

سیدنا عبداللہ بی جعفر بنائیمد کہتے ہیں رسول اللہ بلتے ہیں کہیں سے سفر کر کے واپس آ رہے تھے۔تو مجھ سے اور حسن بنائید یا حسین بنائید سے ملاقات ہوئی۔میرا خیال ہے انہوں نے کہا: حسن بنائید سے ملاقات ہوئی۔تو آپ سے بیائید نے مجھے اپنے آگے اور حسن کو اپنے پیچھے بٹھایا 'ہم اسی سواری پر مدید پہنچ جس پر نبی مشکراتی تھے۔ عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ جَعُفَرٍ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللّهِ بُنِ جَعُفَرٍ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللّهِ بَنْ إِذا قَفَلَ تُلُقِّى بِى وَبِالْحَسْنِ أَوْ بِالْحُسْيُ قَالَ وَأَرَاهُ قَالَ الْحَسَنَ الْحَسَنَ فَحَمَلَنِى بَيْنَ يَدَيُهِ وَالْحَسَنَ وَرَائَهُ قَالِحَسَنَ عَلَى النّهَ قَالَ النّهَ وَنَحُنُ عَلَى اللّهَ النّهَ فَيْنَا النّهَ فَيْنَا النّهَ النّهَ اللّهُ
عَنُ أَسى مَسْعُودٍ الْبَدُرِي عَنِ النَّبِيِّ عَلَيْهُ

أَنَّهُ قَالَ الْهُمُسْلِمُ إِذَا أَنَّفُقَ نَفَقَةً عَلَى

أَهُلِهِ وَهُوَ يَجْتَسِبُهَا فَهِيَ لَهُ صَدَقَةً . 0

❶ منصل عليه: السحاري، كتاب الإيامن، باب ماجاه ان الأعمال بالنيات (55) ومسلم، كتباب الزكاة، باب فصل النفقة والصدقة عنى الأفريس والروح و لاو لاد والوالندين ولو كانوا مشركين (2319)

 [◘] صحيح أخرجه مسلم، كتاب فصائل الصحابه، باب فصائل عبدالله بن جعفر h(6218) أحرجه أبوداؤد، كتاب الجهاد،
 باب في ركوب ثلاثة على دابة (3566) و ابن ماجه، كتاب الأدب، باب ركوب ثلاثة على دابة (3773)

الكاليكيُّ الكَالِيكِيُّ الكَالِيكِيُّ الكَالِيكِيُّ الكَالِكِيُّ الكَالِكِيُّ الكَالِكِيُّ الكَالِكِيُّ الكَالِكِيُّ الكَالِيكِيُّ الكَالِكِيُّ الكَالِكِيُّ الكَالِكِيُّ الكَالِكِيُّ الكَالِيكِيُّ الكَالِكِينِيُّ الكَالِكِينِيُّ الكَالِكِينِيُّ الكَالِيلِينِينَ المُعَالِمُ المُعَلِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَلِمُ المُعْلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعِلِمُ المُعَلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمِي المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلّمُ المُعِمِي مِعْلِمُ المُعِلّمُ المُعِلّمُ المُعِمِي مِعِلْمُ المُعِلِمُ

ف واند: يرآب طفي الأله كى بچول سے خصوصى محبت كا ثبوت ہے بچے چونك قوم كامستقبل اور

والدین کے لیے ذخیرہ آخرت ہوتے ہیں اس کیے آپ منظم آیا ان سے شفقت فرمائے اور انہیں اپنے سے مانوس کرتے کیونکہ پیطرزعمل بچوں کی تربیت میں بڑا موثر ہوتا ہے۔

[36] ... بَابِ فِي صَاحِبُ الدَّابَّةِ أَحَقُّ بِصَدُرِهَا سواري كا ما لك آك بيضے كامستق ہے

2708 ـ أَخْبَرَنَا سِعِيدُ نَنُ سُلَيْمانَ عَنْ إِسْحَقَ بْنِ يَحْيَى بْنِ طَلَحَةَ عَنِ الْمُسَيَّبِ بْنِ رَافِعٍ

وَمَعْبَدِ بْن خَالِدٍ

سیّدنا عبدالله بن یزید طمی جو کوفه کے امیر سے کہتے ہیں که ہم قیس بن سعد بن عبادہ کے پاس اس کے گھر گئے۔ تو موذن نے نماز کے لئے اذان کبی ہم نے قیس سے کہا: 'میں نماز پڑھاؤ۔انہوں نے کہا: 'میں ایسے لوگوں کو نماز نہیں پڑھاؤں گا جن کا میں امیر نہیں ہوں تو ایک آ دی نے نہیں پڑھاؤں گا جن کا میں امیر نہیں عبدالله بن کہا جوان سے کم نہیں شے جنہیں عبدالله بن خظله بن عسیل کہتے ہیں رسول الله طبق آ نے فرمایا۔'' آ دی اپنی سواری اور فرش کے اگلے مقام کا زیادہ صحق ہے اور اس کا سواری اور فرش کے اگلے مقام کا زیادہ صحق ہے اور اس کا سعد نے اپنے آزاد کر دہ غلام سے کہا:'' اے فلال! اٹھو اور انہیں نماز پڑھاؤ۔''

عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ يَزِيد الْحَطُمِيّ وَكَانَ أَمِيرًا عَلَى الْكُوفَةِ قَالَ أَتَيُنَا قَيْسَ بُنَ سَعُدِ بُنِ عُبَادَةَ فِي بَيْتِهِ فَأَذَّنَ الْمُؤَذِّنُ اللّهَ وَقُلْنَا لِقَيْسٍ قُمُ فَصَلِّ لَنَا فَقَالَ لَمُ أَكُنُ لِأُصَلِّي بِقَوْمٍ لَسْتُ عَلَيْهِمُ بِأَمِيرٍ فَقَالَ لَهُ عَبُدُ اللّهِ بُنُ حَنظَلَة بُنِ الْعَسِيلِ قَالَ رَسُولُ اللّهِ بُنُ حَنظَلَة بُنِ الْعَسِيلِ قَالَ رَسُولُ اللّهِ بِثَلِي اللّهِ بِعَلَى اللّهُ الرّبُ عُلُ اللّهُ اللّهِ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللللّهُ

فوائد: (۱) اگر مجد سے دور کہیں کسی کے گھر افرادا کھٹے ہوں تو اذان دے کر جماعت کروائی جاستی ہے (۲) آدمی جس چیز کا مالک ہووہ اس کا زیادہ حقدار ہوتا ہے الا مید کہ وہ اپنا حق کسی کے لیے بہہ کر دے لین کسی کو نماز کو پڑھانے یا سواری پر آگے بیٹھنے کی اجازت دے دے (۳) صحابہ رفخ المتیہ و تابعین "سمعنا و اطعنا "ہم نے س لیا اور مان لیا ۔ کے مرقع تھے۔

حَالِ لِيَنْ الْكَالِيْفِي الْمُعْلِقِينِ عَلَى الْمُعْلِقِينِ الْمُعِلِقِينِ الْمُعْلِقِينِ الْمُعِلِقِينِ الْمُعْلِقِينِ الْمُعْلِقِينِ الْمُعْلِقِينِ الْمُعْلِقِينِ الْمُعْلِقِينِ الْمُعِلِقِينِ الْمُعِلِقِينِ الْمُعْلِقِينِ الْمُعِلِقِينِ الْمُعِلِقِينِ الْمُعِلِقِينِ الْمُعِلِقِينِ

[37].... بَابِ مَا جَاءَ أَنَّ عَلَى ذِرُوَةٍ كُلِّ بَعِيرٍ شَيْطَانًا

ہراونٹ پرایک شیطان ہونے کا بیان

2709- أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللّٰهِ بْنُ مُوسٰى عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدِ......

عَنُ مُحَمَّدِ بُنِ حَمُّزَةَ بُنِ عَمُرٍو الْأَسُلَمِسِيِّ قَالَ وَقَدُ صَحِبَ أَبُوهُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ سَمِعْتُ أَبِى يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلَى ذِرُوةِ كُلِّ بَعِيرٍ شَيُطَانٌ فَإِذَا رَكِبُتُمُوهَا فَسَمُّوا اللَّهَ وَلَا تُقَصِّرُوا عَنُ حَاجَاتِكُمُ . •

محمد بن حمزہ بن عمرواسلمی کہتے ہیں ان کے والد رسول اللہ طفے والد رسول اللہ طفے والد سول بنے والد سے دالد سے دالد سے دالد سے مایا: ''ہر اونٹ پر ایک شیطان ہوتا ہے لہذا جب سوار ہوتو اسم اللہ پڑھو' اور اپنے ضروری کا موں میں کوتا ہی نہ کرو۔''

فواند: کسی بھی سواری پرسوار ہوتے ہوئے اللہ کا نام لینا اور سواری کی دعا پڑھنا مسنون ہے خصوصا اونٹ پرسوار ہوتے ہوئے جیسا کہ حدیث میں اس کی وجہ نہ کور ہے یہی وجہ ہے کہ اونٹوں کے باڑے میں نماز پڑھنے سے بھی منع کیا گیا ہے۔

[38] بَابِ فِي النَّهُي عَنُ أَنْ تُتَّخَذَ الدَّوَابُ كَرَاسِيَّ سوارى كوكرى بنانے كى ممانعت كابيان

2710 ـ أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا شَبَابَةُ بْنُ سَوَّادٍ حَدَّثَنَا لَيْثُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي

حبِيبٍ عَنُ سَهُلِ بُنِ مُعَاذِ بُنِ أَنَسٍ عَنُ أَبِيهِ وَكَانَ

ص سهر بن النّبِي النّبِي الله أنّ رَسُولَ اللّهِ الله الله وَالله الله الله وَالله وَلّه وَالله وَاللهُ وَاللهُ وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله وَالله

سَالِمَةً وَلَا تَتَخِذُوهَا كَرَاسِيَّ. ٥

سہل بن معاز بن انس اینے والد سے نقل کرتے ہیں وہ

فواند: (۱) " كراسى " يركرسى كى جمع باس كمعنى بشة بحبيا كهاجاتا ب

حسن: أخرجه الطبراني، في الاوسط (1945) وابن ابي شيبه 391/10 (9772)

[€]صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الحج،باب وكوب البدنة المهداة لم احتاج اليها(319)والنسائي، كتاب المناسك باب ركوب البدنة(2799)

عَنْ الْخَالِيْوَيُّ عَنْ الْخَالِيُونِيُّ عَنْ الْخَالِيْوِيُّ عَلَيْكُ الْخَالِيْوِيُّ عَلَيْ عَلَيْكُ الْخَالِيْوِيُّ عَلَيْكُ الْخَالِيْوِيُّ عَلَيْكُ الْخَالِيْوِيُّ عَلَيْكُ الْخَالِيْوِيُّ عَلَيْكُ الْخَالِيْوِيُّ عَلَيْكُ الْخَلْمِي عَلَيْكُ الْخَلْمِي عَلَيْكُ الْخَلِيْوِيُّ عَلَيْكُ الْخَلْمِي عَلَيْكُ الْخَلْمِي عَلَيْكُ الْخَلِيْكِي عَلَيْكُ الْخَلِيلِي عَلَيْكُ الْخَلِيْكِي عَلَيْكُ الْخَلِيلِي عَلِي عَلَيْكُ الْخَلِيلِي عَلَيْكُ الْخَلِيلِي عَلَيْكُ الْخَلِيلِي عَلَيْكِ الْخَلِيلِي عَلَيْكُ الْخَلِيلِي عَلَيْكُ الْعِلْمِي عَلَيْكُ الْعِلْمِي عَلَيْكُ الْعِلْمِي عَلَيْكُ الْعِلْمِي عَلِي عَلَيْكِ الْعِلْمِي عَلَيْكِ الْعِلْمِي عَلَيْكِ الْعِلْمِي عَلِي عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ الْعِلْمِي عَلَيْكِ الْعِلْمِي عَلِي عَلَيْكِ الْعَلِي عَلَيْكِ عِلْمِي عَلَيْكِ الْعِلْمِي عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلْكِلْمِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلَيْكِ عَلْمِي عَلَيْكِ عَلِي عَلَيْكِ عَلْمِي عَلِي عَلَيْكِ عَلْكِي عَلِي عَلَيْكِي

"إِجْعَل لِهِذَا لَحائِطِ كرسِيًّا" اس ديواركا پشته بنا دو (المنجد) (٢) سواريوں كا بھى خيال ركھنا چاہيے اور ان سے سوارى كا كام بى ليا جائے نہ كه اس كوئيك ياسٹرهى يا ويگر مقاصد كے ليے استعال كيا جائے -

2711 ـ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِح

عَنِ اللَّيُثِ إِلَّا أَنَّهُ يُخَالِفُ شَبَابَةَ فِي سَيْدِناليث رَاليَّهُ كَمِتْ بِن شَابِهِ فَ الله مديث كركس بات شَيْءٍ . • كي خالفت كي -

[39].... بَابِ السَّفَرُ قِطْعَةٌ مِنَ الْعَذَابِ سفرعذابِ كَاكَرُا ہِے

2712 ـ أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ سُمَيّ عَنْ أَبِيْ صَالِح

عَنُ أَبِى هُ رَيُ رَةً قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَنُ أَبِى هُ رَيُ رَهُ وَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَلَى الْعَذَابِ يَمْنَعُ أَحَدَّكُمُ نَوْمَهُ وَطَعَامَهُ وَشَرَابَهُ فَإِذَا قَطْسَى نَهُمَتَهُ مِنُ وَجُهِهِ فَلَيُعَجِّلُ الرَّجُعَةَ إلى أَهْلِهِ. ٥ الرَّجُعَةَ إلى أَهْلِهِ. ٥

فوائد: گھر میں انسان جس طرح اپنے معمولات کو پابندی اور بلا پریشانی ادا کرسکتا ہے۔ ان کی انجام وہی مشکل وصعب ہوتی ہے اس لیے اس کوعذاب کا نکڑا قرار دیا گیا ہے۔
[40].... بَابِ مَا يَقُولُ إِذَا وَدَّعَ رَجُلًا
کسی کوالوداع کرتے ہوئے کیا کہا جائے

سیّدنا انس بن مالک وَفَاتُونَ کَهِتَ بِی که ایک آدمی نبی طِفْتَ کِیتِ بِی که ایک آدمی نبی طِفْتِ کِیتِ کے ایک آدمی ا

عَنُ أَنْسِ بُنِ مَالِلْتٍ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ عِثْثًا فَقَالَ لَهُ يَا نَبِيَّ اللَّهِ إِنِّى

[•] صحيح: سابقة تخ تى بى ہے۔

[◘] متـ فق عليه: البخاري، كتاب العمرة، باب السقر قطعة من العذاب(1804) ومســـلم، كاب الإمارة، باب السقر قطعة من العذاب(4938)

الاستئذان كالمراجئ الكاربي الاستئذان كالمراجع المستئذان كالمراجع المستئذان كالمراجع المستئذان كالمراجع المستئذان كالمراجع المستئذان كالمراجع المراجع ا

أُرِيدُ السَّفَرَ فَقَالَ لَهُ مَتٰى قَالَ غَدًا إِنُ شَاءَ اللَّهُ قَالَ فَأَتَاهُ فَأَحَدَ بِيَدِهِ فَقَالَ لَهُ شَاءَ اللَّهُ قَالَ اللَّهِ وَفِى كَنَفِهِ زَوَدَكَ اللَّهُ التَّسِقُ وَى كَنَفِهِ زَوَدَكَ اللَّهُ التَّسِقُ وَى وَغَسفَ رَلَكَ ذَنبَكَ اللَّهُ وَوَجَهَلَكَ لِلْخَيْرِ أَيْنَمَا تَوَخَيْتَ أَوُ وَوَجَهَلَكَ لِلْخَيْرِ أَيْنَمَا تَوَخَيْتَ أَوُ الْكَلَامَتِينَ أَوْ الْكَلَامَتِينَ أَوْ الْكَلَامَتِينَ اللَّهُ الْمُعَلِدُ فِي إِحْدَى اللَّكَلِمَتِينَ . • الْكَلِمَتِينَ . • الْكَلِمَتَيْنَ . • اللَّهُ الْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعَالَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعَلِّيْ الْمُعَلِّيْنَ اللَّهُ الْمُعَلِّيْنِ الْمُعَالِمُ اللَّهُ الْمُعَلِّيْنَ الْمُعَلِّيْنَ الْمُعَلِّيْنَ الْمُعَلِّيْنَ الْمُعَلِّيْنَ الْمُلْعُلِمُ الْمُعَلِّيْنَ الْمُعَلِّيْنَ الْمُعَلِّيْنَ الْمُعَلِّيْنَ الْمُعَلِّيْنَ الْمُعْلِمُ الْمُعِلِّيْنِ الْمُعْلَى الْمُعَلِّيْنَ الْمُعَلِّيْنَ الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلِيْنَ الْمُعْلَى الْمُعْلَقِيْنَ الْمُعْلَى
میں سفر کرنا چاہتا ہوں۔ آپ نے فرمایا: ''کب؟''اس
نے کہا کل انشاء اللہ۔ وہ آپ کے پاس آیا آپ نے اس
کا ہاتھ پکڑ کر فرمایا: ''اللہ کی حفاظت میں اور اس کی نگہبانی
میں ، اللہ مجھے تقویٰ کے زادِراہ سے سرفراز کرے۔ اور
تہبارے گناہوں کو بخش دے۔ اور جہاں بھی تو قصد کرے
مجھے بھلائی سے نوازے یا جدھر بھی تیرا رخ ہو۔ دونوں
کلمات میں ہے ایک میں سعید نے شک کیا ہے۔

[41] بَابِ فِي الدُّعَاءِ إِذَا سَافَرَ وَإِذَا قَدِمَ سفر کی دعا اور جب سفر سے واپس آئے

2714 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا عَاصِمٌ هُوَ الْأَحْوَلُ قَالَ وَثَبَّتِنِي شُعْبَةُ

عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ سَرُجِسٍ قَالَ كَانَ النّبِيُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ سَرُجِسٍ قَالَ كَانَ النّبِيُ عَلَيْ إِذَا سَافَرَ قَالَ اللّهُمَّ إِنّى أَعُوذُ بِلْكَ مِنُ وَعُقَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَالْحَوُدِ بَعُدَ الْكُورِ وَدَعُوةِ الْمَمنُظُرِ فِى الْأَهْلِ الْمَمنُظُرِ فِى الْأَهْلِ

سیّدنا عبدالله بن سرجس کہتے ہیں کہ نبی طِنْفَا اَلله جب سفر

کرے تو کہتے: "اے الله! میں تجھ سے سفر کی مشقت،
نامرادوالیس لوٹے ، اچھی حالت کے بعد بری حالت آنے
مظلوم کی بدعا، اور اپنے اہل و مال میں برے منظرسے پناہ
جا ہتا ہوں ۔'

وَالْمَالِ. @

2715 ـ أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ عَنْ عَلِيّ بْنِ عَبْدِ اللهِ الْبَارِقِيّ

البارِيي عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ

اللَّهِ ﷺ كَانَ إِذَا سَافَرَ فَرَكِبَ رَاحِلَتَهُ
كَبُّرَ ثَلَاثًا وَيَقُولُ سُبُحَانَ الَّذِي سَخَرَ

سیّدنا عبدالله بن عمر رفاتی کہتے ہیں رسول الله منظامیّ جب سیّدنا عبدالله بن عمر رفاتی کہتے ہیں دفعہ الله اکبر کہتے۔ اور کہتے : ''یاک ہے وہ ذات جس نے اسے ہمارے

[•] جيد: أخرجه ترمذى، كتاب الدعوات، باب مناقب عبدالله بن زبير أالته (3444)

صحیح . أخرجه مسلم، كتاب الحج، بب ما يقول اذا ركب الى السفر الحج (3263) و الترمذي، كتاب الدعوات باب ما يفول اذا خرج مسافراً (3439) و النسائي، كتاب الاستعادة، باب الإستعادة من الحور بعد الكور (5513)

439 كتاب الاستئذان كالمحال

لیے منخر کیا اور ہم اس پر قابو پانے والے نہیں تھے ، اور ہمیں اینے رب کی طرف ہی لوٹنا ہے۔ اے اللہ! میں اینے اس سفر میں تجھ سے نیکی اور تقویٰ کا سوال کرتا ہوں اورایسے عمل کا جسے تو پیند کرے۔اے اللہ! ہمارے سفر کو آسان کر دے ۔ اور ہمارے کیے زمین کی دوری کم کر دے۔اے اللہ! سفر میں تو ہی ساتھی ہے۔اور اہل میں تو ہی خلیفہ ہے۔اے اللہ! ہمارے سفر میں ہمارا ساتھی بن جا اور ہمارے اہل میں ہمارا بہتر خلفہ بن جا''۔

لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقُونِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبَّنَا لَمُنْقَلِبُونَ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسُأَلُكَ فِي سَفَرِيُ هَذَا البُرَّ وَالتَّقُوَى وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرُضَى اللَّهُ مَّ هَوَّنُ عَلَيْنَا السَّفَرَ واطُو لَنَا بُعُدَ الْأَرُضِ اللَّهُمَّ أَنُتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيفَةُ فِي الْأَهُل اللُّهُمَّ اصْحَبُنَا فِي سَفَرنَا وَاخُلُفُنَا فِي أَهُلِنَا بِخَيْرٍ . •

ر 42ر ... بَابِ مَا يَقُولُ عِنْدَ الصُّعُودِ وَالْهُبُوطِ چڑھتے اوراترتے ہوئے کیا کہا جائے

2716 ـ أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُو زُبَيْدٍ عَنْ حُصَيْنِ عَنْ سَالِمِ

عَنُ جَابِ وَقَالَ كُنَّا إِذَا صَعِدُنَا كَبُّونَا لَ سَيِّدنا جابر فِلنَّيْ كَتِتِ بِين جب بم اوير جرُ ع تو' الله اكبرُ کہتے'اور اترتے تو' سجان اللہ' کہتے۔

وَإِذَا هَبَطُنَا سَبَّحُنَا . 🍳

[43].... بَابِ فِي النَّهُي عَنِ الْجَرَسِ تتحفني كي ممانعت

2717- أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعِ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِي الْجَرَّاحِ مَوْلَى أَمِّ

سيّده ام حبيبه طِلْنَهُا كَهِتَى مِين نبي طِلْنَا اللّهِ اللّهُ مَن أَن فرمايا: "جس قافلے میں گھنٹی ہوفرشتے ان کے ساتھ نہیں رہتے۔'' عَنُ أُمِّ حَبِيبَةَ عَنِ النَّبِي عِنْ اللَّهِيرُ الَّتِسِي فِيهَا الْجَرَسُ لَا تَصْحَبُهَا الْمَلائكَةُ . 🛭

2718- أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللّهِ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا سُهَيْلُ بْنُ أَبِي صَالِح عَنْ أَبِنه

◘ صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الحج، باب ما يقول اذا ركب إلى سفر الحج وغيره(3262)و ابو داؤ د. كتاب الحهاد، باب ما بقول الرجل اذا سافر (2599) والترمذي، كتاب الدعوات، باب ما يقول ادا ركب الناقة (3447)

صحیح البخاری، کتاب الدعوات،باب الدعاء اذا هبط و ادیا(تعلیقًا)واحمد333/3

3 صحيح: ابو داؤ د، كتاب الجهاد، باب في تعليق الحرس (2554)

الاستئذان كالمنافق الماليوني الاستئذان كالمنافق الماليوني المستئذان كالمنافق الماليوني المستئذان كالمنافق المنافق المن

عَنْ أَبِى هُمَرَيُرَةَ عَنِ النَّبِي عَلَيْ قَالَ لَا سَيْدنا ابو بريرة وَالنَّمُ كَبَتِ بِين نَبِي طِيْنَا آَنَ فَرَمايا: تَصْحَبُ الْمَلائِكَةُ رِفُقَةً فِيهَا كَلُبٌ أَوُ ''فرشتے اس جماعت كے ساتھ نہيں ہوتے جس ميں كتايا جَرَسٌ . • مَنْ ہو۔''

[44].... بَابِ فِي النَّهُي عَنُ لَعُنِ الدَّوَابِ جانوروں پرلعنت کی ممانعت

2719 ـ أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ أَبِي اللهِ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ أَبِي اللهُ عَنْ أَبِي اللهَ عَنْ أَبِي اللهِ عَنْ أَبِي اللهِ عَنْ أَبِي اللهَ عَنْ أَبِي اللهِ عَنْ أَبِي اللهُ عَنْ أَبِي اللهَ عَنْ أَبِي اللهِ عَنْ أَبِي اللهَ عَنْ أَبِي اللهَ عَنْ أَبِي اللهِ عَنْ أَبِي اللهِ عَنْ أَبِي اللهَ عَنْ أَبِي اللهِ عَنْ أَبِي اللهُ عَنْ أَبِي اللهِ عَنْ أَبِي اللهِ عَنْ أَبِي اللهُ عَلَيْهِ عَنْ أَبِي اللهِ عَنْ أَبِي اللهُ عَنْ أَبِي اللهُ عَلَيْهِ عَنْ أَبِي اللهِ عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْ عَلِي عَلِي عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلَيْهِ ع

سیّدنا عران بن حقین رفظهٔ کتے ہیں نبی طفی ایک سفر میں عصر ان بن حقین رفظهٔ کتے ہیں نبی طفی ایک سفر میں تصر آپ نے فرمایا: یہ کیا ہے؟ لوگوں نے کہا: فلال عورت نے اپنی سوری پر لعنت کی ہے۔ آپ نے فرمایا: ''اسے اس سواری سے اتار دو کیونکہ وہ ملعون ہے۔' لوگوں نے اسے اونٹی سے اتار دیا۔ عمران رفائھ کتے ہیں: گویا کہ میں اسے و کھے رہا ہوں وہ گندی رفائھ کیا۔

عَنُ عِمُرَانَ بُنِ حُصَيْنٍ أَنَّ النَّبِيَ عَلَىٰ اللَّهِيَ عَنَى عَلَىٰ اللَّهِيَ عَلَىٰ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ لَعَنَتُ رَاحِلَتَهَا فَقَالَ مَا هٰذَا عَنُهَا عَنُهَا فَإِنَّهَا مَلُعُونَةٌ قَالَ فَوضَعُوا عَنُهَا قَالَ عِمُرَانُ كَأَلِي أَنْظُرُ إِلَيْهَا نَاقَةً قَالَ عِمُرَانُ كَأَلِي أَنْظُرُ إِلَيْهَا نَاقَةً وَرُقَاءَ. ٥

فواند: (۱) نی رحمت منطق عیب دان نہیں تھاسی لیے آپ کولاعمة کے متعلق بوچھنا پڑا (۲) سواری پرلعنت چونکہ اس کو رحمت الهی سے دور کر دیتی ہے چنانچہ الیم سواری باعث خیر نہیں ہوسکتی اسی لیے سواری پرلعنت سے بچنا جا ہیے۔

[45].... بَابِ لَا تُسَافِرُ الْمَرُأَةُ إِلَّا وَمَعَهَا مَحُرَمٌ

عورت کامحرم کے بغیر سفر ناجائز ہے۔ 2720 حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ أَبِيْ صَالِح

❶صحيح: اخرجه مسلم، كتاب اللباس، باب في كراهة الكلب والحرس في السفر(5512) وابوداؤ دكتاب الجهاد، باب في تعليق الحرس (2555)

 [◘]صحيح: أخرجه مسلم، كتاب البرو الصلة، باب النهى عن لعن الدواب وغيرها (6547) وابو داؤد، كتاب الحهاد، باب
 النهى عن لعن البهيمة (2561)

441 كتاب الاستئذان 441 المرابعة الم

سبّدنا ابوسعید فالنَّهُ کہتے ہی کہرسول الله طلق مین نے فرمایا : '' عورت اینے باپ ، بھائی،شوہر ، یا اپنے کسی محرم کے علاوہ تین دن ہے زیادہ سفر نہ کرئے'۔

لَا تُسَافِرُ الْمَرُأَةُ سَفَرًا ثَلَاثَةَ أَيَّام فَصَاعِدًا إِلَّا وَمَعَهَا أَبُوهَا أَوُ أُخُوهَا أَوْ

عَنُ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْهُ

زَوُجُهَا أَوُ ذُو مَحْرَم مِنْهَا . •

فوائد: (۱) معلوم ہوا لیے سفر پرعورت کے ساتھ محرم کا ہونا لازم ہے کیونکہ اکیلی عورت جو وطن سے دوراکیلی ہوتو اس کے لیے سفری صعوبتوں سے نمٹنا ناممکن ہوتا ہے (۲) پیہ جوطریقہ اختیار کیا جاتا ہے کہ عورتیں جب اکٹھی سفر کریں تو ان میں ہے ایک اپنے محرم کوساتھ لے لیے باقی ویسے ساتھ ہولیس بیغلط ہے حدیث کے مطابق ہرعورت کے ساتھ اس کا ذی محرم رشتہ دار ہونا ضروری ہے۔

> [46] بَابِ إِنَّ الْوَاحِدَ فِي السَّفَرِ شَيُطَانٌ اکیلاسفر کرنے والا شیطان ہے ۔

2721 - أَخْبَرَنَا الْهَيْثَمُ بْنُ جَمِيلٍ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ هُوَ ابْنُ مُحَمَّدِ الْعُمَرِيُ عَنْ أَبِيهِ

عَن ابُن عُمَرَ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ عِنْ اللَّهِ لَوُ سِيِّدنا ابن عمر وَالنَّهُ كُتِّ مِين كَه نِي طَفِيَا لَمُ فَ فرمايا: "اكر يَعُلَمُ النَّاسُ مَا فِي الْوَحْدَةِ لَمْ يَسْرِ لَوْكُول تَبْهَائى كى برائى جان ليت توكونى سواررات كواكيلاسفر

رَاكِبٌ بِلَيْلِ وَحُدَهُ أَبَدًا. ٥

[47].... بَابِ مَا يَقُولُ إِذَا نَزَلَ مَنْزُلًا کسی جگہ اترتے ہوئے کیا کہنا جاہے

به کرتا یه

2722 - أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْلَقَ وَعَفَّانُ قَالا حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا ابْنُ عَجْلانَ عَنْ يَعْقُوبَ ابْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْأَشَجِّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ سَعْدِ بْنِ مَالِكٍ

عَنُ خَوْلَةَ بِنُتِ حَكِيمٍ قَالَتُ سَمِعْتُ سَيْده خوله بنت عَيم ظاهم كهتى بين مين في رسول

رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ لَوُ أَنَّ أَحَدَكُمُ

جگه براترے اگر اس طرح کہہ لے: ''میں اللہ کے تمام إِذَا نَزَلَ مَنُزِلًا قَالَ أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ

متفق عليه: البخاري، كتاب فضل الصلاة، باب مسجد بيت المقدس (1197) مسلم، كتاب الحج، باب سفر المرأة مع محرم ابي حج وغيره (3248)

[◙]صحيح: أخرجه البخاري،كتاب الحهاد والسير ، باب سير الرجل وحده بالليل(2998)والترمذي،كتاب الحهاد ، باب ماجاء في كراهية أيسافر الرجل وحده(1673)

442 كتاب الاستئذان كالمحادث الكالم المنافظ المالكان المنافظ المناف

کلمات کے ساتھ اس کی پیدا کردہ ہرشر سے بناہ مانگتا ہوں۔''تو اس جگہ اے کوئی چیز نقصان نہ دے گی جتی کہ وہ اس جگہ ہے کوچ کر جائے۔''

التَّامَّاتِ مِنْ شَرّ مَاخَلَقَ لَمُ يَضُرَّهُ فِي لْحَلِكَ الْمَنُزلِ شَيُءٌ حَتَّى يَرُتَحِلَ

فوائد: پیچھوٹی می دعا جو کہ صبح وشام کے اذکار کا بھی حصہ ہے اس کاعظیم الفائدۃ ہونا واضح ہے لہٰذاستی کوتا ہی کو جیموڑ کر انسان کو کوشش کرنی جا ہیے کہ ایسے مختلف مقامات کے وظائف یا د کرے اور انہیں پڑھے جہاں بیہ آخرت میں نیکیوں بہاڑ بنانے کا باعث ہیں وہیں دنیا میں بندے کے لیے امن وحفاظت کے ضامن ہیں ۔

[48].... بَابِ فِي الرَّكُعَتَيْنِ إِذَا نَوْلَ مَنُولًا سی جگهاتر کر دورکعت پڑھنے کا بیان

2723 - أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَاصِم عَنْ عُثْمَانَ بْنِ سَعْدِ

عَنُ أَنْس بُن مَالِلْتِ أَنَّ النَّبِي عَيْنًا كَانَ سيِّدنا انس بن ما لك وَاللَّهُ كُتَّ بِيل كه بي السَّفَقَدَ لَمَ اترتے تو دورکعت پڑھنے سے پہلے کوچ نہ کرتے ۔ یا کہا:'' اس منزل کو دورکعت سے خیر باد کہتے تھے ۔' عبداللہ کہتے ہیں:'' اس حدیث کے راوی عثمان بن سعدضعیف ہیں۔''

إِنْا نَوْلَ مَنُولًا لَمُ يَوْتَحِلُ مِنْهُ حَتَّى يُصَلِّى رَكُعَتَيُن أَوْ يُوَدِّعَ الْمَنُزلَ بِرَكُعَتَيْنِ قَالَ عَبُد اللَّهِ عُثْمَانُ بُنُ سَعُدٍ ضَعيثُ . ٥

[49].... بَابِ مَا يَقُولُ إِذَا قَفَلَ مِنَ السَّفَرِ سفرے واپسی پر کیا کہا جائے

2724- أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ عَنْ عَلِيّ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْبَارِقِيّا

سيدنا عبدالله بن عمر والنبه كهت بين كه نبي الني عيدا عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُن عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ ے واپس آتے تو کہتے: '' واپس لوٹے والے اگر اللہ نے كَانَ إِذَا رَجَعَ مِنُ سَفَرِهِ قَالَ آيِبُونَ

🚺 صحيح: اخرجه مسلم، كتاب الدعوات،باب في التعوذ من سوء القضاء و درك الشفاء وعيره (6817) والترمذي، كتاب الدعوات باب ماجاء مايقول اذا نزل منزلاً (3437)

🗨 ضعيف: عثمان بن سعرضعيف راوي ب، احسرجه ابو داؤ د، كتباب البصيلاة، بياب السمسافر يصلي و هو يشك في الوقت (1205) والنسائي، كتاب المواقيت، باب تعجيل الظهر في السفر (4907)

الاستندان ١٤٥٥ كتاب الاستندان ١٤٥٠ كتاب الاستندان ١٤٥٠

إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَائِبُونَ عَابِدُونَ لِرَبِّنَا حام اتوبہ کرنے والے عبادت کرنے والے اور اینے رب کی تعریف کرنے والے ہیں۔''

حَامِدُونَ . •

[50].... بَابِ الدُّعَاءِ عِنْدَ النَّوُم سونے کی وعا

2725 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحٰقَ قَالَ

سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بُنَ عَازِب يَقُولُ إِنَّ

رَسُولَ اللَّهِ عِنْ أَمَـرَ رَجُلًا إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ أَنْ يَقُولَ اللَّهُمَّ أَسُلَمْتُ نَفُسِي إِلْعُلْثَ وَوَجَّهُ اللَّهُ وَجُهِ اللَّهُ لَكُ وَفَوَّضُتُ أَمُرى إلَيُلثَ وَأَلْجَأْتُ ظَهُرى إِلَيْكَ رَغُبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ لَا مَلُجَأً وَلَا مَسنُجَهِ مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ آمَنُتُ بكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَنَبِيّلَ الَّذِي

أَرُسَلُتَ فَإِنْ مَاتَ مَاتَ عَلَى الْفِطُرَةِ. ٥ 2726- أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَان حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي

سَعِيدِ الْمَقْبُرِيِّ

عَنُ أَبِسِي هُسرَيُسرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِذَا أُوى أَحَـٰدُكُـمُ إِلَى فِرَاشِهِ فَلْيَنْفُصُ فِرَاشَهُ بِدَاخِلَةِ إِزَارِهِ فَإِنَّهُ لَا يَدُرى مَا خَلَفَهُ فِيهِ وَلَيْقُلُ اللَّهُمَّ بلك وَضَعْتُ جَنبي وَبِكَ أَرُفَعُهُ اللَّهُمَّ إِنَّ

دیا کہ جب آ دی اینے بستر پر لیٹے تو یوں کے:"اے اللہ! میں نے اینے آپ کو تیرے سپرد کیا ۔ اور اپنا چرہ تیری طرف متوجه کیا ۔ اور اپنا معاملہ تیرے حوالے کیا ۔ اور میں نے اپنی پیٹھ کو تیری پناہ میں دیا۔ تیری طرف رغبت کرتے ہوئے اور تجھ سے ڈرتے ہوئے پناہ گاہ اور نجات تیری ہی طرف ہے۔ میں تیری نازل کردہ کتاب اور تیرے بھیجے ہوئے نبی پرایمان رکھتا ہوں ۔''پس اگر (اسے بڑھنے والا اسی رات) مرگیا تو وہ فطرت پر مرے گا۔

سیّدنا ابو ہربرۃ رضیّن کہتے ہیں رسول الله عظی نے فرمایا: "جبتم میں سے کوئی اینے بستر کی طرف جائے تو اپنی جا در سے اسے جھاڑے کیونکہ وہ نہیں جانیا کہ اس کے بعد اس برکیا رہا ہے پھر یول کے: ''اے اللہ! تیری مدد سے میں اپنا پہلو (بستریر)رکھتا ہوں اور تیری ہی مدد سے

[•] متفق عليه: البخاري، كتاب العمرة، باب مايقول اذا رجع من الحج أو العمرة أو الغزوة (1797) ومسلم، كتاب الحج،باب مايقول اذا قفل من سفرا الحج وغيره (3266)

[🛭] متفق عليه: البخاري، كتاب الوضوء،باب فضل من مات على الوضوء(247)ومسلم، كتاب الذكر والدعاء،باب مايقول عند النوم وأخذ مضجعه(6820)

الكالِيْفِيُّ الكَالِيْفِيُّ عَلَى اللَّهِ اللَّهُ اللَّاللَّا اللَّهُ الللَّا

أَمُسَكُتَ نَفُسِى فَاغُفِرْ لَهَا وَإِنُ أَرُسَلُتَهَا فَاحُفَظُهَا بِمَا تَحُفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ . •

ا ٹھاؤں گا۔اے اللہ! اگر تو میری روح کوروک لے تو اسے معاف کر دینا اگر واپس کرے تو اس کی حفاظت کرنا جیسے نیک بندوں کی حفاظت کرتا ہے۔''

[51] بَابِ فِي التَّسُبِيحِ عِنْدَ النَّوُمِ سونے وقت تبیيح كرنا

2727 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا الْعَوَّامُ بْنُ حَوْشَبٍ قَالَ حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَن بْن أَبِيْ لَيْلِي

عَنُ عَلِيٍ قَالَ أَتَانَا رَسُولُ اللهِ ﷺ حَثْى وَضَعَ قَدَمَهُ بَيْنِى وَبَيْنَ فَاطِمَةً فَعَلَّمَنَا مَا نَقُولُ إِذَا أَخَذُنَا مَضَاجِعَنَا ثَلاثًا وَشَكْرِينَ تَسُيِعَةً وَثَلَاثًا مَضَاجِعَنَا ثَلاثِينَ وَشَكِرِينَ تَسُيعِحَةً وَثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ تَكْيِيرَةً تَحُمِيلَةً وَأَرْبَعًا وَثَلَاثِينَ تَكْيِيرَةً قَالَ عَلِي قَالَ عَلِي قَالَ عَلِي قَالَ لَهُ وَلَا لَيُلَةً صِفِينَ قَالَ وَلَا لَيُلَةً صِفِينَ قَالَ وَلَا لَيُلَةً صَفِينَ قَالَ وَلَا لَيُلَةً صَفَينَ قَالَ وَلَا لَيُلَةً

سیّدناعلی فِیْنَیْهُ کہتے ہیں کہ رسول الله طِنْفِیَمْ ہمارے پاس
تشریف لائے اور میرے اور فاطمہ وَنَالِیْهَا کے درمیان اپنا
قدم رکھا۔اور ہمیں سکھایا کہ جب ہم اسپینہ بستر پرلیٹیں تو
سس دفعہ سجان اللهُ سس وفعہ الحمد للداور سس دفعہ الله اکبر کہا
کریں۔'علی وَلَیْهُ کہتے ہیں: اس کے بعد میں نے اسے
کہمی نہیں چھوڑا' ایک شخص نے کہا: دصفین' کی رات کو بھی
نہیں چھوڑا' ایک شخص نے کہا: دصفین' کی رات کو بھی
نہیں چھوڑا۔

فوائد: مختلف مواقع پر پڑھی جانے والی بید دعائیں جہاں انسانی زندگی کوعبادت کا مرقع بنا دیتی ہیں وہیں وہیں وہیں وہیں کھیں مثلا ان تبیحات کا تعلق فاطمہ وٹاٹھیا کے اس مطالبے سے جو انہوں نے آپ مطابع سے کیا تھا کہ مجھے کام کاج میں ہاتھ بٹانے کے لیے ایک غلام عنایت فرما ویں تو آپ مطابع نے آپ مطابع کی تھا کہ مجھے کام کاج میں ہاتھ بٹانے کے لیے ایک غلام عنایت فرما ویں تو آپ مطابع نے تبیحات سکھلائیں کہ سوتے وقت ان کے کرنے کے بعد شہیں غلام کی ضرورت نہیں رہے گی اللہ تمہاری تھکا وٹ کو دورکردیا کرے گا واللہ اعلی واجل۔

 [♣] متفق عليه: البخاري، كتاب الدعوات، باب اذا آوى الى فراشه فلينفض فراشه (6320) ومسلم، كتاب الذكر والدعاء،
 باب مايقول عندالنوم وأخذ المضجعه (6830)

[€]متـفق عليه: البخاري، كتاب النفقة،باب خادم المرأة(5362)ومسلم، كتاب الذكروالدعاء،باب التسبيح اول النهار عند النوم(9855)

سَيِّبَنَ الْكَالِيَّيِّ كَتَابِ الاستئذان كَ 445 (كَتَابِ الاستئذان كَ 52].... بَابِ مَا يَقُولُ إِذَا انْتَبَهَ مِنُ نَوُمِهِ نَوُمِهِ نَيْدِ سے جائے توكيا كے

2728 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ رِبْعِيّ بْنِ

حِراشِ......

عَنُ حُدَّدُيُفَةَ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا اسْتَيْ عَلَيْ إِذَا اسْتَيْ عَلَيْ إِلَيْهِ النَّعْ الْكِيهُ النَّهُ ورُدُ • وَكَانَا بَعُدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النَّشُورُ. • وَالْكِهِ النَّشُورُ. • وَالْكِهِ النَّشُورُ. • وَالْكِهِ النَّشُورُ. • وَالْكِهُ النَّشُورُ. • وَالْكِهُ النَّشُورُ. • وَالْكِهُ النَّشُورُ. • وَالْمُعْ الْمُنْسُورُ. • وَالْمُعْلَقُورُ الْمُنْسُورُ. • وَالْمُعْلَقُونُ الْمُنْسُورُ الْمُنْسُونُ الْمُنْسُورُ الْمُنْسُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُونُ الْمُنْسُونُ الْمُنْسُونُ الْمُنْسُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُونُ الْمُنْسُونُ الْمُنْسُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُونُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُلِينُ الْمُنْسُلُونُ الْمُنْسُونُ الْمُنْسُلُونُ الْم

سیدنا حذیفہ رفائی کہتے ہیں کہ نبی طفی آیہ جب نیند سے بیدار ہوتے تو کہتے: "تمام تعریفیں اس ذات کے لئے ہیں جس نے جماری موت کے بعد ہمیں زندہ کیا۔اور اس کی طرف اکٹھے ہوکر جانا ہے۔"

2729 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ الْجِزَامِيُّ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا الْأَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنِي عُمَيْرُ بْنُ هَانِيءِ الْعَنْسِيُّ قَالَ حَدَّثِنِي جُنَادَةُ بْنُ أَبِي أُمَيَّةَ قَالَ

سیّدنا عبادة بن صامت و الحیّه کیتے ہیں کہ نبی طفی این نے فرمایا: ''جو شخص رات کو نمیند سے بیدار ہوکر یوں کے: ''اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں وہ اکیلا ہے اس کا کوئی شریک نہیں اس کے علاوہ کوئی معبود نہیں اور اس کے لئے تعریف ہے اور وہ ہر چیز پر قادر ہے ،اللہ پاک ہے اللہ کے لئے تعریف ہے اور اللہ بہت بڑا ہے۔ نیکی کی اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں اور اللہ بہت بڑا ہے۔ نیکی کی قوت صرف اللہ کی تو فیق سے قوت اور برائی سے بیخے کی قوت صرف اللہ کی تو فیق سے ہے پھر کے: ''اے میرے رب! مجھے بخش دے یا آپ نے فرمایا: پھر دعا کرے اس کی دعا قبول کی جائے گی۔ پھر اگر وہ جاہے تو وضو کر کے نماز پڑھے تو اس کی نماز قبول کی

حَدَّفَنِ عَبَاكَةُ بُنُ الصَّامِتِ عَنِ النَّبِيِ عَلَىٰ قَالَ مَنُ تَعَارَّ مِنَ اللَّيُلِ فَقَالَ النَّبِي عَلَىٰ قَالَ مَنُ تَعَارَّ مِنَ اللَّيُلِ فَقَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُملُكُ وَلَهُ الْحَمُدُ وَهُو عَلَى كُلِّ اللَّهِ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ شَيْءٍ قَدِيرٌ سُبُحَانَ اللَّهِ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَولَ وَلَا قُوَّةً إِلَّا بِاللَّهِ وَاللَّهُ مَا لَكُهُ مَا لَا اللَّهِ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَولَ وَلَا قُوَّةً إِلَّا بِاللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْحَمْدُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْحَمْلُ الْعَلَى الْمُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى الْعَلَى اللَّهُ عَلَى الْمُعَلَى الْعَلَى الْعَلَى اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ الْمُعْمَى الْمُلِي اللَّهُ الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلِقُولَ الْمُعْلَى الْمُعْلَلَةُ الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُعْلَى الْمُ

[•] صحيح البخارى، كتات الدعوات، باب مايقول اذا نام (6312) وابو داؤ دكتاب الأدب، باب مايقول عند النوم (5049) والترمذي، كتاب الدعوات، باب منه (3417)

 [◘] صحيح: أخرجه البخاري، كتاب التهجد، باب فضل من تعار من الليل و فصلى (1154) وابو داؤد، كتاب الأدب باب ما
 يقول الرجل اذا تعار من الليل (5060) و الترمذي، كتاب الدعوات، باب ماجاء في الدعاء اذا انتبه من الليل (3414)

(سَيِّنَ الْكَالِيَّا فِي ﴿ 446 ﴿ كَتَابِ الاستَدَانِ ﴾ ﴿ 446 ﴿ كَتَابِ الاستَدَانِ ﴾ ﴿ (كَتَابِ الاستَدَانِ ﴾ ﴿ (53 الله الله عَلَى الله ع

صبح کے وقت کیا کہنا جیاہے

2730 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْل

سیّدنا عبدالله اپنے والد عبدالرحن بن ابزی سے بیان کرتے ہیں۔ انہوں نے کہا کہ: نبی مطّفَظَیّن جب صبح کرتے تو اس طرح کہتے تھے: ''ہم نے اسلام کی فطرت، اظلاص کے کلے اور اپنے نبی محمد مطّفِظَیّن کے دین اور اپنے بار اہیم جو کہ کی طرفہ مسلمان تھے کے دین پرضج کی۔''

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عَبُدِ الرَّحُمَنِ بُنِ الْمُؤى عَنُ اللَّهِ عَنُ اللَّهِ الرَّحُمَنِ بُنِ أَبُوزَى عَنُ أَبِيهِ قَالَ كَانَ النَّبِي عَلَيْ الْحَلَيْ إِذَا أَصُبَحَ نَسا عَلَى فِطُرَةٍ أَصُبَحُ نَسا عَلَى فِطُرَةٍ الْإِخُلاصِ وَدِينِ نَبِيّنَا الْإِسُلامِ وَكَلِمَةِ الْإِخُلاصِ وَدِينِ نَبِيّنَا مُسَلّمًا وَمُلَّةٍ أَبِينَا إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا مُسُلّمًا . • مُسْلِمًا . • مُسْلّمًا . • مُسُلّمًا . • مُسُلّمًا . • مُسْلِمًا . • مُسُلّمًا . • مُسْلِمًا . • مِسْلِمًا . • مُسْلِمًا . • مِسْلِمًا . • مُسْلِمًا . • مُسْلِمُ الْمُسْلِمُ الْم

2731 ـ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرِ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ يَعْلَى بْنِ عَطَاءٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ عَاصِمٍ

سیّدنا ابو ہریرۃ بڑائیو کہتے ہیں ابو بکر بڑائیو نے کہا: ''یارسول
اللہ! مجھے الیی چیز کا حکم دیں جو میں صبح و شام کہا

کرو۔''آپ نے فرمایا کہو''اے اللہ! آسان وزمین کے
پیدا کرنے والے غیب و حاضر کو جانے والے ہر چیز کے
مالک اور پالنے والے میں گواہی دیتا ہوں کہ تیرے علاوہ
کوئی معبود نہیں۔ میں اپنفس اور شیطان کے شرے اور
اس کی شرکت سے تیری پناہ چاہتا ہوں۔'آپ نے فرمایا:

د'ضبح و شام اور اپنے بستر پر لیٹتے ہوئے اسے پڑھ لیا

د'صبح و شام اور اپنے بستر پر لیٹتے ہوئے اسے پڑھ لیا

عَنُ أَبِى هُرَيُرَدَةً قَالَ قَالَ أَبُوبَكُو يَا رَسُولَ اللّهِ مُرْنِى بِشَىءٍ أَقُولُهُ إِذَا أَصْبَحُتُ وَإِذَا أَمُسَيْتُ قَالَ قُلِ اللّهُمَّ أَصْبَحُتُ وَإِذَا أَمُسَيْتُ قَالَ قُلِ اللّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكُهُ أَشُهَدُ أَنُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنْتَ أَعُوذُ بِلَكَ مِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرُكِهِ قَالَ نَفُسِى وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرُكِهِ قَالَ نَفُسِى وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرُكِهِ قَالَ فَلْدَهُ إِذَا أَصْبَحْتَ وَإِذَا أَمْسَيْتَ وَالْمَالَ اللّهُ إِلَى اللْهُ إِلَى اللّهُ اللّهُ إِلَيْنَا اللّهُ إِلَا اللللّهُ إِلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ إِلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللْهُ الْمُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الل

[54] ... بَابِ مَا يَقُولُ إِذَا لَبِسَ ثَوُبًا جَدِيُداً نيا كِيرًا يَهِنْتِ وقت كيا كَهِنا حِاسِمُ

2732 - أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِءُ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ هُوَ ابْنُ أَبِيْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي مَرْحُومٍ

[🛈] حسن: أخرجه ابن ابي شيبه 77/(6591)واحمد 407/3

عصحيح: أخرجه الترمذي، كتاب الدعوات، باب(90) الحديث (3529)

حكل يُنتَ الْكَالِيْدِينَ ﴾ ﴿ 447 ﴿ كتاب الاستنذان ﴾ ﴿

سیّدناسهل بن معاذ بن انس اپن والد سے بیان کرتے ہیں انہوں نے کہا رسول الله منظم کیٹ نے فرمایا: ''جو مخص نیا کیٹر ایہنے وہ ایسے کہے: ''تمام تعریفیں الله کے لئے ہیں جس نے مجھے یہ کیٹر ایہنایا اور مجھے رزق دیا۔میری قوت و طاقت کے بغیر۔' تو اس کے پہلے گناہ بخش دیئے جائیں طاقت کے بغیر۔' تو اس کے پہلے گناہ بخش دیئے جائیں

عَنُ سَهُ لِ بُنِ مُعَاذِ بُنِ أَنسٍ عَنُ أَبِيهِ قالَ قَال رسُولُ اللهِ عَلَيْ مَنُ لَبِسَ تَوُبًا فَعَالَ الْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي كَسَانِي هَذَا وَزَزَقَنِيهِ مِنُ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي وَلا قُوَّةٍ عُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنُ ذَبُهِ . •

فوائد: انسان جس قدر بھی محنت و مشقت کر لے اسے رزق مالک کی تقسیم اور اس کی عطاء کے مطابق بی ملتا ہے اگر فقط محنت رزق حاصل ہوتا ہوتو کا نئات میں مزدور سب سے زیادہ صاحب شروت ہوں جب کہ معاملہ اس کے برعکس ہے کہ ان کو پیٹ بھرنے کے لیے بسا اوقات روٹی ملنا مشکل ہو جاتی ہے لہذا کوئی بھی نعمت کے ملنے کو اپنی محنت کایا طاقت کا نتیجہ قرار دینے کی بجائے اپنی بے مائیگی کا اقرار کرتے ہوئے اللہ کی عطاکے نغے بی گنگنانے ہیں یہی تعلیم جمیں اس دعا ہے ملتی ہے۔

[55] بَابِ مَا يَقُولُ إِذَا دَخَلَ الْمُسْجِدَ وَإِذَا خَرَجَ مَا يَقُولُ إِذَا دَخَلَ الْمُسْجِدَ وَإِذَا خَرَجَ مَا مَعِد مِين داخل ہونے اور نکلنے کی دعا

2733 ـ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ يَعْنِي ابْنَ بِكللٍ عَنْ رَبِيعَةَ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ

نِ سَعِبدٍن

ابوحمید یا ابو اسید کہتے ہیں رسول الله طفی این نے فرمایا:
"جب کوئی مسجد میں داخل ہوتو وہ یوں کہے:"اے الله
میرے لئے اپنی رحمت کے دروازے کھول دے۔"اور
جب باہر نکلے تو کہے:"اے اللہ! میں تجھ سے تیرے فضل کا
سوال کرتا ہوں۔"

عَنُ أَبِى حُمَيُدٍ أَوْ أَبِى أُسَيُدٍ قَالَ قَالَ وَالَ وَلَا رَصُولُ اللّهِ عَلَيْ إِذَا دَحَلَ أَحَدُكُمُ الْمَصْجِدَ فَلْيَقُلِ اللّهُمَّ افْتَحُ لِى أَبُوابَ رَحْمَتِكَ وَإِذَا خَرَجَ فَلْيَقُلِ اللّهُمَّ إِنِّى أَسُأَلُكَ مِنُ فَضُلِكَ . ٥ أَسُأَلُكَ مِنُ فَضُلِكَ . ٥

فوائد: معد چونکدالله کا گرے ظاہری بات ہے کدالله کا گر رحتوں کا خزینہ ہوتا ہے چنانچ معجد

 [◘]صحيح: أخرجه الحاكم 162/4 والوداؤد، كتاب اللباس با(1)(الحديث4023) والترمدي، كتاب الدعوات، باب ما يقول اذا فرغ من الطعام(3458)

[•] صحيح: أحرجه مسلم، كتاب صلاة المسافرين، باب ما يقول اذا دحل المسجد(1649) وابوداؤد، كتاب الصلاة، ١٠٠٠ في مايقول الرحل دحوله المسجد(465)

الكاليكي المستلذان على المستلذان الم

جاتے ہوئے رحمت کوطلب کرتے ہوئے جانا ہے اور واپسی پر اللہ کافضل مانگتے ہوئے باہر آنا ہے کیونکہ باہر کا روبار ہمنت ومز دوری کے ذریعہ ہی اللہ کے فضل کو تلاش کرنا ہوتا ہے۔

> [56] بَابِ مَا يَقُولُ إِذَا دَخَلَ السُّوقَ بازار میں داخل ہونے کی دعا

> > 2734 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا أَزْهَرُ بْنُ سِنَان

عَنْ مُحَمَّدِ بُنِ وَاسِعِ قَالَ قَدِمْتُ مَكَّةَ

فَلَقِينتُ بِهَا أَحِيُ سَالِمَ بُنَ عَبُدِ اللَّهِ فَحَدَّثَنِي عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَـمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ

النَّبِيِّ عَلَيْ قَالَ مَنْ دَخَلَ السُّوقَ فَقَالَ لَا إِلَىٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ المُلُكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيى وَيُمِيتُ

عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ كَتَبَ اللَّهُ لَهُ أَلُّفَ أَلُفِ حَسَنَةٍ وَمَحَا عَنُهُ أَلُفَ أَلُفِ سَيَّنَةٍ

وَرَفَعَ لَهُ أَلُفَ أَلُفِ ذَرَجَةٍ قَالَ فَقَدِمُتُ

خُرَاسَانَ فَلَقِيتُ قُتَيْبَةَ بُنَ مُسُلِم فَقُلُتُ إِنِّي أَتَيْتُكَ بِهَ دِيَّةٍ فَحَدَّثُتُهُ فَكَانَ

يَرُكَبُ فِي مَوْكِبِهِ فَيَأْتِي السُّوقَ فَيَقُومُ فَيَقُولُهَا ثُمَّ يَرُجعُ . 9

محمد بن واسع كہتے ہيں ميں مكه گيا تو اينے بھائي سالم بن عبداللہ سے ملا انہوں نے اینے والد سے باین کیا۔وہ ان کے دادا سے نقل کرتے تھے نبی سے این نے فرمایا: "جو محض بازار میں داخل ہووہ کیے:''اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں وہ اکیلا ہے اس کا کوئی شریک نہیں اس کے لئے بادشاہی ہے اوراسی کے لئے تعریف ہے وہی زندہ کرتا ہے اور وہی مارتا ہے وہ ہمیشہ زندہ رہنے والا ہے اسے موت بھی نہیں آئے گی۔اس کے ہاتھ میں بھلائی ہے اور وہ ہر چیز یر قادر ہے۔' تو اللہ تعالی اس کے لئے دس ہزار نیکیاں لکھ دے گا۔اوراس کے دس ہزار گناہ مٹائے گا اور دس ہزار درجے بلند كرے گا محمد بن واسع كہتے ہيں: ميں خراسان كيا تو قتیبہ بن مسلم سے ملا میں نے کہا: میں آ ب کے لئے ایک تخفہ لایا ہوں۔میں نے اس سے یہ حدیث بیان کی۔وہ اینے سواروں میں سوار ہوکر بازار میں جاتے تھے۔ کھڑے ہوکر اس طرح پڑھتے تھے اور پھر واپس آتے۔

ف واند : (۱) یه چند کلمات عظیم مراتب کا باعث میں لہذاان کے سیجنے اور پڑھنے کا اہتمام کرنا چاہیے (۲) سلف صالحین نیکیوں کے انتہائی دلدادہ ہوتے تھے ان کی ساری تگ و دوحصول اجر کے لیے ہوتی

❶ حسن بشواهده وطرقه: أخرجه الترمذي، كتاب الدعوات، باب ما يقول اذا دخل السوق(3428) وابن ماجه، كتاب التحارات،باب الاسواق و دخو لها (2235)

حكل يُتِنَى الْكَالِيْفِي الاستئذان 449 كتاب الاستئذان

اور وہ اس سے متلاثی رہتے یہی طرز فکر فلاح دارین کا سبب و ذریعہ ہے۔

[57] بَابِ تَسَمُّوا بِالسَّمِي وَلَا تَكَنُّوا بِكُنيَتِي نبی طفی یا م کے نام پر نام رکھنا مگر کنیت نه رکھنا

2735 - أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرِ عَنْ هِشَامِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ

عَنْ أَبِي هُورَيْوَةً قَالَ قَالَ رَسُولُ سَيْدِنَا ابو بريره وَلَيْنَهُ كَتِ بِين كه رسول الله طَيْنَا الله عَنْ أَبِي اللَّهِ عَلَيْ تَسَمَّوُا بِالسَّمِي وَلَا تَكَنُّوا فَرايا: "ميرےنام يرنام ركھومكرميرى كنيت نه ركھو-"

ىگنىتى 0

فواند: عرب چونکه اکرامااینے ساتھیوں کوکنیت سے بکارتے تھے لہذا کنیت کے عام استعال کے بسبب آپ طفی ﷺ نے اپنی زندگی میں اپنی کنیت رکھنے سے منع فرمادیا جیسا کہ محمدین حنیفہ وُٹائیڈ سے ابو واؤدمیں ہے کہان کے والدآپ طفائی اسے بوجھتے ہیں "یا رسول الله ان ولدِلی بعد ولد اسمیه باسمك و اكنيه بكنيتك قال نعم . " اك لله كرسول الرآپ كے بعد مير بيا ہوتو كيا ميں اس کا نام آپ کے نام اور اس کی کنیت آگی کنیت پر رکھ سکتا ہوں تو آپ مشے ایکا اجازت مرحمت فر مائی ۔ لہذا اب کوئی اپنی کنیت ابوالقاسم رکھ لے تو کوئی حرج نہیں

[58].... بَابِ فِي حُسُنِ الْأَسُمَاءِ اجھے ناموں کے متعکق

2736 حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا دَاوْدُ بْنُ عَمْرِو عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ أَبِيْ زَكَرِيَّا الْخُزَاعِيّ

فرمایا: ' دشهبیں قیامت کے دن تمہارے اورتمہارے بایوں كے نام سے بوارا جائے گالہذا اپنے نام اچھے رکھو۔''

عَنُ أَبِى الدَّرُ ذَاءِ قَسالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِنْ إِنَّكُمُ تُلْعَوُنَ يَوُمَ الْقِيَامَةِ بِأَسْمَائِكُمُ وَأَسْمَاءِ آبَائِكُمُ فَأَحْسِنُوا أَسْمَائَكُمُ . ٥

[◘]متـفـق عـليه: أخرجه البخاري، كتاب المناقب،باب كتية النبي صلعم(3539)ومسـلم، كتاب الأداب،باب النهي عن التكنى بأبي القاسم.....(5562)

منقطع ضعيف: أخرجه ابو داؤد، كتاب الأدب، باب في تغيير الأسماء (4948)

الستئذان المراجع الاستئذان المراجع المستئذان المراجع المستئذان المراجع
فداند: نام رکھنا چونکہ بڑوں والدین کی ذمہ داری ہوتی ہے اس لیے ان کے ذیتے سیح کا بیت لازم ہے کہ وہ اس کا اچھا نام رکھیں ورنہ وہ حق میں خائن شار ہول گے۔

> [59].... بَابِ مَا يُسْتَحَبُّ مِنَ الْأَسْمَاء کون سے نام مستحب ہیں؟

2737 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرِ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ عَنْ نَافِع

عَن ابُن عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عِنْ تَا يَن ابن عمر وَاللهُ عَلَي كرسول الله عَنْ مَايا:

أَحَبُّ الْأَسْمَاءِ إِلَى اللَّهِ عَبْدُ اللَّهِ وَعَبْدُ " "الله كم محبوب نام عبدالله اور عبدالرحن بين"

الرَّحُمَن . 🏻

[60].... بَابِ مَا يُكُرَهُ مِنَ الْأَسُمَاءِ کون سے نام مکروہ ہیں؟

2738 - أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيِّ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنِ الرُّكَيْنِ عَنْ أَبِيهِ ·

نُسَيِّى أَرِقَّاتَنَا أَرْبَعَةَ أَسُمَاءٍ أَفُلَحُ وَنَافِعٌ مِي مِنْع كياكه بمارے غلاموں كے بيرچارنام بول-"افلح" نافع'ربارح' نحارح۔''

وَرَبَاحٌ وَيَسَارٌ. ٥

تقول أَنَّمُ هو فلا يكون فيقول لا . "آبكت بين (ان عاريس ساك نام ليت موسة) وهوبال ہے اگر وہ نہ ہوتو جواب دینے والا کہتا ہے کہ بیں مرادیہ ہے کہ بیار کامعنی آسانی ،ریاح کا نفع جب کہ نافع وافلح کامعنی کامیابی ہے گویا یو چھا بیار ہے کہنے والا کہتا ہے نہیں اس میں اشارۃ ہے یہ بیار ،آ سانی نہیں ہے تو تنگی ہوگی ۔لہذااس غلط مفہوم سے بیخے کے لیے آپ نے ان سے روک دیا۔واللہ اعلم [61] بَابِ فِي تَغْيير الْأَسُمَاءِ نام تبديل كرنا

2739 حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ ابْنُ سَلَمَةَ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِع

[•] صحيح: أحرجه مسلم، كتاب الآداب، باب النهي عن التكني بابي القاسم وبيان مايستحب من الأسماء (5552) وابوداؤد، كتاب الأدب، باب في تغيير الأسماء (4949)

[◙] صمعيح: أخرجه مسلم، كتاب الآداب،باب كراهية التسمية بالاسماء القبيحة وبنافع ونحوه(5564)وابوداؤد، كتاب الأدب،باب في تغيير الاسماء القبيحة (4958) والترمذي، كتاب الأدب،باب مايكره من الاسماء (2836)

451 کی گیاب الاستنذان کی المُعْلِينَ الْمُعْلِينَ الْمُعْلِينِ الْمُعِلِي الْمُعْلِينِ الْمُعْلِينِ الْمُعْلِينِ الْمُعِلِي الْمُعْلِينِ الْمُعِلِي الْمُعْلِينِ الْمُعِلِي الْمِعِلِي الْمُعِلِي الْمِعِلِي الْمُعِلِي الْمُعِلِي الْمُعِلِي الْمُعِلِي الْمُعِلِي الْمِعِلِي الْمُعِلِي الْمُعِ

سيّدنا ابن عمر وَلَيْنَهُ كَتِيعَ مِين كه ام عاصم كو ْعاصيه كما جاتا تفارتو نبی طفی میلم نے اس کا نام جمیلہ رکھا۔

حَملَةً. ٥

2740 حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَطَاءُ بْنُ أَبِي مَيْمُونَةَ عَنْ أَبِي

بَرَّةَ فَسَمَّاهَا النَّبِيُّ عِلَيُّ زَيُنَبَ . 🍳

عَن ابُن عُـمَرَ أَنَّ أُمَّ عَاصِم كَانَ يُقَالُ

لَهَا عَاصِيَةُ فَسَمَّاهَا النَّبِيُّ عِنْكُمْ

عَنُ أَبِي هُ رَيْرَةَ قَالَ كَانَ السُّمُ زَيْنَبَ ﴿ سَيِّدِنَا الِوَهِرِيرَةَ وَالنُّفَوُ كُتِّ مِينَ نَيْبِ كَا نَامُ بُرَّهُ عَمَا تُو نبی طشی کی اس کا نام زینب رکھ دیا۔

فوائد: معلوم ہوا اگر کوئی نام بروں کی نادانی و نامجی کی بناء پر غلط رکھا گیا ہوتو اسے بدلا جا سکتا ہے۔ [62] بَابِ فِي النَّهِي عَنُ أَنُ يَقُولَ مَا شَاءَ اللَّهُ وَشَاءَ فُلانٌ

الله نے اور فلال نے جاہا ' کہنے کی ممانعت

2741- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ دِبْعِيّ بْنِ

ثُمَّ شَاءَ مُحَمَّدٌ. 9

عَن الطُّفَيُل أَخِي عَائِشَةَ قَالَ قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْمُشُرِكِينَ لِرَجُلِ مِنَ الْمُسُلِمِينَ نِعُمَ الْقَوْمُ أَنْتُمُ لَوُكَا أَنْكُمُ تَقُولُونَ مَا شَاءَ اللُّهُ وَشَاءَ مُحَمَّدٌ فَسَمِعَ النَّبِيُّ عَلَيْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَشَاءَ مُحَمَّدٌ وَلَكِنُ قُولُوا مَا شَاءَ اللَّهُ

سیدہ عائشہ وظافیا کے بھائی طفیل والنیظ کہتے ہیں مشرکوں کے کسی آ وی نے مسلمانوں کے کسی آ وی سے کہا: ''تم کیا ى اليجه سف الرتم اس طرح كبته: "جو الله اورمحد في حابا<u>۔'' نبی منطع کی</u> نے سنا تو فرمایا:''ایسے نہ کہو: جو اللہ اور محدنے حاماً البتد بوں کہو: جواللدنے حام پھرمحدنے حاما۔

فوائد: الله کے برابر کسی کا نام بولنا اگرچہوہ پیغیمرآ خرالزماں ہی کیوں فد جول غلط و ناجا زنہ

[◘] صحيح; أخرجه مسلم، كتاب الآداب، باب استحباب تغيير الاسماء القبيحة الى حسن..... (5570) وابن ماجه كتاب الأدب،باب تغيير الاسماء(3733)

②متـفـق عـليـه: البـخاري، كتاب الأدب،باب تحويل الاسماء الى اسم احسن منه (6192) ومسـلم، كتاب الأداب،باب استحباب تغيير الاسماء القبيحة الى حسن (5572)

[🗗] صحيح: أخرجه ابن قانع في معجم الصحابه (489)

الاستئذان كالمراجع الاستئذان كالمراجع المستئذان كالمراجع المستئذان كالمراجع المستئذان كالمراجع المستئذان كالمراجع المستئذان كالمراجع المراجع ا

کیونکہ آپ منظیمین اللہ کی منشاء ورضا کے تابع ہیں جیسا کہ آپ چاہت کے باوجود اپنے چیا ابوطالب کو کلمہ نہ پڑھا سکے اور نہ ہی آپ کوان کے حق میں دعا خیر کی اجازت ملی معلوم ہوا منشاء ومرضی اللہ ہی کی کارگرہے باقی ہرہستی اس کی منشاء کے تابع ہے۔

[63] بَاب لَا يُقَالُ لِلْعِنَبِ الْكُرُمُ انگوركُ 'كرم' كَهْنِي كَمِمَانْعت

2742 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ هُوَ ابْنُ إِسْحَقَ عَنْ صَالِحِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْأَعْرَجِ

عَنُ أَبِى هُورَيُونَ قَالَ قَالَ دَسُولُ سَيْدنا ابو بريه وَلَيْنَ كَتَى بِين كه رسول الله طَيْنَ اللهِ عَنُ أَبِى هُورَ الله طَيْنَ اللهِ عَنْ أَبِى هُورَ مَنْ الله طَيْنَ اللهِ عَنْ أَبِي اللهِ عَلَى اللهُ
فدوائد المرت عرب الكوركوكرم الله ليم كتبت تقد كه يشراب پينه واليكوسخاوت كرف اورعزت سي مرفراز كرتى تقى كيكن جب شراب حرام موكى تو آپ طيخ آيا في الله كاكريم سي روك ويا اوراس كي تحقير كي بناء پراس سي مينام چين ليامسلم كي روايت مين لفظ بين "فان السكرم قلب المومن" يقينا كرم، عزت والاموكن كاول بي مرادعزت فقط بنده موكن كي ميراث ہے۔

[64] بَابِ فِي الْمُزَاحِ نَدَاقَ كَرِنَا

2743 حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِم عَنْ عَبْدِ اللهِ بْن عُبَيْدِ

عَنُ أَنَّ سِ قَالَ كَانَ غُلامٌ يَسُوقُ سِيدنا ابن عباس فِللَّهُ كَهَ بِي المِك غلام تما جو نِي طِيَّ اللَّهَ بِأَذُوا جِ السَّبِيِ عِلَيُّ فَقَالَ يَا أَنْجَشَهُ كَلام الرواح كَ اونوْل كو بانك ربا تما اور كيت كايا كرتا رُوَيُدًا سَوُقَكَ بِالْقَوَادِيرِ . ٥ تما _ آپ نے فرمایا: "اے انجھ ! شیشوں كو آ مِثَلَّى ہے

[♣] متفق عليه: أخرجه البخاري، كتاب الأدب، باب لاتسبو الدهر (6182) ومسلم، كتاب الألفاظ، باب كراهية تسمية العنب كرمًا (5832)

اسناده واه : ل كن عديث مفق عليب أخرجه البخارى في الأدب باب مايجوز من الشعرو الرجز و الحداء (6149)
 ومسلم، كتاب فضائل باب رحمته النبي صلعم للنساء (2322)

فوائد: انجشة آپ اللي اللي عورتوں كى سواريوں كاهدى خواں تقاليمنى بيسفر ميں جب اپنى متن ميں جب اپنى متنم آواز سے اشعار گنگناتا تو سوارياں جموم كرتيز بھا گئے لگتيں اس ليے آپ اللي اللي آئے الله عورتيں شيشوں كى مانند ہيں اپنى لے طرز ذرا ملكى ركھوتا كه سواريوں كے تيز بھا گئے سے كہيں عورتيں چوٹ نہ كھا حاكم س

[65] بَابِ فِی الَّذِی یَکُذِبُ لِیُضُحِکَ بِهِ الْقَوْمَ وہ خص جولوگوں کو ہنسانے کے لئے جھوٹ بول ہے

2744 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا

بَهُ زِبن حكيم، عن أبيه ، عن جدّه قَال: سَمِعُتُ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَقُولُ: وَيُلُّ لِللهِ ﷺ يَقُولُ: وَيُلُّ لِسَكَ ذِبُ وَيُلُّ لَيْهُ! وَيُلُّ لَلهُ! وَيُلُّ لَلهُ! وَيُلُّ لَلهُ! وَيُلُّ لَكُ اللهُ الل

بہر بن حکیم اپنے والد سے بیان کرتے ہیں انہوں نے کہا:
میں نے رسول اللہ مطابع آیا کو یہ فرماتے ہوئے سا: "اس مخص پر افسوس ہے جو بات کرتے ہوئے صرف اس لئے جموف بولتا ہے تا کہ لوگ ہنسیں ۔اس پر افسوس ہے اس پر افسوس ہے۔"
افسوس ہے۔"

فواف : معلوم ہوالوگوں کو ہنانے کے لیے جھوٹ بولنا یہ باعث وعیداور کبیرہ گناہ ہے یہ انتہائی پرخطر معاملہ ہے جس میں عموما ہم چیثم پوٹی کر جاتے ہیں حالاں یہ زبان اور کانوں کا لطف کل کوظیم خسارے کا باعث بننے والا اس لیے یہ انتہائی توجہ طلب اور حساس معاملہ ہے۔

[66].... بابٌ فِی الشِّعُرِ شعرکها

2745 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْحَقَ عَنْ يَعْقُوبَ بْن غُتْبَةَ عَنْ عِكْرِمَةَ

سیّدنا ابن عباس والفید کہتے ہیں کہ نبی مطبّع آیا نے امیہ بن ابوصلت کے دوشعروں کی تصدیق فرمائی ۔اس نے کہا:

عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ قَالَ صَدَّقَ النَّبِيُّ عِنَّا أُمْيَةَ بُنَ أَبِى الصَّلُتِ فِى بَيْتَيُنِ مِنَ الشِّعُر فَقَالَ:

حَكْرُ لِيُسْتَلَمُونَ فِي الْمُسْتَلُمُونَ فِي الْمُسْتِلُونَ فِي الْمُسْتِلُونِ فِي الْمُسْتِلِينِ فِي الْمُلِينِ فِي الْمُسْتِلِينِ فِي الْمُسْتِلِينِ فِي الْمُسْتِلِينِ

دَجُلٌ وَثَـوْدٌ تَـحْـتَ دِجْـلِ يَـمِيـنِـهِ وَالـنَّسْـرُ لِلْأُخْـرَى وَلَيْستٌ مُـرْصَـدُ

''تمام چیزیں اس طرح اللہ تعالیٰ کے قبضہ قدرت میں ہیں جس طرح آ دمی اور ایک بیل اس کے دائیں پاؤں کے نیچے ہیں۔اور گدھ دوسرے پاؤں کے نیچے اور ایک شیرے جو گھات لگایا گیا ہے۔''

فَقَالَ النَّبِيُّ عَلَىٰ صَدَقَ قَالَ: توني الشَّمَيِّنَ فِ فرمايا: "اس في كي كها-"اس في كها:

وَالشَّمْسُ تَطْلُعُ كُلَّ آخِرِ لَيْلَةٍ حَـمْرَاءَ يُصِيحُ لَـوْنُهَا يَتَـوَرَّهُ

"سورج ہررات کے بعدسرخ رنگ پر نکاتا ہے پھراس کا رنگ گلابی ہونے لگتا ہے۔"

فَقَالَ النَّبِيُّ عَلِيًّا صَدَقَ قَالَ

تو نی مطفی کیا نے فر مایا: "اس نے سی کہا۔ "اس نے کہا:

تَاأَبَى فَمَا تَطْلُعُ لَنَا فِي رِسْلِهَا إِلَّا مُصِعَدَ اللَّهُ وَإِلَّا تُصِجْلَدُ

''وہ انکار کرتے رہے اور آ ہتی اور سکون سے ہمارے لیے طلوع نہیں ہوتا گر جب کہ اس پر سختی کی جائے ورنداس کوکوڑے مارے جائیں گے۔''

فَقَالَ النَّبِيُّ عَلَيْ صَدَق . • نبى السَّيَوَيْمَ نَ فرمايا: "اس نے تج كہا۔"

فواند: بِمقصد شعر و شاعری کرنایا اس کا سننا ضیاع وقت اور باعث خمارہ ہے ہاں نعت گوئی اور جنگی ، اسلای ترانے اور بامقصد اشعار کا سننا ان میں دلچیں لینا آپ مطفظ آتیا ہے تابت ہے۔ عمر و بن شدید سے مروی ہے کہ میراباپ آپ کے پیچھے سواری پر سوار تھا کہ آپ مطفظ آتیا نے اس سے پوچھا کہ کیا تمہیں اُمیہ بن ابی صلت کے پچھا شعاریا و بی لہذا شدید سناتے گئے اور آپ مزید کا نقاضا کرتے گئے حتی کہ انہوں نے سو اشعار سنا دیے۔ (مسلم)

[67] بَابِ فِي إِنَّ مِنَ الشِّعُرِ حِكُمَةً بِعض شعر فائدہ مند ہوتے ہیں

2746 أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجِ عَنْ زِيَادٍ هُوَ ابْنُ سَعْدِ أَخْبَرَنِي أَنَّ ابْنَ شِهَابٍ أَخْبَرَهُ

[€] ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 693/8(6064) والطبراني في الكبير 233/11

الستنذان (كتاب الاستنذان (كتاب الاستنذان (كتاب الاستنذان ()

عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ هِشَامٍ عَنْ مَرْوَانَ بْنِ الْحَكَمِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْأَسْوَدِ ابْن عَبْدِ يَغُوثَ.........

ابی بن کعب کہتے ہیں کہ نبی طفی آنے فرمایا:''بعض شعر فائدہ مند ہوتے ہیں۔''

فوائد: بسا اوقات الساہوتا ہے کہ متعلم جوایک بات دس منٹ میں سمجھانے سے قاصر ہوتا ہے وہ شاعر کے ایک شعر سے دو منٹ میں سمجھ آجاتی ہے اور شعر کا ایک ایک مصرعد ایک ایک مضمون کا احاطہ کیے ہوئے ہوتا ہے۔ لہذا کسی وقت ایسے اشعار میں دلچیں لینا میہ باعث فائدہ ہے جیسا کہ سابقہ فائدے میں گزر چکا ہے۔

[68].... بَابِ لَأَنُ يَمُتَلِءَ جَوُفُ أَحَدِكُمُ

بآب

2747 ـ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا حَنْظَلَةُ عَنْ سَالِمٍ

عَنِ ابُنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَأَنُ يَمْتَلِءَ جَوُفُ أَحَدِكُمُ قَيْحًا أَوْ دَمَا خَيْرٌ مِنْ أَنْ يَمُتَلِءَ شِعُوًا. ۞

عَنُ أُبَىِّ بُن كَعُب عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ

إِنَّ مِنَ الشِّعُر حِكْمَةً. ٥

فوائد: (۱) بخاری و مسلم میں " یَوْیه" کے لفظ آتے ہیں کہ وہ پیپ وخون اس کے پیٹ کو خراب کر دیں یعنی اشعار کے بالمقابل میہ چیزی اس کے لیے باعث خیر ہے۔ (۲) و نیاوی طور پر ہرآ دئی جس قدر بھی تابی ہے دو چار ہو جائے حتی کہ موت کی گھاٹیوں پر آ وارد ہواگر اس کا دین محفوظ رہے تو بیہ مودا اس کے لیے خیار کے کانہیں ۔ (۳) بخاری والله اس روایت پر یہ باب باندھتے ہیں: "باب ما یکرہ ان یکو ن الغالب علی الانسان الشعر النے" کہ اشعار بندے پراس قدر غالب آ جائیں کہ وہ ذکر اللہ علم وقر آن کی راہ میں آڑے آ جائیں تو یہ ناپندیدہ ہے۔ "لہذا یہ باب ندکورہ اور سابقہ حدیث کے درمیان تطبیق کی صورت بھی واضح کر دیتا ہے۔ (فافھ م ایّد ك الله)

 [◘] صحيح: أخرجه البخاري، كتاب الأدب، باب ما يجوز من الشعرو الرجز والحداء وما يكره منها (6145) وابوداؤد،
 كتاب الأدب، باب ماجاء في الشعر (5010) وابن ماجه، كتاب الأدب، باب الشعر (3755)

[◙] صحيح البخاري، كتباب الأدب، باب مايكره أن يكون الغالب على الإنسان الشعر حتى يصده عن ذكر الله والعلم والقران (1654)وابوداؤد، كتاب الأدب، باب ماجاء في الشعر (5009)



• ۲ ومن كتاب الرقاق زى (رم دلى، رس) كمتعلق

"السرق ق " بیرقی کی جمع جو کہ باب رق یسرِ قُ سے جس کامعنی پتلا ہونا ہے، اگراس کے بعدلام آئے تو اس کا مطلب رحم کرنا ، ترس کھانا وغیرہ ہوتا ہے۔ (المنجد) یہاں سے مراد الی احادیث ہیں جن سے انسان کے دل نرم پڑ جا کیں اور دنیا سے بے رغبتی اور آخرت کی جانب توجہ ہو جائے۔

ا مام سیوطی براللیے فرماتے ہیں کہ ان احادیث کا نام بیاس لیے رکھا گیا ہے چونکہ بیزمی ورحمت پیدا کرتی ہیں (المعرفاة)

[1] بَابِ مَنُ يُرِدِ اللَّهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهُهُ فِي الدِّينِ جَسَّخُص كے ساتھ اللہ بھلائی كا ارادہ كرے اسے دين كى مجھ دے ديتا ہے

2748 - أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ إِسْمَعِيلَ بْنِ جَعْفَرٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِنْدِ عَنْ أَبِيهِ

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ سَيِّدنا ابن عباس رَ اللهُ عَبِّ بِيس كه رسول الله طَيُّ اللهِ عَبِ الله عَلَيْ مَنْ يُودُ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهُهُ فِى فَرمايا: ''جس شخص سے الله بھلائی كا اراده كرے اسے دين كى سجھ دے ديتا ہے۔'' اللّذِينِ. • كى سجھ دے ديتا ہے۔''

فوائد:(۱) مال و دولت کی فراوانی بیاللہ کی طرف سے خیر کی دلیل نہیں بلکہ اس کا انحصار بندے پر ہے کہ وہ اس کے خرج کو خیر کا باعث بناتا ہے یا شرکا۔

(۲) دین کی سمجھال جانا بیانسان کے بہترین ہونے کی دلیل ہے۔

[◘] صحيح: أخرجه الترمذي، كتاب العلم، باب اذا اراد الله بعبد خيرا يفقهه في الدين(2645) واحمد1/306

الكَلْمُ الكَالِمُ عَيْنَ الكَالِمُ عَيْنَ الكَالِمُ عَيْنَ الكَلْمُ عِينَ الكَالِمُ عَيْنَ الكَالْمُ عَيْنَ الكَالِمُ عَيْنَ عَلَيْكُ عَلِيكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلِيكُ عَلَيْكُ عَلِيكُ عَلَيْكُ عَلِيكُ عَلَيْكُ عَلِيكُ عَلَيْكُ عَلِيكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلِيكُ عَلَيْكُ عَلِيكُ عَلَيْكُ عَلِيكُ عَ

[2] بَابِ فِي الصِّحَّةِ وَالْفَرَاغِ صحت وفراغت كِمتعلق

2749_ أَخْبَرَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ هُوَ ابْنُ سَعِيدٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَاهُ يُحَدِّثُ

سیّدنا ابن عباس بن الله کہتے ہیں کہ رسول الله طلط آنے فی فرمایا: ''صحت و فراغت الله کی نعمتوں سے دونعمتیں ہیں۔ جن کے بارے میں بہت سے لوگ خسارے میں ہیں۔'' (۲) ان دونعتوں کا حق ہے کہ ان کی موجودگی میں زیادہ سے زیادہ اللہ کی عبادت کی جائے۔ ابن جوزی براللہ فرماتے ہیں کہ بسا اوقات آ دمی ضحے تو ہوتا ہے لیکن اپنی معاشی مصروفیات سے فراغت حاصل نہیں کرسکتا اور بھی فارغ تو ہوتا ہے لیکن ضحے نہیں ہوتا اور اگر دونوں چیزیں حاصل ہو جا کمیں تو اطاعت کے معالمے میں ستی کا شکار ہو جا تا ہے ، تو یہی آ دمی خسارے میں ہے۔ حاصل کلام ہے ہے کہ دنیا آ خرت کی تھیت ہی بہاں کی گئی تجارت کا نفع آ خرت میں جا کر ملے گا۔ جس نے یہاں صحت و فراغت کو اللہ کی اطاعت میں صرف کیا وہ تو قابل رشک ہوگا اور جس نے انہیں اللہ کی معصیت میں صرف کر دیا وہ خسارے میں ہوگا کیونکہ صحت کے بعد بیاری اور فراغت کے بعد مصروفیت راہ تک رہی ہوتی ہے اگر ان دونوں سے انسان نے بھی جائے تو بڑھایا انسان کا منتظ ہوتا ہے۔ (تنقیح الرواة: ٤/٧)

2750 ـ أَخْبَرَنَا عَـمْرُو بْنُ عَـوْنٍ أَخْبَرَنَا خَـالِـدٌ يَعْنِى ابْنَ عَبْدِ اللهِ عَنْ خَالِدِ الْحَذَّاءِ عَنْ عِكْرِمَةَ

❶صحيح: أخرجه البخارى، كتاب الرقاق، باب ماجاء في الرقاق وان لاعيش الأخرة (6412) واحمد 258/1 والحمد 258/1 والحمد 1/308/

حَكَرُ لِيَنْ الْكَالِيِّي اللَّهِ اللَّهُ اللَّاللَّهُ اللَّاللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا

سیّدنا ابن عباس مِنْ النَّهُ کہتے ہیں نبی طِنْ اَیْ آیا نے فرمایا: ''جو شخص لوگوں کی وہ بات سنیں جسے وہ سنانا نا پیند کرتے ہوں اس کے کان میں سیسہ پیگھلا کر ڈالا جائے گا۔''

عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ عَلَىٰ قَالَ مَنُ السَّبِيِّ عَلَىٰ قَالَ مَنُ السَّتَ مَعَ إِلَى حَدِيدِثِ قَوْمٍ وَهُمُ لَهُ كَارِهُونَ صُبَّ فِي أُذُنِهِ ٱلْآنُكُ. • كَارِهُونَ صُبَّ فِي أُذُنِهِ ٱلْآنُكُ. • كَارِهُونَ صُبَّ فِي أُذُنِهِ ٱلْآنُكُ. • كَارِهُونَ صُبَّ فِي أُذُنِهِ ٱلْآنُكُ.

فوائد:(۱)اسلام تہذیب کی اعلیٰ قدریں فراہم کرنے والا ایک عظیم ندہب ہے۔ (۲) مسلمان کی جاسوی کرنا حرام ہے۔ (۳)اگر بات کرنے والے اخفاء کا ارادہ ندر کھتے ہوں تو ان کی بات سی جاسکتی ہے۔ (۴) اس پرعذاب کی وعیداس کے کبیرہ گناہ ہونے پر دال ہے۔

2751- أَخْبَرَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْلُحَقَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْلُحَقَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِسْلُحَقَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ أَبِي الطُّفَيْلِ

سیّدنا علی خلیّنهٔ کہتے ہیں کہ رسول الله طلطے آیا نے فرمایا: "(نامحرم عورت پر) پہلی نظر کے بعد دوسری نظر نہ ڈالو کیونکہ پہلی نظر جائز ہے اور دوسری نا جائز ہے۔" عَنُ عَلِي قَالَ لِى قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ اللهُ وَلَى لَا تُتَبِعِ النَّاطُرَةَ النَّاطُرَةَ فَإِنَّ الْأُولَى لَلْكَ وَالْآخِرَةَ عَلَيْكَ . ٥

فوائد:(۱) نظر برائی کی ابتدا کا ذریعہ ہے اور انتہا شرمگاہ پر ہوتی ہے وہ یا تو اس کی تقدیق کر دیتی ہے یا تکذیب ۔ چنا نچہ ابتدا چونکہ نظر سے ہوتی ہے اس لیے اس کی حفاظت کو خصوصی طور پر بیان کیا گیا ہے۔ بخاری میں ہے، آپ طیفتہ آئے نے فرمایا: ((فَاحْفَظُوا الرَّأْسَ وَمَاوْعی)) ''مراور جواس میں ہے اس کی حفاظت کرو۔'(۲) پہلی نظر چونکہ غیر اختیاری اور اچا تک ہوتی ہے، لہذا آیت ﴿لا یُسْکِلِفُ اللَّهُ اللَّه

[4] بَاب فِی حِفُظِ اللِّسَانِ زبان کی حفاظت کرنا

2752 - أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ يَعْلَى بْنِ عَطَاءٍ قَالَ سَمِعْتُ

[◘] صحيح: أخرجه البخاري، كتاب التعبير، باب من كذب في حلمه (7042) وابو داؤد، كتباب الأدب، باب في الرؤيا (5024) والترمذي، كتاب اللباس، باب ماجاء في المصورين (1751)

[🗨] حيد: سلمه بن الوطفيل كوابن حبان ن الثقات 4/318 من وكركيا ب، التوجه ابن ابي شيبه 4/326

عَبُدَ اللّهِ بُنَ سُفُيانَ عَنُ أَبِيهِ قَالَ قُلُتُ عبدالله بن سفيان النه والدسة بيان كرت بين انهول عبد الله بن سفيان عن أبيه قال قُلُتُ عبدالله بن سفيان النه والدسة بيان كرت بين انهول يسار وسلول الله! بحصر اسلام كا ايبا كام الإسكام لا أسال عنه أحدًا قال اتّق بتائي كهاس ك بعداس كم تعلق بوجهن كي حاجت نه هو؟ الله له السّتَقِمُ قَالَ قُلْتُ ثُمَّ أَى شَيء آپ نے فرمایا: "الله نه ورو پهراس پرقائم رمو" من نه الله فَاشَارَ إِلَى لِسَانِهِ. • كها: پهركون ي چيز؟ آپ نے اپنى زبان كي طرف اشاره كيا۔

فواند:(۱) سحابہ رفی تسید المور دنیا کے ساتھ ساتھ امور دین کو بھی اپی دلجی کا محور بنائے ہوئے سے جو کہ انہیں دین میں بر مور تی کے اقدام پر برا یختہ کے رکھتا۔ (۲) آپ کی بیا متیازی صفت تھی کہ آپ کو جامع کلمات عطا کیے گئے تھے۔ (۳) تقویل پر استقامت الیی چیز ہے جس کو اپنا لینے کے بعد دینی اُمور میں اقدام ور تی کے لیے مزید کئی چیز کی ضرورت نہیں رہتی کیونکہ تقویل انسان کو نیکیوں کی طرف راغب کرنے اور برائیوں سے بچنے کی تلقین کرتا ہے یعنی اس سے انسان نیکی کا مرقع بن جاتا ہے۔ (۳) انسان کو ہلاکتوں میں والے والی سب سے بری چیز بیازبان ہی ہے اس لیے آپ مطبق آئے فرمایا: ((مَنْ يَضْمَنْ لِيْ مَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ أَضْمَنْ لَهُ الْجَنَّةَ .)) (متفق علیہ)" جو مجھے زبان اور شرمگاہ کی حفاظت کی صانت وے وے میں اسے جنت کی صانت ویتا ہوں۔" اس طرح ترندی کی حدیث میں ہے ((وَ هَلْ مَنْ النَّاسَ فِی النَّارِ عَلَی وُ جُوْهِ هِمْ إِلَّا خَضَائِلُدُ أَلْسِسَتِهِمْ .)) "لوگوں کو زبانوں کا کیا ہی جہم میں اوند ھے منہ گرانے کا سبب ہوگا۔"

چنانچہ زبان کے معاملے میں انتہا در ہے کی احتیاط کی ضرورت ہے۔

2753 أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ يَعْنِي ابْنَ إِسْمَعِيلَ بْنِ مُجَمِّعٍ قَالَ أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ

عَنْ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ مُعَاذِ

سفیان بن عبداللہ کہتے ہیں: میں نے کہا: ''یا رسول اللہ!
مجھے ایسا کام بتائے جس کو میں مضبوطی سے تھام لول۔
آپ نے فرمایا: ''کہومیرا رب اللہ ہے۔ پھر اس پر قائم
رہو'' میں نے کہا: ''اے اللہ کے نبی! کون سی چیز ہے

عَنُ سُفُيَسانَ بُنِ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ قُلُتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مُرُنِى بِأَمْرٍ أَعْتَصِمُ بِهِ قَالَ قُلُ رَبِّىَ اللَّهُ ثُمَّ اسُتَقِمُ قَالَ قُلُتُ يَا نَبِىَّ اللَّهِ مَا أَكْفَرُ مَا تَحَوَّفُ عَلَىَّ قَالَ فَأَحَذَ

❶ صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الإيمان، باب جامع اوصاف الاسلام (18) والترمذي، كتاب الزهد، باب ماجاء في حفظ السان (2410) وابن ماجه، كتاب الفتن، باب حفظ اللسان في الفتن (3982)

460 کتاب الرقاق ک الكانتين الكانتين

جس سے میرے متعلق آپ کو خوف ہو؟ تو اللہ کے نی پاشنگاتی نے اپنی زبان کو پکڑا اور فر مایا: '' یہ۔''

2754- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلِ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي سُفْيَانَ... عَنُ جَابِرِ قَالَ قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الْإِسُلَام أَفُضَلُ قَالَ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنُ لِسَانِهِ وَ يَدِهِ. ٥

سيّدنا جابر رضافية كيت بن كها كيا: "ما رسول الله! كون سا مسلمان افضل ہے؟ آپ نے فرمایا: "وہ شخص جس کی زبان اور ہاتھ ہے مسلمان محفوظ رہیں۔''

ف**ے انسد**:اسلام یومل پیراہونا انسان کی کامیابی کا باعث ہوگا۔ جب کہ اس کے مقالعے میں برائیاں انسان کی کامیانی کی راہ میں رکاوٹیں ہوں گی۔ کبیرہ گناہ تو انسان سوچ سمجھ کر کرتا ہے اور بسااوقات نادم ہوکر تا ئب بھی ہو جاتا ہے لیکن زبان ہے کسی کو تنگ کرنا یا ہاتھ سے چھیٹر چھاڑ عموماً لوگ ایسی چیزوں کو درخوراعتنانہیں سیجھتے نیتجاً الیی غلطیاں بڑھتے بڑھتے برائیوں کے بہاڑ اور کامیابی کی راہ میں جائل سنگ گراں بن جاتے ہیں۔جیبا کہآ پمفلس کی تعریف کرتے ہوئے فرماتے ہیں کہ قیامت کے روز ایک آ دمی نیکیوں ے مالا مال آئے گا ((وَيَا أَتِي قَدْ شَتَمَ هٰذَا وَأَكُلَ مَالَ هٰذَا وَسَفَكَ دَمَ هٰذَا اَوْ كَمَا قَالَ....) لہٰذا ان زبان اور دست دراز بوں کی وجہ ہے اس کے سارے اعمال مظلومین میں بانٹ دیے جا کیں گےجتی ۔ کہ اعمال ختم ہو جانے پرلوگوں کے گناہ اس کے ذمے لگا دیے جائیں گے۔نتیجاً نیکیوں کے پہاڑ برائیوں کے پہاڑوں میں تبدیل ہو جائیں گے اور انسان جنت میں جاتا جاتا جہنم کا ایندھن بن جائے گا۔ (العیاذ باللہ)

لہذا زبان اور ہاتھ کا درست استعال کامیابی کی گارٹی ہے۔

خاموش رہنے کے متعلق

5_7..... بَابِ فِي الصَّمُتِ

2755 - أَخْبَرَنَا إِسْحَتُ بُنُ عِيسَى عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُقْبَةَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَمْرِو عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْحُمُلِيِّ

سيّد نا عبدالله بن عمرو بن العاص وتأنيس كيتے ہيں كه رسول

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عَمُرو بُنِ الْعَاصِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَىٰ مَنْ صَمَتَ نَجَا. ٥

نَبِي اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْهُمْ قَالَ هَذَا. ٥

• صحيح: سابقة تخ ت ملاحظة فرمائين

صحيح: أعرجه مسلم، كتاب الإيامان ، باب بيان تفاضل الإسلام وأي اموره افضل (161).

[۞] قـوى بشـواهـد: أحـرجـه التـرمـذي،كتـاب صفة القيامة والرقائق والورع ، باب(50)(والـحديث 2501) نيزوكيك (الترغيب والترهيب) للمنذري536/3وفتح الباري151/7

الرقاق كالمراجع المرقاق كالمراجع المراجع ال

فوائد: سساس "صمت" کاتعلق بُرے کلام سے ہے کہ بُری بات کرنے سے خاموش رہے تو بہتر ہے۔ ایک اور صدیث میں آپ بیش تی نظر مایا: ((لا تُکٹِرُ وا الْککلام بِغَیْرِ ذِکْرِ اللّٰهِ فَانَّ کَثْرَةَ الْکلامِ بِغَیْرِ ذِکْرِ اللّٰهِ فَسُوةٌ لِلْقَلْبِ وَإِنَّ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنَ اللّٰهِ الْقَاسِيْ.)) (ترمذی ،حسن) الْککلامِ بِغَیْرِ ذِکْرِ اللّٰهِ قَسْوةٌ لِلْقَلْبِ وَإِنَّ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنَ اللهِ الْقَاسِيْ.)) (ترمذی ،حسن) ذکر الله کے علاوہ زیادہ کلام نہیں کرنا چاہیے کیونکہ ذکر کے علاوہ زیادہ کلام دل کی تخت کا باعث ہے۔ خت دل آ دمی سب سے زیادہ اللہ سے دُور ہوگا۔ سوذکر اللہ کی کثرت ، امور خیر میں زیادت کا باعث ہے۔

[6] بَابِ فِي الْغِيبَةِ غيبت كِمتعلق

2756 أَخْبَرَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنِ الْعَلاءِ عَنْ أَبِيهِ

سیدنا ابو ہریرة دخی نیک کہتے ہیں نبی کے آیا ہے کہا گیا: غیبت
کیا ہے؟ آپ نے فرمایا: ''غیبت یہ ہے کہتم اپنے بھائی
کی وہ باتیں کرو جے وہ نا پیند کرتا ہے۔'' کہا گیا: جو کچھ
میں کہتا ہوں وہ اگر میرے بھائی میں ہو؟ آپ نے
فرمایا: ''اگر اس میں وہ موجود ہے تو وہ غیبت ہے اگر وہ

عَنُ أَبِى هُرَيُرَةَ عَنِ النَّبِيِّ عَلَيُّ أَنَّهُ قِيلَ لَهُ مَا الْغِيبَةُ قَالَ ذِكُرُكَ أَخَاكَ بِمَا يَكُرَهُ قِيلَ وَإِنْ كَانَ فِي أَخِى مَا أَقُولُ قَالَ فَإِنْ كَانَ فِيهِ فَقَدُ اغْتَبُتَهُ وَإِنْ لَمُ يَكُنُ فِيهِ فَقَدُ بَهَتَّهُ. 0

بات اس میں نہ ہوتو وہ اس پر بہتان ہوگا۔''

فوائد:(۱) معلوم ہوا بھائی کی عدم موجودگی میں اس میں پائے جانے والے عیب کو بیان کرنا بشرطیکہ وہ اس بیان کونالپند کرتا ہو نیبت ہے۔ (۲) قرآن کی روسے بیرام ہے۔ اللہ تعالیٰ کا قول ہے ﴿ لَا يَعْفَتُ بَعْضُكُمْ بَعْضُكُمْ بَعْضَا﴾ "تم ایک دوسرے کی غیبت نہ کرو۔"حتی کہ اسے اپنے مردہ بھائی کا گوشت کھانے کے مترادف قرار دیا گیا ہے۔ (۳) اپنی طرف سے کسی مسلمان پر جھوٹا الزام لگانا بیہ بہتان ہے۔ (۴) پھے صورتیں ہیں جن میں غیبت کوعلاء نے جائز قرار دیا ہے۔ مثلاً مظلوم خص ،سلطان کے پاس کسی کے خلاف فریاد کرسکتا ہے۔ برائی روکنے کے لیے کسی سے مدوطلب کرنا مثلاً کسی سے کہنا کہ فلال بید براگام کرتا ہو ورنہ بیر کرام ہو ورنہ بیرام مے۔ فتو کی طلب کرتے ہوئے۔ مسلمانوں کی خیرخواہی، ان کوشر سے بچانے کی غرض سے کسی کی خرابی بیان کرنا مثلاً حدیث کے رواۃ پر جرح کرنا۔ اس طرح اگر کسی شخص کے بارے میں کسی حشورہ طلب کیا جائے تو مشورہ دینے والے پر لازم ہے اس آدمی کی نیکی یا برائی

[◘]صحيح: أخرجه مسلم، كتاب البرو الصلة، باب تحريم الغيبة (6536) وابو داؤ دكتاب الأدب، باب في الغيبة (4874)

عَيْنَ الْكَانِينَ الْكِلْوَالِينَ الْكَانِينَ الْكَانِينِينَ الْكَانِينَ الْكَانِينِ الْكَانِينَ الْكَانِينِ الْكَانِينَ الْكَانِينَ الْكَانِينِ الْكَانِي الْكِنِيلِي الْمَائِيلِينِ الْكَانِينِ الْكِلْمِينِ الْكِلْمِينِ الْمَائِيلِي الْمَائِيلِي الْمَائِيلِي الْمَائِيلِي الْمَائِيلِيلِي الْمَائِيلِي الْمَائِيلِي الْمَائِيلِيِيلِي الْمِيلِي الْمَائِيلِي الْمِنْلِي الْمَائِيلِي الْمَائِيلِي الْمِنْلِي الْمَائِيل

ہے آگاہ کر دے۔ اور اس طرح جب علاقے کا حکمران ، والی اُمورسلطنت صحح ادا نہ کرتا ہواس کی شکایت بڑے امیر سے کر دی جائے۔ اگر کوئی ظاہراً گناہ کا مرتکب ہوتا ہے مثلاً ظاہر فتق وبدعت میں مبتلا ہونے والا، شرالی وغیرہ ایسے مخص کی تشہیر کی جاسکتی ہے۔اگر کوئی مخص کسی عیب والے لقب سے مشہور ہوتو اسے اس لقب سے پکارنا مثلاً اعمیٰ ، احول ، اصم وغیرہ۔ (ان اُمور کے دلائل کے لیے دیکھیے: ریاض الصالحین،ص:۵۱)

[7].... بَابِ فِي الْكَذِب حجوب کےمتعلق

2757 ـ أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ إِدْرِيسَ الْأَوْدِيِّ عَنْ أَبِي إِسْلَحَ عَنْ أَبِي الْأَحْوَ ص

سیّدنا عبدالله کتنے ہیں کہ نبی اللّٰے اَنْ نے فرمایا: "برے راوی جھوٹ کے راوی ہیں اور جھوٹ کسی طرح بھی جائز نہیں نداق سے اور اور نہ کوشش سے اور نہ آ دی اس طرح کرے کہاہیے بیٹے سے وعدہ کر کے پھر وعدہ خلافی کرنے کیونکہ سچائی نیکی کی راہ دکھاتی ہے۔ اور نیکی جنت کی راہ دکھاتی ہے اور جھوٹ برائی کی راہ دکھاتا ہے اور برائی جہنم میں لے جاتی ہے۔اور سیج سے کہا جاتا ہے اس نے سیج کہا اور اجیما کام کیا اور جموٹے سے کہا جاتا ہے اس نے کہا جموث بولا اور برائی کی آ دمی سی بولٹا رہتا ہے حتی کہ اللہ کے نزد کے سیا ہی لکھا جاتا ہے آ دمی جھوٹ بولتا رہتا ہے حتی كداللد كے بال جمونا لكوريا جاتا ہے۔ "عبدالله كمتے مين: آپ نے ہم سے یہ بھی فرمایا: ''کیا میں تنہیں بتا دوں غصہ کے کہتے ہیں؟ غصہ وہی چغل خوری ہے جولوگوں کے درمیان فساد ڈالتا ہے۔''

أَنَّ عَبُدَ اللُّهِ يَسرُفَعُ الْحَدِيثَ إِلَى النَّبِي عَلَيْ قَالَ إِنَّ شَرَّ الرَّوَايَا رَوَايَا الُكَـذِب وَلَا يَصُلُحُ مِنَ الْكَذِب جَدٌّ وَلَا هَزُلٌ وَلَا يَعِدُ الرَّجُلُ ابْنَهُ ثُمَّ لَا يُنُحِزُ لَهُ إِنَّ الصِّدُقَ يَهُدِى إِلَى الْبِرّ وَإِنَّ الَّهِرَّ يَهُدِى إِلَى الْجَنَّةِ وَإِنَّ الْكَذِبَ يَهُ دِي إِلَى الْفُجُورِ وَإِنَّ الْفُجُورَ يَهُدِي إِلَى النَّارِ وَإِنَّهُ يُقَالُ لِلصَّادِقِ صَدَقٌ وَبَرَّ وَيُقَسالُ لِلُكَاذِبِ كَذَبَ وَفَجَرَ وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَصُدُقَ حَتَّى يُكُتَبَ عِنْدَ اللَّهِ صِلِيقًا وَيَكُذِبُ حَتَّى يُكُتَبَ عِنُدَ اللَّهِ كَذَّابًا وَإِنَّهُ قَالَ لَنَا هَلُ أُنْبَنُكُمُ مَا الُعَضَّهُ وَإِنَّ الْعَضْهَ هِيَ النَّمِيمَةُ الَّتِي تُفسِدُ بَيُنَ النَّاسِ. •

فوائد:(۱)"العضه" يد" فَتَحَ" باب سے جھوٹ بولنا، چغل خوری کرنا وغيره كمعنى مين آتا

الرقاق (463 كتاب الرقاق المحكم ہے۔اس کی جع ''عضون'' آتی ہے۔ (المنجد) (٢) جھوٹ ایک معاشرتی ناسور ہے، ایک حدیث میں ہے، آپ منظور آنے فرمایا کہ مومن بڑے سے بردا گناہ کرسکتا ہے لیکن وہ جھوٹانہیں ہوسکتا۔ (۳) نداق میں بھی خلاف واقع کی گئی بات جھوٹ شار ہوگی۔ (۴)"الفجور" کامعنی امام راغب فرماتے ہیں کہ (شق) پھٹنا ے، سود فور'' دیانت کے پردے کو جاک کرنے کو کہا جاتا ہے۔ اور بیشرم کا جامع نام ہے۔ (تنقیح الرواة:

(۵)" يُكْتَبُ" ہے مرادكى آ دى يرجمونا ياسيا ہونے كائكم لگ جانا ہے اور مخلوق و ملااعلى ميں اس كا اس صفت سے معروف ہو جانا ہے۔ (حوالہ سابقہ) (۲) بعض حالتوں میں جھوٹ کی اجازت ہے مثلاً ام كَلْتُوم وَ فَالْنَهِ الْمُهِينَ مِين : مِين في رسول الله عَلَيْ مَيْ إلى سَالَ عَلْمُ اللَّهُ عَلَيْ مُعَالِمُ بَيْنَ السَّاس فَيَمِتْى خَيْرًا أَوْ يَقُولُ خَيْرًا .)) منا - (متفق عليه) آب طَيْ اللَّهَ فَر مايا: ايما خض جمونانهين جولوگول میں صلح کرواتا ہے یا خیر کی بات لے کر چلتا ہے یا کہتا ہے۔ "نیزمسلم میں اُم کلثوم وَفَافِي کے الفاظ مروى ہیں كە دىميں نے آب منت كالله كوتين باتوں ميں جھوٹ كى اجازت ديتے ہوئے سا ہے: (١)جنگ۔ (۲) صلح ۔ (۳)میاں ہوی کا آپس میں یا تیں کرنا۔

لہذااس سے ان امور کی علوشان بھی ظاہر ہوتی ہے۔

[8].... بَابِ فِي حِفُظِ الْيَدِ ماتھ کی حفاظت کرنا

2758- أُخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمِ حَدَّثَنَا زَكَرِيًّا عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ

سیّدنا عبدالله بن عمرو وظهها کہتے ہیں کہ رسول الله ملطّ وَاللَّهِ رَسُولُ اللَّهِ عِلَيْ الْمُسُلِمُ مَنُ سَلِمَ فَنُ سَلِمَ فَن سَلْمَ فَن سَلِمَ فَا سَلَّ فَالْمُ مَن سَلِمَ فَالْمَالِمُ سَلِمَ فَا سَلِمَ فَا سَلِمَ فَالْمَا سَلِمَ فَالْمَا سَلِمَ سَلِمَ فَالْمَا سَلِمَ فَالْمَا سَلِمَ سَلِمَ فَا سَلِمَ سَلِمَ سَلِمَ فَالْمَا سَلِمَ سَلِمَ سَلِمَ سَلِمَ سَلِمَ سَلِمَ سَلَمَ سَلِمَ سَلِمَ سَلَّ سے دوسر ہے مسلمان محفوظ رہیں :''

سَمِعُتُ عَبُدَ اللَّهِ بُنَ عَمُرِو يَقُولُ قَالَ المُسلِمُونَ مِنُ لِسَانِهِ وَيَدِهِ. ٥

خَيْر)) "مسلمانوں میں بہترین کون ساہے؟" تو جواب میں آپ سے ایک نے پیکلمات ارشاد فرمائے۔جس سے پت چان ہے کہ یہ کامل مسلمان ہونے کی علامت ہاس کے برعکس نفاق کی علامت ہے۔(۲) زبان اور

❶ صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الإيمان،باب بيان تفاضل الاسلام وأي اموره افضل(160)والبخاري في الإيمان،باب المسلم، من سلم المسلمون من لسانه ويدم (10)

حَمْلُ مِيْنَالْكَالِيْنِيَّ ﴾ 464 ﴿ كُتَابِ الرقاق ﴾

ہاتھ کاخصوصاً تذکرہ اس لیے کیا گیا ہے کیونکہ بید دونوں دل کے معبر ہیں اور اکثر افعال میں یہی وسیلہ ہوتے ہیں۔ ہیں۔(۳)معلوم ہوامسلمان کو تکلیف دینے سے حتی الوسع احتیاط کرنی چاہیے۔ [9] باب فیی اُٹکلِ الطَّیِّبِ

2759 أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ بْنُ مَوْزُوقٍ حَدَّثَنَا عَدِيٌّ بْنُ ثَابِتٍ عَنْ أَبِي

حَازِم.....

عَنُ أَبِسَى هُ رَيُ رَقَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَلَيْ اللّهِ عَلَيْ يَا أَيُهَا النّاسُ إِنَّ اللّهَ طَيِبٌ لَا يَقَبَ اللّهَ أَمَرَ الْمُؤَمِنِينَ يَقْبَ اللّهَ أَمَرَ الْمُؤَمِنِينَ يَقْبَ اللّهَ أَمْرَ الْمُؤَمِنِينَ يَقَالُ ﴿ يَا أَيُهَا الرّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّى بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴾ وقالَ ﴿ يَا أَيْهَا الرّسُلُ اللّهِ اللّهِ إِن عَلِيمٌ ﴾ وقالَ ﴿ يَا أَيْهَا الرّسُلُ اللّهِ إِن كُنتُمُ إِيّاتُ مَعْ ارَفَقَاكُمُ وَاللّهُ إِن كُنتُمُ إِيّاتُهُ تَعْبُدُونَ ﴾ قالَ فُرَة ذَكَرَ الرَّجُلَ يُطِيلُ السَّفَرَ أَشُعَكُ وَاللّهُ إِن كُنتُمُ إِيّاتُهُ تَعْبُدُونَ ﴾ قالَ فُرَة ذَكَرَ الرَّجُلَ يُطِيلُ السَّفَرَ أَشُعَكُ وَاللّهِ إِن كُنتُم إِيّالُهُ السَّفَرَ أَشُعَكُ أَلَى السَّفَرَ أَشُعَكُ أَلَى السَّفَرَ أَشُعَكُ أَنْ يُمْ ذَكَرَ الرَّجُلَ يُطِيلُ السَّفَرَ أَشُعَكُ أَلَى السَّفَرَ أَشُعَكُ أَنْ يُسْرَيعُهُ حَرَامٌ وَمُلْسُهُ اللّهُ عَرَامٌ وَمُلْسَلُهُ حَرَامٌ وَعُذِي بِالنّحَرَامِ وَمُلْسَلُهُ حَرَامٌ وَعُذِي بِالنّحَرَامِ فَاللّهُ مَنْ اللّهُ عَلَى اللّهُ وَمُلْسَلُهُ عَرَامٌ وَعُذِي بِالنّحَرَامِ فَالنّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَمُشْرَبُهُ حَرَامٌ وَعُذِي بِالنّحَرَامِ فَاللّهُ مَنْ اللّهُ اللّهُ وَمُنْسَلِهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ وَمُنْسَلَهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُل

سیّدنا ابو ہررہ واللّن کہتے ہیں کہ رسول الله طفی آنے نے فرمایا: ''اے لوگو! اللہ پاک ہے اور پاک چیز ہی پیند کرتا ہے اور اللہ تعالی نے مومنوں کو وہی تھم دیا ہے جواس نے رسولوں کو حکم ویا ہے اللہ تعالی نے فرمایا: ''اے رسولو! یا کیزہ چزیں کھاؤ اور نیک عمل کر جوتم عمل کرتے ہو میں اسے حانیا ہوں'' (مومنون:۵۱) اور اللہ نے فرماما: ''اے ایمان والوا جوہم نے مہیں رزق دیا ہے اس سے یا کیزہ چزیں کھاؤ'' سورة القرق: ۱۷۲) ابو ہربرة وُلْنَفُ كہتے ہیں پھرآپ نے ذکر کیا کہ ایک آ دی لمبا سفر کرتا ہے وہ مجھرے ہوئے بالوں والا خاک آلودہ ہوتا ہے۔ وہ آسان كى طرف اين باتھ اٹھاكريا اللي! يا اللي! كہتا ہے طالا ککہ اس کا کھانا حرام ہے اس کا لباس حرام اس کا پینا حرام اوراس کی خوراک حرام ہے ہے، تو اس کی دعا کیے قبول کی جائے گی۔

[10] بَاب مَا يَكُفِى مِنَ الدُّنْيَا ونياكَ تَنَى چِزِين كافى بين

2760 حَدَّثَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةً عَنِ الْجُرَيْرِيِّ عَنْ أَبِي نَضْرَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَوَلَةَ

 [●] صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الزكاة، باب قبول الصدقات من الكسب الطيب وتربيتها (2343) والترمذي، كتاب تفسير القران باب سورة البقرة (2989)

فوائد:كى شاعرنے كيا خوب كها ب

جگہ دل لگانے کی بیہ دنیا نہیں ہے بیہ عبرت کی جا ہے تماشا نہیں ہے

آپ سے آپ ایک کافر مان ہے: ((کُنْ فِی الدُّنْیَا کَانَّكَ غَرِیْبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِیْلِ .)) (بعاری)
در و بیسے رہو جیسے اجنبی یا راستہ عبور کرنے والے ہو۔' لہذا سمجھ داروہی ہے جس کا محم نظر اور مبلغ علم

آخرت ہواور دنیا میں فقط وقت گزارنے کے برابرساماں اس لیے کافی ہے۔

[11] بَابِ فِي ذَهَابِ الصَّالِحِينَ نَيَل لوَّول كا اتْه جانا

يع وول مع الله عن مَنْصُورِ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ بَيَانِ هُوَ ابْنُ بِشْرِ الْأَحْمَسِيُّ عَنْ 2761 - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بُنُ مَنْصُورِ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ بَيَانِ هُوَ ابْنُ بِشْرِ الْأَحْمَسِيُّ عَنْ

12,01

وَيَبُقَى خُثَالَةٌ كَحُثَالَةِ الشَّعِيرِ. ٥

عَنُ أَبِي هُرَيُرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ كُمُ

مِنْ صَائِمٍ لَيْسَ لَهُ مِنْ صِيَامِهِ إِلَّا الظَّمَأُ

جو کی طرح برے لوگ رہ جائیں گے۔''

[12].... بَابِ فِي الْمُحَافَظَةِ عَلَى الصَّوْمِ

روز ہے کی حفاظت کرنا

2762- أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ بْنُ عِيسَى عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِى الزِّنَادِ عَنْ عَمْرِو بْنِ أَبِى عَمْرِو عَنْ سَعِيدِ الْمَقْبُرِيّ --------

سیّدنا ابو ہریرة خالتُو کہتے ہیں نبی طفیّاتیا نے فرمایا: "کتے ہی روزہ دارا یسے ہوتے ہیں جنہیں پیاس کے سوا کی بھی

• صحيح: أخرجه احمد 360/5وابن ابي شبيب 245/13وابو نعيم في حلية الأولياء 406/6

⁻ الماركة عند المناوي من المراقع الماركة عند المالحين (6434) والحاكم 401/4 من و 401/4 من الماركة في الماركة ف

وَكُمْ مِنْ قَائِمٍ لَيُسَ لَهُ مِنْ قِيَامِهِ إِلَّا عاصل نہيں ہوتا۔ اور كتنے ہى تجد گذار ايے ہوتے ہيں

حاصل نہیں ہوتا۔ اور کتنے ہی تہجد گذار ایسے جنہیں جاگنے کے سوا کچھ حاصل نہیں ہوتا۔''

فوائد:(۱) جب عبادات کی ادائیگی میں ان کے لواز مات اور ضروریات کو مدنظر ندر کھا گیا ہو الی عبادات اللہ کے ہال مقبولیت کے درجات حاصل نہیں کرسکتیں۔ آپ طفی آئے کا فرمان ہے: ((مَنْ لَم يَسَدَعْ قَدُولَ النَّهُ وَدُ وَالْعَمَ مَلُ بِهِ فَلَيْسَ لِلَّهِ حَاجَةٌ فِي أَنْ يَدَعَ طَعَامَةُ وَشَرَابَةُ .)) (رواه البحاری) "جس نے جھوٹی بات اور اس پرعمل نہ چھوڑ اپس اللہ تعالیٰ کو اس کے کھانا اور پینا چھوڑ نے کی کوئی ضرورت نہیں۔"

[13] بَابِ فِي الْمُحَافَظَةِ عَلَى الصَّلاةِ

نماز کی حفاظت کرنا

2763- أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ هُوَ ابْنُ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ حَدَّثَنِي كَعْبُ بْنُ عَلْقَمَةَ

عَنْ عِيسَى بْنِ هِلَالٍ الصَّدَفِيّ

السَّهُرُ. ٥

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عَمُرٍ و عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ ذَكَرَ الصَّلاةَ يَوُمًا فَقَالَ مَنُ حَافَظَ عَلَيْهَا كَانَتُ لَهُ نُورًا وَبُرُهَانًا وَنَجاةً مِنَ النَّارِ يَوُمَ الُقِيَامَةِ وَمَنُ لَمُ يُحَافِظُ عَلَيْهَا لَمُ تَكُنُ لَهُ نُورًا وَمَنُ لَمُ يُحَافِظُ عَلَيْهَا لَمُ تَكُنُ لَهُ نُورًا وَمَنْ لَمُ يُحَافِظُ عَلَيْهَا لَمُ تَكُنُ لَهُ نُورًا وَمَنْ لَمُ يُحَافِظُ عَلَيْهَا لَمُ تَكُنُ لَهُ نُورًا وَمَنْ لَمُ يَحَافِظُ عَلَيْهَا لَمُ تَكُنُ لَهُ نُورًا مَنْ فَا اللَّهِ عَلَيْهَا لَمُ تَكُنُ لَهُ نُورًا وَمَا اللَّهِ عَلَيْهَا لَمُ تَكُنُ لَهُ نُورًا مَعَ فَا اللَّهُ عَلَيْهَا لَمُ تَكُنُ لَهُ نُورًا مَعْ فَارُونَ وَهَامَانَ وَأَبَى بُن

سیّدنا عبدالله بن عمروظ الله کہتے ہیں کہ نبی طفی آیا نے ایک دن نماز کا ذکر کیا فرمایا: ''جو شخص نماز کی پابندی کرے گا۔ وہ قیامت کے دن اس کے لئے روشیٰ دلیل اور آگ سے نجات کا سبب ہوگی۔ اور جو اس کی پابندی نہ کرے گا وہ اس کے لئے نہ روشیٰ ہوگی نہ نجات اور دلیل۔ بلکہ وہ قیامت کے دن قارون فرعون ہامان اور ابی بن خلف کے ساتھ ہوگا۔''

[14] بَاب فِي قِيَام اللَّيْل تَجِد رِرُّ هنا

2764- أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِحٍ قَالَ حَدَّثِنِي اللَّيْتُ قَالَ حَدَّثِنِي ابْنُ عَجْلانَ عَنْ حُسَيْنِ بْنِ

خَلَفِ. 🏻

[•] صحيح: أخرجه ابن ماجه، كتاب الصيام،باب ماجاء في الغيبة و الرفث للصائم(1690)

[🗗] صحيح: ابن حبان (1467)

حرا الله المرقاق عناب الرقاق عناب الرقاق المرقاق المرق

عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسِ عَنْ عِكْرِ مَةَ

للهِ عَلَىٰ كَانَ سَيْدنا عبدالله بن عباس فِلْ الله عَلَىٰ كَتِم بِين كه رسول الله عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ الله عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ عَلَيْ

عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَرُغَبُ فِي قِيَامِ اللَّيُلِ حَتَّى قَالَ وَلَوُ رَكْعَةً. •

فوائد:الله تعالی کی قربت کے ذرائع میں ہے تبجد کی ادائیگی ایک بہترین ذریعہ ہے کیونکہ اس وقت الله آسان دنیا پر آ کرخود آ دازیں دیتے ہیں کہ ہے کوئی مجھ ہے بخشش مانگنے والا کہ میں اس کو بخشوں وغیرہ ۔

اس لیے آپ طفی آن الله کی محالہ رفٹانسیم کو اس کی خصوصی ترغیب دیتے ۔ آپ طفی آن نے فرمایا: ((نَعَمَ اللهَ اللهَ مَوْ کَانَ یُصَلَّی مِنَ اللَّیْلِ .)) (منفق علیه) "عبدالله (بن عمر رفای ا) اچھا آدی ہے اگروہ رات کا قیام کرے۔ "

[15] بَاب فِي الاستِغْفَادِ

2765 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحٰقَ عَنْ عُبَيْدِ بْنِ عَمْرِو أَبِي الْمُغدَة

عَنُ حُذَيْفَة قَالَ كَانَ فِي لِسَانِي ذَرَبٌ عَلَى أَهُ لِسَانِي ذَرَبٌ عَلَى أَهُ لِسَى اللّهُ عَلَيْهِ عَبُرِهِم فَسَالًى اللّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَيْنَ أَنْتَ عَنِ الِاسْتِغْفَارِ إِنِي وَسَلَّمَ فَقَالَ أَيْنَ أَنْتَ عَنِ الِاسْتِغُفَارِ إِنِي لَا شَعْفُورُ اللّه عَلَيْهِ فِلُ اللّه تُكلَّ يَوُمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ قَالَ الْبَي مُوسَى قَالًا قَالَ النَبِي صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّم أَسْتَغُفِرُ الله كُلَّ يَوم الله عَلَيْهِ وَسَلَّم أَسْتَغُفِرُ الله كُلَّ يَوم مِائَة مَرَّةٍ أَسُتَغُفِرُ الله كُلَّ يَوم مِائَة مَرَّةٍ أَسْتَغُفِرُ الله كُلَّ يَوم مِائَة مَرَّةٍ أَسْتَغُفِرُ الله كَلَّ يَوم مِائَة مَرَّةٍ أَسْتَغُفِرُ الله وَأَتُوبُ إِلَيْهِ. •

سیدنا حدیقه دانی کی کہتے ہیں میں اپنے خاندان والول سے بدزبانی کیا کرتا تھا۔ مگر غیروں سے بدزبانی نہ کرتا تھا میں نے نبی طفی این کی سے پوچھا تو آپ نے فرمایا: "اللہ سے بخشش کیوں نہیں چاہتے؟ میں ہردن میں سو دفعہ اللہ سے بخشش طلب کرتا ہوں۔" ابواسحاق کہتے ہیں: "میں نے ابوموی کے بیٹوں ابو بکر اور ابو بردة سے بیصدیث بیان کی تو انہوں نے کہا کہ نبی طفی آئی نے فرمایا: "میں ہرروز اللہ تو انہوں نے کہا کہ نبی طفی آئی نے فرمایا: "میں ہرروز اللہ تعالیٰ سے سودفعہ بخشش چاہتا ہوں اور تو بہتی کرتا ہوں۔"

صحيح: مجمع الزوائد(3565)

^{276/1(}علية الأولياء) 463/13وابونعيم في (حلية الأولياء) 276/1

حَرِّ عَيْنَ الْكَالِيْتِيُّ ﴾ ﴿ 468 كَابِ الرقاق ﴾ ﴿ 348 كَتَابِ الرقاق ﴾ ﴿ 34

فوائد:(۱) "الذَرَبْ" زبان كاخرانى، لاعلاج يهارى، زنگ پريدلفظ بولا جاتا ہے۔ (۲) اس كے باوجود كەاللەتعالى نے آپ كا گلے پچھا گناه معاف كرديے ہوئے تھے۔ آپ طفي اَلَمَ سوم تبددن ميں الله سے بخش طلب كرتے۔ ايك صديث ميں اس كى يوں وجہ بيان كرتے ہيں: ((إِنَّهُ لَيغُانُ عَلَىٰ قَلْبِیْ وَإِنِّیْ لَاسْتَ غَفِرُ اللَّهَ فِی الْیَوْمِ مِائَةَ مَرَّةٍ ۔)) (مسلم) " يقينا ميرے دل پرميل كچيل غالب آجاتى ميں (جس بنا پر ميں ذكر سے غافل ہوجاتا ہوں للہذا) ميں الله سے روزانہ سود فعہ استغفار كرتا ہوں۔ "

جب كرترندى ميں صحيحاً آپ سے استغفار كے درج ذيل الفاظ مروى بيں: ((رَبِّ اغْفِوْرِلِيْ وَتُبْ عَلَىَّ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ.))

[16] بَابِ فِي تَقُوَى اللَّهِ

الله تعالىٰ ہے ڈرنا

2766 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ سَلْمِ بْنِ قُتَيْبَةَ عَنْ سُهَيْلِ الْقُطَعِيِّ عَنْ ثَابِتٍ

سيّدنا انس و النّفُو كہتے ہيں كه نبى اللّفَا اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ا

عَنُ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِ ﴿ أَنَّهُ أَنَّهُ قَرَأً ﴿ أَهُلُ التَّقُورَ أَهُلُ التَّقُورَ ﴿ أَهُلُ التَّقُونِ وَأَهُلُ الْمَعْفِرَةِ ﴾ قَالَ قَالَ رَبَّكُمُ أَنَّ أَهُلُ النَّا أَهُلُ اللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّ

2767 - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ كَهْمَسِ بْنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي السَّلِيلِ........

سیّدنا ابوذر وَلِیْنَهُ کہتے ہیں کہ رسول الله طِنْنَا اَیْدَ طِنْنَا اِللهِ طِنْنَا اِللهِ فَرِمَالِ اللهِ فَر فرمایا: میں ایک آیت جانتا ہوں اگر لوگ اس پڑمل کر لیس تو ان کے لئے کافی ہو۔''جو اللہ سے ڈرگیا اللہ تعالیٰ اس کی ربائی کا ذریعہ بنا دےگا۔'' (سورۃ الطلاق:۲) عَنُ أَبِى ذَرٍّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِنِّى لَأَعُلَمُ آيَةً لَوُ أَخَذَ بِهَا النَّاسُ لَكَفَتُهُمُ وَمَنُ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلُ لَهُ مَخُوَجًا. ۞

❶ ضعيف: أخرجه ابن ماجه، كتاب الزهد،باب مايرجي من رحمة الله يوم القيامة(4299)

ضعيف: أخرجه احمد في الزهد (ص 146)

كتاب الرقاق 469 85031511655

[17].... بَابِ فِي الْمُحَقَّرَاتِ حیوٹے گنا ہوں کے متعلق

2768 - أَخْبَرَنَا مَنْصُورُ بْنُ سَلَمَةَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ هُوَ ابْنُ مُسْلِم بْن بَانَكَ عَنْ مَالِكِ عَنْ عَامِر بْن

عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَوْفِ بْنِ الْحَارِثِ

سیّدہ عائشہ وظافیہ کہتی ہیں کہ رسول الله طفی میّن نے مجھے فرمایا: ''اے عائشہ! گناہوں کو چھوٹا سجھنے ہے اینے آپ کو بیانا کیونکہ ان کے متعلق اللہ کی طرف سے بازیرس ہوگیا۔''

عَنُ عَائِشَةَ قَالَتُ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَا عَائِشُ إِيَّاكِ وَمُحَقَّرَاتِ الذُّنُوبِ فَإِنَّ لَهَا مِنَ اللَّهِ طَالِبًا. •

فوائد:(۱)"يَا عَائِشُ" بيمنادي كي مرخم ہے جس مين آخري حرف كوحذف كرديا جاتا ہے۔ (۲) جس طرح قطرے قطرے سے دریا بنتا ہے اور ریزے ریزے سے پہاڑ وجود میں آ جاتا ہے، اس طرح حچوٹے حچوٹے گناہ انسان مسلسل کرتا رہے تو یہ پہاڑوں کی صورت اختیار کر جاتے ہیں اور ان کے جچوٹے ہونے کی غلط فہمی میں انسان بخشش کا سامان بھی نہیں کرسکتا۔ چنانچہ بیرانسان کی راہ میں ایک عظیم رکاوٹ بن کتے ہیں لہٰذاان سے متنبہ رہنے کی انتہائی ضرورت ہے۔

[18] بَابِ فِي التَّوْبَةِ تُوسِي تُوبِهِ كَمْ تَعَلَقُ

2769 حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مَسْعَدَةَ الْبَاهِلِيُّ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ

عَنْ أَنَس قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِنْ مُكُلُّ سَيِّدنا انْسِ رَفَاتُن كُمْتِ مِن كه رسول الله طَيْكَ يَمْ الله بَنِي آذَمَ خَطَّاءٌ وَخَيْسُ الْخَطَّائِينَ " "ممام آدى كَنْهَار جِين اور بهتر كَنْهَار وه بين جوتوبه كرت

التَّوْ اللهِ نَ. 9

فوائد:(۱)غلطی ہو جانا غلطنہیں بلکہ اس پر اصرار نقصان دہ ہے۔ (۲)''کل بنی آ دم' ساری اولا د آ دم ، اس میں انبیاء بھی آ گئے لیکن فرق بیہ ہے ، اللہ انہیں اسی وفت متنبہ کر دیتے اور ان کی غلطی کی فورأ اصلاح فرما دیتے ، چنانچہ ان کی غلطی غلط نہ رہتی ۔

¹⁴ جيد: أخرجه احمد في الزهد (ص 14)

[◄] حسس: أخرجه الترمذي، كتاب صفة القيامة الرقائق والودع باب(49)(الحديث2499)وابن ماجه، كتاب الزهد ، باب ذكر التوبة (4251)

يُنْتَرِّ الدِّالِيَّةِ عِنْ الْكِلِيَّةِ عِنْ الْمُعَالِيِّ الْمُعَالِيِّ كِتَابِ الْمِ قَاقِ

197 بَابِ لَلَّهُ أَفُرَ حُ بِتَوْبَةِ الْعَبْدِ اللّٰداییج بندوں کی تو یہ سے بہت خوش ہوتا ہے

2770 - أَخْبَرَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْل حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةً عَنْ سِمَاكِ بْن حَرْب

نے فر مایا: ''ایک شخص نے اونٹنی پر بے آ ب صحرا میں سفر کیا اس نے درخت کے نیج آرام کیا۔اس کے پاس اس کی سواری تقی اس بر اس کا زادراه اور کھانا تھا جب وہ بیدار ہوا تو اس کی سواری جا چکی تھی۔وہ ایک ٹیلے پر چڑھا مگراہے کچھ نظر نہ آیا۔ پھر ایک اور ٹیلے پر چڑھا اے کچھ نظر نہ آیا پھرادر ٹیلے پر چڑھا تو اسے کچھ نظر نہ آیا۔ پھر چچھے مڑکر ویکھا تو وہ اس کے نزدیک ہی اپنی مہار تھسیٹ رہی تھی۔ اس وقت اسے جتنی خوثی ہوئی اللہ اپنے بندے کی توبہ کے ساتھ اس سے زیادہ خوش ہوتا ہے۔''

عَن النُّبُعُمَان هُوَ ابُنُ بَشِير أَنَّهُ سَمِعَهُ سيِّدنا نعمان بن بشير فَاتُنْهَا كَبْتِ بِين كه رسول الله طيَّتَ الله يَـقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ سَافَرَ رَجُلٌ فِي أَرْض تَنُوفَةٍ فَقَالَ تَحْتَ شَجَرَةٍ وَمَعَهُ رَاحِلَتُهُ عَلَيْهَا زَادُهُ وَطَعَامُهُ فَاسْتَيْقَظَ وَقَدُ ذَهَبَتُ رَاحِلَتُهُ فَعَلا شَرَفًا فَلَمْ يَرَ شَيْئًا ثُمَّ عَلا شَرَفًا فَلَمْ يَرَ شَيْئًا ثُمَّ عَلا شَرَفًا فَلَمُ يَرَ شَيُّنًا قَالَ فَالْتَفَتَ فَإِذَا هُوَ بِهَا تَجُرُّ خِطَامَهَا فَمَا هُوَ بِأَشَدَّ فَرَحًا بِهَا مِنَ اللَّهِ بِتَوْبَةِ عَبُدِهِ إِذَا تَابَ إلَيْهِ. 0

[20].... بَابِ فِي الْأَمَلِ وَالْأَجَلِ امیداورموت کے درمیان

2771 حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي يَعْلَى عَنِ الرَّبِيعِ بْنِ

سیّدنا عبدالله والنّفه کہتے ہیں کہ رسول الله طلق الله خاتم نے ہمارے لئے ایک چوکور خط کھینجا پھر اس کے درمیان میں ایک خط کھینچا پھراس کے اردگرد چند خط کھینچے اور ایک خط اس کے باہر کھینیا۔ پھر درمیانی خط کے متعلق فرمایا: 'سیہ آ دمی ہے اور بیموت اس کو گھیرے ہوئے ہے اور اردگرو کے خطوط کے متعلق فرمایا:" پیر مصائب ہیں ایک اسے

عَنُ عَبُدِ اللُّهِ قَسَالَ خَطَّ لَنَيَا رَسُولُ اللَّهِ عَظَّا مُرَبَّعًا ثُمَّ خَطَّ وَسَطَهُ خَطًّا ثُمَّ خَطَّ حَوْلَهُ نُحطُوطًا وَخَطَّ خَطًّا خَارِجًا مِنَ الْخَطِّ فَقَالَ هَذَا الْإِنْسَانُ لِلُحَطِّ الْأَوْسَطِ وَهَذَا اللَّجَلُ مُحِيطَّبِهِ وَهَــذِهِ الْأَعُرَاصُ لِلُحُطُوطِ فَإِذَا

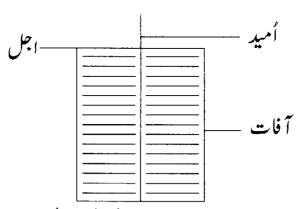
حَكْلُ الْمُتَاتِّنُ الْكَالِيمِينَ الْمُلَالِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلْلِمِينَالِينَالِمِينَالِينَالِمِينَالِينَالِمِينَالِمِينَالِينَالِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلْلِمِينَ الْمُلْمِينِينَ الْمُلْمِينَ الْمُلْمِينَ الْمُلْمِينَالِمِينَالِمِينَالِمِينَالِمِينَ الْمُلْمِينَالِمِينَالِمِينَالِمِينَالِمِينَ الْمُلْمِينَالِمِينَا

چھوڑتی ہے تو دوسری لیسٹ میں لے لیتی ہے۔ اور باہر والے خط کے متعلق فرمایا: 'میہ مصائب ہیں ایک اسے چھوڑتی ہے تو دوسری لیسٹ میں لے لیتی ہے۔ اور باہر والے خط کے متعلق فرمایا: 'میہ امید ہے۔'

لِلُخَطِّ الُخَارِجِ. •

أَخْطَأَهُ وَاحِدٌ نَهَشَهُ الْآخَرُ وَهَذَا الْأَمَلُ

فوائد:



(۱) نبی کریم طنی آیا اس طرح اپنے ہاتھ سے نقشہ بنا کراوگوں کی رہنمائی کرتے ہیں کہ مرابع خط بیہ موت ہے اور درمیان کھینی سیدھی لائن بیانسان کی امید ہے جو کہ اتنی لمبی ہوتی ہے کہ موت آ جاتی ہے کین وہ ختم نہیں ہوتی اور درمیان میں پائے جانے والے خطوط اس کے دومعنی ہو سکتے ہیں: او دنیا میں حاصل ہونے والی خیر وشر۔ ۲۔ آ فات یعنی انسان آ فات برداشت کر کرتا آ خرا مید کے سہارے موت کی وادی میں جا داخل ہوتا ہے جتی کہ اس کی اُمید ابھی باقی ہوتی ہے کین موت کا فرشتہ اسے آ دبو چتا ہے۔

(۲)معلم اوراستاذ کا شاً گردوں کوسمجھاتے ہوئے مثال وتنحتہ سیاہ وغیرہ کا استعمال بات کو ذہن میں راسخ کرنے کے لیےعمدہ وبہتر ہے۔ (واللہ الموفق)

> [21].... باب مَا ذِئْبَانِ جَائِعَانِ دو بھو کے بھیڑیوں کی حیثیت

2772 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ زَكَرِيَّا عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَعْدِ بْنِ ذُرَارَةَ عَنِ ابْنِ

 [●]صحيح: أخرجه البخاري، كتاب الرقاق ، باب في الأمل وطوله (6417) و الترمذي، كتاب صفة القيامة و الرقائق و الورع، باب (22) و (الحديث 2454)

الكَالِكِينَ الْكَالِكِينَ ١٩٦٤ الرقاق ٢٦٥ عناب الرقاق ٢٥٠

سیّدنا کعب بن ما لک و و الله الله و الله سے بیان کرتے ہیں که رسول الله طفی ایّن نے فرمایا: ''دو بھو کے بھیٹر ئے جو بکریوں میں جھوڑ دیئے جائیں انہیں اتنا نقصان نہیں پہنچائیں گے جتنا کہ آ دمی کا دولت اور عزت کا لا لیج اس کے دین کوخراب کردیتا ہے۔'' كَعُبِ بُنِ مَالِكٍ عَنُ أَبِيهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنَ أَبِيهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنَ أَبِيهِ قَالَ قَالَ أَرُسِكُ فِي اللهِ عَنَم بِأَفُسَدَ لَهَا مِنُ حِرُصِ الْمَرُءِ عَلَى الْمَالِ وَالشَّرَفِ لِدِينِهِ. • الْمَالِ وَالشَّرَفِ لِدِينِهِ. •

فواند: مال اور مرتبی موس انسان کو با وَله کردیتی ہے حتی که انسان اپنے اُصولوں اور دینداری کو تقور کی قیمت پر آ مادہ ہو جاتا ہے ایک روایت میں آپ مشی آ بی مشی آ

لہٰذا خوش قسمت ہے وہ انسان جواپنے آپ کوان فتنوں سے بچا کراللہ تعالیٰ کے ہاں سرخرو ہوجائے۔ اَللّٰهُمَّ نَعُوْ ذُہِكَ الْفِتْنَ .

[22].... بَاب فِي حُسُنِ الظَّنِّ بِاللَّهِ الله سے حسن ظن رکھنا

2773 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ الْغَازِ عَنْ حَيَّانَ أَبِي النَّصْر

سیّدنا واثله بن اسقع والنّهٔ کہتے ہیں کہ نبی مظیّر نے فرمایا ' اللّه تعالیٰ فرماتے ہیں: ''میں اپنے بندے سے ویسے ہی پیش آؤں گا جیسے وہ میرے متعلق گمان کرتا ہے۔''

عَنُ وَاثِلَةَ بُنِ الْأَسُقَعِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَنَا عِنُدَ ظَنِّ عَبُدِى بِى فَلْيَظُنَّ بِى مَا شَاءَ. ۞

فوائد: سسانسان الله کے بارے جیسا گمان رکھے گا الله اس سے اس کے مطابق سلوک کرے گا اگر وہ یہ بہتا ہے الله اس کی لاج رکھے گا اس کے برعکس وہ یہ بہت اس کے الله اس کی لاج رکھے گا اس کے برعکس گمان پر اس کے مطابق سلوک ہوسکتا ہے۔ لیکن گمان کے ساتھ ساتھ اعمال شرط ہیں کیونکہ وہی ملازم ترقی کی امیدر کھ سکتا ہے جوفیکٹری کے اُصول وضوابط کی یابندی کرتا ہو۔ (فتنبه و فقك الله)

[•] الترمذي، كتاب الزهد، باب (53) (الحديث 2376)

[🛭] صحيح: ابن حبان(633)

حَكْلُ لِيَّنِينَ الْكَالِيمِينَ ﴾ ﴿ 473 ﴿ كُتَابِ الرقاق ﴾ ﴿ 473 ﴿ كُتَابِ الرقاق ﴾ ﴿

[23] ····تفسير ﴿وَاَنْذِرُ عَشِيْرَتَكَ الْأَقْرَبِيْنِ﴾ ﴿وَانْذِرُ عَشِيرِ لَاقْرَبِيْنِ﴾ كَتَفْير

2774 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ عَنْ شُعَيْبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَأَبُو

سَلَمَةً بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ

سيّدنا ابو ہريرة وَفَاقِيْ كَتِ بِين كه جب بير آيت "وَ أَنْسِيْنِ نَيْ فَي عَلَيْهِ فَي كَرُوه! السِّخ نَفُول كو الله ہے ہوكر فرمايا: "الله كے ہاں تمہارے بچھ كام نہ آؤل گا۔ اے بنی عبدمناف! میں الله کے ہاں تمہارے بچھ كام نہ آؤل گا۔ اے عباس بن عبدالمطلب! میں الله کے ہاں آپ کے بچھ كام نہ آؤل گا۔ اے صفیعہ بنت عبدالمطلب! میں الله کے ہاں آپ کے بچھ كام نہ آؤل گا۔ اے فاطمہ بنت محمد منظے آئے ہاں آپ کے بچھ كام نہ آؤل گا۔ اے فاطمہ بنت محمد منظے آئے ہاں آپ کے بچھ كام نہ آؤل گا۔ اے فاطمہ بنت محمد منظے آئے ہاں آپ کے بچھ كام نہ آؤل گا۔ ا

حقیقت نہیں۔فافهم و تدبر [24] بَاب لَا یُنجی أَحَدَّکُمُ عَمَلُهُ کس کواس کا ممل نَجات نہ دے گا

2775 مَ خُبَرَنَا الْحَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا أَبُو الْأَحْوَصِ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي سُفْيَانَ

❶ صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الإيمان،باب في قوله تعالىٰ(وأنذر عشيرتك الأقربين)(500)والترمذي، كتاب تقسير القران باب ومن سورةالشعراء(3185)

الله الرقاق ١٩٦٤ الرقاق ١٩٦٤ كتاب الرقاق

سیّدنا جابر رفائقهٔ کہتے ہیں رسول الله مطفع آیم نے فرمایا:
"(کاموں میں) کی بیشی نہ کرواور جان لوتم میں سے کوئی
این عملوں کی بدولت نجات نہیں پاسکتا۔ لوگوں نے کہا: یا
رسول الله! آپ بھی نہیں؟ فرمایا: "میں بھی نہیں مگر اس
طرح کہ اللہ کی رحمت اور فضل مجھے ڈھانی لے۔"

عَنُ جَابِرٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنَى اللهِ عَنَى اللهِ عَلَمَ اللهِ عَلَمَ اللهِ عَلَمَ اللهِ عَلَمَ اللهِ عَلَمَ اللهِ عَلَمُ اللهُ اللهُ اللهُ عَمَلُهُ قَالُوا يَا رَسُولَ اللهُ عَمَلُهُ قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ عَمَلُهُ قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ عَمَلُهُ قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ عَمَلُهُ قَالُوا يَا رَسُولَ اللهُ عَمَلَهُ وَفَصُلُ وَلَا أَنَا إِلَّا أَنُ يَتَعَمَّدَنِيَ اللّهُ مِرْحُمَةٍ مِنْهُ وَفَصُل. • وَلَا أَنَا إِلّهُ اللهُ عَمَدَ عَمَةً مِنْهُ وَفَصُل. • وَاللهُ عَمَدُ عَمَةً عَمْلُهُ وَفَصُل. • وَاللهُ عَمَدُ عَمَةً عَمْلُهُ وَقَصُل اللهُ عَلَى اللهُ عَمْلَهُ وَاللّهُ اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى عَلَى اللهُ عَلَى عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى الْ

فوائد:نجات کا دارومدار فقط الله کی رحمت پر ہے اس کا بیمطلب ہر گزنہیں کیمل میں کوتا ہی وکی کا کوئی نقصان نہیں یاعمل نہ بھی ہوئے تو رحمت کی بنا پر نجات ممکن ہے کیونکہ عمل باعث رحمت ہیں جتنے عمل زیادہ ہوں گے آئی ہی الله کی رحمت زیادہ ہوگی ، جس طرح کہ کوئی بھی والد کا نافر مان اس سے رحمت اور عطا کی اُمید نہیں یا ندھ سکتا۔

[25] بَابِ مَا مِنْكُمُ أَحَدٌ إِلَّا وَمَعَهُ قَرِينُهُ مِنَ الْجِنِّ مِنَ الْجِنِّ مِنَ الْجِنِّ مِنَ الْجِنِ

2776 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ سَالِمٍ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ

أَبِيهِ.....أ

عَنُ عَبُدِ اللّهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَلَىٰ مَن مَا مِنْكُمُ مِن أَحَدٍ إِلّا وَمَعَهُ قَرِينُهُ مِن الْمَلاثِكَةِ قَالُوا اللّهِ قَالَ اللّهَ وَلَكِنَّ اللّهَ وَإِيّاكَ وَلَكِنَّ اللّهَ وَإِيّاكَ وَلَكِنَّ اللّهَ وَإِيّاكَ وَلَكِنَّ اللّهَ أَعَانَ نِعى عَلَيْهِ فَأَسُلُمُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد مِنَ النّاسَ مَن يَقُولُ أَسُلَمَ اسْتَسُلَمَ مَن يَقُولُ أَسُلَمَ اسْتَسُلَمَ اسْتَسُلَمَ الْمُتَسُلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسُلَمَ الْمُتَسُلَمَ الْمُتَسُلَمَ الْمُتَسُلَمَ الْمُتَسُلَمَ الْمُتَسُلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسُلَمَ الْمُتَسُلَمَ الْمُتَسُلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَعَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَالَّالَ اللّهُ الْمُتَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَامِ الْمُتَالَ اللّهُ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَسَلَمَ الْمُتَلَمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمِ الْمُتَلِمَ الْمُتَلِمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعِمِ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمِ الْمُتَعْمِ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمُ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمَ الْمُتَعْمُ الْمُتَعِلَمُ الْمُتَعْمُ الْمُتَعِلَمُ الْمُتَعْمُ الْمُتَعْمُ الْمُتَعْمُ الْمُتَعِمُ الْمُتَعِمِ الْمُتَعِلَمُ الْ

فواند: " فَاسْلَمَ " اس كاعراب بار اختلاف م كه "أسلْمَ " ميم فتح كساته (وه ملمان يامطيع مو كيا) يا "أسلَمُ " ميم ضمه كساته (مين محفوظ ربتا موس) قاضى عياض نے فتح كو مى ترجىح

[•] صحيح: أخرجه مسلم، كتاب صفات المنافقين، باب لن يدخل أحد الحتة (2817)

³ صحيح: أخرجه مسلم، كتاب صفات المنافقين، باب تحريش الشيطان وبعثه سراياه الفتنة الناس.... (7039)

حَكُلُ لِيُنْ الْكَالِيْكِينَ ﴾ ﴿ 475 ﴿ كُتَابِ الرقاق ﴾ ﴿ كُتَابِ الرقاق ﴾ ﴿ كُتَابِ الرقاق ﴾ ﴿ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ
دی ہے۔ (تنقیح الرواة: ۲۱/۱) بدرست معلوم ہوتا ہے کیونکہ سلم میں اس سے آئے الفاظ ہیں ((فَلا يَأْمُرُنِيْ إِلَّا بِعَخِيرِ .)) ''وہ مجھے صرف خیر کا ہی تھم دیتا ہے۔''

> [26].... بَابِ لَوْ تَعُلَمُونَ مَا أَعُلَمُ اگرتم وه جانتے ہوجو میں جانتا ہوں

2777 حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُوسَى بْنِ أَنْسِ

عَنُ أَنْسِ عَنِ النَّبِي عِنَى النَّبِي عَلَى فَالَ لَوُ سَيِّدنا السِّ وَالنَّيْ كَتِ مِين فِي عَلَيْ أَنْ فرمايا: "الرَّمْ وه تَعُلَمُونَ مَا أَعُلَمُ لَضَحِكُتُمُ قَلِيلًا جان لِيت جو مين جانا هول توتم تحورًا بنت اور زياده روتے۔''

وَلَبَكَيْتُمُ كَثِيرًا . 0

2778 حَدَّثَنَا عَفَّانُ جَدَّثَنَا هَمَّامٌ

حَدَّثَنَا قَسَادَةُ عَنُ أَنْسِ عَنِ النَّبِيِّ عَلَيْ بِمِثُلِ هَذَا. ٥

سیّدنا قبّادة رفایقهٔ 'انس رفایقهٔ سے اور وہ نمی طِشْاَمَیْم سے اس طرح بیان کرتے ہیں۔

> [27] بَابِ فِي هَوَ انِ الدُّنُيَا عَلَى اللهِ الله کے نز دیک د نیا کا ذکیل ہونا

2779- أَخْبَرَنَا حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَبِي الْمُهَزِّمِ

عَنُ أَبِي هُورَيُووَ أَنَّ النَّبِيَّ عِلَيٌّ مَوَّ سيِّدنا ابو مريرة وَلَيْنَ كُتِ مِن كَه فِي اللَّهَ وَلَا اللَّهِ مِن اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّ کے پاس سے گذر ہے جس پر تارکول ملا ہوا تھا اور اس کے مالک نے اسے گھر سے نکال دیا تھا۔ آپ نے فرمایا: "تہمارے نزدیک یہ این مالک کے ہاں ولیل ہے؟ انہوں نے کہا:''جی ہاں۔''آپ نے فرمایا:''جس قدر بیہ این مالک کے یاس ذلیل ہے اس سے کہیں زیادہ اللہ کے نزدیک دنیا ذلیل ہے۔''

بسَخُلَةٍ جَرُبَاءَ قَدُ أَخُرَجَهَا أَهُلُهَا قَالَ تُرَوُنَ هَـذِهِ هَيّنَةً عَلَى أَهْلِهَا قَالُوا نَعَمُ قَالَ وَاللَّهِ لَلدُّنْيَا أَهُوَنُ عَلَى اللَّهِ مِنُ هَذِهِ عَلَى أَهْلِهَا. ۞

❶صحيح: أحرجه البخاري، كتاب التفسير،باب(لا تسَّالواعن أشيا إن تبدلكم تسؤكم)(4661)ومسلم، كتاب الفضائل بهاب توقيره صلى الله عليه وسلم وترك إكتار سؤاله عمالا ضرورة اليه(6072)

[🕄] صحبح: ال كاشام مسلم، في الزهد(2957) نيز ترمـذي، كتاب 🛭 صحيح: سابقة تخ تج بي ہے۔ الزهد،باب ماجاء في هوان الدنيا على الله(2321) من يرب

حكل يُتِنْ الْكَافِيْنِيُ (476) (476 كتاب الرقاق) الم

فوائد: یے حدیث اس بارے صری ہے کہ دنیا اللہ کے ہاں انہائی حقیر ہے۔ ''احم'' میں ایک حدیث ہے ((لَوْ کَانَتِ الدُّنْیَا تَعْدِلُ عِنْدَ اللهِ جَنَاحَ بِعُوْضَةِ مَا سَقَٰی کَافِرًا مِنْهَا شِرْبَةً.))

''اگر دنیا اللہ کے ہاں مجھر کے پر کے برابر بھی اہمیت کی حامل ہوتی تو اللہ اس سے کسی کا فرکو پانی کا گھونٹ بھی نہ بلاتے ، یہ دنیا کی انہائی رزالت و حقارت پر دال ہے۔ لہذا اس دنیا میں دل لگا لینا اور اس کو سب کچھ بمجھ کر اپنی محنتوں تو انائیوں کا مقصد و ہدف کھہر الینا پر لے درجے کی بیوقونی ہے۔

[28] بَابِ أَيُّ الْأَعُمَالِ أَفُضَلُ كون سے اعمال افضل ہیں؟

2780 ـ أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي الْمُرَاوِح

عَنُ أَبِى ذَرِّ قَالَ سَأَلَ رَجُلُ النَّبِيَّ عِنَى البودر وَاللَّهُ كَتِ بِي الكِ آوَى نَ نِي عَلَيْكَ الله عَنُ أَبِى عَنُ أَبِى عَنُ أَبِي عَنْ البودر وَاللَّهُ كَتِ بِي الكِ آوَى نَ نِي عَلَيْكَ إِلَى عَنْ البودر وَالله عَنْ البودر وَالله عَنْ الله عَلْ الله عَنْ الله ع

''الله پرایمان لا نا اورالله کے راسته میں جہاد کرنا۔''

فوائد:(۱) اس سے جہاد کی اہمیت واضح ہوتی ہے اس لیے اسے ((ذِرْ وَ۔ قُر سَنَامِهَا)) ''اسلام کے کوہان کی چوٹی قرار دیا گیا ہے۔ توان میں تطبیق یہی ہے کہ یے مختلف اوقات کے کاظ سے ہے کسی وقت کوئی عمل افضل کسی وقت کوئی تعنی جیسے حالات کا نقاضا ہو۔

2781 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ أَنَّهُ سَمِعَ

أَبَا هُرَيُرَةَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﴿ اللهِ اللهُ
باللَّهِ وَجهَادٌ فِي سَبيلِ اللَّهِ. •

 [◘] متفق عليه: البخارى، كتاب العتق، باب اى الرقاب أفضل(2382) ومسلم، كتاب الإيمان، باب بياك كوك الإيماك بالله
 افضل الأعمال (646)

متفق عليه: البخارى، كتاب الإيمان، باب من قال إن الإيمان هو العمل (26) ومسلم، كتاب الإيمان، باب بيان وكون الإيمان بالله افضل الاعمال (244)

﴿ عَيْنَ الْكَائِمِينَ ﴾ ﴿ 47 ﴿ كَتَابِ الرقاق ﴾ [29] بَابِ لَا يُؤُمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى يُحِبَّ لِأَخِيهِ مَا يُحِبُّ لِنَفُسِهِ مومن وہ ہے جواینے بھائی کے لئے وہی پسند کرے جواینے لئے پسند کرتا ہے

2782- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ

سیّدنا انس رفائقہ کہتے ہیں رسول الله طفیعَ اَلَیْمَ نَظِیمَ نَے فرمایا:

"کوئی اس وقت تک مومن نہیں ہوسکتا جب تک اپنے بھائی کے لئے وہ پیند نہ کرے جو اپنے لئے پیند کرتا

عَنُ أَنْسٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَا يُؤُمِنُ أَحَدُكُمُ حَتَّى يُحِبَّ لِأَخِيهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ. ٥

"_~

2783- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ وَهَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ قَالَا حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ

عَنُ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ عِلَيُّا قَالَ لَا يُوْمِنُ سَيّدنا الْسِ فَالْمَرُ كَهَ بِين بَى طَعَامَيْمَ نَ فرمايا: "كوكى اس أَحَـدُكُمُ مَتَّى أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنُ وقت تك مومن نبيس بوسكتا جب تك ميں اسے اس ك وَالِيهِ وَوَلَيهِ وَالنَّاسِ أَجُمَعِينَ. ◘ والدين اولا داورسب لوگوں سے مجوب نہ ہو جاؤں ـ''

فواند:(۱) سیّدناعمر فالنَّهٔ سے ایک حدیث مروی ہے جس میں ثابت ہے کہ نبی کریم ملطے آتے ہے۔
محبت اپنی جان سے بھی زیادہ ہونی چاہیے ، تبھی ایمان کمل ہوسکتا ہے۔ (۲) محبت کا یہ اُصول ہے کہ ((اِنَّ الْسُمُ حِبَّ لِسَمَنَكُ بُحِبُّ بُطِیْع ،)) ''محبّ اپنے محبوب کی پیروی کرتا ہے۔' البندا اگر آپ کوکوئی شخص السُمُ عِبِ الله ملطے اَلَیْنَ الله مقابلتاً اسی کی پیروی کرو گے اور اسی کا تھم مانو کے جس کو آپ رسول الله ملطے تین ایسی صورت میں ایمان میں نقص اور گناہ لازم ہو جائے گا لہندا کمال ایمان کے لیے آپ کی محبت سب سے زیادہ دل میں ہونا شرط ہے۔

(٣) حدیث میں ہے: ((مَنْ اَحَبَّ سُنَتِیْ فَقَدْ اَحَبَّ نِیْ وَمَنْ أَحَبَّنِیْ کَانَ معْی فِی الْجَنَّةَ.)) (او کے ماقال) "جس نے میری سنت سے محبت کی اس نے مجھ سے محبت کی اور جس نے مجھ سے محبت کی وہ میرے ساتھ جنت میں ہوگا۔" گویا اللہ کے نبی ﷺ کی سنت سے پیار ہونا یہ دعویٰ محبت رسول کے لیے ضروری ہے۔

[●] متفق عليه: البخاري، كتاب الإيمان،باب من الإيمان أن يحب لاحيه مايحب لنفسه (13) ومسلم، كتاب الإيمان،باب الدليل على أن خصال الإيمان أن يحب.....(168)

[€] متفق عليه: البخارى،كتاب الإيمان،باب حب الرسول صلى الله عليه وسلم من الإيمان(10)ومسلم،كتاب الإيمان, 10)

كتاب الرقاق كتاب الرقاق المناق الكالمناق المناقلة

(س) امام خطابی والله اس سے اختیاری محبت مراد لیتے ہیں نہ کہ طبعی کیونکہ بدانسان کے بس سے باہر

ب-(تنقيح الرواة: ١٠/١)

[30].... بَابِ أَيُّ الْمُؤُمِنِينَ خَيْرٌ کون سامومن بہتر ہے؟

2784 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ عَلِيّ بْنِ زَيْدِ بْنِ جُدْعَانَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي ىڭ تَىسىسىس

سيّدنا ابو بكرة وللنفظ كهت بي أيك آدمي في كها: "يا رسول الله! كون سے لوگ بہتر ہيں۔" آپ نے فرمایا:" جن كى عمر لمی ہواور عمل اچھے ہوں۔ 'اس نے کہا: کون سے لوگ برے ہں؟ فرمایا:''جن کی عمر کمبی ہواور اعمال برے ہوں۔''

عَنُ أَبِي بَكُرَةَ أَنَّ رَجُلًا قَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ قَالَ مَنْ طَالَ عُمُرُهُ وَحَسُنَ عَمَلُهُ قَالَ فَأَيُّ النَّاسِ شَرٌّ قَالَ مَنَّ طَالَ عُمُوهُ وَسَاءَ عَمَلُهُ . ٥

فواند:(۱) جوجس قدراعمال كا حامل ہوگا وہ الله تعالیٰ کے ہاں اسی قدررفعتوں اورعظمتوں كا مالک ہوگا اور کثرت اعمال زیادتی عمر کے بغیر نامکن ہے سومعلوم ہوا کہ ایمان کے ساتھ کمبی عمر انسان کے لیے فائدے کا باعث ہے یہی وجہ ہے کہ اللہ نے اُمت محمد یہ کولیلۃ القدر سے نوازا کیونکہ بیاین چھوٹی عمر کی بنا پر سابقه كمي كمبي عمرول والمصونين سے پیچھے ندرہ جائيں۔

2785 حَدَّنَا حَجَّاجٌ حَدَّنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةً

عَنْ عَلِيّ بُنِ زَيْدٍ بِإِسْنَادِهِ مِثْلَهُ. ٥٠ على بن زير سے اى طرح روايت ہے۔

[31].... بَابِ فِي فَضُل آخِر هَذِهِ الْأُمَّةِ اس امت کے آخری لوگوں کی فضیلت

2786 - أَخْبَرَنَا أَبُو الْمُغِيرَةِ قَالَ حَدَّثَنَا الْأُوْزَاعِيُّ حَدَّثَنَا أَسِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ خَالِدِ بْنِ

❶صحيح بالشواهد: أخرجه الترمذي، كتاب العمر للمؤمن (2338) الكا ثمامٍ حاكم 1/339، والبيهـ في الحنائز ،باب طوبيٰ لمن طال عمره وحسن عمله 381/3 ميں ہے۔

۵ مسند ضعیف: سابقة نخ یج بی ملاحظه کریں۔

479 كتاب الرقاق يتنن الكاليوي

عَن ابُن مُحَيُريز قَالَ قُلُتُ لِأَبِي جُمُعَةَ ابن محیریز کہتے ہیں میں نے ابو جعہ سے کہا جو صحالی ہیں کہ ہم سے کوئی حدیث بیان کریں جو آپ نے رسول رَجُل مِنَ الصَّحَابَةِ حَدِّثُنَا حَدِيشًا سَمِعُتَهُ مِنُ رَسُولِ اللَّهِ عَلَيْ قَالَ نَعَمُ الله طفائلة سے سن ہو انہوں نے کہا: ''مان میں تم ہے أُحَدِّثُكَ حَدِيثًا جَيِّدًا تَغَدَّيْنَا مَعَ بہت عدہ حدیث بیان کروں گا۔ ہم صبح کے وقت رسول رَسُولِ اللَّهِ عَلَيُّ وَمَعَنَا أَبُو عُبَيُدَةَ بُنُ الله طفاعية كے ياس كئ اور ممارے ساتھ ابوعبيده بن جراح رفائقه تھے۔ انہوں نے کہا: 'میا رسول اللہ! کوئی ہم الُجَرَّاحِ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَحَدٌ خَيْرٌ مِنَّا أَسُلَمُنَا وَجَاهَدُنَا مَعَكَ قَالَ نَعَمُ ہے بھی بہتر ہے؟ ہم ایمان لائے اور آپ کے ساتھ جہاد کیا' آپ نے فرمایا: ''ہاں' وہ لوگ جوتمہارے بعد ہوں قَوُمٌ يَكُونُونَ مِنْ بَعُدِكُمُ يُؤُمِنُونَ بي گے اور مجھے دیکھے بغیر مجھ پر ایمان لائیں گے۔''

فواند:(١)((قُلْتُ لِكِين جُمُعَةَ رَجُلِ مِنَ الصَّحَابَةَ .)) ان الفاظ عمعاوم موتا ہے کہ ابوجمعة صحابی رسول متھ کسی ذات کے بارے اتنا ہی معلوم ہو جانا اس کی تعدیل ، ثقابت کے لیے کافی ب كونكم محدثين ، اصليين كا قاعده ب ((الصَّحَابَةُ كُلُّهُمْ عَدُولُ .)) صحابة سارے كے سارے عادل ہیں۔(۲)صحابہ کی سوچ کامحورعموماً دینی اعتبار ہے بہتریا افضل ہونا ہوتا تھا۔ (۳)صحابہ ریخاتیہ اسلام کے بعد جہاد کو انتہائی عظیم عمل سمجھتے تھے۔ (۲) جو شخص آپ طبیع کیا ہے این دیکھے ایمان لائے وہ صحابہ سے بہتر ہے،لیکن بيبهترى مطلق نهيں ہوگى كيونكه ((لَيْسسَ الْسَخَبْرُ كَالْمُعَايَنَة .)) كەنن سائى بات آئھوں دىكھى كى طرح نہیں ہوسکتی کیونکہ سننے سے بات اس طرح دل میں نہیں جمتی جس طرح دیکھنے یا مشاہدہ کرنے ہے اس کا اثر دل پر ہوتا ہے، اب جب انہوں نے اللہ کے نبی کو دیکھا ہے، آپ کی زندگی کا اُٹھنے بیٹھنے کا مشاہدہ کیا ہے، آب يروحي اور فرشتول كے نزول اور ديگر نشانيوں كو ديكھا ان كے ليے ايمان لانا آسان ہے ، بنسبت ان لوگوں کے جوان چیزوں کا مشاہدہ نہ کر سکے۔انہوں نے غیب پر ایمان لا کر زیادہ جرأت کا مظاہرہ کیا ہے۔ اس سے ہٹ كرصحاب كودوسرول كى نسبت ہراعتبار سے برترى حاصل ہے۔ آپ سے اللہ كافر مان ہے: (الا تَشُبُّوا أصْحَابِيْ فَلَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلُ أُحُدُ ذَهَبَا مَا بَلَغَ مُدَّ أَحَدِهمْ وَلا نَصِيفَه.)) ''میرے صحابہ کو گالی نہ دو ، سواگرتم میں ہے کوئی احدیہاڑ کے برابر سونا بھی خرچ کریے تو وہ ان کے ایک مد غله یااس کے نصف کے برابر بھی نہیں پہنچ سکتا۔'' (متفق علیہ)

❶ صحيح: أخرجه الطبراني في الكبير 22/4(3538)واحمد 160/4

وَلَمْ يَرُونِنِي. ٥

كتاب الرقاق 480 854515117555

[32].... بَابِ فِي تَعَاهُدِ الْقُرُآن

قرآن کی حفاظت کرنا

2787 - أَخْبَونَا عُبَيْدُ اللّٰهِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُورِ قَالَ سَمِعْتُ أَنَاوَ إِنَّا رِ....

سیّدنا عبدالله والنين كهت بين نبي الشّفاية في الله والنه مرمايا " برى بات ہے کہتم میں سے کوئی ہوں کھے: 'میں فلال فلال آبت بھول گیا ہوں۔'' بلکہاہے بھلا دیا گیاتم قرآن کو باد کرو کیونکہ وہ آ دمی کے سینے سے اس سے بھی جلدی نکل جاتا ہے جتنی جلدی جانوراین رسی سے نکلتا ہے۔''

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ عَنِ النَّبِي عِنْ اللَّهِ عَلَى النَّبِي عِنْ اللَّهِ عَنِ النَّبِي لِأَحَدِكُمُ أَنْ يَقُولَ نَسِيتُ آيَةَ كَيْتَ وَكُلِتَ بَالُ هُو نُسِّيَ فَاسْتَذُكُووا الْقُوْآنَ فَإِنَّهُ أَسُوَعُ تَفَصِّيًّا مِنْ صُدُور الرَّجَال مِنَ النَّعَم مِنُ عُقُلِهَا. ٥

فهاند:(۱) الله اگر قرآن یا دکرنے کی توفیق دے تو اس کو دھراتے رہنا جا ہے تا کہ وہ بھول نہ جائے کیونکہ عدم خیال سے قرآن جلد ذہن سے فکل جاتا ہے۔ (۲) قرآن کے بھولنے یر وارد ہونے وال احادیث جن میں اس پر وعید کا ذکر ہے کوئی بھی صحت کے درجے تک نہیں پینچتی للبذا اس کے بھولنے برگناہ تو نہیں البتہ اپنی ستی کی بناء پر بھلا دینے کو پیندیدگی کی نگاہ سے نہیں دیکھا گیا جبیبا کہ حدیث کے الفاظ اس پر شاہد ہیں کہ آ دمی بھولنے کی نسبت اپنی طرف نہ کرے جواس کی تقصیر ظاہر ہو بلکہ اس کی نسبت شیطان کی طرف كي جائر (تفصيل كے ليے ديكھيے: فتح الباري ، كتاب فيضائل القرآن ، باب استذكار القرآن و تواهده) سرتجيت

[33] بَابِ لَا يَنْبَغِي لِأَحَدِ أَنْ يَقُولَ أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بُن مَتَّى کسی کے لائق نہیں ہے کہ وہ یوں کہے: ' میں پونس بن متی سے بہتر ہول۔'' 2788 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو نُعْيَم حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِل

عَنْ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَيْنًا لَا سَيْدِنا عبدالله وَيَاتَنُو كَتِي بِينِ رسول الله عَنْفَاتِيمٌ نَه فرمايا: لَا يَقُولَنَّ أَحَدُكُمُ أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ " " " مم ميس كونى ايدنه كه: ميس يونس بن متى سے بهتر

[•] متفق عليمه: البيخاري، كتاب فيضائل القران، باب استذكار القرآن وتعاهده (5032) ومسلم، كتاب صلاة المسافرين، باب فضائل القران يتعلق به (1838)

رُون مَتَّى فَي الْكَالِيْكِيُّ مَا اللَّهُ الْكَالِيْكِيُّ اللَّهُ الْكَالِيْكِيُّ مَا اللَّهُ اللَّلِي اللَّهُ اللِّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللِّهُ الللِّهُ اللَّ

فوائد:اس سے معلوم ہواا ہے آپ کو کسی پیغیبر سے افضل قرار دینا ممنوع ہے تی کہ آپ نے انبیا کے درمیان بھی تفضیل سے منع کیا ہے۔ آپ نے فرمایا: ((لا تسخیر وابین الانبیاء)) (متفق علیہ) انبیا کو آپس میں ایک دوسرے سے بہتر قرار نہ دو۔''

[34] بَابِ عَلَى كُلِّ مُسُلِمٍ صَدَقَةً ہرمسلمان پرصدقہ واجب ہے

2789 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرِ الْمَدَائِنِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِيهِ

سیّدنا ابوموی اشعری و النیم کیتے ہیں کہ رسول الله طفیمایی نے فرمایا: ' ہرمسلمان کے ذمہ صدقہ ہے۔' لوگوں نے کہا:

یا رسول اللہ! اگر وہ طاقت نہ رکھے یا نہ کر سکے؟ آپ نے فرمایا: ' اپنے ہاتھ سے کمائے پھراس سے کھائے اور صدقہ کر سکے؟ فرمایا: ' اہنے ہاتھ سے کمائے پھراس سے کھائے اور صدقہ کر سکے؟ فرمایا: عاجت مند کر سکے؟ فرمایا: عاجت مند مصیبت زدہ کی مدد کر ہے۔' اس نے کہا: اگر وہ ایسا بھی نہ کر سکے؟ آپ نے فرمایا: '' کہا: اگر وہ ایسا بھی نہ کر سکے؟ آپ نے فرمایا: ''کسی کے ساتھ برائی ایسا بھی نہ کر سکے؟ آپ نے فرمایا: ''کسی کے ساتھ برائی سے بازر ہے ہی صدقہ ہے۔''

عَنُ أَبِى مُوسَى الْأَشُعَرِيّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَلَى كُلِّ مُسُلِمٍ صَدَقَةٌ رَسُولُ اللّهِ عَلَى كُلِّ مُسُلِمٍ صَدَقَةٌ قَالُوا يَا رَسُولَ اللّهِ فَإِنُ لَمُ يَسُتَطِعُ أَوُ لَمُ يَسُتَطِعُ أَوُ لَمُ يَفُعَلُ عَنَهُ يَعَمَّلُ قَالَ يَعْتَمِلُ بِيَدَيْهِ فَيَأْكُلُ مِنْهُ وَيَتَصَدَّقُ قَالُوا أَفَرَأَيْتَ إِنُ لَمُ يَفُعَلُ قَالَ يُعِينُ ذَا الْحَاجَةِ الْمَلْهُوفَ قَالُوا أَفَرَأَيْتَ إِنُ لَمُ يَفُعَلُ قَالَ يَأْمُو بِالنَّحَيْدِ قَالُوا أَفَرَأَيْتَ إِنْ لَمُ يَفُعَلُ قَالَ يَأْمُو بِالنَّحَيْدِ قَالُوا أَفَرَأَيْتَ إِنْ لَمْ يَفُعَلُ قَالَ يَأْمُو اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الْحَاجَةِ الْمُلُولُونَ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ

[35] بَابِ مَنُ رَائَى رَائَى اللَّهُ بِهِ جوريا كارى كرتا ہے اللہ اسے اس كے ساتھ رسوا كرے گا

2790- أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا حَيْوَةُ قَالَ حَدَّثِنِي أَبُو صَخْرٍ أَنَّهُ سَمِعَ مَكْحُولًا نَقُولُ.......

حَدَّ تَنِي أَبُو هِنَدِ الدَّارِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ سَيِّرنا الوہند داری فِي اللهِ عَنِي كه مِی نے رسول رَسُولَ اللهِ عَنْ يَقُولُ مَنْ قَامَ مَقَامَ رِيَاءٍ الله طَيْنَا اللهِ عَنْ الله عَنْ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَنْ اللهُ عَلَيْ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلْمِ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلْ عَلْ

€ صحبه: أخرجه البخاري، كتاب الأنبياء،باب قول الله تعالى (وإن يونس لمن المرسلين) (3412)

② متفق عليه: البحارى، كتاب الزكاة، باب صدقة العبد (1445) ومسلم، كتاب الزكاة، باب بيان إن اسم الصدقة يقع على كل نوع من المعروف(2330)

حَصْلُ لِيُنْ الْكَلِيمِينَ ﴾ ﴿ 482 ﴿ كُتَابِ الرقاق ﴾ ﴿ 482 ﴿ كُتَابِ الرقاق ﴾ ﴿ حَمَالِ الرقاق ﴾ ﴿

کرنے کے لئے کام کرے گا اللہ تعالی قیامت کے دن اسے رسوا کرنے کے لئے اس کی شہرت کرے گا۔'

وَسُمْعَةٍ رَائَى اللَّهُ بِهِ يَوُمَ الْقِيَامَةِ

الُخَامَةُ الصَّعيفُ. 9

[36] بَابِ مَثَلُ الْمُؤُمِنِ كَمَثَلِ الزَّرُعِ مسلمان كى مثال كيتى كى طرح ہے

تَعُفِ بُنِ مَالِلْهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ سَيْدَا كعب بن ما لك بْنَاتُهُ كَبْتِ بِي رسول الله عَنْ اَلَهِ فَا اللهِ عَنْ اللهُ الل

فواند:(۱) "الخامة" جمع خام، خامات ـ تروتازه گھاس كوكها جاتا ہے ـ (المنجد ماده خ،ى، م)(۲) مؤمن كا روبيد كيك دار ہونا چاہيے يعنى ايمان پر جمار ہنے والا اور حالات كے مطابق اپنے آپ كو دھال لينے والا نه كه اپنے نظريات ميں تعصب كواپنا لے اور كى غلطى سے رجوع كرنے كى بجائے اسلام سے بى جاتا رہے ـ

[37].... بَابِ الدُّنُيَا خَضِرَةٌ حُلُوَةٌ ونيا *مرسِز كِيتى ہے*

2792 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَعُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ

[◘] صحيح: أخرجه احمد5/270والطبراني والكبير22/319والدولا بي في الكنيْ1/60

[•] متفق عليه: البخاري، كتاب المرض، باب في كفارة المرض(5643) ومسلم، كتاب صفة المنافق، باب مثل المؤمن كمثل الزرع ومثل الكافر كشحر الأرز (7025)

الكَوْلِيْنِينَ الكَوْلِيْنِينَ الكَوْلِيْنِينَ الكَوْلِيْنِينَ الكَوْلِيْنِينَ الكَوْلِيْنِينَ الْكُولِيْنِينَ الْكُولِيْنِينَ الْكُولِيْنِينَ الْكُولِيْنِينَ الْكُولِيْنِينَ الْكُولِيْنِينَ الْمُولِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُولِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِينِينِينَ الْمُؤْلِينِينِينَ الْمُؤْلِينِينِينَ الْمُؤْلِينِينِينَ الْمُؤْلِينِينِينَ الْمُؤْلِينِينِينَ الْمُؤْلِينِينِينَ الْمُؤْلِينِينِينِ الْمُؤْلِينِينِينِ الْمُؤْلِينِينِينِ الْمُؤْلِينِينِينِ الْمُؤْلِينِينِ الْمُؤْلِينِينِ الْمُؤْلِينِينِ الْمُؤْلِينِينِ الْمُؤْلِينِينِ الْمُؤْلِينِ نِ الْمُؤْلِينِينِ الْمُؤْلِينِينِ الْمُؤْلِينِينِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِينِ الْمُؤْلِ

سیّدنا کیم بن حزم رفی نی کہتے ہیں میں نے رسول اللہ ملیّ آئی ہے سوال کیا تو آپ نے مجھے دیا پھر میں نے سوال کیا تو آپ نے مجھے دیا پھر میں نے سوال کیا تو آپ نے مجھے دے دیا۔ پھر آپ سے سوال کیا تو آپ نے فرمایا: ''اے کیم! یہ مال ہرا بھرا ہے جو شخص اسے نے فرمایا: ''اے کیم! یہ مال ہرا بھرا ہے جو شخص اسے برکت دے گا۔ جو شخص اسے لائی سے لے گا اس کے لئے اس میں برکت نہیں ہوگی اس کی مثال اس شخص کی طرح ہے جو کھا تا ہے مگر سیر نہیں ہوتا۔ اور اور والا ہاتھ نیچے والے ہاتھ سے گر سیر نہیں ہوتا۔ اور اور والا ہاتھ نیچے والے ہاتھ سے گھر سیر نہیں ہوتا۔ اور اور والا ہاتھ نیچے والے ہاتھ سے

أَنَّ حَكِيمَ بُنَ حِزَامٍ قَالَ سَأَلُتُ رَسُولَ اللهِ عَلَيْهَ فَأَعُطَانِي اللهِ عَلَيْهَ فَأَعُطَانِي اللهِ عَلَيْهَ اللّهُ فَأَعُطَانِي اللهِ عَلَمْ سَأَلُتُهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَيْهَ اللهِ عَلَيْهَ اللهِ عَلَيْهُ اللهِ عَلَيْهُ اللهِ اللهِ عَلَيْهُ اللهُ ا

بہتر ہے۔''

فواف اسماع غرور ایک حینہ کے روپ میں بدشکل چڑیل ہے۔ اس لیے قرآن میں اسے متاع غرور سے تعبیر کیا گیا ہے۔ ارشادِ ربانی ہے: ﴿ وَمَا الْحَیٰو بَةَ اللّٰهُ نَیَا إِلّا مَتَاعُ الْغُدُود ﴾ لہذا جواس کی حقیقت کو سمجھ کر اس کو مدنظر رکھتا ہے اور اس سے بفدر ضرورت لیتا ہے وہ تو اس کے دھو کے سے ﴿ جَاتا ہے اور جواس کے ظاہری حسن میں کھوکر اس کی حقیقت سے صرف نظر کر لیتا ہے وہ بالآخر ہولنا کیوں کے مہیب گڑھوں میں جاگرتا ہے جن میں گرجانے کے بعد سوائے حسرت ویاس کے انسان کے ہاتھ کچھیس آتا۔ (السلّٰہ ہُمّ لا جَعَلَ الدُّنْیَا اَکْبَرَ هَمِّنَا وَلا مَبْلَغَ عِلْمِنَا .)

[38].... بَابَ إِنَّ اللَّهَ كَرِهَ لَكُمُ قِيلَ وَقَالَ

زیادہ باتیں کرنا اللہ کونا پسند ہے

2793 حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيِّ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَمْرِو الرَّقِّيُّ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ وَرَّادٍ مَوْلَى الْمُغِيرَةِ

سیّدنا مغیرہ و فائنی کہتے ہیں رسول اللّد مُشِیَّتِیْمَ نے بیٹیوں کو زندہ درگور کرنے ماؤں کی نا فرمانی کرنے رو کنے اور مانگنے زیادہ بولنے کثرت سوال اور مال کو ضائع کرنے سے منع

عَنِ الْـمُغِيرَةِ قَالَ نَهَى رَسُولُ اللّهِ ﷺ عَنُ وَأَدِ الْبَنَاتِ وَعُقُوقِ الْأُمَّهَاتِ وَعَنُ مَـنُعٍ وَهَـاتِ وَعَنُ قِيـلَ وَقَالَ وَكَثُرَةِ

◘ صحيح: أخرجه البخاري، كتاب الزكاة، باب الاستعفاف عن المسالة (1472) والترمذي، كتاب صفة الفيامة، باب
 (29) الحديث (2463) والنسائي، كتاب الزكاة، باب اليد العليا (2530)

السُّؤَال وَإِضَاعَةِ الْمَالِ. • فرمايا ـ فرمايا ـ فرمايا ـ

خوائد:.....(منبع و هات)کامعنی ہے کہ خودتو اپنا ہاتھ دبا کرد کھے کی پر پچھ خرچ نہ کرے لیکن اگلے سے مطالبہ کرتا رہے یہ خلا ہے۔

. [39] بَابِ فِي الْأَئِمَّةِ الْمُضِلِّينَ مُراه پيثواوَں كم تعلق

2794 أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ أَبِي

عَنُ ثَوْبَانَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَنَى أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَنَى أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَنَى أَنَّ وَسُولَ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى الْمَتِ كَمُراه بيثواوَل كا أَخَافُ عَلَى أُمَّتِى الْأَئِمَةَ الْمُضِلِّينَ. ﴿ ثَمِينَ سَبِ سِي زياده اپني امت كَمُراه بيثواوَل كا خوف ركمتا مول ـ ''

فوافد:معاشرے میں دو طبقے ایسے ہیں کہ اگر وہ سدھر جائیں تو معاشرے کی اصلاح ممکن ہے اور اگر یہ گرخ جائیں تو سارا معاشرہ بگاڑ کی لپیٹ میں آجا تا ہے: ایک علاء اور دوسرے اساتذہ یحکمران عموماً انہی کی تربیت سے گزر کراعلی مناصب اور منصب حکومت پر فائز ہوتے ہیں اگر یہ سیدھی راہ پر گامزن ہوں۔

[40].... بَابِ انْصُرُ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ مَظُلُومًا اللهِ عَلَمُ اللهِ مَا اللهِ مَا اللهِ مَا اللهِ مَا ا

2795 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ

عَنُ جَابِ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَنَى جَابِ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَنَى اللَّهُ عَنْ اللَّهُ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ اللِّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللِّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللِّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللللْمُ اللَّهُ اللَّهُ الللللْمُ

[◘]متفق عليه: البخاري،كتاب الزكاة،باب قوله الله تعالىٰ(لا يسئلون الناس الحافًا)(1477)ومسلم،كتاب الأقضية،باب النهي عن كثرة المسائل من غير الحاجة(4458)

[🕰] صحیح: (215) کے تحت اس کی تخر تک گزر چکی ہے۔

 [۞]صحيح: أخرجه مسلم، كتاب البروالصلة، باب لصد الأخ ظالمًا أومظلومًا (2584) والبيهةي، كتاب آداب القاضي، باب القاضي يكف كل واحد من الخصمين عن عرض صاحبه 137/10

مَر نَيْنَ الْكَالِيَّانِيُ الْكَالِيَّانِيُ الْكَالِيَّانِيُ الْكَالِيَّانِيُ الْكَالِيَّانِيُ الْكَالِيَّانِي الرقاق

[41] بَابِ الدِّينُ النَّصِيحَةُ دين خيرخوابي ہے

2796_ أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنِ عَنْ هِشَامِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ وَنَافِع

سیّدنا ابن عمر خِالِیْهٔ کہتے ہیں رسول الله طِیْنَ آئے فرمایا:
''دین خیرخواہی ہے۔'' ہم نے کہا: یا رسول اللہ! کس کے
لئے؟ فرمایا:''اللہ اس کے رسول اس کی کتاب مسلمان
کے رہنما اور عام مسلمانوں کے لئے۔''

عَنِ ابُنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ عَنَى البُنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ عَنَى النَّصِيحَةُ قَالَ قُلْنَا لِمَنُ يَا رَسُولِ هِ يَا رَسُولِ هِ وَلِرَسُولِ هِ وَلِحَسَابِ هِ وَلِأَئِسَمَةِ الْمُسُلِمِينَ وَعَامَتِهمُ. • وَعَامَتِهمُ. • وَعَامَتِهمُ. • وَعَامَتِهمُ. • وَعَامَتِهمُ.

[42] بَابِ الْإِسُلامُ بَدَأً غَرِيبًا اسلام کی ابتداءغرباء سے ہوئی

2797 حَدَّثَنَا زَكَرِيًّا بْنُ عَدِي حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي إِسْحَقَ عَنْ أَبِي

اْلَاَّحْوَصِ

سیّدنا عبدالله رفالیّهٔ کہتے ہیں ہمیں رسول الله طفیقییّهٔ نے فرمایا: ''بے شک اسلام کی ابتداء غرباء سے ہوئی اور عنقریب وہ غرباء میں لوٹ آئے گا۔''میرا خیال ہے حفص نے کہا:''غرباء کے لئے خوش خبری ہو۔'' کہا گیا:''غرباء کون ہیں؟ کہا:''قبیلے کے مسافر لوگ۔''

عَنُ عَبُدِ اللهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَىٰ اللهُ اللهِ عَلَىٰ اللهُ اللهُ عَلَىٰ اللهُ اللهُ وَاللهُ عَلَىٰ اللهُ وَاللهُ عَلَىٰ اللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ ولِللللهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ ولِلللللهُ وَاللّهُ ول

فوائد:(۱)(النزاع) يهجمع بـ "النزيع" بـ اس كمعنى مسافر واجنبى ہونا بـ اور "نزاع القبائل" قبائل كے را ور ميں رہنے والے اجنبى لوگوں پر بولا جاتا ہـ (المنجد مادہ نزع) (۲) مسلم ميں يه حديث ابو جريره رفائن ہـ مروى ہے جس ميں (كما بدأ) كے بعد (فطوبى للغرباء) كے الفاظ بلاتر ود منقول بيں۔ (۳) ابتدا اسلام ميں مسلمانوں كى قلت كى بنا پر انہيں معاشرے ميں اجنبى سمجھا جاتا تھا آخر دور

❶ صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الإيمان، باب بيان ان الدين النصيحه (194) وابوداؤد، كتاب الأدب، باب في النصيحة (4944)

[•] صبحيح: أخرجه مسلم، كتاب الإيمان، باب يدأالاسلام غريبًا وسيعود كما بدأوهو يأرز بين المسجدين (370)وابن ماجه، كتاب الفتر، باب بدأ الاسلام غريبا (3986)

المُعْرِينَ الطَّائِمُونَ المُعْرِينَ المُعْرِينِ المُعْرِقِ المُع

میں پھراسلام کے مانے والے تھوڑے رہ جائیں گے اور معاشرے میں اجنبی اجنبی سے محسوں ہوں گے حتی کہ وہ سکڑتے ہوئے مدیث ہے: ((إِنَّ الْإِنْسَمَانَ وَمسلم میں حدیث ہے: ((إِنَّ الْإِنْسَمَانَ الْالْمُسَمِّدُ تَا ہُورُ الْحَدَّةُ إِلَىٰ جُحْرِهَا .)) '' یقیناً ایمان مدینہ کی طرف سکڑ آئے گاجس طرح سانی اپنی بل کی جانب سکڑ آتا ہے۔''

2798 ـ أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنْسِ

عَنُ عُبَادَةَ بُنِ الصَّامِتِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَبَادَةَ بُنِ الصَّامِتِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَلَى قَالَ مَنُ أَحَبَ لِقَاءَ اللهِ كَرِهَ اللهُ لِقَائَهُ لِقَائَهُ وَمَنُ كَرِهَ لِقَاءَ اللهِ كَرِهَ اللهُ لِقَائَهُ فَقَالَتُ عَائِشَةُ أَوْ بَعُصُ أَزُواجِهِ لِقَائَهُ فَقَالَتُ عَائِشَةُ أَوْ بَعُصُ أَزُواجِهِ إِنَّا لَنَكُرهُ الْمَوْتَ قَالَ لَيْسَ ذَلِكَ وَلَكِنَّ الْمَوُتِ قَالَ لَيْسَ ذَلِكَ وَلَكِنَّ الْمَوُتِ قَالَ لَيْسَ ذَلِكَ وَلَكِنَّ الْمَوْتُ اللهِ وَكَرَامَتِهِ فَلَيْسَ وَلَكِنَّ اللهُ فِقَائَهُ وَإِنَّ الْمَوْتُ لِقَاءَ اللهِ وَكَرَامَتِهِ فَلَيْسَ اللهِ وَكَرَامَتِهِ فَلَيْسَ اللهُ لِقَانَهُ وَإِنَّ الْكَافِرَ إِذَا خَضَرَهُ اللهُ وَكَرَامَتِهِ فَلَيْسَ حَضَرَهُ اللهِ وَكَرَامَتِهِ فَلَيْسَ شَيْءٌ أَكُرةَ إِذَا اللهِ وَعُرَهَ اللهِ وَكُرةَ اللهِ وَعُرةَ اللهِ وَعُرةَ اللهِ وَكُرةَ اللهِ وَكُرةَ اللهِ وَكُرةَ اللهِ وَكُرةَ اللهِ وَكُرةَ اللهِ لَقَانَهُ وَكُرةَ اللهِ وَكُرةَ اللهِ وَكُرةَ اللهِ لَقَانَهُ وَكُرةَ اللهِ وَكُرةَ اللهِ لَقَانَهُ وَكُرةَ اللهِ لَقَائَهُ وَكُرةَ اللهِ لَقَائَهُ وَكُرةَ اللهِ وَكُرةَ اللهِ لَقَائَهُ وَكُرةَ اللهُ وَكُرةَ اللهِ لَقَائَهُ وَكُرةَ اللهُ فَاللهُ لَا لَهُ اللهُ لَهُ اللهُ وَكُرةَ اللهُ وَكُرةَ اللهُ لَا لَهُ لَا لَهُ اللهُ لَقَائَهُ وَكُرةَ اللّهُ وَكُرةَ اللّهُ لِقَائَهُ وَلَا اللهُ وَكُرةَ اللّهُ لِقَائَهُ وَلَا اللهُ وَكُرةَ اللهُ لَا لَهُ اللهُ اللهُ لَا اللهُ اللهِ اللهُ المُولِي المُعْلِقُ اللهُ المُعْلَقُ اللهُ اللهُ اللهُ المُعْلَالِهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ المُؤْلِقُ اللهُ المُنْ اللهُ المُعْلَقُ اللهُ اللهُ المُؤْلِقُ المُعْلِقُ اللهُ المُؤْلِقُ المُلْلِلْ المُؤْلِقُ المُعْلَقُ المُؤْلِقُ اللهُ المُؤْلِقُ المُلْولَةُ المُؤْلِقُ المُؤْلِقُ المُؤْلِقُ اللهُ المُؤْلِقُ المُلْ

ستَّدنا عبادة بن صامت فالنَّهُ كُهتِي مِن رسول اللَّه يُشْيَاطِيْرُ نے فرمایا: ''جو اللہ کی ملاقات کو پیند کرتا ہے اللہ بھی اس سے ملاقات کو پیند کرتا ہے۔ اور جو اللہ سے ملاقات کو نا پند کرتا ہے اللہ بھی اس سے ملاقات کو نا پیند کرتا ہے۔ سیدہ عائشہ والنوایا آپ کی کسی بیوی نے کہا: 'جم موت کونا پند کرتے ہیں۔" آپ نے فرمایا: "بیر بات نہیں ہے مومن کو جب موت آتی ہے تو اسے اللہ کی رضا مندی اور عزت کی خوشخری دی جاتی ہے تو اسے اینے اگلے انجام ہے زیادہ کوئی چزمحبوب نہیں ہوتی۔ تو وہ اللہ سے ملاقات کو پیند کرتا ہے اور اللہ اس سے ملاقات کو پیند کرتا ہے۔ کافر کو جب موت آتی ہے تو اسے اللہ کے عذاب اور اس کی سزاکی بشارت دی جاتی ہے تو اسے اینے اگلے انجام سے زیادہ کوئی چیز بری معلوم نہیں ہوتی۔اس لئے وہ اللہ ہے ملاقات کو نا پیند کرتا ہے اور اللہ اس سے ملاقات کو نا یندگرتاہے۔''

الكانين الكاني

[44].... بَابِ فِي الْمُتَحَابِّينَ فِي اللَّهِ

الله کے لئے محت کرنا

2799 أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ مَعْمَرِ عَنْ

أَبِي الْحُبَابِ سَعِيدِ بْنِ يَسَارٍ

عَنُ أَبِى هُـرَيُـرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ إِنَّ اللّٰهَ تَعَالَى يَقُولُ يَوُمَ الْقِيَامَةِ أَيُنَ الْمُتَحَابُونَ بِجَلَالِ الْيَوْمَ

أُظِلُّهُمُ فِي ظِلِّي يَوُمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلِّي. •

سیّدنا ابو ہریرۃ وَخَالِیْمُ کہتے ہیں رسول الله طَلَّے اَلَیْمَ نَا نَا فَر مایا: قیامت کے دن الله فرمائے گا: "میری عظمت کی خاطر محبت کرنے والے کہاں ہیں؟ میں آج آئیں اپنے سایہ میں جگہ دول گا آج میرے سائے کے علاوہ اور جوئی ساینہیں ہے۔"

فواند:(۱) حدیث میں سات افراد کا ذکر آتا ہے کہ جنہیں اللہ تعالی قیامت کے دن ایخ عرش کا سابیہ مرجمت فرما کیں گے کہ جس دن عرش کے علاوہ کسی چیز کا سامینیں ہوگا جب کہ اس حدیث میں اختصاراً ان میں سے فقط ایک کائی تذکرہ کیا گیا ہے۔ (۲) اللہ کے لیے عبت یہ ہے کہ اس کے مجبوب بندوں سے پیار کیا جائے ان کی محبت کودل میں بسایا جائے یہ گویا محبوب کی ذات سے نہیں بلکہ اس کی صفات جو کہ عبادت و ریاضت کی اس نے اپنائی ہوئی ہیں ان سے محبت ہے جس کی قدر کرتے ہوئے اللہ اس سے میر کیمانہ سلوک کرے گا۔ (اللہ موفی فقنا لذلك)

[45] بَاب لَا يَتَمَنَّى أَحَدُ كُمُ الْمَوْتَ تم مِس سے كوئى موت كى تمنا نہ كرے

2800 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعِ أَخْبَرَنِي شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبُو عُبَيْدٍ مَوْلَى عَبْدِالرَّحْمَن بْنِ عَوْفِ

 أَنَّ أَبَا هُرَيُرَةَ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ لَا يَسَمَّتُ مَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ لَا يَسَمَّتُ مَا لَمَوُتَ إِمَّا مُحْسِنًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يَزُودَادَ إِحْسَانًا وَإِمَّا مُستًا فَلَعَلَّهُ أَنْ يَسُتَعُتَ. • مُستَعَلَى اللَّهُ الْعُلْمُ اللَّهُ الْعُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعْلَمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُسْلِمُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُلْعُلُولُ اللَّهُ الْمُلْعُلُولُ اللَّهُ الْمُلْعُلِمُ اللَّهُ اللَّهُ ال

فوائد:موت کی تمنایی کسی مسلمان کے لیے جائز نہیں ایک تو جو صرت کے وجہ ہے وہ حدیث میں وارد

[•] صحيح: أخرجه مسلم، كتاب البرو الصلة، باب في فضل الحب في الله (6494)

المُعْلِينَ المُعْلِينَ المُعْلِينَ المُعْلِينَ المُعْلِينَ المُعْلِقِ الْعِلْمِ المُعْلِقِ المُعْلِقِ المُعْلِقِ المُعْلِقِ المُعْلِقِ الْعِلْمِ المُعْلِقِ الْعِيقِ الْعِلْمِي الْعِلْمِي الْعِلْمِي الْعِلْمِي

ہو چکی ہے نیز بیا گویا اللہ کے عطیے کی ناقدری بھی ہے۔صراحنا موت کی طلب حرام ہے جبیبا کہ مذکورہ حدیث سے واضح ہے ہاں اگر کوئی ایس مجبوری بڑگئی ہے کہ انسان کوموت کے علاوہ اس سے چھٹکارے کا کوئی حل بھائی نہیں دے رہاتو پھرآپ مِشَا اَیْنَ نے ان الفاظ کے استعال کی اجازت دی ہے کہ بندہ کیے: ((اَللّٰهُ مَّ اَحْییْ نِیْ مَا كَانَتِ الْحَيْوةُ خَيْرُ إِلَىٰ وَتُوَفِّنِيْ إِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرٌ لِّيْ.))(متفق عليه) "ا الله! مجه جب تك میرے لیے میری زندگی بہتر ہے تب تک زندہ رکھاور جب میرے لیے موت بہتر ہوتو مجھے فوت کر لینا۔''

[46] بَابِ فِي قَوُلِ النَّبِيِّ ﴿ يُعِثُثُ أَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيُنِ نبي طفي عليه كاس قول كم تعلق ' ميں اور قيامت ان دوانگلیوں کی طرح قریب قریب ہیں''

2801 حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ

بالسَّبَّاحَةِ وَالْوُسُطَى. ٥

عَنُ أَنَس عَنِ النَّبِي عِنْ قَالَ بُعِثْتُ أَنَا سيِّدنا انس رَاليُّهُ بيان كرت بين كه ني سُنَعَ الله ف فرمايا: وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ وَأَشَارَ وَهُبٌ " "مين اور قيامت ان دوانظيوں كي طرح بيج كتے بين اور آپ نے اینا شہادت کی انگلی اور درمیان انگلی کی طرف اشارہ کیا۔''

[47].... بَابِ فِي قُولِ النَّبِي ﷺ أَنْتُمُ آخِرُ الْأَمَمِ نبي طَطِيَا لِيمْ كَا قُولُ' مَمْ ٱخرى امت ہو۔''

2802 أَخْبَرَنَا النَّصْرُ بْنُ شُمَيْل.....

حَدَّثَنَا بَهُزُ بُنُ حَكِيمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ سَمِعُتُ دَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ ا إِنَّكُمُ وَقُيْتُمُ سَبُعِينَ أُمَّةً أَنْتُمُ آخِرُهَا وَ أَكُرَ مُهَا عَلَى اللَّهِ. ٥

بنر بن تھیم اینے والد سے اور وہ اینے دادا سے بیان کرتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ طشکوللے سے سنا فرواتے تھے:''تم سےستر امتیں پوری ہوگئی ہیںتم آ خری امت ہو اوراللہ کے نز دیک معنز زہو۔''

[🕽] صحيح: أخرجه البخاري، كتاب المرض،باب تمنى المريض الموت(7235)والنسائي، كتاب الجنائز،باب تمني الموت (1818)

[◘]متفق عليه: أخرجه البخاري،كتاب الرقاق باب قول النبي صلعم(بعثت أنا والساعة كهاتين(6504)ومسلم،كتاب الفتن، باب قرب الساعة (7330)

[♣]جيد: أخرجه احمد 3/5-5و الترمذي، كتاب تفسير القرآن، باب (4) ومن سورة آل عمران (1300) وابن ماجه، كتاب الزهد،باب صفة أمة محمد صلعم(4288)

489 كتاب الرقاق [48].... بَاب فِي فَضُلِ أَهُلِ بَدُرٍ الل برركي فضيلت

2803 حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةً عَنْ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ

عَنُ أَبِى هُوَيُوةَ أَنَّ النَّبِيَّ عَلَىٰ قَالَ أَيْنَ سِيّمنا ابو برية وَلَّمُ كُتِ بِي كَه بَى طَلَيْظَ نَ فَم ايا: فَكَانُ فَعَمَزَهُ رَجُلٌ مِنْهُمُ فَقَالَ إِنَّهُ وَإِنَّهُ ' ' فلال كهال ہے؟''ال آ دمی نے اسے برا كها: وه ايبا اور فقالَ النَّبِيُ عَلَىٰ أَلَيْسَ قَدْ شَهِدَ بَدُرًا ايبا ہے تو نبی طَفِيَ اَنْ نَ فرايا: ''كيا وه جَنَّ بدر مِن قَدَ الله اطّلَعَ عَلَى موجود نه تھا۔'' انہوں نے كها: '' كيول نهيں۔'' آپ نے أَهُل بَدُر فَقَالَ اعْمَلُوا مَا شِنْتُمُ فَقَدُ فرمايا: ''شايد الله تعالى نے برر والوں كى طرف متوجہ بوكر أَهُل بَدُر فَقَالَ اعْمَلُوا مَا شِنْتُمُ فَقَدُ

یے فرمایا ہو: ''(آج کے بعد) تم جو جا ہوعمل کرو میں نے تمہیں بخش دیا ہے۔''

[49].... بَابِ النَّهُي أَنُ يَقُولَ مُطِرُنَا بِنَوْءِ كَذَا وَكَذَا وَكَذَا وَكَذَا وَكَذَا وَكَذَا

2804 حَدَّثَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ قَالَ أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَادٍ عَنْ عَتَّابِ بْنِ

و به حنینِ

غَفَرُتُ لَكُمُ. ٥

عَنُ أَبِى سَعِيدِ الْنُحُدُرِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَنُ اللهِ عَنُ اللهِ عَلَى اللهُ الْقَطُرَ عَنُ اللهُ الْقَطُرَ عَنُ أَنْزِلَ لَأَصْبَحَتُ طَائِفَةٌ مَن مَثُ أَنْزِلَ لَأَصْبَحَتُ طَائِفَةٌ مِن أُمَّتِى بِهَا كَافِرِينَ يَقُولُونَ هُوَ بِنَوُءِ مِن أُمَّتِى بِهَا كَافِرِينَ يَقُولُونَ هُوَ بِنَوُءِ مِنْ أُمَّتِى بِهَا كَافِرِينَ يَقُولُونَ هُوَ بِنَوُءِ مِنْ مُحْدَح قَالَ الْمِجْدَحُ كَوْكُبٌ. ٥

8501511050

سیدنا ابوسعید خدری رفائی کہتے ہیں رسول الله علیہ نے فرمایا: 'اگر الله میری امت سے دس سال تک بارش روک لے پھر بارش برسائے تو ایک گروہ اس کا انکار کرے گا اور وہ کہیں گے: ''مید بارش ''مجدح ستارے کی وجہ سے ہوئی ہے۔'' راوی کہتا ہے: ''مجدح ستارے کو کہتے ہیں اسے

فوائد:(۱) بارش برسانے والی ذات الله تعالیٰ کی ہے، اگر وہ اسے روک لے تو کوئی بھی اسے مجبور نہیں کرسکتا۔ (۲) اصل موَثر اور عامل ذات الله وحدہ ہی کی ہے مادی اسباب فقط ایک بہانہ ہیں ورنہ ان

وبران بھی کہا جاتا ہے۔'

عسن: أخرجه ابوداؤد، كتاب السنة، باب في الخلفاء (4654)

² جيد: صحيح ابن حباك(6130)

حرات المرقاق المحالية المحالية المرقاق المحالية المرقاق المحالية المحالية المرقاق المحالية المرقاق المحالية ال

کا پایا جانا مسبب کے وجود کے لیے ضروری نہیں بلکہ اس کا انتصار اللہ کی ذات پر ہے۔ (۳) کسی بھی قتم کے عذاب یا رحت کے لیے مادی سبب کواصل مؤثر قرار دینا شرک ہے۔

[50].... بَابِ الْحَسَنَةُ بِعَشُر أَمُثَالِهَا نیکی کا دس گناہ تواب ہے

2805- أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن أَخْبَرَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ وَاصِل مَوْلَى أَبِي عُيَيْنَةَ عَنْ بَشَّادِ بْن أَبِي سَيْفِ عَن الْوَلِيدِ بْن عَبْدِ الرَّحْمَن

عیاض بن غطیف کہتے ہیں ہم ابوعبیدہ بن جراح کے پاس عُبَيْدَةً بُنَ الْجَرَّاحِ نَعُودُهُ فَقَالَ سَمِعْتُ ان كى عيادت كے لئے آئے انہوں نے كہا: ميں نے رسول الله مَشْطَقَتَا لِمَ سے سنا فرماتے تھے: "ایک نیکی کا دس گنا تك اجرملتا ہے۔''

عَنُ عِيَىاض بُن غُطَيُفٍ قَالَ أَتَيُنَا أَبَا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ الْحَسَنَةُ بِعَشُر أَمْثَالِهَا. ٥

[51].... بَابِ مَا قِيلَ فِي ذِي الْوَجْهَيُن خوشامد کرنے والے کے متعلق وعمد

2806 أَخْبَرَنَا الْأَسْوَدُ بْنُ عَامِر حَدَّثَنَا شَرِيكٌ عَنِ الرُّكَيْنِ عَنْ نُعَيْمِ بْنِ حَنْظَلَةَ قَالَ شَرِيكٌ وَرُبَّمَا قَالَ النُّعْمَان بْن حَنْظَلَةَ

جوخوشامد کرتا ہے قیامت کے دن آ گ کی دوز بانیں لگائی حاكيں گي۔''

عَنْ عَمَّارِ عَنِ النَّبِيِّ عِنْ اللَّهِي عَلَيْ اللَّهُ مَن كَانَ ذَا وَجُهَيُن فِي الدُّنْيَا كَانَ لَهُ يَوُمَ الُقِيَامَةِ لِسَانَان مِنُ نَارٍ. ٥

فواند:(۱) "ذوالوجهين" الشخف كوكها جاتا ہے جوشمير ميں موجود بات كے برعس بات کرے۔ (المنجد: مادہ: وجه) (۲) خوشامد کرنے والا انسان یقیناً خود غرض ہوتا ہے جو کہ کسی کی جھوٹی تعریف کر کے اپنا کام نکلوانا حابتا ہے اس کوصرف اپنی غرض سے مطلب ہے اگلے کا بے شک نقصان ہی ہوللمذا ایسے بندے کو ندکورہ وعید کی روشنی بیں اپنا انجام یا درکھنا حیا ہیے۔

¹ جيد: رواه البخاري ، في الأدب المنفرد بسند حسن

² حسن: أخرجه ابو داؤ د، كتاب الأدب، باب في ذي الوجهين (4873)

سَيِّنَ الْكَالِيَّةِ عَلَى الْمُواقِ عَالِ الرقاقِ عَالِ الرقاق

[52] بَابِ فِي قَوُلِ النَّبِي ﷺ أَيُّمَا رَجُلِ لَعَنْتُهُ أَوُ سَبَبُتُهُ

نبی طفی آیا کے اس قول کے متعلق: ''الہی جسے میں نے لعنت کی یا برا کہا ہواہے رحمت کر''

2807 حَدَّثَنَا الْمُعَلِّى بْنُ أَسَهِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ زِيَادٍ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ أَبِي

سيّدنا ابو ہررية وَلَيْنَوْ كَهِمْ بِي رسول الله السَّاعَيْمَ فِي فرمايا: عَنُ أَبِسِي هُـرَيُـرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ

اللَّهِ عَنَّ اللَّهُمَّ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌّ فَأَيُّ "الله! مين انسان مول للنداجس مسلمان كومين في لعنت کی یا اسے برا کہا یا اسے مارا ہواہے اس کے لئے الْـمُسلِمِينَ لَعَنْتُهُ أَوْ شَتَمْتُهُ أَوْ جَلَدُتُهُ

تبخشش اور رحمت اور قربت کا باعث بنا جس کی بنا پر فَاجُعَلُهَا لَهُ صَلَاةً وَرَحْمَةً وَقُرْبَةً تُقَرَّبُهُ

> بِهَا إِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ . • تمامت کے دن مجھے تیری قربت حاصل ہو۔''

2808 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ نُمَيْرِ عَنْ أَبِيهِ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي سُفْيَانَ

سیّدنا جابر فالنیو کہتے ہیں نبی مشکور نے پہلی حدیث کی عَنُ جَابِرِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ إِلَّا أَنَّ فِيهِ

طرح فرمایا۔ مگراس میں بخشش کی جگه یا کی اور رحمت کا لفظ ہے۔ ذَكَاةً وَرَحْمَةً. ٥

> [53] بَابِ فِي قُولِ النَّبِيِّ عِنْكُمْ لَوُ أَنَّ لِي مِثْلَ أَحُدٍ ذَهَبًا نبی طفی میں کے اس قول کے متعلق''اگر میرے لئے احدیہاڑ جتنا سونا ہوتو میں کچھ بھی حچھوڑ وینا پیندنہیں کرتا''

2809 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ قَالَ سَمِعْتُ سُوَيْدَ بْنَ

الْحَارِثِ

عَـنُ أَبِسِي ذَرِّ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ سیّدنا ابوذر والنَّهُ کہتے ہیں میں نے رسول الله الله عَلَيْكَ كويد اللهِ عَلَيْكَ يَقُولُ مَا يَسُرُّنِي أَنَّ جَبَلَ أُحُدٍ فرماتے ہوئے سنا: ''اگر میرے پاس احد پہاڑ کے برابر بھی سونا ہوتو میں یہ بات پندنہیں کرتا کہ قرضدار کے لِي ذَهَبًا أَمُوتُ يَوْمَ أَمُوتُ عِنُدِى دِينَارٌ قرض کے علاوہ ایک ویناریا آ دھا دینار چھوڑ کر دنیا ہے أُوُ نِصُفُ دِينَارٍ إِلَّا لِغَرِيمٍ. 9

رخصت ہو جاؤں۔''

❶ صحيح: أخرجه مسلم، كتاب البرو الصلة، باب من لعنه النبي صلعم أو سيه أو دعا عليه (6559)

②صحيح: أخرجه مسلم، كتاب البروالصلة، باب من لعنه او سبه أو د عليه (6560)

⊕جید: سوید بن حارث کوابن حبان نے ثقات میں ذکر کیا ہے۔ أحر جه احمد 148/5-149

الكازمين (المناق على المناق على المناق على المناق على المناق الكانومين الكانومين الكانومين المناق ا

فوائد: مال رکھنا اسے جمع کرنا اسلام میں قطعی معیوب نہیں بشرطیکہ اس میں سے حقوق کی ادائیگی ہوتی رہے درنہ وہ وبال جان ہوگا مثلاً زکوۃ وصدقات کا آدمی اہتمام کرتا رہے بلکہ اس کام کی نیت کرکے مال اکٹھا کرنا ثواب کا کام ہے۔مسلم میں حدیث ہے: ((ان الله یحب العبد التقی الغنی الغنی الخفی)) دریقیناً اللہ تعالیٰ متقی امیراورگم نام آدمی کو پیند کرتا ہے۔''

صاحب مشکوۃ نے اس پر باب باندھ ہے: ((باب استحباب المال والعمر للطاعة)) '' مال وعمر کا طاعت کے لیے ہونامتحب ہے۔' لہذا معلوم ہوا کہ مال کواپنے پاس رکھنا معیوب نہیں ہاں اتنا ضروری ہے کہ مال پاس ہوتو اس کی دکھ بھال کرنا اس کو بڑھانے کی فکر میں رہنا بیانسان کو بسا اوقات غفلت میں بتلا کر دیتا ہے لہذا آپ فقر کو ہی پندر کھتے تھے تا کہ بندہ مال و دولت کے جھنجھٹ سے نچ کرزیادہ وقت اطاعت الہی میں صرف کر سکے ، سواس روایت کو بیان کرنے والے صحابہ رسول بھی ساری عمر آپ کی اس سیرت کو اینائے رہے اورفقر کی حالت میں ہی اس دنیا سے تشریف لے گئے۔

[54].... بَابِ فِي الْمُوبِقَاتِ ہلاک کرنے والے افعال

2810 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَضْلِ وَسُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالًا حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ ابْنُ زَيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَدُّهُ بُ مُسَادًا اللهُ عَدَّثَنَا أَدُّهُ بُ مُسَادًا اللهُ عَدَّثَنَا أَدُّهُ بُ مُسَادًا اللهُ عَدْ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُولِي اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلْمُ اللّهُ عَلَّا اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلّمُ عَلَّا عَلّمُ عَلّمُ

عَنُ حُمَيُدِ بُنِ هِلَالٍ عَنُ عُبَادَةَ بُنِ قُرُطٍ قَالَ إِنَّكُمُ لَتَأْتُونَ أُمُورًا هِى أَدَقُ فِى أَعُينِكُمُ مِنَ الشَّعُرِ كُنَّا نَعُدُهَا عَلَى عَهُ دِ رَسُولِ اللَّهِ عَلَى مِنَ الْمُوبِقَاتِ فَذُكِرَ لِمُحَمَّدٍ يَعْنِى ابُنَ سِيرِينَ فَقَالَ صَدَقَ فَأَرَى جَرَّ الْإِزَارِ مِنُ ذٰلِكَ. •

حمید بن ہلال کہتے ہیں عبادۃ بن قرطہ نے کہا: "مم لوگ بعض ایسے کام کرتے ہو جو تمہاری نظر میں بال سے بھی زیادہ باریک ہوتے ہیں حالانکہ ہم اسے رسول اللہ طشے اللہ اللہ طشے اللہ اللہ طشے اللہ اللہ طشے اللہ کے زمانے میں ہلاک کرنے والے افعال میں شار کرتے سے کہا گیا: انہوں نے کہا: اس نے سے کہا گیا: انہوں نے کہا: اس نے سے کہا گیا: انہوں نے کہا: اس نے سے کہا گیا: انہوں سے کہا گیا: انہوں سے کہا ہیں سے ہے۔

[55] بَابِ الْحُمَّى مِنُ فَيُحِ جَهَنَّمَ بخار دوزخ كے جوش سے ہوتا ہے

2811 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ

• صحیح: أخرجه أحمد 370/3و 89/5نيز مجمع الزواند (404) مين فدري كي حديث اس شام بحي بـ

عَنُ رَافِعِ بُنِ حَدِيجٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ سَيِّدنا رافع بن خدي كَهُ مِن كرسول الله طَيْعَ اللهِ عَنُ رَافِع بُن خَدِيجٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ سَيِّدنا رافع بن خدي كه مِن كرسول الله طَيْعَ اللهِ عَنْ اللهُ عَنْ اللهِ عَلَى اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ اللهِ اللهِ عَنْ اللهُ عَنْ اللهِ عَنْ اللهُ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهُ اللهِ عَنْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَنْ اللهِ عَنْ اللهِ الل

فوائد:(۱) "فيح " فاح يفيح (ضرب) عمصدر باور "فور" باب فاريفور عمصدر ہے، دونوں کامعنی گرمی کی تیزی ہے۔ (دیکھئے: المنجد: مادۃ ، فورو فیح).....(۲) بخار کوجہنم کی گرمی اس لیے قرار دیا گیا ہے کیونکہ بخارز دہ کے جسم میں جوحرارت ہوتی ہے وہ جہنم کا ہی ایک حصہ ہوتا ہے جس کو اللہ عبرت بنا کراسباب کے تقاضوں کے مطابق ظاہر کر دیتا ہے۔ اگر جداس بارے اور بھی اقوال میں بہر حال یہی بات بہترمعلوم ہوتی ہے۔(٣) (فَأَدْبرْ دُوْهَا بِالْمَاءِ .) ابن ماجه مين (بالْمَاءِ الْبَارِدِ) مُعْدُا يانى ، جبكه منداحمد (بِسمَاءِ زَمْزَم) کےالفاظ ہیں بہرحال کوئی بھی ٹھنڈا یا سادہ یانی استعال کرلیا جائے وہ ان شاءاللہ نافع ہوگا جیسا کہ آپ مطنع بین نے اپنی مرض الموت میں سات کنوؤں کا یانی منگوا کران کواینے اوپر بہایا تھا۔ (٣) مولا نا احمر حسن محدث دہلوی اور شرف الدین محدث دہلوی تنقیح الرواۃ میں فرماتے ہیں: ((والخطاب في هذا الحديث خاص باهل الحجاز وما والاهم اذكان اكثر الحميات التي تعرض لهم من العرضية الحادثة عن شدة الحرارة)) (تنقيح الرواة:٢٥٨/٣)" ال مديث ك مخاطب اہل حجاز اوران کے اردگرد کے لوگ ہیں جبیبا کہ انہیں اکثر بخارسخت گرمی لگنے سے ہی ہوتے ہیں۔'' الیں حالت میں محندا یانی پینا اور اس سے عسل کرنا مفید ہے کیونکہ بخاردل میں پیدا ہونے والی حرارت سے ہوتا ہے جو کہ خون کے توسط سے سارے جسم میں پھیل جاتا ہے۔ (۲) بخار جتنی در رہے ہے بندے کے كنامول كاكفاره موتا ب- آب طِلْتَعَيْمَ أم سائب يا ميتب كوفر مات بين: ((لا تَسُبِّي الْـحُـمْي فَإِنَّهَا تُلْه الله خَطَايَا بَنِيْ آدَمَ كَمَا يَذْهَبُ الْكِيْرُ خَبَثَ الْحَدِيْدِ .)) (مسلم) "بخاركوگالى ندو عي بندے کے گناہ ایسے ختم کر دیتا ہے جیسے بھٹی لوہے کی میل کچیل کوختم کر دیتی ہے۔'' نیز آئندہ حدیث کاعموم بھی اس کا شاہد ہے۔

[56].... بَابِ الْمَرَضُ كَفَّارَةُ بِمَارِي (گناه كا) كفاره ب

2812 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْتَدِ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُخَيْمِرَةَ

 [♣] متفق عليه: البخارى، كتاب الطب، باب الحمى من فيح جهنم (5726) ومسلم، كتاب السلام، باب لكل داء دواء واستحباب التداوى (5723)

الكَالِيَّانُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيِّانُ الْكَالْمِينُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيِّانُ الْكَالْمِينَ الْمُعَالِقُ لَلْكُالِمِينَ الْمُعَالِقُ لَلْكُونُ الْمُعَالِقُ لَلْكُونُ الْمُعَالِقُ لَلْكُونُ الْمُعَالِقُ لَلْكُونُ الْمُعَالِقُ لَلْمُعَالِقُ لَلْمُعَالِقُ لَلْمُعَالِقُ لَلْمُعَالِقُ لَلْمُعَالِقُ لَلْمُعِنِي الْمُعَالِقُ لَلْمُعِنِي الْمُعَالِقُ لِمُعَالِمُ الْمُعَالِقُ لِمُعَالِمُ الْمُعَالِقُ لِمُعَالِمُ الْمُعَالِقُ لِمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِقُ لِمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِقُ لِمُعَالِمُ الْمُعِلَّمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِمُ لِمُعِلِمُ الْمُعَلِمُ لِلْمُعِلِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِمُ لِلْمُعِلَّمُ لِلْمُعِلَى الْمُعَلِمُ لِلْمُعِلَى الْمُعَلِمُ لِلْمُعِلَى الْمُعَلِمُ لِلْمُعِلَى الْمُعَلِمُ لِلْمُعِلَى الْمُعَلِمُ لِلْمُعِلَى الْمُعَلِمُ لِلْمُعِلَى الْمُعِلَى الْمُعَلِمُ لِلْمُعِلَى الْمُعَلِمُ لِلْمُعِلَى الْمُعَلِمُ لِلْمُعِلَى الْمُعِلَى الْمُعِلِمُ الْمُعِلَى الْمُعِلِمُ الْمُعِلَى الْمُعِلِمُ الْمُعِلَى الْمُعِلَى الْمُعِلَى الْمُعِلَى الْمُعِلَى الْمُعِلَى الْمُعِ

سیّدنا عبدالله بن عمر وَ الله الله علی رسول الله مطفع آنی نے فرمایا: ''جومسلمان بدنی آ زمائش میں مبتلا ہوتا ہے تو الله تعالیٰ اس کے محافظ فرشتوں سے فرماتا ہے: ''میرا بندہ جب تک میری بندش میں قید ہے ہردن اور رات میں اس کے لئے ولیی ہی نیکی کھوجیسی وہ صحت کی حالت میں کرتا تھا۔''

عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ عَمُرٍ و قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ عَمُرٍ و قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَنْ الْمُسْلِمِينَ يُصَابُ بِبَلاءٍ فِي جَسَدِهِ إِلّا أَمَرَ اللّهُ الْحَفَظَةَ الَّذِينَ يَحْفَظُونَهُ فَقَالَ اكْتُبُوا لِعَبُدِى فِي اللّهِ يَنْ يَحْفَظُونَهُ فَقَالَ اكْتُبُوا لِعَبُدِى فِي كُلِّ يَوْمُ وَلَيُلَةٍ مِثْلَ مَا كَانَ يَعْمَلُ مِنَ الْخَيْرِ مَا كَانَ يَعْمَلُ مِنَ الْخَيْرِ مَا كَانَ مَحْبُوسًا فِي وِثَاقِي. • الْخَيْرِ مَا كَانَ مَحْبُوسًا فِي وِثَاقِي. • الْخَيْرِ مَا كَانَ مَحْبُوسًا فِي وِثَاقِي. • •

[57] بَابِ أَجُرُ الْمَرِيْضِ مريض كااجر

2813 ـ أَخْبَرَنَا يَعْلَى بْنُ عُبَيْدٍ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ النَّيْمِيّ عَنِ الْحَارِثِ بْنِ سُوَيْدٍ

سیّدنا عبدالله فالنّفهٔ کمتے ہیں رسول الله ملطّ الله علی کیا سیّدنا عبدالله فالله کمتے ہیں رسول الله ملطّ الله انداز آپ کو بخار تھا میں نے اپنا ہاتھ آپ پررکھ کرکہا: '' یارسول الله! آپ کو تو بہت بخار ہے۔'' آپ نے فرمایا: '' جھے تہمارے دو آ دمیوں جتنا بخار ہوتا ہے۔'' میں نے کہا: '' آپ '' آپ کے لئے دو ہرا اجر ہوگا۔'' آپ نے فرمایا: '' جی ہاں جس مسلمان کو بھاری کی وجہ سے کوئی مصیبت پینی ہواس کے گناہ ایسے جھڑ جاتے ہیں جس طرح درخت کے ہے جھڑ جاتے ہیں جس طرح درخت کے ہے جھڑ جاتے ہیں۔''

عَنْ عَبْدِ اللّهِ قَالَ دَخَلُتُ عَلَى رَسُولِ اللّهِ عَلَى رَسُولِ اللّهِ عَلَى وَسُولَ عَلَيْهِ وَهُ وَيُوعَكُ فَوَضَعُتُ يَدِى عَلَيْهِ فَقُلُتُ يَا رَسُولَ اللّهِ إِنَّلْكَ لَتُوعِكُ وَعُكَا شَدِيدًا فَقَالَ إِنِّى لَتُوعِكُ وَعُكُن وَجُلانِ مِنْكُمُ أُوعَكُ رَجُلانِ مِنْكُمُ قَالَ قُلْتُ ذَٰلِكَ بِأَنَّ لَكَ أَجُرَيُنِ قَالَ أَجُلُ وَمَا مِنْ مُسُلِمٍ يُصِيبُهُ أَذًى مَرَضُ فَالَ وَمَا مِنْ مُسُلِمٍ يُصِيبُهُ أَذًى مَرَضُ فَا الشَّجَرَةُ وَرَقَهَا. ﴿ وَمَا الشَّجَرَةُ وَرَقَهَا. ﴿

فوائد:(۱) آپ منظ مَنْ آن کو بخار دوآ دمیوں کے برابر ہوتا تھا۔ (۲) جوذات خود مصائب کا شکار ہووہ دوسروں کی مصیبتوں کا مداوانہیں کر سکتی ہے لہذا آپ مختار کل نہ ہوئے جب آپ مختار کل نہیں تو پھر کوئی دوسرا کیسے اس مقام پر فائز ہوسکتا ہے، چاہے وہ کتنا بڑا ولی ہی کیوں نہ ہو۔ (ف افھم و تدبر زاد ک الله فھماً) مومن کی کوئی حالت بھی خیر سے خالی نہیں اس کی ایک ایک مصیبت اس کی ترقی کا زیند بن جاتی ہے۔

 [◘] متفق عليه أخرجه البخاري، كتاب المرض، باب شدة العرض 5647) ومسلم، كتاب البروالصلة ، باب ثواب العومن فيما يصيبه(6504)

 [◘]صحيح: أخرجه البخارى، كتاب المرض، باب شدة المرض(5647) ومسلم، كتاب البروالصلة ، باب ثواب المؤمن
 يصيه......(2571)

يُتِنِينُ الْكَالِينِينَ كَابِ الرقاقِ عَلَى الرقاقِ عَلَى الرقاقِ عَلَى الرقاقِ الرقاقِ [58].... بَابِ فِي فَضُلِ الصَّلَاةِ عَلَى النَّبِي ﷺ

نبي ملطي عليم ير درود بره صنے كى فضيلت

2814- أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ حَدَّتَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ جَعْفَرِ الْمَدَنِيُّ عَنِ الْعَلاءِ بْنِ عَبْدِالرَّحْمَنِ

سیّدنا ابو ہررة و فالله کہتے ہیں رسول الله طفی ایّن نے عَنُ أَبِسِي هُسرَيُسرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ فرمایا: ' جو محض مجھ پر ایک بار درود بھیجا ہے اللہ تعالی اس اللَّهِ ﷺ مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً وَاحِدَةً صَلِّي اللَّهُ عَلَيْهِ عَشْرًا. 9 یردس رحمتیں کرتا ہے۔''

2815 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ سُلَيْمَانَ مَوْلَى الْحَسَنِ

بْن عَلِيّ

سیّدنا عبدالله بن ابوطلحه این والدسے بیان کرتے ہیں کہ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُن أَبِي طَلْحَةَ عَنُ أَبِيهِ قَالَ جَاءَ النَّبِيُّ عِلَيَّ يَوُمَّا وَهُوَ يُرَى انہوں نے کہا ''ایک دن نبی طشکھی مارے یاس تشریف لائے اور آپ کے چہرہ برخوشی تھی کہا گیا: یا رسول اللہ! ہم الْبِشُرُ فِي وَجُهِهِ فَقِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا آپ کے چرے پرالیی خوثی د کھے رہے ہیں جو پہلے نہیں نَىرَى فِي وَجُهِكَ بِشُرًا لَمُ نَكُنُ نَوَاهُ دیکھی آب نے فرمایا: "جی ہاں ایک فرشتے نے میرے یاس آ کر مجھ سے کہا: یا محمر آپ کا رب فرماتا ہے کیا آپ اس بات یرخوش نہیں ہیں کہ آپ کی امت میں سے جو تخص ایک بار آب پر درود بھیج میں اس پر دس بار رحتیں ا

قَالَ أَجُلُ إِنَّ مَلَكًا أَتَانِي فَقَالَ لِي يَا مُحَمَّدُ إِنَّ رَبَّكَ يَقُولُ لَكَ أَمَا يُرْضِيكَ أَنُ لَا يُصَلِّى عَلَيْكَ أَحَدٌ مِنُ أُمَّتِكَ إِلَّا صَلَّيْتُ عَلَيْهِ عَشُرًا وَلَا يُسَلِّمَ عَلَيْكَ إِلَّا نازل كرول كا۔ جو مخص آپ پر ايك دفعه سلام بيسج كاميں سَلَّمُتُ عَلَيْهِ عَشُرًا قَالَ قُلُتُ بَلَى. ٥ اس ير دس مرتبه سلام تجيجول گاء " ميس نے كہا: " كيول

2816 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ السَّائِبِ عَنْ زَاذَانَ

❶ صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الصلاة، باب في ثواب الصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم (911) وابوداؤد، كتاب البصلاة بباب في الاستغفار (1530) والنسبائيي، كتباب السهو بهاب الفضل في الصلواة على النبي صلى الله عليه وسلم

[◄] جيد: أخرجه النسائي، كتاب السهو،باب فضل التسليم على النبي صلى الله عليه وسلم (1282)

الرقاق عن المرقاق عن الرقاق عن الرقاق عن الرقاق عن الرقاق عن الرقاق عن المرقاق عن المرقاق عن المرقاق ا

سیّدنا عبدالله بن مسعود فائنهٔ کتب بین رسول الله طفی این پر نے فرمایا: "الله کے کچھ فرشتے ہیں جو روئے زمین پر گھومتے رہتے ہیں مجھے میری امت کی طرف سے سلام پہنیاتے رہتے ہیں۔"

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ مَسُعُودٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ بُنِ مَسُعُودٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ مَلَاثِكَةً سَيًّا حِينَ فِي الْأَرْضِ يُبَلِّعُونِي عَنُ أُمَّتِي السَّلَامَ. • السَّلَامَ السَّلَامَ. • السَّلَامَ. • السَّلَامَ. • السَّلَامَ. • السَّلَامَ السَّلَامَ السَّلَامَ. • السَّلَامَ اللَّلَّامَ السَّلَامَ اللَّلَامَ السَّلَامَ السَلَّامَ السَّلَامَ السَّلَامَ السَّلَامَ السَّلَامَ السَّلَامَ السُّلَامَ السُّلَامَ السَّلَامَ السَّلَامَ السَّلَامَ السَّلَامَ السَّلَامَ السَّلَامَ السَّلَامَ السَّلَامَ السَّلَامِ السَّلَامِ السَّلَامَ السَّلَامَ السَّلَامِ الْسَلَامِ السَّلَامِ السَّلَامِ السَّلَامِ السَّلَامِ السَلْمَ الْ

[59].... بَابِ فِي أَسُمَاءِ النَّبِيِّ ﷺ

نی طلیجاتی کے ناموں کے متعلق

2817- أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبُ بْنُ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ نُ:.........

سیدناجبیر بن طعم فرانی کہتے ہیں میں نے رسول الله طفی ایک الله ملتے ایک میں نے رسول الله طفی ایک میں سے سنا نو میرے کئی نام ہیں میں محمد ہوں اور احمد ہوں میں ماحی ہوں الله تعالی میری وجہ سے کفر مثا تا ہے اور میرا نام ماشر ہے لوگ میرے پیچھے جمع ہوں گے اور میرا نام عاقب ہے اور عاقب وہ مختص ہے جس کے بعد کوئی نہ ہو۔''

جُبَيْرِ بُنِ مُطُعِمٍ عَنُ أَبِيهِ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ عَلَى يَقُولُ إِنَّ لِى أَسْمَاءُ أَنَا مُحَمَّدُ وَأَنَا الْمَاحِى الَّذِى مُحَمَّدُ وَأَنَا الْمَاحِى الَّذِى يَمُحُو اللهُ بِيَ الْكُفُرَ وَأَنَا الْمَاحِي الَّذِي يَعُشُرُ النَّاسُ عَلَى قَدَمِى وَأَنَا الْعَاقِبُ وَالْعَاقِبُ الْعَاقِبُ اللّهِ الْعَلَيْدِي لَيْسَ بَعُدَهُ أَوْلَا الْعَاقِبُ اللّهُ الْعَاقِبُ اللّهِ الْعَلَاقِ الْعَاقِبُ الْعَاقِبُ الْعَاقِبُ الْعَاقِبُ اللّهِ الْعَلَاقِ الْعَاقِبُ الْعَاقِبُ اللّهُ الْعَاقِبُ اللّهُ الْعَاقِبُ اللّهِ الْعَلَاقِ الْعَاقِبُ الْعَلَاقِ الْعَاقِبُ الْعَلَاقِ الْعَاقِبُ الْعَلَاقِ الْعَاقِبُ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ اللّهُ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَيْلُ الْعَلَاقِ الْعِلْعِلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعَلَاقِ الْعِلْعِلَى الْعَلَاقِيلَ الْعَلَاقِ الْعَلَ

فوائد:(۱) آپ طفیقی کے کئی نام ہیں کچھ ذاتی اور کچھ صفاتی جیسا کہ حدیث میں بھی اشارہ موجود ہے کہ آپ کے ذاتی نام محمد اور احمدی تفصیل بیان کی گئی جب کہ صفاتی نام کی ساتھ ہی تو جیہ وتفسیر کر دی گئی ہے۔ (۲) اس کے علاوہ بھی آپ کے بہت سے نام ہیں جو کہ یہاں ذکر نہیں ہوئے ، جیسے قرآن میں فرکور ہیں مثلاً عزیل ، مدر وغیر ہما۔

[60] بَابِ فِي أَكُلِ السُّحُتِ حرام كھانے كے متعلق

2818 - أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُثْمَانَ بْنِ خُتَيْمٍ

[🛈] صحيح: ابن حبان (913)

②متفق عليه: البخارى، كتاب المناقب، باب ماجاه في أسماه رسول الله صلى الله عليه وسلم (3532) ومسلم ، كتاب الفضائل، باب في أسمائه صلى الله عليه وسلم (6058)

كتاب الرقاق ESTISIONE DED

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَن بْن سَابِطٍ

عَنُ جَسابِس بُن عَبُدِ اللَّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَجُرَةَ إِنَّهُ لَنُ عُجُرَةَ إِنَّهُ لَنُ يَدُخُلَ الْجَنَّةَ لَحُمَّ نَبَتَ مِنُ سُحُتٍ. ٥

سيّدنا جابر بن عبدالله واللها كتب بين رسول الله السَّيّان فرمایا: ''اے کعب بن عجر ہ! جنت میں وہ شخص ہر گز داخل نہیں ہوگا جس کا گوشت حرام بنا ہوا ہو۔''

> [61].... بَابِ الْمُؤُمِنِ يُؤُجَرُ فِي كُلِّ شَيْءٍ مومن کے لئے ہر کام میں اجر ہے

2819- أَخْبَرَنَا أَبُو حَاتِمِ الْبَصْرِئُ هُوَ رَوْحُ بِنُ أَسْلَمَ الْبَصْرِيُّ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ أَخْبَرَنَا ثَابِتٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَن بْنِ أَبِي لَيْلَي

> عَنُ صُهَيُب قَالَ بَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ جَالِسٌ إذُ ضَحِكَ فَقَالَ أَلا تَسْأَلُونِي

مِمَّا أَضُحَكُ فَقَالُوا مِمَّ تَضُحَكُ قَالَ عَجَبًا مِنُ أَمُو الْمُؤْمِنِ كُلُّهُ لَهُ خَيْرٌ إِنْ أَصَابَهُ مَا يُحِبُّ حَمِدَ اللَّهَ عَلَيْهِ

فَكَانَ لَـهُ خَيْرٌ وَإِنْ أَصَابَهُ مَا يَكُرَهُ فَصَبَرَ كَانَ لَهُ خَيْرٌ وَلَيْسَ كُلُّ أَحَد أَمْرُهُ لَهُ خَيْرٌ إِلَّا الْمُؤُمِنَ. ٥

ك ياس بين هوئ ته آب مسكرائ اور فرمايا: "متم مجه سے یوچھے نہیں کہ آپ کیوں ہنس رہے ہیں؟' اوگوں نے کہا: آپ کیوں بنے؟ آپ نے فرمایا: "مسلمان کی حالت عجیب ہے اس کی ہر بات اچھی ہے اگر اسے کوئی نعت ملتی ہے تو وہ اللہ کاشکر کرتا ہے۔ وہ اس کے لئے نیکی ہوتی ہے اگر اسے کوئی مصیبت پہنچتی ہے تو وہ اس برصبر کرتا ہے وہ بھی اس سے لئے نیکی ہے۔ اور مومن کے علاوہ کوئی نہیں جس کی ہر بات نیکی ہو۔'

> [62].... بَابِ لَوُ كَانَ لِابُنِ آدَمَ وَادِيَانِ مِنْ مَالِ ا گراہن آ دم کے پاس مال ہے بھری ہوئی دووادیاں ہوں تو.......

> > 2820 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ

عَنُ أَنَس قَالَ كُنُتُ أَسُمَعُ رَسُولَ سيّدنا الس بِالنَّمَ كَتِ بِين مِين فِي رسول الله السُّاعَيّا ع اللهِ عَلَى فَلا أَدُرى أَشَىءٌ أُنُزلَ عَلَيْهِ أُمُ اللهِ عَلَيْهِ أَلْمُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى الللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى الللهِ عَلَى اللهِ عَل

¹ اسناده قوى: صحيح ابن حبان (1723)

² صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الزهد،باب المؤمن امره كله خير (7425)

498 كتاب الرقاق الكالم الكالمات المالية

ہوئی تھی یا آپ کا فرمان تھاوہ بہتھی:''اگر ابن آ دم کے یاس مال سے بھرے ہوئے دو میدان ہوں تو وہ ان کے ساتھ تیسرا بھی تلاش کرے گا' مٹی کے علاوہ کسی چیز سے انسان کا پیپٹنہیں بھرتا' جو شخص تو بہ کرتا ہے اللہ تو یہ قبول

شَىءٌ يَقُولُهُ وَهُوَ يَقُولُ لَوُ كَانَ لِابُن آدَمَ وَادِيَانِ مِنُ مَالِ لَابُتَغَى إِلَيْهِمَا ثَالِثًا وَلَا يَسْمُلُّ جَوُفَ ابُن آدَمَ إِلَّا التُّرَابُ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَى مَنُ تَابَ. •

کرتاہے۔"

فوائد:انسان جس قدر مال حاصل كرتا جاتا ہے اس قدر اس كى حرص مزيد بردهتى چلى جاتيے حتى کہ وہ ہر کام سے بیگانہ ہو کر دنیاوی مال کے حصول کو ہی اپنا ہدف و آرزو بنالیتا ہے حالانکہ آپ ملتے ایم کا فران ب: ((وَاللهِ مَا الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ الْا مِثْلَ مَا يَجْعَلُ اَحَدُكُمْ إِصْبَعَه فِي الْيَمِّ فَلْيَنْظُرْ بما يَرْجعُ .)) (مسلم) ''الله كاتم! دنيا آخرت كے مقابلے میں فقط اس قدر ہے كه انسان انگى كودريا میں و بوئے اور ویکھے کہ اس کو کتنا یانی لگا ہے۔ گویا کس قدر غافل ہے شخص کہ اتنی عظیم شے کے مقابیل میں کس قدر حقیر شے کا انتخاب کئے ہوئے ہے۔ یہ دولت کی حرص وہوں انسان کو کہیں کا نہیں چھوڑتی جب کہ اس کے بالقابل حقيق كامياني وه بجس سے آپ نے آگاه فرمادیا۔ ((قد افداح من اسلم و رزق كفافاً و قَلَنَّعَهُ اللَّهُ بِهَا الْتَاهُ)) (مسلم) ومتحقيق كامياب موكيا ووضف جس في اسلام قبول كرليا اوراس يورا يورا رزق دے دیا گیا اور اللہ نے اسے اپنی عطا پر قناعت دے دی۔ ''حقیقت میں قناعت ہی اصل دولت وغناء ہے کہ جس کے حاصل ہو جانے پر بندہ غنی وامری ۹ وہ جاتا ہے ورنہ خزانے بھی مل جائیں تو انسان فقیر ہی رہتا ہےاوراس کی فقیری ختم ہونے برنہیں آتی۔ (اللّٰہم قنّعنا علی عطائك)

> [63].... بَابِ فِي النَّهُي عَنِ الْقَصَصِ وعظ كہنے كى ممانعت

> > 2821 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَامِر

عَنُ عَمْرو بْنِ شُعَيْبِ عَنُ أَبِيهِ عَنُ سيرنا عمرو بن شعيب اين والدس اوروه اين واداس نقل کرتے ہیں انہوں نے کہا رسول الله عظی کیا نے إلَّا أَمِيرٌ أَوْ مَأْمُورٌ أَوْ مُرَاءٍ قُلْتُ لِعَمُوو فرمايا: 'وعظ وه كرتا ب جوامير جماعت بويا وه جهاميركى بُنِ شُعَيْبِ إِنَّا كُنَّا نَسُمَعُ مُتَكَلِّفٌ فَقَالَ لَلْ الْحِرف سے اجازت ہو۔ وہ شخص جوشرت حابتا ہوں۔''

جَدِّهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَا يَقُصُّ

الكَالِيَّانُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيَّانُ الْكَالِيَانُ الْمَالِقُ فَي الْمُعَالِقُ لَلْكُولِيِّ الْمُوافِقُ لَلْمُعِنِّ الْمُعَالِقُ لَلْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِمُ لِلْمُعِلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ لِمُعِلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَمُ الْمُعِلَمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمِ الْمُعِلَمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ ال

هَذَا مَا سَمِعُتُ. •

میں نے عمرو بن شعیب سے کہا: ہم نے 'شہرت' کی جگہ ' تکلف' کالفظ سنا ہے انہوں نے کہا: "میں نے رہیں سنا۔"

فوائد:معلوم ہوا کہ امیر جب چاہے وام سے ناطب ہوکر انہیں نصیحت کرسکتا ہے یا اگر وہ کسی کو نامزد کر دے اسے نصیحت کرنے کے لیے آگے کھڑا کر دے اس سے ہٹ کر اگر کوئی خود آگے بڑھ کرخود مسند ارشاد پر فروکش ہوکر لوگوں کو وعظ شروع کر دیتا ہے تو یہ سراسرخود نمائی اور ریا ہے ، جہاں یہ بندہ اپنا اعمال کو برباد کرتا ہے ، وہیں مخاطبین کی بلا وجہ سمع خراشی کرتا ہے ، ہاں البتہ اس سے وہ شخص مشتیٰ ہے جو کوئی بُرا کام ہوتا دیکھتا ہے یا لوگوں کا جم غفیر دیکھ کر اس موقع کو دعوت کے لیے سازگار یا تا ہے تو وہ انہیں نصیحت آ موز با تیں بتا دیتا ہے جیسا کہ آپ مطابی کے ایک کار کی مجالس میں جاکر انہیں وعظ ارشاد کیا کرتے تھے۔

[64] بَابِ فِي الرُّخُصَةِ وعظ كرنے كي اجازت

2822 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاءِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي بُكَيْرِ عَنْ شُعْبَةَ

عَنُ عَبُدِ الْمَلِلْ بُنِ مَيُسَرَةً قَالَ سَمِعُتُ كُرُدُوسًا وَكَانَ قَاصًّا يَقُولُ الْخَبَرَنِي رَجُلْ مِنُ أَهُلِ بَدُدٍ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللّهِ عَلَىٰ يَقُولُ لَأَنُ أَقْعَدَ فِي رَسُولَ اللّهِ عَلَىٰ يَقُولُ لَأَنُ أَقْعَدَ فِي مِثُلِ هَذَا الْمَجُلِسِ أَحَبُ إِلَى مِنْ أَنْ مَجُلِسِ أَحَبُ إِلَى مِنْ أَنْ أَعُتِقَ أَرُبُعَ رِقَابٍ قَالَ قُلْتُ أَنَا أَيَّ مَدُ لِلَا مُحُلِسٍ يَعْنِي قَالَ كَانَ حِينَفِذٍ يَقُصُ مَدَ عَلِي مَنَ أَنْ عَينَفِذٍ يَقُصُ مَدَ الرَّجُلُ مِنْ أَصْحَابِ قَالَ أَبُو مُحَمَّد الرَّجُلُ مِنْ أَصْحَابِ قَالَ أَبُو مُحَمَّد الرَّجُلُ مِنْ أَصْحَابِ

بَدُرٍ هُوَ عَلِيٌّ. ٥

عبدالملک بن میسرہ بیان کرتے ہیں کہ کردوس (واعظ) کو یہ بیان کرتے ہوئے سا: نبی کریم مظفی میں اصحاب میں سے ایک بدری صحابی زائشہ نے مجھے خبر دی:

انہوں نے نبی کریم ملط آیا کو یہ ارشاد فرماتے ہوئے سنا: میرا اس محفل میں بیٹھنا میرے نزدیک چار غلام آزاو کرنے سے بہتر ہے۔

راوی کہتے ہیں: میں نے پوچھا: اس سے مراد کون سی مجلس ہے؟

نبی اکرم مطنی میں آپ نے جواب دیا: وہ مجلس جس میں آپ نے وعظ کیا ہو۔

امام دارمی وطفیہ فرماتے ہیں کہ غزوہ بدر میں شریک ہونے والے صحالی سے مرادسیّد ناعلی خالفہ ہیں۔

[€] صحيح بالشواهد: أخرجه احمد8/178 ومحمع الزوائد(921-922-923)

اسناده جید: اورو کھئے مدیث نمبر (924_746)

سِّنِيْنَ الْكَالِيْفِيُّ كَتَابِ الرقاق

فوائد:قصه گوئی اگر فضولیات اور جھوٹ سے پاک ہوتو بدانتہائی مفید چیز ہے کیونکہ قصہ ،گزشتہ واقعہ بدانسان کی توجہ کومر تکز کرنے کا بہترین ذریعہ ہے ۔قرآن میں بھی اکثر واقعاتی انداز اختیار کیا گیا ہے جبیا کہ سابقہ انبیا اور ان کی قوموں کے واقعات اس طرح پوسف عَالِیٰلاً کے واقعہ کو''احسن القصص'' بہترین بیان' قرار دیا گیا ہے۔ میں نے خود ایک مجلس کا مشاہدہ کیا جو کہ جیدعلاء کرام پرمشتل تھی اور وہ ایک قاص ، قصہ گو کی تقریرین کر ہچکیاں لے کررور ہے تھے جو کہ اس کی تا ثیر کا منہ بولتا ثبوت ہے۔

[65].... الشَّيُطَانَ يَجُرِيُ مِن ابُن آدَمَ كَمَجُرَى الدَّم شیطان انسان میں خون کی طرح چاتا ہے

2823 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاءِ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةً عَنْ مُجَالِدٍ عَنْ عَامِر

عَنُ جَابِو قَالَ وَرُبَّمَا سَكَتُ عَنُ جَابِو سيِّدنا جابِر فِي عَنْ جَابِو لَا للهُ عَنْ جَابِو اللهُ عَنْ جَابِو عورتوں کے یاس مت جاؤ جن کے شو ہر گھر میں نہیں ہیں کیونکہ'شیطان انسان میں خون کی طرح چلتا ہے۔'' لوگوں نے یوچھا:آپ کے جسم میں بھی؟ آپ نے فربایا:''جی ہاں'لیکن اس کے متعلق اللہ نے میری مدد کی تو وه فر مانېر دار ڄوگيا ـ''

قَسَالَ قَسَالَ رَسُولُ اللُّهِ عِنْ الْمُرْكِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ تَــُدُحُلُوا عَلَى الْمُغِيبَاتِ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَجُرِي مِن ابُن آدَمَ كَمَجُرَى الدَّم). قَالُوا وَمِنُكُ قَالَ: (﴿ نَعَمُ وَلَكِنَّ اللَّهَ أَعَانَنِي عَلَيْهِ فَأَسُلَمُ). 0

[66].... بَابِ فِي أَشَدِّ النَّاسِ بَلاءً لوگوں میں سے زیادہ آ ز مائش میں مبتلا ہونے والے شخص کا بیان 2825 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَاصِم عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدِ

> عَنُ سَعُدٍ قَسَالَ سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ أَيُّ النَّساس أَشَدُّ بَلاءً قَالَ: ((الْأَنْبِيَاءُ تُمَّ الْأَمُشَلُ فَالْأَمُشَلُ يُبُتَلَى الرَّجُلُ عَلَى حَسَب دِينهِ فَإِنْ كَانَ فِي دِيْنِهِ صَلَابَةً زِيدَ صَلابَةً وَإِنْ كَانَ فِي دِيْنِهِ رِقَّةٌ

سیدنا سعد والله کہتے ہیں نبی طفی آیا سے بوجھا گیا: " دلوگول میں سب سے زیادہ کون آ زمائش میں مبتلا ہوتا ہے۔'' آپ نے فرمایا:''انبیاء' پھر جواس کے قریب ہوں پھر جواس کے قریب ہوں آ دمی کی آ زمائش اس کے دین کے مطابق ہوتی ہے۔ اگر وہ اپنے دین میں مضبوط ہو

[₫] متىفىق عليه: البخاري، كتاب الأدب،باب لايلدغ المؤمن من حجر مرتين(6133)و أخرجه مسلم، كتاب الزهد،باب لايلدغ المؤمن من حجر مرتين(7423)

عَنَّهُ وَلَا يَزَالُ البَّلاءُ بِالْعَبُدِ حَنِّى تُومضبوطى اور برُه جاتى ہے۔ اگروہ اپنے دین میں کمزور ہوتو کے

تو مضبوطی اور بڑھ جاتی ہے۔ اگر وہ اپنے دین میں کمزور ہوتو وہ اس سے بالکل کمزور ہو جاتا ہے۔ آ دمی کامسلسل امتحان ہوتار ہتا ہے حتی کہ وہ بے گناہ ہو کر زمین پر چلتا ہے۔''

يَمُشِيَ عَلَى الْأَرُضِ مَا لَهُ خَطِينَةً)). •

فوائد: ایک مجھدارآ دی کی علامت ہے کہ وہ اپنے قریبی چاہنے والے کو ٹھونک بجا کردیکھتا ہے

کہ واقعی وہ اس کے ساتھ مخلص ہے یا فقط آ سانیوں کا ساتھی ہے اور ضرورت پڑتے پر بھاگ جانے والے ہیں ایسے ہی اللہ بھی اپنے محبوبوں ، بندوں کو آزما کران کی چھان پھٹک کرتا ہے اگر وہ ڈٹے رہیں تو ان کو مزید اپنے قرب سے ہمکنار کرتا ہے اور انہیں اپنے لیے خالص کر لیتا ہے لہٰذا مومن بندے کو اول تو آزمائش سے پناہ مائکی چاہیے لیکن اگر آزمائش آپڑے تو پھر صبر واستقامت کا مظاہرہ کرنا چاہیے اور اسے اپنے لیے قرب کا ذریعہ سمجھنا چاہیے۔

[67] بَابِ فِي قَوُلِ النَّبِيِّ عَلَيْ لَا تُطُرُونِي النَّبِيِ عَلَيْ لَا تُطُرُونِي النَّبِي عَلَيْ اللهُ المُطُورُونِي

2826 - أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ

سیّدنا ابن عباس والله کتب بین رسول الله طفیاً آیا نے فرمایا:

"مجھے حد سے نہ بوھاؤ ، جس طرح نصاری عیسیٰ بن مریم کو
حد سے بوھا تے ہیں۔البتہ مجھے الله کا بندہ اور اس کا
رسول کہو۔'

عَنِ ابُنِ عَبَّساسٍ عَنُ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَسَالَ: ((كَا تُسطُّرُونِى كَمَسا تُسطُرِى النَّسَسارَى عِيسَى ابْنَ مَرُيَمَ وَلَكِنُ قُولُوا عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ)) . ۞

فواند قران میں ہے ﴿ و قَالَتِ النّصَارَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّه ﴾ عیمائی کہتے ہیں کہ می الله کا بیٹا ہے اس کے وجود سے نکلنے والا اس کا ایک حصد ہے چنانچہ آپ طینے آپ طینے آپانے سلمانوں کو ایسی غلوکاری اور افتر اء پروازی سے روک دیا کہ کہیں تم بھی اندھی عقیدت میں مبتلا ہو کر حق سے روگردانی نہ کرنا جب کہ ہمارے کچھ صاحبوں نے تعلیمات نبوی کو پس پشت ڈالتے ہوئے ،اور اہل کتاب کی روش کو اپناتے ہوئے آپ طیفے آپانے کو اللہ حصہ قرار دے دیا کہا کہ آپ طیفے آپئے ٹو زمن نور اللہ ہیں (نعوذ باللہ) حالانکہ اللہ کا واضح فرمان ہے ﴿ لَمْ مَنْ اِللّٰهِ عَلَى اَللّٰهِ عَلَى اَللّٰهِ عَلَى اَللّٰهِ کَا اور نہ وہ خود کی سے فکلا ہے چنانچہ اس کی روی سے فرمان ہے ﴿ لَمْ مَنْ اِللّٰہُ عَلَى اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ وَلَمْ يُولِّ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ وَلَمْ يُولِّ اَللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اللّٰہُ اِللّٰہُ اللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ وَلَمْ يُولِّ اَلْہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اللّٰہُ اِللّٰہُ اللّٰہُ اِللّٰہُ اِللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ کے اللّٰہُ الل

ع صحيح : أخرجه البخاري، كتاب الأنبياء، باب (واذكر في الكتاب مريم) (3445)

حَرِّ لِيَّنِينَ الْكَالِيَّوْيِّ ﴾ 502 كتاب الرقاق كات

احتراز برتنا چاہیے اور آپی واضح تعلیم (عبداللہ) اللہ کا بندہ اس کوتسلیم کر لینا ہی باعث خیر ہے نیز مشرکین مکہ کا آپ مشیّقیًا ہم اعتراض ہی بیتھا کہ ہماری طرح بشر بندے ہیں اگر آپ کوئی نورانی مخلوق ، فرشتے ہوتے تو ہم آپ کی نبوت کوتسلیم کر لیتے۔ علینا البلاغ و عند الله رشاد

[68] بَابِ إِنَّ لِلَّهِ مِائَةَ رَجُمَةٍ يَقِينًا الله كَارِمَت كَسو هے بيں

2827 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بُنُ نَافِعٍ عَنْ شُعَيْبٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَتَّ.........

سیدنا ابو ہریرۃ رضائی کہتے ہیں میں نے نبی طفی ای کو یہ فرماتے ہوئے سا: "اللہ نے رحمت کے سوچھے کئے اپنے پاس ننانوے حصے رکھے اور زمین میں ایک حصہ بھیجا جس کی بدولت لوگ آپس میں رحم کرتے ہیں۔ حتی کہ گھوڑ ااپنا پاوں اپنے بیجے سے اٹھا لیتا ہے تا کہ اس خوف ہے کہ اے کوئی تکلیف نہ بہنچے۔'

فواند: جب اس رحمت کے سویں جھے میں سے رحم کچھ حصہ حاصل کر کے ماں اپنے بچے پراس قدر رحیم ہوسکتی ہے تو وہ الرحمٰن والرحیم وات اپنی مخلوق کے حق کس قدر شفیق و رحیم ہوگی سواس کے باوجود رحمت اللی سے محروم ہوکر جہنم کا ایندھن بن جانا انتہائی خسارے کا باعث ہوگا

> [69] بَابِ مَنُ هَمَّ بِحَسَنَةٍ نَيكى كا اراده كرنے والے تخص كا بيان

2828 - حَـدَّثَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا الْجَعْدُ أَبُو عُثْمَانَ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا رَجَاءٍ الْعُطَارِدِيَّ قَالَ

سيّدنا ابن عباس طلني فرمات بي كدرسول الله ملطّ يَهَا فرمايا: "تمهارارب مهربان

سَمِعُتُ ابُنَ عَبَّاسٍ عَنُ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِيمَا يَرُوِيهِ عَنُ رَبِّهِ عَزَّ وَجَلَّ قَالَ قَالَ

 [●] صحيح: أخرجه مسلم، كتاب التوبه، باب في سعة رحمة الله (606) وابن ماجه، كتاب الزهد، باب مايرجي من رحمة الله يوم القيامة (4293)

حَكَرُ لِيُسْتِكُ الْكَالِمِينَ عَلَى اللَّهِ اللَّهُ اللّ

ہے جو محض نیکی کا ارادہ کرتا ہے گراس پر عمل نہیں کرتا اس
کے لئے ایک نیکی کھی جاتی ہے اگر وہ اس پر عمل کرتا ہے تو
اس کے لئے دیں ہے لے کرسات سوگنا تک (یا اس سے
بھی) کئی گنا ہڑھا کر لکھا جاتا ہے جو شخص برائی کا ارادہ کرتا
ہے مگر ارتکا ہے نہیں کرتا اس کے لئے ایک نیکی لکھی جاتی
ہے۔اگر وہ اسے کرتا ہے تو ایک برائی لکھی جاتی
اسے مٹا دیتا ہے اور اللہ کے ہاں وہی ہلاک ہوتا ہے جو خود
ہلاک ہونا جا ہتا ہے۔''

رَسُولُ اللّهِ عَلَىٰ : ((إِنَّ رَبَّكُمُ رَحِيمٌ مَنُ هَمَّ بِحَسَنَةٍ فَلَمُ يَعُمَلُهَا كُتِبَتُ لَهُ حَسَنَةً فَإِنْ عَمِلَهَا كُتِبَتُ عَشُرًا إِلَى سَبُعِ حَسَنَةً فَإِنْ عَمِلَهَا كُتِبَتُ عَشُرًا إِلَى سَبُعِ مِائَةٍ ضِعْفٍ إِلَى أَضُعَافٍ كَثِيرَةٍ وَمَنُ هَمَّ بِسَيِّئَةٍ فَلَمُ يَعُمَلُهَا كُتِبَتُ لَهُ حَسَنَةً هَرَّ بِسَيِّئَةٍ فَلَمُ يَعُمَلُهَا كُتِبَتُ لَهُ حَسَنَةً فَإِنْ عَمِلَهَا كُتِبَتُ وَاحِدَةً أَوْ يَمُحُوهَا وَلَا يَهُلِكُ)). • وَلَا يَهُلِكُ عَلَى اللّهِ إِلَّا هَالِلَّتُ)). • •

[70] بَابِ الْمَرُءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ

آ دمی ای کے ساتھ ہوگا جس کے ساتھ محبت کرتا ہے

2829- أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ الْمُغِيرَةِ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلالِ عَنْ عَبْدِ اللهِ

بْنِ الصَّامِتِ

عَنُ أَبِى ذَرِّ قَالَ قُلُتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ السَّحِلُ اللَّهِ السَّحِلُ اللَّهِ السَّحِلُ اللَّهِ السَّحِلُ اللَّهِ يَسُتَطِيعُ أَنُ يَعُمَلَ مِثُلَ عَمَلِهِمُ قَالَ: ((أَنَّتَ يَا أَبَا ذَرٍ مَعَ مَنُ أُحْبَبُتَ)) قُلُتُ فَإِنِّى أُحِبُ اللَّهَ وَرَسُولَ لَهُ قَالَ: ((أَنْتَ مَعَ مَنُ الْحَبُثَ)). ٥ اللَّه وَرَسُولَ لَهُ قَالَ: ((أَنْتَ مَعَ مَنُ الْحَبُثَ)). ٥ المُنْتَ إِلَيْتَ الْمَنْتَ) المُنْتَ الْمَنْتَ) المُنْتَ إِلَيْتَ الْمَنْتَ الْمَنْتَ) المُنْتَ الْمَنْتَ إِلَيْتَ الْمُنْتَ) اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ الْمُنْتَ الْمُنْتَ الْمُنْتُ) اللَّهُ الْمُنْتَ اللَّهُ الْمُنْتَ الْمُنْتُ الْمُنْتُ الْمُنْتَ الْمُنْتُ الْمُنْتَ الْمُنْتُ الْمُنْتُلُكُ الْمُنْتَ الْمُنْتَ الْمُنْتَ الْمُنْتَ الْمُنْتَعُمْتُنْتُ الْمُنْتَعِلَ الْمُنْتُلُكُمُ الْمُنْتَعِلْمُ الْمُنْتِعْتِ الْمُنْتَعِلَ الْمُنْتُلُولُ اللَّهُ الْمُنْتُلُكُمْنُتُ الْمُنْتُلِمُ الْمُنْتُلِمْ الْمُنْتَعْلِمُ الْمُنْتَعْلِمْ الْمُنْتُلُولُ اللْمُنْتُلِمْ الْمُنْتَعْلِمُ الْمُنْتَعْلِمُ الْمُنْتُمْ الْمُنْتُمْ الْمُنْتُمْ الْمُنْتُمْ الْمُنْتَعْلِمْ الْمُنْتُلُولُ اللَّهُ الْمُنْتُمُ الْمُنْتُلُولُ الْمُنْتُلُولُ الْمُنْتُمْ الْمُنْتُعْلِمُ الْمُنْتُمُ الْمُنْتُمُ الْمُنْتُمُ الْمُنْتُمْ الْمُنْتُمْ الْمُنْتُلُولُ الْمُنْتُولُ الْمُنْتُلُولُولُ الْمُنْتُولُ الْمُنْتُلُولُ الْمُنْتُولُ الْمُنْتُولُ الْمُنْ

سیّدنا ابوذر برخاطیّهٔ کہتے ہیں میں نے کہا: ''یا رسول الله! آدمی لوگوں سے محبت کرتا ہے اور وہ ان کی طرح عمل نہیں کرسکتا آپ نے فرمایا: ''اے ابو ذر (رفیائیدُ!) تم اس کے ساتھ ہو گے جس سے محبت کرتے ہو۔'' میں نے کہا: ''میں اللہ اور اس کے رسول سے محبت کرتا ہوں۔'' آپ نے فرمایا: ''تم اس کے ساتھ ہو گے جس سے محبت کرتے ہو۔''

[71] بَابِ إِذَا تَقَرَّبَ الْعَبُدُ إِلَى اللَّهِ تَعَالَىٰ اس چيز كابيان كه آدمى جب الله تعالى كقريب موجائ

2730 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَان حَدَّثَنَا مَهْدِيٌّ حَدَّثَنَا غَيْلانُ عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ عَنْ مَعْدِى كَرِبَ

[•] متفق عليه: أخرجه البخاري، كتاب الرقاق، باب من هم بحسنة أو بسيَّة (6491) ومسلم، كتاب الإيمان، باب اذا هم العبد بحسنة (336)

صحيح: أخرجه ابوداؤد، كتاب الأدب،باب إخبار الرجل الرجل بمحبته إليه (5126)

الله المرقاق على المرقاق المرق

سیّدنا ابوذ رخیانی کہتے ہیں نبی مشیّق آنے نے فرمایا: اللہ تعالی فرماتا ہے: اے ابن آ دم! تو جب تک مجھے پکارے گا اور مجھ سے امیدر کھے گا تو اس سے پہلے تو جس حالت پر بھی ہوا میں تجھے بخش دول گا۔ اے ابن آ دم! اگر تو بھری ہوئی زمین بھی گنا ہول کی لے کر مجھ سے ملے گا تو میں اس کے برابر بخشش لے کر تجھ سے ملول گا مگر جبکہ تونے میرے ساتھ شریک نہ کیا ہوتو 'اے ابن آ دم! اگر تو گناہ کر حتی ساتھ شریک نہ کیا ہوتو 'اے ابن آ دم! اگر تو گناہ کر حتی کہ تیرے گناہ آ سان کے برابر ہوجا کیں۔ پھر تو مجھ سے کہ تیرے گناہ آ سان کے برابر ہوجا کیں۔ پھر تو مجھ سے بخشش طلب کرے تو میں تجھے بخش دول گا مجھے کوئی پرواہ بخشش طلب کرے تو میں تجھے بخش دول گا مجھے کوئی پرواہ

"-U

فوائد: (۱) شرک نا قابل معافی جرم ہے حتی کہ اللہ اپنے رسول کو مخاطب کر کے فرماتے جیں کہ اگر آپ نے بھی شرک کیا تو "لیٹ جبطن عملك" آپ کے ممل بھی لاز ماضائع ہوجا کیں (اعدا ذنا الله منه ک) اللہ کی رحمت کے سبب بوے بوے گنا ہوں کی بخشش کی امید کی جاستی ہے بشر طیکہ سیئات میں شرک کی شمولیت نہ ہو۔

[72].... بَابِ فِي الْبُرِّ وَالْإِثْمِ نِيكِي اور گناه كِمْتَعَلَّق

2831- أُخْبَرَنَا أَبُو الْمُغِيرَةِ حَدَّثَنَا صَفْوَالُ هُوَ ابْنُ عَمْرٍو قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ جَابِرِ الْقَاضِي.....

نواس بن سمعان کہتے ہیں میں نے رسول الله ملط الله ملط سے نیکی اور گناہ کے متعلق پوچھا تو آپ نے فرمایا: "اچھا اخلاق نیکی ہے اور گناہ وہ ہے جو تیرے دل میں کھلے تو اس بات کو براسمجھے کہ لوگوں کو اس کاعلم ہو۔"

عَنِ النَّوَّاسِ بُنِ سَـمُعَانَ قَالَ سَأَلُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَنِ الْبِرِّ وَالْإِثْمِ فَقَالَ ((الْبِرُّ حُسُنُ الْحُلُقِ وَالْإِثْمُ مَا حَالَ فِى نَفْسِلَتُ وَكُوهُتَ أَنْ يَعُلَمَهُ النَّاسُ)). ٥

[•] حسن: احرجه احمد 172/5 و 148/5 فيز ترفرى ين انس ان الله كل عديث اس كى شام به كتاب الدعوات، باب غفران الذنوب مهما عظمت (3534)

صحيح: أخرجه مسلم، كتاب البرو الصلة، باب تفسير البرو الإثمر 6463) و الترمـذي، كتاب الزهد، باب ماجاء في
البرو الإثمر (2389)

الله المرقاق المراجع المرقاق ا

فوائد: اس مديث كاتعلق جوامع الكلم سے بكة آب النظائية نے كوذ ميں دريا كوسموديا كه الله نے ایک صالح الفطرت انسان کے اندرضمیر ایک الیی چیز رکھی ہے جو کہ افعال محمودہ وسیئة میں تفریق کر دیتا ہے لہٰذا نیکی احیماا خلاق اور برائی وہ جس کوانجام دیتے ہوئے ضمیر مضطرب ہوجائے اور تو اے لوگوں ہے چھیانے کی کوشش کر لیکن شرط ریہ ہے کہ تعمیر زندہ ہو۔

2832- أَخْبَرَنَا إِسْحَقُ بْنُ عِيسَى عَنْ مَعْنِ بْنِ عِيسَى عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْن جُبَيْر بْن نُفَيْر عَنْ أَبِيْهِ

نواس بن سمعان کہتے ہیں رسول الله منظی میل نے فرمایا: عَن النَّوَّاسِ بُن سَـمُعَانَ قَالَ سَأَلُتُ النَّبِيُّ عِنْ اللَّهُ فَذَكُرَ بِنَحُوهِ . ٥ '' کامل ایمان والا وہ ہےجس کا اخلاق احیما ہے۔''

[73].... بَابِ فِي حُسُنِ الْخُلُق اليجھے اخلاق کا بیان

2833 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِيْ ثَابِتٍ عَنْ مَيْمُون بْنِ أَبِي شَبِيْبِ.... عَنُ أَبِي ذَرِّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ :

سیدنا ابو ذر والنفذ کہتے ہیں رسول الله طفی این فرمایا:

"جہال بھی ہواللہ سے ڈرتے رہواور برائی کے بعد نیکی ((اتَّق اللَّهَ حَيْثُمَا كُنُتَ وَأَتُبِعُ السَّيِّئَةَ کرواس سے برائی مٹ جائے گی۔ اورلوگوں سے اچھے الُحَسَنَةَ وَخَالِقِ النَّاسَ بِنُحُلُقِ حَسَنِ)) . ٥

اخلاق ہے پیش آؤ۔''

فواند: برائی کرنے سے دل پرایک سیاہ نقطہ لگ جاتا ہے جبیبا کہ صدیث سے اس کا ثبوت ملتا ہے چنانچہ برائی سرزد ہوجانے پر فوری نیکی کر ڈالی جائے تو وہ اس نقطے کوصاف کرنے کا باعث ہوگی بعینہ کہ جس طرح قلم سے کوئی حرف غلط لکھ دیا جائے تو اسے ربڑ سے فوری مٹا دیا جاتا ہے۔

2834 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللّهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ هُوَ ابْنُ أَبِي أَيُّوْبَ قَالَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ

عَجْلَانَ عَنِ الْقَعْقَاعِ بْنِ حَكِيْمٍ عَنْ أَبِيْ صَالِح

عَنُ أَبِى هُــرَيُــرَةَ قَـالَ قِـالَ رَسُولُ لَ سَيْدنا ابو بريرة رَالنَّهُ كَتِ بِين رسول الله طَنْخَالَا نَ فرمايا: اللَّهِ ﷺ : ((أَكُـمَـلُ الْـمُؤُومِنِينَ إيمانًا ﴿ " ' كَالِ ايمان والا وه ہے جس كا اخلاق اچھا ہے۔''

صحبہ: سابقہ صدیث ہی کررآئی ہے۔

قوى بشواهد: أحرجه الترمذي، كتاب البرو الصلة، باب ماجاء في معاشرة الناس (1987).

حَرِّ عَنِينَ الْكَالِيمَةِ عَلَى اللهِ المِلْمُولِيِيِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ الله

أَحُسَنُهُمُ خُلُقًا)) . 0

[74].... بَابِ فِی الرِّفُقِ نرمی سے پیش آ نے کا بیان

2835 حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَ الْ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ ابْنُ سَلَمَةً عَنْ يُونُسَ وَحُمَيْدٍ عَنِ الْحَسَدِ.....

سیّدنا عبدالله بن معفل کہتے ہیں رسول الله مطفّعَ آلم نے فرمایا: "الله تعالی زم ہے زی کو پسند کرتا ہے جو ثواب زی کرنے پر دیتا ہے وہ تختی پڑئیس دیتا۔" عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ مُغَفَّلٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ فَيَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ مُغَفَّلٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ وَفِيقٌ يُحِبُ اللَّهَ رَفِيقٌ يُحِبُ الرِّفُقَ وَيُعُطِى عَلَيْهِ مَا لَا يُعُطِى عَلَى الرِّفُقَ وَيُعُطِى عَلَيْهِ مَا لَا يُعُطِى عَلَى الْمُرْدُ

الْعُنُفِ)) . 🕰

2836 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ

سیّدہ عاکشہ و الله علیہ کہتی ہیں رسول الله مطفیکی آنے فرمایا: "الله تعالی برکام میں نری کو پہند کرتا ہے۔"

عَنُ عَائِشَةَ قَالَتُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَنَى عَائِشَةَ قَالَتُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَنَى : ((إِنَّ اللَّه عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلِي

کُلِهِ) . 🗗

فوائد: "دفق"زى يدانسانيت كاذربيد ہے اس سے آراستدانسان معاشرے ييں محبوب الخلائق اور الله كها بال برامعزز ہوتا ہے لہذا اپنی شخصیت كو ہروقت ایسے اعلی اخلاق سے مزین كرنے كى كوشش كرتے رہنا جاہيے۔

[75].... بَابِ فِيمَنُ ذَهَبَ بَصَرُهُ فَصَبَرَ نظرختم ہونے پرصبرکرنے کا بیان

2837 - أخبرنا عبدالله بن محمد الكرمانى حدثنا جريد عن الاعمش عن أبى صالح 2837 . قال رسول الله الله على الله مسلّى الله مسلّى الله مسلّى الله مسلّى الله مسلّى الله مسلّى الله من أذهبت حبيبتيه فصير "جس كى دومجوب چزي چلى جائين وه مبركر اوراجر

- _____ ❶ حسن: أخرجه ابوداؤد،كتاب السنة،باب الدليل على زيادة الإيمان ونقصانه(4682)وأخرجه ابن ابي شببه8/516
 - عصحيح: أخرجه ابو داؤد، كتاب الأدب، باب في الرفق (4807و احمد 87/4
- متفق عليه: أحرجه البخارى، كتاب الأدب، باب الرفق في الأمر كله (6024) ومسلم، كتاب السلام، باب النهى عن الابتداء أهل الكتاب بالسلام (5621)

507 كتاب الرقاق

کی امیدر کھے۔تو اسے اس کے بدلہ میں جنت دی جائے ب لسم ارض له بثواب دون الحنة

[76].... بَابِ فِي الْعَدُلِ بَيْنَ الرَّعِيَّةِ رعیت میں انصاف کرنے کا بیان

2838 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمِ حَدَّثَنَا أَبُو الْأَشْهَب: جَعْفَرُ بْنُ حَيَّانَ

عَن الُحَسَن أَنَّ عُبَيْدَ اللَّهِ بُنَ زِيَادٍ عَادَ ستدناحسن کہتے ہیں عبیداللہ بن زیاد نے معقل بن بیار کی عيادت كي جب وه مرض الموت مين مبتلا تها يس معقل مَعُقِلَ بُنَ يَسَارِ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ نے ان سے کہا: میں تم سے ایک حدیث بیان کرتا ہوں جو فِيهِ فَقَالَ لَهُ مَعُقِلٌ إِنِّي مُحَدِّثُلَث میں نے رسول الله طبیعی سے سی اگر مجھے علم ہوتا کہ میری بحَدِيثٍ سَمِعُتُهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ عَلَيْ لَوُ زندگی ابھی باقی ہے تو میں اسے بیان نہ کرتا میں نے رسول عَلِمُتُ أَنَّ بِي حَيَاةً مَا حَدَّثُتُكَ إِنِّي الله ﷺ کو بیرفرماتے ہوئے ساتھا کہ:''جس آ دمی کو سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَا الله رعیت کا نگران بنا دے اور وہ رعیت کی خیانت کرتے مِنُ عَبُدِ يَسُتُوْعِيهِ اللَّهُ رَعِيَّةً يَمُوُتُ ہوئے مرے گا اللہ تعالیٰ اس پر جنت حرام کر دے گا۔'' يَوُمَ يَمُونُ وَهُوَ غَاشٌ لِرَعِيَّتِهِ إِلَّا حَرَّمَ اللُّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَى . •

> [77].... بَابِ فِي الطَّاعَةِ وَلُزُومِ الْجَمَاعَةِ امیر کی اطاعت اور جماعت کے ساتھ رہنے کا بیان

2839 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ أَخْبَرَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِم عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَن بْن يَزِيدَ بْن جَابِر قَالَ أَخْبَرَنِي زُرَيْقُ بْنُ حَيَّانَ مَوْلَى بَنِي فَزَارَةَ أَنَّهُ سَمِعَ مُسْلِمَ بْنَ قَرَظَةَ الْأَشْجَعِيَّ يَقُولُ....

يَقُولُ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ

((حِيَــارُ أَئِـمَّتِكُمُ الَّـذِينَ تُحِبُّونَهُمُ

سَمِعْتُ عَوْفَ بُنَ مَالِكِ الْأَشْجَعِيَّ سَيْدِنا عوف بن مالك التَّجَعِي وَاللَّهُ كَتِ بِين مِن ف رسول سرداروہ ہیں جن سےتم محبت کرتے ہواور وہ تم سے محبت

کرتے ہیں ۔تمہارے برے سردار وہ ہیں جن سےتم بغض وَيُحِبُّونَكُمُ وَتُصَلُّونَ عَلَيْهِمُ وَيُصَلُّونَ ر کھتے ہواور وہ تم سے بغض رکھتے ہوں اورتم ان پرلعنت عَلَيْكُمُ وَشِرَارُ أَيْمَتِكُمُ اللَّذِينَ

حَرِّ لِيَّنَ الْكَانِيِّيُ الْكَانِيِّيُ الْكَانِيِّيُ الْكَانِيِّيُ الْكَانِيِّيُ الْكَانِيِّيِ 508 وَ الْكِلَانِيِّيِ

کرتے ہواور وہ تم پرلعنت کرتے ہیں۔' میں نے کہا: یا
رسول اللہ! ہم ایسی حالت میں ہم لڑائی اختیار نہ کریں؟
آپ نے فرمایا:' نہیں' جب تک وہ تم میں نماز قائم کریں۔
گر جو شخص اپنے حاکم کو اللہ کی نافرمانی کا کام کرتے
ہوئے دیکھے اسے چاہئے کہ اسے برا جانے اور اس کی
فرمانبرداری سے ہاتھ نہ کھنچے۔'' ابن جابر کہتے ہیں: میں
نے کہا: اے ابومقدام! اللہ کی قتم یہ حدیث تم نے مسلم بن
قرطہ سے سنی؟ تو وہ قبلہ رو ہر کر دونوں زانوؤں کوموڑ کر
بیٹھے اور کہا: اللہ کی قتم! میں نے مسلم بن قرطہ سے سنا وہ
فرماتے تھے میں نے اپنے چچاعوف بن مالک سے سنا وہ
کہتے تھے میں نے رسول اللہ طفاع آیا کے کوفرماتے ہوئے
سنا۔

تُبُعِضُونَهُ مُ وَيُبُعِضُونَكُمُ وَتَلْعَنُونَهُمُ وَيَلْعَنُونَهُمُ وَيَلْعَنُونَهُمُ وَيَلْعَنُونَهُمُ وَيَلْعَنُونَكُمُ وَيَلْعَنُونَكُمُ وَيَلْعَنُونَكُمُ وَيَلْعَنُونَكُمُ وَيَلْعَنُونَكُمُ اللَّهِ عِنْدَ ذَلِلْتَ قَالَ ((كَلامَا وَسُكُمُ الصَّلاةَ أَلا مَنُ وُلِّى عَلَيْهِ وَالْإِ فَرَآهُ يَالِينِي شَيْئًا مِنُ مَعُصِيةِ اللَّهِ وَلا فَلِينَكُرَهُ مَا يَأْتِي مِنُ مَعُصِيةِ اللَّهِ وَلا فَليَكُرَهُ مَا يَأْتِي مِنُ مَعُصِيةِ اللَّهِ وَلا فَليَكُرَهُ مَا يَأْتِي مِنُ مَعُصِيةِ اللَّهِ وَلا فَلَيْتُكُرة مَا يَأْتِي مِنُ مَعُصِيةِ اللَّهِ وَلا يَنْزِعَنَّ يَدُا مِنُ طَاعَةٍ). قَالَ ابُنُ جَابِرٍ فَقُلْتُ اللَّهِ يَا أَبُا الْمِقْدَامِ أَسَمِعُتَ هَذَا مِنُ مُسُلِمٍ بُنِ قَرَطَةَ فَاسُتَقُبَلَ الْقِبْلَةَ وَجَشَا عَلَى رُكُبَتِيهِ فَقَالَ آللَّهِ لَسَمِعْتُ هَذَا مِنُ مُسُلِمٍ بُنِ قَرَطَةً يَقُولُ سَمِعْتُ هَذَا مِنُ مُسُلِمٍ بُنِ قَرَطَةً يَقُولُ سَمِعْتُ هَذَا مِنُ مُسُلِمٍ بُنِ قَرَطَةً يَقُولُ سَمِعْتُ عَمُنَ عَوْفَ ابُنَ مَالِكِ يَقُولُ سَمِعْتُ عَمُنَى عَوْفَ ابُنَ مَالِكِ يَقُولُ سَمِعْتُ عَمُنُ عَوْفُ ابُنَ مَالِكِ يَقُولُ سَمِعْتُ عَمِى عَوْفَ ابُنَ مَالِكِ يَقُولُ سَمِعْتُ عَمُنَ عَوْفُ ابُنَ مَالِكِ يَقُولُ سَمِعْتُ عَرَفُ الْمَالِي عَلَى مُعَلِيكٍ يَقُولُ سَمِعْتُ عَرَفَ ابْنَ مَالِكِ يَقُولُ سَمِعْتُ عَمُونَ ابْنَ مَالِكِ يَقُولُ سَمِعْتُ مَعْتُ مَا عَلَى مَا يَعْلَى مَا يَعْمَلُ عَلَى مَا يَعْمَلُ اللّهِ عَلَى الْمَعْتُ عَلَى اللّهِ عَلَا عَلَى اللّهِ الْمَعْتُ عَلَى مَا يَعْلَى مَا يَعْمَلُ الْمِعْتُ عَلَى الْمَعْمَلُ الْمُعْمَلُ مَا عَلَى اللّهُ اللّهُ الْمَالِقُ عَلَى اللّهُ الْمَلْمُ عَلَيْكُ مَالْمُ اللّهِ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمُعْلِقُولُ اللّهُ الْمَعْلُ السَمِعْتُ الْمَالِمُ اللّهُ الْمُعْتُ الْمُعْتُ الْمُعْتُ الْمُعْتُ الْمُعْلِمُ الْمَالِمُ الْمُعْلِقُ الْمَعْتُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِقُلُ الْمَعْلُ الْمُعْلِمُ الْمُعْتُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلِلُ الْمُعْلِمُ الْمُعْلَى

رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُهُ. •

فواند : (۱) بہترین ائمہ، حکمران وہ ہے جوعوام ہے جبت کریں اورعوام ان ہے جب کہ بد ترین وہ جوعوام سے خار کھاتے ہوں اورعوام ان سے (۲) حکمران اگر معصیت کا ارتکاب کرتا ہے تو تب بھی اس کی اطاعت لازم ہے البتہ اس کی برائی سے نفرت کی جائے گی (۳) حکام کی اطاعت تب تک لازم ہے جب تک وہ نماز کو قائم کرتے رہیں اگروہ اس ہیں سستی برتیں توان کی لازم نہیں لیکن یادر ہے ایسی صورت ہیں اگر صالحین اتنی توت واستعداد رکھتے ہیں کہ وہ ایسے حکمرانواں کو اپنے سروں سے اتار سکیں تو فیھا ونعت۔ ورنہ وہ اصلاح احوال کی حتی الوسع کوشش کرتے رہیں اور کسی ایسے انتشار کا سبب نہ بنیں جومسلمانون کے کلے کوشیم کردے اور کفار کو اپنی ریشہ دوانیوں کا موقع ملے۔

> [78] بَابِ فِی نَفُخِ الصُّودِ صور پھو ککے جانے کا بیان

2840 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ عَنْ أَسْلَمَ الْعِجْلِيِّ عَنْ بِشْرِ

صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الإمارة، باب خيار الأئمة وشرار هم (4781)

حَرِّ شَيْنَ الْكَالِيْمِيُّ ﴾ 509 كلاكل كتاب الرقاق

بْنِ شَغَافٍبْن

أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ عَلَيْهُ

يَفُولُ: ((يَقْبِضُ اللَّهُ الْأَرُضَ وَيَطُوى

السَّمَوَاتِ بِيَمِينِهِ ثُمَّ يَقُولُ أَنَا

المُلِكُ أَيْنَ مُلُوكُ الْأَرْضِ)) . 9

سیّدنا عبدالله بن عمرور فالنّو کتے میں نبی منظی آنے سے صور کے متعلق پوچھا گیا آپ نے فرمایا: ''وہ ایک سینگ ہے جس میں پھونکا جائے گا۔''

[79] بَابِ فِي شَأْنِ السَّاعَةِ وَنُزُولِ الرَّبِّ تَعَالَى قَالَى الرَّبِ تَعَالَى قَالَى الرَّبِ تَعَالَى عَالِي الرَّبِ تَعَالَى كَنزول كابيان

2841 - حَدَّثَنَا الْحَكُمُ بْنُ نَافِعٍ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ

سيّدنا ابو ہررية ذائين كہتے ہيں ميں نے رسول الله مَضَائيّة كو سيّدنا ابو ہررية ذائين كہتے ہيں ميں نے رسول الله مِضَائيّة كو سينے گا اور آسان كو اپنے دائيں ہاتھ ميں لپينے گا۔ پھر فرمائے گا: ''ميں باوشاہ ہوں' زمين كے بادشاہ كہاں ہیں؟''

2842 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَصْلِ حَدَّثَنَا الصَّعْقُ بْنُ حَزْنٍ عَنْ عَلِيّ بْنِ الْحَكَمِ عَنْ عُثْمَانَ ابْنِ عُمَانَ ابْنِ عُمْ الْمَحَدِي بَنِ الْحَكَمِ عَنْ عُثْمَانَ ابْنِ عُمْدِر عَنْ أَبِي وَائِل

سیّدنا ابن مسعود دخانی کہتے ہیں نبی مشیّعیَد سے بوچھا گیا:
مقام محمود کیا ہے؟ آپ نے فرمایا: 'اس دن اللہ تعالی اپنی
کری پراترے گا اور وہ تکی کی وجہ سے اس طرح چر چراتی
ہوگی جیسے نیا پالان چر چراتا ہے حالانکہ وہ اتنی کشادہ ہوگی
جتنی آسان اور زمین کے درمیان مسافت ہے۔ تم نگے
پاؤل نگے بدن بغیر ختنوں کے لائے جاؤگ تو سب سے
پاؤل نگے بدن بغیر ختنوں کے لائے جاؤگ تو سب سے
پہلا شخص جے لباس پہنایا جائے گا وہ سیّدنا ابراہیم ہوں
گے اللہ تعالی فرمائے گا: 'میرے خلیل کولباس پہناؤ۔'' تو

عَنِ ابُنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِي الْمَصَّلُهُ قَالَ قِيلَ لَهُ مَا الْمَقَامُ الْمَحُمُودُ قَالَ: ((ذَاكَ يَوُمٌ يَنُولُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى كُرُسِيّهِ يَئِطُّ كَمَا يَئِطُّ الرَّحُلُ النَّجَدِيدُ مِنُ تَضَايُقِه بِهِ وَهُو كَسَعَةِ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَيُجَاءُ بِكُمُ حُفَاةً عُرَاةً غُرُلًا فَيَكُونُ أَوَّلَ مَنُ يُكُم حُفَاةً عُرَاةً غُرُلًا فَيَكُونُ تَعَالَى اكْسُوا خَلِيلِي فَيُؤْتَى بِرَيْطَتَيُنِ

[•] صحيح: أخرجه ابوداؤد، كتاب السنة، باب في دكر البعث والصور(4742) و ترمذي، كتاب تفسير القران، باب ومن سورة الزمر (3344)

صحيح: أخرجه البخاري، كتاب التفسير، باب والأرض جميعا قبضته يوم القيامة (4812)

حَكْرُ يَتَلِنَى ٱلْكَالِيْدِي } كال 510 كال كتاب الرقاق كا

بَيُسَظَ الْهَ يُنِ مِنُ دِيَاطِ الْجَنَّةِ ثُمَّ أَكُسَى عَلَى إِثُوهِ ثُمَّ أَكُسَى عَلَى إِثُوهِ ثُمَّ أَقُومُ عَنُ يَمِينِ اللَّهِ مَقَامًا يَعُبطُنِي الْلَّهِ مَلَّا وَالْآخِرُونَ)). • • يَعُبطُنِي الْأَوْلُونَ وَالْآخِرُونَ)). • •

جنت سے دو(سفید) جادریں لائی جائیں گی کھر مجھے
لباس پہنایا جائے گا پھر میں اللہ کے دائیں طرف ایسے
مقام میں کھڑا ہوں گا کہ پہلے اور بعد والے تمام لوگ مجھے
ررشک کرس گے۔''

فوائد: قیامت کوسب سے پہلے ابراہیم خلیل مَالِیلا لباس پہنایا جائے گا۔ بینمردود کی طرف سے آپ کو آگ میں چھیکے جانے پر جو آپ کے کپڑے جل گئے تھے اس کا بدلہ ہوگا۔ دیکھیے الفتح 11/384 [80]....بَابِ النَّظُو إِلَى اللَّهِ تَعَالَىٰ اللَّہ تَعَالَیٰ کود کیھنے کا بیان

2843 حَدَّثَ نَا أَبُو الْيَهَانِ الْحَكُمُ بْنُ نَافِعِ عَنْ شُعَيْبِ بْنِ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِيْ

سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَعَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ اللَّيْتِي سَسَسَ

سیّدنا ابو ہریرۃ دُفائید کہتے ہیں کہ لوگوں نے نبی طفی ایّن ہے ہوں ہو ہو ہوں ہے؟ تو نبی طفی ایّن کیا قیامت کے دان ہم اپنے رب کو دیمیں گے؟ تو نبی طفی ایّن نے فرمایا: 'اگر بادل نہ ہوں تو چودہویں رات کا چاند دیکھنے میں تم کوئی تنگی محسوس کرتے ہو؟ انہوں نے کہا: نہیں یا رسول اللّه! پھر آپ نے فرمایا: 'اگر مطلع اہر آلود نہ ہو تو تمہیں سورج دیکھنے میں کوئی تنگی ہوتی ہے؟ انہوں نے کہا: 'دنہیں' آپ نے فرمایا: ''تم اسی طرح انہوں نے کہا: 'دنہیں' آپ نے فرمایا: ''تم اسی طرح اسینے رب کود کیھو گے۔''

أَنَّ أَبَا هُرَيُرَةَ أَخُبَرَهُمَا أَنَّ النَّاسَ قَالُوا لِلنَّبِيِّ عَلَىٰهُ هَلُ نَرَى رَبَّنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَقَالَ النَّبِيُ عَلَىٰهُ : ((هَلُ تُمَارُونَ فِي الْقَمَرِ لَيُلَةَ الْبَدُرِ لَيُسَ دُونَهُ سَحَابٌ)) قَالُوا لَا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: ((فَهَلُ تُمَارُونَ فِي الشَّمْسِ لَيُسَ دُونَهَا سَحَابٌ قَالُوا لَا قَالَ فَإِنَّكُمُ تَرَونَهَا مَذَالِكَ). ٥

[81].... بَابِ فِي صِفَةِ الْحَشُرِ

ميدان حشر كابيان

2844 حَـدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ النَّعْمَانِ قَالَ سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ يُحَدِّثُ

اسنادہ ضعیف جداً: عثمان بن عمیر کواحمد و بخاری نے منکر الحدیث قرار دیا ہے لیکن اس کے شواہد موجود ہیں دیکھتے فئے الباری 385-384/11

² صحيح: أخرجه البخاري، كتاب الأذان، باب فضل السحود (806)

511 كتاب الرقاق ك الكانتين الكانتين

سيّدنا ابن عباس بوالله كت بي رسول الله الله الله علي فرمايا: عَن ابُن عَبَّاس قَالَ خَطَبَ رَسُولُ اللهِ "ا _ لوگوا بے شکتم اللہ تعالیٰ کے پاس نظیجسم اور نظے صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((يَا أَيُّهَا بدن والے اکٹھے کئے جاؤ گئے پھریہ آیت بڑھی:''جس النَّاسُ إِنَّكُمُ مَحْشُورُوْنَ إِلَى اللَّهِ تَعَالَى طرح ہم نے تہمیں پہلی دفعہ پیدا کیا جی حالت میں لوٹائیں حُمِفَاةً عُرَاةً غُرُلا ثُمَّ قَرَأَ ﴿ كَمَا بَدَأْنَا گے یہ ہمارا وعدہ ہے اور ہم اے بوارا کرنے والے أُوَّلَ خَلُق نُعِيدُهُ وَعُدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا ین" (انبیاء:۱۰۱۷) فَاعِلِينَ ﴾ [الأنبياء: ١٠٤]. ٥

[82] بَابِ فِي سُجُودِ الْمُؤْمِنِينَ يَوُمَ الْقِيَامَةِ

قیامت کے دن مونین کے سجدہ کرنے کا بیان

2845 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ الْبَزَّازُ عَنْ يُونُسَ بْنِ بُكَيْرِ قَالَ أَخْبَرَنِي ابْنُ إِسْحٰقَ قَالَ أَخْبَرَنِي

سَعِيدُ بْنُ يَسَارِ قَالَ سَمِعْتُ

سیّدنا ابو ہربرة رضائفهٔ کہتے ہیں میں نے رسول الله مشاطقهٔ أَبًا هُرَيُرَةَ يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ ہے سنا آپ فرماتے تھے:''جب اللہ تعالی اینے بندوں کو يَقُولُ: ((إِذَا جَمَعَ اللَّهُ الْعِبَادَ فِي ایک بی جگه برجمع کرے گا تو ایک یکارنے والا یکارے صَعِيدٍ وَاحِدٍ نَادَى مُنَادٍ لِيَلُحَقُ كُلُّ گا: 'سب لوگ اینے ان معبودوں کے ساتھ ہو جا کمیں جن قَوُم بِمَا كَانُوا يَعُبُدُونَ فَيَلُحَقُ كُلُّ قَوُم کی وہ عبادت کرتے تھے۔ 'اتو سب لوگ ان کے ساتھ ال بـمَـا كَانُوا يَعُبُدُونَ وَيَبْقَى النَّاسُ عَلَى جائیں گے جن کی وہ عبادت کرتے تھے۔ اور (موحد) حَالِهِمُ فَيَأْتِيهِمُ فَيَقُولُ مَا بَالُ النَّاسِ لوگ اینے حال پر باقی رہ جائیں کے اللہ تعالی ان کے ذَهَبُوا وَأَنْتُمُ هَا هُنَا فَيَقُولُونَ نُنْتَظِرُ إِلْهَنَا یاس آئے گا اور فرمائے گا:''کیا معاملہ ہے؟ سب لوگ فَيَقُولُ هَلُ تَعُرِفُونَهُ فَيَقُولُونَ إِذَا تَعَرَّفَ طِلے گئے تم یہاں ہو۔'' وہ کہیں گے''ہم اینے معبود کا إِلْيْنَا عَرَفُنَاهُ فَيَكُشِفُ لَهُمْ عَنُ سَاقِهِ انظار کررہے ہیں۔'الله فرمائے گا:''کیاتم اسے پہانتے فَيَقَعُونَ سُجُودًا فَلْلِلْثَ قَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى ہو؟ وہ کہیں گے: جب وہ ہمیں پہچان کرائے گا تو ہم اے يَوْمَ يُكُشَفُ عَنُ سَاقِ وَّيُدُعَوُنَ إِلَى بیجان لیں گے۔ پھر وہ اپنی پنڈلی کھول دے گا تو وہ سب

السُّجُودِ فَلا يَسْتَطِيْعُونَ ﴾ يَبُقَى كُلُّ

[◘] صمحيح البخاري، كتاب احاديث الأنبياء،باب قول الله تعالىٰ(واتخذ الله ابراهيم خليلا).....(3349)ومسلم، كتاب الجنة ونعيمها، باب فناء الدنياوبيان الحشر بوم القيامة (7130)

الكالمِينَ الكَالِينَ الكَالِينَ الكَالِينَ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ الل

مُنَافِقٍ فَلا يَسُتَطِيْعُ أَنُ يَسُجُدَ ثُمَّ يَقُودُهُمُ إِلَى الْجَنَّةِ) . •

سجدہ میں گر پڑیں گے اور اسی کا بیان اس آیت میں ہے: ''جس دن پنڈلی کھولی جائے گی اور وہ سجدہ کے لئے بلائے جائیں گے۔'' (القلم: بلائے جائیں گے۔'' (القلم: ۴۲) اور منافق باقی رہ جائیں گے وہ سجدہ کرنے کی طاقت نہر کھیں گے۔ پھر اللہ انہیں جنت میں لے جائے گا۔ نہر کھیں گے۔ پھر اللہ انہیں جنت میں لے جائے گا۔

[83] بَابِ فِي الشَّفَاعَةِ شفاعت كابان

2846 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمٰنِ بْنُ زِيَادٍ حَدَّثَنَا دُخَيْنٌ الْحَجْرِيُ

سیّدنا عقبہ بن عامر جہنی کہتے ہیں میں نے رسول اور پھیلے سب لوگوں کو جمع کرے گا ان کے درمیان فیصلہ كرے گا جب فيصله سے فارغ ہو جائے گا تو مومن كہيں مے ہارے رب نے تو ہارے ورمیان فیصلہ کر دیا اب کون جاری شفاعت کرے گا؟ وہ کہیں گےسیّدنا آ دم کے یاس چلواللہ نے اسے این ہاتھ سے پیدا کیا۔ اور اس سے کلام کیا وہ ان کے پاس جائیں گےاور کہیں گے:"اٹھے اور این رب کے پاس ہاری سفارش کیجئے آ دم علیہ السلام کہیں کے نوح علیہ السلام کے پاس جاؤ وہ سیّدنا نوح علیہ السلام کے پاس آئیں گے تو وہ انہیں ابراہیم علیہ السلام کی خبر دیں گے۔ وہ ابراہیم علیہ السلام کے پاس آئیں گے تو وہ انہیں موی علیہ السلام کی خبر دیں گے وہ موی علیہ السلام کے یاس آئیں گے تو وہ انہیں عیسیٰ علیہ السلام کا بتائیں گے سیّدنا عیسیٰ کہیں گے: میں تنہیں نبی امی کی خبر دیتا ہوں'

عَنُ عُقُبَةَ بُنِ عَسامِسِ الْجُهَنِيّ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ عِلَى يَقُولُ: ((إِذَا جَـمَعَ اللُّهُ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ فَقَضَى بَيْنَهُمُ وَفَرَغَ مِنَ الْقَضَاءِ قَالَ الْمُؤْمِنُونَ قَدُ قَطَى بَيْنَنَا رَبُّنَا فَمَنُ يَشُفَعُ لَنَا إِلَى رَبِّنَا فَيَقُولُونَ انْطَلِقُوا إِلَى آدَمَ فَإِنَّ اللَّهَ خَلَقَهُ بِيَدِهِ وَكَلَّمَهُ فَيَأْتُونَهُ فَيَقُولُونَ قُمُ فَاشُفَعُ لَنَا إِلَى رَبَّنَا فَيَقُولُ آدَمُ عَلَيُكُمُ بِنُوحِ فَيَأْتُونَ نُوحًا فَيَدُلُّهُمُ عَـلْى إبُـرَاهِيمَ فَيَأْتُونَ إبُرَاهِيمَ فَيَدُلُّهُمُ عَلَى مُوسَى فَيَأْتُونَ مُوسَى فَيَدُلُّهُم عَلَى عِيسَى فَيَأْتُونَ عِيسَى فَيَقُولُ أَذُلُّكُمُ عَلَى النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ قَالَ فَيَأْتُونِي فَيَأْذَنُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ لِي أَنُ أَقُومُ إِلَيْهِ فَيَثُورُ مَجُلِسِي أَطُيَبَ رِيُح

[●] صحيح: أخرجه البخاري، كتاب التوحيد، باب قوله (وجوه يومئذ ناضرة)(7437) والترمذي، كتاب صفة الجنة، باب خلود اهل الجنة (7437)

الرقاق كتاب الرقاق كتاب الرقاق

شَــمَّهُ الْحَــدُ قَـطُّ حَتْى آتِى رَبِّى فَيُشَفِّعُنِى وَيَجْعَلَ لِى نُورًا مِنُ شَعْرِ رَأْسِى إِلَى ظُفُرِ قَدَمِى فَيَقُولُ الْكَافِرُونَ عِنْدَ ذَلِكَ لِإبليسَ قَدُ وَجَدَ الْمُؤُمِنُونَ مَنْ يَشُفَعُ لَهُمُ فَقُمُ أَنْتَ فَاشُفَعُ لَنَا إِلَى مَنْ يَشُفَعُ لَنَا إِلَى الْمُؤْمِنُونَ مَنْ يَشُفَعُ لَنَا إِلَى اللَّهُ وَجَدَ المُؤُمِنُونَ مَنْ يَشُفَعُ لَنَا إِلَى مَنْ يَشُفَعُ لَنَا إِلَى فَيْكُورُ مَجُلِسُهُ أَنْتَنَ رِيحِ شَمَّهَا أَحَدُ قَطُّ ثُمَّ يَعْظُمُ نَحِيْبُهُمُ فَيَقُولُ عِنْدَ ذَلِكَ شَمَّ يَعْظُمُ نَحِيْبُهُمُ فَيَقُولُ عِنْدَ ذَلِكَ شَمَّ يَعْظُمُ نَحِيْبُهُمُ فَيَقُولُ عِنْدَ ذَلِكَ شَمَّ يَعْمَدُكُمُ وَعَدَ الْحَقِ وَوَعَدُتُكُمُ اللّهَ لَكُورُ الْآيَةِ .

[ابراهیم: ۲۲]. •

> [84] بَابِ إِنَّ لِكُلِّ نَبِي دَعُوَةً يقيناً ہرنبی کے لئے ایک (مقبول) دعاہے

2847- أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بُنُ نَافِعٍ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِالرَّحْمَن

سیدنا ابو ہررہ ہوائی کہتے ہیں نبی طفی کی نے فرمایا: "ہرنی کے لئے ایک دعا ہے اور میں امید کرتا ہوں کہ انشاء اللہ میں اپنی دعا قیامت کے دن اپنی امت کی شفاعت کے لئے کروں گا۔"

تو دعده خلافی کرے۔''مکمل آیت (سورۃ ابراہیم:۲۲)

أَنَّ أَبَ اهُ رَيُرَ قَ قَالَ قَالَ النَّبِيُ عَلَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ (لِلكَلِ اِنْ شَاءَ اللَّهُ (لِلكَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى أَنْ أَخْتَبِءَ دَعُوتِي شَفَاعَةً لِأُمَّتِي يَوْمُ اللَّهَ عَالَى اللَّهُ الْمَتَى يَوْمُ اللَّهَ عَالَى اللَّهُ الْمُعْلَمُ اللَّهُ الْمُلْعُلُمُ اللَّهُ الْمُؤْمُ الْمُنْ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ اللَّهُ الْمُؤْمِنُ الْمُلِمُ اللَّهُ الْمُؤْمِنُ الْم

[•] ضعيف: ال يم عبد الرحمان بن زياد بن الغم ضعيف ب- أخوجه الطبراني في الكبير 20/17 و ضعيف: الترجه مسلم، كتاب الإيمان، باب اختياء النبي صلعم دعوة الشفاعة لامته (489)

المرقاق كالمراجع المرقاق كالمحالي المرقاق كالمحالي المرقاق كالمحالي المرقاق كالمحالي المرقاق كالمحالي المرقاق كالمحالية المرقاق كالمحالية المرقاق كالمحالية المرقاق كالمحالية المرقاق كالمحالية المرقاق كالمحالية المراق المحالية المراق المحالية المراق المحالية المراق المحالية المراق المحالية المراق المحالية المحالية المراق المحالية المحا

فوائد: (۱) "نكل نبيّ دعوة" مراد برني كوايك مقبول دعاعطا ك كي كدوه جو مأنكس انہیں عطاکیا جائے گا۔ (۲) نبی کا ننات مشیکا آیا نے اپنی دعا قیامت کے دن کے لیے اپنی امت کی سفارش ے لیے رکھ چھوڑی ہے آ کے رحمته العالمین ہونے کی دلیل ہے (اللهم صل وسلم عَلی نبیّنا محمد) 2848 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعِ أَنْبَأَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ أَبِي سُفْيَانَ ابْن أَسِيدِ بْن جَارِيَةَ مِثْلَ ذٰلِكَ

عَنْ أَبِي هُرَيُوةَ عَنِ النَّبِي عِلَيُّ . ٥

سیّدنا ابو ہررہ وَ فِی اللّٰهُ نِي اللّٰهِ اللّٰهِ اللهِ عَلَيْهُ مِن اللّٰهِ اللهِ عَلَيْهُ عَلَى اللّٰهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ الل نقل کرتے ہیں۔

[85].... بَابِ يَدُخُلُ الْجَنَّةَ سَبُعُونَ أَلْفًا مِنُ أُمَّتِي بِغَيْر حِسَابٍ میری امت کےستر ہزار آ دمی (بغیرحساب)جنت میں داخل ہوجا نیں گے کا بیان 2849 حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْن زِيَادٍ قَالَ سَمِعْتُ

> قَالَ: ((يَدُخُلُ الْجَنَّةَ سَبُعُونَ أَلُفًا مِنُ أُمَّتِي بغَيْر حِسَاب). فَقَالَ عُكَّاشَةُ يَا رَسُولَ اللَّهِ اذْعُ اللَّهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمُ فَدَعَا فَقَالَ آخَرُ اذُعُ اللَّهَ لِيُ فَقَالَ سَبَقَكَ بِهَا عُكَّاشَةً . ٥

أَبًا هُرَيْسُوةَ يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِي عِنْ أَنَّهُ سَيْدِنا ابو مررة وْالنَّيْد نِي سَلِّيَ اللهِ عَن كرت بي كمآب نے فر مایا:''میری امت کےستر ہزار آ دمی بغیر حساب جنت میں جائیں گے۔'' عکاشہ نے کہا:''یا رسول اللہ! میرے لئے اللہ سے دعا کریں کہ وہ مجھے بھی ان سے کر دے۔ آب نے دعا کی تو ایک اور آ دمی نے کہا: میرے لئے بھی الله تعالى سے دعا كريں -آب نے فرمايا: ' عكاشة تم سے

[86].... بَابِ فِي قَوُلِ النَّبِيِّ ﷺ يَدُخُلُ الْجَنَّةَ بِشَفَاعَةِ

بهلے سبقت لے گیا۔''

رَجُلِ مِنْ أُمَّتِي سَبُعُونَ أَلْفًا نبی طنے ایم کے اس قول کے متعلق: ''میری امت کے ایک آ دمی کی شفاعت سے ستر ہزار آ دمی جنت میں جا کیں گے

2850 ـ أَخْبَرَنَا الْمُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ خَالِدٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْن شَقِيق

[🛈] صحیح: سابقہ صدیث ہی مکرد ہے۔

[◘]صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الإيمان،باب الدليل على دخول طوائف من المسلمين بغير حساب أوعذاب(519)

حَكَرُ سِيُنَى ٱلْكَالِيمِينَ ﴾ 515 كَالْكَالِيمِينَ الْكَالِيمِينَ كَتَابِ الرقاق

عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ أَبِي الْجَدُعَاءِ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللّهِ عَلَىٰ يَقُولُ: ((لَيَدُخُلَنَّ الْجَنَّةَ بِشَفَاعَةِ رَجُلٍ مِنُ أُمَّتِي ((لَيَدُخُلَنَّ الْجَنَّةَ بِشَفَاعَةِ رَجُلٍ مِنُ أُمَّتِي أَكْثُرُ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ)) قَالُوا سِوَالْتَ يَا رَسُولَ اللّهِ قَالَ ((سِوَاى)). • وَسُولَ اللّهِ قَالَ ((سِوَاى)). •

سیّدنا عبدالله بن ابوجدعاء کہتے ہیں میں نے رسول الله طفی ایک سنا آپ فرماتے تھے۔ ''میری امت کے ایک آدی کی شفاعت سے بنوتمیم کی تعداد جینے لوگ جنت میں جائیں گے۔'' لوگوں نے کہا: یا رسول الله! آپ کے سوا؟ آپ نے فرمایا: ''میرے سوا۔''

فوائد: (۱) معلوم ہوا مونین ایک دوسرے کی سفارش کریں گے (۲) اس سفارش کرنے والے آدی بارے مختلف اقوال مروی ہیں کہ وہ اولیس قرنی رائیں ہیں دوسرا قول ہے کہ وہ عثمان بن عفان وَثَاثِیَّهُ ہیں مزید قول بھی ہیں۔

[87].... بَابِ قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتُ يَوْمَ تَبلُل الأرض والسموات كي تفير

2851 حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن أَنْبَأَنَا خَالِدٌ عَنْ دَاوُدَ عَنِ الشَّعْبِيِّ

عَنُ مَسُرُوقٍ قَالَ قُلُتُ لِعَاتُسَةَ يَا أُمَّ الْمُونِينَ أَرَايُتِ قَوْلَ اللهِ تَعَالَى: ﴿ يَوُمَ اللهِ تَعَالَى: ﴿ يَوُمَ تَبَدَّلُ الْأَرُضِ وَالسَّمَوَاتُ تَبَدَّلُ الْأَرُضِ وَالسَّمَوَاتُ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴾ أَيْنَ النَّاسُ يَوْمَئِذٍ قَالَتُ سَأَلُتُ رَسُولَ اللهِ عَنْ النَّاسُ فَقَالَ: ((عَلَى الصِّرَاطِ)). ٥ ذٰلِكَ فَقَالَ: ((عَلَى الصِّرَاطِ)). ٥

سیّدنا مسروق بن الله کا فرمان ہے: جس دن زمین اس نوالله سے کہا:

"اے ام الموسین! الله کا فرمان ہے: جس دن زمین اس زمین کے علاوہ بدل دی جائے اور آسان بھی اور سب الله واحد زبردست کے روبرو حاضر ہول گے۔" تو اس دن لوگ کہاں ہوں؟ سیّدہ عائشہ را الله علی کہا: "میں نے رسول الله طفی کیا ہے اس کے متعلق پوچھا تھا تو آپ نے فرمایا:"میل صراط پر ہوں گے۔"

فوائد: قیامت والے دن لوگوں صاف کلید کی مانندسفید زمین پراکٹھا کیا جائے گا جیسا کہ بخاری ومسلم میں سھل بن سعد رُہائیٰ کی حدیث آتی ہے اور حافظ ابن حجر راٹیٹید اس حدیث کے تحت فرماتے ہیں کہ اس زمین کے مفہوم بارے سلف میں اختلاف رہا ہے کہ کیا زمین ذاتی وصفاتی دونوں اعتبار سے تبدیل ہو

❶صحيح: أحرجه مسلم، كتاب صفات المنافقين، باب في البعث والنشور وصفة (6987) والترمذي، كتاب تفسير القران، باب ومن سورة ابراهيم (3121)

صحيح: أخرجه مسلم، كتاب صفة القيامة والحنة والنار، باب في البعث والنشورو صفة الأرض يوم القيامة
 (2798) والترمذي، كتاب التفسير القرال، باب ومن سورة ابراهيم (3121)

كتاب الرقاق

گی یا فقط صفاتی اعتبار ہے تو حدیث کے مطابق اول الذکر بات ہی راجح ہے (دیکھیے تفسیر جلا لین) [88].... بَابِ فِي وُرُودِ النَّارِ آ گ بروارد ہونے کا بیان

2852 أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ

عَن السُّلِّيِّيِّ قَالَ سَأَلُتُ مُرَّةً عَنْ قَوْل اللُّهِ عَزَّ وَجَلَّ وَإِنْ مِنْكُمُ إِلَّا وَاردُهَا فَحَدَّثَنِي أَنَّ عَبُدَ اللهِ بُنَ مَسْعُو دِحَدَّثَهُمُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ :((يَودُ النَّاسُ النَّارَ ثُمَّ يَصُدُرُونَ عَنْهَا مِأْعُمَالِهِمُ فَأُوَّلُهُمُ كَلَمُحِ الْبَرُقِ ثُمَّ كَالرّيحِ ثُمَّ كَحُضُو الْفَرَس ثُمَّ كَالرَّاكِب فِي رَحُلِهِ ثُمَّ كَشَدِّ الرَّجُل ثُمَّ كَمَشْيهِ)). •

سعدی کہتے ہیں میں نے مرة سے اللہ عزوجل کے اس قول كَ مَتَعَلَقٌ ' وَإِنْ مِّنْكُمُ إِلَّا وَادِدُهَا كَانَ عَلَى رَبِّكَ حَتْمًا مَّ قُضِيًّا "" يوجها توانهول نے مجھے بيان كيا عبدالله بن مسعود نے ان کو بیان کیا که رسول الله طف ماین نے فرمایا: ''لوگ آگ میں داخل ہوں گے پھراینے اعمال کے مطابق اس سے نکلیں گے پہلے لوگ بجلی کی طرح ، پھر تیز مھوڑے کی طرح ' پھر سواری بر سواری طرح ' پھر جس طرح آ دمی دوڑ تاہے پھرجس طرح آ دمی چلتا ہے۔''

فواند: سبجی لوگ آگ پر وارد ہوں گے اس سے مراد بل صراط پر سے گزرنا ہے جو کہ جہنم کے اویر بچھایا جائے گا اور ہرایک کے لیے اس پر سے گذرنا لازم ہوگا قران میں اسی طرف اشارۃ ہے (اِن مسن احد الا واردها) كه مركوئي اس مين (لعني جبنم) وارد بونے والا ب_

> [89].... بَابِ فِي ذَبُحِ الْمَوُتِ موت کو ذرج کرنے کا بیان

2853 - أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ عَنْ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي صَالِح

عَنُ أَبِي هُوَيُوَ - ةَ عَنِ النَّبِي ﷺ قَالَ سَيِّدنا ابو بريرة وَاللَّهُ كُتِّ مِين كَه فِي طِيْنَا اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَنْ طَلْحَالَا اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَيْهُمْ لَا عَلَيْمَا اللَّهُ عَلَيْهُمْ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْ "موت كو خاكسرى مينده على شكل مين لايا جائے گا۔ اسے جنت اور دوزخ کے درمیان کھڑا کیا جائے گا اور کہا جائے گا اے جنت والو! وہ سر اٹھا کر دیکھیں گے۔ پھر کہا جائے گا: اے دوزخ والو! وہ بھی سراٹھا کر دیکھیں گے۔

((يُوُّتَى بِالْمَوُّتِ بِكَبُشْ أَغُبَرَ فَيُوُقَفُ بَيُنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ فَيُقَالُ يَا أَهُلَ الْجَنَّةِ فَيَشُرَئِبُونَ وَيَنُظُرُونَ وَيُقَالُ يَا أَهُلَ النَّادِ فَيَشُرَئِبُّونَ وَيَنْظُرُونَ وَيَرَوُنَ أَنْ الكَلْمُ الكَالَّذِي اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ الل

قَـدُ جَاءَ الْفَرَجُ فَيُذُبِحُ وَيُقَالُ خُلُودٌ لَا مَوُتَ)). •

خیال کریں گے کہ کشادگی (کی کوئی راہ نکل) آئی ہے ،تو مینڈھا ذرج کر دیا جائے گا اور کہا جائے گا:''اب ہمشکی ہےاورموت نہیں۔''

[90] بَابِ فِي تَحُذِيرِ النَّارِ دوزخ سے ڈرانے کا بیان

2854 ـ أَخْبَرَنَا عُثْمَانُ بِنُ عُمَرَ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ سِمَاكِ

عَنِ النُّعُمَانِ بُنِ بَشِيرٍ قَالَ سَمِعُتُ
رَسُولَ اللَّهِ ﴿ يَسَحُطُبُ فَقَالَ:
((أَنَّذَرُتُكُمُ النَّارَ أَنَّذَرُتُكُمُ النَّارَ أَنْذَرُتُكُمُ
النَّارَ)). فَمَا زَالَ يَقُولُهَا حَتَّى لَوْ كَانَ
فِي مَقَامِى هَذَا لَسَمِعَهُ أَهُلُ السُّوقِ
حَتَّى سَقَامِى هَذَا لَسَمِعَهُ أَهُلُ السُّوقِ
عَنْدَ رَجُلَيْهِ . ﴿

سیّدنا نعمان بن بشر و فی کتب ہیں میں نے رسول اللہ طفی آئے سے سناوہ خطبہ دیتے ہوئے فرماتے تھے: ''میں نے مہیں آگ سے ڈرا دیا ہے میں نے مہیں آگ سے ڈرا دیا ہے میں نے مہیں آگ سے ڈرا دیا ہے وہ کہتے رہے تی کہ اگر وہ میری اس جگہ ہوتے تو بازار والے بھی من لیتے حتی کہ آپ کی چادر آپ کے قدموں میں گر

[91] بَابِ فِيمَنُ قَالَ إِذَا مُتُ فَأَحُرِ قُونِي بِالنَّادِ اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ اللهُ الللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ ال

2855- أَخْبَرَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلِ قَالَ.....

أَخُبَرَنَا بَهُزُ بُنُ حَكِيمٍ عَنُ أَبِيهِ عَنُ جَدِهِ قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللّهِ ﷺ يَقُولُ: ((كَانَ عَبُدُ مِنُ عِبَادِ اللّهِ وَكَانَ لَا يَدِينُ لِلّهِ دِيْنًا وَإِنَّهُ لَبِثَ حَتَّى ذَهَبَ مِنْهُ عُمُرٌ وَبَقِى عُمُرٌ فَعَلِمَ أَنَّهُ لَمُ يَبْتَئِرُ

بہر بن علیم اپنے والد سے وہ اپنے دادا نے قل کرتے ہیں انہوں نے کہا میں نے رسول اللہ طفی آئے ہے سا فرماتے سے در اللہ کا ایک بندہ تھا وہ اللہ کی بالکل عبادت نہ کرتا تھا وہ زندہ رہا حتی کہ اس کی کچھ عمر گزرگئ اور کچھ باقی رہی تو اسے خیال ہوا کہ اس نے کوئی نیکی اللہ کے بال جمع نہ کی

٠ حسن: أخرجه ابن ماجه، كتاب الزهد، باب صفة النار (4327)

جيد: اخرجه البيهةي، كتاب الجمعة ، باب رفع الصوف بالخطبة 207/3مجمع الزوائد (3169).

الكَّالِيَّانُ الكَالِيِّيِّ الْكَالِيِّيِّ الْكَالِيِّيِّ الْكِلِيِّةِ الْكِلِيِيِّةِ الْكِلِيِّةِ الْكِلِيِّةِ الْكِلِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِّةِ الْكِلِيِّةِ الْكِلِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِّةِ الْكِلِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِّةِ الْمُؤْلِقِيلِيِ

اس نے اینے بیٹوں کو بلایا اور یوچھا: مجھے کس طرح کا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرًا فَدَعَا بَنِيهِ فَقَالَ أَيُّ أَب تَعُلَمُونِي قَالُوا خَيْرُهُ يَا أَبَانَا قَالَ فَإِنِّي بات مجحتے ہو؟ انہوں نے کہا: "ہم آپ کواچھا باپ جانتے لَا أَدْعُ عِنْدَ أَحَدِ مِنْكُمُ مَالًا هُوَ مِنِّي ہیں۔' اس نے کہا: میں اپنا سارا مال تم سے لے لوں گا ورندوه کام کرو جوتمهیں حکم دول ایسے نے فرمایا: "میرے إِلَّا أَخَلُتُهُ مِنْكُمُ أَوْ لَتَفْعَلُنَّ مَا آمُرُكُمُ رب کی قتم! اس نے ان سے وعدہ لیا کہ جب میں مر قَالَ فَأَخَذَ مِنْهُمُ مِيثَاقًا وَرَبِّي قَالَ أَمَّا أَنَّا جاؤں تو مجھے آگ ہے جلا دینا۔حتی کہ جب میں کوئلہ ہو إِذَا مُتُّ فَخُذُونِي فَأَحُرِقُونِي بِالنَّارِ حَتُّى إِذَا كُنُتُ حُمَمًا فَدُقُونِي ثُمَّ جاؤں تو کوٹ کر ہوا میں اڑا دینا' آپ نے فرمایا: ''محمد کے رب کی قتم! جب وہ مرگیا تو انہوں نے ایسا ہی کیا پھر اذُرُونِي فِي الرّيرح قَالَ فَفَعَلُوا ذٰلِكَ وہ اچھا بنا کرلایا گیا اور اینے رب کے سامنے پیش کیا گیا تو به وَرَبّ مُحَمّد حِينَ مَاتَ فَجيءَ به فرمایا: " تحقی جلائے جانے برکس بات نے آ مادہ کیا؟ اس أَحُسَنَ مَا كَانَ قَطُّ فَعُرضَ عَلَى رَبِّهِ فَقَالَ مَا حَمَلَكَ عَلَى النَّارِ قَالَ خَشْيَتُكَ يَا نے کہا: ''اے رب! تیرے خوف نے۔'' فر مایا: ''میں کھے رَبّ قَالَ إِنِّي أَسُمَعُكَ لَرَاهِبًا قَالَ فَتِيبَ خوفز ده سمجفتا ہوں' اور اسے بخش دیا گیا۔ ابومحمر کہتے ہیں "يَسْتَثِعُ" وْخِيرِهِ كُرنْ لِو كَهِيَّا _ عَلَيْهِ قَالَ أَبُو مُحَمَّد يَبْتَئِرُ يَدَّخِرُ)) . •

ف السند: سیر حمت اللی کی بہت بڑی دلیل وعلامت ہے کیکن ایسے واقعات کو اپنی عملی کوتا ہی پر دلیل بنالینا غلط اور عمل رسول منظم میں اور عمل صحابہ رہی الکتاب کے برعکس ہے۔

[92] بَابِ دَخَلَتِ امْرَأَةٌ النَّارَ فِي هِرَّةٍ لِي اللهِ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللّهِ عَلَيْ اللّهُ اللّهِ عَلَيْ عَلَيْ اللّهِ عَلَيْ اللّهِ عَلَيْ اللّهِ عَلَيْ عَلَيْ اللّهِ عَلَيْ اللّهِ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ اللّهِ عَلَيْ اللّهِ عَلَيْ اللّهِ عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْكُوا عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْكُوا عَلْمَا عَلَيْ عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكَا عَلَيْ عَلَيْكُوا عَلْمَا عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلِي عَلِي عَلِي عَلِي عَلَيْكُوا عَ

2856 ـ أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ أَنْبَأَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِع

عَنِ ابُنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ ﷺ ذَحَلَتُ امْرَأَةُ النَّارَ فِى هِرَّةٍ فَقِيلَ لَا أَنْتِ

أَطُعَ مُتِيهَا وَسَقَيْتِيهَا وَلَا أَنْتِ أَرْسَلْتِهَا

فَتَأْكُلَ مِنُ خَشَاشِ الْأَرْضِ . •

[€] جيد: أخرجه احمد5/5والطبراني في الكبير423/19(1076-1077)

صحيح: أخرجه البخارى، كتاب المساقاة، باب فضل سقى الماء (2365) ومسلم، كتاب السلام، باب تحريم قتل الهرة (2242)

يَتِنَالِكَالِينِيَ الْكَالِينِيَ الْكَالِينِيَ الْكَالِينِيَ الْكَالِينِيَ الْكَالِينِينِ 519 [93].... بَابِ فِي شِدَّةِ عَذَابِ أَهُلِ النَّارِ اہل دوزخ کوشد بدعذاب ہونے کا بیان

2857 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي أَيُّوْبَ بْنِ مِقْلَاصِ مَوْلَى أَبِيْ هُرَيْرَةَ

وَكُنْيَتُهُ أَبُوْ يَحْيَى قَالَ سَمِعْتُ دَرَّاجًا أَبَا السَّمْحِ يَقُولُ سَمِعْتُ أَبَا الْهَيْمَ يَقُولُ

سَمِعُتُ أَبَا سَعِيدِ النُحُدُرِيّ يَقُولُ قَالَ فرمایا: "كافريراس كى قبريس نانوے سانپ مسلط كئ رَسُولُ اللَّهِ عَلَى : ((يُسَلَّطُ عَلَى جائیں گے جواسے قیامت تک مسلسل کا ثنے اور ڈستے رہیں گے اگر ان میں ہے ایک زمین پر پھونک مار دے تو سنره نداگے۔''

الُكَافِيرِ فِي قَبُرِهِ تِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ تِنِيُّنَّا تَنْهَشُهُ وَتَلُدَغُهُ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ وَلَوُ أَنَّ تِنِّينًا مِنْهَا نَفَخَ فِي الْأَرُضِ مَا أَنْبَتَتُ

خَضُوَاءً)) . •

ر947.... بَابِ فِي أُوْدِيَةِ جَهَنَّمَ دوزخ کی واد یوں کا بیان

2858- أُخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا أَزْهَرُ بْنُ سِنَان

محمہ بن واسع کہتے ہیں میں بلال بن ابوبروۃ ذائقہا کے باس كيا اوراك كهاكه: "تمهارك والدني اين والدسي قل كر كے مجھ سے بيان كيا كه نبي مطفقتين نے فرمايا: " ووزخ میں ایک وادی ہے جس کا نام بہبب ' ہے اس میں سرکش لوگ رہیں گےتم ان میں شامل ہونے سے بچنا۔''

عَنُ مُحَمَّدِ بُنِ وَاسِعِ قَالَ دَخَلُتُ عَلَى بِكُلْلِ بُنِ أَبِى بُرُكَةً فَقُلُتُ إِنَّ أَبَاكَ حَدَّثَنِي عَنُ أَبِيهِ عَنِ النَّبِي عَلَيْ قَالَ: ((إِنَّ فِي جَهَنَّمَ وَادِيًّا يُقَالُ لَهُ هَبُهَبُ يَسُكُنُهُ كُلُّ جَبَّارِ)). فَإِيَّاكَ أَنُ تَكُونَ مِنْهُمُ. •

[95].... بَابِ مَا يُخُرِجُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ بِرَحُمَتِهِ وہ لوگ جنہیں اللّٰدا پنی رحمت سے دوزخ سے آ زاد کر دے گا

2859 - أَخْبَرَنَا عَـمْرُو بْنُ عَوْن عَنْ خَالِدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَزِيدَ أَبِي مَسْلَمَةَ عَنْ أَبِي نَضْرَةَ

[•] ضعیف: جب كرمندموسلى (6644) مين اس كاشام بهى ہے-

[€]ضعيف: أخرجه ابو نعيم في الحلية256/2والحاكم596/4-597

حَرِّ عَنْ الْكَارِيْكِيُّ كَابِ الرقاق 520 كَتَابِ الرقاق

سیّدنا ابوسعید خدری بنافید کہتے ہیں رسول الله طفی آیا نے فرمایا: '' کچھ لوگ قطعی دوزخی ہیں انہیں وہاں موت نہ آئ گی کچھ ایسے ہوں گے کہ اپنے گنا ہوں کے موافق وہاں جلتے رہیں گے حتی کہ وہ کوئلہ ہو جائیں گے تو شفاعت کی اجازت دی جائے گی تو دوزخ سے جوق در جوق ذکا لے جائیں گے پھر وہ جنت کی نہروں میں غوطے لگائیں گے جنتیوں سے کہا جائے گا: ان پر پانی بہاؤ تو وہ اُن پر بہائیں گے ان کا گوشت ایسے اگے گا جیسے سیلاب کے کیچڑ میں دانہ اگتا ہے۔''

عَنُ أَبِي سَعِيدِ الْخُدُرِيِ قَالَ قَالَ وَاللّهِ عَنُ أَبِي سَعِيدِ الْخُدُرِيِ قَالَ اللّهِ عَلَيْ اللّهِ عَلَيْ ((أَمَّا أَهُلُ النَّارِ الَّذِينَ هُمُ أَهُلُ النَّارِ اللّهِ عَلَى أَهُ النَّاسِ فَإِنَّ النَّارِ اللّهَ عِنَ النَّاسِ فَإِنَّ النَّارَ النَّاسِ فَإِنَّ النَّارَ النَّاسِ فَإِنَّ النَّارَ النَّاسِ فَإِنَّ النَّارَ النَّارِ فَي النَّارِ فَي النَّارِ فَي النَّارِ ضَبَائِرَ فِي الشَّ فَاعَةِ فَي خُرُجُونَ مِنَ النَّارِ ضَبَائِرَ فَي الشَّ فَاعَةِ فَي خُرُجُونَ مِنَ النَّارِ ضَبَائِرَ ضَبَائِرَ ضَبَائِرَ فَي نَفُرُونَ عَلَى أَنُهَادِ الْجَنَّةِ فَي ضَولَ عَلَى أَنُهادِ الْجَنَّةِ فَي عَلَى أَنُهادِ الْجَنَّةِ اللّهِ الْمَعَلَى النَّارِ طَبَائِرَ فَي فَي النَّارِ طَبَائِرَ اللّهُ اللّهَ الْمَعَلَى النَّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ

السُّيل)). •

[96] بَابِ فِي أَبُوَابِ الْجَنَّةِ جَت كدروازون كابيان

2860 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ حُمَيْدٍ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَامٍ عَنْ شَرِيكِ عَنْ عُنْمَانَ الثَّقَفِيّ عَنْ أَبِي صَادِقِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيْدَ

سیّدنا عبداللّد خلینیهٔ سے منقول ہے کہ نبی طفیّا آیا نے فرمایا: ''جنت کے آٹھ دروازے ہیں۔'' عِنُ عَبُدِ اللَّهِ عَنِ النَّبِيِّ عَلَيْ قَالَ: ((لِلْجَنَّةِ ثَمَانِيَةُ أَبُوَابٍ)) . •

[97].... بَابِ مَنُ يَدُخُلُ الْجَنَّةَ لَا يَبُؤُسُ جنتی شخص ہمیشہ خوش رہے گا اور مختاج نہ ہو گا

• صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الإيمان، باب اثبات الشفاعة (458) وابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر الشفاعة (4309)

◘ حسن: أخرجه الطرابي في الكبير 254/10(10479)وذكره المنذري في الترغيب والترهيب 89/4

الرقاق كتاب الرقاق كتاب الرقاق كتاب الرقاق كتاب الرقاق

''جوشخص جنت میں داخل ہوگا ہمیشہ خوش رہے گا اور بھی مختاج نہ ہوگا نہ اس کے کیڑے پرانے ہوں گے اور نہ جوانی ختم ہوگی اس کے لئے جنت میں وہ چیزیں ہوں گے جونہ کسی آئکھ نے دیکھیں نہ کسی کان نے سنیں اور نہ کسی کے دل میں اس کا خیال گذرا۔'' ((مَنُ دَحَلَ اللَجَنَّةَ يَنَعُمُ لَا يَبُوُسُ لَا تَبُلَى ثِيَابُهُ وَلَا يَفُنَى شَبَابُهُ فِى الْجَنَّةِ مَا لَا عَيُنْ رَأْتُ وَلَا أُذُنَّ سَمِعَتُ وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلُب بَشَر)) . • • خَطَرَ عَلَى قَلُب بَشَر)) . • •

[98].... بَابِ لَمَوُضِعُ سَوُطٍ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا جنت مِيں كوڑا كھرجگہ تمام دنيا سے بہتر ہونے كا بيان

2862_ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ

سیّدنا الو ہررۃ رہی ہے ہیں نبی سے ایک نے فرمایا: "جنت میں کوڑا کھر جگہ تمام دنیا ہے بہتر ہے دلیل چاہوتو یہ آیت پڑھو: "برنفس موت چھنے والا ہے ،اور قیامت کے دن تم ایپ اجر پورے دیئے جاؤ گے پس جوجہم کی آگ ہے بہا کر جنت میں داخل کر دیا گیا وہ کامیاب ہوگیا۔"

عَنُ أَبِى هُرَيُرةَ عَنِ النَّبِي عَلَىٰ قَالَ: ((لَمَوُضِعُ سَوُطٍ فِى الْبَنَّةِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنيَا وَمَا فِيهَا وَاقْرَنُوا إِنْ شِئْتُمُ ﴿ فَمَنُ زُصُوحَ عَنِ النَّارِ وَأَدُ حِلَ الْبَحَنَّةَ فَقَدُ فَازَ الْآيَةَ . *

(آلعمران: ۱۸۵)

[99] بَابِ فِي بِنَاءِ الْجَنَّةِ جَن كَيَانِ جَن كَيَانِ الْجَنَّةِ عَلَيْنَ الْجَنْةِ الْجَنْةِ الْمُعَارِت كَابِيانِ

2863 - أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنْ سَعْدَانَ الْجُهَنِيِّ عَنْ أَبِيْ مُجَاهِدٍ حَدَّثَنَا أَبُوْ مُدِلَّةَ

سیّدنا ابو ہرریۃ فیالٹین کہتے ہیں: میں نے کہا: یا رسول اللہ! جنت کے مکان کس طرح کے ہوں گے آپ نے فرمایا: ''اس کی ایک اینٹ سونے کی ہوگی اور ایک چاندی کی اور اس کا گارانفیس کستوری کا ہوگا۔اور اس کی کنگریاں یا قوت اور موتی ہوں گے اور اس کی مٹی زعفران ہوگا۔ جوشخص أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيُرَةً يَقُولُ قُلُنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ الْجَنَّةُ مَا بِنَاؤُهَا قَالَ: ((لَبِنَةٌ مِنُ ذَهَبٍ وَلَجِنَةٌ مِنُ ذَهَبٍ وَلَجِنَةٌ مِنُ فِصَةٍ مِلاطُهَا الْمِسُكُ الْأَذُفَرُ وَحَصْبَاؤُهَا الْيَاقُوتُ وَاللَّوُلُو وَاللَّوْ مَنْ يَدُحُلُهَا وَاللَّوْ وَاللَّوْ الْمَا الْيَاقُوتُ وَاللَّوُلُو وَاللَّوْ مَنْ يَدُحُلُهَا الزَّعُفَرانُ مَنْ يَدُحُلُهَا وَاللَّهُ لَوَ وَاللَّهُ وَاللَّهُ الزَّعُفَرانُ مَنْ يَدُحُلُهَا

[•] صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الجنة، باب دوام نعيم أهل الجنة (7085)

صحيح: أحرجه البخاري، كتاب الحهاد، باب الغدوة والروحة في سبيل الله..... (2793) والترمذي، كتاب التفسير، باب ومن سورة أل عمران (3013)

حَكْلُ الْكَالِيْتِينَ الْكَالِيْتِينَ الْكَالِيْتِينَ الْكَالِيْتِينَ الْكَالِيْتِينَ الْكِلْلِيْتِينَ الْمُوقاق اللهِ اللهِ
يَخُلُدُ فِيهَا يَنُعَمُ لَا يَبُّوُسُ لَا يَفُنَى شَبَابُهُمُ وَلَا تَبْلَى ثِيَابُهُمُ)). •

اس میں داخل ہو گا وہ اس میں ہمیشہ رہے گا وہ خوش رہے گا بھی مختاج نہیں ہوگا۔ نہ ہی ان کی جوانی ختم ہو گی اور نہ

> اس کے کپڑے پرانے ہوں گے۔'' [100] بَابِ فِی جَنَّاتِ الْفِرُ دَوُسِ جنت الفردوس کا بیان

2864 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا أَبُو قُدَامَةَ عَنْ أَبِيْ عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ....

عَنُ أَبِي بَكُرِ بُنِ عَبُدِ اللّهِ ابُنِ قَيْسٍ عَنُ أَبِيهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ اللّهِ اللهِ اللهُ الله

سیّدنا ابو بکر بن عبدالله بن قیس اپنے والد سے نقل کرتے ہیں کہ انہوں نے کہا کہ رسول الله طفی اَلَیْ نے فرمایا:

''جنت الفردوس کی چارا قسام ہیں: دوقتم کی وہ ہیں کہ ان
کے زیور' برتن اور تمام چیزیں سونے کی ہوں گی اور دوقتم کی
وہ ہیں کہ ان کے زیور' برتن اور تمام چیزیں چاندی کی ہوں
گی۔اور عدن کی جنتوں میں لوگوں کے اپنے ربّ کو دیکھنے
میں کوئی چیز بھی حائل نہیں ہوگی سوائے اس کبریائی کی چا در
کے جو اللہ تعالیٰ کے چہرہ پر ہوگی اور یہ نہریں جنت عدن
سے ایک گڑھے کی شکل میں پھوٹی ہیں، پھر بعد میں نہریں
بن جاتی ہیں عبداللہ کہتے ہیں کہ'جو بیت' گڑھے کو کہتے

فوائد: جنت الفردوس بيعرش كے ينچ سب سے اعلى جنت ہے يہيں سے جنت كى نهريں بھوئى ميں اور اول در جے كے مونين كو يهال علم ايا جائے گا اس ليے اللہ سے جب بعى مائكى جنت الفردوس بى مائكى جائے (فاذا سالتم الله فا سئلوهُ الفردوس) (ترندى)

¹ جيد: أخرجه الترمذي، كتاب صفة الجتة، باب صفة الجنة (2526)

متفق عليه: أخرجه البخارى، كتاب الرقاق، باب من نوقش الحساب عذب (6530-6540) ومسلم، كتاب الزكاة، باب (20) الحديث (2345).

523 كتاب الرقاق

سيّدنا الوبريرة فالله كتت بين رسول الله طلط في في فرمايا:

"میری امت کی سب سے پہلی جماعت جو جنت میں

جائے گی وہ ایسی ہو گی جیسے چودھویں رات کا جاند پھروہ

لوگ جوان کے قریب ہوں گے۔ وہ ایسے ہوں گے جیسے

عمدہ ستارہ آ سان میں روثن ہو۔'' تو عکاشہ نے کھڑے ہو

كركها: "يا رسول الله! دعا كيجي الله مجهي بهي ان سي كر

دے۔'' آپ نے فرمایا:''یا اللہ! اسے ان لوگوں سے کر

دے'' پھر دوسرے نے کھڑے ہوکر کہا:''یا رسول اللہ!

وعا کیجے اللہ مجھے بھی ان میں سے کر دے۔" آپ نے

فرمایا:''عکاشیتم سے سبقت لے گیا۔''

[101].... بَابِ فِي أُوَّل زُمْرَةٍ يَدُخُلُونَ الْجَنَّةَ جنت میں پہلے داخل ہونے والے گروہ کا بیان

2865 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَنْبَأَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِلَيْكًا: ((إِنَّ أَوَّلَ زُمُ رَ-ةٍ يَدُخُ لُونَ الْجَنَّةَ مِنْ الْجَنَّةَ مِنُ أُمَّتِي عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيُلَةَ الْبَدُرِ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ عَلَى أَحُسَن كُوْكُب إضَائَةً فِي السَّمَاءِ)) فَقَامَ عُكَّاشَةُ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ ادْعُ اللَّهَ أَنُ يَجُعَلَنِي مِنْهُمُ فَقَالَ اللَّهُمَّ اجْعَلُهُ مِنْهُمُ ثُمَّ قَامَ رَجُلٌ آخَرُ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ ادُعُ اللَّهَ أَنْ يَجُعَلَنِي مِنْهُمُ فَقَالَ:

المنتئ الكاليق

((سَبَقَكَ بِهَا عُكَّاشَةُ)). •

[102].... بَابِ مَا يُقَالُ لِأَهُلِ الْجَنَّةِ إِذَا دَخَلُوهَا

جنت میں داخلہ کے وقت جنتیوں سے کھے جانے والے کلمات کا بیان

2866 أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ بْنُ يَعِيشَ حَدَّثَنَا يَحْمَى بْنُ آدَمَ عَنْ حَمْزَةَ بْنِ حَبِيبٍ عَنْ أَبِي إِسْحَقَ عَنِ الْأَغَرِ

سیدنا ابو ہریرہ وہاللہ اور ابوسعید رفاہد نبی مضافی سے بیان كرتے ہيں: "آواز دى جائے گى سيتمهارى جنت ہے جس كا متهين وارث بنايا كيا-"اس آيت كم تعلق ني فرمايا: ''نہیں کہا جائے گا: تندرست رہو بہار نہ ہوُ خوش رہومحتاج نہ ہؤجوان رہو بوڑھے نہ ہؤ ہمیشہ رہوتہہیں موت نہ آئے۔''

﴿ وَنُودُوا أَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ ﴾ قَالَ ((نُه دُوا صِيحُه ا فَكَلا تَسُقَمُوا وَانْعَمُوا فَلَا تَيُوا سُوا وَشَيُّوا فَلا تَهْرَ مُوا وَاخْلُدُوا فَلَا تُمُوتُوا)). 9

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةً وَأَبِي سَعِيْدٍ عَنِ النَّبِي عِلْمُ اللَّهِي عِلْمُ اللَّهِي عِلْمُ اللَّهِ

₫ متفق عليه: أخرجه البخاري، كتاب بدء الخلق، باب صفة الجنة وأنها مخلوقة(3254) ومسلم، كتاب الجنة، باب او ل زمرة تدحل الجنة(7078)

🕭 صحيح بشواهده: أخرجه احمد3/95ومسلم، كتاب الجنة وصفة نعيمها ،باب صفة الجنة وأهلها(2837)والترمذي في التفسير، باب ومن سورة الزمر(3241)

حَرِّ يُقِبِنَ الْكَالِيْمِينَ ﴾ 524 ﴿ كتاب الرقاق ﴾

[103] بَابِ فِي أَهُلِ الْجَنَّةِ وَنَعِيمِهَا

اہل جنت اوراس کی نعمتوں کا بیان

2867 أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ ثُمَامَةَ بْنِ عُقْبَةَ الْمُحَلِّمِيّ قَالَ

سیّدنا زید بن ارقم کہتے ہیں رسول الله طَنْ اَلَّمْ نَے فرمایا:

"جنتیوں میں سے ایک آ دمی کو کھانے پینے صحبت اور
شہوت میں سو آ دمیوں کی قوت دی جائے گا۔" ایک
یبودی نے کہا: "جو شخص کھائے پئے گا اسے قضائے
عاجت ہوگی؟ آپ نے فرمایا: "اس کے جسم سے پینے
عاجت ہوگی؟ آپ نے فرمایا: "اس کے جسم سے پینے
بیے گاائی سے اس کا یہٹ سمٹ جائے گا۔"

سَمِعُتُ زَيُدَ بُنَ أَرُقَمَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَلَىٰ : ((إِنَّ الرَّجُلَ مِنُ أَهُلِ الْجَنَّةِ لَيُعُطَى قُوَّةً مِائَةٍ رَجُلٍ فِى الْأَكُلِ لَيُعُطَى قُوَّةً مِائَةٍ رَجُلٍ فِى الْأَكُلِ وَالشَّهُوةِ)) فَقَالَ وَالشَّهُوةِ)) فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْيَهُ وِدِ إِنَّ اللَّذِي يَالُّكُلُ وَيَصُرُبُ تَكُونُ مِنْكَةُ الْحَاجَةُ قَالَ: (ريَفِينُ مِنُ جلُدِهِ عَرَقٌ فَإِذَا بَطُنُهُ قَدُ (

ضَمَرَ)). ٥

فواند: (۱) جنت کی خصوصی واعلی نعتوں میں سے بیجھی ہے کہ آ دمی سوجوانوں جتنی طاقت کا حاصل ہوگا (۲) جنتی بیشاب و یا خانے کی حاجت سے مہتر اہو نگئے ۔

2868 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ يَنِيدَ الرِّفَاعِيُّ حَدَّثَنَا مُعَاذٌ يَعْنِي ابْنَ هِشَامٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَامِرٍ

الأَحْوَلِ عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبِ

سیّدنا ابو ہریرۃ رضی اللّی کہتے ہیں نبی مظیّق آئے نے فرمایا: ''جنتی جوان ہوں گے اور نہ داڑھی جوان ہوں گے اور نہ داڑھی مونچھیں' سرمکی آئھوں والے ،ان کے کپڑے بھی پرانے نہ ہوں گے اور نہ ان کی جوانی ختم ہوگی۔''

عَنُ أَبِى هُ رَيُرَةَ عَنِ النَّبِيِّ عَلَىٰ قَالَ: ((أَهُ لُ الْمَجَنَّةِ شَبَابٌ جُرُدٌ مُرُدٌ كُحُلٌ لَا تَبُلَى ثِيَابُهُمُ وَلَا يَفْنَى شَبَابُهُمُ)). ٥

2869 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجِ قَالَ أَخْبَرَنِيْ أَبُو الزُّبَيْرِ

❶ صحيح: أحرجه مسلم، كتاب الجنةوصفة نعيمها،باب صفات الجنة وأهلها(8076)والترمـذي، كتاب تفسير القراك،باب من سورة الزمر(3246)

◘ حسن: أخرجه الترمذي، كتاب صفة الجنة، باب ثياب أهل الجنة (2539) والطبراني في الصغير 140/2

حَرِّ لِيَّنْ الْكَالِيَّةِ اللهِ الرقاق (525) كتاب الرقاق () كتاب الرقاق

سیّدنا جابر خلیّن کہتے ہیں ابو عاصم سے کہا گیا: ''کیا نبی طفیّن کیتے ہیں ابو عاصم نے کہا: ''جی ہاں' جنتی نہ بیشاب کریں گے اور نہ ناک صاف کریں گے۔ ان سب کے بدلہ صرف ڈکارلیس نہ ہی پاخانہ کریں گے۔ ان سب کے بدلہ صرف ڈکارلیس گے کھا کیں گے اور پئیں گے۔ ان کے دل میں سجان الله اور الجمد لللہ اس طرح ڈال دیا جائے گا۔ جیسا سانس لینا ان

أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا قِبلَ لِأَبِي عَاصِمٍ عَنِ
النَّبِي عِنَّا قَسَلُ الْبَيْ عَاصِمٍ عَنِ
النَّبِي عِنَّا قَسَلُ الْعَمُ أَهُلُ الْبَخَلَةِ لَا
يَبُولُونَ وَلَا يَمُتَخِطُونَ وَلَا يَتَمَخَّطُونَ
وَيَكُونَ وَلَا يَمُتَخِطُونَ وَلَا يَتَمَخَّطُونَ
وَيَكُونَ خَلِكَ مِنْهُمُ جُشَاءً يَأْكُلُونَ
وَيَكُونَ خَلِكَ مِنْهُمُ جُشَاءً يَأْكُلُونَ
وَيَكُونَ النَّهُمُونَ التَّسْبِيحَ وَالْحَمُدَ
كَمَا يُلْهَمُونَ وَيُلْهَمُونَ التَّسْبِيحَ وَالْحَمُدَ

کے ول میں ڈالا گیا ہے۔''

[104] بَابِ مَا أَعَدَّ اللَّهُ لِعِبَادِهِ الصَّالِحِينَ اللَّهُ لِعِبَادِهِ الصَّالِحِينَ اللَّهُ لِعِبَادِهِ الصَّالِحِينَ اللَّهُ لَا اللَّهُ الللللِّهُ الللللِّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللللِّهُ الللللِّهُ الللللِّهُ الللللِّهُ الللللِّهُ الللللِّلِي الللللِّهُ اللللِّهُ الللللِّهُ الللللِّهُ اللللِّهُ الللللِلْمُ اللللْمُولِمُ الللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ الللْمُ اللللّهُ الللْمُ الللْمُ اللللّهُ اللللْمُ اللللْمُ الللْمُ اللللْمُ اللللْ

2870- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ

سیّدنا ابو ہریرة رضافی کہتے ہیں رسول الله طلعے آیا نے فرمایا:

"الله عزوجل فرماتا ہے: میں نے اپنے نیک بندوں کے لئے وہ چیز تیار کر رکھی ہیں جن کو نہ آ تکھوں نے دیکھا نہ کانوں نے سنا نہ ہی کسی کے دل میں ان کا خیال آیا۔اگر اس کی دلیل چاہوتو ہے آئید پڑھو: ''کسی کے علم میں نہیں کہ مسلمانوں کے عمل کے بدلہ میں ان کے آتکھوں کی شخت اس کی کیا کیا چیزیں چھیا کررکھی گئی ہیں۔'' (السجدة: کا)

عَنُ أَبِسَى هُسرَيْسرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ عَنُ أَبِسَى هُسرَيْسرَةَ قَالَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ اللّٰهِ عَنَّ وَجَلَّ أَعُدَدُتُ لِعِبَادِى الصَّالِحِينَ مَا لَا عَيُنْ رَأْتُ وَلَا أَذُنَّ سَمِعَتُ وَلَا خَطَرَ عَلَى رَأْتُ وَلَا أَذُنَّ سَمِعَتُ وَلَا خَطرَ عَلَى قَلْا وَلَا خَطرَ عَلَى قَلْل بَشَرٍ وَاقْرَئُوا إِنْ شِئْتُمُ: فَلا تَعْلَمُ نَفُسٌ مَا أُخْفِى لَهُمُ مِنْ قُرَّةٍ أَعُيُنٍ تَعْلَمُ نَفُسٌ مَا أُخْفِى لَهُمُ مِنْ قُرَّةٍ أَعُيُنٍ جَسزَاءً بِسمَسا كَانُوا يَعُمَلُونَ ﴾ جَسزَاءً بِسمَسا كَانُوا يَعُمَلُونَ ﴾ جَسزَاءً بِسمَسا كَانُوا يَعُمَلُونَ ﴾

[السجدة: ١٤]. ٥

[105] بَابِ فِي أَدُنَى أَهُلِ الْجَنَّةِ مَنُزِلًا ادنیٰ مرتبہ کے جنتی کا بیان

2871 - أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ

❶ صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الجنة،باب صفات الجنة وأهلها(7081)وابوداؤد، كتاب السنة،باب في الشفاعة (4741)

[◘] صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الجنة نعيمها، باب الجنة وصفة نعيمها وأهلها(7066)

526 كتاب الرقاق كتاب الرقاق الكالم الكالمن
سندنا ابو بررة فالنَّهُ كمت بين رسول الله الله الله عن فرمايا: عَنُ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ ''ادنیٰ مرتبہ کا جنتی وہ کھخص ہو گا کہ اللہ سے کوئی خواہش اللَّهِ عَنَّ : ((إِنَّ أَدُنَى أَهُلِ الْجَنَّةِ مَنُزلًا كرے كا تو اس سے كہا جائے گا: تمہارے لئے يہ بھى ہے مَنُ يَتَمَنَّنِي عَلَى اللهِ فَيُقَالُ لَهُ لَكَ اور اس کی مثل اور بھی حتی کہ اس کے دل میں یہ بات ڈالی ذالِكَ وَمِثْلُهُ مَعَهُ 1 إِلَّا أَنَّهُ يُلَقَّى سِوٰى جائے گی کہ فلاں فلاں چیز مانگ وہ مانگے گا تواس سے کہا كَذَا وَكَذَا فَيُقَالُ لَهُ ذَالِكَ لَكَ لَكَ جائے گا۔ تیرے لئے یہ بھی ہے اور اس کی مثل اور بھی۔ وَمِثْلُهُ مَعَهُ)). قَالَ أَبُو سَعِيدٍ النُّحُدُرِيُّ ابوسعد خدری فائنه کہتے ہیں رسول الله الله علی آنے فرمایا: قَىالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((فَيُقَالُ لَهُ "اس سے کہا جائے گا:" تیرے لئے بیمجی ہے اس کے ذَاكَ وَعَشُرَةُ أَمْفَالِهِ)). 0

فواند: جنت كسب ادنى مكين كايه حال موكا كداس الى مانك كےمطابق مرشے دى جائے گی حتی کہ اسے یاد کروا کرعطا کیا جائے گا اور جب اس کے مائلنے کی انتہا ہو جائے گی تب اللہ اسے دس گنا مزیدعطا فرما دے گا تو مراتب کے فرق کے باوجود وہ ادنی مرتبے کا جنتی اینے آپکوہفت اقلیم کاشہنشاہ سمجھے گالہذائسی کا اعلیٰ رتبداس کے لیے حسرت و پشیمانی کا باعث نہیں ہوگا۔

ساتی وس گنا اور بھی۔''

[106].... بَابِ فِي غُرَفِ الْجَنَّةِ

جنت کے بالا خانے کا بیان

2872 - أَخْبَرَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُوْ حَازِمِ

اللَّهِ ﷺ : ((إِنَّ أَهُلَ الْجَنَّةِ لَيَتَرَائُونَ أَهُلَ الْغُرَفِ كَمَا تَرَوُنَ الْكُوكَبَ الدُّرِّيُّ فِي السَّمَاءِ)). 🌣

عَنُ سَهُ لِ بُن سَعُدٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ سَيْدِنا سَهِل بن سعد رَفِي اللهُ عَنْ سَهُ لِ بَن سعد رَفِي اللهُ عَلَيْ عَلَيْ اللهُ عَلَيْهَ عَلَيْهِ مَا اللهُ عَلَيْهَ عَلَيْهِ مَ فرمایا: ' جنتی' جنت کے بالا خانوں کے اہل کو ایسے دیکھیں کے جیسے تم آ سان میں روشن ستارے کو دیکھتے ہو۔''

2873 قَالَ أَبُو حَازِمٍ فَحَدَّثْتُ بِهَذَا الْحَدِيثِ النُّعْمَانَ بْنَ أَبِيْ عَيَّاشِ فَحَدَّثَنِيْ

حسن: أحرجه مسلم، كتاب الإيمان، باب معرفة طريق الرؤية (183) (130) والبخاري، كتاب اذان، باب فضل السجو د (806)

عنفق عليه: اخرجه البخاري، كتاب الرقاق باب صقة الجنة والنار(6555) ومسلم، كتاب الجنة، باب ترائي أهل الجنة اهل العرف(2830)

حكل نَيْنَالْكَالِيْنِيَ الْكَالِيْنِيُّ الْكَالِيْنِيُّ الْكَالِيْنِيُّ الْكَالِيْنِيُّ الْكَالِيْنِيُّ الْكَالِيِّ

سیّدنا ابو سعید خدری والفیئے نے کہا: ''آ سان کا روش ستارہ

عَنُ أَبِى سَعِيدٍ الْنُحُدُرِيِّ أَنَّهُ قَالَ: سَيْرَنَا الوسعيد خدرى ((الْسَكَوْكِبُ الدُّرِيُّ فِي السَّمَاءِ شَرْقَ اور غربي ہے۔''

الشَّرُقِيُّ وَالْغَرُبِيُّ). 0

[107] بَابِ فِي صِفَةِ الْمُحُورِ الْعِينِ بِرُى آئكھول والى حورول كابيان

2874 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمِنْهَالِ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ الْقُرْدُوسِيُّ عَنْ مُحَمَّدِ

بْنِ سِيْرِينَ

عَزُبِ). 🏻

عَنُ أَبِى هُورَيُونَ قَالَ قَالَ رَسُولُ سيّدنا الوهرية رَفَائِنَ كَهَ بِين رسول الله طَفَيَقَيْنَ نَ فرمايا: الله فَقَالَ دَسُولُ الله طَفَيَقَيْنَ نَ فرمايا: الله فَقَالَ : ((مَا فِي الْجَنَّةِ أَحَدُ إِلَّا لَهُ الْجَنَّةِ أَحَدُ إِلَّا لَهُ الْجَنَّةِ أَحَدُ إِلَّا لَهُ جُورُ عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَنَى الله عَلَى الله عَل

ے بعیر نہ ہوگا۔ [108].... باب فِی خِیامِ الْجُنَّةِ جنت کے خیموں کا بیان

2875- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا هَـمَّامٌ خَدَّثَنَا أَبُوْ عِمْرَانَ الْجَوْنِيُّ عَنْ أَبِيْ بَكْرِ .

سیّدنا عبدالله بن قیس زائیهٔ کہتے ہیں رسول الله طفیاً آیا نے فرمایا: ''جنت کا خیمہ اندر سے خالی موتیوں کا ہوگا جس کی لمبائی آسان میں ساٹھ میل ہوگ۔ اس کے ہرکونے میں مومن کے گھر والے۔ بیالوگ ایک دوسرے کو نہ دیکھیں عَبُدِ اللَّهِ بُنِ قَيْسٍ عَنُ أَبِيهِ قَالَ قَالَ وَالَ وَالَ وَالَ رَسُولُ اللَّهِ فَالَ اللَّهِ فَالَ اللَّهِ وَلَا رَسُولُ اللَّهِ فَقَالَ اللَّهُ وَلَا مُحَوَّفَةٌ طُولُهَا فِى السَّمَاءِ سِتُونَ مِيلًا فِي السَّمَاءِ سِتُونَ مِيلًا فِي كُلِّ زَاوِيَةٍ مِنْهَا أَهُلٌّ لِلْمُؤْمِنِ لَا يَرَاهُمُ الْآخَرُونَ)).

عَرَاهُمُ الْآخَرُونَ)).
عَرَاهُمُ الْآخَرُونَ)).
عَرَاهُمُ الْآخَرُونَ)).

• صحیح: سابقه والی تخریج بی ہے۔ • مشفق علیه: أخرجه البخاری، كتاب احادیث الإنبياء،باب حلق آدم

وذريته(3327)ومسلم، كتاب الحنة ونعيمها، باب اول زمرة تدخل الجنة(7078) • مشفق عليه: أخرجه البخاري، كتاب يدر الخلق، باب صفة الجنة(3243)ومسلم، كتاب الجنة، باب في صفة حيام

🕏 مشقى طالبية : الخرجة البخاري، فتاب يدر التحلق،باب صفة الجنة(3243)ومسلم، فتاب الجنة،باب في صفة : الجنة (7087)

528 كتاب الرقاق المُتَازَّةُ الْكِالِيُّوْمُ الْكَالِيُّوْمُ الْكَالِيُّوْمُ الْكَالِيُّوْمُ الْكَالِيُّوْمُ الْكَالِيُّ

[109].... بَابِ فِي وَلَدِ أَهُلِ الْجَنَّةِ جنتوں کی اولا د کا بیان

2876 - أَخْبَرْنَا مُحَمَّد بْن يَزِيْدَ وَالْقَوَارِيْرِيُّ عَنْ مُعاذِ بنِ هَشَّامٍ عَنْ آبِيْ عَنْ عَامِرِ ٱلاَحْوَالِ عَنْ أَبِي الصِّدِيْقِ النَّاجِيِّ

> عَنُ اَبِيُ السَّعِيْدِ النُّحُدُرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ عِلْمَا قَالَ انَّ الْـهُـوُ مِنَ اذَا شُتَهَى الُو لَدَ في الُجَنَّة كَانَ حَمُلُهُ وَوَضُعُهُ وَسِنُّهُ فِي سَاعَة كَمَا اشتهي.

سیدنا ابوسعید خدری والنی کہتے ہیں نمی النظامی اللہ نے فرمایا: ''مومن جنت میں جب اولاد کی خواہش کرے گا۔ تو اس کی خواہش کے مطابق تھوڑی دہر میں حاملہ ہونا' جننا اور بردھناسب کیچھ ہوجائے گا۔''

[110].... بَابِ فِي صُفُوفِ أَهُلِ الْجَنَّةِ جنتیوں کی صفوں کا بیان

2877 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاءِ قَالَ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ هِشَام عَنْ سُفْيَانَ.

عَنُ عَلُقَمَةَ بُن مَرُثَدٍ عَنُ سُلَيْمَانَ بُن بُسرَيُدَة قَسالَ أُرَاهُ عَنُ أَبِيهِ قَسالَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَى : ((أَهُـلُ الْجَنَّةِ عِشْرُونَ وَمِائَةُ صَفِّ ثَـمَانُونَ مِنْهَا ہوں گی اور جالیس (۴۰) باقی لوگ ہوں گے۔'' أُمَّتِي وَأَرُبَعُونَ سَائِرُ النَّاسِ)). •

علقمہ بن مرشد سے روایت ہے کہتے ہیں:سیدنا سلیمان میرا خیال ہے، اینے والد سے نقل کرتے ہیں انہوں نے کہا (۱۲۰) صفیں ہوں گی ان ہے اسی (۸۰) میری امت کی

فواند: معلوم بواكدوتهائي ابل جنت امت محديد كافراد بول ك-

[111] بَابِ فِي أَنْهَارِ الْجَنَّةِ جنت كَي نهرول كابيان

2878_ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ قَالَ أَخْبَرَنَا الْجُرَيْرِيُّ

سیدنا کیم بن معاوید ظاهرات والدے روایت کرتے بین: رسول الله طفی ایم نے فرمایا: ''جنت میں ایک دودھ کا سمندرے ایک شہد کا اور ایک شراب کا سمندرے۔ پھراس

عَنْ حَكِيمٍ بُنِ مُعَاوِيَةَ عَنُ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ بَحْرَ اللَّبَن وَبَحْرَ الْعَسَلِ وَبَحُرَ

❶ صحيح: أخرجه الترمذي، كتاب صفة الجنة،باب ماجاء في وصف أهل الجنة(2546)وابن ماجه، كتاب الزهد،باب صفة أمة محمد صلعم(4389)

الْخَمُرِ ثُمَّ تَشَقَّقُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ)). • عادرنهري نَكَاق بين - " الْخَمُرِ ثُمَّ تَشَقَّقُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ)). •

[112_].... بَاب فِی الْکُوْثَرِ حو*ض کوژ کا بی*ان

2879 ـ أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنِ أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ عَنْ مُحَارِبِ بْنِ دِثَارٍ قَالَ.........

سیّدنا عبدالله بن عمر فی این کتے ہیں جب یہ آیت نازل ہوئی: ''ہم نے آپ کو حوض کور عطا کیا۔' (کور:۱) تو رسول الله ملفظ کیا۔' کور جنت میں ایک نہر ہے جس کے دونوں کنارے سونے کے ہیں۔ وہ موتی اور یا توت پر بہتی ہے اس کی مٹی کستوری ہے۔ زیادہ خوشبو دار ہے اس کا ذاکھ شہد سے زیادہ میٹھا ہے اس کا پانی برف سے زیادہ سفید ہے۔'

[113].....بَاب فِي أَشُجَارِ الْجَنَّةِ

حَدَّثَنَا عَبُدُ اللَّهِ بُنُ عُمَرَ قَالَ لَمَّا

نَزَلَتُ: ﴿ إِنَّا أَعُطَيْنَاكَ الْكُوثُورَ ﴾

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : ((هُوَ نَهُرٌ فِي

الُجَنَّةِ حَاقَّتَاهُ مِنُ ذَهَبٍ يَجُرِى عَلَى

الـدُّرِ وَالْيَاقُوتِ تُوْبَتُهُ أَطْيَبُ مِنُ دِيح

الُمِسُلِثِ وَطَعْمُهُ أَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ

وَمَازُهُ أَشَدُّ بَيَاضًا مِنَ النَّلُجِ)) . ٥

2880 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرٍ و عَنْ أَبِيْ سَلَمَةَ

عَنُ أَبِى هُـرَيُـرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ سَيْرَا ابو: اللّهِ عَنُ أَبِى هُـرَانَ فِى الْجَنَّةِ شَجَرَةً ''جنت '' يَسِيُرُ الرَّاكِبُ فِى ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ لَا برس بَحَى يَقْطَعُهَا وَاقْرَنُوا إِنْ شِئْتُمُ: ﴿ وَظِلِّ آيت پُرُ * مَمُدُودٍ ﴾ [الواقعه: ٣٠]. ۞

سیدنا ابو ہریرة زخائفہ کہتے ہیں رسول الله طفی آیا نے فرمایا:
"جنت میں ایک درخت ہے جس کے سامیہ میں سوار سو
برس بھی چلے تو وہ ختم نہ ہو۔" اوراگر دلیل چاہئے ہوتو یہ
آیت بڑھو:"اور لیے لیے سائے۔" (واقعہ: ۳۰)

جنت کے درختوں کا بیان

2881- أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي الضَّحَّاكِ قَالَ سَمِعْتُ

صحيح: أخرجه الترمذي، كتاب صفة الجنة، باب ماجاء في صفة انهار الجنة (2571)

② صحيح بشواهد: أخرجه الترمذي، كتاب التفسير، باب من سورة الكوثر(3361) وابن ماجه، كتاب الزهد، باب صفة الجنة (4334)

❸ متفق عليه : أخرجه البخاري، كتاب بدد الخلق باب في صفة الجنة وأنه مخلوقة(3252) ومسلم، كتاب الجنة، باب إن في الجنة شجرة يسير الراكب في ظلها مئة عام لا يقطعها(7067)

الكَلْمُ الْكَلَّمُ مِنْ الْكَلَّمْ الْكَلَّمْ عَيْنَ الْكَلَمْ عَيْنَ الْكَلَّمْ عَيْنَ الْكَلَّمْ عَيْنَ الْكَلَّمْ عَيْنَ الرقاق الله عَنْ الله

سیدنا ابو ہررہ ہو ہوں کہتے ہیں نبی طفی کیا نے فرمایا: ' جنت میں ایک درخت ہے جس کے سابیہ میں سوار ایک برس بھی طلح تو وہ ختم نہ ہووہ دائی درخت ہے۔''

أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْبَجَنِّ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْبَجَنَّةِ شَجَرَةً يُسِيرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّهَا مِائَةً عَامَ لَا يَقُطَعُهَا هِيَ شَجَرَةُ الْخُلُدِ)). • •

[114].... بَابِ فِي الْعَجُوَةِ

عجوة كابيان

2882 - أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا عَبَّادٌ هُوَ ابْنُ مَنْصُورٍ قَالَ سَمِعْتُ شَهْرَ بْنَ حَوْشَبِ نَقُهُ لُ سَمِعْتُ سَهِرَ بْنَ حَوْشَبِ نَقُهُ لُ سَمِعْتُ

سیّدنا ابو ہرریرۃ زائفۂ کہتے ہیں رسول الله ملطی آلیے نے فرمایا: ''عجوۃ جنت کی محبور ہے اوروہ زہر سے شفاء دیتی ہے۔''

أَبَا هُرَيُرَةَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((النَّعَجُوةُ مِنَ النَّجَنَّةِ وَهِىَ شِفَاءٌ مِنَ السِّمِّ))*

فواند: عجوة يه جازى بهترين مجور ہاور حديث كے مطابق يه زهر كا بهترين ترياق ہاى طرح روزانه سات عدد عجوة كمجوروں كا كھانا يہ جادوك دفيع كے ليے بھى موثر ہے۔

[115].... بَابِ فِي سُوقِ الْجَنَّةِ

جنت کے بازار کا بیان

2883- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ

سیّدنا الس والیّن کہتے ہیں نبی مظیمیّن نے فرمایا: ''جنت میں ایک بازار ہے لوگوں نے کہا: وہ کیسا ہے؟ آپ نے فرمایا: ''اس میں کستوری کے ٹیلے ہیں۔ لوگ وہاں جا کر جمع موں گے اللہ تعالی ان پر ہوا بھیج گا جس سے وہ اپنے گھر والے ان گھروں میں داخل ہو جا ئیں گے۔ ان کے گھر والے ان سے کہیں گے: ہمارے بعد تمہاراحسن بڑھ گیا ہے اور وہ اینے گھر دالوں سے بول کہیں گے۔

عَنُ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِ النَّبِي اللَّهِ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْبَعِي النَّبِي اللَّهُ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْبَعَنَّةِ لَسُسوقًا)). قَالُوا وَمَا هِي قَالَ: ((كُثُبَانٌ مِنُ مِسُلْثٍ يَخُرُجُونَ إِلَيْهَا فَيَبُعَثُ اللَّهُ عَلَيْهِمُ فَيَجُتَ مِعُونَ فِيهَا فَيَبُعَثُ اللَّهُ عَلَيْهِمُ رِيحًا فَتُدُجِلُهُم بُيُوتَهُمُ فَيَقُولُ لَهُمُ أَهُمُ لَقَدُ ازُدَدُتُم بَعُدَنَا حُسُنًا وَيَقُولُونَ لِاَهُمُ مِثُلَ ذَلِكَ)). ٥ وَيَقُولُونَ لِأَهْلِيهِمُ مِثُلَ ذَلِكَ)). ٥

[🛈] صحیح: سابقہ کررے۔

[🛭] صحيح: أخرجه الترمذي، كتاب الطب،باب ماجاء في الكماة والعجوة (2066) واحمد511/5

[◙]صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الجنة و نعيمها، باب في سوق الجنة(7075)

الكَالِيْفِي اللهِ قَاقِ اللهِ قَاقِ اللهِ اللهِ قَاقِ اللهِ قَاقِ اللهِ قَاقِ اللهِ قَاقِ اللهِ قَاقِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ قَاقِ اللهِ المِلْمُلِي المِلْمُلِي اللهِ اللهِ اللهِ

2884 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الْجَبَّارِ عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ عَنْ ثَابِتِ

سیّدنا انس نبی منت یہ سے پہلی حدیث کی طرح نقل کرتے

عَنُ أَنْسٍ عَنِ النَّبِي عِلَيُّكُ بِنَحُومٍ. ٥

ہیں۔

[116] بَابِ حُفَّتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ جَنت مشقتول سے گھری ہوئی ہے

2885 ـ أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ ثَابِتِ

سیّدنا انس زخائفۂ کہتے ہیں رسول الله طفی عَدِیمَ نے فرمایا:
''جنت نفسانی مشقات سے گھری ہوئی ہے اور دوزخ نفسانی خواہشات سے گھری ہوئی ہے''

عَنُ أَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: (رحُقَّتُ النَّارُ (حُقَّتُ النَّارُ إِللهِ ﷺ النَّارُ إِللهَ النَّارُ إِللهَ النَّارُ إِللهَ النَّارُ إِللهَ النَّارُ إِللهَ النَّارُ إِللهَ النَّارُ النَّارُ النَّارُ النَّارُ اللهِ اللهِ النَّارُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ ال

فواند: حصول جنت کے لیے آسائٹوں کو خیر باد کہنا مشقتوں کے دریے ہونا لازم ہے کیونکہ جان کو مصیبت میں ڈال کر ہی کچھ حاصل ہوتا ہے جب کہ اس کے برنکس نفس کی خواہشوں کو پورا کرنے اور لطف ولذت کی تگ و دویہ آدمی کو جہنم کا ایندھن بنانے کا باعث ہے۔

[117] بَابُ فِي دُخُولِ الْفُقَرَاءِ الْجَنَّةَ قَبْلَ الْأَغُنِيَاءِ غرباء كااميرول سے پہلے جنت ميں داخل ہونے كابيان

2886 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِحٍ قَالَ حَدَّثِنِي مُعَاوِيَةُ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمٰنِ بْنَ جُبَيْرٍ حَدَّثَهُ عَنْ

أَبِيهِ جُبَيْرِ بْنِ نُفَيْرٍ

عَنْ عَبُدِ اللهِ بُنِ عَمُوهِ قَالَ بَيْنَا أَنَا قَاعِدٌ فِي الْمُسَجِدِ وَحَلُقَةٌ مِنْ فُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الْمُسَجِدِ وَحَلُقَةٌ مِنْ فُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ فُعُودٌ إِذُ دَخَلَ النَّبِيُ عَلَى فَقَعَدَ إِلَيْهِمُ فَعُسَالَ النَّبِيُ عَلَى فَقَالَ النَّبِي عَلَى فَقَالَ النَّبِي عَلَى الْمُهَاجِرِينَ بِمَا لَهُمُهَاجِرِينَ بِمَا لَهُمُهَاجِرِينَ بِمَا

سیّدنا عبدالله بن عمروز النه کمت بین ایک دفعه مین مجد مین بیشا ہوا تھا اور غریب مہاجرین کا ایک حلقہ بھی تھا۔ نبی طُشِیَا ہِیَا تشریف لائے اور ان کے ساتھ بیٹھ گئے۔ میں بھی اٹھ کر ان کے پاس چلا گیا' نبی طِشِیَا ہِے ان سے فرمایا: ' غریب مہاجرین کوخوشخبری ہو۔ جوان کے چہروں

[🛭] صحیح: سابقہ ہی مکرر ہے۔

 [◘] صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الجنة و نعيمها، باب صفة الجنة (7061) والترمذي، كتاب صفة الجنة، باب ماجاء حفت الجنة بالمكاره وحقت النار بالشهوات (2559)

532 كتاب الرقاق كتاب الرقاق الكالم المنظمة الكالم المنظمة المنطقة
یر خوشی لائے ؟ کیونکہ وہ امیروں سے حالیس برس سلے جنت میں داخل ہوں گے۔'' عبداللہ بن عمر وزیافید کہتے ہں: میں نے ویکھاان کے رنگ حمکنے لگے۔حتی کہ مجھے . خواہش ہو ئی کہ میں بھی اس کے ساتھ ہوتا۔

يَسُرُّ وُجُوهَهُمْ فَإِنَّهُمْ يَدُخُلُونَ الْجَنَّةَ قَبُلَ الْأَغُنِيَاءِ بِأَرْبَعِينَ عَامًا)). قَالَ فَلَقَدُ رَأَيْتُ أَلُوَ انْهُمُ أَسُفَرَتُ قَالَ عَبُدُ اللُّهِ بُنُ عَمُرو حَتَّى تَمَنَّيُتُ أَنُ أَكُونَ

فواند: فقراء چوتکه محرومیوں کا شکاررہ ہو نگے ان کے پاس حساب دینے کے لیے کچھ ہوگا ہی نہیں چنانچہوہ اغنیاء سے قبل فارغ ہو کر جنتوں کے وارث بن جائمینگے اس لیے بیدعا کرنی جا ہے "السلھم احييني مسكينا و امتنى مسكينا واحشرني في ذمرتي المساكين "ا الله مجهمكين بي زنده رکھنامسکین ہی مارنا اور (قیامت کو)مسکینوں کے زمرے میں ہی اکھٹا کرنا۔

[118].... بَابِ فِي نَفَسٍ جَهَنَّمَ دوزخ كاسانس لينے كأبيان

2887ـ أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ ٠

عَنْ أَبِى هُرَيْرَةَ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ :((اشْتَكَتُ النَّارُ إِلَى رَبِّهَا فَ قَالَتُ: يَا رَبِّ أَكُلَ بَعُضِى بَعُضًا فَأَذِنَ لَهَا بِنَفَسَيُنِ نَفَسٍ فِي الشِّتَاءِ وَنَفَسٍ فِي الصَّيُفِ فَهُوَ أَشَدُّ مَا تَجِدُونَ مِنَ الْحَرّ وَأَشَدُّ مَا تَجِدُونَ مِنَ الزَّمُهَرِيرِ)). ٥

سیّدنا ابو ہربرہ خاتینہ کہتے ہیں نبی مِشْتِیَوَیْن نے فر مایا:'' دوز خ نے اینے رب سے شکایت کی کہ: اے میرے رتِ!میرے ایک حصہ نے دوسرے حصے کو کھا لیا تو اللہ نے اسے دوسانسوں کی اجازت دی ایک سانس گرمی میں اور ایک سردی میں ،اسی وجہ سے تہمیں سخت گرمی اور سخت سردی کی تکلیف پہنچتی ہے۔''

2888- أَخْبَرَنَا حَجَّاجٌ حَلَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةً عَنْ عَاصِمٍ بْنِ بَهْدَلَةَ عَنْ أَبِي صَالِح عَنُ أَبِي هُرَيُرَةَ عَنِ النَّبِيِّ عَلَيَّ بِنَحُوهِ . ٥

سندنا ابوہر سرہ فرانین نی مشکر کے سے سابق حدیث کی طرح نقل کرتے ہیں۔

📭 صبحیح: این مین عبدالله بن صالح ضعیف ہے کیکن اس کی متابعت عبدالله بن وہب کے ساتھ موجود ہے۔ أحر جب ابيو نعيم في

5الحلية 137/5 وابن حباك في صحيحه (277) ٢ صحيح: أخرجه مسلم، كتاب المساجد، باب استحباب الإبراد بالظهر في شدة الحر(1400)

🗗 اسناده حسن: جب كرمالقه حديث بي مررب

www.sirat-e-mustaqeem.com ביוף

[119].... بَابِ فِي قَوُلِ النَّبِيِّ إِنَّا نَارُكُمُ هَذِهِ جُزُءٌ مِنُ كَذَا جُزُئًا

2889 أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن أَخْبَرَنَا الْهَجَرِيُّ عَنْ أَبِيْ عِيَاضِ

عَنْ أَسِى هُورَيُورَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ سيّنا ابو مِرية زَالتَّهُ كُتّ مِين رسول الله طَيْنَا فَي فرمايا:

الله على : ((إنَّ نَارَكُمُ هَذِهِ جُزُءٌ مِنُ " "تهمارى بيآ ك دوزخ كى آك كسر حصول كاليك

سَبُعِينَ جُزْنًا مِنْ نَارِ جَهَنَّمَ)). • مسم

[120].... بَابِ فِي أَهُوَن أَهُلِ النَّارِ عَذَابًا

ملکے عذاب والے دوزخی کا بیان

2890 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو عَاصِم عَنِ ابْنِ عَجْلَانَ عَنْ أَبِيْهِ

عَنْ أَبِى هُولَوْهَ عَنِ النَّبِي عَلَيْ قَالَ: سيّدنا ابو بريرة رَافَنْ كَبَتْ بِين نِي طَفَيَ النَّبِي فَال ((أَهُونُ النَّاسِ عَذَابًا مَنْ لَّهُ نَعُلانِ سے لِهَا عذاب الشّخص كا موكا جوآ كى دو جوتيال سِبْ

يَغُلِي مِنْهُمَا دِمَاغُهُ)). ٥٠ بوئ بوگاجن سے اس كا دماغ كھولتا بوگا-''

فواند: اس مرادآپ طفاقین کے چپا ابوطالب ہیں جن کوآپ طفاقین کی حمایت ونفرت کی بناء پر اس ملکے عذاب سے دو جار کیا جائے گالیکن وہ ایسامحسوں کرے گا کہ اسے سب سے سخت عذاب دیا جار ہاہے۔

[121] بَابِ قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿ هَلُ مِنْ مَزِيدٍ ﴾ الله تعالى كَ مِنْ مَزِيدٍ ﴾ الله تعالى كرمان 'كابيان

2891 - أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ عَمَّادِ بْنِ أَبِي عَمَّادٍ

عَنُ أَبِى هُولَيُوَدَةً أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَنَى أَبِي هُولَ اللَّهِ عَنَى أَبِي هُولَ اللَّهُ عَنَى أَبِي هُولَ اللَّهُ عَنَى أَبِي هُولَ اللَّهُ عَنَى أَبِي اللَّهُ عَنَى أَبِي اللَّهُ عَنَى اللَّهُ اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَنِي اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنِي اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَنِي اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَنَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَنْ الللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَنْ اللللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلَى اللللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَنْ اللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى الللللَّهُ عَلَى الللللَّهُ عَلَى الللللَّهُ عَلَى الللللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى الللللَّهُ عَلَى الللللَّهُ عَلَى الللللَّهُ عَلَى الللللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللللِّهُ عَلَى الللللَّهُ عَلَيْ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللللَّهُ عَلَى الللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَمُ عَلَى الللللَّهُ عَلَمُ عَلَمُ عَلَمُ عَلَى الللللَّهُ عَلَى الللللَّهُ عَلَمُ عَلَى

[•] صحيح: أخرجه مسلم، كتاب الجنة وتعيمها، باب في شدة حرنار جهنم وبعد قصرها (7094)

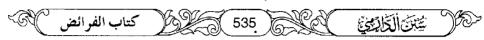
²حسن: أخرجه احمد 432/2 وابن ابي شيبه 157/13 (15979)

كتاب الرقاق كتاب الرقاق الكَالِيَّانُ الكَالِيَّانِيُّ الْكَالِيَّانِيُّ الْكَالِيَّانِيُّ

هَـلُ مِنْ مَزيدٍ هَلُ مِنْ مَزيدٍ ثَـلاقًا حَتَّى ﴿ يَهِم بَهِي هِ كَيَا اور يَهِم بَهِي هِ تَين بار كَم كَا حَتَّى اس کا رب تعالی اس کے پاس آئے گا اپنا قدم اس پر ر کھے گا تو وہ سمٹنے لگے گی اور کھے گی: 'دہس' بس' بس۔''

يَأْتِيَهَا رَبُّهَا فَيَضَعَ قَدَمَهُ عَلَيُهَا فَتُزُوَى وَ تَقُولُ قَطُ قَطُ قَطُى. ٥





۲۱ ومن کتاب الفرائض علم میراث کے بیان میں

'' فرائض'' بيفرض كى جمع ہے اس سے مراد الله كا بندول پر مقرر كيا ہوا قانون ہے (المنجد: 40) شرعی طور یر بیا پیے اموال یا حقوق ہیں جنہیں میت کے چھوڑ جانے کی وجہ سے شرعی وارث ان کامستحق قراریا تا ہے۔ فرائض کومیراث ہے بھی تعبیر کیا جاتا ہے جو کہ فی الحقیقت ایک ہی ہیں۔

> [1].... بَابِ فِي تَعُلِيمِ الْفَرَائِضِ مسائل وراثت سكصني كابيان

2892 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا عَاصِمٌ عَنْ مُوَرِّق الْعِجْلِيِّ قَالَ

قَالَ عُهَدُ بُنُ الْحَطَّابِ تَعَلَّمُوا سيِّدناعمر بن خطاب رَفْيُعُ نَه فرمايا: علم ميراث ، صحت اغلاط الْفَوَالِيضَ وَاللَّهُ مُن وَالسُّنَنَ كَمَا الرسنتين السطرح سيكهوجس طرح تم قرآن سيكيت مو"

تَعَلَّمُونَ الْقُوْآنَ . •

فوائد: (۱) علم الفرائض ایک اہم علم بے لیکن جس قدر بیاہم ہے اس قدر اسے قابور کھنا مشکل ہے البذا بہت كم ابل علم اليے مليل كے جوعلوم دينيه كے ساتھ ساتھ فرائض ،ميراث كفن سے بہرہ ورہول يهى وجہ ہے کہ عمر وہانین صحابہ کرام وہ التیام اس جانب خصوصاً راغب کررہے ہیں (۲) اس طرح قرآن وحدیث کو سمجھنے کے لیے لغت کوسکھنا لازم ہے کیونکہ جب تک معلوم نہ ہو بیافظ اس دور میں کس معنی ومفہوم میں استعال ہوتا تھا تپ تک قرآن و حدیث کامفہوم سمجھنا دشوار ہے (۳) سنت کی تعلیم کا رجحان دورصحابہ میں بھی بدرجہ اتم موجود تھا اور ان کے بعد اسی طرح میسلسل ذوق وشوق سے سیمن جاتی رہی ہے چونکہ صحابہ ڈی اُلٹیم اس کی

[◘] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 459/159/5(9976)والبيهقي في الفرائض،باب الحث على تعليم الفرائض 6/209

الكَالِيَّانَ الْكَالِيِّينَ الْكَالِيِينَ الْكَالِيِّينَ الْكَالِيِّينَ الْكَالِيِّينَ الْكَالِيِّينَ الْكَالِيِّينَ الْكَالِيِّينَ الْكَالِيِّينَ الْكَالِيِّينَ الْكِيلِيِّ فَي الْمُعَلِّينِ الْمُوالِيِّنِ الْمُوالِيِّنِ الْمُوالِيِّنِ الْمُوالِيِّنِي الْمُولِيِّينِ الْمُولِيِّ الْمُولِيِّ الْمُولِيِّ الْمُولِي الْمُولِيِّ الْمُولِيِّ الْمُولِيِّ الْمُولِيِ

اہمیت ہے آگاہ تھے اور جانتے تھے کہ سنت کے بغیر قرآن کاسمجھنا دشوار و ناممکن ہے لہٰذا انہوں نے اس کے سیجنے وسکھانے میں بھریورتو انائیاں صرف کیں (واللہ المستعان)

2893 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الْأَعْمَشِ.....

عَنُ إِبْسُواهِيهُ قَالَ قَالَ: عُمَرُ تَعَلَّمُوا ﴿ ابِراتِيمِ كَهِتِهِ بِيلِ سِيِّدِنَاعُمرِ ذِلْتُنْهُ نِهِ قرمايا: 'معلم وراثت سيكهوأ الْفَرَائِضَ فَإِنَّهَا مِنُ دِينِكُمُ . •

2894 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى

حَدَّثَنَا يُوسُفُ الْمَاجِشُونُ قَالَ قَالَ ابْنُ شِهَاب لَوُ هَلَكَ عُثْمَانُ وَزَيْدٌ فِي بَعُض الزَّمَان لَهَلَكَ عِلْمُ الْفَرَائِض لَقَدُ أَتَى عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ وَمَا يَعُلَمُهَا غَيْرُهُمَا . 9

یوسف ماجشون کہتے ہیں کہ ابن شہاب نے کہا:''اگر ایک زمانه میں عثمان اور زید فوت ہو جاتے تو وراثت کاعلم ضالع ہو جاتا۔لوگوں پر ایک ایبا زمانہ آیاہے کہ ان دونوں کے علاوه كوئى بھى ايك علم المير اث نه جانتا تھا۔''

کیونکہ وہتمہارے دین میں شامل ہے۔''

فوائد: (۱) علم الفرائض چونکه کثرت اہتمام کا متقاضی ہے اس کی محافظت پر دوام کی ضرورت ہے یہی وجہ ہے کہ اس علم کے ماہر ہردور میں کم رہے ہیں۔ (۳) فرائض کے مسلے میں ان دوبزرگ صحابہ فالٹھا کی بات کوتر جنح حاصل ہوگی۔

2895 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا الْمَسْعُودِيُّ

عَن الْقَاسِم قَالَ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ تَعَلَّمُوا الُقُرُآنَ وَاللَّفَرَائِضَ فَإِنَّهُ يُوشِكُ أَنُ يَفُتَقِرَ الرَّجُلُ إِلَى عِلْم كَانَ يَعُلَمُهُ أَوْ يَبُقِي فِي قَوْمِ لَا يَعُلَمُونَ . ٥

قاسم كہتے ہيں عبدالله نے كہا: " قرآن اورعلم وراثت سيكھو کیونکہ قریب ہے آ دمی ایسے علم کامختاج ہو گا جسے وہ جانتا تھا۔ یا وہ الیمی قوم میں رہ جائے گا جو جاہل ہوں گے۔''

2896 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمِ حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ أَبِي مُسْلِمِ عَنْ أَبِي الْخَلِيلِ قَالَ

[◘] منقطع ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 234/11(11081)والبيه قي في الفرائض،باب المحث على تعليم الفرائض6/209

مقطوعًا صحيح: أخرجه البيهقي في الفرائض، باب ترجيح قول زيد بن ثابت على قول غيره من الصحابه الفي علم الفرائض 210/6

³ صحيح بشواهد: أخرجه ابن منصور (3) ومجمع الزوائد (7232)

حَكْرُ لِيُنْ الْكَالِيْدِي 537 ﴿ 537 ﴿ كُتَابِ الفُرائض ٤٠٠٠ ﴿

ابوموی فرماتے ہیں کہ: ''جس نے قرآن پڑھا اور مسائل میراث نہ پڑھے اس کی مثال ایسی چاور کی ہے جس کا چہرہ نہو''

2897 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُوْ شِهَابٍ عَنِ الْأَعْمَشِ

عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ قُلُتُ لِعَلْقَمَةَ مَا أَدُرِى مَا أَسُالُكَ عَنُسهُ قَالَ أَمِتُ جِيرَانَكَ. ٥

ابراہیم سے مروی ہے کہ میں نے علقمہ سے کہا:''میری سجھ میں نہیں آتا میں جھھ سے کس چیز کے متعلق پوچھوں؟''

یں بیں 4 ما یں بھاسے ک پیر سے ک پو انہوں نے کہا:''اپنے پڑوسیوں کو مار ڈالو۔''

فوائد: "أمِتْ جِير انَكَ " ہے مرادیہ ہے کہ اگرکوئی سوال ذہن میں نہیں آرہا ہے تو پڑوسیوں کے افراد بارے تو تہمیں علم ہی ہوگا لہٰذایہ بوچھ سکتے ہوکہ ایک آدمی فوت ہوجا تا ہے اس کے چار بچے ہیں ایک بیوی ، والدین حیات ہیں اس کی میراث کس طرح تقسیم ہوگی لیعنی پڑوی کوفوت تصور کر کے اس کے لیے میراث کی تقسیم بارے بوچھ لو۔ واللہ اعلم۔

2898 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ طَلْحَةَ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ الْوَلِيْدِ الْهَمْدَانِيّ

سیّدنا عبدالله بن مسعود طاقها سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ''وراثت طلاق اور جج کے مسائل سیکھو کیونکہ وہ تنہارے وین میں شامل ہیں۔''

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ مَسْعُودٍ قَالَ تَعَلَّمُوا اللَّهِ بُنِ مَسْعُودٍ قَالَ تَعَلَّمُوا اللَّهَ مِنُ اللَّهَ مِنْ

2899 حَدَّثَنَا شُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ كَثِيرِ

حسن سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ''لوگ قرآن، وراثت اور جج کے مسائل سکھنے کی ترغیب دیتے تھے۔''

عَنِ الْحَسَنِ قَالَ كَانُوُا يُرَغِّبُوُنَ فِي تَعْلِيُمِ الْقُرُآن وَالْفَرَائِضِ وَالْمَنَاسِلْثِ . ۞

فوائد: مناسک جے ہے بھی چونکہ بھی بھار یازندگی میں ایک بارواسطہ پڑتا ہے اس لیے ان کے سیسے کی طرف وھیان نہیں ویا جاتا یاسی کے کربھلا دیا جاتا ہے۔ اسی لیے مناسک کا خصوصی تذکرہ آیا ہے۔ 2900۔ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوْسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي إِسْلَحْقَ عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ

€ ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 234/11(11082)

دِينِكُمُ . 😉

[◘]صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 2/336(11090)والبيهقي في الفرائض،باب الحث على تعليم الفرائض 209/6

[◙] منقطع ضعيف: أحرجه البيهقي،في الفرائض،باب الحث على تعليم الفرائض6/209

[@]صحيح:

حَصْلُ الْكَالِيْمِينَ الْكَالِيْمِينَ الْكَالِيْمِينَ الْكَالِيْمِينَ الْكَالِيْمِينَ الْكَالِيْمِينَ الْمُوائِضُ كَابِ الفرائض

عبداللہ سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ' جس نے قرآن یڑھا وہ میراث کاعلم بھی سکھے کیونکہ اگر اسے کوئی دیہاتی ملے اور کیے:''اے مہاجر! کیا تونے قرآن پڑھاہے؟ اگر وہ کیے جی باں تو پھروہ اس سے کیے کیا تو علم میراث کاعلم رکھتا ہے تو وہ کیے نہیں تو وہ دیباتی اس کو کیے گا: ''اے مهاجر! تحقه مجھ برکیا فضیلت ہے؟''

2901 حَدَّثَنَا عَبُدُ اللهِ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ عَنِ الْأَعْمَشِ-----

ملم کہتے ہیں ہم نے سیّدنا مسروق وَاللّٰهُ سے يوجها: سیّده عائشه خالفيُّهٔ الحجيمي طرح مسائل ميراث جانتي تفيس؟ انهول نے کہا: '' مجھے اس ذات کی قتم جس کے علاوہ کوئی معبود نہیں میں نے محمد مشکور کے بڑے بڑے سے صحابہ کو دیکھا کہ وہ وراثت کے متعلق سیّدہ عائشہ ڈلائٹۂ اسے یو چھتے تھے''

عَنُ مُسُلِم قَالَ سَأَلُنَا مَسُرُوقًا كَانَتُ عَائِشَةُ تُحُسِنُ الْفَرَائِضَ قَالَ وَالَّذِي لَا إِلَىهَ غَيْرُهُ لَقَدُ رَأَيْتُ الْأَكَابِرَ مِنُ أُصْحَابِ مُحَمَّدٍ يَسُأَلُونَهَا عَن الْفَرَ ائِضِ . 3

عَنُ عَبُد اللُّهِ قَسالَ مَنُ قَواً الْقُرُآنَ

فَلْيَتَعَلَّم الْفَوَائِضَ فَإِنْ لَقِيَهُ أَعُرَابِيٌّ قَالَ

يَا مُهَاجِرُ أَتَـقُراأُ الْقُرُآنَ فَإِنَّ قَالَ نَعَمُ

قَالَ تَفُرضُ فَإِنَّ قَالَ نَعَمُ فَهُوَ زِيَادَةٌ

وَخَيْرٌ وَإِنْ قَالَ لَا قَالَ فَهَا فَصُلُكَ

عَلَيَّ يَا مُهَاجِوُ ؟ •

فواند: (۱) عائشه وناتو فرائض كى مابرتهين بيشتر صحابه وتأثيبه آب سے استفاده كيا كرتے تھے۔ (۲) هیمیه شو ہر دیدہ عورتوں سے شادی کے بعد کنواری اورنوعمرام المونین عائشہ رفایٹھا سے شادی میں ایک بیکھی حکمت تھی کہ بہت ہے مسائل جوانسان کو گھریلو زندگی میں پیش آتے ہیں اوربسااوقات ان کے یوجھنے کی نوبت نہیں آتی توا یسے مسائل کو گھریلوعورت ہو جواجھی طرح یا در کھے اور لوگوں کوآگاہ کر سکے توعائشہ وفائٹھانے بيرذ مه داري بخو بي نبھائي (رضي الله عنھا ارضاھا)

[2] بَابِ مَنُ ادَّعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ اپنے باپ کےعلاوہ کسی اور کی طرف نسبت کرنے والے خص کا بیان

2902 ـ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرِ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ عَاصِمٍ عَنْ أَبِيْ عُثْمَانَ

عَنْ سَعُدِ بُنِ أَبِي وَقَاصِ وَعَنْ أَبِي بَكُوهَ تَ سَيْدنا سعد بن ابي وقاص اور ابوبكره وَلِيَّة جن كِمتعلق شعبه قَالَ شُعْبَةُ هَذَا أُوَّلُ مَنْ رَمْى بِسَهْمِ فَي كَهَا كدوه سب سے يہلے انہوں نے اللہ كراستريس

[€] منقطع ضعيف: أحرجه ابن ابي شيبه 233/11 (11080) والطبراني في الكبير 161/9-162 (8742)

[◘]صحيح : أخرجه الفسوي في (المعرفة والتاريخ) 489/1وابن ابي شيبه 234/11(11084)

حَمْلُ لِيَّنِينَ الْكَالِيمِينَ ﴾ (539) الله الفرائض الله الفرائض

تیراندازی کی تھی۔ اور ابو بکرہ طائف سے قلعہ اتر کر رسول فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَهٰذَا تَدَلَّى مِنُ حِصُن الطَّائِفِ إلى رَسُولِ اللَّهِ عِيدٌ إِنَّهُ مَا

كهرسول الله طفي ولم الله عن فرمايا: "جو محض الي باب ك حَـدَّثُوا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِلَيَّ قَالَ: ((مَنُ علاوہ غیر کی طرف نبیت کرے حالانکہ وہ جانتا ہے کہ وہ ادَّعَى إِلَى غَيُر أَبِيُهِ وَهُوَ يَعْلَمُ أَنَّهُ غَيْرُ

اس کا باپنہیں۔اس پر جنت حرام ہے۔'' أَبِيهِ فَالْجَنَّةُ عَلَيْهِ حَرَامٌ)). •

فوائد: (۱) اسلام كسب سے بہلے رامى، تيرانداز ابوبكره رفائن تھ (۲) اين حقيقى باپ كو چھوڑ کرکسی غیر کی طرف نسبت کرنے والا کبیرہ گناہ کا مرتکب اورجہنمی ہے جب تک کہ اس گناہ سے توبہ نہ كرے اور بازند آجائے۔ اگر چەمنە بولا بيٹائى كيول نە مواس كے ولديت كے خانے ميں حقيقى باپ كانام ہى درج كياجائے گاجيماكة آپ طفي والے عليہ زيدكوزيد بن محمد (طفي والم) كہنے سے روك ديا كيا۔

2903 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُرَّةَ عَنْ أَبِي

سیّدنا ابوبکر صدیق والله استدنا ابوبکر صدیق والله استدنا ابوبکر صدیق والله استدنا عَنُ أَبِى بَكُرِ الصِّدِّيقِ قَالَ كُفُرٌ بِاللَّهِ "پیاللہ کی بہت بڑی ناشکری ہے کہ نا معلوم نسب کی طرف ادِّعَاءٌ إِلَى نَسَبِ لَا يُعُرَفُ وَكُفُرٌ بِاللَّهِ نبت کی جائے۔ اور اللہ کی بردی ناشکری ہے کہ سی نسب

تَبَرُّوُّ مِنُ نَسَبٍ وَإِنْ دَقَّ . ٥

کا انکارکیا جائے۔اگرچہ ملکا ساہی ہو۔'' 2904 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ زَكَرِيَّا أَبِيْ يَحْلِي قَالَ سَمِعْتُ

ابووائل بیان کرتے ہیں کہ سنیدنا ابن مسعود خالفۂ نے پہلی أَبًا وَاثِلِ يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ مَسْعُوُدٍ نَحُوًا

حدیث کی طرح نقل کیا۔

2905 حَدَّثَ نَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاءِ حَدَّثَنَا إِسْحَقُ بْنُ مَنْصُوْرِ السَّلُولِيُّ عَنْ جَعْفَرِ الْأَحْمَرِ عَنِ السَّرِيّ بْن إِسْمَعِيلَ

[◘]متفق عليه : البخاري، كتاب الفراقض، باب من ادعى الى غير ابيه (6766-6767) ومسلم، كتاب الإيمان، باب بياك حال ايمان من رغب عن ابيه وهو يعلم(63)

² صحيح على شرط مسلم : أخرجه ابن ابي شيبه 762/8(6160)

³ صحيح شرط بخاري : معجم الطبراني الكبير 17/162(719)

540 كتاب الفرائض 540 الكالم الخالفة الكالم ا

سیّدنا قیس بن ابو حازم فالیّ کتم بین: میں بیعت کرنے کے لئے نبی طفی این کے باس گیا۔ میں پہنچا تو آپ فوت ہو چکے تھے اور ابو بكر آپ كے خليفہ تھے۔ انہوں نے حمد و ثناء کی اور بہت زیادہ روئے اور انہوں نے کہا میں نے رسول الله من الله الله الله الله الله تعالى كى بڑی ناشکری ہے کہ کسی غیر کی طرف نسبت کی جائے اگرچہ ملکا ہی ہو۔ اور یہ کہ کسی نامعلوم نسب کا دعویٰ کیا جائے۔

عَنُ قَيُسِ بُن أَبِي حَازِم قَالَ أَتَيُتُ النَّبِيُّ عِنْ اللَّهُ إِلَّهُ اللَّهِ عَلَمْ فَجِئْتُ وَقَدُ قُبضَ وَأَبُو بَكُرِ قَائِمٌ فِي مَقَامِهِ فَأَطَابَ الثَّنَاءَ وَأَكْثَرَ الْبُكَاءَ فَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ عَلَىٰ يَقُولُ: ((كُفُرٌ بِاللَّهِ انْتِفَاءٌ مِّنُ نَسَبِ وَّإِنَّ دَقَّ وَادِّعَاءُ نَسَب لَا يُعْرَفُ)) . ٥

2905 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوْسُفَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيْدِ بْنُ بَهْرَامِ عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبِ

سیدنا ابن عباس فالله کہتے ہیں رسول الله طفی نے فرمایا: "جوآ دمی این باپ کے علاوہ اور کی طرف نسبت کرے یا غلامی سے آزاد ہوکرایے آزاد کرنے والے سے بھاگ جائے اور اس کے علاوہ کسی اور شخص کو مالک قرار دے تو قیامت تک اس پر اللهٔ فرشتوں اور سب لوگوں کی لعنت ہوتی ہے۔ نداس کے نفل قبول ہوتے ہیں اور ندفرض۔''

عَـن ابُن عَبَّساس قَسالَ قَسالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ عَلَيْ الرَّجُلِ ادَّعَى إلَى غَيُرِ وَالِدِهِ أَوُ تَوَلِّى غَيْرَ مَوَالِيْسِهِ الَّذِيْنَ اَعُتَاقُوهُ أَهُ فَانَّ عَلَيْهِ لَعُنَةَ اللَّهِ وَالْمَلَالِكَة وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ اِلْي يَوْمِ الْقِيَامَةِ لاَ يُقْبَلُ مِنْهُ صَرُفٌ وَلَا عَدُلٌ. ٥

فواند: غیرآباء کی طرف نسبت اور غلام کااین آزاد کرنے والے کوچھوڑ کرکسی دوسری طرف منسوب ہونا یہ دائمی لعنت اور فرض وفل کی عدم قبولیت کا باعث ہیں۔ حتی کہ بندہ تائب ہوجائے اورایی اصلاح کرلے ورندان گناہوں پراصرار کے ساتھ کوئی بھی نیکی جہنم سے چھٹکارے کا سبب نہیں بن سکتی۔

[3].... بَابِ فِي زَوْجٍ وَأَبَوَيُنِ وَامْرَأَةٍ وَأَبَوَيُن شو ہراور والدین اور بیوی اور والدین کا بیان

2907 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا شَرِيكٌ عَنِ الْأَعْمَشِ

عَنُ إِبُواهِيْمَ قَالَ قَالَ عَبُدُ اللَّهِ كَانَ الراهِيم كَهِ بين سيّدنا عبدالله والله والله والمنافذ في المراها عمر والله

عُمَرُ إِذَا سَلَكَ بِنَا طَرِيقًا وَجَدُنَاهُ جِبْمِينَ كَى داست يرجِلاتِ تَصْتُوجُم اسے آسان ياتے

[•] فعناً صحيح: ويكي احاديث الباب، خصوصا آكنده حديث نيز العلل للدار قطني 253/1

ع صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 727/8(6162)

541 كتاب الفرائض الكاتفين الكاتفي

تھے اور شوہر اور والدین کے متعلق انہوں نے کہا:''شوہر سَهُلًا وَإِنَّاهُ قَالَ فِي زَوْجٍ وَأَبَوَيُنِ کے لئے نصف ہے اور ماں کے لئے بقیہ مال کا تہائی حصہ لِلزَّوْجِ النِّصْفُ وَلِلْأُمَّ ثُلُثُ مَا بَقِيَ. •

فواند: (۱) عرض النيز كى جرأت مندانه فقابت كواسلام مين وه اجميت حاصل بوكى جوكرسى اور کے حصے میں نہیں آئی حتی کہ بعض مقامات پر اس العلیم ذات نے عمر کے فیصلوں کووجی کی صورت میں ڈھالا جس سے آپ کی سوچ منشاء الہی کے مطابق قرار یائی (الله اکبر) (۲) ہوی کے فوت ہونے پر خاوند کونصف حصد ملے گابشر طیکہ عورت کی اولا دنہ ہو قرآن میں ہے ﴿ وَلَكُمْ نِصُفْ مَا تَرَكَ أَزُوا جُكُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَد فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَد فَلَكُمْ الرُّبُعُ مِنَّا تَرَكُنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصينَ بها أَوُدَيْن ﴾ (النسا:11) اور تمہارے لیے آ دھا ہے جو تمہاری بیویاں چھوڑ جائیں اگر ان کا بچہ نہ ہو اگر ان کا بچہ ہوتو

تمہارے لیے چوتھا حصہ ہے اس سے جووہ چھوڑ جائیں ان کی کی گئی وصیت کے بعد یا قرض کے مال تہائی ھے کی وارث ہوگی جب میت کی اولا داور ایک سے زیادہ بہن بھائی نہ ہوں قرآن میں ہے: ﴿ فَسِلُ نُ لَّهُ مُ يَكُنْ لَّهُ وَلَنَّ وَّ وَرِثَهُ ابَوَاهُ فِلُامِّهُ الثُّلُث فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فِلْامِّهُ السُّنُسُ ﴾ (الساء:11) الراس (میت) کی ادلا دنہ ہواوراس کے والدین وارث بن رہے ہوں تواس کی مال کے لیے تہائی حصہ ہے اوراگر ، اس میت کے (زیادہ) بھائی ہوں تو اس کی مال کے لیے چھٹا حصہ ہے۔لیکن یادر ہے کہ مال کوکل مال کی

بجائے خاوند کا حصہ نکال لینے کے بعد بھنے والے مال سے تہائی حصہ دیا جائے گا نیز باتی ماندہ مال میں سے ثلث یہ دومقامات برمال کو دیا جاتا ہے۔(۱) جب میت کے ورثہ میں خادند اور والدین ہول (ب) جب میت بیوی اوروالدین کوچھوڑے۔ فافھم زاد کے الله فھما ان دونوں مسألوں کوغراوین یاعمر پتین کہاجاتا ہے کیونکہ ان مسلوں میں سب سے پہلے عمر خالفی نے فیصلہ کیا تھا۔ ندکورہ مسلے میں مال کو بقیہ مال میں سے

ثلث دینے کی وجہ رہے ہے کہ کل مال میں سے ثلث دینے سے مال کا حصہ باب سے بڑھ جاتا ہے جو کہ غیر مناسب ہے لہذا ماں کو بقیہ مال میں سے تہائی حصہ دیا گیا۔جمہور بھی ای کورجے دیتے ہیں اور یہی بات

2908_ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ الرِّشُكُ قَالَ سَأَلْتُ يَيدِرشَك كَتِ بِي مِن في سعيد بن مسيّب سے اس

المُعْلِينَ الْكَالِيَّانِيُّ الْكَالِيَّانِيُّ الْكَالِيِّانِيُّ الْكَالِيِّانِيُّ الْكَالِيِّانِيُّ الْكَالِيِّ

آدمی کے متعلق پوچھا جس نے اپنے والدین اور بیوی چھوڑ ہے انہوں نے کہا:" یزید بن ٹابت اسے چار حصول

سَعِيدَ بُنَ الْمُسَيَّبِ عَنُ رَجُلٍ تَرَكَ امْرَأْتَهُ وَأَبُويُهِ فَقَالَ قَسَّمَهَا زَيُدُ بُنُ ثَابِتِ مِنُ أَرْبَعَةٍ . •

میں تقسیم کرتے ۔''

فواند: میت کے درخ میں ایک بیوی اور والدین ہونے کی صورت میں 4 ہے مسلم بنے گا یہ مسلم بحق چونکہ غراوین میں سے ہے لہذا بیوی کو چوتھا حصہ اور مال کو بقیہ ثلث اور باقی ماندہ مال باب قریبی فرکر ہونے کی بنا پر بطور عصبہ لے لے گا۔ اس کی صورت یوں ہوگی:

| 4 | | | |
|---|------|--|--|
| 1 | بیوی | | |
| 1 | مال | | |
| 2 | باپ | | |

2909 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرِ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَيُّوْبَ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ أَبِي الْمُهَلِّبِ

أَنَّ عُشُمَسانَ بُسَ عَفَّانَ قَسالَ فِى امُرَأَةٍ وَأَبْوَيُسَ لِللْمَرُأَةِ الرُّبُعُ وَلِلْأُمْ ثُلُثُ مَا

سیّدنا عثمان بن عفان خِالتُوُ نے بیوی اور والدین کے متعلق کہا کہ: ''بیوی کے لئے چوتھا حصہ ہے اور ماں کے لئے

بقیہ مال کا تہائی حصہ ہے۔''

2910 ـ حَـدَّثَنَا حَـجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَيُّوْبَ عَنْ أَبِي قَلابَةَ عَنْ أَبِي الْمُهَلَّبِ

سیّدنا عثان بن عفان بڑائیڈ سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا:
''بیوی کے لئے چوتھائی لیعنی جارحصوں میں سے ایک حصہ
ہے۔اور ماں کے لئے بقیہ مال کا ایک تہائی لیعنی ایک حصہ
اور باپ کے لئے دو جھے۔''

عَنُ عُشَمَانَ بُنِ عَقَّانَ أَنَّهُ قَالَ لِلْمَرُأَةِ السَّرُبُعُ مَا الرُّبُعُ سَهُمٌ مِنْ أَرْبَعَةٍ وَلِلْأُمِّ ثُلُثُ مَا بَقِى سَهُمٌ وَلِلْأَمِ ثُلُثُ مَا بَقِى سَهُمٌ وَلِلْأَبِ سَهُمَانِ . ۞

2911- أَخْبَرَنَا حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ حَجَّاجٍ

اخرجه البيهقي في الفرائض، باب فرض الأما6/228 وأخرجه عبدالرزاق (19-21)

^{228/6} الن ابي شيبه 238/11 (17-11) والبيهقي في الفرائض باب فرض الأم 228/6

⁶ صحیح: مابقه حدیث بی مررہے۔

الفرائض عَنْ الْكَالِيْدِي الْفِرائض 543 (كتاب الفرائض) الله الفرائض

عمیر بن سعید نے حارث اعور سے بیوی اور والدین کے متعلق بوچھا تو انہوں نے عثان کے قول کی طرح کہا۔

عَنُ عُمَيُرِ بُنِ سَعِيدٍ أَنَّهُ سَأَلَ الْحَارِثَ الْأَعُورُ عَنِ امْرَأَةٍ وَأَبُويُنِ فَقَالَ مِثْلَ

قَوُٰلِ عُثُمَانَ . •

2912 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ قَتَادَةَ

عَنُ سَعِيُدِ بُنِ الْمُسَيَّبِ عَنُ زَيُدِ بُنِ ثَالِمِ سَعِيد بُنِ الْمُسَيَّبِ عَنُ زَيُدِ بُنِ ثَابِتٍ أَنَّهُ قَالَ فِى امُرَأَةٍ تَرَكَتُ زَوُجَهَا وَأَبَوَيُهَا لِلزَّوْجِ النِّصُفُ وَلِلْأُمِّ ثُلُكُ مَا بَقَى . ٥

عَنُ عَلِيّ فِي امْرَأَةٍ وَأَبْوَيُن قَالَ مِنْ

أَرْبَعَةٍ لِلْمَوْأَةِ الرُّبُعُ وَلِكُلُّمٌ ثُلُثُ مَا بَقِى

وَمَا بَقِيَ فَلِلَّابِ . 🏵

سیّدنا سعید بن میتب کہتے ہیں کہسیّدنا زید بن ثابت رُفائین نے اس عورت کے متعلق کہا جس نے اپنا شوہراور والدین چھوڑے کہ: ''شوہر کے لئے نصف ہے اور مال کے لئے بقیہ مال کا تھائی حصہ۔''

2913 - أَخْبَرَنَا عُبِيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوْسَى عَنِ ابْنِ أَبِيْ لَيْلَى غَنْ عَامِرِ الشَّعْبِيّ

سیّدناعلی بنالفتا سے مروی ہے کہ انہوں نے بیوی اور والدین کے متعلق کہا: ' بیوی کے لئے چار حصوں میں سے چوتھائی حصہ ہے اور ماں کے لئے بقیہ مال کا تہائی حصہ ہے اور ماں کے لئے بقیہ مال کا تہائی حصہ اور بقیہ باپ کے لئے ہے''

2914 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنِ الْأَعْمَشِ وَمَنْصُورِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ

عَنُ عَبُدِ اللهِ قَالَ كَانَ عُمَرُ إِذَا سَلَكَ بِنَا طَرِيقًا اللهِ قَالَ كَانَ عُمَرُ إِذَا سَلَكَ بِنَا طَرِيقًا اللهَّغَنَاهُ فِيهِ وَجَدُنَاهُ سَهُلا وَإِنَّهُ قَضَى فِي امْرَأَةٍ وَأَبُويُنِ مِنُ أَرْبَعَةٍ فَأَعُطَى الْمَرُأَةَ الرَّبُعَ وَاللَّمَّ ثُلُثَ مَا فَأَعُطَى الْمَرُأَةَ الرَّبُعَ وَاللَّمَّ ثُلُثَ مَا بَقِيَ وَاللَّمَ ثُلُثَ مَا بَقِيَ وَاللَّمَ شُهُمَيُن . ٥

دئيّ جائيں۔''

2915 ـ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عِيسَى.....

[•] البيهقي في الفرائض باب فرض الأم 6/228

² صحيح: أخرجه ابي شيبه (11098)

[€]ضعيف: محمد بن عبدالرطن بن الي ليل ضعيف ب، أحرجه ابن ابي شيبه 238/11-239(11099)و (11103)

[•] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه(11104)وابن منصور(6)وعبدالرزاق(19010)

الكَالِيَّانِيُّ الْكَالِيِّيِّ فِي اللهِ
شعمی کہتے ہیں سیدنا زید بن ابت نے سابق حدیث کی طرح کہا۔

2916 ـ أَخْبَرَ نَا مُحَمَّدٌ حَدَّنَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيْهِ عَنِ الْمُسَيَّبِ بْنِ رَافِع

عَنْ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ كَانَ يَقُولُ مَا كَانَ لَ سَيْدنا عبدالله وَلَيْمَ عَهُ مَوى ہے كہ وہ كہتے تھے: "الله اللهُ لِيَرَانِي أَنُ أُفَطِّلَ أُمَّا عَلَى أَب . • تعالى بھى جھے اس حال میں نہ ديكھے كہ میں مال كو باپ

سے بڑھا دول ''

2917 - أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ

عَنُ عِكْرِمَةَ قَالَ أَرُسَلَ ابْنُ عَبَّاسٍ إِلَى زَيْدِ بُنِ ثَابِسٍ أَرْسَلَ ابْنُ عَبَّاسٍ إِلَى زَيْدٍ بُنِ ثَابِسٍ أَرْسَدُ فِى كِتَابِ اللهِ لِلْأَمْ لُكْتَ مَا بَقِى فَقَالَ زَيْدٌ إِنَّمَا أَنْتَ رَجُلٌ تَقُولُ بِرَأْيِلَتَ وَأَنَا رَجُلٌ أَقُولُ بِرَأْيِلَتَ وَأَنَا رَجُلٌ أَقُولُ بِرَأْيِلَتَ وَأَنَا رَجُلٌ أَقُولُ بِرَأْيِلَتَ وَأَنَا رَجُلٌ أَقُولُ بِرَأْيِلَ وَأَنَا رَجُلٌ أَقُولُ بِرَأْيِلَ وَأَنَا رَجُلٌ أَقُولُ بِرَأْيِلَ وَأَنَا رَجُلٌ أَقُولُ بِرَأْيِلَ وَالْنَا رَجُلٌ أَقُولُ بِرَأْيِلَ وَالْنَا رَجُلٌ أَقُولُ بِرَأْيِنَ وَالْنَا رَجُلٌ أَقُولُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللّهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُولِي اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللّهِ اللهِ الل

عَنِ الشُّعُبِيِّ عَنُ زَيْدٍ بُنِ ثَابِتٍ مِثُلَ

ذلك م

سیدنا عکرمہ والنی کہتے ہیں کہ ابن عباس والنی نے زید بن ابت والنی کہتے ہیں کہ ابن عباس والنی نے زید بن ابت والنی کہتے ہیں اور پوچھا کہ آپ کو کتاب اللہ میں یہ بات ملتی ہے کہ مال کے بقیہ مال کا تہائی ہے؟ تو زید بن ابت والنی نے جواب دیا: ''تم ایک آ دمی ہوں اپنی رائے سے کہتے ہواور میں ایک آ دمی ہوں ابنی رائے سے کہتا ہوں۔''

فوائد: (۱) جمہور کی رائے کے برعکس ابن عباس وظفی کا مؤقف تھا کہ مال کو فذکورہ مسئلے بیں بھی کل مال کا تہائی حصہ ملے گا۔ یہ سات مرخ ہے کیونکہ قرآن میں ﴿فان لحمہ یہ کی لے ولد ور شہ اہوالا فلامہ یہ الشلہ یہ (النہاء: 11) اس ہے معلوم ہوتا ہے کہ مال کا ثلث ، تہائی جے کا ستی ہونا اس بات پر موقوف ہے کہ میت کی اولا دنہ ہو دوسرا ایک سے زیادہ بہن بھائی نہ ہوں تو یہ دوسور تیں ہوں گئیں لینی ان کی موجودگی سدس ، چھٹا حصہ ، عدم موجودگی یعنی جب والدین اکیلے ہوں تو تہائی حصہ ،ان دوسور تول کے علاوہ تیسری صورت یہ ہے کہ اولا دبہن بھائیوں میں بھی کوئی نہ ہو اورا کیلے بھی نہ ہوں تو یہ سورت کی ہے کہ والدین کے ساتھ زوجین میں سے کوئی ایک ہو۔ سوقر آن وسنت اس حالت کا ذکر نہیں کہ اس حالت میں والدہ کا کیا حصہ ہوگا لہذا جمہور اہل علم اس بات کوتر جے دیے ہیں کہ وہ اس صورت میں باقی ماندہ تہائی حصے کی وارث

¹9017) صحيح: أخرجه عبدالرزاق

[🗗] منفعطع ضعیف: میتب بن دافع علملسلم نے مسعود علملسلم سے نہیں سارا حسر جسہ عبدالسرزاق (19019) وابس ابسی شبیسہ 11/124(1117) اس کوحاکم نے تیج قرار دیا ہے 4/ 336اور ذہبی نے ان کی موافقت کی ہے۔

[€]صحيح: أخرجه عبدالرزاق(19020)وابن ابي شيبه 241/1110(1111)وابن حزم في المحلي 262-262-262

الفرائض 545 كتاب الفرائض الخرائدي الفرائض ہوگی۔ (ربنا زدنا علما و فہما) مزیرتفصیل کے لیے دیکھیے۔اعلام الموقعین ص 358,357)

2918 حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ

حجاج المعنى سے اور عطاء ابن عباس وظام سے نقل كرتے عَنُ حَجَّاجٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ وَحَجَّاجٍ عَنُ ہیں۔ کہ انہوں نے شوہر اور والدین کے متعلق کہا: ''شوہر عَطَاءٍ عَنِ ابُنِ عَبَّاسِ أَنَّهُمَا قَالًا فِي کے لئے نصف ہے اور مال کے لئے تمام مال کا تہائی اور زَوُجٍ وَأَبَوَيُنِ لِلزَّوُجِ النِّصْفُ وَلِكُلُّامٌ بقیہ باپ کے لئے ہے۔" لُكُ جَمِيع المَالِ وَمَا بَقِىَ فَلِلْأَبِ. •

2919 حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ أَنْبَأَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ عَنِ الْأَعْمَشِ.....

ابراہیم کہتے ہیں سیّدنا علی والنوز نے بیوی اور والدین کے عَنُ إِبُرَاهِيْمَ عَنُ عَلِيّ قَالَ لِلَّامّ ثُلُكُ متعلق اور شوہر اور والدین کے متعلق کہا: تمام مال سے جَـمِيعِ الْـمَـالِ فِى امْوَأَةٍ وَأَبَوَيُنِ وَفِى ماں کے لئے تہائی حصہ ہے۔'' زَوُج وَأَبَوَيُنِ . 🏵

مى، حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيْسَ، عَنْ آبِيْهِ، عَنِ الْفُضَيْلِ بْنِ 2920 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسُ

عَنُ إِبُرَاهِيُمَ قَالَ خَالَفَ ابُنُ عَبَّاسِ اَهُ لَ اللَّقِبُ لَذِ فِي امْرَأَةٍ وَابَوَيُنِ، جَعَلَ لُلُامٌ الثُّلُثَ مِنْ جَمِيْع الْمَالِ. 9

ابراہیم کہتے ہیں کہ سیدنا ابن عباس نے بیوی اور والدین ے متعلق تمام مسلمانوں کے خلاف کہا اور مال کے لئے تمام مال سے تہائی مقرری ۔

[4] بَابِ فِي بِنُةٍ وَأُخُتٍ

بیٹی اور بہن کا بیان

2921- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ عَنْ أَشْعَثَ بْنِ أَبِي الشَّعْثَاءِ

اسود بن زید کہتے ہیں معاذ بن جبل فائفہ نے یمن میں بینی اور بہن کے متعلق فیصلہ کیا۔ بیٹی کونصف دیا اور بہن کو بھی

عَنِ ٱلْأَسُوَدِ بُنِ يَزِيدَ قَالَ قَضَى مُعَاذُ بُنُ جَبَلٍ بِالْيَسَمَنِ فِي بِنُتٍ وَأُنُوتٍ فَأَعُطَى

❶ صحيح بالشواهد: أخرجه ابن ابي حزم في المحلى 260/9

^{260/9} منقطع ضعيف: ابراتيم في كونيس بايا، احرجه ابن ابي حزم المحلّى 260/9

[€]رجاله ثقات: أخرجه ابن ابي شيبه240/11 (1105)وعبدالرزق(19018)والبيهقي في الفرائض،باب فرض

حَالِ عَيْنَ الْكَالِيْعِيُّ ﴾ 546 ﴿ كَتَابِ الفرائض ﴾ 546 ﴿ كَتَابِ الفرائض

2922 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الْأَعْمَشِ....

عَنُ إِبُرَاهِيُهُ عَنِ الْأَسُودِ بُنِ يَزِيدَ أَنَّ ابُسَ النَّابُرِ كَانَ لَا يُوَرِّثُ الْأَخْتَ مِنَ الْآبِ وَالْآمِ مَعَ الْبِنُسِ حَتَّى حَدَّثَهُ الْآبُ مُعَاذَ بُنَ جَبَلٍ جَعَلَ لِلْبِئْتِ النِّصُفَ فَقَالَ أَنْتَ النِصُفَ فَقَالَ أَنْتَ النِصُفَ فَقَالَ أَنْتَ النِصُفَ فَقَالَ أَنْتَ رَسُولِ فَي إِلَى عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عُتُبَةَ فَأَخُبِرُهُ لِلَهِ بُنِ عُتُبَةَ فَأَخُبِرُهُ بِذَاكَ وَكَانَ قَاضِيَةً بِالْكُوفَةِ . ۞

ابراہیم اسود بن بزید سے نقل کرتے ہیں کہ ابن زبیر حقیقی
بہن کو بیٹی کے ساتھ وارث نہ تھہراتے تھے۔ حتی کہ اسود
نے ان سے بیان کیا کہ معاذ بن جبل ڈھائٹۂ نے نصف بیٹی
کے لئے اور نصف بہن کے لئے مقرر کیا۔ تو ابن
زبیر وہائٹۂ انے کہا: تم میری طرف سے قاصد بن کرعبداللہ
بن عتبہ کے پاس جاد اسے اس بات کی خبر دو اور وہ کوفہ
کے قاضی ہے۔

فوائد: معلوم ہواعلا تی (یعنی باپ کی طرف سے) اخیافی (مال کی طرف سے) بہن کا ظم بھی شقائق ، سگی بہنوں والا ہے۔

2923. حَدَّثَنَا بِشُرُ بُنُ عُمَرَ قَالَ سَأَلُتُ ابُنَ عُمَرَ قَالَ سَأَلُتُ ابُنَ أَبِي الزِّنَادِ عَنُ رَجُلٍ تَرَكَ بنتًا وَأُخَتًا فَقَالَ لِابْنَتِهِ النِّصْفُ وَلَأُخْتِهِ مَا

بشر بن عمر کہتے ہیں کہ میں نے ابن ابوزناد سے اس آ دمی کے متعلق بوچھا جس نے ایک بیٹی اور بہن چھوڑی تو انہوں نے کہا بیٹی کے لیے نصف ہوگا اور جو باتی رہ گیا وہ بہن کو

[•] صحيح: شرط يخاري پر ب- اخرجه ابن ابي شيبه 243/11 (1110) أخرجه البخاري في الفرائض، باب ميراث البنات (6734)

[🛭] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 244/11(1118)

547 كتاب الفرائض يتن الكايتي ملے گا اور انہوں نے کہا: میرے والد نے خارجہ بن زید کی بَقِيَ وَقَالَ أَخُبَونِي أَبِي عَنُ خَارِجَةَ بُنِ روایت سے مجھے بیان کیا۔کہ زید بن ثابت بیٹیول کے زَيُدِ أَنَّ زَيْدَ بُنَ ثَسَابِتٍ كَانَ يَجُعَلُ ساتھ بہنوں کوعصبہ بناتے تھے۔اوران کو وہی دیتے تھے الْأَخَوَاتِ مَعَ الْبَنَاتِ عَصَبَةً لَا يَجُعَلُ جوياقي بختاتھا۔ لَهُنَّ إِلَّا مَا بَقِيَ . •

فوائد: ایک سے زیادہ بیٹیاں اور بہنیں ہونے کی صورت میں بیٹیوں کوان کا فرض حصد دو تہائی يعنى 2/3 ملے گا جبكه بہنیں بطور عصبه ایک تهائی یعنی 1/3 حصه لیں گا۔

ر5م....بَابِ فِي الْمُشُوكَةِ

سب رشتہ داروں کو وراثت میں شریک تھہرانے کا بیان

2924 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورِ وَالْأَعْمَشِ

براجيم كهتيه بين كه سيّدنا عمر خالتين اور سيّدنا عبدالله رفاتين اور عَنُ إِبْرَاهِيُمَ فِي زَوُجٍ وَأُمَّ وَإِخُوَةٍ لِلَّابِ سيّدنا زيد مِنْ اللَّهُ شوهر، مان، حقيقي اور اخيا في بھائيون سب كو وَأُمَّ وَإِخُوَةٍ لِأُمَّ قَالَ كَانَ عُمَرُ وَعَبُدُ شریک کرتے تھے اور عمر فالٹیڈ کہتے تھے حقیقی بھائیوں کو اللُّهِ وَزَيُدٌ يُشَرِّكُونَ وَقَالَ عُمَرُ لَمُ باپ کی وجہ سے قرب حاصل ہوتا ہے۔''

ف واند: اقرب یعنی قریبی وارث کی موجودگی میں دور والامحروم ہوتا ہے کیکن سکے بھائیوں کوموجودگی میں اخیافی بھائی بھی ان کے ساتھ وراثت میں شریک ہوں گے اورموجودہ صورت میں مبھی بطور عصبہ درا ثت سے حصہ یا کئیں گے۔

2925 حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيْ إِسْحَقَ

يَزِدُهُمُ اللَّابُ إِلَّا قُرُبًا . @

حارث كہتے ہيں كەسپّدنا على خالفئة تمام وارثوں كو ورثه ميں عَنِ الْحَارِثِ عَنُ عَلِيّ أَنَّهُ كَانَ لَا شریک نه کرتے تھے۔ يُشَرُّكُ . 9

2926 أُخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِ

 ◘ صحیح بحاری نے اسے کتباب الفرائض بهاب میراث الولد من أبیه وأمه بصیغة الحزُ..... میں معلق روایت کیا ہے۔ حافظ ابن جر کہتے ہیں کرسعید بن منصور نے اسے موصولاً بیان کیا ہے۔

صحيح: شرط بخارى پر مـاخرجه عبدالرزاق (1909) والبيهقي في الفرائض بباب فرض الأم 6/652

548 كتاب الفرائض كتاب المنافقة الكافقة

ابومجلز کہتے ہیں کہ سیّدنا عثان رفیاتیءٔ تمام وارثوں کو شریک کرتے تھے اور سیّد ناعلی زمانیو شریک نہیں کرتے تھے۔

عَنْ أَبِي مِجْلَزِ أَنَّ عُثْمَانَ كَانَ يُشَرِّكُ وَعَلِيٌّ كَانَ لَا يُشَرِّكُ . •

ف اند: سی مالین عمر وعثان والعنوا اورجم ورصحابه و الکتاب کے برعکس موقف رکھتے تھے کہ سکتے بھائی چونکہ قریبی ہیں لہذا ان کی موجودگی اخیافی مینی صرف مال کی جانب سے بھائی محروم ہول گے لیکن ان کی سے بات مرجوح ہے۔

2927 حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ

ابن زکوان کہتے ہیں کہ سیّد نا زید رہائٹۂ تمام وارثوں کوشریک _ Z Z S

2928_ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ...

عَـن ابُسن ذَكُوانَ أَنَّ زَيُسدًا كَسانَ

عبدالملك بن عمير كہتے ہیں شریح تمام وارثوں كوشريك

عَنُ عَبُدِ الْمَلِلِثِ بُنِ عُمَيْرِ عَنُ شُرَيْح أَنَّهُ كَانَ يُشَرِّكُ . 9

2929 حَدَّثَ نَا مُحَمَّدُ بُنُ الصَّلْتِ حَدَّثَنَا أَبُوْ شِهَابِ عَنِ الْحَجَّاجِ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ

المُغدَ ة.....

يُشَرِّكُ . ٥

سعید بن فیروز اینے والد سے نقل کرتے ہیں کہستینا عرر فالغيز في مشركه كم متعلق كها: (حقيق بعائيون كوباب كى وجہ سے زیادہ قربت ہوتی ہے۔''

عَنْ سَعِيْدِ بُنِ فَيْرُوزَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ عُمَرَ قَالَ فِي المُشَرَّكَةِ لَمُ يَزِدُهُمُ الْأَبُ إِلَّا قُرْبًا . ٥

[6] بَابِ فِي ابُنَىُ عَمِّ أَحَدُهُمَا زَوُجٌ وَالْآخَرُ أَخُّ لِأُمَّ دو چیازاد بھائیوں کےمتعلق جن میں ہےایک شوہر ہےاور دوسرااخیافی بھائی ہو 2930 ـ أَخْبَرْنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ أَبِي إِسْحَقَ

الحرجة عبدالرزاق (19011) وابن ابي شيبه 256/11147) والبيه قي في الفرائض ، باب فرض الأم6/255

[🛭] صحيح شرط بخاري پر ب: اخرجه ابن منصور (27) وابن حزم في المحلّي 282/9

[€] حيد: أخرجه ابن منصو ر(25)وابن ابي شيبه 257/11(11148)

[₫]ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 255/11وعبدالرزاق(19009)

549 كتاب الفرائض كتاب يتين الكابيئ

حارث اعور کہتے ہیں کہ عبداللد فریانی کے یاس جیا زاد بھائیوں کے متعلق یو چھنے کے لئے آ دمی آیا جن میں سے ایک اخیافی بھائی تھا۔ انہوں نے کہا: تمام مال اس کے اخیانی بھائی کو ملے گا انہوں نے اسے حقیقی بھائی کی طرح شار کیا۔ یا حقق بھائی کے مرتبہ پر گمان کیا۔ جب سیدنا علی خالفہ آئے تو میں نے ان سے اس کے متعلق یو چھا اور انبیں سیدنا عبداللد رہائنے کا قول بتایا تو انہوں نے کہا:"الله ان بررحم كرے وہ عالم تھے ميں تواہے چھٹے حصے سے زيادہ ہر گزنہ دیتا جواللہ تعالیٰ نے اس کے لئے مقرر کیا۔ پھر ایک آ دمی کی طرح ان میں تقسیم کرتا۔

عَنِ الْحَارِثِ الْأَعُورِ قَالَ أَتِي عَبُدُ اللَّهِ فِي فَرِيضَةِ بَنِي عَمّ أَحَدُهُمُ أَخُرِلُامٌ فَقَالَ الْمَالُ أَجُمَعُ لِأَخِيهِ لِأُمِّهِ فَأَنْزَلَهُ بحسابٍ أو بمنزلةِ الأخمِنَ الأب وَالْأُمَّ فَلَمَّا قَدِمَ عَلِيٌّ سَأَلُتُهُ عَنُهَا وَأُخُبَـرُتُـهُ بِقَوُٰلٍ عَبُدِ اللَّهِ فَقَالَ يَرُحَمُهُ اللُّهُ إِنْ كَانَ لَفَقِيهًا أَمَّا أَنَا فَلَمُ أَكُنُ لِأَزِيدَهُ عَلَى مَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ سَهُمٌ

السُّدُسُ ثُمَّ يُقَاسِمُهُمْ كَرَجُل مِنْهُمْ . •

فواند: نرکوره حدیث می عبداللد فالنو اخیانی بھائی کوقریبی ندکر ہونے کی بنایر بطور عصبہ می مال كمستخلّ كردانة بي جبكه على فالله قرآن كى اس آيت كمطابق ﴿ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُدُورَكُ كَلْلَةً أَو امُرَاةٌ وَّ لَهُ آخُّ أَوْ أُخُتُّ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَّا السُّلُسُ فَإِنْ كَانُوْا آكُفَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَّكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعُدِ وَصِيَّةٍ يُوصَى بِهَا آوُدَيْنِ ﴿ (النساء: 12) الروارث بنن والاكلالمرد ياعورت مواور اس کا کوئی بھائی یا بہن تو ہرایک کے لیے ان میں چھٹا حصہ ہے اور اگر وہ زیادہ ہیں تووہ ثلث میں شریک ہیں کی جانے والی وصیت یا قرض کے بعد۔اخیافی بھائی کو چھٹا حصہ دیتے ہیں اور پھر باقی ماندہ مال کواس اخیافی بھائی سمیت چیازادوں میں تقلیم کرتے ہیں۔سواس مسلے میں ترجیح علی زنائفہ کے قول کوہی ہوگی۔ (دیکھیے: الوجيز في المير اث لمنشاوي عثان عبودص: 29)

2931 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَقَ.....

عَنِ الْحَارِثِ عَنُ عَلِيّ أَنَّهُ أَتِيَ فِي ابْنَىُ عَمّ أَحَدُهُمَا أَخُّ لِأُمّ فَقِيلَ لِعَلِيّ إِنَّ ابْنَ مَسْعُودٍ كَان يُعُطِيُهِ الْمَالَ كُلَّهُ فَقَالَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللُّهُ عَنهُ إِنْ كَانَ لَفَقِيهًا

حارث کہتے ہیں سیدناعلی رہائٹو کے پاس دو چھا زاد بھائیوں ك متعلق يوص ك لئ آدى آيا ان ميس سے ايك اخیانی بھائی تھا۔سیدناعلی ڈاٹیؤ سے سی نے کہا کہ سیدنا ابن مسعود ذالنيهُ أس تمام مال ويت بين-سيدنا على زالند ن

العُلِينَ العَلِينَ العَلْقِينَ العَلِينَ العَلْمَ العَلَيْلِينَ العَلِينَ العَلْمَ العَلْمَ العَلْقِينَ العَلْمَ العَلْمَ العَلْمَ العَلْمَ العَلْمَ العَلْمَ العَلْمَ العَلْمَ العَلْمَ العَلْمُ العَلْمُ العَلِينَ العَلْمَ العَلِينَ العَلِينَ العَلِينَ العَلِينَ العَلْمَ العَلْمُ العَلْمُ العَلْمُ العَلِينَ العَلِينَ العَلِينَ العَلِينَ العَلِيلِينَ العَلْمَ العَلْمُ العَلْمُ العَلِيلِينَ العَلْمِينَ العَلْمُ العَلِيمُ العَلْمُ العَلِيمُ العَلِيمِ العَلْمُ العَلْمُ العَيْمِي العَلْمُ العَلْمُ العَلْمُ العَلِيمُ العَلِيمُ العَلِيمُ ال

کہا:''وہ عالم آ دمی تھے۔ اگر میں ہوتا تو اسے چھٹا حصہ دیتا۔اور ہاقی دوسرےلوگول کے درمیان تقسیم کرتا۔

2932 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ الثَّوْرِيُّ عَنْ أَبِي قَيْسِ الْأَوْدِيِّ

ہریل بن شرصیل سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا کہ ایک آدی ابوموی اشعری خالفیٰ اورسلیمان بن ربیعہ کے پاس گیا اور ان سے بیٹی پوتی اور حقیقی بہن کے متعلق پوچھا انہوں نے کہا: ''بیٹی کے لئے نصف ہے اور باقی بہن کے لئے۔'' ابن مسعود زبائیٰ کے پاس جا وامید ہے کہ وہ بھی ہماری طرح ہی بیان کریں گے اس آدی نے سیدنا عبداللہ بن مسعود زبائیٰ کے پاس جا کر اس کے متعلق پوچھا انہوں نے مسعود زبائیٰ کے پاس جا کر اس کے متعلق پوچھا انہوں نے کہا: ''ابیا ہوا تو میں گمراہ ہو جا کیں گا۔ اور میں ہدایت یافتہ نہیں ہوں گا۔ اور میں وہی فیصلہ کروں گا جو رسول یافتہ نہیں ہوں گا۔ اور میں وہی فیصلہ کروں گا جو رسول اللہ طاقے آئیٰ کے لئے نصف پوتی کے لئے جھٹا اور باقی بہن کے لئے ہوگا۔''

عَنُ هُزَيُلِ بُنِ شُرَحُبِيلَ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى الْبِي مُوسَى الْأَشُعَرِيّ وَإِلَى سَلُمَانَ الْبِي أَبِي مُوسَى الْأَشُعَرِيّ وَإِلَى سَلُمَانَ ابْنِ رَبِيعَةَ فَسَأَلَهُمَا عَنُ بِنُتٍ وَبِنُتِ ابْنِ وَأَخْتِ لِأُمْ وَأَبٍ فَقَالًا لِلابُنَةِ النِّصُفُ وَمَا بَقِى فَلِلْأَخْتِ وَأْتِ ابْنَ مَسْعُودٍ فَإِنَّهُ وَمَا بَقِى فَلِلْأَخْتِ وَأْتِ ابْنَ مَسْعُودٍ فَإِنَّهُ سَيُتَ ابِعُنَا فَجَاءَ الرَّجُلُ إِلَى عَبُدِ اللّهِ فَسَالًكُ عَنُ ذَٰلِكَ فَقَالَ لَقَدُ ضَلَكُ فَسَالًكُ عَنُ ذَٰلِكَ فَقَالَ لَقَدُ ضَلَكُ فَسَالًكُ عَنُ ذَٰلِكَ فَقَالَ لَقَدُ ضَلَكُ إِلَى عَبُدِ اللّهِ فَسَالًكُ مَن ذَٰلِكَ فَقَالَ لَقَدُ ضَلَكُ إِلَى عَبُدِ اللّهِ إِنَّا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهُ تَدِينَ وَإِنِّى أَقْضِى بِهِ رَسُولُ اللهِ عَلَيْ لِلابُنَةِ لِلابُنِ السَّدُسُ وَمَا بَقِى السَّدُسُ وَمَا بَقِى فَلَلانَةِ اللهُ اللهِ عَلَيْ لِلابُنَةِ اللهُ اللهِ عَلَيْ لِلابُنَةِ اللهُ اللهُ عَلَيْ لَاللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَيْ لِلابُنَةِ اللهُ اللّهِ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهِ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّه

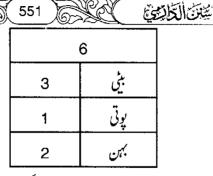
وَلَوْ كُنْتُ أَنَّا أَغُطَيْتُهُ السُّدُسَ وَمَا بَقِيَ

كَانَ نَنْنُهُمُ. •

فوائد: بین ، بوتی ، بی بهن ان میں میراث بول تقیم ہوگی بین کونصف قران میں ﴿ فَاِنْ كُنَّ نِسَاءٍ فَوْقَ اثْنَتَیْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ وَإِنْ كَانَتُ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصف ﴾ (النساء:11) پس اگر عورتیں دوسے زیادہ ہوں توان کے لیے دوثلث ہے جومیت جھوڑ جائے اوراگر ایک ہی ہوتو اس کے لیے نصف (حصہ) ہے اور بوتی کو 2/3 یعنی دوثلث مکمل کرنے لیے چھٹا حصہ دیا جائے گا جبکہ بہن چونکہ بیٹیوں کے ساتھ عصبہ ہوتی ہے اس لیے باتی مال بہن کے جھے میں آئے گا۔ یہ مسئلہ چھے سے بے گا۔

اسن: سابقه بی مکررے۔

صحيح: أخرجه البخارى، كتاب الفرائض، باب ميراث ابنة ابن مع ابنة (2736) أخرجه البيهقي في الفرائض، باب فرض
 ابنة الابن مع ابنة الصلب ليس معهما ذكر 230/6



[8] بَابِ فِي الْإِخُوَةِ وَالْأَخُوَاتِ وَالْوَلَدِ وَوَلَدِ الْوَلَدِ الْوَلِي الْوَلَدِ الْوَلَا لَوْلِولِ الْوَلَدِ الْوَلَدِ الْوَلَدِ الْوَلَدِ الْوَلَدِ الْوَلَدِ الْوَلَدِ الْوَلَدِ الْوَلَالِ الْوَلَدِ الْوَلَالِ الْوَلِي الْوَلْوِي الْوَلِي الْوَلْمِي الْوَلِي الْوَلْمِي الْوَلِي الْو

2933 - أَخْبَرَنَا أَخْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا أَبُوْ شِهَابٍ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ مُسْلِمٍ

مروق کہتے ہیں کہ سیّدنا عبداللد رُالیّن حقیقی بہنوں اور علاقی بعنوں اور بہنوں کے متعلق کہتے تھے۔ ''حقیقی بہنوں کے لئے بہنوں کے لئے دو تہائی ہوگی۔ اور باقی مردوں کے لئے متعلق زید رُالیّن کا قول سا انہیں یہ پہند آیا ان کے پچھ متعلق زید رُالیّن کا قول جیوڑت سیّدنا عبداللّه کا قول جیوڑت ہیں۔'' انہوں نے کہا: 'آپ سیّدنا عبداللّه کا قول جیوڑت ہیں۔'' انہوں نے کہا: میں مدینہ گیا تو زید بن ثابت رُالیّن کو کو عظیم عالموں سے پایا۔ احمد کہتے ہیں: میں نے ابوشہاب کو عظیم عالموں سے پایا۔ احمد کہتے ہیں: میں نے ابوشہاب سے بوجھا: زید اس کے متعلق کیسے کہتے تھے؟ انہوں نے کہا: ''دوہ تمام وارثوں کوشر کے کرتے تھے۔''

كتاب الفرائض

عَنُ مَسُرُوقٍ عَنُ عَبُدِ اللّهِ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ فِي أَخَوَاتٍ لِأَبِ وَأُمِّ وَإِخُوةٍ وَأَخَواتٍ لِأَبِ وَأُمِّ وَإِخُوةٍ وَأَخَواتٍ لِلْآبِ وَالْأُمَّ التُّكُفَانِ وَمَا بَقِى فَلِلذَّكُورِ دُونَ الْإِنَاثِ التُّكُفَانِ وَمَا بَقِى فَلِلذَّكُورِ دُونَ الْإِنَاثِ فَقَدِمَ مَسُرُوقُ الْمَدِينَةَ فَسَمِعَ قَوُلَ وَيُهِ إِللَّهِ فَقَالَ لَهُ بَعُضُ وَيُهِ اللّهِ فَقَالَ لَهُ بَعُضُ أَصْحَابِهِ أَتَّدُلُكُ قَولَ عَبُدِ اللّهِ فَقَالَ لَهُ بَعُضُ أَصْحَابِهِ أَتَدُلُكُ قَولَ عَبُدِ اللهِ فَقَالَ لِهُ بَعُضُ أَصْحَابِهِ أَتَدُلُكُ قَولَ عَبُدِ اللهِ فَقَالَ إِنِّى أَتَدُلُكُ قَولَ عَبُدِ اللهِ فَقَالَ لَهُ بَعْضُ أَلَي اللّهِ فَقَالَ إِنِّى اللّهِ فَقَالَ لَهُ مَنْ الرَّاسِخِينَ فِي الْعِلْمِ قَالَ أَحْمَدُ فَقُلُتُ لِأَبِي شِهَابٍ وَكَيْفَ قَالَ أَحْمَدُ فَقُلُتُ لِأَبِي شِهَابٍ وَكَيْفَ قَالَ أَرْدُهُ فَي اللّهِ فَقَالَ شَوَّكَ بُنِي شِهَابٍ وَكَيْفَ قَالَ أَرْدُهُ فَي اللّهِ فَقَالَ شَوَّكَ بَيْنَهُمُ . •

فواند: سگی بہنیں جب دویادو سے زیادہ ہوں تو میت کے کلالہ ہونے کی صورت میں 2/3 ، دو تہائی حصے کی وراث بنتی ہیں قرآن میں ہے: ﴿ فَانَ كَانَتَا اثْنَتَیْنِ فَلَهُمَا الثَّلُشَانِ مِمَّا تَرَكَ ﴾ (النساء: 176) اگر وہ دوہوں توان کے لیے دوثلث میں (میت) کے چھوڑے ہوئے مال سے۔ اورسگی بہنوں کی موجودگی میں علاقی بہنیں محروم ہوتی ہیں لیکن معصب یعنی علاقی بھائی ہوتو اس کے ساتھ یہ بھی عصبہ بن کر

1927 552 SECT EXISTE 190 كتاب الف ائض

وارث حق دار تهرتی میں لہذا زید رہائند کا موقف ہی قابل ترجی ہے۔

2934 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُغِيرَةِ عَنْ عِيسَى بْن يُوْنُسَ

عَنُ إِسُمَعِيلَ قَالَ ذَكَرُنَا عِنْدَ حَكِيم بن جَابِرِ أَنَّ ابُنَ مَسُعُودٍ قَالَ فِي أَخَوَاتٍ كَانَ يُعُطِي لُِلَآخَوَاتِ مِنَ الْأَبِ وَالْأُمِّ الثُّلُثَيُن وَمَا بَقِىَ فَلِلذُّكُورِ دُونَ الْإِنَاثِ فَقَالَ حَكِيمٌ قَالَ زَيْدُ بُنُ ثَابِتٍ هَذَا مِنُ النِّسَاءِ إِنَّ إِخْوَتَهُنَّ قَدُ رَدُّوا عَلَيْهِنَّ . •

لِأَب وَأُمّ وَإِخُوبَةٍ وَأَخَوَاتٍ لِأَب أَنَّـهُ عَـمَـل الْجَاهِلِيَّةِ أَنْ يَرِثُ الرِّجَالُ دُونَ

2935 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَعْبَدِ بْن خَالِدِ

عَنُ مَسُرُوقِ عَنُ عَائِشَةَ أَنَّهَا كَانَتُ تُشَرِّكُ بَيُنَ ابُنَتَيُن وَابُنَةِ ابُن وَابُن ابُن تُعُطِى إلابُنتَيُن الثُّلُفَيُن وَمَا بَقِيَ فَشَرِيكُهُمُ وَكَانَ عَبُدُ اللَّهِ لَا يُشَرَّكُ يُعُطِي الذُّكُورَ دُونَ الْإِنَاثِ وَقَالَ الْأَخَوَاتُ بِمَنْزِلَةِ الْبَنَاتِ. 🗗

اساعیل کہتے ہیں ہم نے حکیم بن جابر کے پاس ذکر کیا۔ كه ابن مسعود والله حقيقي بهنول اور علاتي بهائيول اور بہنوں کے متعلق کہتے ہیں: ''حقیقی بہنوں کو دو تہائی دی جاتی تھی اور ہاتی مردوں کو ویا جاتا تھا عورتوں کونہیں۔'' كيم نے كها: زيد بن ثابت وفائد كہتے تھے: "بيرجالميت كى رسم ہے کہ مردوں کو وارث بنایا جائے اور عورتوں کو نہ بنایا جائے۔ان کے بھائیوں نے ان تک ان کا حصہ پہنجایا ہے لیمنی جو بھائیوں سے پچ گیا ہے وہ عورتوں کومل جائے گا۔"

مسروق كہتے ہيں سيّدہ عائشہ وظافعا دو بيٹيوں ايك يوتى اور ایک بوتے کو ورافت میں شریک کرتی تھیں۔ دونوں بیٹیوں کو دو تہائی اور باتی میں یوتے اور یوتی کوشریک کرتی تھیں۔ اور سیّدنا عبدالله دُخالتُو شریک نه کرتے تھے۔ مردول کو دیتے تھے عورتوں کو نہ دیتے تھے۔اور کہتے تھے: بہنیں بیٹیوں کی مانند ہیں۔

فواند: دوبیلمیاں بوتی اور بوتا ان میں وراثت بول تقسیم ہوگی کہ بیلمیاں قران کے مطابق دوثلث (۲/۳) کی مستحق قرار یا کیس گی اور بقیہ مال بوتی ہوتے میں بطور عصبہ تقسیم ہوگا۔ بیٹیوں کے ہوتے بوتی محروم ہوتی ہیں کیکن معصب یعنی یوتے کی موجودگی میں بیابھی بطور عصبہ وارث تھہرتی ہے۔چنانچہ عائشہ وناٹھہا کامؤنف ہی راجح ہے۔

[🛈] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 247/11(1117)وابن حزم 270/9

[🗗] صحيح: أخرجه ابن أبي شيبه 347/11(11126)وابن حزم في المحلي 270/9والبيهـ في الفرائض،باب ميراث أولاد الابن6/230

553 کی کتاب الفرائض المركز المراقعة المرا

2936 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيْ سَهْلِ

شعبی کہتے ہیں سیدنا ابن مسعود فالنیئ بیٹی پوتیوں اور پوتے ك متعلق كبتر تن "الران مين حيط حصر سے كم مال تقسیم ہوتو انہیں چھٹا حصہ دواگر چھٹے جھے سے زیادہ ہوتو پهرېھي انہيں چھڻا حصه دو۔''

عَنِ الشَّعُبِيِّ أَنَّ ابْنَ مَسْعُودٍ كَانَ يَقُولُ فِي بنُتٍ وَبَنَاتِ ابْن وَابُنِ ابْنِ إِنْ كَانَتُ الُمُ قَاسَمَةُ بَيْنَهُمُ أَقَلَّ مِنَ السُّدُس أَعْطَاهُمُ السُّدُسَ وَإِنْ كَانَ أَكُثَرَ مِنَ

السُّدُس أَعْطَاهُمُ السُّدُس . •

فواند: بداثر اگرچەضعىف بى بېرمال مذكوره مسئلے ميں بيٹي نصف كى حقدار موگى جبكه بقيدايك حصه يوتيول مين تقسيم ہوگا۔

2937 حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ

مسروق سے مروی ہے کہ وہ تمام وارثوں کو ترکے میں شریک کرتے تھے ۔ان سے علقمہ نے کہا:" کیا کوئی شخص سیّدنا عبدالله سے برد رکھی تھا؟ تو اس نے کہا جہیں لیکن اس نے سیّدنا زید بن ثابت اور اہل مدینه کو دیکھا کہ وہ دو بیٹیوں اور ایک بوتی ، ایک بوتے اور دو بہنوں کوتر کہ میں شر یک کرتے تھے۔''

عَنُ مَسُرُوق أَنَّهُ كَانَ يُشَرِّكُ فَقَالَ لَهُ عَلُقَ مَةُ هَلُ أَحَدٌ مِنْهُمُ أَثْبَتُ مِنْ عَبُدِ اللَّهِ فَقَالَ لَا وَلَكِنِّي رَأَيْتُ زَيْدَ بُنَ ثَابِتٍ وَأَهُلَ الْمَدِينَةِ يُشَرِّكُونَ فِي ابْنَتُين وَبِنُتِ ابُنِ وَابُنِ ابُنِ وَأَخْتَيُنِ . ٥

عَنُ مُحَمَّدِ بُنِ سِيْرِيْنَ عَنُ سُرَيْحٍ فِي

امُ رَأْدةٍ تَ رَكَتُ زَوْجَهَا وَأُمَّهَا وَٱخْتِهَا

إِلَابِيُهَا وَأُمِهَا وَأُخْتِهَا لِلَابِيُهَا وَأَخُوَتِهَا

لِأُمِّهَا جَعَلَهَا مِنُ سِتَّةَ ثُمَّ رَفَعَهَا فَبَلَغُتَ

عَشُرَةَ لِلزَّوْجِ النِّصْفُ ثَـكَاثَةَ ٱبِيهُمُ

2937 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوْسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامِ

محمد بن سیرین کہتے ہیں شریح نے ایک عورت کے متعلق جس نے شوہر، ماں اور حقیقی بہن علاقی بہن اور اخیافی بھائی چھوڑے تھے جیھ سے تقسیم کیا ،پھراسے اٹھایا تو دس تک بہنا شوہر کے لئے نصف لیعنی تین جھے حقیقی بہن کے لئے نصف یعن تین حصے مال کے لئے چھٹا حصہ اخیافی

[•] صحيح بالشواهد: أخرجه ابن ابي شيبه 249/11(1112)

[◘]صحيح: أخرجه عبدالرزاق (19013)وابن ابي شيبه 247/11-248(11129-11129)وابن حزم في المحلي 270/9 والبيهقي في الفرائض، باب ميراث الاولاد الابن230/6

العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلِيمِينَ العَلِيمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ الْمَامِينَ العَلَيْمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلِيمِينَ العَلَيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلِيمِيْمِينَ العَلِيمِينَ العَلِيمِينَ العَلِيمِينَ العَلِيمِينَ العَلْ

بھائیوں کے لئے ایک تہائی دوجھے اور علاقی بہن کے لےءایک حصد مقرر کیا تا کہ دو تہائی مکمل ہو جائے۔ وَلِلُاحُتِ لِلْآبِ وَالْامِّ النِّصْفُ ثَلَاثَةُ اَسُهُم وَلِلْامِّ السُّدُسُ سَهُمٌّ وَلِلْاَحُوَةِ مِنَ الْامِّ الشُّلُثُ سَهُمَانِ وَلِلْاَحُتِ مِنَ الْآبِ سَهُمٌّ تَكْمِلَةً الثَّلُثَيْنِ. • •

فوائد: مرنے والی درج ذیل ور شکو پیچھے چھوڑ گئی۔ (۱) خاوند (۲) مال (۳) سکی بہن (۴) علاقی بہن (۴) علاقی بہن (۵) اخیافی بہن بھائی۔ لہٰذا میت کے کلالہ ہونے کی وجہ سے خاوند نصف ، جبکہ ایک سے زیادہ بہن بھائی ایک بھائی ہونے کی وجہ سے نصف جب کہ اخیافی بہن بھائی ایک سے زیادہ ہونے کی وجہ سے نصف جب کہ اخیافی بہن بھائی ایک سے زیادہ ہونے کی جائے ہوئے کہ بہن کو ملنے والے نصف کے دیادہ ہونے کی بنا پر ثلث اور علاقی بہن ایک حصہ یعنی سدس حاصل کرے گی جو کہ بہن کو ملنے والے نصف کو 213 میں تبدیل کرنے کا ماعث ہوگا۔

[9] بَابِ فِي الْمَمُلُوكِينَ وَأَهُلِ الْكِتَابِ غلامول اور الل كتاب كابيان

2939 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَلِيّ بْنِ مُسْهِرِ عَنْ أَشْعَتَ

عَنِ الشَّعْبِيِّ أَنَّ عَلِيًّا وَزَيْدًا كَانَا لَا صَعَى كَتِ بِي سِيّدنا عَلَى فِالنَّيْنَ اور زيد فِالنَّيْنَ غلاموں اور يَسَخُجُبَانِ بِالْكُفَّادِ وَلَا بِالْمَمْلُوكِيُنَ وَلَا كَافْروں كَ ساتھ وارثوں كو مُجُوب نہ كرتے تھے۔اور نہ يُورِّ ثَانِهِمْ شَيْنًا وَكَانَ عَبُدُ اللَّهِ يَحُجُبُ ان كو وارث بناتے تھے۔اورسيّدنا عبدالله فِالنَّيْنَ كافروں اور يُورُقَانِهِمْ شَيْنًا وَكَانَ عَبُدُ اللَّهِ يَحُجُبُ عَلاموں كَ ساتھ مُجُوب كر ديتے تھے اور آنہيں وارث نہ بالکُفَّادِ وَبِالْمَمْلُوكِينَ وَلَا يُورِّنُهُمْ مُنَا فَالْمُول كَ ساتھ مُجُوب كر ديتے تھے اور آنہيں وارث نہ

بناتے تھے۔

فوائد: (۱) کافرمسلمان کا اورمسلمان کافر کاوارث نہیں بن سکتا ہے (۲) محروم کسی کے لیے حاجب ایمنی اس کو حصے سے محروم نہیں کرسکتا (۳) جمہور کے نزدیک علی وزید والٹھا کامؤقف ہی قابل ترجیج ہے۔ 2940 حدَّ ثَنَا سُکیْمَانُ بْنُ حَرْبِ شُعْبَةُ عَنِ الْحَکَمِ

عَنْ إِسرَاهِيْمَ: أَنَّ عَلِيَّا وَزَيْدًا قَالَا: ابرائيم كَهِ بِي سيّدنا على والنَّهُ اورسيّدنا زيد والنَّهُ نَ كَها: الْمَمُلُو كُونَ وَأَهُلُ الْكِتَابِ لَا يَحْجُرُونَ وَأَهُلُ الْكِتَابِ لَا يَحْجُرُونَ وَأَهُلُ الْكِتَابِ لَا يَحْجُرُونَ وَ اللهِ الرائل كتاب مجوب بين كرين كَ اورنه بي وه خود

[•] صحيح: أخرجه عبدالرزاق(19034)وابن ابي شيبه 283/11(11238)

[🕏] صحيح: أخرجه سعد بن منصور (148)وابن ابي شيبه 27/11(11193)وعبدالرزاق(19103)

الفرائض كتاب الفرائض 555

وارث ہوں گے۔ اورستدنا عبداللد ضائبی کتے ہیں:''وہ مجوب تو کریں گے مگرخود وارث نہ بنیں گے۔'' وَلَا يَرِثُونَ ، وَقَالَ عَبُدُ اللَّهِ يَحُجُبُونَ وَكَلا يَرثُونَ. ٥

٦10ر.... ناب الُجَدّ دادا کی وراثت کا بیان

2941- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا يَحْيِي

سعید کہتے ہیں سیدنا عمر والنف نے دادا کی میراث کھی تھی۔ حتی که جب وه زخی ہوئے تو اس کومنگوایا اور مٹا دیا۔ اور

الُجَدِّ حَتَّى إِذَا طُعِنَ دَعَا بِهِ فَمَحَاهُ ثُمَّ قَالَ سَتَرَوُنَ رَأْيَكُمْ فِيْهِ . 3

عَنُ سَعِيدٍ أَنَّ عُمَرَ كَانَ كَتَبَ مِيْرَاتَ

فرمایا: ''اس کے متعلق تم اپنی رائے دیکھو۔''

فواند: (۱) "جد" دادا کی میراث کتاب وسنت سے ثابت نہ ہونے کی وجہ سے صحابہ ری اُنتیم اس میں مختلف آراء رکھتے تھے۔ (۲) جس مسئلے میں شریعت کی طرف سے وسعت ہوا سے مقید کرنا غیر مناسب ہے بلکہ ایسے میں اجتہاد کا دروازہ کھلا رکھنا چاہیے (۳) عمر دہائنڈ جیسے جلیل القدر صحابی کی بات بھی جب کتاب وسنت سے ہٹ کر ہوتو وہ بھی مردود چہ جائیکہ کسی امام کا قول ہو (س) ایک مسئلے میں اپنی رائے کے غلط ثابت ہونے براس سے رجوع کر لیناعظمت کی علامت ہے۔

2942- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ أَخْبَرَنَا أَشْعَتُ

ابن سیرین کہتے ہیں میں نے عبیدہ سے کہا: داوا کے متعلق مجھ سے بچھ بیان کریں انہوں نے کہا:'' دادا کے متعلق مجھے مختلف قتم کے فیصلے یاد ہیں۔" عَنِ ابُنِ سِيُرِيُنَ قَسالَ قُلُتُ لِعَبِيدَةً ` حَدِّثُنِي عَنِ الْجَدِّ فَقَالَ إِنِّي لَأَحُفَظُ فِي الُجَدّ ثَمَانِينَ قَضيَّةً مُخْتَلَفَةً. ٥

2943 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو غَسَّانَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَقَ

عَنُ عُبَيْدِ بُنِ عَمْرِو الْخَارِفِيِّ عَنُ عَلِيّ عبید بن عمرو خارفی کہتے ہیں سیّدنا علی وظائفۂ کے یاس ایک آدى آيا اور فرائض كامسكه يو چسنا جابا توسيدنا على رائفيزن کہا:''اگراس میں دادا نہ ہو میں اسے بیان کروں۔''

0قَالَ أَتَاهُ رَجُلٌ فَسَأَلَهُ عَنُ فَريضَةٍ فَقَالَ إِن لَمُ يَكُنُ فِيهَا جَدٌّ فَهَاتِهَا . ٥

€ صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 320/11(11317) وعبدالرزاق(19183)

❸صحيح: أحرجه البيهقي في الفرائض،باب التشديد في الكلام في سئلةالجد6/245وعبدالرزاق(19044)

اسناده حید عبداللہ بن عمروالخارفی کوابن حبان نے ثقات میں وکر کیا ہے 5 /137 وریکھے الانساب 14/5 و أحرجه ابن ابي شيبه 11/313(11303)

القرائض كالمرافض كالم

ف وائد: صحابہ کرام وَثَنَائِيم جس بات بارے أنبيل جزم وابقان انشراح صدرنه وتا اس كے بارے رائے زنی میں حددرجہ احتیاط برتے یہی وجہ ہے کہ علی ڈاٹنٹو دادا کی میراث کو بیان کرنے سے احتراز کردہے ہیں۔

· 2944 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَيُّوبَ السَّخْتِيَانِيِّ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ

قبیلہ مراد کے ایک آ دی سے مردی ہے کہ اس نے سیّدنا علی زالتین کو بید کہتے ہوئے سنا: ' جس کو اصل دوزخ جانا یسند ہو وہ دادا اور بھائیوں کے متعلق فیصلہ کرے۔''

عَنْ رَجُلٍ مِنْ مُرَادٍ سَمِعَ عَلِيًّا يَقُولُ مَنْ سَرَّهُ أَنُ يَتَقَحَّمَ جَوَاثِيْمَ جَهَنَّمَ فَلْيَقُصْ بَيْنَ الْجَدِّ وَالْإِخُوَةِ. •

[11] بَابِ قَوُٰلِ أَبِي بَكُرٍ فِي الْجَدِّ دادا کے متعلق سیّد نا ابوبکر کے قول کا بیان

2945 ـ أَخْبَرَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا خَالِدٌ

ابونضرہ سیدنا ابوسعید خدری ذائیہ سے (دادا کو باب قرار دینے کے متعلق)روایت کرتے ہیں۔"

عَنْ أَبِي نَضُرَةَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدَرِي

2946. وَعَنُ عِكُومَةَ أَنَّ أَبَا بَكُو سيّدنا ابوموى فالنَّهُ كُتِّ بين سيّدنا ابوبكر صديق فالنَّهُ ن دادا کو باپ قرار دیا۔

الصِّدِيقَ جَعَلَ الْجَدُّ أَبًّا . 9

ف واند: معلوم ہوا ابو بر بنائي جد، دادا كوباي كى عدم موجودگى ميں اس كے قائم مقام كردانة تھے اور یہی بات راج ہے لیکن جار جگہوں میں یہ باپ کی طرح نہیں ہوگا۔مزیدد یکھیے ابوجیز فی المیر اث، لمنشاوي من:14.13)

2947 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سُلَيْمَانَ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ كُرْدُوْسٍ عَنْ أَبِي ب دة.....

🖰 صحیح: (2952) کے تحت اس کی صحیح سند آئے گا۔

[◘] ضعيف: أخرجه ابن منصور(57)وابن ابي شيبه 11/318(11313)والبيه قي في الفرائض،باب التشديد في الكلام في سألة الحد6/245

^{246/6}عجر الخرجه ابن ابي شيبه 288/11 (11250) والبيهقي في الفرائض، باب من لم يورث الإخوة مع الحد6/642

557 كتاب الفرائض

سيّدنا ابوموى وفافية كہتے ميں كرسيّدنا ابوبكر صديق وفافية نے

عَنُ أَبِي مُوسَى أَنَّ أَبَا بَكُر الصِّدِّيق جَعَلَ الْجَدَّ أَبًّا. •

أَنَّا . 😉

دا دا کو باپ قرار دیا۔

2948 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُو شِهَابٍ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ بْنِ أَبِي مُوسٰى عَنْ كُرْدُوْسِعَن

سیّدنا ابوموی کہتے ہیں: سیّدنا ابوبکر فالٹیؤنے دادا کو باب عَنْ أَبِي مُوسٰى أَنَّ أَبَا بَكُر جَعَلَ الْجَدَّ قرار دیا تھے۔

2949 ـ أَخْبَرَنَا الْأَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَـمْرِو بْنِ مُرَّةَ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ مَوْ وَ انَّ

سيّدنا عثمان فالغير كهت بين كه سيّدنا ابوبكر فالغيرُ دادا كو باي

الُجَدُّ أَنَّا . 9 قرار دیتے تھے۔ 2950 حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى ومْحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ إِسْرَاثِيْلَ عَنْ أَبِي إِسْحَقَ

سيّدنا عثان وخالفي كهت بين كهسيّدنا ابو بكر وخالفيّا دادا كو باي عَنْ عُثْمَانَ : أَنَّ أَبَىا بَكُرِ كَانَ يَجُعَلُ للُجَّد أَمَا . ٥

قرار دیتے تھے۔

2951 أَخْبَرَنَا الْأَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ ، عَنْ عَمْرو بْن مُرَّةَ

سیدنا ابوبردة والله کہتے ہیں کہ مدینہ میں مروان بن محم سے میری ملاقات ہوئی انہوں نے کہا: اے ابن ابومولی ؟ مجھے خبر ملی ہے کہتم لوگوں میں دادا کو باپ کی جگہ پرشار نہیں كياجاتا اورتم اسے روكتے بھی نہيں ہوميں نے كہا: "آپ ہوتے تو آ ب بھی ندرو کتے۔' مروان نے کہا:''میں سیّدنا عثان والنيئة بن عفان کے متعلق گواہی دیتا ہوں کہ انہوں عَنْ أَبِي بُرُمَةَ قَالَ لَقِيْتُ مَرُوانَ بُنَ الْحَكَمِ بِالْمَدِيْنَةِ فَقَالَ يَا ابْنَ أَبِي مُوسٰى أَلَمُ أُخُبَرُ أَنَّ الُجَدَّ لَا يُنْزَلُ فِيكُمُ مَنْزِلَةً الْأَب وَأَنْتَ لَا تُنكِرُ؟ قَالَ قُلْتُ وَلَوُ كُنْتَ أَنْتَ لَمُ تُنْكِرُ. قَالَ مَرُوَانُ فَأَنَّا أَشْهَدُ عَلَى عُثْمَانَ بُنِ عَفَّانَ أَنَّهُ شَهِدَ

عَنُ عُشُمَانَ أَنَّ أَبَا بَكُر كَانَ يَجْعَلُ

❶ اسناده حيد: أخرجه ابن حزم في المحلى حزم في المحلى 287/9وابن منصور(43)والبيهقي في الفرائض،باب من لم يورث الإخوة مع الحد6/645

[🗗] جيد: سابقه بي مررآ ألى بـ

[🗗] حيد: سابق ولاحق *هديث* ملاحظ فرما كيس ـ

⁴ اسناده حيد: أخرجه ابن منصور (43) والدار قطني 92/4

558 کا کتاب الفرائض الكالم ال

نے ابو بکر زاللہ کے متعلق گواہی دی کہ انہوں نے دادا کو بای قرار دیا۔ جبکہ اس کے نیچے کوئی اور باپ نہ ہو۔''

عَلَى أَبِي بَكُرِ أَنَّهُ جَعَلَ الْجَدَّ أَبًّا إِذَا لَمُ يَكُنُ دُونَهُ أَبُ. ٥

2952 حَدَّثَنَا الْأَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ خَالِدِ الْحَذَّاءِ عَنْ أَبِي نَضْرَةَ وَعَنْ عِكْر مَةَ

> عَنِ ابُنِ عَبَّاسِ أَنَّ أَبَا بَكُو كَانَ يَجُعَلُ الُحَدُّ أَنَّا . 9

سیّدنا ابن عباس بنائیهٔ کہتے ہیں کہ سیّدنا ابو بکر رہائیۂ دادا کو باي قرار دينے تھے۔

2953 حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا أَيُّوْبُ عَنْ عِكْرِمَةَ

سیّدنا ابن عباس ضائفهٔ کہتے ہیں: دادا کوباب اس هخص نے قرار دیا جس کے متعلق رسول الله طفي الله عن فرمایا: "اگر میں کسی کو دوست بنا تا تو اس کو بنا تا لیکن اسلام میں بھائی حارہ افضل ہے۔' اس سے مراد ابو بکر ڈناٹنڈ ہیں جنہوں نے وادا کو ہاہے قرار دیا۔''

عَن ابُنِ عَبَّاس قَالَ جَعَلَهُ الَّذِى قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ :((لَوُ كُنُتُ مُتَّخِذًا أَحَدًا خَلِيُ لَا لَاتَّخَذْتُهُ خَلِيلًا وَلَكِنُ أُخُوَّةُ الْإِسُلامِ أَفْضَلُ)). يَعْنِي أَبَا بَكُرِ جَعَلَهُ أَبًّا يَعُنِي الْجَدَّ . 🍳

فوائد: (۱) اہل ارض میں سے کوئی بھی آپ کاخلیل نہ تھا (۲) آپ مطبع این سے سب سے زیادہ قریب ابو بکر زلانی تھے(٣) اعلیٰ کی بات بھی اعلیٰ ہوتی ہے۔

2954 حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا أَيُّوْبُ عَن ابْن أَبِي مُلَيْكَة

عَنِ ابُنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ أَبَا بَكُو جَعَلَ الْجَدَّ ابن زير رفائين كت بين سيّدنا ابوبمروالين في دادا كوباب قراردیاب

اشعث کہتے ہیں کہ سیدنا حسن باللہ نے کہا: ''دادا کے متعلق شرى طريقة گذر چكا ہے اور الوكر زائنيون نے داداكو باي قرار 2955ـ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ.... أُخْبَرَنَا الْأَشْعَتُ عَنِ الْحَسَنِ قَالَ إِنَّ

الُجَدَّ قَدُ مَضَتُ سُنَّتُهُ وَإِنَّ أَبَا بَكُرٍ جَعَلَ

صحیح: (2949) میں پیخفراً گزرچکی ہے۔

^{288/9} صحيح: أخرجه ابن منصور (42)و لمحلى 288/9

❸صحيح: أخرجه الحاكم4/339،والبخاري،في الفرائض،باب ميراث الجامع الأب والاحوة(6738)

[◘]صحيح: أخرجه البخاري، كتاب فضائل اصحاب النبي صلعم، باب قول النبي صلعم، وكنت متخذا خليلًا (3658) وعبدالرزاق(19049)

حَكُورٌ لِيَّنِينَ الْكَالِيمِينَ ٤59 كَالِ كَتَابِ الفُوائض كَابُ الْفُوائض كَابُ الْفُوائض

دیا مگرلوگوں نے خود مختاری پیند کی۔''

الُجَدَّ أَبًا وَلَكِنَّ النَّاسَ تَحَيَّرُوا.

[12] بَابِ فِي قُولِ عُمَرَ فِي الْجَدِّ دادا كِمتعلق سيّدنا عمر خلينيُهُ كَ قول كابيان

2956 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ غُييْنَةَ عَنْ عَلِيّ بْنِ مُسْهِرٍ

سیّدنا عاصم کہتے ہیں شعبی نے کہا: سیّدنا عمر رفیائیؤ سب سے پہلے شخص ہیں جو دادا کی حیثیت سے اسلام میں وارث

عَنُ عَاصِمٍ عَنِ الشَّعُبِيِّ قَالَ إِنَّ أَوَّلَ جَدٍّ وَرِثَ فِي الْإِسُلامِ عُمَرُ . ۞

فوائد: کسی بھی میدان میں اولیت کا حامل ہونا بیروجدالتفات اور باعث فضیلت ہوتا ہے اس اعتبار سے عمر دالتی صاحب فضیلت میں کہ اسلام میں سب سے پہلے بطور دادا وراثت پانے والے آپ ہی ہیں۔

2957 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا حَسَنٌ عَنْ عَاصِمٍ

هعمی کہتے ہیں سیّرنا عمر خالیّن پہلے شخص ہیں جو داوا کی حیثیت سے اسلام میں وارث بنائے گئے۔ انہوں نے اپنا مال کے لیا تو سیّدناعلی اور زید خالیّن نے ان کے پاس جاکر کہا: ''یہ آپ کے لئے جائز نہیں ہے آپ تو ایسے ہیں جیسے دو بھائیوں میں سے ایک بھائی۔''

عَنِ الشَّغِبِيِّ قَالَ أُوَّلُ جَدِّ وَرِثَ فِي الْإِسْلَامِ عُمَّرُ فَأَخَذَ مَالَهُ فَأَتَاهُ عَلِيُّ وَزَيْدٌ فَقَالَا لَيْسَ لَكَ ذَاكَ إِنَّمَا أَنْتَ كَأَحَدِ اللَّخَوَيْنِ . 6

2958 حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوْسٰي عَنْ عِيْسَى الْخَيَّاطِ

طعمی کہتے ہیں سیدنا عمر والفیزایک دو بھائیوں کے ساتھ دادا کوتقیم میں شریک کرتے تھے جب زیادہ بھائی ہوتے تو دادا کوتہائی دیتے تھے۔اوراولاد کے ساتھ چھٹا حصد دیتے تھے۔ عَنِ الشَّعُبِيِّ قَالَ كَانَ عُمَرُ يُقَاسِمُ بِالْجَدِّمَعَ اُلَّاخِ وَالْأَخَوَيُنِ فَإِذَا زَادُوْا أَعُطَاهُ الثَّلُثَ وَكَانَ يُعُطِيُهِ مَعَ الْوَلَدِ السُّدُسَ . ۞

🗈 ضعیف: کیکن اس معنی کا حسن کا منتجج تول این منصور (53) میں ہے۔ 🔹 جید: أحرجه عبدالرزاق (19041)

◘ صحيح بالشاهد: أخرجه البيهقي في الفرائض، باب كيفية المقاسمة بين الحد والإخوة والأخوات 249/6 اوروكيك المحلم /285

كتاب الفرائض كتاب الفرائض الكانينيَّ الكانينيُّ

2959 حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيْهِ

مروان بن حكم كت بي سيّدنا عمر فالنيّه بن خطاب جب زخي ہوئے تو لوگوں سے مشورہ کر کے دادا کے متعلق کہا: "دبیں نے دادا کے بارے میں ایک رائے اختیار کی تھی ،اگرتم جا ہوتو اس کی پیروی کروسیدنا عثان رفائند نے ان سے کہا: "اگر ہم آپ کی رائے مان لیں تو ٹھیک ہے کیونکہ یہ بھلائی کی بات ہے۔اور اگر شیخ ابو بمر و النین کی بات مانیں تو وہ بھی درست ہے کیونکہ ان کی رائے بہت اچھی تھی۔ عَنُ مَرُوَانَ بُنِ اللَّحَكَمِ أَنَّ عُمَرَ بُنَ الْخَطَّابِ لَمَّا طُعِنَ اسْتَشَارَهُمُ فِي الُجَدِّ فَقَالَ إِنِّى كُنْتُ رَأَيْتُ فِي الْجَدِّ رَأْيًا فَإِنْ رَأَيْتُمُ أَنْ تَتَّبِعُوهُ فَاتَّبِعُوهُ فَقَالَ لَهُ عُشْمَانُ إِنْ نَتَّبِعُ رَأْيَلَتَ فَإِنَّهُ رَشَدٌ وَإِنْ نَتَسِعُ رَأْىَ الشَّيْخِ فَلَنِعُمَ ذُو الرَّأْيِ

فوائد: (۱) اکابر کی غلط رائے کوغلط کہنا یہی طریقہ سلف ہے (۲) انکہ حق کی بھی بیشان ہے کہ وہ اینے ماننے والوں کو ہررطب ویابس ماننے کانہیں کہتے بلکہ انہیں چناؤ کااختیار دیتے ہیں (۳) اجتهاد برتنی فیصلہ ہی رشد وہدایت کامنع ہوتا ہے جب تک کہاس کا قرآن وسنت کے منافی ہونا ثابت نہ ہوجائے۔

[13].... بَابِ قَوْلِ عَلِيّ فِي الْجَدِّ دادا کے متعلق سیّدناعلی فالند کے قول کا بیان

2960 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةً عَنْ عَلِيّ بْنِ مُسْهِرِ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ

عَن الشَّعْبِيِّ قَالَ كَتَبَ ابْنُ عَبَّاسِ إلى فعلى سے مروى ہے كہتے ہيں سيّدنا ابن عباس فالنَّهُ نے بعرة سے سیّدنا علی ذائیة کولکھ کر جھیجا میرے باس دادا اور جه بھائیوں کا مسکلہ آیا ہے سیدنا علی والنونے خواب دیا: "دادا کو چھٹا حصہ دو۔ اور اس کے علاوہ کسی اور کو پچھ نہ

عَلِيّ وَابُنُ عَبَّاسِ بِالْبَصُرَةِ إِنِّى أُتِيثُ ببجدةٍ وَسِتَّةِ إِخُوَةٍ فَكَتَبَ إِلَيْهِ عَلِيٌّ أَنُ أعُبط الْبَحِلَّ سُبُعًا وَلَا تُعُطِهِ أَحَدًا

فوائد: باپ چونکه وراثت سے سدس، حصے کامستحق ہوتا ہے اس اعتبار سے علی والله نے دادا کوباپ کا قائم مقام مشہراتے ہوئے اسے سدس دینے کا حکم دیالیکن اس مسلے میں جرم وابقان نہ ہونے کے

[₫] اسناده حيد: أخرجه عبدالرزاق(19051)وابن حزم في المحلى283/9والحاكم40/4

صحيح: أحرجه البيهةي في الفرائض، باب كيفية المقاسمة بين الحد والإخوة والأخوات 249/6 وابن حزم في المحلى 284/9وابن ابي شيبه 293/11(11269)

المُعْلِينَ الْكَالِيْفَةُ الْكَالِيْفِينَا الْكِلْلِيْفِينَا الْكَالِيْفِينَا الْكَالِيْفِينَا الْكِلْلِيْفِينَا الْكِلْلِيْفِينَا الْكِلْلِيْفِينَا الْكِلْلِيلِينِينَا الْكِلْلِيلِينِينَا الْمُؤْلِقِينَا الْمُؤْلِقِيلِي الْمُؤْلِقِينَا الْمُؤْلِقِينَا الْمُؤْلِقِيلِي الْمُؤْلِقِيلِي الْمُؤْلِقِيلِي الْمُؤْلِقِيلَا الْمُؤْلِ كتاب الفرائض 561

باعث متقل ابیا کرنے سے روک دیا (واللہ اعلم)

2961 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْم حَدَّثَنَا حَسَنٌ

عَنُ إِسُمْعِيْلَ عَنِ الشَّعُبِيِّ فِي سِتَّةٍ إنْحُوَحةٍ وَجَدٍّ قَالَ أَعُطِ الْجَدَّ السُّدُسَ قَالَ أَبُو مُحَمَّدٍ كَانَّهُ يَعْنِي عَلِيًّا

الشُّعُبيُّ يَرُويهِ عَنُ عَلِيٌّ ﴿ وَاللَّهُ ۗ . ٥

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُن سَلَمَةَ أَنَّ عَلِيًّا كَانَ

2962 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ

سيّدنا عبدالله بن سلمة وفالنّهُ كمت بي كهسيّدنا على وفالنهُ دادا کو بھائیوں میں چھٹے جھے تک شریک کرتے تھے۔

اساعیل کہتے ہیں قعمی نے چھ بھائیوں اور دادا کے متعلق

كها: " دادا كو چھٹا حصه دو_" ابومحد (داري) كہتے ہيں: گويا

کہ معنی علی مناتنہٰ کے قول کی طرح مراد لیتے ہیں۔

يُسجُعَلُ الْجَدَّ أَخُا حَثْنِي يَكُوْنَ سَادسًا. 🏻

ف اند: دادا کو باب کے قائم مقام سمجھا جائے تب بھی اور اگریا نچ بھائیوں میں چھٹا دادا ہوتب بھی دونوں قتم کے مؤقف رکھنے والے علماء کی مراد برآتی ہے کہ دادا کو چھٹا حصہ دے دیتے ہیں اصل میں دادا اور بھائیوں میں تقسیم مختلف فیہ اور علماء فرائض کا خاص موضوع ہے امام ابوصنیفہ دادا کو باپ کامقام دیتے ہوئے داداً کی موجودگی میں باب کی طرح بھائیوں کومجبوب قرار دیتے ہیں جبکہ ابویوسف اور محمد اور مالک وشافعی کامؤ تف اس کے برعکس ہے۔ وہ دادا کی موجودگی میں بھائیوں کوحصہ دینے کے قائل ہیں یعنی یہ ایک صورت ہے جس میں دادا کا حکم باپ سے پھومختلف ہوتا ہے۔ اس کی توضیح سچھ یوں ہے جب دادا اور بھائیوں کے ساتھ کوئی صاحب فرض ،حصہ دار نہیں ہے تو دادا ان دومعاملوں میں سے افضل کاحقدار ہوگا(۱) جمیع مال کا ثلث، تہائی حصہ (۲) بھائیوں کے ساتھ برابر کی تقتیم اور موٹوں کے ساتھ ان کے بالقابل دوگنا حصہ۔ اورا گر کوئی حصہ دار بھی ہوتو پھر دادا کوتین امور میں سے افضل کا اختیار ہوگا۔ (۱) جمیع مال کا سدس (۲) اصحاب الفروض کے بعد باقی ماندہ مال سے ثلث تہائی (۳) بھائیوں کے ساتھ شراکت ۔

2963- أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَان حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا يُونُسُ

[€] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 293/4(11268)

[◙]حسس: أحرجه ابن ابي شيبه 293/4(11268)والبيه قي في الفرائض 249/6،بـاب كيـفية المقاسمة بين الجدو الإخواة والأخوات وابن حزم في المحلى 284/9

الفرائض الكاليمين الكاليمين 562 من كتاب الفرائض كالمستخطئة المستخطئة المستخط المستخطئة المستخطئة المستخطاء المستخط

سیدنا حسن بنائنۂ کہتے ہیں کہ سیدنا علی بنائنۂ دادا کو بھائیوں کے ساتھ چھٹے جھے تک شریک کرتے تھے۔

عَنِ الْحَسَنِ أَنَّ عَلِيَّا كَانَ يُشَرِّكُ الْجَدَّ مَعَ الْإِنُوةِ إِلَى السُّدُسِ. • • الْجَدَّ مَعَ الْإِنُوةِ إِلَى السُّدُسِ. • •

فوائد: سدس ، چھے جھے تک شریک کرنے سے مرادیہ ہے کہ اگر بھائیوں کے ساتھ دادا کا حصہ سدس سے کم ہوتا تو صدس تک ہی دیتے سدس سے نیادہ بن رہا ہوتا تو سدس تک ہی دیتے زائد ندرتے۔

2964 حَدَّثَنَا هَاشِمُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ

عبدالله بن سلمة رفائية كتب مين كه سيّدنا على رفائقة دادا كو بهائيون مين چيفے حصّے تك شريك مشهراتے تھے۔''

عَنُ عَبُدِ اللهِ بُنِ سَلَمَةَ قَالَ كَانَ عَلِيٌ يُشَرِّكُ بَيُنَ الْجَدِّ وَالْإِخُوَةِ حَتَّى تَكُونَ سَادسًا.

2965 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الْأَعْمَشِ.....

عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ كَانَ عَلِى يُشَرِّكُ الرَاهِمِ كَبِحَ بِي سيّدَ الْمُحَدَّ إِلَى سِتَّةٍ مَعَ الْإِخُوةِ يُعُطِى كُلَّ حِصْحَدَ تَصَدَّ الْمَكِلَ مَا حِبِ فَرِيطَةٍ فَرِيطَةٍ وَلَا يُورِّتُ أَخًا ديت تصدا خيا في بِعَ مَعَ جَدٍ وَلَا أُختًا لِأُمْ وَلَا يَزِيدُ الْجَدَّ بنات تصدا ورا ولا و مَعَ الْوَلَدِ عَلَى السَّدُسِ إِلَّا أَنُ يَكُونَ نَهُ وَيَ ْ بَعَالَى كَ عَلَى السَّدُسِ إِلَّا أَنْ يَكُونَ الرَّحِيقِ بَعَالَى كَ عَلَى السَّدُسِ إِلَّا إِلَيْ مَعَ أَخِرِلًا إِلَى الْمَالَى عَلَى السَّدُ مَنَ اللَّهُ وَالْمِسُفَى وَالْمَعْ فَى الْمَحِلِ الْمَالَى عَلَى عَلَى السَّلَى عَلَى الْمَعْ فَى الْمَعْ فَى الْمَعْ وَالْمَعْ فَى الْمَعْ فَى الْمَعْ فَى الْمَعْ فَى الْمَعْ فَى الْمُعْ فَى الْمَعْ فَى الْمَعْ فَى الْمَعْ فَى الْمَعْ فَى الْمَعْ فَى الْمُعْ فَى الْمَعْ فَى الْمُعْ فَى الْمُعْ فَى الْمُعْ فَى الْمُعْ فَى الْمُعْ فَى الْمَعْ فَى الْمُعْ الْمُعْ الْمُعْ فَى الْمُعْ الْمُ

ابراہیم کہتے ہیں سیّدنا علی فٹائٹڈ دادا کو بھائیوں کے ساتھ چھے حصہ تک شریک کرتے تھے۔ ہر حصہ دارکواس کا حصہ دیتے تھے۔ اخیانی بھائی بہن کودادا کے ساتھ وارث نہیں بناتے تھے۔ اور اولا د کے ساتھ دادا کو چھٹے حصہ سے زیادہ نہ دیتے تھے۔ گر اس وقت کہ ان کے ساتھ کوئی اور بھی ہو اور حقیق بھائی کے ساتھ علاتی بھائی کو تقسیم میں شریک اور حقیق بھائی کے ساتھ علاتی بھائی کو تقسیم میں شریک کرتے تھے۔ اور جب حقیقی بہن اور علاقی بھائی ہونا تو بہن کونصف دادا کو وسرے نصف میں نصف دادا اور بھائی میں تقسیم کرتے۔ جب بھائی اور بہنیں ہوتی تو انہیں جھٹے حصے تک دادا کے ساتھ شریک کرتے تھے۔

إِلَى السُّلُسِ . ﴿ الْمُعَلِي السُّلُسِ . ﴿ الْمُعَلِي ﴿ 284/9 صحيح: أخرجه ابن حزم في المحلي ﴿ 284/9

عسن: بيجهِ (2963) مِنْ كُرْرِيكَ بـ

ت ... ك-حيح: أخرجه عبدالرزاق(19067)وابن ابي شيبه 298/11(11282)والبيه قي في الفرائض،باب كيفية المقاسحة بين الحدو الإخوة والأخوات 249/6

العَلَمْ الْكَالِيْدِينَ الْكَالِيْدِينَ الْكَالِيْدِينَ الْكَالِيْدِينَ الْكَالِيْدِينَ الْكَالِيْدِينَ الْكَالِيْدِينَ الْكَالِيْدِينَ الْكَالِيْدِينَ الْكِلْوَانِينَ الْكِلْوَانِينَ الْكُلُولِينِ الْفُوانِينَ الْكُلُولِينِ الْفُوانِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِي الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِي الْمُؤْلِينِي الْمُؤْلِينِي الْمُؤْلِينِي الْمُؤْلِينِي الْمُؤْلِينِي الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِي الْمُؤْلِينِي الْمُؤْلِينِي الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِي الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِي الْمُؤْلِي الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِي الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِي الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِينِ الْمُؤْلِي الْمُؤْلِي الْمُؤْلِي الْمُؤْلِي الْمُؤْلِي الْمُؤْلِي الْمُؤْلِي الْمُؤْلِي الْمُؤْلِي الْمُو

[14_].... بَابِ قَوْلِ ابْنِ عَبَّاسِ فِی الْجَدِّ دادا کے متعلق ابن عباس خالٹیۂ کے قول کے بیان

2966 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوْسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنِ الْعَبْسِيِّ هو عبدالله بن خالد....

سیدنا عبدالرحن بن معقل کہتے ہیں کہ ابن عباس زبالی کے دادا کے متعلق پوچھا گیا۔ تو انہوں نے کہا: تمہارے کون سے والدسب سے بڑے ہیں میں نے کہا: ''سیّدنا آ دم علیہ السلام۔'' انہوں نے کہا: تم نے سانہیں اللہ تعالی فرما تا ہے: ''اے آ دم کے بیٹو۔''

2967 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ إِسْمَعِيْلَ بْنِ سُمَيْعِ

عَنُ رَجُلٍ عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ قَالَ لَوَدِدُتُ أَنِّى وَالَّذِينَ يُعَبَّاسٍ قَالَ لَوَدِدُتُ أَنِّى وَالَّذِينَ يُعَالِفُونَنِي فِي الْجَدِّ تَكَاعَنَا أَيُّنَا أَسُواً قَوْلًا . ﴿
تَكَاعَنَا أَيُّنَا أَسُواً قَوْلًا . ﴿

ایک آ دمی سے نقل کیا گیا ہے کہ ابن عباس ڈٹائٹو نے کہا: ''میرا دل چاہتا ہے میں اور وہ لوگ جو دادا کے متعلق میری مخالفت کرتے ہیں دونوں آپس میں لعان کریں کہ کس کا

قول براہے۔''

2968 حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا وَهيب

حــدثنا ابن طاووس ، عن أبيه عَنِ ابُنِ عَبَّاس : أَنَّهُ جَعلَ الُجَدَّ أَبًا . ©

طاؤس نقل کرتے ہیں کہ ابن عباس نے دادا کو باپ قرار

ديا_

فوائد: معلوم ہوا ابن عباس رہ اوا کو باپ کے قائم مقام قرار دیتے تھے اور اس میں بہت تخق کرتے تھے۔

[15].... بَابِ قَوُلِ ابْنِ مَسْعُودٍ فِي الْجَدِّ دادا كِمتعلق ابن مسعود كِقول كابيان

2969_ أَخْبَرَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ

• منقطع ضعيف: عبدالله بن عباس سي ساع ثابت نبين أحرجه ابن ابي شيبه 289/11(11254) والبيه قبي في الفرائض، باب من لم يورث الإحوة مع الجد6/624

• صحيح بالشاهد: أخرجه عبدالرزاق(19024)و سعيد بن منصور(37)

3صحيح: أحرجه عبدالرزاق(19055-1905)

الفرائض كالمرافض كالم

ابواسحاق کہتے ہیں میں شریح کے پاس اپنی قوم کی ایک معزز عورت کی وراثت کے متعلق یوچھنے گیا۔ جس نے شوہر مال علاقی بھائی اور دادا حصور اتھا اور شریح کے یاس عامر ابراہیم اور عبد الرحمٰن بن عبد الله موجود تھے۔شریح نے مجھ سے یو جھا کیا کوئی بہن بھی ہے میں نے کہا: ''میں۔'' انہوں نے کہا: "شوہر کے لئے نصف اور ماں کے لئے تہائی۔''میں نے بہت کوشش کی کہ مجھے کوئی اور جواب بھی دیں گے گر انہوں نے صرف یہی جواب دیا۔ تو ابراہیم ا عامر اور عبدالرحمٰن بن عبدالله نے کہا: '' تمہارے جبیا مشکل فرائض کا مسکلہ کسی نے نہ دیا۔ ' میں پھر عبیدہ سلمانی خانین کے یاس گیا اور کہا جاتا تھا کوفہ میں عبیدة اور حارث اعورہے بڑھ کر فرائض کا مسئلہ کوئی اور نہیں جانتا۔ اورعبیدہ معجد میں بیٹھتے تھے۔ جب شریح کے پاس کوئی الیا مسكة آتا جس ميں دادا جوتا تھا تو وہ اسے عبيدہ كے ياس بھیج دیتے تھے وہ حصے بنا دیتے تھے۔ میں نے ان سے يوچها تو انہوں نے كہا: "أكرتم جابوتو ميں اس كمتعلق مہیں عبداللہ بن مسعود کے قول کے مطابق جھے بتا دوں انہوں نے اس طرح حصے مقرر کئے۔ نصف لینی تین حصے شوہر کے لئے باتی کا تہائی ماں کے لئے یعنی اصل مال کا چھٹا حصہ اور بھائی کے لئے ایک حصہ اور دادا کے لئے بھی ایک حصد ابوالحق کہتے ہیں: جد سے صرف وادا مراد ہیں۔

عَنُ أَبِي إِسُحٰقَ قَالَ دَخَلُتُ عَلٰى شُرَيُح وَعِنُدَهُ عَامِرٌ وَإِبْرَاهِيمُ وَعَبُدُ الرَّحْمَن بُنُ عَبُدِ اللَّهِ فِي فَريضَةِ امْرَأَةٍ مِنَّا الْعَالِيَةِ تَرَكَتُ زَوُجَهَا وَأُمُّهَا وَأَخَاهَا لِأَبِيُهَا وَجَـدَّهَا فَقَالَ لِي هَلُ مِنْ أُخُتٍ قُلُتُ لَا قَالَ هَـلُ مِنُ أُخُتِ قُلُتُ لَا قَالَ لِلْبَعُل الشَّـطُرُ وَلُِلُامٌ الثُّلُثُ قَالَ فَجَهِدُتُ عَلَى أَنْ يُجِيبَنِي فَلَمُ يُجِبُنِي إِلَّا بِذَٰلِكَ فَقَالَ إِبْرَاهِيمُ وَعَامِرٌ وَعَبُدُ الرَّحُمَن بُنُ عَبُدِ اللُّهِ مَا جَاءَ أَحَدٌ بِفَرِيضَةٍ أُعُضَلَ مِنُ فَريضَةٍ جنُتَ بِهَا قَالَ فَأْتَيُتُ عَبِيدَةَ السَّلُمَانِيَّ وَكَانَ يُقَالُ لَيْسَ بِالْكُوفَةِ أَحَدٌ أَعُلَمَ بِفَرِيضَةٍ مِنُ عَبيدَةَ وَالُحَارِثِ الْأَعُورِ وَكَانَ عَبِيدَةُ يَجُلِسُ فِي الْمَسُجِدِ فَإِذَا وَرَدَتُ عَلَى شُرَيُح فَرِيضَةٌ فِيهَا جَدٌّ رَفَعَهُمُ إلَى عَبِيلَةً فَفَرَضَ فَسَأَلُتُهُ فَقَالَ إِنَّ شِئْتُمُ نَبَّأْتُكُمُ بِفَرِيضَةِ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ مَسُعُودٍ فِي هَـذَا جَعَلَ لِلزَّوُجِ ثَلاثَةَ أَسُهُم النِّصْفَ وَلِلْأُمْ ثُلُثُ مَا بَقِيَ الشُّدُسُ مِنُ رَأْس الْمَالِ وَلِلْأَحْ سَهُمٌ وَلِلْجَدِّ سَهُمٌ قَالَ أَبُو إِسُلْحَقَ الْجَدُّ أَبُو الْأَبِ. •

الكَالِيْكِينَ الْكَالِيْكِينَ الْكَالِيْكِينَ 565 كَالِ الفرائض كَاب الفرائض كَاب الفرائض كَاب الفرائض كَاب الفرائض

فواند: (۱) انشراح صدرنه ونے کے باعث عالم جواب دینے سے احر از کرسکتا ہے بشرطیکہ کوئی اورعالم قریب موجود ہوجس سے لوگ دریافت کر سکتے ہوں ورنہ عالم کے ذیمے اجتہاد لازم ہے (۲) عبيده رايسيد كاطرح مسئلے كى ذمه دارى خود لينے كى بجائے كسى دوسرے كاقول جوكه اقرب الى الصواب ہوا سے بیان کردینا زیادہ مناسب ہے(۳) بیر کتاب الفرائض کے شروع میں گزرنے والامسئله غراوین ہے البتہ علاتی بھائی کا واسطہ زیادہ ہے جے ابن مسعود رہائٹھ کے قول کے موافق باپ کے برابر ایک حصہ ملے گا۔

> [16] بَابِ قَوُل زَيْدٍ فِي الْجَدِّ دادا کے متعلق سیّدنا زید خالٹیئر کے قول کا بیان

> > 2970 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَان حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا يُو نُسُ

عَن الْعَسَن أَنَّ زَيْدُا كَانَ يُشَرَّكُ سيِّدنا حسن مِن اللهُ كَتِي بين كهسيِّدنا زيد مِن اللهُ دادا كو بها يُول

الُجَدَّ مَعَ الْإِخُوةِ إِلَى الثَّلْثِ. • كَمَاتُهُ تِهَائَى تَكُثَر بَكِ كَرِيّ تِهِد

فسوائسد: زیدین ثابت رفاینهٔ دادا اور بها ئیون مین مشتر که میراث تقسیم کرتے اس طرح که دادا

كاحصة ثلث 1/3 سي كم نه بو (مزيد ديكھيے فوائد حديث نمبر 2962)

2971 - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ

ابراہیم کہتے ہیں کہ زید بن ثابت دادا کو بھائیوں کے ساتھ يُقَاسِمُ بِالْجَلِّ مَعَ ٱلْإِخُوةِ إِلَى الثُّلُثِ ثُمَّ تَهَالَى حصه يرتقتيم مِن شريك كرتے تھے پھراہے كم نه

عَنُ إِبُرَاهِيْمَ عَنُ زَيْدِ بُن ثَابِتِ أَنَّهُ كَانَ لَا يُنقصُهُ ٥

2972 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُغِيرَةِ عَنْ عِيسَى بْن يُونُسَ

اساعیل کہتے ہیں سیرناعامر وہائٹیزنے کہا:'' دادا کے متعلق وہ بات اختیار کروجس پرلوگوں کا اتفاق ہواہے۔'' ابو محمد کہتے ہیں یعنی سیّدنا زید کا قول۔ عَنُ إِسْمَعِيلَ قَالَ قَالَ عُمَرُ خُذُ مِنُ أَمُو الُجَدِّ مَا اجْتَمَعَ النَّاسُ عَلَيْهِ قَالَ أَبُو

مُحَمَّد يَعُنِي قَوُلَ زَيْدٍ . 3

فواند: (۱) غیرمبین مسلے میں جہور کی رائے کور جے دی جاسکتی ہے (۲) اہل علم زید رفائی کے

◘ صحيح الى الحس: أخرجه ابن ابي شيبه 11/295(11274)

◘ سند: صحيح اني ابراهيم أخرجه عبدالرزاق(19063)وابن ابي شيبه 11/11(11309)

❸صحيح: أخرجه مالك في الفرائض،باب ميراث الحد(2)وعبدالرزاق(19042)وابن ابي شيبه 11/ 329-320 (11316)

كتاب الفرائض المتان الدادي

مؤقف کوہی ترجیح گردانتے ہیں۔

[17].... بَابِ الْأَكُدَرِيَّةِ زَوُجٌ وَأَخُتُ لِأَبِ وَأُمَّ وَجَدُّ وَأُمُّ شو ہر' حقیقی نہن وادی' اور ماں کے متعلق ً

2973 حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ عَامِر عَنْ هَمَّامٍ

عَنُ قَتَاصَةَ أَنَّ زَيْدَ بُنَ ثَابِتٍ قَالَ فِي أُخُتٍ وَأُمَّ وَزَوْجِ وَجَدٍّ قَالَ جَعَلَهَا مِنُ سَبُع وَعِشُرِينَ لِلْأُمِّ سِتَّةٌ وَلِلزَّوُجِ تِسُعَةٌ وَلِلْجَدِّ ثَمَانِيَةٌ وَلُلْأَخُتِ أَرُبَعَةٌ . ٥

سيّدنا قادة والله كت مين زيد بن ثابت والله ني في عشوم مال حقیق بہن اور دادا کے متعلق ستائیس سے تقیم کر کے مال کو چە ھے' شوہر کونو' دادا کوآٹھ اور بہن کو جار ھے دیئے۔

ف اند : (۱) اس مسئلے کوا کدر بداس لیے کہا جاتا ہے کہاس نے زید را انتخاب کے مسلک کو مکدر، گدلا کرویا ہے کیونکہ وہ اس مسئلے کے علاوہ کہیں بھی دادا کے ساتھ بہن کا حصہ مقرر نہیں کوتے بلکہ میراث نہ بیخنے کی صورت میں بھائی بہن کو گرادیتے ہیں پھر دوفرضوں کے جمع ہونے پر انہیں عصبہ کی صورت میں سب میں تقسیم کردیا۔ یا پھراس لیے کہ مرنے والی کاتعلق اکدر قبیلے سے تھا۔ واللّٰداعلم۔ (۲) مسئلے کی صورت یوں ہوگی ایک عورت خاوند ، ماں جقیق بہن اور دادا چھوڑ کرفوت ہوجاتی ہے تواس میں مسلمہ 6سے بنے گا جو کہ نوکی طرف عول موكار بهن اوردادامي ﴿لِلنَّ كرِمِفُلُ حَظِّ الْأُنْقَيْنِ ﴾ كمطابق تقسيم كرين توكسرواقع بينسب تخالف کی وجہ سے تین کو نو سے ضرب دی توستائیس حاصل ہواہروارث کے جھے کو3سے ضرب دیں تو ہروارث کا حق فکل آئے گا۔اس طرح بہن اور دادا کو جار ملے جب تین سے ضرب دی تو 12 ہوگئے اب دادا کو8اور بہن کو4 حصے ملیں گے اس کی صورت بول ہوگی۔

| 27 | 9 | 6 | مستله بناہے |
|----|---|---|-------------|
| 9 | 3 | 3 | خاوند |
| 6 | 2 | 2 | ماں |
| 4 | 3 | 3 | بهن |
| 8 | 1 | 1 | راوا |

567 كتاب الفرائض

اس مسلے کومنفصل بیان کرنے کی وجہ یہ ہے کہ اصولا دادا کے ساتھ بہن صاحبہ فرض نہیں ہوتی بلکہ وہ اسے بھائی کی طرح عصبہ ہوتی ہے مگراس مسئلے میں اسے صاحبہ فرض قرار دے کرنصف تر کہ دیا گیا ہے اور پھر دونوں کے حصے ملا کرتقتیم کر لیے گئے ہیں اس طرح بہن نصف کی بجائے جیمنے جب کہ دادا تہائی کاوارث ہوا۔

> [18].... بَابِ فِي الْجَدَّاتِ دادیوں کے تعلق

> > 2974 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا الْأَشْعَثُ

عَن ابُن سِيْرِيْنَ عَنِ ابُن مَسْعُودٍ قَالَ ابن سيرين كتب بي ابن مسعود والله ن كها: "سب سے إِنَّ أُوَّلَ جَلَّةٍ أُطُعِمَتُ فِي الإسكام من حسد ديا كيا وه باپ کی مان تھی اور اس کا بیٹا زندہ تھا۔''

سَهُمًا أُمُّ أَبِ وَابُنُهَا حَيٌّ. •

فوائد: سندأ الرجه بيرصديث ضعيف بليكن ندكوره مسئل مين اختلاف بع عبدالله والنفؤ سعاس کے موافق مروی ہے جیسا کہ ابوعمر الشیبانی کہتے ہیں (کان بورث) کے عبداللد فالٹی دادی کو باپ کی موجودگی میں وراث بناتے تھے لیکن راج بات اور جمہور کاموقف یہی ہے کہ باپ کی موجودگی میں دادی وارث بنے گی_(والله اعلم)

2975 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا شَرِيْكُ عَنْ لَيْثِ عَنْ طَاوْسِ

عَنِ ابُنِ عَبَساسِ أَنَّ النَّبِيَ عَلَيْ أَطْعَمَ سيّدنا ابن عباس فِالنَّيْ كَبْتِ بيس كه نبي سَيَعَ المَا عادى كو حَدَّةً سُدُسًا ٥ چھٹا حصہ دیا۔

فواند: دادیوں کے جھے بارے کتاب وسنت سے کوئی بھی صحیح شبوت نہیں ملتا بعض روایات میں سدس کاذکر آتا ہے کہ آپ مطفع اللے اور بوں کو چھٹا حصہ دیا جو کہ ہیں توضعیف بہر حال ائمہ ومحدثین نے اسی کوتر جنح دی ہے۔

2976 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ ابْنِ جُرَيْجِ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ بْنِ مَيْسَرَةَ

❶ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 331/11(11348)وابن منصور(109)والبيهقي في الفرائض 226/2،باب لا ميرث مع الأب ابواه اس مساله بارے امام ترفدی فرماتے ہیں بعض صحابہ تک التیم نے بیٹے کے ہوتے ہوئے داری کو وارث بنایا ہے اور بعض

[◙]ضعيف: أخرجه ابن ماجه، كتاب الفرائض، باب ميراث الحدة(2725) وابن ابي شيبه 331/11 (11320) والبيهقي في الفرائض، باب فرائض الجدة والجدتين4/6

الكانتين الكانتين المالية 568 کی کتاب الفرائض کی

سعید بن مستب واللیم کہتے ہیں کہستدنا عمر والنوز نے دادی کواس کے بیٹے کے ساتھ وارث بنایا۔

2977 حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ أَخْبَرَنِيْ مَنْصُورُ بْنُ الْمُعْتَمِرِ قَالَ

سيّدنا ابرائيم وفائد كت بن كدرسول الله طفائية ن تين دادبوں کو چھٹا حصہ دیا۔ میں نے ابراہیم سے یوچھا: وہ کون تھیں؟ انہوں نے کہا: '' دو تیرے باپ کی طرف سے اورایک تیری ماں کی طرف ہے تھی۔''

سَمِعْتُ إِبُرَاهِيُمَ قَالَ أَطُعَمَ رَسُولُ اللُّهِ عِنْ ثَلاث جَدَّاتِ سُدُسًا قَالَ قُلُتُ لِإِبْرَاهِيْمَ مَنْ هُنَّ قَالَ جَدَّتَاكَ مِنُ قِبَلِ أَبِيُكَ وَجَدَّتُكُ مِنُ قِبَل أُمّلك 🍳

عَنُ سَعِيْدِ بُنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ عُمَرَ وَرَّكَ

جَدَّةً مَعَ ابنها . ٥

فوائد: حدیث میں ضعیف ہونے کے باوجود عمل اس پر ہے کہ اگر ایک ہی رہے میں ایک سے زیاده دادیاں جمع ہوجا کیں توسدس ان میں برابرتقسیم ہوگا۔

2978 حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ

إِبُواهِيْمَ قَالَ أَنْبَأْنِي الْحَسَنُ قَالَ تَوِتُ الرابيم كت بي سيّدنا حسن وْلِينْدُ ف كها: "وادى اين بين کی زندگی میں وارث بنے گی۔''

الُجَدَّةُ وَابُنُهَا حَيٍّ . ٥

2979 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ

عَنُ دَاؤَدَ عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ لَا تَوِكُ أُمُّ داوَد كَتِ بِي ضعى نے كہا: "ميت كى يرناني وارث نہيں أَب الْأُمَّ الْبُنُهَا الَّذِى تُدُلِى بِهِ لَا يَرِثُ بنے گی جس بیٹے کی وجہ سے وہ میت سے تعلق رکھتی ہے وہ تو وارث ہوتانہیں تو اس کی ماں کسے وارث ہو گی؟'' فَكَيُفَ تُرِثُ هِيَ . ٥

[◘]صحيح: أحرجه عبدالرزاق(19094) وابن منصور (90) وابن ابي شيبه 331/11 (11347) والبيه قي في الفرائض، باب لا لمث مع الأب ابواه 6/226)

[◘]معضل ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 322/11(11323)والبيهقي في الفرائض،باب تو ريت،ثلاث جدات متحاذيات أواكثر 231/6

[🗗] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 11353/11) وابن منصور (97) وابن ابي حزم في المحلّي . 281/9 و ديكهني سنن البيهقي6/226

[🗗] صحيح: أخرجه البيهقي في الفرائض، باب توريت ثلاث الجدات المتحاذيات أرأكثر 6/236وابن منصور (89)وابن حزم 9/275

المُلاَ المُعَالِقُونَ الْكَالِمِينَ الْكَالِمِينَ الْكَالِمِينَ الْكَالِمِينَ الْعَرائض 569 الله الفرائض الله

فوائد: دادی کے وارث بننے کے لیے الجد ة الصحیحة ہونا لازم ہے یعنی صحیح دادی به ہراس دادی پر بولا جاتا ہے جس کے اورمیت کے درمیان جد فاسد یعنی فاسد دادا نہ ہوجد فاسد اس دادے پر بولا جاتا ہے جس کے اورمیت کے درمیان مونث ہومثلاً اُب الاً م یعنی نانا اب نانے کی ماں وارث نہیں بن سکتی ہے۔ 2980- أَخْبَرَنَا أَبُوْ مَعْمَرِ عَنْ إِسْمَعِيْلَ ابْنِ عُلَيَّةَ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ عَلْقَمَةَ عَنْ حُمَيْدِ بْن هكلال.....

ابودهاء كہتے ہيں عمران بن حصين والله نے كها: "دادى اسنے بیٹے کی زندگی ہی میں دارث سنے گی۔" عَنُ أَبِى الدَّهُ مَاءِ عَنُ عِمُ رَانَ بُن حُصَيُنِ قَسَالَ تَسرِكُ الْجَدَّةُ وَابُنُهَا

فوائد: يحديث ال بات كى تقديق كرتى ج جوكه امام ترندى رايعيد ن فرمايا "وقد ورث بعض اصحاب النبي على الجلمة مع ابنها ولم يورثها بعضهم. "الترمذي مع التحفد 6/2880 بعض صحابہ (دادی کو) اس کے بیٹے کی موجودگی میں وارث بناتے ہیں جب کہ بعض نہیں۔ نیز مالکی وشافعی جنفی اور عنبلی ایک روایت کے مطابق۔ دادی کواس کے بیٹے کی مموجودگی میں محروم گردانتے ہیں اور یہی بات ان شاء الله درست ہے۔

> [19] بَابِ قَوْلِ أَبِي بَكُر فِي الْجَدَّاتِ دادیوں کے متعلق سیّدنا ابو بکر رہائٹیز کے قول کا بیان

> > 2981- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا الْأَشْعَثُ

عَنِ الزُّهُويِّ قَالَ جَائَتُ إِلَى أَبِي بَكُو زَبرى كَمِتْ بِي سَيْدِنَا الوبكر فِالنَّفَ كَ ياس أيك دادى آكى جوباپ کی مان تھی یا مال کی مان تھی۔اس نے کہا: میرا بوتا یا میرا نواسافوت ہو گیا ہے اور مجھے پتہ چلا ہے کہ میرا بھی حصہ بے مجھے کیا ملے گا؟ سیّدنا ابو بکر رہالیّ نے کہا: میں نے کچھ فرمایا ہے مگر میں لوگوں سے بوچھوں گا جب ظہر کی نماز یڑھ لی تو انہوں نے کہا:تم سے کس نے سنا ہے کہ رسول

جَلَّةً أُمُّ أَبِ أَوْ أُمُّ أُمَّ فَقَالَتُ إِنَّ ابُنَ ابُنِيُ أُو ابْنَ ابُنَتِيُ تُؤُفِّيَ وَبَلَغَنِيُ أَنَّ لِيُ نَصِيبًا فَمَا لِي فَقَالَ أَبُو بَكُرِ مَا سَمِعُتُ رَسُولَ اللُّهِ عِنْ قَالَ فِيهَا شَيْئًا وَسَأَسُأَلُ النَّاسَ فَلَمَّا صَلَّى الظُّهُرَ قَالَ أَيُّكُمُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ فِي

حرك سِينَ الكَارِيمِينَ ٢٥٥ كر كتاب الفرائض ٢٥٠

فواند: (۱) جس مسئلے بارے اشکال ہووہ الل علم سے دریافت کرلینا چاہیے (۲) اہل علم کی میہ شان ہے کہ کسی مسئلے بارے جزم نہ ہونے پروہ تکلف برسے کی بجائے اس کی تحقیق کرنا اور سائل سے وقت لے لینا بہتر خیال کرتے ہیں (۳) مغیرہ خلاف کی تقدیق کا چاہنا اس بنا پرنہیں تھا کہ خبرواحد ججت نہیں ہوتی بلکہ مسئلے کی حساسیت کی بنا پر اور بھی بھار پیش آنے کی بنا پر اس بارے مزید دریافت کیا گیا ور نہ رمضان کا روزہ ایک آدمی کی گوائی پر رضاعت کو تسلیم کرلینا اور عمر شائن کا عبدالرحمٰن شائن کے گوائی پر مجوس سے جزید لینا ایسے مسائل سے بخوبی اندازہ کیا جاسکتا ہے کہ خبرواحد اسلام میں جت ہے (۳) جب ایک رہے میں جد ایک رہے میں جد ایک رہو وہ جھی سدی میں شریک ہوں گی۔

[20] بَابِ قُولِ عَلِيٍّ وَزَيُدٍ فِي الْجَدَّاتِ وَادِينِ كَمِ الْجَدَّاتِ وَادِينِ كَمِتعلق سيِّدنا على خِالنَّيْرُ اورسيِّدنا زيد خِالنَّيُرُ كَ قُول كابيان

2982 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا الْأَشْعَثُ

حَكْلُ لِيُنْ الْكَالِيمُونَةُ الْكَالِيمُونَةُ الْكَالِيمُونَةُ الْكَالِيمُونَةُ الْكَالِيمُ الْعَلَى الْعَلَ

قعمی کہتے ہیں سیّدنا علی اور زید نے کہا:''جب دادیاں برابر ہوں تو تین دادیاں وارث ہیں۔ دو دادیاں میت کے باپ کی باس کی ماں اور باپ کی ماں۔ اور باپ کی ماں کی دادی اگر ان میں سے کوئی زیادہ قریمی ہوتو اور رشتہ داروں کا حصہ ہوگا۔

عَنِ الشَّعُبِيِّ عَنُ عَلِيٍّ وَزَيُدٍ قَالَا إِذَا كَانَتُ الْجَدَّاتُ سَوَاءً وَرِثَ ثَلَاثُ جَدَّاتٍ جَدَّتَ الَّبِيهِ أُمُّ أُمِّهِ وَأُمُّ أَبِيهِ وَجَدَّدَهُ أُمِّهِ فَإِنْ كَانَتُ إِحَدَاهُنَّ أَقْرَبَ فَالسَّهُمُ لِذَوى الْقُرُبِي . •

2983 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا حَسَنٌ عَنْ أَشْعَتْ

شعبی کہتے ہیں کہ سیّد ناعلی والفید اور زید و فائید دادی لیعنی باپ کی مال کو باپ کے ساتھ وارث نہیں تھہراتے تھے۔ عَنِ الشَّعُبِيِّ عَنُ عَلِيٍّ وَزَيُدٍ أَنَّهُمَا كَانَا لَا يُورَثَانِ الْجَدَّةَ أُمَّ اللَّبِ مَعَ اللَّبِ. ٥

2984 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُغِيرَةِ عَنِ ابْنِ الْمُبَارَكِ عَنْ مَعْمَرِ

عَنِ الزُّهُوِيِّ أَنَّ عُثُمَانَ كَانَ لَا يُوَرِّثُ الُجَدَّةَ وَابْنُهَا حَيُّ . •

ز ہری کہتے ہیں سیّدنا عثان ڈائنۂ دادی کو بیٹے کی زندگی میں وارث نہ بناتے تھے۔

فوانت: زہری رہ ہے مطابق عثمان رہ النہ کھی اُب یعنی باپ کی موجودگی میں دادی کووارث بنانے کے قائل نہیں امام تر فری رہ ہے قول سے بھی اس کی تصدیق ہوتی ہے کہ بعض صحابہ نگا اللہ اس کے قائل نہیں امام تر فری رہ ہے اور درست ہے۔(واللہ اعلم)

[21] بَابِ قَوُلِ ابْنِ مَسْعُودٍ فِي الْجَدَّاتِ وَادِينِ مَسْعُودٍ فِي الْجَدَّاتِ وَادِينِ كَانِ ابْنِ مسعود رَفِينَ كَوَلَ كَابِيان

2985 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ أَخْبَرَنَا الْأَشْعَتُ

ابن سیرین کہتے ہیں کہ ابن مسعود خلائفہ نے کہا: ''دادیوں کے لئے میراث نہیں اور وہ جو دادی کو دیا گیا تھا اسے پچھ کھانے کے لئے دیا گیا تھا۔ اور اس کے متعلق نزدیک اور دورکی دادیاں برابر ہیں۔

[₫] حسن لغيره: أخرجه ابن منصور(84)والبيهقي 6/236وابن حزم9ر75/9

عصعیف: اٹعیفضعف بسابقد حدیث بی مررآئی ہے۔

[◙]سند صحيح الى الزهري : أحرجه عبدالرزاق(19091) والبيهقي في الفرائض225/6-226باب لا يرث مع الأب،ابواه

[◘] حسن لغيره: أخرجه ابن ابي شبيه 11/326 (11337) وعبدالرزاق (19089) وابن حزم في المحلي 277/9

حَرِّ يَيْنَ الْكَالِيْفِيَّ ﴾ 572 حَرِّ كتاب الفرائض ﴾ 3

2986 - أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الْمُغِيْرَةِ

عَنُ إِبُواهِيَهُ قَالَ قَالَ عَبُدُ اللّهِ تَوِثُ ابرائيم كَتْ بِين سيّدنا عبدالله وَالنَّوْ نَ كَها: ''وادى اپنے اللّه وَالنّه وَالنّالَةُ وَلَّهُ وَالنّاللّهُ وَالنّه وَالنّه وَالنّه وَالنّه وَالنّه وَالنّه وَالنّه وَلّا اللّهُ وَاللّهُ وَالنّهُ وَالنّهُ وَالنّه وَالنّه وَالنّه وَلّا اللّهُ وَاللّهُ وَلّا اللّهُ وَلّا اللّهُ وَلّا اللّهُ وَلّا اللّهُ وَلّا ل

[22] بَابِ قَوْلِ مَسُرُوقٍ فِي الْجَدَّاتِ دادي كِمتعلق سيِّدنا مسروق وَاللَّيُّ كِتُول كابيان

2987 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا الْأَشْعَثُ

عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ جِئْنَ أَرْبَعُ جَدَّاتٍ يَتَسَاوَقُنَ إِلَى مَسُرُوقٍ فَالُغٰى أَمَّ أَبِ الْأَبِ وَوَرَّتُ ثَلاثًا جَدَّتَى أَبِيْهِ أُمَّ أُمِّهِ وَأُمَّ أَبِيْهِ وَجَدَّةَ أُمِّهِ. ۞

شعمی کہتے ہیں :مسروق کے پاس آگے پیچھے چار دادیاں آئیں انہوں نے باپ کے باپ کی ماں کوساقط قرار دیا۔ اور تین کو وارث بنایا۔ دو دایاں میت کے باپ کی لیعنی اس کی ماں کی ماں اور باپ کی ماں اور تیسری اس کی ماں ک

دای ہے۔

فواند: یا اثر اگر چرضعیف بلیکن مسئله ای طرح ب که ایسی جدة جوجد فاسد کے بعد واقع ہو وہ محروم ہوگی (جد فاسد کی تعریف حدیث 2979 کے تحت دیکھیے) جب که ایک مرتبے میں پائے جانے والی سبھی جدّ ات سدس میں شریک ہوں گی۔

> [23] بَابِ قَوْلِ عَلِيٍّ وَعَبُدِ اللَّهِ وَزَيْدٍ فِي الرَّدِ وراثت لوٹانے میں سیّدناعلی ،عبدالله اور سیّدنا زید دی اللہ سیّدناکا بیان

> > 2988 - أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا شَرِيْكٌ عَنِ الْأَعْمَشِ

عَنُ إِبُوَاهِيُمَ عَنُ عَبُدِ اللّهِ فِى ابُنَةٍ وَابُنَةِ الراہیم کہتے ہیں عبداللہ نے ایک بیلی اور پوتی کے متعلق کہا: ابُنٍ قَالَ النّصِفُ وَالسُّدُسُ وَمَا بَقِی ''بیٹی کے لئے نصف اور پوتی کے لئے چھٹا حصہ ہوگا اور فَرَدٌ عَلَى الْبِنُتِ . * جوباتی بچگا وہ بیٹی کو دوبارہ ملےگا۔

◘ منقطع ضعيف: أحرجه ابن منصور(109)وابن ابي شيبه 331/11(1348)والبيهقي في الفرائض،باب لايرث مع الأب أبو اه/226

€ضعيف: أخرجه البيهقي في الفرائض،باب من لم يورث اكثر من حدتين 6/236وعبدالرزاق(19081)وابن حزم في المحلي 275/9وعبدالرزاق(19081)وابن حزم في المحلي 275/9

الصحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 277/11(11224)ومصنف عبدالرزاق(19128)ديكهم بطور شاهد،البخاري،كتاب الفرائض،باب ميرات الإخوه مع البنات عصية

القرائعي القرائض 573 من القرائض كات الفرائض القرائض المنافق ال

فواند: (۱) فد کوره صورت میں بیٹی کوقران کے مطابق نصف جب کہ یوتی کو 2/3 دوتہائی کمل كرنے كے ليے سدس دياجائے گا (٢) جب تركه سھام جھوں سے زيادہ ہوتو پھر اصحاب الفروض كوان كا حصہ دینے کے بعد بقیدان پران کے حصول کے بقد رلوٹا دیا جاتا ہے یہی جمہور کا مؤقف ہے۔

2989 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ

عَنُ عَلُقَمَةَ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ أَنَّهُ أَتِيَ فِي إِخُوَـةٍ لِأُمَّ وَأُمَّ فَأَعُطَى الْإِخُوةَ مِنَ الْأُمَّ الثُّكُثَ وَالْأُمَّ سَائِرَ الْمَالِ وَقَالَ الْأُمَّ عَصَيَةُ مَنْ لَا عَصَيَةً لَهُ. ٥

سیدنا علقمہ رہاللہ کہتے ہیں کہ سیدنا عبداللہ رہاللہ کے یاس كوئى آ دى اخيافى بھائيوں اور مال كے متعلق يو حصے آيا تو انہوں نے اخیافی بھائیوں کو تہائی حصد دیا اور باقی تمام مال ماں کو دے دیا۔ اور کہا: ''جس کا 'عصبہ نہ ہواس کی ماں

فواند: ردكاييطريقة عبداللد رفائن كاجتهاد ورائ يرمنى ب جب كه جمهور الل علم جميع اصحاب الفروض النسية بررد کے قائل بین نیز النسبیة کی قیدلگانے سے میاں بیوی دونوں خارج ہوگئے کیونکہ ان کا آپس میر نسبی تعلق نہیں ہوتا۔

2990 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْم

حَدَّثَنَا حَسَنٌ عَنْ أَبِيْدٍ قَالَ سَأَلُتُ الشَّعُبِيَّ عَنُ رَجُلِ مَاتَ وَتَرَكَ ابْنَتَهُ لَا يُعْلَمُ لَهُ وَارِثُ غَيْرُهَا قَالَ لَهَا الْمَالُ كُلُّهُ ۞

سیدنا حسن مالنیزای والد سے روایت کرتے ہیں وہ فرماتے ہیں کہ میں نے صعبی سے اس آ دمی کے متعلق یو چھا جوا بنی بیٹی حچھوڑ کرفوت ہوا اوراس کے علاوہ اس کا کوئی اور وارث معلوم نبیں _ انہوں نے کہا کہ: ''نتمام مال اس کو ملے

2991 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَالِمِ

قعمی کہتے ہیں کہ ابن مسعود ماں کے ساتھ اخیافی بھائی کو دوباره نہیں دیتے تھے۔ اور نہ اس وقت دادی کو دوبارہ دیے تھے جب اس کے ساتھ کوئی اہل فریضہ ہوتا۔ اور نہ

عَنِ الشُّعُبِيِّ أَنَّ ابُنَ مَسْعُودٍ كَانَ لَا يَـرُدُّ عَـلَى أَحِ لِأَمّ مَعَ أُمّ وَلَا عَلَى جَدَّةٍ إِذَا كَانَ مَعَهَا غَيُرُهَا مَنُ لَهُ فَرِيضَةٌ

[•] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 274/11(11213) و ابن منصور (127)

[◘]صحيح ابي شعيب : أخرجه ابن ابي شيبه 276/11(11218) وعبدالرزاق(19130)

574 كتاب الفرائض المنافقة المنافقة المنافقة

حقیق بیٹی کے ساتھ ہوتی کو دوبارہ دیتے تھے۔اور نہ بیوی وَلَا عَلَى ابْنَةِ ابْنِ مَعَ ابْنَةِ الصُّلُبِ وَلَا اور شو ہر کو دوبارہ دیتے تھے۔ اور سیّدنا علی ضافعہ بیوی اور عَلَى امُرَأَةٍ وَزَوْجٍ وَكَانَ عَلِيٌّ يَرُدُّ عَلَى شوہر کے علاوہ ہر حصہ دار کو دوبارہ دیتے تھے۔ كُلّ ذِي سَهُم إِلَّا الْمَرُأَةَ وَالزَّوْجَ . •

2992 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَالِمٍ عَنْ خَارِجَةَ بْنِ زَيْدٍ

خارجہ بن زید کہتے ہیں زید بن ثابت رہائین کے یاس کوئی آ دی ایک بیٹی یا ایک بہن کے متعلق پوچھے آیا انہوں نے اسے نصف دیا۔ اور باقی بیت المال میں جمع کروا دیا۔

عَنُ زَيْدِ بُن ثَابِتِ أَنَّهُ أُتِيَ فِي ابْنَةٍ أَوْ أُخُتٍ فَأَعُطَاهَا النِّصُفَ وَجَعَلَ مَا بَقِى فِي بَيْتِ المَمَالِ وقَالَ يَزِيدُ بُنُ هَارُوُنَ عَنُ مُ حَمَّدِ بُنِ سَالِمٍ عَنِ الشَّعُبِيِّ عَنُ خَارِجَةً . ٥

ف واند: زید بن ثابت رخالفین پرموقوف بیرحدیث اگر چضعیف ہے کیکن ردمخالفین جیسے مالک وشافعی وہ اس بات کے قائل ہیں کہ روکی بجائے بقیہ مال کو بیت المال میں داخل کردیا جائے گا کیونکہ ردسے مقررہ حصوں میں زیاوتی ہوجائے گی جو کہ درست نہیں کیونکہ دادا بھی سدس لینے کے بعد بقیہ مال بطور عصب لے سکتا ہے جب وہ زیادتی شارنہیں ہوتی تو بیجھی درست ہے۔ (واللہ اعلم)

[24] بَابِ فِي مِيرَاثِ ابُن الْمُلاعَنةِ لعان کرنے والے کی اولا د کی میراث کا بیان

2993 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ غُيْنَةَ عَنْ عَلِيّ بْنِ مُسْهِرِ عَنْ سَعِيْدِ عَنْ أَبِيْ مَعْشَرِ

عَنُ إِبُواهِيمَ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ فِي ابن ابراہيم كت بي كرسيدنا عبدالله ولين خوال كرنے والے کے بیٹے کے متعلق کہا:''اس کی میراث اس کی ماں کو ملے گا۔''

الْمُلاعَنَةِ قَالَ مِيرَاثُهُ لِأُمِّهِ. 🏵

فواند: بياثر اگرچ منقطع بونے پرضعف بے بہرحال ابوداؤد ميں صحح سندے ہے كه "ان

Фضعیف: محمد بن سالم ضعیف بے أخرجه ابن منصور (115-116) والبیهقی فی الفرائض، باب من جعل مافضل عن أهل الفرائض 6/244

[●] استاده ضعیف: محمر سالم ضعیف بے را بحرجه این منصور (114) والبیهقی فی الفرائض 244/6 تیز ابن منصور (113) اور عدبالرزاق (19131) میں اس معنی کی تعنبی تک سیحیح سندروایت ملتی ہے۔

❸حسن لغيره: أخرجه الحاكم 341/4و اعبدالرزاق(1247) والبيهقي في الفرائض، باب ميراث الملاعنة 6/258

المُعْرِينَ الْكَالِيمِينَ الْكَالِيمِينَ الْكَالِيمِينَ الْكَالِيمِينَ الْكَالِيمِينَ الْكَالِيمِينَ الْمُعَالِقُوا الْمُعَالِينَ الْمُعَالِقُوا الْمُعَالِقُولُ الْمُعِلِيقُولُ الْمُعَالِقُولُ الْمُعِلِقُ الْمُعَالِقُولُ الْمُعِلِقُ الْمُعَالِقُولُ الْمُعَالِقُولُ الْمُعَالِقُولُ الْمُعِلِقُ الْمُعَالِقُولُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُلِقُ الْمُعِلِقُ ِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقِيلِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِي عِلِمُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِقُ الْمُعِلِي الْمُعِلِقُ الْمُع

النبی علی جعل میراث ابن الملاعنة لامه ولو رثتهامن بعدها . "(ابوداؤر:2523) یقیناً نبی منتی آنی منتی آنی منتی آنی نے ابن الملاعنه کی میراث اس کی ماں اوراس (ماں) کے بعداس کے ورثہ کے لیے مقرر کی - نیز امام شوکا فی رائی الله فر فرماتے ہیں لعان کرنے والی عورت کا بحداس کے شوہر کا وارث نہیں بنے گا۔ (نیل الاوطار: 4/133)

2994 أُخْبَرَنَا مُعَاذُ بْنُ هَانِ إِسَادِ

ابراہیم بن طھمان کہتے ہیں میں نے ایک آ دی سے سنا وہ عطاء بن ابور ہاح سے لعان والوں کی اولا دے متعلق پوچھ رہا تھا کہ اس کی میراث سے ملے گی۔انہوں نے کہا:''اس کی ماں اور اس کے اہل کو۔''

حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بُنُ طَهُمَانَ قَالَ سَمِعُتُ رَجُّلاسَأَلَ عَطَاءَ بُنَ أَبِي رَبَاحٍ عَنُ وَلَدِ الْمُتَكاعِنَيُنِ لِمَنْ مِيرَاثُهُ قَالَ لِأُمَّهِ وَأَهْلِهَا . •

2995 ـ أَخْبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا حَسَنٌ عَنْ أَبِي سَهْلِ

عَنِ الشَّعْبِي قَالَ قَالَ عَلِيٌّ فِي ابُنِ الْمُكَاعَنَةِ تَرَكَ أَخَاهُ لِأُمِّهِ وَأُمَّهُ لِأَخِيهِ المُسكسُ وَلَأَمِّهِ الشُّلُثُ ثُمَّ يُرَدُّ عَلَيُهِمُ الشُّلُثُ ثُمَّ يُرَدُّ عَلَيُهِمُ فَيَصِيرُ لِلْأَخِ الشُّلُثُ وَلِلْاَمِ الشُّلُثَانِ وَقَالَ البُنُ مَسْعُودٍ لِلَّخِيُهِ السُّدُسُ وَمَا فَقَالَ البُنُ مَسْعُودٍ لِلَّخِيْهِ السُّدُسُ وَمَا بَقِي فَلِلْاَمِ.

• بقِي فَلِلْاُمْ.
• الشَّالَةُ اللَّهُ اللَّهُ السُّدُسُ وَمَا بَقِي فَلِلْلُمْ.
• الشَّالُةُ المَّالِّةُ السُّدُسُ وَمَا بَقِي فَلِلْلُمْ.
• الشَّالُةُ المَّالِقُ الْمُنْ مَا السَّلُولُ الْمُلْمَ الْمُنْ اللَّهُ اللَّهُ الْمُنْ الْمِنْ الْمُنْ الْم

شعمی کہتے ہیں سیّدنا علی بڑاٹیؤ نے لعان کرنے والے کے بیٹے کے متعلق فرمایا جس نے ایک اخیافی بھائی اور مال چھوڑی تھی ۔''اس کے بھائی کے لئے چھٹا حصہ اور مال کے لئے تہائی۔ پھر انہیں دوبارہ دیا جائے گا تو بھائی کی ایک تہائی ہوگی اور مال کے لئے دوتہائیاں۔'' ابن مسعود زائیؤ نے کہا: اس کے بھائی کو چھٹا حصہ ملے گا اور جو باتی خالیئوں نے کہا: اس کے بھائی کو چھٹا حصہ ملے گا اور جو باتی

ہے وہ مال کے لئے ہے۔

2996 ـ أَخْبَرَنَا أَبُوْ نُعَيْمِ حَدَّثَنَا حَسَنٌ

عَنُ أَبِى سَهُ لِ عَنِ الشَّعْبِيِّ فِى ابُنِ الْمُلاعَنَةِ تَرَكَ ابُنَ أَخٍ وَجَدَّا قَالَ الْمَالُ لِابُنِ الْآخِ . ۞

ابوسہل کہتے ہیں۔ کہ شعبی نے لعان والے کے بیٹے کے متعلق کہا: جس نے ایک بھتیجا اور دادا چھوڑا اس کا تمام مال بھتیج کو ملے گا۔

2997 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى حَدَّثَنَا سَالِمُ بْنُ نُوحٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ عَامِرٍ عَنْ قَتَادَةَ

[🛈] صحيح: أخرجه عبدالرزاق(12483)

② ضعیف: ابو بمل محرضعیف بے۔ أخرجه البيهقي في الفرائض، باب ميراث و لد الملاعنة 6/258 و ابن ابي شيبه 341/11
 (11383)

[€] ضعیف: محر بن سالم ضعیف ہے۔ اعرجه ابن ابی شیبه 11/118(11382)

العَالِيَّا لَكَالِيَّا الْعُراتِينِ عَلَى اللهِ
سیّدنا سعید بن مسیّب کہتے ہیں کہسیّدنا زید بن ثابت نے لعان والے کے بیٹے کی میراث کے متعلق کہا: ''اس کی ماں کوتہائی ملے گی اور دوتہائی بیت المال میں جمع ہوگا۔ عَنُ سَعِيْدِ بُنِ الْمُسَيَّبِ عَنُ زَيُدِ بُنِ ثَى إِسِتٍ فِى مِيُسَرَاثِ ابْنِ الْمُلاعَنَةِ لِأُمِّهِ الثُّلُثُ وَالثُّلُفَانِ لِبَيْتِ الْمَالِ. •

فوائد: زید رفاطن رد کے قائل نہیں بلکہ نی جانے والے مال کو بیت المال کا حصه قرار دیتے ہیں الیکن میہ بات درست نہیں بلکہ بقیہ مال کو بھی مال ہی وارث ہوگی (تفصیل پیچھے گزر چکی ہے ویکھیے سابقہ 2993 باب الدّ

2998 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى حَدَّثَنَا سَالِمُ بْنُ نُوحِ عَنْ غُمَرَ بْنِ عَامِرِ عَنْ حَمَّادِ

ابراہیم کہتے ہیں عبراللہ رہائفہ نے کہا: لعان والے کے بیٹے کی میراث اس کی ماں کے عصب اس کی طرف سے دیت دیں گے اور قادۃ رہائفہ نے سیّدنا حسن رہائفہ سے نقل کیا کہ اس کی ماں کو تہائی ملے گی۔ اور قامی مال کو تہائی ملے گی۔ اور باقی مال مال کے عصبہ کو ملے گا۔

عَنُ إِبُواهِيمَ عَنُ عَبُدِ اللّهِ قَالَ مِيرَاثُهُ لِأُمِّهِ وَقَالَ مِيرَاثُهُ لِأُمِّهِ وَقَالَ قَتَادَةُ لِأُمِّهِ تَعُقِلُ عَنْهُ عَصَبَهُ أُمِّهِ وقَالَ قَتَادَةُ عَنِ الْحَصَنِ لِأُمِّهِ النَّلُكُ وَبَقِيَّةُ الْمَالِ نِعَصَبَةِ أُمِّهِ . ۞

فوائد: سن فائدہ2993 میں گزرنے والی حدیث کے مطابق عبداللدرطیعیہ کاموقف ہی قابل ترجیح بہ کہ میراث ماں کے عصبہ کی بجائے فقط ماں کوہی ملے گی البتہ بیج کے جرم پردیت اس عورت کے عصبہ اوا کریں گے۔(واللہ اعلم)

2999- أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ

سیدنا قمادة فوائی کہتے ہیں کہ سیدناعلی وٹائی اور ابن مسعود وٹائی نے لعان والے کی اولاد کے متعلق کہا: جس نے نانی اور اخیافی بھائی جھوڑا ہو۔ تو نانی کو تہائی ملے گی اور بھائیوں کو دو تہائی اور زید بن ثابت نے کہا: ''نانی کو چھٹا حصہ ملے گا اور اخیافی بھائیوں کو تہائی۔ اور بقیہ بیت المال میں جمع کروایا جائے گا۔''

أُخُبَرَنَا قَتَادَةُ أَنَّ عَلِيًّا وَابْنَ مَسُعُودٍ قَالَا فِى وَلَكِ مُلاَعَنَةٍ تَرَكَ جَدَّتَهُ وَإِخُوتَهُ لِأُمِّهِ قَالَ لِلْجَدَّةِ النَّلُثُ وَلِلإِخُوةِ النَّلُقَانِ و قَالَ زَيْسُدُ بُسُ ثَابِتٍ لِلْجَدَّةِ السَّدُسُ و قَالَ زَيْسُدُ بُسُ ثَابِتٍ لِلْجَدَّةِ السَّدُسُ وَلِلْإِخُوءَةِ لِلْأَمِّ النَّلُثُ وَمَا بَقِى فَلِبَيْتِ الْمَالِ . •

عسن: أخرجه البيهقي في الفرائض، باب ميرات ولدالملاغة 6/259

حسن لغيره: أخرجه ابن ابي شيبه 339/11(1365) والحاكم 341/4وابن منصور (119)

ق ضعيف: أخرجه البيهقي في الفرائض، باب ميرات و لدالملاعنة 6/258-259وابن منصور (119)

3000_ حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ

أُخْبَرَنَا يُونُسُ وَحُمَيلٌاعَنِ الْحَسَنِ قَالَ

تَرِثُهُ أُمُّهُ يَعْنِي ابْنَ الْمُلاعَنَةِ . 9

الكاليني

3001 أُخْبَرَنَا حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ حَـدَّثَنَـا حَـجًّا جُ أَنَّ النَّخُعِيَّ وَالشُّعُبِيُّ

قَالًا تَرثُهُ أُمُّهُ. ٥

وَ أُمَّهِ. 🛭

3002 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ دَاوَدَ بْنِ أَبِيْ هِنْدِ

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُن عُبَيْدِ بُن عُمَيُرِ قَالَ كَتَبُتُ إِلَى أَحِ لِي مِنْ بَنِي زُرَيْقِ أَسْأَلُهُ لِمَنُ قَضَى النَّبِيُّ ﴿ إِنَّ فِي ابُنِ الْمُلَاعَنَةِ فَكَتَبَ إِلَى أَنَّ النَّبِي اللَّهِ فَضَى بِهِ لِأُمِّهِ هي بمَنُ زِلَةِ أُمِّهِ وَأَبِيُهِ و قَالَ سُفْيَانُ الُمَالُ كُلُّهُ لِلْأُمِّ هِيَ بِمَنْزِلَةِ أَبِيْهِ

سیدنا پونس اور حمید کہتے ہیں کہ سیدنا حسن وخالفہ نے کہا: ''لعان والے کی ماں اس کی وارث ہو گی۔''

كتاب الفرائض

حاج کہتے میں نخعی اور شعبی نے کہا: ''لعان والے کی مال اس کی وارث ہو گی۔''

عبداللد بن عبيد بن عمير كت بيل مين في بنوزريق سے اینے بھائی کولکھ کر ہو چھا کہ نبی الشفائق نے اعان والے کی اولاد کے متعلق کس کے لیے فیصلہ کیا؟ اس نے مجھے لکھا کہ نی مطاع نے اس کی مال کے لئے فیصلہ کیا۔ وہی اس کی مان اور باب كم مرحبه يرب اورسفيان ني كها: "تمام مال ماں کے لئے ہے وہی اس کی مال اور باپ کے مرتبہ پر

فوائد: فرمانِ رسول من الله كيم مطابق ولد الملاعنه كي مان اس كي مان باب دونون ك قائم مقام ہوگی ۔ نیز مال ساراماں کے حصے آئے گا۔

3003 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ.

عَنُ هِشَامِ عَنِ الْحَسَنِ فِي ابُنِ الُـمُلاعَنَةِ تَـرَكَ أُمَّهُ وَعَصَبَةَ أُمِّهِ قَالَ الثُّلُثُ لأُمِّه وَمَا يَقِيَ فَلعَصَبَة أُمِّهِ. ٥

بشام کہتے ہیں سیدنا حسن رہائی، نے لعان کرنے والے کے بیٹے کے متعلق کہا جس نے اپنی ماں اور مال کا عصبہ چھوڑا تو تہائی حصہ اس کی مال کے لئے ہے اور بقیہ مال

مال کے عصبہ کے لئے ہے۔''

¹ صحیح: یر(3005) کے تحت مطولاً آئے گا۔

² صعيف: تجائ بن أرطاة ضعيف ب، احرجه ابن ابي شيبه 348/11 (11405) وعبدالرزاق (12486)

❸صحيح: أخرجه عبدالرزاق(12477) والحاكم41/4والبيهقي في الفرائض،باب ميرات ولد الملاعتة6/259

[◘]صحيح: ويكيم سنن البيهقي، باب ميرات ولدالملاعنة 258/6وابن ابي شيبه (11383)

1927 578 578 ESISIONE DO كتاب الفرائض

فوائد: اس کی تفصیل (2998) میں گزر چکی ہے۔

3004 أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسِٰى عَنِ ابْنِ أَبِيْ لَيْلَى

المُلاعَنَةِ قَالَا عَصَبَتُهُ عَصَبَةُ أُمِّهِ. •

عَنُ عَامِرِ عَنُ عَلِيّ وَعَبُدِ اللّهِ فِي ابُن عام كمت بين كرسيّدناعلى اورعبدالله والنَّهُ مان لعان والع کے مٹے کے متعلق کہا:''اس کے عصبہ اس کی مال کے عصبہ

3005 حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ الْحَلَبِي مُوسَى بْنُ خَالِدِ حَدَّثَنَا المُعْتَمِرُ

مِيرَاكُ وَلَدِ الْمُلاعَنَةِ لِأُمِّهِ قُلُتُ فَإِنُ

كَانَ لَهُ أَخَّ مِنُ أُمِّهِ قَالَ لَهُ السُّدُسُ . 🎱

عَنُ يُونُسَ عَنِ الْحَسَنِ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ لِيس كَمِّتِ بِين كَهُ سِيْدِنا حَسَن فِي الْعَدَ فرمات عَي العان كرنے والے كى اولاد كى ميراث اس كى مال كے لئے ہے۔ ' میں نے کہا: اگر اس کا اخیافی بھائی ہو۔انہوں نے کہا: اس کے لئے چھٹا حصہ ہے۔

فهاند: اخیانی بهن یابهائی اگرا کیلا ہوتو وہ سدس کامتحق ہوتا ہے لہذا اسے چھٹا حصہ دیا جائے گا۔

3006 حَدَّثَنَا أَبُو الْمُغِيْرَةِ

حَـدَّثَنَا ٱلأُوْزَاعِيُّ حَدَّثَنَا الزُّهُرِيُّ قَالَ وَلَـدُ الْمُلاعَنَةِ لِأُمِّهِ تَرِكُ فَريضَتَهَا مِنْهُ وَسَائِرُ ذٰلِكَ فِي بَيْتِ المَالِ. 6

اوزائ کہتے ہیں زہری نے ہمیں بیان کیا:لعان کرنے والے کی اولا واپنی ماں کے پاس ہوگی۔ ماں اس کے مال سے اپنا حصہ لے گ۔ اور باقی بیت المال میں جمع کیا

فوائد: زید رفایشنهٔ کی طرح امام زهری رفتید بھی نے جانے والی میراث کو بیت المال میں وافل

کرنے کے قائل ہیں کیکن ان کی بہ بات مرجوح ہے جبکہ رد ہی اولی ہے۔

3007 أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوْسَى عَنْ مُوْسَى بْن عُبَيْدَةَ

عَنْ نَافِع عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ إِذَا تَلَاعَنَا نَافَع كُتِ بِي كَدسيّدنا ابن عمر فِالنَّفُ فَ كَها: ' جب ميال بیوی لعان کریں تو ان کو جدا کر دیا جائے گا۔ اور وہ دونوں

فُرِّقَ بَيْنَهُمَا وَلَمْ يَجُتَمِعَا وَدُعِيَ الْوَلَدُ

[•] صعيف: محمر بن الي يلل ما فطر اب براخر حد عبد لارزاق (12482) والطبراني في الكبير 9663(966)

[€]صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 337/11(11370)

حال الفرائض (579) 379 كتاب الفرائض (579)

لِأُمِّهِ يُقَالُ ابُنُ فَكَانَةَ هِيَ عَصَبَتُهُ يَرِثُهَا وَتَرِثُهُ وَمَنُ دَعَاهُ لِزِنْيَةٍ جُلِدَ . •

استظینہیں ہوں گے۔اوراولاداپنی مال کے نام سے پکاری جائے گئ کہا جائے گا: فلال کا بیٹا ہے وہی عصبہ ہوگی اور وہی اس کی وارث ہوگا اور جو اس کے وارث ہوگا اور جو اسے کی زانیہ کا بیٹا ہے اسے کوڑے لگائے جائیں گے۔

فواند: بیرحدیث اگر چه ضعیف ہے بہرحال مسلمتی ہے ہینی (۱) لعان کے بعد خاونداور بیوی کے درمیان علیحد گی کروادی جائے گی (۲) ولد الملاعنہ کے ولدیت کے خانہ میں مال کانام لکھا اور پکارا جائے گا (۳) ندکورہ بیچ کوولدزنایا حرام کا نطفہ کہنے والے پرکوڑوں کی حدجاری کی جائے گی۔(واللہ اعلم)

3008 حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هَانِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ

شیبانی کہتے ہیں شعبی نے لعان کرنے والے کی اولاد کے متعلق کہا: اس کی مال کے عصبے اس کے وارث ہوں گے۔ گے۔ اور وہی اس کی طرف سے دیت دیں گے۔

حَـدَّلَنَا الشَّيْبَانِيُّ عَنِ الشَّعْبِيِّ فِيُ وَلَدِ الـُمُتَّلَاعِنَيُنِ أَنَّهُ تَوِثُهُ عَصَبَةُ أُمِّهِ وَهُمُ نَعْقَلُونَ عَنُهُ . *

3009 حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ أَخْبَرَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ عَزْرَةَ

عَنُ سَعِيُدِ بُنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ فِى وَلَـدِ الْمُلَاعَنَةِ هُوَ الَّذِى لَا أَبَ لَهُ تَرِثُهُ أُمُّهُ وَإِخُوتُهُ مِنُ أُمِّهِ وَعَصَبَهُ أُمِّهِ فَإِنُ قَذَفَهُ قَاذِكٌ جُلِدَ قَاذِفُهُ. ۞

سیّرنا سعید بن جبیر فیالنیز کہتے ہیں کہ سیّدنا ابن عباس فیالنیز کہتے ہیں کہ سیّدنا ابن عباس فیالنیز نے اللہ اللہ کے العان کرنے والے کی اولا دے متعلق کہا: ''جس کا باپ نہ ہواس کی ماں ، کے نہ ہواس کی ماں ، کے عصبے اس کے وارث بنیں گے۔ اگر کوئی اس پر زنا کی تہمت لگائے تو اے کوڑے لگائے جا کیں گے۔''

3010 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ

نعمان کہتے ہیں کہ کھول سے لعان کرنے والی کی اولاد کی میراث کے متعلق بوچھا گیا کہ وہ کسے ملے گی۔ انہوں نے کہا: رسول اللہ مشرکیا نے اسے ماں کے لئے مقرر کیا

عَنِ النَّعُمَانِ عَنُ مَكُحُولٍ أَنَّهُ سُئِلَ عَنُ مِيْرَاثِ وَلَدِ الْمُلَاعِنَةِ لِمَنَّ هُوَ قَالَ جَعَلَهُ رَسُولُ اللهِ عَلَيْ لِأُمِّهِ فِي سَبَيهِ

[₫] ضعيف: أخرجه عبدالرزاق(12478) وابن ابي شيبه 340/11(11376)

[💋] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 336/11(11367)

³ صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 9/561(8522)

حَالِ لِيُنْ الْكَالِيْنِيُّ الْكَالِيْنِيُّ الْكَالِيْنِيُّ الْكَالِيْنِيُّ الْكَالِيْنِيُّ الْكَالِيْنِيُّ الْكَالِيْنِيُّ الْمُوائِضِ 580 كتاب الفرائض

لِمَا لَقِيَتُ مِنَ الْبَلاءِ وَلِإِخُوتِهِ مِنُ أُمِّهِ. و قَالَ مَكُحُولٌ فَإِنْ مَاتَتِ الْأُمُّ وَتَرَكَتِ الْبَهَا ثُمَّ تُوفِي الْبُهَا الَّذِي جُعِلَ لَهَا كَانَ مِيرَاثُهُ لِإِخُوتِهِ مِنُ أُمِّهِ كُلُّهُ لِأَنَّهُ كَانَ مِيرَاثُهُ لِإِخُوتِهِ مِنُ أُمِّهِ كُلُّه لِأَنَّهُ كَانَ المُّمِهِمُ وَجَدِّهِمُ وَكَانَ لِلَّإِيهَا السُّدُسُ مِنِ ابُنِ ابُنتِهِ وَلَيْسَ يَرِثُ الْجَدُ إِلَّا فِي مِنِ ابُنِ ابُنتِهِ وَلَيْسَ يَرِثُ الْجَدُ إِلَّا فِي مَنِ ابُن ابُنتِهِ وَلَيْسَ يَرِثُ الْجَدُ إِلَّا فِي وَإِنَّ مَا وَرِثَ الْإِخُورَةُ مِنَ اللَّمَ أُمَّهُمُ وَوَرِثَ الْجَدُ ابُنتَهُ لِأَنَّهُ جُعِلَ لَهَا فَالْمَالُ وَوَرِثَ النَّهِ لِلْوَرَثَةِ اللَّهِ مُعِلَ لَهَا فَالْمَالُ اللَّذِي لِلُولَدِ لِوَرَثَةِ اللَّمْ وَهُو يُحُرِدُهُ النَّذِي لِلُولَدِ لِوَرَثَةِ اللَّمْ وَهُو يُحُرِدُهُ

ہے۔ اس کی ماں کی مصیبت اٹھانے کی وجہ ہے اس کے اخیافی بھائیوں کے لئے بھی مقرر کیا۔ اور کھول نے کہا:

''اگر ماں اپنے بیٹے کو چھوڑ کر فوت ہو جائے۔ پھر اس کا بیٹا بھی فوت ہو جائے جو اس کا قرار دیا گیا تھا اس کی میراث اس کے اخیافی بھائیوں کے لئے ہوگی۔ کیونکہ لڑکا میراث اس کے اخیافی بھائیوں کے لئے ہوگی۔ کیونکہ لڑکا اپنے اخیافی بھائیوں کی ماں اور نانا کا ہے۔ اور لڑکے کے نانا کو اپنے نواہے سے چھٹا حصہ ملتا ہے۔ اور نانا اس مرتبہ میں وارث ہوتا ہے۔ کیونکہ وہ ماں کا باپ ہوتا ہے۔ اور اخیافی بھائی اپنی ماں کا اور نانا اپنی بیٹی کا صرف اس لئے وارث ہوتا ہے۔ لہذا جو ارث ہوتا ہے۔ لہذا جو ماں کے ورثاء کو ملے گا۔ اور وہ اکیلے ماں کا جرب اس کے علاوہ کوئی اور نہ ہو۔

3011 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاءِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي بْكَيْرِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنْ

سیّدنا عبدالله بن عباس خالیّد کیتے ہیں کیچھ لوگ لعان کرنے والوں کی اولاد کے متعلق سیّدنا علی خالیّد کے پاس جھگڑا لے کر گئے کڑے کے والد کے عصبہ اس کی میراث کے لئے آئے تو سیّدنا علی خالیّد نے کہا: ''اس کے باپ نے اس سے علیحدگی اختیار کی تھی لہذا تمہیں اس کی میراث نے اس سے علیحدگی اختیار کی تھی لہذا تمہیں اس کی میراث سے کچھنیس ملے گا اوراس کی مال کے لئے اس کی میراث کا فیصلہ کیا۔ اوراسی کو عصبہ قرار دیا۔

❶ صحيح: أخرجه ابو داؤد، كتاب الفرائض، باب ميرات ابن الملاعنة (2907) والبيه قي في الفرائض، باب ميراث ولد الملاعنة 259/6

سُنِّنَ الْخَارِينِيُّ عَلَيْهِ الْفُرائِضِ 581 كتاب الفرائض

[25].... بَابِ فِيُ مِيرَاثِ الْخُنثَى ہیجڑے کی میراث کا بیان

3012 مَ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ عَبْدِ الْأَعْلَى

أَنَّهُ سَمِعَ مُحَمَّدَ بُنَ عَلِيّ يُحَدِّثُ عَنْ عَلِيّ فِي الرَّجُلِ يَكُونُ لَهُ مَا لِلرَّجُلِ وَمَا لِلْمَرُأَةِ مِنُ أَيِّهِمَا يُوَرَّثُ فَقَالَ مِنُ

محد بن علی بیان کرتے ہیں کہ سیّدنا علی وَلِیّنَهُ سے بیجو ے کے متعلق کہا: ''وہ جدھر سے پیشاب کرے گا اس طرح ہے وارث ہوگا۔''

أَيِّهِمَا بَالَ . •

فهائد: (1)" الخنشى" يهالي فخض كوكت مين جس مين بيك وقت زنانه ومردانه شرمكايي یائی جائیں جبکہ اصلاً کوئی بھی صحیح کام نہ کرتی ہو۔ (۲) ان کی میراث ان کی تنبیین تعیین پر ہوگی اگرییمروانہ صفات کے حامل ہوں تو مثلاً لیتان ابھرے نہ ہوں ، چبرے پر داڑھی ہواور مردانہ شرمگاہ سے پیثاب کرے توان کا تھم مردوں والا ہوگا ورنہ عورتوں والا اگر تعیین مشکل ہوتواسے خنٹی مشکل کہا جاتا ہے اوراس کو مرد یاعورت جس صورت میں کم میراث ملے وہ دی جائے گی۔(واللہ اعلم)

3013 حَدَّثَنَا أَبُوْ بَكُرِ بْنُ أَبِيْ شَيْبَةَ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ عَنْ مُغِيرَةَ عَنْ شِبَاكٍ عَنِ الشَّغييّ

عَنُ عَلِيّ فِي الْخُنْفَى قَالَ يُورَّ في مِنُ سيّدنا على رَاللَّهُ سے مروى ہے كدانہوں نے مخت كمتعلق کہا: ''وہ پیٹاب کرنے کی طرف سے وارث بنایا جائے

قِبَل مَبَالِهِ . 9

3014 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمِ

حَدَّثَنَا أَبُوْ هَانِءٍ قَالَ سُئِلَ عَامِرٌ عَنُ مَوْلُودٍ وُلِدَ وَلَيْسَ بِذَكَرِ وَلَا أَنْنِي لَيُسَ لَـهُ مَا لِللَّاكُرِ وَلَيُسَ لَهُ مَا لِللَّائشَى يُخُرجُ مِنُ سُرَّتِهِ كَهَيْنَةِ الْبَوُل وَالْغَائِطِ سُئل عَنُ مِيرَاتِيه فَقَالَ نِصُفُ حَظَّ

ابو ہانی کہتے ہیں کہ عامرے اس بیجے کے متعلق ابو چھا گیا جواس طرح بیدا ہوا کہ نہ مرد ہے اور نہ عورت نداس کی مرد کی طرح شرم گاہ ہے اور نہ عورت کی طرح اس کی ناف سے پیثاب اور یاخانہ نکاتا ہے اس کی میراث سطرح مقرر ہو گی؟ انہوں نے کہا: ''نصف حصہ مرد کا نصف

ضعیف: محمد بن علی این پروادے علی بخانیز سے ساع ثابت نہیں۔

[€]منقطع ضعيف: أخرجه ابن ابي شيه 349/11 (11410) وابن منصور (126) وعبدالرزاق (19204)

عورت کا۔''

الذَّكَرِ وَنِصُفُ حَظِّ الْأَنْثَى . •

[26].... بَابِ الْكَلالَةِ

ایسے شخص کا بیان کہ جس کا باپ اور اولا د نہ ہو

3015 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ

عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ سُئِلَ أَبُو بَكْرٍ عَنِ السَّعْبِيِ قَالَ سُئِلَ أَبُو بَكْرٍ عَنِ الْكَلالَةِ فَقَالَ إِنِّى سَأَقُولُ فِيهَا بِرَأْيِى فَإِنْ كَانَ فَإِنْ كَانَ ضَوَابًا فَمِنَ اللَّهِ وَإِنْ كَانَ خَطَأً فَمِنَى وَمِنَ الشَّيْطَانِ أُرَاهُ مَا خَلا الْوَالِدَ وَالْوَلَدَ فَلَمَّا السَّتُحُلِفَ عُمَرُ اللَّهَ أَنْ أَرُهُ شَيْئًا وَالْوَلِدَ فَلَمَّا اللَّهَ أَنْ أَرُهُ شَيْئًا قَالَهُ أَبُوبَكُر .
قَالَهُ أَبُوبُكُر .
قَالَهُ أَبُوبُكُر .
قَالَهُ أَبُوبُكُر .
قَالَهُ أَبُوبُكُر .
قَالَةُ أَبُوبُكُر .
قَالَةُ أَبُوبُكُر .
قَالَةُ اللَّهُ أَبُوبُكُر .
قَالَةُ اللَّهُ أَبُوبُكُر .
قَالَةُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْبَكُر .
قَالَةُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْبَكُر .
قَالَةُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْبَكُر .
قَالَةُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْبَكُر .
قَالَةُ اللَّهُ الْمُؤْبَكُر .
قَالَةُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْبَكُر .
قَالَةُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْبَكُر .
قَالَةُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْبَكُ لِ اللَّهُ الْمُؤْبُكُونُ الْمُؤْبُكُونُ الْمُؤْبَلُكُ الْمُؤْبُكُونُ الْمُؤْبَلُكُ اللَّهُ الْمُؤْبُكُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبِدُ الْمُؤْبِونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبِدُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُولُ الْمُؤُبُونُ الْمُؤْبُولُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُونُ الْمُؤْبُولُ الْمُو

شعمی کہتے ہیں سیّدنا ابو بکر رفیائین سے کلالہ کے متعلق بوچھا
گیا۔ انہوں نے کہا: میں اس کے متعلق اپنی رائے سے
کہوں گا۔ اور اگر درست ہوا تو اللّٰہ کی طرف سے۔ اگر غلط
ہوا تو وہ میری اور شیطان کی طرح سے ہے۔ میرے خیال
میں کلالہ وہ وارث ہے جو باپ اور اولاد کے علاوہ ہو۔
میس کلالہ وہ وارث ہے جو باپ اور اولاد کے علاوہ ہو۔
جب سیّدنا عمر رفیائین خلیفہ بنے انہوں نے کہا: '' مجھے اللّٰہ
سے شرم آتی ہے کہ میں سیّدنا ابو بکر رفیائین کی بات کورد کر

فوافد: (۱) "کلاله" الیی میت پر بولا جاتا ہے جس کا باپ اور بیٹا نہ ہو بیا کلیل سے شتق ہے بیالیں چیز پر بولا جاتا ہے جو سر کواطراف کو کناروں سے گھیر لے ،کلالہ کو بھی کلالہ اس لیے کہا جاتا ہے کہ اصول و فروغ میں سے تو کوئی اس کا وارث نہ بینے لیکن اطراف وا کناف سے وارث قرار پائیس (فقح القدیر وابن کثیر) (بحوالہ تغییر صلاح الدین یوسف حظاہلہ) معلوم ہوا ابو بکر رفائشہ کی بات درست ہے (۲) ہر طرح کے کثیر) کی نبیت اللہ کی جانب کرنا یہی طریقہ سلف اور درمیا نہ راستہ ہے (۳) اگر کسی بڑے کی رائے کا قران و سنت کے خلاف ہونا ثابت ہو جائے تو اس کی رائے کو ٹھکرا دینا دیوار پر دے مارنا لازم ہے ورنہ اکابر کی رائے کو ٹھکرا دینا دیوار پر دے مارنا لازم ہے ورنہ اکابر کی رائے کا خران کا حترام آ دی کی سمجھداری سے ہے۔ (واللہ الموفق)

3016 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ هُوَ ابْنُ أَبِي أَيُّوْبَ قَالَ حَدَّثِنِي يَزِيدُ بْنُ أَبِي

[€] ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 350/11 (11413) والدارقطني 81/4

عنقطع: ضعيف أخرجه عبدالرزاق(19191) والطبرى280/4 والبيهقيفي الفرائض، باب حجب الأخوة والأخوات من كانوا بالأب والابن وابن الابن 224/6
 من كانوا بالأب والابن وابن الابن 224/6
 من كانوا بالأب والابن وابن الابن المنافذ ا

كتاب الفرائض الكاينين الكاينين

حَبِيْبِ عَنْ مَرْ ثَدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْيَزَنِيِّ ..

عَنُ عُقْبَةَ بُنِ عَامِرِ الْجُهَنِيّ أَنَّهُ قَالَ مَا أَعُضَلَ بِأَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ

شَيُءٌ مَا أَعُضَلَتُ بِهِمُ الْكَلَالَةُ . •

3017 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بُنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارِ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ

میں مشکل ہوئی۔''

عَنِ ابُنِ عَبَّاسِ قَالَ الْكَلَالَةُ مَا خَلَا الْوَالِدَ وَالْوَلَدَ . ٥

سیدنا ابن عباس و فائنی سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: '' کلالہ وہ وارث ہے جو باپ اور اولا دے علاوہ ہو''

عقبہ بن عامر جہنی سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ''صحابہ

كواسقدرمشكل كسي بات ميس نه ہوئى جس قدران كو كلاليہ

3018 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَعْلَى بْنِ عَطَاءِ

قاسم بن عبدالله كهت بين سعديه آيت يراحة ته:"اكر مرد یا عورت کلالہ (لیعنی جس کا باپ واولا دنہیں ہے) کے وارث بين اوراس كى جمائى يا بهن بين ـــ" (سورة النساء: ۱۲) سعد نے کہا:اخیافی۔'' عَن الْقَاسِم بُن عَبُدِ اللَّهِ عَنُ سَعُدٍ أَنَّهُ كَمَانَ يَفُرَأُ هَلِهِ الْآيَةَ وَإِنَّ كَانَ رَجُلٌ يُوْرَثُ كَلَالَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَلَهُ أَخْ أَوُ أُخُتُ

فوائد: ندکورة حديث مين مذكور بهن ، بھائيول سے مراداخياني بهن ، بھائي ہيں جن كے حقے كا ذكر مور باب _(والله اعلم)

[27] بَابِ فِي مِيرَاثِ ذَوِي الْأَرْحَامِ ان رشتہ داروں کی میراث کا بیان (جن کا حصہ مقرر نہیں کیا گیا)

3019 أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا حَيْوَةُ حَدَّثَنَا أَبُو الْأَسْوَدِ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ

عاصم بن عمر بن قنادة زالله الصارى بيان كرت بين كسيدنا عمر وخالفید بن خطاب نے اس شخص کو تلاش کیا جو ابن دحداجة أَنَّ عَاصِمَ بُنَ عُمَرَ بُن قَتَادَةَ الْأَنْصَارِيَّ أُخْبَرَهُ أَنَّ عُمَرَ بُنَ الْخَطَّابِ الْتَمَسَ

[🛈] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 11/416(11648)

[●]صحیح: شرط بخارل پر ہے۔أحرجه عبدالرزاق(19189) والطبراني في التفسير 284/4والبيه في في الفرائض بباب حجب الإخوة والأحوات من كانو بالأب وابن وابن الاين6/225

❸صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 417/11-416(11650) و الطبري 287/4

المراقع المراق 584 كتاب الفرائض ك

كا وارث موا انهول نے كوئى وارث نه يايا تو ابن دصداحة كا مال اس کے مامؤوں کو دے دیا۔ مَنُ يَوتُ ابُنَ الدَّحُدَاحَةِ فَلَمُ يَجِدُ وَارِثًا فَدَفَعَ مَالَ ابُنِ الدَّحُدَاحَةِ إِلَى

أَخُوَال ابن الدَّحُدَاحَةِ . •

3020 أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجِ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُسْلِمٍ

طاؤس کہتے ہیں کہ سیّدہ عائشہ وناٹیجانے کہا:''جس شخص کا کوئی حمایتی نہیں اللہ اور اس کا رسول اس کے حمایتی ہیں۔ اورجس شخص کا کوئی وارث نه ہواس کا ماموں اس کا وارث عَنُ طَاوُس عَنُ عَائِشَةَ قَالَتِ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مَوْلَى مَنْ لَا مَوْلَى لَهُ وَالْخَالُ وَارِثُ مَنُ لَا وَارِثَ لَهُ. ٥

فوائد: (۱) ایک مؤمن مسلمان کربھی بھی اینے آپ کوتنہانہیں سمجھنا جاہیے دور نبوی میں الله اور اس کے رسول جب کہ آپ کے فوت ہو جانے کے بعد اللہ مسلم کا حمایتی و مددگار ہے(۲) اگر مرنے والا کوئی بھی وارث موجود نہ ہوتو ماموں اس کا وارث قراریائے گا۔

3021 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ فِرَاسِ عَنِ الشَّعْبِيِّ

عَنُ ذِيَادٍ قَالَ أَتِي عُمَو فِي عَمّ لِأُمّ نياد كمت مين كسيّدنا عمر والنو كي ياس كوني آدمي سوتيك وَخَالَةٍ فَاللَّهِ مَا لُعَمَّ لِللَّهِ النُّلُقَيْنِ بِي إلا وَاللَّه كَمْ تَعْلَق بُوحِظَ آيا تو انهول في اس كي چيا وَأَعُطَى النَّحَالَةَ النُّلُكَ . ٥ كو دونهائي اور خاله كوايك تهائي دي_

فواند: میت کی مال کا پچا اور خالدا گرچه وارث نبیس لیکن وارث کی عدم موجودگی میس خالد کو مال کا حقمہ ایک تہائی جب کہ اس کے چھا کو بطور عصبہ (3/2) 2 تہائی دے دیا معلوم ہوا تر کہ میت کے ورثہ یا پھران کے نہ ہونے پردوسرے رشتہ داروں میں تقسیم ہوگا ان کی عدم موجودگی میں بیت المال میں داخل کر دیا

3022 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ يُونُسَ

[🛭] منقطع ضعيف

[🛭] حسس: أخرجه الترمذي، كتاب الفرائض،باب ماجاء في ميراث الخال(2105) وعبدالرزاق(19124) وابن منصور

[●]استاده حید: زیاده بن عیاض کوابن حبان نے التقات 4/368 میں ذکر کیا ہے جب کد بخاری وابن ابی حاتم اس پر خاموش ہیں۔ أخرجه ابن ابي شيبه 260/11161) وابن منصو ر(153) والطحاوي في(شرح معافي الآثار) 399/4

عَنِ الْمَحَسَنِ أَنَّ عُمَرَ بُنَ الْمُحَطَّابِ حسن كَهِ بِين كَهسيّدنا عمر طالبيّهُ بن خطاب نے خاله كوايك أَعْطَى الْمُحَالَةَ الثَّلُثَ وَالْعَمَّةَ الثَّلُثَيُن . • تهائى اور پھوپھى كودوتهائى دى۔

3023- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بُنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عَمْرِ و عَنْ غَالِبِ بْنِ

عَبَّادٍ.....عَ

قیس بن حبر نبشلی کہتے ہیں کہ عبدالملک بن مردان کے پاس کوئی آ دمی خالہ اور پھپھو کے متعلق پو چھنے آیا تو ایک بوڑھے آ دمی نے کھڑے ہوکر کہا: میں گواہی دیتا ہوں کہ عمر بن خطاب وہائن نے خالہ کو ایک تہائی اور پھوپھی کو دو تہائی دی۔ تو عبدالملک نے اے لکھنے کا ارادہ کیا۔ پھر انہوں نے کہا: اگر ایسا ہوتا تو زید بن ثابت رہائن کو نہ معلوم انہوں نے کہا: اگر ایسا ہوتا تو زید بن ثابت رہائن کو نہ معلوم

عَنُ قَيُسِ بُنِ حَبُتَ النَّهُ شَلِي قَالَ أَتِي عَنُ قَيْسِ بُنِ حَبُتَ النَّهُ شَلِي قَالَ أَتِي عَبُدُ الْمَالِكِ بُنُ مَرُوَانَ فِي خَالَةٍ وَعَمَّةٍ فَقَامَ شَيْخٌ فَقَالَ شَهِدُتُ عُمَرَ بُنَ النَّكُ عُمَرَ الْخَالَةَ التَّكُ عُمَرَ بُن الْخَطَى الْخَالَةَ التَّكُ بُن وَالْعَمَّةَ التَّلُقُينِ قَالَ فَهَمَّ أَنْ يَكُتبَ بِهِ وَالْعَمَّةَ التَّلُقُينِ قَالَ فَهَمَّ أَنْ يَكُتبَ بِهِ وَالْعَمَّةَ التَّلُقَيْنِ قَالَ فَهَمَّ أَنْ يَكُتبَ بِهِ ثُمَّ قَالَ أَيْنَ زَيْدٌ عَنُ هٰذَا . ٥

ہوتا؟

3024- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَالِمٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ.....

عَنُ مَسُوُوقِ عَنُ عَبُدِ اللّهِ قَالَ الْحَالَةُ يَمَنُ وَلَهُ اللّهِ قَالَ الْحَالَةُ يِمَنُ وَلَةِ الْآبِ وَمَنُ وَلَةِ الْآبِ وَيَعُلُ رَحِم وَيَنُ لَهُ الْآخِ وَكُلُّ رَحِم بِمَنُ وَلَةِ الْآخِ وَكُلُّ رَحِم بِمَنُ وَلَةِ اللّهِ فَا كُلُّ رَحِم بِمَنْ وَلَةٍ رَحِمِهِ الّتِي يُدُلِئُ بِهَا إِذَا لَمُ يَكُنُ وَارِثُ ذُو قَوَابَةٍ . ٥ يَكُنُ وَارِثُ ذُو قَوَابَةٍ . ٥

مسروق کہتے ہیں کہ عبداللہ نے کہا: ''خالہ مال کے مرتبہ پر ہے اور پھچھو باپ کے مرتبہ پر ہے اور بھتجی بھائی کے مرتبہ پر ہے اور ہررشتہ دار جب دارث رشتہ دارنہ ہوتو اس رشتہ دار کے مرتبہ پر ہوگا جس کے ذریعے اسے میت سے تعلق

فوائد: بیاثر اگر چیضعیف ہے کیکن سابقہ صحیح آ ٹار سے اس موقف کا رائح ہونا ثابت ہوتا ہے۔ (واللہ اعلم)

[28] بَابِ الْعَصَبَةِ

3025 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ قَالَ

- صن تكسند المحيح" بـ أحرجه عبدالرزاق (19113) وابن ابي شبيه 261/11(1168)
 - 🗗 ضعيف حداً: أخرجه عبدالرزاق19112
- ۞ضعيف: محمر بن سالم ضعيف ہے۔أخوجه عبدالرزاق (19115) وابن منصور (155) والبيهقي في الفرائض،باب من قال يتوريت ذوى الأرحام 6/217

العُرِينَ الْكَالِيمِينَ الْكِلِيمِينَ الْكِلْمِينَ الْكِلِيمِينَ الْكِلِيمِيمِينَ الْكِلِيمِينَ الْكِلِيمِينَ الْكِلِيمِينَ الْكِلْمِيلِ

ضحاک بن قیس بیان کرتے ہیں کہ سیّدنا عمر رفائی نے طاوعون عموال (یا زمانہ اسلام میں طاعون) دالوں میں فیصلہ کیا کہ جب وہ باپ کی طرف سے برابر کے رشتہ دار بول تو مال کی اولا دمقدم ہوگی۔ اور جب کوئی ' دوسر سے باپ کے زیادہ قریب ہوتو مال کے وہی زیادہ حق دار

حَدَّ ثَنِى الصَّحَاكُ بُنُ قَيْسٍ أَنَّ عُمَرَ قَصٰى فِى أَهُلِ طَاعُونِ عَمَواسَ أَنَّهُمُ كَانُوا إِذَا كَانُوا مِنْ قِبَلِ الْآبِ سَوَاءً فَبنُو اللَّمِ أَحَقُّ وَإِذَا كَانَ بَعُضُهُمُ أَقُرَبَ مِنْ بَعْضِ بِأَبِ فَهُمُ أَحَقُّ بِالْمَالِ. •

ہیں۔

فوائد: معلوم ہوا بھائی بھی عصبہ ہوتے ہیں جب باپ کی طرف سے برابر ہوں تو باپ اور مال کی اولاد (سکے بھائی) زیادہ حقد ار ہو نگے اسی طرح جو باپ کا زیادہ قریبی ہوگا وہ اتنا ہی زیادہ ستحق ہوگا۔ 3026۔ حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُو شِهَابِ حَدَّثَنِیْ أَبُو إِسْحَقَ الشَّیْبَانِیُّ عَنْ عُبَیْدِ بْنِ أَبَیْ الْجَعْدِ

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ شَدَّادِ بُنِ الْهَادِ قَالَ عبدالله بن شداد بن باد كتب بين يمامه ك دن ابو حذيفه أَصِيب سَالِمٌ مَوُلَى أَبِي حُذَيْفَة يَوُمَ كَ عَلام سالم قُلْ كَ كَ عَلَى - توان كى ميراث دوسودر بهم كو الْيُسَمَامَةِ فَبَلَغَ مِيرَاثُهُ مِائَتَى دِرْهَم فَقَالَ كَيْتُي سِيْنَا عَم رَثَالِثُ نَ عَهَا: "مال اس كى مال ك لئ عُصَرُ احْبسُوهَا عَلَى أُمِّه حَتَّى تَأْتِى روك ركوح كدوه سب مال يالين "

عَلٰى آخِرهَا . 🏻

فوائد: پوتا میراث میں سے حصہ پائے گا جب کہ نواسداس کا شار ذوی الا رحام میں ہوتا ہے میراث میں اس کا کوئی حصہ مقرر نہیں ۔ (واللہ اعلم)

3027 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ أَبِي إِسْحَقَ عَنِ الْحَارِثِ

سیّدنا علی رضائفیٔ کہتے ہیں نبی مطبیّ آیا نے فرمایا: ''اخیافی بھائی آپس میں وارث ہوں گے سوتیلے بھائی وارث نہ ہوں گے آدمی اپنے حقیقی بھائی کا وارث ہوگا سوتیلے بھائی کانہیں۔'' عَنُ عَلِيٍّ عَنِ النَّبِيِّ عَلَىٰ قَالَ الْإِخُوةُ مِنَ الْأُمْ يَتَوَارَلُونَ دُوْنَ بَنِى الْعَلَّاتِ يَرِثُ الْمُرَّبِي الْعَلَّاتِ يَرِثُ السَّرُجُلُ أَخَاهُ لِلَّبِيْهِ وَأُمِّهِ دُونَ أَخِيْهِ لَأَبِيهِ وَأُمِّهِ دُونَ أَخِيْهِ لَأَبِيهِ . • لَالْبَيْهِ . •

صحيح: أخرجه البيهقي في الفرائض، باب من قال يتوريت ذوى الارحام 6/239

اسناده قوى: أخرجه عبدالرزاق (16337)
حسن: أخرجه ابن ماجه في الفرائض، باب ميراث العصبة (2739)

٢ كتاب الفرائض

3028- حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

نعمان بن سلام كہتے ہيں ميں نے ابن عمر رفائنها سے كہا: مجھے بتائے اگرایک آ دی نے نواسہ چھوڑا کہ وہ اس کا وارث ہو گا؟ انہوں نے کہا: ' دنہیں۔''

عَن النُّعُمَان بُن سَالِم قَالَ قُلُتُ لِابُن عُمَرَ أَرَأَيُتَ رَجُلًا تَرَكَ ابُنَ ابُنَتِهِ أَيُرِثُهُ قَالَ لَا . ٥

3029 حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ قَالَ

قَالَ عَبُدُ اللَّهِ الْأُمُّ عَصَبَةً مَنُ لَا عَصَبَةً لَهُ وَالْأُخُتُ عَصَبَةُ مَنْ لَا عَصَبَةَ لَهُ . ٥

عبدالله رضائنه فرمات میں کہ جس کا عصبہ بیں اس کی عصبہ ماں ہے اور جس کے عصبہ نہیں اس کی عصبہ بہن ہے۔

3030- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوْس عَنْ أَبِيْهِ

سیّدنا ابن عباس والنّه کہتے ہیں نبی ملت این نے فرمایا: " حصے حصه دارول كو پہنچا دو اور جو باقى بيچے وہ قريبي رشته وارم دکے لئے ہے۔''

ٱلۡحِقُوا الُفَرَائِضَ بأَهۡلِهَا فَمَا بَقِيَ فَهُوَ لِأُولَى رَجُلِ ذَكُو . 🏵

عَن ابُن عَبَّساس عَن النَّبِي عِنْ اللَّهِ عَلَيْكَ قَالَ

فدائد: فرائض یعنی مقرر حق ور نه مین تقسیم کردینے کے بعد بقیہ زی جانے والا سارا مال قریبی

مذكركودے ديا جائے گا جے علم المير اث ميں عصبے نام سے تعبير كيا جاتا ہے۔

[29] بَابِ فِي مِيرَاثِ أَهُلِ الشِّرُلْثِ وَأَهُلِ الْإِسْكَامِ مشرک اورمسلمان کی میراث کا بیان

3031 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا يَحْلِي أَنَّ سُلَيْمَانَ بْنَ يَسَارِ أَخْبَرَهُ

عَنْ مُسحَمَّدِ بُن ٱلْأَشْعَثِ أَنَّ عَمَّةً لَهُ مُحمد بن اشعث كبتم بين ان كي يهودي يهويهي يمن مين فوت ہوئی انہوں نے اس بات کا ذکر عمر رٹائٹی بن خطاب سے کیا انہوں نے کہا: ''اس کے وارث اس کے مذہب کے قریبی رشتہ داروں میں سے کوئی ہوگا۔''

تُوُفِّيَتُ يَهُودِيَّةً بِالْيَمَنِ فَذَكَرَ ذٰلِكَ لِعُمَرَ بُنِ الْخَطَّابِ فَقَالَ يَوثُهَا أَقُرَبُ النَّاسِ إِلَيْهَا مِنُ أَهُلِ دِينِهَا . ٥

• صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 11/286 (11245)

عمنقطع ضعيف: ابراجيم في عبدالله بن مسعود سنبيل سنا،أخرجه ابن منصور (166)

◙صحيح: أخرجه البخاري، كتاب الفرائض، باب ميراث الولد من ابيه وامه (6732) ومسلم، كتاب الفرائض، باب ألحقوا الفرائض بأهلها (1615)

◘ حيد: أحرجه مالك في الفرائض،باب ميراث اهل الملل(12) وعبدالرزاق(9859) وابن ابي شيبه 372/11) (11490)

حكات المُعْرَقِينَ السَّالِيِّينَ السَّالِينِينَ السَّلِينِينَ السَّالِينِينَ السَّلِينِينَ السَّلِينِينَ السَّلِينَ السَّلِينَ السَّلِينَ السَّلِينِينَ السَّلِينَ السَّلِينَ السَّلِينَ السَّلِينِينَ السَّلِينِينَ السَّلِينِينَ السَّالِينِينَ السَّلِينِينِينَ السَّلِينِينَ السَّلِينِينَ السَّلِينِينِينَ السَّلِينِينَ ال

ف السن عابت بوا كوئي مسلمان كسى كافر اور كوئى كافر كسي مسلمان كا وارث نهيس بن سكتا بلكه ميت

کے ہم مذہب ہی آپس میں وارث تھہریں گے۔

3032 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمِ

عَنُ طَارِقِ بُنِ شِهَابٍ قَالَ مَاتَثُ عَمَّهُ الْأَشُعَثِ بُنِ قَيُس وَهِىَ يَهُودِيَّةٌ فَأَتَى

عُمَرَ بُنَ الُخَطَّابِ فَقَالَ أَهُلُ دِيْنِهَا

يَرِثُونَهَا •

طارق بن شہاب کہتے ہیں کہ اشعث بن قیس کی یہودیہ کھوچھی فوت ہوئی تو وہ عمر بن خطاب رہائی کے پاس گئے۔ انہوں نے کہا: ''وہ اس کے وارث اس کے مذہب کے لوگ ہوں گئے۔''

3033 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ حَمَّادٍ

عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ قَالَ عُمَرُ بُنُ الْحَطَّابِ أَهْلُ الشِّرُكِ لَا نَرِثُهُمُ وَلَا يَوتُونَا . ٥

ابراہیم کہتے ہیں کہ سیّدنا عمر بن خطاب رہائی نے فرمایا: "مشرکوں کے نہ ہم وارث بنیں گے اور نہ ہی وہ ہمارے وارث بنیں گے۔"

3034 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا حَسَنٌ عَنْ عِيسَى الْحَنَّاطِ

عَنِ الشَّعُبِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ وَأَبَا بَكُــرٍ وَعُــمَــرَ قَـالُوُا لَا يَتَوَارَكُ أَهُلُ دِينَيْن . •

قعمی کہتے ہیں کہ رسول اللہ طفی میں اور سیّدنا ابو بکر وہ اللہ طفی میں سیّدنا عمر وہائی نتیوں نے فرمایا: '' وو ند بہب والے آپس میں وارث نبیں بول گے۔''

3035 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ مُطَرِّفٍ

عامر کہتے ہیں کہ سیدنا عمر زلاقتہ نے فریایا: '' دو مذہب والے آپس میں وارث نہ ہول گے۔'' عَنُ عَامِرٍ عَنُ مُحمَرَ قَالَ لَا يَتَوَارَكُ أَهُلُ مِلْنَيْنِ . ٥

فوائد: ایک تو اس سے بیمعلوم ہوا کہ کافر دمسلم باہم دارث نہیں بنیں گے دوسرااس کے ظاہری مفہوم سے نیہ بات بھی متر شح ہے کہ کفار بھی جب ان کی ملت دین ایک نہیں ہوگا وہ آپس میں دارث نہیں

[🛈] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه370/11(11484) وعبدالرزاق

[🛭] ضعيف: أخرجه عبدالرزاق(9856 -19294) وابن منصور(141)

[€]ضعيف: أخرجه عبدالرزاق(9871)

المسلم و المسلم الكافر (6764) و رواه مسلم في المسلم و المسلم الكافر (6764) و رواه مسلم في الفرائض (1614) و رواه مسلم في الفرائض (1614)

حَرِّ اللَّهِ اللهُ اللهِ اللهُ الله

بنیں کے یہی قول امام شوکانی رائیجیہ کا ہے۔ (الروضة الندية 2/ 706)

3036 أَخْبَرَنَا أَبُوْ نُعَيْم حَدَّثَنَا شَرِيْكٌ عَنِ الْأَشْعَثِ عَنِ الْحَسَنِ

وَلَا يَرِثُونَا إِلَّا أَنْ يَمُوتَ لِلرَّجُلِ عَبُدُهُ أَوْ أَمْتُهُ . 0

عَنُ جَابِر قَالَ لَا نَوتُ أَهُلَ الْكِتَابِ سَيِّدنا جابر وَالنَّهُ نَ فرمايا: "نه بم ابل كتاب ك وارث ہوں گے اور نہ وہ ہمارے وارث ہوں گے۔اس کے علاوہ که آ دمی کا غلام یا لونڈی مر جائے (تو وہ اس کا وارث ہو

فواند: ندکورة حدیث کی سنداگر چضعیف بے لیکن بات درست بے غلام یا لونڈی چونکہ بندے کا مال ہوتا ہے تو وہ مال کی طرح ہی اس کا مالک ہوتا ہے جاہے وہ غلام کانفس اس کی ذات ہو یا مال و

3037 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى حَدَّثَنَا شَرِيْكٌ عَنِ الْأَشْعَثِ عَنِ الْحَسَنِ

عَنُ جَابِرِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْ اللَّهِ عِنْهُ : سیّدنا جابر فالله مست میت بین که رسول الله مستقطیم نے فرمایا: ((لَا نَرِكُ أَهُلَ الْكِتَابِ وَلَا يَرِثُونَا إِلَّا "نہ ہم اہل كتاب كے وارث ہوں كے اور نہ وہ ہارے الرَّجُلُ يَرِكُ عَبْدَهُ أَوْ أَمَتَهُ) . ٥ وارث ہوں گے مگر آ دمی اینے غلام یا لونڈی کا ورث ہو

3038 - حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ دَاوْدَ عَنِ الشَّعْبِيّ

مسروق ولينيئه كيتيے ہيں كه معاويه وظائفيّه مسلمان كو كافر كا وارث بناتے تھے۔ اور کافر کومسلمان کا وارث نہیں بناتے تھے۔مسروق خالف کہتے ہیں: '' اس سے زیادہ محبوب میرے نزدیک اسلام میں کوئی فیصلہ نہیں ہوا۔ ' ابو محمہ سے کہا گیا آپ اس کے قائل ہیں؟ انہوں نے کہا:''نہیں۔''

عَنُ مَسُرُوقِ قَالَ كَانَ مُعَاوِيَةً يُوَرَّكُ الُـمُسُلِمَ مِنَ الْكَافِرِ وَلَا يُوَرِّكُ الْكَافِرَ مِنَ الْمُسْلِم قَالَ قَالَ مَسُرُوقٌ وَمَا حَـدَثَ فِي الْإِسُلامِ قَضَاءٌ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْهُ قِيلَ لِأَبِي مُحَمَّدٍ: تَقُولُ بِهٰذَا قَالَ

شعیف: أخرجه ابن ابی شیبه 373/11(11495)

9. √:

[🛭] ضعیف

اسحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 374/11(11497) وابن منصور (147)

حكال الفرائض ١٥٥٥ المرافض ١٥٥ ال

اهلُ مِلَّتَيْن) كالفاظ اس يرشامد بين نيزعمر شائنة كامحد بن اشعث شائنة كي ليه فيصله اس كاشامد ب-

3039 حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ عَنْ دَاوَدَ بْنِ أَبِيْ هِنْدِ

عامر كہتے ہيں معزلة بنت حارث يمن ميں فوت ہوئي اوروه

یبودیقی اشعث بن قیس ان کی میراث کے متعلق سیّدناعمر ر اللهٰ کے پاس گئے اور وہ ان کی چھو پھی تھی تو سیّد ناعمر رہاللہٰ

نے کہا: "پیتمہاراحق نہیں ہے اس کے مذہب کا قریبی

رشته دار اس کا وارث ہوگا، دو ندہب والے آپس میں

'' دومختلف مذہب والے آپس میں وارث نہیں ہول گے

اور نہ ہی لا وارث کومجوب کریں گے۔''

وارث نہیں ہوتے ۔''

3040 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدِ انس بن سیرین کہتے ہیں سیدنا عمر والنفظ بن خطاب نے کہا:

حَدَّلُنَا أَنْسُ بْنُ سِيُرِيْنَ قَالَ قَالَ عُمَرُ بُنُ الُخَطَّابِ لَا يَتَوَارَثُ مِلَّتَان شَتَّى

عَنُ عَامِرِ أَنَّ الْمُعُزِلَةَ بِنُتَ الْحَارِثِ

تُـوُفِّيَتُ بِالْيَمَنِ وَهِيَ يَهُودِيَّةٌ فَرَكِبَ

الْأَشْعَثُ بُنُ قَيْسٍ وَكَانَتُ عَمَّتَهُ، إلى

عُمَرَ فِي مِيْرَاثِهَا فَقَالَ عُمَرُ: لَيْسَ

ذاك لَكَ يَرِثُهَا أَقُرَبُ النَّاسِ مِنْهَا

مِنْ أَهْل دِينِهَا لَا يَتَوَارَثُ مِلَّتَان . 9

وَلَا يَحُجُبُ مَنُ لَا يَرِكُ . ٥

3041 حَدَّقَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى عَنْ مَعْمَرِ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَلِيّ بْنِ حُسَيْنِ

عَنْ عَمْرِو بْنِ عُثْمَانَ

عَنُ أُسَامَةَ بُن زَيُدٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَسَالَ لَا يَسِرِتُ الْمُسْلِمُ الْكَافِرَ وَلَا

الْكَافِرُ الْمُسُلِمَ. ٥

وارث ہوگا۔''

3042ـ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن عَنْ سَعِيْدِ....

عَنُ أَبِي مَعُشَرِ عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ إِذَا مَاتَ الْمَيّتُ وَجَبَتِ الْحُقُوقُ لِأَهُلِهَا

اسامه بن زيد ولي عن كت بي كدرسول الله طفي ولم فرمايا: "مسلمان كافر كا وارث نبيس موگا اور نه بى كافرمسلمان كا

ابومعشر کہتے ہیں ابراہیم نے کہا:''جب فوت ہونے والا فوت ہو گیا تو حقداروں کا حق ثابت ہو گیا۔ اور جو شخص

٠ صحيح: أخرجه ابن منصور (144)

ئقطع ضعيف: أخرجه ابن منصور (138) الكافر والاالكافر المسلم (6764) ومسلم في الفرائض (1614)

المتفق عليه: أخرجه البخارى، كتاب الفرائض، باب لايرت المسلم

591 کیاب الفرائض 591 الكالكان الكان الك

وراثت تقتیم ہونے سے پہلےمسلمان ہوایا اسے آ زاد کیا گیا تو اس کے لئے انہوں نے کیچ بھی مقرر نہیں کیا۔''

وَلَـمُ يَجُعَلُ لِمَنُ أَسُلَمَ أَوُ أُعْتِقَ قَبُلَ أَنُ يُقْسَمَ الْمِيرَاثُ شَيْئًا. ٥

3043 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْن عِيسَى عَن الزُّهْرِيّ عَنْ عَلِيّ

ه و ده پرن حسین

فرمایا: '' نهمسلمان کافر کا وارث ہوگا اور نه کا فرمسلمان کا۔'' عَنُ أُسَامَةَ بُن زَيْدٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَىٰ لَا يَسرتُ الْمُسَلِمُ الْكَافِرَ وَلَا الْكَافِرُ الْمُسُلِمَ . 9

3044 حَـدَّثَـنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنِ عَنْ عَمْرِو بْنِ

عُثْمَانَ

سيّدنا اسامه بن زيد وظافها كمتع بين كه نبي السيّريّن في مايا: '' نەمسلمان كافر كا دارث ہوگا اور نە كافرمسلمان كاپ''

عَـنُ أُسَامَةَ بُن زَيُدٍ عَن النَّبِيّ ﷺ قَالَ: ((لَا يَرِثُ الْمُسُلِمُ الْكَافِرَ وَلَا الْكَافِرُ الْمُسْلِمَ) . 9

[30] بَابِ الْمُكَاتَب

مال معین کے اداکرنے کی شرط برآ زاد ہونے کا معاہدہ کرنے والے غلام کا بیان

3045 حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَان حَدَّثَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ

عَنْ مُغِيرَةً عَنْ إِبْرَاهِيمَ قَالَ لَيْسَ مغيره كتب بي كمابراتيم نے كها: "مال معين اداكرنے كى شرط يرآ زاد ہونے كا معاہدہ كرنے والے غلام كے ليے اس ونت تک میراث نہیں جب تک اس کی مکا تبت کے ا مال سے اس کے ذمہ چھ بھی قرض باتی ہو۔''

لِلْمُكَاتَبِ مِيرَاتُ مَا بَقِيَ عَلَيْهِ شَيْءٌ مِنُ ، مُكَاتَبَته. ٥

فوائد: (۱) " مكاتب" ايے غلام كوكت بين جس نے اينے مالك بي كھت يات كرلى موكم اتنی رقم کی ادائیگی کی عوض میں آزاد ہو جاؤنگا۔ (۲) معلوم ہوا ادائیگی مکمل ہونے تک وہ غلام ہی رہے گا اور

Фصحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 424/11675 (11675) وعبدالرزاق (9889)

[🗗] صحیح: (3041) عدیث بی کرر ہے۔

³صحیح: سابقہ،ی کررے۔

[@]صحيح: دارى منفرد بير_

الكَالِيْدِينَ الكَالِيْدِينَ الكَالِيْدِينَ الكَالِيْدِينَ الكَالِيْدِينَ الكَالِيْدِينَ الكَالِيْدِينَ الكَالِيْدِينَ الكَالِيَةِ اللهِ

وارث نہیں ہے گا کیونکہ غلام کسی رشتہ دار کا وارث نہیں بن سکتا۔

3046 حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ

عَنُ عَطَاءٍ فِى رَجُلٍ لَهُ بَنُوْنَ قَدُ أَعْنَقَ مِنُ بَعُضِهِمُ النِّصُفَ وَمِنُ بَعْضٍ النُّلُكَ وَمِنُ بَعْضٍ النُّلُكَ وَمِنُ بَعْضٍ النُّلُكَ وَمِنُ بَعْضٍ النُّلُكَ وَمِنُ بَعْضٍ الرُّبُعَ قَالَ لَا يَوِثُونَ حَتَّى وَمِنُ بَعْضٍ الرُّبُعَ قَالَ لَا يَوِثُونَ حَتَّى وَمِنْ بَعْضٍ الرُّبُعَ قَالَ لَا يَوِثُونَ حَتَّى

عطاء سے اس شخص کے متعلق مروی ہے کہ جس کے چند بیٹے ہوں اور بعض کا نصف حصہ آزاد ہوا ہو اور بعض کا تہائی اور بعض کا چوتھائی تو لڑکے وارث نہ ہوں گے حتی کہ وہ پورے پورے آزاد ہوجا کیں۔''

فوائد: سسالی آزادی کے سلے اور ہا ہے۔ بیشے غلام ہیں اب وہ ان کی آزادی کے سلے ادائیگی کر رہا ہے۔ بعض کی آدھی رقم اوا کر دی ہوئی ہوئی ہے جب کہ بعض کی تہائی اور بعض کی چوتھائی ، چونکہ ان میں کوئی بھی ابھی مکمل آزاد نہیں ہوالہٰذاان میں سے کوئی بھی باپ کی وفات پر وارث نہیں بن سکتا۔

3047 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جَعْفَرِ الرَّقِّيُّ وَسَعِيدُ بْنُ الْمُغِيرَةِ عَنِ ابْنِ الْمُبَارَكِ عَنْ

عَنُ حَمَّادٍ عَنُ إِبُسرَاهِيمَ فِى رَجُلٍ اشتَرَى ابُسَهُ فِى مَرَضِهِ قَالَ إِنْ حَرَجَ مِنَ الشُّكُثِ وَرِثَهُ وَإِنْ وَقَعَتُ عَلَيْهِ السِّعَايَةُ لَمُ يَرِثُ. ٥

حماد کہتے ہیں ابراہیم نے اس مخص کے متعلق کہا جس نے اپنے مرض میں اپنے بیٹے کوخریدااگر وہ تہائی آ زاد ہو گیا تو وہ اس کا وارث نہیں ہوگا۔

فوائد: کوئی بیارآ دمی ایخ غلام بیٹے کی ادائیگی کرتا ہے وہ تہائی مال تک خرچ کرسکتا ہے اگر تو وہ تہائی مال تک خرچ کرسکتا ہے اگر تو وہ تہائی مال سے ہی آزاد ہوجا تا ہے تو آزاد ہونے کی بناء پر دہ وارث ہو گالیکن اگر ادائیگی مکمل نہیں ہوسکی بیٹے کو آزادی کے لیے مشقت وہ مزدوری کرنا پڑی تو لاز ما ابھی اس کی غلامی باقی ہے ایس حالت میں وہ وارث نہیں بن سکتا ۔ (واللہ اعلم)

3048 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْم

حسن اپنے والد سے قل کرتے ہیں کہ تعمی نے کہا ''مکا تب

حَدَّثَكَ احَسَنٌ عَنُ أَبِيهِ عَنِ الشَّعُبِيِّ

[●] صحیح: أخرجه ابن ابی شیبه 149/6 (614) وعبدالرزاق (15722) والبطحاوی فی (شرح معافی الآثار) 111/3 والبهقی مرفوعاً فی المكاتب،باب المكاتب عبد مایقی علیه درهم 342/10 اس كی سند من بهد

[🛭] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 177/11 (11872) وعبدالرزاق (16485)

المراز المالية 593 کتاب الفرائض کتاب الفرائض

قَالَ حَدُّ الْمُكَاتِبِ حَدُّ الْمَمْلُولِ فِي صلى حد (حالت) غلام كي طرح بحتى كه وه آزاد مو جائے۔'' حَتْي بُعْتَقَ 0

فوائد: جب مكاتب كمل آزادنه هونے كى بناء يروارث نہيں بن سكتا تو اس يرآزادوالى حديمي نہیں لگائی جاسمتی للبذا اس برغلام والی حد ہی جاری ہوگی (واللہ اعلم) ٦31ر.... بَابِ الْوَ لَاءِ

ولاء كابيان

3049 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ حَدَّثَنَا يُوْنُسُ

ز ہری کہتے ہیں کہ نبی مٹینے تیا نے فرمایا: ''آ زاد کردہ غلام دینی بھائی ہے اور اس کی میراث کامستحق و شخص ہے جو

النَّاس بِمِيوَاتِهِ أَقُوبُهُمُ مِنَ الْمُعْتِقِ)) . 🗸 🦷 آزاد كرنے والے كسب سے زيادہ قريب بو-''

ف اند: (۱) "الولاء" آزاد كرنے والے اور ہونے والے كے درميان پيدا ہونے والے رشتے کو کہتے ہیں نہ تو یہ بہد کی جاسکتی ہے اور نہ نیچی جاسکتی ہے (۲) ''مولیٰ'' آزاد کردہ غلام وین بھائی ہوتا ہے اس کا مقام عام اہل اسلام جتنا ہوتا ہے ﷺ آزاد کردہ غلام کے اگر ورثہ نہ ہوں تو اس کے مال کامستحق اس کوآ زاد کرنے والا مااس کے قریبی عزیز ہوں گے۔

3050 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ.

منصور حسن سے اور محمد بن سالم جعبی سے روایت کرتے ہیں کہان وونوں نے اس شخص کے متعلق کہا جس نے ایک غلام آزاد کیا پھروہ اور غلام دونوں مر گئے اور آزاد کرنے والے نے اپنا باب اور بیٹا جھوڑا تو (حسن اور شعمی) دونوں کا کہنا ہے وہ مال بیٹے کو ملے گا۔''

حَـدَّثُنَا مَنْصُورٌ عَنِ الْحَسَنِ وَمُحَمَّدُ بُنُ سَالِم عَنِ الشُّعُبِيِّ فِيُ رَجُل أَعْتَقَ مَـمُلُوكًا ثُمَّ مَاتَ الْمَوْلَى وَالْمَمُلُوكُ وَتَـرَكَ الْـمُعُتِقُ أَبَاهُ وَابُنَهُ قَالَا الْمَالُ لِلابُن . 6

عَن السزُّهُ رِى قَالَ قَالَ النَّبِيُّ عِنْ اللَّهِ عَلَى ا

((الْمَوُلِي أَنَّ فِي الدِّينِ وَنِعُمَةٌ أَحَقُ

فوائد: معتق آزاد کرنے والے کی عدم موجودگی میں ولاء کامستحق اس کا بیٹا یا بوتا ہوگا نیز آئندہ

[•] صحیح: اس کی شاہد ہے، ابن عباس ظافھا کی حدیث ابن الی شیبہ 6/148 (1 أ 6) میں اور طبحاوی (شرح معانی الآثار) 111/3 يس_

②صحيح: ويُحْ*كَمُ مُقدمه فتح* الباري(ص:455) وأخرجه والبيهقي في المكاتب، باب الولاء لكبر 304/10

[€]صحيح: الى الحسن أخرجه ابن منصور (262) وابن ابي شيبه 394/11 (11565)

المُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينِ الْمُعِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِي الْمُعِينِ الْمُعِلِي الْمُعِيلِي ال

حديث ملاحظه سيحييه

3051 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بُنُ عِيْسَى حَدَّثَنَا عَبَّادٌ عَنْ عُمَرَ بْنِ عَامِرٍ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَبَّب.

> عَنُ زَيْدِ بُن ثَابِتٍ فِي رَجُلِ تَرَكَ أَبَاهُ وَابُنَ ابُنِهِ فَقَالَ الْوَلَاءُ لِابُنِ الِابُن . •

زید بن ثابت سے اس آ دمی کے متعلق مروی ہے: ''جس نے اپنا باپ اور بوتا حچھوڑا ولاء یوتے کو ملے گی۔''

3052 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا مُعَمَّرٌ حَدَّثَنَا خُصَيْفٌ

زیاد بن ابومریم کہتے ہیں ایک عورت اپنا غلام آزاد کر کے فوت ہوگئی اوراس نے اپنا ایک بیٹا اور بھائی حچیوڑا پھراس کا آ زاده کرده غلام فوت ہو گیا۔عورت کا لڑکا اور اس کا بھائی اس کی میراث کے متعلق یو چھنے کے لئے نبی مشکر کیا ہ کے پاس گئے تو نبی مشی کی نے فرمایا: "اس کی میراث عورت کے بیٹے کو ملے گی۔'' اس کے بھائی نے کہا:''یا رسول الله طفي و الراس نے كوئى جرم كيا موتاتو وه كس کے ذمہ ہوتا؟ آپ نے فرمایا:'' تیرے ذمہ ہوتا۔''

عَنُ زِيَادِ بُنِ أَبِي مَرْيَمَ أَنَّ امُرَأَةً أَعُتَقَتُ عَيْدًا لَهَا ثُدَّ تُوُفِّيتُ وَتَرَكُّتُ ابُنَهَا وَأَخِياهَا ثُمَّ تُو فَي مَوْ لَاهَا فَأَتَعِي النَّبيَّ عِنْ الْهُ الْهُ الْهُ وَأَخُوهُا فِي مِيْرَاثِهِ فَقَالَ النَّبِي عِلَى اللَّهِ اللَّهُ لِابُن الْمَرُأَةِ)). فَقَالَ أَخُوهَا يَا رَسُولَ اللَّهِ لَوُ أَنَّهُ جَرَّ جَرِيْرَةً عَلَى مَنُ كَانَتُ قَالَ

فواند: معلوم ہوا'' ولاء'' آزاد کردہ غلام کے مال کامستحق معتق کی عدم موجودگی میں اس کا بیٹا ہوگا البنة اس کے جرم کی یو چھ کچھوہ بروں سے ہوگی۔

3053 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّلْتِ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ

رَجُلِ أَعْتَقَ مَـمُلُوكًا لَهُ فَمَاتَ وَمَاتَ الْمَوْ لَى فَتَرَكَ الْمُعْتِقُ أَبَاهُ وَابُنَهُ فَقَالَ لِأُبِيُهِ كَذَا وَمَا بَقِيَ فَلابُنِهِ . 9

أَخْبَونَا مُغِيرَةُ قَالَ سَأَلُتُ إِبُواهِيمَ عَنُ مِعْرِه كَتِي مِن فِي ابرائيم سے اس آدى كمتعلق یو جھا جس نے اپنا غلام آ زاد کیا پھر وہ خود بھی فوت ہو گیا اوراس کا غلام بھی فوت ہو گیا۔ اور آ زاد کرنے والے نے اپنا باپ اور بیٹا حچوڑا انہوں نے کہا:''اس کے باپ کوا تنا

ملے گا اور بقیہاں کے مٹے کا ہے۔''

حسن: أخرجه ابن ابي شيبه 393/11 (11566) وعبدالرزاق (16298)

² حسن: ارواء الغليل (1697) وعبدالرزاق 95/9

[◘]صحيح: أخرجه ابن منصور (261) وابن ابي شيبه 393/11 (11567) وعبدالرزاق (11257، 16297)

حَكَرُ لِيَّتِكُ الْكَالِيَّا فِي الْفُرائِضِيُّ 595 وَ الْكِلْوِيِّ كَتَابِ الْفُرائِضِ كَابِ الْفُرائِضِ

فوائد: موجودہ اثر کے برعکس سابقہ آٹارکوہی وجہ ترجیح پائے جانے کی بناء پرترجیح حاصل ہوگ۔

3054 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّلْتِ حَدَّثَنَا هُشَيْمُ

شعبہ کہتے ہیں میں نے حکم اور حماد دونوں سے سناوہ فرماتے تھے:''سارا مال بیٹے کو ملے گا۔''

عَنُ شُعْبَةَ قَالَ سَمِعْتُ الْحَكَمَ وَحَمَّادًا يَقُولَانِ هُوَ لِلِلابُنِ . • تَقُولَانِ هُوَ لِلِلابُنِ . • •

3055 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا الْأَشْعَثُ

عَنِ الْحَسَنِ أَنَّ النَّبِيَ عَنَى الْحَرَجَ إِلَى الْبَقِيعِ فَرَأَى رَجُلا يُبَاعُ فَأَتَاهُ فَسَاوَمَ الْبَقِيعِ فَرَآهُ رَجُلا يُبَاعُ فَأَتَاهُ فَسَاوَمَ بِهِ ثُمَّ تَرَكَهُ فَرَآهُ رَجُلْ فَاشْتَرَاهُ فَأَعْتَقَهُ بَهِ ثُمَّ جَاءَ بِهِ إِلَى النَّبِي عَنَى فَقَالَ إِنِي النَّبِي فَقَالَ رَبِي النَّبِي فَقَالَ رَبِي النَّبِي فَقَالَ رَدَى فِيهِ اللَّهَ الْمُعَرَيْمِ فَقَالَ ((هُو أَخُوكَ وَمَوُلاكَ)) . فَقَالَ مَا تَرَى فِي صُحْبَتِهِ فَقَالَ : ((إِنُ قَالَ مَا تَرَى فِي صُحْبَتِهِ فَقَالَ : ((إِنُ مَا تَكَى فَهُو خَيْرٌ لَكَ وَشَرٌ لَكَ وَإِنُ اللَّهُ قَالَ : ((إِنُ مَاتَ كَى فِي مَالِهِ قَالَ : ((إِنُ مَاتَ وَلَهُ يَدُوكُ عَصَبَةً فَأَنْتَ وَارِثُهُ)) . قالَ مَا تَرَى فِي مَالِهِ قَالَ : ((إِنُ مَاتَ وَلَهُ يَدُوكُ عَصَبَةً فَأَنْتَ وَارِثُهُ)) . هو وَلَمُ يَدُوكُ عَصَبَةً فَأَنْتَ وَارِثُهُ)) . هو وَلَمُ يَدُوكُ عَصَبَةً فَأَنْتَ وَارِثُهُ)) . هو وَلَمُ يَدُوكُ عَصَبَةً فَأَنْتَ وَارِثُهُ)) . هو وَلَمُ يَدُوكُ عَصَبَةً فَأَنْتَ وَارِثُهُ)) . هو وَلَمُ يَدُوكُ عَصَبَةً فَأَنْتَ وَارِثُهُ)) . هو وَلَمُ يَدُوكُ عَصَبَةً فَأَنْتَ وَارِثُهُ)) . هو وَلَمُ يَدُوكُ عَصَبَةً فَأَنْتَ وَارِثُهُ)) . هو وَلَمُ يَدُوكُ عَصَبَةً فَأَنْتَ وَارِثُهُ)) . هو وَلَمُ يَدُوكُ فَي عَصَبَةً فَأَنْتَ وَارِثُهُ) . هو وَلَمُ يَدُوكُ فَي عَلَيْهِ قَالَ عَصَبَةً فَأَنْتَ وَارِثُهُ)) . هو يُعَلِيهِ قَالَ عَرَاهُ فَي أَنْ فَالْهُ قَالَ : ((إِنْ مَاتَ فَي فَي مَالِهُ قَالُتَ وَارِثُهُ)) . هو يُقَالَ عَرَاهُ فَي أَلَى الْهُ قَالَ عَصَبَةً فَقَالَ اللَّهُ قَالَ الْهُ قَالَ عَصَبَةً فَانْتَ وَالْكُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُ كُولُ فَالْمُ اللَّهُ وَلَا لَا اللَّهُ فَالَالَ الْعَلَى الْمُؤْلِقُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُ كُولُولُ كُولُ كُولُولُهُ أَلَا فَالْعُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُ كُولُولُ كُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُ لَهُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُولُ كُولُ فَلَا لَهُ عَلَى اللَّهُ فَالْعُولُ كُولُولُ كُولُ كُولُولُ كُولُ كُولُ كُولُولُ

سیّدنا حسن رفی النی کہتے ہیں کہ نبی مطبق اللّٰی اللّٰی کا طرف کے ایک آدی وہاں فرخت کیا جا رہاتھا آپ نے وہاں جا کر اس کی قیمت لگائی پھراسے چھوڑ دیا۔ پھراسے کسی اور آدمی نے دیکھا تو اسے خرید کر آزاد کر دیا۔ پھر اسے لے کر نبی مطبق آئے ہے ہیاس آیا اور کہا: ''میں نے اسے خرید کر آزاد کر دیا۔ پھر اسے ہے'' کر نبی مطبق کیا خیال ہے؟'' آپ نے فرمایا: ''وہ تیرا بھائی اور تیرا آزادہ کردہ غلام ہے۔'' اس نے کہا: اس کی صحبت کے متعلق آپ کا کیا خیال ہے؟ آپ نے فرمایا: ''اگر وہ تیراشکر کرے تو وہ اس کے لئے بہتر ہے اور تیرے لئے بہتر اور اس کے لئے بہتر ہوا ہے۔'' کر ہے تو وہ تیرے لئے بہتر اور اس کے لئے برا ہے۔'' کر ہے تو وہ تیرے نے فرمایا: ''اگر وہ مرجائے اور عصبہ نہ چھوڑ ہے اس نے کہا: ''اس کے مال کے متعلق آپ کا کیا خیال ہے؟ آپ نے فرمایا: ''اس کے مال کے متعلق آپ کا کیا خیال ہے؟ آپ نے فرمایا: ''اگر وہ مرجائے اور عصبہ نہ چھوڑ ہے تو تو اس کا وارث ہوگا۔''

3056 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَنْبَأَنَا أَشْعَثُ عَنِ الْحَكَمِ وَسَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلٍ عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ شَدَّادٍ أَنَّ ابُنَةَ حَمُزَةَ أَعْتَ قَـتُ عَبُدًا لَهَا فَمَاتَ وَتَرَكَ ابُنَتَهُ

[€] ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 394/11 (11570) وعبدالرزاق (16267)

❸ضعيف: أخرجه البيهقي في الفرائض، باب الميراث بالولاء 240/6، وعبدالرزاق (16214)

596 كاب الفرائض كالم الكالكان الكالكان

> وَمَوُلَاتَهُ بِنُتَ حَمُزَةً فَقَسَمَ رَسُولُ الله على مير الله ينن ابنته و مَو كاته بنت حَمُزَةَ نِصُفَيْن . 9

عبداللہ بن شداد کہتے ہیں کہ حزہ کی بیٹی نے اپنا ایک غلام آ زاد کیا پھروہ فوت ہو گیا اور اس نے اپنی ایک بیٹی حمزہ کی ایک بینی اور اینی آزاد کرنے والی جھوڑی تو رسول الله طَيْنَ عَلَيْهِ نِهِ اس كى ميراث اس كى ابني بيتى اور حمزه كى بٹی آ زاد کرنے والی میں نصف نصف تقتیم کر دی۔

فوائد: آزاد کردہ غلام کے اگر ور نثہ موجود ہیں تو اس کے تر کے کے وہ مستحق ہوں گے لیکن اگر ان میں کوئی عصبہ نہیں ہے اور مال کے گیا ہے تو وہ معتق آزاد کرنے والے کو ملے گا۔

3057 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَلِيّ بْن مُسْهِر عَن الشَّيْبَانِيّ عَنِ الْحَكَمِ

شموس کند یہ کہتی ہیں میں نے علی رہائٹیا سے والد کے متعلق عَنُ شَمُوسَ الْكِنُدِيَّةِ قَالَتُ قَاضَيْتُ بیان کیا جنہوں نے میرے اور آزاد کرنے والے کے إلْى عَلِيّ فِي أَب مَاتَ فَلَمْ يَدَعُ أَحَدًا علاوہ کوئی نہ چھوڑا۔ آ دھا مال مجھے اور آ دھا آ زاد کرنے غَيْسرى وَمَوُلاهُ فَأَعُطَانِي النِّصْفَ والے کو دیا۔

3058 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ غُيَيْنَةَ عَنْ عَلِيّ بْن مُسْهِر عَن ابْن أَبِيْ لَيْلَى عَنِ الْحَكَمِ

ابوالکو و کہتے ہیں کہ سیدناعلی والٹو کے پاس ایک لڑک اور آزاد کرنے والا لایا گیا۔ انہوں نے آ دھا لڑکی کو دیا اور آ دھا آ زاد کرنے والے کو دیا۔

عَنُ أَبِي الْكُنُودِ عَنُ عَلِيّ أَنَّهُ أَتِيَ بِابْنَةٍ وَمَـوُلِّي فَـأَعُطَى إِلابُنَةَ البِّصُفَ وَالْمَوْلَى النِّصُفَ قَالَ الْحَكَمُ فَمَنُزلِي هٰذَا نَصِيبُ الْمَوُلَى الَّذِى وَرِثَهُ عَنُ مَهُ لاهُ . 9

وَأَعْطَى مَوْلَاهُ النِّصْفَ. ٥

3059 أَخْبَرَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى عَنِ ابْنِ إِدْرِيسَ عَنْ أَشْعَثَ.

عَن الْحَكَمِ عَنُ عَبُدِ الرَّحُمَنِ بُنِ مُـدُلِج أَنَّهُ مَاتَ وَتَرَكَ ابُنَّتَهُ وَمَوَالِيَهُ

تكم كہتے ہيں عبدالرحمٰن بن مدلج فوت ہوئے۔اوراين بين اور آزاد کرنے والے چھوڑے سیّدناعلی رہائیڈنے آدھا ان

[•] صحيح بالشواهد: أخرجه ابن ابي شببه (885) والبيهقي 241/6 مزيدو يُحيّ شرح معاني الآثار 401/4

[•] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 267/11 (11186) وابن منصور (176)

[€]ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 268/11 (11188)

حَكُرُ عَنَى الْكَالِيْفِي اللَّهِ وَ 597 اللَّهِ الفرائض ٢٥٠٠

کی بیٹی کو دیا اور آ دھا ان کے آ زاد کرنے والوں کو۔''

النَّصُفَ . 0

3060 حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ عَنِ ابْنِ إِدْرِيْسَ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ عَنِ الْحَكَمِ

عَنِ الشَّـمُّوسِ أَنَّ أَبَاهَا مَاتَ فَجَعَلَ عَنِ الشَّـمُّوسِ أَنَّ أَبَاهَا مَاتَ فَجَعَلَ عَلِيٌّ لَهَا النِّصُفَ وَلِمَوالِيهِ النِّصُفَ . ٥

فَأَعُطَى عَلِيٌّ ابْنَتَهُ النِّصُفَ وَمَوَ الِيّهُ

شموس کہتی ہیں ان کے والد فوت ہوئے تو سیّدنا علی رُخالَیْدُ نے نصف ان کی بیٹی کو دیا اور نصف ان کے آزاد کرنے والوں کو۔''

3061 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا أَشْعَثُ.....

عَنُ جَهُم بُنِ دِينَادٍ عَنُ إِبْرَاهِيمَ أَنَّهُ تَنُ جَهُم بُنِ دِينَادٍ عَنُ إِبْرَاهِيمَ أَنَّهُ بَاللَّه مَنَ أَخُتَيُنِ اشْتَرَتُ إِحْدَاهُمَا لِجُلَاهُمَا أَبَّلُوانِ أَبُاهَا فَأَعْتَقَتُهُ ثُمَّ مَاتَ قَالَ لَهُمَا التَّلُوانِ فَا مَقِى فَرِيضَتُهُمَا فِي كِتَابِ اللَّهِ وَمَا بَقِي فَلِيضَتُهُمَا فِي كِتَابِ اللَّهِ وَمَا بَقِي فَلَامُعْتَقَة دُونَ الْأُخُرَى .

فَلْلُمُعْتَقَة دُونَ الْأُخُرَى .
فَلْلُمُعْتَقَة دُونَ الْأُخُرَى .

ہم بن دینار کہتے ہیں کہ ابراہیم سے دو بہنوں کے متعلق
پوچھا گیا جن میں سے ایک نے اپنے والد کوخر ید کر آزاد
کیا پھر والد فوت ہوا تو انہوں نے کہا ان دونوں کو دو تہائی
طے گی کتاب اللہ میں بھی ان کا یہی حصہ ہے اور جو باتی
ہے وہ آزاد کرنے والی کو ملے گا دوسری کونہیں ملے گا۔

فوائد: بیاثر اگر چضعف کا حامل ہے بہر حال ترکہ کی تقسیم ندکورۃ تقسیم کے مطابق ہی ہوگ۔

نیز یا در ہے کہ غلام محرم قریبی رشتے دار کے خریدتے ہی آزاد ہوجا تا ہے۔

3062 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ.....

حَدَّثَنَا ٱلْأَشُعَثُ عَنِ الشَّعْبِيِّ فِى امُرَأَةٍ أَعْتَقَتُ أَبَاهَا فَمَاتَ ٱلْأَبُ وَتَرَكَ أَعُرَاكَ أَرُبَعَ بَنَاتٍ هِى إِحُدَاهُنَّ قَالَ لَيُسَ عَلَيْهِ مِنَّةٌ لَهُنَّ التُلْنَان وَهِى مَعَهُنَّ . 0

اشعث کہتے ہیں شعبی نے اس عورت کے متعلق کہا جس نے اپنے والد کو آزاد کیا چروہ فوت ہو گیا۔ اوراس نے عار بیٹیاں چھوڑیں۔ان میں سے ایک یہ ہے ہزمایا: لڑکی کا اس پر کچھا حسان نہیں انہیں دو تہائی ملے گی اور وہ بھی ان کے ساتھ ہوگی۔

فوائد: باتى مانده حصد معتقد كودينا بى صحيح معلوم بوتا بالبذا سابقداثر والامسكددرست ب- (واللداعلم)

◘ صحيح: أخرجه الطحاوي في شرح معاني الآثار 204/4 والبيهقي في الفرائض، باب ميراث بالولاء 6/241

🔁 ضعيف: السموس مجهول ہے، أخرجه ابن ابي شيبه 11/268 (11187)

€ ضعیف: أهعف ضعیف ب_أحرجه عبدالرزاق (16215) بیسندزهری تک صحیح ب_

اداری منفرد ہیں۔

[32] بَابِ فِيمَنُ أَعُطَى ذُوى الْأَرُحَام دُونَ الْمَوَالِي آ زاد کرنے والوں کے علاوہ ذوی الارحام کومیراث دینے والے مخص کا بیان

3063_ حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْم حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ ..

عَنُ حَيَّانَ بُنِ سَلْمَانَ قَالَ كُنُتُ عِنْدَ سُوَيُدِ بُن غَفَلَةَ فَجَائَةُ رَجُلٌ فَسَأَلَهُ عَنُ فَريضَةِ رَجُل تَرَكَ ابُنَتَهُ وَامُرَأَتَهُ قَالَ أَنَا أُنْبِئُكَ قَضَاءَ عَلِيٍّ . قَالَ حَسُبِي قَضَاءُ عَلِيٌّ لِامُرَأْتِهِ الشُّمُنَ وَلابُنَتِهِ النِّصُفَ ثُمَّ رَدَّ الْبَقِيَّةَ عَلَى ابْنَتِهِ. •

حیان بن سلمان کہتے ہیں میں سوید بن غفلۃ کے باس تھا۔ان کے پاس کسی آ دمی نے آ کراں شخص کی میراث کے متعلق یو چھا جس نے اپنی بیٹی اور بیوی چھوڑی تھی۔ انہوں نے کہا: میں تم سے علی وہائنے کا فیصلہ بیان کروں گا اس نے کہا: مجھ علی فالنی کا فیصلہ کافی ہے۔ انہوں نے کہا: ستدنا علی خاہینۂ نے اس کی بیوی کے لئے آٹھویں جھے کا فیصلہ کیا۔ اور نصف اس کی بٹی کے لئے۔ پھر بقیداس کی بېڅې کو واپين کر د با ـ

فوائد: باقی مانده مال کومولی کے درشہ برلوٹانے کی بجائے اس کے آزاد کرنے والے کو دینا یہی زیادہ اولی ہے (ان شاء اللہ) جبیبا کہ (3057) میں شموس کندیۃ بارے علی زنائند کا فیصلہ گزر چکا ہے (واللہ اعلم) 3064 حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي الْهَيْثَمِ

عَنُ إِبْرَاهِيمَ أَنَّ مَوْلَاةً لِإِبْرَاهِيمَ تُوفِيَّتُ ابراجيم سينقل كيا كيا كيا بيك دابراجيم كي ايك آزادلوندى فوت ہوگئی۔اس نے مال چھوڑا میں نے ابراہیم ہے کہا تو انہوں نے کہا: اس کے رشتہ دارموجود ہیں۔

وَتَوَكَّتُ مَالًا فَقُلُتُ لِإِبْرَاهِيمَ فَقَالَ إِنَّ لَهَا ذَا قَرَابَةٍ. 🏻

[33].... بَابِ الْوَلَاءُ لِلْكُبُرِ ولاء بڑے شخص کو ملے گی

3065 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا أَشْعَثُ

[🗗] صب حیہ جے: حبان بن سلمان ،اس کوابن ابی حاتم نے (الجرح والتعدیل) 3 / 245 میں ابن معین کی جانب سے ثقة قرار دیا ہے۔ أخرجه ابن ابي شيبه 273/11 (11208) والفسوي في المعرفة والتاريخ 191/3 وأخرجه البيهقي في الفرائض 242/6 صحيح: أخرجه ابن منصور (182) وعبدالرزاق (16196)

القرائضي الكارثوني القرائض القرائض القرائض القرائض القرائض الكارثوني القرائض ا

فععی کہتے ہیں کہ سیّدنا عمر ذائنی مسیّدنا علی ذائنی اور زید زائنی اور رید زائنی اور میرا خیال ہے کہ فعمی نے عبداللّٰہ کا بھی ذکر کیا ان سب نے کہا: ولاء بڑے فخص کو ملے گی۔ بڑے سے مراد وہ فخص ہے جو والدین کے واسطہ سے زیادہ قریب ہو۔

فوائد: نہ کورہ مسلے میں تقریباً سجی آ فارضعف سے خالی نہیں جب کہ اس کے برعکس زید رہائٹ ا سے (3-51) میں گزر چکا ہے کہ انہوں نے معتق کے باپ اور پوتے میں سے پوتے کو ولاء کامستحق کھہرایا

یمی بات ران ج ہے جیسا کہ بیان ہو چکا ہے (واللہ اعلم)

3066 حَدَّثَنَا يَزِيدُ حَدَّثَنَا أَشْعَثُ عَنِ ابْنِ سِيْرِيْنَ

عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ عُتُبَةَ قَالَ كُتِبَ إِلَى عُمَرَ فِي شَأْنِ فُكَيْهَة بِنُتِ سَمُعَانَ أَنَّهَا عُمَرَ فِي شَأْنِ فُكَيْهَة بِنُتِ سَمُعَانَ أَنَّهَا مَاتَتُ وَتَرَكَتُ ابْنَ أَحِيْهَا لِأَبِيُهَا وَأُمِّهَا وَابْنَ أَحِيْهَا لِأَبِيهَا وَأُمِّهَا وَابْنَ أَحِيْهَا لِأَبِيهَا فَكَتَبَ عُمَرُ إِنَّ وَابْنَ أَحِيْهَا لِلْكُبُر. ٥ الْوَلَاءَ لِلْكُبُر. ٥

عبداللہ بن عتبہ سے مروی ہے وہ فرماتے ہیں کہ: سیّدناعمر بنائیر کی طرف قلیہہ بنت سمعان کے متعلق لکھا گیا کہ وہ فوت ہوگئی ہے اس نے اپناحقیق بھائی اور سوتیلا بھیجا جھوڑا سیّدنا عمر بنائیز نے لکھا: اس کی ولاء بڑے شخص کو

3067 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُوْ شِهَابٍ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ

عَنِ الشَّعُبِيِّ أَنَّ عَلِيًّا وَزَيُدًا قَالَا الُوَلَاءُ لِلۡكُبُر و قَالَ عَبُدُ اللّٰهِ وَشُرَيُحٌ لِلُوَرَقَةِ . ۞

سیدنا علی اور زید وظی ونوں نے بیان کیا کہ ولاء بڑے مخص کو ملے گی۔عبداللہ اور شریح نے کہا: وارثوں کو ملے

3068 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَلِيّ بْنِ مُسْهِرٍ عَنْ أَشْعَتَ

ُ شعبی کہتے ہیں سیّد ناعمراور عبداللہ اور علی اور زید رقی اللہ ان فی اللہ استان کیا۔ ولاء کا فیصلہ بڑے شخص کیلئے کیا۔

عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ قَضٰى عُمَرُ وَعَبُدُ اللَّهِ وَعَلِمُ اللَّهِ وَعَلِمُ اللَّهِ وَعَلِمٌ اللَّهِ وَعَلِمٌ اللَّهِ وَعَلِمٌ اللَّهِ عَلَمُ اللَّهِ عَلَمُ اللَّهِ عَلَمُ اللَّهِ عَلَمْ اللَّهِ عَلَمُ اللَّهِ عَلَمْ اللَّهُ اللَّهِ عَلَمْ اللَّهِ عَلَمْ اللَّهِ عَلَمْ اللَّهِ عَلَمُ اللَّهِ عَلَمْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَمُ اللَّهِ عَلَمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ عَلَمُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللْهُ اللللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللّهُ اللللّهُ اللللّهُ الللّهُ الللللّهُ اللللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللّهُ اللللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللللللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللللّهُ

3069 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شَرِيكٌ

€ضعيف: أخرجه البيهقي في الولاء باب الولاء للكبير..... 303/10

2 صحيح: أخرجه البيهقي في الفرائض، باب ترتيب العصبة 239/6

◙صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 404/11 (11607) وابن منصور (268)

ن افعث ضعیف ہے۔

الفرائض كتاب الفرائض كالمرائض
عَنُ أَشُعَتَ عَنِ ابُنِ سِيُرِيْنَ قَالَ تُوُفِيَتُ اشعت كَهَ بِي ابن سيرين نے كها: فكيه بنت سمعان فُكنُهَةُ بِنُتُ سَمُعَانَ وَتَرَكَتُ ابُنَ أَخِيهَا فوت موكنُ اس نے اپنے علاتی جینج اور حیتی بھیجوں کے لِأَبِیهَا وَابْنِهَا وَابْنِهَا وَابْنِهَا وَابْنِهَا وَابْنِهَا وَابْنِهَا وَابْنِهَا وَابْنِهَا وَابْنَهُ وَالْنَهُ وَالْنَهُ فَالَى عَلَيْهِ وَالْنَهُ فَا لَا عَلَى اللَّهُ عَمْرُ بَنِي أَخِيهَا لِأَبِيهَا وَأُمِيهَا وَارتُكُمُ مِلَيا۔

3070 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلام بْنُ حَرْبٍ عَنِ الْأَعْمَشِ

عَنُ إِبُواهِيْمَ عَنُ عُمَرَ وَعَلِيٍّ وَزَيُدٍ ابراہِيم كَهَ مِي كَسِيْدنا عمر اور على اور زيد رَّى الله الله عَنُ الله الله عَنْ عُمَرَ وَعَلِيٍّ وَزَيْدٍ وَلَاء بِرُحْصُ كُو طَى الله اللهُ الله

3071 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى حَدَّثَنَا أَبُوْ عَوَانَةً عَنْ مُغِيْرَةً

عَنُ إِبُواهِ مُنَ فِي أَخَوَيُنِ وَرِفَا مَوْلَى ابراہیم کہتے ہیں کہ سیّدناعلی اور زیداور عبداللہ سُخَاللہ مِن اللہ مِن مِن اللہ مِن الل

بڑے شخص کو ملے گی۔''

3072 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدِ قَالَ

سَمِعُتُ مَطَرًا الُوَرَّاقَ يَقُولُ قَالَ عُمَرُ مطروراق كَبَّ وَعَلِيٌّ الُوَلَاءُ لِلْكُبُرِ . ٥ برُ مِضْحُص كو ا

مطر وراق کہتے ہیں کہ سیّدنا عمراورعلی وظافتان کہا:''ولاء بڑے مخض کو ملے گی۔''

3073 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى عَنْ رَوْحٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ وَابْنِ جُرَيْجِ

عَنِ ابُنِ طَاوُسٍ عَنُ أَبِيهِ قَالَ الْوَلَاءُ أَبِيهِ قَالَ الْوَلَاءُ أَبِيهِ قَالَ الْوَلَاءُ أَبِي

لِلْكُبُرِ . 😉

3074 أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوْسَى عَنْ إِسْرَائِيْلَ عَنْ مَنْصُوْدِ

¹ ضعيف: سابقه (3066) آئنده (3072) اثر الما ظريج

[€]ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 404/11 (11606) والبيهقي في الولاء، باب الولاء للكبير 303/10

[€]ضعيف: أخرجه ابن منصور(266)

O منقطع ضعيف: البترية جملد من صحيح سندك ماته ثابت ب-

[•] مدلس، ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 405/11 (11610)

سُتِينَ الدَّالِيَّانَ ابراہیم سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا:''ولاء بوے شخص کو

عَنُ إِبُواهِيْمَ قَالَ الْوَلَاءُ لِلْكُبُر . •

ملح گیا۔''

[34].... بَابِ فِي الرَّجُلِ يُوَالِي الرَّجُلَ کسی دوسرے سے دوستی کرنے والے شخص کا بیان

3075 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ

عَنُ مُ طَرِّفٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ وَسُفْيَانُ عَنُ يُونُسَ عَنِ الْحَسَنِ فِي الرَّجُلِ يُوَالِي

الرَّجُلَ قَالَا هُوَ بَيْنَ الْمُسُلِمِينَ قَالَ

سُفُنانُ وَكَذٰلِكَ نَقُولُ . ٥

3076 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَوْهَب

سَمِعُتُ تَمِيمًا اللَّارِيَّ يَقُولُ سَأَلُتُ رَسُولَ اللَّهِ عِنْ لَقُلُتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا السُّنَّةُ فِي الرَّجُلِ مِنُ أَهُلِ الْكُفُرِ يُسُلِمُ

عَلَى يَدَى رَجُلِ مِنَ الْمُسلِمِينَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ :(﴿ هُوَ أُولُكَى النَّاسِ

بِمَحْيَاهُ وَمَمَاتِهِ)) . 9

فوائد: جوآدی جس آدمی کے ذریعے اسلام جیسی نعت سے سر فراز ہودہی اس کا زیادہ قریبی ہوگا اوراس کے مال کا وارث بنے گا مزید آئندہ اثر ملاحظہ سیجیے۔

3077 حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ

🛭 صحيح: سابقه (3071) و کھے۔

♦صحيح: أخرجه عبدالرزاق (9875) وابن ابي شيبه 411/11 (13611)

مطرف شعمی ہے اور پونس حسن سے روایت کرتے ہیں کہ

انہوں نے اس شخص کے متعلق کہا جوکسی سے دوسی کرے کہ وہ بھی مسلمانوں کا ایک آ دمی ہے۔سفیان کہتے ہیں:''ہمارا

بھی یہی قول ہے۔''

حميم دارى كت بيل كه: مين في رسول الله الله الله الله الله

يوجيها: يا رسول اللد! الشخص كم تعلق شرى طريقه كيا ب جو کافر ہو اور مسلمانوں سے کسی کے ہاتھ پر مسلمان ہوتو

رسول الله عضائلية ني فرمايا: "اس كى زندگى اور موت (اور

ہر حالت) میں وہی سب سے زیادہ اسے مقدم ہے۔''

€صحيح

مراث المرافض على المرافض كالمرافض كالم

منصور کہتے ہیں ابراہیم سے اس دیباتی شخص کے متعلق پوچھا گیا جو کسی کے ہاتھ پر مسلمان ہو انہوں نے کہا: "وہی اس کا طرف سے دیت دے گا اور وہی اس کا وارث ہوگا۔"

عَنُ مَنْصُورٍ عَنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ سُئِلَ عَنُ رَجُلٍ مِنُ أَهُلِ السَّوَادِ إِذَاأَسُلَمَ عَلَى يَدَىُ رَجُلٍ قَالَ يَعُقِلُ عَنُهُ وَيَرِثُهُ . •

رث ہوگا۔''

عَنُ مُغِيرَةَ عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ تَوِثُ الْمَوْأَةُ مغيره كَتِ بِن ابرابيم نے كها: "عد اور خطا ميں عورت مِن دِيةِ زَوْجِهَا فِي الْعَمُدِ وَالْخَطَلِ. اللهِ عَنْ مِنْ دِيةٍ زَوْجِهَا فِي الْعَمُدِ وَالْخَطَلِ. اللهِ عَنْ مِنْ دِية مِن سے وارث ہوگ۔"

عَنْ مُغِيرَةً عَنْ إِبْرَاهِيمَ قَالَ اللِّينَةُ عَلَى مَعْره كُتِ بِينِ ابراتِيم نَ كَها: ''ويت اللَّدعزوجل ك عَنْ مُغِيرَةً عَنْ إِبْرَاهِيمَ قَالَ اللَّينَةُ عَلَى

فَرَائِضِ اللّهِ عَزَّ وَجَلَّ. ٥ 3080 حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا أَيُّوْبُ

3000 عند المسوم بن إبر الله المسلم ا

ک بی پر بات کاطریقہ سبیدہ سبیدہ سبیدہ میراث کاطریقہ ہے۔'' الکمہ اُٹ ۔ ©

3081 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ

[🛭] صحيح: أخرجه عبدالرزاق (9873، 16272) وابن منصور (204)

[€]صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 313/9 (7602) وابن حزم في المحلّي 475/10

[€]صحيح: أخرجه ابن منصور (300) وابن ابي شيبه 9/314 (7607، 7609)

[♦] صحيح: أخرجه ابن ابي شبه 9/315 (7608) وابن حزم في المحلي 475/10

603 کتاب الفرائض کتاب الفرائض الكالمين

حمید اور داؤد بن ابو ہند کہتے ہیں عمر رفاطنہ بن عبدالعزیز نے لکھاتھا اخیافی بھائی دیت کے وارث ہوں گے۔

عَنُ حُمَيٰدٍ وَدَاؤدَ بُن أَبِي هندٍ أَنَّ عُمَرَ بُنَ عَبُدِ الْعَزِيزِ كَتَبَ أَنْ يُوَرَّتُ الْإِخُوَةُ مِنَ الْأُمِّ مِنَ الدِّيَةِ. •

3082 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِح حَدَّثَنِي اللَّيْثُ

حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابُنِ شِهَابِ قَالَ الْعَقُلُ مِيرَاتُ بَيْنَ وَرَثَةِ الْقَتِيُلِ عَلَى كِتَابِ اللَّهِ وَفَرَائِضِهِ. ٥

عَنُ عَلِي قَالَ لَقَدُ ظَلَمَ مَنُ لَمُ يُورَّثِ

الْإِخُوَةَ مِنَ الْأُمِّ مِنَ الدِّيَةِ. ٥

یونس بیان کرتے ہیں ابن شہاب نے کہا:''ویت کتاب الله اور فرائض کے مطابق مقتول کے وارثوں میں تقتیم ہو

3083 حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْن دِيْنَارِ عَنْ بَعْضِ وَلَدِ ابْنِ الْحَنَفِيَّةِ

سیّدناعلی وظائفهٔ سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا:''جس نے اخیانی بھائیوں کو دیت سے وارث نہ بنایا اس نے طلم کیا۔''

3084 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا أَبُوْ خَالِدٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ سَالِم

قعمی کہتے ہیں سیّدنا عمر وعلی اور زید رقیٰ اللہ ہے کہا: ''خطا اورعدى ديت كااى طرح وارث بنايا جائے گا جس طرح مال کا وارث بنایا جاتا ہے،ای طرح جاری ہو گی جس طرح وراثت کے مال میں جاری ہوتی ہے۔''

عَنِ الشَّعُبِيِّ عَنُ عُـمَرَ وَعَلِيَّ وَزَيُدٍ قَالُوا اللَّيَةُ تُورَثُ كَمَا يُؤرَثُ الْمَالُ خَطَةُ هُ وَعَمُدُهُ . ٥

[36م.... بَابِ مَنْ قَالَ لَا يُوَرَّثُ اس شخص کا بیان جو کہتا ہے کہ سی کو دارث نہیں بنایا جائے گا

3085 حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن حَدَّثَنَا إِسْمَعِيْلُ

عَنُ عَامِرِ قَالَ كَانَ عَلِيٌّ لَا يُورِّتُ عام كَتِ بِين: سيِّدناعلى رُفَاتِنُهُ ديت بين نداخيا في بها تيون كووارث بناتے تصاور ندمياں بيوى كؤ عبدالله كہتے ہيں:

الْإِخُوَةَ مِنَ الْأُمِّ وَلَا الزَّوُجَ وَلَا الْمَرُأَةَ

[◘] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 316/9 (7616) وابن حزم في المحلِّي 475/10

[◙] صحيح معناً: أخرجه ابن حزم في المحلّى 475/10 وابن ابي شيبه 314/9 (7604)

الله عيف: الى كى سندير جهالت ب، أحسر جمه ابن ابسي شيبه 9/316 (7613) وابن منصور (303) وعبد الرزاق الم (17771)

[◘]ضعيف: اسكى سنديش محمر بن سالم ضعيف ہے، أخرجه ابن ابني شيبه 314/9 وابن حزم في المحلي 475/10

604 کتاب الفرائض کتاب الفرائض الكالكان الكالك

''بعض لوگ اساعیل اور عامر کے درمیان ایک اور آ دمی کا

مِنَ الدِّيَةِ شَيْئًا قَالَ عَبُد اللَّهِ بَعُضُهُمُ

يُدُخِلُ بَيْنَ إِسْمَعِيُلَ وَعَامِرِ رَجُلًا . ٥ واسطه ديت بين ''

فواند: جبیا کہ بچیل حدیث نمبر (3078) میں وضاحت ہو چکی ہے کہ دیت میراث کی طرح ہوتی ہے لہٰذااہے بھی اہل فرائض میں ان کے فریضوں کے مطابق ہی تقسیم کیا جائے گا یہی بات زیادہ درست ے (واللہ اعلم)

3086 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ عَنْ زِيَادِ الْأَعْلَمِ

حن سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: "اخیافی بھائیوں کو دیت سے میراث ند ملے گی۔''

عَن الْحَسَن قَالَ لَا تُورَّتُ الْإِخُوةُ مِنَ اللُّمّ مِنَ الدِّيَةِ. 9

[37]....بَابِ مِيرَاثِ الْغَرُقَى

ڈوب کرمرنے والے کی میراث کا بیان

3087 حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ أَبِيهِ

عَنُ خَارِجَةَ بُن زَيُدٍ عَنُ زَيُدِ بُن ثَابِتٍ فارجه بن زيد كمت بي كه زيد بن ثابت في كها: "جولوگ قَالَ كُلُّ قَوْمٍ مُتَوَارِثِيْنَ عَمِي مَوْتُهُمُ آپس من وارث بول اور وه كى چيز كے فيح دب كرياياني میں ڈوب کرمرنے کی وجدسے نامعلوم ہول تو آپس میں وارث نہ ہوں گے بلکہ ان کے زندہ وارث ہوں گے۔''

فِي هَـدُم أَوُ غَـرَقِ فَإِنَّهُمُ لَا يَتَوَارَثُونَ ا يَرِثُهُمُ الْأَحْيَاءُ . 9

فواند: غرق ، عمارت كي ذهي جاني ، يا جلني كي باعث الركي رشة وارا كه فوت موجات ہیں تو وہ آپس میں وارث نہیں بنیں گے بلکہ زندہ ہی وارث بنیں گے یہی بات رائج ہے۔

3088 حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدِ

عَنُ يَحْيَى بُنِ عَتِيقِ قَالَ قَرَأْتُ فِي بَعُضِ كُتُبِ عُمَرَ بُنِ عَبُدِ الْعَزِيزِ فِى

• صحيح: أخرجه ابن منصور (305)

②صحيح: أخرجه ابن منصور (306)

❸حسن: أحرجه ابن منصور (241) والدارقطني 119/4 والبيه في في الفرائض، باب ميراث عن من عمي موته 222/6

حَالِ لِيُعْنِينَ الْكَالِيمِينَ ﴾ 605 605 كتاب الفرائض كانت

کی بن عتیق کہتے ہیں: میں نے عمر بن عبدالعزیز والتی کی بعض کتابوں میں ان لوگوں کے متعلق پڑھا جن پر مکان گر پڑتا ہے معلوم نہیں کہ پہلے کون شخص فوت ہوا کہ مرے ہوئے آپس میں وارث نہ ہوں گے بلکہ زندہ مُر دوں کے

وارث ہوں گے۔

3089 حَدَّثَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ مُحَمَّدٍ

يَتُوَارَثُوُا. 🍳

3090 - أَخْبَرَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن أَخْبَرَنَا ابُنُ أَبِى لَيُلَى عَنِ الشَّعْبِيّ أَنَّ بَيْتًا بِالشَّامِ وَقَعَ عَلَى قَوْمٍ فَوَرَّتُ عُمَرُ بَعْضَهُمْ مِنُ بَعْضِ . •

ابولیل کہتے ہیں کر معنی نے کہا: ''ملک شام میں ایک مکان لوگوں پر گر بڑا تو سیدنا عمر دخالئی نے انہیں آپس میں وارث

فوائد: راجح بات كى خالف اورضعيف ہونے كى بناء پريداثر قابل التفات نہيں _

3091 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ....

عَنُ حُرَيْشٍ عَنُ أَبِيهِ عَنُ عَلِيّ أَنَّهُ وَرَّتَ أَخَوَيْنِ أَنَّهُ وَرَّتَ أَخَوَيْنِ أَلَاّخُو . ٥

حریش اپنے والد سے نقل کرتے ہیں کہ سیّدنا علی وُکاٹھؤ نے دو بھائیوں کو آپس میں وارث بنایا جو صفین میں مارے

كن تقد

[•] صحيح: أخرجه عبدالرزاق (19161) وابن ابي شيبه 345/11(11395)

[💋] حسن: أخرجه ابن منصور (240) وأخرجه البيهقي، كتاب الفرائض، باب ميراث من عمي موته 222/6

[🛭] ضعيف: أخرجه ابن منصور (232) وابن ابي شيبه 343/11 (11390)

②ضعيف: الإحراس مجهول ب- أخرجه عبدالرزاق (19152) وابن ابي شيبه 344_341 وعلى المرادق (19152)

الفرائض 606 كتاب الفرائض كالمحافي الفرائض المحافي المحافظ المح

[38] بَابِ مِيرَاثِ ذَوِى الْأَرْحَامِ ذوى الارحام كى ميراث كابيان

3092 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ

بحر بن عبدالله مزنی کہتے ہیں کہ ایک شخص ہلاک ہو گیا اس نے اپنی پھپھواور خالہ چھوڑی تو سیّدنا عمر رٹیائٹۂ نے پھپھوکو بھائی کا حصہ دیا اور خالہ کو بہن کا حصہ دیا۔

عَنُ بَكُرِ بُنِ عَبُدِ اللهِ الْمُزَنِيِّ أَنَّ رَجُلًا هَلَكَ وَتَوَكَ عَمَّتَهُ وَخَالَتَهُ فَأَعُطَى عُمَّرُ الْعَمَّةَ نَصِيْبَ اللَّحِ وَأَعْطَى

الُخَالَةَ نَصِيبُ الْأُخُتِ. •

3093 ـ أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا أَبُوْ شِهَابٍ عَنِ الْأَعْمَشِ

عَنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ مَنُ أَذُلَى بِرَحِمٍ أُعُطِىَ بِرَحِمٍ أُعُطِىَ بِرَحِمٍ أُعُطِىَ بِرَحِمِهِ أُعُطِى

ابراہیم ہے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ''جو مخص کس کے ذریعہ سے میت تک پہنچتا ہے اس کو اسی رشتہ کے مطابق

ملے گا جس کے ذریعہ وہ پہنچتا ہے۔''

فوائد: ذوى الارحام كى ميراث كى باب مين يهى قول در تكى كے زيادہ قريب ہے كہ جورشته دار جس رفتے كى بناء پرميت كے قريب ہوتا ہے اس كواس اعتبار سے ميراث ميں سے حصد ديا جائے گا (والله اعلم) 3094 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُوْ شِهَابِ قَالَ

ابو آخل شیبانی کہتے ہیں شعبی نے اس شخص کے متعلق کہا جس نے اپنی پھپھواور جیتجی چھوڑی۔تمام مال اس کی جیتجی کو ملے گا۔

حَدَّنَ نِسَى أَبُوُ إِسُلَحْقَ الشَّيْسَانِيُّ عَنِ الشَّعْسِيِّ فِي رَجُلٍ تَرَكَ عَمَّتَهُ وَابْنَةَ أَخِيُهِ قَالَ الْمَالُ لِابْنَةِ أَخِيهِ. ۞

3095 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شَرِيْكٌ عَنْ لَيْثٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ

سیّدنا ابو ہر رہے وَ وَالنَّمَةُ کہتے ہیں نبی ﷺ نے فرمایا: ''جس کا کوئی وارث نہیں اس کا ماموں وارث ہے۔'' عَنُ أَبِي هُـرَيُـرَـةَ عَنِ النَّبِيِ ﷺ قَالَ النَّبِي ﷺ قَالَ النَّبِي النَّبِي النَّهِ اللَّهِ اللَّهِ النَّ

[₫] منقطع،ضعيف: أخرجه الطحاوي في شرح معاني الآثار 400/4

[🛭] جيد: أخرجه ابن ابي شيبه 261/11، 279 (11167، 1129)

[€]صحيح: أخرجه عبدالرزاق (19125) وابن ابي شببه 278/11 (11227)

[◘]صحيح بالشواهد: أخرجه الدارقطني 86/4 (62) والبيهقي في الفرائض، باب من قال بتوريث ذوي الأرحام 215/6

الفرائض (كتاب الفرائض) 607 (كتاب الفرائض) الم

فوائد بیحدیث سنداً اگر چضعیف بے کین مسئلہ ہے کہ جس میت کا کوئی صاحب فرض نہ ہو

اس کو دارث ماموں ہوگا۔

3096 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمِ حَدَّثَنَا حَسَنٌ عَنْ عُبَيْدَةَ

عَنُ إِبْرَاهِيمَ أَنَّ عُمَرَ وَعَبُدَ اللَّهِ رَأَيَا أَنُ يُوَرِّ ثَا خَالًا . 0

ابراہیم کہتے ہیں: سیدنا عمر وعبداللد واللہ کا رائے ہے کہ ماموں کو وارث بنایا جائے۔

3097 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْم حَدَّثَنَا حَسَنٌ عَنْ سُلَيْمَانَ أَبِيْ إِسْحَقَ

هعمی پھوپھی اور جیتی کے بارے میں کہتے ہیں: 'ال جیتی عَنِ الشُّعُبِيِّ فِي عَمَّةٍ وَبِنْتِ أَحِ قَالَ ا الْمَالُ لِابْنَةِ الْآخ . @ کو ملے گا۔''

3098 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْم أَخْبَرَنَا حَسَنُ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ بَعْضِهمْ

ابراہیم سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: "مال چھوپھی کو عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ لِلْعَمَّةِ . 9

3099 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الشَّيْبَانِي

عَنِ الشُّعُبِيِّ فِي بِنُتِ أَخِ وَعَمَّةٍ قَالَ أُعُطِى الْمَالَ لِابْنَةِ الْأَخِ. ٥

3100 حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا ﴿ مَا اللَّهُ عَلَى خَدَّثَنَا زَكَرِيَّا ﴿ مُسْسِمِ

عَنُ عَامِرِ عَنُ مَسُرُوقِ فِي رَجُلِ تُوُقِيَ وَلَيْسَ لَـهُ وَارِثُ إِلَّا ابْـنَهُ أَخِيهِ وَخَالُهُ قَىالَ لِللَّحَالِ نَصِيبُ أُخْتِهِ وَ ِلابْنَةِ الْأَخِ

نَصِيبُ أَبِيُهَا . 🗗 3101 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمِ حَدَّثَنَا يُونُسُ

شعمی سے مردی ہے کہ انہوں نے پھوپھی اور جھیتی کے

متعلق کہا:''تمام مال بھتجی کودیتا ہوں ۔''

عامر کہتے ہیں: مسروق فائنڈ نے اس مخص کے متعلق کہا جو فوت ہوا تو اس کی جیتی اور ماموں کے علاوہ کوئی وارث نہیں:'' ماموں کو اس کی بہن کا حصہ ملے گا اور میتیجی کو اس کے باپ کا۔''

[◘] ضعيف: أخرجه ابن منصور (159) وابن ابي شببه 264/11 (11175) والطحاوي 400/4

[🗗] صحیح: (3094) کے تحت بدهدیث گزر چکی ہے۔

[🛭] صحيح: أخرجه ابن ابي شببه 278/11 (11228)

⁴ صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 278/11 (11227)

[🗗] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 264/11

608 کی کتاب الفرائض الكالك الكالمانية الكالمانية

عامر کہتے ہیں: مسروق پھوپھی کوباپ کے مرتبہ پر رکھتے تھے جبکہ باپ نہ ہو اور خالد کو ماں کے مرتبہ پر جب نہ

3102 حَدَّثَنَا يَعْلَى عَنْ مُحَمَّدِ بْن إِسْحٰقَ

عَنُ عَامِر قَالَ كَانَ مَسُرُوقٌ يُنَزَّلُ

الُعَمَّةَ بِمَنْزِلَةِ الْآبِ إِذَا لَمُ يَكُنُ أَبُّ

وَالْخَالَةَ بِمَنْزِلَةِ الْأُمِّ إِذَا لَمُ تَكُنُ أُمُّ . •

عَنُ مُحَمَّدِ بُن حَبَّانَ نَسَبَهُ إِلَى جَدِّهِ عَنْ عَمِّهِ وَاسِعِ بُنِ حَبَّانَ قَالَ تُوُفِّيَ ابْنُ الدُّحُدَاحَةِ وَكَانَ أَتِيًّا وَهُوَ الَّذِي لَا يُعْرَفُ لَهُ أَصُلُ فَكَانَ فِي بَنِي الْعَجُلانِ وَ لَمُ يَتُولُكُ عَقيًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْهِ لِعَاصِم بُن عَدِي هَلُ تَعْلَمُونَ لَهُ فِيكُمُ نَسَبًا قَالَ مَا نَعُرِفُهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَدَعَا ابُنَ أُخُتِهِ فَأَعُطَاهُ مِيرَاثُهُ. ٥

محمد بن حیان این دادا اور این چیا سے نقل کرتے ہیں کہ واسع بن حبان نے کہا: ابن دحداحہ نے انقال کیا اور وہ "أتىي" تقاليعني اس كى اصل كاپية نه تقاوه بنومجلان مي*س ر*ہتا تھا۔ اس نے کوئی اولا دنہیں چھوڑی رسول الله طفی اولا دنہیں جھوڑی رسول الله طفی اولا عاصم بن عدى سے فر مايا: "كيا تهبيس اينے لوگوں ميں اس کا نسب معلوم ہے؟" اس نے کہا: "ایارسول الله! ہمیں معلوم نہیں '' تو آپ نے اس کے بھانج کو بلا کراہے اس کی میراث دے دی۔

فوائد: (۱)"ا تيسا" ايساجنبي يربولا جاتا ب جوسي قوم مين رہنے گاوران كي طرف منسوب ہو جائے لیکن ان میں سے نہ ہو۔ (۲) ندکورۃ اثر اگر چہضعف ہے لیکن وضاحت ہو چکی ہے کہ اصحاب الفروض کی موجودگی میں ذوی الارحام وارث ہوں گے۔

3103 ـ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْص بْن غِيَاثِ حَدَّثَنَا أَبِيْ عَنِ الْأَعْمَشِ.....

عَنُ إِبُسُواهِيْمَ عَنُ عُمَو أَنَّهُ أَعُطَى خَالًا ابرائيم كت بيسيِّدنا عمر والني نے مامول كو مال ديا-

3104 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْم

حَدَّثَنَا أَبُو هَانءٍ قَالَ سُئِلَ عَامِرٌ عَنِ امُرَأَةٍ أَوُ رَجُلِ تُوفِي وَتَرَكَ خَالَةً وَعَمَّةً

ابوہانی کہتے ہیں: عامر سے ایک عورت یا مرد کے متعلق یوچھا گیا جوفوت ہوا اور اس نے ایک خالہ اور پھویھی

◘ صحيح: أخرجه ابن ابي شبيه 261/11 (11164) وابن منصور (161، 162) وعبدالرزاق (19116)

🗗 ضعيف: أخرجه عبدالرزاق (19120) وابن ابي شيبة 265/11 (11170) وابن منصور (164) والطحاوي في شرح معاني الآثار 4/396

€ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 264/11 (11175) وابن منصور (159)

التَّالِيُونِيُّ التَّالِيُونِيُّ التَّالِيُونِيُّ

609

كتاب الفرائض كتاب

چھوڑی ابو ہانی کہتے ہیں کہ ان کے علاوہ اس کا کوئی وارث اور رشتہ دار نہیں انہوں نے کہا: ''عبداللہ بن مسعود وَارث اللہ کو مال کے مرتبہ پر تھہراتے اور پھوپھی کو اس کے بھائی کے مرتبہ بر تھہراتے ۔''

عَنُ عَمْ رِوعَنِ الْحَسَنِ فِي رَجُل

اعُتَرَفَ عِنُدَ مَوْتِهِ بِأَلُفِ دِرُهَم لِرَجُل

وَأَقَامَ آخَرُ بَيِّنَةً بِأَلُفِ دِرُهَم وَتَرَكَ

الْمَيَّتُ أَلْفَ دِرُهَمِ فَقَالَ الْمَالُ بَيْنَهُمَا

[39].... بَابِ فِيُ الِادِّعَاءِ وَالْإِنْكَارِ اقراراورا نكاركرنے كابيان

3105 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا أَبُوْ شِهَابِ.....

عمرو کہتے ہیں سیدنا حسن رہائی نے اس کے متعلق جس نے موت وقت ایک شخص کے لئے ہزار درہم کا اقرار کیا اور دوسرے شخص نے ہزار درہم کے متعلق گواہ پیش کیا اور میت نے ہزار درہم چھوڑے۔ انہوں نے کہا:'' دونوں میں نصف نصف مال تقسیم ہو جائے گا' اگر مفلس ہو تو اس کا اقرار جائز نہیں۔''

نِصُفَيُنِ إِلَّا أَنُ يَكُونَ مُفُلِسًا فَلا يَجُوزُ إِقُرَارُهُ. ٥ 3106. أَخُبَرَنَا أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ قُلْتُ لِشَرِيُلْتِ كَيْفَ ذَكَرْتَ فِى الْأَخَويُنِ لِشَرِيُلْتِ كَيْفَ ذَكَرْتَ فِى الْأَخَويُنِ يَتَعِي أَحَدُهُمَا أَخًا قَالَ يَدُخُلُ عَلَيْهِ فِي نَصِيبِهِ قُلْتُ مَنُ ذَكَرَهُ قَالَ جَابِرٌ

ابونعیم کہتے ہیں کہ میں نے شریک سے کہا: دو بھائیوں کے متعلق جن میں سے ایک بھائی کسی شخص کے بھائی ہونے کا دعویٰ کرتا ہے انہوں نے کہا: ''دوہ اس کے حصہ میں شریک ہو جائے گا۔'' میں نے کہا: یہ آ پ سے کس نے بیان کیا؟ انہوں نے کہا: ''سیّدنا جابر رہائیوں نے سیّدنا عامر رہائیوں کے داسطہ سے سیّدنا علی رہائیوں سے نقل کیا۔''

3107 حَدَّثَنَا أَبُوْ بِكْرِ بْنُ أَبِيْ شَيْبَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مُحَمَّدِ الْمُحَارِبِيُّ

اعمش کہتے ہیں ابراہیم نے ان بھائیوں کے متعلق کہا جن

عَنِ الْأَعْمَشِ عَنُ إِبْرَاهِيمَ فِي الْإِخُوَةِ

عَنُ عَامِرٍ عَنُ عَلِيّ . 3

[🗗] ضعیف: ابوهانی، عمر بن بشیر ضعیف ہے۔

ط ضعیف: عمرو بن عبید بن باب ضعیف و متم راوی ہے۔
طنعیف: جابر بن بزید معفی ضعیف ہے۔

610 كتاب الفرائض الكانك الكانك الكالم

يَدَّعِيُ بَعُضُهُمُ اللَّاخَ وَيُنكِرُ الْآخَرُونَ

قَالَ يَدُخُلُ مَعَهُمُ بِمَنُزِلَةِ عَبُدٍ يَكُونُ بَيْنَ الْإِخُوَةِ فَيُعْتِقُ أَحَدُهُمْ نَصِيْبَهُ قَالَ وَكُمَانَ عَامِرٌ وَالْحَكُمُ وَأَصُحَابُهُمَا يَقُولُونَ لَا يَدُخُلُ إِلَّا فِي نَصِيب الَّذِي اعُتَرَفَ به . 9

3108. حَدَّثَنَا أَبُو بَكُرِ عَنُ وَكِيعِ قَالَ إِذَا كَانَما أَخَوَيُن فَادَّعَى أَحَدُهُمَا أَخًا وَأَنَّكَوَهُ الْآخَوُ قَالَ كَانَ ابْنُ أَبِي لَيُلٰي يَقُولُ هِيَ مِنُ سِتَّةٍ لِلَّذِي لَمُ يَدَّعِ ثَلَاثَةٌ وَلِلْمُدَّعِيُ سَهُمَانِ وَلِلْمُدَّعٰي سَهُمٌ. ٥ 2109 حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدِ حَدَّثَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ

> عَنْ مُغِيرَةً عَنْ حَمَّادٍ فِي الرَّجُلِ يَكُونُ لَـهُ ثَـكَاللَّهُ بَنِيُنَ فَقَالَ ثُلُثِى لِأَصُغَر بَنِيَّ فَقَالَ الْأَوْسَطُ أَنَا أُجِيزُ وَقَالَ الْأَكْبَرُ لَا أُجِيزُ قَالَ هِيَ مِنُ تِسْعَةٍ يُخُرِجُ ثُلُثَهُ فَلَهُ سَهُ مُهُ وَسَهُ مُ الَّذِي أَجَازَ وَقَالَ حَمَّادٌ يَـرُدُّ السَّهُـمَ عَلَيْهِمُ جَمِيعًا وَقَالَ عَامِرٌ الَّذِي رَدَّ إِنَّمَا رَدَّ عَلَى نَفُسِهِ . ٥

میں سے ایک بھائی کسی شخص کے متعلق بدوویٰ کرتا ہے کہ وہ اس کا بھائی ہے اور دوسرے انکار کرتے ہیں۔''وہ بھی ان میں داخل ہو گا اس غلام کے مرتبہ یر جو چند بھائیوں میں مشترک ہو اور ان میں سے ایک اپنا حصہ آزاد کر دے۔کہا:عامر وتھکم اور ان کے ساتھی کہتے تھے:''وہ اس ے حصہ میں شریک ہوگا جس نے اس کے بھائی ہونے کا اقراركياـ''

ابوبكر جالليه كہتے ہيں وكيع نے كہا: '' جب دو بھائي ہوں اور ان میں سے ایک سی کے بھائی ہونے اقرار کرے اور دوسرا انکار کرے تو ابن ابولیل کہتے تھے:''تر کہ چھے ہے تقسیم ہوکر تین جھے انکار کرنے والوں کوملیں گے ،دواقرار کرنے والے کواور ایک اے جس کے متعلق اقرار کیا گیا۔''

مغیرہ کہتے ہیں جماد نے اس شخص کے متعلق کہا جس کے تین بیٹے ہوں اور وہ کہے: میرا تہائی مال میرے چھوٹے بیٹے كے لئے ہے اور درميانه بيٹا كہے: مجھے منظور بئ برا كہے: مجھے منظور نہیں۔''نو سے تقسیم ہو کر تین حصہ نکال لئے جائیں گے پھر چھوٹے کو اس کا حصہ اور اس شخص کا حصہ ملے گا جس نے منظور کرلیا۔'' اور حماد نے کہا:''سب کے حصے آنہیں دیے جائیں۔' عامر نے کہا:''جس نے واپس کیااس نے واپس کر کے اپنے آپ کوہی دے دیا۔''

[•] ضعيف: عبد الرحمٰن مركس كاعتعم ب- أحرجه ابن ابي شيبه 385/11 (11543) وعبد الرزاق (19143)

[🗗] ضعيف: محمر بن عبدالرحل بن الي ليل انتهائي ضعيف ہے۔ أحرجه ابن ابي شببه 11/386_ 387 (11547)

[◙] صحيح: أخرجه ابن ابي شببه 11. 229_230 (11072) وعبدالرزاق 19145)

المنتخف الخائمة على المناسبة ا

فوائد: اگر باپ دولت میں سے کسی ایک بیٹے کو زیادہ دینا چاہے تو دوسرے بیٹوں کی اجازت لینا ضروری ہے پھر جو اجازت دے دے اس کے حق میں سے اس قدر منھا کر کے اس بیٹے کو مال دے دیا جائے گا جب کہ باقی کوان کا بورا حصہ دیا جائے گا۔

؟ 3110 حَدَّثَنَا أَبُوْ بَكْرِبْنُ أَبِيْ شَيْبَةَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ عَنْ شَرِيكٍ عَنْ خَالِدٍ عَنِ ابْنِ

سِيْرِيْنَ....

قَالَ بَیِّنَتُهُ شرح سے اس مخص کے متعلق کہا جس نے بھائی ہونے کا اقرار کیا۔ ' نفر ماتے ہیں اس کی گواہی (معتبر) ہے کہ وہ اس کا بھائی ہے۔''

عَنُ شُرَيُحٍ فِيُ رَجُلٍ أَقَرَّ بِأَخٍ قَالَ بَيِّنَتُهُ أَنَّهُ أَخُهُ هُ . •

3111_ أَخْبَرَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ

عَنُ مُغِيُرَةً عَنِ الْحَادِثِ الْعُكُلِيِّ فِيُ رَجُلٍ أَقَوَّ عِنْدَ مَوُتِهِ بِأَلْفِ دِرُهَمٍ مُضَارَبَةً وَأَلْفٍ دِرُهَمٍ مُضَارَبَةً وَأَلْفٍ دَرُهَمٍ مُضَارَبَةً وَأَلْفٍ دَرُهَمٍ وَأَلْفٍ دَرُهَمٍ قَالَ يُبُدَأُ بِالدَّيُنِ فَإِنُ فَضَلَ فَصُلَّ كَانَ لِصَاحِب الْمُضَارَبَةِ . ٥ لِصَاحِب الْمُضَارَبَةِ . ٥

مغیرہ کہتے ہیں حارث عکلی نے اس شخص کے متعلق کہا جس نے موت کے وقت ہزار درہم مضاربت اور ہزار درہم قرض کا اقرار کیا اور ہزار درہم ہی چھوڑے '' پہلے قرض دیا جائے گا پھراگر پچھ بچے وہ مضاربت والے کے لئے ہوگا۔

فرواند: قرض کا معاملہ چونکہ حساس ہوتا ہے اور میت کی پکڑ کا باعث ہوتا ہے لہذا سب سے پہلے اسے چکایا جائے گا چرکوئی دوسرا معاملہ نبٹایا جائے گا قرآن میں ہے (من بعد وَصیةٍ یوضی ہما او دین) (النساء) یعنی میت کی ومیت اور قرض کے بعد میراث تقیم ہوگی اور علاء نے اتفاق کیا ہے کہ سب سے پہلے قرض کی ادائیگی کی جائے گی ۔

3112 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا حَسَنٌ

عَنُ مُطَرِّفٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ فِي رَجُلٍ مَاتَ عَنُ مُطَرِّفٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ فِي رَجُلٍ مَاتَ وَتَرَكَ ثَلاثَ مِائَةِ دِرُهَمٍ وَثَلاثَةَ بَنِيْنَ فَجَاءَ رَجُلٌ يَدَعِي مِائَةَ دِرُهَمٍ عَلَى

مطرف کہتے ہیں شعبی نے اس شخص کے متعلق جو فوت ہوا اور تین سو درہم اور تین لڑ کے چھوڑے ایک شخص نے آ کر میت کے ذمہ سو درہم کا وعولیٰ کیا ان میں سے ایک نے

[🗗] حسن: أخرجه ابن ابي شيبه 11/386 (11545)

[🛭] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 11/225 (11057)

612 كتاب الفرائض الكراك المنظمة الكراك المكالم

اس کا اقرار کیا' کہا:''وہخص اینے جھے کے مطابق شریک ہو گا۔''شعبی نے کہا:''میرے نزدیک قرض ادا کئے بغیر ميراث نهين ہوسکتی۔''

الْمَيْتِ فَأَقَرَّ لَهُ أَحَدُهُمُ قَالَ يَدُخُلُ عَلَيُهِمُ بِالْحِصَّةِ ثُمَّ قَالَ الشَّعُبُّ مَا أُرَى أَنُ يَكُوْنَ مِيْرَاثَسا حَتْنِي يُقُضَى

الدُّنُ 0

3113 حَدَّثَنَا أَبُو خَيْتَمَةَ مُصْعَبُ بْنُ سَعِيدٍ الْحَرَّانِيُّ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ.

اشعث کہتے ہیں حسن نے اس آ دمی کے متعلق جو فوت ہوا اور دو بیٹے اور دو ہزار درہم چھوڑے دونوں نے دو ہزار تقسیم کر لیئے۔ان میں سے ایک کہیں غائب ہوگیا ایک آ دمی نے آ کرمیت کے ذمہ ہزار درہم اپناحق ہونے کا دعویٰ کیا' کہا:'دموجود بھائی کے یاس جو پچھ ہے وہ سارا لے لے گا اور اس سے کہا جائے گا اپنے غائب بھائی کے پیچیے جاؤ اوراس سے نصف لےلو۔''

عَن الْأَشْعَبِ عَن الْحَسَنِ فِي رَجُلِ هَلَكَ وَتَرَكَ ابُنَيْن وَتَرَكَ أَلُفَى دِرُهَمِ فَاقتَسَمَا الْأَلُفَى دِرُهَم وَغَابَ أَحَدُ إِلابُنيُن فَجَاءَ رَجُلٌ فَاسْتَحَقَّ عَلَى الْمَيّتِ أَلُفَ دِرُهَم قَالَ يَأْخُذُ جَمِيعَ مَا فِي يَدِ هٰذَا الشَّاهِ دِ وَيُقَالُ لَهُ اتَّبِعُ أَخَاكَ الْعَائِبَ وَخُدُ نِصُفَ مَا فِي يَدِهِ. ٥

3114 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ عَنْ زِيَادِ الْأَعْلَمِ

عَن الْحَسَنِ قَالَ إِذَا أَقَرَّ بَعُضُ الُورَثَةِ بِدَيْنِ فَهُوَ عَلَيْهِ بِحِصَّتِهِ . 8

حسن سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: "جب وارث کسی قرض کا اقر ارکرے تو وہ اس براس کے حصہ کے مطابق ہو

فوائد: یعنی اپنے مقے کی فیصدی کے اعتبار سے جتنا قرض ہوگا اتنے فیصد ادا کر دے گا جب کہ بقیہ نہ مان رہے ہوا گر سارے ہی مان جا کمیں تو پھر پہلے قرض ادا کر کے بعد میں میراث تقسیم ہوگی ۔ 3115 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ عَنْ أَبِيْ هَاشِمٍ

عَنُ إِبُواهِيمَ قَالَ إِذَا شَهِدَ اثْنَان مِنَ ابرائيم سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: "جب وارثول الُورَاثَةِ بِدَيْنِ فَهُو مِنْ جَمِيع المُمَالِ مِن عَرض كَى وَابَى وي تو وه تمام مال سے

[•] صحيح: أحرجه ابن منصور (314) وابن ابي شيبه 223/11 (11049)

² حسن: أخر ابن ابي شيبه 223/11 (11045) حسن:

[€]صحيح: أخرجه سعيد بن منصور (316) وابن ابي شيبه 223/11 (11050)

613 کتاب الفرائض کتاب الفرائض

إذًا كَانُوا عُدُولًا وَقَالَ الشَّعْبِيُّ عَلَيْهِمَا الداكياجائ كااكروارث برابر مول توشعي ني كها: "أنبيل دونوں کے ذمہان کے حصہ کے مطابق (قرض) ہوگا۔''

فِيُ نَصِيبِهِ مَا . 0

فوائد: ابراہیم رائیلیہ کا موقف ہی اقرب الی الصواب معلوم ہوتا ہے کیونکہ اسلام میں دوعادل گواہوں کی گواہی معتبر جانا گیا ہے۔(واللہ اعلم)

> [40] بَابِ فِي مِيرَاثِ الْمُرْتَدِ مرتد کی میراث کا بیان

3116 حَدَّنَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا ثَابِتُ بْنُ الْوَلِيدِ بْنِ جُمَيْع قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِيْ

قاسم بن عبدالرحمٰن ہے مروی ہے وہ کہتے تھے کہ ابن مسعود مرتد کے رشتہ داروں کو دارث تھبراتے تھے جب وہ قتل کیا

عَن الْقَاسِم بُن عَبُدِ الرَّحْمَن قَالَ كَانَ ابُنُ مَسُعُودٍ يُورِّثُ أَهُلَ الْمُرْتَدِّ إِذَا

3117 حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ عَنِ الْأَعْمَشِ

ابوعمروشيبانی کہتے ہیں کہ سیدناعلی بن ابوطالب واللہ مرتد کی میراث اس کے مسلمان وارثوں کو دیتے تھے۔

عَنُ أَبِي عَمُرو الشَّيْبَانِيّ أَنَّ عَلِيَّ بُنَ أَبِي طَالِبِ جَعَلَ مِيْرَاتَ الْمُرْتَدِّ

لِوَرَثَتِهِ مِنَ المُسلِمِينَ . ٥

فوائد: احناف بھی علی فائنو کے موقف کوتر جیج دیتے ہیں اور یہ فرق کرتے ہیں کہ حالت اسلام میں کمائی دولت تو مسلمانوں میں تقسیم ہوگی جب کہ بقیہ بیت المال میں جائے گی جب کہ اس کے برنکس جمہور، مالکیہ وشافعیہ، حنابلہ کے مطابق نہ تو وہ مسلمانوں کا وارث بنے گا اور نہ اس کا وارث بنایا جائے گا۔

(المغنی 6/298) اوریهی بات درست وران ح بے (والله اعلم)

3118 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ

عَنِ الْحَكَمِ أَنَّ عَلِيًّا قَضَى فِي مِيْرَاثِ مَمْ كَتِ بِي سِيْدِنا عَلَى وَالنَّهُ نِهِ مرتدك مراث كم تعلق الُمُورُتَدِّ لِأَهْلِهِ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ . ٥٠ اس كمسلمان وارتوں كے لئے فيصله كيا-

٠ صحيح: أخرجه ابن منصور (322)

◘ضعيف: حجاج بن أرطاة ضعيف ب_أخرجه عبدالرزاق (19301) والبيهةي في الفرائض، باب ميراث المرتد 6/254

[🕭] ضعيف: القاسم نے اين واوا کوئيس پايا۔ أحرجه ابن ابي شيبه 11/354 و البيهقي في الفرائض، باب ميراث السرند 6/255 ◘صحيح: أخرجه ابن منصور (311) وابن ابي شيبه 355/11 (11430)والبيهقي في الفرائض، باب ميراث المرتد 6/254

العُرِينَ الدَّالِينِينَ الدَّالِينِينَ الدَّالِينِينَ الدَّالِينِينَ الدَّالِينِينَ الدَّالِينِينَ المُوائض المُ

[41].... بَابِ مِيرَاثِ الْقَاتِلِ قاتل كى ميراث كابيان

3119 حَدَّثَنَا زَكَرِيًّا بْنُ عَدِيِّ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ هُوَ ابْنُ عَمْرِ و......

عَنُ عَبُدِ الْكَرِيُمِ عَنِ الْحَكَمِ قَالَ إِذَا قَتَلَ الرَّجُلُ أَخَاهُ عَمْدًا لَمْ يُورَّتُ مِنُ مِيُرَاثِهِ وَلَا مِنُ دِيَتِهِ فَإِذَا قَتَلَهُ خَطَأً وُرِّتَ مِنُ مِيرَاثِهِ وَلَمْ يُورَّثُ مِنُ دِيَتِهِ قَالَ وَكَانَ عَطَاءٌ يَقُولُ ذٰلِكَ . •

عبدالكريم كہتے ہيں كہ حكم نے كہا: "جب كوئى آ دمى اپنے ہوائى كو ارادہ سے قبل كر دے تو وہ نہ اس كى ميراث سے وارث ہوگا اور نہ اس كى ديت سے ۔ اور جب وہ اسے غلطى سے قبل كر دے تو اس كى ميراث سے وارث ہنے گا ديت سے وارث ہيں ہوگا۔ اور عطاء بھى اسى طرح كہتے ہيں ۔

فوائد: قاتل مقتوں کا وارث نہیں ہے گا جاہے وہ قتل عمد ہوشہ عمد ہویا خطا سوائے ایسے قل کے جو کسی سبب کی بناء پر ہوقاتل کی محرومی کا سبب آپ اللے آئے کا قول ہے "القاتل لا يرث" (ترفدی) قاتل وارث نہیں بنتا (الوجیز لمنشاری)

3120 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَلِيّ بْنِ مُسْهِرِ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ قَتَادَةَ

ظلاس کہتے ہیں سیّدنا علی فٹائٹھ نے کہا: ''کسی شخص نے اپنی ماں کو پھر سے قتل کیا۔ پھر اس نے اپنے بھائیوں سے میراث طلب کی اس کے بھائیوں نے کہا: تمہیں میراث نہیں ملے گئ پھر وہ سب سیّدنا علی فٹائٹھ کے پاس گئے تو سیّدنا علی فٹائٹھ نے اس کے ذمہ دیت مقرر کی اور اسے میراث سے نکال دیا۔

3121 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمِ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ الْحُرِّ

تھم سے مروی وہ کہتے ہیں جب کوئی آ دی اپنی بیوی کو علطی سے قبل کردی تو اسے دیت سے میراث نہ ملے گا۔

عَنِ الُحَكَمِ أَنَّ الرَّجُلَ إِذَّا قَتَلَ امُرَأَتَهُ خَطَأً أَنَّهُ يُمُنَّعُ مِيرَاثَةُ مِنَ الْعَقُلِ وَغَيُرِهِ . ۞

[🛈] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 11/11هـ362 (11452)

منقطع، ضعيف: فلاس بن عمروت على زائني كؤيس پايا أحرجه البيهقي في الفرائض 220/6 وعبدالرزاق (17796).

[€]صحيح: دارمي منفردين-

الفرائض الكَالِيْفِينَ الْكَالِيْفِينَ الْكَالِيْفِينَ الْعَرائض 615 كَالْ كَتَابِ الفرائض

عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ قَالَ لَا عَبِالِهِ كَتِهِ بِي: سَيْدِنا ابن عباس رَفَاتُونَ نَهُ كَها: " قاتل مقتول يَوثُ الْقَاتِلُ مِنَ الْمَقْتُولِ شَيْئًا . • كابالكل وارث نه بوگائ

3123 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُغِيرَةِ عَن ابْنِ الْمُبَارَكِ

عَنُ مَعُمَدٍ عَنُ قَتَادَةً فِى دَجُلٍ قَذَفَ امُرَأَتَهُ وَجَاءَ بِشُهُودٍ فَرُجِمَتُ قَالَ يَرِثُهَا . ۞

3124 حَدَّنَا أَبُوْ النُّعْمَانِ....

حَدَّثَنَا أَبُوُ عَوَانَةَ عَنُ حَمَّادٍ فِي رَجُلٍ جُـلِدَ الْحَدَّ أَرَاهُ مَـاتَ شَلَّتَ أَبُوُ النُّعُمَان قَالَ يَتَوَارَثَان . ۞

معمر کہتے ہیں کہ سیّدنا قادۃ زائنیٰ نے اس شخص کے متعلق کہا: جس نے اپنی بیوی پرزنا کی تہت لگائی اور گواہ پیش کئے' وہ رجم کی گئی'''وہ شخص اس کا وارث ہوگا۔''

ابوعوانہ کہتے ہیں کہ حماد نے اس آ دمی کے متعلق جے کوڑے کی حدلگائی گئی اور میرا خیال ہے وہ فوت ہو گیا۔ ابونعمان کو شک ہے: ''وہ دونوں آپس میں وارث

ہوں گئے۔''

3125 حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَان حَدَّثَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سَالِمِ

عَنُ عَامِرٍ عَنُ عَلِيٍّ قَالَ الْقَاتِلُ لَا يَرِثُ وَلَا يَحُجُبُ . ۞

عامر کہتے ہیں کہ سیّدنا علی خالٹی نے کہا: '' قاتل نہ خود وارث ہوگا اور نہ اس کی وجہ سے کوئی اور وارث مجوب ہو

فوائد: بیحدیث ضعف بیکن بات یونی ہے کہ جوخود محروم ہووہ دوسرے کے جب کا باعث نہیں بن سکتا ہے (واللہ اعلم) یعنی نہ کسی صاحب فرض کا حصہ کم کرسکتا ہے اور نہ کسی کومجور کرسکتا ہے۔ 3126۔ حَدَّ ثَنَا أَبُو نُعَیْم حَدَّ ثَنَا حَسَنٌ عَنْ لَیْثِ

- صعيف: ليك بن الي سليم ضعيف ب-أحرجه ابن ابي شببه 359/11 (11443)
 - عصحيح: دارى منفرد بير-
 - **⊙**صحیح: داری منفرد ہیں۔
- ضعيف: محمد بن سالم ضعيف ب- أحرجه البيهقي في الفرائض باب لايرث القاتل 220/6

616 كتاب الفرائض 616

ابوعمر وعبدی کہتے ہیں کہ سنّدنا علی خاتینۂ نے کہا: '' قاتل

يُورَّتُ الْقَاتِلُ . 9

وارث نه ہوگا۔''

3127 حَدَّثَنَا زَكَرِيًا بْنُ عَدِي حَدَّثَنَا أَبُوْ بَكْرِ عَنْ مُطَرِّفٍ

عَنِ الشَّعُبِيِّ قَالَ قَالَ عُمَرُ لَا يَرِثُ قَاتاً خَطَأً وَلا عَمُدًا . ٥

شعبی نے کہا کہ عمر خالفہ نے فرمایا: '' قاتل وارث نہیں ہوگا خواہ ل خطاہے ہو باعداً۔''

3128 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ لَيْتٍ

طاؤس کہتے ہیں کہ سیدنا ابن عیاس زیافیہ نے کہا: '' قاتل وار پر نہیں ہوگا '' عَنُ طَاوُس عَنِ ابُنِ عَبَّاسِ قَالَ لَا يَوتُ الْقَاتِلُ . 9

عَنُ أَبِيُ عَمُرو الْعَبُدِيِّ عَنُ عَلِيّ قَالَ لَا

[42].... بَابِ فَرَائِضِ الْمَجُوسِ مجوس کے فرائض کا بیان

3129- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِنْسَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى

عَنْ مَعُمَو عَن الزُّهُويّ قَالَ إِذَا اجْتَمَعَ مُعُم كَتِ بِين كه زبري نے كها: "جب دونس جمع ہو نَسَبَان وُرَّتَ بِأَكْبَرِهِمَا يَعْنِي ﴿ جَاكِينَ تُوبِرِ ﴾ اعتبارے وارثت جاري ہوگ ۔''

المُجُهُ سَ ٥

3130 حَدَّنَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ...

حَدَّثُنَا حَمَّادُ بُنُ سَلَمَةَ عَنُ حَمَّادِ بُن أَبِي سُلَيْمَانَ قَالَ يَرِثُ مِنَ الْجَانِبِ الَّـذِي يَـصُـلُـحُ وَلَا يَرِثُ مِنَ الْجَانِبِ الَّذِي لَا يَصُلُحُ . 🗗

حماد بن سلمہ کہتے ہیں کہ حماد بن ابو سلیمان نے کہا:''وراثت اس طرف ہے جاری ہوگی جس کی وراثت کی صلاحیت ہواور اس طرف سے وراثت جاری نہ ہوگی جبن کی صلاحت نه ہو۔''

3131 حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ عَنْ رَجُلٍ

[€] ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 11/360 (11445)

[🛭] ضعيف: تعمى نے عمر فائغ كونيس يايا ـ أخرجه عبدالرزاق (17789) و ابن ابي شيبه 259/11 (211442)

[€]ضعيف: أخرجه عبدالرزاق (17786)

[◘]صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 365/11 (11467) والبيهقي في الفرائض، باب ميراث المحوس 260/6

[€] صحيح: أخرجه ابن ابي شببه 366/11 (11471) والبيقي في الفرائض، باب ميراث المحوس 260/6

حَالِ الْفُرائِعِيُّ الْكَالِيِّيُّ الْكَالِيِّيُّ الْكَالِيِّيِّ 617 كَتَابِ الفُرائِضِ كَتَابِ الفُرائِضِ

شعبی کہتے ہیں کہ سیّدنا علی اور ابن مسعود و اللّٰہ نے کہا: "مجوس جب مسلمان ہو جا کیں تو دونوں رشتوں میں سے وارث ہوں گے۔"

عَنِ الشَّعْبِيِّ أَنَّ عَلِيًّا وَابُنَ مَسْعُودٍ قَالَا فِى النَّمَجُوسِ إِذَا أَسُلَمُوا يَرِثُونَ مِنَ الْقَرَابَتَيُن جَمِيعًا . •

[43_].... بَابِ مِيرَاثِ الْأَسِيرِ قيدي كي ميراث كابيان

3132- أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِيْ الزِّنَادِ عَنْ أَبِيْهِ

عمر مناشیہ بن عبدالعزیز سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا:'' تیدی کی بیوی اس کی وارث ہو گی اور وہ اس کا عَنُ عُمَرَ بُنِ عَبُدِ الْعَزِيزِ فِي امْرَأَةِ الْأَسِيرِ أَنَّهَا تَرِثُهُ وَيَرِثُهَا . ©

وارث ہوگا۔''

فوائد: اگر کوئی مسلم کسی کا فرکی قید میں ہوتو وہ بھی بقید کی طرح وارث بنے گا اور اسے وارث بنایا بھی جائے گا۔اور اگر اس کی موجودگی کا پنة نہ چل رہا ہوتو اسکا مرتد والاحکم ہوگا۔

3133 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثِنِي مَعْمَرٌ عَنْ إِسْحَقَ بْنِ

رَاشِدٍ.....

عمر فاطن بن عبدالعزیز نے اس قیدی کے بارے میں کہا جو وصیت کرتا ہے کہ میرے نزدیک اس کی وصیت جاری ہوگی جب تک وہ اینے دین سے پھرنہ گیا ہو۔''

عَنُ عُسَمَ رَ بُسِ عَبُدِ الْعَزِيزِ فِى الْأَسِيرِ يُوصِى قَالَ أَجِزُ لَهُ وَصِيَّتَهُ مَا دَامَ عَلَى دِيْنِهِ لَمْ يَسَغَيَّرُ عَنُ دِيْنِهِ. ۞

3134 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ دَاوُدَ

شعمی کہتے ہیں شریح نے کہا:''قیدی جب دشمن کے قبضہ میں ہوتو وارث ہوگا۔'' عَنِ الشَّعُبِيِّ عَنُ شُرَيْحٍ قَالَ يُورَّكُ الْأَسِيْرُ إِذَا كَانَ فِي أَيُدِى الْعَدُةِ . ۞

❶ ضعيف: الى يمن مجهول راوي بهدأ حرجه إبن ابي شبيه 366/11 (11470) والبيه قبي في الفرائض، باب ميراث المحوس 260/6

[🗗] حسن: دارمی منفرد ہیں۔

❸صحبح: أخرجه عبدالرزق (10150) او ربخارى نے اسے كتاب الفرائض، باب ميراث الأسير بقوله (وقال عمر بن عبدالغزيز.....) ميں معلق بيان كيا ہے۔ ديكھئے فتح البارى 45/12، عبدالغزيز.....) ميں معلق بيان كيا ہے۔

[•] صحيح: أخرجه عبدالوزاق (19202) وابن ابي شيبه 380/11 (11518)

الفرائض كتاب الفرائض كالمرائض
3135 ـ حَدَّهَٰنَا مُحَمَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ

حَدَّثَنِي مَنُ سَمِعَ إِبُرَاهِيمَ يَقُولُ يُورَّكُ ابراتِهم كَهِ شَے: ''قيدي وارث ہوگا۔''

الْأَسِيرُ . 0

3136 حَدَّثَنَا الْمُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ.....

[44].... بَابِ فِيُ مِيرَاثِ الُحَمِيُلِ يَصِيَكُ ہوئے بِحِ کی میراث کا بیان

3137 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا الْأَشْعَثُ

نُ شعبی کہتے ہیں کہ عمر بن خطاب والنین نے شریح کولکھا کہ ک حمیل بغیر دلیل کے وارث نہیں ہوگا اگر چہ عورت اسے ک اپنے کیڑے میں لیسٹ کرلائے۔

عَنِ الشَّعُبِسِيِّ قَسَالَ كَتَسَبَ عُمَرُ بُنُ الُحَطَّابِ إِلْسِي شُرَيْحٍ أَنُ لَا يُوَرِّتُ الُحَجِيلَ إِلَّا بِبَيِّنَةٍ وَإِنْ جَائَتُ بِهِ فِيُ

خِرَقِهَا . 🏵

3138 ـ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ

عَنْ مَنْصُودٍ عَنُ إِبُواهِيمَ قَالَ يُودَّكُ مصوركت بين ابراجيم في كها: "جميل وارث موكاء"

الْحَمِيلَ . ٥

فوائد: (۱) ابراہیم را تھید کا قول ہی صحیح ہے (۲) حمل کی اکثر مدت بارے اختلاف ہے احناف کے نزدیک دو سال جب کہ مالک و شافعی واحد کے نزدیک چارسال ہے لہذا چارسال یا دوسال تک انتظار کیا جائے گا اگر حمل موجود ہوتو پھر میراث تقسیم ہوگی ہاں جن کے حصے پر حمل کا کوئی فرق نہیں پڑتا ان کو ان کا حصہ دے دینے میں کوئی حرج نہیں (واللہ اعلم) یا پھر حمل کو فرکر تسلیم کرتے ہوئے بقید حصے تقسیم کرلیے جائیں اور وضع حمل کے بعد تھیج کرلی جائے۔

صحيح: أخرجه عبدالرزاق (19202) وابن ابي شيبه 381/11 (11522)

² صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 11/11 (11524)

[€]قوى بطرق: أخرجه عبدالرزاق (19173) وابن حزم في المحلّي 303/8 وابن منصور (252)

[◘]صحيح: أخرجه ابن منصور (256) وابن حزم في المحلي 9303/ وابن ابي شيبه 352/11 (11421)

الكانتين الكانتين

3139 حَدَّثَنَا أَبُوْ سَعِيدِ مِنْ بَنِي أُمَيَّةَ

عَنُ أَبِي بَكُرِ بُن عَبُدِ اللَّهِ بُن أَبِي مَرُيَمَ

نُورَّتُ الْحُمَلاءُ . ٥

ابوبكر بن عبدالله بن ابومريم كهتم بين كهضم وفضيل بن فضاله ،ابن ابوعوف ،راشد اورعطیه سب نے کہا: 'دخمیل عَنُ ضَـمُرَةَ وَالْفُضَيُل بُن فَضَالَةَ وَابُن وارٹے ہوں گے۔'' أَسِيُ عَوُفٍ وَرَاشِدِ وَعَطِيَّةَ قَالُوا لَا

فوائد: ان كاي تول مرجوح بعجهور الل علم حمل كي ميراث ك قائل بير _

3140 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُغِيرَةِ قَالَ قَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ

حَـدَّثَنَا ابُنُ عَوُن عَنُ مُحَمَّدٍ قَالَ ذُكِرَ عِنْدَهُ قَولُ مَنْ يَقُولُ فِي الْحَمِيل

فَانُكِرَ ذِلكَ وَقَالَ قَدُ تَوَارَثَ الُـمُهَاجِرُونَ وَالْأَنْصَارُ بِنَسَبِهِمُ الَّذِي

كَانَ فِيُ الْجَاهِلِيَّةِ . 9

3141 حَدَّثَنَا أَبُوْ بَكْرِ بْنُ أَبِيْ شَيْبَةَ عَنِ ابْنِ إِدْرِيسَ

عَنُ هِشَامِ عَنِ الْحَسَنِ وَابْنِ سِيُرِيْنَ قَالَا لَا يُورَّكُ الْحَمِيلُ إِلَّا بِبَيِّنَةٍ . ٥

3142 حَدَّثَنَا أَبُوْبِكُو حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ لَيْثِ عَنْ حَمَّادٍ

عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ لَمُ يَكُنُ أَبُو بَكُرِ

وَعُمَرُ وَعُثْمَانُ يُوَرِّتُونَ الْحَمِيلَ . ٥

3143 حَدَّثَنَا أَبُوْ بَكْرِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحِيمِ الْمُحَارِبِيُّ عَنْ زَائِدَةَ

عَنُ أَشُعَتَ بُن أَبِي الشَّعُتَاءِ قَالَ أَقَرَّتُ امُـرَأَـةٌ مِنُ مُـحَارِبِ جَلِيبَةٌ اخ لَهَا جَليبِ

ضعیف جددًا: ابوسعید مجهول جبکه ابوبکر بن عبدالله بن الی مریم ضعیف بـ.

💋 صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 352/11(11420)

❸صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 351/11 (11417) وعبدالرزاق (19177) وابن منصور (255)

شعیف: أخرجه ابن ابی شیبه 351/11 (11415)

ابن عون بیان کرتے ہیں کہ محمد نے کہا'ان کے پاس حمیل کے متعلق کچھ لوگوں کا قول نقل کیا گیا تو انہوں نے اس کا

ا تکار کیا۔ اور انہوں نے کہا: ''مہاجر اور انصار اینے کفر کے

كتاب الفرائض

ز مانہ میں نسب سے دارث ہوں گے۔''

ہشام کہتے ہیں کہ حسن اور ابن سیرین دونوں نے کہا:

''جمیل بغیر دلیل کے وارث نہ ہول گے۔''

ابراہیم سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: "سیدنا ابوبکر عمر

اورعثان عُنالتِهِ حميل کو دارث نه بناتے تھے۔''

اشعث بن ابوشعثاء ہے مروی ہے کہ انہوں نے کہا:'' قبیلہ

بنومحارب کی ایک عورت نے ایک حمیل کے نسب کا اقرار

620 كتاب الفرائض كتاب THE ESTRICIE DE

فَوَرَّثَةَ عَبُدُ اللَّهِ بُنُ عُتُبَةَ مِنُ أُنُحِتِهِ. •

3144 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِح حَدَّثَنِي اللَّيْثُ حَدَّثَنِيْ يُوْنُسُ

عَن ابُن شِهَابِ عَنُ رَجُلِ قَالَ عِنْدَ فِرَاقِ اللُّانُيَا أَنَا مَولَى فُلانِ قَالَ يَرِثُ مِيرَاثَةُ لِمَنُ سَمِّي أَنَّهُ مَوْلَاهُ عِنْدَ فِرَاق الـدُّنْيَـا إِلَّا أَنُ يَــأْتُوا عَلَيُهِ بِبَيِّنَةٍ بِغَيُر

ذٰلِكَ يَرُدُّونَ بِهِ قَوْلَهُ فَيُرَدُّ مِيرَاثُهُ إِلَى مَا قَامَتُ بِهِ الْبَيِّنَةُ . ٥

[45].... بَابِ فِيُ مِيرَاثِ وَلَدِ الزِّنَا زنا سے پیداشدہ اولا د کی میراث کا بیان

گى جس پر دليل قائم ہوگى۔''

3145 ـ أَخْبَرَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شَرِيكٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْن سَالِمِ

عَن الشَّعُبِيّ عَنُ عَلِيّ وَعَبُدِ اللَّهِ قَالَا وَلَدُ الزِّنَا بِمَنْزِلَةِ ابْنِ الْمُلاعَنَةِ . 3

3146 أَخْبَرَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ

عَنِ الْحَسَنِ بُنِ الْحُرِّ حَدَّثَنِي الْحَكَمُ أَنَّ وَلَـٰدَ الزِّنَا كَا يَرِثُهُ الَّذِى يَدَّعِيهِ وَكَا يَرِثُهُ الْمَوْلُودُ . ٥

حن بن حر كہتے ہيں مجھ سے حكم نے بيان كيا: 'زناكي اولا د کا نہ وہ مخض وارث ہو گا جس نے اس کا دعویٰ کیا اور نه ہی اولا داس کی وارث ہو گی ۔''

فعمی کہتے ہیں کہ سیّدناعلی اور عبداللد فالنّد خانی 'زانی

کی اولا دلعان کرنے والی کی اولا د کے مرتبہ پر ہے۔''

کیا۔تو عبداللہ بن عتب نے اسے بہن کی میراث دی۔''

ابن شہاب کہتے ہیں اگر کسی آدمی نے مرتے ہوئے

کہا:''میں فلاں آ دمی کا دوست ہوں تو اس کی میراث اس

آ دی کو دی جائے گی۔ جب کہاس کے متعلق اس کی دلیل

قائم ہو جائے تو پھراس کی وراثت اس طرف لوٹائی جائے

فوائد: ولد الزنا اور زانی آپس میں ایک دوسرے کے وارث نہیں بنیں گے کیونکہ آپ مشاقید ن فرمايا: "الولد للفراش و للعاهر الحجر" (ويكي : ١٣٨٨) لركاصاحب بسر (يعني جس كي بيوي ہالونڈی) کا ہوگا اور زانی کو پھر پڑیں گے۔

3147 حَدَّثَنَا أَبُوْ بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا رَوْحٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِيْ حَفْصَةَ

◘ صحيح: مصنف ابن ابي شيبه 354/11 (11427) وعبدالرزاق (19179) وابن حزم في المحلي 9/303

۵ ضعیف: عبدالله بن صارح کاتب لیث ضعیف ہے۔

❸ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 347/11 (11404) والبيهقي في الفرائض، باب ميراث ولد الملاعنة (258/6)

♦صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 365/11 (11466)

الكَالِيَّا الْعَالِمُ الْعَلَى الْعَالِمُ الْعَلَى الْعَلِي ِ عَلَى الْعَلِي عَلَى الْعَلِي الْعِلْمِ الْعَلِي الْعَلِي الْعَلِي الْعَلِي الْعَلِي الْعَلِي الْعِلِي الْعَلِي الْعِلْمِي الْعِلْمِ الْعِلْمِ الْعِلْمِ الْعِلِي الْعِلْمِ الْعِلِمِ الْعِلْمِي الْعِلْمِ الْعِلْمِ الْعِلْمِ الْعِلْمِ الْعِلْمِ

زہری کہتے ہیں علی خالٹیؤ بن حسین زنا کی اولا دکو وار شنہیں تھہرائے تھے اگر چہکوئی شخص اس کا دعویٰ کرے۔ عَنِ النُّهُوِيِّ عَنُ عَلِيِّ بُنِ حُسَيْنٍ أَنَّهُ كَانَ لَا يُورِّثُ وَلَدَ الزِّنَا وَإِنَّ ادَّعَاهُ السَّحُلُ . •

3148 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِح حَدَّثَنِيْ بَكْرُ بْنُ مُضَرَ عَنْ عَمْرِو يَعْنِي ابْنَ الْحَارِثِ.......

عَنُ بُكَيْرٍ عَنُ سُلَيْمَانَ بُنِ يَسَارٍ قَالَ أَيُّمَا رَجُلٍ أَتَى إِلَى غُلَامٍ يَزُعُمُ أَنَّهُ ابُنَّ لَهُ وَأَنَّهُ زَلْى بِأُمِّهِ وَلَمْ يَدَّع ذٰلِكَ الْغُلامَ وَأَنَّهُ زَلْى الْغُلامَ أَحَدٌ فَهُو يَرِثُهُ قَالَ بُكَيْرٌ وَسَأَلُتُ عُرُوةَ عَنْ ذٰلِكَ فَقَالَ مِثْلَ قَوْلِ سُلَيْمَانَ بُنِ يَسَالٍ عَنْ ذٰلِكَ فَقَالَ مِثْلَ قَوْلِ سُلَيْمَانَ بُنِ يَسَالٍ وَقَالَ عُرُوةً بَلَغَنَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَلَيْ فَقَالَ مَثْلَ قَوْلِ سُلَيْمَانَ بُنِ يَسَالٍ وَقَالَ عُرُورة بَلَغَنَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَلَيْ فَقَالَ مَثْلَ قَوْلِ سُلَيْمَانَ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْهِ اللهُ عَرُورة وَ بَلَغَنَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَلَيْهِ اللهُ اللهِ عَلَيْهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ المُولَلَ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ المُ اللهُ المُؤلِدُ اللهُ
بکیر کہتے ہیں سلیمان بن بیار نے کہا: ''جو شخص کسی الر کے متعلق کیے کہ وہ اس کا بیٹا ہے اور اس نے اس کی ماں سے زنا کیا ہے اور دوسرا کوئی شخص اس الر کے دعویٰ نہ کر بے تو وہی اس کا وارث ہوگا۔'' بکیر کہتے ہیں: میں نے عروة سے اس کے متعلق پوچھا تو انہوں نے وہی بات کہی جو سلیمان بن بیار نے کہی عروة نے کہا: ہمیں معلوم ہوا ہے کہرسول اللہ طرف ہوائے کہرسول اللہ طرف ہوائے کہرسول اللہ طرف ہوائے کہرسول اللہ طرف ہوائے۔ کورسول اللہ طرف ہوائے۔ کہرسول اللہ ہوائے۔ کہرسول ہوائے۔ کہرسول اللہ ہوائے۔ کہرسول ہوائے۔

3149ـ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُوسَى عَنْ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ عَنْ عَمْرِ و

حسن سے مردی ہے کہانہوں نے کہا:''لعان کرنے والی کی اولا د زنا کی اولا د کی طرح ہے۔'' اس کی ماں اور اس کی

ماں کے وارث اس کے وارث ہوں گے۔''

عَنِ الْحَسَنِ قَالَ ابْنُ الْمُلَاعِنَةِ مِثْلُ وَلَدِ الزِّنَا تَرِثُهُ أُمُّهُ وَوَرَثَتُهُ وَرَثَتُهُ أَمِّهُ. ۞

فوائد: ولد زنا اگر کنواری کا بیٹا ہے تو اس کا معاملہ ولد الملاعنة والا ہی ہوگا یعنی وہ ماں کا وارث ہوگا اور ماں اس کی وارث ہوگی ۔

3150 حَدَّثَنَا أَبُّوْ النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ

مغیرہ کہتے ہیں ابراہیم نے کہا:''زانی کی اولا دوارث نہیں ہوگی'' عَنُ مُغِيرَةَ عَنُ إِبُوَاهِيمَ قَالَ لَا يُورَّتُ وَلَدُ الزِّنَا . ۞

🗨 صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 363/11 (11460)

೨ سنده ضعیف: لیکن آخری عروة کے الفاظ مرفوعاً میچ بین رو یکھے مسند موصلی (5148، 7390)

◙صحيح: أخرِحه البيهقي في الفرائض، باب ميراث و لد الملاعنة 258/6

۵صحیح: آگے بیمطولاً آربی ہے۔

الكَالِيَّانَ الْكَالِيَّانِيَ الْكَالِيَّانِيَ الْكَالِيَّانِيَ الْكَالِيَّانِيَ الْفُرائض 622 كتاب الفرائض

3151 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُغِيْرَةِ عَن ابْنِ الْمُبَارَكِ عَنْ مَعْمَرِ أَوْ يُونُسَ

عَنِ الْـزُّهُـرِيِّ فِى أُوُلَادِ الزِّنَا قَالَ يَتَوَادَثُونَ مِنُ قِبَلِ الْأُمَّهَاتِ وَإِنُ وَلَدَّتُ تَوُأَمًا فَمَاتَ وَدِثَ السُّدُسَ . •

زہری سے مروی ہے کہ انہوں نے زناکی اولاد کے متعلق کہا:''وہ مال کی طرف سے وارث ہوگی۔ اگر دن کو بچہ پیدا ہوا اور فوت ہوگیا تو وہ چھے جھے کا وارث ہوگا۔''

3152 حَدَّثَنَا أَبُوْ بَكْرِ بْنُ أَبِيْ شَيْبَةَ قَالَ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ عَنْ مُغِيرَةَ عَنْ شِبَاكٍ

ابراہیم نقل فرماتے ہیں کہ: 'زنا کی اولاد کومیراث نہیں ملے گئ میراث اس کو ملے گی جس کے باپ کو حد نہ لگائی گئ ہویا اس کی مال نکاح یا ملک میں ہو (لونڈی ہو)۔'

إِنَّمَايَرِثُ مَنْ لَمُ يُقَمُّ عَلَى أَبِيُهِ الْحَدُّ أَوُ تُمُلَكُ أُمُّهُ بِنِكَاحِ أَوُ شِرَاءٍ . ﴿

عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ لَا يَرِثُ وَلَدُ الزِّنَا

3153 حَدَّثَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ أَبَانَ عَنْ مُوْسَى بْنِ مُحَمَّدِ الْأَنْصَارِيِّ

عَنُ إِسْمَعِيلَ عَنِ الْحَسَنِ فِي الرَّجُلِ
يَفُجُو بِالْمَرُأَةِ ثُمَّ يَتَزَوَّجُهَا قَالَ لَا بَأْسَ
إِلَّا أَنُ تَسكُونَ حُبُلَى فَإِنَّ الْوَلَـدَ لَا
يَلُحَقُهُ ۞

اساعیل کہتے ہیں حسن نے اس شخص کے متعلق کہا جو کسی عورت سے زنا کر کے پھراس سے نکاح کر لے۔ اس کا کوئی حرج نہیں ہے گا۔''

3154 حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ يَحْيَى عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ رَاشِدٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ مُوسٰى

عَنُ عَمُوو بُنِ شُعَبُ عَنُ أَبِيهِ عَنُ اللهِ عَنُ أَبِيهِ عَنُ اللهِ عَنُ اللهِ عَنَ اللهِ عَن اللهُ عَن اللهِ عَن اللهُ عَن اللهِ عَن اللهُ عَن اللهِ عَن اللهِ عَن اللهِ عَن اللهِ عَن اللهُ عَن اللهُ عَن اللهِ عَن اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ الله

❶صحيح: أخرجه عبدالرزاق (12493) وابن ابي شيبه 347/11 (11406)

[•] ضعيف: بيشم مدس عن سے بيان كرتا ہے۔ أخرجه ابن ابي شيبه 365/11 (11465)

⁶ ضعيف: اساعيل ضعيف ب-

لَمْ يُقُسَمُ فَلَهُ نَصِيبُهُ وَلَا يَلْحَقُ إِذَا كَانَ الَّذِى يُدُعَى لَهُ أَنْكَرَهُ وَإِنْ كَانَ مِنْ أَمَةٍ لَا يَمُلِكُهَا أَوْ حُرَّةٍ عَاهَرَهَا فَإِنَّهُ لَا يَمُلِكُهَا أَوْ حُرَّةٍ عَاهَرَهَا فَإِنَّهُ لَا يَلْحَقُ وَلَا يَرِثُ وَإِنْ كَانَ الَّذِى يُدُعٰى لَهُ هُوَ ادَّعَاهُ وَهُوَ وَلَدُ زِنَا لِلَّهُلِ يُدُعٰى لَهُ هُو ادَّعَاهُ وَهُو وَلَدُ زِنَا لِلَّهُلِ أَمْدِهُمَ مَنْ كَانُوا حُرَّةً أَوُ أَمَةً . 0

اس کا دعویٰ کیا ہے لیکن اس کو اس میراث میں سے حصہ نہ ملے گا، جواسلام کے زمانہ سے پہلے جاہلیت کے زمانہ میں اس کے باب کے دوسرے وارثوں نے تقشیم کرلی ہو اور البتة اليي ميراث جوابھي تقسيم نه ہوئي ہوتو اس ميں سے وہ بھی حصہ مائے گا،کین اگراس (کے باپ)نے جس سے وہ ملایا جاتا ہے، اپنی زندگی میں اس کا انکار کیا ہے (یعنی یوں کہا ہو کہ بیمیرا بحینہیں ہے) تو دارتوں کے ملانے سے وہ اب اس کا بچہ نہ ہوگا۔ ہاں اگر وہ بچہ ایسی لونڈی ہے جو اس مرد کی ملکیت نہ تھی یا آزاد عورت سے ہو۔جس سے اس نے زنا کیا تھا۔تو اس کا نسب بھی اس مرد سے ثابت نہ ہوگا۔(اگر چہ مرد کے وارث اس بیج کو اس سے ملا دیں) اور وہ بچہ اس مرد کا وارث بھی نہ ہو گا۔ (کیونکہ وہ ولد الزناہے) اگر چہخود اس مرد نے بھی اپنی زندگی میں ب کہا ہو کہ یہ میرا بچہ ہے۔ بلکہ وہ ولد الزنا ہو گا،اورعورت کے خاندان والوں کے پاس رہے گا۔خواہ وہ آزاد ہو یا لونڈی (مرد کے کنیے والوں سے اس کا پچھتعلق نہ ہوگا)

فواند: (۱) اگر باپ کی وفات کے بعد پیدا ہونے والے لڑکے کواس کے ورثہ قبول کر لیتے ہیں تو وہ انہیں میں شار ہوگا ان میں تقسیم ہو نیوالی میراث میں سے حصہ دار ہوگا سوائے اس کے جو پہلے تقسیم ہو چی ہے۔ (۲) لڑکے کوصاحب بستر کے ساتھ ملا یا جائے گا اس سے اس کی نسبت ملائی جائے گی زانی کا اس سے نسبی تعلق نہیں ہوگا اور نہ ہی ہواس کا وارث بنے گا۔

3155 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ عَنِ الْحَسَنِ

❶ حسن: أخرجه ابو داؤد، كتاب الطلاق، باب في الدعاء والد الزنا (2265، 2266) وابن ماجه، كتاب الفرائض، باب
 في ادعاء الوالد (2746) والبيهقي في الفرائض، باب لايرث ولد الزنا في الزاني ولايرث الزاني (260/6)

الفرائض (كتاب الفرائض) 624 (كتاب الفرائض) كتاب الفرائض

عمیر بن بزید کہتے ہیں کہ میں نے طعمی سے اپنے غلام کے متعلق پوچھا جوزنا کا بیٹا تھا انہوں نے کہا: ''اسے نہ بیچواور نہ کی اس کی قیت کھاؤاوراس سے خدمت لو۔''

عَنُ عُمَيْرِ بُنِ يَزِيدَ قَالَ سَأَلُتُ الشَّعْبِيَّ عَنُ مَـمُلُوكٍ لِى وَلَدُ زِنَّا قَالَ لَا تَبِعُهُ وَلَا تَأْكُلُ ثَمَنَهُ وَاستَخْدِمُهُ . •

فواند: به ورع و پر بیزگاری کی علامت ہے کہ ندکورۃ کاموں سے احتز از کیا جائے ورنہ ولد زنا کاس میں کوئی گناہ نہیں وہ عام انسانوں کی طرح ہی ہے اس کے والدین کا جرم اس کے ذیتے تھونیا نہیں جاسکتا لہٰذااس کو بیچناوغیرہ مجمی جائز ہے ۔

3156 حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ....

عَنُ سَعِيُدٍ عَنِ الزُّهُرِيِّ سُئِلَ عَنُ وَلَدِ زِنَّا يَـمُوتُ قَالَ إِنْ كَانَ ابُنَ عَرَبِيَّةٍ وَرِثَتُ أُمُّهُ النُّلُثَ وَجُعِلَ بَقِيَّةُ مَالِهِ فِي وَرِثَتُ الْمَالِ وَإِنْ كَانَ ابُنَ مَوُلَاةٍ وَرِثَتُ أُمَّـهُ الشُّلُتِ وَوَرِثَ مَوَالِيهَا الَّذِينَ أُمُّـهُ الشُّلُتِ وَوَرِثَ مَوَالِيهَا الَّذِينَ أَعْتَقُوهَا مَا بَقِي قَالَ مَرُوانُ سَمِعْتُ مَالِكًا يَقُولُ ذَلِكَ . •

سعید کہتے ہیں کہ زہری سے زناکی اولاد کے متعلق پوچھا گیا جومر جائے۔ انہوں نے کہا:''اگر عربی عورت کالڑکا ہو تو اس کی ماں ایک تہائی کی وارث ہوگی اور اس کا باتی مال بیت المال میں داخل ہوگا اگر آزاد لونڈی کا لڑکا ہوتو اس کی ماں ایک تہائی کی وارث ہوگی اور باتی مال کے اس کے مالک وارث ہول گے جنہوں نے اسے آزاد کیا۔'' مروان کہتے ہیں: میں نے مالک کو اسی طرح کہتے ہوئے مروان کہتے ہیں: میں نے مالک کو اسی طرح کہتے ہوئے

سنار

3157 حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا الْهَيْثُمُ بْنُ حُمَيْدٍ عَنِ الْعَلْاءِ بْنِ الْحَارِثِ.....

عمرو بن شعیب این والد اور این دادا سے نقل کرتے ہیں۔ کہ نبی منطق میں نے لعان کرنے والے کی اولاد کی میراث کا فیصلہ اس کی مال کے لئے کیا۔ کیونکہ اس نے

حَدَّائِنِي عَمُرُو بُنُ شُعَيْبٍ أَنَّ النَّبِيَّ عَمُرُ قَطٰى بِمِيرَاثِ ابْنِ الْمُلاعَنَةِ لِأُمِّهِ كُلِّهِ لِمَا لَقِيَتُ فِيهِ مِنَ الْعَنَاءِ . •

اس کے لئے مشقت اٹھائی۔

3158 حَدَّثَنَا إِسْمْعِيلُ بْنُ أَبَانَ عَنْ مُوسَى بْنِ مُحَمَّدِ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ حَدَّثَنِي الْحَارِثُ بْنَ

• صحیع: عمیر کواین حبان نے الثقات 7/273 میں ذکر کیا ہے جبکہ امام بخاری وابن ابی حاتم اس بارے خاموش میں۔

صحیح: أخرجه مالك في الفرائض، باب ميراث والد الملاعنة وولدالزنا (16) والبيهقي في الفرائض، باب ميراث ولد الملاعنة 259/6

❸حسن: أخرجه ابوداؤد، كتاب الفرائض، باب ميراث ابن الملاعنة والبيقي في الفرائض، باب ميراث ولد الملاعنة 6/259

<u>www.sirat</u>-e-m<u>ustaq</u>eem.com كتاب الفرائض

الكاينين الكاينين

عَنُ زَيْدِ بُنِ وَهُبِ عَنُ عَلِيّ أَنَّهُ قَالَ فِي وَلَدِ الزِّنَا لِأَوْلِيَاءِ أُمِّسهٖ خُذُوا ابُنَكُمُ

تَرِثُونَهُ وَتَعُقِلُونَهُ وَلَا يَرِثُكُمُ . •

زید بن وہب کہتے ہیں کہ سیّدنا علی رخالفیٰ نے زنا کی اولاد کے متعلق اس کی ماں کے رشتہ داروں سے کہا اسے لوتم ہی اس کے وارث ہو گے۔اورتم ہی اس کی دیت دو گے۔اور

وهتمهارا دارث ندموگا۔

[46].... بَابِ مِيرَاثِ السَّائِبَةِ

سائبه کی میراث کا بیان

3159 أَخْبَرَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ قَالَا حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْل عَنْ أَبِي عَمُرِو الشَّيْبَانِيِّ قَالَ قَالَ عَبُدُ

عمروشیبانی کہتے ہیں:عبداللہ نے کہا: سائبہ جہال عاہم اپنا مال رکھ دے۔عبداللہ بن بزید کہتے ہیں شعبہ نے کہا اس بات کوسلمۃ سے میرے علاوہ کسی نے نہیں سا۔

اللُّهِ السَّائِبَةُ يَضَعُ مَالَةً حَيْثُ شَاءَ قَالَ عَبُدُ اللَّهِ بُنُ يَزِيدَ قَالَ شُعْبَةُ لَمُ يَسُمَعُ

هٰذَا مِنُ سَلَمَةَ أَحَدٌ غَيُري . ٥

فسواند: (۱) "السائية" عمراد آزاد كرده غلام ب (۲) آزاد كرده غلام كاگرور شدوموالى ند ہوں تو وہ اینے مال کی جس طرح جاہے وصیت کرسکتا ہے۔

3160 ـ أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ وَرْدَانَ.....

عَنْ يُونُسَ عَنِ الْمُحَسَنِ سُفِلَ عَنْ مِيرَاثِ لَي اللَّهِ عَن يُوسَ كَتِمَ عِن سَه سَاسَهِ كَي ميراث كم تعلق يوجها السَّائِيَةِ فَقَالَ كُلُّ عَتِيْقِ سَائِبَةً . ٥ كيادانهول في كها: برآ زادكرده سائبه ب-

3161 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ

ابوعثان کہتے ہیں کہ عمر رہائٹھ نے کہا: صدقہ اور سائبہ اینے دن یا اپنے وقت لینی قیامت کے دن کے لئے ہے۔

عَنُ أَبِي عُثْمَانَ قَالَ قَالَ عُمَرُ الصَّدَقَةُ وَالسَّائِبَةُ لِيَوْمِهِمَا. ٥

🛈 ضحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 347/11، 348 (11403)

♣صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 369/11 (31480) والبهيقي في الولاء باب من استحب من السلف التنزه 302/10

شعيح: أخرجه ابن الحاشيه 368/11، 369 (11478)

◘صحيح: أخرجه البيهقي في الولاء، باب من استحب من السلف التنزه عن ميراث السائبة..... 301/10 وابن ابي شيبه (11465)368/11

فوائد: عمر فِاللَّيْ ك كني كا مطلب بصدقه اورغلام آزادكرن كا تواب ،بدله يه آخرت ير چھوڑ دینا جا ہے یعنی غلام کی ولا عجمی نہ لی جائے۔(واللہ اعلم)

3162 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا

عَنُ عَامِرِ قَالَ سُئِلَ عَامِرٌ عَنِ الْمَمْلُولِي يُعْتَقُ سَائِبَةً لِمَنُ وَلَاؤُهُ قَالَ

للَّذِي أَعُتَقَهُ. •

عامر کہتے ہیں کہ عامرے اُس غلام کے متعلق بوچھا گیا جو سائبہ کہہ کرآ زاد کیا گیا ہواس کی ولاء کسے ملے گی؟ انہوں نے کہا: اس تخص کوجس نے اسے آزاد کیا۔

فوائد: معلوم ہوا ولاء کامستی معتق آزاد کرنے والا ہوگا بشرطیکہ معتق کے ورثہ عصبہ نہ ہول نیز مغتق کے ولاء لینے میں کوئی حرج نہیں ۔

3163 حَدَّثَنَا أَبُوْ حَاتِم الْبَصْرِيُّ هُوَ رَوْحُ بْنُ أَسْلَمَ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ حَدَّثَنَا عَبْدُ

الرَّحْمَن بْنُ إِسْحْقَ عَنْ أَبِيْهِ

عَنُ عَبُدِ الرَّحْمَنِ بُنِ عَمُرِو قَالَ مَاتَ مَ وُلِّي عَلَى عَهُدِ عُثُمَانَ وَلَيْسَ لَهُ وَالِ

فَأَمَرَ بِمَالِهِ فَأَدُخِلَ بَيْتَ الْمَالِ. ٥

عبدالطن بن عمرو كہتے ہيں كەسيدنا عثان كے زمانه ميں ا يك آزاد كرده غلام فوت هو گيا جس كا كو كي وارث نه تفاية و سیّدنا عثان کے تھم سے اس کا مال بیت المال میں داخل کر د ہا گیا۔

3164 حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا إِسْمَعِيلُ

عَنُ عَامِرِ عَنُ مَسُرُوقٍ فِي رَجُلِ مَاتَ

وَلَمُ يَكُنُ لَهُ مَولَى عَتَاقَةٍ قَالَ مَالُهُ

حَيْثُ أُوصى بهِ فَإِنْ لَمُ يَكُنُ أَوْصَى

فَهُوَ فِي بَيْتِ الْمَالِ . 6

عامر کہتے ہیں مسروق نے اس آ دمی کے متعلق کہا جوفوت ہو گیا اوراس کا کوئی آ زاد کرنے والاموجود نہیں انہوں نے کہا: اس کا مال اسے وما حائے گا جہاں اس نے وصیت ک ۔ اگر اس نے وصیت نہ کی ہو گی تو وہ بیت المال میں

فوائد: اگرآ زاد کردہ غلام کے ورثہ ومتعق نہ ہوتو پھراگراس نے مال بارے وصیت کر دی ہوئی

[◘] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 368/11 (11477)

[🗗] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 413/11 (11637)

[€]صحيح: أخرجه ابن ابي شببه 413/11 (11638) وابن منصور (222،221)

المراقع المراق

ہے تو ٹھیک ہے ورنداسے بیت المال میں جمع کروادیا جائے گا یہی بات درست ہے (واللہ اعلم)

3165ـ حَدَّثَنَا أَبُوْ سَعِيدِ بْنُ عَمْرٍ و......

عَنُ أَبِى بَكُرِ بُنِ أَبِى مَرْيَمَ عَنُ ضَمُرَةَ وَرَاشِدِ بُنِ سَعُدٍ وَغَيُرِهِمَا قَالُوا فِيمَنُ أُعُتِقَ سَائِبَةً إِنَّ وَكَائَهُ لِيمَنُ أَعْتَقَهُ إِنَّمَا

سَيَّةُ مِنَ الرِّقِ وَلَمْ يُسَيِّنُهُ مِنَ الْوَلَاءِ . ٥

3166 حَدَّثَنَا أَبُوْ بَكْرٍ بْنُ أَبِيْ شَيْبَةَ حَدَّثَنَا أَبُوْ دَاوُدَ عَنْ شُعْبَةَ قَالَ....

منصور کہتے ہیں ابراہیم شعبی نے کہا: سائبہ کی ولاء فروخت کرنے اور ہبہ کرنے میں کچھ حرج نہیں۔

ابوبكرين ابومريم كہتے ہيں كەضمر ةاور راشدين سعد وغيره

نے اس شخص کے متعلق کہا جوسائبہ کہہ کر آزاد کیا گیا۔ کہ

اس کا مال ولاء اس تخص کی ہے جس نے اسے آزاد کیا۔

اس نے تواہیے غلامی سے آ زاد کیا۔ ولاء سے تہیں۔

أُخْبَرَنِي مَنْصُورٌ عَنْ إِبْرَاهِيمَ وَالشَّعْبِيِّ قَالَا لَا بَانُس بِبَيْعِ وَلَاءِ السَّائِبَةِ

-3167ـ حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا الْمَسْعُودِيُّ

عَنِ الْقَاسِمِ قَالَ أَعْتَقَ رَجُلٌ غُلامًا سَائِمةً فَأَتَى عَبُدَ اللهِ وَقَالَ إِنِّى أَعْتَقُتُ عَلَامًا غُلامًا فُكلامًا إِنِّى أَعْتَقُتُ عُلامًا لِي سَائِمةً وَهَذِه تَرِكَتُهُ قَالَ هِى لَلْتَ قَالَ لا حَاجَةَ لِسى فِيهَا قَالَ فَضَعُهَا فَإِنَّ هَا هُنَا وَارِثًا كَثِيرًا. ۞

قاسم کہتے ہیں ایک آ دی نے ایک غلام کوسائبہ کہہ کر آزاد کیا۔ اور عبداللہ کے پاس جا کر کہا میں نے اپنے ایک غلام کوسائبہ کہہ کر آزاد کیا تھا اور میاس کا ترکہ ہے انہوں نے کہا: '' بہ تیرا ہے۔'' اس نے کہا: '' مجھے اس کی ضرورت نہیں۔'' انہوں نے کہا: ''رکھ دو یہاں بہت سے وارث

[47].... بَابِ مِيرَاثِ الصَّبِيِّ

بچے کی میراث کا بیان

3168 - أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا الْأَشْعَتُ عَنْ أَبِيْ الزُّبَيْرِ

[🛈] ضعيف: جدًّا أخرجه ابن منصور (228)

² صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 124/6 (519)

[⊕]صحیح: أخرجه عبدالرزاق (16169) والبیهقی فی الفرائص، باب من جعل میراث من لم یدع وارثا ولا مولی فی بیت المال 243/6 و سعید بن منصور (225)

عَنُ جَابِرِ بُنِ عَبُدِ اللّهِ قَالَ إِذَا اسْتَهَلَّ جَابِرِ بن عبدالله سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: جب بچہ الطّبیع وُرِّتُ وَصُلِّی عَلَیْهِ . • چلائے تو اسے میراث ملے گی اور اس کی نماز جنازہ پڑھی حائے گی۔

فواف : بیاثر اگر چرضعیف ہے لیکن اہل علم اس بات کے قائل ہیں کہ جو بچدزندہ پیدا ہوجس کا پیتد اس کی چیخ سے چل جائے تو وہ وارث بھی ہینے گا اور بنائے گا بھی اور اس کا جناز ہ بھی پڑھا جاسکتا ہے۔ 3169 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَیْمِ حَدَّثَنَا شَوِیكٌ عَنْ أَبِیْ إِسْلَحٰقَ عَنْ عَطَاءِ

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ إِذَا اسْتَهَلَّ الصَّبِيُّ ابن عباس سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا:''جب بچہ چلا وَرِث وَوُدِث وَصُلِّی عَلَیْهِ . ۞ یَتُو وارث بنے گا اور وارث بنایا جائے گا اور اس کی نماز ویٹھائی جائے گا۔'' جنازہ پڑھائی جائے گا۔''

3170 حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَعِيْلَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيْلُ عَنْ سِمَاكٍ عَنْ عِكْرِمَةَ

عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ قَالَ لَيْسَ مِنْ مَوْلُودٍ إِلَّا ابن عباس الْمَالِيَّةُ كَبَتْ بِينَ عَيسَىٰ بن مريم كے سوا ہر بچہ يَسُتَهِ لَّ وَاسْتِهُ لَالُـهُ يَعُصِرُ الشَّيْطَانُ پيرائش كے وقت چلاتا ہے كونكه شيطان اس كے پيك كو بَطْنَهُ فَيَصِيْحُ إِلَّا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ . • بينِجَا ہے۔

فواند: (۱) "استهلال" چلانا یہ بیجی کی زندگی سے کنامیہ ہے یعنی شیطان کے لازمی جھونے کی بناء چلانے یا کسی بھی سبب بیجی کی زندگی ثابت ہوجانے پراس پر وراثت کے احکام عام وارثوں کی طرح لاگوہوں گے (۲) ہر بیجی کی پیدائش پر شیطان اسے چوکا مارتا ہے (د) عیسی عَالِما کو اللہ نے شیطان سے محفوظ رکھا تھا۔

3171 حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا يَحْيَى هُوَ ابْنُ حَمْزَةَ عَنْ زَيْدِ بْنِ وَاقِدٍ

عَنُ مَكُحُولٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَى مَكُول كَهَ مِن كهرسول الله عَنْ مَكُول الله عَنْ مَكُول كَهَ مِن كهرسول الله عَنْ الله عَنْ الله عَنْ مَكُول كَهُ مِن كهرسول الله عَنْ الله عَلَا عَلَا الله عَنْ الله ع

◘ حسن لغيره: أخرجه الترمذي، كتاب الجنائز، باب ماجاء في ترك الصلاة على الجنين حتى يستهل (1032) و ابن
 ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء في الصلاة على الطفيل (1508)

🕰 ضعیف: شریک کا ابواسحاق سے سماع متا خرہے۔

⑤متـفـق عـليـه: البخارى، كتاب بدء الخلق، باب صفة ابليس و جنوده (3286) ومســلـم كتاب الفضائل، باب فضائل عبيه السلام (2366)

و 629 كتاب الفرائض في الكارتين الكارتين الكارتين الكارتين الكارتين الكارتين الكارتين الكارتين الفرائض

وَإِنُ وَقَعَ حَيًّا . •

فوائد: "ان وقع كحيتا" كے الفاظ حديث مرسل ہونے كى وجہ سے جمت نہيں لہذا استحلال كو زندگى كى علامت برمحمول كيا جائے گا لہذا كى بھى طرح ثابت ہو جانے پروہ وارث شہرے گا ۔استحلال چيخنا چونكہ ايك مكتوب، لابدى امر ہے لہذا اس كا خصوصى تذكرة كر ديا گيا ۔ (واللہ اعلم) نيز آئندہ زهرى رائيليه كا قول اس كى تائيد كر رہا ہے

3172_ حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحٰقَ عَنْ عَطَاءٍ

عَنْ جَابِرِ قَالَ إِذَا اسْتَهَلَّ الْمَوْلُودُ

صُلِّي عَلَيْهِ وَوُرَّكَ . ٥

جاہر والٹیو کہتے ہیں:'' جب بچہ چلائے تو اس کی نماز جنازہ پڑھی جائے گی اوراسے وارث بنایا جائے گا۔'' یہ بیریہ یہ وور مذہ کو ویا تا ہے تاہی ہے ''

3173 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا مَعْنٌ......

عَنِ ابُنِ أَبِى ذِئْبٍ عَنِ الزُّهُوِيِّ قَالَ أَرَى الْعُطَاسَ اسْتِهُلاًلا . ۞

أَرَى الْعُطَاسَ السِّتِهُ لا لا . ٥ 3174 حَدَّثَنَا أَبُوْ النَّعْمَان حَدَّثَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ عَنْ مُغِيرَةَ ``

> عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ لَا يُوَرَّثُ الْمَوُلُوهُ حَتْى يَسْتَهِلَّ وَلَا يُصَلَّى عَلَيْهِ حَتَّى يَسْتَهِلَّ فَإِذَا اسْتَهَلَّ صُلِّى عَلَيْهِ وَوُرِّث وَكَمُلَتِ الدِّيَةُ. ٥

ابراہیم سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا:''جب تک بچہ نہ چلائے وارث نہ ہوگا اور جب تک نہ چلائے اس پر نماز جنازہ بھی نہیں پڑھی جائے گی جب وہ چلائے تو اس کی نماز جنازہ بھی پڑھی جائے گی اور اسے وارث بھی بنایا

ابن ابوذئب کہتے ہیں کہ زہری نے کہا: ''میرے نزدیک

. جائے گااوراس کی دیت پوری ہوگی۔''

3175 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ

حَدَّثَنِی یُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ وَسَأَلْنَاهُ یونس بیان کرتے ہیں کہ ہم نے ابن شہاب سے ناقص بیج عَنِ السِّفُطِ فَقَالَ لَا یُصَلِّی عَلَیْهِ یَ کے متعلق پوچھا انہوں نے کہا:''اس کی نماز جنازہ نہ پڑھی

1 مرسل، ضعیف: باب کی دوسری احادیث و کیھے۔

🗨 حسن لغيره: (3168) كے تحت بيرگزر چكل ہے۔

€صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 11/385 (11541) وعبدالرزاق (6592، 18341، 18359)

◘صحيح: أخرجه عبدالرزاق (6595) وابن ابي شيبه 383/11 (11531)

630 كالم كتاب الفرائض كالم الكالمع

وَ لَا يُصَلِّي عَلَى مَوْ لُوُدٍ حَتَّى يَسْتَهِلَّ جائے گی اور کس بیج کی نماز جنازہ نہ پڑھی جائے گی جب تک وہ نہ جیلائے''

صَارِخًا . 🍳

[48] بَابِ فِي وَلاءِ الْمُكَاتَبِ

مال معین کے اداکرنے کی شرط برآ زاد ہونے کا معاہدہ کرنے والے غلام کی ولاء کا بیان 3176 ـ حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مُعَاوِيَةَ عَنْ أَبِي سُفْيَانَ عَنْ مَعْمَرِ

> وَهٰذَا هٰذَا مِنُ سَيّدِهِ فَالْبَيْعُ لِلْأُوَّلِ وَيَقُولُ أَهُلُ الْمَهِدِينَةِ الْوَلَاءُ لِسَيِّدِ الْبَائِعِ وَيَقُولُونَ إِنَّمَا ابْتَاعَ هٰذَا مَا عَلَى الُمُكَاتَبِ فَالْوَلَاءُ لِلسَّيِّدِ. ۞

عَنُ قَتَادَةً قَالَ إِذَا ابْتَاعَ الْمُكَاتِبَان قَادة وَلَيْنَ سِي مروى ہے كه انہوں نے كها: "جب ايك أَحَدُهُ مَا الْآخَرَ هٰذَا هٰذَا مِنُ سَيّدِهِ مَا تَب دوسرے مكاتب كو خريدے بداس في مالك سے اور وہ اس کے مالک سے تو پہلے کی بیج معتبر ہوگی۔'' اہل مدینہ کہتے ہیں: 'ولاء بیچنے والے کے مالک کو ملے گی اور وہ کہتے ہیں' اس نے تو وہ چیز خریدی ہے جو مکاتب کے ذمة تقى للبنداولاء مالك كوسلے گی۔

> [49].... بَابِ فِيُ الْحُرِّ يَتَزَوَّ جُ الْأُمَةَ جولونڈی سے نکاح کرے اس آ زاد مخص کا بیان

> > 3177 حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا يَحْيَى

عَنُ سَعِيدٍ أَنَّ عُمَرَ قَالَ أَيُّمَا حُرِّ تَزَوَّجَ أَمَةً فَقَدُ أَرَقَ نِصْفَهُ وَأَيُّمَا عَبْدٍ تَزَوَّ جَحُرَّةً فَقَدُ أَعُتَى نِصْفَهُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد يَعُنِي الْوَلَدَ . 🗗

سعید چراللیہ کہتے ہیں کہ سیّدنا عمر زاللہ نے فرمایا: ' جوآ زاد آ دمی لونڈی سے نکاح کرے اس نے اپنا آ دھا حصہ غلام کر دیا اور جس غلام آ دمی نے آ زادعورت سے نکاح کیا اس نے اینا آ دھا حصہ آ زاد کر دیا۔ ابو محمد کہتے ہیں: ''لینی

اولا دکو۔''

ولاء کی میراث کا بیان ر50].... بَابِ مِيرَاثِ الْوَلاءِ

3178 ـ أَخْبَرَنَاأَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا أَبُوْ شِهَابِ

◘ صحيح: أخرجه عبدالرزاق (6598) وابن ابي شيبه، كتاب الحنائز، باب من قال لايصلي عليه حتى يستهل صارخاً 318/3

٢ صحيح: أخرجه عبدالرزاق (15810)

 اخرجه عبدالرزاق (13103) وابن منصور (739، 740) وابن ابي شيبه، باب الرجل يتزوج الأمة ومن كرهة 174/4)

الكاليمين الكاليمين

631 كتاب الفرائض كتاب المرائض

عَنِ الشَّيْسَانِيِّ عَنِ الشَّعُبِيِّ فِي الْعَبُدِ

يَتَزَوَّ جُ الْمَرُأَةَ ثُمَّ يُطَلِّقُهَا وَلَهُ مِنْهَا وَلَدٌ قَالَ إِنَّ كَانَتُ حُرَّةً فَالنَّفَقَةُ عَلَى أُمِّهِ

وَإِنْ كَانَ عَبُدًا يَعُنِى الصَّبِيَّ فَعَلَى

3179 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ حَدَّثَنَا زَكَرِيًّا عَنْ عَامِرٍ ح و.....

حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنُ مُغِيرَةً عَنُ إِبْرَاهِيمَ أَنَّهُ مَا قَالَا وَلَاؤُهُ لِمَنُ بَدَأَ بِالْعِتُقِ أَوَّلَ

مَرَّةِ . 🛭

[51].... بَابِ فِي الْعَبُدِ يَكُونُ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ فَيُعُتِقُ أَحَدُهُمَا نَصِيبَهُ دوآ دمیوں کامشترک غلام ہواور ایک اپناھتے آزاد کردے اس کا بیان

مشترک ہوگی۔''

3180 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسَى جَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَنْبَأَنَا يُونُسُ عَنِ الْحَسَنِ ح و حَدَّثَنَا جَرِيرٌ ابان بن تغلب کہتے ہیں کہ تھم اور ابراہیم دونوں نے کہا: "اگراپنا حصه آزاد كرنے والا باقى كا ضامن موتو ولاءات ملے گی اور اگر غلام سے کام لیا جائے تو ولاء سب میں

شیبانی کہتے ہیں شعمی نے اس غلام کے متعلق کہا جو کسی

عورت سے نکاح کر کے طلاق دے دے اور اس سے اس

كاكوئي بيه بهي مو: "اگرعورت آزاد موتواس كاخرچ اس كي

ماں کے ذمہ ہوگا اور اگر بچہ غلام ہوتو اس کے مالک کے

جرير كہتے ہيں مغيره اور ابراہيم دونوں نے كہا: "ولاء اس

شخص کو ملے گی جس نے پہلے اسے آزاد کیا۔

عَنُ أَبَانَ بُن تَغُلِبَ عَنِ الْحَكَمِ عَنُ إبُرَاهِهِمَ أَنَّهُمَا قَالَا إِنَّ ضَمِنَ كَانَ الْوَلَاءُ لَـهُ وَإِنَّ اسْتَسْعَى الْعَبُدُ كَانَ الْوَلَاءُ بَيْنَهُمْ . 3

3181ـ حَدَّثَنَا يَعْلَى وَأَبُوْ نُعَيْمٍ قَالًا·

حَدَّثَنَا زَكَرِيًّا عَنُ عَامِرِ فِي عَبُدٍ بَيْنَ رَجُلَيْنِ أَغْتَقَ أَحَلُهُمَا نَصِيبَهُ قَالَ يُتَمَّمُ عِتُقُهُ فَإِنْ لَمُ يَكُنُ لَهُ مَالٌ استُسْعِيَ الْعَبْدُ فِي النِّصْفِ بِقِيمَةِ عَدُلِ وَالُوَلَاءُ لِمَنُ أَعْتَقَ . ٥

زکریا' عامر سے اس غلام کے متعلق نقل کرتے ہیں جو دو آ دمیوں میں مشترک ہوں اور ایک نے اپنا حصہ آزاد کر دیا ہو کہا:اس کی آزادی کو کممل کیا جائے ، پس اگراس کے باس مال نہ ہوتو درمیان قبت برنصف کے بدلے میں غلام سے محنت کرائی جائے گی اور ولاءاں شخص کی ہوگی جس نے آ زاد کیا۔''

🛭 🗗 صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 521/6 (1901) 522/6 (1903) 🛈 صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 153/5

◙صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 521/6 (1900) وعبدالرزاق (16720)

صحيح: أخرجه عبدالرزاق (16723) وابن ابي شيبه 521/6 (1901).

الكَالِيْكِينَ الْكَالِيْكِينَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ الللَّلَّ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّهِ الللَّلَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ ا

فسوائد: (۱) اگرمشتر که غلام میں سے کوئی مالک اپناحته آزاد کردیتا ہے تو اگراس کے پاس مال ہے تو اس کے مال کے ذریعے سارے غلام کو آزاد کروالیا جائے گا اگر مال نہ ہوتو غلام ہے محنت مزدوری کروائی جائے گی جس سے وہ رقم اوا کر کے تو آزاد ہو جائے اگر پیجی نہ ہو سکے تو پھر غلام اس قدر آزاد ہو گا جس قدر آزاد کرنے والے کا حصہ تھا۔ (۲) ایسے آزاد کردہ غلام کی ولاء آزاد کرنے والے کوہی ملے گی (واللہ اعلم) 3182 حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مُعَاوِيَةَ عَنْ أَبِيْ سُفْيَانَ الْمَعْمَرِيِّ عَنْ مَعْمَرِ

عَنِ ابْنِ طَاوُسِ عَنُ أَبِيهِ فِي عَبُدٍ بَيْنَ ابن طاوَس اين والديد اس غلام ح متعلق نُقل كرت رَجُلَيْن أَعْتَقَ أَحَدُهُمَا نَصِيبَهُ وَأَمُسَكَهُ بِي جو دوآ دميول مين مشترك مواور ايك في اپنا صه آ زاد کر دیا ہواور دوسرے نے روک رکھا ہو کہا:''اس کی میراث دونوں میںمشتر کہ ہوگی۔''

الْآخَرُ قَالَ مِيرَاثُهُ بَيْنَهُمَا . ٥

ف وانسد: اس قول کے مطابق اگر غلام آدھا ہی آزاد ہوتا ہے بقیہ غلام ہی رہتا ہے تو اس کی میراث اس کے مالک کوآ دھامال جب کہ آزاد کرنے والے کوآ دھی بطور ولاءوے دی جائے گی۔(واللہ اعلم) 3183 حَدَّثَنَا هَارُونُ عَنْ أَبِيْ سُفْيَانَ......

معمر وللله کہتے ہیں زہری نے کہا: اس کی میراث اس محف عَنْ مَعُمَرِ عَنِ الزُّهُرِيِّ قَالَ مِيرَاثُهُ لِلَّذِى أَمُسَكَة و قَالَ قَتَامَةُ هُوَ لِلْمُعْتِقِ كُلُّهُ وَ ثَمَنُهُ عَلَيْهِ وَ يَقُولُهُ أَهُلُ الْكُوفَة . ٥

کو ملے گی جس نے اسے روک رکھا ہے اور قماد ہ وُٹائیز نے کہا: ''تمام میراث آزاد کرنے والے کو ملے گی اور اس کی قیت اس کے ذمہ ہوگی۔''اہل کوفداس کے قائل ہیں۔

> 527.... بَابِ مَا لِلنِّسَاءِ مِنَ الْوَكَاءِ عورتوں کے لیے ولاء کے حصّہ کے بیان

3184۔ حَدَّثَنَا يَعْلَى بْنُ عُبَيْدٍ..... عبدالملك كهت بين عطاء ساس شخص كمتعلق يوجها كيا حَدَّثَنَا عَبُدُ الْمَلِكِ عَنُ عَطَاء فيُ جومکاتب چھوڑ کرمر جائے اس کے بیٹے اور بیٹیاں ہیں کیا الرَّجُل يَـمُوثُ وَيَتُوكُ مُكَاتَبًا وَلَهُ عورتوں کو ولاء ہے کچھ ملے گا'انہوں نے کہا:''عورتیں اس بَنُونُ نَ وَبَنَاتُ أَيَكُو نُ لِلنَّسَاء مِنَ الْوَلَاء

[•] صحيح: أخرجه البيهقي في العتق، باب حكم المعتق نصفه 280/10

[🛭] صحيح: مابقه حديث ملاحظه كرير_

الفرائض المُعَلِّدُ المُعَالِّدُ الْمُعَالِّدُ الْمُعَالِّدُ الْمُعَالِّدُ الْمُعَالِّدُ الْمُعَالِّدُ الْمُعَالِّدُ الْمُعَالِينَ الْمُعَالِّدُ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِّدُ الْمُعَالِّدُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّدُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِّذِ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذِ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِّذُ الْمُعَالِقِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِقِينِ الْمُعَالِقِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعِلَّى الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعِلَّى الْمُعَالِقِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِقِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعِلَّى الْمُعَالِقِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينِ الْمُعِلَّذِ عِلَيْعِلَّى الْمُعَالِينِ الْمُعِلَّى الْمُعَالِقِينِ الْمُعِلَّى الْمُعَالِقِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلَّى الْمُعِلَّى الْمُعِلَّى الْمُعِلَّى الْمُعِلَّى الْمُعِلَّى الْمُعِلَّى الْمُعِلَى الْمُعِلَّى الْمُعِلَّى الْمُعِلَّى الْمُعِلَّى الْمُعِلَّى الْمُعِلِي الْمُعِلَّى الْمُعِلَّى الْمُعِلَّى الْمُعِلِي عَلَيْهِ الْمُعِلَّى الْمُعِلَّى الْمُعْلِيلِي الْمُعْلِيلِي الْمُعْلِي الْمُعْلِي الْمُعْلِيلِي الْمُعْلِي الْمُعْلِي الْمُعِلْمِي عَلِي الْمُعْلِي عِلْمُعِلِي مِلْمُعِلْمِ الْمُعِلْمِ الْمُعْلِي عِلْ

مال میں سے وارث ہوں گی جو مکاتب کے ذمہ اس کی تابت سے باقی ہو اور ولاء مردوں کے لئے ہے عورتوں کے لئے ہے عورتوں کے لئے نہیں' مگر اس وقت جب وہ خود (اپنے غلام سے) مکا تبت کریں یا (اسے) آزاد کریں۔

شَىُءٌ قَالَ تَرِثُ النِّسَاءُ مِمَّا عَلَى ظَهُرِهِ مِنْ مُكَاتَبَتِهِ وَيَكُونُ الْوَلَاءُ لِلرِّجَالِ مُونَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا كَاتَبُنَ أَوُ أَعْتَقُنَ . • دُونَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا كَاتَبُنَ أَوُ أَعْتَقُنَ . •

فوائد: مالک فوت ہو گیا پیچھے مکا تب غلام چھوڑ گیا بعد میں وہ مکا تب بھی فوت ہو جا تا ہے مکا تب چونکہ غلام ہی ہو تا ہے اب جتنا حصہ غلام کا غلامی میں تھا یعنی ادائیگی نہ کر سکا تھا اتنی مقدار مالک کے عصب بچے بچیاں سب ھے کے مطابق شریک ہوں گے اور جتنی ادائیگی کے عوض وہ آزاد ہو چکا تھا اس قدر ولاء صرف بچوں میں تقسیم ہوگی کیونکہ عورتیں ولاء کی مستحق نہیں بن سکتیں الآیہ کہ انہوں نے خود مکا تبت کی ہویا آزادی دی ہو۔

3185 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شَرِيكٌ

عَنُ لَيُسَثِ عَنُ طَاوُسٍ قَالَ لَا تَرِثُ النِّسَاءُ مِنَ الُوَلَاءِ إِلَّا مَا أَعْتَقُنَ أُو أَعْتَقَ مَنْ أَعْتَقُنَ أَو أَعْتَقَ مَنْ أَعْتَقُنَ أَو أَعْتَقَ

لیث کہتے ہیں طاؤس نے کہا: ''عورتیں ولاء سے وارث نہ ہول گی مگر اس وقت کہ جب وہ خود غلام آزاد کریں یا وہ مخص آزاد کریا۔''

3186 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا أَبُوْ سُفْيَانَ عَنْ مَعْمَرِ

یکی بن ابوکشر کہتے ہیں: ایک شخص ایک مکا تب چھوڑ کر فوت ہوگیا مکا تب بھی فوت ہوگیا اس نے بچھ مال چھوڑا تو ابن میتب اور ابوسلمۃ بن عبدالرحمٰن نے کتابت کے باتی مال کو آزاد کرنے والے کی اولا د مردوں اور عورتوں میں ان کی میراث کے موافق تقسیم کیا اور کتابت کے بعد جو مال بچا وہ آزاد کرنے والے کی اولا دمیں سے مردوں کو ملاعورتوں کوئیس ہے،

عَنُ يَحْيَى بُنِ أَبِى كَثِيْرٍ قَالَ تُوُفِّى رَجُلٌّ وَتَرَكَ مُكَاتَبُ وَتَرَكَ مُكَاتَبُ وَتَرَكَ مَالًا فَجَعَلَ ابُنُ الْمُسَيَّبِ وَأَبُولُ وَتَرَكَ مَالًا فَجَعَلَ ابُنُ الْمُسَيَّبِ وَأَبُولُ سَلَمَةَ بُنُ عَبُدِ الرَّحْمَنِ مَا بَقِى مِنُ مُكَاتَبَتِهِ بَيْنَ بَنِى مَوْلَاهُ الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ مُكَاتَبَتِهِ بَيْنَ بَنِى مَوْلَاهُ الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ عَلَى مِيرَ الْجِهِمُ وَمَا فَضَلَ مِنَ الْمَالِ بَعُدَ عَلَى مِيرَ الْجَهِمُ وَمَا فَضَلَ مِنَ الْمَالِ بَعُدَ كَتَابَتِهِ فَلِلرِّجَالِ مِنْهُمْ مِنُ بَنِي مَوْلَاهُ كَتَابَتِهِ فَلِلرِّجَالِ مِنْهُمْ مِنُ بَنِي مَوْلَاهُ كَتَابَتِهِ فَلِلرِّجَالِ مِنْهُمْ مِنُ بَنِي مَوْلَاهُ

دُونَ النِّسَاءِ . 🗣

صحيح: أخرجه البيهقي في المكاتب، باب ميراث المكاتب و ولاء ه 341/10

² صحيح: أخرجه عبدالرزاق (16266)

[🛭] صحيح: أخرجه عبدالرزاق (15759) واليهقي في المكاتب باب ميراث المكاتب وولاء ه 341/10، وابن منصور (478)

634 📉 💘 كتاب الفرائض المُتَانَّ الْكَالِيْكِ اللهِ

3187 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلَامِ بْنُ حَرْبِ عَنِ الْأَعْمَشِ.....

عَنُ إِبُرَاهِيمَ عَنُ عُمَرَ وَعَلِي وَزَيْدٍ

أَنَّهُمُ قَالُوا الْوَلَاءُ لِلْكُبُرِ وَلَا يُوَرَّثُونَ

النِّسَاءَ مِنَ الُوَلَاءِ إِلَّا مَا أَعُتَقُنَ أَوُ

كَاتُدَ. ٥

3188. حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بُنُ عِيسَى حَدَّثَنَا

إسْمَعِيلُ بُنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِكلابَةَ ح. ٥

3189. و حَـدَّتُنَا ابْنُ وَهُبِ عَنُ يُونُسَ عَنِ الزُّهُ رِيِّ عَنُ سَعِيدِ بُنِ الْمُسَيَّبِ

3190ـ و حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ أَبِيْهِ ····

عَنُ سُلَيْمَانَ بُنِ يَسَارِ أَنَّهُمُ قَالُوا لَا تَرِثُ النِّسَاءُ مِنَ الْوَلَاءِ إِلَّا مَا أَعْتَقُنَ أَوُ كَاتُبِنَ . 🍑

ابراہیم کہتے ہیں سیدنا عمر وعلی اور زید زمالٹی منے کہا: ''ولاء بڑے شخص کو ملے گی۔ وہ عورتوں کو ولاء سے میراث نہ دیے تھے مگر اس وقت جب وہ خود غلام آزاد کریں یا مكاتب كرس"

خالد ابوقلا بدسے اور زہری سعید بن میتب سے اور ابوزناد سلیمان بن بیار سے نقل کرتے ہیں کہ انہوں نے کہا:''عورتیں ولاء سے وارث نہ ہوں گی مگر جب وہ خود آ زاد کرس ما مکاتبت کرس<u>۔''</u>

خالد ابو قلابه والنيه اور زهري والنيه سعيد بن مستب والنيه

سے اور ابو زنادسلیمان بن بیار سے نقل کرتے ہیں کہ انہوں نے کہا:''عورتیں ولاء سے دارث نہ ہوں گی مگر

جب وہ خود آ زاد کریں یا مکاتب کریں۔''

3191_ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بِنُ عِيسَى حَدَّثَنَا مُعَاذُ...

عَنُ أَشُعَتَ عَنِ الْحَسَنِ قَالَ لَا تَرِثُ النِّسَاءُ مِنَ الْوَلَاءِ إِلَّا مَسا أَعُتَفُنَ أَوُ

اشعث والله كہتے ہيں حسن نے كہا: "عورتين ولاء سے وارث نه ہوں گی۔ مگر جب وہ خود آ زاد کریں یا وہ شخض

[◘] منقطع، ضعيف: أخرجه ابن ابي شيبه 388/11 (11550) والبيه قي في الولاء، باب لاترث النساء الولاء إلاض لم عتقن 10/306

ع صحيح: ابن ابي شيبه 388/11 (11554)

^{389/11 (11555)} ابن ابي شيبه 11/387 (11555)

⁴⁸⁰⁾ حسن: أخرجه سيعد بن منصور (480)

الكاريخيّ الكاريخيّ 635 کتاب الفرائض 635

آ زاد کرے جے انہوں نے آ زاد کیا۔ گرلعان کرنے والی عورت اس شخص کی وارث ہو گی جسیاس کے اس لڑ کے نے آزادکیا جس کاس کے باب نے انکار کیا۔" أَعُتَقَ مَنُ أَعُتَفُنَ إِلَّا الْمُلاعَنَةُ فَإِنَّهَا تَـرِثُ مَنُ أُعُتَقَ ابُنُهَا وَالَّذِى انْتَفَى مِنْهُ أَيْدٍ أُهُ . 0

فوائد: عورتیں بذات خودایسے غلام کی ولاء کی مستحق بن سکتی ہیں جن کوانہوں نے خود آزاد کیا ہو نیز ایسے آزاد کردہ غلام کی ولاء کی بھی وارث بن سکتیں ہیں جن کو ان کے آزاد کردہ غلاموں نے آزاد کیا ہو یالعان کرنے والی عورت کے بیٹے نے آزاد کیا ہو۔ (واللہ اعلم)

3192ـ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيْسٰي حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ......

عَنُ سَالِمِ عَنُ أَبِيُهِ أَنَّهُ كَانَ يَرِثُ مَوَالِيَ سالم اپنے والد سے نقل کرتے ہیں کہ وہ سیّدنا عمر ڈٹاٹنئہ کے عُمَرَ دُونَ بَنَاتِ عُمَرَ دُونَ بَنَاتِ عُمَرَ آزاد غلاموں کے وارث ہوتے تھے۔عمر کی بیٹیوں کے

3193 أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن عَنْ خَالِدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ

عَنُ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ عَنْ أَبِي قِلابَةَ فِي خالد حذاء كہتے ہيں ابو قلابہ نے كہا: 'جوعورت فوت ہو امُرَأَدةٍ مَاتَتُ وَتَرَكَتُ بَنِيُهَا فَوَرثُوُهَا جائے اور بیٹے جھوڑ ہے وہ اس کے مال اور (اس کے آزاد

مَالًا وَمَوَالِيَ ثُمَّ مَاتَ بَنُوْهَا قَالَ يَرُجِعُ الُوَلَاءُ إِلَى عَصَبَةِ الْمَرُأَةِ . ٥

3194 حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ ..

عَنُ مَنُصُورِ قَالَ سَأَلُتُ إِبُوَاهِيمَ عَنُ رَجُلِ كَاتَبَ عَبُدًا لَهُ ثُمَّ مَاتَ وَتَرَكَ

وَلَـدًا رِجَالًا وَنِسَاءً قَالَ لِلذُّكُورِ دُونَ

منصور کہتے ہیں میں نے ابراہیم سے اس آ دی کے متعلق بوچھاجس نے اپنے کسی غلام سے مکا تبت کی پھروہ مرگیا اوراس نے مرد وعورت اولا دہیں چھوڑے انہوں نے کہا:

''ولَاءم دول کو ملے گی عورتوں کوئییں ۔''

كردہ غلاموں كى) ولاء كے دارث ہوں گے پھراس كے

لڑ کے مرجائیں ۔ تو ولاءعورت کے عصبہ کو واپس ملے گی۔

الإناث . ٥

[🗘] صحيح: أخرجه ابن ابي شببه 388/11 (11552)

[🛭] صحيح: داري منفرد بين ـ

[🛭] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 388/11، 389 (11554)

[◘]صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 389/11 (11557) والبيهقي في الولاء، باب ميراث المكاتب و ولاء ه 341/10

كتاب الفرائض ٩ 636

3195 حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ.

حَـدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ الْحَسَنِ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ فِي امُرَأَةٍ مَاتَتُ وَتَرَكَتُ مَولًى

عَصَبَتهَا . ٥

قَالَ الْوَلاءُ لِبَنِيهَا فَإِذَا مَاتُوا رَجَعَ إِلَى

پنس بیان کرتے ہیں کہ حسن کہتے تھے جوعورت مرجائے اور آ زاد کردہ غلام حچھوڑے اس کی ولاء اس کے بیٹوں کو ملے گی۔ جب وہ مرجائیں گے تو اس کے عصبہ کی طرف لوٹ جائے گی۔''

3196 حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ عَامِرِ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ.

عَنُ مُغِيرَ ـة عَنُ إِبُرَاهِ مِهَ قَالَ لَيُسَ لِلنِّسَاءِ مِنَ الْوَلاءِ شَيْءٌ إِلَّا مَا أَعُتَقَتُ

هي بنَفُسِهَا . ٥

3197_ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ عَامِرِ

عَن ابُن عَوُن عَنُ مُحَمَّدٍ قَالَ مَاتَ مَوْلِي لِعُمَو فَسَأَلَ ابْنُ عُمَو زَيْدَ بُنَ ثَابِتٍ فَقَالَ هَلُ لِبَنَاتِ عُمَرَ مِنُ مِيُرَاثِهِ شَــىُءٌ ؟قَـالَ مَـا أَرَى لَهُنَّ شَيْئًا وَإِنُ شئتَ أَنْ تُعْطِيَهُنَّ أَعُطَيْتُهُنَّ . •

مغیرہ واللہ کہتے ہیں ابراہیم واللہ نے کہا: ''عورتوں کے لئے ولاء سے کیچھنہیں مگراس وقت جب وہ خود غلام آ زاد کرس۔''

ابن عون کہتے ہیں محمد نے کہا:''سیّدنا عمر رخالفیڈ کا ایک آ زاد كرده غلام فوت ہوگيا تو سيدنا ابن عمر رفائين نے زيد بن ثابت سے بوجھا کیا عمر زائنی کی بیٹیوں کومیراث سے پھھ ملے گا؟ انہوں نے کہا:''میرے نزدیک ان کے لئے پچھ نہیں اگرتم انہیں کچھ دینا جا ہوتو دے دو۔

3198 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبُو أَسَامَةَ

عَنُ هِشَامِ عَنُ أَبِيْهِ قَالَ يُحُرِزُ الْوَلَاءَ مَنُ يُحُرِزُ الْمِيرَاكَ . ٥

ہشام اینے والد سے نقل کرتے ہیں انہوں نے کہا: ' ولاء بھی وہی شخص لے گا جومیراث لیتا ہے۔''

فوائد: اس سے مرادعصبہ ہیں یعنی جوساری باقی ماندہ جائیدارسمیٹ لیتے ہیں وہی ولاء کے بھی وارث بنیں گے ۔

3199_ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبُوْ خَالِدٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى

[•] صحيح: أخرجه عبدالرزاق (16254)

[🛭] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 389/11 (11556) وابن منصور (481) وعبدالرزاق (16261)

الصحيح: أخرجه عبدالرزا (15776)

صحيح: أخرجه البيهقي في الولاء، باب من قال، من أحرز الميراث، أحرز الولاء 305/10

الكالمِينَ الكَالِمِينَ المُعَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكِلْمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكِلْمِينَ الكَالِمِينَ الكِلْمِينَ الكِلْمِينَ الكِلْمِينَ الكِلِمِينَ المَالِمُ المِنْ المُعَلِّينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَلِينَ الْمُعِلَيْنِينَ الْمُعِلَّ الْمُعِلِينَ الْمُعِلَّ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينَ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمِينَ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلَّ المُعِلَّ المُعْلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمِينَ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلَّ المُعِلَّ المُعِلَّ المُعِلِمُ المُعِلَّ المُعِلَّ

عَنُ أُبِي بَكْرِ بُنِ عَمْرِو بُنِ حَزُم أَنَّ

امُرَأَةً مِنُ مُحَارِبِ وَهَبَتُ وَلَاءَ عَبُدِهَا

لِنَفُسِهِ فَأَعْتَقَتُهُ فَوَهَبَ وَلَاءَ نَفُسِهِ لِعَبُدِ

الرَّحْمَنِ بُنِ عَمْرِو بُنِ حَزُم وَمَاتَتُ

فَخَاصَمَتِ الْمَوَالِي إلٰى عُثُمَانَ فَدَعَا

عُشُمَانُ الْبَيِّنَةَ عَلَى مَا قَالَ قَالَ فَأَتَى

الْبَيِّنَةُ فَقَالَ لَهُ عُثْمَانُ اذْهَبُ فَوَال مَنْ

شِئْتَ قَسَالَ أَبُو بَكُرٍ فَوَالَى عَبُدَ

الرَّحْمَنِ بُنَ عَمْرِو بُنِ حَزْمٍ. ٥

637 كتاب الفرائض كتاب

ابوبكر بن عمرو بن حزم كہتے ہيں محارب كى ايك عورت نے اسے غلام کی ولاء اس کو ہبہ کر کے اسے آزاو کر دیا۔ اور اس نے این ولاءعبدالرحل بن عمرو بن حزم کو بہد کی اور

فوت ہوگئی۔ تو آزاد کرنے والے عثمان کے پاس جھگڑا لے گئے تو سیدنا عثان والٹھ نے اس آزاد کردہ غلام کی

ولیل مانگی تو اس نے دلیل پیش کی تو سیّدنا عثان زنیُّوُو نے

اس سے کہا: "جس سے جاہو ولاء کا معاملہ کرو۔" ابو بر کہتے ہیں:''اس نے عبدالرحمٰن بن عمرو بن حزم سے ولاء کا

معامله كيابـ"

فواند: ولاءايك تعلق ، رشته موتا باسے نه تو تحفة ديا جاسكتا باور نه بى بيچا وه فقط معتق يااس ك عصبك ساته فاص جوتا معمزيد آئنده ملاهلة كيجة -

[53].... بَابِ بَيُعِ الْوَلَاءِ

ولاء بيجنے كا بيان

3200 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ

عَنُ عَبُدِ اللُّهِ بُنِ دِينَارِ عَنِ ابُنِ عُمَرَ قَىالَ نَهْى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَنُ بَيْع

الُوَلاءِ وَعَنُ هَبَتِهِ. 🍳

عبدالله بن وینار کہتے ہیں ابن عمر زباتین نے کہا: رسول الله طفي من ولاء بيجيف اور ببدكرني سيمنع فرمايا

فوائد: جس طرح انسان این نسبی تعلق اینے رشتے کوفر وخت نہیں کرسکتا بعینہ ولاء یہ بھی غلام کو آزادی دینے کے بدلے حاصل ہونے والا ایک تعلق ہے نہ تو اس کو بیچا جا سکتا ہے اور نہ ہی تحفۃ دیا جاسکتا

3201 حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارِ ٠٠

عَن ابُن عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهِي عَنُ ابن عمر و الني كمت بيل كه نبي النظامين في ولاء بيحيف اور مبه

[🗘] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه (518) 6/124 وابن منصور (226)

[🗗] صحیح: (2614) کے تحت بیگزر چکی ہے۔

كتاب الفرائض 638 الكاليعية الكاليعية

کرنے ہے منع فر مایا۔

بَيْع الُوَلَاءِ وَعَنُ هِبَتِهِ . •

3202 حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ

عَنُ عَطَاءٍ قَالَ سَمِعْتُ ابُنَ عَبَّاسِ يَـقُولُ لَا يُبَاعُ الْوَلَاءُ وَلَا يُوهَبُ وَالْوَ لَاءُ لَمَنُ أَعْتَقَ . 9

عطاء کہتے ہیں میں نے ابن عباس مالٹی کو بد کہتے ہوئے سنا: "ولاء نه بیچی جائے اور نه بهه کی جائے اور ولاء اس

کے لئے ہے جس نے آ زاد کیا۔

3203 حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي مَعْشَرِ

ابراہیم کہتے ہیں عبداللہ نے کہا: "ولاء تسبی رشتہ کی طرح ایک رشتہ ہے نہ بیچی جائے اور نہ بہد کی جائے۔"

عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ قَالَ عَبُدُ اللَّهِ الْوَلَاءُ لُحُمَةٌ كَلُحُمَةِ النَّسَبِ لَا يُبَاعُ وَلَا

يُوُهُبُ . 🕲

3204ء حَدَّثَنَا مُسْلِمُ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ..

حَـدَّتُنَا قَتَادَةُ عَنِ الْحَسَنِ وَسَعِيدِ بُنِ

الْمُسَيَّبِ أَنَّهُمَا كُوهَا بَيْعَ الْوَلَاءِ . ٥ دونون في ولاء ييخ كوبرالتمجماد

3205 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ إِدْرِيْسَ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ …

عَنُ عَطَاءٍ قَالَ قَالَ ابْنُ عَبَّاسِ لَا يُبَاعُ

الْوَلَاءُ أَيُو كُلُ بِرَقَبَةِ رَجُلٍ مَرَّتَيْنِ . 6 جائ كى كيا ايك مردكا مال دو دفعه كهايا جائ كا؟ "

عطاء مراشد كہتے ہيں ابن عباس منافقہ نے كہا: ' ولاء نہ بیجی

سيّدنا قادة ولالله كت بين كه حسن اور سعيد بن ميتب

فوائد: گردن کے بدلے دو دفعہ کھانے کا میر مطلب ہے کہ ایک تواسے آزاد کر کے ثواب کمالیا پھرووبارہ اس کی ولاء فروخت کر کے دنیاوی نفع بھی حاصل کرنا چاہتا ہے۔ (واللہ اعلم)

> [54] بَابِ فِي عَوْلِ الْفَرَائِضِ وراثت کے مسکلہ 'عول' کا بیان

3206 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ.....

[🛈] صحبح: (2614) كے تحت بيرگزرچكى ہے۔

^{294/10} أخرجه عبدالرزاق (16145) أخرجه البيهقي في الولاء، باب من أعتق مملوك له 294/10

❸حسن لغيره: أخرجه عبدالرزاق (16142) وابن ابي شيبه 122/6 (507) والبيهقي في الولاء، باب من أعتق. مملوكاً له 294/10

صحيح: أخرجه عبدالرزاق (16149) وابن منصور (294) وابن ابي شيبه 122/6 (510)

⁶ صحيح: أخرجه عبدالرزاق (16144)

639

والمنظمة المنطقة المنط

عَنُ عَطَاءٍ عَنِ ابُنِ عَبَّاسٍ قَالَ الْفَرَائِصُ مِنُ سِتَّةٍ لَا نُعِيلُهَا . •

عطاء کہتے ہیں ابن عباس ڈاٹٹو نے کہا:'' فرائض چھ سے تقسیم ہوں ہم اسے عول نہیں کریں گے۔''

كتاب الفرائض ككاك

فوائد: (۱) "عول" لغوى طور برظم وزیادتی كی طرف مائل ہونے كو كہتے ہیں جب كه اصطلاق طور پر بیداصحاب الفروض كے مصول كا تركے كے مصول سے بڑھ جاتا ہے۔ (۲) اصول المائل 7 قسموں پر منحصر ہیں جو كه درج ذیل ہیں دو، تین، چار، آٹھ، چھے، بارہ، چوہیں ان میں سے پہلے چار میں تو عول نہیں ہوتا جب كه آخر الذكر تین میں ہوتا ہے لہذا جب بھی ورثہ كے سہام، حصر كے كے مصول كے مطابق پورے پورے تقسيم نہ ہورہ ہوں تو تركے كے حصے سہام كے مطابق بردھا ليے جائيں گے۔

3207ـ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِمْرَانَ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ مَيْسَرَةَ بْنِ......

شریح بن حارث کہتے ہیں شریح کے پاس دولڑ کیاں اور والدین اور شوہر کے متعلق جھگڑا ہو گیا تو انہوں نے اس میں فیصله کر دیا شوہراس کی شکایت کرتا ہوامسجد میں آیا تو عبداللہ بن رباح نے اس کے پاس آ دی جیجا اور اسے پکڑ كرشرت كے پاس بھيجا اور كہا: آپ اے كيا كہتے ہيں؟ انہوں نے کہا:" یہ مجھے ظالم سمجھتا ہے اور میں اسے فاسق سمحمتا مول بداني شكايت ظامر كرتاب اور باقى فيصله جهياتا ہے اس آ دی نے ان سے کہا: "آپ دولڑ کیوں والدین اورشو ہر کے متعلق کیا کہتے ہیں؟ انہوں نے کہا:''شوہر کے لئے تمام مال سے چوتھائی' والدین کے لئے دو چھٹے جھے اور باقی دونوں لڑ کیوں کے لئے۔'' اس نے کہا: پھر آپ نے مجھے کیوں کم دیا ہے؟ انہوں نے کہا: "میں نے تہیں کم نہیں دیا تمہیں اللہ نے کم دیا ہے۔ دونوں لڑ کیوں کا دو تهائی والدین کا دو چھے اور شوہر کا چوتھائی ہے للبذاتر کہ اتے ک سے تقسیم ہوگا تیرے فریضہ میں عول ہواہے۔''

شُرَيْح عَنُ أَيُّوبَ بُنِ الْحَادِثِ قَالَ اخُتُصِمَ إِلَى شُرَيْحِ فِي بِنْتَيْنِ وَأَبَوَيُنِ وَزَوُجٍ فَقَضَى فِيهَا فَأَقْبَلَ الزَّوُجُ يَشُكُوهُ فِي الْمَسْجِدِ فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ عَبْدَ اللَّهِ بُنَ رَبَاحِ فَأَخَذَهُ وَبَعَثَ إِلَى شُرَيُح فَـقَـالَ مَـا يَـقُولُ هٰذَا قَالَ هٰذَا يَخَالُنِي اهُرَأْ جَائِرًا وَأَنَا إِخَالُهُ اهْرَأْ فَاجِرًا يُظُهِرُ الشَّكُوَى وَيَكُتُمُ قَضَاءً سَاثِرًا فَقَالَ لَهُ الرَّجُلُ مَسا تَقُولُ فِي بِنُتَيُنِ وَأَبَوَيُن وَزَوُجٍ فَفَالَ لِلزَّوُجِ الرُّبُعُ مِنُ جَمِيعِ الُمَسالِ وَلِلْأَبَوَيُنِ السُّلُسَانِ وَمَا بَقِىَ فَلِلابُنتَيُنِ قَالَ فِلاَّتِي شَيْءٍ نَقَصْتَنِي قَالَ لَيْسَ أَنَا نَقَصْتُكَ اللَّهُ نَقَصَكَ لِلابِّنَتَيُن الْقُلْنَانِ وَلِلْأَبُولُنِ السُّدُسَانِ وَلِلزَّوْجِ الرُّبُعُ فَهِيَ مِنُ سَبُعَةٍ وَنِصُفٍ فَرِيضَةً فَرِيضَتُكَ

640 كتاب الفرائض يَيِّانَ الكَالِيْكِيُّ

عَائِلَةٌ . •

فوائد: يمثال عول كي مجهد ك ليه كافي مهمثلا والدين دو بينيال اور خاوند ان ك درميان تقتیم یوں ہوگی والدین دونوں کو چھٹا چھٹا ھتے ملے گا دو بیٹیوں کو دو تہائی (2/3) جب کہ اولا دکی موجودگی میں خاوند کو چوتھا حصہ (1/4) لہذا سدس ہونے کی بناء پرمسّلہ 6سے بنے گا پھرسہام بڑھ جانے پراسے 2/7 کی طرفعول کر دیا۔

| 7 ¹ /2 | 6 | |
|-------------------|-------------------|----------|
| 1 | 1 | مان |
| 1 | 1 | باپ |
| 4 | 4 | 2 بیٹیاں |
| 1 1/2 | 1 ¹ /2 | خاوند |

[55].... بَابِ جَرِّ الُوَلَاء

ولاء حاصل كرنے كے حق كا بيان

3208 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَلِيِّ بْنِ مُسْهِرِ

عَنْ أَشْعَتْ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ عَلِيّ اصْعَتْ كَتِيّ بِينْ عَنى عَرْ اورزيد رَفَائِدُ سب نے کہا کہ:''والداینے بیٹے کی ولاء لےسکتا ہے۔''

وَحُمَرَ وَزَيْدٍ قَالُوا الُوَالِدُ يَجُرُّ وَلَاءَ

وَ لُده . 🗗

فوائد: بيخ كا جب كوئى وارث يا عصبه نه جواور نه بى وه براه راست كسى كا غلام جو جب كه اس كا والدكسى كا آزاد كردہ غلام ہوتو بيح كاتر كہ بھى اس كے والد كے موالى كى طرف نتقل ہو جائے گا -آئندہ صحح آ ثار آرہے ہیں جواس پر دال ہیں ۔(واللہ اعلم)

3209 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ غُيَيْنَةَ عَنْ عَلِي بْنِ مُسْهِرٍ.

[◘] صحيح: أخرجه وكيع في كتابه (أخبار القضاة) 364/2

[€] ضعيف: أخرجه ابن ابي شببه 397/11 (11583) و عبدالرزاق (16276، 16277)

641 كتاب الفرائض كتاب المرائض الكانيني الكانيني

اشعث كہتے بين معنى نے كها: "داداولاء حاصل كرے گا-"

ال كاع ٥

3210 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَلِيّ بْنِ مُسْهِرِ عَنْ أَشْعَتْ

عَنِ ابُنِ سِيُرِيْنَ عَنُ شُرَيُحٍ قَالَ الْوَالِلُ يَجُرُّ وَلَاءَ وَلَدِهِ. ٥

عَنُ أَشْعَثَ عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ الْجَدُّ يَجُرُّ

3211 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ

حَدَّثَنَا زَكَرِيًّا عَنُ عَامِرٍ فِي مَمُلُوكٍ تُـ وُفِّـىَ وَلَهُ أَبُّ حُرُّ وَلَهُ بَنُونَ مِنِ امُوَأَةٍ حُرَّةِ لِمَنْ وَلاءُ وَلَدِهِ قَسالَ لِمَوَالِي

ابن سیرین کہتے ہیں شریح نے کہا:''والدایی اولاد کی ولاء حاصل کرے گا۔''

زكريا بيان كرتے بين عامرے يوچھا كيا ايك غلام فوت ہو گیا اور اس کا باپ ہے آزاداس کے چند بیٹے آزاد عورت سے بیں اس کی اولاد کی ولاء سے ملے گی؟ انہوں نے کہا: ''وادا کے آزاد کرنے والوں کو۔''

فواند: معلوم ہوا عامر رائیلیہ بوتے کی ولاء کو دادا کی طرف منتقل کرنے سے قائل تھے تو پھر باپ كى طرف انتقال توبالا ولى درست ہوا (والله اعلم)

3212ـ حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ…

عَنُ مُغِيرَةً عَنُ إِبُوَاهِيمَ فِي مُكَاتَبٍ مَاتَ وَقَـٰدُ أَدَّى نِـصُفَ مُكَاتَبَتِهِ وَلَهُ وَلَدٌ مِنِ امُوَأَةٍ حُرَّةٍ قَالَ مَا أَرَاهُ إِلَّا قَدُ جَرَّ وَلَاءَ

مغیرہ کہتے ہیں ابراہیم نے کہا: ''اگر کوئی مکاتب فوت ہو جائے اور اس نے اپنی مکا تبت کا نصف مال ادا کر دیا ہو اس کی اولاد آزادعورت سے جوتو میرے خیال میں اولاد اینے والد کی ولاء لے عتی ہے۔''

3213 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ

ابراہیم کہتے ہیں: ''شری اپنے کے ہوئے نصلے کومنسوخ نہیں کیا کرتے تھے۔''اسود نے ان سے بیان کیا کہسیدنا عمر و النفيذ نے کہا: 'جب غلام آ زادعورت سے نکاح کرے

عَنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ كَانَ شُرَيْحٌ لَا يَرُجِعُ عَنُ قَضَاءٍ يَقُضِى بِهِ فَحَدَّثَهُ الْأَسُودُ أَنَّ عُمَرَ قَالَ إِذَا تَزَوَّجَ الْمَمْلُوكُ الْحُرَّةَ

- صحیح: أخرجه عبدالرزاق (16286) وابن ابي شيبه 400/11 (11594)
- وضعيف: أخرجه عبدالرزاق (16278) وابن ابي شيبه 398/11 (11578)
 - €صحيح: أخرجه البيهقي في الولاء، باب ماجاء في جرالولاء 307/10
 - 4 صحيح: أخرجه عبدالرزاق (16287)

الفرائض كالمرابعيُّ كالمرائض 642 كتاب الفرائض كالم

اوراس سے آزاداولا دیدا ہو پھر غلام بھی آزاد ہوجائے تو تو ان کے اپنے باپ کے آزاد کردہ موالی کی طرف ولاء واپس ہوجائے گی۔''شریج نے اسے اختیار کرلیا۔ فَوَلَدَثُ أُولَادًا أَحُرَارًا ثُمَّ عُتِقَ بَعُدَ ذٰلِكَ رَجَعَ الُولَاءُ لِمَوَالِى أَبِيهِمُ فَأَخَذَ بِهِ شُرَيُحٌ . •

3214ـ حَدَّثَنَا يَعْلَى عَنِ الْأَعْمَشِ

عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ قَالَ عُمَرُ الْمَمُلُوكُ يَكُونُ تَـحُتَهُ الْحُرَّةُ يُعْتَقُ الْوَلَدُ بِعِتْقِ أُمِّهِ فَإِذَا عُتِقَ اللَّابُ جَرَّ الْوَلَاءَ . ٥

ابراہیم کہتے ہیں سیّدنا عمر رہی تھی نے کہا:''غلام کے نکاح میں آزاد عورت ہوتو اولا داپنی مال کے آزاد ہونے کی وجہ سے آزاد ہوتی ہے جب باپ آزاد ہوگا تو اولاد ولاء لے گا۔''

3215 حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ...

عَنُ كَثِير بُنِ شِنُظِيرٍ عَنُ عَطَاءٍ فِي الْسُحُرَّةِ تَحُتَ الْعَبُدِ قَالَ أَمَّا مَا وَلَدَثُ الْسُحُرَّةِ تَحُتَ الْعَبُدِ قَالَ أَمَّا مَا وَلَدَثُ مِنْهُ وَهُو كُرُّ لَمَّ لَلْهُ لِيعُمَتِهَا وَمَسَا وَلَدَتُ مِنْهُ وَهُو حُرُّ فَوَلَاؤُهُمُ وَمَسَا وَلَدَتُ مِنْهُ وَهُو حُرُّ فَوَلَاؤُهُمُ لِلْهُل نِعُمَتِه.

﴿ وَمَسَا وَلَدَتُ مِنْهُ وَهُو حُرُّ فَوَلَاؤُهُمُ لِلْهُل نِعُمَتِه.

﴿ وَمَسَا وَلَدَتُ مِنْهُ وَهُو حُرُّ فَوَلَاؤُهُمُ لِلْهُلُ نِعُمَتِه.
﴿ وَمُسَا وَلَدَتُ مِنْهُ وَهُو حُرُّ فَوَلَاؤُهُمُ لَا اللَّهُ اللَّالَةُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا

کشر بن طنظیر کہتے ہیں کہ عطاء نے کہا: ''اگر کوئی آزاد عورت غلام کے نکاح میں ہوتو جواولا دغلامی کی حالت میں اس سے پیدا ہوگی اس کی ولاء عورت آزاد کرنے والے کو ملے گی۔ اور جواولا داس سے آزادی کی حالت میں ہوگی اس کی ولاء غلام کوآزاد کرنے والے کو ملے گی۔'

3216 ـ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنِ عَنِ الْأَعْمَشِ

عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ قَالَ عُمَرُ إِذَا كَانَتِ الْمُمُلُوكِ فَولَدَتْ لَهُ الْمُحَرَّةُ تَحْتَ الْمَمُلُوكِ فَولَدَتْ لَهُ عُلَامًا فَإِنَّهُ يُعْتَقُ بِعِنْقِ أُمِّهِ وَوَلَاوُهُ لِمَوالِى أُمِّهِ فَإِذَا أُعْتِقَ الْآبُ جَرَّ الْوَلَاءَ لِلْى مَوَالِى أَبِيهِ . ٥ إلى مَوَالِى أَبِيهِ . ٥

ابراہیم کہتے ہیں سیّدنا عمر فیانی نے کہا: ''جب آ زادعورت غلام کے نکاح میں ہواور اس سے اس کا کوئی بچہ بیدا ہوتو وہ اپنی ماں کی آ زادی کی وجہ سے آ زاد ہوگا۔ اس کی ولاء اس کی ماں کے آ زاد کرنے والوں کو ملے گی۔ جب باپ آ زاد ہو جائے گا تو (پھر پیدا ہونے والا بچہ) ولاء کو اپنے باپ کے آ زاد کرنے والوں کی طرف تھینچ لائے گا۔'' باب کے آ زاد کرنے والوں کی طرف تھینچ لائے گا۔''

[◘] صحيح: أخرجه البيهقي في الولاء، باب ماجاء في جر الولاء 307/10 وعبدالرزاق (11287)

[◘]صحيح: أخرجه عبدالرزاق (16276، 16277) وابن ابي شيبه (11582) والبهبقي في الولاء 106/10

[◘]صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 403/11 (11597) وعبدالرزاق (16290)

[◘]صحيح: أخرجه البيهقي في الولاء باب ماجاء في جرّ الولاء 306/10

القرائضي المرافض الفرائض الفرائض الفرائض الفرائض

3217 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ عَنِ ابْنِ إِسْحَقَ.....

علاء بن عبدالرحمٰن اپنے والد سے نقل کرتے ہیں کہ انہوں نے کہا: ''میری والدہ 'حرقہ' قبیلے کی آزاد لونڈی تھی اور میرے والد یعقوب' مالک بن اوس بن حدثان نصری کے مکاتب تھے۔ پھر میرے والد نے اپنی کتابت کا مال اداکر دیا تو حرقی آ دمی نے عثان والٹیئ کے پاس جا کر میراحق (وظیفہ) مانگاان کے پاس مالک بن اوس بھی موجود تھے۔ انہوں نے کہا: ''وہ تو میرا آزاد غلام ہے۔'' دونوں اپنا جھگڑا سیّدنا عثان والٹیئ کے پاس لے گئے تو انہونے حرقی جھگڑا سیّدنا عثان والٹیئ کے پاس لے گئے تو انہونے حرقی

[56] بَاب الرَّجُلِ يَمُوتُ وَلَا يَدَعُ عَصَبَةً جُوضَ عصب جَهُورُ عِنْ الرَّجُلِ يَمُوت اللهِ الدَّعُ عَصَبَةً

آ دی کے حق میں فیصلہ کیا۔

3218 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا حَيْوَةُ

أُخْبَرَنِى سَهُمُ بُنُ يَزِيدَ الْحَمُرَاوِيُّ أَنَّ رَجُلًا تُولِقِى مَنْ يَزِيدَ الْحَمُرَاوِيُّ أَنَّ رَجُلًا تُولِقِى وَلَيْسَ لَهُ وَارِثُ فَكُتِبَ فِيْهِ إِلْى عُمَرَ بُنِ عَبُدِ الْعَزِيزِ وَهُوَ خَلِيفَةٌ فَكَتَبَ أَنْ قَسِّمُوا مِيرَاثَة عَلَى مَنْ كَانَ يَأْخُذُ مَعَهُمُ الْعَطَاءَ فَقُسِمَ مِيرَاثَة عَلَى مَنُ كَانَ يَأْخُذُ مَعَهُمُ الْعَطَاءَ فَقُسِمَ مِيرَاثَة عَلَى مَنُ كَانَ يَأْخُذُ مَعَهُمُ الْعَطَاءَ فَقُسِمَ مِيرَاثَة عَلَى مَنْ كَانَ كَانَ يَأْخُذُ مَعَهُمُ الْعَطَاءَ فِي عِرَافَتِهِ. ٣

سہم بن بزید حمراوی بیان کرتے ہیں کہ ایک آ دمی فوت ہوا اس کا کوئی وارث نہ تھا تو اس کے متعلق عمر بن عبدالعزیز بڑھ ا کی طرف لکھا گیا وہ خلیفہ تھے۔ انہوں نے لکھا:''اس کی میراث ان لوگوں میں تقسیم کردوجن کے ساتھ وہ وظیفہ لیتا تھا۔''اس کی میراث ان لوگوں میں تقسیم کردی گئی جن کے ساتھ وہ اپنی چودھری (سردار) ہونے کا وظیفہ لیتا تھا۔''

فوائد: اصحاب الفروض كى عدم موجودگى مين مال ذوى الارحام كوديا جائے گا اگروه بھى نه ہوں تو پھر بيت المال مين واخل كرديا جائے گا يا پھر اس كے متعلق قاضى وحاكم جو فيصله فرما ديں وہى قابل عمل ہو گا۔ (واللہ اعلم)

[•] ضعیف: محد بن اسحاق مدلس، عن سے بیان کرتے ہیں، کیکن دیکھتے سن البیہ فی (315/10) اسنادہ جید: وارمی مفروق سیالیکن و کھتے مصنف عبدالرزاق (16174)



٢٢..... ومن كتاب الوصايا

وصيتول كابيان

فوائد: وصایایہ وصیۃ کی جمع ہے اس کے معنی زندگی میں یا موت کے بعد کسی کام کا عہد لینا ہے جب کہ شرقی طور پر یہ ایسے خاص عہد کو کہتے ہیں جو مرنے کے بعد کسی کام کی طرف منسوب ہو۔ نیل الاوطار 96/4 شروع اسلام میں مرنے سے قبل وصیت فرض تھی لیکن جب حقوق مقرر ہو گئے تو فرضیت منسوخ ہوگئ اور جواز باقی رہ گیا ۔قرآن میں ﴿ کُتِبَ عَلَیْکُ مُر إِذَا حَضَرَ آحَدُ کُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَیْرًا الْوَصِیّة لِلْوَ الِدَیْنِ وَالْاَقْرَبِیْنَ ﴾ (البقرۃ: 180) تم پرموت کی حاضری کے وقت وصیت فرض کردی۔

[1] بَابِ مَنُ استَحَبَّ الُوَصِيَّةَ وصيتَ وَاللَّحُصُ كَابِيان وصيت كومستحب بمجھنے والے تحض كابيان

3219 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِع

سیّدنا ابن عمر فطانی کہتے ہیں رسول الله طفی آیا نے فرمایا:

دو کسی مسلمان کا حق نہیں کہ وہ دو را تیں وصیت کے بغیر کر اور دے۔ اسے چاہئے کہ وصیت کے لائق کوئی چیز اس کے پاس کاسی ہوئی ہو۔''

عَنِ ابُنِ عُـمَـرَ أَنَّ دَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَـالَ: ((مَـا حَقُّ امُرِءٍ مُسُلِمٍ يَبِيُـتُ لَيُسلَتَيُنِ وَلَـهُ شَـىءٌ يُوصِى فِيُـهِ إِلَّا وَوَصِيَّتُهُ مَكْتُوبَةٌ عِنْدَهُ)). •

فوائد: شروع میں وصیت فرض تھی لیکن اب ذوی الا رحام یا دوسر امور بارے وصیت کرنا مستحب ہے ضروری نہیں آپ مشے آیا نے فرمایا (ان الله قد اعطی کل ذی حق حقه فلا وصیه لوارث) (ابن کشر) یقیناً الله نے ہرحق والے کواس کا حق دے دیا ہے اب وارث کے حق میں وصیت درست نہیں۔

❶ متـفـق عـليـه: أخرجه البخاري، كتاب الوصايا، بـ قول النبي صلعم وصية الرجل مكتوبة عنده(2738) ومسلم في الوصية(1627)

كتاب الوصايا الخلافة الخالفة

3220 حَدَّثَنَا عَفَّانُ

ابواهب بیان کرتے ہیں حسن بنائن نے کہا: "مومن پیٹ حَدَّثَنَا أَبُو الْأَشُهَبِ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بحر کر کھانانہیں کھاتا اور اس کی وصیت ہمیشداس کے پاس قَالَ الْمُؤْمِنُ لَا يَأْكُلُ فِي كُلِّ بَطْنِهِ وَلَا ہوتی ہے۔" تَزَالُ وَصِيَّتُهُ تَحْتَ جَنبه. ٥

بَابِ فَضُلِ الْوَصِيَّةِ[2] وصيت كي فضيلت كابيان

3221 - أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ دَاوُدَ بْنِ أَبِي هِنْدِ ...

قاسم بن عمر کہتے ہیں مجھے ثمامہ بن حزن نے کہا: تمہارے والدكوكيا موا؟ مين نے كها: "وه فوت مو كئے ميں -" انہول نے کہا: ''کوئی وصیت کی؟ کیونکہ کہا جاتا ہے جب آ دی وصیت کرتا ہے اگر اس سے زکوۃ میں پچھلطی سرزد ہوگئ ہوتو دور ہو جاتی ہے۔ "ابو محمد کہتے ہیں: دوسرے"القاسم بن عمرو" کہتے ہیں۔

عَنِ الْقَاسِمِ بُنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ لِي ثُمَامَةُ بُنُ حَزُن مَا فَعَلَ أَبُوكَ قُلُتُ مَاتَ قَالَ فَهَلُ أُوصٰى فَإِنَّهُ كَانَ يُقَالُ إِذَا أُوْصَى الرَّجُلُ كَانَ وَصِيَّتُهُ تَمَامًا لِمَا ضَيَّعَ مِنْ زَكَاتِهِ قَالَ أَبُو مُحَمَّد و قَالَ غَيْرُهُ الْقَاسِمُ بُنُ عَمْرِو . 9

فوائد: زندگی میں واقع شدہ کی وکوتا ہی کی اصلاح کے لیے وصیت کردینا بہتر ہے کیونکہ انسان زندگی وصحت کی حالت میں مال کا حریص ہوتا ہے لہذا کئی فرائض اور خیر کے کاموں سے پہلو تھی کر جاتا ہے جب کہ جاتے ہوئے چونکہ دل اگلے جہال میں اٹکا ہوتا ہے دینا کی حرص دم توڑ چکی ہوتی ہے ایسے وقت وصیت سابقہ کوتا ہیوں کے ازالے کا باعث ہوتی ہے (واللہ الموفق)

3222 حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَان حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ حَدَّثَنَا دَاوْدُ بْنُ

أَبِى هِنْدٍ عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ كَانَ يُقَالُ الومند كَمَّت مِين فعى في كما: كما جاتا تها: "جو خص وصيت کرے ظلم اور نا انصافی نہ کرے اسے ایبا ثواب ماتا ہے جیے وہ اپنی زندگی میں صدقہ کرتا ہے۔''

مَنُ أُوْصَى بِوَصِيَّةِ فَلَمُ يَجُرُ وَلَمُ يَحِفُ كَانَ لَهُ مِنَ الْأَجُرِ مِثْلُ مَا أَنُ لَوُ تَصَدَّقَ

به فِي حَيَاتِهِ. ٥

● صحب : القاسم بن عمر وكو بخارى وابن الى حاتم فى ذكرتو كيا بيكن جرح يا تعديل نبيس كى ، ابن حبان نے اے القات 7/337 میں ذکر کیا ہے۔ أحرجه ابن ابي شيبه 205/11 (20982) وعبدالرزاق (16330)

€ صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 203/11 (10979) وابن منصور (245)

646 كتاب الوصايا

3223 أَخْبَرَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِيْ يُوْنُسَ

قزعہ کہتے ہیں ہرم بن حیان سے کہا گیا۔ہمیں وصیت سیجے انہوں نے کیا: ''میں تنہیں سورۃ انحل کی آخری آیات کی وصیت کرتا ہوں اور ابن حیان نے میآ یتی لوگوں کو حکمت کے ساتھا ہے رب کے راستہ کی طرف بلاؤ۔'' اور ان سے بہترین طریق سے گفتگو سیجے یقیناً آپ کارب اپن راہ ہے بہکنے والوں کو بھی بخو بی جانتا ہے اور وہ راہ یا فتہ لوگوں ہے بھی بورا واقف ہے۔ اور اگر بدلہ لوبھی بالکل اتنا ہی جتنا صدمه تههیں پہنچا یا گیا ہوادر اگر صبر کر لوتو بے شک صابروں کے لیے یمی بہتر ہے۔صبر کریں بغیر توفیق النی کے آ ب صبر کر ہی نہیں سکتے اور ان کے حال پر رنجیدہ نہ ہوں اور جومکر وفریب یہ کرتے ہیں ان سے تنگ دل نہ ہوں یقیناً اللہ تعالیٰ پر ہیز گاروں اور نیک کاروں کے ساتھ [سورة النحل: ۵۲۱: ۸۲۱] • جـ " (سورة التحل: ۱۲۵٬۱۲۸)

عَنُ قَزَعَةَ قَالَ قِيلَ لِهَرِمِ بُنِ حَيَّانَ أُوْصِـهُ قَـالَ أُوصِيُكُمُ بِالْآيَاتِ الْأَوَاخِرِ مِنُ سُورَةِ النَّحُلِ وَقَرَأَ ابْنُ حَيَّانَ ﴿ ٱذْعُ إلى سَبِيل رَبّلت بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الُحَسَنَةِ وَ جَادِلُهُمُ بِالَّتِي هِيَ آحُسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهِ وَ هُوَ اَعُلَمُ بِالْمُهُتَدِينَ ٥ وَإِنْ عَاقَبُتُمُ فَعَاقِبُوا بِهِ ثُل مَا عُوْقِبُتُمُ بِهِ وَ لَئِنُ صَبَرُتُمُ لَهُوَ خَيْرٌ لِلصّْبِرِيُنَ٥وَ اصْبِرُ وَ مَا صَبُرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ وَ لَا تَحْزَنُ عَلَيْهِمُ وَ لَا تَلْتُ فِيُ ضَيُق مِّـمَّا يَمُكُرُونَ ٥إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوُا وَّ الَّذِينَ هُمُ مُّحُسِنُونَ ﴾

فسوائسد: ان آیات میں چونکہ دعوت الی الله مدایت پر جے رہنا ،مصائب پرصبر کرنا ایسی عظیم ا نصائح ہیں جن میں حالات کے جبر کے ستائے ہوؤں کے لیے عظیم خوشخری ہے لہذا ہرم بن حیان اینے بسماندگان کے لیےان آیات کا چناؤ کرتے ہیں۔

[3] بَابِ مَنُ لِبُمُ يُوصِ وصیت نه کرنے والے تحض کا بیان

3224 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ مَالِكِ بْنِ مِغْوَلِ

عَنُ طَلْحَةَ بْنِ مُصَرِّفِ الْيَامِيّ قَالَ لللهِ بن مصرف يامي كهتي مين مين في عبدالله بن ابواوفي سَأَلُتُ عَبُدَ اللهِ بْنَ أَبِي أُوْفِي أَوْضِي عَيْ يَوْجِهَا كَهَ: "كيا رسول الله الله الله عَيْنَا فَيْ أَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْ فَالُتُ فَكُيُفَ الْهِول فِي كَهَا: "وَسَمِيل بْ اللَّهِ عَلَيْ كَا اللَّ

حكار سَيْنَ الْكَالِيْفِيُّ ﴾ 647 كاب الوصايا ك

کیوں فرض کی گئی یا کہا: لوگوں کو وصیت کا تھم کیوں دیا گیا؟ تو انہوں نے کہا: 'آپ نے اللہ عز وجل کی کتاب پر عمل کرنے کی وصیت کی اور ہزیل بن شرحبیل نے کہا: ''سیّدنا ابوبکر فالٹی رسول اللہ طفیع آیا ہے کی وصیت پر ہی عمل کرتے تھے۔ کہ رسول کرتے تھے۔ کہ رسول اللہ طفیع آیا ہے کا کہ میں اس کی تکیل اللہ طفیع آیا ہے کی کیل دوست پاکراپنے ناک میں اس کی تکیل دال لیس۔'

كُتِبَ عَلَى النَّاسِ الْوَصِيَّةُ أَوُ أُمِرُوا بِاللَّهِ بِالُوَصِيَّةِ أَوُ أُمِرُوا بِاللَّهِ عَزَّوَجَلَّ وَقَالَ هُزَيُلُ بُنُ شُرَحُبِيُلَ أَبُو عَزَّوَجَلَّ وَقَالَ هُزَيُلُ بُنُ شُرَحُبِيلَ أَبُو بَكُرٍ كَانَ يَسَأَمَّرُ عَلَى وَصِيّ رَسُولِ اللَّهِ عَلَى وَصِيّ رَسُولِ اللَّهِ عَلَى وَصِيّ رَسُولِ اللَّهِ عَلَى أَنْفَة وَجَدَمِنُ رَسُولِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى عَهُدًا فَخَزَمَ أَنْفَة رَسُولِ اللَّهِ عَلَى عَهُدًا فَخَزَمَ أَنْفَة بِخِزَامَةٍ ذَالِكَ. • بخِزَامَةٍ ذَالِكَ. • بخَرَامَةٍ ذَالِكَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْمَلُولُ اللَّهُ الْمُؤْمَةُ أَلْمُ الْمُؤْمِلُولُ اللَّهُ الْمُؤْمَةُ الْمُؤْمِلُولُ الْمِثْلُولُ الْمُؤْمِلُولُ الْمُؤْمِلُولُ الْمُؤْمِلُولُ الْمُؤْمِلُولُ الْمُؤْمِلُولُ الْمُؤْمِلُولُ الْمُؤْمِدُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِلُولُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِدُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِدُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِدُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِدُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِدُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِدُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِدُ الْمُؤْمِدُ الْمُؤْمِدُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِدُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِدُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِرُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُةُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمُ الْمُ

فوائد: آپ عظی کا وصیت نه کرنا بداس بات کی دلیل ہے که وصیت اب لازم نہیں ہے

3225- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ أَنْبَأَنَا

هَمَّامٌ عَنُ قَتَاكَةً إِنُ ﴿ تَرَكَ خَيُرًا الْمَالُ كَانَ يُقَالُ الْمُعَرُ الْمَالُ كَانَ يُقَالُ الْفَافَوْقَ ذٰلِكَ ﴾. ﴿ اللَّهَا فَمَا فَوُقَ ذٰلِكَ ﴾. ﴿

هام كهتے بين كه قنادة زائين في نان تسوف خيسواًن السوصية "كي تغيير كرتے ہوئے كها: "خير سے مراد مال ہے اور مال ایک ہزاریا اس سے زیادہ كو كہتے تھے "

فوائد: (۱) مفسر قرآن قادة رائیلید '' خیر'' کی تغییر کرتے ہوئے آگاہ کرتے ہیں کہ خیرے مراد مال ہے عام معروف بات کے مطابق وہ کم از کم بزار درہم یا اس سے زیادہ ہے کیونکہ تھوڑ ہے بہت مال میں وصیت اتنی اہمیت نہیں رکھتی (۲) ہے آیت آیت میراث کے ذریعے منسوخ ہے لینی اب وصیت فرض نہیں رہی جیبا کہ فائدة (3219) میں گزر چکا ہے

[4] بَابِ مَا يُسْتَحَبُّ بِالْوَصِيَّةِ مِنَ التَّشَهُّدِ وَالْكَلامِ كَالِيَانِ كَالْكِلَامِ كَالِيَانِ كَالْكِلَامِ كَالْكِلامِ كَالْكِلامِ كَالْكِلامِ كَالْكِلامِ كَالْكِلامِ كَالْكِلامِ كَالْكَلامِ كَالْكِلامِ كَالْكِلامِ كَالْكِلامِ كَالْكِلامِ كَالْكِلامِ كَالْكُلامِ كَالْكُلُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُلامِ كَالْكُلُومُ كَالْكُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُومُ كَالْكُومُ كَالْكُومُ لَا لَالْكُلْكُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُومُ كَالْكُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُلُومُ كَالْكُومُ كُلُومُ كَالْكُومُ كَالْكُومُ كَالْكُوم

3226ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ.....

أَخْبَرَنَا ابُنُ عَوْنِ عَنْ مُحَمَّدِ بُنِ سِيُرِيْنَ أَنَّهُ أَوْصٰى ذِكُرُ مَا أَوْصٰى بِهِ أَوْ هٰذَا

ابن عون کہتے ہیں محمد بن سیرین نے اس طرح وصیت کی اور اس چیز کا ذکر کیا یا کہا: یہ اس چیز کا ذکر ہے جس کی محمد

[●] متفق عليه: أخرجه البخارى، كتاب الوصايا، باب الوصايا (2740) ومسلم في الوصية (1634) ، نيز برئي والى حديث سالقد سند كساتها بي موصولاً مروى بـــــ أخرجه ابن ماجه في الوصايا (2696) وابن سعد في الطبقات 49/1/2

صحيح: أحرجه الطبرى في التفسير 121/2وابن ابي شيبه 12/801 (10991)

المراجع الوصايا المراجع المراع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع

بن ابوعمرہ اپ بیٹوں اور گھر والوں کو وصیت کرتے ہیں اللہ سے ڈرو اور آپس کے معاملات درست رکھو۔ اگر تم مومن ہوتو اللہ اور اس کے رسول کی اطاعت کرو اور انہیں اس بات کی وصیت کی جس کی ابراہیم اور بعقوب نے اس بات کی وصیت کی جس کی ابراہیم اور بعقوب نے اس دین کو بسند کیا ہے لہذا تم اسلام کی حالت میں ہی مرو۔' (سورۃ البقرۃ : ۱۳۲۱) اور انہیں اس بات کی وصیت کی کہ اس بات کی وصیت کی کہ اس بات کی وصیت رہو اور ان کے دینی بھائی رہو اور پر ہیز گاری اور سچائی زنا ورجھوٹ سے زیادہ بہتر اور باقی رہے والی چیز ہے کہ میری اس بیاری میں اپنی وصیت میں تبدیلی کرنے سے میری اس بیاری میں اپنی وصیت میں تبدیلی کرنے سے میری اس بیاری میں اپنی وصیت میں تبدیلی کرنے سے میری کی حادثہ ہو جائے پھر انہوں نے اپنی وصیت کا ذکر

فواند: سس عام ڈگر سے ہٹ کر ہر کام کے پچھ کاس پچھ احسن انداز ہوتے ہیں جن کو اپنانے سے کام میں حسن و چاشنی پیدا ہو جاتی ہے جنانچہ وصیت و دیگر امور کی کتابت کرتے ہوئے ان میں حسن دکھنی پیدا کرنے کے لیے ابتداء میں مقصد کی وضاحت آیات واحادیث سے اس پر استدلال بیراس میں عمدگی کا باعث

3227 أَخْبَرَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُوْبَكْرِ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ

ابن سیرین کہتے ہیں کہ انس نے کہا:''لوگ اس طرح وصیت کرتے تھے۔ بیوہ چیز ہے جس کی فلاں کا بیٹا فلاں وصیت کرتا ہے وہ گواہی ویتا ہے کہ اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں وہ اکیلا ہے اس کا کوئی شریک نہیں اور بے شک سیّدنا محمد بیش تی اس کے بندے اور اس کے رسول ہیں' قیامت

عَنِ ابُنِ سِيُرِيُنَ عَنُ أَنَسٍ قَالَ هَكَذَا كَانُوا يُوصُونَ هٰذَا مَا أَوْصَى بِهِ قُلانُ بُنُ قُلانٍ أَنَّهُ يَشُهَدُ أَنُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرُسُولُهُ وَأَنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ لَا رَيْبَ التَّالِيَّةِ الْكَالِيَّةِ الْكَالِيَّةِ الْكَالِيَّةِ الْكَالِيَّةِ الْكَالِيَّةِ الْكَالِيَّةِ الْكَالِيَّةِ الْكَالِيَّةِ الْمُوالِيا الْكَالِيَّةِ الْمُوالِيا الْكَالِيَّةِ الْمُوالِيا الْمُؤْمِنِينِ نِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِينِينِ الْمُؤْمِنِينِينِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِينِ الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِ

آنے والی ہے اس میں کوئی شک نہیں۔ یقینا اللہ قبرول والوں کواٹھائے گا۔ میں انہیں وصیت کرتا ہوں جن کواپئے گھر والوں میں ہے اپنے پیچھے جھوڑا کہ وہ اللہ سے ڈریں اور اپنے معاملے درست رکھیں اگر وہ مسلمان ہیں تو اللہ اور اس کے رسول کی اطاعت کریں۔ اور انہیں اس بات کی وصیت کرتا ہوں جس کی لیفقوب وابراہیم نے اپنے بیٹوں کو وصیت کی کہ:''اے میرے بیٹوں! اللہ نے تمہارے کو وصیت کی کہ:''اے میرے بیٹوں! اللہ نے تمہارے لئے دین کو پہند کیا ہے لہٰذا تم اسلام کو چھوڑ کرنہ مرنا۔'' اور میں اس بات کی وصیت کرتا ہوں اگر اس بیاری میں کوئی طادشہ و جائے تو بیضر وری با تیں ہیں۔

فِيهَا وَأَنَّ اللَّهَ يَبُعَثُ مَنُ فِى الْقُبُورِ وَأَوْصَى مَنُ تَرَكَ بَعُدَهُ مِنُ أَهُلِهِ أَنُ وَأَوْصَى مَنُ تَرَكَ بَعُدَهُ مِنُ أَهُلِهِ أَنُ يَتَقُوا اللَّهَ وَيُصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِهِمُ وَأَنُ يُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنْ كَانُوا مُؤْمِنِينَ يُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنْ كَانُوا مُؤْمِنِينَ وَأَوْصَى بِهِ إِبُرَاهِيمُ بَنِيهِ وَأَوْصَى بِهِ إِبُرَاهِيمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ: ﴿ يَا بَنِيَّ إِنَّ اللَّهَ اصَطَفَى لَكُمُ اللَّهِ اصَطَفَى لَكُمُ اللَّهِ اللَّهَ اصَطَفَى لَكُمُ اللَّهِينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمُ مُسُلِمُونَ ﴾ اللَّذِينَ فَلا تَمُوتُنَ إِلَّا وَأَنْتُمُ مُسُلِمُونَ ﴾ وأَوْصَى إِنْ حَدَتُ بِهِ حَدَثُ مِنْ وَجَعِهِ وَأَوْصَى إِنْ حَدَثُ مِنْ وَجَعِهِ وَأَوْصَى إِنْ حَدَثُ مِنْ وَجَعِهِ وَالْمَا أَنَّ حَدَثُ مِنْ وَجَعِهِ وَلَا أَنْ حَاجَتَهُ كَذَا وَكَذَا . •

3228 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ أَخْبَرَنَا الْوَلِيْدُ

عَنُ حَفُصِ بُنِ غَيُلانَ عَنُ مَكُحُولٍ حِينَ أَوْطَى قَالَ: نَشُهَدُ هٰذَا فَاشُهَدُ بِهِ نَشُهَدُ هٰذَا فَاشُهَدُ بِهِ نَشُهَدُ أَنُ لَا إِلْسَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لَا شَرِيلَ لَكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ شَرِيلَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ وَيُحُونُ بِالطَّاعُوتِ عَلَى وَيُحُونُ بِالطَّاعُوتِ عَلَى فَي مُوتُ ذَلِكَ يَحْبَا إِنْ شَاءَ اللَّهُ وَيَمُوتُ ذَلِكَ يَحْبَا إِنْ شَاءَ اللَّهُ وَيَمُوتُ وَيُهُوتُ وَيُهُوتُ وَيُهُوتُ وَيُهُوتُ وَيُهُوتُ اللَّهُ فِيمَا وَزَقَهُ اللَّهُ فِيمَا تَرَكَ إِنْ حَدَك بِهِ حَدَثُ وَهُو كَذَا وَيُحَدَّا إِنْ لَمُ يُعَيِّرُ شَيئًا مِمَّا فِي هَذِهِ وَكَذَا إِنْ لَمُ يُعَيِّرُ شَيئًا مِمَّا فِي هَذِهِ اللَّهُ فِيمَا الْوَلِيدُ وَهُو كَذَا الْوَلِيدُ وَحَيَّةً مَا اللَّهُ عَلَى الْوَلِيدُ وَحَيَّةً اللَّهُ لِيكُ مَحَدَثُ وَهُو كَذَا الْوَلِيدُ وَحَيَّةً اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ الْمُعَلِّمُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعَلِّمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعَلِمُ الللَّهُ اللَّهُ الْمُعَلِي الْمُعْلِقُ اللَّهُ الْعُلِيْ

حفص بن غیلان کہتے ہیں کہ کمحول نے جب وصبت کی کہا:''ہم اس بات کا اقرار کرتے ہیں آپ اس پر گواہ رہنا کہ اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں وہ اکیلا ہے اس کا کوئی شریک نہیں اور سیّدنا محمہ ملطے آتے ہیں اور بتوں کا انکار کرتے ہیں۔ اور ہم اللہ پریفین رکھتے ہیں اور بتوں کا انکار کرتے ہیں۔ اگر اللہ نے چاہا تو اس بات پر زندہ رہیں گے اور مریں گے اور اللہ کا دیا ہوا جو پچھ مریں گے اور اللہ کا دیا ہوا جو پچھ مجھوڑ کرجا کیں گے اس کے متعلق وصیت کرتے ہیں۔ اگر کوئی حادثہ ہوجائے۔ یہ وہ باتیں ہیں اگران میں سے پچھ کوئی حادثہ ہوجائے۔ یہ وہ باتیں ہیں اگران میں سے پچھ رو بدل نہ کیا جائے۔

الكاليين الكاليين كتاب الوصايا

أبي الدَّرُ دَاءِ . •

3229 حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بِنُ عَوْنِ.

حَدَّثَنَا أَبُو حَيَّانَ التَّيْمِيُّ عَنُ أَبِيهِ قَالَ كَتَبَ الرَّبيعُ بُنُ خُثِيم وَصِيَّتَهُ بسُم اللَّهِ الرَّحُمَنِ الرَّحِيمِ هٰذَا مَا أُوْصَى بِهِ الرَّبِيعُ بُنُ خُثِيهُم وَأَشُهَدَ اللَّهَ عَلَيْهِ وَكَفَى باللَّهِ شَهِيدًا وَجَازِيًا لِعِبَادِهِ الصَّالِحِينَ وَمُثِيبًا بأنِّي رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالْإِسُلَامِ دِينًا وَبِهُ حَمَّدٍ نَبيًّا وَإِنِّي آمُرُ نَفُسِي وَمَنُ أَطَاعَنِي أَنُ نَعُبُدَ اللَّهَ فِي الْعَابِدِيْنَ وَنَحُمَدَهُ فِي الْحَامِدِينَ وَأَنُ نَنُصَحَ لِجَمَاعَةِ المُمسلِمِينَ. ٥

ابوحیان تیمی اینے والد سے نقل کرتے ہیں کہ انہوں نے كها: "رئيع بن خشم نے اس طرح وصيت كي تقى: "بسم الله السرحسمن السرحيم ٥ بيروه چيز ہے جس كى ربيع بن فثيم وصیت کرتا ہے۔اس براللہ کا گواہ ہونا اور اپنے نیک بندوں کوثواب اور بدلہ دینے کے لئے بھی وہ کافی ہے۔ میں اللہ کے رب ہونے اسلام کے دین ہونے پر اور محد مشاقیا کے نبی ہونے راضی ہوں۔ میں اینے آپ کو اور اس محف کو جومیری فرمانبرداری کرے اس بات کا حکم دیتا ہوں کہ عبادت کرنے والوں کے ساتھ اللہ کی عبادت کریں۔اور تعریف کرنے والوں کے ساتھ اس کی تعریف کریں۔ اور مىلمانوں كى جماعت كى خيرخواہى كريں۔''

3230 حَدَّثَنَا الْحَكُمُ حَدَّثَنَا الْوَلِيْدُ قَالَ أَخْبَرَنِيْ بْنُ....

ثَوْبَانَ عَنُ اَبِيهِ عَنُ مَّكُحُولِ قَالَ هٰذِهِ وَصِيَّةُ أَبِي الدُّرُدَآءِ

ابن ثوبان اين والد فقل كرت مين مكول في كها: "ميه ابودرداء کی وصیت ہے۔''

[5] بَابِ مَنُ لَمُ يَرَ الْوَصِيَّةَ فِي الْمَالِ الْقَلِيلِ

کم مال میں وصیت نہ کرنے والے مخص کا بیان

3231 حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ.....

عَنُ هِشَامِ عَنُ أَبِيهِ أَنَّ عَلِيًّا دَخِلَ عَلَى مِنْ اللهِ عَن أَبِيهِ أَنَّ عَلِيًّا دَخِلَ عَلى فَاللَّيْ كسي مَرِيضِ فَذَكُرُوا لَهُ الْوَصِيَّةَ فَقَالَ عَلِيٌّ يَارِكِ بِإِس كَيْ لَوْكُون نِي اس عوصيت كا ذكر كيار

[🛈] صعیف: اس میں ولید بن مسلم کاعنعنہ ہے جب کہ وہ مدلس ہیں نیز دیکھئے آئندہ حدیث۔

[🛭] حسن: کچیلی حدیث دیکھئے۔

الكالم الكالمنافئ الكالمال 651 کتاب الوصایا

سيّدناعلى وللنيّه ن كها: "الله تعالى في تو فرمايا بـ """اكر بہت سا مال چھوڑ ہے۔'' (تورۃ البقرۃ: ۱۸۰) اور میرا خیال ہاں نے زیادہ مال نہیں جھوڑا۔'' حماد کہتے ہیں:'' مجھے یاد ہے اس نے سات سو سے زیادہ چھوڑے تھے۔''

قَسَالَ اللُّسَهُ إِنْ تَرَكَ خَيُرًا وَلَا أَرَاهُ تُرَكَ خَيُرًا قَالَ حَمَّادٌ فَحَفِظُتُ أَنَّهُ تَرَكَ أَكُثَرَ مِنْ سَبُع مِائَةٍ . ٥

فوائد: (۱) اس سے قادة رائيلي كے بيان كرده موقف كى تائيد ہوتى ہے كه "خير"اس سے كم ازكم ہزار درہم مراد ہیں۔ (۲) وصیت کی فرضیت کے ایّا م میں بھی تھوڑے بہت مال پریہ فرض و لا زم نہیں تھی۔ 3232 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كُنَاسَةَ.....

حَـدَّتُنَا هِشَامٌ عَنُ أَبِيهِ قَالَ دَخَلَ عَلِيُّ بُنُ أَبِي طَالِبِ عَلَى رَجُلِ مِنُ قَوْمِهِ يَعُوُدُهُ فَقَالَ أُوصِي قَالَ لَا لَمْ تَدَعُ مَالًا فَدَعُ مَالَكَ لِوَلَدِكَ . ٥

ہشام اینے والد نے قل کرتے ہیں انہوں نے کہا:''سیّدنا علی ڈاٹٹو بن ابوطالب اپنی قوم کے کسی آ دمی کے پاس بیار يرى كے لئے گئے۔" اس آوي نے كہا: ميں وصيت كرون؟ سيّدناعلى وظائمة نے كها بنيس تم نے مال نبيس جيمور ا

> اینا مال اینی اولا د کے لئے حیصوڑ دو۔'' [6] بَابِ فِيُ الَّذِي يُوصِي بِأَكُثَرَ مِنَ الثُّلُثِ

تہائی سے زیادہ وصیت کرنے کا بیان

3233 ـ حَدَّثَنَا أَبُوْ زَيْدٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُوْرٍ

عَنُ إِبْرَاهِيْمَ فِي رَجُلِ أَوْصَى وَالْوَرَثَةُ ابراتِيم اس آدى كمتعلق كتي بين جووصت كراور شُهُ وُدٌ مُقِرُّونَ فَقَالَ لَا يَجُوزُ قَالَ أَبُو اس كوارث موجود بول تو وه جائز نبيس ابو محركت بين: یعنی جب وہ اس کے بعد انکار کر دیں۔

مُحَمَّد يَعُنِي إِذَا أَنْكُرُوا بَعُدُ . ٥

فواند: قريب المرك كوصرف ثلث مال تك كي وصيت كرنا جائز ب بلكدرسول الله طفي الله علي في ثلث ، تہائی مال کوبھی کثیر قرار دیا ۔ بقیہ مال چونکہ اب ور نہ کا ہے چنانچہ اگر وہ اجازت دیں پھر تو زائد مال کی وصیت بھی کی جاسکتی ہے لیکن شرط میہ ہے کہ وہ دفنانے کے بعد بھی اس پر مقر ہیں ورنہ زائد مال کی وصیت نافذ

صحبح: اگل تعلق ملاحظه فرمائیں۔

[🛭] صحيح: أخرجه عبدالرزاق(16351-16352) وابن ابي شيبه 208/11 (10992) والبيهقي في الوصايا،باب من استحب ترك الوصية إذا لم يترك شيًّا كثيراً 6/270

[🗗] صحيح: أخرجه ابن منصور (389)

الوصايا كالمراجي الوصايا كالمراجع المراجع المر

نہیں ہوگی _ کیونکہ مرتے کو دیکھ کر کوئی بھی انکار کی جرائت نہیں کرتا لہذا اس جذباتی کیفیت کے بعد بھی اگر ور ثداجازت دے دیتے ہیں تو پھروصیت نافذ العمل ہوگی (واللہ اعلم بالصواب)

3234 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ

حَـدَّ ثَنَا شُعْبَةً قَـالَ سَـأُلُتُ الْحَكَمَ وَحَمَّادًا عَنِ الْأَوْلِيَاءِ يُجِيْزُونَ الْوَصِيَّةَ فَإِذَا مَاتَ لَمُ يُجِيْزُوا قَالَا لَا يَجُوزُ. •

شعبہ کہتے ہیں میں نے حکم اور حماد سے رشتہ داروں کے متعلق بوچھا جو وصیت قبول کرتے ہیں اور جب وصیت کرنے ۔ انہوں کرنے والا فوت ہو جائے تو وہ قبول نہیں کرتے ۔ انہوں نے کہا:''یہ جائز نہیں۔''

3235 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ عَنْ دَاوْدَ بْنِ أَبِيْ هِنْدِ

عَنُ عَامِدٍ عَنُ شُويُحٍ فِى الرَّجُلِ يُوصِى عام كَتِ بِي شَرَى نَ اس آدى كَ متعلق كها جوتها كَى الْمَ عَلَى الرَّ عَلَى الْمَ اللَّهِ قَالَ إِنْ أَجَازَتُهُ الْوَرَثَةُ الْوَرَبُقُولَ اللَّهُ الْوَرَبُقُولُ اللَّهُ الْوَرَقَةُ اللَّهُ الْوَرَبُقُ الْوَرَقُولُ اللَّهُ الْوَلَوْلُولُ الْوَلَوْلُ اللَّهُ الْمُ اللَّهُ الْوَلَالُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُولُ اللَّهُ الْمُعَلِيدِ إِذَا لَا لَا لَهُ اللَّهُ اللَّورُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُ الْمُتَالِ اللَّهُ الْمُعُولُ اللَّهُ الْمُعُلُولُ اللَّهُ الْمُعُلُولُ اللَّهُ الْمُعَلِيدِ الْمُعْلِقُ الْمُعْل

حجعازیں۔

3236 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا الْمَسْعُودِيُّ عَنْ أَبِي عَوْنِ

قاسم کہتے ہیں ایک آدی نے اپنے وارثوں سے تہائی سے زیادہ وصیت کرنے کی اجازت ماگلی انہوں نے اسے اجازت دے دی پھر مرنے کے بعدوہ بدل گئے۔عبداللہ سے اس کے متعلق پوچھا گیا تو انہوں نے کہا:''ناپندیدگی حائز نہیں۔''

عَنِ الْقَاسِمِ أَنَّ رَجُلًا اسْتَأْذَنَ وَرَثَتَهُ أَنُ يُورِثَتَهُ أَنُ يُوصِى بِأَكْثَرَ مِنَ النَّكُثِ فَأَذِنُوا لَهُ ثُمَّ رَجَعُوا فِيهِ بَعُدَ مَا مَاتَ فَسُئِلَ عَبُدُ اللَّهِ عَنْ ذٰلِكَ فَقَالَ هٰذَا التَّكَرُّهُ لَا يَجُوزُ . •

3237 حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ.....

❶ صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 152/11 (10777) وابن منصور (391)

[€]صحيح: أخرجه عبدالرزاق(16449) وابس منصور(388) وابن ابي شببه 151/11-153و وكيع في أخبار القضاة264/2

[🗗] ضعيف: المسعو وكاضعيف م_ أحرجه ابن ابي شيبه 152/11 (10779) وابن حزم في المحلّى 319/9

حَكَرُ لِيَّنَ الْكَالِيْكِيُّ الْكَالِيْكِيُّ الْكَالِيْكِيُّ الْكَالِيْكِيُّ الْكَالِيْكِيُّ الْكَالِيْكِيُّ

ہشام کہتے ہیں حسن نے اس آ دمی کے متعلق کہا جو تہائی سے زیادہ وصیت کرے۔ اور اس کے وارث راضی ہو جا کیں تو وہ وصیت جا کز ہے۔ ابومحمد کہتے ہیں: ہم بھی اسے قبول کرتے ہیں۔

عَنُ هِشَامٍ عَنِ الْحَسَنِ فِى الرَّجُلِ يُوصِى بِأَكْثَرَ مِنَ الثَّلُثِ فَرَضِى الْوَرَثَةُ قَالَ هُوَ جَائِزٌ قَالَ أَبُو مُحَمَّد أَجَزُنَاهُ يَعْنِى فِى الْحَيَاةِ . 0

[7] بَابِ الْوَصِيَّةِ بِالثَّلُثِ تَهَالَىٰ كَى وصيت كرنے كابيان

3238 ـ حَدَّثَنَا أَبُوْ الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ يُونُسَ بْن جُبَيْرِ

عَنُ مُحَمَّدِ بُنِ سَعُدِ عَنُ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِى عَنُ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِى عَنُ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِى وَهُوَ بِمَكَّةَ وَلَيْسَ لِى النَّبِي عَلَيْهِ وَهُوَ بِمَكَّةَ وَلَيْسَ لِى وَلَيْسَ لَهُ إِلَّا ابْنَةٌ وَاحِدَةٌ فَأُوصِى بِمَالِى كُلِهِ فَقَالَ النَّبِي النِّصُفِ النَّبِي النِّصُفِ النَّبِي النِّصُفِ فَقَالَ لَهُ النَّبِي النِّصُفِ فَقَالَ لَهُ النَّبِي النِّصُفِ فَقَالَ لَهُ النَّبِي النِّصُفِ النَّبِي النَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ ا

محمد بن سعدا ہے والد سے نقل کرت ہیں کہ نبی طبیع آنا ان کے پاس تشریف لائے اور وہ مکہ میں تھے۔ ایک بیٹی کے علاوہ ان کا کوئی نہ تھا۔ میں نے آپ سے کہا: ایک بیٹی کے علاوہ ان کا کوئی نہیں ہے میں اپنے سارے مال کی وصیت کر دوں؟ نبی طبیع آنے فرمایا: ''نہیں۔'' میں نے کہا: نصف کی وصیت کر دوں؟ نبی طبیع آنے فرمایا: ''نہیں۔'' میں نے فرمایا: ''نہیں۔'' میں نے کہا: تہائی کی وصیت کروں؟ تو رسول ''نہیں۔'' میں نے کہا: تہائی کی وصیت کروں؟ تو رسول اللہ طبیع آنے فرمایا: '

فوائد: صدقے کا بہترین وقت وہ ہے جب آ دی صحیح طحیح لیمی تندرست اور مال کی لا کی رکھنے والا ہو کیوں کہ موت کے وقت تو مال اب صاف جاتا نظر آ رہا ہوتا ہے اب مال کے خرچ کا وہ تو اب نہیں جو پہلے ہوتا ہے اب چونکہ مال ور ثد کا ہونے والا لہذا قریب المرگ شخص کو فقط تہائی مال تک کی ہی وصیت جائز ہے۔

3239- أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحٰقَ عَنِ الزُّهْرِيِّ

[◘] صحيح: أخرجه الطبراني في الكبير 271/9(3161) وابن ابي شيبه151/11(10775) وابن منصور (392) وعبد الرزاق (10775)

² صحيح: أخرجه البخاري، كتاب الجنائز، باب رئاء النبي صلعم سعد بن خوله ومسلم في الوصية (1628) واحمد 137/1

العَلَيْنَ الْكَالِيْنِيَ الْمُوصايا ﴾ 654 و كتاب الوصايا ﴾

عامر بن سعد اپنے والد سے نقل کرتے ہیں انہوں نے کہا: ''میں نبی ملطق کیا کے ساتھ ججۃ الوداع میں بیارہوگیا۔
حق کہ جب بیاری بڑھ گئ تو رسول اللہ ملطق کیا تمیری عیادت کے لئے میرے پاس آئے۔ میں نے کہا: ''اے اللہ کے رسول! میرا خیال ہے میرا وقت قریب ہے اور میں بہت مالدارہوں' میری ایک بیٹی کے علاوہ کوئی وارث نہیں' کیا میں اپنا سارا مال صدقہ کر دوں؟ آپ نے فرمایا: ''نہیں'' میں نے کہا: نصف؟ آپ نے فرمایا: ''نہیں' تہائی آپ نے فرمایا: ''نہیں' تہائی آپ نے فرمایا: ''نہیں' تہائی آپ نے البتہ تہائی آپ نے اگرتم اپنے وارثوں کوامیر چھوڑو تو یہائی جو ہوڑو اور وہ لوگوں کے سامنے ہاتھ بھیلا کیں اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہاہی اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہاہیں اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہاہیں اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہاہیں اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہاہیں اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہاہیں اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہاہیں اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہاہیں اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہاہیں اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہاہیں اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہاہیں اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہ تہاہیں اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہاہیں اور تم جو بچھ خرچ کرو گے اللہ تہ بہتر ہے کہ تم انہیں خوتم اپنی تہاہیں جو تم اپنی تہاہیں جو تم اپنی تہاہیں اس کا ثواب دے گا۔ حق کہ اس چیز کا بھی جو تم اپنی تھریں اس کا ثواب دے گا۔ حق کہ اس چیز کا بھی جو تم اپنی

عَنُ عَامِرِ بُنِ سَعُدٍ عَنُ أَبِيهِ قَالَ الشُتَكَيُّتُ مَعَ النَّبِي عِنْ أَبِيهِ قَالَ الشُت كَيُستُ مَعَ النَّبِي عِنْ فَدَحَلَ عَلَى ّ النُودَاعِ حَتْى أُدُنِفُ سَتُ فَدَحَلَ عَلَى ّ رَسُولُ اللَّهِ عِنْ يَعُودُنِى فَقُلْتُ يَا رَسُولُ اللَّهِ مَا أُرَانِى إِلَّا لِمَا بِى وَأَنَا ذُو رَسُولَ اللَّهِ مَا أُرَانِى إِلَّا لِمَا بِى وَأَنَا ذُو مَسُولَ اللَّهِ مَا أُرَانِى إِلَّا لِمَا بِى وَأَنَا ذُو مَسُولَ اللَّهِ مَا أُرَانِى إِلَّا لِمَا بِى وَأَنَا ذُو مَسُولَ اللَّهِ مَا أُرانِى إِلَّا لِمَا بِى وَأَنَا ذُو مَسَالِ كَثِيرٍ وَإِنَّمَا يَرِثِنِى ابْنَةٌ لِى أَفَاتُ صَلَّى فَي مَا لَكُ عَلِيمٍ فَاللَّهُ عَلَى النَّلُكُ وَالثَّلُكُ وَالثَّلُكُ كَثِيرٌ اللَّهُ فَا لَا النَّلُكُ وَالثَّلُكُ وَالثَّلُكُ كَثِيرٌ اللَّهُ فَا اللَّهُ فَا اللَّهُ فَا اللَّهُ فَا اللَّهُ فِيهَا حَتَى مَا تَجْعَلُ فِى الْمَا اللَّهُ فَلَى الْمَا اللَّهُ فِيهَا حَتَى مَا تَجْعَلُ فِى الْمَا اللَّهُ فِيهَا حَتَى مَا تَجْعَلُ فِى الْمَا اللَّهُ فَيهَا حَتَى مَا تَجْعَلُ فِى

ہیوی کے منہ میں ڈالتے ہو۔''

فواند: (۱) مال کی زیادتی تقوی وطہارت کے متضاد نہیں (۲) قریب المرگ محض تہائی مال تک کی وصیت کرسکتا ہے (۳) ور ثد کے لیے مال چھوڑ نا جس سے وہ اپنی پاؤں پر کھڑے ہو تکیں اس سے بہتر ہے کہ انہیں فقیر چھوڑ ا جائے (۳) گھر والوں جن پرخرج کرنا بندے کی ذمہ داری ہوتی ہے پرخرج کرنا بھی صدقہ ہے ۔اللہ نے اپنی عبادت کو چند مخصوص عبادات تک محدود رکھنے کی بجائے ایک وسیع مفہوم عطا کیا ہے حتی کہ ضروریات و ذمہ داریوں کو بھی ان کوسنت کے مطابق ادا کرنے پر عبادت کا درجہ دے دیا ہے (السلهم و فقنا لما تحب و تو ضی)

[8] --- بَابِ الْوَصِيَّةِ بِأَقَلَّ مِنَ الشُّلْثِ تَهَائَى سِے كم كى وصيت كابيان

3240 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ إِسْلِيَ بْنِ سُويْدٍ

علاء بن زیاد سے منقول ہے کہ ان کے والد زیاد بن مطر نے وصیت کی اور کہا: میری وصیت وہ ہوگی جس پر اہل بھرة کا اتفاق ہو میں نے ان سے پوچھا تو انہوں نے بانچویں جھے پر اتفاق کہا۔

عَنِ الْعَلاءِ بُنِ زِيَادٍ أَنَّ أَبَاهُ زِيَادَ بُنَ مَطَرٍ أَوُطى فَقَالَ وَصِيَّتِىٰ مَا اتَّفَقَ عَلَيُهِ فُقَهَاءُ أَهُلِ الْبُصُرَةِ فَسَأَلُتُ فَاتَّفَقُوا عَلَى الْحُمُس . •

فواند: آپ سِنْ اَکْ اَلْتُ کُوکٹیر قرار دینے پر علماء نے اس ہے کم کو ہی ترجیح دی ہے یہی وجہ ان کے خس پراتفاق کرنے کی ہے۔ (واللہ اعلم)

3241 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدِ عَنْ إِسْلُحْقَ بْنِ سُوَيْدِ

علاء بن زیاد کہتے ہیں کہ ایک آ دمی نے عمر بن خطاب فرائشہ سے پوچھا: میرا وارث کلالہ ہے کیا میں نصف مال کی وصیت کر دوں؟ کہا: ''نہیں'' اس نے کہا: ''نہائی حقہ؟ کہا ''نہیں'' اس نے کہا: ''چوتھا حصہ؟'' کہانہیں۔'' اس نے کہا: پانچواں حصہ؟ سیّدنا عمر وَفِائِیْرُ نے کہا: نہیں حتی کہ دس تک پہنچ گئے اور فرمایا: ''دسویں جھے کی وصیت کرو۔''

حَدَّشَنَا إِسْمَعِيلُ عَنُ عَامِرٍ قَالَ إِنَّمَا كَانُوا يُوصُونَ بِالْحُمُسِ وَالرُّبُعِ وَكَانَ النُّلُثُ مُنْتَهَى الْجَامِحِ قَالَ أَبُو مُحَمَّد النُّلُثُ مُنْتَهَى الْجَامِحِ قَالَ أَبُو مُحَمَّد يَعُنِى بِالْجَامِحِ الْفَرَسَ الْجَمُوحَ.

اساعیل بیان کرتے ہیں عامر نے کہا: لوگ چوتھے یا پانچویں جھے کی وصیت کرتے تھے اور تہائی انتہا کی سرکشی متھی۔ابو محمد کہتے ہیں کہ جائے سے مراد' گھوڑے کی خودسری منہ زوری''ہے۔

3243 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ حُمَيْدِ

بگیر کہتے ہیں میں نے حمید بن عبدالرحمٰن کو وصیت کی انہوں نے کہا:''میں اس شخص کی وصیت منظور نہیں کروں گا

• صحيح أخرجه ابن منصور (336)

عَنُ بَكُرِ قَالَ أُوْصَيْتُ إِلَى حُمَيُدِ بُن

عَبُدِ الرَّحْمَنِ فَقَالَ مَا كُنُتُ لِأَقْبَلَ

² منقطع ضعيف(335) أخرجه سعيد بن منصور

[🕄] صحيح أخرجه ابن ابي شبيه 203/11(10971) وابن منصور (340)

TO COME TO SECOND 656 کی گئاب الوصایا کی کتاب الوصایا

جس کی اولا دہو،اور وہ تہائی کی وصیت کرتا ہو''

وَصِيَّةَ رَجُلِ لَهُ وَلَدٌ يُوْصِى بِالثَّلُثِ . • •

3244 حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ هِشَامٍ....

محد بن سیرین کہتے ہیں: شرح نے کہا:''تہائی میں سخت ہے کیکن وہ جائز ہے۔''

عَنْ مُحَمَّدِ بُنِ سِيْرِيْنَ عَنْ شُرَيْح قَالَ الثُّلُثُ جَهُدٌ وَهُوَ جَائِزٌ . ٥

3245 حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ ···

السُّدُسُ أَحَبَّ إلَيْهِمُ مِنَ التُّلُثِ . 🏻 🔻 سے زیادہ پندھا۔''

عَنْ مَنْصُورِ عَنْ إِبُرَاهِيمَ قَالَ كَانَ مُصُور كَهِ مِين ابرائيم نِ كَهَا: "جِهِمَّا حصد لوكول كوتها كَي

[9].... بَابِ مَا يَجُوزُ لِلُوَصِيِّ وَمَا لَا يَجُوزُ وصیت کرنے والے کے لیے جائز ونا جائز کا بیان

3246 حَدَّثَنَا أَبُوْ الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا شَرِيكٌ

چیز میں امانت دار ہے جس کی اسے وصیت کی گئی۔''

عَنْ مُغِيدَدةَ عَنْ إِبُواهِيمَ قَالَ الْوَصِيُّ مغيره كَتِ بِي ابرائيم نے كها: " جے وصيت كي كي وه اس أُمِينٌ فِيمَا أُوصِيَ إِلَيْهِ بِهِ. ٥

· فوائد: آپ طفي مين کاارشاد بي "المجالس بالأمانة " مجلسين امانت موتى بين چونكه بيد بھی وصیت کرنے والے کی 'وضی''جس کو وصیت بارے آگاہ کررہا ہے اس سے مجلس کا انعقاد کرتا ہے لہذا وضی کے ذتے لازم ہے کہ وہ وصیت کوبطورامانت اپنے پاس وقت مقررة تک محفوظ رکھے اور کسی کواس بارے آگاہ نہ کرے۔ 3247 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةً

> الُوَصِيّ جَائِزٌ فِي كُلِّ شَيْءٍ إِلَّا فِيُ الرِّبَاعَوَإِذَا بَاعَ بَيْعًا لَمُ يُقِلَ وَهُوَ رَأَى يَحْيَى بُنِ حَمُزَةً . 🕫

عَنْ أَبِي وَهُبِ عَنْ مَكْحُولِ قَالَ أَمْرُ ابن وبب كمتِ بين مكول في كها: " كُمر ك علاوه بر چيز میں اس شخص کا تصرف جائز ہے جے وصیت کی گئے۔ جب وہ کوئی چیز بیچے تو اسے واپس نہ کرے اور یہی کیجیٰ بن حمزہ کی رائے ہے۔''

[🚯] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 201/10(10967)

صحيح: أخرجه ابن ابي شببه 201/11 (10967) وابن منصور (341) وعبدالرزاق (16369)

صحیح: أخرجه ابن ابی شیبه 203/11 (20967) و ابن منصور (341) و عبدالرزاق (16365)

⁴ حسن : أخرجه ابن ابي شيبه 213/11(11013)

[🗗] صحيح : أخرجه ابن ابي شيبه 214/11(11015)

حكار المنت الداري الوصايا ١٥٥٥ و المنت الداري الوصايا ١٥٥٠ و المنت الداري الوصايا ١٥٥٠ و المنت الداري الدار

3248 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ عَنِ الْأَوْزَاعِيّ

عَنُ يَسُحيَى بُنِ أَبِى كَثِيرٍ قَالَ الُوَصِيُّ أَمِينٌ فِينٌ فَإِنَّ أَمِينٌ فِي كَثِيرٍ قَالَ الُوَصِيُّ أَمُينٌ فِإِنَّ عَلَيْهِ أَنُ يُقِينُهَ الُوَلَاءَ . • عَلَيْهِ أَنُ يُقِينُهَ الُوَلَاءَ . • •

آ زادی کے علاوہ ہر چیز کا امانت دار ہے اس کے ذمہ بیہ بات ہے کہ دہ ولاء کو قائم رکھے۔''

3249 حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ

عَنُ مَنْصُورٍ عَنُ إِبُرَاهِيمَ فِى مَالِ الْيَتِيمِ يَعُمَّلُ بِهِ الْوَصِيُّ إِذَا أُوصِى إِلَى الرَّجُلِ. ٥

منصور کہتے ہیں ابراہیم نے یتیم کے مال کے متعلق کہا: «کسی شخص کی وصیت ہوتو وہ شخص جسے وصیت کی گئی ہواس میں اسی کے ساتھ عمل کرے۔"

يجيل بن ابوكثير كهتيه بين: ''جس مخض كو وصيت كي مني وه

3250 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّلْتِ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ مُحَمَّدٍ

عَنُ إِسْمَعِيلَ عَنِ الْحَسَنِ قَالَ وَصِيُّ الْحَسَنِ قَالَ وَصِيُّ الْكَتِيمِ يَأْخُذُ لَهُ بِالشُّفُعَةِ وَالْغَائِبُ عَلَى

اساعیل کہتے ہیں حسن نے کہا: ''جس شخص کو بیتیم کی وصیت کی گئی ہو وہی اس کے لئے شفعہ لے گا اور غائب شخص کا شفعہ قائم رہے گا۔''

3251- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ ...

شُفُعَتِهِ . 🛭

عَنُ عِكُرِمَةَ عَنُ شَيْحٍ مِنُ أَهُلِ دِمَشُقَ قَالَ كُنُتُ عِنُدَ عُمَرَ بُنِ عَبُدِ الْعَزِيزِ وَعِنُدَهُ سُلَيْمَانُ ابُنُ حَبِيبٍ وَأَبُو قِكَلابَةَ إِذُ دَخَلَ خُكامٌ فَقَالَ أَرُضُنَا بِمَكَان كَذَا

اہل ومش سے ایک شخ عکرمہ کہتے ہیں میں عمر بن عبدالعزیز کے پاس تھا اور ان کے پاس سلیمان بن حبیب اور البوقلابہ بھی تھے۔ اس وقت ایک لڑکے نے آ کر کہا: بماری زمین جو فلاں فلاں مقام میں ہے وہ اس شخص نے

¹ ضعیف: ولیدین مسلم کاعنعند ہے جب کدوہ مدلس ہیں۔

عصحيح: دارىمنفرد بير_

شعیف: اساعیل بن سلم کی ضعیف ہے۔

658 کی کتاب الوصایا المراقع المراق

آپ کے ہاتھ نے دی ہے جسے وصیت کی گئی تھیں اور ہم بيح بين توانهول نے سليمان بن حبيب كى طرف د كيوكر كها: آب كيا كبتے بين؟ انہوں كچھ صاف بات ند كهي۔ پھر انہوں نے ابوقلابہ کی طرف دیکھ کر کہا: آپ کیا کہتے ہیں؟ انہوں نے کہا:''لڑے کواس کی زمین واپس سیجئے۔'' انہوں نے کہا: ''اس طرح تو ہمارا مال بریاد ہو جائے گا۔''

وَكَذَا بَاعَكُمُ الْوَصِيُّ وَنَحُنُ أَطُفَالُ فَ الْتَفَتَ إِلَى سُلَيْمَانَ بُنِ حَبِيْبِ فَقَالَ مَا تَقُولُ فَأَضُجَعَ فِي الْقَوُل فَالْتَفَتَ إلْى أَبِي قِلابَةَ فَقَالَ مَا تَقُولُ فَقَالَ: رُدَّ عَلَى الْغُلام أَرُضَهُ قَالَ إِذًا يَهُلِكُ مَالُنَا قَالَ أَنْتَ أَهُلَكُتَهُ •

انہوں نے کہا:تم نے اپنا مال خود ہی بر باد کیا ہے۔

[10].... بَابِ إِذَا أُوْطَى لِرَجُلِ بِالنِّصْفِ وَلِاخَرَ بِالثُّلُثِ ایکہ ، کونصف اور دوسرے کو تہائی کی وصیت کرنے والے مخص کا بیان

3252 أَخْبَرَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ

افعث کہتے ہیں حسن نے کہا: ''اگر کوئی آ دی کسی کوآ دھے مال کی وصیت کرے اور دوسرے کو تہائی مال کی تو دونوں تہائی میں سے لے لیں۔ایک اس کے نصف سے اور دوسرا

عَنُ أُشُعَتَ عَنِ الْحَسَنِ فِي رَجُلِ أؤطسى لِرَجُل بِنِصْفِ مَالِهِ وَلَآخَرَ بِفُكْثِ مَالِهِ قَالَ يَصُرِبَان بِذَٰلِكَ فِي

فواند: یعنی ایک شخص مرنے سے قبل جمیع مال کا نصف ایک کودوسرے کوثلث مال کی وصیت کر جاتا ہے اب چونکہ قریب المرگ شخص کا مال فقط ثلث ہی ہوتا ہے جس میں وہ تصرف کرسکتا ہے البذا اس کی وصیت کو ثلث مال میں ہی نافذ کیا جائے گا۔ (واللہ اعلم)

> [11].... بَابِ الرُّجُوعِ عَنِ الْوَصِيَّةِ وصیت سے رجوع کرنے کا بیان

> > 3253 حَدَّثَنَا أَبُوْ الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ

عَن الشَّيْنَانِيّ عَن الشَّعْبِيّ قَالَ يُغَيّرُ صَاحِبُ عَي اللَّهِ مِن تعلى في كما: "صاحب وصيت آزادى کے علاوہ جو کچھ وصیت میں جاہے بدل سکتا ہے۔''

الُوصِيَّة منها مَا شَاءَ غَيْرَ الْعَتَاقَة . 6

¹ ضعیف: عرمه مجهول ب أخرجه ابن منصور (329) وعبدالرزاق (16479) عصحیح: داری منفرد ہیں۔

[€] صحيح: أخرجه عبدالرزاق(16386) وابن منصور(376) وابن ابي شيبه 173/11(10856)

المرابعة الم

فوائد: وصیت کرنے والا وصیت کر چکنے کے بعد اگر اس میں کوئی کی کوتا ہی محسوس کرتا ہے تو اسے تبدیل کرنے میں کوئی حرج نہیں ہے کوئی ایسی دستاویز نہیں جسے چھیڑا نہیں جاسکتا ہاں کسی غلام کی آزادی کا فیصلہ کیا ہے تو اسے تبدیل نہ کر لیکن اگر اس نے ورشہ کونقصان پہنچانے کے لیے یا ثلث مال سے زائد میں ایسا کیا ہے تو پھر ایسی آزادی کوئی معنی نہیں رکھتی جیسا کہ آپ نے ایسے غلاموں کو بھے کر ان کی قیمت ورشہ کو دے دی۔ (واللہ اعلم)

3254 حَدَّثَنَا أَبُوْ الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبِ

عبدالله بن ابی ربیعہ کہتے ہیں کہ سیّدنا عمر رہائیّ بن خطاب نے کہا: ''آ دی جس طرح جاہے اپنے وصیت کو بدل سکتا ہے اور اصل وصیت آخری وصیت ہے۔'' عَنُ عَبُدِ اللهِ بُنِ أَبِي رَبِيْعَةَ أَنَّ عُمَرَ بُنَ النَّحَطَّابِ قَسَالَ يُستحدِث الرَّجُلُ فِي وَصِيَّتِسهِ مَسَا شَسَاءَ وَمِلَاكُ الْوَصِيَّةِ

آخِرُهَا . 0

3255 حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ قَالَ حَدَّثِنِي قَتَادَةُ قَالَ

حَدَّلَنِيى عَمُرُو بُنُ دِيْنَارٍ أَنَّ أَبَاهُ أَعْنَقَ رَقِيقًا لَهُ فِي مَرَضِهِ ثُمَّ بَدَا لَهُ أَنُ يَرُدَّهُمُ وَيَعْتَ لَهُ أَنُ يَرُدُهُمُ وَيُعْ إِلَى وَيُعْتِقَ غَيْرَهُمْ قَالَ فَخَاصَمُونِي إِلَى عَبُدِ الْمَلِلِثِ بُنِ مَرُوانَ فَأَجَازَ عِتُقَ الْآخِرينَ وَأَبُطَلَ عِنْقَ الْآخِلِينَ . 9 الْآخِرينَ وَأَبُطَلَ عِنْقَ الْآخِلِينَ . 9

عمرو بن دیناز بیان کرتے ہیں کہ ان کے والد نے اپنی بیاری میں اپنے کچھ غلام آزاد کئے۔ پھر انہوں نے مناسب سمجھا تو انہیں واپس لے لیا اور دوسرے آزاد کر دیئے۔ انہوں نے عبدالملک بن مروان کے پاس جھگڑا کیا تو انہوں نے دوسروں کی آزادی قائم رکھی۔ بیہلوں کی آزادی منسوخ کردی۔

3256 حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبِ.....

عَنُ عَبُدِ الله بُنِ أَبسَى رَبيعَة ، عَنِ الشَّريدِ بُنِ سُويَدٍ قَالَ قَالَ عُمَرُ: الشَّريدِ بُنِ سُويَدٍ قَالَ قَالَ عُمَرُ: يُحُدِثُ الرَّجُلُ فِى وَصِيَّتِهِ مَا شَاءَ ، وَمِلاكُ الْوَصِيَّةِ احِرُهَاقَالَ أَبُو مُحَمَّدٍ:

[◘] صحيح: أحرحه ابن حزم في المحلّى 9/341 وعبدالرزاق (16379) وابن ابي شيبه 173/11 (10853)

[@]ضعیف: دینارمجهول ہے۔

حَكْرُ لِيَّنِينَ الْكَالِيْكِينَ ﴾ ﴿ 660 كَابِ الوصايا ﴾ ﴿ كَتَابِ الوصايا ﴾ ﴿

هَـمَّامٌ لَمُ يَسُمَعُ مِـنُ عَـمُرٍو، وَبَيْنَهُمَا قَتَادَةُ. •

عبدالله بن ابوربیعه کہتے ہیں کہ شرید بن سوید نے کہا:

"عمر خالفہ کہتے تھے آدی جیسے چاہئے اپنی وصیت بدل لے
اور اصل وصیت اس کی آخری وصیت ہے۔" ابو محمد کہتے
ہیں: ھام نے عمر و سے نہیں سنا اور ان کے درمیان قادة
سیمی تھے۔

3257 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُغِيرَةِ قَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ

حَدَّ ثَنَا عَنُ مَعُمَ بِ عَنِ الزُّهُ بِي فِي معمر كَهَ بِين زَهِرَى نَ كَهَا: "الرَّكُونَ خَض وصيت كرك السَّ السَّرَّ جُلِ يُوصِسَى بِوَصِيَّةٍ ثُمَّ يُوصِى پهر دوسرى وصيت كرن تواس كے مال بيس دونوں وصيتيں بِأُخُرَى قَالَ هُمَا جَائِزَ تَانِ فِي مَالِهِ. ٥ جارى ہول گي: '

فوائد: سس امام زہری رائیں کے قول کے مطابق اگر دونوں وسیتیں قابل عمل ہوں تو ٹھیک ورنہ معتبر آخری ہی ہوگی جیسا کہ (3254) میں عمر زالٹی کا قول گزر چکا ہے (واللہ اعلم)

3258 حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنِ ابْنِ الْمُبَارَكِ عَنْ مَعْمَرِ

عَنْ قَتَادَةً قَالَ قَالَ عُمَو بُنُ الْخَطَّابِ قَادة فِي اللهُ عَنْ فَتَادَةً فِي اللهُ عَنْ فَعَابِ نَ كَها: مِلاكُ الْوَصِيَّةِ آخِوُهَا. ٥٠

[12] بَابِ فِى الْوَصِيِّ الْمُتَّهَمِ مشكوك وصى كابيان

3259- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ

عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ عَنُ يَحُيَى قَالَ إِذَا اتَّهَمَ اوزاعَى كَهَتِ بِين يَجِيٰ نِهُ كَهَا: "جب قاضى كووسى كم تعلق الْقَاضِى الْوَصِتَى لَمُ يَعُزِلُهُ وَلَكِنُ يُوَكِّلُ شَك بوجائة وه أسالك نه كرے بلكه اس كساتھ مَعَهُ غَيْرَهُ وَهُوَ رَأْيُ الْأَوْزَاعِيِّ. • • دوسرے كومقرر كردے۔ "اوريهى اوزاعى كى رائے ہے۔"

[🛈] اسناده منقطع: جب كه يه (3254) كتحت كرر چكل بـ

ع صحيح: أخرجه عبدالرزاق(16389) وابن منصور(370)

اسناده منقطع: أخرجه ابن حزم في المحلّى341/9نيز يه (3153) كتحت كُرْر چكل بــــ

[♦] ضعيف: وليد بن مسلم عنعند ب، أحرجه ابن ابي شيبه (10922) وعبدالرزاق (14810-14811).

الكَالِيْنِيُ الْكَالِيْنِيُ الْكَالِيْنِيُ الْكَالِيْنِيُ الْكَالِيْنِيُ الْكَالِيْنِيُ الْكَالِيْنِي الْكَالِيْنِي الْكَالِينِي الْكِلِينِي الْكِلِينِي الْكِلِينِي الْكِلِينِي الْكِلِينِينِ الْمُؤْمِنِينِ نِ الْمُؤْمِنِينِ ال

قاضی کے نزدیک معتبر نہ بھی ہوتو اسے معزول کر کے دوسرے کو وشی مقرر کرنے کی بجائے اس کے ساتھ دوسر یے خص بطور نگران مقرر کر دینا زیادہ قرین قیاس ہے جیسا کہ (امام اوزاعی) کی رائے ہے۔
137۔... مَا اب وَ صِیَّة الْمُهُ بِضِ

[13].... بَابِ وَصِيَّةِ الْمَرِيضِ مريض کی وصيت کابيان

3260 حَدَّثَنَا أَبُوْ الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شَرِيكٌ......

شیبانی کہتے ہیں عامر نے کہا: ''مریض کی خرید وفروخت اور اس کا نکاح جائز ہے۔ اور تہائی مال سے تعلق رکھے سے '' عَنِ الشَّيْبَانِيِّ عَنُ عَامِرٍ قَالَ يَجُوزُ بَيْعُ الْـمَرِيضِ وَشِرَاؤُهُ وَنِكَاحُهُ وَلَا يَكُونُ مِنَ التُّلُثِ . •

فوائد: مریض کا گرحواس بحال ہوں تو اس کی خرید وفر وخت میں کوئی حرج نہیں وہ بالکل درست ہے اور اس کا تہائی مال سے بھی کوئی تعلق نہیں کیونکہ تہائی مال کا تعلق صدقے سے ہے۔ (واللہ اعلم) محدد تَنَا أَبُوْ الْوَلِیْدِ حَدَّثَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ عَنْ مُطَرِّفِ

عَنِ الْسَحَادِثِ الْعُكُلِيِّ قَالَ مَا حَابَى بِهِ الْسَمَوِيتُ فِى مَرَضِهِ مِنْ بَيْعٍ أَوُ شِرَاءٍ فَهُوَ فِى ثُلُثِهِ قِيمَةُ عَدُلٍ . ٥

3262 حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَانِ

حَدَّنَذَ حَمَّادُ بُنُ زَيْدٍ عَنُ يَحْيَى هُوَ ابُنُ سَعِيْدٍ قَالَ أَعُطَتِ امُرَأَةٌ مِنُ أَهُلِنَا وَهِى سَعِيْدٍ قَالَ أَعُطَتِ امُرَأَةٌ مِنُ أَهُلِنَا وَهِى حَامِلٌ فَسُشِلَ النَّقَاسِمُ فَقَالَ هُوَ مِنُ جَمِيعِ الْمَالِ قَالَ يَحْيَى وَنَحُنُ نَقُولُ جَمِيعِ الْمَالِ قَالَ يَحْيَى وَنَحُنُ نَقُولُ إِذَا ضَرَبَهَا الْمَخَاصُ فَمَا أَعُطَتُ فَمِنَ النَّكُثِ . • النَّلُثِ . • النَّلُثُ . • النَّلُ النَّلُ . • النَّلُثُ الْمُنْ الْمُعَلَّلُ . • النَّلُثُ النَّلُثُ . • النَّلُثُ الْمُنْلِثُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْلُثُ . • النَّلُثُ الْمُنْلُثُ . • النَّلُثُ الْمُنْلُثُ الْمُنْلُلُثُلُ . • النَّلُثُلُثُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلِلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُلُ الْمُنْلُلُلُ الْمُنْلُلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُلُ الْمُنْلُلُلُ الْمُنْلُلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُنْلُلُلُلُ الْمُنْلُلُلُ الْمُنْلُلُلُلُ الْمُنْلُلُ الْمُل

حارث عملی سے مروی ہے انہوں نے کہا کہ: "مریض اپنی بیاری میں خرید وفروخت وغیرہ جو پچھ کرے گا درمیانی قیت سے اس کے تہائی مال میں جاری ہوگا۔"

حماد بن زید کہتے ہیں کی نے کہا جوسعید کے بیٹے ہیں ہمارے اہل کی ایک عورت نے حمل کی حالت میں مال دینے کو کہا، قاسم سے بوچھا گیا تو انہوں نے کہا: وہ تمام مال سے ہے۔ کی کہتے ہیں ہمارا قول سے ہے کہ عورت درد زہ کی حالت میں جو مال دینے کو کہے وہ تہائی سے تعلق رہے گھا۔''

[🛈] حسن: أخرجه ابن ابي شيبه 362/4باب في الرجل يتزوج وهو مريض أيحوز

[🛭] صحیح: دارمی منفرد ہیں۔

صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 211/11(11005) وابن منصور (387)

الكانعي المانعين المانعين 662 كتاب الوصايا

3263 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا أَبُوْ شِهَابِ....

عَنُ عَمُرِو عَنِ الْحَسَنِ فِي رَجُلِ قَالَ لِغُكِامِسِهِ إِنَّ وَحَـلُتُ وَارَ فُكَانِ فَعُكَامِيُ حُرُّ ثُمَّ دَخَلَهَا وَهُوَ مَرِيضٌ قَالَ يُعُتَقُ مِنَ الشُّلُثِ وَإِنَّ دَخَلَ فِي صِحَّتِهِ عُتِقَ مِنُ جَمِيع الْمَالِ. ٥

عمرو كہتے ہيں حسن رفائية نے كہا: اگر كوئى آ دى اينے غلام سے کے: بیں اگر فلاں آ دمی کے گھر جاؤں تو میرا غلام آزاد ہے پیراس گھر میں بیاری کی حالت میں جائے تو تہائی مال سے آزاد ہوگا۔ اگر تندر تی کی حالت میں جائے تو سارے مال ہے آزاد ہوگا۔''

[14] بَابِ فِيمَنُ رَدَّ عَلَى الْوَرَثَةِ مِنَ الثَّلُثِ تہائی میں سے وارثوں کو واپس دینے کا بیان

3264 حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ

نعمان بن منذر بان کرتے میں کمول نے کہا: ''جب وارث محتاج ہوں تو میرے نزدیک کچھ حرج نہیں کہ تہائی سے انہیں واپس کیا جائے۔ یکی کہتے ہیں: میں نے بید بات اوزاعی سے کہی۔انہوں نے اسے پیند کیا۔

حَدَّثَنَا النُّعُمَانُ بُنُ الْمُنُذِرِ عَنُ مَكُحُولِ قَالَ إِذَا كَانَ الْوَرَثَةُ مَحَاوِيجَ فَسَلا أَرَى بَسَأْسًا أَنْ يُرَدَّ عَلَيْهِمُ مِنَ الشُّلُثِ قَالَ يَحْيَى فَلَاكُرُتُ ذٰلِكَ لِللَّاوُزَاعِيِّ فَأَعْجَبَهُ. ٥

فواند: قریب المرگ شخص تهائی مال کوخیر ، فلاح و بهبود کے کاموں میں صرف کرسکتا ہے لیکن جب اس کے اہل وعیال ہی مختاج ہوں تو سب سے پہلے انہیں پرخرچ کرنے کا زیادہ حق بنا ہے کیونکہ

[15] بَابِ إِذَا شَهِدَ اثْنَانِ فِي الْوَرَثَةِ دو وارثول کے گواہی دینے کا بیان

3265- أَخْبَرَنَا أَبُوْ النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ حَدَّثَنَا يُوْنُسُ

عَنِ الْحَسَنِ حِ و أَخْبَوَنَا مُغِيرَةُ عَنُ صحن اورابراجيم ہے مروى ہے كه انہوں نے كہا: جب دو إِبُواهِيمَ قَالًا إِذَا شَهِدَ شَاهِدَان مِنَ وارث كوابى دين تو تمام وارثوں ير ثابت موجائے كا اور

[🛈] ضعيف: ويکھے ابن ابی شببه 6/495-496 (1810)

٢ صحيح: أحرجه ابن ابي شيبه 181/181 (10879) وعبدالرزاق (16875)

الرصايا كالمنافق المنافق المنا

جب ایک شخص اقرار کرے تو اس کے جھے کے موافق ای

وَاحِدٌ فَفِي نَصِيبِهِ بِحِصَّتِهِ. ٥

الُوَرَثَةِ جَازَ عَلَى جَمِيعِهِمُ وَإِذَا شَهِدَ

کے جھے سے ادا کیا جائے گا۔''

فوائد: اسلام میں چونکہ دوعادل گواہوں کی گواہی کواہمیت حاصل ہے لہذا اگر ورثے میں قرض یا وصیت بارے دو عادل عزیز گواہی دے دیں تو ان کی گواہی قبول کرتے ہوئے مال میں ان کے قول کے مطابق تصرف کیا جائے گا۔ (واللہ اعلم)

3266 حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَان حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ حَدَّثَنَا مُطَرِّفٌ

معنی کہتے تھے کہ جب ایک وارث قرض کا اقر ارکرے تو اس کے جھے کے موافق اس کے حصہ سے دیا جائے گا پھر قرض کا اقرار کرے تو اس کے جھے کے موافق اس کے حصہ سے دیا جائے گا پھر کہنے گا۔ ''اس کے تمام حصہ أَنَّهُ سَمِعَ الشَّعْبِيَّ يَقُولُ إِذَا شَهِدَ رَجُلٌ مِنَ الُورَثَةِ فَفِى نَصِيبِهِ بِحِصَّتِهِ ثُمَّ قَالَ بَعُدَ ذٰلِكَ فِي جَمِيع حِصَّتِهِ. ٥

سے دیا جائے گا۔"

[16] بَابِ مَا يَكُونُ مِنَ الْوَصِيَّةِ فِي الْعَيْنِ وَالدَّيْنِ الْوَصِيَّةِ فِي الْعَيْنِ وَالدَّيْنِ السَّالِيَنِ السَّالِيَةِ السَّالِيةِ السَّالِيَّةِ السَّالِيَّةِ السَالِيةِ السَّالِيَّةِ ا

3267 حَدَّثَنَا أَبُوْ الْوَلِيدِ الطَّيَالِسِيُّ جَدَّثَنَا أَبُوْ شِهَابٍ عَبْدُ رَبِّهِ بْنُ نَافِعِ عَنِ الْأَعْمَشِ

ابراہیم سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: جب آ دمی تہائی اور چوتھائی کی وصیت کرے تو موجود اور قرض دونوں رقبوں میں ہوگی۔ جب وہ پچاس یا ساٹھ سے سو تک وصیت کرے تو وہ موجودہ رقم میں ہوگی حتی کہ وہ تہائی تک پہنچ عَنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ إِذَا أُوصٰى الرَّجُلُ بِالثَّلُثِ وَالرُّبُعِ فَفِى الْعَيْنِ وَالدَّيْنِ وَإِذَا أُوصٰى بِخَمُسِينَ أَوْسِتِينَ إِلَى الْمِائَةِ فَفِى الْعَيْن حَتَّى يَبُلُغَ التُلْتَ . ۞

جائے۔

فسورائد: وصیت کرنے والے جبسو، پچاس یا مقررمقدار میں وصیت کرے تو وہ موجود مال سے پوری کردی جائے گی البتداگروہ مال کے تہائی، چوتھائی حصے کی وصیت کرتا ہے تو پھر موجود اور جو قرض لینا

[🛈] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 23/121(11050) وعبدالرزاق(19144)

² صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 223/11(11049) وابن منصور (315)

[🛭] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 11/158 (10799) وابن منصور (252)

الكَانِينَ الدَّانِينَ الدَّانِينِينَ الدَّانِينَ الدَّانِينَ الدَّانِينِينَ الدَّانِينَ الدَّانِينِينَ الْمَانِينِينَ الْمَانِينِينِ الْمَانِينِينَ الْمَانِينِينَ الْمَانِينِينِينَ الْمَانِينِينِينَ الْمَانِينِينَ الْمَانِينِينِينَ الْمَانِينِينَالِينِينِينَ الْمَان

دینا ہے بھی کا حساب کر کے اس جمیع مال سے چوتھائی یا تہائی ھے کو وصیت کے مطابق خرچ کیا جائے گا [17] بَابِ مَنُ أَحَبَّ الْوَصِيَّةَ وَمَنُ كُرهَ وصیت کو پینداور ناپیند کرنے والے مخص کا بیان

3268 - أَخْبَرَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلالِ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ((الْمَرُءُ أَحَقُّ نَعُ فَر مايا: "آ دى اين تهالَى مال كالمستحق ب جسم معرف بثُلُثِ مَالِهِ يَضَعُهُ فِي أَى مَالِهِ شَاءَ) . • مِن حِيا بِالسرور ـ ـ ''

3269 حَدَّتَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ حَدَّتَنَا شُعْبَةُ

ابواسحاق کہتے ہیں ابوحبیب نے کہا میں نے ابودرداء سے اس آ دمی کے متعلق موجھا جس نے پچھ درہم اللہ کی راہ میں صدقہ کئے؟ ابو درداء نے کہا: رسول الله طفے مَلِيْ نے فرمایا: ''جو شخص اینی موت کے وقت صدقہ کرتا ہے یا آزاد کرتا ہے اس کی مثال اس شخص کی طرح ہے جوسیر ہونے کے

حَدَّثُنَا أَبُو إِسُحٰقَ عَنْ أَبِي حَبِيبَةَ قَالَ سَــأَلُتُ أَبَـا الـدَّرُ دَاءِ عَنُ رَجُلٍ جَعَلَ دَرَاهِمَ فِي سَبِيُلِ اللَّهِ فَقَالَ أَبُوُ الدَّرُدَاءِ قَسَالَ رَسُولُ اللُّهِ ﷺ مَثِلُ الَّذِي يَتَصَدَّقُ عِنُدَ مَوْتِهِ أَوْ يُعْتِقُ كَالَّذِي يُهُدِئُ بَعُدَ مَا شَبعَ . 9

فواند: سیر ہوجانے کے بعدجس لقے ، کھانے کی ضرورت ندرے اسے صدقہ کردیے میں وہ ا جروثواب نہیں جوالی حالت میں کیا جائے جب آ دی صحت منداور مال کی حرص رکھنے والا ہو کیونکہ ایسے وقت میں کیا گیا صدقہ خلوص کا حامل ہوتا ہے اور عظیم اجر کا باعث ہوتا ہے۔

> [18] بَابِ مَا يُبُدَأُ بِهِ مِنَ الْوَصَايَا کون می وصیت پہلے پوری کی جائے

3270 حَدَّثَنَا الْمُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ يُوْنُسَ ..

عَن الْحَسَن فِي الرَّجُل يُوصِي بأشياء صلى على مروى بكد انهول ن كها: "جب كوئي آوى وَفِيهَا الْعِتْقُ فَيُجَاوِزُ الثُّلُثَ قَالَ يُبُدَأُ بَي بَهِم حِيزِول كي وصيت كرے جن ميں آزاد كرنا بهي مواور

[•] مرسل، ضعيف: ليكن اس كا شابر و يمي مجمع الزوائد (7187-7188-7189)

عبدالرزاق(16740)

الكالم 665 كالم كتاب الوصايا كالك الكانين الكانين

تہائی ہے بڑھ جائے تو آ زادی ہے شروع کئے جا کیں۔''

فوائد: وصيت كرنے والا بہت ہے امور خير بتا جاتا ہے جب كدان سب ميں مال خرچ كيا جائے تو وہ تر کے کے ثلث مال سے بڑھ جاتا ایسی صورت میں آزادی اور اس جیسے دیگراہم امور کواوّل فرصت میں سر انجام دے کر پھر بقیہ امورا گرتہائی مال ہے سرانجام دے جاسکتے ہوں تو ٹھیک ورندان کوجھوڑ دیا جائے گا۔

3271 حَدَّثَنَا الْمُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ.....

ابوب کہتے ہیں محد نے کہا: آزادی سے شروع نہیں کیا جائے گا بلکہ حصہ کے موافق سب پر ڈالا جائے گا۔''

عَنُ أَيُّوْبَ عَنُ مُحَمَّدٍ قَالَ بِالْحِصَصِ . ٥

بالُعِتُق . 🗗

3272 حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ بِشْرِ حَدَّثَنَا الْمُعَافِي

عثان بن اسود كہتے ہيں كه عطاء نے كہا:'' جو شخص وصيت کرے یا آزاد کرے اور اس کی وصیت میں عول ہوتو عول آ زادی اوروصیت والے دونوں میں داخل ہو گا۔'' عطاء کہتے ہیں:''اہل مدینہ ہم پر غالب ہو گئے وہ آ زادی سے

عَنُ عُشُمَانَ بُنِ الْأَسُودِ عَنُ عَطَاءٍ قَالَ مَنُ أُوْصِي أَوْ أَعْتَقَ فَكَانَ فِي وَصِيَّتِهِ عَوُلٌّ دَخَلَ الْعَوُلُ عَلَى أَهُلِ الْعَتَاقَةِ وَأُهُلِ الْوَصِيَّةِ قَالَ وَقَالَ عَطَاءٌ إِنَّ أَهُلَ الْمَدِينَةِ غَلَبُونَا يَبُدَنُونَ بِالْعَتَاقَةِ قَبُلُ . 🏻 شُروعَ كَرْتِي تَصْلُ : 🖜

ف السير : وصيت ميں (عول) آنے سے مراد وصیت کیے گئے امور کا ثلث سے بڑھ جانا ہے عطاء راٹیکید کہتے ہیں کہ ہم عول کو سبی امر پر لاگو کرتے لینی ایک طرف سے وصیت برعمل شروع کر دیتے جو ثلث کے اندر وقوع پذیر ہو جاتے انہیں انجام دے لیاجاتا بقیہ کو چھوڑ دیا جاتا لیکن اہل مدینہ آزادی سے شروع کرتے بھی ان کاعمل ہی غالب آ گیا ۔اور یہی درست ہے ۔(ان شاءاللہ)

3273 حَدَّثَنَا أَنُّوْ النَّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدِ قَالَ

قَىالَ عَـمُرُو بُنُ دِيْنَادِ فِي الَّذِي يُوصِي عروبن دينار نے ال مخص كے متعلق كها: "آزادي وغيره کی وصیت کرے اور وہ تہائی ہے بڑھ جائے کہ'' حصہ کے موافق برڈالا جائے گا۔''

بِعِتُقِ وَغَيُرِهِ فَيَزِيُدُ عَلَى التَّلُثِ قَالَ بالْحِصَص . ٥

[🛈] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 11/191(10927) وابن منصور(405)

[€] صحيح: ابن ابي شيبه 191/11(10928) والبيهقي في الوصايا،باب الوصية بالعتق وغير6/277

صحيح: أخرجه عبدالرزاق(16748) وابن ابي شيبه 192/1934 (10934)

⁴ صحيح: أخرجه عبدالرزاق(16748)

حَكْرٌ لِيُنْ الْكَالِيْفِيُّ كَابِ الوصايا كَانَ 666 وَ الْكُونِ كُتَابِ الوصايا كَانَ الْكَالِيْفِيُّ كَابِ الوصايا

3274 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ كَثِيْرِ بْنِ شِنْظِيرِ

عَنِ الْحَسَنِ فِي رَجُلٍ أَوُصٰى بِأَكْثَرَ مِنَ الثُّلُثِ وَفِيهِ عِتْقٌ قَالَ يُبُدَأُ بِالْعِتْقِ . • • الثُّلُثِ وَفِيهِ عِتْقٌ قَالَ يُبُدَأُ بِالْعِتْقِ . • •

حسن سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ''اگر کوئی شخص تہائی سے زیادہ کی وصیت کرے اور اس میں آزادی بھی ہوتو اس کوآزادی سے شروع کیا جائے۔''

3275 حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ

ا منصور کہتے ہیں ابراہیم نے کہا: ''وصیت پہلے آزادی سے شروع ہوگ۔''

عَنُ مَنُصُورٍ عَنُ إِبُرَاهِيْمَ قَالَ يُبُدَأُ بِالْعَتَاقَةِ قَبُلَ الُوَصِيَّةِ . ۞

[19] بَابِ فِی الَّذِی یُوصِیُ لِبَنِی فُلان وَیُسُهِمُ مِنُ مَالِهِ اپنے مال سے ایک حقہ کی بوفلاں کے لیے وصیّت گرنے والے خص کا بیان

3276 أَخْبَرَنَا الْمُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ قَالَ حَدَّنَنَا وُهَيْبٌ عَنْ يُونُسَ

حسن سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ''جوشخص بنو فلاں کے لئے وصیت کرے ان کے امیر وغریب' مرد وعورتیں

عَنِ الْحَسَنِ فِي رَجُلِ يُوصِيُ لِبَنِيُ فُـــَلانٍ قَــالَ غَنِيُّهُمْ وَفَقِيرُهُمُ وَذَكَرُهُمُ وَأُنْنَاهُمُ سَوَاءٌ . ۞

سب برابر ہیں۔

3277 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا أَبُوْ شِهَابٍ عَنْ عَمْرِو

حسن سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ''جب کوئی بنوفلاں کے لئے نصیحت کرے تو مرد وعورت اس میں برابر ہیں۔''

3278 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ بْنُ مُوسَى الْهَمْدَانِيُّ

سیار بن ابوکرب کہتے ہیں کہ ایک آنے والا شرح کے پاس آیا اور اس نے ان سے ایک اس آدمی کے متعلق بوچھا۔ جو اپنے مال سے ایک حصے کی وصیت کرے، انہوں نے حَدَّثَنِى سَيَّارُ بُنُ أَبِى كُرُبٍ أَنَّ آتِيًا أَتَى شُرَيُحًا فَسَأَلَهُ عَنُ رَجُلٍ أَوْصَى بِسَهُم مِنُ مَالِهِ قَالَ تُحُسَبُ الْفَرِيضِةُ

[🗗] صحیح: (3270) کے تحت گزرچکی ہے۔

صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 192/11 (10931) وعبدالرزاق(16741) والبيه في في الوصايا، باب الوصية بالعتق وغيره 277/6

❸صحیح: أخرجه ابو سعید بن منصور(366) وابن ابي شببه 159/11(10803)

[◘]حسن: أخرجه ابن منصور(365)

667 کتاب الوصایا ک يتان الكابيئ

کہا:'' ھے شار کئے جا ئیں' پھر جب قدر ھے پینچیں جس کے لیے وصیت کی گئی ہواہے ایک حصہ دیا جائے گا۔''

فَمَا بَلَغَ سِهَامَهَا أُعُطِىَ الْمُوصَى لَهُ سَهُمًا كَأْحَدِهَا . ٥

فواند: " موضى له" لعنى جس كوت مين وصيت كى كى باس كوبطور فريضه كے مال عطاء

کر نا مرجوح ہے کیونکہ پیء طیہ ہے (3276) کے تحت بیان کردہ بات ہی راج ہے۔(واللہ اعلم)

[20].... بَابِ إِذَا تَصَدَّقَ الرَّجُلُ عَلَى بَعُض وَرَثَتِهِ اینے بعض دارتوں کوصدقہ دینے والے مخص کا بیان

3279 أَخْبَرَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُحَمَّدِ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ

عَنْ مَكُحُولِ قَالَ إِذَا تَصَدَّقَ الرَّجُلُ كَمُول سے مروى ہے كہ انہوں نے كہا: "جب كوئى شخص عَلٰى بَعْضِ وَرَثَتِهِ وَهُوَ صَحِيحٌ بِأَكْثَرَ اليِّ وارث كوصدقد دے اور وہ صحت كى حالت ميں نصف سے زیادہ صدقہ کرے تو وہ تہائی کی طرف لوٹایا جائے گا۔ اور جب نصف وے تو اس کے لئے حائز ہے۔'' سعید کہتے ا ہیں:''دمشق کے قاضی اسی طرح فیصلہ کرتے تھے۔''

مِنَ النِّصُفِ رُدَّ إِلَى الثُّكُثِ وَإِذَا أَعُطَى النِّصُفَ جَازَ لَهُ ذٰلِكَ قَالَ سَعِيُدٌ وَكَانَ قُضَاهُ أَهُلِ دِمَشُقَ يَقُضُونَ بذٰلِكَ. ٥

فواند: وارث کے حق میں وصیت کرنا نا جائز و ناروا ہے ہاں صحت کی حالت میں اگر کوئی اینے کسی وارث کواین مال میں سے پچھ دینا چاہے تو یہ بلاحرج جائز ہے البتہ اولاد میں سے کسی کوعطیہ کرتے ہوئے باقیوں کومحروم رکھنا نا جائز ہے کیونکہ اولا و میں عدل لازم ہے ایک صحابی وہاٹی نے عرض کی یا رسول اولا دکوا یہ بی ہبدکیا ہے کہانہیں تو آپ الطباع لے گاہ بنتے سے انکار کر دیا اور فر مایا میں ظلم برگواہ نہیں بنآ۔ (او كما قال ﷺ)

[21] بَاب مَنُ قَالَ الْكَفَنُ مِنُ جَمِيع الْمَالِ تمام مال میں ہے کفن دینے کا بیان

3280 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِيْ شَيْبَةَ حَدَّثَنَا حَفْصٌ عَنْ إِسْمَعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ.

جيد: أخرجه ابن ابي شيبه 170/1-171 (10846) وابن منصور (364)

² صحيح: وكيم عبدالرزاق (16398)

الكارتين الكارتين (668) (كتاب الوصايا) المحال ا

عَنِ الْحَكَمِ عَنْ إِبُوَاهِيمَ قَالَ الْكَفَنُ عَلَى كَمَ كَتِ بِين ا بابيم ن كها: وكف تمام مال مين سے مو

مِنُ جَمِيعُ الْمَالِ . •

فوائد: ميت كاكفن جيع مال تياركيا جائے گا اگر چه ميت كے ياس اتناكم مال موكه ساراكفن کی تیاری میں صرف ہو جائے ۔

3281 حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسٰى عَنْ مُعَاذِ

اشعث كہتے ہيں حسن نے كہا: "اگر كوئى شخص مرجائے اور عَنُ أَشُعَتَ عَنِ الْحَسَنِ فِي رَجُلِ مَاتَ دو ہزار درہم کا مال چھوڑے اور اتناہی یا اس سے زیادہ اس وَتَـرَكَ قِيُمَةَ أَلُفَىٰ دِرُهَم وَعَلَيْهِ مِثْلُهَا کے ذمہ ہوتو اس میں سے اس کا کفن ہوگا قرض (پہلے) أَوْ أَكُثُورُ قَالَ يُكَفَّنُ مِنْهَا وَلَا يُعُطَى دَنْنَهُ ٥ منہیں ویا جائے گا۔'' '

فوائد: يهى بات درست ب كرض ي بهلكفن كا انظام كيا جائ كا ديكرامور برغوراس کے بعد ہوگا۔

3282 حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ

أَنْبَأْنَاسُفُيَانُ عَمَّنُ سَمِعَ إِبُرَاهِيُمَ قَالَ يُبُدَأُ بِالْكَفَنِ ثُمَّ الدَّيْنِ ثُمَّ الْوَصِيَّةِ . ٥

سفیان کہتے ہیں انہوں نے ابراہیم سے سنا وہ کہتے تھے: ''پہلے کفن دیا جائے گا' پھر قرض کی ادائیگی اور پھر

3283 حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ أَنْبَأَنَاسُفْيَانُ عَنْ فِرَاسِ

شعمی سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ''اگر کوئی عورت فوت ہو جائے تو اس کو کفن اس کے مال سے دیا جائے گا شوہر کے ذمہ چھے نہ ہوگا۔'' عَنِ الشُّعُبِيِّ فِي الْمَرْأَةِ تَمُوْتُ قَالَ تُكَفَّنُ مِنْ مَالِهَا لَيُسَ عَلَى الزَّوْج

3284 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُغِيْرَةِ عَنِ ابْنِ الْمُبَارَكِ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ ..

• صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 5/526(1920) اور اسي طرح (1931) وعبدالرزاق (6223)

2 صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 6/527 (1922-1925)

●صحيح: أخوجه عبدالرزاق (6224) امام بخاري نے كتاب البخائز، باب الكفن من جميع المال مين اسے معلق بيان كيا ہے۔

4 صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 527/6 (1930)

669 کی کتاب الوصایا الكالمكان الكالمكان

عطاء سے مروی ہے کہانہوں نے کہا:'' خوشبواور کفن اصل

رَأْسِ الْمَالِ. 9 مال ہے ہوگا۔"

3285 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةً عَنْ عَلِيّ بْنِ مُسْهِرٍ عَنْ إِسْمَعِيلَ

عَن الْحَسَنِ قَالَ الْكَفَنُ مِنُ وَسَطِ الْمَالِ يُكُفَّنُ عَلَى قَدُر مَا كَانَ يَلْبَسُ فِي حَيَاتِهِ ثُمَّ يُخُوَ جُ الدَّيْنُ ثُمَّ الثُّلُثُ . ٥

عَنُ عَطَاءٍ قَالَ الْحَنُوطُ وَالْكَفَنُ مِنُ

حن سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: 'دکفن اصل مال سے ہوگا اور کفن ایسا دیا جائے گا جیسا وہ اپنی زندگی میں کیڑا پہنتا تھا پھر قرض کی ادائیگی ہوگی پھر تہائی (وصیت

[22] بَابِ إِذَا أُوْصَى الرَّجُلُ إِلَى الرَّجُلِ وَهُوَ غَائِبٌ عَا يُبِ شَخْصَ كِي لِئِي وصيتُ كُرنِي كَا بِيانِ ا

3286 حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَان حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا مَنْصُورٌ

عَنِ الْبَحْسَنِ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ إِذَا أُوْصَى صلى حلى سے مروى ہے وہ فرمایا كرتے تھے: 'جب كوئى كسى كو وصیت کرے اور وہ غائب ہوتو جا ہئے کہ وہ اس کی وصیت قبول کرے اگر حاضر ہوتو اختیار رکھتا ہے جاہے تو قبول کرے جاہے تو جھوڑ دے۔''

الرَّجُلُ إِلَى الرَّجُلِ وَهُوَ غَائِبٌ فَلْيَقْبَلُ وَصِيَّتُهُ وَإِنْ كَانَ حَاضِرًا فَهُوَ بِالْخِيَارِ

إِنْ شَاءَ قَبِلَ وَإِنْ شَاءَ تَرَكَ . •

فوائد: کوئی قریب الموت مخض اگر کسی بارے وصیت کرتا ہے تو اگر چہوہ حاضر ہویا غائب تو اسے اختیار ہے کہ جا ہے تو اس وصیت کوقبول کرے یا نہ کرے ۔

3287 حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ ...

ابوب کہتے ہیں کہ میں نے حسن اور محد سے اس آ دی کے متعلق یو چھا: ''تو کسی کو وصیت کرے؟ ان دونوں نے کہا: ''بہتر ہے کہوہ قبول کر لے۔''

عَنُ أَيُّوبَ قَالَ سَأَلُتُ الْحَسَنَ وَمُحَمَّدًا عَنِ السَّرُجُلِ يُوْصِي إِلٰي الرَّجُلِ قَالَا نَخْتَارُ أَنْ يَقْبَلَ. ٥

3288 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَسْعَدَ حَدَّثَنَا أَبُوْ بِكْرٍ عَنْ هِشَامٍ

• صحيح: أخرجه عبدالرزاق (2622) اورد كيمية "المجوع" ثووي كي 189/5

②ضعیف: اساعیل المکی ضعیف ہے۔

€ صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 210/11(10998)

4 صحيح: أخرجه إبن إبى شيبه 11/199 (10957)

حَكُلُ عَيْنَ ٱلْكَالِيْعِيُّ ﴾ كَا اللهِ 670 ﴿ كَتَابِ الوصايا ﴾ كَا

حسن سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: "جب کوئی آ دی غائب کو وصیت کرے ۔ تو جب وہ سامنے آئے تو جاہے تو قبول کر لے،اور جب قبول کر لے گا تواس کے لئے(وصیت کو) رد کرنا جا ئزنہیں ۔'' عَنِ الْحَسَنِ قَالَ إِذَا أُوْصَى الرَّجُلُ إِلٰي الرَّجُلِ وَهُو غَائِبٌ فَإِذَا قَدِمَ فَإِنْ شَاءَ قَبلَ فَإِذَا قَبلَ لَمْ يَكُنُ لَّهُ أَنْ يَرُدَّ . •

3289 حَدَّثَنَا الْوَضَّاحُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا أَبُوْ بِكْرِ عَنْ هِشَامِ

حسن سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ''جب کوئی آ دی کسی عَن الْحَسَنِ قَالَ إِذَا أُوْصَى الرَّجُلُ إِلَى الرَّجُل فَعُرضَتُ عَلَيْهِ الْوَصِيَّةُ وَكَانَ غائب کو وصیت کرے پھر وہ وصیت اس پر پیش بھی کی غَائِبًا فَقَبِلَ لَمُ يَكُنُ لَهُ أَنْ يَرُجِعَ . ٥ جائے جبکہ وہ غائب تھا پھر اگر وہ قبول کر لے تو اسے

> [23] بَابِ الْوَصِيَّةِ لِلْمَيَّتِ میت کو وصیت کرنے کا بیان

وصيت رد كرنا جائز نهيں ـ''

3290 حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن عَنْ سَعِيْدِ.....

عَنُ أَبِي مَعْشَوِ عَنْ إِبُوَاهِيمَ قَالَ إِذَا الدِمعشر كَهِ بِي ابرابيم نے كها: "جب كوئى آ دى كى أَوْصَى الرَّجُلُ لِإِنْسَان وَهُوَ غَاثِبٌ وَكَانَ نَاسَب كَ لِيهِ وصيت كرے اور وہ مرچكا ہو۔ اور اسے معلوم نه ہوتو وصیت واپس لوٹ آئے گی۔'' مَيَّتًا وَهُوَ لَا يَدُرِى فَهِيَ رَاجِعَةٌ . 🏵

ف است است موسی له فوت مو چکا ہے جب کہ موسی ، وصیت کرنے والا عدم واقفیت کی بناء براس ك حق ميس وصيت كرويتا بي تو وه وصيت نا قابل عمل موكى _ (والله اعلم) [24] بَابِ الْوَصِيَّةِ لِلْعَبُدِ

غلام کو وصیت کرنے کا بیان

3291 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسٰى حَدَّثَنَا يَزِيْدُ بْنُ زُرَيْعِ حَدَّثَنَا يُونُسُ

عَنِ الْحَسَنِ قَالَ إِذَا أُوْطَى لِعَبُدِهِ ثُلُكَ حَن عَ مروى بِ كَدانهول نَ كَها: "جب كولَى ايخ

[🛈] حسن لغيره: أخرجه ابن ابي شببه 209/11-210 (10998)

حسن لغیرہ: سابقہ اثر ہی مکررہے۔

[🛭] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 156/11(10789) وابن منصور(368)

الكَالِيَّةِيُّ الكَالِيَّةِيُّ صَابِ الوصايا ﴿ 671 ﴿ كِتَابِ الوصايا ﴿ 671 ﴿ كِتَابِ الوصايا ﴿ 671

غلام کو تہائی مال، چوتھائی اور پانچویں حصے کی وصیت کرے تو وہ بھی اس کے مال سے ہے (لہذا) آزاد کرنا بھی اس

مَالِهِ، رُبُعَ مَالِهِ، خُمُسَ مَالِهِ، فَهُوَ مِنُ مَالِهِ دَخَلَتُهُ عَتَاقَةٌ. ٥

میں شامل ہوگا۔''

فوائد: یعنی جتنے مال کی مالک نے غلام کے حق میں وصیت کی ہے اگر وہ مال اس کی قیمت جتنا بنتا ہے تو مال دینے کی بجائے اسے آزاد کر دیا جائے گا۔

[25] بَابِ مَنُ كَرِهَ أَنُ يُفَرِّقَ مَالَهُ عِنْدَ الْمَوُتِ مَنْ عَرْقَ مَالَهُ عِنْدَ الْمَوُتِ مُوت كِ قريب مال تقسيم كرنے كا ناپند سجھنے والے تخص كا بيان

3292ـ حَدَّثَنَا يَعْلَى عَنْ إِسْمُعِيْلَ

قیس کہتے ہیں کہا جاتا تھا۔ آدمی اپنی زندگی میں اپنے مال کے فائدہ سے محروم رہتا ہے جب موت کا وقت سر پر آجاتا ہے تو وہ اپنے مال کی طرف جھکتا ہے۔''

عَنْ قَيْسِ قَالَ كَانَ يُقَالُ إِنَّ الرَّجُلَ لَيُسُحُرَمُ بَرَكَةَ مَالِهِ فِى حَيَاتِهِ فَإِذَا كَانَ عِنْدَ الْمَوُتِ تَزَوَّدَ بِفَجُرَةٍ . *

3293 حَدَّثَنَا أَخُمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُو زُبَيْدٍ حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِي عَنْ أَبِيْهِ

قَالَ....قَالَ

عبدالله فرماتے ہیں کہ: ''دو چیزیں بری ہیں: زندگی میں بخیلی اور موت کے وقت فضول خرچی۔'' ابو محمد کہتے ہیں: ''کہاجاتا تھا ایک بری چیز تو زندگی میں ہے اور ایک موت

قَالَ عَبُدُ اللّهِ الْمُرَّانِ الْإمْسَاكُ فِي الْمُرَّانِ الْإمْسَاكُ فِي الْمُرَّانِ الْإمْسَاكُ فِي الْحَيَاةِ وَالتَّبُلِيرُ عِنْدَ الْمَوْتِ قَالَ أَبُوْ مُحَدَّمَد يُقَالُ مُرُّ فِي الْحَيَاةِ وَمُرُّ عِنْدَ الْمَوْتِ .

الْمَوْتِ .

الْمَوْتِ .

و

فوائد: (۱)" المرّيان " يه مُرُّى كى تثنيه به جو فعلىٰ كے وزن پر اَمرَّ كى مونث به جوكه مراوة ،كرُ واہث سے به (۲) معلوم ہواسلف زندگی میں روكے ركھنے اور موت كے وقت كھلاخرچ كرنے كو معيوب سجھتے تھے۔

[26] بَابِ الرَّجُلِ يُوصِى بِمِثُلِ نَصِيبِ بَعُضِ الْوَرَثَةِ (كَسَى كَ لِحَ) كَسَى وارث كَ حص كر برابر وصيت كرنے والے خص كابيان

3294 حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ مَنْصُورٍ …

1 صحیح: دکیکھے ابن ابی شیبه 11/189(10918)

• صحیح: دکیکھے ابن ابی شیبه 11/189(10918)

672 كتاب الوصايا كالت الكاليكين الكاليكين

ابراہیم سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا ''جب کوئی آدی دوس ے کے لئے اپنے بیٹے کے حصہ کے برابر وصیت كرے تواہے اس كے برابر حصة نہيں ملے گا بلكه اس سے مم کما جائے گا۔''

عَنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ إِذَا أُوْصَى الرَّجُلُ لِآخَرَ بِمِثُلِ نَصِيبِ ابْنِهِ فَكَا يَتِمُّ لَهُ مِثْلُ نَصِيبهِ حَتَّى يَنْقُصَ مِنْهُ . 9

فوائد: کسی وارث کے حصے کی مثل وصیت تب قابل قبول ہوگی جب وہ ثلث ہے کم ہو کیونکہ

ثلث ہے زیادہ کسی کوتر کے سے عطانہیں کیا جاسکتا۔

3295 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّتَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ

داؤد بن ابوہند کہتے ہیں شعبی ہے یوچھا گیا اگر کسی کے تین عَنُ دَاوُدَ بُنِ أَبِي هُنُدٍ عَنِ الشَّعُبِيِّ فِيُ رَجُلِ كَانَ لَهُ ثَلاثَةُ بَنِينَ فَأُوصٰى لِرَجُلِ مِثْلَ نَصِيْبِ أَحَدِهِمُ لَوْ كَالُوا أَرْبَعَةً شعمی نے کہا:''اسے یانچوال حصد دیا جائے گا۔'' قَالَ الشَّعْبِيُّ يُعُطَى النُّحُمُسَ . ٥

3296 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عِيسَى حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعِ

حَدَّثُنَا دَاوُدُ بُنُ أَبِي هِنْدٍ قَالَ سَأَلُنَا عَامِرًا عَنُ رَجُل تَرَكَ ابُنَيْنِ وَأُوْصَى بِمِثُل نَصِيُب أَحَدِهِمُ لَوُ كَانُوا ثَلاثَةً قَالَ أُوصى بِالرُّبُعِ. 3

بیٹے ہوں اور اس نے کسی آ دی کے لئے اتن وصیت کی جس قدر جاربیوں کی صورت میں ایک کا حصہ ہوتا ہے۔

داؤد بن ابوہند کہتے ہیں ہم نے عامرے اس آ دی کے متعلق یو چھا جس نے دو بیٹے چھوڑے ہوں اور اس نے سی آ دی کے لئے اتنی وصیت کی۔جس فدر تین لڑکوں کی صورت میں ایک کا حصہ ہوتا ہے۔ انہوں نے کہا: "اس نے چوتھائی کی وصیت کی۔''

3297 حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ عَنْ مُغِيرَةَ

ابراہیم سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: اگر کوئی آ دی کسی وارث کے جھے کے برابر وصیت کرے تو جائز نہیں۔اگرچہ تہائی ہے کم ہو۔'' اور محد کہتے ہیں:''یداچھی بات ہے۔''

عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ فِي رَجُلِ أَوْصَى بمِثُل نَصِيب بَعُض الْوَرَثَةِ قَالَ لَا يَجُوزُ وَإِنَّ كَانَ أَقَلَّ مِنَ الثُّلُثِ قَالَ

[🗘] صحيح: أخرجه ابن ابي بيه 170/11(10844)

[🛭] صحيح: ديكھئة كنده اثر

[🗗] صحيح: أخرجه ابن ابي شببه 11/86 (90838) وابن منصور (349)

كتاب الو صايا المينان الكارين

أَنُو مُحَمَّد هُوَ حَسَنَّ . 0

[27] بَابِ فِي الرَّجُلِ يُوصِي بِغَلَّةٍ عَبُدِهِ غلام کی آ مدن کی وصیت کرنے والے مخض کا بیان

3298 حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنِ ابْنِ أَبِيْ السَّفَرِ

عَنِ الشَّعْبِيِّ فِي رَجُلِ أَوْصَى فِي غَلَّةِ فعي صمروى بكهانهول ني كها: "الركولَى آوى اين عَبْدِه بِدِرُهَم وَغَلَّتُهُ سِتَّةٌ قَالَ لَهُ عَللم كي آمن عالي درجم كي وصيت كراوراس كي آ مدنی چھ درہم ہوتو اے اس میں سے چھٹا حصہ ملے گا۔''

[28].... بَابِ الْوَصِيَّةِ لِلْوَارِثِ وارث كووصيت كرنے كابيان

3299_ حَدَّثَنَا قَبيصَةُ قَالَ

سفیان کہتے تھے کہ: ''جب کوئی وارث یا غیر وارث کے لئے سو درہم کا اقرار کرے میری رائے ہے کہ اس کومنسوخ سَـمِـعُـتُ سُفْيَانَ يَقُولُ إِذَا أَقَرَّ لِوَارِثٍ وَلِغَيْرِ وَارِثٍ بِمِاثَةِ دِرُهَمٍ قَالَ: أَرْى أَنُ أَبْطِلَهُمَا جَمِيعًا. 🗗

فواند: باطل کرنے کی وجہ بیخدشہ ہے کہ ہوسکتا ہے وہ ان کونواز نے کے لیے اس بات کا اقرار کرر ما ہو۔ (واللہ اعلم)

3300 حَدَّنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَا هَمَّامٌ حَدَّثَا قَتَادَةُ عَنِ ابْنِ سِيْرِيْنَ

شریح سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: "وارث کے لئے اقرار (وصیت) کرنا جائز نہن مسن نے کہا: ''آوی کی تمام باتوں سے بڑھ کر ماننے کے لائق موت کے وقت کی بات ہے۔ جو آخرت کا پہلا دن اور دنیا کا آخری دن

عَنْ شُرَيُح قَالَ لَا يَجُوزُ إِقُوَارٌ لِوَارِثٍ قَالَ و قَالَ الْحَسَنُ أَحَقُّ مَا جَازَ عَلَيْهِ عِنُدَ مَوْتِهِ أَوَّلَ يَوْمٍ مِنُ أَيَّامِ الْآخِرَةِ وَآخِرَ يَوُمِ مِنُ أَيَّامِ اللُّهُنِّيَا . 9

صحیح: أحرجه ابن منصور (378) و ابن ابی شیبه 170/11 (10844)

۵ صحیح: داری منفرد ہیں۔

[€]صحيح: دارى منفرد بين-

[◘] صحيح: أخرجه البيهقي في الاقرار،باب ماجاء في القرار المريض 585/6وابن ابي شيبه 196/6(791)

الكاليوني الكاليوني 674 من كتاب الوصايا كالم

فواند: ندکورة مسلے میں حسن راتھید کا قول راج معلوم ہوتا ہے کیونکہ بیمشکل ہے کہ کوئی جاتے ہوئے کسی اچھائی کی بجائے برائی کر جائے جواس کے نامہ اعمال کومزید سیاہ کرنے کا باعث بن جائے ۔ دنیا چھوڑتے ہوئے چونکہ انسان کے بھی (بل) نکل چکے ہوتے چنانچہ وہ حق بات ہی کرتا ہے۔الا ماشاء اللہ 3301 حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن أَخْبَرَنَا خَالِدٌ عَنْ خَالِدٍ

عَنُ أَبِي قِلابَةَ قَالَ لَا يَجُوزُ لِوَارِثٍ ابوقلابہ سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ''وارث کے لئے

وصيت كرنا جا ئزنہيں _''

3302 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ

عَنْ حُمَيْدٍ أَنَّ رَجُلًا يُكُنِّى أَبَا ثَابِتٍ أَفَرَّ مِيد كَتِ مِين ايك آدى جس كى كنيت ابو ثابت تقى في اين بیوی کے لئے موت کے وقت اقرار کیا کہ اس کے مہر میں سے حارسو درہم اس کے ذمہ ہیں تو حسن سے اسے جائز

لِامُ رَأَتِهِ عِنْدَ مَوْتِهِ أَنَّ لَهَا عَلَيْهِ أَرْبَعَ مِائَةِ دِرُهَمِ مِنُ صَدَاقِهَا فَأَجَازَهُ الُحَسَنُ. ٥

وَصِيَّةً . ٥

3303 - حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ الدَّسْتَوَائِيُّ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَب

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَن بْنِ غَنْمِ

عَنُ عَمُرِو بُنِ خَارِجَةَ قَالَ كُنْتُ تَحُتَ نَاقَةِ النَّبِيِّ عِنْ وَهِيَ تَقُصَعُ بِجِرَّتِهَا وَلُعَابُهَا يَنُوصُ بَيْنَ كَتِفَيَّ سَمِعْتُهُ يَقُولُ أَلَا إِنَّ اللَّهَ قَدُ أَعُطَى كُلَّ ذِي حَقٌّ حَقَّهُ فَلَا يَجُوزُ وَصِيَّةٌ لِوَارِثٍ . •

عمرو بن خارجہ کہتے ہیں کہ میں نبی مشکور کا انٹنی کے ینیے تھا اور وہ جگالی کر رہی تھی۔ اس کا جھاگ میرے دونوں کندھوں کے درمیان گررہا تھا۔ میں نے آپ سے سناآب فرمار ہے تھے: ''یاد رکھو! الله تعالیٰ نے ہر حقدار کا حق اسے دے دیا لہذا وارث کے لئے وصیت جائز نہیں۔''

فوائد: (۱) " نقصع بجرّتها " لين اين پيك سے نكلنے والے جارے كو چبارى تھى ،جگالى کر رہی تھی۔ (۲) ندکورۃ حدیث اس بارے واضح ہے کہ وصیت کی فرضیت ختم ہو چکی ہےاور فرضیت کی ناسخ آیات میراث ہیں جیسا کہ آئندہ حدیث سے وضاحت ہورہی ہے۔البتہ غیروارث اور ذوی الارحام کے حق

O صحيح: داري منفرد بين-

عصحيح: دارىمنفرد ہیں۔

[🗗] حسن: (2571) کے تحت گزر چکی ہے۔

الكالتان الكالتان كتاب الوصايا

میں وصیت جائز ہے۔

3304. أُخْبَرَنَا يَزِيْدُ بْنُ هَارُوْنَ أُخْبَرَنَا هَـمَّامٌ عَنُ قَتَادَةَ قَالَ: ﴿ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَوَكَ خَيُرًا وَأَقَارِبِهِ ثُمَّ نُسِخَ بَعُدَ ذٰلِكَ فِي سُورَةِ

الُـوَصِيَّةُ لِـلُوَالِدَيْنِ وَالْأَقُرَبِيُنَ ﴾ [البقر-ة: ١٨٠]أَمَرَ أَنُ يُؤْصِيَ لِوَالِدَيْهِ النِّسَاءِ فَجَعَلَ لِلُوَ الِدَيْنِ نَصِيبًا مَعْلُومًا وَأَلُحَقَ لِكُلِّ ذِي مِيرَاثٍ نَصِيبَهُ مِنْهُ

وَ لَيُسَتُ لَهُمُ وَصِيَّةٌ فَصَارَتِ الْوَصِيَّةُ

لِمَنُ لَا يَرِثُ مِنْ قَرِيْبِ وَغَيْرِهِ . ٥

ہے کسی کوموت آئے اور وہ مال چھوڑے تو والدین اور قریمی رشتہ داروں کے لیے اچھے طریقے سے وصّیت کرنا ہے یہ برہیز گارول پر واجب ہے۔ "[البقرة: ١٨٠]: پس بیرهم دیا: ''اپنے والدین اور رشتہ داروں کے لئے وصیت کی جائے۔'' (بقرۃ :۱۸۰) پھراس کے بعد سورۃ النساء میں پیچکم منسوخ ہو گیا۔ اور والدین کے لئے معین حصہ مقرر ہوا اور ہرحقدار کواس کا حصہ دے دیا گیا۔اوران کے لئے وصیت نہیں رہی۔ وصیت ان رشتہ داروغیرہ کے لئے ہوگی جو وارث نہیں ۔''

ہام بیان کرتے ہیں کہ قادة والنَّهُ نے کہا: ''جب تم میں

3305 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ عَنِ ابْنِ أَبِيْ نَجِيْحٍ عَنْ عَطَاءِ

ابن عیاس سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ''میلے مال اولا د کے لبیر کا تھا۔ اور وصیت والدین اور رشتہ داروں کے لئے اس میں سے اللہ تعالی نے جتنا حایا ہامنسوخ کر دیا۔اور مرد کے لئےعورت کا دوگنا مقرر کیا۔ والدین میں سے ہر ایک کے لئے چھٹا حصہ اور تہائی مقرر کیا۔ بیوی کے لئے آ ٹھواں حصہ اور چوتھائی شوہر کے لئے نصف اور چوتھائی ،مقرر کیا۔''

عَن ابُن عَبَّاسِ قَالَ كَانَ الْمَالُ لِلُوَلَدِ وَكَانَتِ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ فَنَسَخَ اللَّهُ مِنُ ذُلِكُ مَا أَحَبَّ فَجَعَلَ لِلذَّكَر مِثُلَ حَظِّ الْأُنْثَيَيُن وَجَعَلَ لِلْأَبَوَيُنِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا السُّدُسَ وَالثُّلُثُ وَجَعَلَ لِلْمَرُأَةِ الثُّمُنَ وَالرُّبُعَ وَلِلزَّوْجِ الشَّطُرَ وَالرُّبُعَ . ٥

3306 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْمَعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُوْ تُمَيْلَةَ عَنِ الْحُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ عَنْ يَزِيْدَ

[•] صحبح: اس کواہن جوزی نے (ناسخ القران و منسوعه) نواسخ القران ص (193) میں ذکر کیا ہے۔ تیز و کی کھے سفر طبری 117/2

عصحيح: أخرجه البخاري، كتاب الوصايا، باب لاوصية لوارث(2747) والبيهقي في الوصايا، باب نسخ الوصية لوالدين 263/6

حَكَلُ لِيُتَاتَى الْكَالِيْدِي عَلَى الْمُوالِقِيلِ اللهِ صايا ﴾ 676 كل كتاب الوصايا ﴾ كا

عکرمہ اور حسن سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: پہلے بی حکم تھا۔''اگر کوئی مال جھوڑ ہے تو والدین اور رشتہ داروں کے متعلق وصیت کر جائے۔ وصیت اسی طرح تھی حتی کہ اسے میراث کی آیت سے منسوخ کر دیا۔

[29] بَابِ الْوَصِيَّةِ لِلْغَنِيِّ الْعَنِيِّ اللَّهِ الْعَالِيِّ الْعَالِيٰ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّالِي اللَّالِي الللِي الللِّهُ اللْمُعْلِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُعْلِمُ اللَّالِي ال

3307 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ حُمَيْدِ

حن سے اس آ دمی کے متعلق پوچھا گیا جو وصیت کرے؟
اوراس کا بھائی مالدار ہو کیا وہ اس کے لئے وصیت کرے؟
انہوں نے کہا: جی ہاں ٔ اگر چہ بیس ہزار کا مالک ہو پھر کہا
اگر چہ ایک لاکھ کا مالک ہو کیونکہ اس کی مالداری اسے حق
سے نہیں روکے گی۔

عَنِ الْحَسَنِ سُئِلَ عَنُ رَجُلٍ أَوْطَى وَلَهُ الْحَسَنِ سُئِلَ عَنُ رَجُلٍ أَوْطَى وَلَهُ الْخُ مُوسِرٌ أَيُوصِى لَهُ؟ قَالَ نَعَمُ وَإِنُ كَانَ رَبَّ عِشْرِينَ أَلُفًا ثُمَّ قَالَ وَإِنُ كَانَ رَبَّ مِائَةِ أَلُفٍ فَإِنَّ غِنَاهُ لَا يَمْنَعُهُ الْحَقَّ . ۞

فواند: (مو صِی) کے لیے ضروری نہیں کہ وہ وصیت کرتے ہوئے کسی حاجت مند، یا فقیر و امیر کا پاس کرے بلکہ وہ جس کے لیے چاہے وصیت کرسکتا ہے۔

[30] بَابِ الرَّجُلِ يُوصِى لِفُلانٍ فَإِنُ مَاتَ فَلِفُلانٍ

اس آ دمی کا بیان جو بوں وصیت کرے بیفلال شخص کے لیے ہے اور اگر وہ مرجائے تو پھر

فلال شخص کے لیے ہے اگر مرجائے تو فلال شخص کے لئے

3308_ حَدَّثَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ

حسن اور میتب دونوں سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا:
"اگر کوئی کے: میری تلوار فلاں کے لئے ہے اگر وہ مر
جائے تو فلاں کے لئے اگر وہ بھی مرجائے تومیری طرف
لوٹ آئے گی تو وہ پہلے شخص کی ہو گی۔ اور حمید بن

عَنِ الْحَسَنِ وَسَعِيدِ بُنِ الْمُسَيَّبِ فِيُ رَجُلٍ قَالَ سَيْفِي لِفُلَانٍ فَإِنْ مَاتَ فُلانٌ فَلانٌ فَلانٌ فَكَلانٌ فَلِي فَاللهُ فَمَرُجِعُهُ إِلَى فَالاَثْ فَمَرُجِعُهُ إِلَى قَالَا هُوَ لِللَّوَ مَاتَ فُلانٌ فَمَرُجِعُهُ إِلَى قَالَا هُو لِللَّوَّلِ .قَالَ وَقَالَ حُمَيْدُ بُنُ

^{119/2}صحيح: أخرجه الطبرى 119/2

٢ صحيح : أخرجه ابن منصور (178)

677 كتاب الوصايا كالك يُئِنُ الكَالِيْعِيَّ

عَبُدِ الرَّحْمَنِ يُمُضِي كَمَا قَالَ. •

عبدالرحمٰن نے کہا:''اس طرح کیا جائے گا جس طرح اس

فواند: حسن وسعید رایتید کی بات ہی راج معلوم ہوتی ہے کیونکه موصی کی وصیت کامکمل یاس کرنا مشقت کا ہاعث ہے۔

3309 حَدَّثَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ

عروة الشخف كے متعلق فرماتے ہيں:''اگر كوئى آ دمى كسى كو کچھ عطیہ دے اور کے: یہ چیزتمہاری ہے۔ جبتم مرجاؤ تو فلاں کی ہوگی۔ جب وہ بھی مرجائے فلاں کی ہے ،اور جب وہ بھی مرجائے تو مجھے واپس کی جائے گی۔ تو اس طرح ہوگا جیسے اس نے کہا اگر چہ سوآ وی ہوں۔''

أَنَّ عُرُوةَ قَالَ فِي الرَّجُلِ يُعُطِي الرَّجُلَ الْعَطَاءَ فَيَقُولُ هُوَ لَكَ فَإِذَا مُتَ فَلِفُلان فَإِذَا مَاتَ فُلانٌ فَلِفُلانِ وَإِذَا مَاتَ قُلانٌ فَمَرُجِعُهُ إِلَيَّ قَالَ يُمُضَى كَمَا قَالَ وَإِنَّ كَانُوا مِائَةً. ٥

[31].... بَابِ فِي الرَّجُلِ يُوصِى لِغَيْرِ قَرَابَتِهِ غیررشتہ داروں کے لئے وصیت کرنے والے مخص کا بیان

3310 حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ.....

شیبہ بنت ہشام راسی اور کثیر بن معدان دونوں نے کہا: ہم نے سالم بن عبداللہ سے اس شخص کے متعلق بوجھا جوغیر قرابت میں وصیت كرتا ہے؟ تو سالم نے كہا: وصیت وہیں ہوگی جہاں اس نے کی ، کہتے :ہم نے کہا:حسن کہتے تھے: ''ایسی وصیت کا مال رشته دارون کو واپس ہوگا۔'' تو انہوں ' نے اس کا اٹکار کیا اور شخت بات کہی۔

حَـدَّثَنَا شَيْبَةُ بُنُ هِشَامِ الرَّاسِبِيُّ وَكَثِيرُ بُنُ مَعُدَانَ قَالَا سَأَلُنَا سَالِمَ بُنَ عَبُدِ اللَّهِ عَنِ الرَّجُلِ يُوصِى فِى غَيْرِ قَرَابَتِهِ فَقَالَ سَالِمٌ هِي حَيثُ جَعَلَهَا قَالَ فَقُلْنَا إِنَّ الُحَسَنَ يَقُولُ يُرَدُّ عَلَى الْأَقُرَبِينَ فَأَنَّكَرَ ذُلِكَ وَقَالَ قَوُّلًا شَدِيْدًا . 🏵

ف**ے ائد**: ادلہ کے عموم کے سبب قرابت داروں کی شرط درست نہیں بلکہ آ دمی کو جائز ہے کہ وہ جس کے حق میں جاہے وصیت کردے۔

[•] صحيح: ابن اني شيبنے اس كوالگ الگ روايت كيا ہے۔ 160/11 (10807-10808-10809)

² صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 161/11 (10810)

❸صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 161/11(10810) اسي طرح167/11(10824) وابن منصور(355)

678 كتاب الوصايا

3311 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُوْ شِهَابٍ عَنْ عَمْرِو

عَنِ الْحَسَنِ قَالَ إِذَا أُوْصَى الرَّجُلُ فِي صحن عدم وى ب كدانهول في كا: "جب آ دى ايخ قَرَابَتِهِ فَهُ وَ لِأَقُرَبِهِ مُ بِبَطُنِ الذَّكَرُ وَ ٱلْأَنْثَى فِيهِ سَوَاءٌ. ٥

قرابت والوں میں وصیت کرے تو وصیت قریبی رشتہ دار کے لئے ہوگی مرد وعورت اس میں برابر ہوں گے۔''

[32].... بَابِ إِذَا قَالَ أَحَدُ غُلَامَيَّ حُرُّ وَلَمْ يُبَيّنُ

جب کوئی کہے:''میرے دوغلاموں سے ایک آ زاد ہے'' پھرمر جائے اور بیان نہ کرے

3312 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُوْ بِكُر عَنْ مُطَرِّفِ

عَنِ الشَّعْبِيِّ فِي رَجُلِ قَالَ أَحَدُ غُلامَيَّ فَعَي سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: جب کوئی کے: حُــرٌ ثُمَّ مَـاتَ وَلَـمُ يُبَيِّنُ قَالَ الْوَرَثَةُ مِيرِ ووغلامون مين سے ايک آزاد ہے پھروہ مرجائے اور طاہر نہ کرے کہا:تو وارث بھی اس کے مرتبہ پر ہوں

بمَنْزِلَتِهِ يُعْتِقُونَ أَيَّهُمَا أَحَبُّوا . ٥

گے۔ دونوں میں سے جسے جا ہیں آ زاد کر دیں۔

[33].... بَابِ إِذَا أُوْصَى بِالْعِتُقِ فِي مَرَضِهِ ثُمَّ بَرَأً ہاری میں آزادی کی وصیت کر کے تندرست ہو جانے والے تحص کا بیان

3313 حَدَّنَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّنَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ يُونْسَ

عَن الْحَسَن أَنَّ رَجُلًا قَالَ فِي مَوَضِهِ حسن سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: اگر کوئی شخص اپنی لِفُلان كَذَا وَلِفُلان كَذَا وَعَبُدِى فُلانٌ يَارى مِن كَجِ: "فلال كَ لِحَ اتنا جِ اورفلال كَ لِحَ اتنا اور فلال غلام آزاد ہے اور اس طرح نہ کیے: ''اگر مجھ یرکوئی حادثه گزرے تو ایبا ہو۔ پھروہ تندرست ہو جائے تو

حُرُّ وَلَمُ يَقُلُ إِنُ حَدَثَ مِي حَدَثُ فَبَرَأً قَالَ هُوَ مَمُلُوكٌ . 🗗

وہ غلام' غلام ہی رہے گا۔''

[34] بَابِ إِذَا أَعُتَقَ غُلَامَهُ عِنْدَ الْمَوُتِ وَلَيْسَ لَهُ مَالٌ غَيْرُهُ جس کے پاس اور مال نہ ہوا یہ تحص کے موت کے وقت غلام آزاد کرنے کا بیان 3314 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُوْ بِكُر عَنْ مُطَرِّفِ

² حسن: أخرجه ابن ابي شيبه 11/112(11017)

[🛈] ضعیف: (3277) یس به حدیث گزر چکی ہے۔

[🚯] حسن: أخرجه ابن منصو ر (375)

المُورِ المُنْ الْمُأْلِمُونِينَ الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِينِينَ الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِدِينَ الْمُؤْلِدِينَ ال

شعبی سے اس شخص کے متعلق مردی ہے:''موت کے وقت اپنا غلام آزاد کرے اور اس کے علاوہ اس کے پاس کوئی مال نہ ہو اس کے ذمہ قرض ہو۔ تو اس کی قیمت سے قرض عَنِ الشَّعْبِيِّ فِى رَجُلٍ أَعْتَقَ غُلَامَهُ عِنْدَ الْمَوْتِ وَلَيْسَ لَهُ غَيْرُهُ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ قَالَ الْمُوْتِ وَلَيْسَ لَهُ غَيْرُهُ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ قَالَ يَسْعَى لِلْعُرَمَاءِ فِي ثَمَنِهِ. • •

خواہوں کوادا کیا جائے گا۔''

فوائد: يهى بات اقرب الى الصواب معلوم ہوتى ہے كه غلام كوا پنى قيمت كے بقدر كمانے پر مجبور كيا جائے۔

3315 حَدَّثَنَا أَبُوْ الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ

عَنِ الْحَسَنِ أَنَّ رَجُلًا الشُقَوى عَبُدًا حَن ثِنَّ تَنَ عَمُول ہے کہ انہوں نے کہ: ''یقیناً ایک بِیسَنع مِائیة دِرُهَم مِن غلام خرید کر آزاد کیا اور غلام فَمَنَ الْعَبُدِ وَلَمُ يَتُوكُ شَيْنًا فَقَالَ عَلِيً کی قیمت ادائیں کی اور نہ کچھ چھوڑا۔ سیّدنا علی ٹائٹی نے یَسُعَی الْعَبُدُ فِی ثَمَنِهِ. ﴿ کَهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰلَّٰ اللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ الللّٰمُ الللّٰمُ الللّٰمُ الللّٰمُ

[35] بَابِ مَنُ قَالَ الْمُدَبَّرُ مِنَ التُّلُثِ مدبر كتهائى مال سے ثار ہونے كابيان

3316 حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ شَرِيكِ عَنِ الْأَشْعَثِ

عَنُ نَافِعِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ الْمُدَبَّرُ مِنَ نَافَع كَبَةٍ بِينِ ابن عمر نَهُ كَهَا: "مديرتها فَي مال عي شار بو النَّلُثِ . • النَّلُثِ . • كا ـ " كا ـ"

3317- حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ شَرِيكِ

عَنُ مَنُصُودٍ عَنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ الْمُدَبَّرُ مصور كَهَ بِين ابرائِيم نَ كَها: "مربها كَي مال عد شار بو مِنَ الْفُلُثِ . ٥

فوائد: (۱)"المدبّر" اليع غلام كوكها جاتا ہے جس كو ما لك يدكهدد يقومير عمر نے ك

حسن: أخرجه ابن منصور (416) وعبدالرزاق (16760)

عبدالرزاق(16766) وابن منصور(315)

[♦] ضعيف: أخرجه ابن ماجه، كتاب العتق،باب المدير (2514) وابن عدى في الكامل (1833/5) و الخطيب في تاريخ بغداد 444/11

حسن: أحرجه ابن منصور (469) وابن ابي شيبه 524/6 (811)

العَلَيْ الْخَالِيْمِينَ الْخَالِيْمِينَ الْخَالِيمِينَ الْخِلْمِينَ الْخَالِيمِينَ الْخَلْمِينَ الْخَلِيمِينَ الْخَلْمِينَ الْخَلْمِينِيلِي الْخَلْمِينَ الْخَلْمِينِ الْخَلْمِينَ الْخَلْمِينَ الْخَلِيمِينَ الْخَلْمِينَ الْخَلْمِينَ الْخَلْمِينَ الْخَلْمِينِ الْخَلِمِينِ الْخَلْمِينِيلِينِ الْخَلْمِينِ الْخَلْمِينِ الْمُعِلَى الْمُعِلَى الْمُعِلَى الْمُعْلِمِينِ الْمُعِلَّى الْمُعِلَى

بعد آزاد ہے (۲) غلام کو اگر مدبر صحت کی حالت میں بنایا گیا ہوتو وہ جمیع مال سے بنایا جاسکتا ہے جب کہ حالت مرض میں ثلث مال سے جیبا کہ یہاں ابراہیم راتیا ہے مدبر کا ثلث سے ہونا مروی ہے جب کہ (3321) میں جمیع مال سے ان میں یونمی تطبیق دی جائے گی اور یہی بات درست ہے۔(واللہ اعلم)

3318 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ.....

عَنُ كَثِيْرِ عَنِ الْحَسَنِ قَالَ الْمُعْتَقُ عَنُ ﴿ كَثِيرَ كَهِتَ بِينَ حَسن نِي كَها: ''آزاد كيا بوا مدبرتها في مال ہےشار ہوگا۔''

3319 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ

تہائی مال میں شار ہوگی۔'' عَنُ دُبُرٍ وَوَلَدُهَا مِنَ الثُّلُثِ . 🍳

3320 حَدَّثَنَا أَبُوْ الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

قَالَ مَنْصُورٌ أُخْبَرَنِي عَنُ إِبْرَاهِيْمَ قَالَ

المُعْتَقُ عَنُ دُبُرِ مِنَ الثُّلُثِ . 6

دُبُر مِنَ الثُّلُثِ . •

3321 حَدَّثَنَا أَبُّو النُّعْمَان حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ

عَنُ أَبِي عَبُدِ اللَّهِ الشَّقَرِيِّ وَأَبِي هَاشِمِ عَنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ الْمُدَبُّرُ مِنُ جَمِيع

الُمَالِ . 🎱

3322 أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرِ

عَنُ سَعِيُدِ بُنِ جُبَيُرٍ قَالَ الْمُعْتَقُ عَنُ ذُبُرٍ مِنْ جَمِيعِ المَالِ قَالَ سُئِلَ أَبُو مُحَمَّد

بأيهما تَقُولُ قَالَ مِنَ الثُّلُثِ . 3

عَنُ حُمَيْدٍ عَنِ الْحَسَنِ قَالَ الْمُعْتَقَةُ مِي حَيد كَتِي بِين صن في كها: "دبرلوندى اوراس كي اولاد

منصور کہتے ہیں: ابراہیم نے کہا: "آ زاد کیا ہوا مدبر تہائی مال ہےشار ہوگا۔''

ابوعبدالله شقري اور ابو ہاشم کہتے ہیں ابراہیم نے کہا:''مدبر

تمام مال میں شار ہوگا۔''

سعید بن جبیر سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ''مدبرتمام مال سے شار ہوگا۔'' ابو محمد سے یو چھا گیا: آپ کس کے قائل ہیں؟ انہوں نے کہا: تہائی مال میں شار ہونے کے ''

^{1908)523/6} صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 6/523(1908)

صحیح: مابقه حدیث کرر آئی ہے۔

[🗗] صحیح: (3317) میں گزرچکی ہے۔

صحیح: أخرجه ابن منصور (4700) مزیدو یکی سابقه (3317-3320)

[🗗] صحيح: أخرجه ابن منصور (474) وابن ابي شيبه 6/525 (1915)

الكالم ال 681 كتاب الوصايا

[36] بَابِ مَنُ قَالَ لَا تَشُهَدُ عَلَى وَصِيَّةٍ حَتَّى تُقُرَأَ عَلَيُكَ اس شخص کا بیان جو کہتا ہے' ^{دکس}ی کو وصتیت میں گواہی نہ دو یہاں تک کہ تجھ پراس کو پڑھا جائے''

3323 ـ أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُغِيرَةِ حَدَّثَنَا مَخْلَدٌ عَنْ هِشَام

عَنِ الْحَسَنِ قَالَ لَا تَشُهَدُ عَلَى وَصِيَّةٍ صحن ع مروى ب كهانهول نے كها: "دكسي كى وصيت حَتَّى تُقُرَأُ عَلَيْكَ وَلَا تَشْهَدُ عَلَى مَنُ ﴿ كَمْ تَعَلَّى كُوابِي نه دوحْتَى كَهِ مِن لواوراس كِمتعلق كوابي نه دو جسے تم پیچانتے نہیں ہو۔''

لَا تُعُرِفُ . 0

فواند: وصیت س کرشاہد، گواہ بننے کی وجہ رہے ہے کہ اگر اس میں خلاف شریعت بات ہوتو اس پر گواہی سے بچا جا سکے ۔اس طرح غیرمعروف کی شہادت سے احتر از کی بھی یہی وجہ ہے کہ کہیں عدم واقفیت یر غلط بندے کی شہادت نہ دے دی جائے ۔(واللہ اعلم) ۔

> [37].... بَابِ مَنُ أُوْصِي لِأَمَّهَاتِ أُوْلادِهِ ام ولد کے لئے وصیت کرنے والے مخص کا بیان

3324 أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ حُمَيْدِ

عَن الْحَسَنِ أَنَّ عُمَرَ بُنَ الْحَطَّابِ صلى كَتِمْ بِين كه عمر بن خطاب وَ النَّهُ نَ ابْنِي ام ولد أُوصٰى لِأُمَّهَاتِ أَوْلَادِهِ بِأَرْبَعَةِ آلافٍ لونديول كيليَّ برايك كے لئے جار بزارى وصيت كى۔

أَرْبَعَةِ آلافٍ لِكُلِّ امْرَأَةٍ مِنْهُنَّ . ٥

فوائد: پیاٹر اگر چرضعیف ہے بہر حال امہات الاولاد (یعنی ایسی لونڈیاں جن کی مالک سے اولاد ہو چکی ہو) کے حق میں مالک تہائی مال تک کی وصیت کرسکتا ہے۔

[38] بَابِ وَصِيَّةِ الْغُلامِ

لڑ کے کے وصیت کرنے کا بیان

3225 حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ أَبِيْهِ

[🛈] صحيح: أخرج معناه ابن ابي شيبه11/182(18091)

[🛭] منقطع ،ضعیف :حسن نے عمر علاسطان سے تیں سنا، اُحرجہ ابن منصور (438) وابن ابی شیبہ 215/11 (11021) و عبد الرزاق (16458)

الكالم المنت الكارمين الكالم المناس (682) ﴿ كتاب الوصايا ﴿ اللهِ اللهِ صَالِ اللهِ صَالِعَ اللهِ اللهِ صَالِع

عَنُ عُمَوَ بُنِ عَبُدِ المُعَزِيْزِ أَنَّهُ أَجَازَ عَمر بن عبدالعزيز وَاللَّيْ عَمروى ب كه انهول في تيره برس کےلڑ کے کی وصیت کو جائز کھیمرایا۔''

وَصِيَّةَ ابُن ثَلاثَ عَشُرَةَ سَنَةً . 0

فوائد: سن لا كاجب س شعور كو بينج جائے برے بھلے ميں تميز كرسكتا ہوتواس كے ليے وصيت كرنا جائز ہے۔ ہاں البنۃ اس کی وصیت میں اصلاح کی گنجائش ہے کہا گر وہ کہیں غلطی کربیٹھے تواس کی اصلاح کر

3326 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ .

ابواتحق کہتے ہیں قبیلے کے ایک سات برس کے لڑے نے وصیت کی تو شری نے کہا: ''اگراڑ کے نے وصیت کی ہے تو جائز ہے۔'' ابومحمر کہتے ہیں:'' مجھے پیقول اچھا لگتا ہے اور قاضی اسے حائز نہیں مجھتے ۔''

عَنْ أَسِيُ المُسلحقَ قَالَ أُوْطِي غُلَامٌ مِنَ الُحَيِّ ابُنُ سَبُع سِنِيْنَ فَقَالَ شُوَيْحٌ إِذَا أُصَابَ الْغُلَامُ فِي وَصِيَّتِهِ جَازَتُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد يُعُجبُنِي وَالْقُضَاةُ لَا

يُجيُزُونَ . 🛮

3327 حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بِنُ عَوْنِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ

حَـدَّثَنَا أَبُو إِسُـحٰقَ أَنَّهُ شَهِندَ شُرَيْحًا أجَازَ وَصِيَّةَ عَبِّاسِ بُنِ إِسْمُعِيْلَ بُنِ مَرُثَدِ لِظِئْرِهِ مِنُ أَهُلِ الْحِيْرَةِ وَعَبَّاسٌ صَبِيٌّ . 🏵

ابواسخل بن اساعیل کہتے ہیں کہ وہ شریح کے یاس موجود تھے جب انہوں نے عماس بن اسمعیل بن مرثد کی وصیت قبول کی جوانہوں نے حمرة کی ایک این وائی کے لئے کی تھی اورعباس ابھی بیچے تھے۔

3328ـ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنِ أَنْبَآنَا يُوْنُسُ

حَدَّثَنَا أَبُو إِسُحْقَ قَالَ قَالَ شُرَيُحٌ إِذَا

اتَّقَى الصَّبِيُّ الرَّكِيَّةَ جَازَتُ وَصِيَّتُهُ. ٥

3329_ حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ ...

ابو آتحق کہتے ہیں کہ شری نے کہا: ''جب بحد کنوس سے بيخ گه تواس كي وصيت جائز ہوگي۔''

[🛈] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 11/184 (10898) وعبدالرزاق(16419)

[◘]صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 4/185(10904) وابن منصور(434) وعبدالرزاق(16414)

³ صحبح: آئندہ آنے والے دونوں اثر ملاحظہ کریں برائے تخ ت€۔

[◘] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 185/11(10906)

683 کی کتاب الوصایا عَنُ أَبِي إِسُحٰقَ أَنَّ غُلَامًا مِنْهُمُ حِينَ ثُغِرَ

ابواتحل كہتے ہیں كەمر ثد نامى ايك لڑكے نے (دودھ كے) دانت ٹوٹنے کی عمر میں اہل جیرة کی اپنی ایک دائی کے لئے حالیس درہم کی وصیت کی تو شریح نے اسے قائم رکھا اور کہا : ' جوحق تک پہنچا ہم اے قائم رکھیں گے۔''

3330 عَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا يَحْيَى.....

الكالكان الكان الك

يُقَالُ لَهُ مَرُثَلًا أَوْصَى لِظِئْرِ لَهُ مِنُ أَهُل

الُجِيْرَةِ بِأَرْبَعِينَ دِرُهَمًا فَأَجَازَهُ شُرَيُحٌ

وَقَالَ مَنْ أَصَابَ الْحَقَّ أَجَزُنَاهُ . ٥

ابوبكر بن محمد بن عمرو بن حزم بيان كرتے بيں كه ايك لؤكا مدینہ میں مرنے کے قریب ہوا اس کے وارث شام میں تھے۔ لوگوں نے سیدنا عمر وہالفہ سے کہا: وہ مر رہا ہے تو انہوں نے اسے وصیت کرنے کا کہا سیّدنا عمر فائند نے اسے محم دیا کہ وہ وصیت کرے تو اس نے ایک کویں کی وصیت کی جس کا نام برُ جشم تھا جوتمیں ہزار میں خریدا گیا تھا۔ ابو بكر برلشير نے ذكر كيا: "الزكا دس يا بارہ سال كا تھا۔" أَنَّ أَبَا بَكُرِ بُنَ مُحَمَّدِ بُنِ عَمُرِو بُنِ حَزُم أَخْبَرَهُ أَنَّ غُلَامًا بِالْمَدِينَةِ حَضَرَهُ الُمَوْتُ وَوَرَثَتُهُ بِالشَّامِ وَأَنَّهُمُ ذَكَرُوُا لِعُمَرَ أَنَّهُ يَمُوتُ فَسَأَلُوهُ أَنْ يُوْصِيَ فَأَمَرَهُ عُسَرُ أَنُ يُوصِيَ فَأَوْصَى بِبِثُر يُقَالُ لَهَا بِنُرُ جُشَمَ وَإِنَّ أَهُلَهَا بَاعُوُهَا بِشَكَاثِينَ أَلْفًا ذَكَرَ أَبُو بَكُرِ أَنَّ الْغُلَامَ كَانَ ابُنَ عَشُرِ سِنِينَ أَوُ ثِنْتَى عَشُرَةً . ٥

حماد سے منقول ہے کہ ابراہیم نے کہا: ''نیچے کی وصیت مال میں سے تہائی یا کم کے لئے جائز ہے اس کا ولی صحت کی حالت میں تنگدی کے خوف سے اسے منع کر سکتا ہے۔ گر موت کےوقت وہ ایسے منع نہیں کرسکتا۔''

3331 حَدَّثَنَا يَزِيدُ عَنْ هِشَامِ الدَّسْتَوَائِيِّ......... عَنُ حَمَّادٍ عَنُ إِبُرَاهِيمَ قَالَ يَجُوزُ وَحِيَّةُ الصَّبِيِّ فِي مَالِهِ فِي الثُّلُثِ فَمَا دُونَنَهُ وَإِنَّـمَا يَـمُنَعُهُ وَلِيُّهُ ذَٰلِكَ فِي الصِّحَةِ رَهُبَةَ الْفَاقَةِ عَلَيْهِ فَأَمَّا عِنُدَ الْمَوُتِ فَلَيْسَ لَهُ أَنُ يَمُنَعَهُ. ٥

3332- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ خَالِدِ الْحَدَّاءِ وَأَيُّوبَ.

[◘] صحيح: أخرجه وكيع في اخيار القضاة 270/2-271 وعبدالرزاق(16412-16413).

[◘]منـقـطـع ضعيف: أخرجه عبدالرزاق(16410) وابن منصور(430) وابن حـزم فـي المحلي 330/9ومـالك في الوصية، باب حواز وصية الصيغور، والضعيف والمصاب، والسقيه (2)

[🛭] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 11/184 (10901) وابن منصور (436)

684 كتاب الوصايا كالم يُتَانُ الْكَالِكِيْنَ

ابن سیرین کہتے ہیں کہ عبداللہ بن عتبہ کے پاس ایک لڑگی ك متعلق يو چيخ آياجس نے وصيت كى تھى لوگ اس كوچھوٹا قرار دینے گلے تو انہوں نے کہا: ''جوحق بات کے گا ہم . اسے قائم رکھیں گے۔''

عَن ابُنِ سِيُرِيُنَ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عُتُبَةً أنَّــةُ أُتِـىَ فِي جَـارِيَةٍ أَوْصَـتُ فَجَعَلُوا يُصَغِّرُ وُنَهَا فَقَالَ مَنْ أَصَابَ الْحَقَّ ا أَجَزُ نَاهُ. 0

فوائد: معلوم ہوا اگر بچہ یا بچی درست وصیت کرتے ہیں اور کسی ظلم یاغلطی کا شکار نہیں ہوتے تو

ان کی وصیت قابل قبول ہوگی ان کو چھوٹا سمجھتے ہوئے اسے رونہیں کیا جائیگا۔

3333 ـ حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ

عَنُ أَبِي بَكُرِ أَنَّ سُلَيْمًا الْغَسَّانِيَّ مَاتَ وَهُوَ ابُنُ عَشُرِ أَوْ ثِنْتَى عَشُرَةَ سَنَةً فَأُوْصَى بِبِئُرِ لَهُ قِيمَتُهَا تُلَاثُوُنَ أَلُفًا فَأَجَازَهَا عُمَرُ بُنُ الْخَطَّابِ قَالَ أَبُو مُحَمَّد النَّاسُ يَقُولُونَ عَمْرُو بُنُ سُلَيْمٍ . 🍳

ابو بكر كہتے ہيں كەسلىم غسانى دس يا بارە سال كى عمر ميں فوت ہو گئے انہوں نے ایک کویں کی وصیت کی تھی جس کی قیمت تمیں ہزار تھی۔ تو سیّدنا عمر والنّفط بن خطاب نے اسے قائم رکھا تھا۔ ابو محمد کہتے ہیں: ''لوگ اسے عمر بن سلیم

کتے ہیں۔''

3334 حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ ابْنَيْهِ

عبداللداور محمداي والدسه سابق قول كى طرح نقل كرت ہیں اتنا فرق ہے ایک نے کہا: تیرہ برس کی عمر میں دوسرے نے کہا: بلوغت سے پہلے۔

عُبُدِ اللُّهِ وَمُحَمَّدٍ ابُنَى أَبِي بَكُرِ عَنُ أَبِيُهِ مَا مِثُلَ ذٰلِكَ غَيْرَ أَنَّ أَحَدَهُمَا قَىالَ ابُنُ ثَسَلَاتُ عَشُرَةً وَقَالَ الْآخَرُ قَبْلَ أَنُ يَحْتَلِمَ قَالَ أَبُو مُحَمَّد عَن ابُنَيْهِ يَعْنِي ابُنَى أَبِي بَكُرِ . 3

[39].... بَابِ مَنُ قَالَ لَا يَجُوُزُ

لڑ کے کی وصیت جائز نہیں قرار نہ دینے والے مخص کا بیان

3335 حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيّ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى

[◘] صحيح: أخرجه عبدالرزاق(16415) وابن ابي شيبه 11/184(10899) وابن منصور (433)

عمنقطع: ضعيف عمرو بن سليم نے ابن خطاب كوئيس يايا۔ أخر حه عبدالرزاق (16409)

³ منقطع: سابقد حديث بي مكرر ب-

www.sirat-e-mustageem.com

الكالمِينَ 685 کی کتاب الوصایا کی

معمر سے منقول ہے کہ زہری کہتے تھے۔ کہ بلوغت سے یملےلڑ کے کا وصیت کرنا جا ئزنہیں۔

عَنُ مَعْمَدٍ عَنِ الزُّهُرِيِّ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ وَصِيَّتُهُ لَيُسَتُّ بِجَائِزَةٍ إِلَّا مَا لَيُسَ بِذِي بَالِ يَعُنِى الْغُلَامَ قَبُلَ أَنُ يَحُتَلِمَ . •

فوائد: جب بچيمجهدار جو برا بهلا جانتا جوتو اس كي وصيت ميں كوئي حرج نهيں جب سات سال کا بچہ امامت کرواسکتا ہے تو لا زما ان امور کو بھی سر انجام دے سکتا ہے لہذا سابقہ اقوال ہی راجح ہوں گے۔ (والله اعلم)

3336 حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ

عَنُ يُونُسَ عَنِ الْحَسَنِ قَالَ لَا يَجُوزُ طَلَاقُ الْـغُلَامِ وَلَا وَصِيَّتُهُ وَلَا هِبَتُهُ وَلَا صَدَقَتُهُ وَلَا عَتَاقَتُهُ حَتَّى يَحُتَلِمَ. ٥ جائے۔"

یونس کہتے ہیں کہ حسن نے کہا: ''لڑ کے کی طلاق وصیت' مبة ' صدقه اورغلام کا آ زاد کرنا جائز نہیں حتی که وہ بالغ ہو

فوائد: أن اموركو بلوغت كى بجائ مجهدارول سے جوڑنا زياده قرين قياس ہے۔ (والله اعلم) 3337 ـ حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُغِيرَةِ عَنْ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ عَنْ حَجَّاجٍ.....

عطاء سے روایت ہے ابن عباس مٹائٹیئر نے فرمایا: '' کہ بچے کا طلاق دینا' آ زاد کرنا' وصیت کرنا' خرید وفروخت کرنا اور اس کی کوئی چیز جائز نہیں۔''

عَنُ عَطَاءِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسِ قَالَ لَا يَجُوزُرُ طَلاقُ الصَّبِيِّ وَلا عِتْقُهُ وَلا وَصِيَّتُهُ وَلا شِرَاؤُهُ وَلَا بَيْعُهُ وَلَا شَيْءٌ . ٥

3338 ـ حَدَّثَنَا أَبُوْ الْوَلِيْدِ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ.

عَنُ قَتَادَةً عَنُ حُمَيُدِ بُن عَبُدِ الرَّحُمَن الُحِمْيَرِيّ قَالَ لَا يَجُوزُ طَلَاقٌ وَلَا وَصِيَّةٌ إِلَّا فِى عَقُلِ إِلَّا النَّشُوَانَ يَعُنِى السَّكُ رَانَ فَإِنَّهُ يَجُوزُ طَلَاقُهُ وَيُضُرَبُ

قادة ہے منقول ہے کہ حمید بن عبدالرحمٰن حمیری والفہ نے کہا: ''ہوش وحواس کے بغیر طلاق اور وصیت جائز نہیں' البته نشه والے کی طلاق جائز ہے اور اسے حد ماری جائے گی:

❶ صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 11/186 (10910) وعبدالرزاق (16417)

[◘]صحيح: أخرجه ابن منصور (435) وعبدالرزاق (16425) وابن ابي شيبه 11/186 (10909)

[⊕]ضعیف: تجائ بن أرطاة ضعیف ب، أحرجه عبدالرزاق (16421) وابن ابی شیبه 186/18 (10908)

[◘]صحيح: أحرجه ابن ابي شيبه 38/5،باب من احاز طلاق السكران

www.sirat-e-mustageem.com

يَتِنَالْكَارِينَ كَتَابِ الوصايا

[40] بَابِ إِذَا أُوصٰى بِعِتُق عَبُدٍ لَهُ آبِق بھا گے ہوئے غلام کی آ زادی کی وصیت کا بیان

3339ـ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْن عَنْ خَالِدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ

عَنُ يَحْيَى بُنِ أَبِي إِسُلْحَقَ قَالَ سَأَلُتُ لَي يَكِيٰ بن ابوالَحْق كَهَتِ بَين مِن نِه قاسم بن عبدالرحمٰن اور الْقَاسِمَ بُنَ عَبُدِ الرَّحْمَنِ وَمُعَاوِيَةَ بُنَ معاوية بن قرة سے اس آ دمی کے متعلق پوچھا جس نے اپنی قُرَّةً عَنُ رَجُلِ قَالَ فِي وَصِيَّتِهِ كُلُّ وصيت مِن كها: "ميرے سب غلام آزاد بين اور اس كا ایک غلام بھاگا ہوا ہو؟ ان دونوں نے کہا: ''وہ آزاد مَـمُـلُوكِ لِي حُرٌّ وَلَهُ مَمُلُوكٌ آبِقٌ ہے۔'' حسن اور ایاس اور بکر بن عبداللہ نے کہا:''وہ آزاد فَـقَـالَا هُـوَ حُرٌّ و قَالَ الْحَسَنُ وَإِيَاسٌ تہیں ہے۔'' وَبَكُو بُنُ عَبُدِ اللَّهِ لَيُسَ بِحُرٍّ. •

> [41] بَابِ الْوَصِيَّةِ إِلَى النِّسَاءِ عورتوں کو وصیت کرنے کا بیان

3340 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةً حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ الْعُمْرِيُّ عَنْ نَافِع

عَن ابُن عُسَرَ أَنَّ عُمَرَ أَوْصَى إلى ابن عمر فالنَّهُ سے روایت ہے کہ سیّدنا عمر فالنَّهُ نے سیّدنا حفصه مناشحها كووصيت فرماكي _

حَفُصَةَ أُمِّ الْمُؤُمِنِينَ . ٥

فوائد: معلوم ہواعورتوں کو بھی وضی بنایا جاسکتا ہے۔

[42].... بَابِ الْوَصِيَّةِ لِأَهُلِ الذِّمَّةِ ذمی کو وصیت کرنے کا بیان

3341_ حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ لَيْثٍ عَنْ نَافِع

عَنِ ابْنِ عُمْرَ أَنَّ صَفِيَّةَ أَوْصَتْ ابْن عمر وَالنَّهُ سِي منقول مِ كَه سيَّدنا صفيه نے ايخ ايك

یبودی رشتہ دار کے لئے وصیت کی۔

لِنَسِيُب لَهَا يَهُوُ دِيّ . 😉

فوائد: ندکورة وآئنده اثر اس بات كے شاہد ہیں كه اہل ذمته كے حق ميں وصيت قابل قبول ہوگی

3342 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ

عسن: أخرجه ابن ابي شيبه 162/11) (10819)

صحيح: أخرجه عبدالرزاق (1934-1934) وابن ابي شيبه 161/11 (10812)

www.sirat-e-mustaqeem.com

687 کے الوصایا کی الوصایا کی الوصایا کی الوصایا کی الوالحق کہتے ہیں کہ قبیلے کے سات برس کے لڑکے نے جس کا نام عباس بن مرثد تھا اپنی دائی کے لئے چالیس درہم کی وصیت کی جو جیرہ 'کی یہود سے تھی ۔ تو شرح نے کہا: ''جب لڑکا صحیح وصیت کرے تو جائز ہے اور اس نے حقد ار کے لئے وصیت کی ۔'' ابو محمد کہتے ہیں: ''میں بھی اس کا قائل ہوں۔''

عَنُ أَبِى إِسُحٰقَ قَالَ أَوْصَى عُكلامٌ مِنَ الْمُحَى يُقَالُ لَهُ عَبَّاسُ بُنُ مَرْتُدِ ابُنُ سَبُعِ الْمُحَى يُقَالُ لَهُ عَبَّاسُ بُنُ مَرْتُدِ ابُنُ سَبُعِ سِنِينَ لِظِئْرٍ لَهُ يَهُو دِيَّةٍ مِنُ أَهُلِ الْحِيْرةِ بِسَارُبُعِينَ دِرُهَمَا فَقَالَ شُريعٌ إِذَا بِسَارُبُعِينَ دِرُهَمَا فَقَالَ شُريعٌ إِذَا أَصَابَ الْعُكلامُ فِي وَصِيَّتِهِ جَازَتُ وَإِنَّمَا أَوْصَى لِلذِي حَقِّ قَالَ أَبُو مُحَمَّد أَنَا أَوْصَى لِلذِي حَقِّ قَالَ أَبُو مُحَمَّد أَنَا أَقُولُ بِهِ. •

الكَالِمُونَ الكَالِمُونَ الكَالِمُونَ الكَالِمُونَ الكَالِمُونَ الكَالِمُونَ الكَالِمُونَ الكَالِمُونَ الكَالمِمُونَ الكَالمِمُونَ الكَالمِمُونَ الكَالمِمُونَ الكَالمِمُونَ الكَالمِمُونَ المُعَالِمُ المُعَلِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَلِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَالِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعِلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعَلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمِ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِلِمُ المُعِم

[43] بَابِ فِيُ الُوَقُفِ وقف كرنے كابيان

3343- أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبُوْ أُسَامَةً.......

ہشام اپنے والد سے نقل کرتے ہیں کہ زبیر رفائفۂ نے اپنے مکان اپنے بیٹول میں اس طرح صدقہ کئے کہ نہ وہ بیجے جائیں اور نہ ہی ان میں وراشت جاری ہو اور ان کے بیٹیوں سے جسے طلاق ہو وہ اس میں رہے نہ وہ تکلیف دے نہ اسے تکلیف دی جائے۔اگر وہ اپنے خاوندوں کی وجہ سے غنی ہیں تو ان کا اس میں کوئی حق نہیں۔

عَنُ هِ شَامٍ عَنُ أَبِيهِ أَنَّ الزُّبَيُرَ جَعَلَ
دُورَهُ صَدَقَةً عَلَى بَنِيهِ لَا تُبَاعُ وَلَا
تُورَّثُ وَأَنَّ لِلْمَرُدُوُدَةِ مِنُ بَنَاتِهِ أَنُ
تُسكُن غَيْرَ مُضِرَّةٍ وَلَا مُضَارِّ بِهَا فَإِنُ
هِى اسْتَغُنَتُ بِزَوْجٍ فَلا حَقَّ لَهَا .
هِى اسْتَغُنَتُ بِزَوْجٍ فَلا حَقَّ لَهَا .
ه

فوائد: وقف کی وصیت اولاد کے حق میں درست ہے یہ چونکہ با قاعدہ جائیداد نہیں بنتی لہذا اس کے کرنے میں کوئی حرج نہیں ۔

[44] بَابِ إِذَا مَاتَ الْمُوصَى لَهُ قَبُلَ الْمُوْصِى اگروصیت کرنے والے سے پہلے وہ تخص مرجائے جس کے لیے وصیت کی گئی ہو 3344۔ حَدَّثَنَا الْحَکَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ أَخْبَرَنَا الْوَلِيْدُ عَنْ حَفْصِ

[•] صحبح: (3327-3328-3327) يل يال گزر چاہے۔

[●] صحیح: أخرجه ابن ابی شیبه 251/6(974) و البیه تمی فی الفرائض 166/6 ،باب الصدقة علی ما شرط الواقف...... نیز بخاری نے اسے' وصایا'' میں معلق بیان کیا ہے، حافظ ابن حجر براشہ فتح میں کہتے ہیں5/407 اسے درامی نے موصولاً بیان کیا ہے۔

الكانيخي الكانيخي الكانيخي 688 كاب الوصايا كانت الترابيخي الترابيخ

کمول سے اس شخص کے متعلق مروی ہے: ''اگر کوئی آ دمی اللہ کی راہ میں کسی آ دمی کے لیے پچھ دیناروں کی وصیت کر سے پھر جس کے لیے وصیت کی گئی ہے وہ وصیت کواس کے اہل سے لے کر جانے سے پہلے مر جائے تو وصیت 'موسی لہ' کے وارثوں کے لئے ہوگی جوفوت ہوگیا وہ اسے اللہ کی راہ میں خرچ کردیں۔''

عَنُ مَكُم ولٍ فِسَى السَّرِّ جُلِ يُوصِى لِللَّهِ فَيَمُوتُ لِللَّهِ فَيَمُوتُ السَّهِ وَلِي اللَّهِ فَيَمُوتُ الْسَّهُ وَلَى سَبِيلِ اللَّهِ فَيَمُوتُ الْسَمُوطَى لَهُ قَبُلَ أَنُ يَخُرُجَ بِهَا مِنُ الْمُوطِى لَهُ قَبُلَ أَنُ يَخُرُجَ بِهَا مِنُ المُعَوفَى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ . • المُموصِى يُنَفِّلُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ . • المُموصِى يُنَفِّلُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ . • المُموصِى يُنَفِّلُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ . • •

3345 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَلِيّ بْنِ مُسْهِرِ عَنْ أَشْعَتَ

حن سے اس آ دمی کے متعلق لوچھا گیا جس نے کسی آ دمی کے لیے وصیت کی تھی وہ وصیت کرنے والے سے وصیت کی تھی وہ وصیت کرنے والے سے پہلے فوت ہوگیا؟ تو انہوں نے کہا: ''وہ وصیت 'موضی لہ' کے ورثاء کے لئے ہوگی۔''

عَنِ الْحَسَنِ فِى الرَّجُلِ يُوصِى لِلرَّجُلِ بِالْوَصِى لِلرَّجُلِ بِالْوَصِي لِلرَّجُلِ بِالْوَصِي لِلهَ قَبُلَ الْمُوصَى لَلهَ قَبُلَ الْمُوصَى لَلهَ قَبُلَ الْمُوصَى لَلهَ قَبُلَ الْمُوصَى لَلهُ قَبُلَ الْمُوصَى لَلهُ. ﴿ الْمُوصَى لَلهُ. ﴿ الْمُوصَى لَلهُ. ﴿ الْمُوصَى لَلهُ. ﴿

فواند: اس بارے پیچے اثر گزر چاہے کہ الی وصیت نافذ نہیں ہوگی اور ندکورة حال بلیث آئے گا۔ 3346 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُییْنَةَ عَنْ عَلِیّ بْنِ مُسْهِرِ عَنْ أَشْعَتَ

ابوالطق سبیلی کہتے ہیں مجھ سے بیان کیا گیا کہ سیّدناعلی فاٹنو ایسی وصیت کو نافذ کرتے تھے۔جس طرح حسن نے کہا۔

عَنُ أَبِى إِسُحٰقَ السَّبِيُعِيّ قَالَ حُدِّثُتُ السَّبِيُعِيّ قَالَ حُدِّثُتُ أَنَّ عَلِيَّا كَانَ يُجِيُونُهَا مِثْلَ قَوْلِ الْحَسَن . 9 الْحَسَن . 9

[45] بَابِ إِذَا أَوْصَى بِشَىءٍ فِى سَبِيلِ اللهِ الله كراسته ميں وصيت كرنے كابيان

3347 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ الْمُبَارَكِ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ هُوَ ابْنُ مُحَمَّدِ عَنْ مُوسَى هُوَ ابْنُ عُقْمَةً

¹ ضعیف: ولید بن مسلم مرکس کا عنعنه ہے۔

صحیح: أخرجه سعید بن منصور (327) وابن ابی شیبه 100/11 (10788)

[€]ضعيف: سابقة اثر لما نظر رياراً خرجه ابن ابي شيبه 155/1 (10987)

عَنُ نَسافِعِ أَنَّ رَجُّلا جَاءَ إِلَى ابُنِ عُمَرَ خَشَالَ إِنَّ رَجُّلا أَوُّطَى إِلَىَّ وَجَعَلَ نَاقَةً فِىُ سَبِيلِ اللَّهِ وَلَيُسَ هٰذَا زَمَانًا يُخْرَجُ إِلَى الْغَزُو فَأَحُمِلُ عَلَيْهَا فِى الْحَجِّ فَقَالَ ابُنُ عُمَرَ الْحَجُّ وَالْعُمُرَةُ مِنُ

نافع کہتے ہیں کہ ایک آ دمی سیّدنا ابن عمر رہا تین کے پاس آیا اور کہا: ''ایک آ دمی سیّدنا ابن عمر رہا تین کے باس آیا اور کہا: ''ایک آ دمی نے مجھے وصیت کی ہے اور ایک اونٹی اللّٰہ کی راہ میں دمی ہے اور یہ جنگ کا زمانہ نہیں ہے کیا اسے حج کے لئے دے دول؟ تو ابن عمر رہا تین نے کہا: ''حج اور عمر قابلت کی راہ ہے ہیں۔''

كتاب الوصايا كالكحك

3348_ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللّٰهِ بْنُ مُوسٰى عَنْ مُوْسَى بْنِ عُبَيْدَةَ

عَنُ وَاقِيدِ بُنِ مُحَمَّدِ بُنِ زَيْدٍ عَنُ عَبُدِ اللهِ فِي اللهِ بُنِ عُمَر أَنَّ رَجُلًا أُوضَى بِمَالِهِ فِي اللهِ بُنِ عُمَر أَنَّ رَجُلًا أُوضَى بِمَالِهِ فِي سَيلِ اللهِ فَسَأَلَ الُوصِيُّ عَنُ ذٰلِكَ عُمَّلَ اللهِ قَالَ وَمَنُ عُمَّالُ اللهِ قَالَ وَمَنُ عُمَّالُ اللهِ قَالَ وَمَنُ عُمَّالُ اللهِ قَالَ وَمَنُ عُمَّالُ اللهِ قَالَ اللهِ قَالَ حَاجٌ بَيْتِ اللهِ قَالَ وَمَنَ عُمَّالُ اللهِ قَالَ حَاجٌ بَيْتِ اللهِ قَالَ وَمَنَ

سَبِيلِ اللَّهِ. 9

واقد بن محمد بن زید بن عبدالله بن عمر رفاتی سے منقول ہے کہ ایک آ دمی نے الله کی راہ میں اپنے مال کی وصیت کی تو وصیت کرنے والے نے عمر رفاتی سے اس کے متعلق بوچھا تو انہوں نے کہا: ''اے الله کی راہ میں کام کرنے والوں کو دے دو۔'' اس نے کہا: الله کی راہ میں کام کرنے والے کون ہیں؟ تو فرمایا: ''بیت الله کا حج کرنے والے ''



[•] صحیح: أخرجه ابن ابی شببه 181/11 (10888) والبیه قی فی الوصایا، باب الوصیة فی سبیل الله 272/6 نیز مند الطیالی 202/16(976) کی حدیث اس کی شاہد ہے۔ و أخرجه الحاكم (482) اور است شرط مسلم پر قرار دیا ہے اور ذہبی نے بھی السیالی کی موافقت کی ہے اور بیہ ہے بھی ایسے ہی۔

[€] ضعیف: موکی بن عبیره ریزی ضعیف ب، أخرجه ابن ابی شببه 180/11(10886)



۲۳ ومن كتاب فضائل القرآن قرآن كفضائل

[1] بَابِ فَضُل مَنُ قَرَأُ الْقُرُ آنَ قرآن يرصني كي فضيلت كابيان

3349 حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ قَابُوْسَ عَنْ أَبِيْهِ

عَن ابْنِ عَبَّاسِ قَالَ قَالَ رَسُولُ سيدنا ابن عباس رفائيد كمت بين كدرسول الله السَّايَةِ إِن عَن اللَّهِ عَلَيْ إِنَّ الرَّجُلَ الَّذِي لَيُسَ فِي فَي فرمايا: 'وه آوى جي كهم بهي قرآن ياونهيس ايسے ہے جيسے وبران مکان ـ''

جَوُفِهِ مِنَ الْقُرُآنِ شَيُءٌ كَالْبَيْتِ الُخَوبِ . ٥

فوائد: جوگھر ساكنين سے خالى ہوتا ہے وہ درندوں اور حيوانوں كى آ ماجگاہ ہوتا ہے اسے ويران تصور کیاجاتا ہے بعینہ ای طرح جس دل میں قرآن نہ ہو یعنی بندے کو قرآن یاد نہ ہوتو اس کا دل شیاطین کا مسک اور گمراہیوں کامنبع ہوتا ہے لہذا دلوں کی آبادی کے لیے اس کی تلاوت ،حفظ ضروری ہے (والله الموفق) 3350 - أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ خَالِدِ بْنِ حَازِمِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ حَدَّثَنَا أَبُوْ سِنَان عَنْ أَبِي إسْحٰقَ عَنْ أَبِي الْأَحْوَصِ

عبداللہ سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: '' بہ قرآن اللہ کی دعوت ہے جس قدر ہو سکے اس میں سے لواور میرے خیال میں اس گھر ہے حقیر کوئی چیز نہیں جس میں کچھ قرآن نہ ہو

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ إِنَّ هٰذَا الْقُرُ آنَ مَأْدُبَةُ اللَّهِ فَخُلُوا مِنَّهُ مَا اسْتَطَعُتُمُ فَإِنِّي لَا أَعُلَمُ شَيْنًا أَصُفَرَ مِنُ خَيْرِ مِنْ بَيْتٍ لَيْسَ

€ حسن: اخرجه احمد 223/1 والترمذي، كتاب ثواب القران، با الذي ليس في جوقه قرآن كالبيت الخرب (2914) والحاكم في المستدرك 1/554

الكاريخ الكاريخ الكاركان

691 کے میں اور وہ دل جس میں قر آن کا کچھ حصہ نہ ہووہ ویران مکان

فِيهِ مِنُ كِتَابِ اللهِ شَيُءٌ وَإِنَّ الْقَلُبَ الَّذِى لَيُسَ فِيهِ مِنُ كِتَابِ اللهِ شَيُءٌ خَرِبٌ كَحَرَابِ الْبَيْتِ الَّذِى لَا سَاكِنَ

اوروہ دل جس میں قرآن کا سیجھ حصہ نہ ہووہ ویران مکان کی طرح ویران ہے جسے کوئی آباد کرنے والانہیں۔''

لَهُ . •

3351 حَدَّثَنَا أَبُوْ عَامِرِ قَبِيصَةُ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ....

ابواحوص کہتے ہیں عبداللہ نے کہا: '' قرآن پڑھنا سیکھو کے بدلہ میں دس کے پڑھنا سیکھو نئی ہرحرف کے بدلہ میں دس نیکیاں ہوں گی بلکہ الف کام اور میم ہرحرف کے بدلہ دس نیکیاں ملیں گی۔''

عَنُ أَبِى الْأَحُوَصِ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ تَعَلَّمُوا هٰ ذَا الْقُرُآنَ فَإِنَّكُمُ تُؤُجُرُونَ بِتِلاَوَتِهِ بِكُلِّ حَرُفٍ عَشُرَ حَسَنَاتٍ أَمَا إِنِّى لَا أَقُولُ بِ﴿ الم ﴾ وَلَكِنُ بِأَلِفٍ وَلَامٍ وَمِيمٍ بِكُلِّ حَرُفِ عَشُو حَسَنَاتٍ. ٥

3352 حَدَّثَنَا مُعَاذُبْنُ هَانِءِ حَدَّثَنَا حَرْبُ بْنُ شَدَّادٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى هُوَ ابْنُ أَبِي كَثِيْرٍ حَدَّثَنِي حَدَّثَنِي عَنَانِ الْحَنَفِيُ

أَنَّ أَبَا هُرَيُرَ قَ كَانَ يَقُولُ إِنَّ الْبَيْتَ لَيَقُولُ إِنَّ الْبَيْتَ لَيَقُولُ إِنَّ الْبَيْتَ لَيَقُولُ إِنَّ الْبَيْتَ وَتَحْصُرُهُ الْمَلَائِكَةُ وَتَهُرُهُ الْمَكَاثُوكُ خَيْرُهُ أَنْ يُقُرَأً فِيهِ الْقُرْآنُ وَإِنَّ الْبَيْتَ لَيَضِيقُ يُعُرِدُهُ الْمَكَاثِكَةُ عَلَى أَهُ لِهِ وَتَهُ جُرُهُ الْمَكَاثِكَةُ وَتَحْصُرُهُ الشَّيَاطِينُ وَيَقِلُ خَيْرُهُ أَنْ لَا يُقُرَأُ فَانَ لَا يُقُرَأُ فَيهِ الْقُرُآنُ .

﴿ وَتَحْصُرُهُ الشَّيَاطِينُ وَيَقِلُ خَيْرُهُ أَنْ لَا لَهُ اللَّهُ الْفَرُآنُ .
﴿ وَتَحْصُرُهُ الشَّيَاطِينُ وَيَقِلُ خَيْرُهُ أَنْ لَا لَهُ الْقُرُآنُ .
﴿ وَتَحْصُرُهُ الشَّيَاطِينُ وَيَقِلُ خَيْرُهُ أَنْ لَا لَا لَكُلُولُ اللَّهُ الْفَرُآنُ . ﴿ وَاللَّهُ اللَّهُ وَالْهُ اللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ الْمُنْ ُولُ الْمُنْ الْمُنْعُلُولُ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ ا

ب شک ابوہریۃ ڈائٹھ کہتے تھے کہ: '' قرآن پڑھنے کی وجہ
سے گھر اس کے اہل کے لئے کشادہ ہو جاتا ہے اور اس
میں فرشتے حاضر ہوتے ہیں 'شیطان اس گھر کوچھوڑ دیتے
ہیں اور اس کی خیر و برکت بڑھ جاتی ہے اور قرآن نہ
پڑھنے کی وجہ ہے گھر اس کے اہل کے لئے تگ ہو جاتا
ہے فرشتے اسے چھوڑ دیتے ہیں اور شیطان اس میں بسیرا
کر لیتے ہیں اس کی خیر و برکت کم ہو جاتی ہے۔''

فوائد: آج گھر سکون سے خالی ہیں اور دل اطمینان سے ،اس کی وجہ صرف یہی ہے کہ جن کھروں سے پہلے تلاوت قرآن کی آواز آیا کرتی تھی آج وہ فاحثاؤں کے نموں اور بھانڈول کے حیاء سوز

[🕡] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 486/1008(10081) وعبدالرزاق(5998) والطبراني في الكبير 183/9(1834)

² صحيح: أحرجه الطبراني في الكبير(8648-8649) وعبدالرزاق(5993) وابن ابي شيبه 161/10(1999)

[🛭] صحيح: أحرجه ابن ابي شيبه 487/10 (10076) وابن المبارك في الزهد(790)

www.sirat-e-mustageem.com

القرآن الكالم ال

مکالموں سے گونج رہے ہیں جس وجہ سے گھروں میں فرشتوں کا نزول جو کہ رحمت کاباعث ہوا کرتا تھا بند ہوکر شیاطین کی کمین گا ہیں بن چکے ہی۔ لہذا گھروں میں ویرانیاں آسیب زدگیاں عام ہیں اور ان کا علاج فقط یہی جے پینمبررحت منظم کینا نے اس حدیث میں ذکر کردیا (اللحم وفقنا لما تحب وترضی)

3353 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا ابْنُ لَهِيعَةَ عَنْ مِشْرَح بْنِ هَاعَانَ قَالَ سَمِعْتُ

عُقْبَةَ ابْنَ عَامِرٍ يَقُولُ سَمِعْتُ رَسُولَ عقبہ بن عامر كہتے ہيں ہيں نے رسول الله ﷺ الله عقبہ الله عقبہ الله عقبہ الله عقبہ الله عقبہ الله على الله عل

2354 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرِ الرَّقِّيُّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو عَنْ زَيْدِ بْنِ أَبِيْ أَنْيْسَةَ عَنْ

عَاصِم.....

عَنُ أَبِى صَالِحٍ قَالَ سَمِعُتُ أَبَا هُرَيُرَةَ يَعُولُ الْقُرُآنَ فَإِنَّهُ نِعُمَ الشَّفِيعُ يَعُومُ الْقَيْامَةِ إِنَّهُ يَعُولُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَا يَوُمَ الْقِيَامَةِ يَا رَبِّ حَلِيةَ الْكَرَامَةِ فَيُحَلَّى حِلْيةَ الْكَرَامَةِ يَا رَبِّ اكْسُهُ كِسُوةَ الْكَرَامَةِ يَا رَبِّ الْمِسُهُ فَي عَلْمُ فَلَيْسُهُ فَي عَلَى اللَّهُ الْمُسَلِّمَةُ الْكَرَامَةِ يَا رَبِّ الْمُسَلِمُ عَنْهُ فَلَيْسَ تَاجَ الْكَرَامَةِ يَا رَبِّ الْمَضَ عَنْهُ فَلَيْسَ بَعُدَ رضَاكَ شَيْءٌ. ٥

ابوصالح کہتے ہیں میں نے ابوہریرہ زباتین سے سنا کہتے تھے:

''قرآن پڑھو وہ قیامت کے دن بہت اچھا سفارثی ہوگا'
اور قیامت کے دن کہے گا: اے میرے رب! اسے عزت کا زیور پہنایا جائے گا اے میرے رب! اسے عزت کا لباس پہنایا جائے گا اے میرے رب! اسے عزت کا لباس پہنایا جائے گا۔اے میرے رب! اسے عزت کا لباس پہنایا جائے گا۔اے میرے رب! اسے عزت کا تاج پہنا۔اے میرے رب! اس سے راضی ہو جا کیونکہ تیری رضا مندی کے بعد کسی چزکی حقیقت نہیں۔''

3355 - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْفَزَارِيُّ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ عَاصِمِ عَنْ مُجَاهِدِ

عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ يَجِىءُ الْقُوْآنُ يَشُفَعُ ابْنَ عَمرِ ثَالِّنَوْ ہے مروی ہے کہانہوں نے کہا: '' قرآن آکر لِصَاحِبِهٖ يَقُولُ يَا رَبِّ لِكُلِّ عَامِلٍ عُمَالَةً اپنے بِرُّ ہے والے كی سفارش كرے گا كہے گا: ''اے

❶ ضعيف: أخرجه الطبراني في الكبير 308/17(850) والبيه قي في شعب الإيمان(2699) وابن عدى في الكامل 246/6

●حسن: أخرجه الترمذي، كتاب ثواب القرآن،باب الذي ليس في جوفه قران.....(2916) والحاكم 552/1والبيهقي. في شعب الإيمان(1996-1997)

الكَالِيُعِيُّ الكَالِيَعِيُّ الكَالِيَعِيُّ الكَالِيَعِيُّ الكَالِيَعِيُّ الكَالِيَعِيُّ الكَالِيَعِيُّ

693 كال كتاب فضائل القرآن

•

مِنُ عَمَلِهِ وَإِنِّى كُنْتُ أَمُنَعُهُ اللَّذَّةَ وَالنَّوْمَ فَأَكُرِمُهُ فَيُقَالُ ابُسُطُ يَمِينَكَ فَتُمُلُّا مِنْ رِضُوانِ اللَّهِ ثُمَّ يُقَالُ ابُسُطُ شِمَالَكَ فَتُمُلُّا مِنُ رضُوان اللَّهِ

وَيُكُسَى كِسُوةَ الْكَرَامَةِ وَيُحَلَّى بِحِلْيَةِ

الْكَرَامَةِ وَيُلْبَسُ تَاجَ الْكَرَامَةِ . •

میرے رب! ہرکام کرنے والے کے لئے اس کے کام کی مزدوری ہے میری وجہ سے اس کی لذت اور نیند میں خلیل آتا تھا لہذا اسے عزت دے۔ کہا جائے گا: اپنا دایاں ہاتھ کھیلا' تو وہ اللہ کی رضا سے بھر دیا جائے گا۔ پھر کہا جائے گا اپنا بایاں ہاتھ کھیلا' تو وہ بھی اللہ کی رضا سے بھر دیا جائے گا۔ اور عزت کا زبور گا۔ اور عزت کا زبور کہنا جائے گا۔ اور عزت کا زبور کہنا جائے گا۔ اور عزت کا زبور کہنا جائے گا۔ اور عزت کا تاج بہنایا جائے گا۔ '

3356 أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ مُحَمَّدِ الْفَزَارِيُّ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ

عَنِ الْمُسَيَّبِ بْنِ رَافِعِ

عَنُ أَبِى صَالِحٍ قَالَ الْقُرْآنُ يَشْفَعُ لِصَاحِبِهِ فَيُكُسَى حُلَّةَ الْكُرَامَةِ ثُمَّ يَقُولُ رَبِّ زِدْهُ فَيُكُسَى تَاجُ الْكَرَامَةِ قَلَ الْكَرَامَةِ قَالَ فَيَقُولُ رَبِّ زِدْهُ فَأَتِهِ وَاتِهِ.... قَالَ: يَقُولُ رِضَائِى قَالَ أَبُو مُحَمَّد قَالَ : يَقُولُ رِضَائِى قَالَ أَبُو مُحَمَّد قَالَ : يُقُولُ رِضَائِى قَالَ أَبُو مُحَمَّد قَالَ : وَهَيُسبُ بُنُ الْوَرُدِ الجُعَلُ قِرَائَتَكَ وَهَيُسبُ بُنُ الْوَرُدِ الجُعَلُ قِمَلًا . ٥ الْقُرُ آنَ عِلُمًا وَلَا تَجُعَلُهُ عَمَلًا . ٥

ابوصالح فرماتے ہیں کہ: '' قرآن اپنے صاحب کی سفارش کرے گا تو اسے عزت کالباس پہنایا جائے گا۔ پھر وہ کھے گا: اے میرے رب! اس کو زیادہ دے پھر اسے عزت کا تاج پہنایا جائے گا۔ پھر وہ کہے گا اے میرے رب! اسے زیادہ اور اس کو دیتا رہ۔ تو اللہ تعالی فرمائے گا: ''میں اسے اپنی رضا مندی دیتا ہوں۔'' ابو محمد کہتے ہیں: وہیب بن ورد

نے کہا:'' قرآن کی تلاوت کوعلم بناؤ اورعمل مت بناؤ''

فوائد: (۱) قرآن ہے دوتی باعث خیراور قیامت کوعزت وکرامت کاباعث ہوگا۔ یہ جھی ممکن ہے جب قراءت قرآن پر دوام اختیار کیا جائے (۲) نیز وہیب رہ شید کے کہنے کا مطلب ہے کہ تلاوت قرآن بطور علم ہونی چاہیے یعنی سے تلاوت سے مقصود احکام اللی سیمنا ،علم حاصل کرنا ہونہ کہ آ دمی قراءت کو بطور عمل کر جیسے کوئی کام بلاسو ہے سمجھے انجام دے دیا جاتا ہے یعنی فقط قرآن کے حروف پڑھے جا کمیں ان کے معانی ومطالب برغور وخوض نہ کیا جائے۔

3357 حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ الْفَزَارِيُّ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي صَالِحِ

[•] حسن: أخرجه ابن ابي شيبه 496/10 ب497 (2008-10099) وابن منصور 113/1 (22)

عبد: أخرجه ابن ابي شيبه 10/495 (10097)

القرآن (كتاب فضائل القرآن) 694 (كتاب فضائل القرآن) 694

عَنُ أَبِي هُرَيُ رَقَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَنُ أَبِي هُرَيُ رَبُولُ اللّهِ عَنْ أَبِي أَهُلَهُ اللّهِ عَنْ أَلَهُ اللّهِ عَلَيْهُ اللّهِ عَلَمُ اللّهِ عَلَمُ إِذَا أَتَى أَهُلَهُ أَنُ يَجِدَ شَلَاتُ خَلِفَاتٍ سِمَانٍ) قَالُوا نَعَمُ يَا رَسُولَ اللّهِ قَالَ: ((فَشَلَاتُ آيَاتٍ اللّهِ قَالَ: ((فَشَلَاتُ آيَاتٍ اللّهِ عَلَمٌ لَهُ مِنْهُنَّ)). • يَقُرَؤُهُنَ أَحَدُكُمُ خَيُرٌ لَهُ مِنْهُنَّ)). • •

ابو ہریرة رفائق کہتے ہیں کہ رسول الله طفی آیا نے فرمایا:
"کیا تم میں سے کوئی اس بات کو پہند کرتا ہے کہ جب وہ
اپنے گھر آئے تو تین اونٹیاں بچوں والی موٹی تازی
پائے۔ لوگوں نے کہا: جی ہال رسول الله! آپ نے
فرمایا:" تین آیات اگرتم پڑھ لوتو وہ ان سے بہتر ہیں۔"

فوائد: (۱) کسی بات کے سمجھانے کاسب سے اہلغ ، بہترین اندازیہ ہے کہ خاطب کی ذبنی پہنچ کے مطابق مثال دی جائے جس سے بات اس کے ذبن کے قریب ہوجائے بات سمجھنے اور سمجھانے کایدایک بہترین طریقہ ہے۔ (۲) معلوم ہوا قرآن کی ایک ایک آیت بیش قیمت ہے تی کہ ایک ایک حرف انتہائی اہم ہے۔

3358 حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ هُوَ الْهَجَرِيُّ

ابواحوص کہتے ہیں عبداللہ نے کہا: ''قرآن اللہ کی دعوت ہے للبذا جس قدرہو سکے اس کی دعوت ہے لم حاصل کرلو۔ اور یقرآن اللہ کی رس ہے روش نور اور فائدہ مندشفا ہے اس مخص کے لئے حفاظت کا باعث ہے جواس پڑمل کرے اور اس مخص کے لئے حفاظت کا باعث ہے جواس پڑمل کرے تابعداری کرے نہ ٹیڑھا ہو کہ وہ معافی طلب کرے نہ ٹیڑھا ہو کہ وہ معافی طلب کرے نہ ٹیڑھا ہو گہو کہ حسیدھا کیا جائے۔ اور اس کے عجائب ختم نہیں ہول محل کے ۔ کثرت تکرار کے باوجود پرانانہیں ہوگا۔ لہذاتم اسے پڑھو کے ۔ کثرت تکرار کے باوجود پرانانہیں ہوگا۔ لہذاتم اسے پڑھو کے ۔ کثرت تکرار کے باوجود کے اللہ تعالیٰ ہمیں ہر حرف پر دس نیکیاں ہیں دے گا۔ یا رکھو میں ینہیں کہتا کہ الم کے بدلہ دس نیکیاں ہیں۔ '

❶ صحيح: أخرجه مسلم، كتاب صلاة المسافرين،باب فضل قراة القران وتعلمه(872)وابن ماجه، كتاب الأدب،باب ثواب القران(8782)

[€]ضعيف: ابراتيم بجري ضعيف بين أخرجه عبدالرزاق (6017) والبيهقي في شعب الإيمان (1980) والمحاكم 555/1

عَنْ الْدَّالِيْنِيُّ الْمُورِيِّ عَيْنَ الْدَّالِيْنِيُّ الْمُورِيِّ وَفَعَالِمُ الْقُرِآنِ وَفَعَالُمُ الْقُرآنِ

3359- حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن حَدَّثَنَا أَبُوْ حَيَّانَ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ حَيَّانَ

عَنُ زَيُدِ بُن أَرُقَمَ قَسالَ قَسامَ رَسُولُ زید بن ارقم کہتے ہیں کہ رسول الله عظیمین خطبہ دینے کے اللَّهِ عَلَيُّ يَـوُ مَّا خَطِيبًا فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثُنِّي لئے کھڑے ہوئے اللہ کی حمد و ثناء بیان کی پھر فرمایا: ''اے عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ ﴿ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَّا لوگو! میں بھی آ دمی ہوں قریب ہے کہ میرے رب کا قاصد بَشَرٌ يُوشِكُ أَنْ يَأْتِينِي رَسُولُ رَبّي میرے پاس آئے اور میں اسے قبول کرلوں میں تمہارے فَأَجِيبَهَ وَإِنِّي تَارِكٌ فِيكُمُ الثَّقَلَيُن اندر دو بھاری چیزیں چھوڑتا ہوں پہلی چیز قرآن ہے اس میں ہدایت اور نور ہے لہٰذاتم قرآن کومضبوطی ہے تھام لو أُوَّ لُهُ مَا كِتَابُ اللَّهِ فيهِ الْهُدَى وَ النَّو رُ فَتَمَسَّكُوا بِكِتَابِ اللَّهِ وَخُذُوا بِمِ) اوراسی کواختیار کرو۔ پھر آپ نے اس کے متعلق رغبت اور خواہش دلائی۔ پھر آپ نے فرمایا: ''دوسری چیز میرے فَحَتَّ عَلَيْهِ وَرَغَّبَ فِيهِ ثُمَّ قَالَ:((وَأَهُلَ بَيْتِي أَذَكِّ رُكُمُ اللَّهَ فِي أَهُلِ بَيُتِي الل بیت بی میں تمہیں این الله بیت کے متعلق الله کا ثَكُلاتُ مَرَّاتٍ)) . • واسطه دلاتا ہوں اس طرح آپ نے تین دفعہ فرمایا۔''

فوائد: (۱) یہ ججۃ الوداع سے واپسی کاموقع تھا یہ خطبہ آپ میں گئی آئی نے جھہ جو کہ مکہ و مدینہ کے درمیان مقام ہے کے قریب ''فم'' مقام پرارشاد فرمایا (۲) رسول الله میں آئی نور نہیں بلکہ بشر تھے اور آپ میں مقام ہو کہ اللہ علی آپ موت سے ہمکنار ہوکر اس دنیا کوچھوڑ گئے (۳) '' الثقلین' ان دونوں چیزوں کے عظیم المرتبت ہونے کی دلیل ہے اور چونکہ ان کی چیروی چونکہ بوجھل کام ہے لہذا انہیں تقلین سے تعبیر کیا گیا۔ (۴) اذکر کم اللہ کی حقیت کی بنا پران کا احترام واکرام کرنا اور ان کا خیال رکھنا۔

3360 حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن أَخْبَرَنَا الْأَعْمَشُ

عَنُ أَبِى وَائِلٍ قَالَ قَالَ عَبُكُ اللَّهِ إِنَّ هُذَا الصِّرَاطَ مُحُتَّضَرٌ تَحُصُرُهُ الشَّيَاطِيُنُ يُنادُونَ يَا عَبُدَ اللَّهِ هُذَا الطَّرِيُقُ فَاعْتَصِمُوا يَندُ لَالَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ الْحَلَامُ اللَّهُ الْحَلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللْحَلْمُ اللَّهُ اللْحَلْمُ اللْحَلْمُ اللْحَلْمُ الْحَلْمُ الْحَلْ

ابودائل کہتے ہیں کہ عبداللہ نے کہا: ''یہ راستہ موجودگی کی جگہ ہے جہاں شیطان موجود ہوتے ہیں وہ پکارتے ہیں:''اے اللہ کے بندے! اس راستہ پرآ'لہذاتم اللہ کی ری ومضوطی ہے تھام لواور اللہ کی ری قرآن ہے۔''

صحيح: أخرجه احمد4/366-367 ومسلم، كتاب فضائل الصحابه، باب فضائل على بن ابي طالب(2408)

[◘]صحيح: أخرجه البيهقي في شعب الإيمان(2025) والطبراني في الكبير 9031(9031) وابن منصور 1083/3.

القرآن (كَيْنَ الدَّالِيمِيُّ) 696 و كل كتاب فضائل القرآن ك

ف وائد : قرآن سے براہِ راست ہدایت کا حصول یہی محفوظ راستہ ہے جو کہ اللہ تک پیچانے والا ہے لہذا اس کو چھوڑ کر جو بھی راستہ اپنایا جائے وہ بظاہر کیسا ہی آراستہ کیوں نہ ہووہ شیطان کی راہ ہے۔ 3361 ۔ أَخْبِرَ نَا أَبُوْ الْمُخِيرَةِ حَدَّنَنَا عَبْدَةُ

· 3362 أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِع أَخْبَرَنَا حَرِيزٌ عَنْ شُرَحْبِيلَ بْنِ مُسْلِم الْخَوْلانِيِ

ابوامامہ سے روایت ہے بقینا آپ کہتے تھے: "قرآن پر موالہ میں نہ رہو پر موالہ میں نہ رہو کیونا اور ان لکتے ہوئے قرآنوں کے دھوکہ میں نہ رہو کیونکہ اللہ تعالی اس دل کوعذاب نہیں کرے گا جس نے قرآن یاد کیا ہوگا۔"

عَنُ أَبِى أُمَامَةَ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ اقْرَؤُوا اللهُ كَانَ يَقُولُ اقْرَؤُوا اللهُ رَآنَ وَلا تَغُرَّنَكُمُ هَذِهِ الْمَصَاحِفُ اللهُ مَلَّةِ اللهُ لَنُ يُعَذِّبَ قَلْبًا وَعَى الْقُرُآنَ . ٥ الْقُرُآنَ . ٥

فوائد: سان کواس امید پرنہیں رہنا چاہیے کہ ہمارے پاس مصحف موجود ہے لہذا جب ضرورت پڑی تو کھول کر پڑھ لیں گے اور مسئلہ اخذ کرلیں گے اس سے صرف یہی مقصود نہیں بلکہ یہ قیقی کا میا بی لین جہنم سے آزادی کا باعث ہے لیکن اس کے لیے ضروری ہے کہ اسے دل میں محفوظ کیا جائے اسے یاد کیا جائے تواس کے احکام پڑمل پیرا ہوا جائے۔

3363 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِح حَدَّثِنِي مُعَاوِيَةُ بْنُ صَالِح عَنْ سُلَيْمٍ بْنِ عَامِرٍ

ابوامامہ سے روایت ہے یقیناً آپ کہتے تھے: "قرآن پر مطور ان لئلے ہوئے قرآنوں کے دھوکہ میں ندرہو۔

عَنُ أَبِى أَمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ قَالَ الْحُرَثُوا الْقُرْآنَ وَلَا يَغُرَّنَكُمُ هَذِهِ الْسَصَاحِفُ

[🗘] جيد: أخرجه ابن ابي شيبه505/10(10128)

[🗗] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 505/11(10128)

www.sirat-e-mustageem.com 697 كاب فضائل القرآن ك

الكاليكي الكاليكي کیونکہ اللہ تعالیٰ اس دل کوعذاب نہیں کرے گا جسے قرآن

الْـمُعَلَّقَةُ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُعَذِّبُ قَلْبًا وَعَى

باد ہوگا۔'' الْقُرُ آنَ . ٥

3364 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ عَنْ مَعْنِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ

عَنِ ابُنِ مَسْعُودٍ قَالَ لَيْسَ مِنْ مُؤَدِّب ابن مسعود رضی ہے مروی ہے کہ انہوں نے کہا:'' کوئی

ادب سکھانے والانہیں جواس بات کو نا پیند کرتا ہو کہاس إِلَّا وَهُوَ يُحِبُّ أَنُ يُؤُتَى أَذَبُهُ وَإِنَّ أَذَبَ کے ادب پڑمل کیا جائے۔اللّٰہ کا ادب قر آن ہے۔'' الله الْقُرُ آنُ . ٥

3365 حَدَّثَ نَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ مَيْسَرَةَ عَنْ أَبِي الْأَحْوَصِ

عبدالله كہتے تھے كه: " يرآن الله كى دعوت ہے جو محض كَانَ عَبُدُ اللَّهِ يَقُولُ إِنَّ هٰذَا الْقُرُآنَ مَأْذُبَةُ اللَّهِ فَمَنُ دَخَلَ فِيهِ فَهُو آمِنٌ . ٥ اس مِن داخل بوامحفوظ بوكيا-''

3366 أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ

بْن يَزيدَ

عبداللہ سے مروی ہے کہ انہوں نے کہا: ''جس کو قرآن عَنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ مَنُ أَحَبُّ الْقُرُآنَ ہے محبت ہو وہ خوش ہو جائے۔'' فَلُيُبُشِرُ . ٥

فوائد: قرآن کوجس نے پڑھا سمجھا اور اس کے احکام پڑمل کیا ہے اس کے حق میں سفارشی ہوگا البتہ جس نے اس کے حق کی پاسداری نہ کی صرف مردے بخشوانے کے لیے تعویزات تکھوانے کے لیے ہی

اسے استعال كرتا رہايدا يك خض كے خلاف كواه موكار (اللهم اجعل القرآن ربيع قلوبنا)

3367 حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ يَزِيْدَ

عَنْ عَبُد اللَّهِ قَالَ مَنْ أَحَبَّ الْقُورُ آنَ عبدالله سے مردی ہے کہ انہوں نے کہا: ''جس کو قرآ ن

ہے محبت ہواہے جائے کہ خوش ہو جائے۔''

القه حدیث بی مکرر آئی ہے۔

فَلُيْبُشِرُ . 9

2 صحیح: به (3350) مدیث کی ایک طرف ہے۔

وصحیح: سابقہ (3350) کا ایک کنارہ ہے۔

صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 406/10 (10129) وابن منصور 1/21(3)

🗗 صحيح: سابقه صديث بي مررمنقول ہے۔

www.sirat-e-mustaqeem.com

698 كال كتاب فضائل القرآن كالتح الكانتين الك

3368 ـ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَنْبَأَنَا هَمَّامٌ عَنْ عَاصِم بْنِ أَبِيْ النَّجُودِ عَنِ الشَّعْبِيِّ.

أَنَّ ابُنَ مَسُعُودٍ كَانَ يَقُولُ يَجِيءُ الُقُرُآنُ يَوُمَ الُقِيَامَةِ فَيَشُفَعُ لِصَاحِبِهِ فَيَكُونُ لَهُ قَائِدًا إلى الْجَنَّةِ وَيَشُهَدُ

عَلَيْهِ وَيَكُونُ لَهُ سَائِقًا إِلَى النَّارِ. ٥

عَنُ أَنَّسِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ إِنَّ لِلَّهِ أَهُلِيُنَ مِنَ النَّاسِ قِيلَ يَا رَسُولَ اللَّهِ ا

مَنْ هُمْ قَالَ أَهُلُ الْقُورُ آن . ٥

3370-حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِم حَدَّثَنَا

عَنُ مُغِيثِ عَنُ كَعْبِ قَالَ عَلَيْكُمُ بِالْقُرُآنِ فَإِنَّهُ فَهُمُ الْعَقُلِ وَنُورُ الْحِكْمَةِ وَيَسَسَابِيعُ الْعِلْمِ وَأَحُدَثُ الْكُتُب بالرَّحْمَن عَهُدًا وَقَالَ فِي التَّوْرَاةِ يَا مُحَمَّدُ إِنِّي مُنَزِّلٌ عَلَيْكَ تَوْرَاةً حَدِيثةً تَفْتَحُ فِيهَا أَعُيُنًا عُمُيًا وَآذَانًا صُمًّا

وَ قُلُو بُا غُلُفًا . ا

یقبینًا بن مسعود نِلْنَهُ کُتِ شِحِهِ: '' قرآن قیامت کے دن آ کر اینے صاحب کی سفارش کرے گا اور اسے جنت کی طرف کھینچ کر لے جائے گا۔ اور اس کے خلاف گواہی دے گااہے دوزخ کی طرف ہانگ کر لے جائے گا۔''

3369 حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ أَبِيْ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا بُدَيْلٌ.....

الس بنائنية كبتے من رسول الله طبیعاً نِنْ نے فر ماما: ''مسجحه لوگ الله کے لوگ ہیں یو جھا گیا: یا رسول الله! وہ کون ہیں؟ فرمایا: '' قرآن پڑھنے والے۔''

حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ عَاصِمٍ بْن بَهْدَلَةً.

مغیث کہتے ہیں کعب نے کہا: 'قرآن کو لازم پکڑو کیونکہ قرآن عقل کی تیزی اور حکمت کی روشنی اور علم کا چشمه ہے۔ اور تمام کتابوں یہ نسبت اللہ سے نئی کتاب ہے۔ اللہ تعالى نے تورات میں فرمایا: "اے محدا میں تیرے یاس نی تورات بھیجتا ہوں' جواندھی آئکھوں بہرے کانوں اور بند دلوں کو کھول دیے گی۔''

فوافد: قرآن علم كامنع اور حكمت كانور عطانے والا اور دفاعی صلاحیتوں میں اضافے كا باعث ہے اس کامشاہدہ عام زندگی میں کیا جاسکتا ہے کہ قرآن کا حافظ اس کاعالم علمی میدان میں محنت کے ذریعے ۔ جس کارکردگی کامظاہرہ کرتا ہے عام مخص اتن محنت کر کے اس مقام تک نہیں پہنچ سکتا ہے اس طرح بیعلوم کاسرچشمہ بھی ہے کہ ہرعلم کی اصل آپ کو قرآن ہے میسر آئے گی۔ بہت سے علوم جن سے قرآن نے آگاہ کیا

 [◘] حسن: أخرجه ابن ابي شيبه 497/10(1010) و ابن الضريس في فضائل القرآن (108)

^{40/9} صحيح: أحرجه ابن ماجه في المقدمة،باب فضل من تعلم القران وعلمه (215) و الحاكم/و ابو نعيم في الحلية 40/9

[🛭] حسن: أخرجه ابو عبيد في فضائل القرآد (ص 77) وابن ابي شيبه 11/184 (11787)

الكَالِيْنِينَ الْكَالِيْنِينَ الْكَالِيْنِينَ الْكَالِيْنِينَ الْكَالِيْنِينَ الْكَالِيْنِينَ الْكَالِيْنِينَ

ہے انسانی عقل ان کو سمجھنے سے قاصر ہے البتہ وقت ان گھیوں کو سلجھا تا جاتا ہے اور قرآن کی حقانیت پرمہر ثبت كرتاجاتا ہے مثلاً انسان كاموا ميں بلند مونا، بلندى كى طرف جانے ہے آئسيجن كاكم مونا نظام تمشى كامتحرك ہوناوغیرہ۔

3371 حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا زِيَادُ بْنُ مِخْرَاقٍ عَنْ أَبِي إِيَاسٍ.....

ابو کنانہ کہتے ہیں ابو موسیٰ نے کہا:'' قرآن تمہارے لئے تواب کا باعث اور ذکر کا باعث ہے روشیٰ اور عذاب کا باعث بھی ہے قرآن کی فرمانبرداری کرو' اس کو اینا فر مانبر دار نہ بناؤ۔ کیونکہ جوقر آن کی فر مانبر داری کرے گا وہ جنت کے باغول میں آتارا حائے گا۔ اور جو اسے فرمانبردار بنائے گا وہ سر کے بل دھکیل کرجہم میں ڈالا جائے گا۔"

عَنُ أَبِي كِنَانَةَ عَنُ أَبِي مُوسَى أَنَّهُ قَالَ إِنَّ هٰذَا الْقُرُآنَ كَائِنَّ لَكُمْ أَجُرًا وَكَائِنٌ لَكُمُ فِكُرًا وَكَمَائِنٌ بِكُمُ نُورًا وَكَائِنٌ عَلَيْكُمُ وزُرًا اتَّبِعُوا الْقُرْآنَ وَلَا يَتَّبِعُكُمُ الْقُرْآنُ فَإِنَّهُ مَنُ يَتَّبِعِ الْقُرْآنَ يَهُبطُ بِهِ فِيُ رِيَاضِ الْجَنَّةِ وَمَنُ اتَّبَعَهُ الْقُرُآنُ يَزُحَّ فِي قَفَاهُ فَيَقُذِفُهُ فِي جَهَنَّمَ قَالَ أَبُوُ مُحَمَّد يَزُخُ يَدُفَعُ. ٥

فوائد: معلوم ہوا بندہ قرآن کا ہیرو بن جائے قرآن جدهر موڑتا جائے مڑتا جائے تو آخریداسے جنٹ میں پہنچائے گا اوراگر انسان اپنی خواہشات کا ہیرو بن جائے اور قرآن پیچھے سے پکارتا رہے اسے روکتا رہے تو اس کے عدم التفات کی بنا پراہے جہنم میں دھکیل دے گا۔

3372 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ أَيُّوْبَ قَالَ سَمِعْتُ عَمِّى

ایاس بن عامر کہتے تھے کہ علی بن ابو طالب رٹائٹھ نے میرا ہاتھ کیڑ کر کہا اگرتم زندہ رہے تو دیکھو گے قرآن کو تین قتم کے لوگ پڑھیں گے ۔ ایک اللہ کے لیے ، دوسرے جھکڑنے کے لیے ، اور تیسرے دنیا کے لیے اور اس کے ذریعہ سے جو تلاش کیا جائے گا وہی ملے گا۔''

إِيَاسَ بُنَ عَامِرِ يَقُولُ أَخَذَ عَلِيٌّ بُنُ أَبِي طَالِبِ بِيَدِى ثُمَّ قَالَ إِنَّكَ إِنْ بَقِيتَ سَيَقُرَأُ الْقُرْآنَ ثَلَاثَةُ أَصْنَافٍ فَصِنُفٌ لِلَّهِ وَصِنُفٌ لِلْجِدَالِ وَصِنُفٌ لِلدُّنْيَا وَمَنُ طَلَبَ بِهِ أَدُرَكَ . ٥

[🗨] صحيح: ابوكنانه شرط ابمن حبان پر ہے۔ أحرجه ابن ابي شيبه 484/10(1006)وابن منصور 49/1(8) والبيهقي في شعب الإيمان(2023-2024)

[🛭] صحيح: (مسند على)(734)

3373 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوْبَ

ابوقلابہ سے مردی ہے کہ ایک آدی نے ابودرداء سے کہا: "
اہل کوفہ سے آپ کے اہل ذکر بھائی آپ کوسلام کہتے ہیں
کہ تو انہوں نے کہا: "ان پر بھی سلام بھاور ان سے کہو
اپنی کیل قرآن کے حوالہ کردیں، کیونکہ وہ انہیں میانہ روی
اور آسانی سکھائے گا۔اورظلم وختی سے بچائے گا۔"

3374 أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ الرِّفَاعِيُّ حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ الْجُعْفِيُّ عَنْ حَمْزَةَ الزَّيَّاتِ عَنْ أَبِيْ الْمُخْتَارِ الطَّائِيِّ عَنِ ابْنِ أَخِي الْحَارِثِ

عَنِ الْحَادِثِ قَالَ دَخَلُتُ الْمَسْجِدَ فَاإِذَا أَنَاسٌ يَخُوصُونَ فِي أَحَادِيثَ فَلَدَ الْمَاسُ يَخُوصُونَ فِي أَحَادِيثِ فَلَدَ الْا تَرٰى أَنَّ الْسَايَخُوصُونَ فِي الْآحَادِيثِ فِي الْنَاسَايَخُوصُونَ فِي الْآحَادِيثِ فِي الْسَايَخُوصُونَ فِي الْآحَادِيثِ فِي الْسَعْجِدِ فَقَالَ قَدُ فَعَلُوهَا قُلُتُ نَعَمُ قَالَ الْمَسْجِدِ فَقَالَ قَدُ فَعَلُوهَا قُلُتُ نَعَمُ قَالَ الْمَسْجِدِ فَقَالَ قَدُ فَعَلُوهَا قُلُتُ نَعَمُ قَالَ الْمَسْجِدِ فَقَالَ قَدُ فَعَلُوهَا اللهِ عَلَيْ يَقُولُ اللهِ عَلَيْ يَقُولُ اللهِ عَلَيْ يَقُولُ اللهِ عَلَيْ يَقُولُ اللهِ فَي فَيْ وَمَا الْمَخُورَجُ مِنْهَا قَلْلَا عَلَى اللهِ فَي اللهُ وَمَن اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَمَن اللهُ وَمَن اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ وَمَن اللهُ
حارث ہے کہتے ہیں میں مجد میں گیا تو لوگ وہاں باتوں میں مشغول ہے۔ میں نے علی بڑاٹیو سے کہا: آپ ویکھتے نہیں کہ لوگ مجد میں باتیں کررہے ہیں انہوں نے کہا: کیا وہ ایسا کرتے ہیں؟ میں نے کہا: ''جی ہاں۔'' تو انہوں نے کہا: کیا کہا: ''میں نے رسول اللہ ملطے آئے ہوں گے۔ میں نے کہا: ''مین سے عقریب ہی بہت سے فقتے ہوں گے۔ میں نے کہا: ان سے کیسے بچا جائے گا؟ فرمایا: قرآن سے اس میں ان سے کیسے بچا جائے گا؟ فرمایا: قرآن سے اس میں تمہارے بعد کی اور پہلے کی خبر ہے اور تمہارے واقعات کا فیصلہ ہے۔ وہ فیصلہ کن جبر ہے اور تمہارے واقعات کا ترک کردے گا اللہ اسے توڑے گا۔ اور جو اسے چھوڑ کر ترک کردے گا اللہ تعالی اسے گراہ کر دے گا۔ اور جو اسے تھوڑ کر کہیں اور ہدایت تلاش کرے گا اللہ تعالی اسے گراہ کر دے گا۔ وہ اللہ کی مضبوط رسی ہے اور وہ ذکر کیم ہے۔ اور وہ دی سیدھا راستہ ہے۔ یہ وہ ہے۔ سے خواہشات ٹیڑھی وہی سیدھا راستہ ہے۔ یہ وہ ہے۔ سے خواہشات ٹیڑھی

حَصْلُ لِيَنْ الْكَالِيْوِيِّ الْكَالِيْوِيِّ مِنْ الْكَالِيْوِيِّ الْكَالِيْوِيِّ مِنْ الْعَرِ آن كَابُ وَصَائِلُ القرآن كَابُ

نہیں ہوتیں۔ اس سے زبانیں خلط ملط نہیں ہوتیں۔ علاء اس سے سرنہیں ہوتے کڑت کرار کے باوجود پرانانہیں ہوتا۔ اس کے عجائبات ختم نہیں ہوتے۔ بیروہ ہے کہ جب اسے جنول نے سنا تو بیر بات کے بغیر نہ رہ سکے کہ: ''ہم نے تو ایک عجب قرآن سنا ہے۔'' (سورۃ الجن:۲) بیروہ احکام کی کتاب ہے کہ جس نے اس کے مطابق بات کی اس نے کہ جس نے اس کے مطابق بات کی اس نے کہ جس نے اس کے دریعہ فیصلہ کیا اس نے عدل کیا۔ جس نے اس پڑمل کیا اجر پایا۔ جس نے اس کی طرف بلایا اسے سیدھا راستہ دکھایا گیا۔ اے اعور! ان

3375 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاءِ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيِّ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَبِيْ سِنَانِ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ عَنْ أَبِيْ الْبَخْتَرِيِّ عَنِ الْحَارِثِ

باتوں کو بادر کھے''

سیّدنا علی رفائی کہتے ہیں کہ کہا گیا: ''یا رسول اللہ!

آپ طلط کی امت فتنہ میں پڑجائے گ۔
پھر رسول اللہ طلط کی آئے ہے بوچھا گیا اس سے کوئی چیز بھیائے گئ و آپ نے فرمایا: ''کتاب عزیز' جس میں بالکل ہی جھوٹ نہیں نہ آگے نہ پیچھے وہ حکمت اور تعریف والے کی طرف سے نازل شدہ ہے۔'' (سورۃ فصلت: ۳۲) جواس کے علاوہ ہدایت تلاش کرے اے اللہ تعالی گراہ کر دیتا ہے اور جو سرکش شخص اس کے علاوہ کسی اور چیز سے فیصلہ کرے اللہ اسے ہلاک کرے گا۔ وہ ذکر محکیم ہے۔ فیصلہ کرے اللہ اسے ہلاک کرے گا۔ وہ ذکر محکیم ہے۔ واضح نور ہے۔سیدھا راستہ ہے۔ اس میں تمہارے سے واضح نور ہے۔سیدھا راستہ ہے۔ اس میں تمہارے ہے۔

عَنُ عَلِي قَالَ قِيلَ يَا رَسُولَ اللّهِ إِنَّ أُمَّتَكَ سَتُفُتَنُ مِنْ بَعُدِكَ قَالَ فَسَأَلَ رَسُولَ اللّهِ إِنَّ أُمُّتَكَ سَتُفُتَنُ مِنْ بَعُدِكَ قَالَ فَسَأَلَ رَسُولَ اللّهِ عَنَى أَوْ سُئِلَ مَا الْمَخْرَجُ مِنْهَا قَالَ الْكِتَابُ الْعَزِيزُ الَّذِي لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَلَيُهِ وَلَا مِنْ خَلَفِه تَنْزِيلُ مِنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ مَنِ البُتَغَى الْهُدَى فِي مَنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ مَنِ البُتغَى الْهُدَى فِي عَيْرِهِ قَصَمَهُ اللّهُ هُو عَيْرِهِ قَصَمَهُ اللّهُ هُو مِنْ جَبَّادٍ فَحَكَمَ بِعَيْرِهِ قَصَمَهُ اللّهُ هُو السَّورُ الْمُبِينُ اللّهُ مُو السَّورُ الْمُبِينُ وَالصَّورُ الْمُبِينُ وَالصَّورُ الْمُبِينُ وَالصَّورُ الْمُبِينُ وَالصَّمَةُ اللّهُ مُسَتَقِيعُ فِيهِ خَبَرُ مَنُ وَالمَ اللهُ وَالمَنْ وَالمَا اللّهُ مُونَ وَالمَسْرَاطُ اللّهُ مُسْتَقِيعُ فِيهِ فِيهِ خَبَرُ مَنْ وَالمَسْرَاطُ اللّهُ مُسْتَقِيعُ فِيهِ فِيهِ خَبَرُ مَنْ وَالمَسْرَاطُ اللّهُ مُسْتَقِيعُ فِيهِ فِيهِ خَبَرُ مَنْ وَالمَ

[•] ضعيف: ال مين الومخاراوراين أفى الحارث مجهول بين أخر جده ابن ابي شبيه 482/10 (10056) والترمذي، كتاب ثواب القران (1938) والتيرمذي، كتاب ثواب القران ،باب ماجاء في فضل القران (2908) والبيهقي في شعب (1935)

القرآن (كالمرابع على القرآن) المحال القرآن (كتاب فضائل القرآن) المحال (كتاب فضائل المحال) المحال (كتاب فضائل) المحال (كتاب

قَبُلَكُمُ وَنَبَأَ مَا بَعُدَكُمُ وَحُكُمُ مَا بَيُنكُمُ وَهُوَ الَّذِى وَهُوَ الَّذِى وَهُوَ الَّذِى سَمِعَتُهُ الْمُجِنُّ فَلَمُ تَتَنَاهَى أَنُ قَالُوا إِنَّا سَمِعَنَهُ الْمُجِنُّ فَلَمُ تَتَنَاهَى أَنُ قَالُوا إِنَّا سَمِعُنَا قُرُ آنًا عَجَبًا يَهُدِى إِلَى الرَّشُدِ سَمِعُنَا قُرُ آنًا عَجَبًا يَهُدِى إلى الرَّشُدِ وَلَا يَخُلَقُ عَنُ كَثُرَةِ الرَّدِ وَلَا تَنْقَضِى عَجَائِبُهُ ثُمَّ قَالَ عَلِى المُعَلِينَ عَجَائِبُهُ ثُمَّ قَالَ عَلِى للْحَادِثِ خُذُهَا إِلَيْكَ يَا أَعُورُ . • فَلَمَ إِلَيْكَ يَا أَعُورُ . • فَلَمَا إِلَيْكَ يَا أَعُورُ . • فَلَمَا إِلَيْكَ يَا أَعُورُ . • فَالمَا اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ ا

فواند: (۱) فتنوں کے دور میں قرآن بہتری محافظ ہوگا ای کو اپنانے والے اپنے آپ کوفتنوں

سے بچاپائیں گے(۲) من ابت غی الهدی فی غیرہ اضله الله ، سے معلوم ہوا کہ قرآن ہاعث ہدایت ہاں سے ہدایت حاصل کرنے والے ہی صراط متقیم کے راہی ہوں گے لہذا کس قدر غلطی پر ہے وہ شخص جولوگوں کو قرآن پڑھنے سے اس لیے روک رہا ہے کہ اگرتم نے قرآن پڑھ کر سجھنے کی کوشش کی تو تم گراہ ہوجاؤ گے(العیاذاللہ) یہی لوگ ہیں جو قرآن کو چھوڑ کو کہیں اوراسے ہدایت حاصل کرتے ہیں نتیج کے طور پر خود بھی گراہ ہوتے ہیں اوراپنے متبعین کی گراہی کا بھی سبب بنتے ہیں۔

3376 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيْ حُمْرَةَ

عَنُ إِبُواهِيمَ وَمَنُ يُؤُتَ البِحِكُمَةَ فَقَدُ ابراہیم سے مروی ہے کہ آپ نے فرمایا: ''جو حکمت دیا گیا أُوتِی خَیْرًا كَثِيرًا قَالَ الْفَهُمَ بِالْقُرُآنِ . ۞ وہ خیر کثیر یا گیا۔'' (سورة البقرة : ٢٦٩) آیت كی تفسیر

وہ خیر کثیر پا گیا۔' (سورۃ البقرۃ : ۲۲۹) آیت کی تفسیر کرتے ہوئے فرمایا:'' حکمت سے مرادفہم قرآن ہے۔''

3377 ـ أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ عَنْ وَرْقَاءَ

عَنِ ابُنِ أَبِي نَجِيُحٍ عَنُ مُجَاهِدٍ يُؤُتِى ابْن ابونجيح _َ الْحِكُمَةَ مَنُ يَشَاءُ قَالَ الْكِتَابَ يُؤُتِي مَنُ يَشَآءُ ''كَلَّمْ

إِصَابَتَهُ مَنُ يَشَاءُ . 🕰

ابن ابونجيح كهتم بين كرمجابد نے: "يُوثِي الْحِكْمَةِ مَنْ يَشَاءُ "كَاتْسِر مِين كها: "الله جے چاہتا ہے قرآن كى

ٹھیک مجھ عطا کرتا ہے۔''

[●] حسن: أخرجه الخطيب في الفقيه والمتفقه 55/1و الرازي في فضائل القران(35)

ضعیف: أخرجه الطبری فی التفسير 90/3

[€] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 231/7(3009) والطبري في التفسير 90/3

الكانين الكانين الكانين الكانين الكانين 703 كتاب فضائل القرآن كتاب 3378 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا أَبُوْ بَكْر

المش کہتے ہیں خیشمہ نے اپنی بیوی سے کہا: "میرے گھر میں ایسے آ دمی کو داخل کرنے (اجازت دینے) سے بچنا جو شراب بيتا ہوحالانكه پہلے وہاں قر آن پڑھا جاتا تھا۔''

عَن الْأَعْمَدِش عَنُ خَيْثَمَةَ قَالَ قَالَ لِامُواُتِهِ إِيَّاكِ أَنْ تُدُجِلِي بَيْتِي مَنْ ا يَشُرَبُ الْخَمُو بَعُدَ أَنُ كَانَ يُقُرَأُ فيه الُقُرُ آنُ كُلَّ ثَلاث . •

3379 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا فِطْرٌ عَنِ الْحَكَمِ

مقسم کہتے ہیں کہ ابن عباس ذائنیہ نے فرمایا: 'دمتہمیں اس بات سے کون سے چیز روکتی ہے کہ جب بازار سے یاکسی حاجت ہے لوٹو تو قرآن کی تین آیات پڑھ لیا کرو''

عَنُ مِقْسَمٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسِ قَالَ مَا يَمُنَعُ أَحَدَكُمُ إِذَا رَجَعَ مِنْ سُوقِهِ أَوْ مِنْ حَاجَتِهِ فَاتَّكًا عَلْيَ فِرَاشِهِ أَنْ يَقُرَأُ ثَكُلاكَ آيَاتٍ مِنَ الْقُرُآنِ . ٥

[2] بَابِ خِيَارُكُمُ مَنُ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَةُ قر آن سیکھنے اور سکھانے والی کی خوبی

3380- أَخْبَرَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ إِسْلَحَقَ حَدَّثَنَا النُّعْمَانُ بْنُ سَعْدِ

سیدنا علی والفید کہتے ہیں کہ رسول الله مطبع الله نے فرمایا: ''تم میں ہے بہتر وہ ہے جوقر آن کیکھے اور سکھائے۔'' عَنُ عَلِي قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْهُ خَيْرُكُمُ مَنُ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ. ٥

فوائد: زبان نبوت سے نکلنے والی ان کلیوں کے مطابق زمین رموجود کا مول میں سے بہترین کام یہ بیں کہ انسان علم سکھ یاسکھلائے لہذائ حدیث کے مصداق بننے کے لیے ضروری ہے کہ انسان ان تین حالتوں میں ہے کسی ایک پر ہو یاتو وہ علم سکھ رہا ہو پاسکھا رہا ہواگران کاموں کی استعداد نہ رکھتا ہوتو تم از کم اس کام میں مشغول لوگوں کا تعاون کرتا رہے لیکن یا در ہے! اس علم سے مراد قرآن وسنت کاعلم ہے۔

صحيح: أخرجه اند ـ رى في سعرقة والتاريخ143/3 وابونعيم في الحلية 115/4

[🗨] صحيح: أخرجه بن لممارك في الزهد(807)وابن عدى في الكامل 249/1 والطبراني في الكبير 11//398 والبيهقي في شعب (2003-2198)

[🛭] صحيح: أخرجه الترمذي، كتاب نرب القران،باب في تعليم القرآن وابن ابي شيبه 503/10(10121)والخطيب في تاريخ 459/10

حَكُو لِيُعَنَّى الْكَالِيْعِينَ ﴾ ﴿ 704 ﴿ كَتَابِ فَصَائِلِ القرآن ﴾ ﴿ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ

3381 حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ أَخْبَرَنِي عَلْقَمَةُ بْنُ مَرْثَلِدِ قَالَ سَمِعْتُ سَعْدَ ابْنَ عُبَدَةً عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ

عَنُ عُشُمَانَ عَنِ النَّبِي عِنَى النَّبِي عِنَى النَّبِي عَنَى عُشَمَانَ عَنَ عَنَ عُشَمَانَ عَنَ عَنَ عُشَمَانَ عَنَ عَنَ عَنَ عُشَمَانَ عَنَ عَنَانَ مِنْ عَلَمَ الْقُرُ آنَ أَوْ تَعَلَّمَهُ قَالَ سے بہتر وہ ہے جو قرآن سیکھتا ہے یا سکھاتا ہے۔ اَقُوراً اَبُو عَبُدِ الوَّحُمَنِ فِی إِمْرَةِ عُشُمَانَ الوَعبدالرحلٰن نے عثان رَائِقَ کی خلافت سے جاج کے زمانہ حَتٰی کان الْحَجَّا ہُ قَالَ ذَافَ أَقْعَدَنِی تَک قرآن برِ هایا اور کہا:" مجھے اس حدیث نے اس جلہ مُقَعَدی هٰذَا . • مُعَلَّمُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ الْهُ اللَّهُ اللَّ

3382 حَدَّثَنَا الْمُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا الْحَارِثُ بْنُ نَبْهَانَ حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ بَهْدَلَة

مصعب بن سعد اپنے والد سے نقل کرتے ہیں کہ رسول اللہ عظی کی اللہ علی کے جو قرآن اللہ عظی کی اللہ علی کا اللہ علی کا اللہ علی کا اللہ علی کا اللہ علی کہ اللہ علی کہ اللہ علی کہ اللہ علی کہ کا اللہ علی کہ اللہ علی کہ علی کی مراس مگہ بٹھا دیا تا کہ عیس پڑھاؤں۔

عَنُ مُصُعَبِ بُنِ سَعُدٍ عَنُ أَبِيُهِ قَالَ قَالَ وَالَ وَالَ وَالَ رَسُولُ اللّهِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ اللّهِ وَلَيْ خِيَارُكُمْ مَنُ تَعَلَّمَ الْقُرُآنَ وَعَلَّمَ الْقُرُآنَ قَالَ فَأَخَذَ بِيَدِى فَأَقُومُ الْقُرُمُ الْقُومُ وَقَالَ فَأَخَذَ بِيَدِى فَأَقُعَدَنِي هٰذَا الْمَقُعَدَ أُقُرء . ٥

[3] بَابِ مَنُ تَعَلَّمَ الْقُرُآنَ ثُمَّ نَسِيَهُ قَرَآن يُرَ عَن يَرُعِ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى الللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى

3383 حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ عَامِرِ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ أَبِيْ زِيَادٍ عَنْ عِيْسَى عَنْ رَجُل

سعد بن نبادة كہتے ہيں رسول الله طفط الله نے فرمایا: "جو آن پڑھنے كے بعدات بھول جائے۔ وہ قيامت كدن الله تعالى سے كوڑھ كى حالت ميں ملے گا۔" ابومحمد كہتے ہيں: "دعيلى _ فائد كے بيٹے ہيں۔"

عَنُ سَعُدِ بُنِ عُبَادَةً أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَىٰ اللَّهِ عَلَىٰ اللَّهِ عَلَىٰ اللَّهِ عَلَىٰ اللَّهُ الْقُرُآنَ ثُمَّ يَنُسَاهُ إِلَّا لَقِى اللَّهَ يَوُمَ الْقِيَامَةِ وَهُوَ ابْنُ الْجُنَمُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد عِيسَى هُوَ ابْنُ

فَائِدٍ. 9

فوائد: قرآن كے بھولنے كے متعلق وارد ہونے والى روايت صحيح ثابت نہيں البته قرآن كوياد كرنے

❶ صحيح: أخرجه النسائي في فضائل القران(61-62)والبيهقي في شعب(2205-2206)

صحیح بالشاهد: أخرجه ابن منصور 103/1(20)

الصعيف: أخرجه احمد 285/52و ابوداؤد، كتباب الصلاة، باب التشديد فيمن حفظ القران ثم نسيه (1474) وابن ابي شبيه 74/10 (1044)

www.sirat-e-mustageem.com

كُلُونَ الْكَالِيْعِينَ ﴾ ﴿ 705 ﴿ كُتَابِ فَضَائِلُ الْقَرَآنَ ۗ ﴿ كُتَابِ فَضَائِلُ الْقَرَآنَ ۗ

کے فضائل کو مدنظر رکھتے ہوئے انسان کو کوشش کرنی جا ہے کہ یہ بھو لنے نہ پائے۔

[4] بَابِ فِي تَعَاهُدِ الْقُرُ آن قرآن کی نگہداشت

3384 حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُبَيْدَةَ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ ﴿

ناجیہ بن عبداللہ بن عتبہ اپنے والدے نقل کرتے ہیں کہ عَنُ نَاجِيَةَ بُنِ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عُتُبَةَ عَنُ أَبِيهِ عبدالله نے کہا:' کر ت سے قرآن کی تلاوت کیا کرواس عَنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ أَكُثِرُوا تِلاوَةَ الْقُرُآنِ

ے پہلے کہ وہ اٹھالیا جائے۔" لوگوں نے کہا:" سیصحف تو قَبُلَ أَنُ يُرُفَعَ قَالُوا هَذِهِ الْمَصَاحِفُ

اٹھا لئے جائیں گے مگر سینوں سے قرآن کیسے ختم ہوگا؟ تُرْفَعُ فَكَيْفَ بِمَا فِي صُدُورِ الرِّجَالِ انہوں نے کہا:''رات کولوگ قرآن پڑھیں اور صبح انہیں قَالَ يُسْرَى عَلَيْهِ لَيُلا فَيُصْبِحُونَ

كي يونبين رب كا اوروه كلمه لا إله إلا الله يرصابهي مِـنُهُ فُقَرَاءَ وَيَنُسَوُنَ قَوُلَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ا

بھول جائیں گئ جاہلیت کی باتوں اور شعروں میں پڑ وَيَـقَعُونَ فِي قُولِ الْجَاهِلِيَّةِ وَأُشُعَارِهِمُ

جائیں گے۔ بیاس وقت ہوگا جب اللہ کے عذاب کا وعدہ وَ ذٰلِكَ حِينَ يَقَعُ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ . ٥ آ جائے گا۔''

3385 حَدَّثَنَا الْمُعَلِّي بْنُ أَسَدِ حَدَّثَنَا سَلَّامٌ يَعْنِي ابْنَ

ابن ابومطیع کہتے ہیں کہ قادہ واللہ فرماتے تھے: '' قرآن أَبِى مُطِيع قَالَ كَانَ قَسَادَةُ يَقُولُ ہے اپنے دلوں اور گھروں کو آبادر کھو۔'' اعْمُرُوا بِسهِ قُلُوبَكُمْ وَاعْمُرُوا بِهِ

بُيُو تَكُمُ قَالَ أَرَاهُ يَعْنِي الْقُرُ آنَ. ٥

3386 ـ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ عَاصِمٍ عَنْ زِرِّ

عَنِ ابُنِ مَسْعُودٍ قَالَ لَيُسُرَيَنَّ عَلَى الُــقُــرُآن ذَاتَ لَيُلَةٍ فَلا يُتُرَكُ آيَةٌ فِي

> مُصْحَفٍ وَلَا فِي قَلْبِ أَحَدٍ إِلَّا رُفِعَتُ . ٥ دل میں بلکہ سب اٹھالی جائیں گی۔''

ابن مسعود سے مروی ہے کہ آب نے کہا: ''(ایک وقت الیا ہوگا) رات کولوگ قرآن پڑھیں گے اور صبح کو کوئی آیت مصحف میں نہیں چھوڑی جائے گی اور نہ ہی کس کے

[🛭] صحيح: أنعرجه ابن منصور 9/335(97)و الـحاكم 5/4/4وعبدالرزاق(5981)و الـطبـرانـي في الكبير 153/9 (8698) و ضعیف: سلام کی قنادہ سے روایت مشکلم فیہ ہے۔

[€] حسن: أحرجه ابن ابي شيبه 10/534 (10242) وعبدالرزاق (5980) و البخاري في خلق افعال العباد (ص86)

كال كتاب فضائل القرآن كالحك حصر يُعْتَىٰ الْكَالِيْفِيْ

3387ء حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيْرِ

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُن وَاقِدٍ عَنُ قَتَادَةَ قَالَ مَا جَسالَسَ الْقُرُآنَ أَحَدٌ فَقَامَ عَنْهُ إِلَّا بىزيَاحَةٍ أَوْ نُـقُصَان ثُمَّ قَرَأَ وَنُنَزَّلُ مِنَ الْقُرُآن مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحُمَةٌ لِّلُمُؤُمِنِيُنَ وَلَا يَزِيُدُ الظَّالِمِيُنَ إِلَّا خَسَارًا. ٥

عبدالله بن واقد كہتے ہيں كه قادة والني نے فرمايا: "كوكى قرآن کے قریب نہیں بیٹھے گا مگر وہاں سے نفع یا نقصان لے کر اٹھے گا ۔''پھریہ آیت پڑھی:''اورہم نے قرآن نازل کیا اس میں مومنین کے لئے شفاء اور رحمت ہے اور ظالموں کے لئے اس میں خسارہ ہے۔''

رفدہ غسانی بیان کرتے ہیں کہ ثابت بن عجلان انصاری

نے کہا: '' حکمت سے مراد قرآن ہے۔''

فوائد: قرآن کی مجلس میں بیٹھنے والے اگر تواس کی آیات کوس کران پڑمل بیرا ہوجاتے ہیں پھرتو قرآن ان کے لیے رحمت اوراگر من کرعمل نہ کیا جائے تو یہی قرآن کاسننا ان کے خسارے کاباعث ہوگا۔

3388 حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ..

حَـدَّثَنَا رِفُدَةُ الْغَسَّائِيُّ حَدَّثَنَا ثَابِتُ بُنُ عَجُلَانَ الْأَنْصَارِيُّ قَالَ كَانَ يُقَالُ إِنَّ اللُّهَ لَيُرِيدُ الْعَذَابَ بِأَهُلِ الْأَرْضِ فَإِذَا سَمِعَ تَعُلِيمَ الصِّبْيَانِ الْحِكْمَةَ صَرَفَ

ذٰلِكَ عَنْهُمُ قَالَ مَرُوَانُ يَعُنِي

بِالْحِكُمَةِ الْقُرُآنَ . ٥

3389- أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ خَالِدٍ عَنِ ابْنِ جَابِرِ

حَـدَّتُنَا شَيُخٌ يُكَنَّى أَبَا عَمُرو عَنُ مُعَاذِ بُن جَبَل قَالَ سَيَبُلَى الْقُرُآنُ فِي صُدُورِ أَقُوَامٍ كَمَا يَبُلَى الثَّوْبُ فَيَتَهَا فَتُ يَـقُـرَئُـونَهُ لَا يَجدُونَ لَهُ شَهُوَةً وَلَا لَذَّةً يَـلُبَسُوٰنَ جُـلُودَ الصَّأْن عَلَى قُلُوب اللِّفَابِ أَعُمَالُهُمْ طَمَعٌ لَا يُحَالِطُهُ

ایک شخص جن کی کنیت ابوعمروتھی بیان کرتے ہیں کہ معاذ بن جبل رہائیۂ نے فر مایا :''عنقریب قر آن کیچھ لوگوں کے دلوں میں برانا ہو جائے جس طرح کیڑا برانا ہوتا ہے اور گر یر تا ہے ،قرآن تو پڑھیں گے مگر نہاس کی خواہش ہوگی اور نہ لذت وہ بھیر بوں کے داوں یر بھیر کی کھالیں پہنیں گے(ان کے جسم بھیڑ کی مانند اور دل بھیڑ یئے کی مانند

¹ ضعيف: محمد بن كثير ضعيف ب، أخرجه ابو عبيد في فضائله (ص 56-57)

عصعیف: رفده بن قضاعة ضعیف ہے۔

المُعْرِينَ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُونَ المُعَالِقُ المُعَالِقِ المُعَالِقُ المُعَالِقِ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعْلِقُ المُعَالِقُ المُعْلِقُ المُعْلِقُ المُعْلِقُ المُعْلِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعْلِقُ المُعْلِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعْلِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعِلِقُ المُعَالِقُ المُعِلِقُ المُعِلِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعِلِقُ المُعَالِقُ المُعْلِقُ المُعَالِقُ المُعَالِقُ المُعْلِقُ المُعْلِقُ المُعْلِقُ المُعْلِقُ المُعِلِقُ المُعِلِقُ المُعِلِقُ المُعِلِقُ المُعِلِقُ المُعِلِقُ المُعِلِي المُعِلِقُ المُع

ہوں گے)۔ان کے کام لالج والے ہوں گے ، جس میں خوف نہ ہوگا ، اگر کوتا ہی کریں گے تو کہیں گے :'' ابھی کر لیں گے تو کہیں گے :'' ابھی کر لیں گے تو کہیں گے :عنقریب ہم بخش دیئے جائیں گے ۔ہم اللہ کے ساتھ شرک تو نہیں

خَوُفٌ إِنْ قَصَّرُوا قَالُوا سَنَبُلُغُ وَإِنُ أَسَائُوا قَالُوا سَيُعُفَرُ لَنَا إِنَّا لَا نُشُرِكُ باللهِ شَيْئًا •

عبداللہ کہتے ہیں کہ نبی ملطق آئی نے فرمایا: ''میہ بری بات ہے کہ کوئی کے: میں فلاں آیات بھول گیا بلکہ وہ بھلادیا گیا ہے ۔ قرآن کو یاد کیا کرو کیونکہ یہ سینوں میں سے اس سے بھی جلدی نکل جاتا ہے جتنی جلدی جانورا پی رسی سے نکلتے عَنُ عَبُدِ اللّهِ عَنِ النّبِي عِنْ قَالَ بِمُسَمَا لِأَحدِكُم أَنْ يَقُولُ نَسِيتُ آيَةَ كَيْتَ وَكَيْتَ وَكَيْتَ بَلُ هُوَ نُسِّى وَاسْتَذُكِرُوا وَكَيْتَ بَلُ هُو نُسِّى وَاسْتَذُكِرُوا الْعُرْآنَ فَإِنَّهُ أَسُرَعُ تَفَصِّيًا مِنُ صُدُورٍ الدِّجَالِ مِنَ النَّعَمِ مِنْ عُقْلِهَا . ٥ الرِّجَالِ مِنَ النَّعَمِ مِنْ عُقُلِهَا . ٥

فواند: (۱) "تفصِّیتا" ہے چھوٹ کر بھا گ لکنا۔ "عُقل" بیعقال کی جمع ہے اس سے مراد وہ رسی ہے جس سے اونٹ کی ٹانگ باندھی جاتی ہے (۲) قرآن کو یا در کھنے کے لیے ضروری ہے کہ آدی اسے پڑھتارہے۔

3391 حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ حَدَّثَنَا مُوسَى يَعْنِي ابْنَ عُلَيِّ قَالَ سَمِعْتُ أَبِيْ قَالَ

عقبہ بن عامر والنفذ کہتے ہیں: رسول اللہ طفی آیا نے فرمایا:

'' اللہ کی کتاب سیکھواور اس کی نگداشت کرو، اسے پڑھو،
اس سے خوش الحانی سے پڑھو، اس ذات کی قتم جس کے ہاتھ میں میری جان ہے یا اس ذات کی قتم جس کی ہاتھ میں محمد طفی ہیں ہات کے ری میں محمد طفی ہیں جان ہے! قرآن حاملہ اونٹی کے ری سے نکلنے ہے بھی جلدی سینول سے نکل جاتا ہے۔''

سَمِعُتُ عُقْبَةَ بُنَ عَامِرٍ يَقُولُ : قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَيْ تَعَلَّمُوا كِتَابَ اللهِ وَسَعَاهَدُوهُ وَتَغَنَّوُا بِهِ وَاقْتَنُوهُ فَوَالَّذِى نَفُس مُحَمَّدٍ نَفُسِى بِيَدِهِ أَوْ فَوَالَّذِى نَفُسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَهُ وَ أَشَدُّ تَفَلَّنَا مِنَ الْمَحَاضِ فِي اللهِ وَالْمَحَاضِ فِي الْمُحَاضِ فِي اللهِ فَالْمُحَاضِ فِي الْمُحَاضِ فِي الْمُحَاضِ فِي الْمُحَاضِ فِي اللهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهُ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهِ اللّهُ
[🛈] صحبح: يەمعاذىيەموتوف ہے۔

متفق عليه: أعرجه البخاري، كتاب فضائل القران، باب استذكار القران وتعاهده (5032) ومسلم، كتاب صلاة المسافرين، باب فضائل القرآن وما يتعلق به (790)

[◘]صحيح: أخرجه احمد 146/4والنسائي في فضائل القرآن(59-60)

فسواند: (۱) آپ سے اللہ قرآن سکھ کراہے یادر کھنے کا حکم دے رہے ہیں البذااس کا خصوصی اہتمام کرنا چاہیے (۲)"تبغین ابه" علماء نے تغنی کے مختلف مطالب بیان کیے ہیں جن میں سے راج میہ ہے اسے کٹن کے ساتھ میٹھی آواز میں پڑھا جائے لیکن اس میں اتنا تکلف نہ برتا جائے کہ اصل مقصد ہی فوت ہوجائے (تفصیل کے لیے دیکھیے تنقیح الرواۃ 59/2)

3392 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِح قَالَ حَدَّثَنِي مُوسَى عَنْ أَبِيْهِ

عَنُ عُقُبَةَ بُنِ عَامِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِنْهُ عَامِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عِنْهُمْ قَىالَ تَعَلَّمُوا كِتَىابَ اللَّهِ تَعَالَى وَتَعَاهَدُوهُ وَاقْتَنُوهُ وَتَغَنَّوُا بِهِ فَوَالَّذِى نَـفُسِسى بيَدِهِ لَهُوَ أَشَدُّ تَفَلَّتُا مِنَ

المَخَاضِ فِي الْعُقُلِ. ٥

عَنِ ابُن أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ عِكُرِمَةَ بُنَ أَبِي جَهُل كَانَ يَضَعُ الْمُصْحَفَ عَلَى وَجُهِهِ وَيَقُولُ كِتَابُ رَبِّي كِتَابُ رَبِّي . 🕰

عقبه بن عامر كہتے ہيں كه رسول الله طفي الله نے فرمايا: " اللّٰد کی کتاب سکیھو ،اس کی حفاظت کرو ،اس سے لگاؤ رکھو اوراہے غنا کے ساتھ پڑھو۔اور ذات کی قتم جس کے ہاتھ میں میری جان ہے! قرآن اس ہے بھی جلدی سے نکل جا تا ہے جتنی حاملہ اونٹنی رسی سے نکلتی ہے۔''

3393 - أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدِ عَنْ أَيُّوْبَ

ابن ابوملیکہ ہے منقول ہے کہ عکرمہ رہائیڈ بن ابوجہل قرآن کوایے چبرے پررکھتے (آنکھوں سے لگاتے) تھے اور کہتے تھے:'' پیمیرے رب کی کتاب ہے بیمیرے رب کی کتاب ہے۔"

3394 حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ

حَدَّثَنَا ثَابِتٌ قَالَ كَانَ عَبُدُ الرَّحْمَنِ بُنُ أُبِيُ لَيُسلَى إِذَا صَلَّى الصُّبُحَ قَرَأً الْـمُـصُـحَفَ حَتَّى تَطُلُعَ الشَّمُسُ قَالَ وَكَانَ ثَابِتٌ يَفُعَلُهُ . ٥

ثابت کہتے ہیں کہ عبدالرحمٰن بن ابولیکٰ جب صبح کی نماز یر مصتے تو سورج طلوع ہونے تک قرآن بر مصتے رہتے۔ ہمام کہتے ہیں:'' ثابت بھی اییا ہی کرتے تھے۔''

[◘] صحيح: أخرجه النسائي، كتاب فضائل القران(60) والطبراني في الكبير 290/17-291(800-801-800)

[🛭] منقطع ضعيف: ابن الي مليكه نے عمر مكونين پايا ـ أخر جه الحاكم 243/3 والبيه قبي في الشعب (2229) والبطبراني الكبير 371/17(1018)

³ صحيح: أخرجه ابن سعد في الطبقات 75/6

www.sirat-e-mustageem.com

يُتِنِينُ ٱلْكَالِينِينَ ﴾ ﴿ 709 ﴿ 20 كُتَابِ فَضَائِلِ القرآنُ ﴿ [5] بَابِ الْقُرُآنُ كَلَامُ اللَّهِ

قرآن الله كاكلام ہے

3395 - أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الرَّقَاشِيُّ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ زُرَيْعِ

عَنُ سَعِيدٍ عَنُ قَتَادَةً قَالَ فَأَمَّا الَّذِينَ سعید سے منقول ہے کہ قادۃ خِالنین نے کہا قرآن کی اس آمَنُوا فَيَعُلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ قَالَ آیت:''وہ لوگ جوایمان لائے جانتے ہیں کہ بیان کے رب كى طرف سے حق ہے۔ "(سورة البقرة:٢٦) كى تفير كرتے ہوئے كہا: 'مسلمان جانتے ہیں كدوہ رحمٰن كا كلام

أَى يَعْلَمُونَ أَنَّهُ كَلامُ الرَّحُمَنِ. ٥

3396 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ صَالِحٍ عَنْ مُعَاوِيَةً بْنِ صَالِحٍ عَنْ أَبِيْ بَكْرِ بْنِ أَبِيْ مَرْيَمَ

عطيه وظافية كہتے ہيں كه رسول الله طفيَّ عَلَيْهِ في فر مايا: "الله عَنُ عَطِيَّةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ مَا مِنُ كَلام أَعُظَمُ عِنْدَ اللهِ مِنُ كَلامِهِ تعالی کے نزدیک اس کے کلام سے بڑھ کر پیارا کوئی کلام

وَمَا رَدَّ الْعِبَادُ إِلٰى اللَّهِ كَلامًا أَحَبَّ إِلَيْهِ تہیں اور بندے اللہ ہے اس کی کلام سے بڑھ کر کوئی کلام

نہیں کرتے جواہے محبوب ہو۔" من کَلامه 🍳

3397 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوْسُفَ عَنْ إِسْرَاثِيلَ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْمُغِيْرَةِ الثَّقَفِيُّ عَنْ سَالِمِ ابْنِ أبيُ الْجَعْدِ

> عَنُ جَابِرِ بُنِ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ عِنَّكُمْ يَعُرِضُ نَفُسَهُ فِي الْمَوْسِمِ عَلَى النَّاسِ فِيُ الْمَوْقِفِ فَيَقُولُ هَلُ مِنُ رَجُلِ يَحْمِلُنِي إلَى قَوْمِهِ فَإِنَّ قُرَيْشًا مَنَعُونِيُ أَنُ أَبَلِّغَ كَلامَ رَبِّي . 6

سيّدنا جابر بن عبدالله والعنوا كہتے ہيں كه رسول الله ملطّ عَلَيْم ع کے موقع پر موقف میں لوگول کے پاس جا کر کہتے تھے: '' کوئی مخض ہے جو مجھے اپنی قوم کے پاس لے جائے۔ کیونکہ قریش نے مجھے اینے رب کا کلام پہنیانے سے روک

3398 حَدَّثَنَا إِسْحَقُ حَدَّثَنَا جَرِيْرٌ عَنْ لَيْثٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْل

دیاہے۔''

^{180/1} صحيح: أخرجه الطبراني في التفسير

² ضعيف: أخرجه البيهقي في الأسماء والصفات (ص 244)

[◙] صحيح: أخرجه احمد 390/3وابن ابي شببه 310/10(18431)وابوداؤد، كتاب السنة،باب في القران (4734) والترمذي، كتاب ثواب الفراك،باب حرض النبي صلى الله عليه وسلم على تبليغ القراك(2926)

وَ اللَّهُ الْكَالِيْوِيُّ اللَّهُ وَ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ وَ اللَّهُ وَانْ اللَّالِي اللَّهُ وَانْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَانْ اللَّهُ وَالْمُوانُولُ اللَّهُ وَانْ اللَّهُ وَانْ اللَّهُ وَانْ اللَّهُ وَانْ اللَّهُ وَانْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَانْ اللَّهُ وَانْ اللَّ

عَنُ أَبِى الزَّعْرَاءِ قَالَ قَالَ عُمَو بُنُ الوزعراء كَهَ بِين كه عمر بن خطاب فَيُّهَا نَ كَها: 'يه قرآن النخطَّابِ إِنَّ هٰذَا الْقُو آنَ كَلامُ اللهِ فَلا الله كا كلام ہے اس ليے ميں تهييں اس حالت ميں نه انحسوفَ خَلَى ديكھوں كه تم نے اس كو اپنی خواہشات كى طرف موڑ ليا أَعْرِفَ خَلَى مُورُ ليا ليا مُورُ ليا ليا مُورُ ليا ليا مُورُ ليا مُورُ ليا مُورُ ليا مُورُ ليا مُورُ ليا ليا مُورُ ليا مُورِ ليا مُورُ ليَا مُورُ ليا م

[6] بَابِ فَضُلِ كَلامِ اللَّهِ عَلَى سَائِرِ الْكَلامِ اللَّدَى كلام كوتمام كلامول يرفضيات ہے

3399- أَخْبَرَنَا إِسْمَعِيْلُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ التَّرْجُمَانِيُّ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْحَسَنِ الْهَمْدَانِيُّ عَنْ

عَمْرِو بْنِ قَيْسٍ عَنْ عَطِيَّةَ عَنُ أَبِيُ سَعِيُدِ الْخُذُرِيّ قَالَ قَالَ

عَنُ أَبِى سَعِيدِ الْخُدُرِيّ قَالَ قَالَ وَالَهُ اللهِ عَنُ أَبِى سَعِيدِ الْخُدُرِيّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَى مَنُ شَعَلَهُ قِرَائَةُ الْقُرُآنِ عَنُ مَسْأَلَتِى وَذِكْرِى أَعْطَيْتُهُ أَفْضَلَ عَنُ مَسْأَلِتِى وَذِكْرِى أَعْطَيْتُهُ أَفْضَلَ ثَوَابِ السَّائِلِيْنَ وَفَضُلُ كَلامِ اللهِ عَلَى سَائِرِ الْكَلامِ كَفَصُلِ اللهِ عَلَى خَلْقِهِ . ٥ سَائِرِ الْكَلامِ كَفَصُلِ اللهِ عَلَى خَلْقِهِ . ٥

فوائد: بیحدیث سنداً ضعیف ہے البتہ اس کے شواہد اور سوال کی اہمیت کو مدنظر رکھتے ہوئے سے صورت اپنائی جاسکتی ہے کہ بندہ قرآنی دعاؤں کا اہتمام کرے توبیقبولیت اور ثواب میں عمد گی کا باعث ہوں گی (واللہ اعلم)

3400 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ أَشْعَثَ الْحُدَّانِيِّ

سیدنا شہر بن حوشب رہائی کہتے ہیں کہ رسول الله منظامین

عَنُ شَهُرِ بُنِ حَوُشَبٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ ﷺ فَضُلُ كَلامِ اللّهِ عَلَى كَلامِ

[•] صحيح: أحرجه الآجري في الشريعة(ص78)والبيهقي في الاسماء والصفات(282)

[●] اسناده ضعيف لكن له شواهد: أخرجه الترمذي، كتاب ثواب القران، باب من شغله القران أعطى أفضل العطايا، أخرجه يرحيى بن عبدالحميد الحماني، في مسنده، قاله الحافط في الفتح 1455و القضاعي في مسند الشهاب 326/2 (1455) وأخرجه البخاري في (خلق افعال العباد) (ص 109) وفي الكبير 115/2 وأخرجه ابو نعيم في الحلية 313/7 مزير شوالم كلير 23/4، 573 واللالي المصنوعه 342/2، 342 كلير ويكث مصنف ابن ابي شيبه 237/10 (1930) والشعب للبيهقي (573-574) واللالي المصنوعه 342/2، 342

الكاليقي الكاليقي 711 ﴿ كُتَابِ فَضَائِلِ القرآنُ ﴾ \$

خَلُقِهِ كَفَصُلِ اللَّهِ عَلَى خَلُقِهِ. •

فضیلت ہے جیسے اللہ کو اپنی مخلوق بر۔''

3401 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِح حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي جَعْفَرِ عَنْ رَجُلٍ مِنْ شُيُوْخِ مِصْرَ أَنَّهُ حَدَّتَهُ...

سیّدنا عبدالله بن عمرو رالله سے منقول ہے کہ رسول عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عَمْرِو عَنُ رَسُولِ اللَّهِ عِنْ أَنَّهُ قَالَ الْقُرُآنُ أَحَبُّ إِلَى اللَّهِ الله ﷺ نے فرمایا:''اللہ تعالیٰ کے نز دیک قرآن زمین و

مِنَ السَّمْوَاتِ وَالْأَرُضِ وَمَنُ فِيهِنَّ . ٥ آ سان اوران کی تمام چیزوں سے محبوب ہے۔''

[7] بَابِ إِذَا اخْتَلَفْتُمُ بِالْقُرُ آنِ فَقُومُوُا

جب قرآن پڑھنے سے دل اچاٹ ہو جائے تو پڑھنا جھوڑ دو

3402 حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَان حَدَّثَنَا هَارُونُ الْأَعْوَرُ عَنْ أَبِيْ عِمْرَانَ الْجَوْنِيِ

سیّدنا جندب رضائفه کہتے ہیں کہ نبی ﷺ نے فرمایا : '' الْقُوْآنَ مَا ائْتَلَفْتُمُ عَلَيْهِ فَإِذَا اخْتَلَفْتُمُ جب تك ول كرے قرآن يرسو، جب ول الهات (برداشته خاطر) ہو جائے تو اٹھ جاؤ (پڑھنا چھوڑ دو)''

عَنُ جُنُدُبِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ اقْرَنُوا فِيهِ فَقُو مُوُا . 9

فوائد: (۱) قران چونکه الله کا کلام بالبندااسے کچی رغبت اور ذوق وشوق سے پڑھنا جاہے البنة قرآن کو بے رغبتی عدم ولچیں سے پڑھنا ہداس مالک کی بے وقعتی کے مترادف ہے جس طرح ہماری پندیدہ چیز کوکوئی بے توجہی سے استعال کرے تو ہارے لیے یہ تکلیف دہ امر ہوتا ہے اس طرح اللہ تعالیٰ کوبھی یہ بات ناپسند ہے کہ اس کے کلام سے بے رغبتی برقی جائے (واللہ اعلم) (۲) یا اس سے مرادیہ ہے کہ جب تک تم قرءت ومعانی پرمتنق ہوتب تک قرآن پڑھو جب کہ اختلاف کے وقت اٹھ جاؤ کیونکہ اختلاف جھڑے اورا نکار کاباعث بنتا ہے جیسا کہ ابن الملک کا گمان ہے۔

3403 ـ أَخْبَرَنَا يَزِيْدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ

حَدَّثَنَا أَبُوُ عِمْرَانَ الْجَوْنِيُّ عَنُ جُنُدُب سيِّدنا ابوعمران جوني وَلَشِهِ كَتِي بَيْنِ كه جندب وَلَاثِيَّ نِهِ كَهَا: بُنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ اقْرَنُوا الْقُرْآنَ مَا انْتَلَفَتْ ﴿ وَجِبِ تَكَ تَهَارا ول كرے قرآن برهو اور جب ول

◘ مرسل،ضعيف: أخرجه ابوداؤد في المراسيل(535)وابن عدى في الكامل5/575

ضعیف جداً: أخرجه الرازی،ضعیف القرآك و تلاو ته (28).

◙ متـفــق عـليه: أخرجه البخاري، كتاب فضائل القرآن ، باب اقرئوُ االقران ماائتلف عليه قلوبكم(5060) ومسلم، كتاب العلم، باب النهي عن اتباع متشابه القران (2667)

الكَالِيُونِيُ ٢١٥ كَالِ كُتَابِ فَضَائِلُ القَرآن ٢٦٥ كَتَابِ فَضَائِلُ القَرآن ٢٠٥

ا چاٹ ہو جائے تو پڑھنا چھوڑ دو۔''

عَلَيُهِ قُلُوبُكُمُ فَإِذَا اخْتَلَفُتُمُ فِيهِ

فَقُوْمُوا . 0

3404 حَدَّثَنَا أَبُوْ غَسَّانَ مَالِكُ بِنُ إِسْمُعِيْلَ حَدَّثَنَا أَبُوْ قُدَامَةَ حَدَّثَنَا أَبُوْ عِمْرَانَ الْحَوْنِيُ الْمَعَ نَدُّ اللهُ عَلَيْنَا أَبُوْ عِمْرَانَ الْحَوْنِيُ الْمَعَ نَدُّ اللهُ عَلَيْنَا أَبُوْ عِمْرَانَ

عَنُ جُنُدُبٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ ﷺ اقُرَنُوا الْقُرُآنَ مَا اثْتَلَفَتُ عَلَيْهِ قُلُوبُكُمُ فَإِذَا اخْتَلَفُتُمُ فِيْهِ فَقُومُوا . ۞

سيّدنا جندب وَاللّهُ كَمِيّة مِين كهرسول الله عَلَيْهَ أَنْ فَرمايا: "جب تمهارا دل كرے قرآن پڑھواور جب دل اچاك ہو حائے تو بڑھنا چھوڑ دو۔"

> [8] بَابِ مَثَلِ الْمُؤُمِنِ الَّذِي يَقُواً الْقُرُ آنَ قرآن پڑھے والے مومن کی مثال

> > 3405 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا فِطْرٌ عَنْ أَبِيْ إِسْحٰقَ.....

عَنِ الْحَادِثِ عَنُ عَلِيّ رَضِى اللّهُ عَنُهُ قَالَ مِنَ النّاسِ مَنُ يُؤُتَى الْإِيمَانَ وَلا قَالَ مِنَ النّاسِ مَنُ يُؤُتَى الْإِيمَانَ وَلا يُؤتَى الْقُرُآنَ يُؤتَى الْقُرُآنَ وَمِنْهُمُ مَنُ يُؤتَى الْقُرُآنَ وَمِنْهُمُ مَنُ يُؤتَى الْقُرُآنَ الْقُرُآنَ وَالْإِيمَانَ وَمِنْهُمُ مَنُ لا يُؤتَى الْقُرُآنَ وَالْإِيمَانَ وَمِنْهُمُ مَنُ لا يُؤتَى الْقُرُآنَ وَلا الْإِيمَانَ وُمِنْهُمُ مَنْ لا يُؤتَى الْقُرُآنَ وَلا الْإِيمَانَ وُمِنْهُمُ مَنْ التَّمُوةِ حُلُوةً يُؤتَى الْقُرُآنَ وَلا الْإِيمَانَ وُكُمُ التَّمُوةِ حُلُوةً يُؤتَّ الْقُرُآنَ وَلَا أَلْإِيمَانَ وَلَمُ الطَّعْمِ لا رِيحَ لَهَا وَأَمَّا مَثُلُ التَّمُونَ وَحُلُوتُ اللَّهُ مُ اللَّذِى أُوتِى الْكَافِرَةَ اللَّهُ مُ اللَّذِى أُوتِى الْقُرُآنَ وَلَمُ يُؤتَّ الْإِيمَانَ فَمَثَلُ اللَّذِى أُوتِى الْقُرْآنَ وَلَمُ يُؤتَّ الْإِيمَانَ فَمَثَلُ اللَّهِ مَانَ فَمَثَلُ اللَّهُ مُ وَالَّالِيمَانَ فَمَثَلُ اللَّهُ مُ وَلَّا اللَّعُمِ وَأَمَّا اللَّهُ مُ وَلَّالِيمَانَ فَمَثَلُ اللَّهِ عَلَيْهُ اللَّهُ مُ وَلَّالِيمَانَ فَمَثَلُ اللَّهُ مِ وَالَّا اللَّهُ مُ وَالَّالِيمَانَ فَمَثَلُ اللَّذِى أُوتِيمَانَ فَمَثَلُ اللَّذِى أُوتِيمَ اللَّهُ مُ اللَّهُ مُ وَلَّالِيمَانَ فَمَثَلُ اللَّهُ مُ وَالَّالِيمَانَ فَمَثَلُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُ مَنْ الْإِيمَانَ فَمَثَلُ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مُ مَنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مِن الْمُؤْلُونَ الْمُؤلِدُ اللّهُ مِنْ الْمِنْ الْمُؤلِدُ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ اللّهُ مُنْ اللّهُ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ مُنْ اللّهُ اللّهُ مُنْ الللّهُ مُنْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللّهُ اللّهُ

حارث کہتے ہیں کہ سیدناعلی ڈاٹنی نے فرمایا: '' کچھ لوگوں کو ایمان دیا جاتا ہے قرآن نہیں اور کچھ کوقرآن دیا جاتا ہے ایمان نہیں اور بعض کوقرآن اور ایمان دونوں دیئے جاتے ہیں۔ اور بعض کو خرآن دیا جاتا ہے نہ ایمان کھران کی مثال بیان کی جنہیں ایمان دیا گیا قرآن نہیں ایس ہے مثال بیان کی جنہیں ایمان دیا گیا قرآن نہیں ایس ہے جیسے مجور کا مزہ میٹھا ہو اور خوشبو بالکل نہیں۔ اور وہ جسے قرآن دیا گیا ایمان نہیں اس کی مثال ایس ہے جیسے آسہ کی خوشبو اچھی اور مزہ کڑوا ہوتا ہے اور جسے قرآن و ایمان دونوں دیئے گئے اس کی مثال ایس ہے جیسے نارنگی کی خوشبو دونوں نہیں در مزہ بھی میٹھا ہوتا ہے اور جسے قرآن و ایمان دونوں نہیں در مزہ بھی میٹھا ہوتا ہے اور جسے قرآن و ایمان دونوں نہیں دیئے گئے اس کی مثال ایس ہے جاتے قرآن و ایمان دونوں نہیں دیئے گئے اس کی مثال اندرائن کی طرح ہے جسے میں خوشبو بھی نہیں ادر مزہ بھی کڑوا ہوتا ہے۔''

صحیح: سابقه ولاحق ملاحظه فرمائیس...

[🗗] صحیح: (3402) بی مکردے۔

 $^{\circ}$ کتاب فضائل القر آن $^{\circ}$

الْأُتُوجَّةِ طَيِّبَةُ الرِّيحِ حُلُوةُ الطَّعُمِ وَأَمَّا الَّـذِى لَـمُ يُـوُّتَ الْـقُوْآنَ وَلَا الْإِيمَـانَ فَمَثَلُهُ مَثَلُ الْحَنْظَلَةِ مُرَّةُ الطَّعْمِ لَا رِيْحَ

لَهَا . ٥

فواند: (۱) امثله بات مجهانے کا ایک اہلع ذریعہ بیں لہذا استاذ کو دوران تدریس ان کا اہتمام کرنا چاہیے (۲) ایک مومن اعلیٰ مثال کا نمونہ ہونا چا۔ ہیے لہذا ایمان کے ساتھ تلاوت قران کا خصوصی اہتمام کرنا چاہیے۔

3406 حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَان حَدَّثَنَا أَبُوْ عَوَانَةَ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنْسِ بْنِ مَالِكٍ

سیّدنا ابوموی اشعری والنیز سے منقول ہے نبی منتظ ایم نے عَـنُ أَبِـىُ مُـوسَـى الْأَشْعَرِيّ عَنِ فرمایا: " قرآن پڑھنے والے مومن کی مثال نارنگی کی طرح النَّبِي ﴿ فَالَ مَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِي يَقُرَأُ الْقُسرُ آنَ مَشَلُ الْأَتُسرُجَّةِ طَعُمُهَا طَيِّبٌ ہے جس کا مزہ بھی اچھا ہوتا ہے اور خوشبو بھی قرآن نہ بڑھنے والے مومن کی مثال اس تھجور کی طرح ہے جس کا وَرِيْحُهَا طَيّبٌ وَمَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِي لَا يَقُرَأُ مره میشها مومر خوشبونه مور قرآن برص والے منافق کی الْقُرُآنَ مَثَلُ التَّمْرَةِ طَعُمُهَا حُلُوٌ وَلَيْسَ مثال ریحانہ کی طرح ہے جس کی خوشبو اچھی ہے اور مزہ لَهَا دِيبٌ وَمَثَلُ الْـمُنَافِقِ الَّذِى يَقُرَأُ كرُوا اور قرآن نه يره صنى والے منافق كى مثال حظله كى الُقُرُآنَ مَثَلُ الرَّيْحَانَةِ رِيحُهَا طَيَّبٌ طرح ہے جس میں خوشبونہیں ہوتی اور مزہ بھی کڑوا ہوتا وَطَعُمُهَا مُرٌّ وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِي لَا يَقُرَأُ الْقُرُآنَ مَثَلُ الْحَنْظَلَةِ لَيُسَ لَهَا

يسر السران الله رِيحٌ وَطَعُمُهَا مُرُّ . •

عَن الْحَارِثِ عَنُ عَلِيّ قَالَ مَثَلُ الَّذِي

أُوتِيَ الْإِيسَمَانَ وَلَمُ يُؤُتَ الْقُرُآنَ مَثَلُ

3407 أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ إِسْرَائِيْلَ عَنْ أَبِيْ إِسْحَقَ....

سیّدنا حارث رضائف کہتے ہیں کہ سیّدنا علی رضائف نے کہا: "جے ایمان دیا گیا قرآن نہیں اس کی مثال اس تھجور کی

♣ صحيح: أخرجه ابو عبيد في فضائل القران(ص 387)وأخرجه ابن ابي شيبه مختصراً 529/10(10220)

[◘] متفق عليه: أخرجه البحاري، كتاب فضائل القران، باب فضل القران على مناثر الكلام(5020) ومسلم، كتاب صلاة المسافرين، باب فضيلة حافظ القران(797)

الله القرآن الكَالِيْتِينَ الكَالِيْتِينَ العَران القرآن ٢١٩ العَران القرآن العَران ال

طرح ہے جس کا مزہ احیما ہے اور خوشبو بالکل نہیں ہے۔ التَّمُرَةِ طَعُمُهَا طَيَّبٌ وَلَا رِيحَ لَهَا وَمَثَلُ اور جھے قرآن دیا گیاایمان نہیں اس کی مثال ریحان' آ سہ الَّذِي أُوتِيَ الْقُرُآنَ وَلَمْ يُؤُتَ الْإِيمَانَ (نازبو) کی طرح ہے جس کی خوشبواجھی ہے اور مزہ کڑوا' مَثَلُ الرَّيُحَانَةِ الْآسَةِ ريحُهَا طَيَّبٌ اور جسے قرآن وایمان دونوں دیئے گئے اس کی مثال نارنگی وَطَعُمُهَا مُرٌّ وَمَثِلُ الَّذِي أُوتِيَ الْقُرْآنَ کی طرح ہے جس کی خوشبو بھی اچھی ہے اور مزہ بھی اچھا۔ وَالْإِيمَانَ مَثَلُ الْأُتُوجَةِ رِيحُهَا طَيّبٌ اور جمے قرآن اور ایمان دونوں نہیں دیئے گئے۔ اس کی وَطَعُمُهَا طَيَّبٌ وَمَثَلُ الَّذِي لَمُ يُؤُتَ مثال اندرائن (نہایت کروا پھل ،تمہ) کی طرح ہے جس الْإِيمَانَ وَلَا الْقُرْآنَ مَثَلُ الْحَنُظَلَةِ کی خوشبوبھی بری ہے اور ذاکقہ بھی براہے۔'' ريحُهَا خَبِيْتٌ وَطَعُمُهَا خَبِيْتٌ . ٥

3408 ـ أَخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ عَنْ شُعَيْبِ بْنِ أَبِيْ حَمْزَةَ عَنِ الزُّهْرِيّ

حَدَّثَنِى عَامِرُ بُنُ وَاثِلَةً أَنَّ نَافِعَ بُنَ عَبُدِ
الْحَارِثِ لَقِى عُمَرَ بُنَ الْحَطَّابِ
بِعُسُفَانَ وَكَانَ عُمَرُ اسْتَعُمَلَهُ عَلَى
أَهُلٍ مَكَّة فَسَلَّمَ عَلَى عُمَرَ فَقَالَ لَهُ
عُمَرُ مَنِ اسْتَحُلَفُتَ عَلَى أَهُلِ الُوَادِي
عُمَرُ مَنِ اسْتَحُلَفُتَ عَلَى أَهُلِ الُوَادِي
فَقَالَ نَافِعٌ اسْتَحُلَفُتُ عَلَيْهِمُ ابُنَ أَبُزَى فَقَالَ مَولًى
فَقَالَ نَافِعٌ اسْتَحُلَفُتُ عَلَيْهِمُ ابُنَ أَبُزى فَقَالَ مَولًى
فَقَالَ نَافِعٌ اسْتَحُلَفُتُ عَلَيْهِمُ ابُنَ أَبُزى فَقَالَ مَولًى
مِنْ مَوالِيننَا فَقَالَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ إِنَّهُ عَلَيْهِمُ مَولًى فَقَالَ عَالَمٌ بِالنَّفَرَائِضِ
عَلَيْهِمُ مَولًى فَقَالَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ إِنَّهُ قَالَ عَمَرُ اللهِ عَلَيْهِمُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَيْهِمُ اللهِ عَلَيْهِمُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَيْهِمُ اللهِ عَلَى اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ الله

عامر بن واثله بیان کرتے ہیں کہ نافع بن عبدالحارث عسفان میں عمر بیان کرتے ہیں کہ نافع بن عبدالحارث عسفان میں عمر بین خطاب بڑا تھا سے ملے اور عمر بین لین کوسلام کیا۔ تو عمر بین لین نے کہا: 'آپ نے مکہ میں اپنا نائب کے بنایا ہے؟'' نافع نے کہا: ''آپ نے وہاں ابن ابزی کو نائب بنایا ہے۔'' عمر بین لین نے وہاں ابن ابزی کون ہے؟ کہا: ''بہارا ایک آزاد کردہ غلام ہے۔'' تو عمر بین لین نے کہا: تم نے ان پر آزاد کردہ غلام کو نائب بنایا ہے؟ تو نافع نے کہا: ''اے امیر الموسین! وہ اللہ کی کتاب کا قاری (عالم) کہا: ''اللہ تعالی قرآن کے ذریعہ سے کی اللہ طفع آئے نے فرایا: ''اللہ تعالی قرآن کے ذریعہ سے کی قوموں کوعزت دیتا ہے اور دوسروں کوذلت۔''

كتاب فضائل القرآن

ليُّنْ الكَالِيْعِيُّ

وَيَضَعُ بِهِ آخَرِيُنَ . 0

فوائد: (۱) مومن قران برگل پیرا ہونے ہے ہی بناجاتا ہے اور مونین کے متعلق ارشاد باری تعالی ہے: ﴿ وَٱلْتُ مُدُ الْاَعُلُونَ إِنْ كُنْتُهُ مُو مُونِيْنَ ﴾ كُه ' اگرتم حقیقی مومن ہوتو تم ہی غالب آؤگے۔' لہذا قران كا عالم و عامل اس بات كا حقد ار ہے كہ وہ اس كی وجہ سے رفعتوں وعظمتوں كا وارث ہے اور اس كی اب كوچھوڑنے اس كا انكار كرنے والے ذلتوں سے دو چار ہو (۲) چنا نچ اگر اہل اسلام كہيں ذلت سے دو چار ہوں تو وہ قران كوا پنا اور هنا بچھونا بناليس تو بيان كے داغ دهونے كا باعث ہوگا۔

[10] بَابِ فَضُلِ مَنُ استَمَعَ إِلَى الْقُرُآنِ قرآن سننه واللِّخْص كى فضيلت كابيان

3409 حَدَّثَنَا أَبُوْ الْمُغِيرَةِ

عبدہ بیان کرتے ہیں کہ خالد بن معدان نے کہا: ''جو قرآن پڑھتا ہے اس کے لئے ایک اجر ہے اور جوسنتا ہے اس کے لئے دواجر ہیں۔''

حَـدَّثَنَا عَبُدَةُ عَنُ خَالِدِ بُنِ مَعُدَانَ قَالَ إِنَّ الَّذِى يَـقُـرَأُ الْـقُـرُآنَ لَـهُ أَجُرٌّ وَإِنَّ الَّذِى يَسْتَمِعُ لَهُ أَجُرَان. ۞

فعوائد: حدیث کواگر شیح فرض کریں تو اس سے بیم اد ہوسکتی ہے کہ سننے میں چونکہ پڑھنے کی نسبت زیادہ مشقت ہے لہٰذااس کا دوہرااجر ہویا پھر بیصورت ہو کہ سننے والا ساتھ ساتھ منہ میں دوہراتا جائے (واللہ اعلم)

3410 حَدَّثَنَا رَزِيْنُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُمَيْدِ عَنْ عَبْدِ الرَّزَّاقِ عَنِ ابْنِ جُرَيْجِ

عطاء کہتے ہیں ابن عباس خالفۂ نے کہا:''جوقر آن کی ایک آیت سنے گاوہ اس کے لئے روشنی کا باعث ہوگ۔''

عَنُ عَطَاءٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ مَنُ اسْتَمَعَ إلى آيَةٍ مِنْ كِتَابِ اللَّهِ كَانَتُ

لَهُ نُورًا . 😉

[11] بَابِ فَضُلِ مَنُ يَقُرَأُ الْقُرُ آنَ وَيَشُتَدُّ عَلَيْهِ قرآن دشواری سے پڑھنے والے کی فضیلت

3411 ـ أَخْبَوْنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثْنَا هِشَامٌ وَهَمَّامٌ قَالَا حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ زُرَارَةَ بْنِ أَوْفَى

• صحيح: أخرجه مسلم، كتاب صلاة المسافرين، باب فضل من يقوم بالقران ويعلمه (817) والبيهقي في الصلاة باب امامة المولى 89/3

🚯 ضعيف: أخرجه عبدالرزاق(6012)

🛭 عبدة بن خالد كا ترجمه نبيس ملا-

حَرِّ عَيْنَ ٱلْكَالِيْمِينَ ﴾ ﴿ 716 كَابِ فَضَائَلُ القرآن ﴾ ٢٠

عَنْ سَعْدِ بْنِ هِشَامٍ

سیّدہ عائشہ وہ اللہ کہتی ہیں کہ نبی طفی آنے فرمایا: ''جو شخص قرآن پڑھتا ہے اور وہ اسے پڑھنے کا ماہر ہے وہ بزرگ اور نیکوکار فرشتوں کے ساتھ ہوگا۔ اور جو شخص قرآن پڑھتا ہے اور وہ دشواری سے پڑھتا ہے اس کے لئے دوہرا

فوائد: (۱)"السفرة" بيرمافر كى جمع باس مراد كاتب فرشة بين ايك قول ب كدرسول بين اور" بررة" اطاعت گزار (۲) انك كر قران بره في والے كے ليے دو ہراا جرايك تواس كى تلاوت كاجب كدوسرااس كے انكنے كا۔

3412 حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سَعِيْدٌ هُوَ ابْنُ عَبْدِ الْعَزِيْزِ

عَنُ إِسُمْعِيُلَ بُنِ عُبَيُدِ اللَّهِ عَنُ وَهُبٍ اللَّهِ مَارِيِّ قَالَ مَنُ آتَاهُ اللَّهُ الْقُرُآنَ فَقَامَ بِهِ آنَاءَ النَّهَارِ وَعَمِلَ بِمَا فِيهِ وَمَاتَ عَلَى الطَّاعَةِ بَعَثَهُ اللَّهُ يَوُمَ فِيهِ وَمَاتَ عَلَى الطَّاعَةِ بَعَثَهُ اللَّهُ يَوُمَ الْقِيامَةِ مَعَ السَّفَرَةِ وَالْأَحْكَامِ قَالَ الْقَيَامَةِ مَعَ السَّفَرَةِ وَالْأَحْكَامِ قَالَ سَعِيدٌ السَّفَرَةُ الْمَلائِكَةُ وَالْأَحْكَامُ الْأَنْبِياءُ قَالَ وَمَنْ كَانَ حَرِيصًا وَهُو يَتَعَفَّ اللَّهُ يَوْمُ لَا يَدَعُهُ أُوتِي أَجُرَهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى الطَّاعَةِ فَهُو مَنْ كَانَ عَلَيْهِ حَرِيصًا وَهُو يَتَعَفَى الطَّاعَةِ فَهُو مَنْ كَانَ عَلَيْهِ حَرِيصًا وَهُو يَتَعَفَى الطَّاعَةِ فَهُو مَنْ كَانَ عَلَيْهِ حَرِيصًا وَهُو يَتَعَفَى الطَّاعَةِ فَهُو مَنْ كَانَ عَلَيْهِ حَرِيصًا وَهُو مَنْ كَانَ عَلَيْهِ حَرِيصًا وَهُو يَتَعَفَى الطَّاعَةِ فَهُو مَنْ كَانَ عَلَيْهِ حَرِيصًا وَهُو مَنْ أَشُرَافِهِمُ وَفُضِلُوا عَلَى الطَّاعَةِ فَهُو مَنْ كَانَ عَلَى الطَّاعِةِ فَهُو مَنْ الشَّاسِ كَمَا السَّامِ الطَّيْرِ وَكَمَا فَعُلَى الطَّامِةِ وَكُمَا الطَّامِةِ وَكُمَا الطَّامِةِ وَكُمَا الطَّامِةِ وَكُمَا الطَّامِةِ وَكُمَا الطَّامِةِ وَكُمَا اللَّهُ وَكَمَا الطَّامِةِ وَكُمَا الطَّامِةِ وَكُمَا الطَّامِةِ وَكُمَا السَّائِولِ الطَّيْرِ وَكَمَا الطَّامِةِ وَلَا الْعَلَى السَّامِ الطَّيْرِ وَكَمَا الطَّامِةِ وَكُمَا الْعَلَامِ وَكُمَا الْعَلَى السَّائِولِ اللَّهُ وَالْمَامِةِ وَلَا لَهُ الْمُؤْمِولُ الْعَلَى السَائِولُ الطَّيْدِ وَكُمَا الْعَلَامِ الْمَامِي اللَّهُ الْعَلَى اللَّهُ الْمَامِلُولُ اللَّهُ الْعَلَامُ الْعَلَى السَائِولُ اللَّهُ الْعَلَى اللَّهُ الْمَامِلُولُ الْعَلَى اللَّهُ الْمَامِلُولُ الْمُؤْمِ الْمَامِلُولُ اللْمَامِي الْمَامُولُ الْمَلَامُ الْمَامِلُولُ الْمَلْمُ الْمَامِلُولُ اللَّهُ الْمَامُ الْمُؤْمُ الْمَلْمُ الْمَلْمُ الْمُؤْمُ الْمَلْمُ الْمُؤْم

اساعیل بن عبید رماللہ کہتے ہیں کہ وہب فرماری ہماللہ نے کہا: جس کو اللہ تعالیٰ نے قرآن دیا اس نے رات دن اسے پڑھا اور اس پڑھل کیا ۔ اور اطاعت (اسلام) پر فوت ہوا ۔ اللہ تعالیٰ اسے قیامت کے دن فرشتوں اور نبیوں کے ساتھ اٹھائے گا ۔ جو شخص قرآن پر صنے کی حرص رکھتا ہے ، مگر قرآن اسے یا دنہیں ہوتا وہ قرآن کو چھوڑتا نہیں اسے دو ہراا جر دیا جائے گا ۔ جو شخص قرآن کی حرص نہیں اسے دو ہراا جر دیا جائے گا ۔ جو شخص قرآن کی حرص رکھتا ہے ، مگر قرآن اسے یا دنہیں رہتا (اسلام) پر فوت ہو تو وہ عزت والوں سے ہے ۔ وہ تمام لوگوں سے اسی طرح مقاب کو تمام پرندوں پر فضلیت افضل ہے جس طرح عقاب کو تمام پرندوں پر فضلیت ہے ۔ اور جسے سبزہ زارا سے اردگرد کے باغیجوں سے افضل ہے ۔ وہ تیامت کے دن کہا جائے گا ؛ کہاں ہیں وہ لوگ جو ہے ۔ قیامت کے دن کہا جائے گا ؛ کہاں ہیں وہ لوگ جو

حَكَرُ لَيُنْ الْكَالِيمِينَ الْكَالِيمِينَ ٢١٦ ﴿ كُتَابِ فَصَائِلِ القرآن ٢٦٠

میری کتاب پڑھتے تھے؟ جانوروں کے ساتھ رہنے کے باوجود اس سے غافل نہ ہوئے۔ انہیں جنت اور نعمت دی جائے گی ، اگر ان کے والدین اسلام پر فوت ہوئے ہوں گے۔ تو ان کے سر پرشاہی تاج رکھا جائے گا۔ وہ کہیں گے : یا رب! ہمارے اعمال تو اس درجہ کے نہیں تھے؟ اللّٰہ فرمائے گا: ''کیوں نہیں ، تہمارا بیٹا میری کتاب پڑھتا تھا۔''

فُضِّلَتُ مَرُجَةٌ خَصْرَاءُ عَلَى مَا حَوُلَهَا مِنَ الْبِقَاعِ فَإِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ قِيلَ أَيْنَ الَّبِقَاعِ فَإِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ قِيلَ أَيْنَ الَّبِينَ كَسَابِى لَمُ الْمُعَلِي الْخُلْدَ يُنْكُمِ التِّبَاعُ الْأَنْعَامِ فَيُعُطَى الْخُلْدَ يُلُهِهِمُ اتّبَاعُ الْأَنْعَامِ فَيُعُطَى الْخُلْدَ وَالنَّعِيمَ فَالِنُ كَانَ أَبُواهُ مَاتَا عَلَى السَّاعَةِ جُعِلَ عَلَى رُنُوسِهِمَا تَاجُ السَّاعَةِ جُعِلَ عَلَى رُنُوسِهِمَا تَاجُ السَّاعَةِ جُعِلَ عَلَى رُنُوسِهِمَا تَاجُ السَّاعَةِ جُعِلَ عَلَى رُنَّا مَا بَلَغَتُ هٰذَا السَّاعَةِ خُعِلَ عَلَى رُبَّنَا مَا بَلَغَتُ هٰذَا السَّاعَةِ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ الْمَا لِنَّ الْبَنَكُمَا كَانَ الْمُلُولِ كِتَابِي . •

[12] بَابِ فَضُلِ فَاتِحَةِ الْكِتَابِ سورة فاتحه كي فضيلت

3413- أَخْبَرَنَا قَبِيصَةُ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ

 عَنُ عَبُدِ الْمَلِلَثِ بُنِ عُمَيْرٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ ﷺ فِى فَاتِحَةِ الْكِتَابِ شِفَاءٌ مِنُ كُلّ دَاءٍ . ۞

فوائد: سس سورة الفاتحہ بیانتهائی ذیثان صورت ہے جیسے کہ آئندہ احادیث سے وضاحت ہورہی ہے بید حدیث اگر چیسند اضعیف ہے بہر حال اس کا شفاء ہونا سیح سند سے ثابت ہے بخاری میں ہے کہ چند صحابہ نگانگہ سفر میں شخص انہوں نے ایک بستی میں قیام کیالیکن بستی والوں ان کی مہمان نوازی کرنے سے انکار کردیا چنانچہ وہ بستی سے ہٹ کرا کی جگہ میٹھ کے پچھ دیر بعد آنے والا آتا ہے اور کہتا ہے ہمارے سردار کو سانچ وہ بستی سے ہٹ کرا کی علاج ہے تو ہمارے ساتھ چلوتو صحالی زبائٹی سورة فاتحہ پڑھ کر دم سانچ وہ شفاء یاب ہوجاتا تو یہ اس کے عوض میں بکریاں لے کر مدینہ تشریف لاتے ہیں اور آپ کواس بارے خبردار کرتے ہیں تو آپ طبح بیان تعجب سے بوچھتے ہیں کہ تمہیں کیسے معلوم ہوا کہ اس سے دم کیا جاتا بارے خبردار کرتے ہیں تو آپ طبح بیات کے جب سے بوچھتے ہیں کہ تمہیں کیسے معلوم ہوا کہ اس سے دم کیا جاتا

الدماری شرطاین حبان پر ہے۔

²³⁷⁰⁾ مرسل ضعيف: أحرجه البيهقي في الشعب (2370)

حَرِّ لِيُسْتَنَ الْكَالِيمِيُّ ﴾ ﴿ 718 ﴿ كَتَابِ فَصَائِلِ الْقِرآنَ ﴾ ﴿ كَتَابِ فَصَائِلِ الْقِرآنَ ﴾ ﴿

(او كما قال ﷺ) اى ليعلاءاس كوشافيه كانام ديت-

3414 حَدَّثَنَا بِشُرُ بْنُ عُمَرَ الزَّهْرَانِيُّ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ حَفْصِ

ابْنِ عَاصِمِ

ابوسعید بن معلی انصاری و الله کتے ہیں رسول الله طفی ایک میرے پاس سے گزرے تو فرمایا: کیا الله عزوجل نے نہیں فرمایا: ''اے ایمان والو! الله اور اس کا رسول جب مہیں بلائے تو انہیں جواب دو۔' (سورة الانفال: ۲۲۳) فرمایا: محبد سے نکلنے سے قبل منہیں قرآن کی بردی سورت نہ سکھاؤں؟ پھرآپ نے مسجد سے باہر جانے کا ارادہ کیا تو فرمایا: ''بردی سورة ''ال حَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ'' ہے اور یہی سیع مثانی ہے اور یہی ظیم درجہ کا قرآن ہے جو مہیں دیا

3415 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ عَبْدِ الْحَمِيدِ بْنِ جَعْفَرٍ عَنِ الْعَلاءِ بْنِ

عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ

عَنُ أَبَيِّ بُنِ كَعُبٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عَنُ أَبَيِّ بُنِ كَعُبٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهُ عَلَي السَّبُعُ اللَّهُ عَلَي السَّبُعُ الْمَفَانِي. ٥ الْمَفَانِي. ٥

سیّدنا ابی بن کعب زمانیّهٔ کہتے ہیں رسول الله مطّعَظَیم نے فرمایا:''سورۃ فاتحہ بی وہ سات آیات ہیں جو بار بارد ہرائی جاتی ہیں۔''

3416 حَـدَّثَنَا نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنِ الْعَلاءِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَنْ مسسس

ابِيهِ ﴿ اللَّهِ عَنُ أَبِيهُ هُرَيُرَةً أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ

عن ابي هريرة ان رسول الله على قال ما أُنُولَتُ فِي الْإِنْجِيلِ

سیّدنا ابو ہربرہ جلیّن کہتے ہیں: رسول الله ﷺ نے فرمایا: ''سورہ فاتحہ جیسی کوئی سورہ نہ توراہ میں اتاری گئی اور نہ

❶ صحيح: أخرجه البخاري، كتاب التفسير،باب ماجاء في فاتحة الكتاب(4474)والنسائي في فضائل الغرآك(35)

[◘] صحيح: أخرجه البيهقي، كتاب الصلاة، باب تعليق القراءة المظلقة فيما روينا بالفائحه 375/2-376 والبخاري، كتاب التفسير، باب ماجاء في فاتحة الكتاب(4474)

www.sirat-e-mustageem.com

719 كاب فضائل القرآن كا الكاليكيُّ الكاليكيُّ وَالزَّبُورِ وَالْقُرُآنِ مِثْلُهَا يَعْنِي أُمَّ الْقُرْآنِ

انجیل میں اور نہ زبور میں اور نہ قرآن میں ہے اور وہ بار بار برٹھی جانے والی سات آیات ہیں اور وہی عظیم مرتبہ والا قرآن ہے جو بیں دیا گیا ہوں۔''

3417- أَخْبَرَنَا أَبُوْ عَلِيّ الْحَنَفِيُّ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِيْ ذِئْبٍ عَنِ الْمَقْبُرِيّ

عَنُ أَسِيُ هُ رَيُ رَهُ قَالَ قَالَ وَالَ رَسُولُ سيدنا ابو مريرة والنفيد كہتے ميں رسول الله الله علية في فرمايا: اللَّهِ عِنْ الْحَمْدُ لِلَّهِ أُمُّ الْقُرْآنِ وَأُمَّ "سورة فاتحه بى اصل قرآن ہے اور اصل كتاب ہے وبى

> الْكِتَابِ وَالسَّبْعُ الْمَثَانِي. ٥ سات آیات ہیں جو بار بار پڑھی جاتی ہیں۔''

> > [13] بَابِ فِي فَضُلِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ سورة بقرة كى فضيلت

> > > 3418 - أَخْبَرَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا فِطْرٌ عَنْ أَبِي إِسْحَقَ

ابواحوص كہتے ہيں عبداللہ نے كہا: ''جس گھر بيں سورة بقرہ عَنُ أَبِي ٱلْأَحُوَ صِ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ مَا

مِنُ بَيْتٍ يُقُرَأُ فِيهِ سُورَةُ الْبَقَرَةِ إِلَّا

وَإِنَّهَا لَسَبُعٌ مِنَ الْمَثَانِي وَالْقُرُآنُ

الْعَظِيْمُ الَّذِي أُعْطِيْتُ . •

خَرَجَ مِنْهُ الشَّيُطَانُ وَلَهُ ضَرِيْطٌ. ٥

3419 حَدَّثَنَا أَبُوْ الْمُغِيرَةِ

حَـدَّثَنَا عَبُدَةُ عَنُ خَالِدِ بُن مَعُدَانَ قَالَ سُورَـةُ الْبَقَرَةِ تَعُلِيمُهَا بَرَكَةٌ وَتَرُكُهَا حَسُرَةٌ وَلَا يَستَطِيعُهَا الْبَطَلَةُ وَهيَ

فُسُطَاطُ الْقُرُ آنِ . ٥

عبدہ بیان کرتے ہیں خالد بن معدان نے کہا مورة بقرة کا پڑھنا باعث برکت ہے ، اس کوچھوڑ نا حسرت ہے اور

جادوگراہے نہیں پڑھ سکتے' وہ قرآن کا خیمہ ہے۔''

رر میں جائے شیطان اس گھر سے گوز مارتا ہوا بھاگ جاتا

3420 حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ عَاصِمٍ

❶ صحيح: أخرجه الترمذي،كتاب ثواب القران،باب ماجاء في فضل فاتحة الكتاب(2878)واسخاوي في جمال القراء 1/115-116

2 صحيح: أحرجه الترمدي، كتاب التفسير، باب من سورة الحجر (3123)

◙ صحيح: "وله عريط" كَالفاظ تحيح سندے ثابت تبين، أحرجه ابن البضريس في فضائل القرآن(175)والبيه في في شعب الإيمان (2379)

 عمرة كے خيالات نبيس ملے "مستطاط القران" كے الفاظ كے علاوہ لقيد الفاظ كى مسلم، كتاب صلاة المسافرين، باب فضل قراءة الفرآن وسورة البقرة (804) كشهاد**ت ملتي ب_**

720 كتاب فضائل القرآن كا الكالم المنظمة الكالم المنظمة المنطقة
ابواحوص کہتے ہیں عبداللہ نے کہا:''ہرایک چیز میں اعلیٰ چیز ہوتی ہے اور قرآن کی اعلی چیز سورۃ بقرۃ ہے۔ ہر چیز میں خالص چیز ہوتی ہے۔قرآن کی خالص چیز مفصل ہے۔" ابو محمر کہتے ہیں' لباب کے معنی خالص ہیں۔ عَنُ أَبِيُ الْأَحُوَصِ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ أَنَّهُ قَالَ إِنَّ لِكُلِّ شَيْءٍ سَنَامًا وَإِنَّ سَنَامَ الْقُرُآن سُورَةُ الْبَقَرَةِ وَإِنَّ لِكُلِّ شَيْءٍ كُبَابًا وَإِنَّ لُبَابَ الْقُرُآنِ الْمُفَصَّلُ قَالَ أَبُو مُحَمَّد

اللَّيَابُ الْخَالِصُ . •

3421 حَدَّثَنَا إِسْمُعِيْلُ بْنُ أَبَانَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ طَلْحَةَ عَنْ زُبَيْدِ

عبدالرحمٰن بن اسود كہتے ہن: جس نے سورۃ بقرۃ برهى اسے جنت میں تاج پہنایا جائے گا۔''

عَنُ عَبُدِ الرَّحْمِن بُن الْأَسُودِ قَالَ مَنُ قَرَأً سُورَدةَ الْبَقَرَةِ تُوَّجَ بِهَا تَاجًا فِي الُجَنَّة . ٥

3422 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ كُهَيْلِ عَنُ أَبِي الْأَحْوَصِ قَالَ قَالَ عَبُدُ اللَّهِ

إنَّ الشُّيُطَانَ إِذَا سَمِعَ سُورَةَ الْبَقَرَةِ

تُقُرَأُ فِي بَيْتِ خَرَجَ مِنْهُ. 9

ابواحواص کہتے ہی کہ عبداللہ نے کہا: ''شیطان جب سورۃ بقرہ سنتا ہے جو کسی گھر میں پڑھی جا رہی ہوتو وہاں سے

بھاگ جاتا ہے۔''

[14] بَابِ فَضُل أُوَّل سُورَةِ الْبَقَرَةِ وَآيَةِ الْكُرُسِيِّ سورہ بقرہ کے مہلے حصے اور آیت الکری کی فضیلت

3423 ـ حَدَّثَنَا أَبُوْ الْمُغِيرَةِ حَدَّثَنَا صَفْوَانُ

حَـدَّثِنِي أَيْفَعُ بُنُ عَبُدِ الْكَلاعِيُّ قَالَ قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ سُورَةِ الْقُرْآنِ أَعُظُمُ قَالَ قُلُ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ قَالَ فَأَيُّ آيَةٍ فِيُ الْقُرُآنِ أَعُظَمُ قَالَ آيَةُ الْكُرُسِيِّ اللَّهُ

لَا إِلَىهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ قَالَ فَأَيُّ

ایفع بن عبد کلاعی کہتے ہیں کسی آ دمی نے کہا: 'یا رسول اللہ! قرآن کی کونسی سورہ بوے درجہ کی ہے؟" آپ نے فرمايا: "قل هو الله احد" اس نے كها: قرآن ميں كون ى آیت بری ہے؟ آپ نے فرمایا: "آیت الکری اللہ کے علاوه كوئي معبود نهيس وه زنده اور قائم ربنے والا ہے:

 [◘] حسن: أخرجه الطبراني في الكبير 138/9 (8644) والحاكم (2060) ببكريدالفاظ حاكم كائ حوالے مرفوعًا بهي ٹابت ہیں۔

² صحيح: أحرجه ابن الضريس في فضائل القرآن (165)

[🛭] صحيح: أخرجه الحاكم في المستدرك (2062)

721 كتاب فضائل القرآن كك المالكالين الكاليون

> آيَةٍ يَا نَهِيَّ اللَّهِ تُحِبُّ أَنُ تُصِيبَكَ وَأُمَّتَكَ قَالَ خَاتِمَةُ سُورَةِ الْبَقَرَةِ

خَيُرًا مِنُ خَيُرِ الدُّنيَا وَالْآخِرَةِ إِلَّا

س آیت کوآپ زیادہ پند کرتے ہیں کہ آپ کو اور آپ کی امت کو وہ مل جائے؟ آپ نے فرمایا: ''سورۃ بقرۃ کا فَإِنَّهَا مِنُ خَزَائِن رَحُمَةِ اللَّهِ مِنُ تَحُتِ آخر کیونکہ وہ اللہ کے خزانوں سے ہے۔ جواس کے عرش عَرُشِهِ أَعُطَاهَا هَذِهِ الْأُمَّةَ لَمُ تَتُرُكُ کے نیچے ہے اس نے بیسورت اس امت کو دی اور کوئی دنیا اور آخرت کی بھلائی نہیں چھوڑی جواس میں شامل نہ ہو۔'' اشْتَمَلَتُ عَلَيْهِ. ٥

فوائد: ندکورة سورة يا آيت كاعظيم مونا بيدرج ورتبے كے اعتبار سے ہے ورند حجم كے اعتبار سے سب سے بڑی سورة سورة البقرة جب كه آیت آیت الدین لعنی جس میں قرض كا ذكر ہے - نیز آیة الكرى كاعظيم آية جونامسلم كى حديث سے ثابت ہے۔

3424 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا أَبُوْ عَاصِمِ الثَّقَفِيُّ.

فتعمی بیان کرتے ہیں۔ کہ عبداللہ بن مسعود رہائنہ نے سے ملاقات ہوئی تو دونوں میں کشتی ہوئی۔ تو آ دمی نے اسے بچھاڑ لیا، پھراس آ دمی نے جن سے کہا: ''میں تہہیں کمزوراور دبلا دیکھتا ہوں ، تیری حچھوٹی حچھوٹی کلائیاں کتے کی کلائیوں کی طرح کمزور ہیں ۔تم جن لوگ ایسے ہی موتے ہویا پھرتو ہی ایسا ہے؟ ''اس نے کہا نہیں ،اللہ کی قتم! میری پبلیال ان سے قوی ہیں تم مجھ سے دوبارہ لڑو، اگر تونے مجھے گرادیا تو میں تمہیں الیی چیز بناؤں گا جو تمہیں نفع وے گی' پس اس نے دوبارہ اس سے کشتی کی اور جن ر بچیاڑ دیا اور کہا کہ لاؤ مجھے وہ سکھاؤ! اس نے کہا:'` ٹھیک ہے'' کہا: تو یہ آیت پڑھتا ہے:''اللہ کے علاوہ کوئی معبود نہیں ، وہ ہمیشہ زندہ اور قائم رہنے والا ہے؟ " کہا:

(سورة البقرة : ٢٥٥) اس نے كہا: اے الله كے ني ! كون

حَدَّثَنَا الشَّعُبِيُّ قَالَ قَالَ عَبُدُ اللَّهِ بُنُ مَسُعُوْدٍ لَقِيَ رَجُلٌ مِنُ أَصْحَابٍ مُحَمَّدٍ رَجُلامِنَ البِحِنِّ فَصَارَعَهُ فَصَرَعَهُ الْإِنْسِيُّ فَقَالَ لَهُ الْإِنْسِيُّ إِنِّي لَأَرَاكَ ضَئِيلًا شَخِيتًا كَأَنَّ ذُرِّيْعَتَيْكَ ذُرِّيُعَتَا كَلُب فَكَذٰلِكَ أَنْتُمُ مَعُشَرَ الُجِنِّ أَمُ أَنْتَ مِنُ بَيْنِهِمُ كَذْلِكَ قَالَ لَا وَاللَّهِ إنِّي مِنْهُمُ لَضَلِيعٌ وَلَكِنُ عَاوِدُنِي الثَّانِيَةَ فَإِنُ صَرَعُتَنِي عَلَّمُتُكَ شَيْئًا يَنُفَعُكَ فَعَاوَدَهُ فَصَرَعَهُ قَالَ هَاتٍ عَلِّمُنِي قَالَ نَعَمُ قَالَ تَقُرَأُ اللَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الُحَيُّ الْقَيُّومُ قَالَ نَعَمُ قَالَ فَإِنَّكَ لَا تَقُرَوُهَا فِي بَيْتٍ إِلَّا خَرَجَ مِنْهُ الشَّيْطَانُ

• صعیف: حافظ ابن جراصابة میں کہتے بین 1 / 222 بدواری نے کہا ہے کہ ایفع کی آیة الکری وافی عدیث مرسل یا معطل ہے۔

حَكُو اللَّهُ اللّ

ہاں ، جن نے کہا: تو جس گھر میں اسے پڑھے گا اس گھر سے سے شیطان بھاگ جائے گا ، اس کے گوز کرنے کی بد بو گدھے کے گوز کرنے کی بد بو گدھے کے گوز کرنے کی بدوجیسی ہوگی۔ پھر وہ اس میں صبح ہونے تک داخل نہیں ہوگا۔''

3425 حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن أَخْبَرَنَا أَبُوْ الْعُمَيْس......

شعمی کہتے ہیں کہ عبداللہ نے کہا: '' جو شخص سورۃ بقرہ کی دس آیات رات کو پڑھے گا اس رات شبح تک شیطان اس گھر میں داخل نہیں ہوگا' چارآیات پہلی اور آیت الکری اور دو آیات آیت الکری کے بعد والیٰ تین آخری آیات جن کا شروع یہ ہے۔'' ''لِلْهِ مَا فِی السَّمْوَاتِ.'' (سورۃ البقرۃ شروع یہ ہے۔'' ''لِلْهِ مَا فِی السَّمْوَاتِ.'' (سورۃ البقرۃ عَنِ الشَّعُبِيِّ قَالَ قَالَ عَبُدُ اللَّهِ مَنُ قَرَأً عَشُرَ اللَّهِ مَنُ قَرَأً عَشُرَ اللَّهِ مَنُ قَرَأً عَشُرَ آیَاتٍ مِنُ سُورَةِ الْبَقَرَةِ فِی لَیْلَةٍ لَمُ يَسَدُّ لَ ذَٰلِکَ الْبَيْتَ شَيْطَانٌ تِلْکَ النَّيْلَةَ حَتَّى يُصْبِحَ أَرْبَعًا مِنُ أَوَّلِهَا وَآيَةً اللَّيْلَةَ مَا فَي السَّمُواتِ . ﴿ وَآتِيمُهُهَا أَوَّلُهَا لِلَّهِ مَا فِي السَّمُواتِ . ﴿ وَآتِيمُهُا أَوْلُهَا لِلَّهِ مَا فِي السَّمُواتِ . ﴿ وَالْمَالِيَةُ اللَّهُ مَا فِي السَّمُواتِ . ﴿ وَالْمَالَةُ اللَّهُ مَا فِي السَّمُواتِ . ﴿ وَالْمَالِيَةُ اللَّهُ مَا فِي السَّمُواتِ . ﴿ وَالْمَالَةُ اللَّهُ مَا فِي السَّمُواتِ . ﴿ وَالْمَالِي اللَّهُ اللَّهُ الْمُعَلِّي اللَّهُ الْمَالُولُهُ الْمَالُولُهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمَالَةُ الْمُلْوَاتِ . ﴿ وَالْمَالُولُهُ الْمُؤْلِقُ الْمُؤْلُولُهُ الْمُؤْلِقُ الْمُؤْلُولُولُ اللَّهُ الْمُؤْلُولُهُ الْمُسْتُولُ اللَّهُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ اللَّهُ الْمُؤْلُولُولُولُولُولُولُولُولُولُ الْمُؤْلُولُ اللَّهُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ اللَّهُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ اللَّهُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ اللْمُؤْلُولُ اللَّهُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ اللَّهُ الْمُؤْلُولُ اللْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ اللْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ اللّهُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْمُؤْلُولُ الْ

لَهُ خَبَجٌ كَخَبَجِ الْحِمَارِ ثُمَّ لَا يَدُخُلُهُ

حَتّٰى يُصُبِحَ قَالَ أَبُوُ مُحَمَّد الضَّئِيلُ

الدَّقِيقُ وَالشَّخِيتُ الْمَهُزُولُ وَالضَّلِيعُ

جَيَّدُ الْأَضُلاعِ وَالْخَبَجُ الرِّيحُ. ٥

3426 أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ عَاصِمٍ

عَنِ الشَّعُبِيِّ عَنِ ابُنِ مَسْعُودٍ قَالَ مَنُ قَرَاً أَرُبَعَ آيَاتٍ مِنُ أَوَّلِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ وَآيَةَ الْكُرُسِيِ وَآيَةَ الْكُرُسِيِ وَآيَةَ الْكُرُسِيِ وَآيَةَ الْكُرُسِيِ وَآيَةَ الْكُرُسِي وَقَلَاشًا مِنُ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ لَمُ يَقُرَبُهُ وَلَا أَهُ لَلهُ يَوْرَبُهُ وَلَا أَهُ لَلهُ يَوْمَشِدٍ شَيْطًانٌ وَلَا شَيءٌ وَلَا أَهُ لَلهُ وَلَا يُقُرَأُنُ عَلَى مَجُنُونٍ إِلَّا يَكُرَهُ هُ وَلَا يُقُرَأُنُ عَلَى مَجُنُونٍ إِلَّا يَقُرَأُنُ عَلَى مَجُنُونٍ إِلَّا اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللّهُ اللهُ
قعمی کہتے ہیں ابن مسعود رفائنہ نے کہا: ''جس شخص نے سورۃ بقرۃ کی پہلی چارآ یات پڑھیں اور آ بیت الکری اور دو آیات آ بیت الکری کے بعد والی اور تین سورۃ البقرۃ کے آخر سے اس دن شیطان اس کے اور اس کے گھر والوں کے قریب نہ آئے گا اور نہ کوئی اور بری چیز آئے گی۔جس دیوانے پڑھی جائیں گی وہ اچھا ہوجائے گا۔''

3427 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِيْ إِسْلَحَقَ

[•] منقطع، ضعيف: عمى كا ابن معود زات التي ساع تابت نبيل، أحرجه الطبراني في الكبير 183/9 184 (8826)

[♦] ضعيف: سابقه كى طرح منقطع ب، أخرجه الطبراني في الكبير 147/9 (8673)

 [⊕] ضعیف: سابقه کی طرح منقطع ہے۔ أخرجه البيه قبی فی الشعب (2412)

حَكْرُ لَيْنَا لَكُلْمِتِينَ الْكُلْمِتِينَ الْكُلْمِتِينَ الْكَلْمِتِينَ الْكَلْمِتِينَ الْكَلْمِتِينَ الْكَلْمِتِينَ الْكَلْمِتِينَ الْكُلْمِتِينَ الْكُلْمِتِينَ الْكُلْمِتِينَ الْكُلْمِتِينَ الْكُلْمِتِينَ الْكُلْمِتِينَ الْكُلْمِتِينَ الْكُلْمِتِينَ الْمُلْمِلُ الْقُرآنَ الْمُلْمُ لِلْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ لِلْمُلِمُ لِلْمُلِمُ لِلْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ الْمُلْمُ لِلْمُلْمُ الْمُلْمُ لِلْمُلْمُ الْمُلْمُ لِلْمُلْمُ لِلْمُلْمُ لِ

ایک آدمی سے منقول ہے جس نے سیّدناعلی رہائین سے سنا وہ کہتے تھے:"میرا خیال نہیں کوئی عقل مندسورة بقرة کی آخری آیات کو پڑھے بغیرسوجائے گا۔ کیونکہ بیآیات اس خزانے کی ہیں جوعرش کے نیچے ہے۔"

3428 حَدَّثَنَا إِسْحَقُ بْنُ عِيسَى عَنْ أَبِي الْأَحْوَصِ....

عَنُ أَبِى سِنَانِ عَنِ الْمُغِيرَةِ بُنِ سُبَيْعٍ وَكَانَ مِنُ أَصُحَابِ عَبُدِ اللّهِ قَالَ مَنُ قَرَأَ عَشُرَ آيَاتٍ مِنَ الْبَقَرَةِ عِنْدَ مَنَامِهِ قَرَأَ عَشُرَ آيَاتٍ مِنَ الْبَقَرَةِ عِنْدَ مَنَامِهِ لَمُ يَنُسَ الْقُرُآنَ أَرْبَعُ آيَاتٍ مِنُ أَوَّلِهَا وَآيَةُ الْكُرُسِيّ وَآيَتَانِ بَعُدَهَا وَثَلاثُ مِنُ آيَتُ اللّهُ مَنُ لَمُ يَنُسَ مَا قَدُ مِنُ آبُو مُحَمَّد مِنُهُمُ مَنُ يَقُولُ حَفِظَ قَالَ أَبُو مُحَمَّد مِنُهُمُ مَنُ يَقُولُ حَفِظَ قَالَ أَبُو مُحَمَّد مِنُهُمُ مَنُ يَقُولُ حَفِظَ قَالَ أَبُو مُحَمَّد مِنُهُمُ مَنُ يَقُولُ

ابو سنان کہتے ہیں مغیرہ بن سیج نے کہا جو عبداللہ کے ساتھیوں سے تھے: ''جو شخص سوتے وقت سورۃ بقرۃ کی دس آیت پڑھ لے گا وہ قرآن کو نہیں بھولے گا۔ چار پہلی آیت الکری کے بعد والی اور تین آیت الکری کے بعد والی اور تین آخری۔'' ابو آخل کہتے ہیں: یعنی جو پچھاسے یاو ہوگا وہ نہیں بھولے گا۔'' ابو محمد کہتے ہیں: بعض لوگ مغیرہ بن سمج کہتے ہیں۔

المُغِيرَةُ بُنُ سُمَيْعٍ. 9

فواند: سوحفاظ کرام اور قران کو یا دکرنے کے شائق ہیں انہیں جا ہے کہ وہ ان ندکورۃ آیات کا التزام کریں کیونکہ قران کی محافظت ہی اس کو یا در کھنے کا باعث ہے۔

3429 حَدَّثَنَا إِسْحَقُ بْنُ عِيسَى عَنْ أَبِيْ مُعَاوِيَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِيْ بَكْرِ الْمُلَيْكِيِّ عَنْ

أَبِىٰ سَلَمَةَ

عَنُ أَبِى هُـرَيُـرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنَى أَبِي هُـرَيُـرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنَى مَنُ قَرَأَ آيَةَ الْكُرُسِيِّ وَفَاتِحَةَ حَم الْمُؤُمِنِ إِلَى قَولِهِ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ لَمُ يَرَ شَيْئًا يَكُوهُ هُ حَتَى يُمُسِى وَمَنُ قَرَأَهَا

سيّدنا الوهريرة وخلطية كهتم بين رسول الله وطفيَّ الله على الله على الله على الله على الله على الله على الله والا فرمايا: "جو شخص آيت الكرى اورسوره حم مومن كاشروع والا حصد "و اليه المصير تك" براهم كا تووه كوئى برى چيز نهيل ديم كاحتى كدشام موجائے كى اور جوشام كے وقت

صحيح: أخرجه ابن الضريس في فضائل القرآن (176).

[•] صحيح: أخرجه البيهقي في الشعب (2413) والترمذي، في ثواب القرآن،باب،ماجاء في سورة البقرة و آية الكرسي (2881) وابونعيم في ذكر أخبار أصبهان 233/1

www.sirat-e-mustageem.com

حَكُونَ الْخَارِيْمِينَ الْخَارِيْمِينَ ٢24 ﴿ كُتَابِ فَصَائِلِ القرآن ﴿ كَتَابِ فَصَائِلِ القرآن ﴿ كَ حِينَ يُمُسِى لَمْ يَوَ شَيْئًا يَكُوهُهُ حَتَّى

يەھے گا دەقىج تك كوئى برى چىزنېيى دىكھے گا۔''

-3430 حَدَّثَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ أَخْبَرَنَا أَشْعَتُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْجَرْمِيُّ عَنْ أَبِيْ

قِكَابَةَ عَنْ أَبِيْ الْأَشْعَثِ الصَّنْعَانِيّ

نعمان بن بشركت بين رسول الله والله على الله الله الله الله نے آسان اور زمین پیدا کرنے سے دو ہزار برس پہلے ایک کتاب لکھی اسی میں ہے وہ دوآیات اتاریں جوسورۃ بقرۃ ا کے آخر میں ہیں۔ پینہیں ہوسکتا کہ بیر آیت تین راتیں کسی گھر میں پڑھی جا کمیں پھراس میں شیطان رہے۔''

عَنِ النُّعُمَانِ بُنِ بَشِيُرِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ إِنَّ اللَّهَ كَتَبَ كِتَابًا قَبُلَ أَنُ يَخُلُقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرُضَ بِأَلْفَى عَامِ فَأَنْزَلَ مِنْهُ آيَتُين خَتَمَ بِهِمَا سُورَةَ الْبَـقَـرَـةِ وَلَا تُقُرَأُنِ فِي دَارٍ ثَلاثَ لَيَالٍ

فَيَقُرَ يُهَا شَيْطَانٌ . ٥

فوائد: سورة بقرة كي آخر دوآيتي انتهائي اجميت كي حامل بين جس كي وجداس كاعرش عزان میں سے ہونا ہے اور اس میں الی دعائیں ہیں جن میں دنیا و آخرت کی بھلائی انسان کے لیے جمع کر دی گئی۔ نیزیہ جنوں وشیاطین کے خلاف بڑا کارگر ہتھیار ہے لہذا ان کو یاد کرنا ان کا اہتمام کرنا ایک مسلمان کے لیے کثیر فوائد کا حامل ہے (واللہ الموفق)

3431 - حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ عَامِرٍ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مَنْصُوْرٍ عَنْ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ

عَنُ أَبِيُ مَسُعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ مَنُ سیّدنا ابومسعود رفائنهٔ کہتے ہیں نبی مُشْکِرَا نے فرمایا: ''جو قَرَأً ٱلْآيَتَيُنِ ٱلْآخِرَتَيُنِ مِنُ سُورَةِ الْبَقَرَةِ تخض سورة بقرة کی آخری دو آیات رات کو پڑھ لے گاوہ اسے کافی ہوں گی۔'' في لَيْلَة كَفَتَاهُ . ٥

3432 - حَدَّثَنَا أَبُوْ عَاصِمٍ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ أَبِيْ زِيَادٍ عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ

ضعیف: عبدالرحمن بن انی برضعف ہے۔

② صحيحً: أحرجه ابوعبيد في فضائل القرآن (232) والحاكم 2065 والبيهقي في الشعب (2400).

[€]متـفـق عليه: أخربه البخاري، كتاب فضائل القرآك، باب فضل سورة البقرة (5009) ومسلم، كتاب صلاة المسافرين باب فضل الفاتحة وحواتيم سورة البقره (807)

www.sirat-e-mustageem.com 725 كتاب فصائل القرآن كا

عَنُ أَسُمَاءَ بِنُتِ يَزِيُدَ قَالَتُ قَالَ قَالَ وَاللّهِ وَاللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللهِ اللهُ اللهِ المِلْ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المِلْمُلْمُ اللهِ اللهِ المِلْمُلْمُلْم

سيّدن اساء بنت يزيد كهتى بين رسول الله طَضَائَيْمُ نَـ فَ فَرَمَايا: اسم اعظم ان دوآيات مين به: "اَللَّهُ لَا إِلْهَ إِلَّا هُوَ الْسَحَيُّ الْقَيْوُمُ. " (سورة البقرة: ٢٥٠)_" إِلْهُ كُمُ اللهُ وَاحِدٌ . " (سورة البقرة: ٢٥٥) . "إِلْهُ كُمُ اللهُ وَاحِدٌ . " (سورة البقرة: ٢٥٥)

فواند: سُنس (۱) اسم اعظم بیاللہ کا ایبا اسم ہے کہ اس کے ذریعہ مائلی گئی دعا رونبیں ہوتی البتہ اس کی تعین میں کچھ اختلاف ہے (۲) ندکورۃ دونوں آیات میں سے پہلی سورۃ بقرۃ سے ہے جب کہ دوسری آل عمران سے (ویکھیے آئندہ صدیث 3436)

3433 حَدَّثَنَا مُجَاهِدٌ هُوَ ابْنُ مُوْسَى حَدَّثَنَا مَعْنٌ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ صَالِحٍ عَنْ أَبِي الزَّاهريَّةِ

جیر بن نفیر کہتے ہیں رسول الله طفی اَلَیْن نے فرمایا: "الله تعالیٰ نے سورة بقرة کوالیں دوآیات برختم کیا جو مجھے ایسے خزانے سے دی گئیں جوعرش کے نیچے ہے لہذا انہیں سیکھو اور انبی عورتوں کو سکھاؤ۔ کیونکہ وہ نماز اور قرآن اور دعا سب بچھ ہیں۔"

عَنُ جُبَيُ رِ بُنِ نَفَيُرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ إِنَّ اللَّهَ خَتَمَ سُورَةَ الْبَقَرَةِ بِآيَتَيُنِ أَعُطِيتُهُ مَا مِنُ كَنُزِهِ الَّذِى تَحُتَ الْعَرُشِ فَتَعَلَّمُوهُنَّ وَعَلِّمُوهُنَّ لِسَائَكُمُ فَإِنَّهُمَا صَلاةً وَقُرُآنٌ وَحُلِّمُوهُنَّ لِسَائَكُمُ

[15] بَابِ فِي فَضُلِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ وَآلِ عِمُرَانَ سورة بقرة اورآ لعمران كى فضيلت

3434 ـ حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا بَشِيْرٌ هُوَ ابْنُ الْمُهَاجِرِ....

حَدَّثِنِى عَبُدُ اللَّهِ بُنُ بُرَيُدَةَ عَنُ أَبِيهِ قَالَ كُنُتُ جَالِسًا عِنُدَ النَّبِيِّ عَلَىٰ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ تَعَلَّمُوا سُورَةَ الْبَقَرَةِ فَإِنَّ أَخُذَهَا بَرَكَةٌ وَتَرُكَهَا حَسْرَةٌ وَلا يَسْتَطِيُعُهَا

عبداللہ بن بریدۃ اپنے والد سے بیان کرتے ہیں کہ میں نی مطبع کی میں ایک کی اس بیٹا تھا۔ میں نے سنا آپ فرما رہے سے فرما رہے سے فرما رہے سے فرما رہے سے فرما رہے میں برکت ہے۔ اسے چھوڑ نا حسرت ہے۔ اور جادوگر اسے نہیں پڑھ سکتے۔ پھر پچھ دیر

❶ حسن: أخرجه ابوداؤد، كتاب الصلاة، باب الدعاء (1496) والترمـذي، كتـاب الدعوات، باب ماجاء عن جامع الدعوات عن رسول الله ﷺ (3472) وابن ماجه، كتاب الدعاء،باب اسم الله الأعظم (3855)

[•] مرسل، ضعيف: أخرجه مسلم مفاه، نيزامام حاكم ني (2066) اوريه في في الثعب (3403) مين است موصولاً بهي بيان كيا ب-

726 كتاب فضائل القرآن 726

خاموش رہے اور فرمایا: ''سورۃ بقرۃ اور آل عمران سیکھو بے شک وہ نور ہیں وہ اینے ساتھی پر قیامت کے دن ساہیہ کریں گی ۔ گویا کہوہ دو بادل ہیں یا دوسائبان ہیں یا صف باندھے ہوئے پرندوں کی مکڑی ہے۔ بے شک قرآن قیامت کے دن قبر سیٹے وقت اینے ساتھی سے بریثان آ دی کی طرح ملے گا۔ اور اسے کیے گا۔ کیا تو مجھے پہچانتا ہے تو وہ کہے گا: میں تیرا ساتھی قرآن ہوں گرمیوں میں تو جس کی وجہ سے پیاسا رہا اور راتوں کو جاگتا رہا۔ ہر تاجر این تجارت کے پیچے ہوتا ہے تو آج ہر تجارت سے الگ ہےاس کے داکیں ہاتھ میں بادشاہت اور باکیں ہاتھ میں ہمیشہ کی جنت دی جائے گی۔ اور اس کے سر پرعزت کا تاج رکھا جائے گا۔اوراس کے والدین کوابیا لباس پہنایا جائے گا کہ اس کی قیمت تمام دنیا بھی نہیں ہوسکتی۔ وہ کہیں گے: ہمیں یہ کپڑے کیوں پہنائے ہیں؟ ان سے کہا جائے گا: تمہارے بیٹے کے قرآن پڑھنے کی دجہ ہے۔ پھراہے کہا جائے گا' پڑھو اور جنت کے بالا خانے اور درجے چڑھتے جاؤ۔وہ تیزی سے پڑھے یا مھمر کر جب تک بڑھتا رہے گاچڑھتارہے گا۔

الْبَطَلَةُ ثُمَّ سَكَتَ سَاعَةً ثُمَّ قَالَ تَعَلَّمُوا سُودَ-ةَ الْبَقَرَ-ةِ وَآلِ عِـمُـرَانَ فَإِنَّهُمَا الزَّهُ رَاوَان وَإِنَّهُ مَا تُظِلَّان صَاحِبَهُمَا يَوُمَ الُقِيَامَةِ كَأَنَّهُمَا غَمَامَتَان أَوُ غَيَابَتَانِ أَوُ فِرُقَانِ مِنُ طَيْرٍ صَوَافَّ وَإِنَّ الُقُرُ آنَ يَلُقَى صَاحِبَهُ يَوُمَ الْقِيَامَةِ حِينَ يَنْشَقُّ عَنْهُ الْقَبْرُ كَالرَّجُلِ الشَّاحِب فَيَقُولُ لَهُ هَلُ تَعْرِفُنِي فَيَقُولُ مَا أَعْرِفُكَ فَيَقُولُ أَنَّا صَاحِبُكَ الْقُرُآنُ الَّذِى أَظُ مَ أَتُكَ فِي الْهَوَاجِرِ وَأَسُهَرُتُ لَيُلَكَ وَإِنَّ كُلَّ تَاجِرِ مِنُ وَرَاءِ تِجَارَتِهِ وَإِنَّكَ الْيَسُومَ مِنْ وَرَاءِ كُلِّ تِسَجَارَةٍ فَيُعُطَى الْمُلْكَ بِيَمِينِهِ وَالْخُلُدَ بِشِمَالِهِ وَيُوضَعُ عَلَى رَأْسِهِ تَاجُ الْوَقَارِ وَيُكُسَى وَالِدَاهُ حُلَّتِيُنِ لَا يُقَوَّمُ لَهُ مَا الدُّنيَا فَيَقُولَان بِمَ كُسِينَا هٰذَا وَيُقَالُ لَهُمَا بِمَأْخُذِ وَلَدِكُمَا الْقُرُآنَ ثُمَّ يُقَالُ لَهُ اقُرَأَ وَاصْعَدُ فِي دَرَجِ الْجَنَّةِ وَغُرَفِهَا فَهُوَ فِيُ صُعُوْدٍ مَا دَامَ يَقُرَأُ هَذًّا كَانَ أَوُ تَرْتيلا . ٥

 معاویہ بن سلام اس حدیث کے راوی ہیں وہ بتاتے ہیں کہ مجھے سے بات پیچی ہے کہ بطلۃ سے مراد کا بمن و جادوگر ہیں (تنقیح الرواۃ)

3435 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِح حَدَّثَنِي مُعَاوِيَةُ

عَنُ أَبِى يَحْيَى سُلَيْمِ بَنِ عَاهِ إِنَّهُ سَمِعَ أَبِ الْمَامَةَ يَقُولُ إِنَّ أَحًا لَكُمُ أُرِى فِى الْسَمَامِ أَنَّ النَّاسَ يَسُلُكُونَ فِى صَدُعِ الْسَمَنَامِ أَنَّ النَّاسَ يَسُلُكُونَ فِى صَدُعِ جَبَلٍ وَعُرٍ طَوِيُلٍ وَعَلَى رَأْسِ الْجَبَلِ شَجَرَتَانِ خَصْرَاوَانِ تَهْتِفَانِ هَلُ فِيكُمُ مَنُ مَنْ يَقُرَأُ سُورَةَ الْبَقَرَةِ هَلُ فِيكُمُ مَنُ يَقُرَرُ أَسُورَةَ آلِ عِمْرَانَ فَإِذَا قَالَ الرَّجُلُ نَعَمُ دَنَتَا بِأَعُذَاقِهِمَا حَتَّى يَتَعَلَّقَ الرَّجُلُ نَعَمُ دَنَتَا بِأَعُذَاقِهِمَا حَتَّى يَتَعَلَّقَ اللَّهُ مَن اللَّهُ الْمَعَلَ اللَّهُ اللَّهُ الْمُعَلَى اللَّهُ اللِّهُ اللَّهُ ا

ابو یجیٰ سلیم بن عامر کہتے ہیں انہوں نے ابوامامہ سے سناوہ کہدر ہے تھے: تمہارے کی بھائی نے خواب میں دیکھا کہ لوگ ایک شخت اور لمبے پہاڑ کے راستہ پر چل رہے ہیں اور پہاڑ کے راستہ پر چل رہے ہیں اور پہاڑ کے سر پر دوسبر درخت ہیں جو پکار رہے ہیں: کیا تم میں کوئی سورة بقرة پڑھنے والا ہے؟ کیا تم میں کوئی سورة آل عمران پڑھنے والا ہے؟ جب کوئی آدمی کہتا ہے: "ہاں ۔" تو وہ اپنی شاخیس جھکا دیتے ہیں وہ اس میں لئک جاتا ہے اور پہاڑ پر چڑھ جاتے ہیں۔ ابو محمد کہتے ہیں: الاعذاق بیمنیوں کو کہتے ہیں۔"

عَلَيْدَ اللهِ بْنِ عَمْرٍ وَعَنْ زَيْدٍ عَنْ جَابِرِ عَنْ أَبِي اللهِ بْنِ عَمْرٍ و عَنْ زَيْدٍ عَنْ جَابِرِ عَنْ أَبِي

الصُّحَى....الصُّحَى

عَنُ مَسُرُوقٍ عَنُ عَبُدِ اللّهِ قَالَ قَرَأُ رَجُلٌ عِنُدَ عَبُدِ اللّهِ الْبَقَرَةَ وَآلَ عِمُرَانَ فَقَالَ قَرَأْتَ سُورَتَيْنِ فِيهِمَا اسْمُ اللّهِ الْأَعْظَمُ الَّذِي إِذَا دُعِي بِهِ أَجَابَ وَإِذَا سُئِلَ بِهِ أَعْظَى . ٥

مسروق کہتے ہیں عبداللہ کے پاس ایک آدمی نے سورة بقرۃ اور آل عمران برمھی تو انہوں نے فرمایا: "تونے جو سورتیں برمھی ہیں ان میں اللہ کا اسم اعظم ہے جب اس کے ذریعے دعا کی جاتی ہے تو قبول کرتا ہے اور جب اس کے ذریعے مانگا جاتا ہے تو دیتا ہے۔"

3437 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلامِ بْنُ حَرْبٍ عَنِ الْجُرَيْرِيِ

شعبف: عبدالله بن صالح ضعیف ب، أعرجه ابوعبيد في فضائل القرآن (ص:236)

[•] صحيح بالشواهد: أخرجه الطحاوي في مشكل الآثار 63/1 والطبراني في الكبير 282/8 (7925) والحاكم (1861)

www.sirat-e-mustaqeem.com

المراقع المراق 728 ﴿ كَتَابِ فَضَائِلِ القَرآنَ ﴾ كتاب فضائل القرآن ﴾ ك

عَنُ أَبِي عَطَّافٍ عَنُ كَعُبِ قَالَ مَنُ قَرَأً الْبَقَـرَةَ وَآلَ عِمُرَانَ جَائَتَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَقُولُان رَبَّنَا لَا سَبِيلَ عَلَيْهِ . •

ابوعطاف سے منقول ہے کہ کعب نے کہا: ''جوسورۃ بقرہ اور آل عمران پڑھے گا تو یہ دونوں قیامت کے دن آ کر کہیں گی۔'' ''یا رب! اسے عذاب دینے کی کوئی صورت

[16] بَابِ فِي فَضُلِ آلِ عِمْرَانَ سورة آل عمران كي فضيلت

3438 - حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمِ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِيْ إِسْحَقَ.....

عَنُ سُلَمْم بُن حَنُظَلَةَ الْبَكُويّ قَالَ قَالَ للهِ على عليم بن خطله بكرى كبت بي عبدالله بن معود نے فرمایا: عَبُدُ اللَّهِ بُنُ مَسْعُودٍ مَنُ قَرَأَ آلَ ''جس نے سورہ آل عمران پڑھی وہ مالدار ہے اور عورتیں عِـمُرَانَ فَهُوَ غَنِيٌّ وَالنِّسَاءُ مُحَبَّرَةٌ قَالَ أَبُو مُحَمَّد مُحَبّرةٌ مُزَيّنةٌ . ٥ زينت كوكتية بين.''

خوشی کے اسباب سے ہیں۔''ابو محمد کہتے ہیں: ''مَـُحْبَرَ أُنْ''

فوائد: سورة آل عمران کی تلاوت انسان کوغنی کرنے والی دینی اعتبار سے بھی اور دنیاوی اعتبار سے بھی انشاء اللہ اور اس طرح سورۃ النساء کی زینت کا باعث ہے جب اس کی تعلیمات کو اپنایا جائے۔ 3439 حَدَّثَنَا إِسْحَقُ بْنُ عِيْسَى عَنِ ابْنِ لَهِيْعَةَ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ أَبِيْ حَبِيْبٍ......

ابوالخير كہتے ہيں عثان بن عفان وظافتان نے فرمایا: ' جس نے رات کوسورہ آل عمران کا آخری حصہ پڑھا اس کے لئے رات کا قیام لکھا جاتا ہے۔"

3440 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارِكِ حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ خَالِدِ

یجیٰ بن حارث کہتے ہیں کہ مکول نے فرمایا:''جس نے جعہ کے دن سورہ آل عمران بڑھی اس کے لئے فرشتے رات تک بخشش کی دعا کرتے رہتے ہیں۔"

عَنُ يَحْيَى بُنِ الْحَارِثِ عَنْ مَكُحُولٍ قَالَ مَنْ قَرَأً سُورَةَ آلِ عِمْرَانَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ صَلَّتُ عَلَيْهِ الْمَلَاثِكَةُ إِلَى اللَّيُلِ. ٥

عَنُ أَبِى الْسَحَيْرِ عَنْ عُثْمَانَ بُنِ عَفَّانَ

قَالَ مَنُ قَوَأَ آخِرَ آل عِمُرَانَ فِي لَيُلَةٍ

كُتِبَ لَهُ قِيَامُ لَيُلَةٍ . ٥

اسعیف: عبدالسلام نے جربری ہے آ خرعر میں ساع کیا۔

[🛭] صحيح: أخرجه ابوعبيد في فضائل القرآن ص (237_238) والبيهقي في الشعب (2615)

³ ضعيف: ابن لهيع ضعيف ب، ويكي مشكاة المصابيح (2171)

[◘]صحيح: مشكاة المصابيح (2172)

www.sirat-e-mustageem.com 729 کتاب فضائل القرآن

الكايعيُّ الكايعيُّ

3441 حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ سَلَّامٍ أَبُوْ عُبَيْدٍ قَالَ حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ الْأَشْجَعِيُّ حَدَّثَنِيْ مِسْعَرٌ

حَدَّثِنِيْ جَابِرٌ قَبْلَ أَنْ يَقَعَ فِيْمَا وَقَعَ فِيهِ.....

فعمی کہتے ہیں عبداللہ نے کہا:'' آخر رات کو تبجد میں سورة آل عمران کا پڑھنا غریب کے لئے خزانہ ہے۔''

عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ قَالَ عَبُدُ اللَّهِ نِعُمَ كَنُزُ الصَّعُدُولُثِ سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ يَقُوُمُ بِهَا فِى آخِوِ اللَّيُلِ . •

3442 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلام

عَنِ الْبُحُرِيُوِيِّ عَنُ أَبِي السَّلِيُلِ قَالَ اَصَابَ رَجُلٌ دَمًا قَالَ فَأُوَى إِلَى وَادِى مَجَنَّةٍ وَادٍ لَا يُمُسِى فِيهِ أَحَدُ إِلَّا أَصَابَتُهُ جَنَّةٌ وَعَلَى شَفِيرِ الْوَادِى رَاهِبَانِ فَلَمَّا جَنَّةٌ وَعَلَى شَفِيرِ الْوَادِى رَاهِبَانِ فَلَمَّا أَمُسَى قَالَ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ هَلَكَ وَاللَّهِ الرَّجُلُ قَالَ فَافَتَتَحَ سُورَةَ آلِ وَاللَّهِ الرَّجُلُ قَالَ فَافَتَتَحَ سُورَةَ آلِ عِمُ رَانَ قَالَا فَقَراً سُورَةً طَيِّبَةً لَعَلَّهُ عِمُ رَانَ قَالَا فَقَراً سُورَةً طَيِّبَةً لَعَلَّهُ مَن نَعَدُ عَلَيْهُ اللَّهُ لَا أَمُن لَقَلْمٍ مَن لَكُ اللَّهُ اللَّ

جریری سے منقول ہے کہ ابوسلیل نے کہا: 'ایک شخص نے قتل کر کے وادی بجنہ میں بناہ کی وہاں جو بھی جاتا جن اس کے پاس ضرور آتے اور وادی کے کنارے پر دو درویش رہتے تھے جب شام ہوئی تو ان میں سے ایک نے اپنے ساتھی سے کہا: ''اللہ کی قتم! بیشخص تو ہلاک ہو گیا۔'' کہتے ہیں: اس نے سورۃ آل عمران پڑھنا شروع کی تو ان دونوں نے کہا: ''یہتو پاکیزہ سورت پڑھ رہا ہے شاید نجات بیا جائے کہتے ہیں: تو وہ رات کو صحیح سالم رہا۔ ابو محمد کہتے ہیں: تو وہ رات کو صحیح سالم رہا۔ ابو محمد کہتے ہیں: تو وہ رات کو صحیح سالم رہا۔ ابو محمد کہتے ہیں: تو وہ رات کو صحیح سالم رہا۔ ابو محمد کہتے ہیں: تو وہ رات کو سے اور ابن نفیر بھی کہا

[17].... بَابِ فَضَائِلِ الْأَنْعَامِ وَالسُّوَدِ سوره انعام كى فضيلت

3443 حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هَانِءٍ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ

میتب بن رافع کہتے ہیں عبداللہ نے کہا: ''سات کمی سورتیں تورات کی مانند ہیں' ملین انجیل کی مانند ہے اور مثانی زبور کی مانند ہیں اس کے بعد تمام قرآن فضیلت والا عَنِ الْمُسَيَّبِ بُنِ رَافِعِ قَالَ قَالً عَبُدُ اللَّهِ عَنِ الْمُسَيَّبِ بُنِ رَافِعِ قَالَ قَالً عَبُدُ اللَّهِ السَّبُعُ الطُّوَلُ مِثْلُ التَّوُرَاةِ وَالْمِئِينَ مِثْلُ الْإِنْسِجِيلِ وَالْمَثَانِىُ مِثْلُ الزَّبُوْرِ وَسَائِرُ

[•] صحيح: أخرجه البيهقي في الشعب (2616) وعبدالرزاق (6015)

ضعیف: عبدالسلام کا ابواسحاق سے ساع متا خرب۔

www.sirat-e-mustaqeem.com

حَكْرُ لِيُمْنَىٰ الْكَالِمِينَ ﴾ ﴿ 730 كَتَابِ فَضَائِلُ القرآن ﴾ ﴿ كَتَابِ فَضَائِلُ القرآن ﴾ ﴿

الُقُرُآن بَعُدُ فَضُلٌ . •

3444 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْم حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ أَبِيْ إِسْحٰقَ......

عَنْ عَبُدِ اللَّهِ بُن خَلِيْفَةَ عَنْ عُمَرَ قَالَ عبدالله بن ظيفه عمنقول عِ عمر رالله في الله عمر الله عبدالله عن غيدالله الله عبد الله

الْأَنْعَامُ مِنُ نَوَاجِبِ الْقُرُآنِ. ©

انعام قرآن کی خاص سورتوں میں ہے ہے۔''

3445 حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ أَبِيْ عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ رَبَاحٍ عَنُ كَعُبٍ قَالَ

فَاتِحَةُ التَّوْرَاةِ اللَّانُعَامُ وَخَاتِمَتُهَا هُودٌ. 6

عبدالله بن رباح کہتے ہیں: میں نے کعب سے سنا، انہوں نے فرمایا:''توراة کا شروع سورہ انعام ہے اور اس کا ختم

فوائد: (۱) یه الله تعالی کی اس امت پرخصوصی نوازش ہے کہ اسکے ستر بزار افراد بلاحساب جنت میں داخل ہوں گے لیکن ان کی علامت یہ ہوگ ((هسم الله نیس داخل ہوں گے لیکن ان کی علامت یہ ہوگ ((هسم الله نیس نوکلون ولا یہ کتب و ون و علی ربھم یتو کلون) کہ وہ نہ تو دم کرواتے ہوں گے نہ داغ لگواتے ہوں گے اور نہ برشگوتی لیتے ہوں گے اور اینے رب پر توکل کرتے ہوں گے ۔"

سورة ہود ہے۔''

3446 أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا هَمَّامٌ عَنْ أَبِيْ عِمْرَانَ الْجَوْنِيّ

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ رَبَاحٍ أَنَّ النَّبِيَّ عَلَيْ عَبِدالله بن رباح كمت بين نبي السَّاعَيْنَ في مايا: "جمعه ك

قَالَ اقْرَنُواْ سُورَةَ هُودٍ يَوُهُمُ النُجُمُعَةِ . ٥٠ دن سورت بود رياهو ـــ "

3447 حَدَّثَ نَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ خَدَّثَنَا أَبُوْ عِمْرَانَ الْجَوْنِيُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ

كعب كہتے ميں رسول الله طفي ويل في مايا: "جمعه كے دن سورت مود يراهو ـ"

عَنُ كَعُبٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ اللهِ عَلَىٰ الْحَدُمُ المُحُمُعَةِ . 9

[•] منقطع، ضعيف: المسيب، ابن معود ينهي طع، أخرجه ابن ابي شبيه 554/10 (10320)

² جيد: أخرجه ابوعبيد في فضائل القرآن (ص: 240)

[🛭] صحيح: أخرجه ابي شيبه 555/10 (10323)

[🛭] مرسل،ضعیف

[🧿] مرسل ضعيف: أخرجه ابوداؤد، في مراسيله (59) والبيهقي في الشعب (2438) وكيُّك:الدرالمنشور 319/1

www.sirat-e-mustageem.com 731 کتاب فضائل القرآن ک

ينتن الكاليني

[18] بَابِ فِي فَضُلِ سُورَةِ الْكَهُفِ سورة الكهف كى فضيلت

3448 حَدَّثَنَا أَبُوْ الْمُغِيرَةِ

حَدَّثَتُنَا عَبُدَةً عَنُ خَالِدِ بُنِ مَعُدَانَ قَالَ مَنُ قَدَانً قَالَ مَنُ قَدَراً عَشُرَ آيَساتٍ مِنَ الْكَهُفِ لَمُ يَخف الدَّجَالَ. • وَيَعْفُ الدَّجَالَ. • وَيَخفُ الدَّجَالَ. • وَيَعْفُ الدَّبُعُونُ الدَّالِيْ الْعَلَالَ الْعَلَالَ الْعَلْمُ الْعَلَالُ الْعَلْمُ اللَّهُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ اللَّهُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ اللَّهُ اللَّهُ الْعَلْمُ اللَّهُ الْعَلْمُ اللَّهُ الْعَلْمُ اللَّهُ اللَّهُ الْعَلْمُ اللَّهُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ اللَّهُ الْعَلْمُ اللَّهُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ اللَّهُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ اللَّهُ الْعَلْمُ الْعِلْمُ الْعُلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعَلْمُ الْعُلْمُ الْعُلُمُ الْعُلْمُ الْعُلْمُ الْعُلْمُ الْعُلْمُ الْعُلْمُ الْعُل

عبدہ کہتے ہیں خالد بن معدان نے کہا: ''جس نے سورة کہف کی دس آیات پڑھیں اسے دجال کا خوف نہیں ہو گھ ''

فوائد: دجال کا فتذائبائی خطرناک ہوگا اس لیے آپ طین آپ میں اس فتنے سے اللہ کی پناہ مانگا کرتے تھے جیسا کہ تشہد میں درود کے بعد دعا منقول ہے لہذا ان آیات کا پڑھنا انسان کو اس عظیم فتنے سے بچانے کا باعث ہوگا چنانچہ ان کا خوب اہتمام کرنا جا ہے۔ (واللہ المستعان)

3449 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ عَنِ الْأَوْزَاعِيِّ.....

عَنُ عَبُلَدَةَ عَنُ زِرِّ بُنِ حُبَيْشٍ قَالَ مَنُ قَدَرًا آخِرَ سُورَةِ الْكَهُفِ لِسَاعَةٍ يُرِيدُ يَقُومُ مِنَ اللَّيُلِ قَامَهَا قَالَ عَبُدَةُ فَجَرَّ بُنَاهُ فَوَجَدُنَاهُ كَذْلِكَ . •

عبدة مع منقول ہے کہ زربن جیش نے کہا: ''رات کی کسی گھڑی میں اٹھنے کے لئے جو شخص سورة کہف کا آخر پڑھے گا وہ اسی وقت الٹھے گا۔'' عبدہ کہتے ہیں:''ہم نے اسے آزمایا تو ایسا ہی یایا۔''

3450 حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ حَدَّثَنَا أَبُوْ هَاشِمٍ عَنْ أَبِيْ مِجْلَزِ

قیس بن عباد سے منقول ہے ابو سعید خدری رہائیڈ نے کہا: ''جو مخص جمعہ کی رات کو سورہ کہف پڑھے گا اس کے لئے بیت العیق تک روشنی ہوگ۔''

عَنُ قَيْسِ بُنِ عُبَادٍ عَنُ أَبِي سَعِيُدٍ الْخُدُرِيِّ قَالَ مَنُ قَرَأً سُورَةَ الْكَهُفِ لَيُلَةَ الْجُمُعَةِ أَضَاءَ لَهُ مِنَ النُّورِ فِيمَا

بَيْنَةُ وَبَيْنَ الْبَيْتِ الْعَتِيُّقِ. ©

فوائد: قیامت کواند هر راستول پرروشنی کی ضرورت موگ تو مونین این اعمال کی روشنی

¹ صحيح بالشاهد: أخرجه مسلم، كتاب صلاة المسافرين، باب فضل سورة الكهف و آية الكرسي (809) وابوعبيد في فضائل القرآن (ص:245)

² ضعيف: محر بن كثيرضعيف راوى ب، أخرجه ابوعبيد في فضائل القرآن (ص: 246)

صحيح: أخرجه ابوعبيد في فضائل القرآن (ص: 244) والبيه في الشعب (2444) والنسائي في عمل اليوم والليلة (953) والحاكم (2072)

حَكُونَ الْخَارِيمِينَ الْخَارِيمِ الْخَارِيمِينَ الْخَارِيمِينَ الْخَامِينِ الْخَارِيمِينِ الْخ

میں ان ظلمتوں کوعبور کریں چنانچہ وہاں روشی کے حصول کے لیے ضروری ہے کہ ہم جمعہ کی رات اس کا اہتما م کریں ۔واللہ الموفق

[19] ... بَابِ فِي فَضُلِ سُورَةِ تَنُزِيلُ السَّجُدَةِ وَتَبَارَكَ سُورة عَده اورسورة ملك كى فضيلت

3451 أُخْبَرَنَا أَبُوْ الْمُغِيْرَةِ

خَدَّتُنَّنَا عَبُدَةً عَنُ خَالِدِ بَنِ مَعُدَانَ قَالَ الْحُرَثُوا الْمُنجِّيةَ وَهِى الم تَنْزِيلُ فَإِنَّهُ الْحَنْدِيلُ فَإِنَّهُ الْمَعْدِينَ وَهِى الم تَنْزِيلُ فَإِنَّهُ اللَّعْذِيقِ اللَّمَ تَنْزِيلُ فَإِنَّهُ صَلَّا اللَّعْذِيقِ اللَّحْطَايَا اللَّيْسُ اللَّحْطَايَا الْحُفِلُ اللَّحْطَايَا الْحُفِلُ اللَّحَ اللَّهِ وَقَالَتُ رَبِّ فَنَشَرَتُ جَنَاحَهَا عَلَيْهِ وَقَالَتُ رَبِّ فَنَشَعَهَا الْحَيْدُ وَرَاثِتِى فَشَفَعَهَا الْحُفِلُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَالنَّهُ فَاللَّهُ عَلَيْهِ وَقَالَ الْكَتُبُوا لَهُ بِكُلِّ خَطِيْتَةٍ اللَّرَبُ فِيهِ وَقَالَ اكْتُبُوا لَهُ بِكُلِّ خَطِيْتَةٍ حَسَنَةً وَارْفَعُوا لَهُ دَرَجَةً . •

عبدة بیان کرتے ہیں خالد بن معدان نے کہا: ''نجات دین معدان نے کہا: ''نجات دین معدان نے کہا: ''نجات دین معلوم ہوا ہے ایک آ دی اسے پڑھتا تھا اس کے علاوہ اور کھھ کھھنہ پڑھتا تھا اس کے علاوہ اور کھھنہ پڑھتا تھا وہ بہت گنجگارتھا۔ اس سورة نے اپنے بازو اس پر پھیلا کر کہا: ''اللہ! اسے معاف کردئ کیونکہ سے بچھے کثرت سے پڑھتا تھا۔'' اللہ تعالی نے اس کے متعلق سے بچھے کثرت میں بڑھتا تھا۔'' اللہ تعالی نے اس کے متعلق اس کی سفارش قبول کی اور فرمایا: ''اس کے لئے ہرگناہ کے بدلہ میں ایک نیکی لکھ دواور اس کے درجے بلند کردو۔''

3452 حَدَّثَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ أَخْبَرَنَا أَبُوْ الزُّبَيْرِ

عبداللہ بن ضمر ق کہتے ہیں کعب نے کہا:''جوسور ق سجدہ اور سور ق ملک پڑھے گا اس کے لئے ستر نیکیاں لکھی جا کیں گ اس کی ستر برائیاں مٹائی جا کیں گی اور اس کے ستر درجے بلند کئے جا کیں گے۔''

عَنُ عَبُدِ اللهِ بُنِ ضَمُرَةَ عَنُ كَعُبٍ قَالَ مَنُ قَبُ اللهِ بُنِ ضَمُرَةَ عَنُ كَعُبٍ قَالَ مَنُ قَرَأً تَنُولِيلُ السَّجُدَةَ وَ تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلُكُ كُتِبَ لَهُ سَبُعُونَ حَسَنَةً وَحُطَّ عَنُهُ بِهَا سَبُعُونَ سَيِّئَةً وَرُفِعَ لَهُ بِهَا سَبُعُونَ سَيِّئَةً وَرُفِعَ لَهُ بِهَا سَبُعُونَ دَرَجَةً . 9

فوائد: حدیث میں ندکور جوسورة "تنزیل السجدة اور تبارك" كے عالى المرتبت ہونے كى شہادت دية بين نيز يه سورتين چونكه آدى كى نجات كا باعث بين جس طرح دوسرى روايت سے اس كى شہادت ملتى ہے اور آئنده مّره كا قول بھى آرہا ہے لہذا ان كى قراءت كا اہتمام انتهائى نافع ہے اور آپ سے این اللہ ماریکا ہے۔

عبدة بنت فالدكا ترجمه ندل سكا و يكفئ الدرالمنشور 5 170_170.

صحيح: أخرجه ابن الضريس في فضائل القرآن (213) وكيت الدر المنشور 170/5

www.sirat-e-mustaqeem.com

سے ثابت ہے کہ آپ طفی میں رات سونے سے قبل ان کی تلاوت فرما کرسویا کرتے تھے۔

ديكھيے آئندہ (3454) واللہ الموفق

3453 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنِي مُعَاوِيَةُ بْنُ صَالِحٍ

أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا خَالِدٍ عَامِرَ بُنَ جَشِيبٍ
وَبَحِيرَ بُنَ سَعُدٍ يُحَدِّثَانِ أَنَّ خَالِدَ بُنَ
مَعُدَانَ قَالَ إِنَّ الم تَنْزِيلُ تُجَادِلُ عَنُ
صَاحِبِهَا فِى الْقَبُرِ تَقُولُ اللَّهُمَّ إِنُ
صَاحِبِهَا فِى الْقَبُرِ تَقُولُ اللَّهُمَّ إِنُ
كُنُتُ مِنُ كِتَابِكَ فَشَفِّعُنِى فِيهِ
وَإِنْ لَمُ أَكُنُ مِنُ كِتَابِكَ فَشَفِّعُنِى فِيهِ
وَإِنَّ لَمُ أَكُنُ مِنُ كِتَابِكَ فَشَفِعُنِى عَنُهُ
وَإِنَّهَا تَكُونُ كَالطَّيْرِ تَجُعَلُ جَنَاحَهَا
وَإِنَّهَا تَكُونُ كَالطَّيْرِ تَجُعَلُ جَنَاحَهَا
وَإِنَّهَا تَكُونُ كَالطَّيْرِ تَجُعَلُ جَنَاحَهَا
عَلَيْهِ فَيُشُفِعُ لَهُ فَتَمْنَعُهُ مِنُ عَذَابِ
عَلَيْهِ فَيُشَفِعُ لَهُ فَتَمْنَعُهُ مِنُ عَذَابِ
الْقَبُرِ وَفِى تَبَارَكَ مِثْلَهُ فَكَانَ خَالِدٌ لاَ

ابوغالد عامر بن جشیب اور بحیر بن سعد بیان کرتے ہیں کہ خالد بن معدان نے کہا: ''سورة سجدہ اپنے پڑھنے والے کی طرف سے قبر میں جھگڑا کرے گی کہے گی: ''اے اللہ! اگر میں تیری کتاب کی سورة ہوں تو اس کے لئے میری سفارش قبول فرما اگر میں تیری کتاب کی سورة نہیں ہوں تو مجھے اس میں سے مٹا دے اور وہ پرندے کی طرح اس پراپنے بازو پسیل نے گی۔'' تو اس کے لئے اس کی سفارش قبول کی جائے گی اور اس سے قبر کا عذاب روک دیا جائے گا اور جائے گی اور خالد بھی سورة ملک کی بھی اسی طرح فضیلت ہے۔'' اور خالد بھی اسی طرح فیل ہے۔'' اور خالد بھی اسی طرح فیل ہے۔'' اور خالد بھی ہے۔'' اور خالد ہے۔''

3454 - أَخْبَرَنَا أَبُوْ نُعَيْم حَدَّنَا سُفْيَانُ عَنْ لَيْثٍ عَنْ أَبِيْ الزُّبَيْرِ

سيّدنا جابر رضي منظم عن من من المنظمة الله الله المرسورة المحده اور سورة المك رياض المنظم الله المرسورة المك رياض المنظم ا

عَنُ جَمَابِسٍ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لَا يَنَامُ حَتْى يَقُراً تَنُزِيلُ السَّجُدَةَ وَتَبَارَكَ . ٥

رِ 3455 ـ حَدَّ ثَنَا مُوسَى بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ

عَنْ لَيْتٍ عَنْ طَاوْسٍ قَالَ فُضِلَتَا عَلَى ليد كَتِ بين طاوَس نَے كہا: "يه سورتيں قرآن كى ہر كُلّ سُورَةٍ فِي الْقُرْآن بِسِتِينَ حَسَنَةً . ٥ سورت سے ساٹھ درجے افضل ہيں۔ "

كُلِّ سُورَةٍ فِي الْقُرُآنِ بِسِتِّينَ حَسَنَةً . ٥ 3456 ـ أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

• ضعیف: عبداللہ بن صالح ضعیف ہے۔ امام ترفدی نے اسے مشکاۃ (2176) میں داری کے حوالے سے روایت کیا ہے۔ ویکھنے الدر المنشور 171/5

² صحيح اخرجه البخاري، في الأدب المفرد (1209) والحاكم (3545) والنسائي في الكبري (10542)

[€] ضعيف: أخرجه ابن الضريس في فضائل القرآن (233) وعبدالرزاق (6035)

حَكْرُ نَيْنَالْكَالِيَّاقِيَّا ﴾ 734 ﴿ كتاب فضائل القرآن ﴾ 734

عمرو بن مرة كہتے ہيں ميں نے اپنے والد سے سا وہ كہتے ہے: "ايك آ دمى كى قبر ميں فرشتے آئے۔ تو وہ قبر كے كنارے پر ہوگيا۔ قرآن كى تميں آ يات اس كى طرف سے جھڑ نے لكيس ميں نے اور مسروق نے ديكھا سورة ملك كے علاوہ كسى سورة ميں تميں آ يات نہيں ہيں۔"

[20] بَابِ فِي فَضُلِ سُورَةِ طه وَ يُس سورة طه اوريليين كى فضيلت

3457 حَدَّثَ نَنَا إِسْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُهَاجِرِ بْنِ الْمِسْمَادِ عَنْ عُمَرَ بْنِ حَفْص بْن ذَكُوانَ عَنْ مَوْلَى الْحُرَقَةِ

عَنُ أَبِى هُسرَيُسرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَنُ أَبِى هُسرَيُسرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّهِ عَبَارَكَ وَتَعَالَى قَرَأَطَة وَيُستَ قَبُلَ أَنْ يَسُحُلُقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرُضَ بِسَأَلُفِ عَسامٍ فَلَمَّ اسَمِعَتِ السَّمَلاتِكَةُ النَّقُرُآنَ قَالَتُ طُولُي لِأُمَّةٍ النَّهُ رَآنَ قَالَتُ طُولُي لِأَجُوافِ يَنْدُزِلُ هٰذَا عَلَيْهَا وَطُولِي لِأَلْسِنَةٍ تَنَكَلَّمُ تَسَحُمِلُ هٰذَا عَلَيْهَا وَطُولِي لِأَلْسِنَةٍ تَنَكَلَّمُ تَسَحُمِلُ هٰذَا وَطُولِي لِأَلْسِنَةٍ تَنَكَلَّمُ

بهٰذَا . ٥

سیّدنا ابوہریرۃ وَفَاقَیْنَ کہتے ہیں رسول الله طِنْفَاقَیْنَ نے فرمایا: 'الله تعالیٰ نے آسان و زمین پیدا کرنے سے ہزار برس پہلے سورۃ طہ اور یسین پڑھی فرشتوں نے اسے سنا تو کہا: ''اس امت کے لئے خوشخری ہے جس کے لئے یہ نازل ہوگا اور ان پیٹوں کے لئے خوشخری ہے جو اسے اٹھا کیں گے ان زبانوں کے لئے خوشخری ہے جو اسے رہھیں گی۔'

[21].... بَا**ب فِ**ى فَضُلِ يُس سورة ليتين كى فضيلت

3458 حَدَّثَنَا أَبُوْ الْوَلِيْدِ مُوسَى بْنُ خَالِدٍ.....

2 ضعيف حدًا: ابن حمان وابن جوزى كت بين (هذا من موضوع) و يحك ميزان الاعتدال 67/1، ومشكاة المصابيح (2148)

[◘]صحيح: أخرجه ابن الضريس في فضائل القرآن (234) وابوعبيد في فضائل القرآن (ص :260) والطبراني في الكبير 140/9 (8651)

735 كتاب فضائل القرآن ك الكاليكيُّ الكاليكيُّ

معتمر اینے والد سے بیان کرتے ہیں انہوں نے کہا: حسن سے معلوم ہوا انہوں نے کہا: 'جو اللہ کی رضا مندی کے لئے سورۃ لیمین پڑھے گا وہ بخش دیا جائے گا اور مجھے پی خبر بھی پینچی کہ وہ سارے قر آن کے برابر ہے۔''

حَـدَّ ثَنَا مُعُتَمِرٌّ عَنُ أَبِيهِ قَالَ بَلَغَنِي عَنِ الُحَسَنِ قَالَ مَنُ قَرَأً يس فِي لَيُلَةٍ ابُتِغَاءَ وَجُهِ اللَّهِ أَوْ مَرُضَاةِ اللَّهِ غُفِرَ لَهُ _ وَقَالَ بَلَغَنِي أَنَّهَا تَعُدِلُ الْقُرُآنَ كُلَّهُ. •

فوائد: سورة لیمین قران کا دل اور مردول کے ساتھ تعلق کی بناء پر بہت مشہور سورت ہے البتہ اس کی فضیلت بارے ملنے والی جمیع روایات ضعیف ہیں بلکہ بعض موضوع درجے کی ہیں بعض علاء کا قول ہے کہ سی سخت کام کے وقت سورۃ کیس کا پڑھنا اسے آسان کر دیتا ہے اور مرنے والے کے سامنے پڑھنے سے رحمت و برکت نازل ہوتی ہے اور روح سہولت ہے نکلتی ہے (واللہ اعلم) (تفسیر ابن کثیر دیکھیے تفسیر سورۃ یکس) لیکن علاء کا پیقول احادیث کے عدم ثبوت کی بناء قابل توجنہیں کیونکہ نزول رحمت و برکت قران کو کہیں سے بھی ر پڑھنے سے ہوسکتی اس کے لیے سورۃ کیس کو خاص کرنے کی خاص دلیل ہونی حاہیے واللّٰد اعلم 3459 حَدَّثَ نَا مُحَمَّدُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ صَالِح عَنْ هَارُوْنَ أَبِيْ مُحَمَّدِ عَنْ مُقَاتِلِ بْنِ حَيَّانَ عَنْ قَتَادَةَ

عَنُ أَنَى سَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِنَّ مَ سَيِّدنا السِّ فِالنَّمَ كَيْمَةُ بِينِ رسول الله طَيْكَامَيْنَ نَے فرمایا: "مر چز کا دل ہے اور قرآن کا دل سورۃ یسین ہے جواسے یڑھے گا گویا کہاس نے دس بارقر آن پڑھا۔''

لِكُلِّ شَيْءٍ قَلْبًا وَإِنَّ قَلْبَ الْقُرْآن يُسَ مَنُ قَرَأُهَا فَكَأَنَّمَا قَرَأُ الْقُرُآنَ عَشُرَ مَرُّاتِ 🗗

فوائد: سورة ليمين كوقران كادل كهنا حديث كعدم ثبوت كى بناء برغلط ناورا ب بلكه امام الباني نے دل والی روایت کوموضوع قرار دیا ہے (الضعیفہ حدیث نمبر 169) لہذا ایسی بے اصل باتوں سے احرّ از کرنا جاہے۔

3460 حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ شُجَاعٍ حَدَّثَنِي أَبِيْ حَدَّثَنِي زِيَادُ بْنُ خَيْثَمَةً عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُحَادَةَ عَنِ الْحَسَنِ

منقطع،ضعيف: ويكفي الدر المنشور 256/5

² ضعيف: بارون ابويم مجبول ب_أخرجه الترمذي، كتاب ثواب القرآن، باب ماجاء في فضل يس (2889) والبيهقي في الشعب (2460)

736 كاب فضائل القرآن كا الكاليعي الكاليعي

سيّدنا ابو مررة والنَّفُهُ كُمّت مين رسول الله السَّاعَيْن في فرمايا: ''جو مخض الله کی رضا حاصل کرنے کے لئے سورۃ کیلین یڑھے گا اسے اسی رات ہی بخش دیا جائے گا۔''

وَجُهِ اللَّهِ غُفِرَ لَهُ فِي تِلُكَ اللَّيُلَةِ. ٥ 3461 حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ شُجَاعِ حَدَّثَنِي أَبِيْ حَدَّثِنِي زِيَادُ بْنُ خَيْثُمَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ

عطاء بن ابور باح کہتے ہیں مجھے خبر ملی کہ رسول اللہ طشے عَیْراً عَنُ عَطَاءِ بُنِ أَبِي رَبَاحِ قَالَ بَلَغَنِي أَنَّ نے فر مایا:''جو دن کے شروع ہیں سورۃ یسین پڑے گا اس رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ مَنُ قَرَأً يس فِيُ کی تمام حاجتیں پوری ہوں گی۔'

3462ـ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا رَاشِدٌ أَبُوْ مُحَمَّدِ الْحِمَّالِيُّ

شر بن حوشب كہتے ہيں ابن عباس والله نے كہا: "جوضح کے وقت سورہ یسین پڑھے گا شام تک وہ دن آ سانی سے گذرے گا'جورات کواہے پڑھے گاہیج تک اس کی رات ہ سانی ہے گذرے گی۔'' عَنُ شَهُرٍ بُنِ حَوُشَبٍ قَالَ قَالَ ابُنُ عَبَّاسِ مَنُ قَرَأُ يس حِينَ يُصْبِحُ أَعُطِيَ يُسْرَ يَوْمِهِ حَتَّى يُمُسِيَ وَمَنُ قَرَأَهَا فِي صَـدُرِ لَيُـلِـهِ أَعُطِى يُسُرَ لَيُلَتِهِ حَتَّى

صَدُرِ النَّهَارِ قُضِيَتُ حَوَائِجُهُ. ٥

عَنُ أَبِي هُلُويُلِوَةً قَالَ قَالَ رَسُولُ

اللُّهِ عَنَّ مَنُ قَواً يس فِي لَيُلَةٍ ابُتِغَاءَ

يُصْبحَ . 🛭

[22] بَابِ فِي فَضُلِ حم الدُّخَانِ وَالْحَوَامِيمِ وَالْمُسَبِّحَاتِ سورة دخان حواميم اور مسجات كى فضيلت

3463 حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا إِسْمُعِيْلُ

عَنُ عَبُدِ اللَّهِ بُنِ عِينُسِي قَالَ أُخْبِرُتُ أَنَّهُ مَنُ قَرَأُ حُمَّ الدُّحَانَ لَيُلَةَ الْجُمُعَةِ إِيْمَانًا وَتَصُدِيُقًا بِهَا أَصْبَحَ مَغُفُورًا لَهُ. ٥

ہوا ہو گا۔''

عبدالله بن عيسلي كہتے ہيں: مجھے خبر دی گئی كه'' جو محص جعه كی رات کوسورۃ دخان ایمان ویقین سے پڑھے گا وہ صبح کو بخشا

² مرسل، ضعيف: أخرجه البيهقي في الشعب (2463) وابن حبان 2574

[🛭] حسن: امام سيوطي الدراكمنثور ميں كہتے ہيں۔57./5، أخرجه الدارمي عن ابن عباس ، اور پھراس حديث كا ذكركرتے ہيں۔ صحیہ : سیوطی الدرانمنٹو رمیں کہتے ہیں 6/24_25 " اُخرج الداری" پھراس جدیث کا تذکرہ کرتے ہیں نیز اس کی شاہد "ترمذي كتاب ثواب القرآن،باب ماجاء في فضل حمّ الدخان (2891) ميل هي_

www.sirat-e-mustaqeem.com
737 كتاب فضائل القرآن

فواند: عبدالله بن عيسى وليتايه اس مديث كو"أخبِرتُ" مجهخبر دى كل - كصيغ سے بيان کرتے ہیں لہٰذاعبداللہ تک تو اس کی سند درست ہے کیکن آ گے حوالے کا ذکر نہ ہونا اس کو اعتبار کے درجے سے گرا دیتا ہے البتہ تر ندی میں اس معنی کی حدیث ہے لیکن ایک تو وہ غریب ہے دوسرا اس کا راوی ابولمععدام ہشام ضعیف ہے دوسراحسن اور ابو ہر ریرۃ ڈالٹیؤ کے درمیان انقطائے لہذا وہ بھی قابل حجت نہیں لہذا اس فضیلت کے ثبوت کے لیے مرفوع سیح حدیث کا ہونا ضروری ہے جو کہ موجو ذہیں چنانچہ بیاثر قابل عمل نہ ہوا (واللہ اعلم)

3464 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ خَالِدِ....

یجیٰ بن حارث کہتے ہیں ابورافع نے کہا:''جو مخص جمعہ کی رات كوسورة دخان پڑھے گا وہ صبح كو بخشا ہوا ہو گا اور موثی آ تکھوں والی حوروں ہے اس کا نکاح کر دیا جائے گا۔''

عَنُ يَحْيَى بُنِ الْحَارِثِ عَنُ أَبِى رَافِع قَالَ مَنُ قَرَأَ الدُّخَانَ فِي لَيُلَةِ الْجُمُعَةِ أَصْبَحَ مَغُفُورًا لَهُ وَزُوِّجَ مِنَ الْحُوْدِ العين. 9

3465 حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن.

عَنُ مِسْعَرِ عَنُ سَعُدِ بُنِ إِبْرَاهِيمَ قَالَ

كُنَّ الْحَوَامِيمُ يُسَمَّيُنَ الْعَرَائِسَ. ٥ 3466 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عَامِرٍ

عَنُ هِشَامٍ عَنِ الْحَسَنِ قَالَ مَنُ قَرَأً ثَــَلاتُ آيَاتٍ مِنُ آخِرِ سُورَةِ الُحَشُرِ إِذَا أَصْبَحَ فَمَاتَ مِنُ يَوُمِهِ ذَٰلِكَ طُبِعَ بِطَابَعِ الشَّهَدَاءِ وَإِنْ قَرَأً إِذَا أَمُسَى فَمَاتَ مِنُ لَيُلَتِهِ طُبِعَ بِطَابَعِ الشَّهَدَاءِ . •

مسعر کہتے ہیں سعد بن ابراہیم نے کہا: ''حم والی سورتوں کو دہنیں کہا جا تا تھا۔''

ہشام کہتے ہیں حسن نے کہا: ''جو شخص صبح کوسورة حشر کی آ خری تین آیات پڑھے گا اگر وہ اس دن مرجائے گا تو اس پرشہداء کی مہرلگا دی جائے گی اور اگر شام کو پڑھے پھر اسی رات مر جائے تو اس پرشہداء کی مہر لگا دی جائے گی۔''

فوائد: سورة الحشر كي آخري تين آيات اساء هني پرمشمل اور انتهائي بابركت آيات بين جيسا كه نہ کورۃ اثر سے واضح ہے امام تر نہ کی رائیٹیہ اس حدیث کو بیان کر کے اسے غریب بتلاتے ہیں (تفسیر ابن کثیر

صحیح: سیوطی الدرانمنثور 6/24 میں داری کاحوالہ دیتے ہیں۔

² صحيح: أحرجه ابن ابي شيبه 557/10 (10333) والبيهقي في الشعب (2482) 🚱 صحیح: أحرجه ابن الضریس فی فضائل القرآن (227) سیوطی اے الدر المنثور میں 1 /202 اسے داری کی طرف منسوب کرتے ہیں۔

القرآن (كَتَاب فضائل القرآن) 38 من المال القرآن كالمنائل كالمنا

آخرسورۃ الحشر) نیزضج شام ان آیات کی تلاوت ستر ہزار فرشتوں کی دعاؤں کامستحق بنا دیتی ہے دیکھیے آئندہ حدیث نمبر (3468)

3467 حَدَّثَنَا إِسْحَقُ بْنُ عِيْسٰي عَنْ مَعْنِ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ صَالِحٍ عَنْ بَحِيْرِ بْنِ سَعْدٍ

خالد بن معدان کہتے ہیں نبی ﷺ سوتے وقت مسجات پڑھتے تھے۔اور فرماتے تھے:"اس میں ایک آیت ہے جو ہزار آیات کے برابر ہے۔" عَنُ خَالِدِ بُنِ مَعُدَانَ عَنِ النَّبِيِ عِلَيُهُ أَنَّهُ كَانَ يَقُرَأُ الْمُسَبِّحَاتِ عِنْدَ النَّوْمِ وَيَقُولُ إِنَّ فِيهِنَّ آيَةً تَعُدِلُ أَلُفَ آيَةٍ . •

فوائد: (۱) "المسبّحات" ہے ہروہ سورت جوسے سے شروع ہوتی ہومراد ہے۔ (۲) "فیه آیة خیر من الف آیة "اس ہے مرادآیت ﴿ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْم ﴾ عَلِيْم ﴾ جیما کہ ابن کثر رایٹی فرماتے ہیں اگر چراس میں اور قول بھی ہیں۔

3468 - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْفَرَجِ الْبَغْدَادِيُّ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ طَهْمَانَ أَبُوْ الْعَلاءِ الْخَفَّافُ حَدَّثِنِيْ نَافِعُ بْنُ أَبِيْ نَافِع

معقل بن يباركم بين بي طيط الله في العَلِيْم مِنَ الشَّيطانِ عَوْمَايا: "جو حَض صح وقت الحَوْدُ بِالله السَّمِيْع الْعَلِيْم مِنَ الشَّيطانِ السَّرَ بِعْنَ السَّيطانِ السَّرَ بِعْنَ السَّيطانِ السَّرة عالى سے سنے اور جاننے كى پناہ چاہتا ہوں شیطان مردود ہے" پڑھ كے سورة حشركى آخرى تين آيات پڑھے كا ۔ الله تعالى اس كے ليے ستر بزار فرشتے مقرركرے كا جوشام تك اس كے ليے بخشش كى دعاكرتے مقرركرے كا جوشام تك اس كے ليے بخشش كى دعاكرت ربيں كے ۔ اور اگروہ شام كو پڑھے كا توضيح تك ايسے بى

عَنُ مَعُقِلِ بُنِ يَسَادٍ عَنِ النَّبِي عِنَّا قَالَ مَنُ قَالَ حِينَ يُصُبِحُ أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّيطانِ الرَّجِيمِ السَّيطانِ الرَّجِيمِ السَّيطانِ الرَّجِيمِ وَثَلَاثَ آيَاتٍ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْحَسُرِ وَثَلَاثَ آيَاتٍ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْحَسُرِ وَثَلَاثَ آيَاتٍ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْحَسُرِ وَثَلَاثَ آيَاتٍ مِنْ آخِدِ سُورَةِ الْحَسُرِ وَثَلَاثَ مَلَكِ وَتَّى يُمُسِيَ وَإِنْ قَالَهَا يُسَلَّدُ وَمِنْ لُولِ حَتَّى يُمُسِيَ وَإِنْ قَالَهَا مَسَاءً فَمِنْ لُ ذَٰلِثَ حَتَّى يُمُسِيَ وَإِنْ قَالَهَا مَسَاءً فَمِنْ لُ ذَٰلِثَ حَتَّى يُصُبِعَ . ٥

[23] بَابِ فِي فَضُلِ قُلُ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ سورة كافرون كى فضيلت 3469 حَدَّثَنَا أَبُوْ زَيْدٍ سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيع

❶ صحيح: أخرجه احمد 128/4 والبيهـقي في الشعب (2503) وابـوداؤد، كتـاب الأدب، بـاب مايقول عندالنوم (5057)

حسن: أخرجه احمد 26/5، والترمذي، كتاب ثواب القرآن، باب فضل آخر سورة الحشر (2923)

كتاب فضائل القرآن كالك

الكاليعيُّ الكاليعيُّ

حَـدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنُ أَبِي الْحَسَنِ مُهَاجِرٍ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ زَمَنَ ذِيَادٍ إِلَى الْكُوفَةِ

فَسَمِعْتُهُ يُحَدِّثُ أَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُولِ اللُّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى مَسِيُرِ لَـهُ قَالَ وَرُكُبَتِي

تُصِيبُ أَوْ تَمَسُّ رُكُبَتَهُ فَسَمِعَ رَجُلا يَـقُرَأُ قُلُ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ قَالَ بَرِءَ مِنَ الشِّرُكِ وَسَمِعَ رَجُلًا يَقُرَأُ قُلُ هُوَ

اللُّهُ أَحَدٌ قَالَ غُفرَ لَهُ. ٥

فوائد: (۱) آپ طفار کااس کی تلاوت س کراس کی شرک سے براءت کا اعلان کرنا یہ فقط ان کی تلاوت کی بناء پر نہ تھا کہ یہ اعزاز انہیں فقط تلاوت پر ہی مل گیا ہو بلکہ عرب چونکہ قران کے معانی ومفہوم کو سمجھتے تھے اس لیے انکی زبان پر وہی آتا تھا جوان کے دل میں گھر کر چکا ہوتا یعنی جو پڑھتے اس پر دل سے ایمان لا کراس پر عمل پیرا بھی ہوتے اس کو مدنظر رکھتے ہوئے آپ مشکھ آپ مشکھ آپا نے اس کے قول پر تلاوت پر اس کے موحد ہونے کوشلیم کرلیا۔ (۲) سورۃ اخلاص کی تلاوت اس کے مطابق عقیدے کا ہونا گناہوں کی بخشش کا ہاعث ہے۔

3470 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ أَبِي إِسْحَقَ

عَنُ فَرُوَةَ بُنِ نَوُفَلِ عَنُ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عِلَيْ قَالَ مَجِيءٌ مَا جَاءَ بِكَ قَالَ

جِينُتُ لِتُعَلِّمَنِي شَيْئًا أَقُولُهُ عِنْدَ مَنَامِي قَالَ فَإِذَا أَحَذُتَ مَضَجَعَكَ فَاقُرا أَقُلُ

يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ثُمَّ نَمُ عَلَى خَاتِمَتِهَا

فَإِنَّهَا بَرَائَةٌ مِنَ الشِّرُكِ. ٥

فروة بن نوافل اینے والد نظل کرتے ہیں ، انہوں نے كها كه رسول الله طفي و في آن والي سے فرمايا : "تم كس لئة آئے ہو؟" اس نے كہا: اس لئے كه آپ مجھے الیمی چیز سکھا کیں جو میں سوتے وقت پڑھوں آپ نے فرمایا: ''جب تم لیٹوتو سورة کافرون پڑھ کرسو جاؤ۔ کیونکہ اس سے شرک سے براءت ہوتی ہے۔''

شعبہ بیان کرتے ہیں ابوحس مہاجر نے کہا: ''زیادے

زمانہ میں ایک آ دی آیا میں نے اس سے سنا وہ بیان کرتا

تھا: ''میں رسول الله طنے آیا کے ساتھ سفر میں تھا۔ میرا گھٹنا

آپ کے گھٹنے کے ساتھ ملا ہوا تھا۔ آپ نے ایک آ دمی کو

سورة كافرون يراضت موع سنا تو آپ نے فرمايا: "بيه

شرک سے بری ہو گیا۔' اور ایک آ دی کو آپ نے سورة

اخلاص را هے ہوئے ساآپ نے فرمایا: "اسے بخش دیا

[•] صحيح: جمالت صالي قارح مين ، أخرجه ابن الضريس في فضائل الفرآن (305) والنسائي في الكبرى (10540) احمد 63/4، 65،64

و صحيح: أخرجه ابوعبيد في فضائل القرآن (ص: 264)

رَكُولُ مِيْنَا لَكُولِمِينَ مِنْ اللّهُ الْحَدِّ مَا اللّهُ اللّهُ الْحَدُّ مِنْ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الْحَدُّ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللل

[24].... بَابِ فِي فَضُلِ قُلُ هُوَ اللَّهُ أَحَدُّ سورة اخلاص كى فضيلت

3471 حَدَّثَنَا أَبُوْ الْمُغِيْرَةِ حَدَّثَنَا صَفْوَانُ...

حَدَّثَنَا إِيَاسٌ الْبِكَالِيُّ عَنُ نَوُفٍ الْبِكَالِيِّ قَالَ إِنَّ اللَّهَ جَزَّاً الْقُرُآنَ عَلَى ثَلَاثَةِ أَجُزَاءٍ فَجَعَلَ قُلُ هُوَ اللَّهُ أَحَدُّ ثُلُثَ

ایاس بکالی بیان کرتے ہیں کہ نوف بکالی نے کہا: "الله تعالیٰ نے قرآن کے تین جصے کئے۔ اور سورۃ اخلاص کوقرآن کا تیسرا حصہ قرار دیا۔"

الْقُرُ آن. 9

ف وائد: سیالتُدی توحید پر مشتل انتهائی عظیم سورة ہے نیز قران میں تین چیزوں کا بیان ہے (۱) سابقہ ام و انبیاء کے فقص (۲) عقائد۔ ندکورة سورت چونکہ عقائد پر مشتل ہے لہذا اس کو ثلث القران سے تعبیر کیا گیا کیونکہ اس میں قران کے تین موضوعات میں سے ایک موضوع کا احاطہ کیا گیا ہے۔ 3472۔ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا حَيْوَةً قَالَ أَخْبَرَنِيْ أَبُوْ عَقِيل

أَنّهُ سَمِعَ سَعِيدَ بُنَ الْمُسَيَّبِ يَقُولُ إِنَّ نَبِي اللهِ عَلَيْ قَالَ مَنْ قَرَأَ قُلُ هُو اللَّهُ أَحَدٌ عَشُرَ مَرَّاتٍ بُنِي لَهُ بِهَا قَصُرٌ فِي الْجَنَّةِ وَمَنُ قَرَأَ عُشُوينَ مَرَّةً بُنِي لَهُ بِهَا قَصُرٌ فِي الْجَنَّةِ وَمَنُ قَرَأَ هُا ثَكَلالِينَ مَرَّةً بُنِي لَهُ بِهَا الْجَنَّةِ وَمَنُ قَرَأَهَا ثَكلالِينَ مَرَّةً بُنِي لَهُ بِهَا ثَكلاتُهُ قُصُورٍ فِي الْجَنَّةِ مَنَ قَرَا هُا ثَكلالِينَ مَرَّةً بُنِي لَهُ بِهَا ثَكلاتُهُ قُصُورٌ فِي الْجَنَّةِ فَعَلَى عَمَرُ بُنُ الْحَطَّابِ وَاللَّهِ يَا رَسُولُ اللهِ إِذَنُ لَتَكُثُونَ قَصُورُ لَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ إِذَنُ لَتَكُثُونَ قُصُورُ لَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ إِذَنُ لَتَكُثُونَ قُصُورُ لَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ إِنَّ اللهُ أُوسَعُ مِنُ ذَٰلِكَ قَالَ أَبُولُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَيْ اللهُ أُوسَعُ مِنُ ذَٰلِكَ قَالَ أَبُولُ اللهِ عَلَى اللهُ أُوسَعُ مِنُ ذَٰلِكَ قَالَ أَبُولُ اللهُ أَوسَعُ مِنُ ذَٰلِكَ قَالَ أَبُولُ اللهُ كَانَ مِنَ اللهُ أَوسَعُ مِنُ ذَٰلِكَ قَالَ مَنَ اللهُ كَانَ مِنَ اللّهُ اللهُ كَانَ مِنَ اللّهُ اللهُ اللهُ كَانَ مِنَ اللّهُ اللهُ كَانَ مِنَ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ كَانَ مِنَ اللّهُ اللهُ كَانَ مِنَ اللّهُ اللهُ كَانَ مَنَ اللّهُ اللهُ كَانَ مِنَ اللّهُ اللهُ كَانَ مِنَ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ كَانَ مِنَ اللّهُ اللهُ ال

سعید بن میں بیت کہتے ہیں اللہ کے نبی سے ایک نے فرمایا: 'جو شخص سورۃ اخلاص دس مرتبہ پڑھے گا اس کے لئے جنت میں ایک محل بنایا جائے گا۔ اور جو شخص تمیں دفعہ پڑھے گا اس کے لئے جنن اس کے لئے تین محل بنائے جا کیں گے۔' سیّدنا عمر بن خطاب فرا ہی نے کہا: یا رسول اللہ! ایسا ہی ہے؟ پھر تو ہمارے بہت سے محل ہو جا کیں گے۔ رسول اللہ سے بھی وسیح کرسکتا ہے۔' ابومحمہ نے فرمایا: ''اللہ تعالی اس سے بھی وسیح کرسکتا ہے۔'' ابومحمہ کہتے ہیں: ''ابومقیل زہرۃ بن معبد ہیں۔لوگ کہتے تھے وہ ایدال سے تھے۔'' ابومحمہ الدال سے تھے۔'' ابومح

ضعیف: ایاس اللبکائی مجہول ہے۔

[🗗] حسن لغيره: أخرجه احمد 437/3، وابن كثير في التفسير 251/5 والطبراني في الكبير 185/20(397) و (398)

الكَالِيْفِيُّ الكَالِيْفِيُّ الكَالِيْفِيُّ الكَالِيْفِيُّ الْكَالِيْفِيُّ الْكَالِيْفِيُّ الْكَالِيْفِي

3473 ـ أَخْبَرَنَا أَبُوْ الْمُغِيرَةِ

عَنُ عُتُبَةَ بُنِ ضَمُرَةً بُنِ حَبِيبٍ عَنُ أَبِيهِ أَنَّهُ كَانَ إِذَا قَرَأً سُورَةً فَخَتَمَهَا أَتُبَعَهَا

بِقُلُ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ . •

الْجَعْدِ عَنْ مَعْدَانَ بْنِ أَبِيْ طَلْحَةَ

عَنُ أَبِي الدَّرُدَاءِ قَسالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِنْ أَيَعُجِزُ أَحَدُكُمُ أَنُ يَقُواً فِي لَيُلَةٍ ثُلُثَ الْقُرْآنِ قَالُوُا نَحُنُ أَعُجَزُ وَأَضُعَفُ مِنُ ذُلِكَ فَقَالَ إِنَّ اللَّهَ جَزًّا الُقُرُآنَ ثَلَاثَةَ أَجُزَاءٍ فَجَعَلَ قُلُ هُوَ

اللَّهُ أَحَدٌ ثُلُثَ الْقُرْآنِ . ٥

أَنَّ حُمَيْدَ بُنَ عَبُدِ الرَّحُمَنِ حَدَّثَهُ أَنَّ

أَبَىا هُـرَيُرَةَ كَانَ يَقُولُ قُلُ هُوَ اللَّهُ أَحَدُ تَعُدِلُ ثُلُكَ الْقُرُآنِ . 3

3476 أَخْبَرَنَا الْمُعَلِّى بْنُ أَسَدِ عَنْ سَلَّامٍ بْنِ أَبِي مُطِيْعٍ عَنْ عَاصِمٍ

عَنُ زِرِّ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ قُلُ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ تَعُدِلُ ثُلُثَ الْقُرُآنِ. ٥

عتبه بن ضمرة بن حبيب اپنے والد نے قل کرتے ہیں کہ وہ جب کوئی سورت پڑھتے تھے تو اس کے بعد سورۃ اخلاص

يڑھ ليتے تھے۔

3474 حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ أَبَانَ بْنِ يَزِيْدَ الْعَطَّارِ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي

ابودرداء كہتے ہيں كهرسول الله طفي آنے فرمايا: كيا تمهارا کوئی اس سے عاجز ہے کہ کوئی رات کو قرآن کا تہائی حصہ پڑھ لیا کرے؟''لوگوں نے کہا: ہم کمزور اور اس سے عاجز میں ۔' چنانچہ آپ نے فرمایا :''اللہ تعالی نے قر آن کو تین حصوں میں تقسیم کیا اور سورۃ اخلاص کو قرآن کا تہائی حصہ

3475 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ إِسْمَعِيلَ بْنِ مُجَمِّعِ قَالَ أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابِ

حید بن عبدالرحمٰن بیان کرتے ہیں کہ ابو ہرمیرۃ والنفی کہتے تھے: ''سورۃ اخلاص تہائی قرآن کے برابرہے۔''

زر بیان کرتے ہیں عبداللہ نے کہا: ''سورۃ اخلاص تہائی

قرآن کے برابرہے۔''

صحيح: أخرجه مسلم، كتاب صلاة المسافرين، باب فضل قراءة (قل هو الله احد) والنسائي في عمل اليوم والليلة (701) وابوعبيد في فضائل القرآن (ص:269,268)

[◙] صحيح: أخرجه الترمذي، كتاب ثواب القراك، باب في سورة الاخلاص(2901)وابن ماجه، كتاب الأدب، باب ثواب القران(3787)والطحاوي في مشكل الآثار(1221-1222)

[🗗] حسن: آئندہ حدیث ملاحظہ کریں۔

www.sirat-e-mustaqeem.com

الله آن الدُّالِيْمِينَ الدَّالِيْمِينَ الدَّالِيْمِينَ الدَّالِيمِينَ الدَّلْمِيمِينَ الدَّالِيمِينَ الدّالِيمِينَ الدَّالِيمِينَ الدَّالِيمِينَ الدَّالِيمِينَ الدَّالِيم

3477 حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ عَنْ حَمَّادِ بْنِ سَلَمَةَ عَنْ عَاصِمٍ

عَنُ زِرٍّ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ مِثْلَهُ . •

زر کہتے ہیں عبداللہ نے سابق حدیث کی طرح کہا۔

3478 حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ أَخْبَرَنَا مُبَارَكُ بْنُ فَضَالَةَ حَدَّثَنَا ثَابِتٌ

عَنُ أَنسِ أَنَّ رَجُلًا قَالَ وَاللَّهِ إِنِّى لَا خَلُا قَالُ وَاللَّهِ إِنِّى لَا لَكُ أَحَدُّ لَا خَلُا اللَّهِ عِلَى اللَّهُ أَحَدُّ فَقُلَ هُوَ اللَّهُ أَحَدُّ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ عِلَى حُبُّلَتَ إِبَّاهَا أَدْخَلَكَ إِبَّاهَا أَدْخَلَكَ إِبَّاهَا أَدْخَلَكَ الْحَنَّةَ . ٥

انس وَاللَّهُ كَتِ مِين كَسى آدى نے كَها: ''اللّٰه كَ قَتَم! مِين اللّٰه كَ قَتَم! مِين سورة اخلاص ہے بہت محبت كرتا ہوں۔'' تو رسول اللّٰه طُفِيَةَ نے فرمایا: ''اس كى محبت تحقیم جنت میں لے حائے گی۔''

3479 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ مَسْلَمَةَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ شِهَاب.....

عَنُ حُمَيُدِ بُنِ عَبُدِ الرَّحُمْنِ عَنُ أُمِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ اللَّهُ رَسُولَ اللَّهِ اللَّهُ السُئِلَ عَنُ قُلُ هُوَ اللَّهُ أَحَدُ فَقَالَ ثُلُثُ الْقُرُآن أَوْ تَعُدِلُهُ. ۞

حمید بن عبدالرحل اپنی والدہ سے نقل کرتے ہیں کہ رسول اللہ مطابق ہے۔ اللہ مطابق کے جھا گیا تو آپ نے فرمایا: " نتہائی قرآن ہے یا اس کے برابر ہے ۔ "

3480 حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ هِلالٍ عَنِ الرَّبِيْعِ بْنِ خُتَيْم

عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونِ

عَنْ عَبُدِ الرَّحْمَنِ بُنِ أَبِى لَيُلَى عَنِ الْمَصَادِ عَنْ أَبِى لَيُلَى عَنِ الْمَسَادِ عَنْ أَبِى أَيُّوبَ قَالَ الْمَسَادِ عَنْ أَبِى أَيُّوبَ قَالَ اللهِ عَلَى اللهِ مَسُولُ اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلْمَا اللهُ اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهُ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ المَا اللهُ المَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ المَا اللهُ المَا اللهُ المَا اللهُ المَا اللهُ المَا اللهُ المُلْ اللهُ المَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ المَا اللهُ

أَيَعُجِزُ أَحَدُكُمُ أَنُ يَقُرَأُ ثُلُثَ الْقُرُآن

عبدالرحل بن ابولیل سے منقول ہے کہ ابو ابوب انصاری ایک عورت کے باس جا کر کہا: کیا تم دیمتی نہیں کہ رسول اللہ طفی آئی تمہارے باس کیا چیز لائے ہیں؟ اس نے کہا:

"رسول اللہ طفی آئی ہمارے باس بہت خیر لائے۔" (اس نے کہا): وہ کیا ہے؟ کہا آپ نے ہم سے فرمایا: "کیا تم لوگوں سے یہ نہیں ہو سکتا کہ رات کو ایک تہائی

Ф حسن: أخرجه النسائي في الكبري(10509) وابو عبيد في فضائل القراك(ص268) والطبراني في الكبير 10 / 172
 (10245)

عصحيح: أخرجه الرازي في فضائل القران (108) وابن خزيمه (537) وعبد بن حميد في المنتخب (1306)

❸حسن: أخرجه مالك في القران،باب ماجاء في قراء ة(قل الله احد)(19)واحمد6/404والنسائي في الكبرئ
 (10533)

743 كتاب فضائل القرآن كا

الكالم المنتقال الكالم المنتقال الكالم المنتقال
قرآن بردهو''اس نے کہا:''جم ڈر گئے کدرسول الله طفی الله سی کام کونہ بڑھا دین جس سے ہم عاجز ہوں ہم نے سچھ جواب نہ دیا حتی کہ آپ نے اس طرح تین بار فرمایا پھرآپ نے فرمایا: "تم سے بینہیں ہوسکتا کہ سورۃ اخلاص يڑھ ليا كروپ''

فِيُ لَيُلَةٍ قَالَ فَأَشُفَقُنَا أَنُ يُرِيدَنَا عَلَى أَمُو نَعُجزُ عَنْهُ فَلَمْ نَرْجِعُ إِلَيْهِ شَيْئًا حَتُّى قَالَهَا ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ قَالَ أَمَا يَسْتَطِيبُعُ أَحَدُكُمُ أَنْ يَقُوَأُ اللَّهُ الْوَاحِدُ الصَّمَدُ •

3481 حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ نُوحٍ بْنِ قَيْسِ عَنْ مُحَمَّدِ الْعَطَّارِ عَنْ أُمِّ كَثِيرٍ اْلأَنْصَارِيَّةِ

فرمایا: ' جو بچاس دفعه سورة اخلاص بر مصے گا الله تعالی اس کے بچاس سال کے گناہ بخش دے گا۔''

عَنُ أَنَس بُن مَالِلْتٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللُّهِ عَنُّ مَن قَرَأً قُلُ هُوَ اللَّهُ أَحَدُ خَـمُسِيُنَ مَرَّـةً غَفَرَ اللَّهُ لَهُ ذُنُوبَ خَمُسِينَ سَنَةً . 9

[25].... بَابِ فِيُ فَضُلِ الْمُعَوِّ ذَتَيُنِ سورة الناس والفلق كي فضيلت

3482 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا حَيْوَةُ وَابْنُ لَهِيْعَةَ قَالَا سَمِعْنَا يَزِيدَ بْنَ أَبِي حَبِيْب

يَقُولُ حَدَّثِنِي أَبُوْ عِمْرَانَ

أَنَّهُ سَمِعَ عُقْبَةَ بُنَ عَامِرٍ يَقُولُ تَعَلَّقُتُ بِ قَدَم رَسُولِ اللَّهِ عَلَيْكَ فَقُلُتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَقُرنُنِي سُورَةَ هُودٍ وَسُورَةَ يُوسُفَ فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ عَلَيْ يَا عُقْبَةُ إِنَّكَ لَنُ تَفُراً مِنَ الْقُرُآنِ سُورَةً أُحَبَّ إِلَى اللَّهِ وَلَا أَبُلَغَ عِنْدَهُ مِنْ قُلُ أَعُوذُ بِرَبِّ

عقبہ بن عامر کہتے ہیں میں نے رسول الله الله الله الله عامر کہتے ہیں میں كَيْرُ كَرِكْهَا: يا رسول الله! مجھے سورة ہود اور سورة لوسف برُها ويجئ تو مجصے رسول الله طليع الله في أن فرمايا: "اعقب! سورة فلق سے بہتر اور اس سے بڑھ کر اللہ کے نزد یک کوئی سورت محبوب نہیں۔' بزید نے کہا: ابو عمران اسے نہیں چھوڑتے تھے۔اسے ہمیشہ مغرب کی نماز میں پڑھتے تھے۔

❶ صحيح: أخرجه الترمذي، كتاب ثواب القران،باب ماجاء في سورة الاخلاص(2898)وابن عبدالبير التهميد 256/7 والنسائي في الكبري (10519)

② ام كثيرانصارية نامعلوم ، أخرجه الترمذي، كتباب ثواب القران ، باب ماجاء في سوة الاخلاص (2900) والبيه قي في الشعب (2548) والخطيب في تاريخ بغداد 204/6

حَكْرُ لَيُنْ الْكَالِيْدِينَ الْكَالِيْدِينَ كَابِ فَصَائِلِ القرآن كَا

الُفَلَقِ قَالَ يَزِيدُ فَلَمُ يَكُنُ أَبُو عِمُرَانَ يَدَعُهَا كِانَ لَا يَزَالُ يَقُرَوُهَا فِي صَلاةٍ

المُغُرِبِ. 0

3483 حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنِ ابْنِ عَجْلَانَ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِى سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيّ اللهِ عَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنِ ابْنِ عَجْلَانَ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ أَبِى سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيّ الْمَقْبُرِيّ

أَنَّ عُقَٰبَةَ بُنَ عَسامِرٍ قَالَ مَشَيْتُ مَعَ النَّيِ عُلَيْ فَقُلُتُ النَّيِّ فَقُلُتُ النَّيِ عُقْبَةُ فَقُلُتُ

أَيَّ شَيُءٍ أَقُولُ قَالَ فَسَكَتَ عَنِّيُ ثُمَّ قَالَ فَسَكَتَ عَنِّي ثُمَّ قَالَ فَاللَّهُ أَيَّ شَيءٍ أَقُولُ قَالَ يَا عُقْبَةً قُلُ فَقُلْتُ أَيَّ شَيءٍ أَقُولُ قَالَ قُلْ أَعُوذُ برَبِ اللَّفَلَقِ فَقَرَأْتُهَا قَالَ قُلْ أَعُوذُ برَبِ اللَّفَلَقِ فَقَرَأْتُهَا

حَنْى جِنْتُ عَلَى آخِرِهَا فَقَالَ رَسُولُ

اللَّهِ عِنْدَ ذٰلِكَ مَا سَأَلَ سَائِلٌ وَلَا

استَعَاذَ مُستَعِيذٌ بِمِثْلِهَا. ٥

3484 حَدَّثَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا إِسْمْعِيْلُ هُوَ ابْنُ أَبِيْ خَالِدٍ عَنْ قَيْسِ

عَنُ عُقُبَةَ بُنِ عَامِرٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى ا

عقبه بن عامر کہتے ہیں رسول الله طفی آن فرمایا: ''مجھ پر چند آیات ایس اتاری گئی ہیں کہ ایس میں نے نہیں دیکھیں یا فرمایا نہیں ویکھی گئیں یعنی سورۃ الفلق اور سورۃ الناس'

عقبہ بن عامر کہتے ہیں میں نبی طفیقین کے ساتھ چل رہا

تفارآب نے مجھ سے فرمایا: "عقبہ کہؤ میں نے کہا: کیا

کہوں؟ آپ کچھ در خاموش رہے پھر آپ نے فرمایا:

"عقبه كهؤمين نے كها: كيا كهون؟ آب نے فرمايا: "قُلْ

اَعُـوُذُ بِرَبِّ اللَّفَلَقِ. " مِن نِ است آخرتك يرُحاتو

رسول الله طفي من فرمايا: ندكسي سأكل في ايبا سوال كيا

اور نہ کسی پناہ ما نگنے والے نے ایسی پناہ ما نگی۔''

فوائد: معو ذین بی قرآن کی آخری اور عظیم سورتیں ہیں ان کی فضیلت متعدد روایات ملتی ہیں جو کہ ان کی رفعت شان پر دال ہیں مثلا نبی طشے آیا ہی انسانوں اور جنوں کی نگاہ ہے بیچنے کے لیے وظا کف کرتے جب کہ ان کے بزول کے بعد آپ طشے آیا ہے ان کے بڑھنے کو ہی معمول بنالیا (صبح ترفدی لالبانی: 5020) اس طرح جب آپ طشے آیا ہی جو دکیا گیا تو جرائیل عَالِیٰ ان سورتوں کولیکر اترے اور بتایا کہ ایک یہودی نے اس طرح جب آپ طشے آیا ہی جادو کیا گیا تو جرائیل عَالِیٰ ان سورتوں کولیکر اترے اور بتایا کہ ایک یہودی نے

 [◘] صحيح: أخرجه احمد 155/4 والبطيراني في الكبير 313/17 ومسلم كتباب صلاة المسافرين، باب فضل قراءة المعوذين (814)

صحيح: أخرجه النسائي، كتاب الاسعاده 8/254 والبيهقي في الشعب (2564)

❸صحيح: أخرجه مسلم، كتاب صلاة المسافرين، باب فضل قراءة المعوذتين (814) (265) والنسائي في الاستعادة 8/254

www.sirat-e-mustaqeem.com

ت سر جادو کیا اور وہ فلاں کنوس میں ہے سووہاں سے آب مشاقاتی نے جادو والی اشیاء نکال کران برمعوذ

آپ پر جادو کیا اور وہ فلاں کنویں میں ہے سو وہاں سے آپ سے گیاتی نے جادو والی اشیاء نکال کران پر معوذ تین بڑھیں تو سارا اثر زائل ہو گیا (صحیح بخاری کتاب الطب باب السح) نیز کسی تکلیف کی صورت میں انہیں کو پڑھ کر دم کر لیا کرتے ۔ اور آپ سے تی ہے بخاری کتاب الطب باب السح) نیز کسی تکلیف کی صورت میں انہیں کو پڑھ کر آپ برخ ہوکر وہ کر آپ برخ کر آپ باتھ پر دم کرتے پھر انہیں وہ جہاں تک پہنچتے انہیں پھیر لیتے اور ایسا تین دفعہ کرتے (دیکھیے بسخاری کتاب فیضل المعوذات) لہذا ان فضائل کے پیش نظر معوذ تین کوخصوصی انہیت دین کتاب فیضل المعوذات) لہذا ان فضائل کے پیش نظر معوذ تین کوخصوصی انہیت دین کوا ہے۔

[26] بَابِ فَضُلِ مَنُ قَرَأً عَشُرَ آيَاتٍ وَيَاتٍ وَيَاتًا وَيَاتٍ وَيَاتًا وَيَاتًا وَيَاتًا وَيَاتًا وَيَاتًا وَيَاتًا وَيَعْمُ وَيَاتًا وَالْمُعْلِقُولًا وَيَاتًا وَيَاتًا وَيَاتًا وَالْمُعِلِي وَالْمُعْلِقُ وَالْمُواتِي وَالْمُعِلِقُولًا وَالْمُعِلِّقُولًا وَالْمُعِلِّ وَالْمُعِلِّ وَالْمُعِلِّ وَالْمُعِلِّ وَلِي وَالْمُعِلِّ وَالْمُعِلِّ وَلِي مِنْ مِنْ مُنْ مُنْ مُنْ وَالْمُعِلِي وَالْمُعِلِّ وَالْمُعِلِّ وَلِمُعِلِي وَالْمُعِلِّ وَلِمُ وَالْمُعِلِي وَالْمُعِلِّ وَلِمُولًا وَالْمُعِلِّ وَلِمُولًا وَالْمُعِلِي وَالْمُعِلِّ وَلِمُعِلِي وَالْمُعِلِّ وَلِمُعِلِي وَالْمُعِلِي وَالْمُعِلِي وَالْمُعِلِي وَالْمُعِلِي وَالْمُعُلِي وَالْمُعُلِي وَالْمُعُلِي وَالْمُعُلِي وَالْمُعِلِي وَالْمُعُلِي وَل

3485 - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بِسْطَامَ عَنْ يَحْيَى بْنِ حَمْزَةَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ الْحَارِثِ

قاسم' ابوعبدالرحلٰ سے نقل کرتے ہیں کہ تمیم داری نے کہا: ''جو شخص رات کو دس آیات پڑھے گا وہ غافلوں سے نہیں

لکھا جائے گا۔''

تَ مِدِمِ الدَّارِيِّ ح وَحَدَّثَنِى عُفُمَانُ بُنُ مُسُلِمٍ عَنِ الْعَبَّاسِ بُنِ مَيْمُونٍ عَنُ تَمِيمٍ الدَّادِيِّ قَالَ مَنُ قَرَأً عَشُرَ آيَاتٍ فِي

عَن الْقَاسِم أَبِى عَبُدِ الرَّحْمَنِ عَنُ

لَيُلَةٍ لَمُ يُكُتَبُ مِنَ الْغَافِلِينَ . •

فوائد: ان آیات کی قرات کاتعلق نماز سے ہے کہ اگر کوئی آدمی تبجد کا قیام دس آیات سے کرتا ہے تو ان کا شار غافلوں سے نہیں ہوتا بلکہ وہ اللہ کے عبادت گزاروں میں مندرج ہوتا ہے (واللہ اعلم) (و فقنا الله لذلك)

3486 حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بِسْطَامَ عَنْ يَحْيَى بْنِ حَمْزَةَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ الْحَارِثِ......

قاسم ابوعبدالرحمٰن كهته بين خميم دارى اور فضاله بن عبيد

دونوں نے کہا: ''جو شخص رات کو دس آیات پڑھے گا نمازیوں سے لکھا جائے گا۔''

تَمِيمِ الدَّارِيِّ وَفَضَالَةَ بُنِ عُبَيُدٍ قَالَا مَنُ قَرَأَ بِعَشُرِ آيَاتٍ فِي لَيُلَةٍ كُتِبَ مِنَ

عَن الُقَاسِمِ أَبِى عَبُدِ الرَّحْمَنِ عَنُ

الُمُصَلِّيُنَ . 🍳

¹ حسن: (3487) ملاحظة فرمائيس-

[•] مرسل: ضعيف القاسم نے تميم كوئيس پايا، أحرجه ابن منصور 116/1(23) والبيهقي في الشعب(2196).

www.sirat-e-mustageem.com

746 كر كتاب فضائل القرآن كك الكاليون

3487 - حَدَّثَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ أَبَانَ حَدَّثَنَا أَبُوْ أُوَيْسِ عَنْ مُوْسَى بْنِ عُقْبَةَ

محمد بن كعب قرظى كہتے ہيں ابن عمر وظائفۂ نے كہا: '' جو تحض رات کو دس آیات پڑھے گا وہ غافلوں سے نہیں لکھا جائے

عَنُ مُحَمَّدِ بُنِ كَعُبِ الْقُرَظِيِّ عَنِ ابُنِ عُـ مَرَ قَالَ مَنُ قَرَأً فِي لَيُلَةٍ بِعَشُرِ آيَاتٍ لَمُ يُكُتَبُ مِنَ الْغَافِلِينَ . 9

3488 حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَعِيلَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْلَحَقَ

مغیرہ بن عبداللہ جدلی کہتے ہیں کہ ابن عمر خلائیہ نے کہا:'' جو شخص رات کو دس آیات برط ھے گا وہ غافلوں سے نہیں لکھا حائے گا۔"

عَنِ الْمُغِيرَةِ بُنِ عَبُدِ اللَّهِ الْجَدَلِيّ عَن ابُنِ عُمَرَ قَالَ مَنُ قَرَأَ فِي لَيُلَةٍ بِعَشُرِ آيَاتٍ لَمُ يُكُتَبُ مِنَ الْغَافِلِينَ . ٥

[27] بَابِ مَنُ قَرَأً خَمُسِيْنَ آيَةً بچاس آیات پڑھنے کی فضیلت

3489 حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا فِطْرٌ عَنْ أَبِيْ إِسْحٰقَ عَنْ أَبِيْ الْأَحْوَصِ

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَسالَ مَنْ قَراً فِي لَيْلَةٍ عبدالله عروى به كدآب في كما: "جس في رات كو بِخَمُسِينَ آيَةً لَمُ يُكُتَبُ مِنَ الْغَافِلِينَ . ٥٠ حياس آيات ريوهين وه غافلون مين تبين لكها جائ كان

فواند: مميم دارى دائن عالمين ساخراج كى ليم ازكم دس آيات بيان كرت بي جب كه عبداللد بچاس بعنی بیان کے اپنے اجتہاد اورسوچ پر مشمل ہے بہر حال عابدین میں شار کروانے کے لیے قیام الليل كاامتمام كرنا جابي اگرچه دوركعتيس اور دس ، بيس آيتيس ہى پڑھ لى جائيں ۔

3490 حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بِسْطَامَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ الْحَارِثِ عَنِ الْقَاسِمِ أَبِيْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ

تميم داري اور فضاله بن عبيد كہتے بين بدوجس نے رات كو بچاس آیات پڑھیں وہ محافظوں میں لکھا جائے گا۔''

عَنُ تَمِيمِ الدَّارِيِّ وَفَضَالُةَ بُنِ عُبَيُدٍ قَالًا مَنُ قَرَأَ بِخَمْسِينَ آيَةً فِي لَيُلَةٍ كُتِبَ مِنَ الْحَافِظِينَ. ٥

◘ حسن: أخرجه الحاكم(2042)وابن ابي شيبه 508/10 (10137)وابن خزيمه(1143)

2 حسن: أخرجه الضريس في فضائل القرآن (63) وابن منصور 29/1 (104)

الصحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 508/10(10135) والطبراني في الكبير 158/9(8727)

4 منقطع ضعیف: (3485-3486) میں پیچھے گزر پی ہے۔

www.sirat-e-mustageem.com

نَيْنَنَ الْكَارِبُونَ ٢٤٦ ﴿ ٢٠٦ ﴿ كَتَابَ فَصَانَلُ الْقَرِآنَ ۗ ﴿ كَتَابُ فَصَانَلُ الْقَرِآنَ ۗ ﴿

[28] بَابِ مَنُ قَرَأُ بِمِائَةِ آيَةٍ سوآیات بڑھنے کی فضیلت

3491 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُبَيْدَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ يُحَنَّسَ مَوْلَى الزُّبَيْرِ عَنْ سَالِمِ أَخِيْ أُمِّ الدَّرْدَاءِ فِيْ اللَّهِ عَنْ أُمِّ الدَّرْدَاءِ

ابودرداء سے منقول ہے کہ نبی مشی کیا نے فرمایا: ''جو شخص رات کوسو آیات پڑھے گا غافلین میں نہیں لکھا جائے گا۔ 'ابو محمد کہتے ہیں: ''ان میں سے بعض سالم کی جگه پر راشد بن سعد کا نام کیتے ہیں۔''

3492 حَدَّثَنَا إِسْمْعِيْلُ بْنُ أَبَانَ حَدَّثَنَا أَبُوْ أُوَيْسِ عَنْ مُوْسَى بْنِ عُقْبَةَ

محدین کعب قرظی کہتے ہیں کہ ابن عمر بطالتہ نے فرمایا: ''جو کوئی رات کوسو آبات پڑھے گا عابدوں میں لکھا جائے

3493 - حَـدَّتُنَا يَحْيَى بْنُ بِسْطَامَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ وَاقِدٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ

مُوسَى عَنْ كَثِيرِ بْنِ مُرَّةَ عَنُ تَعِيمِ الدَّارِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ عَلَىٰ

كُتِبَ مِنَ الْقَانِتِينَ . 9

عَنُ أَبِيُ الدَّرُ وَاءِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ مَنُ

قَرَأُ بِمِائَةِ آيَةٍ فِي لَيُلَةٍ لَمُ يُكُتَبُ مِنَ

الُغَافِلِينَ قَالَ أَبُو مُحَمَّد مِنْهُمُ مَنْ

يَقُولُ مَكَانَ سَالِمِ رَاشِدُ بُنُ سَعُدٍ . •

عَنُ مُحَمَّدِ بُن كَعُبِ الْقُرَظِيِّ عَنِ ابُن

عُمَرَ قَالَ مَنُ قَرَأً فِي لَيْلَةٍ بِمِائَةِ آيَةٍ

تمیم داری سے منقول ہے کہ رسول اللہ م<u>نظوماتی</u> نے فرمایا: ''جوکوئی رات کوسوآیات پڑھے گا اس کے لئے ایک رات کی عبادت لکھی جائے گی۔''

قَالَ مَنْ قَرَأُ بِمِائَةِ آيَةٍ فِي لَيُلَةٍ كُتِبَ لَهُ قُنُوتُ لَيُلَةٍ . 9

3494ـ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنِ عَنِ ٱلْأَعْمَشِ. ابوصالح كمت بي كعب نے كها: "جو مخص سوآيات ير هے

مِائَةَ آيَةِ كُتِبَ مِنَ الْقَانِتِينَ . ٥

عَنُ أَبِي صَالِح قَالَ قَالَ كَعُبٌ مَنُ قَرَأً

گا عابدوں میں کھھا جائے گا۔''

3495 حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بِسْطَامَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ حَدَّثِنِي يَحْيَى بْنُ الْحَارِثِ

¹ ضعیف جداً: محمر بن قاسم کاؤب ہے۔

[🗗] حسن: (3488) میں گزر چکی ہے۔

[€]حسن: أحرجه احمد103/4 والطبراني في الكبير5/05(1252) وابن السنى في عمل اليوم واليلة(438)

⁴ صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 507/10(1013)

748 كتاب فضائل القرآن 748 الكالمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ

قاسم ابوعبدالرحمٰن سے منقول ہے تمیم داری اور فضالہ بن عبيد نے كہا: ''جو تحف رات كوسوآيات پڑھے گا عابدوں میں لکھا جائے گا۔''

قَرَأُ بِمِائَةِ آيَةٍ فِي لَيُلَةٍ كُتِبَ مِنَ

3496 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا فِطْرٌ عَنْ أَبِيْ إِسْحَقَ

ابو احوص کہتے ہیں عبداللہ نے کہا: ''جو شخص رات کوسو عَنُ أَبِيُ ٱلْأَحُوَصِ عَنُ عَبُدِ اللَّهِ قَالَ آیات پڑھے گا عابدوں میں لکھا جائے گا۔'' مَنُ قَرَأً فِي لَيُلَةٍ بِمِائَةِ آيَةٍ كُتِبَ مِنَ

الْقَانتيرَ . 9

3497 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعِ أَخْبَرَنَا حَرِيزُ بْنُ عُثْمَانَ

أُمَامَةَ يَقُولُ مَنُ قَرَأً بِمِائَةِ آيَةٍ لَمُ يُكُتَبُ مِنَ الْغَافِلِيُنَ. 9

عَن الُقَاسِمِ أَبِيُ عَبُدِ الرَّحْمَنِ عَنُ

تَمِيمِ الدَّارِيِّ وَفَضَالَةَ بُنِ عُبَيْدٍ قَالًا مَنُ

عَنُ حَبِيبٍ بُنِ عُبَيْدٍ قَالَ سَمِعُتُ أَبَا صبيب بن عبيد كت بين مين في ابوامامه سے سافرمات تھے:''جو شخص رات کوسو آیات پڑھے گا وہ غافلوں میں

نہیں کھا جائے گا۔''

[29].... بَابِ مَنُ قَرَأُ بِمِائَتَى آيَةٍ دوسوآ مات يرهض كى فضيلت

3498 حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعِ أَخْبَرَنَا حَرِيزُ

عَنْ حَبِيبِ بُنِ عُبَيْدٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا صبيب بن عبيد كهتم بين من في ابوامامه سے سافرماتے أَمَّامَةً يَقُولُ مَنُ قَواً مِائتَى آيَةٍ كُتِبَ مِنَ ﴿ تَصَادُ وووسوآ يات يرْصِي وه عابدول مِي لكها جائ كان

الْقَانِينَ . 🎱

3499 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْقَاسِم حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُبَيْدَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ يُحَسَّسَ مَوْلَى الزُّبَيْرِ عَنْ سَالِمِ أَخِي أُمِّ الدَّرْدَاءِ فِيْ اللَّهِ عَنْ أُمِّ الدَّرْدَاءِ

[•] حس: (3493) کے تحت بیاہ دیث گزر چکی ہے۔

[💋] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 508/10(10135)

³ صحيح: أخرجه الطبراني في الكبير 211/8 (7748)

⁴ صحيح: أخرجه الطبراني مطولاً في الكبير11/8(7748)

749 كتاب فضائل القرآن ك

الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ

ابو درداء کہتے ہیں نبی مطاع نے فرمایا: ' جوکوئی رات کو دو سوآيات يرص كاعابدون مين لكها جائے گا۔"

عَنُ أَبِي اللَّارُ دَاءِ عَنِ النَّبِيِّ عَلَيْ قَالَ مَنُ قَـرَأُ مِـاتَتَى آيَةٍ فِي لَيُلَةٍ كُتِبَ مِنَ

3500 حَدَّثَنَا أَبُوْ غَسَّانَ حَدَّثَنَا إِسْرَاثِيْلُ عَنْ أَبِي إِسْحَقَ

مغیرہ بن عبداللہ جدلی ہے منقول ہے ابن عمر طالفیہ نے کہا: ''جورات کودس آیات پڑھے گا غافلوں میں نہیں لکھا جائے گا جو تحض سوآیات پڑھے گا عابدوں میں لکھا جائے گا۔اور جودوسوآیات پڑھے گا بامرادوں میں لکھا جائے گا۔''

عَن الْمُغِيرَةِ بُنِ عَبُدِ اللَّهِ الْجَدَلِيِّ عَنِ ابُن عُمَرَ قَسالَ مَنُ قَرَأً فِي لَيُلَةٍ عَشُرَ آيَاتٍ لَمُ يُكُتَبُ مِنَ الْغَافِلِينَ وَمَنُ قَرَأً فِي لَيُلَةٍ بِمِائَةِ آيَةٍ كُتِبَ مِنَ الْقَانِتِيْنَ وَمَنُ قَرَأً

بِمِائَتَىٰ آيَةٍ كُتِبَ مِنَ الْفَائِزِيُنَ. ٥

[30].... بَابِ مَنُ قَرَأُ مِنُ مِائَةِ آيَةٍ إِلَى الْأَلُفِ ہزار آیات بڑھنے کی فضیلت

3501_ حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَان حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ سَعِيْدِ الْجُرَيْرِيِّ…

ابونضرة ہے منقول ہے ابوسعید خدری رضائشہ نے کہا: ''جو شخص رات کو دس آیات پڑھے گا ذاکرین میں کھا جائے لگا اور جوسوآیات پڑھے گا عابدین میں لکھا جائے گا۔ اور جو یانج سوسے ہزارتک پڑھے گامنج کے وقت اسے ایک قعطار اجر ملے گا۔" کہا گیا: قعطار کیا ہے؟ کہا: "میل کی کھال بھرسونا۔''

عَنُ أَبِي نَضُرَةَ عَنُ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدُرِيّ قَالَ مَنْ قَواً فِي لَيُلَةٍ عَشُرَ آيَاتٍ كُتِبَ مِنَ الذَّاكِرِيْنَ وَمَنُ قَرَأً بِمِائَةِ آيَةٍ كُتِبَ مِنَ الْقَانِتِيُنَ وَمَنُ قَرَأُ بِخُمُس مِائَةِ آيَةٍ إِلَى الْأَلْفِ أَصْبَحَ وَلَهُ قِنْطَارٌ مِنَ الْأَجُرِ قيلَ وَمَا اللَّهَ نُطَارُ قَالَ مِلْءُ مَسْلِتِ

الثُّور ذَهَبًا . 🏵

3502 حَدَّثَنَا أَبُوْ النُّعْمَان حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ يُونُسَ

سیّدنا حسن والنَّیرُ مستحت میں نبی ﷺ نے فر مایا:'' جورات

• موضوع: محمر بن قاسم كاذب ہے۔

عَنِ الْحَسَنِ أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ ﷺ قَالَ مَنُ

[🗗] مغیرة بن عبدالله جدل کے مکمل حالات نہیں جب کہ بقیہ رجال ثقات ہیں۔

[€]صحيح: أخرجه الطبراني في الاوسط(7674)

حَرِّ شَيِّنَ الْكَالِيْمِيْ عَلَى اللهِ ا

کوسوآیات پڑھے گا اس رات قرآن اس سے جھگڑے گا نہیں۔ اور جو رات کو دوسوآیات پڑھے گا اس کے لئے ایک رات کی عبادت کھی جائے گی۔ اور جو پانچ سوآیات سے ہزارآیات تک پڑھے گا اس کے لئے صبح کو ایک قنطار تواب ہوگا۔''لوگوں نے کہا: قنطار کیا ہے؟ فرمایا:''بارہ ہزار۔''

3503 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا فِطْرٌ عَنْ أَبِيْ إِسْلُحَقَ.....

[31] بَابِ مَنُ قَرَأً أَلُفَ آيَةٍ بَرَار آيات يرُّ صِن كَ نَصْيلت

3504 أُخْبَرَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِع أَخْبَرَنَا حَرِيزٌ

عَنُ حَبِيبِ بُنِ عُبَيْدٍ قَالَ سَمِعُتُ أَبَا أُمَامَةَ يَقُولُ مَنُ قَرَأَ أَلُفَ آيَةٍ كُتِبَ لَهُ قِنُطَارٌ مِنَ الْأَجْرِ وَالْقِيوَاطُ مِنُ ذٰلِكَ الْقِنُطَارِ لَا يَفِى بِهِ دُنْيَاكُمُ يَقُولُ لَا

حبیب بن عبید کہتے ہیں میں نے ابوامامہ سے سافرماتے تھے: ''جو ہزار آیات پڑھے اس کے لئے ایک قنطار ثواب کھا جائے گا اور اس ایک قنطار سے ایک قیراط کے ساتھ بوری دنیا برابر نہیں ہوسکتی۔''

يَعُدِلُهُ دُنْيَاكُمُ . 9

3505 حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بِسْطَامَ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمْزَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ الْحَارِثِ

عَنِ الْفَاسِمِ أَبِي عَبُدِ الرَّحْمَنِ عَنْ تاسم ابوعبدالرحمٰن كمت بين كمتميم دارى اور فضاله بن عبيد

¹ مرسل ضعيف: وكيم تفسير طبري 200/3

[🛭] صنعیع: (3486-3489) میں گزرچک ہے۔

[🛭] صعیح: (3497) یں گزرچک ہے۔

751 كال كتاب فضائل القرآن كا الكالمِينَ الكَالِمِينَ الكَالمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالمِينَ الكَالِمِينَ الكَالمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَامِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَالِمِينَ الكَامِينَ الكَالِمِينَ الكَامِينَ الكَامِينَ الكَامِينَ الكَامِينَ الكِلْمِينَ الكَامِينَ الكِيلِي المُعَالِمِينَ الكِيلِي المُعَلِّينَ الكِلْمِينَ المُعَالِمِينَ المُعَالِمِينَ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَلِّينَ الْمُعَالِمُ المُعَلِّينَ الْمُعَالِمِينَ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَلِّينَ المُعَلِّينَ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمُ المُعَالِمِينَ المُعَالِمُ المُعَالِمِي المُعَالِمِي المُعَالِمِي المُعَالِمِي المُعَالِمِي المُعِ تَمِيمِ الدَّارِيِّ وَفَضَالَةَ بُنِ عُبَيْدٍ قَالًا مَنُ

نے کہا: ''جو تحض رات کو ہزار آیات پڑھے گا اس کے لئے ایک قنطار لکھا جائے گا اور اس قنطار کا ایک قیراط دنیا اور اس کی تمام چیزوں ہے بہتر ہے اور جس قدر اللہ جاہے گا اسے اجر ملے گا۔''

فِيهَا وَاكْتَنَزَ مِنَ الْأَجُرِ مَا شَاءَ اللَّهُ . • 3506 حَدَّبَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْقَاسِمِ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ غُبَيْدَةَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ عَنْ يُحَسَّنَ مَوْلَى الزُّبَيْرِ عَنْ سَالِمِ أَخِي أُمِّ اللَّرْدَاءِ عَنْ أُمِّ اللَّرْدَاءِ

سیدنا ابودرداء زمانیہ سے منقول ہے کہ نبی ملت ملیم نے فرمایا:" جو هخض ہزار آیات بڑھے گا اس کے لیے ایک قبطار اجر لکھا جائے گا اور اس کا ایک قیراط بڑے ٹیلے کی

قنطار كى مقدار

3507 حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ بْنُ عَبْدِ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا أَبَانُ الْعَطَّارُ وَحَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ عَاصِم

عَنْ أَبِيْ صَالِح

عَنُ أَبِى هُرَيُرَةً قَالَ الْقِنْطَارُ اثْنَا عَشَرَ

قَرَأَ أَلُفَ آيَةٍ فِي لَيُلَةٍ كُتِبَ لَـهُ قِنْطَارٌ

وَالْقِيرَاطُ مِنَ الْقِنْطَارِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا

عَنُ أَبِي الدَّرُ دَاءِ عَنِ النَّبِيِّ عِنَيْكُ قَالَ مَنُ

قَرَأً أَلُفَ آيَةٍ إلى خَمْس مِائَةٍ كُتِبَ لَهُ

قِنُطَارٌ مِنَ الْأَجُرِ الْقِيُوَاطُ مِنْهُ مِثْلُ التَّلّ

الُعَظِيم . 6

3508 حَدَّثَنَا إِسْحْقُ بْنُ عِيْسَى.

عَنُ أَبِيُ الْأَشْهَبِ عَنُ أَبِي نَصُرَةَ

الْعَبُدِيّ قَالَ الْقِنطَارُ مِلْءُ مَسُلْتِ ثَوْرِ

3509 حَدَّثَنَا إِسْحَقُ عَنْ هُشَيْمٍ.....

1حسن: أخرجه الطبراني في الكبير (50/2-51 (1253)

2 موضوع: محمد بن قاسم كاذب بــــ

€حسن: أخرجه احمد3/363

🕢 صحيح: (3501)ريكھتے

[32].... بَابِ كُمُ يَكُونُ الْقِنُطَارُ

ابو ہرمرة و الله علیہ سے مروی ہے انہوں نے کہا: " قطارہ بارہ ہزار(اوقیہ) کا ہوتا ہے۔''

ابواشہب سے منقول ہے کہ ابونصر ہ عبدی نے کہا: '' قنطار بیل کی کھال بھرسونا ہوتا ہے۔''

www.sirat-e-mustageem.com

752 كتاب فضائل القرآن كي الكاليكي الكاليكي

عَنُ عَلِيّ بُن زَيْدٍ عَنُ سَعِيدِ بُن

الْمُسَيَّبِ قَالَ الْقِنُطَارُ أَرْبَعُونَ أَلْفًا . •

3510 حَدَّثَنَا إِسْحٰقُ....

عَنْ مُبَارَكٍ عَنِ الْحَسَنِ قَالَ الْقِنْطَارُ

دِيَةُ أَحَدِكُمُ اثْنَا عَشَرَ أَلُفًا . ٥

مبارک سے منقول ہے کہ حسن نے کہا: ''قطار تہاری دیت

علی بن زید سے منقول ہے کہ سعید بن میتب رہا ہے:

ہے تعنی بارہ ہزار۔''

''قنطار حالیس ہزار کا ہوتا ہے۔''

3511ـ حَدَّثَنَا إِسْحَقُ عَنْ مُسْلِمٍ هُوَ الزَّنْجِيُّ

عَنِ ابُنِ أَبِى نَجِيْح عَنُ مُجَاهِدٍ قَالَ الْقِنُطَارُ سَبُعُونَ أَلُفَ دِيْنَارِ . 6

3512 حَدَّثَنَا إِسْحَقُ عَنْ أَبِيْ بَكْرِ عَنْ أَبِيْ حَصِيْنِ

عَنْ سَالِمٍ بُنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ مُعَاذِ بُن جَبَلِ قَالَ الْقِنُطَارُ أَلُفُ أُوْقِيَّةٍ وَمِائَتَا

أُوقِيَّة . 0

ابن ابوجی سے منقول ہے کہ مجاہد نے کہا: "قطارستر ہزار دینار کا ہوتا ہے۔''

اسلم بن ابو جعد سے منقول ہے کہ معاذ بن جبل نے کہا:

''قطارایک ہزار دوسواو قیہ کا ہوتا ہے۔''

فوائد: " او قية "بي چاليس درهمول كا موتا بي يول تنطار اثر تاليس بزار درهمول كا موار

3513 حَدَّثَنَا أَبُوْ نُعَيْمِ حَدَّثَنَا شَرِيكٌ

عَنُ لَيُتٍ عَنُ مُحَاهِدٍ قَالَ الْقِنْطَارُ سَبُعُونَ أَلُفَ مِثْقَالِ . 6

لیٹ سے منقول ہے کہ مجاہد نے کہا: ' تعطار ستر ہزار مثقال کا ہوتا ہے۔''

> [33].... بَابِ فِي خَتُم الْقُرُآن ختم قرآن کے متعلّق

3514 حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبِ حَدَّثَنَا صَالِحٌ الْمُرِّيُّ عَنْ أَيُّوْبَ

عَنُ أَبِى قِلَابَةَ رَفَعَهُ قَالَ مَنُ شَهِدَ ابوقلابه مرفوع بيان كرتے بين كه: "جو خص قرآن شروع کرتے وقت موجو ہو گویا کہ وہ جہاد کی فتح میں شریک ہوا'

الْقُرُآنَ حِينَ يُفْتَحُ فَكَأَنَّمَا شَهِدَ فَتُحًا

²صحيح: وكيم تفسير طبرى 200/3

⁴ منقطع ضعیف: و یکھےتفسیر طبری 200/3

¹ ضعیف مدلس: مشیم کاعنعته اورضعف علی ب-

³حسن: و کھتے تفسیر طبری 200/3

⁶ ضعیف: لبیث بن سلیم ضعیف ہے۔

اور جو محض قرآن ختم کرتے وقت موجود ہو گویا کہ وہ مال غنیمت کی تقسیم کے وقت شریک ہوا۔''

يُخْتَمُ فَكَأَنَّمَا شَهِدَ الْغَنَائِمَ تُقُسَمُ . • فنيمت كَنْسَم كوفَ يَخْتَمُ فَكَأَنَّمَا شَهِدَ الْغَنَائِمَ تُقُسَمُ . • فنيمت كَنْسَيم كوفَ 3515 حَدَّثَنَا صَالِحٌ الْمُرِّيُّ

قادة وظائف كہتے ہيں ايك آ دى مدينه كى مسجد ميں قرآن برطان اور ابن عباس وظائف نے وہاں محافظ مقرر كر ركھا تھا۔ جب اس كے ختم كا دن آتا تو وہاں جاتے تھے۔'

عَنُ قَتَادَةَ قَالَ كَانَ رَجُلٌ يَقُرأُ فِي مَسْجِدِ
السُمَدِيُنَةِ وَكَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ قَدُ وَضَعَ
عَلَيْهِ الرَّصَدَ فَإِذَا كَانَ يَوُمُ خَتُمِهِ قَامَ
فَتَحَوَّلَ إِلَيْهِ. ٥

فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَنُ شَهِدَ خَتُمَهُ حِينَ

3516 ـ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا صَالِحٌ

ٹابت بنانی کہتے ہیں کہ انس بن مالک رات کو جب قرآن ختم کرنے کے قریب ہوتے تو صبح ہونے تک کچھ باتی چھوڑ دیتے پھر اپنے گھر والوں کو جمع کرتے اوران کے ساتھ ختم کرتے۔

عَنُ ثَابِتٍ الْبَنَانِيِّ قَالَ كَانَ أَنَسُ بُنُ مَالِكٍ إِذَا أَشُفْى عَلَى خَتُمِ الْقُرُآنِ بِاللَّيْلِ بَقَى مِنْهُ شَيْنًا حَتَّى يُصُبِحَ فَيَجْمَعَ أَهُلَهُ فَيَخْتِمَهُ مَعَهُمُ . •

3517_ حَدَّثَنَا عَفَّانُ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ سُلَيْمَانَ

ٹابت وٹائٹو کہتے ہیں کہانس وٹائٹو جب قرآن ختم کرتے تو اپنے بیٹوں اور گھر والوں کو جمع کرتے پھران کے لئے دعا کہ ت حَدَّثَنَا ثَابِتٌ قَالَ كَانَ أَنَسٌ إِذَا خَتَمَ الْقُرْآنَ جَمَعَ وَلَدَهُ وَأَهُلَ بَيْتِهِ فَدَعَا لَقُهُ. ٥

فوائد: ختم قران کے موقع پر آپ مظیماتی سے کوئی مسنون دعا ثابت نہیں البتہ صحابہ ، وسلف سے ختم قران کے موقع پر دعا کا ثبوت ماتا ہے لہٰذا اس کا اہتمام کیا جانا چاہیے۔

3518 ـ حَدَّثَنَا أَبُوْ الْمُغِيرَةِ

اوزاعی کہتے ہیں کہ عبدہ نے کہا:''جب آ دمی دن کو قرآن ختم کرتا ہے تو فرشتے شام تک اس کی بخشش کی دعا کرتے حَـدَّلَنَا الْأُوْزَاعِيُّ عَنُ عَبُدَةَ قَالَ إِذَا خَتَمَ الرَّجُلُ الْقُرُآنَ بِنَهَادِ صَلَّتُ عَلَيُهِ

- ضعيف: أخرجه ابو عبيد في فضائل القران (ص107-108) نيز و كين جمال القراء عاوى كي 1/113
 - 2 ضعيف: أخرجه بن الضريس في فضائل القراك(79)
 - 3 ضيعف: أخرجه الضريس في فضائل القران(78)
 - 4 صحيح: أخرجه الطبراني في الكبير 242/1/46 (674) والبيهقي في الشعب (6070)

754 كتاب فضائل القرآن ك المراكب المنظمة المراكبة

ہیں۔ اگر وہ رات کو فارغ ہوتو فرشتے صبح تک اس کے لئے بخشش کی دعا کرتے ہیں۔''

3519 حَدَّثَنَا إِسْخُقُ بْنُ عِيسْى عَنْ صَالِحِ الْمُرِّيِّ عَنْ قَتَادَةَ

زرارة بن ابو او فی خوانیما سے منقول ہے کہ نبی طفی کا سے بوچھا گیا کون ساعمل افضل ہے؟ فرمایا: جومنزل پر پہنچ کر چل دينے والا موكها كيا: منزل پر پہنے كرچل دينے والاكون ہے؟ فرماما: '' قرآن بڑھنے والا جو شروع سے آخر تک یڑھتا ہے پھر آخر سے فارغ ہو کر جب منزل پر پہنچتا ہے تو پھرچل دیتا ہے۔''

عَنُ زُرَارَةَ بُنِ أُوفِي أَنَّ النَّبِيِّ عَنَّ شُئِلً سُئِلَ أَيُّ الْعَمَلِ أَفُضَلُ قَالَ الْحَالُّ الْمُرُتَحِلُّ قِيلَ وَمَا الْحَالُ الْمُرْتَحِلُ قَالَ صَاحِبُ الُقُرُآن يَضُرِبُ مِنْ أُوَّلِ الْقُرُآنِ إِلَى آخِرِهِ وَمِنُ آخِرِهِ إِلَى أُوَّلِهِ كُلَّمَا حَلَّ ارُتَحَاً . ٥

الْمَلائِكَةُ حَتَّى يُمُسِىَ وَإِنْ فَرَغَ مِنْهُ

لَيُلا صَلَّتُ عَلَيْهِ الْمَلاثِكَةُ حَتَّى يُصْبِحَ . •

3520 حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى عَنْ جَرِيرٍ.

عَن الْأَعُمَش عَنُ إِبُرَ اهيهمَ قَالَ إِذَا قَرَأُ الرَّجُلُ اللَّهُ وَآنَ نَهَارًا صَلَّتُ عَلَيْهِ الْمَلائِكَةُ حَتَّى يُمُسِيَ وَإِنْ قَرَأَهُ لَيُلا صَلَّتُ عَلَيْهِ الْمَلاثِكَةُ حَتَّى يُصُبحَ قَالَ سُلَيْمَانُ فَوَأَيْتُ أَصْحَابَنَا يُعُجِبُهُمُ أَنُ يَخْتِمُوهُ أُوَّلَ النَّهَارِ وَأُوَّلَ اللَّيُلِ. 🗣

اعمش کہتے ہیں ابراہیم نے کہا: "جب آ دی دن کوقر آن ختم کرتا ہے تو فرشتے شام تک اس کے لئے بخش کی دعا کرتے ہیں۔اور جب رات کو پڑھتا ہے تو فرشتے ہیں تک اس کے لئے مجشش کی وعا کرتے ہیں۔''سلیمان کہتے ہیں: میں نے دیکھا کہ ہارے ساتھی اس بات کو پیند کرتے ۔ ہیں کہ قرآن دن کے پہلے جھے اور رات کے پہلے جھے میں ختم کر س۔''

3521 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ الْفِرْيَابِيُّ عَنْ سُفْيَانَ

اعمش' ابراہیم سے سابق قول کی طرح نقل کرتے ہیں گر اس میں سلیمان کی بات نہیں ہے۔

عَنِ اللَّاعُ مَشِ عَنُ إِبْرَاهِيمَ مِثْلَةَ إِلَّا أَنَّهُ لَيْسَ فِيهِ قَوْلُ سُلَيْمَانَ . 0

3522 حَدَّثَنَا فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مَالِكِ الْمُزَنِيّ

^{113/6} صحيح: أحرجه ابو نعيم في الحلية 113/6

ضعيف: أخرجه الحاكم (2088-2088) وابو نعيم في الحلية 174/6 والطبراني في الكبير168/12 (16783).

❸صحيح: أخرجه ابن الفريس في فضائل القرآن(50)وابو عبيد في فضائل القرآن (ص109)

اس کی مندشرط بخاری یہ ہے۔

حكال القرآن (كتاب فضائل القرآن) المحالي القرآن المحالي القرآن المحالية المعالل القرآن المحالية المحا

عبدالرحمٰن بن المحل كہتے ہيں كه محارب بن دثار نے كہا: "جو قرآن كو زبانى بڑھے گا اس كے لئے دنیا یا آخرت میں ایك (مقبول) دعا ہوگی۔"

عَنُ عَبُدِ السَّرِّ حُمْنِ بُنِ إِسُلَحْقَ عَنُ مُسَحَارِبِ بُنِ دِثَارٍ قَالَ مَنُ قَرَأَ الْقُواآنَ عَنُ طَهُ رِ قَلْبِهِ كَانَتُ لَهُ دَعُوةٌ فِي اللَّهُ نَا الدُّنيَ الَّهُ دَعُوةٌ فِي اللَّهُ نَا اللَّهُ الْمَا وَقَلْ اللَّهِ وَقَلْ اللَّهُ وَقَلَ اللَّهُ وَقَلْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَقُلْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُ وَاللَّهُ وَالْمُ وَاللَّهُ وَالْمُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُولِ لَلْمُولَ اللْمُولَ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُولُولِ الْمُؤْمِقُ وَلَا الْمُؤْمِقُ وَاللَّهُ وَلَا الْمُؤْمِقُولُ اللَّهُ وَلَا الْمُؤْمِقُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُؤْمُ وَالْمُؤْمُ وَالْمُؤْمِقُ وَالْمُؤْمِقُ وَالْمُؤْمِ وَالْمُؤْمُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُؤْمُ وَالْمُؤْمُ وَالْمُؤْمُ وَاللَّهُ وَالْمُؤْمُ وَالِمُ وَالْمُؤْمُ وَالْمُؤْمُ وَالْمُؤْمُ وَالْمُؤْمُ وَالْمُؤْمُ وَالْمُولُولُولُولُ وَالْمُؤْمُ وَالْمُؤْمُ وَالْمُؤْمُ وَالْمُؤُ

3523 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ السَّلامِ

عَنُ يَنِيدَ بُنِ عَبُدِ الرَّحُمْنِ عَنُ طَلُحَة يزيد بن عبدالرطن سے منقول ہے کہ طلحہ اور عبدالرطن بن وَعَبُدِ الرَّحُمَنِ بُنِ الْأَسُودِ قَالَا مَنُ قَرَأً اسود نے کہا: ''جورات کو یا دن کو قرآن پڑھتا ہے فرشتے الْقُدُ آنَ لَیُلًا أَوْ نَهَارًا صَلَّتُ عَلَیْهِ الله عَنْ قَوَلًا مَنْ قَوْلًا اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ عَلَيْهِ وَمِي اللهُ اللهُ عَلَيْهِ وَمِي اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ عَلْمُ واللهُ اللهُ ا

0 (

3524ـ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ حَمَّادِ.....

حَـدَّ ثَـنَـا قَـزَعَةُ بُـنُ سُـوَيُدِ عَنُ حُمَيُدٍ الْأَعُوَجِ قَالَ مَنُ قَرَأَ الْقُوْآنَ ثُمَّ دَعَا أَمَّنَ

عَلَى دُعَاثِهِ أَرْبَعَةُ آلافِ مَلَكٍ . 🕏

3525 حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ

عَنِ الْحَكَمِ عَنُ مُجَاهِدٍ قَالَ بَعِثَ إِلَىَّ قَالَ إِنَّ قَالَ إِنَّ قَالَ إِنَّ قَالَ إِنَّ مَا دَعُونَاكَ أَنَّا أَرُدُنَا أَنُ نَخْتِمَ الْقُرُآنَ وَإِنَّهُ بَلَغَنَا أَنَّ الدُّعَاءَ يُسُتَجَابُ عِنْدَ خَتُم الْقُرُآن قَالَ فَدَعُوا بِدَعُواتٍ . ٥ خَتُم الْقُرُآن قَالَ فَدَعُوا بِدَعُواتٍ . ٥

قزعہ بن سوید کہتے ہیں کہ حمید اعرج نے کہا: ''جو شخص قرآن پڑھ کر دعا کرتا ہے' حیار ہزار فرشتے اس کی دعا پر آمین کہتے ہیں۔''

حکم کہتے ہیں مجاہد نے مجھے بلایا اور کہا: ''ہم نے آپ کو اس لئے بلایا ہے کہ ہم قرآن ختم کرنے کا ارادہ رکھتے ہیں اور ہمیں میے خرملی ہے کہ قرآن ختم کرتے وقت کی گئی دعا قبول ہوتی ہے۔'' پھرانہوں نے دعائیں کیں۔

¹ ضعیف: عبدالرطن بن اسحاق صدیث ضعیف ہے۔

و طلح تك بيسندس ب جب كرعبدار تمن بن الأسود يزيد بن عبدالرحمٰن كاساع فابت نبيس لبذا بي منقطع ب-أخرج أثر طلحة ابن المضريس في فضائل القران (54) اس كى سند يح ب اگريدالفاظ محقوظ بول توكيول كه نورى في (حلية الأبرابر) (ص 183) ميس "من حتم القران" كالفاظ ذكر كيه بيس -

⁶ صعیف: قزعة بن سويد ضعيف ہے۔

[◘] صحيح: أخرجه ابن الضريس في فضائل القران(49) والبيه قي في الشعب(2072)وابو عبيد في فضائل القران (ص107)

3526 حَدَّثَ نَا مُحَمَّدُ بْنُ حُمَيْدٍ حَدَّثَنَا هَارُوْنُ عَنْ عَنْبَسَةَ عَنْ لَيْثٍ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ مُصَرِّفٍ

عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدِ

عَنُ سَعُدٍ قَالَ إِذَا وَافَقَ حَتُمُ الْقُرُآنِ سعدت اللهُ الله

سعد سے مردی ہے انہوں نے کہا کہ: ''جب رات کے شروع میں قرآن ختم ہوتا ہے فرشتے شبح تک اس کے لئے جشش کی دعا کرتے ہیں۔ اور جب رات کے آخر میں ختم ہوتو شام تک اس کی بخشش کی دعا کرتے ہیں اس لئے اکثر لوگ شبح یا شام تک کے لئے کچھ قرآن رکھ دیتے ہیں۔ ابو محمد کہتے ہیں: ''اسے حسن نے سعد سے روایت کیا ہے۔''

3527 حَدَّثَنَا مُجَاهِدُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا مَعْنٌ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُهَاجِرِ بْنِ مِسْمَارِ ابْنِ أَخِي بُكَيْرِ بْنِ مِسْمَارِ حَدَّثِنِي صَفْوَانُ بْنُ سُلَيْمِ

> عَنُ عَطَاءِ بُنِ يَسَارٍ قَالَ حَمَلَةُ الْقُرُآنِ عُرَفَاءُ أَهُلِ الْجَنَّةِ . ٥

> 3528 حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ

أَخُبَرَنَا عَبُدُ الْمَلِلْثِ عَنُ سَعِيدِ بُنِ جُبَيْرٍ الْخُبَرُنِ جُبَيْرٍ اللَّهُ كَانَ يَخْتِمُ الْقُرُآنَ كُلَّ لَيُلَتَيُنِ . 8

کرنے والے جنتیوں کے عریف (سردار) ہوں گے۔''

عطاء بن بيارس مردي ہے انہوں نے کہا: '' قرآن ياد

عبدالملک بیان کرتے ہیں کہ سعید بن جبیر رہا ہی دو راتوں میں قرآن ختم کرتے تھے۔

3529 حَدَّثَنَا عُشْمَانُ بُنُ مُحَمَّدِ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مُطَرِّفِ عَنْ أَبِيْ إِسْحَقَ عَنْ أَبِيْ

سيّدنا عبدالله بن عمره وفي الله المحتم مين مين في كها: "يا رسول الله! كنت وقت مين مين قرآن ختم كرون؟ فرمايا: "أيك ماه مين السحتم كرون مين في كها: "يا رسول الله! مين اس

عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ عَمُوو قَالَ قُلُتُ يَا رَسُولَ اللّهِ فِى كَمُ أَخْتِمُ الْقُرُآنَ قَالَ اخْتِمُهُ فِى شَهُ رِ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللّهِ

⁰ ضعيف: ليث *ضغيف بـ-*

² ضیعف: ابراہیم بن مہا برضعف ہے۔

[€] صحيح: أخرجه ابو نعيم في الحلبة 273/4وابو عبيد في فضائل القران(ص 182)وابن كثير في فضائل القران ص 258.

الكَلْمُ الكَلَّمُ الْكَلِيْمِينَ الْكَلِيْمِينَ الْكَلِيْمِينَ الْكَلِيمِينَ الْكَلِيمِينَ الْكَلِيمِينَ الْكَلِيمِينَ الْكَلِيمِينَ الْكَلِيمِينَ الْكَلِيمِينَ الْكَلِيمِينَ الْكِلِيمِينَ الْمُعْرِآنَ الْمُعْرِآنَ الْمُعْرِقِينَ الْمُعْرِقِينِ الْمُعْرِقِينَ الْمُعْرِقِينَ الْمُعْرِقِينَ الْمُعْرِقِينَ الْمُعْرِقِينَ الْمُعْرِقِينَ الْمُعْرِقِينَ الْمُعْرِقِينِ الْمُعْرِقِيلِيلِي الْمُعْرِقِيلِ الْمُعْرِقِيلِي الْمُعْرِقِي الْمُعْرِقِي

إِنِّى أُطِيُقُ قَالَ اخْتِمُهُ فِى خَمُسِ وَعِشُرِيْنَ قُلُتُ إِنِّى أُطِيُقُ قَالَ اخْتِمُهُ فِى عِشُرِينَ قُلُتُ إِنِّى أُطِيُقُ قَالَ اخْتِمُهُ فِى خَمُسَ عَشُرَةَ قُلُتُ إِنِى أُطِيُقُ قَالَ اخْتِمُهُ فِى عَشُرٍ قُلْتُ إِنِى أُطِيُقُ قَالَ اخْتِمُهُ فِى فِى عَشُرٍ قُلْتُ إِنِّى أُطِيُقُ قَالَ اخْتِمُهُ فِى خَمُس قُلْتُ إِنِّى أُطِيْقُ قَالَ لَا . •

سے زیادہ طاقت رکھتا ہوں' فرمایا:''اسے پچیس دن میں ختم کرو۔'' میں نے کہا: ''میں اس سے زیادہ طاقت رکھتا ہوں۔'' فرمایا:''اسے بیس دن میں ختم کرو۔'' میں نے کہا: ''میں اس سے زیادہ طاقت رکھتا ہوں۔'' فرمایا:''اسے پندہ دن میں ختم کرو۔'' میں نے کہا:''میں اس سے زیادہ طاقت رکھتا ہوں۔'' فرمایا:''اسے دس دن میں ختم کرو۔'' میں نے کہا:''میں اس سے زیادہ طاقت رکھتا ہوں۔'' فرمایا:''یا نے کہا:''میں اس سے زیادہ طاقت رکھتا ہوں۔'' فرمایا:''نیا نے طاقت رکھتا ہوں۔'' فرمایا:''نیا نے طاقت رکھتا ہوں۔'' فرمایا:''نہیں ،'' طاقت رکھتا ہوں۔'' فرمایا:''نہیں۔''

فوائد: قران کی تلاوت آ ہتگی کے ساتھ اور اس کے معنی و مفہوم میں تد ہر کرتے ہوئے کرنی چاہیے قران کا صرف دو ہرا نا ہی مقصود نہیں بلکہ اس پر تھم کر اس کے معنی کا اثر قبول کرنا یہ بھی مقصود ہے اس لیے آپ طبح آنے نے شائفین تلاوت کو کم از کم پانچ دن کی مدت دی البتہ آئندہ عبد اللہ بن عمرو کی حدیث کو مدنظر رکھتے ہوئے سجھ آتی ہے کہ کم از کم مقرر کی مدت آپ کی جانب سے وہ تمین دن ہے اس سے پہلے قران منظر رکھتے ہوئے سجھ آتی ہے کہ کم از کم مقرر کی مدت آپ کی جانب سے وہ تمین دن ہے اس سے پہلے قران ختم کرنا درست نہیں اس اعتبار سے سابقہ سعید رکھتا ہے کا عمل بھی خلاف سنت قرار پائے گا اس بارے اگر چہاور مھی مختلف اقوال ہیں بہر حال تین دن والا قول ہی راج ہے مندسعید بن منصور اور طبر انی میں صحیح سند سے اس کے شاہد موجود ہیں (واللہ اعلم)

3530 حَدَّثَ نَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ زِيَادٍ حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ زِيَادٍ حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ رَافِع

نیی سیّدنا عبدالله بن عمرو رفی این کتب مین مجھے رسول الله مطفّع این این میں فی نیاز میں تین دن سے کم مدت میں قرآن ختم نہ کروں ۔''

عَنُ عَبُدِ اللّهِ بُنِ عَمْرٍ و قَالَ أَمَرَنِي رَسُولُ اللهِ عَلَى أَنْ لَا أَقْرَأُ الْقُرُآنَ فِي رَسُولُ اللهِ عَلَى أَنْ لَا أَقْرَأُ الْقُرُآنَ فِي اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلْمَ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللّ

[●] متفق عليه: أخرجه البخاري، كتاب الصوم، باب حق الضيف في الصوم(1974) ومسلم، كتاب الصوم، باب النهي عن صوم الدهر لمن تضرر به أوفو ت به(2722)

[€] صحيح: أخرجه احمد 158/2 وابو داؤد، كتاب الصلاة، باب في كم يقراء القران (1391)

www.sirat-e-mustageem.com

نَيْبَنَىٰ الْكَالِبُونِيٰ ٢58 ﴿ كُتَابِ فَضَائِلِ القرآنُ عَيْبَاتُ الْكَالِبُونِيْ عَلَيْهِ فَضَائِلِ القرآنُ [34] بَابِ التَّغَنِّيُ بِالْقُرُ آن

خوش آ وازی ہے قر آن پڑھنا

3531 حَدَّثَنَا أَبُوْ الْوَلِيْدِ الطَّيَالِسِيُّ حَدَّثَنَا لَيْثُ بْنُ سَعْدٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ ابْنِ أَبِي

سيّدنا سعد بن ابو وقاص ذالله كتي بين رسول الله السُّلطَاليّا نے فرمایا:" جو مخص خوش آوازی سے قرآن نہ پڑھے وہ مم سے نہیں' ابن عینیہ کہتے ہیں: "یستغنی " کے معنی میں ہے جس کا مطلب ہے بے برواہ ہونا۔''

عَنُ سَعُدِ بُنِ أَبِي وَقَاصِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ لَيُسسَ مِنَّا مَنُ لَمُ يَتَغَنَّ بِالْقُرُآنِ قَالَ ابُنُ عُيَيْنَةَ : يَسْتَغُنِي قَالَ أَبُوُ مُحَمَّد النَّاسُ يَقُوْلُونَ عُبَيْدُ اللَّهِ بُنُ أبي نَهِيُكِ . 0

فواند: "يتخني" بارے مختلف اقوال جيں مثلا اس سے مراد (۱) اچھي آواز (۲) اونچا پڙهنا (m) غمناک آواز (۴) لوگوں سے بے بروائی والی آواز (۵) قراء ت میں مصروف ہو جانا (۲) لذت و مٹھاس محسوس کرنا ان میں مشہور قول آخری ہی ہے اگر چہ بقیہ اقوال کے بھی احادیث سے دلائل ملتے ہیں بہرحال ان سے مقصود وہ تحسین الصوت ہی ہے لیکن خیال رہے کہ کہیں زیادہ تکلیف عربی لہجے وقواعد سے رو گردانی کا سبب نه بن جائے۔

3532 حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن أَخْبَرَنَا مِسْعَرٌ عَنْ عَبْدِ الْكَرِيْمِ

طاؤس سے مروی ہے اس نے کہا: نبی طفی مین اسے میوجھا گیا: لوگول میں سے کون ہے؟ جس کی قرآن پڑھنے میں آ واز اچھی ہواورجس کی قراءت اچھی ہو؟ فرمایا:''وہ محض كه جبتم اسے قرآن بڑھتے ہوئے سنوتو خیال كروكه وہ الله سے ڈررہا ہے۔ ' طاؤس کہتے ہیں:طلق زائن ایسے ہی

عَنُ طَاوُس قَالَ سُئِلَ النَّبِيُّ عِنَّا أَيُّ النَّاسِ أَحْسَنُ صَوْتًا لِلْقُرْآنِ وَأَحْسَنُ قِرَائَةً قَالَ مَنُ إِذَا سَمِعْتَهُ يَقُواأُ أُرِيْتَ أَنَّهُ يَخُشَى اللَّهَ قَالَ طَاوُسٌ وَكَانَ طَلُقٌ كَذْلِكَ . ٥

صحيح: ابن حبان (120) وأخرجه الرازي في فضائل القران (90) والبيهقي في الشعب (2613).

[🗨] ضَمْيَف: أخرجه ابن ابي شيبه 546/10 (9694)وابوعبيد في فضائل القران ص 168 وأحرجه ابو نعيم في حلية الأوليا 19/4

و الله القرآن الكارتين الكارتي

عَنُ أَبِى هُ رَيُورَةَ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللهِ عَنَى لَهُ لِشَيءٍ مَا رَسُولُ اللهِ عَنَى اللهُ لِشَيءٍ مَا أَذِنَ لِنَبِتِي يَتَعَنَّى بِالْقُرْآنِ وقَالَ صَاحِبٌ لَهُ زَادَ يَجُهَرُ بِهِ. • • صَاحِبٌ لَهُ زَادَ يَجُهَرُ بِهِ. • •

أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ مَا

أَذِنَ اللُّهُ لِشَيْءٍ كَمَا أَذِنَ لِنَبِيّ يَتَغَنَّى

سیدنا ابو ہریرة رہی ہے ہیں رسول الله منطقاتی نے فرمایا:

"الله تعالی کسی چیز کو اس طرح نہیں سنتا جس طرح
نی منطق آیا نے کی آواز کو سنتا ہے جو خوش آوازی سے
پڑھیں۔" ابو ہریرۃ بوائن کے شاگرد نے کہا: "اس کا
مطلب ہے جہاً (با واز) پڑھتا ہو۔"

3534 حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِح حَدَّثَنَا اللّٰيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ

ابوسلمة والنفط بیان کرتے ہیں کہ ابوہرریة و النفط نے کہا: "الله تعالی کوئی چیز اس طرح نہیں سنتا جس طرح خوش آوازی سے پڑھنے والے نبی کے قرآن کوسنتا ہے۔"

بِالْقُرُآنِ . ٥٠ بِالْقُرُآنِ . ٥٠ 3535 - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُوْنِسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ

ابوسلمة بن عبدالرحمٰن بیان کرتے ہیں که رسول الله ملطی الله ملطی الله ملطی الله ملطی الله ملطی آواز سے ابو موی وائن کا میں اچھی آواز دی گئی ہے۔''

3535 حدثنا عبد اللهِ بن صالِح حدة أُخُبَرَنِي أَبُو سَلَمَة بُنُ عَبُدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ بَنْ عَبُدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ عَلَى كَانَ يَقُولُ لِأَبِيى مُوسَى وَكَانَ حَسَنَ الصَّوُتِ بِالْقُرْآنِ لَقَدُ أُوتِي هٰذَا مِنْ مَزَامِيْرِ آلِ دَاؤَدَ .

لَقَدُ أُوتِي هٰذَا مِنْ مَزَامِيْرِ آلِ دَاؤَدَ .

لَقَدُ أُوتِي هٰذَا مِنْ مَزَامِيْرِ آلِ دَاؤَدَ .

فواند: " " " الله تعالى نے خوبصورت آواز کے ساتھ نوازا تھا چنانچہ جب وہ تیج کرتے یا زبور پڑھتے تو پہاڑ اور پرندے آپ کے ساتھ خوبصورت آواز کے ساتھ نوازا تھا چنانچہ جب وہ تیج کرتے یا زبور پڑھتے تو پہاڑ اور پرندے آپ کے ساتھ جموم جاتے قرآن میں ہے ﴿وَسَخَرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحُنَ وَالطَّيْر ﴾ (الانبیاء: 79) ہم نے داؤد کے ساتھ پہاڑوں کو مخرکر دیا وہ تیج بیان کرتے اور پرندے۔

 [◘] متنفق عليه: أخرجه البخاري، كتاب فضائل القران، باب من لم يتغن بالقران (5023) ومسلم، كتاب صلاة المسافرين،
 باب استحباب تحسين الصوت بالقران (792)

² صحیح: حدیث کرر آئی ہے۔

❸ متفق عليه: أخرجه البخارى، كتاب فضائل القرآن، باب حسن الصوت بالقراءة بالقرآن(5048) ومسلم، كتاب صلاة المسافرين، باب استحباب تحسين الصوت بالقران (793)

حَصَّلُ اللَّهُ الْكَالِيَّافِيُّ الْكَالِيِّيْنِيُّ الْكَالِيِّيْنِيُّ الْكَالِيِّيْنِيُّ الْكَالِيِّيْنِيُّ الْكَالِيِّيْنِي الْمَالِ الْفَرْآنَ الْمَالِيِّ الْمُورَانَ الْمَالِيَّةِ الْمَالِيِّ الْمُورَانَ الْمَالِيَةِ الْمُورَانِيِّ الْمُورِانِيِّ الْمُورَانِيِّ الْمُورَانِيِّ الْمُورِانِيِّ الْمُورِانِيِّ الْمُورِانِيِّ الْمُورَانِيِّ الْمُورِانِيِّ الْمُؤْمِنِيِّ الْمُورِانِيِّ الْمُؤْمِنِيِّ الْمُؤْمِنِي الْمُولِي الْمُؤْمِنِي الْمُولِي الْمُؤْمِنِي الْمُعْمِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِنِي الْمُؤْمِي الْمُؤْم

3536 حَدَّثَ نَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنِي اللَّيْثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ حَدَّثَنِي اللَّيثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ حَدَّثَنِي اللَّيثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ حَدَّثَنِي اللَّيثُ حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ حَدَّثَنِي

أَبُوْ سَلَمَةَ أَيْضًا

أَنَّ عُمَرَ بُنَ الْحَطَّابِ كَانَ إِذَا رَأَى أَبَا سيّدنا عمر بن خطاب رَفَاتُمَدُ جب ابوموى رَفَاتُهُ كو و يكفت تو مُوسَى قَالَ ذَكِّرُنَا رَبَّنَا يَا أَبَا مُوسَى كَبَّ: "اللهِ موى ! بمارك رب كا ذكر كرو" تو وه ان فَيَقُرَأُ عِنْدَهُ. • كياس قرآن پڙھتے تھے۔

3537 حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْن حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ الْهَجَرِيُّ

فواند: سس سورة بقرة کی تلاوت انسان کی بخشش کا سامان ہے جیسا کہ بچیلی احادیث میں ان کا ذکر ہو چکا ہے نیز سنت سے ثابت ہے کہ جس گھر میں سورة بقرة پڑھی جائے اس گھرسے شیطان بھاگ جاتا ہے لہذاد یکھیے ابن کثیر شیاطین و خبات کو بھگانے کا بیا کی مجرب نسخہ ہے

3538 ـ أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ قَالَ حَدَّثِنِي بَعْضُ آلِ سَالِمِ بْن عَبْدِ اللَّهِ قَالَ

قَدِمَ سَلَمَةُ الْبَيُذَقُ الْمَدِينَةَ فَقَامَ يُصَلِّى سلمة بيذق مدينة آئ وه انہيں نماز پڑھانے كے لئے بھے مُ فَقِيلَ لِسَالِمٍ لَوُ جِنْتَ فَسَمِعْتَ كُورَ عَنْ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى جِنْتَ فَسَمِعْتَ كُورَ عَنْ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَنْ بِبَابِ الْمَسْجِدِ سَمِعَ سَنِى تَوْ وه مَجد كے دروازے سے اس كى قراءت سن كر قوائَتَهُ فَلَمَّا كَانَ بِبَابِ الْمَسْجِدِ سَمِعَ

❶ ضعيف: أخرجه ابو عبيد في فضائل القرآن(ص 163) والبيهقي في الشهادات،باب تحسين الصوت بالقران والذكر 231/10

🗗 ضعيف: أخرجه عبدالرزاق (5998) والطبراني في الاوسط (7762) جب كدابن الي شيبر 10 /386 (10073) ميس اس كا آخري جزءتي سند سے مروي ہے۔

www.sirat-e-mustaqeem.com

حَدِّ الْتُعْلَقِينَ الْعُلِينِينَ الْعُرِينِينَ الْعُرِينِ الْعُرِينِ الْعُرِينِ الْعُرِينِ الْعُرِينِ الْعُر

لوث آئے اور کہا: گانا ہے گانا ہے۔

قِرَائَتَهُ رَجَعَ فَقَالَ غِنَاءٌ غِنَاءٌ . ٥

3539 حَدَّثَنَا أَبُوْ عَاصِم عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنِ ابْنِ شِهَابِ

عَنُ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا مُوسٰى كَانَ يَأْتِى عُنَ مُرَّدِي عَنْ اللَّهِ عَنْ اللَّهُ عُمَرُ ذَكِّرُنَا رَبَّنَا فَيَقُرَأُ عَنْدَهُ. ﴿ عَنْدَهُ. ﴿ عَنْدَهُ. ﴿ عَنْدَهُ. ﴿

سیّدنا عمر خالفین ان سے کہتے: ''ہمارا رب یاد لاؤ '' تو وہ سیّدنا عمر خالفین ان سے کہتے ۔''ہمارا رب یاد لاؤ '' تو وہ

آپ کے پاس (قرآن) پڑھتے۔

3540 حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ هُوَ ابْنُ عَمْرِو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ

سیّدنا ابو ہریرۃ و مُنْتُونُ کہتے ہیں رسول الله مَنْظُولَا نَّهِ نَنْظُولِا نَنْ الله عَنْظُولِا نَا فرمایا: 'الله تعالیٰ کسی چیز کو اس طرح نہیں سنتا جس طرح خوش آوازی سے پڑھنے والے نبی کے قرآن کوسنتا ہے۔''

سیّدنا ابوموسیٰ وُکانٹھۂ سیّدنا عمر وَکانٹھۂ کے بیاس آتے تھے تو

عَنُ أَبِسَى هُسرَيُسرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ مَا أَذِنَ اللّٰهُ لِشَىءٍ كَأَذَنِهِ لِنَبِيّ يَتَغَنَّى بِالْقُرُآنِ يَجْهَرُ بِهِ. ۞

عَنِ ابْنِ بُرَيُدَةَ عَنُ أَبِيُهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ لَقَدُ أُوتِى أَبُو مُوسَى مِزْمَارًا مِنُ مَزَامِير آل دَاوُدَ . ٥

"-

3542 ـ أُخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُوْنَ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو عَنْ أَبِيْ سَلَمَةَ

عَنُ أَبِى هُ رَيُّ رَةً قَسَالَ دَحَلَ رَسُولُ اللهِ عَنُ أَبِى هُ رَيُّ رَءً قَسَالَ دَحَلَ رَسُولُ اللهِ عَنَ فَصَدِعَ قِرَاثَةَ رَجُلٍ فَقَالَ مَنُ هُذَا قِيلَ عَبُدُ اللهِ بُنُ قَيْسٍ قَالَ لَقَدُ أُوتِي هٰذَا مِنُ مَزَامِيُو آلِ دَاؤَدَ . ٥

سیدنا ابو ہریرة رفائف کہتے ہیں رسول الله مطفی آیا تشریف لائے تو ایک آ دمی کو پڑھتے ہوئے سنا فرمایا: بیکون ہے؟ کہا گیا: 'معبداللہ بن قیس '' فرمایا: ''اس کو داؤد مَالیاتا کی

فرمایا: ''ابو موسیٰ کو آل داؤد مَالِینا کی انچھی آواز دی گئی

سی اچھی آ واز دی گئی ہے۔''

3543 حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللِّهِ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مَنْصُودٍ عَنْ طَلْحَةَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَٰنِ بْنِ

عَوْسَجَةً

[•] ضیعف: اس میں ابن جریج کاعنعند اور ایک راوی مجهول ہے۔

² منقطع ضعیف: (3536) میں گزرچک ہے۔

حسن: أخرجه ابن سعد في الطبقات79/1/4 وابو عبيد في فضائل القران(ص162).

صحيح: أخرجه احمد 349/5 ومسلم في صلاة المسافرين، باب تحسين الصوت بالقراك (793)

⁵ حسن: صحيح ابن حباد (7196)

www.sirat-e-mustageem.com

762 کتاب فضائل القرآن کے الكاريعي الكاريعي

عَن الْبَوَاءِ عَن النَّبِي عِنْ قَالَ زَيِّنُوا سِيِّدنا براء كَتِيَّ بِي نِي الشِّيَّةِ فِي الْهِ قَالَ زَيُّنُوا سِيِّدنا براء كَتِيَّ بِي نِي الشِّيَّةِ فِي اللَّهِ قَالَ زَيَّنُوا النجھی آ واز ہےزینت دو۔

الْقُوْ آنَ بِأَصُوَ اتِّكُمُ . ٥

3544 حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرِ حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ أَبِيْ عِمْرَانَ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْتَدِ عَنْ زَاذَانَ أَبِي

عَن الْبُوَاءِ بُن عَازِب قَالَ سَمِعُتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ حَسِّنُوا الْقُرُ آنَ بِأَصُوَاتِكُمُ فَإِنَّ الصَّوْتَ الْحَسَنَ يَزِيدُ الْقُرُ آنَ حُسْنًا . ٥

سیّدنا براء بن عازب کہتے ہیں میں نے رسول الله عليَّا عَلَيْهِ ے سنا آپ فرماتے تھے: ''قرآن کواچھی آوازوں سے یڑھو کیونکہ اچھی آواز قرآن کےحسن میں اضافہ کرتی

فوائد: قران الی کلام ہے جوانسان کومتاثر کیے بغیر نہیں چھوڑ نا مزیدا گراچھی آواز کی اس کے ساتھ آمیزش ہو جائے تو اس کی تا ثیر دو چند ہو جاتی ہے۔

[35] بَابِ كَرَاهِيَةِ الْأَلْحَانِ فِي الْقُرُآنِ قرآن کو گا کریڑھنے کی کراہت

3545 ـ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ إِدْرِيْسَ

عَنِ الْأَعْمَشِ قَالَ قَوَا رَجُلٌ عِنْدَ أَنَس المَش كَتِ بِي الكِشْخُص نِ الس رَالِيُ كَ ياس ان بِلَحُنِ مِنُ هٰذِهِ الْأَلْحَان فَكُوهَ ذٰلِكَ لَهُ لَهُ الْجُول مِن سَكِى لَهِ مِن قرآن رِرْهَا توانس نے اسے نا أُنَسٌ قَالَ أَبُو مُحَمَّد و قَالَ غَيْرُهُ قَرَأً غُورَكُ بُنُ أَبِي الْخِضُرِمِ. ٥

بیند کیا۔ ابومحمہ کہتے ہیں: اور لوگوں نے کہا: غورک بن ابو خفزم نے پڑھا۔

3546 حَدَّثَنَا الْعَبَّاسُ بْنُ شُفْيَانَ عَنِ ابْنِ عُلَيَّة

ابن عون سے منقول ہے کہ محمد نے کہا:''لوگ قرآن کوان لبجول میں پڑھنے کو ہدعت سمجھتے تھے۔'' عَن ابُن عَوُن عَنُ مُحَمَّدٍ قَالَ كَانُوُا يَرَوُنَ هُذِهِ الْأَلْحَانَ فِي الْقُرْآن مُحُدَثَةً ٥

[🗨] صحيح : أخرجه ابو عبيد في فضائل القران (ص160) والرازي في فضائل القران(22) والحاكم1/1-575-575

[🛭] صحيح : أخرجه الحاكم 575/1

[🚯] صحيح: أخرجه ابن ابي شيبه 466/10(9998)

www.sirat-e-mustaqeem.com

حَدَّ الْكَالِيْنِينَ الْكَالِيْنِينَ ﴾ ﴿ 763 ﴿ كُتَابِ فَضَائُلُ الْقُرِآنَ ﴾ ﴿ اللَّهُ اللّلْهُ اللَّهُ الللللَّاللَّهُ اللَّهُ الللَّا اللَّهُ الللَّالِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّالَاللَّاللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّ

فوائد: قران کومومیقی کی طرز پرگا کر پڑھناعلاء کے نزدیک حرام ہے لہذا ایسے لہجے جومومیقی کی طرف میلان رکھتے ہوں ان سے بچنا چا ہیے اور کوشش کی جائے کہ بلا تکلف اچھی آجاز نکال کرقر آن پڑھا جائے ۔واللّٰه المستعان



الله تعالیٰ کے خاص احسان وکرم کے ساتھ یہ کتاب مکمل ہوئی۔(الحمد لله علی ذلک) اس کے ترجمہ وفوائد میں جو کوتا ہیاں ہیں وہ ہماری طرف منسوب کریں۔ اللہ ہم سب کومعاف فرمائے۔ آمین

www.sirat-e-mustaqeem.com



| يا د داشت |
|--|
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| ·. |
| |
| |
| |
| • |
| |
| |
| ······································ |
| |
| |
| |
| |
| |
| |





انصار السنة يبايكيشنز لاهور



الملاكى اكادى >١- الفضل مَاركيث أَنْ دُوبَ الرابهور 042-37357587